॥ ❋ ॥ तिर्थोंकास्तवन (सरू) ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सामायक पोशादि श्राद्ध अहोरात्रकृत्य ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ तपगछ विशेष विधिसंग्रह ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ छंद स्तवन संग्रह ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ आनंद घनजी कृत स्तवन संग्रह ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सिझायमाला ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नवपदका ९ चै० । ९ स्त० ९ थुई सरू ॥ ❋ ॥

॥ ❋ द्वादश माश सकल पर्वाधिकारः ।

॥ ❋ ॥ भावहोली खेलन विचार स्तवन संग्रह ३८ ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ तपश्या विधि स्तवन संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ❋ ॥ शरस रागरागणी प्राचीन स्तवन संग्रह ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जिनदाशादि कृत लावणयां संग्रह ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ नवरसो चौढालियादि स्तवन संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीजिनपूजा संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ❋ ॥ श्री लक्ष्मी मोहन कृत स्तवन संग्रहः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ देशना बधावा गुंहली संग्रह ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ इति सूचीपत्र समाप्तम् ॥ ❋ ॥

॥ श्री जैन लक्ष्मी मोहनशाला ॥

॥ रत्नसागर प्रथमभाग विज्ञापन ॥

॥ शुभचिंतक, धर्मरागी, गुणग्राही (सर्व जैनी) सज्जन पुरषोंके पढनें पढानेंके निमत्त बहुत पुस्तकोंसें बहुत रत्न वस्तुका संग्रह करके (प्रथम) कलकत्ता मध्ये हमारी जैन विद्याशाला खाते पुस्तक १००० छपाके प्रसिद्ध किया था तिके संपूर्ण पुस्तक खपजाणेंसें, और भी संघकी मांगणी ज्यादा आनेंसे, दूसरी आवृत्ती छपानेंका विचार किया (परन्तु) बहुतसे संघको मुम्बईका छापा प्रियसमझके (तथा) जिन मंदरोंकी अंगीरचना, संघकी भक्ति । संघकी उन्नति । विद्याकी उन्नति, (बम्बईमें) ज्यादा होती देखके ॥ सं । १९४४ मि । माहसुद ५ दिन, श्री आदीसरजी, श्री महाबीरजी दोनुं मंदिरोंके बीचमें (जैन पाठशाला) जाहर खबर छापा बेंटके स्थापन करी । जिसमें सवेर सांझ, दशबजेतक जो धर्म कृत्य शीखणेंकों आवे उनकों विगर मासिक फी लिये पढाना सरू किया । पाठशालामें सो सवासे छोटा मोटा पढनेंवाला लाभ लेता था । इससेती पढानेंवाला पंडित नोकर, मकान भाडा, वगेरैका सब खरच खाते (मासिक) चालीस पेंतालीस रुपिया आसरे लगताथा, पहले कलकत्तेसें आया जब बंबईका संघकी बहुत आशा दिलमेंथी (क्युंकि) कांग्रेस विद्याशाला आदिके मेंबरोका, बडा बडा लंबा चोडा भाषण देखके, जीवमें बहुत आनंद हुवाथा (कि) यहां जो ग्यान वृद्धीके निमत्त उद्यम करेंगे तो अवश्य पंडितादिकके खरचका वंदोवस्त संघ करदेगा तो अपनेंकोंभी नवा नवा ग्रंथ देखनेंमें आवेगा (परन्तु) सर्व आसा निस्फल होगई । श्री आदीसरजी प्रमुखकी सभाका मारवाडी कई लोकोंनें धीरज वंधाई कि हमे पाठशालाको वंदोवस्तकरादेसां । पर अंतमें कोईसें कुछ वंदोवस्त सहाय हुवानहिं । तोपिणमें तीन वर्ष जैनपाठशाला उन्नतीके बराबर चलातारहा इससें घरू ग्यानखातेका रुपिया ग्यानभंडार खाते लगाणाथा (सो) इसीतरे ग्यानवृद्धीमें खरचहोगया (सो तो) मोटामारवाडी लोकोंनें आहारपाणी

की बहुत मदतदीनी, इससेती तीनचार आदम्यांको निभाव होगयो ॥ नहिं तो तीनवरषभी पाठशाला चलसक्ती नहीं । इस तीनवरषमें रत्नसागरका दोभाग छपाके प्रसिद्ध किया ॥ इसमेंभी ज्यादा ग्रंथवधाणेंसें खरच बहुत होगया पीछे श्री चिंतामणजीका श्रीसंघकी आग्यासें श्रीचिंतामणजीके मंदिरमें (आदे शीहोकर) आयरहा (इससें) अभीतक जैनपाठशाला ग्यानवृद्धीकाकार्य अपनी शक्ति मुजब चलारहाहुं ॥ इससमयमें बहुतसे जैनी नामधारक साधु श्रावक आपना स्वार्थ साधक एकांतपक्षी होरहेहैं (तथापि) श्रीसंघमोटोहै सर्व धर्मखाताके निर्वाहकरनेंवाला पण अनंतकल्याणी श्रीसंघहै (इसीसें) बीकानेर रांघडीका माणकचौकमें (श्रीकुंथुनाथस्वामीका नवामंदर) महो पाध्याय श्री गुरूमहाराज (श्रीलक्ष्मीप्रधानजीकी) अंगत प्रेरणा उपदेशसें तैयार हुवाहै। और फेर गुरूमहाराजकी आग्यासें, ग्यानभंडार खाते नवामकान (जैनलक्ष्मी मोहनशाला) नामक बनवायके, अपना सातपीढीका सर्व हजारों रुपियाका लिखा हुवा पुस्तक, उसमें रखके, ग्यान भंडार स्थापन कियाहै (और) जोजो पुस्तकां नहींहै उनोंकी क्रमसे वृद्धी संचयकरते जातेहैं हमारे दिलमे पण ऐसी धारणाहै (कि) कोई पूर्वकृत कषायकर्मादिककेयोग तपतपस्या साधुपणेंका सुद्धव्रतादिक कुछभी अभीतक यह आत्मासें वण नहिं आताहै (तथापि) कोई सुभकर्मोदयके योग । जैन दरशण, ज्ञान भक्तिका अंशमात्र पायाहै, इससेती जैनके सेवकहैं । ग्यानकेही प्रसाद सर्व कामकी सिद्धी होतीहै (इससें) जहांतक बनें तहांतक ग्यानकी वृद्धी ग्यानकी भक्ती करते रहणा चहियै । इसी विचारसें ग्यानखाते जो पैदास होतीहै (सो) ग्यानभंडारके मकानकी सार संभाल मरमतखाते, (तथा) पुस्तकनवा छपाणें लिखाणें खाते; पढनें पढानेंमें पंडितादिकके खरच खाते; ग्यानोपगरण खाते खरच करतेहैं (इससेती) जो धर्मरागी ग्यानवृद्धीके रसिया जैन सज्जन लोक रत्नसागर दो भाग आदि जैन पुस्तक लेकर पढैगा पढावैगा (और) बीकानेर, कलकत्ता, मुंबई, तीनों ठिकाणें हमारी जैन पाठशाला स्थापनहै । उनकों जो तन मन धनसें मदत देनेंवाला मिलैगा (तो) बहुत उन्नतीके साथ

सर्वोपयोगी मासिक पुस्तकादिक प्रगट करके ग्यानवृधी करता रहुंगा पहलेके रत्नसागरसें अबके जाणवा जोग बहुत ग्रंथ वधाणेंमें आया है (तथापि) पुस्तकका निछरावल सामान्यगत्तादारका रुपिया मात्र ५) आगेके मुजब लेनेंमें आवेगा ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

(इस पुस्तकमें) खरतरा तपादि संपूर्ण जैन धर्मियोंके बारे माशमें करनें लायक प्रभावीक प्रमाणीक पूर्वाचार्योंकेरचित संपूर्ण धर्मकृत्य संग्रह करनेंमें आयाहै। एक पुस्तकसें पचीस तीसपुस्तकका काम चल सक्ताहै। और बारमाशी धर्मकृत्य संपूर्ण करसक्तेहैं (इसमें)

॥ १ ॥ नवकारादि प्रतिक्रमण मूलपाठ, साधु श्रावक अतीचार, पक्षीसूत्र, अजी संतादि सात स्मरण, बम्हीशांत, पांचे तिथकी थुई, स्तवन, पांचुं पडिक्कमणा, पोसाकी, जूदी २ विधि पृष्ट १० (सें) १३२ तक ॥

॥ २ ॥ तपगछका पांचप्रतिक्रमण, देव वंदन, भरहेसर, शांतिकरा, सकलार्हत, (पांचे तिथकी) थुई, स्तवन, सिझायां, चौमाशी वम्हा देववंदनादि, पांच प्रतिक्रमण विधि ॥ दशत्रिक सहत मंदर जाणेंकी पूजनकी विधि १३३ (सें) पृष्ट २०० तक ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ३ ॥ वम्हो नवकार, ऋषिमंडल, भक्तामर, कल्याणमंदर जिन सहस्र शेत्रुंजरास गौतमरास आदि संस्कृत प्राकृतमई अनेक प्रभावीकआचार्यकृत स्तोत्र संग्रह पृष्ट २०१ (सें) ॥ २४२ तक ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

(इत्यादिक) बहुत रत्नवस्तूका संग्रह कियाहै (प्रगटपणें) यह पुस्तक धर्म रत्नोंका समुद्र तुल्य हे (इसीसें) इसका गुण निष्पन्न ॥ ❋ ॥ रत्नसागर नाम रक्खा हे ॥ ❋ ॥ (और) जो इस पुस्तकमें रत्नवस्तू है (सो) आत्मा के मोहन गुण । ज्ञान, दर्शन, चारित्रादिककों, प्रगट करनेंकी एक श्रेणीवत हैं (जिससें) इस पुस्तकका (दूशरा) मोहन गुणमाला, नाम रक्खाहै ॥ (और) सर्व स्थानक, जैन विद्या शाला, पाठशालायोंमें, जैन पाठक गण कों, (प्रथम) अपना नित्य नेम, अवश्य शीखना, शिखाना चाहियें (इसी सें) सर्व जैन पाठकगणके उपगारार्थ, भाषा, विधि संयुक्त । वारमाशी संपूर्ण, अवश्य धर्मकृत्यका संग्रह किया है (इस्सें) प्रथम भाग नाम रक्खा है ॥ ❋ ॥ (और) इसका दूसरा भाग भी छपा भया तैयार है (जिशमें) आचार दिनकरादि, आचार ग्रंथोंसें । जैन गृहस्थोंका, जन्मसें लेके, मरण पर्यंत, १६ संस्कार, उपदेश, आचार, विधि स्वरूप ज्ञापक, प्रथम प्रकाश (तथा) संक्षिप्त जैन इतिहास, । वावन ५२ बोल गर्भित २४ महाराजका दृष्टांतरूप इतिहास । श्रीमहावीर स्वामीसें आजतक गछ मतादिकका संक्षिप्त स्वरूप (इस उपरांत) सर्वोपयोगी बहुत जैन आचार रत्नोंका संग्रह किया हुवाहै ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (इससे) बहुत विनय नम्रतासें (सर्व) जैनसज्जनोंसें प्रार्थना करनेंमे आवें है (कि) इस पुस्तकको बहुत विवेकसें यत्न करके रखना जिसमें ग्यानकी आशातना न होय (क्युंकि) क्या लिखाहुवा, क्या छपा हुवा, आत्म धर्मोपगारी दोनुं पुस्तक समान है । अग्यानी जीव, अनेक तरेंसें जिनप्रतिमा (तथा) जिन धर्मपुस्तकका, अनादर, आशातना करें (तथापि) विवेकी ग्यानी पुरुषोंकों । जिन प्रतिमा (तथा) धर्म पुस्तककी कभी आशात

ना न करनी चाहिये (जिके) जिनप्रतिमाकों पाखाणादिककी जाणके (और) पुस्तककों लिखा हुवा, छपा हुवा, जाणके। अनादर करैगा। निंदन करैगा (सो) अपना एकांत हठवादसें । सदाकाल, एकेंद्रियादिक अज्ञान दिशामें परिभ्रमण करता रहैगा ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (और) में मेरी जाणमें दो महिना ज्यादा लगणेंका (तथा) खरच ज्यादा लगनेका विचार छोडके (और) बहुत परिश्रमसें सुद्ध करके छपाया है (तथापि) छद्मस्थ, अल्प बुद्धियाहुं (इससें) निजर, दिलका, भरोसा न देसक्ताहुं (इसकों) पढते, पढाते, जो कोई स्थानक, प्रमादादिकसें (वा) छपेके दूषणसें । ईकार, ऊकार अक्षरादिककी भूल मालुम होय (तो) अपना विद्वज्जन गुरूसें जाणके। शुद्ध करके पढना (और) कोई मेरा कसूर होय सो माफ करना । श्रेणकराजाकेतुल्य गुणग्राही पणा धारन करके। इस पुस्तकका गुणग्रहण करना (इस पुस्तकसें) वहुत काल तक, वहुतजीवोंके सद्धर्म प्राप्ती होगा (इससें) यह पुस्तक धर्मरूपी कल्पवृक्षका बीज है ॥ (इसकों) सेवन करनेवालोंकै मनोवांछित फल प्राप्ती होगा ॥ (और) इस पुस्तककों, मुख्य अपनें (तथा) परके, विद्यावृद्धी उपगारके अर्थ (जो) गुणग्राही जैनसज्जन एकेक पुस्तक लेवैगा (तथा) कोई ज्ञान खातें । पांच पचीस पुस्तक इकठी लेके। मंदर, उपाशरामें (तथा) ज्ञानभंडारोंमें (तथा)साधु,श्रावक,गरीब विद्यार्थियोंको। धर्मोपगारार्थ देवेगा(और) तन, मन, धनसें, ज्ञानवृद्धीके अर्थ पाठशालाकों मदत देवेगा। जिन उत्तम पुरषोंका बहुत धर्म उपगार मानके (पाठशालाकी) पुस्तकमें नाम छपाके। प्रशिद्ध करनेमें आवेगा ॥ ❋ ॥ (और) दिन प्रमाण साठ घडी होता है (जिसमें) दो चार घडी तो इस पुस्तकको जरूर बाचनो पढनो रखना ॥❋॥ (और) सिद्धांत विरुद्ध, कषाय, प्रमादादिक के वस। कोई उछो, अधको, हरफ, कानो, मात, लिखनेमें आयो होय (तो) सर्व संघके सन्मुष, में, मिछामि दुकडं देता हुं ॥ इत्यलंविस्तरेण ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जैन सेवक उपाध्याय श्रीमोहनलाल मुक्तिकमल गणिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जैन लक्ष्मी मोहनशाला, रत्नसागर तंत्री ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ मोहन हितशिक्षा ॥ ❋ ॥

अहो जैन भाईयो सुदेव, सुगुरू, सुधर्मकों, तत्वपदार्थ जानके, अंतरंग प्रीति रक्खो ॥ (तथा) कर्मोंकी विचित्र गति जानके (कोई) संसारी जीवकी निंदा मतकरो। निंदा दुःख दालिद्रकी देनेंवाली है (और) बुद्धी है सो कर्मानु सारणी है। अपना कर्मोंके प्रसाद, सुख दुःख सर्वजीव भोगवते हे ॥ ❋ ॥ (यदुक्तं) ॥ ❋ ॥ कृतकर्म क्षयो नास्ती। कल्प कोटि शतैरपिः। अवस्य मेव भोक्तव्यं। कृत कर्मः सुभासुभं ॥ १ ॥ ❋ ॥ (पुनः) ॥ ❋ ॥ जं जं समयं जीवो। आवस्सइ जेण जेण भावेण। सो तंमि तंमि समए। सुहा सुहं वंधए कम्मं ॥ २ ॥ ❋ ॥ (पुनः) ॥ ❋ ॥ नींचै गोत्रावतार श्चरम जिनपते मल्लिनाथा बलात्वं। अंधत्वं ब्रह्मदत्ते भरत नृप जयः सर्व नाशश्च कृष्णे। निर्वाणं नारदेपि प्रशम सुख रति स्या चिलाती सुतेपि। इत्थं कर्मानु बीर्योः स्फुट मिह जयतां स्पर्द्धया चित्यरूपे ॥ ३ ॥ ❋ ॥ (पुनः) ॥ ❋ ॥ ब्रह्मा येन कुलाल व न्नियमितो ब्रह्मांड भांडोदरे। विष्णुर्येन दशावतार गहने क्षिप्तः महासंकटे। रुद्रो येन कपाल पाणि पुट के भिक्षाटनं कारितः। सूर्यो भ्राम्यति नित्य मेव गगने तस्मैनमःकर्मणेः ॥ ४ ॥ ॥ ❋ ॥ (पुनः) ॥ ❋ ॥ प्रचलति यदि मेरुः शीततां याति वन्हि। उदयति यदिभानुः पश्चिमायां दिशायां। विकशति यदि पद्मं पर्वताग्रे शिलायां। तदपि नचलनीया भाविनी कर्म रेखा ॥ ५ ॥ ❋ ॥ (पुनः) एकके पाय अनेक परे पुनि एक अनेकके पाय परै है। एक अनेक कि चिंतहरै अरु एकन आपनो पेटभरैहै। एक खुस्याल सूअै सुख पालमें एककुं कंथन खाट जुरै है। देखन यार कहै धमसी जगि पुन्यरु पाप प्रतिक्ष फिरै है ॥ ६ ॥ (पुनः) ॥ ❋ ॥ लंछन चंदमें तापदिनंदमें चंदन मांहिं फणिंदको वासो। पंम्डित निर्द्धन सघन है सठ नारि महाहठको घरवासो। हीम हिमाचल खारो है वाराधि केतकि कंटक कोटिको पासो। देखो धरम्मसी है सबको दुःख कोऊ करो मति काऊको हासो ॥ ७ ॥ ❋ ॥ (इसवास्तै) अहो देवाणु प्रियो। कर्मोंकी ८ मूल प्रकृति (तथा) १५८ उत्तर प्रकृतिका स्वरूप जाणके सम भावसें आत्म लघुता करते रहो ॥ ❋ ॥

॥श्रीः॥



(वा)

॥ मोहनगुणमाला ॥





॥ प्रथम भाग ॥

॥ मंगलाचरण ॥

॥ ॐकारं बिंदुसंयुक्तं । नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव । ॐकाराय नमोनमः ॥ १ ॥

॥ ॐकार उदार अगम्म अपार संसारमें सार पदारथ नामी, सिद्धि समृद्धि सरूप अनूपभयो सबही सिरभूप सुधामी, मंत्रमें यंत्रमें ग्रंथके पंथमें जाकुं कियो धुर अंतरजामी, पंचही-इष्ट वसे परमिष्ट सदा ध्रमसी करे ताहि सिलामी ॥ १ ॥ नमो निसदीश नमायकेशीश जपो जगदीश सही सुखदाता, जाकी जगत्तमें कीरति जागत भागतिहे सब ईति असाता इंद नारिंद दिणिंद फुणिंद नमाएहें वृंद आनंद विधाता, धोरी धरम्मको धीर धराधर ध्यान धरे ध्रमसी गुणध्याता ॥ २ ॥

॥ अथ गुरुमहमा नमस्कार ॥

॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय । सर्वाभीष्टार्थ दायिने ।
सर्वलब्धि निधानाय । गौतमस्वामिने नमः ॥ १ ॥

॥ महिमा जिणकी महिमें महिमें जिन दीनो महा इक ग्यान नगीनो, दूरभग्यो भ्रमसोतम देषत पूरजग्यो परकास नवीनो, देतहि देतहि दूनोवधै अरु खायोहि खूटत नाहिं खजीनो, ऐसो पसाय कियो गुरुराय तिणें ध्रमसी पदपंकज लीनो ॥ १ ॥

॥ अज्ञानतिमिरान्धानां । ज्ञानाञ्जनशलाकया ॥
नेत्रमुन्मीलितं येन ॥ तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ १ ॥

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्री सारदायै नमः ॥

॥ सरस्वती महाभागे । बरदे कामरूपिणी । विश्वरूपी बिशालाक्षी । दे विद्या परमेश्वरी ॥ १ ॥ सरस्वती मया दृष्टा । वीणापुस्तक धारिणी । हंसबाहन संयुक्ता । बिद्या दान बरप्रदा ॥ २ ॥

॥ दीर्घाक्षरें सरस्वती नमस्कार ॥

सिद्धारूपी साची देवा सारे जीकी नीकी सेवा रागे आए लागे पाए जागे मोटी माई है, चंगी रंगी वीणा वावे रागे सारे रागे गावे हावे भावें सोभापावे ग्याता जाकुं गाई है, हंसी कैसी चाली चाले पूजी बंदी पीडा टाले लीला सेती लालेपाले सुद्धी बुद्धी दाई है, सोहेवानी नीकी बानी जाकुंग्यानी प्राणी जानी ऐसी माता शाता दानी धर्मसीहे ध्याई है ॥ १ ॥

(स्वरवर्णाः)

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ
ए ऐ ओ औ अं अः

(व्यञ्जनवर्णाः)

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ
ड ढ ण । त थ द ध न । प फ ब भ

म । य र ल व । श ष स ह । ळः क्षः

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः

कृ गृ तृ दृ पृ मृ वृ शृ सृ हृ

क्य ख्य ग्य घ्य च्य छ्य ज्य ट्य ठ्य ण्य त्य द्य

ध्य न्य प्य भ्य म्य य्य ल्य श्य ष्य स्य ह्य क्ष्य

क्र ग्र व्र ज्र त्र द्र प्र भ्र म्र ब्र श्र स्र ड्र

क्व ग्व ण्व त्व द्व ध्व न्व म्व स्त्व श्व ष्व स्व क्क

ग्न घ्न त्न प्न म्न श्न ष्ण स्न क्म ग्म घ्म च्म

ण्म ह्म न्म श्म ष्म स्म ह्म क्ष्म ॥ र्कं र्खं र्गं र्घं

ङ्क ङ्ख ङ्ग ञ्छ ण्ट ण्ठ ण्ड ण्ढ ण्ण न्त न्थ न्द

न्ध न्न म्म ष्क स्क स्ख श्च श्छ ष्ट ष्ठ स्त स्थ स्प

ष्प स्फ क्क क्त्व ग्ग च्च च्छ ह्व ज्ज ज्ञ ट्ट त्त

त्थ द्द द्ध प्प ल्क ल्प ल्म ल्ल द्ग्र द्व ग्द न्ध ब्द

ब्ध ल्ग्म क्त प्त त्क त्प त्स ॥

न्त्य न्द्य न्ध्य न्य द्ध्य न्ह्य म्ब्य ल्क्य ष्ट्य ब्द्य

द्व्य स्त्य स्ल्य न्ल्य क्त्य त्र्य स्त्व ।

त्क्र च्छ्र न्त्र न्द्र ष्ट्र स्त्र त्प्र ज्व ष्ट्व त्त्व स्त्व

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ (१० १०० १००० १००००)

॥ स्वस्तिश्री कृष्णाब्रह्मस्था, एैंद्राह्वा स्युश्च स्वस्करा,

पृथ्वीभृद्वल्गु श्रेष्ठात्म, त्रम्पास्ते हृद्यज्ञतिदा ॥ १ ॥

(शिक्षा वाक्य)

॥ गुरु शुश्रूषयाविद्या । पुष्कलेन धनेन वा । अथवा विद्यया विद्या । चतुर्थं नैव कारणं ॥ १ ॥ विद्वत्वंच नृपत्वंच । नैव तुल्य कदाचन । स्वदेशे पूज्यते राजा । विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ २ ॥ पण्डिते च गुणाः सर्वे । मूर्खे

दोषाहि केवलं । तस्मान्मूर्ख सहस्रेषु । प्राज्ञ एको विशिष्यते ॥ ३ ॥ नक्षत्रभूषणं चंन्द्रो । नारीणां भूषणं पतिः । पृथिव्या भूषणं राजा । विद्या सर्वस्यभूषणं ॥ ४ ॥ माताशत्रुः पिता वैरी । बालो येन न पाठितः । न शोभते सभा मध्ये । हंस मध्ये बको यथा ॥ ५ ॥ लालयेत्पंच वर्षाणि । दशवर्षाणि ताडयेत् । प्राप्तेतु षोडशेवर्षे । पुत्रं मित्र वदाचरेत् ॥ ६ ॥ वरमेको गुणी पुत्रो । नच मूर्ख शतान्यपि । एकचन्द्र स्तमो हन्ति । नच तारागणादपि ॥ ७ ॥ अविद्यं जीवनं शून्यं । दिशः शून्यास्त्व बांधवा । पुत्रहीनं गृहं शून्यं । सर्व शून्या दरिद्रता ॥ ८ ॥ नच विद्या समो वंधु र्नचव्याधि समो रिपुः । नचापत्य समः स्नेहो । नच दैवात्परं बलं ॥ ९ ॥ किं तया क्रियते धेन्वा । या न सूते न दुग्धदा । कोऽर्थः पुत्रेण जातेन । यो न विद्वान् न भक्तिमान् ॥ १० ॥ उपदेशो हि मूर्खाणां । प्रकोपाय न शान्तये । पयः पानं भुजंगानां केवलं विषवर्द्धनं ॥ ११ ॥ मातृवत्परदारांश्च । परद्रव्याणि लोष्ठवत् । आत्मवत् सर्वभूतानि । विक्षंते धर्मबुध्दयः॥१२॥

॥ अथ वाक्यमंजरी ॥

॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥ श्रीवाग्वादिन्यैं नमः ॥ प्रातरुत्थाय श्रीपरमेश्वरं चिन्तयेत् । तदनन्तरं, हस्तौ पादौ सम्यक् प्रक्षाल्य स्नात्वा आगन्तव्यं । परमेश्वरस्य पूजा विधेया (देवः पूज्यः) ॥ धर्मशास्त्र मध्ये किं किमुक्तं नास्ति, धर्मशास्त्रे सर्वं वर्त्तते । धर्मशास्त्र मत्यंतं समीचीनं ॥ सरस्वती स्तोत्रं सवीर्यं भवति । सद्यः प्रीतिजनकं भवति । इदं सरस्वती स्तोत्रं सद्यः प्रत्यय कारकं भवति ॥ कविता समीचीना । कवित्वं कथमायाति । गुरुसमीपे गत्वा सम्यक् पठनीयं । ततो ज्ञानं भवति । तदा कवित्वमायाति । तस्मादादौअंदौ ज्ञानं सम्पादनीयं । सदा प्रियं ब्रूयात् । प्रियवादी सर्वस्य प्रियो भवति । विद्याहि परमं धनं । यस्य विद्याधनमस्ति । स सदा सुखेन कालं नयति । श्रमेण यत्नेन च विद्या भवति । तस्मात् विद्यालाभायश्रमो यत्नश्च विधेयः । विद्यां विना वृथा जीवनं ॥ आलस्यं सर्वेषां दोषाणामाकरः । अलसा विद्यामुपार्जयितुं न शक्नुवन्ति । धनं न लभन्ते । अलसानां ेव दुःखं । तस्मादालस्यं परित्यजेत् ॥ योऽस्मानध्यापयति ।

सोऽस्माकं परम गुरुः । सहि पितृवत् पूजनीयः । विद्यादाता जन्मदाताच द्वावेव समानौ । समं माननीयो च ॥ क्रोधं यत्नेन वर्जयेत् । क्रोधवशेन परुषं भाषते । ततः प्रहरेत् । क्रोधोहि महान् शत्रुः ॥ सर्वं परवशं दुःखम् । सर्वमात्मवशं सुखम् । एतदेव सुखदुःखयोर्लक्षणम् ॥ परहिंसायां परापकारेच बुद्धिर्नकार्य्या । तयोः समं पापं नास्ति ॥ यथाशक्तिपरेषा मुपकारं कुर्यात् । परोपकारो हि परमो धर्म्म ॥ अहंकारं परिहरेत् । नाहंकारात् परोरिपुः ॥ संतुष्टस्य सदा सुखम् । आत्मनः सुखमन्विछेत् । सन्तोषमूलंहि सुखम् ॥

॥ अथ सन्धिसुत्र ॥

सिद्धो वर्णः । समाम्नायः । तत्र चतुर्द्दशादौ स्वराः दशसमाना । तेषां द्वौ द्वावन्यो । ऽन्यस्य सवर्णौ । पुर्व्वौ ह्रस्वः । परो दीर्घः । स्वरोवर्णः वर्ज्जोनामी । एकारादीनि संध्यक्षराणि । कादीनि व्यंजनानि । ते वर्गाः । पंच पंच । वर्गाणां प्रथम द्वितीयौ । शषसाश्च घोषाः । घोषवंतोऽन्ये । अनुनासिकाः ङञणनमाः । अन्तस्थाः यरलवाः । ऊष्माणः शषसहाः । अः इति विसर्ज्जनीयः । कः इति जिव्हा मूलीयः । पः इत्युपध्मानीयः । अं इत्यनुस्वारः । पूर्वपरयो रर्थोपलबधौ पदम् । अस्वरं व्यंजनं । परं वर्णनयेत् । अनतिक्रमयन् विश्लेषयेत् । लोकोपचारात् ग्रहण सिद्धिः ॥ इति संधौसूत्रतः प्रथमश्चरणः समाप्तः ॥

॥ हितोपदेसः ॥

अर्हन्तो भगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता । आचार्या जिनसासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः । श्रीसिद्धांत सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रया राधकाः । पंचैते परमेष्टिनः प्रति दिनं कुर्वंतु वो मंगलं ॥ १ ॥

॥ अर्थः ॥

(एते पंचपरमेष्टिनः प्रतिदिनं वः युष्माकं मंगलं कुर्ब्बन्तु) । यह पंचपरमेष्टि निरन्तर श्रीसंघप्रतें मंगलकरो । (कैसे है पंचपरमेष्टि) (अ-

भन्तो भगवंत इंद्रमहिता)। प्रथम परमेष्टि । श्रीअरिहंत देवः । अष्ट-कर्म शत्रुकुंहणें (सो) अरिहंत कहियै । अरिहंत कैसे है । (भगवंत-ज्ञानवंत है । केवल ज्ञान केवल दर्शन संयुक्त है । (तथा) भगशब्द-के १४ अर्थ है ॥ भगोऽर्क (सूर्य) १। ज्ञान २। महात्म ३। यश ४। वैराग्य ५। मुक्ति ६। रूप ७। वीर्य ८। प्रयत्न ९। इच्छा १०। श्रीलक्ष्मी ११। धर्म १२। ऐश्वर्य १३। योनि १४। यह चवदै अर्थोंमेसें। सूर्य १ योनि २। दो अर्थ वर्जकर। १२ अर्थ भग शब्दका मिलै (जिससे) भगवंत कहियै (पुनः किंविशिष्ट) फेर अरिहंत कैसे है (इंद्र-महिता (चौसठ इंद्रोंकै पूजनीक । द्वादशगुणैं करी विराजमान है (सो द्वादश गुण कैसे) प्रथमतो अरिहंतको अद्भुतरूप । रोगादि रहित । प्रस्वेद मलादि रहित। सुगंध शरीर होय ॥ १ ॥ सासोस्वासकी कमलजैसी सुगन्ध होय ॥ २ ॥ लोही मांस गायके दूध जैसा सपेद होय ॥ ३ ॥ आहारनीहारकी विधि अदृश्यहोय । प्राणी देख सक्के नहिं ॥ ४ ॥ ए च्यार अतिसय गुणतो जन्मथकासे होय । (शेषआठगुण) केवल ज्ञान उत्पन्न होणेसें प्रगट होय । (अशोकवृक्षः) भगवन्तके शरीरसें । बारै गुणो ऊंचो अशोकवृक्ष होय। जिसकी छायांबैठणेंसें रोगसोकादिक दूर होय ॥ १॥ (सुरपुष्पवृष्टिः) देवगण पंचवर्ण फूलोंकी जानूपर्यंत वर्षा करै। आकासें पडता सीधापडै विंटनींचै रहै । पंषडी ऊपर रहै ॥ २॥ (दिव्य-ध्वनि) योजनपर्यंत । देवता । मनुष्य । तिर्यंच। सब जीव। अपणी २ भाषामें । यथावस्थित समझै (जाणें) भगवंत मेरी भाषामें उपदेस देते है॥ (कहावी है) एगाइं गिराणेगे । संदेह देहिणं समंछित्ता। तिहुअण मणुंसा संता । अरिहंता हुंतिमे सरणं ॥ १॥ ३॥ (श्चामर ४) भगवंतके दोनुं पासे इंद्रचामर ढालता रहे ॥ ४॥ (आसनंच ५) भगवन्तके बेठणेंको । इंद्रादिक रचित । फिटक रत्नमई सिंहासण रहे ॥ ५॥ (भामंडलं ६) भगवन्तके पिछाडी भामंडल रहे (जिसमें) भगवंतके च्यार मुख । च्यारुंदिश तरफ मालुम होय भगवंत तो पूर्वदिशा मुख कर बेठे । आरे तीन दिशमे । भगवन्तके प्रतिबिंब इंद्रादिक स्थापन

करै। परंतु भगवन्तके अतिशयसें । च्यारुंदिशे । बारेंई परषदाकों। अ-पणेसन्मुख उपदेश देता मालुम होय ॥ ६ ॥ (दुंदुभी ७) आकाशमें देव दुंदुभी बाजित्र वाजे ॥ ७ ॥ (छत्रपत्रं) भगवन्तके विहार कालै। वा स्थिति कालै । हमेसां मस्तकपर । तीन छत्र रहै ॥ ८ ॥ (यह आठ गुण देवगणके किये होय) ऐसे अरिहंत। देवाधिदेव। चौंतीस अतिशय बिराजमान । पेंतीस वचनगुण शोभित । एक हज्जार आठ लक्षणालं-कृत। अठारै दूषण रहत। शांत दांत। कृपासागर । त्रैलोक्यनाथ। जग-त्रयके गुरु (वर्त्तमानकालै) महाविदेह खेत्रे। केवलज्ञान। केवलदर्शनसें। लोकालोकका भाव देखते थके । पृथ्वीमंडलपर भव्य जीवुंके मनोरथ पूरण करते थके । बिचरते है (ऐसे) अनंतगुणें सुसोभित । अरिहंत देव श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ १ ॥ (तथा सिद्धाश्च सिद्धि स्थिता) (दूसरै पदै) सिद्ध महाराजको नमस्कार हुवो । (सिद्ध महाराज कैसे है) अष्ट कर्म काष्टकों । शुक्लध्यान रूप अग्निसें भस्मकर सिद्धगतिकों प्रा-प्तभये (ऐसे) अनंत ग्यान। अनंतदर्शन। अनंत चारित्र। अनंत तप। अनंत वीर्यसंयुक्त । जन्म जरा मरण रोग सोक भयादिकसे विप्रमुक्त। चवदै राजलोकमें सब जीवोंके मनोगत भाव । एक समयमें जाणते थके। देखते थके पिण आत्मगुणां में मग्न रहे है (ऐसे) सिद्ध महा-राज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ २ ॥ (आचार्या जिनशासनोन्नति कराः) (तीसरा परमेष्ठि) श्रीआचार्य महाराजकों नमस्कार हुवो। (सो कैसे है) (छत्तीस गुण करी विराजमान। मुक्तिमार्गके साधक। कर्म श-त्रूके बिराधक । अबुध जीव प्रतिबोधक । क्षमागुण भंडार। समदृष्टी। तरण तारण। धर्मके धोरी । जिन सासनकी उन्नतिके करण हार (ऐसे) पर उपगारी आचार्य महाराज श्रीसंघ में सदा मंगलकरो ॥ ३ ॥ (पुज्या उपाध्यायका । श्रीसिद्धांत सुपाठका (चौथा परमेष्टि। श्रीउपाध्याय महा-राजकों नमस्कार हुवो। (सोकैसे है) द्वादशांगी सुत्रार्थके जाणकार। नय निक्षेपा गमां पर्याय युक्त। सिद्धांतको पढाणेंवाले। ज्ञानचक्षु देणेंवाले। (ऐसे) २५ गुण करी बिराजमान । श्रीउपाध्याय महाराज श्रीसंघमें

सदा मंगल करो ॥ ४ ॥ (मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः) (पंचम परमेष्टि) सब साधु मुनिराज (सो कैसे है) ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ यह तीन रत्नके आराधक है। पांचे सुमते सुमता। तीने गुप्तेगुप्ता। छकायके पीहर कुक्खी संबल। चारित्रपात्र। मोक्षमार्गके साधक। (ऐसे) सब साधु मुनिराज। सत्ताईस गुणें करी सोभित। श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ ५ ॥ इति हितोपदेशः उजय श्रेयार्थम् ॥

॥ ॐ जिन नामः ॥

(अतीत चौबीसी.)

१॥ श्रीकेवलज्ञानीजी।	९॥ श्रीदामोदरजी।	१७॥ श्रीअनिलनाथजी।
२॥ श्रीनिर्ब्बाणीजी।	१०॥ श्रीसुतेजनाथजी।	१८॥ श्रीयशोधरजी।
३॥ श्रीसागरजी।	११॥ श्रीस्वामीजी।	१९॥ श्रीकृतार्थजी।
४॥ श्रीमहायशजी।	१२॥ श्रीमुनिसुव्रतजी।	२०॥ श्रीजिनेश्वरजी।
५॥ श्रीविमलदेवजी।	१३॥ श्रीसुमतिनाथजी।	२१॥ श्रीशुद्धमतीजी।
६॥ श्रीसर्व्वानुभूतिजी।	१४॥ श्रीशिवगतीजी।	२२॥ श्रीशिवकरजी।
७॥ श्रीश्रीधरजी।	१५॥ श्रीअस्तागजी।	२३॥ श्रीस्पन्दनजी।
८॥ श्रीदत्तस्वामीजी।	१६॥ श्रीनमीश्वरजी।	२४॥ श्रीसंप्रतिजी।

॥ इति अतीत चतुर्विंशति तिर्थ करेभ्यो नमः ॥

(वर्त्तमान चौबीसी)

१॥ श्रीऋषभदेवजी।	९॥ श्रीसुविधिनाथजी।	१७॥ श्रीकुंथुनाथजी।
२॥ श्रीअजितनाथजी।	१०॥ श्रीशीतलनाथजी।	१८॥ श्रीअरनाथजी।
३॥ श्रीसंभवनाथजी।	११॥ श्रीश्रेयांसजी।	१९॥ श्रीमल्लिनाथजी।
४॥ श्रीअभिनन्दनजी।	१२॥ श्रीवासुपुज्यजी।	२०॥ श्रीमुनिसुव्रतजी।
५॥ श्रीसुमतिनाथजी।	१३॥ श्रीविमलनाथजी।	२१॥ श्रीनमिनाथजी।
६॥ श्रीपद्मप्रभुजी।	१४॥ श्रीअनन्तनाथजी।	२२॥ श्रीनेमनाथजी।
७॥ श्रीसुपार्श्वनाथजी।	१५॥ श्रीधर्मनाथजी।	२३॥ श्रीपार्श्वनाथजी।
८॥ श्रीचंद्राप्रभुजी।	१६॥ श्रीशान्तिनाथजी।	२४॥ श्रीमहावीरजी।

(अनागत चौवीसी)

१॥ श्रीपद्मनाभजी।	९॥ श्रीपोट्टिल प्रभुजी।	१७॥ श्रीसमाधिनाथजी।
२॥ श्रीसूरदेवजी।	१०॥ श्रीशतकीर्त्तिजी।	१८॥ श्रीसंबरनाथजी।
३॥ श्रीसुपार्श्वजी।	११॥ श्रीसुब्रतनाथजी।	१९॥ श्रीयशोधरजी।
४॥ श्रीस्वयंप्रभुजी।	१२॥ श्रीअममनाथजी।	२०॥ श्रीविजयनाथजी।
५॥ श्रीसर्व्वानुभूतिजी।	१३॥ श्रीनिष्कषायजी।	२१॥ श्रीमल्लिप्रभुजी।
६॥ श्रीदेवश्रुतजी।	१४॥ श्रीनिष्पुलाकजी।	२२॥ श्रीदेवप्रभुजी।
७॥ श्रीउदयप्रभुजी।	१५॥ श्रीनिर्ममनाथजी।	२३॥ श्रीअनन्तजी।
८॥ श्रीपेढालप्रभुजी।	१६॥ श्रीचित्रगुप्तिजी।	२४॥ श्रीभद्रंकरजी।

॥ इति भविष्यच्चतुर्विंशति तिर्थंकरेभ्योनमः ॥

(वीसविहरमांन नामानि)

१॥ श्रीसीमन्धरजी।	८॥ श्रीअनन्तबीर्यजी।	१५॥ श्रीनेमप्रभुजी।
२॥ श्रीयुगमन्धरजी।	९॥ श्रीसूरप्रभुजी।	१६॥ श्रीईश्वरजी।
३॥ श्रीबाहुजी।	१०॥ श्रीविमलजी।	१७॥ श्रीवयरसेनजी।
४॥ श्रीसुवाहुजी।	११॥ श्रीवज्रधरजी।	१८॥ श्रीमहाभद्रजी।
५॥ श्रीसुजातजी।	१२॥ श्रीचंद्राननजी।	१९॥ श्रीदेवजसजी।
६॥ श्रीस्वयंप्रभुजी।	१३॥ श्रीचंद्रबाहूजी।	२०॥ श्रीअजितवीर्यजी।
७॥ श्रीरुषभाननजी।	१४॥ श्रीभुजंगजी।	

॥ इति विंशति विहरमानतिर्थंकरेभ्योनमः ॥

(च्यार सास्वतानामः)

१॥ श्रीरुषभाननजी।	३॥ श्रीवारिषेणजी।
२॥ श्रीचंद्राननजी।	४॥ श्रीवर्द्धमानजी।

॥ इति चत्वार सास्वता जिनवरेभ्योनमः ॥

॥ पांच प्रतिक्रमणसूत्र विधि ॥

श्रीपंचपरमेष्टिने नमः ॥ णमो अरिहंताणं ॥ णमो सिद्धाणं ॥ णमो आयरियाणं ॥ णमो उवज्झायाणं ॥ णमो लोए सव्व-साहूणं ॥ एसो पंच णमुक्कारो ॥ सव्वपाव प्पणासणो ॥ मंग-लाणंच सव्वेसिं ॥ पढमंहवइ मंगलं ॥ १ ॥ पद ९ ॥ संपदा ८ ॥ अक्षर ६८ ॥ गुरु ७ ॥ लघु ६१

॥ अथ सकल तिर्थंकर नमस्कार लि० ॥

॥ ❋ ॥ श्रीइष्टदेवाय नमः ॥ ❋ ॥ जयउसामिहि ॥ २ ॥ रिस-ह सेत्तुंजि उज्जिंत पहू नेमिजिण । जयउ वीर सच्चउरमंडण । भरवच्छहि मुणि सुव्वय । महुरिपास दुह दुरिअ खंडण । अवर विदेहजि तित्थयर । चिहुं दिसि विदिसि जंकेवि । तीआणागय संपयं । वंदुं जिण सव्वेवि ॥ २ ॥ कम्मभूमिहि ॥ २ ॥ पढम संघयण उक्कोसउ सत्तरिसउ । जिणवराण विहरंतलब्भइ । नव-कोडी केवलिण । कोडिसहस नवसाहु संपय । संपइ जिणवर वीसमुणि । दुइकोडीवरणाणि । समणाकोडीसहसदुइ । थुणिजइ निच्चविहाण ॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा । लक्खा छप्पन्न अठको-डीओ । चउसय छयासीआ । तिलुक्के चेइए वंदे ॥ २ ॥ वंदे नव-कोडिसयं । पणवीसंकोडि लक्खतेवन्ना । अठावीससहस्सा चउसय अठासिआ पडिमा ॥ ३ ॥ जंकिंचि नामतित्थं । सग्गेपा-यालेमाणुसेलोए । जाइंजिणबिंबाइं । ताइं सव्वाइं वंदामि ❋ ॥ ४ ॥ णमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थग-राणं सयंसंवुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरसोत्तमाणं पुरस सीहाणं पुरसवर पुंडरीआणं पुरसवर गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोग-नाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥

भयदयाणं चक्खुदयाणं मग्ग दयाणं सरणदयाणं बोहि-
दयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं धम्म देसिआणं धम्मनायगाणं ।
धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिह-
यवरणाण दंसणधराणं विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जा-
वयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहिआणं मुत्ताणंमोअ-
गाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिव मयल मरुअ मणंत
मक्खय मव्वाबाह मपुणरावत्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणंसंपत्ताणं
णमोजिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जेअ अईआसिद्धा जेअ
भविस्संति अणागएकाले संपइअ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण
वंदामि ❋ ॥ १ ॥ ❋ पद ॥ ३३ ॥ संपदा ॥ ९ ॥ अक्षर ॥ २९७ ॥
गुरु ॥ ३३ ॥ लघु ॥ २६४ ॥ ❋ ॥ जावंति चेइआइं । उड्ढेअ अ-
हेअतिरिअलोएय । सव्वाइंताइंवंदे । इहसंतो तत्थसंताइं ॥ १ ॥
इच्छामिखमा० इच्छाका० भगवन् । जावंति केविसाहू । भरहे
रवए महाविदेहेअ । सव्वेसि तेसिपणओ । तिविहेण तिदंड
विरआणं ॥ २ ॥ अक्षर ॥ ९२ ॥ ❋ नमो र्हत सिद्धाचार्योपा
ध्याय सर्वसाधुभ्यः ॥ ❋ ॥ उवसग्ग हरंपासं । पासं वंदामि
कम्मघण मुक्कं । विसहर विसनिन्नासं । मंगल कल्लाण
आवासं ॥ १ ॥ विसहर फुलिंग मंतं । कंठे धारेइ जो सया
मणुओ । तस्सगहरोगमारी । दुठजराजन्ति उवसामं ॥२॥ चिठउ
दूरे मंतो । तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ । नरतिरिए सुवि जीवा ।
पावंति नदुक्ख दोहग्गं ॥ ३ ॥ तुहसम्मत्ते लद्धे । चिंतामणि क-
प्पपाय बब्भहिए । पावंति अविग्घेणं । जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥
इअ संथुओ महायस । भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण । तादेव दिज्ज
बोहिं । भवे भवे पास जिणचंद ॥५॥ इति श्रीपार्श्व जिनस्तुतिः ॥

❋ ॥ जय वीयराय जगगुरु । होउममं तुहपन्नावओ । नयवं नवनिब्वेओ । मग्गाणुसारिआ इठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोग विरुद्ध चाओ । गुरुजण पूआ परत्थकरणंच सुह गुरुजोगो तव्वयण सेवणा आन्नवमखंमा ❋ ॥ २ ॥ ❋ ॥ अरिहंत चेइयाणं । वंदणवत्तिया । अनत्थूकही । एक नवकारनोकाउसग्गकरी एकथूईनीगाथा कहे ॥ इतिचैत्यवंदनकं ॥ ❋ ॥

॥ अथ इरियावही ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि आए मत्थएणवंदामि ॥ इतिक्षमाश्रमणदंमक: ॥ गुरु ३ लघु २५ ॥ (इच्छाकारेण संदिसह नगवन्) इरिआवहिअं पमिक्कमामि, इच्छं इच्छामि पमिक्कमिउं । इरिआवहियाए विराहणाए । गमणा गमणे पाण क्कमणे वीअक्कमणे हरिअ क्कमणे । उसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा । संताणा संकमणे । जेमे जीवा विराहिआ । एगिंदिआ बेइंदिआ तेइंदिआ चउरिंदिआ पंचिंदिआ अन्निहया वत्तिआ लेसिया संघाइआ संघट्टिआ । परिआविया किलामिआ उद्दविआ ठाणा उठाण संकामिआ जीवियाओववरोविआ । तस्समिच्छामिदुक्कमं ❋ ॥ ७ ॥ ❋ तस्स उत्तरी करणेणं । पायच्छित्त करणेणं । विसोही करणेणं । विसल्ली करणेणं । पावाणं कम्माणं । णिग्घायणठाए । ठामिकाउसग्गं ॥ पद ३२ संपदा ८ गुरु २४ लघु १७५ ॥ एवं ॥ १९९ ॥ ❋ ॥ अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं ठीएणं जंन्नाइएणं उड्डुएणं वाय निसग्गेणं नमलिए पितमुछाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंग संचालेहिं । सुहुमेहिं खेल संचालेहिं । सुहुमेहिं दिठि संचालेहिं ॥ २ ॥ एव माइएहिं आगारेहिं । अनग्गो

अविराहिओ हुज्ज मे काउसग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं भ-
गवंताणं णमोक्कारेण नपारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणे-
णं अप्पाणंवोसरामि ❋ ॥ ४ ॥ ❋ लोगस्स उज्जोअगरे । धम्म
तित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइसं । चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥
उसभ मजिअं च वंदे । संभव मभिनंदणं च । सुमइअ पउम
प्पहं सुपासं । जिणंच चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहंच पुप्फदंतं ।
सीअल सिज्जंस वासुपुज्जंच । विमल मणंतं च जिणं । धम्मं
संतिंच वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथु अरंच मल्लिं । वंदे मुणिसुव्वयं न
मि जिणंच । वंदामि रिठनेमिं । पासं तह वद्धमाणंच ॥ ४ ॥
एवं मए अभिथुआ । विहुअ रयमला पहीण जर मरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा । तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिअ
वंदिअ महिआ । जेते लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरोग्ग बोहि
लाभं । समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा ।
आइच्चेसु अहिअं पयासयरा । सागर वर गंभीरा । सिद्धा सिद्धिं
मम दिसंतु॥❋॥७॥❋ पद २८ संपदा २८ गुरु २८ लघु २२८
[एवंसर्वअक्षर ॥ २५६] सबलोए अरिहंतचेइआणं करेमिका
उस्सग्गं ॥ ❋ ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ पुक्खरवर दीवड्ढे । धायइ
संडेअ जंबुदीवेअ । भरहे रवय विदेहे । धम्माइगरे नमंसा-
मि ॥ १ ॥ तम तिमिर पडल विद्धंसणस्स । सुरगण नरिंद
महिअस्स । सीमाधरस्स वंदे । पुप्फोडिअ मोह जालस्स ॥ २ ॥
जाई जरा मरण सोग पणासणस्स । कल्लाण पुक्खल विसाल सुहा
वहस्स । को देव दाणव नरिंद गणाच्चिअस्स । धम्मस्ससार मुवल
भकरेपमायं॥३॥ सिद्धेभोपयउ णमोजिणमए नंदीसयासंजमे । देव
भाग सुवन्न किन्नरगण स्सब्भुअ भावच्चिए । लोगो जत्थ पयट्ठिओ

जगमणं तेल्लोक मच्चासुरं । धम्मो वद्धउसासओ विजयउ धम्मो त्तरं वद्धओ ॥ ४ ॥ सुअस्सजगवउ करेमि काउसग्गं ॥ ❋ ॥ (पद १६संपदा १६ गुरुअ ३४ लघुअ १८२ एवं २१६)॥ ❋ ॥ वंदणवत्ति आए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाजवत्तिआए निरुवसग्ग वत्तिआए सिद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वद्धमाणीए ठामिकाउसग्गं ॥ १ ॥ अन्नत्थऊससिएणं नीससिएणं इत्यादि ॥ ❋ ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं । लोगग्गमुवगयाणं । णमो सया सव्व सिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणविदेवो जंदेवा पंजली नमंसंति । तं देव देवमहिअं । सिरसावंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि णमुक्कारो । जिणवर वसहस्स वद्धमाणस्स । संसार सागराओ । तारेइ नरंव नारिंवा ॥ ३ ॥ उज्जित सेल सिहरे । दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्म चक्कवट्टिं । अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दोअ वंदिआ । जिणवरा चउव्वीसं । परमट्ठ निट्ठिअट्ठा । सिद्धा सिद्धिं ममदिसंतु ॥ ५ ॥ ❋ ॥ वेयावच्चगराणं । संतिगराणं । सम्मद्दिट्ठि समाहिगराणं । करेमिकाउसग्गं ॥ १ ॥ अणत्थऊससिएणं इत्यादि (संपदा २० पद २० गुरु अक्षर ३१ लघु १६७ एवं १९८) ॥ ❋ ॥ संसार दावानल दाह नीरं । समोहधूली हरणे समीरं । मायारसा दारण सार सीरं । नमामि वीरं गिरिसार धीरं ॥ १ ॥ भावावनाम सुर दानव मानवेन । चूला विलोल कमलावलि मालितानि । संपूरिता भिनत लोक समीहि तानि । कामं नमामि जिनराज पदानि तानि ॥ २ ॥ बोधा गाधं सुपद पदवी नीर पूराभिरामं । जीवा

हिंसाविरल लहरी संग मागाहदेहं । चूलावेलं गुरु गम मणी संकुलं दूरपारं । सारं वीरागम जलनिधिं सादरं साधुसेवे ॥ ३ ॥ आमूला लोलधूली बहुल परिमला लीढ लोलालिमाला । झंकारा राव सारा मलदलकमला गारभूमी निवासे । छाया संनारसारे वरकमलकरे तारहारान्निरामे । वाणीसंदोहदेहे नव-विरहवरं देहिमे देविसारं ॥ ४ ॥ इति वीरस्तुतिः ॥

॥ वांदणां ॥

॥❋॥ इछामिखमासमणो वंदिउंजावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मेमिनग्गहं निसीही । अहो कायं काय । संफासं खमणिज्जो नेकिलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुनेणन्ने दिवसो-वइक्कंतो । जत्तान्ने जवणि जंचन्ने । खामेमि खमासमणो देव-सिअं वइक्कमं । आवसिआए पम्क्किमामि खमासमणाणं । देव सिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचिमिछाए । मणडुक्क-डाए वयडुक्कडाए कायडुक्कडाए । कोहाए माणाए मायाए लोन्नाए । सबकालिआए सबमिछोवयाराए सबधम्माइक्कमणाए आसाय णाए । जोमेअईयारोकओ तस्सखमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं बोसरामि ॥ ❋॥ ॥ अक्षर ॥ १९८ ॥

॥ साधवालोयणा ॥

॥❋॥ इछाकारेण संदिसह नगवन् देवसिअं आलोएमि । इछंआलोएमि । जोमेदेवसिओ अईआरोकओ । काईओ वा ईओ माणासिओ नस्सुत्तो नम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो डुज्झाओ डुविचिंतिओ । अणायारो अणछियवो । असम-णपावग्गो । नाणेतहदंसणेचरित्ते । सुएसामाइए तिएहंगुत्तीणं-चनएहंकसायाणं । पंचएहं महबयाणं । बएहं जीवनिकायाणं ।

सत्तण्हंपिंमेसणाणं अठण्हं पवयणमाईणं । नवण्हं बंभचेर गुत्तीणं दसविहेसमणधम्मे । समणाणं जोगाणं । जंखंमिअं जं विराहिअं । तस्समिछामिडुक्कडं ॥❀॥

॥ श्रावकआलोयणा ॥

॥❀॥ इछाकारेण संदिसह भगवन् । देवसियं आलोएमि इछं आलोएमि । जोमे देवसिओ अइयारोकओ । काईओ वाईओ माणसिओ । उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो । अकरणिज्जो डुज्झाओ डुविचिंतिओ । अणायारो अणछियवो । असावग-पावग्गो । नाणेतह दंसणे चरित्ता चरित्ते । सुए सामाइए तिण्हंगुत्तीणं । चउण्हंकसायाणं । पंचण्हमणुवयाणं । तिण्हं गुणवयाणं । चउण्हं सिक्खावयाणं । वारसविहस्स सावग ध-म्मस्स । जंखंमिअं जंविराहिअं । तस्स मिछामिडुक्कडं ॥❀॥

॥❀॥ ठाणेकमणे चंकमणे आउत्ते । अणाउत्ते हरिअकाय संघट्टे बीयकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे उप्पइयासंघट्टे । सवस्स वि देवसिअ । डुचिंतिय डुभासिय डुचिठ्ठिअ । इछाकारेण संदिसह । इछंतस्सामिछामिडुक्कडं ॥ १ ॥❀॥ संथाराउवट्टण-की । आउट्टणाकी । परिअट्टणाकी । पसारणाकी । उप्पइयासं घट्टणाकी । अचक्खु विसयकायकी । सब्बस्साविराइअ । डुचिं तिअ डुभासिअ डुचिठ्ठिअ । इछाकारेणसंदिसह । इछं-तस्स मिछामिडुक्कडं ॥ १ ॥❀॥ इछाकारेणसंदिसह भगवन् अभूठिओमि अभिंतर । देवसिअंखामेउं । इछंखामेमि देव-सिअं । जंकिंचि अपत्तिअं परपत्तियं । भत्ते पाणे विणए वेया-वच्चे । आलावे संलावे । उच्चासणे । समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए । जंकिंचि मज्झविणय परिहीणं सुहुमंवा वायरंवा ।

तुम्भेजाणह अहंनजाणामि । तस्स मिछामिदुक्कडं ॥ ❋ ॥
॥ इति गुरुवंदणा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ करेमि भंते सामाइयं । सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावनियमं पज्जुवासामि । दुविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए काएणं । न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते । पडिक्कमामि । निंदामि गरहामि । अप्पाणं वोसिरामि ॥❋ ॥ करेमि भंते पोसहं । आहार पोसहं, देसउ । सवउ वा । सरीरसक्कार पोसहं । सवउ बंभचेर पोसहं । सवउ अवावार पोसहं । सवउ चउविहे पोसहे । साव ज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावदिवसं अहोरत्तिं वा पज्जु वासामि । दुविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए काएणं । न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते । पडिक्कमामि निंदामि । गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥❋॥ आयरियउवज्झाए सीसेसाहम्मिए कुलगणेवा । जेमे कया-कसाया । सबे तिविहेण खामेमि ॥१॥ सबस्स समणसंघस्स । भग वउ अंजलिं करिय सीसे। सब्बं खमावइत्ता ।खमामि सबस्स अहि-यंपि ॥ २ ॥ सबस्स जीव रासिस्स । भावउ धम्मनिहियनिय-चित्तो । सव्वं खमावइत्ता । खमामि सव्वस्स अहियंपि ॥ ३ ॥❋॥ सुवर्णशालिनी देयाद् । द्वादसांगी जिनोद्भवा । श्रुतदेवी सदा-मह्य । मसेषश्रुतसंपदं ॥ १ ॥ चतुवर्णायसंघाय । देवी भवन-बासिनी । निहत्य दुरितान्येषा । करोतुसुखमक्षतं ॥ २ ॥ यासां क्षेत्रगतास्संति । साधवः श्रावकादयः । जिनाज्ञां साधयंतस्ता । रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ ३ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जय महायश २ जय महाभाग जय चिंतिय सुहफलय । जय समत्थ परमत्थजाणय । जय २ गुरु गरिम गुरु । जय दुहत्तसत्ताणताणय । थंभणयठिय पासजिण ।

सत्तएहंपिंमेसणाणं अठएहं पवयणमाईणं । नवएहं बंभचेर गुत्तीणं दसविहेसमणधम्मे । समणाणं जोगाणं । जंखंमिअं जं विराहिअं । तस्समिछामिदुक्कडं ॥❋॥

॥ श्रावकआलोयणा ॥

॥❋॥ इछाकारेण संदिसह भगवन् । देवसियं आलोएमि इछं आलोएमि । जोमे देवसिओ अइयारोकओ । काईओ वाईओ माणसिओ । उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो । अकरणिज्जो दुज्झाओ दुविचिंतिओ । अणायारो अणछियवो । असावग-पावग्गो । नाणेतह दंसणे चरित्ता चरित्ते । सुए सामाइए तिएहंगुत्तीणं । चउएहंकसायाणं । पंचएहंमणुवयाणं । तिएहं गुणवयाणं । चउएहं सिक्खावयाणं । वारसविहस्स सावग ध-म्मस्स । जंखंमिअं जंविराहिअं । तस्स मिछामिदुक्कडं ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ठाणेकमणे चंकमणे आउत्ते । अणाउत्ते हरिअकाय संघट्टे बीयकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे छप्पइयासंघट्टे । सवस्स वि देवसिअ । दुचिंतिय दुभासिय दुचिठिअ । इछाकारेण संदिसह । इछंतस्समिछामिदुक्कडं ॥ १ ॥ ❋ ॥ संथाराउवट्टण-की । आउट्टणकी । परिअट्टणकी । पसारणकी । छप्पइयासं घट्टणकी । अचक्खु विसयकायकी । सब्बस्सविराइअ । दुचिं तिअ दुभासिअ दुचिठिअ । इछाकारेणसंदिसह । इछं-तस्स मिछामिदुक्कडं ॥ १ ॥ ❋ ॥ इछाकारेणसंदिसह भगवन् अभुठिओमि अभिंतर । देवसिअंखामेउं । इछंखामेमि देव-सिअं । जंकिंचि अपत्तिअं परपत्तियं । भत्ते पाणे विणए वेया-वच्चे । आलावे संलावे । उच्चासणे । समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए । जंकिंचि मज्झविणय परिहीणं सुहुमंवा वायरंवा ।

तुब्नेजाणह अहंनजाणामि । तस्स मिछामिडुक्कडं ॥ ❋ ॥
॥ इति गुरुवंदणा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ करेमि नंते सामाइयं । सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावनियमं पज्जुवासामि । दुविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए काएणं । न करेमि न कारवेमि । तस्स नंते । पडिक्कमामि । निंदामि गरहामि । अप्पाणं वोसिरामि ॥ ❋ ॥ करेमि नंते पोसहं । आहार पोसहं, देसउ । सवउ वा । सरीरसक्कार पोसहं । सवउ वंनचेर पोसहं । सवउ अवावार पोसहं । सवउ चउविहे पोसहे । सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावदिवसं अहोरत्तिं वा पज्जु वासामि । डुविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए काएणं । न करेमि न कारवेमि । तस्स नंते । पम्किमामि निंदामि । गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ ❋ ॥ आयरियउवज्झाए सीसेसाहम्मिए कुलगणेवा । जेमे कयाकसाया । सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सवस्स समणसंघस्स । नगवउ अंजलिं करिय सीसे । सब्बं खमावइत्ता । खमामि सवस्स अहियंपि ॥ २ ॥ सवस्स जीव रासिस्स । नावउ धम्मनिहियनियचित्तो । सव्वं खमावइत्ता । खमामि सव्वस्स अहियंपि ॥ ३ ॥ ❋ ॥ सुवर्णशालिनी देयाद् । द्वादसांगी जिनोद्भवा । श्रुतदेवी सदामह्य । मसेषश्रुतसंपदं ॥ १ ॥ चतुवर्णायसंघाय । देवी नवनवासिनी । निहत्य दुरितान्येषा । करोतुसुखमक्षतं ॥ २ ॥ यासां क्षेत्रगतास्संति । साधवः श्रावकादयः । जिनाज्ञां साधयंतस्ता । रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ ३ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जय महायश २ जय महानाग जय चिंतिय सुहफलय । जय समत्थ परमत्थजाणय । जय २ गुरु गरिम गुरु । जय डुहत्तसत्ताणताणय । थंनणयठिय पासजिण ।

सत्तएहंपिंमेसणाणं अठएहं पवयणमाईणं । नवएहं बंनचेर गुत्तीणं दसविहेसमणधम्मे । समणाणं जोगाणं । जंखंमिअं जं विराहिअं । तस्समिछामिडुक्कडं ॥❀॥

॥ श्रावकआलोयणा ॥

॥❀॥ इछाकारेण संदिसह नगवन् । देवसियं आलोएमि इछं आलोएमि । जोमे देवसिओ अइयारोकओ । काईओ वाईओ माणसिओ । उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो । अकरणिज्जो डुज्झाओ डुविचिंतिओ । अणायारो अणछियवो । असावग-पावग्गो । नाणेतह दंसणे चरित्ता चरित्ते । सुए सामाइए तिएहंगुत्तीणं । चउएहंकसायाणं । पंचएहंमणुवयाणं । तिएहं गुणवयाणं । चउएहं सिक्खावयाणं । वारसविहस्स सावग ध-म्मस्स । जंखंमिअं जंविराहिअं । तस्स मिछामिडुक्कडं ॥❀॥

॥❀॥ गणेकमणे चंकमणे आउत्ते । अणाउत्ते हरिअकाय संघट्टे बीयकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे उप्पइयासंघट्टे । सवस्स वि देवसिअ । डुचिंतिय डुनासिय डुचिठिअ । इछाकारेण संदिसह । इछंतस्सामिछामिडुक्कडं ॥ १ ॥❀॥ संथाराउवट्टण-की । आउट्टणकी । परिअट्टणकी । पसारणकी । उप्पइयासं घट्टणकी । अचक्खु विसयकायकी । सब्बस्सविराइअ । डुचिं तिअ डुनासिअ डुचिठिअ । इछाकारेणसंदिसह । इछं-तस्स मिछामिडुक्कडं ॥ १ ॥❀॥ इछाकारेणसंदिसह नगवन् अभुठिओमि अप्निंतर । देवसिअंखामेउं । इछंखामेमि देव-सिअं । जंकिंचि अपत्तिअं परपत्तियं । नत्ते पाणे विणए वेया-वच्चे । आलावे संलावे । उच्चासणे । समासणे अंतरनासाए उवरिनासाए । जंकिंचि मज्झविणय परिहीणं सुहुमंवा वायरंवा ।

तुम्भेजाणह अहंनजाणामि । तस्स मिच्छामिदुक्कडं ॥ ❋ ॥
॥ इति गुरुवंदणा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ करेमि भंते सामाइयं । सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावनियमं पज्जुवासामि । दुविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए काएणं । न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते । पडिक्कमामि । निंदामि गरहामि । अप्पाणं वोसिरामि ॥ ❋ ॥ करेमि भंते पोसहं । आहार पोसहं, देसउ । सवउ वा । सरीरसक्कार पोसहं । सवउ बंभचेर पोसहं । सवउ अवावार पोसहं । सवउ चउविहे पोसहे । साव ज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावदिवसं अहोरत्तिं वा पज्जु वासामि । दुविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए काएणं । न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते । पडिक्कमामि निंदामि । गरहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ ❋ ॥ आयरियउवज्झाए सीसेसाहम्मिए कुलगणेवा । जेमे कया-कसाया । सवे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सवस्स समणसंघस्स । भग वउ अंजलिं करिय सीसे । सव्वं खमावइत्ता । खमामि सवस्स अहि-यंपि ॥ २ ॥ सवस्स जीव रासिस्स । भावउ धम्मनिहियनिय-चित्तो । सव्वं खमावइत्ता । खमामि सव्वस्स अहियंपि ॥ ३ ॥ ❋ ॥ सुवर्णशालिनी देयाद् । द्वादसांगी जिनोद्भवा । श्रुतदेवी सदा-मह्य । मसेषश्रुतसंपदं ॥ १ ॥ चतुवर्णायसंघाय । देवी भवन-वासिनी । निहत्य दुरितान्येषा । करोतुसुखमक्षतं ॥ २ ॥ यासां क्षेत्रगतास्संति । साधवः श्रावकादयः । जिनाज्ञां साधयंतस्ता । रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ ३ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जय महायश २ जय महाभाग जय चिंतिय सुहफलय । जय समत्थ परमत्थजाणय । जय २ गुरु गरिम गुरु । जय दुहत्तसत्ताणताणय । थंभणयट्ठिय पासजिण ।

भावियहभीमभवत्थु । भय अवणिंताणंतगुण । तुज्झतिसंझ नमोत्थु ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ अथ सामायक पोसहपारवागाथा ॥

॥ ❀ ॥ भयवं दसन्नभद्दो । सुदंसणो थूलभद्दवयरोय । सफलीकय गिहचाया । साहू एवंविहा हुंति ॥ १ ॥ साहूण वंदणेणं । नासइ पावं असंकियाभावा । फासुअदाणे निज्जर । अभिग्गहो नाणमाईणं ॥ २ ॥ छउमत्थो मूढ मणो । कित्तियमित्तंपि संभरइजीवो । जंचन संभरामि अहं । मिछामेदुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ जंजंमणेण चिंतिय । मसुहं वायाइभासियं किंचि । असुहं काएणकयं । मिछामे दुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसंठियस्स । जीवस्स जाइ जो कालो । सोसफलो बोधव्वो । सेसो संसारफलहेऊ ॥ ५ ॥ ❀ ॥ सामायकविधे लीधी विधे कीधी विधिकरतां अवधि आसातना लागी होय दसमनका दस वचनका बारे कायाका । बत्तीस दूषणां मांह जो कोई दूषण लागो होय सो सहू मनकर वचनकर कायायेंकरी मिछामिदुक्कडं ॥ ❀ ॥ इति सामायिक पोसहपारवागाथा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिरिथंभणयठियपाससामिणो । सेसतित्थसामीणं । तित्थसमुन्नयकारणं । सुरासुराणंच सव्वेसिं ॥ १ ॥ एसमहं सरणत्थं । काउसग्गं करेमि । सत्तीए भत्तीए गुणसुठियस्स । संघस्स समुन्नयानिमित्तं ॥ २ ॥ ❀ ॥ नमोस्तु वर्द्धमानाय । स्पर्द्धमानाय कर्म्मणा । तज्जया व्याप्त मोक्षाय । परोक्षाय कुतीर्थिनां ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या । ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या । सदृशै रिति संगतं प्रशस्यं ।

कथितं संतु शिवायते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्दित जंतुनिर्वृतिं । करोति यो जैनमुखांबुदोद्गतः । सशुक्रमासोद्भव वृष्टिसन्निभो । ददातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिरां ॥ ३ ॥ श्वसितसुरभिगंधा लीढभृंगीकुरङ्गं । मुखशशिनमजस्त्रंविभ्रती याविभर्त्ति । विकचकमलमुच्चैः सास्त्वचिंत्यप्रभावा । सकल सुखविधात्री । प्राणभाजां श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥ ❋ इति वीरस्तुतीः ॥

॥ ❋ ॥ परसमयतिमिरतरणिं । भवसागरवारितरणवरतरणिं । रागपरागसमीरं । वंदे देवं महावीरं ॥ १ ॥ निरुद्ध संसारविहारकारी । दुरन्तभावारिगणानिकामं । निरन्तरं केवलि सत्तमावो । भवावहं मोहभरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारि कुनयागम रूढगूढ । संमोहपंकहरणामलवारिपूरं । संसार-सागरसमुत्तरणोरुनावं । वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३॥ परिमलभरलोभा लीढलोलालिमाला । वरकमलनिवासे हार-नीहारहासे । अविरलभवकारा गारविछित्तिकारं । कुरुकम-लकरेमे मङ्गलं देविसारं ॥ ४ ॥ ❋ ॥ इति वीरस्तुतिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ कमलदलविपुलनयना । कमलमुखी कमलगर्भ समगौरी । कमलेस्थिता भगवती । ददातु श्रुतदेवतासौख्यं ॥ १ ॥ ज्ञानादिगुणयुतानां । स्वाध्यायध्यान संयमरतानां । विदधातुभुवनदेवी । शिवंसदासर्व साधूनां ॥ २ ॥ यस्याःक्षेत्रं समाश्रित्य । साधुभिःसाध्यतेक्रिया । साक्षेत्रदेवतानित्यं । भूयान्नःसुखदायिनी ॥ ३ ॥ ❋ ॥ इति स्तुति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्रीसेढीतटनीतटे पुरवरे श्रीस्थंभनेस्वर्गिरौ । श्रीपूज्याभयदेवसूरिविबुधा धीशैःसमारोपितः । संसक्तःस्तुति भिर्जलैः शिवफल स्फूर्यत्फणापल्लवः । पार्श्वःकल्पतरुःसमे

प्रथयतां नित्यंमनोवांछितं ॥ १ ॥ आधिव्याधिहरोदेवो । जीरावल्लिसिरोमणिः पार्श्वनाथोजगन्नाथो । नतुनाथोनृणां-श्रिये ॥ २ ॥ ❋ इति पार्श्वस्तुतिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ कल्याणकमलागेहं । नीलदेहंमहासहं । नवखंमाविधं-पार्श्वं । सदाध्यायामिमानसं ॥ १ ॥ इति ॥ ❋ ॥ चउ कसाय पडिमल्ल ह्रूरण । दूज्जयमयणमाण मसमूरण । सरसपियंगु वन्नगयगामिय । जयउपास भुवणत्तय सामिय ॥ १ ॥ जसत-णुकंतिकडप्पसिणिद्धउ सोहइफणमणिकिरणालिद्धउ । नंनवज-लहरतडिलयलंछिय । सोजिणपासपयछउवंछिय ॥ १ ॥ ❋ ॥

इति श्रीपार्श्वनाथस्तुतिः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं । सर्वकल्याणकारणं । प्रधानं सर्वधर्म्माणां । जैनं जयतु शासनं ॥ १ ॥ मङ्गलं भगवान् वीरो । मङ्गलं गौतमःप्रभुः । मङ्गलं स्थूलभद्राद्या । जैनोधर्म्मो-स्तु मङ्गलं ॥ २ ॥ ❋ ॥ शिवमस्तु सर्व जगतः । परिहितनि-रता भवंतु भूतगणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं । सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥ ३ ॥ दासानुदासा इव सर्वदेवा । यदीय पादाब्जतले लुठन्ति । मरुस्थली कल्पतरुः सजीयात् । युग-प्रधानो जिनदत्त सूरिः ॥ ४ ॥ ❋ ॥ सिद्धांतसिंधुर्जगदेकबंधु । युगप्रधानः प्रभुतां दधानां । कल्याणकोटी प्रकटीकरोतु । सूरीश्वरो श्रीजिनभद्रसूरिः ॥ ५ ॥ ❋ ॥

॥ अथ साधुप्रतिक्रमण सूत्र ॥

॥ ❋ ॥ चत्तारि मङ्गलं । अरिहंता मङ्गलं । सिद्धा मङ्गलं । साहूमङ्गलं । केवलिपणत्तो धम्मो मङ्गलं ॥ १ ॥ चत्तारि लो-गुत्तमा । अरिहंता लोगुत्तमा । सिद्धा लोगुत्तमा । साहू लो-

गुत्तमा। केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ २ ॥ चत्तारिसरणं पवज्जामि । अरिहंते सरणं पवज्जामि । सिद्धे सरणं पवज्जामि । साहूसरणं पवज्जामि । केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ ३ ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ पगामसिज्जाए । निगामसिज्जाए । संथारा उवट्टणाए । परियट्टणाए । आउट्टणाए । पसारणाए । उप्पइया संघट्टणाए । कुइए कक्कराइए । छीएजंभाइए । आमोसे ससरक्खामोसे आउलमाउलाए । सोअणवत्तिआए । इत्थी विप्परियासिआए । दिठी विप्परियासिआए । मण विप्परियासिआए । पाण भोयण विप्परियासिआए । जोमे देवसियो अइआरोकउ । तस्समिछामि दुक्कडं ॥ पडिक्कमामिगोअरचरिआए । भिख्खायरिआए । उग्घाडकवाड उग्घाडणाए । साणावछादारा संघट्टणाए । मंडीपाहुडिआए बलिपाहुडिआए । ठवणापाहुडिआए । संकिए सहस्सागारे । आणेसणाए । पाणेसणाए। आणभोयणाए । पाणभोयणाए। वीअभोयणाए । हरिअभोयणाए पछाकम्मिआए । पुराकम्मिआए। अदिठहडाए । दगसंसठहडाए। रयसंसठहडाए । पारिसाडणिआए पारिठावणिआए उहा सणभिक्खाए। जंउग्ग मेणं उप्पायणेसणाए अपरिसुद्धं पडिग्गाहिअं । परिभुत्तंवा जंन- परिठवणिअं । तस्समिछामिदुक्कडं ॥ ❁ ॥ पडिक्कमामि चाउक्कालं । सिज्झायस्स अकरणयाए उभउ कालं भंडोवगरणस्स । अप्पडिलेहणाए । दुप्पडिलेहणाए अप्पमजणाए दुप्पमजणाए। अइक्कमे। वइक्कमे अइयारे अणायारे । जोमेदेवसिउ अइआरोकउ। तस्समिछामि दुक्कडं ॥ ❁ ॥ पडिक्कमामि एगविहेअसंजमे। पडिक्कमामि दोहिंबंधणेहिं। रागबं-

इणमेव निग्गंथं पावयणंसच्चं । अणुत्तरं । केवलियं पडिपुन्नं । नेआउयं । संसुद्धं । सल्लगत्तणं । सिद्धिमग्गं । मुत्तिमग्गं । निज्जाणमग्गं । निव्वाणमग्गं । अवितहमविसंधि । सव्वडुक्खपहीणमग्गं । इत्थठिआजीवा । सिज्झंति । बुज्झंति मुच्चंति । परिनिव्वायंति । सव्वडुक्खाणमंतंकरंति । तंधम्मं सद्दहामि । पत्तिआमि । रोएमि । फासेमि । पालेमि । अणुपालेमि । तंधम्मंसद्दहंतो । पत्तिअंतो । रोअंतो । फासंतो । पालिंतो अणुपालिंतो । तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स । अब्भुठिउमि । आराहणाए । विरउमि विराहणाए । असंजमं परिआणामि । संजमं उवसंपज्जामि । अबंभं परिआणामि । बंभं उवसंपज्जामि । अकप्पं परिआणामि । कप्पं उवसंपज्जामि । अन्नाणं परिआणामि । नाणं उवसंपज्जामि । अकिरिअं परिआणामि । किरिअं उवसंपज्जामि । मिछत्तं परिआणामि । सम्मत्तं उवसंपज्जामि । अबोहिं परिआणामि । बोहिं उवसंपज्जामि । अमग्गं परिआणामि । मग्गं उवसंपज्जामि । जंसंभरामि । जंचन संभरामि । जं पडिक्कमामि । जंचन पडिक्कमामि । तस्ससव्वस्स । देवसिअस्स । अइआरस्स पडिक्कमामि । समणोहं संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय । पावकम्मो । अनियाणो । दिठिसंपन्नो । मायामोसविवज्जिउ । अढ्ढाइज्जेसु दीव समुद्देसु । पन्नरस कम्मभूमीसु । जावंति केविसाहू । रयहरण गुछपडिग्गहधारा । पंचमहव्वयधारा । अठारसहस्स सीलांगधारा । अक्खयायारचरित्ता । तेसव्वे । सिरसा मणसा । मत्थएणवंदामि ॥ खामेमि सव्व जीवे । सव्वे जीवा खमंतुमे । मित्तीमे सव्वभूएसु । वेरंमज्झ न केणई ॥ १ ॥ एवमहं आलोइअ नंदिअ ।

गरहिअ दुगुंछिअं सम्मं । तिविहेण पमिकंतो । वंदामि जिणे चउवीसं ॥ २ ॥ ❋ ॥ इति श्रीसाधुप्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सच्चित्त १ । दव २ । विगई ३ ॥ वाहण ४ । तंबोल ५ । वत्थ ६ । कुसुमेसु ७ ॥ पाणहि ८ । सयण ९ । विलेवण १० ॥ बंज्ञ ११ । दिसि १२ । एहाण १३ । ज्ञत्तेसु १४ ॥ इति चउद नियम गाथा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ वंदित्तू सुत्र ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ वंदित्तु सवसिद्धे । धम्मायरिएअ सवसाहूअ । इज्ञामि पमिकमिउं । सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जोमे वया इआरो । नाणे तह दंसणे चरित्तेअ । सुहमोअ बायरोवा । तंनिंदे तंच गरिहामि ॥ २ ॥ डविहे परिग्गहम्मी । सावज्जे बहुविहेअ आरंन्ने । कारावणे अकरणे । पमिक्कमे देसिअंसवं ॥ ३ ॥ जंबद्ध मिंदिएहिं । चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं । रागेणव दोसेणव । तं निंदे तंच गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे ठाणेचंकमणे अणाज्ञोगे । अन्निउगे अनिउंगे । पमिक्कमे ॥ ५ ॥ संकाकंखविगंठा । पसंसतहसंथवो कुलिंगीसु । सम्मत्तस्सइआरे । पमिक्क० ॥ ६ ॥ उक्काय समारंन्ने ॥ पयणेअ पयावणेअ जेदोसा । अत्तठाय परठा । उन्नयठाचेव तंनिंदे ॥ ७ ॥ पंचएहमणुवयाणं । गुणवयाणंचतिएहमइआरे । सिक्खाणंच चउएहं ॥ पमिक्कमे० ॥ ८ ॥ पढमे अणुवयम्मी । थूलगपाणाइवायविरईउ । आयरिअ मप्पसत्थे । इत्थपमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वहबंधउविठेए । अइन्नारेन्नत्तपाणवुठेए । पढम वयस्स इआरे । पमिक्कमे० ॥ १० ॥ बीए अणुवयम्मी । परिथूलग अलिअवयण विरइओ । आयरिअ मप्पसत्थे । इत्थपमाय

प्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहस्सारहस्सदारे । मोसुवएसेअ्र कूडलेहे-अ ॥ बीअवयस्सइआरे । पडिक्कमे० ॥ १२ ॥ तइएअणुव्वय म्मी । थूलगपरदव्वहरणविरइउ । आयरिअमप्पसत्थे । इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पउगे । तप्पडिरूवे विरुद्ध गमणेअ । कूडतुल्लकूडमाणे । पडि० ॥ १४ ॥ चउत्थेअणुव्वय म्मी । निच्चं परदारगमण विरइउ । आयरिअमप्पसत्थे । इत्थ-पमा० ॥ १५ ॥ अपरिग्गहीया इत्तर । अणंग वीवाह तिव्व-अणुरागे । चउत्थवयस्सइआरे । पडिक्क० ॥ १६ ॥ इत्तोअ-णुव्वए पंचमम्मी । आयरिअमप्पसत्थंमि । परिमाणपरिछेए । इत्थ० ॥ १७ ॥ धणधन्नखित्तवत्थु रुप्पसुवणेअ कुविअ परिं माणे । दुप्पएचउप्पयम्मी पडि० ॥ १८ ॥ गमणस्सय परि-माणे । दिसासुउड्ढं अहेयतिरिअंच । वुड्ढिस्सइ अंतरद्धा । पढमम्मिगुणव्वएनिंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमिअ मंसंमिअ । पुप्फे-अ फलेअ गंधमल्लेअ । उवभोग परीभोगे । बीअम्मिगुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिबुद्धे । अप्पोलडुप्पोलिएअ आहारे । तुच्छोसहिभक्खणया । पडि० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसाडी । भाडी फोडीसु वजए कम्मं । वाणिज्जं चेव दंत लक्ख । रस केस विसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खुजंतपिल्लणंकम्मं । निल्लंछ-णंच दवदाणं । सरदह तलावसोसं । असईपोसंच वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गिमूसल जंतग । तणकट्ठेमंतमूलभेसिज्जे । दिन्नेदिवावएवा । पडि० ॥ २४ ॥ एहाणुवट्टण वन्नगविलेवणे सद्दरूवरसगंधे । वत्थासणआभरणे । पडि० ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कइए । मोहरि अहिगरण भोगअइरित्ते । दंडंमिअणट्ठाए तईअम्मिगुणव्वएनिंदे ॥ २६ ॥ तिविहेदुप्पणिहाणे । अणवट्ठा

णेतहासइ विहुणे । सामाइय वितहकए । पढमे सिक्खा वएनिंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे । सद्देरूवेअ पुग्गलक्खेवे । देसाविगासिअम्मी । बीएसिक्खावएनिंदे ॥ २८॥ संथारुच्चार- विही । पमायतह चेव भोयणाभोए पोसहविहिविवरीए । तइ एसिक्खावएनिंदे ॥ १९ ॥ सच्चित्तेनिक्खमणे ॥ पिहणेववएस- मच्छरेचेव । कालायक्कमदाणे । चउत्थेसिक्खावएनिंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसुअ दुहिएसुअ । जोमे असंजएसुअणुकंपा । रागेणव- दोसेणव । तंनिंदेतंचगरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसुसंविभागो । नक उ तव चरण करण गुत्तीसु । संतेफासुअदाणे । तंनिंदे तंचगरिहा- मि ॥ ३२ ॥ इहलोएपरलोए । जीविअमरणेअ आससपउगे । पंचविहो अइआरो । मामझं हुज्जमरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स । पडिक्कमे वाइअस्सवायाए । मणसा माणसिअस्स । सवस्सवयाइयारस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्खागारवेसु । सण्णा कसाय दंडेसु । गुत्तीसुअ समिईसुअ । जोअइआरो तंनिंदे ॥ ॥ ३५ ॥ सम्मदिठीजीवो । जइविहुपावं समायरेकिंचि । अप्पो सिहोइवंधो । जेणननिद्धंधसंकुणइ ॥ ३६ ॥ तंपिहुसपडिक्कमणं । सप्परिआवंस उत्तरगुणंच । खिप्पं उवसामेई । वाहिव सुसि क्खिउ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहाविसं कुठगयं । मंतमूल विसारया । विज्जाहणंत मंतेहिं । तोतं हवइ निबिसं ॥ ३८ ॥ एवं अठविहं कम्मं । राग दोस समज्जिअं । आलोअंतोअ निंदंतो । खिप्पं हणइसुसावउ ॥ ३९ ॥ कयपावोविमणुस्सो । आलोइअनिंदिअ गुरुसगासे । होइअइरेगलहुउ । उहरिअभरुवभारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण । सावउ जइवि बहुरउ होइ । दुक्खाणमंत किरिअं । काही अचिरेणकालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणाबहुविहा

नयसंभरिअपम्भिक्कमणंकाले । मूलगुण उत्तरगुणे ।तंनिंदेतंच गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्सधम्मस्सकेवलिपणत्तस्स । अब्भुठिउ मिआराहणाए । विरउमिविराहणाए । तिविहेणपम्भिक्कंतो । वंदामिजिणेचउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंतिचेइआइं । उड्ढेअअहेअ तिरिअलोएअ । सवाइंताइंवंदे । इहसंतोतत्थसंताइं ॥ ४४ ॥ (भगवन्) जावंति केविसाहू । भरहेरवए महाविदेहेअ । सवे सितेसिपणउ । तिविहेणातिदंम्भविरिआणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचिय पाव पणासणीए । भव सय सहस्स महणीए । चउवीसजिण विणिग्गयकहा । वउलंतुमेदीअहा ॥ ४६ ॥ ममंमंगलमरिहंता सिद्धासाहूसुअंचधम्मोअ । सम्मदिठीदेवा । दिंतुसमाहिंचबोहिंच ॥ ४७ पम्भिसिद्धाणं करणे । किच्चाण मकरणेहिं पम्भिक्कमणं । असद्दहणेअतहा । विवरीअ परूवणाएअ ॥ ४८ ॥ खामेमिसवजीवे । सवेजीवाखमंतुमे । मित्तीमेसवभूएसु । वेरंमज्झ नकेणइ ॥ ४९ ॥ एवमहंआलोइअनिंदिअ । गरहिअदुगुंछियंसम्मं । तिविहेणपम्भिक्कंतो । वंदामिजिणेचउवीसं ॥ ५ ॥ ❋ ॥

॥ इति श्री श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र समाप्तः ॥ ❋ ॥

॥❋॥ अथ दशपच्चक्खाणविचार लिख्यते ॥❋॥

॥ ❋ ॥ तहां प्रथम चउदै नियमसंभारे सो विगय देसावगासीयुक्तइसतरै पच्चक्खाणकरै ॥ ❋ ॥ उग्गएसूरे नमोक्कारसहियं (मुंठसीं) पच्चक्खाइ चउविहंपि आहारं । असणं । पाणं । खाइमं । साइमं । अन्नत्थणाभोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्तरागारेणं । सवसमाहिवत्तियागारेणं । विगइउपच्चक्खाइ । अन्नत्थणाभोगेणं । सहस्सागारेणं । लेवालेवेणं । गिहत्थसंसिठेणं । उक्खित्तविवेगेणं । पडुच्चमक्खिएणं । पारिठावणियागारेणं । महत्तरा-

गारेणं। सव्वसमाहिवत्तियागारेणं॥ देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खाइ। अणत्थणाभोगेणं। सहस्सागारेणं। महत्तरागारेणं। सव्वसमाहिवत्तियागारेणं। वोसरइ॥ इति नवकारसीपच्चक्खाणं विगय देशावगासीयुक्तं॥ १॥ ॥❋॥ ॥❋॥

॥❋॥ तथा जो श्रावक नियम संभारे नही। सो विगइका (अर) देसावगासीका आगार नपचखे। निकेवल। नवकारसी आदिक पच्चक्खाण करै ॥ यथा ॥ ॥❋॥ ॥❋॥

॥❋॥ उग्गएसूरे नमोक्कार सहियं पच्चक्खाइ। चउव्विहंपि आहारं। असणं। पाणं। खाइमं। साइमं। अण०। सह०। वोसरइ। इति नवकारसी पच्चक्खाण॥ आगार॥ २॥ ॥श्री॥

॥❋॥ पोरसिं (मूंठसिं) पच्चक्खाइ। उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं। असणं। पाणं। खाइमं। साइमं। अणत्थ०। सहस्सा०। पच्छन्नकालेणं। दिसामोहेणं। साहुवयणेणं। सव्व०। वोसरइ॥ विगइओ पच्चक्खाइ। इत्यादि पुव्वंकीपरैकहणा॥ इति पोरसी पच्चक्खाण॥ २॥ आगार॥ ६॥ ॥❋॥

॥❋॥ इसीमाफक साढपोरसीका पच्चक्खाण जाणना। इतना विशेष है। पोरसिं पच्चक्खाइ (इहां) साढपोरसिंपच्चक्खाइ कहणो॥ इति साढपोरसीपच्चक्खाण आगार॥ ६॥❋॥ सूरे उग्गए। पुरमड्ढं अवड्ढं (वा) पच्चक्खाइ। चउव्विहंपि आहारं। असणं। पाणं। खाइमं। साइमं। अण०। सह०। पच्छ०। दिसा०। साहु०। मह०। सव्व०। विगइओ पच्चक्खाइ। इत्यादि पूर्व्ववत। इति पुरमड्ढपच्चक्खाण॥ ३ आगार ७॥ ❋॥ ॥श्री॥

॥❋॥ पोरसिं साढपोरसिं (वा) पच्चक्खाइ। उग्गएसूरे। चउव्विहंपि आहारं। असणं। पाणं। खाइमं। साइमं। अण०।

णं। पाणं। खाइमं। साइमं। अण०। सह० मह०। सब्ब०। वोसरइ॥ इति दिवसचरमपच्चक्खाण १०॥❋॥

॥❋॥ दिवसचरमं पच्चक्खाइ डुविहंपि आहारं। असणं। खाइमं। अण०। सह०। मह०। सव्व०। वोसरइ॥
इति दिवसचरमडुविहार पच्चक्खाण॥❋॥ ॥❋॥ ॥❋॥

॥❋॥ पाणहारदिवसचरमं पच्चक्खाइ अण०। सह०। मह०। सव्व०। वोसरइ॥❋॥ इति पाणहार पच्चक्खाण०॥❋॥

॥❋॥ भवचरमं पच्चक्खाइ। तिविहं चउव्विहंपि आहारं। असणं। पाणं। खाइमं। साइमं। अण०। सह०। मह०। सव्व। वोसरइ॥ आगार॥४॥ (भवचरम दोआगार का पिण होय)॥ इति भवचरमपच्चक्खाण॥❋॥ ॥❋॥ ॥❋॥

॥❋॥ तथा गंठसहि। मुंठसहि। अंगुठसहि। प्रमुख अभिग्रह पच्चक्खाणके पिण यह च्यार आगार। अण०। सह०। मह०। सब्ब०। वोसरइ। पांचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुके होय॥❋॥ इति अभिग्रह पच्चक्खाण॥❋॥ ॥❋॥

॥❋॥ अहण्णं भंते। तुम्हाणं समीवे। देसावगासियं पच्चक्खामि। दव्वउ। खित्तउ। कालउ। भावउ। दव्वउणं देसावगासियं। खित्तउणं इत्थवा अणत्थवा। कालउणं महुत्तधारणापमाणे। जावनियमं पच्चक्खामि। भावउणं जावगहेणं नगहिज्जामि। छलेणं नछलिज्जामि। अण्णेणकेविरायंकेणवा। एसो परिणामो नपरिवज्जइ। ताअभिग्गह। अणत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं। महत्तरागारेणं। सव्वसमाहिवत्तियागारेणं। वोसराइ॥ इति देसावगासीपच्चक्खाण॥❋॥

॥❋॥ तथा साधु पच्चखाणकरै। तबदेसावगासी नहिं

पचखै। अरुतिविहार उपवासमें । आबिलमें निवीमें एकासण प्रमुखमें पाणस्सका ६ आगारपच्चखै (सो दिखावेहै) पाणस्स॥ लेवाडेणवा । अलेवाडेणवा अत्थेणवा वहलेणवाससित्थेणवा असित्थेणवा वोसरइ ॥ ॥❋॥ ॥❋॥ ॥❋॥

॥ अथ प्रत्याख्यान आगारार्थ लिख्यते ॥

॥ उग्गए सूरे नमोक्कार सहियं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं। (अर्थ) इहां गुरु कहै पच्चक्खाइ शिष्य कहै पच्चक्खामि ॥ पच्चक्खाइका अर्थ सर्वठिकाणें अंगीकार वाचक। जाणनो (जैसें) सूरज उदय हुवांवाद। नवकारसी व्रत अंगीकार करुं। यह पच्चक्खाण (महुर्त्त) दोघडी काल उपरांत। जहां तक नवकार गुणकर पारुं नहिं। तहां तक (चउवि०) चारुं आहारनो त्यागरूप व्रत अंगीकार करुं ॥ (चार प्रकारको आहार लिखते हैं)। असणं ॥ पाणं ॥ खाइमं ॥ साइमं। (असणं व्याख्या) असण कहतां अन्न। चोषा ज्वारि वरटी मूंग चिणा गहुं प्रमुख सर्वधान। सत्तु गहुंकों आदिलेके सर्व तरैको आटो ॥ सर्व तरैका साग। लाडू प्रमुख सर्वपकवान। सूरणादिक सर्वकंद। दूध दही मांभादिक। सर्वकवली वस्तु। हींग विरहाली। लूण सैंधवादिक। इत्यादिक सर्व अशणमांहि जाणना ॥ १ (पाणं। व्याख्या) आछण जवोदक तुषोदक तंदुलोदक उष्णोदक शुद्धोदक सर्वतरेकाजल पाण आगारमें जाणना ॥ २ ॥ (खाइमं। व्याख्या) खादिम। सूंखडी नालेर खजूर द्राख सेक्योधांन आंबा केला काकडी अखरोट खारक बिदाम प्रमुख सर्व जातनोमेवो। सर्व जातनाफल ॥ खादमजाणना ॥ ३ ॥ (साइमं। व्याख्या) स्वादिम। तंबोल सूंठि मिरच पींपर हरडै बहेडा तुलछी कसेलो काथो जेठीमधु तज तमालपत्र इलायची लवंग वायविडंग अजमो अजमोद कुलिंजण चिणकबोवा कचूर नागरमोथ पांन सुपारी पुहकरमूल जवासामूल बावची बांउलछालि धवछालि खेजड छाल खयरसार ए सर्वस्वादिम जांणना ॥ ४ ॥ अब अनाहार लिखतेहैं ॥ नींबछालि मूल पांन सिली गोमुत्र गिलोय किरायतो अतिविष कूडउ सुक

डिराख रोहिणीछाल पींपलामूल बच धमासन रीगणी एलियो चिणोठी कयर बोरिनामूल (इत्यादि) अणाहार पिण इच्छासंयुक्त छोम्हना (यहजो) इच्छा विना अनिष्ट पणें लीजै । जबतो अनाहारहै । जो इच्छासंयुक्त भावता लीजै तो आहार को दूषण लगै । (अबपच्चक्खाणके आगारोंका अर्थ लिखते हैं) जिस पच्चक्खाणमें जितने आगार होय ॥ सो आगार रखके पच्चक्खाण नियम करै ॥ अन्नत्थणा भोगेणं ॥ १ ॥ (व्याख्या) अनाभोगटाली । अनाभोग कहियै अत्यन्त विस्मृत होणेंसें) किया जो (पच्चक्खाण यादनरहै । भूलकर कोई चीज मुंहमें घाली होय वा खाणेमें आई होय पिण जाण्यां पीछे तत्काल नाख देवै तो पच्चक्खांण भाजै नही । जाण्यां पछै भक्षण करै तो पच्चक्खाण भाजै ॥ १ ॥ पच्छन्न कालेणं । (व्याख्या) कालकी प्रछन्नता । आकाशै गर्द उडतीहोय । वा आकाशै वद्दलछाया होय । तथा पर्वत प्रमुखकी ओट आजावे । सूरज न दीसै । तब भरमसुं पच्चक्खाण काल संपूर्ण हुवो जाण कर भोजन करै तो व्रत भंग न होय ॥ ३ ॥ सहस्सागारेणं । (व्याख्या) सहसाकार कहीयै अत्यन्त उतावलकै जोगे । अथवा । अकस्मात् विलोवतां तोलतां घृत प्रमुखनो छांटो मुखमें । पड़े तो । व्रतभंग न होय ॥ २ ॥ दिसा मोहेणं (व्या०) दिशकों अजाणतो वैसे । जो दिशा भूल मनुष्य । पूर्वदिशाकुं पश्चिम दिशि जांणें । इस कारणसें । पच्चक्खाण काल पूर्णहुवा विनां भोजन करै तो व्रतभंग न होय ॥ ४ ॥ साहुवयणेणं (व्याख्या) साधूकै बचनसे उग्घाडा पोरिसी आदिक भरमसंयुक्त सुणके । पच्चक्खाण काल पूरण हुवो जाणि कर भोजन करै तो व्रतभंग न होय ॥ ५ ॥ सब्ब समाहि वत्तिया गारेणं (व्याख्या०) पच्चक्खाण काल पूरण हुवां प्रथम हीज अकस्मात् शूलादिक रोग ऊपजै । तिससें कदास परिणामोंकी थिरता नरहै । आर्त्त रौद्र ध्यान उत्पन्न होय । तब उसरोगीकुं रोग मिटावन वावत औषधादिक देवै । वा आपलेवै । तो पच्चक्खाण भंग नही होय ॥ ६ ॥ महत्तरागारेणं (व्या०) पच्चक्खाण पालणेंसें । जितनी कर्मोंकी निर्जरा होती है । उसनिर्जरासें अधिक निर्जरा होनेका कारण । और कोई

पुरुषसें वन नहीआवै । अैसा जो । चैत्यसंघादि प्रयोजन होनेंसें । पच्चक्खाण काल पूरण हुवा विनां भोजन करै तो व्रत भंग न होय ॥ ७ ॥ सागारी आगारेणं (व्या०) गृहस्थ देखतां साधु भोजन न करै । अैसी जिनराजकी आज्ञाहै । इसीसें कोई साधुनें एकासनादिक पच्चक्खाण किया है । भोजन करनेंकुं वैठाहै । तिस वखत कोईक गृहस्थ साधु पास आय वैठे । तब साधु उस ठिकाणेंसुं उठ कर ओर ठिकाणें जायके भोजन करै तो व्रत भंग नहोय ॥ ओर गृहस्थकों यह आगार ऐसें है) कि जिस पुरुषकी निजर लगती होय तो उस आयां उठि कर ओर ठिकाणें भोजन करै तो पच्चक्खाण भंग नहोय ॥ ८ ॥ आउट्टण पसारेणं (व्या०) पगप्रमुख जो एकठे करनेंसें । तथा पसारनेंसें । थोडासा आसन चल जाय । तो व्रतभंग नहोय ॥ ९ ॥ गुरु अनुट्ठाणेणं (व्या०) आपका गुरु आणेंसें । तथा । आपसें । कोई वडा पुरुष आणेंसें । विनय निमित्तै । एकासणादि व्रतमें । भोजन करतो पिण आसन छोड उठ खडो होय । तोपिण व्रत भंग नहोय ॥ १० ॥ पारिट्ठावणियागारेणं (व्या०) (सर्व पच्चक्खाणां मे यह आगार साधुका है) जो आहार नाखणेंसें बहुत जीव विराधना होती जांण कर (गुरु कहे) वह सरस आहार है परठोमति । ऐसी आज्ञा देवे (तो) एकासणादि व्रतधारी साधु । दूसरी वखत आहार करै । तो पिण व्रतभंग नहोय ॥ ११ ॥ लेवालेवेणं (व्या०) भोजन करनेंका थाल प्रमुख भाजन । तिसकै मांहि घृतादिक विगय द्रव्यका अंश लगाहै । तिसकुं हाथ प्रमुख सें पूंछगेरा । परंतु किंचित वेमालुमसा रह गया होय । उस भाजनमें आयंविलादि व्रतधारी भोजन कर लेवे । तो व्रत भंग नहोय ॥ १२ ॥ उक्खित्तविवेगेणं (व्याख्या) आयंविलादि पच्चक्खाणमें ॥ नही खाणें जोग्य जो विगय द्रव्य प्रमुख । (तिसका फरस) खाणें जोग्य द्रव्यसें किंचित् होगया होय । वहखाणें में आजावै । तो व्रत भंग नहोय । ॥ १३ ॥ गिहत्थ संसिट्ठेणं (व्या) भोजन पुरुसै जिस सेती । अैसा कुडछा आदि भाजन । विगय प्रमुख द्रव्य सें वेमालुम खरडा होय । प्रत्यक्ष निजरसें कदाचित्मालुम न होय । जो उस वासणसें भोजन पुरुसै

तो व्रत भंग न हो ॥ १४ ॥ परुवसुक्खिवएणं (व्या०) सर्वथा लूखी रोटी खाखराप्रमुख द्रव्य किंचिन्मात्र घृतादिकसुं बेमालुम चोपडनें में आया होय । परंतु घृतादिक का सवाद मालुम नही पडता होय । जो (नीवीं) पच्चक्खाण मध्य ऐसा द्रव्यकुं खाणेंमें आजावेतो व्रतभंग न होय ॥ १५ ॥

॥ इति पंचदशा गाराणां लेशतोऽर्थ संपूर्णम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ दोचेव नमुक्कारो । आगाराछच्चहुंति पोरसिए । सत्तेवय पुरमड्ढे । एगासणंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्तेग ठाणस्सओ । अठे वय आयंबिलंमि आगारा । पंचे वयभत्तठे । छप्पाणे चरिमचत्तारी ॥ २ ॥ पंचचउरो अभिग्गहे । निव्वीए अठ नवय आगारा । अप्पावरणे पंचउ । हवंति सेसेसु चत्तारी ॥ ३ ॥

॥ ❋ ॥ इति आगार संख्यागाथा ॥ ❋ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण ॥ ❋ ॥

॥ सूत्र अर्थ साचो सरदहुं १ ॥ सम्यक्तमोहनी २ ॥ मिथ्यात्वमोहनी ३ ॥ मिश्रमोहनी ४ ॥ परिहरुं ४ ॥ (यहच्यार पमिलेहण मुहपत्तीखोलतीवखत कही जें) कामराग १ ॥ स्नेहराग २ ॥ दृष्टिराग ३ ॥ परिहरुं (यह सातेवोल प्रथम कही जें) । सुगुरु १ ॥ सुदेव २ ॥ सुधर्म्म ३ ॥ आदरुं ॥ कुगुरु १ ॥ कुदेव २ ॥ कुधर्म्म ३ ॥ परिहरुं ॥ ज्ञान १ ॥ दर्शन २ ॥ चारित्र ३ ॥ आदरुं । (यहनवपमिलेहणभावें हाथे करीजे) । ज्ञानविराधना १ ॥ दर्शनविराधना २ ॥ चारित्रविराधना ३ ॥ परिहरुं ॥ मनोगुप्ति १ ॥ वचन गुप्ति २ ॥ कायगुप्ति ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंम १ ॥ वचनदंम २ ॥ कायदंम ३ ॥ परिहरुं ॥ (यह नव पमिलेहण जीमणें हाथे करीजे । यह पचवीस बोल मुहपत्तीका जाणना ॥ अब पचवीस पमिलेहण अंगनी कहतेहैं ॥ कृष्णलेस्या १ ॥ नीललेस्या २ ॥

कापोतलेस्या ३ ॥ परिहरुं ॥ माथै निलाडै ॥ रुद्धिगारव १ ॥ रसगारव २ ॥ सातागारव ३ ॥ मुखै परिहरुं मायाशल्य १ ॥ नियाणाशल्य २ ॥ मिछादंशणशल्य ३ ॥ हीयै परिहरुं ॥ क्रोध १ ॥ मांन २ ॥ (जीमणैकांधै काखे परि०) ॥ माया १ ॥ लोभ ॥ २ ॥ (डावे कांधै वगले परि०) । हास्य १ ॥ रति २॥ अरति ३॥) डावे हाथेपरिहरुं) ॥ भय १ ॥ शोक २ ॥ दुगंछा ३ ॥ (जीमणे हाथे परिहरुं) ॥ पृथ्वीकाय १ ॥ अप्पकाय २ ॥ तेऊकाय ३ ॥ (डावे पगे परिहरुं) । वाऊकाय १ ॥ वनस्पतीकाय २ ॥ त्रसकाय ३॥ (जीमणेंपगे परिहरुं) ॥ इति मुहपत्ती पडिलेहणसंपूर्णम् ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ थापनाचार्यनी पडिलेहणकरतां ॥ १३ ॥ बोलचिंतवीजै सो लिखिते हें ॥ सुद्धस्वरूपधारूं १ ॥ ज्ञान २ ॥ दर्शन ३ ॥ चारित्रसहित ४ ॥ सरदहणासुद्धि ५॥ प्ररूपणासुद्धि ६॥ दर्शनसुद्धि ७ ॥ सहित पंचाचारपालूं ८ ॥ पलावुं ९ ॥ अनुमोदुं १० ॥ मनोगुप्त ११ ॥ वचनगुप्त १२ ॥ कायगुप्त १३ ॥ एवं १३॥ बोल श्रीधर्मरत्नप्रकरण सूत्रवृत्तौ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ आजूणा चार पहर दिवसमें । जोमें जीव विराध्या होय । सातलाख पृथ्वीकाय । सातलाख अप्पकाय । सातलाख ते ऊकाय । सातलाख वाऊ काय । दशलाख प्रत्येक वनस्पती काय । चवदेलाख साधारण वनस्पतीकाय । दोयलाख वेन्द्री । दोयलाख तेंद्री । दोयलाख चउरिंद्री । चारलाख देवता । चारलाख नारकी । चारलाख पंचेन्द्रीतिर्यंच । चवदेलाख मनुष्य । एवं चारगती । चौरासीलाख जीवायोनिमें । जो

कोई जीवहण्यो होय । हणायो होय । हणतां प्रतें भलोजा ण्यो होय । तेसहू । मन । वचन । कायाइंकरी । मिच्छामिडुक्कडं ॥ प्राणातिपात १ । मृषावाद २ । अदत्तादांन ३ । मैथुन ४ । परिग्रह ५ । क्रोध ६ । मांन ७ । माया ८ । लोभ ९ । राग १० । द्वेष ११ । कलह १२ । अभ्याख्यान १३ । परपरीवा द १४ । पैशुन्य १५ । अरति रति १६ । मायामृषावाद १७ । मिथात्वशल्य १८ । एअढ्ढारहपापस्थानक सेव्या होय । सेवा या होय । सेवतांप्रते भलाजाण्यां होय । ते सहू मन वचन कायाइं करी । मिच्छामि डुक्कडं ॥ ❋ ॥ ज्ञान । दर्शन । चारित्र पाटी । पोथी । ठवणी । कमली । नवकरवाली । देवगुरुधर्म्म नी आसातनाकरी होय । पनरैकर्मादाननी आसेवनाकरी होय राजकथा । देशकथा । स्त्रीकथा । भोक्तकथा । करी होय । और जो कोई परनिंदा यें करी । पाप कियो होय । करायो होय करतांप्रते अणुमोद्युं होय । ते सर्व । मन । वचन । कायायें करी । दिवसअतीचार आलोयणेंकरी । पडिक्कमणा माहें आलोवं । तस्स मिच्छामि डुक्कडं । इति लघुअतीचार ॥

॥ ❋ ॥ अथ पाखी चौमासी संवछरी वृद्धअतीचार ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नाणंमिदंसणंमिअ । चरणंमितवेय तहयविरयंमि । आयरणंआयारो । इह एसो पंचहाभणिउ ॥ १ ॥ अर्थः ॥ ज्ञाना चार १ ॥ दर्शनाचार २ ॥ चारित्राचार ३ ॥ तपाचार ४ ॥ वीर्याचार ५ ॥ एवं पांचविधि आचारमांहि जोअतीचार । पक्षदिवसमांहि । सूक्ष्म बादर । जांणतां अजांणतां । हुओ होय तेसहू मन बचन कायाइंकरी मिच्छामिडुक्कडं ॥ ❋ ॥ (तत्र

ज्ञानाचारना आठअतीचार ॥ काले विणए बहुमाणे। उवहाणे तहयनिन्नवणे। वंजण अत्थतदुभए। अठविहो नाणमायारो ॥ १ ॥ ज्ञान कालवेलामांहि पढिउंगुणिउं नही। अकालेपढिउं। विनयहीन। बहुमांनहीन। उपधांनहीन। श्रीउपाध्यायकनें। नहीपढिउं। अथवा अनेराकनें पढिउं। अनेरो गुरु कह्यो। व्यंजन अर्थ तदुभय कूडोपढ्यो। देववांदणें। पडिक्कमणें। सिज्झाय करतां पढतां गुणतां। कूडोअक्षर कानेंमात्रें। अधिको उछो। आगलपाछलभणयो। सूत्र अर्थ कूडाभणया। भणीनें वीसारयो। तपोधनतणेंधर्मे। काजो अणउधरयै। दांडीअण पडिलेही। वसती अणसोधी। असिझाई अणोझकालवेला मांहि। दसवैकालिक प्रमुख। सिद्धांतभणयो गुणयो। योगव ह्यांपखें भणयो ॥ ज्ञानोपगरण ॥ पाटी पोथी ठवणी कवली सांपडा सांपडी वहीदस्तरी उलियाकागलप्रमुख प्रतें। आसातना हुई। पगलागो। थूकलागो। उसीसैमूंक्यो कनेंछतां आहार नीहारकीधो। ज्ञानद्रव्य भक्षणउपेक्षणकीधो। प्रज्ञापराधे विणास्यो। विणसतोउवेख्यो। छतीसक्तें सार संभाल नकीधी। ज्ञांनवंत प्रतें मछरवह्यो। अवज्ञा आसातना कीधी। कोईप्रतें भणतां गुणतां प्रद्वेष मत्सर अंतराय अपघातकीधो। मतिज्ञान। श्रुतिज्ञान अवधिज्ञान। मनपर्यवज्ञान। केवलज्ञान। ए पांच ज्ञानतणी। असद्दहणाकीधी। कोई तोतलो बोबडोहस्यो वितर्क्यो। आपणा जाणपणातणो गर्वचिंतव्यो ॥ ❋ ॥ अष्टविधज्ञानाचारविषय जोअतीचार। पक्षदिवसमांहि। सूक्ष्मबादर जाणतां अजाणतां हुवोहोय। तेसहू मन वचन कायाइंकरी मिछामिदुक्कडं ॥ ❋ ॥ दशनाचारनाआठअतीचार ॥ ❋ ॥

निस्संकिय निक्कंखिअ । निव्वितिगिच्छा अमूढ दिठीअ । उववू
हथिरीकरणे । वच्छल्लपन्नावणे अठ ॥ १ ॥ देवगुरुधर्मतणेंविषे
निस्संकपणोनकीधो । तथाएकांत निश्चयधरचो नही । सगलाई
मत नलाछे । एहवी श्रद्धाकीधी । धर्मसंबंधियाफलतणें विषे ।
निःसंदेहबुद्धिधरीनही । चारित्रिया साधु साधवीतणा मलिमली
नगात्रदेखी । डुगंगाछपजावी । मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रन्नावना
देखी । मूढदृष्टि पणोकीधो । संघमांहि गुणवंततणी । अनुप
वृंहणा । अस्थिरीकरणं । अवात्सल्य अप्रीति अन्नक्ति चिंतवी ।
संघमांहि थिरीकरण । वात्सल्यशक्तिछतें प्रन्नावनानकीधी ।
देवद्रव्यविणासिउ । विणसतुं उवेषीउ । छतीशक्तें सारसं
न्नाल नकीधी । साधर्मिकस्युं कलहकर्मकीधो । जिनन्नवनतणी
चौरासी आसातनाकीधी । गुरुप्रतें तेतीस आसातना कीधी ।
अधौत वस्त्रे देवपूजाकीधी । त्रिहुंठामपाखै देवपूज्या । वासकूंपी
कलसतणो उबकोलागो । मुखतणीवाफलागी । ठवणारिय
हाथ थकी पमिउ । पमिलेहवो वीसारचो । नवकरवालीनें पगलागो
॥ ❋ ॥ दर्शनाचार विषय जोअतीचार० ॥ ३ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ चारित्राचारना आठअतीचार ॥ पणिहाणयोगजुत्तो ।
पंचहिंसमईहिं तिहिंगुत्तीहिं । एस चरित्तायारो । अठविहो होइ
नायव्वो १ ॥ इरियासुमती १ ॥ न्नाषासुमती २ ॥ एषणासुमती
३ ॥ आयाणन्नंरुमत्तनिक्खेवणासुमती ४ ॥ उच्चारपासवणखे
लजलसंघाणपारिठावणियासुमती ५ ॥ मनोगुप्ती १ ॥ वचनगुप्ती
२ ॥ कायगुप्ती ३ ॥ एवं पंचसुमती तीनगुप्ती । रूमीपरें पाली
नही ॥ ❋ ॥ साधुतणेंसदैव अष्टविध चारित्राचार विषईउजिको
अतीचार० ॥ ४ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ विसेषतः श्रावकतणे धर्मे श्रीसम्यक्तमूल बारहव्रत श्रीसम्यक्ततणा पांच अतीचार ॥ ❀ ॥ संका कंख विगंछा । पसंत तहसंथवो कुलिंगीसु ॥ संका श्रीअरिहंत तणो । बल अतिसय ज्ञानलक्ष्मी गांम्नीर्यादिकगुण । सास्वतीप्रतिमा । चारित्रियाना चारित्र । जिनवचनतणो संदेहकीधो । (आकांक्षा) ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्रपाल गोगो गोत्रदेवता ग्रहपूजा विणायग । हनुमंत । इत्येवमादिक । ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ । देव देहराना प्रभावदेखी । रोगिं आतंकै । इहलोक । परलोकार्थे पूज्या मान्या । बौद्ध सांख्यादिक सन्यासी । भरडा । भगत । लिंगिया । योगी । दरवेश । अनेराई दर्शनियानो । कष्टमंत्र चमत्कारदेखी । परमार्थ जाणयांविन भूल्या । अनुमोद्या । कुशास्त्रसीख्या । सांभल्या । सराध । संवछरी । होली । बलेव । माहीपूनिम । अजापडिवा । प्रेतबीज । गोरत्रीज । विनायगचोथ । नागपांचम । झूलणाछठ । शीलसातम । द्रोआठम । नउली नवम । अहवदसम । व्रतइग्यारस । वछबारस । धनतेरस । अनंतचौदस । आदित्यवार । उत्तराइण । नवोदक । ज्यागभोगउतारणा कीधा । पींपलपाणीघाल्या । घलाव्या । घरबाहिर । कूई तलाव नदी समुद्र कुंडपुन्यहेतु स्नानकीधा । दांनदीधा । ग्रहण शनीश्वर माहमास नवरात्रि नाहिया । अजाणनाथाप्या । अनेराई व्रतोलाकीधा कराव्या विचिकित्सा । धर्मसंबन्धियाफलतणो संदेहकीधो । जिणअरिहंत । धर्मनाआगर । विश्वोपकार सागर । मोक्षमार्ग दातार । देवाधिदेवबुद्धे सुद्धभावे नपूज्या नमान्या । महात्मानाभात पाणीतणी दुगंछाकीधी । कुचारित्रिया देखी । चारित्रियाऊप

रि अन्नावहुउ। मिथ्यात्वीतणी प्रन्नावना देखी ।प्रसंसाकीधी। प्रीतिमांमी। दाक्षिण्यलगै तेहनोधर्म मान्युं ॥ ❋ ॥ श्रीसमकित विषय। जो अतीचार । पक्षदिवसमांहि। सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां हुउ होय ते सहू मन वचन कायाइंकरी मि छामिदुक्कडं॥ १ ॥ ❋ ॥ पहिले प्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार॥ ❋ ॥ वह बंध उविछेए ।अइन्नारेन्नत्तपाणवुछेए०। द्विपद चौपद प्रतें रीस वसें गाढोघाउ प्रहारघाल्यो । गाढै बंध नवांध्या ।घणें न्नारपीड्या ।निर्लांछन कर्मकीधा। चारपांणी तणी वेला सारसंन्नालनकीधी ।लहिणेंदेणें किणही प्रतें लंघा व्युं। तेणें नूखे आपणजीम्या। अणगलपाणी वावर्यो। रूमै गल्यो नही। गलाव्योनही। अणगलपांणीझील्या। लूगमा धोया। ईंधण अणसोध्योजाल्युं ।साप कानखजूरा। सुलह ला। माकम। जूआं ।गोगिंमा । साहतां मूआंदूषव्यां। रूडै थानकनमूंक्या। कीडी। मकोमी । उदेही। घीवेली ।कातरा चूमेलि । पतंगिया । मेमका । अलसिया ।ईली । कूति। मांस । मसा । बगतरा ।माखीप्रमुख ।जेकेईजीव। विणठा चांपिया ।दूहव्या ।माला हलावतां ।पंखी काग चिमकला ना ईमा फूटा । अनेरा एकेंद्रियादिक जिकेजीव। विणठा। चांप्या । दूहव्या। हालतां ।चालतां। अनेरुं कांइकामकाज करतां विद्धंसपणुं कीधूं । जीवरक्षारूडै नकीधी ।संखारोसूक व्यो। सुल्याधान तावडैदीधा । दलाव्या । न्नरडाव्या ।खाट लातावमैझाटक्या ।मूंक्या। मूंकाव्या। जीवाकुलन्नूमिनीपावी। बासीगार राखी। रखावी। दलणें खांडणें नीपणै । रूडी जय णा नकीधी । आठमचउदसना नियमन्नागा ।धूणीकरावी॥

पहिला प्राणातिपातव्रतविषईउ। अनेरो० ॥ १ ॥ ❀ ॥ बीजो थूल मृषावाद विरमणव्रतें । पांचअतीचार ॥ ❀ ॥ सहस्सारहस्स दारे । मोसुवएसेय कूडलेहेय ॥ सहसाकार । किणएकप्रतें। अयुक्तोआलदीधो । किणाएकप्रतें । एकांतें वातकरतांदेखी। तुह्मे तो राजविरुद्धचिंतवोछो । इत्यादिक कह्युं । स्वदारमंत्र भेदकीधो । अनेराई किणहीनो । मंत्र आलोचमर्मप्रकास्यो। किणहीनें कूडी वुद्धिदीधी । कूडो लेखलिख्यो । कूडीसाखभ री । थापणमोसोकीधो । कन्या । ढोर । गो । भूमि । संबंधि या । लहणें । दयणें । व्यवसायवाद वढावढिकरतां । मोटको फूठ वोल्युं । हाथ पग भणी गालदीधी । करमकामोड्या । अधर्म्मवचन बोल्या ॥ ❀ ॥ बीजें मृषावादव्रत० ॥ २ ॥ ❀ ॥ तीजे अदत्तादानविरमणव्रतना पांच अतीचार ॥ तेनाहडप्प उगे। घरबाहिर खेत्र खलेपराईवस्तु । अणमोकलावी । लीधी दीधी । वावरी । चोरीनीवस्तु मोललीधी । चोरधाभीत प्रतें संबलदीधुं । संकेतकह्युं । विरुद्ध राज्यातिक्रमकीधो । नवापु राणा सरसविरस सजीव निर्जीव वस्तुतणा भेलसंभेल कीधा खोटें तोल मान माप वुहस्या । दाणचोरीकीधी । साटें लांच लीधी । माता पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची । जूदीगांठ कीधी । किणहीनें लेखैपलेखे भूलव्युं । पडीवस्तु उलवीलीधी तीजे अदत्तादान व्रत० ॥ ३ ॥ ❀ ॥ चौथें स्वदारसंतोषमैथुनव्रतें पांच अतीचार ॥ अपरिग्गहियाइत्तर । अणंग वीवाह तिव अणरागे ॥ अपरिग्रहीतागमन । इत्वर परिग्रहीतागमन । विधवा । वेस्या । स्त्रीकुलांगना । स्वदार सोकतणें विषै । दृष्टिविपर्यासकीधी । सरागवचन वोल्या । आठम चउदस

अनेराई पर्व तिथितणा नियमभागा। घरघरणा कीधा । करा व्या। अनुमोदीया। कुविकल्प चिंतव्या । अनंगक्रीडा कीधी । परायाविवाहजोड्या । कामभोग तणै विषै तीव्राभिलाषकीधो। कुस्वप्नलाधा । नटविटपुरुषसुं हासुंकीधुं ॥ ❋ ॥ चौथेमै थुनव्रतवि० ॥ ४ ॥ ❋ ॥ पांचमेंपरिग्रह परिमांणव्रतैपांचअति चार । धण धन्नखित्तवत्थु । धनधान्य खेत्र वस्तु रुप्प सुवर्ण कुप्प द्विपद चतुष्पद नवविध परिग्रहतणा । नियम उपरांत वृद्धिदेखी । मूर्छालगै संक्षेपनकीधो । माता पिता पुत्र कलत्रा दिकतणें लेखैकीधो । परिग्रहपरिमाणलेई पढ्यो नही । पढी वीसारिउ । नियम वीसारिया ॥ पांचमै परिग्रहपरिमाण व्र० ॥ ५ ॥ ❋ ॥ छठेदिगविरमणव्रते पांच अतीचार ॥ ❋ ॥ गमण स्सय परिमाणे । ऊर्द्धदिसि । अधोदिसि । तिर्यग्दिसि । जाय वाआयवातणो नियम जे कोई अजाणैभागो । एकगमा संको डी। वीजी गमावधारी । विस्मृतिलगै । अधिकभूमिगया । पा ठवणी आघी मोकली ॥ ❋ ॥ छठैदिग्व्रतवि० ॥ ६ ॥ ❋ ॥ सातमें भोगो पभोगपरिमाणव्रत ॥ जेहना भोजनआश्री पांचअ तीचार॥ अनें कर्म हुंती १५॥ एवं २० अतीचार॥ ❋ ॥ सच्चि त्ते पडिबुद्धे । अपोलउपोलयंचआहारे ० ॥ सच्चित्ततणें नियम लीधै अधिक सच्चित्तलीधुं । तथा सच्चित्तमिलीवस्तु । अपक्का हार । दुपक्काहार । तुछोषधीतणोभक्षणकीधुं । होलाउंबी पहुं क काकडीभरूथाकीधा । सुल्याधानप्रमुख भक्षण कीधा ॥ स च्चित्तदव्वविगइ। पाणह तंबोलवत्थ कुसुमेसु । वाहणसयणविले वण । बंभदिसिण्हाणभत्तेसु ॥ १ ॥ एचवदै नियम । दिनप्रतें संभारयासंक्षेप्यानही । लेईनियम भांग्या । बावीस अभक्ष। ब

त्तीस अनंतकायमांहि। आदो मूला गाजर पींमालू सूरण सेल रा। काचीआंबली। गोल्हांखाधा। चोमासा प्रमुखमांहें। वासो कठोलनीरोटी खाधी। त्रिहुंदिवसनो दहीलीधुं। मधु महुडा माखण माटी। वेंगण पीलू पीचू पपोटा। पींपी विष। हीम। करहा। घोलवमा। अणजाणयाफल टीवरुं। अथाणूं। आमण बोर काचुं मीठुं। तिल। खसखस। काचाकोठ वडाखाधा। रात्रीभोजन कीधुं। लगवगतीवेलाइं व्यालूकीधुं। दिवसउग्यांविणसीराव्या। तथा पनरेंकम्र्मा दान। इंगालीकम्मे। वणकम्मे सामीकम्मे। भामीकम्मे। फोमीकम्मे। दंतवाणिज्ये। रसवाणिज्ये। केशवाणिज्ये। विषवाणिज्ये। जंतपीलणकम्मे। निलंछणकम्मे। दवग्गिदावणया। सरदहतलावसोसणया। असईपोसणया। पांचवाणिज्य। पांचकम्र्म। पांचसामान्य। महारंभ लीहाला कराव्या। ईंटवाहनीवाहपचाव्या। घाणी चिणा पकवान करीवेच्या। वासीमाखणतपाव्या। अंगीठाकीधा। कराव्या। तिलादिकसंचीया। फागुणमासउपरांतराख्या। कूकमा। सूडाप्रमुखपोस्या। अनेरुंजेकोईबहुसावद्य कठोर कम्र्मादिक समाचरयो॥ ❋ ॥ सातमाभोगोपभोगव्रंतविष० ॥ ❋ ॥ ७ ॥ ❋ ॥ आठमा अनर्थ दंम विरमणव्रतना पांच अतीचार॥ कंदप्पे कुक्कइए०। कंदर्पलगैविटनीपरे। हास्यकुतूहल मुखादि अंगकुचेष्टाकीधी। मूरखपणालगै। किणहीनेंअसंबद्धवाक्य बोल्या। खांडा। कटारी। कुसि। कुहामा। रथ। ऊखल। मूसल। अगन। घरटीआदिक। सजकरी मेल्या। मांग्या आप्या। कनकवस्तुढोरलेवराव्या। अनेरुंकांइ पापोपदेसदीधुं। अंघोल नाहण दांतण पगधोअणपाणी।

तेलअधिकआएया । हींडोलेहींच्या । राजकथा । देसकथा । भुक्तकथा । स्त्रीकथा । पराईवात कीधी । आर्त्त रौद्र ध्यान ध्याया । कर्कसवचन बोल्या । करडकामोडया । संभेडालाया भेंसा सांढकूकड मींढा श्वानादिकूभता कलहकरताजोया खा धिलगे अदेखाई चिंतवी । माटी । मीठुं । कण कपासिआ । काजविण चांप्या । तेह ऊपरवयठा । आलेवनस्यतीखुंदी । छाछ । पाणी । घी । रस । तेल । गुल । आमलवेतस । वेरजादिक तणा भाजनउघाडा मूंक्या । तेमाहि । कीडी कंथुआ माखी उंदर । गिरोली प्रमुखजीवविणठा । सूडा प्रमुख जीव क्रीडा हेतें वांधिराख्या । घणीनिद्राकीधी । रागद्वेष लगे । एकनेंरिद्धि परिवारवांछी । एकनें मृत्यु हाणि विमासी ॥ आठमाअनर्थं दंडव्रतविष० ॥ ८ ॥ ❋ ॥ नवमें सामायकव्रतै पांच अती चार ॥ ❋ ॥ तिविहेडुप्पणिहाणे । सामायकलीधे । मनआहट दोहट चिंतव्युं । वचनसावद्यवोल्युं । कायअणपडिलेह्युंहलाव्युं । छतीवेलाइं सामायकनलीधुं । सामायकलेई उघाडेमुखबोल्या । ऊं घआवीकीधी । बीजदीवातणी उजोहीलागी । कण कपासी यां माटी मीठुं नील फूल हरीकायना संघट्टहुआ । पुरुष तिर्यं चना संघट्ट हुआ । तथा स्त्री तिर्यंची आभडी । मुहपत्तीउसंघ ट्टी । सामायकअणपूरलंपारिलं । पारलंवीसारिलं ॥ नवमैसामा यकव्रतविषय० ॥ ९ ॥ ❋ ॥ दशमैदेशावकासिक व्रतै पांचअ तीचार ॥ ❋ ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पउगे । पेसवण प्पउगे । सद्दाणुवाए । रूवाणुवाए । बहियापुग्गलपक्खेवे । नि यमितभूमिकामांहि । वाहिरथकीकांई अणाव्युं । आपकन्हाथी बाहिरमोकल्या । सादकरी । रूपदेखाडी । काकरोनाखी

आपणपुं ठतुं जणाव्युं ॥ ❀ ॥ दशमें देशावकासिकव्रत० ॥ १० ॥ इग्यारमेपोषधोपवासब्रतें पांच अतीचार ॥ ❀ ॥ संथारुच्चार विही। पमायतहचेव भोअणाभोए० ॥ पोसहलीधै । संथारात णीभूमी बाहिरलाथंमिला । दिवसै सोध्यापडिलेह्या नही । मातरुं अणपडिलेह्युं वावरिउं । अणपुंजी भूमिकाइं परठ विउं । परठवतां चिन्तवणानकीधी । अणुजाणहजस्सुग्गहोन कह्युं । परठयांपूठे बारत्रिणि वोसिरामि २ नकह्युं । पोसहशा लामांहिं । पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहवी वी सारी । पृथवीकाय । अप्पकाय । तेऊकाय । वाऊकाय । वनस्पतीकाय । त्रसकाय । तणा संघट्टपरिताप उपद्रवहुआ संथारा पोरसितणो । विधि भणउ वीसारिउ । पोरसिमांहिउं घ्या । अविधिसंथारुंपाथरयुं । कालवेलायें पडिक्कमणुं नकीधुं पारणादिकतणीचिंतानिपजावी । कालवेला देववांदवाबीसारि या । पोसहअसूरोलियो । सवारोपारियो । पर्व्वतिथि आवी पोसहलीधोनही ॥ इग्यारमें पोषधोपवासव्र० ॥ ११ ॥ ❀ ॥ बारमे अतिथि संविभागव्रतै पांच अतीचार ॥ ❀ ॥ सच्चित्ते निक्खवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठै । ऊपरिथकै । महातमाप्रतेंअसुझतूं दानदीधुं । अदेवातणीबुद्धे सूझतु फेडी असूझतुंकीधुं । देवातणीबुद्धे असूझतुं फेडी । सूझतुंकीधुं । आ पणफेडीपरायुं कीधुं । विहरवावेला टलगयां । असुरकरी महा तमातेड्या । मच्छरलगैदांनदीधुं । गुणवंत आव्यै भगति नसाचवी । ठतीसक्तिसाधर्मिक वात्सल्यनकीधुं । अनेराईधर्म्मक्षेत्रसी दाता । ठतीशक्तेऊधर्यानही ॥ ❀ ॥ बारमेंअतिथिसंविभागव्र० ॥ १२ ॥ ❀ ॥ संलेहणातणा पांचअतीचार ॥ इहलोए परलोए०

इहलोकासंसप्पउगे । परलोगासंसप्पउगे । जीविआसंसप्पउगे । मरणासंसप्पउगे । कामभोगासंसप्पउगे । इहलोक मनुष्यभव मान महत्व लोकतणी सेवा ठकुराई । बलदेव वासुदेव चक्रवर्त्ति पदवांछ्या । परलोक । इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांछी । सुखआये जीववातणी वांछाकीधी । दुखआये मरवातणी वांछा कीधी । काम भोग तणीइछा कीधी ॥ ❋ ॥ संलेहणाव्रतवि० ॥ ❋ ॥ तपाचारबारेभेदे ॥ छअभ्यंतर । छबाहिर । अणसणमूणोइरिया ॥ अणसणकहीयेउपवास । ते पर्व्वतिथि छतीशक्तिकीधुं नही । (उणोदरी) कवल पांचसातऊणार ह्यानही । (द्रव्यसंक्षेप) विगयप्रमुख परिमाणकीधुं नही । आसनादिक कायकिलेस नकीधुं । (संलीणता) अंगोपांगसंकोच्यानही । नवकारसी । पोरसी । गंठसी । मूंठसी । साढपोरसी । पुरमुड्ड । एकासणो । वेआसणो । निवी । आंबिलप्रमुख पच्चक्खाण पारवावीसार्या । बैसतां नवकारभणयुनही । ऊठतां दिवश्चरम नकीधुं । निवीआंबिल उपवासादिकतपकरी । काचोपाणीपीधुं । वमनथयुं ॥ ❋ ॥ बाह्य तपव्रतवि० ॥ ❋ ॥ अभ्यंतरतप ॥ ❋ ॥ पायछित्तंविणउ० । गुरुकनें मनसुद्धे आलोयण लीधीनही । गुरुदत्तप्रायछित्ततप लेखासुद्ध पुहचाडयुं नही । देवगुरु संघसाहम्मीप्रतें विनयसाचव्योनही । वाचना पृछना परावर्त्तना अनुप्रेक्ष्या धर्मकथा लक्षण पंचविध सिज्झायकीधोनही । धर्म्म ध्यान शुक्लध्यान ध्यायोनही । कर्म्म क्षय निमित्त लोगस्स दस वीसनुं काउसग्गकनकीधो ॥ ❋ ॥ अभ्यंतरतपविषइउ० ॥ वीर्याचारना तीनअतीचार ॥ ❋ ॥ अणगुहियबलविरिउ । परक्कमइजोजहुंतठाणेसु । जुंजइ अजहाथामं । ना

यबोवीरियाचारो ॥ १ ॥ पढवै गुणवै विनय वेयावच्च देवपूजा सामायक दान शील तप भावना प्रमुख धर्म्मकृत्य तणे विषे। मन वचन कायातणो छतुं बलवीर्यगोपव्युं । रूडापंचांग खमा समण नदीधा वैठांपडिक्कमणंकीधुं ॥ ❀ ॥ वीर्याचारविष० ॥

॥ ❀ ॥ नाणाइअठ अइवय । सम संलेहण पण पनरकम्मेसु । बारसतव विरिअ तिगं । चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पमिसिद्धाणंकरणे० । जिनप्रतिषिद्ध । बावीसअभक्ष । बत्तीसअनंतकाय । बहुबीजभक्षण । महाआरंभ महापरिग्रहादिक कीधा । नित्य कृत्य देवपूजासामायकादिक । तथा तीर्थ यात्रादिक नकीधा । जीवाजीवादिविचारसद्दहियानही । आपणी कुमतिलगै उतसुत्रपरूपणाकीधी । प्राणा तिपात १ । मृषावाद २। अदत्तादांन ३। मैथुन ४। परिग्रह ५। क्रोध ६ । मान ७। माया ८। लोभ ९। राग १०। द्वेष ११। कलह १२। अभ्याख्यान १३। परपरिवाद १४। पैशुन्य १५। अरतिरति १६। मायामृषावाद १७ । मिथ्यात्वशल्य १८ । एअढारहपापस्थानकमांहि । जेकांइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवंप्रकारै श्रावकधर्म्मै। श्री सम्यक्त मूलबारहव्रत चोवीसासो अतीचारमांहि जिको अतीचार। पक्षदिवसमांहि । सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुवो होय ते सहू मन वचन कायायेंकरी मिछामिडुक्कडं । इति श्री श्रावकूंकैबारहव्रतका अतीचार संपूर्णम्‌ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जय तिहुअण बत्तीसीलि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय तिहुअण वर कप्परुक्ख जय जिणधन्नंतरि। जयतिहुअण कल्लाणकोस दुरिअ क्करि केसरि । तिहुअण जण

इहलोकासंसप्पउगे । परलोगासंसप्पउगे । जीविश्रासंसप्पउगे । मरणासंसप्पउगे । कामभोगासंसप्पउगे । इहलोक मनुष्यभव मान महत्व लोकतणी सेवा ठकुराई । बलदेव वासुदेव चक्रवर्त्ति पदवांछ्या । परलोक । इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांछी । सुखआये जीववातणी वांछाकीधी । दुखआये मरवातणी वांछा कीधी । काम भोग तणीइच्छा कीधी ॥ ❋ ॥ संलेहणाव्रतवि० ॥ ❋ ॥ तपाचारबारेभेदे ॥ छअभ्यंतर । छबाहिर । अणसणमूणोइरिया ॥ अणसणकहीयेउपवास । ते पर्व्वतिथि छतीशक्तिकीधुं नही । (उणोदरी) कवल पांचसातऊणार ह्यानही । (द्रव्यसंक्षेप) विगयप्रमुख परिमाणकीधुं नही । आसनादिक कायकिलेस नकीधुं । (संलीणता) अंगोपांगसंकोच्यानही । नवकारसी । पोरसी । गंठसी । मूंठसी । साढपोरसी । पुरमुड्ढ । एकासणो । बेआसणो । निवी । आंबिलप्रमुख पच्चक्खाण पारवावीसार्या । बेसतां नवकारभणएयुनही । ऊठतां दिवश्चरम नकीधुं । निवीआंबिल उपवासादिकतपकरी । काचोपाणीपीधुं । वमनथयुं ॥ ❋ ॥ बाह्य तपव्रतवि० ॥ ❋ ॥ अभ्यंतरतप ॥ ❋ ॥ पायछित्तंविणउ० । गुरुकनें मनसुद्धे आलोयण लीधीनही । गुरुदत्तप्रायछित्ततप लेखासुद्ध पुहचाड्युं नही । देवगुरु संघसाहम्मीप्रतें विनयसाचव्योनही । वाचना पृच्छना परावर्त्तना अनुप्रेक्ष्या धर्मकथा लक्षण पंचविध सिज्झायकीधोनही । धर्म्म ध्यान शुक्लध्यान ध्यायोनही । कर्म्म क्षय निमित्त लोगस्स दस वीसनुं काउसग्गकनकीधो ॥ ❋ ॥ अभ्यंतरतपविषइउ० ॥ वीर्याचारना तीनअतीचार ॥ ❋ ॥ अणगुहियबलविरिउ । परक्कमइजोजहुंतठाणेसु । जुंजइ अजहाथामं । ना

यव्वोवीरियाचारो ॥ १ ॥ पढवै गुणवै विनय वेयावच्च देवपूजा सामायक दान शील तप भावना प्रमुख धर्म्मकृत्य तणे विषै । मन वचन कायातणो छतुं बलवीर्यगोपव्युं । रूडापंचांग खमा समण नदीधा वेठांपडिक्कमणंकीधुं ॥ ❀ ॥ वीर्याचारविष० ॥ ॥ ❀ ॥ नाणाइअठ अइवय । सम संलेहण पण पनरकम्मेसु । बारसतव विरिअ तिगं । चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पडिसिद्धाणंकरणे० । जिनप्रतिषिद्ध । बावीसअभक्ष । बत्तीसअनंतकाय । बहुबीजभक्षण । महाआरंभ महापरिग्रहादिक कीधा । नित्य कृत्य देवपूजासामायकादिक । तथा तीर्थ यात्रादिक नकीधा । जीवाजीवादिविचारसद्दहियानही । आपणी कुमतिलगै उतसुत्रपरूपणाकीधी । प्राणा तिपात १ । मृषावाद २।अदत्तादान ३। मैथुन ४। परिग्रह ५ । क्रोध ६ । मान ७ । माया ८ । लोभ ९ । राग १० । द्वेष ११ । कलह १२ । अभ्याख्यान १३ । परपरिवाद १४ । पैशुन्य १५ । अरतिरति १६ । मायामृषावाद १७ । मिथ्यात्वशल्य १८ । एअढारहपापस्थानकमांहि । जेकांइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवंप्रकारै श्रावकधर्म्मैं । श्री सम्यत्क मूलबारहव्रत चोवीसासो अतीचारमांहि जिको अतीचार । पक्षदिवसमांहि । सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुवो होय ते सहू मन वचन कायायेंकरी मिछामिदुक्कडं । इति श्री श्रावकूंकेबारहव्रतका अतीचार संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जय तिहुअण बत्तीसीलि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय तिहुअण वर कप्परुक्ख जय जिणधन्नंतरि । जयतिहुअण कल्लाणकोस दुरिअ क्करि केसरि । तिहुअण जण

अविलंघियाण भुवणत्तय सामिअ । कुणसु सहाइ जिणेसपास थंभणयपुरठिअ ॥ १ ॥ तइं समरंत लहंतिजत्ति वर पुत्त कलत्तहि ॥ धम्म सुवम्म हिरम्म पुम्म जण भुंजहि रज्जहि । पिक्खहि मुक्ख असंखसुक्ख तुहपासपसाइण । इयतिहुअण वरकप्प रुक्ख सुक्खहि कुणमहजिण ॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुम्म कम्म नट्ठुठ सुकुठिण । चक्खुक्खीण खएणखुम्म नरसल्लिअ सूलिण । तुहजिणसरण रसायणेण लहुहुंति पुणम्मव । जयधम्मंतरिपास महवि तुहुं रोगहरोभव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस मंत तंत सिद्धिउ अपयत्तिण । भुवणब्भुअ अठविह सिद्धि सिज्झइ तुहनामिण । तुह नामिण अपवित्तउवि जणहोइ पवित्तउ । तंतिहुअण कल्लाणकोस तुहुंपासनिरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्दपउत्तइ मंत तंत जंताइं विसुत्तइ । चर थिर गरल गहुग्गखग्ग रिउवग्ग विगंजइ । दुत्थियसत्थ अणत्थ घत्थ नित्थारइदयकरि । दुरिअइं हरउ सुपासदेव दुरिअक्करिकेसरि ॥ ५ ॥ तुहआणा थंभेइभीम दप्पुद्धर सुरवर । रक्खसजक्ख फणिंदविंद चोरानलजलहर । जलथलचारि रउद्दखुद्द पसुजोइणिजोइअ । इयतिहुअण अविलंघिआणजयपास सुसामिअ ॥ ६ ॥ पत्थिअअत्थ अणत्थहित्थ भत्तिब्भरनिब्भर । रोमंचंचिअ चारुकाय किम्मरनर सुरवर । जसु सेवहिं कमकमलजुअल पक्खालिअकलिमलु । सोभवणत्तय सामिपास महमद्दउरिउवलु ॥ ७ ॥ जय जोइअ मणकमलभसल भयपंजरकुंजर । तिहुअणजण आणंदचंदभवणत्तय दिणयर । जयमइमेयणि वारिवाह जयजंतुपिआमह । थंभणयठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥ ८ ॥ बहुविहवम्मुअवम्मु सुम्मुबसिउप्पसाहि । मुक्खधम्मकामत्थकाम नरनियनियसत्थ

हि । जंझायइ बहुदरसणत्थ बहुनामपसिद्धउ। सोजोइअम णकमलभसल सुहपासपवद्धउ ॥ ९ ॥ भयविब्भलरणझणिर दसण थरहरिअ सरीरय । तरलिअनयण विसुन्नसुन्न गग्गर गिरकरुणय । तइं सहसत्ति सरंतिहुंति नरनासिअ गुरुदर । महविज्झवि सिज्झसइपास भयपंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइं पासवि विअसंतनित्त पत्तंतपवत्तिय । बाहपवाहपवूढरूढ दुहदाहसुपु लिय । मन्नहिमन्नसउन्नपुन्नअप्पाणंसुरनर । इयतिहुअण आ णंदचंद जयपासजिणेसर ॥ ११ ॥ तुहकल्लाणमहेसुघंट टंका रवपिल्लिअ । वल्लिरमल्लमहल्लभत्तिसुरवरगंजुल्लिअ । हल्लुप्फ लिअ पवत्तयंतिभवणेहिमहूसव । इयतिहुअणआणंदचंद ज यपास सुहुब्भव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनियर विहुरिय तमपयहर । दंसिअसयल पयत्थसत्थ वित्थरिअपहाभर । क लिकलुसिअ जणघूअलोय लोयणहअगोयर । तिमिरइं निरु हरपासनाह भुवणत्तयदिणयर ॥ १३ ॥ तुहसमरणजल वरि ससित्त माणवमइमेइणि । अवरावरसुहुमत्थबोह कंदलदलरेइ णि । जायइफलभर भरियहरिय दुहदाहअणोवम । इयमइ मेइणिवारिवाह दिसपासमइं मम ॥ १४ ॥ कयअविकल क ल्लाणवल्लि उल्लूरिअदुहवणुं । दाविअसग्ग पवग्गमग्ग दुग्गइग मवारणुं । जयजंतुहजणएणतुल्ल जंजणियहियावहु । रम्मध म्मसोजयउपास जयजंतुपिआमहु ॥ १५ ॥ भुवणारन्ननिवा सदरिअ परदरसणदेवय । जोइणिपूअणखित्तवाल खुद्दासुरपसु वय । तुहउत्तत्थसुनट्ठसुट्ठ अविसंठुलचिट्ठहि । इयतिहुअण व णसीहपास पावाइ पणासहि ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरय ण कररंजिअनहयल । फलिणीकंदलदल तमाल निल्लुप्पल

सामल । कमठासुरउवसग्गवग्ग संसग्गअगंजिअ। जयपच्च क्खजिणेसपास थंभणयपुरठिअ ॥ १७ ॥ महमणुतरलपमा णुनेय वायाविविसंठलु । नियतणुरविअविणयसहाव आलस विहिलंघलु । तुहमाहप्पपमाणदेव कारुणपवत्तउ । इयमइमा अवहीरपासपालहिविलवंतउ ॥ १८ ॥ किंकिंकप्पिउणेयकलुण किंकिंवनजंपिउ । किंवनचिठ्ठिउकिठदेव दीणयमविलंबिउ । कासनकियनिप्फल्ललल्ल अह्महिंदुहत्तइं । तहविनपत्तउताणकिं पि पइंपहुपरिचत्तइं ॥ १९ ॥ तुहुं सामिहुतुहुं मायवप्प तुहुं मि त्तपियंकरु । तुहुंगइतुहुंमइतुंहिजताणतुहुंगुरुखेमंकरु । हउंदु हभारिअवराउराउलनिभग्गउ । लीणउतुहकमकमल स रण जिणपालहिचंगउ ॥ २० ॥ पइंकिविकयनीरोयलोयकिविपा वियसुहसय । किविमइंमंतमहंतकेवि किविसाहियसिवपय । किविगंजिअरिउवग्गकेवि जसधवलिअभूअल । मइंअवहीर हिकेणपाससरणागयवछल ॥ २१ ॥ पच्चुवयारनिरीहनाह निप्पन्न पउअण । तुहुंजिणपासपरोवयार करुणिक्कपरायण। सत्तुमित्त समचित्तवित्तिनयनिंदिअसममण । माअवहीरिअजुग्गउवि म इंपासनिरंजण ॥ २२ ॥ हउंबहुविहदुहतत्तगत्ततुहुंदुहनासणप रु । हउंसुयणहकरुणिक्कठाणतुहुंनिरुकरुणाकरु । हउंजिणपा सअसामिसालतुहंतिहुअणसामिअ । जंअवहीरहिमइंझखंत इयपासनसोहिय ॥ २३ ॥ जुग्गाजुग्गविभागनाहनहुजोअणतु हसम । भवणुवयारसहावभाव करुणारससत्तम । समविसमइ किंघणनिएइ भुविदाहसमंतउ । इयदुहबंधवपासनाहमइंपालथु णंतउ ॥ २४ ॥ नयदीणहदीणयमुएविअन्नविकिविजुग्गय । जंजोइय उवयारुकरइ उवयारसमुज्जय । दीणहदीणनिहीणजेण

तइंनाहिणाचित्तउ । तोजुग्गउअहमेवपास पालहिमइं चंगउ ॥
॥ २५ ॥ अहअणुविजुग्गयविसेसकिविमणहिदीणह । जंपा
सविउवयारुकरइ तुहुंनाह समग्गह । सुच्चिअकिलकल्लाणजेण
जिणतुह्मपसीयह । किंअणुण तंचेव देव मामइंअवहीरह ॥
॥ २६ ॥ तुहपत्थण नहु होइ विहल जिणजाणउ किंपुण ।
हउंदुक्खिउ निरु सत्तचत्त दुक्कउउस्सुयमण । तंमणउ निमि
सेणएण एउ विजइ लब्भइ । सच्चंजंभुक्खियवसेण किं उंबरुप
च्चइ ॥ २७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइंअप्पपयासिउ ।
किज्जउजंनियरूवसरिसुनमणुंवहुजंपिउ । अणुणाजिणजगतुह
समोविदक्खिवणदयासउ । जइअवगिणसितुंहिजअहहकिहहो
सुहयासउ ॥ २८ ॥ जइतुहरूविणाकिणविपेअ पाइणवेलविउ
तउजाणुंजिणपासतुह्म हउंअंगीकरिअउ । इयमहयहिअजंन
होइसातुहउहावण । रक्खंतहनियकित्तिणेयजुज्जइअवहीरण ॥
॥ २९ ॥ एवमहारिहजत्तदेवइअणवणमहूसउ । जंअणालिय
गुणगहण तुम्हमुणिजणअणिसिद्धउ । इयमइंपसियसु पासना
हथंभणयपुरट्ठिअ । इयमुणिवर सिरिअभयदेव विणवइअणिं
दिअ ॥ ३० ॥ इतिश्रीस्थंभनक पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ परकीसुत्र लि० ॥ ❁ ॥

तित्थंकरेअ तित्थे । अतित्थसिद्धेयतित्थसिद्धेय । सिद्धेयजिणे
यरिसी । महारिसिनाणंचवंदामि ॥ १ जेयइमंगुणरयणसायर ।
मविराहिऊणतिन्नसंसारा । तेमंगलंकरित्ता । अहमविआराह
णाभिमुहो ॥ २ ॥ ममममंगलमरिहंता । सिद्धासाहूसुयंचधम्मो
यः । खंतीगुत्तीमुत्ती । अज्जवयामद्दवंचेव ॥ ३ ॥ लोगंमिसंज

याजंकरंति । परमरिसिदेसियमुयारं । अहमविउवट्ठिउंतं । म
हव्वयउच्चारणंकाउं ॥ ४ ॥ सेकिंतंमहव्वयउच्चारणा । महव्वयउच्चा
रणापंचविहापन्नत्ता ॥ राईभोयणवेरमणछट्ठा (तंजहा) सव्वा
उपाणाइवायाउवेरमणं । सव्वाउमुसावायाउवेरमणं । सव्वाउअ
दन्नादाणाउवेरमणं । सव्वाउमेहुणाउवेरमणं । सव्वाउपरिग्गहा
उवेरमणं । सव्वाउराईभोयणाउवेरमणं । तत्थइखलु पढमेभंतेम
हव्वए पाणाइवायाउवेरमणं ॥ सव्वंभंतेपाणाइवायंपच्चरकामि ।
सेसुहुमंवा बायरंवा तसंवा थावरंवा नेवसयं पाणेअइवाएज्जा
नेवन्नेहिं पाणेअइवायाविज्जा पाणेअइवायंतेवि अन्नेनसमणु
जाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए का
एणं नकरेमि नकारवेमी करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि
तस्सभंतेपडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसरामि ॥
सेपाणाइवायाएचउविहेपन्नत्ते ॥ (तंजहा) दव्वउ खित्तउ कालउ
भावउ दव्वउणंपाणाइवाए छसुजीवनिकाएसु खित्तउणं पाणा
इवाए सयलत्नोए कालउणं पाणाइवाए दियावा, राउवा भावउणं
पाणाइवाए रागेणवा दोसेणवा जंपियमएइमस्सधम्मस्स केव
लिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स
खंतीपहाणस्स अहिरणसोवणियस्स उवसमप्पभवस्स नवबं
भचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स
निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स
निव्वियारस्स निव्वित्तीलरकणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहि
संचयस्स अविसंवाइयस्स संसार पारगामियस्स निव्वाणगमण
पज्जवसाण फलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहि
ए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिब

ड्ढयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारब गरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नन्नारीयाए सायासोक्ख मणुपालयंतेणं इहंवान्नवे अन्नेसुवान्नवग्गहणेसु पाणाइवाउ कउवा कारिउवा कीरंतोवा परेहिंसमणुन्नाउ तंनिंदामी गरिहामी तिविहं तिविहेणं मणेणं बायाए काएणं अईयंनिंदामि पडुपन्नंसंबरेमि अणागयंपच्चरकामि सवंपाणाइवायं जावज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेवसयं पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणेअइवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि (तंजहा) अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवई न्निक्खूवा न्निक्खूणीवा संजय विरय पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दियावा राउवा एगोवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलु पाणाइवायस्स वेरमणे हिए सुहेखमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सवेसिं पाणाणं सवेसिं नूयाणं सवेसिंसत्ताणं अडुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुन्नावे महापुरिसाणचिन्ने परमरिसिदेसिएपसित्थे तंडुक्खक्खयाए कम्मरकयाए मोक्खयाए बोहिलान्नाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि पढमेन्नंते महवए उवठिउमि सवाउपाणाइवायाउवेरमणं ॥ १ ॥ अहावरेदोच्चेन्नंतेमहवए मुसावायाउवेरमणं । सवंन्नंतेमुसावायंपच्चक्खामि । सेकोहावा लोहावा न्नयावा हासावा नेवसयं मुसंवएज्जा नेवन्नेहिंमुसं वायाविज्जा मुसंवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणु

जाणामि तस्सनंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पा णंवोसरामि । सेमुसावाएचउविहेपन्नत्ते (तंजहा) दव्वउ खित्तउ कालउ नावउ दव्वउणं मुसावाएसव्वदव्वेसु खित्तउणंमूसावाए लोए वा अलोएवा कालउणं मुसावाए दियावा राउवा नावउणंमुसावा ए रागेणवादोसेणवा जंपियमए इमस्सधम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाण स्स अहिरणसुवण्णियस्स उवसमप्पनवस्स नवबंनचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स निक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिस रणस्स संपरकालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्विया रस्स निव्वित्ती लक्खणस्स पंचमहव्वय जुत्तस्स असंनिहि संचयस्स अविसंवाईयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमण पज्जवशाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणानिगमेणं अनिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिवद्धयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउ क्कसाओवगएणं पचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नंनारियाए सायासोक्ख मणु पालयंतेणं इहंवानवे अन्नेसुवा नवग्गहणेसु मुसावाओ नासिओवा नासाविउवा नासिजंतोवा परेहिंसुमणुन्नाउ तंनिं दामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईयं निंदामि पडुपन्नंसंबरेमि अणागयंपच्चक्खामि सव्वंमुसावायं जा वज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेवसयंमुसंवएज्जा नेवन्नेहिं मुसंवाया विज्जा मुसंवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि (तंजहा) अरिहंतस क्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवई निक्खूवानिक्खूणीवा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मेदियावा राउवा एगउवा परसागउवा सुत्तेवा जागरमाणे

वा एसखलुमुसावायस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणु गामिए पारगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्थे तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए तिकट्टु उवसंपजत्ताणं विहरामि ॥ दोच्चेभंतेमहव्वए उवट्ठिओमिसव्वाओमुसावायाओवेरमणं ॥ २ ॥ अहावरेतच्चेभंतेमहव्वए अदिन्नादाणाओवेरमणं सव्वंभंते अदिन्नादाणंपच्चक्खामि ॥ सेगामेवा नगरेवा रण्णेवा अप्पंवा वहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयंअदिन्नंगिण्हियज्जा नेवन्नेहिंअदिन्नंगिण्हाविज्जा अदिन्नंगिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नंन समणुजाणामि तस्सभंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसरामि सेअदिन्नादाणेचउव्विहे पन्नत्ते (तंजहा) दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं अदिन्नादाणे गहण धारणिज्जेसु दव्वेसु खित्तओणं अदिन्नादाणे गामेवा नगरेवा रण्णेवा कालओणं अदिन्नादाणे दियावा राओवा भावओणं अदिन्नादाणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्सधम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरण सुवणियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिरकावित्तियस्स कुक्खीसंवलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निवित्ति लक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अवि

संवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफल
स्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणन्निगमेणं अ
न्निगमेणवा पमाएणं रागदोसपम्भिवद्धयाए वालयाए मोहयाए म
दयाए किड्डयाए तिगारवगरुआए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदिय
वसट्टेणं पडिपुन्न न्नारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहंवान्नवे
अन्नेसुवा न्नवग्गहणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गहावियंवा घिप्प
तंवा परेहिंसमणुन्नाउतंनिंदामि गरिहामि तिविहंतिविहेणं मणे
णं वायाए काएणं अईयं निंदामि पडुपन्नंसंवरेमि अणागयंपच्च
क्खामि सव्वंन्नंतेअदिन्नादाणं जावजीवाए अणिस्सिउहिं नेवस
यंअदिन्नंगिएहज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नंगिएहाविज्जा अदिएहंगि
एहंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि (तंजहा) अरिहंतसक्खियं सिद्धस
क्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवई न्निक्खू
वा न्निक्खूणीवा संजय विरय पम्भिहय पच्चक्खायपावकम्मे दिया
वा राउवा एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलु
मेहुणस्सवेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगा
मिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंन्नूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं
अडुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपी
डणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे म
हाणुन्नावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिएपसत्थे तंडुक्ख
क्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलान्नाए संसारुत्तारणा
ए त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि ॥ तच्चेन्नंतेमहव्वएअब्भुट्ठिउ
मिसव्वाउ अदिन्नादाणाउवेरमणं ॥ ३ ॥ अहावरेचउत्थेन्नंतेमहव्वए
मेहुणाउवेरमणं सव्वंन्नंतेमेहुणं पच्चक्खामि । सेदिव्वंवा माणुसं
वा तिरिक्खजोणियंवा नेवसयं मेहुणंसेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं

सेवाविज्जा मेहुणंसेवंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपी अन्नंन समणुजाणामि तस्सन्नंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसरामि ॥ सेमेहुणेचउविहेपन्नत्ते (तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणंमेहुणे रूवेसुवा रूवसहग एसुवा खित्तउणंमेहुणे उद्धलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा कालउणं मेहुणे दियावा राउवा भावउणं मेहुणे रागेणवा दोसे णवा जंपियमए इमस्सधम्मस्स केवलिपणत्तस्स अहिंसाल क्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहिर न्न सुवणियस्स उवसमप्प भवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्पय माणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गीसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निवियारस्स निवि त्तीलक्खणस्स पंचमहव्वय जुत्तस्स असंनिहि संचयस्स अ विसंवाहियस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमण पज्जवसाण फलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहीए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोषपडिवद्धयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचें दियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोरक मणुपालयंतेणं इहं वाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मेहुणंसेवियंवा सेवावियंवा से विज्जंतंवा परेहिंसमणुणाउ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिवि हेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडुपन्नंसंवरेमि अ णागयं पच्चक्खामि सव्वंमेहुणं जावज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेव सयं मेहुणंसेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा मेहुणं सेवंतेवि अन्नेन समणुजाणामि (तंजहा) अरिहंतसक्खियं सिद्धस

क्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइ भि क्खूवा भिक्खूणीवा संजयविरयपडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राउवा एगोवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु मेहुणस्सवेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सवेसिं पाणाणं सवेसिं भूयाणं सवेसिंजीवाणं सवेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणया ए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागु णे महाणुभावे महापुरिसाणुचिम्ने परमरिसिदेसिएपसित्थे तंदु क्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारु त्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपजत्ताणं विहरामि ॥ चउत्थेभंते महवए उवठिउमिसवाउ मेहुणाउ वेरमणं ॥ ४ ॥ अहावरेपंचमेभंतेमहव्व ए परिग्गहाउ वेरमणं सवंभंतेपरिग्गहं पच्चक्खामि सेअप्पंवा ब हुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं परि ग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हाविज्जा परि ग्गहं गिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावजीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्सभंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसरामि । सेपरिग्गहेचउविहेपन्नत्ते (तंजहा)दवउ खि त्तउ कालउ भावउ दवउणंपरिग्गहे सचित्ताचित्तमीसेसुदवेसु खि त्तउणं परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रणेसुवा कालउणं परिग्गहे दियावा राउवा भावउणंपरिग्गहे अप्पग्घेवा महग्घेवा रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसाल क्खणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरन्न सुवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभ० अप्पय० भिक्खावित्तिय

स्स कुक्खीसंवलस्स निरग्गीसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोस स्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वत्तीलक्खणस्स पंचमहव्वय जुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामिय स्स निव्वांणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवण याए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसप डिबद्धयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारव गरु आए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्न भारियाए सा यासोक्ख मणुपालयंतेणं इहंवाभवेअन्नेसुवा भवग्गहणेसु परि ग्गहो गहिउवा गहाविउवा घिप्पंतोवा परेहिंसमणुन्नाउ तंनिंदा मि गरिहामि तिविहंतिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईयंनिंदा मि पडुप न्नंसंवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वंपरिग्गहं जावज्जी वाए अणिस्सिउहिं नेवसयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंप रिग्गहं परिगिण्हाविज्जा परिग्गहं परिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणु जाणामि (तंजहा) ॥ अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुस क्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइभिक्खूवा भिक्खूणी वा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राउवा एगोवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुपरिग्गहस्सवे रमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए स व्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदु क्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीड णयाए अपरियावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थेमहागुणे महा णुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तंदुक्खक्ख याए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणंविहरामि ॥ पंचमेभंतेमहव्वए उवट्ठिओमि

सव्वाउ परिग्गहाउवेरमणं ॥ ५ ॥ अहावरे छठेभंतेवए राईभोयणा उ वेरमणं सवंभंतेराईभोयणं पच्चक्खामि ॥ सेअसणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा नेवसयं राई भुंजिजा नेवन्नेहिं राई भुंजावि जा राईभुंजंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावजीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्सभंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि । सेराईभोयणेचउविहेपन्नत्ते (तंजहा) दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं राईभोयणे असणेवा पाणेवा खाइ मेवा साइमेवा खित्तउणं राईभोयणे समयखित्ते कालउणं राईभो यणे दियावा राउवा भावउणं राईभोयणे तिक्खेत्रा कडुएवा कसा इलेवा अंबिलेवा महुरेवा लवणेवा रागेणावा दोसेणावा जंपिय मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चा हिठियस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्नसुवण्णियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावि त्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स च त्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलक्खणस्स पं चमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स सं सारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्ना णयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणावा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए कि डुयाए तिगारव गरुआए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवेअन्नेसुवा भवग्गहणेसु राईभोयणं भुत्तंवा भुंजावियंवा भुंजंतंवा परेहिंस मणुन्नाउ तंमिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणंवायाए

काएणं अईयं निंदामि पडुपन्नंसंवरेमि अणागयं पच्चक्खामि स
व्वं राईन्नोयणं जावज्जीवाए अणिस्सउंहिं नेवसयं राईन्नुंजि
ज्जा नेवन्नेहिंराइंन्नुंजाविज्जा राइंन्नुंजंतेवि अन्नेनसमणुजाणा
मि (तंजहा) अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं दे
वसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइ न्निक्खूवा न्निक्कूणीवा संज
य विरय पमिहय पच्चक्खायपावकम्मे दियावा राउवा एगोवा प
रसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलु राईन्नोयणस्सवेरमणे
हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिंपाणा
णं सव्वेसिंन्नूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अडुक्खणयाए
असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरि
यावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थेमहागुणे महाणुन्नावे महापु
रिसाणुचिन्हे परमरिसिदेसिएपसत्थे तंडुक्खक्खयाए कम्मरक
याए मोक्खयाए बोहिलान्नाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंप
ज्जत्ताणं विरामि ॥ उठेन्नंतेवए उवठिउमि सव्वाउ राईन्नोयणाउवे
रमणं ॥ ६ ॥ इच्चेइयाइंपंचमहव्वयाइं । राईन्नोयणवेरमणउठाइं । अत्त
हियठाए उवसंपज्जित्ताणंविहरामि ॥ १ ॥ अप्पसत्थायजेजोगा । प
रिणामायदारुणा । पाणाइवायस्स वेरमणे । एसवुत्तेअइक्कमे ॥ २ ॥
तिव्व रागायजान्नासा । तिव्वदोसातहेवय । मुसावायस्सवेरमणे ।
एसवुत्ते अइक्कमे ॥ ३ ॥ उग्गहंचअजाइत्ता । अविदिन्नेवउग्गहे ।
अदिन्नादाणस्सवेरमणे । एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ४ ॥ सद्दारूवारसागं
धा । फासाणंपवियारणा । मेहुणस्सवेरमणे । एसवुत्तेअइक्कमे
॥ ५ ॥ इच्छामुच्छायगेहीय । कंखालोन्नेयदारुणे । परिग्गहस्सवे
रमणे । एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ६ ॥ अयमत्तेआहारे । सूरखित्तेयसं
किए । राईन्नोयणस्सवेरमणं । एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ६ ॥ दंसणना

णचरित्ते । अविराहित्ताठिउसमणधम्मे । पढमंवयमणुरक्खे । विरयामोपाणाइवायाउ ॥ १ ॥ दंसणनाणचरित्ते । अविराहित्ता ठिउसमणधम्मे । बीयंवयमणुरक्खे । बिरयामोमुसावायाउ ॥ २ ॥ दंसणनाणचरित्ते । अविराहित्ताठिउसमणधम्मे । तइयंवयमणु रक्खे । विरयामोअदिन्नादाणाउ ॥ ३ ॥ दंसणनाणचरित्ते । अ विराहित्ताठिउसमणधम्मे । चउत्थंवयमणुरक्खे । विरयामोमे हुणाउ ॥ ४ ॥ दंसणनाणचरित्ते । अविराहित्ताठिउसमणधम्मे । पंचमवयमणुरक्खे । विरयामोपरिग्गहाउ ॥ ५ ॥ दंसणनाणच रित्ते । अविराहित्ताठिउसमणधम्मे । छठंवयमणुरक्खे । विर यामोराईभोयणाउ ॥ ६ ॥ आलयविहारसमिउ । जुत्तोगुत्तोठि उसमणधम्मे । पढमंवयमणुरक्खे । विरयामोपाणाइवायाउ ॥ १ ॥ आलयविहारसमिउ । जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे । वीयंवयमणु रक्खे । विरयामोमुसावायाउ ॥ २ ॥ आलयविहारसमिउ । जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे । तइयंवयमणुरक्खे । विरयामोअदि न्नादाणाउ ॥ ३ ॥ आलयविहारसमिउ । जुत्तोगुत्तोठिउसमण धम्मे । चउत्थंवयमणुरक्खे । विरयामोमेहुणाउ ॥ ४ ॥ आल यविहारसमिउ । जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे पंचमवयमणुरक्खे । विरयामोपरिग्गहाउ ॥ ५ ॥ आलयविहारसमिउ । जुत्तोगुत्तो ठिउसमणधम्मे । छठंवयमणुरक्खे । विरयामोराईभोयणाउ ॥ ६ ॥ आलयविहारसमिउ । जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे । ति विहेणपडिक्कंतो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ७ ॥ सावज्जजोगमेगं मिछत्तंएगमेवअणाणं । परिवज्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १ ॥ अणवज्जजोगमेगं । सम्मत्तंएगमेवनाणंतु । उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २ ॥ दोचेवरागदोसे । दुन्नियझाणाइअट्टरु

ज्झाइं । परिवज्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३ ॥ दुविहंचरित्तधम्मं । दुन्नियझाणाइधम्मसुक्काइं । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ४ ॥ किन्हानीलाकाउ । तिन्निअलेसाउअप्पसत्थाउ । परिवज्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ५ ॥ तेऊपह्मासुक्का । तिन्नियलेसाउसुप्पसत्थाउ । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ६ ॥ मणसामणसच्चविऊ । वायासच्चेणकरणसच्चेण । तिविहेणविसच्चविऊ । रक्खामि महव्वएपंच ॥ ७ ॥ चत्तारियदुहसिज्जा । चउरोसन्नातहकसायाय । परिवज्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ८ ॥ चत्तारियसुहसिज्जा । चउव्विहंसंवरंसमाहिंच । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ९ ॥ पंचेवयकामगुणे । पंचेवय अन्हवेमहादोसे । परवज्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १० ॥ पंचेंदियसंवरणं । तत्तोपंचविहसंवसज्झायं । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ११ ॥ छजीवनिकायवहं छप्पियभासाउ अप्पसत्थाउ । परिवज्जंतो गुत्तो । रक्खामि महव्वएपंच ॥ १२ ॥ छव्विहमब्भिंतरयं । बज्झंपियछव्विहंतवोकम्मं । उवसंपन्नो जुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १३ ॥ सत्तभयठाणाइं । सत्तविहंचेवनाणविब्भंगं । परिवज्जंतो गुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १४ ॥ पिंडेसणपाणेसण । उग्गहसतिक्कया महज्झयणा । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामि महव्वएपंच ॥ १५ ॥ अठमयठाणाइं । अठयकम्माइतेसिंबंधंच । परिवज्जंतो गुत्तो रक्खामि महव्वएपंच ॥ १६ ॥ अठयपवयणमाया । दिठाअठविहनिठिअठेहिं । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १७ ॥ नवपावनियाणाइं । संसारत्थाय नवविहाजीवा । परिवज्जंतोगुत्तो । रक्खामि महव्वएपंच ॥ १८ ॥ नवबंभचेरगुत्तो । दुनवविहंबं

भचेरपमिसुद्धं । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १९ ॥ उवघायंचदसविहं । असंवरंतहयसंकिलेसंच । परिवज्जंतोगुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २० ॥ चित्तसमाहिठाणा । दसचेवदसा उसमणधम्मंच । उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २१ ॥ आसायणंचसव्वं । तिगुणंइक्कारसंविवज्जंतो । उवसंपन्नोजुत्तो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २२ ॥एवंतिदंमविरउ । तिगरणसुद्धोतिसल्ल निसल्लो । तिविहेणपमिक्कंतो । रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २३ ॥ इच्चेयं महव्वयउच्चारणं थिरत्तं सल्लुद्धरणं धिइबलंववसाउ साहणठो पाव निवारणं निकायणा भावविसोही पमागगहणं निज्जुहणाराह णागुणाणं संवरजोगो पसत्थझाणोवउत्तया जुत्तयानाणे परमठो उत्तमठो एसतित्थंकरेइ रागदोसमहणेहिं देसिउपवयणस्ससारो छज्जीवनिकायसंजमं उवसंवसिउ तिल्लुक्कसक्कयंठाणं अब्भुवगया नमोत्थुते सिद्धबुद्धमुत्तनीरय निस्संगमाणमूरण गुणरयण सायर मणंतमप्पमे नमोत्थू ते महइ महावीर वद्धमाण सामिस्स नमोत्थू ते अरिहउ नमोत्थूते भगवउ (तिकट्टु) इच्चेसा खलुमहव्वय उच्चा रणाकया इच्छामोसुत्तकित्तणं काउं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिं इमंवाइयं छव्विहमावस्सयंभगवंतं (तंजहा) सामाइयं १ चउवीस त्थउ २ वंदणयं ३ पमिक्कमणं ४ काउसग्गो ५ पच्चक्खाणं ६ सव्वेहंपिएयंमि छव्विहे आवस्सए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सन्निज्जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतेहिं भग वंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावेसद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणपालेमो तेभावेसद्दहंतेहिं पत्तयंतेहिं रोयं तेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं (अंतोपरकस्स) जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुछियं अणुपेहियं अणुपालियं तं दुक्ख

क्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तार णाए त्तिकट्टू उवसंपज्जत्ताणं विहरामी (अंतोपक्खस्स) जंनवाइ यं नपढियं नपरियट्टियं नपुछियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संते वले संतेवीरिए संतेपुरसक्कारपरक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमा मो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहंतवोकम्मं पायछित्तंपडिवज्जामो ॥ तस्समिच्छामिदुक्क डं ॥ नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्का लियं भगवंतं तंजहा दसवेयालियं कप्पियाकप्पियं चुल्लकप्प सुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणियं जीवाभिगमो पन्नव णा महापन्नवणा नंदीअणुउगदाराइं देविंदछउ तंडुलवेयालियं चंदाविज्जयं पमायप्पमायं पोरसिमंडलं मंरुलप्पवेसो गणिवि ज्जा विज्जाचरणविणिछउ जाणविभत्ती आणविभत्ती आयवि सोही मरणविसोही संलेहणासुयं वीयरागसुयं विहारकप्पो च रणविसोही आउरपच्चक्खाणं महापच्चक्खाणं सव्वेहिंपिएयंमि अंगवाहिरिए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थेसग्गंथे सनिज्जुत्ती ए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्ता वा परूवियावा तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पा लेमो अणुपालेमो ते भावेसद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोइंतेहिं फा संतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं (अंतोपरकस्स) जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुछियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि (अंतोपक्खस्स) जंनवाईअं नपढियं न परियट्टियं नपुछियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेवले संतेवी रिए संतेपुरसक्कारपरक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमामो निंदा

अप्पायंकाणं अन्नग्ग जोगाणं सुव्वयाणं सायरिय उवझायाणं नाणेणं दंसणेणं चरित्तेणं तवसाअप्पाणं न्नावेमाणाणं वहुसुन्नेणन्ने दिवसो पक्खो चोमासियो संवछरिओ वइक्कंतो अन्नोयन्नेकल्लाणेणं पज्जु वठिउ सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि तुम्नेहिंसम्मं । इतिगुरु वचनं ॥ इछामिखमासमणो पुव्विंचेइयाइं वंदित्ता नमंसित्ता तुम्नेणं पायमूले विहरमाणेणं जेकेई बहुदेवसिया साहुणोदिठा सम णावा गामाणुगामडुइज्ज माणावा रायणिया संपुछंति उमराय णिया वंदंति अजयावंदंति अजयाउवंदंति सावयावंदंति सावयाउवंदंति अहंपिनिसल्लो निक्कसाउ तिकट्टु सिरसा मण सा मत्थएणवंदामि ॥ इतिशिष्यसाधू वचनं ॥ इहां गुरुववचन अहमविवंदामेवि चेइयाइं ॥ २ ॥ अभ्नुठिउमि तुम्नेणं संतियं अहाकप्पंवा वत्थंवा पम्गिगहंवा कंबलंवा पायपुछणंवा रजहर णंवा अक्खरंवा पायंवा गाहंवा सिलोगंवा अठंवा हेउंवा पसि णंवा वागरणंवा तुम्नेवि यत्तेणांदिन्नं मएअविणए अपम्भिछियं ॥ तस्समिछामि डुक्कम्ं ॥ इतिसाधुवचनं ॥ ॥ इहां आय रियसंतियं ॥ इति गुरुवाक्यं ॥ २ ॥ इछामि खमासमणो अहमविपुव्वाइं कयाइंच मेकियकम्माइं आयारमंतरे विणयमं तरे सेविउ सेवाविउ अवग्रहिउ सारिउ वारिउ चोइउ पडिचो इउ वियत्तामे पडिचोयणा उवठिउहिं तुम्नेणं तवतेयसिरिए इमाउचाउरंतसंसारकंताराउसाहट्टु नित्थारिस्सामि तिकट्टु सिर सा मणसा मत्थएणवंदामि ॥ इति शिष्यवचनं ॥ इहाचार्यव चनं नित्थारगपारगाहोह ॥ इति श्रीपाक्षिकखामणकानि ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सातेस्मरणस्तोत्र महाप्रज्ञाविक ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अजियंजिअसब्वज्ञयं । संतिंच पसंत सब्वगयपावं । जयगुरुसं तिगुणकरे । दोविजिणवरेपणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगयमंगुलज्ञावे । तेहंविनलतवनिम्मलसहावे । निरुवममहप्पज्ञावे । थोसामिसुदिठसब्भावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सब्वदुक्खप्पसंतिणं । सब्वपावप्पसंतिणं । सयाअजिय संतिणं । नमो अजियसंतिणं ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥ अजियजिणसुहपवत्तणं । तवपुरिसुत्तमनाम कित्तणं । तहयधिइमइपवत्तणं । तवयजिणुत्तमसंतिकित्तणं ॥४॥ मागहिआ ॥ किरिआविहिसंचिय कम्मकिलेस विमुक्खयरं । अजियंनिचियंच गुणेहि महामुणिसिद्धिगयं । अजियस्सय संति महामुणिणोविअ संतिअरं । सययं म मणिव्वुइकारणयंचनमंसणिअं ॥ ५ ॥ आलिंगणिअं ॥ पुरिसाजइ दु क्खवारणं । जइयविमग्गह सुक्खकारणं । अजियं संतिं च ज्ञावन । अज्ञ यकरे सरणंपवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइरइ तिमिरविरहिय । सुव रय जरमरणं । सुर असुर गरुड जुअगवइ । पयय पणिवइयं । अजिय महमविय सुनयनयनिउण मज्ञयकरं । सरणमुवसरिअ जुविदिविजमहियं सययमुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तंचजिणुत्तम मुत्तमणित्तमसत्तधरं । अज्जव मद्दव खंतिविमुत्ति समाहिनिहिं । संतिअरंपणमामि दमुत्तमतित्थयरं । सं तिमुणीममसंतिसमाहिवरंदिसन ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवंचवर हत्थि मत्थयपसत्तवित्थिणसंथियं थिरसरिछवछं । मयगललीलाय माणव रगंधहत्थिपत्थाणपछिअं । संथवारिहं हत्थिहत्थवाहुं । धंतकणगरुअगनि रुवहयपिंजरं । पवरलक्खणोवचिअ सोमचारुरूवं । सुइसुहमणाज्ञिराम परम रमणिज्जवरदेवदुंदुहि । निनायमहुरयरयसुहगिरं ॥९॥ वेढन ॥ अजिअंजिआ रिगणं । जिअसब्वज्ञयंज्ञवोहरिन । पणमामिअहंपयन । पावंपसमेनमेज्ञयवं ॥ १० ॥ रासाळुद्धन ॥ कुरुजणवयहत्थिणानर । नरीसरोपढमं । तनमहा चक्कवट्टिज्ञोए । महप्पज्ञावो । जोवावत्तरिपुरवरसहस्स । वरणगरणिगमजण वयवई । वत्तीसारायवरसहस्साणजायमग्गो । चनदसवररयण नवमहानिहि चनसठिमहस्सपवरजुवईण सुन्दरवई । चुलसीहयगयरहमयसहस्ससामी अन्न वइगामकोम्डिसामी । आसी जो ज्ञारहम्मिज्ञयवं ॥ ११ ॥ वेढन ॥ तंसंतिंसंति

अरं। संतिएहं सव्वन्नया। संतिंथुणामिजिणं संतिंविहेउमे ॥१२॥ रासाणंदियअं इख्खागविदेहनरीसर नरवसहासुणिवसहा । नवसारयससिसकलाणण विग यतमा विहुअरया । अजियउत्तमतेअगुणेहिमहामुणि अमिअबला विउलकु ला। पणमामितेभवभयमूरण जगसरणाममसरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दाणविंदचंदसूर वंदहहतुहजिहपरम । लहरूवधंतरुप्पपट्टसेय सुद्धनिद्धिधव ल। दंतपंति संतिसत्ति कित्तिमुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर। दित्ततेयविंदधेयसव्वलोय भाविअप्पभावणे । पइअसमेसमाहिं ॥ १४ ॥ नारायउ ॥ विमलससिक लाइरेअ सोमं। वितिमिरसूरकलाइरेअ तेयं। तिअसवईगणाइरेअ रूवं। धर णीधरपवराइरेअसारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्तेय सयाअजियं । सारीरेय बले अजिअं । तवसंजमेय अजिअं । एसथुणामि जिण मजिअं॥ १६ ॥ भुअंगपरिरिंगिअं ॥ सोमगुणेहिं पावइनतं नवसरयससि। तेय गुणेहिं पावइ नतं नवसरयरवि। रूव गुणेहिं पावइनतं तियसगणवई। सारगुणेहिं पावइन तं धरणिधरवई ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥ तित्थवरपवत्तअं तमरयरहिअं । धीरजण थुअच्चिअं चुअकलिकलुसं । संतिसुहपवत्तयं तिगरणपयउ । संतिमहंमहामुणिं सरणसुवणमे ॥ १८ ॥ ललियअं ॥ विणउणय सिरर इअंजलि रिसिगुणसंथुअंथिमिअं। विबुहाहिव धणवइनरवइ। थुअमहि अच्चिअंबहुसो । अइरुग्गय सरयादिवायर। समहिअ सप्पभंतवसा । गयणं गणविअरण। समुइअ चारण वंदिअंसिरसा॥ १९ ॥ किसलयमाला ॥ असुरगरुलपरिवंदिअं । किन्नरोरगनमंसिअं । देवकोडिसयसंथुअं। समण संघपरिवंदिअं॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अभयं अणहं अरयं अरुअं। अजियं अजियं पयउपणमे ॥ २१ ॥ विज्जुविलसियं ॥ आगयावरविमाणदिव्वकणग रहतुरय पहकरसइहिंहुलिअं । ससंभमोरयणखुभिअलुलिअचलकुंडलं । गयतिरीड सोहंतमउलिमाला॥२२॥ वेढउ॥ जंसुरसंघासासुरसंघा। वेरविउत्ताभत्तिसुजु त्ता। आयरभूसिअसंभमपिंडिअ। सुट्ठुसुविह्मिअ सव्वबलोघा। उत्तमकंचणर यणपरूविअ। भासुरभूसणभासुरिअंगा । गायसमोणयभत्तिवसागय । पंज लिपेसिअसीसपणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊणथोऊणतोजिणं । ति गुणमेवय पुणोपयाहिणं । पणमिऊणयजिणंसुरासुरा। पमुइआ सभवणाइ

तोगया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहंपिपंजली । रागदोसभयमोहवज्जि
अं । देवदाणवनरिंदवंदिअं । संतिमुत्तममहातवंनमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंबर
रंतर वियारणिआहिं । ललियहंसवहुगामिणिआहिं । पीणसोणित्थणसालणि
आहिं । सकलकमलदललोयणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीणनिरंतरथणभर
विणमिअगायलयाहिं । मणिकंचणपसिढिलमेहल सोहियसोणितडाहिं । वर
खिंखिणि नेउर सतिलय वलय विभूसणिआहिं । रयकर चउर मनोहर सुंदर
दंसणिआहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥ देवसुंदरीहिं पायवंदिआहिं वंदिआयज
स्सतेसुविक्कमाकमा । अप्पणोनिलाडएहिं मंमणोहणप्पगारएहिं केहिंकेहिंवी ।
अवंगतिलयपत्तलेह नामएहिं चिल्लएहिं संगयं गयाहिं । भत्तिसन्निविठ्ठवंदणाग
याहिं हुं तितेवंदिआ पुणोपुणो ॥ २८ ॥ नारायउ ॥ तमहंजिणचंदं । अजिअं
जिअमोहं । धुअसव्वकिलेसं । पयउपणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥ थुअवंदि
अस्सा । रिसिगण देवगणेहिं । तोदेववहूहिं । पयउपणमिअस्सा । जस्सजगुत्त
मसासणयस्सा । भत्तिवसागयपिंडियआहिं । देववरछरसावहुआहिं । सुरवररइ
गुणपंडिअयाहिं ॥ ३० ॥ भासुरिअं ॥ वंससद्दतंतितालमेलए । तिउक्खराभि
राम सद्दमीसएकएअ । सुइसमाणणे असुद्धसज्जगीअपायजालघंटिआहिं ।
वलयमेहला कलावनेउरा भिराम सद्दमीसएकएय । देवनट्टिआहिं । हावभाव
विब्भमप्पगारएहिं । नच्चिऊणअंगहारएहिं । वंदिआय जस्सतेसुविक्कमाकमा ।
तयंतिलोयसव्वसत्त संतिकारयं । पसंतसव्वपावदोसमेसहं । नमामिसंतिमुत्तमं
जिणं ॥ ३१ ॥ नारायउ ॥ छत्तचामर पडागजुअजव मंडिआ । झयवर मगर तुरग
सिरिवछसुलंछणा । दीव समुद्द मंदिर दिसागय सोहिआ । सत्थिअ वसहसीह
सिरिवच्छ सुलंछणा ॥ ३२ ॥ ललिययं ॥ सहावलठ्ठा समपइठ्ठा । अदोसदुठ्ठा
गुणेहिंजिठ्ठा । पसायसिठ्ठा तवेणपुठ्ठा सिरीइंइठ्ठा रिसीहिंजुठ्ठा ॥ ३३ ॥
वाण वासिआ ॥ तेनवेण धुअसव्वपावया । सव्वलोअहिअमूलपावया । संथु-
आ अजिअसंति पावया । हुंतुमेसिवसुहाण दायया ॥ ३४ ॥ अपरंतिका ॥
एवंतवबल विउलं ॥ थुअंमए अजियसंति जिणजुअलं । ववगयकम्मरयमलं ।
गयंगयं सासयंविमलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तंबहुगुणप्पसायं । मुक्खसुहेणपरमेण
अविसायं । नासेउमे विसायं । कुणउअपरिसाविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥

तंमोएउश्र नंदिं। पावेउश्र नंदिसेणमभिनंदिं। परसाविय सुहनंदिं । ममय दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिश्रचाउम्मासे । संवछर राइएय-दिश्रहेश्र। सोश्रव्वो सव्वेहिं। उवसग्गनिवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो निसुणइ। उभउकालंपि अजिश्र संति थुश्रं। नहु हुंति तस्सरोगा। पुव्वुप्पणा विनासंति ॥ ३९ ॥ जइइछह परमपयं। श्रहवाकित्तीसु वित्थमा भवणे तातिलु-कुद्धरणे। जिणवयणे श्रायरंकुणह ॥ ४० ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥
॥ ❋ ॥ इति श्रीश्रजितशांतिस्तवनं प्रथम स्मरणं ॥ १ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ उल्लासिक्कम नक्खनिग्गयपहादंमछलेणंगिणं। वंदा रूण दिसंतइ व्वपयरूं निव्वाण मग्गावलिं। कुंदिंदुज्जल दंतकंति मिसउ नीहंतनाणंकुरु। केरेदोवि दुइज्जसोलसजिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरमजलहिनीरं जोमि-णिज्जं जलीहिं। खयसमयसमीरं जोजणिज्जा गईए ॥ सयलनहयलंवा लंघए जोपएहिं ॥ श्रजिश्र महवसंतिं सोसमत्थोथुणेउं ॥ २ ॥ तहविहु बहुमाणु ल्लासिभत्तिभ्भरेण। गुणकणमिवकित्ते हामिचिंतामणिव्व । अलमहव अचिंता णंतसामत्थउसिं। फलहइ लहुसव्वं वंछिश्रं णिछिश्रंमे ॥ ३ ॥ सयलजयहि श्राणं नामिमित्तेणझाणं। बिहडइलहुदुछा। निछदोवट्टवट्टं। नमिरसुरकिरीडु घछपायारविंदे। सययमजिश्रसंती ते जिणिं देभिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वड्ढएदेहदित्ती। विलसइ भुविमित्ती जायए सुप्पवित्ती। फुरइ परमतित्ती होइसंसारछित्ती। जिणजुश्रपयभत्ती हीश्रचिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं भूरिदिव्वंगहारं। फुडवणरसभावो दारसिंगारसारं। अणिमिसरमणिज्ज दंसण-छेश्रभीया। इवपणमणमंदा कासि नट्टोवहारं ॥ ६ ॥ थुणहश्रजिश्रसंती। तेकयासेससंती। कणयरयपसंगा छज्जएजाणमुत्ती। सरभसपरिरंभा रंभिनिव्वा णलछी। घणथणघुसिणंकु प्पंकपिंगीकयव्व ॥ ७ ॥ बहुविहनयभंगं वत्थुणिच्चं अणिच्चं। सदसदणभिलप्पा लप्पमेगंअणेगं। इयकुनयविरुद्धं सुप्पसिद्धंचजेसिं। वयणमवयणिज्जं ते जिणे संभरामि ॥ ८ ॥ पसरइतिअलोए ताव मोहंधयारं। भमइजय मसण्णं ताव मिछत्तछण्णं। फुरइफुरू फलंता णंतणाणं सुपूरो। पयरू मजिश्रसंती झाणसूरोनजाव ॥ ९ ॥ अरिकरि हरि तिएहु एहंबुचोराहि वाही। समररूमर मारी रुद्दखुद्दोवसग्गा। पलयमजिश्रसंती कित्तणेझत्तिजंती। निवि

हतरतमोहा भक्खरा व्वंखिअव्व ॥ १० ॥ निचिअदुरिअदारु दित्तझाणग्गिजाला। परिगय मिव गोरं चिंतिअं झाण रूवं । कणयनिहसरेहा कंतिचोरं करिज्जा। चरथिर मिह लच्छि गाढसं थंभिअव्व ॥ ११ ॥ अडविनिवडिआणं पत्थिवुत्तासिआणं। जलहिलहरिहीरं ताणगुत्तिट्ठियाणं। जलिअ जलणजाला लिंगिआणं चझाणं। जणयइ लहुसंतिं संतिनाहाजिआणं ॥१२॥ हरिकरिपरिकिण्णं पक्कपाइक्कपुण्णं। सयलपुहवि रज्जं च्छड्डिउंआणसज्जं। तणमिच पम्मिलग्गं जेजिणासुत्तिमग्गं। चरण मणुपवणा हुंतुतेमे पसणा ॥१३॥ छणससिवयणाहिं। फुल्लनित्तुप्पलाहिं थणभरन मिरीहिं मुट्ठिगिज्झोदरीहिं । ललिअभुअलयाहिं पीणसोणित्थलीहिं। सयसुर रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिस किब्भिन्न कुट्ठ गंठि का साइसार। खयजर वणलूआ साससोसोदराणि । नहमुह दसणच्छी कुच्छिकणाइरोगे। महजिण जुअपाया सुप्पसायाहरंतु ॥ १५ ॥ इयगुरुदुहतासे पक्खि ए चाउमासे। जिणवरदुगथुत्तं वच्छरेवा पवित्तं। पढह सुणह सिज्झाएहझाएहचित्ते कुणह मुणह विग्घं जेण घाएहसिग्घं ॥ १६ ॥ इयविजया जियसत्तुपुत्त सिरि अजिअ जिणेसर। तहअइरा विससेण तणय पंचमचक्कीसर। तित्थंकरसोल समसंति जिणवल्लहसंतह। कुरुमंगल ममहरसुदुरिअ मखिलंपि थुणंतह ॥१७॥इति श्रीलघुअजितशांतिस्तवनं द्वितीयं स्मरणं २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमिऊणपणयसुरगण। चूडामणिकिरणरंजिअंमुणिणो। चलणजुअलं महाभय। पणासणंसंथवंवुच्छं ॥ १ ॥ सडिअकरचरणनहमुह। निवुड्डनासा विवणलावणा। कुट्ठमहारोगानल। फुलिंगनिदड्ढसव्वंगा ॥ २ ॥ तेतुहचलणा राहण। सलिलंजलिसेअवड्ढियच्छाया। वणदवदड्ढागिरिपायपुव्व पत्तापुणोलच्छि ॥ ३ ॥ दुव्वायखुभिअजलनिहि । उब्भडकल्लोलभीसणारावे। संभंत भयविसंठुल। निज्जामयमुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अवदलिअजाणवत्ता। खणेणपावंतिइच्छिअंकूलं। पासजिणचलणजुअलं। निच्चंचिअ जेनमंतिनरा ॥ ५ ॥ खरपवणुद्धुअवणदव। जालावलिमिलिअसयल दुमगहणे। डज्झंतमुद्धमयवहु। भीसणरवभीसणंमिवणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणोकमजुअलं। निव्वाविअसयलतिहुअणाभोअं। जेसंभरंतिमणुआ नकुणइजलणोभयंतेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत भोगभीसण। फुरिआरुणनयणतरलजीहालं। उग्गभुअंगंनवजलय । सच्छहंभीसणा-

यारं ॥ ८ ॥ मणंतिकीडसरिसं । दूरपरिच्छूढविसमाविसवेगा । तुहनामक्खरफुड-सिद्ध । मंतगुरुआनरालोए ॥ ९ ॥ अडवीसुभिल्लतक्कर । पुलिंदसद्दूलसद्दभी-मासु । भयविहलुवणकायर । उल्लूरिअपहियसत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविहव-सारा । तुहनाहपणाम मित्तवावारा । ववगयविग्वासिग्घं । पत्ताहियइच्छियंठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआनलनयणं । दूरवियारिअमुहंमहाकायं । नहकुलिसघाय-विअलिय । गयंदकुंभत्थलाभोयं ॥ १२ ॥ पणयससंभमपत्थिव । नहमणिमा-णिक्कपडिअपडिमस्स । तुहवयण पहरणधरा । सीहंकुद्धंपि नगिणंति ॥ १३ ॥ ससिधवलदंतमुसलं । दीहकरूल्लालवड्ढि उच्छाहं । महुपिंगनयणजुअलं । स-सलिलनवजलहरायारं ॥ १४ ॥ भीमं महागइंदं । अच्चासन्नंपितेनविगिणंति । जेतुह्मचलणजुअलं मुणिवइतुंगंसमल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मितिक्खखग्गा । भिघायपविद्धउद्धअकबंदे । कुंतविणिभिन्न करिकलह । मुक्कसिक्कारपउरम्मि ॥ ॥ १६ ॥ निज्जिअदप्पुद्धररिउनरिंद । निवहाभडाजसंधवलं । पावंतिपावपस-मण । पासजिणतुहप्पभावेण ॥ १७ ॥ रोगजलजलणविसहर । चोरारिमयंदग-यरणभयाइं । पासजिणनामसंकित्तणेण । पसमंतिसव्वाइं ॥ १८ ॥ एवंमहाभय हरं । पासजिणिंदस्ससंथवमुआरं । भवियजणाणंदयरं । कल्लाणपरंपरनिहाणं ॥ १९ ॥ रायभयजक्खरक्खस्स । कुसुमिणदुस्सउणरिक्खपीडासु । संझासु-दोसुपंथे उवसग्गेतहयरयणीसु ॥ २० ॥ जोपढइजोअनिसुणइ । ताणंकइणो यमाणतुंगस्स । पासोपावंपसमेउ । सयलभुवणच्चिअचलणो ॥ २१ ॥ ❀ ॥

इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं तृतीयस्मरणं ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तंजयउजएतित्थं । जमित्थतित्थाहिवेणवीरेण । सम्मंपवत्तिअंभ-व्वसत्त । संताणसुहजणयं ॥ १ ॥ नासिअसयलकिलेसा निहयकुलेसापसत्थ सुहलेसा । सिरिवद्धमाणतित्थस्स । मंगलंदिंतुतेअरिहा ॥ २ ॥ निद्दड्ढकम्म-वीआ । वीआपरमेठ्ठिणो गुणसमिद्धा । सिद्धा तिजयपसिद्धा । हणंतुदुत्थाणि-तित्थस्स ॥ ३ ॥ आयारमायरंता । पंचपयारं सयापयासंता । आयरिआत-हतित्थं । निहयकुतित्थंपयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअवायगावायगाय । सिअ-वायवायगावाए । पवयणपडिणीयकए । वणंतुसव्वस्ससंघस्स ॥ ५ ॥ निव्वा-णसाहणुज्जुअ । साहूणंजणिअसव्वसाहज्जा । तित्थप्पभावगाते । हवंतुपरमे

ठिणोजइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुगयंनाणं । निव्वाणफलंचचरणमविहवइ । तित्थ स्सदंसणंतं । मंगलमवणेउसिद्धियरं ॥ ७ ॥ निव्वम्मोसुअधम्मो । समग्गजव्वंगि वग्गकयसम्मो । गुणसुठिअस्ससंघस्स । मंगलंसम्ममिहदिसउ ॥ ८ ॥ रम्मोच रित्तधम्मो संपाविअजव्वसत्तसिवसम्मो । नीसेसकिलेसहरो । हवउसयासयल संघस्स ॥ ९ ॥ गुणगणगुरुणो गुरुणो । सिवसुहमइणो कुणंतु तित्थस्स । सिरि वद्धमाणपहुपयम्भिअस्स । कुसलंसमग्गस्स ॥ १० ॥ जियपम्विक्खाजक्खा । गोमुहमायंगगयसुहपमुक्खा । सिरिबंजसंतिसहिआ । कयनयरक्खासिवंदितु ॥ ११ ॥ अंबापडिहयबंबा । सिद्धासिद्धाइआपवयणस्स । चक्केसरिवइरुट्टा । संतिसुरादिसउसुक्खाणि ॥ १२ ॥ सोलसविज्जादेवीउ दिंतुसंवस्समंगलंविउलं । अच्चुत्तासहिआउ । विस्सुअसुयदेवयाइसमं ॥ १३ ॥ जिणसासणकय रक्खा । जक्खाचउवीससासणसुरावि । सुहभावासंतावं । तित्थस्ससयापणासंतु ॥ १४ ॥ जिणपवयणंमिनिरया । विरहाकुपहाउसव्वहासव्वे । वेयावच्चकराविअ । तित्थ स्सहवंतुसंतिकरा ॥ १५ ॥ जिणसमय सुद्धसमग्ग । वहिअजव्वाण जणिअसाह ज्जो । गीयरई गीयजसो । सपरिवारोसुहंदिसउ ॥ १६ ॥ गिहगुत्तखित्तज लथल । वणपव्वयवासिदेवदेवीउ । जिणसासणठिआणं । दुहाणिसव्वाणिनि हणंतु ॥ १७ ॥ दसादिसिपालासक्खित्तपालया नवग्गहासनक्खत्ता । जोइणि राहुग्गहकालपास कुलिअअपहरेहिं ॥ १८ ॥ सहकालकंटएहिं । सविठिवत्थेहिं फालवेलाहिं । सवेसव्वत्थसुहं । दिसंतुसव्वस्ससंवस्स ॥ १९ ॥ भवणवइवाण मंतर । जोइसवेमाणिआयजेदेवा । धरणिंदसक्कसहिआ । दलंतुदुरिआइंति त्थस्स ॥ २० ॥ चक्कंजस्सजलंतं । गछइ पुरउपणासिअनमोहं । तंतित्थस्स भगवउ । नमोनमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सोजयउजिणोवीरो । जस्सज्जाविमा सणंजएजयइ । सिद्धिप्पहमाहणंकुपह । नासणंसव्वभयमहणं ॥ २२ ॥ सिरिउसम सेणपमुहा । हयभय निवहा दिसंतुतित्थस्स । सव्वजिणाणंगणिहारिणो । णहंवंछिअंसव्वं ॥ २३ ॥ सिरिवद्धमाणतित्थाहिवेण । तित्थंसमप्पिअंजस्स । सम्मंसुहम्मसामी । दिसउसुहं सयलसंघस्स ॥ २४ ॥ पयइपभद्दिआजे । भद्दा णदिसंतुसयलसंघस्स इयरसुराविहुसम्मं । जिणगणहरकहियकारिस्स ॥ २५ ॥

इयजोपढइतिसंझं। तुस्सज्झंतस्सनत्थिकिंपिजए। जिणदत्ताणाएठिन्नो। सुनि-ठिअठोसुहीहोइ ॥२६॥ ❋॥ इतिगणधरदेवस्तुतिः। चतुर्थस्मरणं ॥४॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ मयरहिअंगुणगणरयण। सायरं सायरं पणमिऊणं। सुगुरुजण पारतंतं। नहिव थुणामितंचेव ॥ १ ॥ निम्महियमोहजोहा। निहयाविरोहाप णठिसंदेहा। पणयंगिवग्गदाविअ। सुहसंदोहासुगुणगेहा ॥ २ ॥ पत्तसुज इत्तसोहा। समत्तपरतित्थजणियसंखोहा। पमिन्नग्गमोहजोहा। दंसिअसुम हत्थसत्थोवा ॥ ३ ॥ परिहरिअसत्थवाहा। हयदुहदाहासिवंबतरुसाहा। संपा विअसुहलाहा। खीरोदहिणुव्वअग्गाहा ॥ ४ ॥ सुगुणजणजणिअपुज्जा। सज्जोनिरवज्जगहिअपवज्जा। सिवसुहसाहणसज्जा। नवगिरिगुरुचूरणेवज्जा ॥ ॥ ५ ॥ अज्जसुहम्मप्पमुहा। गुणगणनिवहासुरिंदविहियमहा। ताणतिसंझं नामं। नामंनपणासइजियाणं ॥ ६ ॥ पमिवज्जिअजिणदेवो। देवायरिनदुरंत नवहारी। सिरिनेमचंदसूरि। नज्जोयणसूरिणोसुगुरु ॥ ७ ॥ सिरिवद्धमा णसूरी। पयमीकयसूरिमंतमाहप्पो। पम्हियकसायपसरो। सरयससंकुव्वसुह जणन ॥८॥ सुहसीलचोरथप्परण। पच्चलोनिच्चलोजिणमयंमि। जुगपवरसुद्ध सिद्धंत। जाणनपणयसुगुणजणो ॥ ९ ॥ पुरनदुल्लह महिवल्लहस्स। अणहि ल्लवाडपयडं। मुक्काविआरिऊणं। सीहेणवदव्वलिंगिगया ॥ १० ॥ दसमच्छेर-यनिसिविप्फुरंत। सछंदसूरिमयतिमिरं। सूरेणवसूरीजिणेसरेण। हयमहिअ-दोसेण ॥ ११ ॥ सुकइत्तपत्तकित्ती। पयडिअगुत्ती पसंतसुहमुत्ती। पहयपर-वाइदित्ती। जिणचंदजईसरोमंती ॥ १२ ॥ पयडिअनवंगसुत्तत्थ। रयणकोसोपणासिअपनसो। नवभीअनविअजणमण। कयसंतोसोविगयदोसो ॥१३॥ जुगपवरागमसारपरूवणा। करणबंधुरोधणिअं। सिरिअभयदेवसूरी। मुणिप-वरोपरमपसमधरो ॥ १४ ॥ कयसावय संतासो। हरिव्वसारंगभग्गसंदेहो। गय समयदप्पदलणो। आसाइअपवरकव्वरसो ॥ १५ ॥ भीमभवकाणणम्मिअ। दंसिअगुरुवयणरयणसंदेहो। नीसेससत्तगुरुन। सुरीजिणवल्लहोजयइ ॥ १६ ॥ नवरठिअसच्चरणो। चनरणुनंगप्पहाणसच्चरणो। असममयरायमहणो। नड्ढमुहेसहइजस्सकरो ॥ १७ ॥ दंसिअनिम्मलनिच्चल। दंतगणोगणिअसावनत्थ-भन। गुरुगिरिगरुनसरहुव्व। सूरिजिणवल्लहोहोत्था ॥१८॥ जुगपवरागमपी-

नसपाण। पीणियमणाकयाजवा। जेणजिणवल्लहेणं। गुरुणातंसवहावंदे ॥१९॥ विप्फुरिअपवरपवयण। सिरोमणी वूढदुव्वह खमोय जोसेसाणंसेसुव। सहइ-सत्ताण ताणकरो ॥ २० ॥ सचरिआणमहीणं। सुगुरूणंपारतंतमुवहइ जयइ-जिणदत्तसूरी। सिरिनिलउपणयमुणितिलउ ॥ २१ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इति श्रीगुरुपारतंत्र्यं पंचमस्मरणं ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिग्घमवहरउविग्घं। जिणवीराणाणु गामिसंघस्स। सिरिपास जि-णोथंभण। पुरठिउनिठिआनिठो ॥ १ गोयमसुहम्मपमुहा। गणवइ णोविहि-अनवसत्तसुहा। सिरिवद्धमाणजिणतित्थ। सुत्थयंतेकुणंतुसया ॥ २ ॥ सक्काइ णोसुराजे। जिणवेयावच्चकारिणोसंति। अवहरिअविग्घसंघा। हवंतु तेसंघसंति-करा ॥ ३ ॥ सिरिथंभणयठियपाससामि। पयपउमपणयपाणीणं। निद्दलिअ-दुरिअविंदो। धरणिंदोहरउदुरिआइं ॥ ४ ॥ गोमुहपमुक्खजक्खा। पडिहय पडिवक्खपक्खलक्खाते। कयसगुणसंघरक्खा। हवंतुसंपत्तिसिवसुक्खा ॥ ५ ॥ अप्पडिचक्कापमुहा। जिणसासण देवयाउजिणपणिआ। सिघाइआ समेया। हवंतुसंघस्सविग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काएसासच्चउरपुराठिउ। वद्धमाण जिणभत्तो। सिरिबंभसंतिजक्खो। रक्खउसंघं पयत्तेण ॥ ७ ॥ खित्तगिह गुत्तसंताण। देस देवाहिदेवयातोउ। निव्वइपुरपहियाणं। भव्वाणकुणंतुसुक्खाणि ॥ ८ ॥ चक्के सरिचक्कधरा। विहिपहरिउछिणकंधराधणिअं। सिवसरणलग्गसंघस्स। सव्व हाहरउविग्घाणि ॥ ९ ॥ तित्थवइवद्धमाणो। जिणेसरोसंगउसुसंघेण। जिण चंदोभयदेवो। रक्खउजिण वल्लहपहुमं ॥ १० ॥ सोजयउवद्धमाणो। जिणेसरो णेसरुव्वहयतिमिरो। जिणचंदाभयदेवा। प हुणो जिणवल्लहाजेय ॥ ११ ॥ गुरु जिणवल्लहपाए भयदेवपहुत्तदायगेवंदे। जिणचंदजिणेसरवद्धमाण। तित्थस्स वुड्ढिकए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणंसम्मं। मन्नंतिकुणंतिजेयकारंति। मणसावयसा वउसा। जयंतु साहम्मिआतेवि ॥ १३ ॥ जिणदत्तगुणेनाणाइणो। सयाजेय-रंतिधारंति। दंसिअसिवपयपए। नमामिसाहम्मिआतेवि ॥ ६ ॥ ❀ ॥ इति षष्ठं स्मरणं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ उवसग्गहरंपासं। पासंवंदामिकम्मघणमुक्कं। विसहरविसनिन्नासं। मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ भवेभवेपास-जिणचंद ॥ २ ॥ ❀ ॥ इतिश्रीपार्श्व जिनस्तवनं ॥ इति सप्तस्मरणानि ॥ ❀ ॥

॥ ❋ ॥ अथ लघुशांतिलि ॥ ❋ ॥

॥ ❋ शांतिंशांतिनिशांतं । शांतिंशांताशिवंनमस्कृत्य । स्तोतुशांतिनिमित्तं । मंत्रपदैःशांतयेस्तौमि ॥ १ ॥ उमितिनिश्चितवचसे । नमोनमोभगवतेर्हतेपूजां । शांतिजिनायजयवते । यशस्विनेस्वामिनेदमिनां ॥ २ ॥ सकलातिसेषकमहा । संपत्तिसमन्वितायशस्याय । त्रैलोक्यपूजितायच । नमोनमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुससूह । स्वामिकसंपूजितायनजिताय । भुवन जनपालनोद्यत । तमायसततंनमस्तस्मै ॥ ४ ॥सर्व्वदुरितौघ नाशन कराय । सर्वाशिव प्रशमनाय । दुष्टग्रहभूत पिशाच शाकनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येतिनाममंत्र । प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा । विजया कुरुतेजनहित । मिति चनुता नमततं शांतिं ॥ ६ ॥ भवतु नमस्ते भगवति । विजये सुजये परापरैरजिते । अपराजिते जगत्यां । जयतीति जयावहे भवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापिच संघस्य । भद्रकल्याण मंगलप्रददे । साधूनांचसदाशिव । तुष्टिपुष्टिप्रदेजीयाः ॥८॥ भव्यानां कृतसिद्धे । निर्वृतिनिर्वाण जननि सत्वानां । अभयप्रदाननिरते । नमोस्तु स्वस्तिप्रदेतुभ्यं ॥ ९ ॥ भक्तानां जंतुनां । शुभावहे नित्यमुद्यतेदेवी । सम्यग्दृष्टीनांच । धृति रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां । शांतिनतानांच जगतिजंतूनां । श्रीसंपतकीर्तियशो । वर्द्धनिजयदेवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल विषविषधर । दुष्टग्रह राजरोग रणभयतः राक्षसरिपुगणमारी । चौरेतिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं । कुरु २ शान्तिच कुरु कुरु सदेति । तुष्टिंकुरु २ पुष्टिं । कुरु २ स्वस्तिं च कुरु कुरुत्वं ॥ १३ ॥ भगवति गुणवति शिवशांति । तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह । कुरु २ जनानां । उमिति नमो नमो ह्रॉँ ह्रीँ ह्रुँ ह्रः । यः क्षः ह्रीँ फट् फट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्नामाक्षर । पुरस्सरंसंस्तुता जयादेवी । कुरुते शान्ति निमित्तं । नमो नमः शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इतिपूर्व्वसूरिदर्शित । मंत्रपदविदर्भितः स्तवः शांतेः । सलिलादिभयविनाशी । शांत्यादिकरश्च भक्ति मतां ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा । श्रयणोति भावयतिवा यथायोगं । सहि शान्तिपदं यायात् । सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ ❋ ॥

इति लघुशान्तिस्तोत्रं॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वृद्धशांति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भो भो भव्याः शृणुतवचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत् । ये यात्रायां त्रिभुवन-गुरोरार्हता भक्तिभाजः । तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा । दारोग्य श्री धृति मतिकरी क्लेश विध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ भोभोभव्यलोकाइहहि भरते रावत विदेहसंभवानां । समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं । अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः । सुघोषाघंटाचालनानान्तरं । सकलसुरा सुरेंद्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा । गत्वा कनकाद्रिशृंगे । विहितजन्माभिषेकः । शान्ति मुद्घोषयति ततोहं कृतानुकारमिति कृत्वामहाजनो येन गतस्स पंथाः । इति भव्य जनैः सहसमागत्य । स्नात्रपीठे स्नात्रंविधाय । शान्तिमुद्घोषयामि । तत्पूजा यात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरं । इतिकृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां स्वाहा । ॐ पुण्याहं २ । प्रीयंतां २ भगवंन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिन । स्त्रैलोक्यनाथा । स्त्रैलोक्यमहिता । स्त्रैलोक्यपूज्या । स्त्रैलोक्योद्योतकराः ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानी ॥ १ ॥ निर्वाणी । २ । सागर । ३ । महायश । ४ । विमल । ५ । सर्वानुभूति । ६ । श्रीधर । ७ । दत्त । ८ । दामोदर । ९ । सुतेजा । १० । स्वामी । ११ । मुनिसुव्रत । १२ । सुमति । १३ । शिवगति । १४ । अस्ताग । १५ । नमीश्वर । १६ । अनिल । १७ । यशोधर । १८ । कृतार्थ । १९ । जिनेश्वर । २० । शुद्धमति । २१ । शिवकर । २२ । स्यन्दन । २३ । संप्रति । २४ ॥ ❀ ॥ एते अतीतचतुर्विंशतितीर्थकराः ॥ ❀ ॥ ॐ श्रीऋषभ । १ । अजित । २ । संभव । ३ । अभिनन्दन । ४ । सुमति । ५ । पद्मप्रभ । ६ । सुपार्श्व । ७ । चंद्रप्रभ । ८ । सुविधि । ९ । शीतल । १० । श्रेयांस । ११ । वासुपूज्य । १२ । विमल । १३ । अनन्त । १४ । धर्म । १५ । शान्ति । १६ । कुंथु । १७ । अर । १८ । मल्लि । १९ । मुनिसुव्रत । २० । नमि । २१ । नेमि । २२ । पार्श्व । २३ । वर्द्धमान । २४ । प्रमुखावर्त्तमानाजिनाः ॥ ❀ ॥ ॥ ॐ श्रीपद्मनाभ । १ । सूरदेव । २ । सुपार्श्व । ३ । स्वयंप्रभ । ४ । सर्वानुभूति । ५ । देवश्रुत । ६ । उदय । ७ । पेढाल । ८ । पोट्टिल । ९ । शतकीर्त्ति । १० । सुव्रत । ११ । अमम । १२ । निष्कषाय । १३ । निष्पुलाक । १४ । निर्मम । १५ । चित्रगुप्ति । १६ । समाधि । १७ । संवर । १८ । यशो-

॥ ❋ ॥ अथ लघुशांतिलि ॥ ❋ ॥

॥ ❋ शांतिंशांतिनिशांतं । शांतिंशांताशिवंनमस्कृत्य । स्तोतुशांतिनिमित्तं । मंत्रपदैःशांतयेस्तौमि ॥ १ ॥ ॐमितिनिश्चितवचसे । नमोनमोभगवतेर्हतेपूजां । शांतिजिनायजयवते । यशस्विनेस्वामिनेदमिनां ॥ २ ॥ सकलातिसेषकमहा । संपत्तिसमन्वितायशस्याय । त्रैलोक्यपूजितायच । नमोनमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्व्वामरसुसमूह । स्वामिकसंपूजितायनजिताय । भुवन जनपालनोद्यत । तमायसततंनमस्तस्मै ॥ ४ ॥सर्व्वदुरितौघ नाशन कराय । सर्वाशिव प्रशमनाय । दुष्टग्रहभूत पिशाच शाकनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येतिनाममंत्र । प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा । विजया कुरुतेजनहित । मिति चनुता नमततं शांतिं ॥ ६ ॥ भवतु नमस्ते भगवति । विजये सुजये परापरैरजिते । अपराजिते जगत्यां । जयतीति जयावहे भवति ॥ ७ ॥ सर्वेस्यापिच संघस्य । भद्रकल्याण मंगलप्रददे । साधूनांचसदाशिव । तुष्टिपुष्टिप्रदेजीयाः ॥८॥ भव्यानां कृतसिद्धे । निर्वृतिनिर्वाण जननि सत्वानां । अभयप्रदाननिरते । नमोस्तु स्वस्तिप्रदेतुभ्यं ॥ ९ ॥ भक्तानां जंतुनां । शुभावहे नित्यमुद्यतेदेवी । सम्यग्दृष्टीनांच । धृति रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां । शांतिनतानांच जगतिजंतूनां । श्रीसंपतकीर्तियशो । वर्द्धनिजयदेवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल विषविषधर । दुष्टग्रह राजरोग रणभयतः राक्षसरिपुगणमारी । चौरेतिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं । कुरु २ शान्तिच कुरु कुरु सदेति । तुष्टिंकुरु २ पुष्टिं । कुरु २ स्वस्तिं च कुरु कुरुत्वं ॥ १३ ॥ भगवति गुणवति शिवशांति । तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह । कुरु २ जनानां । ॐमिति नमो नमो ह्रॉँ ह्रीँ ह्रुँ ह्रः । यः क्षः ह्रीँ फट् फट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्नामाक्षर । पुरस्सरंसंस्तुता जयादेवी । कुरुते शांन्ति निमित्तं । नमो नमः शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इतिपूर्व्वसूरिदर्शित । मंत्रपदविदर्भितः स्तवः शांतेः । सलिलादिभयविनाशी । शांत्यादिकरश्च भक्ति मतां ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा । श्रयणोति भावयतिवा यथायोगं । सहि शान्तिपदं यायात् । सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ ❋ ॥

इति लघुशान्तिस्तोत्रं॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वृद्धशांति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भो भो भव्याः शृणुतवचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत् । ये यात्रायां त्रिभुवन-गुरोरार्हता भक्तिभाजः । तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा । दारोग्य श्री धृति मतिकरी क्लेश विध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ भोभोभव्यलोकाइहहि भरतै रावत विदेहसंभवानां । समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं । अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः । सुघोषाघंटाचालनानान्तरं । सकलसुरा सुरेंद्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा । गत्वा कनकाद्रिशृंगे । विहितजन्माभिषेकः । शान्ति मुद्घोषयति ततोहं कृतानुकारमिति कृत्वामहाजनो येन गतस्स पंथाः । इति भव्य जनैः सहसमागत्य । स्नात्रपीठे स्नात्रंविधाय । शान्तिमुद्घोषयामि । तत्पूजा यात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरं । इतिकृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां स्वाहा । ॐ पुण्याहं २ । प्रीयंतां २ भगवंन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिन । स्त्रैलोक्यनाथा । स्त्रैलोक्यमहिता । स्त्रैलोक्यपूज्या । स्त्रैलोक्योद्योतकराः ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानी ॥ १ ॥ निर्वाणी । २ । सागर । ३ । महायश । ४ । विमल ।५। सर्वानुभूति । ६ । श्रीधर ।७। दत्त ।८। दामोदर ।९। सुतेजा । १० । स्वामी । ११ । मुनिसुव्रत ।१२। सुमति ।१३। शिवगति । १४। अस्ताग । १५ । नमीश्वर । १६ । अनिल । १७ । यशोधर ।१८। कृतार्थ ।१९। जिनेश्वर । २० । शुद्धमति । २१ । शिवकर । २२ । स्यन्दन । २३ । संप्रति । २४ ॥ ❀ ॥ एते अतीतचतुर्विंशतितीर्थंकराः ॥ ❀ ॥ ॐ श्रीऋषभ । १ । अजित । २ । संभव । ३ । अभिनन्दन । ४ । सुमति । ५ । पद्मप्रभ । ६ । सुपार्श्व । ७ । चंद्रप्रभ । ८ । सुविधि । ९ । शीतल । १० । श्रेयांस । ११ । वासुपूज्य । १२ । विमल । १३ । अनन्त । १४ । धर्म । १५ । शान्ति । १६ । कुंथु । १७ । अर । १८ । मल्लि । १९ । मुनिसुव्रत । २० । नमि । २१ । नेमि । २२ । पार्श्व । २३ । वर्द्धमान । २४ । प्रमुखावर्त्तमानजिनाः ॥ ❀ ॥ ॥ ॐ श्रीपद्मनाभ । १ । सूरदेव । २ । सुपार्श्व । ३ । स्वयंप्रभ । ४ । सर्वानुभूति । ५ । देवश्रुत । ६ । उदय । ७ । पेढाल । ८ । पोट्टिल । ९ । शतकीर्ति । १० । सुव्रत । ११ । अमम । १२ । निष्कषाय । १३ । निष्पुलाक । १४ । निर्मम । १५ । चित्रगुप्ति । १६ । समाधि । १७ । संवर । १८ । यशो-

धर । १९ । विजय । २० । मल्लि । २१ । देव । २२ । अनन्तवीर्य । २३ । भद्रंकर । २४ ॥ ❋ ॥ एते भावितीर्थंकराजिनाः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ शान्ताः शान्तिकराः भवंतु मुनयो मुनिप्रवरा । रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वो नित्यं । ॥ ॐ श्रीनाभि । १ । जितशत्रु । २ । जितारि । ३ । संवर । ४ । मेघ । ५ । धर । ६ । प्रतिष्ट । ७ । महसेननरेश्वर । ८ । सुग्रीव । ९ । दृढरथ । १० । विष्णु । ११ । वसुपूज्य । १२ । कृतवर्म । १३ । सिंहसेन । १४ । भानु । १५ । विश्वसेन । १६ । शूर । १७ । सुदर्शन । १८ । कुंभ । १९ । सुमित्र । २० । विजय । २१ । समुद्रविजय । २२ । अश्वसेन । २३ । सिद्धार्थ । २४ । ॥ ❋ ॥ वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥ ❋ ॥ ॐ श्रीमरुदेवा । १ विजया । २ । सेना । ३ । सिद्धार्था । ४ । सुमंगला । ५ । सुसीमा । ६ । पृथिवीमाता । ७ । लक्ष्मणा । ८ । रामा । ९ । नंदा । १० । विष्णु । ११ । जया । १२ । स्यामा । १३ । सुयशा । १४ । सुव्रता । १५ । अचिरा । १६ । श्री । १७ । देवी । १८ । प्रभावती । १९ । पद्मा । २० । वप्रा ।२१। शिवा । २२ । वामा । २३ । त्रिशला । २४ । ॥ ❋ ॥ वर्त्तमानजिनजनन्यः ॥ ❋ ॐ श्री गो मुख । १ । महायक्ष । २ । त्रिमुख । ३ । यक्षनायक । ४ । तुंबरु । ५ । कुसुम । ६ । मातंग । ७। विजय । ८ । अजित । ९ । ब्रह्मा ।१० । यक्षराज । ११ । कुमार । १२ । षण्मुख । १३ । पाताल । १४ । किन्नर । १५ । गरुड । १६ । गंधर्व । १७ । यक्षराज । १८ । कुवेर । १९ । वरुण । २० । भृकुटि । २१ । गोमेध । २२ । पार्श्व ।२३। ब्रह्मशांति । २४ ।॥ ❋ ॥ वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥ ❋ ॥ ॐ चक्रेश्वरी । १ । अजितबला । २ । दुरितारी । ३ । काली । ४ । महाकाली । ५ । श्यामा । ६ । शांता । ७ । भृगुटी । ८ । सुतारका । ९ । अशोका । १० । मानवी । ११ । चंमा । १२ । विदिता । १३ । अंकुशा । १४ । कंदर्पा । १५ । निर्वाणी । १६ । बला । १७ । धारणी । १८ । धरणप्रिया । १९ । नरदत्ता । २० । गांधारी । २१ । अंबिका । २२ । पद्मावती २३ । सिद्धायिका । २४ । ॥ ❋ ॥ वर्त्तमानचतुर्विंशति तीर्थंकरशाशनदेव्यः ॥ ❋ ॥ ॐ ह्रीं श्रींधृति कीर्त्ति कांति बुद्धि लक्ष्मी मेधा विद्या साधन प्रवेशनिवेशनेषु । सुगृहीतना-

मानो जयंति ते जिनेंद्राः ॐ रोहिणी । १ । प्रज्ञप्ती । २ । वज्रशृंखला । ३ । वज्रांकुशा । ४ । चक्रेश्वरी । ५ । पुरुषदत्ता । ६ । काली । ७ । महाकाली । ८ । गौरी । ९ । गांधारी । १० । सर्वास्त्रमहाज्वाला । ११ । मानवी । १२ । वैरोट्या । १३ । अच्छुप्ता । १४ । मानसी । १५ । महामानसी । १६ । एताः षोडशविद्यादेव्यो रक्षंतुमे स्वाहा । ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृति चातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु । ॐ तुष्टिर्भवतु । पुष्टिर्भवतु । ॐ ग्रहाश्चंद्र सूर्यां गारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु सहिताः सलोकपालाः सोम यम वरुण कुबेर वासवादित्य स्कन्द विनायक येचान्येपि ग्राम नगर क्षेत्रदेवतादय स्ते सर्वे प्रीयंतां २ अक्षीणकोस कोष्ठागारा नरपतयश्च भवंतु स्वाहा । ॐ पुत्र मित्र भ्रातृ कलत्र सुहृत स्वजनसंबंधिबंधुवर्गसहिताः नित्यंचामोदप्रमोदकारिणो भवंतु । अस्मिंश्च भूमंडले आयतननिवासिनां । साधु साध्वी श्रावक श्राविकाणां । रोगोपसर्ग व्याधिदुःख दौर्मनस्योपशमनाय शांतिर्भवतु । ॐ तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि माङ्गल्योत्सवाः भवंतु । सदा प्रादुर्भूतानि दुरितानि पापानि शाम्यंतु । शत्रवः पराङ्मुखा भवंतु स्वाहा । श्रीमते शान्तिनाथाय । नमः । शान्तिविधायिने । त्रैलोक्यस्यामराधीश । मुकुटाभ्यर्चितां ह्ये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान् । शान्तिः दिशतु मे गुरुः । शान्तिरेव सदातेषां । येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ ॐ उन्मृष्टरिष्ट दुष्ट ग्रहगति दुःस्वप्नदुर्निमित्तादि संपादितहितसंपत् नामग्रहणं जयतुशांतेः ॥ ३ ॥ श्रीसंघपौरजनपद राजाधिपराज संनिवेशानां । गोष्ठीपुरमुख्यानां । व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिं ॥४॥ श्री श्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु । श्रीपौरलोकस्य शांतिर्भवतु । श्रीजनपदानां शांतिर्भवतु । श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु । श्रीराजसंनिवेशानां शांतिर्भवतु । श्रीगोष्ठिकानां शांतिर्भवतु । ॐ स्वाहा २ ॥ ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा । एषा शांतिःप्रतिष्ठा यात्रास्नात्रावसानेषु । शांतिकलशं गृहीत्वा । कुंकुम चंदन कर्पूरा गुरुधूप वास कुसुमांजलिसमेतः । स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः । शुचिः शुचि वस्त्र श्चंदना भरणालंकृतः । पुष्पमाला कंठेकृत्वा । शांतिमुद्घोषयित्वा शांतिपानीयं मस्तके दातव्यमिति । नृत्यंतिनृत्यं मणिपुष्पवर्षं । सृजंति गायंतिच मंगलानि स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान् । कल्याणभाजोहि जिनाभिषेके

॥ १ ॥ अर्हंतित्थयरमाया शिवादेवी । तुह्म नयरनिवासिनी अह्म शिवं तुह्म शिवं । असुहोवसमं शिवं भवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः । परहित-निरताभवंतु भूतगणाः । दोषाःप्रयांतु नाशं । सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥ २ ॥ उपसर्गाः क्षयं यांति । छिद्यंते विघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति । पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इति श्रीबृहच्छांतिः समाप्ता ॥ ❀ ॥

॥ अथ दूजकी स्तुति ॥

॥ ❀ ॥ महीमंमणं पुन्न सोवन्न देहं । जणाणंदणं केवल न्नाण गेहं । महा नंद लछी बहु बुद्धिरायं । सुसेवामि सीमंधरं तित्थरायं ॥ १ ॥ पुरा तारगा जेह जीवाण जाया । भवस्संति ते सव्व भव्वाणताया । तहा संपयं जेजिणा वट्टमाणा सुहं दिंतु तेमे तिलोयप्पहाणा ॥ २ ॥ दुरुत्तार संसार कुवारपोयं । कलंका-वली पंक पक्खाल तोयं । मणोवंछियत्थे सुमंदार कप्पं । जिणंदागमं वंदिमो सुमहप्पं ॥ ३ ॥ विकोसे जिणंदाणणं भोजलीणा । कला रूव लावण सोहग्ग पीणा । वहंतस्स चित्तंमि णिच्चंपि झाणं । सिरी भारही देहिमे सुद्धनाणं ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ इति श्री सीमंधरजीरी स्तुतिः ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ पंचमी स्तुती ॥

॥ ❀ ॥ पंचानंतक सु प्रपंच परमानंद प्रदान क्षमं । पंचानुत्तर सीम दिव्य पदवी वश्याय मंत्रोपमं । येन प्रोज्वल पंचमी वरतपो व्याहारि तत्का रिणां । श्रीपंचानन लांछनः सतनुतां श्री वर्द्धमानः श्रियं ॥ १ ॥ ये पंचाश्रव रोदसाधनपराः पंचप्रमादी हराः । पंचाणुव्रत पंचसुव्रत विधि प्रज्ञापना सादराः कृत्वा पंचहृषीक निर्जयमथो प्राप्तागतिं पंचमीं । तेमी संतु सुपंचमी व्रतभृतां तीर्थंकराः शंकराः ॥२॥ पंचाचार धुरीण पंचम गणाधीशेन संसूत्रितं । पंच ज्ञान विचारसार कलितं पंचेषु पंचत्वदं । दीपाभंगुर पंचमार तिमिरे ष्वेकाः दशी रोहिणी । पंचम्यादि फल प्रकाशनपटुं ध्यायामि जैना गमं ॥ ३ ॥ पंचानां परमेष्टिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरु श्रियां । भक्तानां भविनां गृहेषु बहुशो या पंच-दिव्यं व्यधात् । प्रह्वे पंचजने मनोभृत कृतौ स्वारत्नपंचालिका । पंचम्यादि तपोवतां भवतु सा सिद्धायिका त्रायिका ॥४॥ इति श्री ज्ञान पंचमीस्तुतिः ॥

॥ ❀ ॥ वीरं । देवं । नित्यं वंदे ॥ १ ॥ जैनाः । पादा । युष्मान् पांतु

॥२॥ जैनं । वाक्यं । जूया । द्भुत्यै ॥३॥ सिद्धा । देवी । दद्यात् । सौख्यं ॥ ४॥
॥ ❁ ॥ इति लघ्वीस्त्रीछंदसि श्रीवीर स्तुतिः ॥ ६ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ अथ अष्टमी स्तुतिः ॥

॥ ❁ ॥ चउवीसे जिनवर प्रणमुंहुं नितमेव । आठम दिनकरियै चंद्राप्रभुनी सेव । मूरति मनमोहै जाणें पूनिमचंद । दीठां दुख जाये पामेंपरमानंद ॥ १ ॥ मिल चोसठ इंद्र पूजे प्रभुजीना पाय । इंद्राणी अपछराकरजोमी गुणमाय । नंदीश्वर द्वीपैं मिल सुरवरनी कोड । अठाही महोछवकरतां होमा होम ॥ २ ॥ सेत्रुंजा सिखरैं जाणी लाभ अपार । चौमासे रहिया गणधर मुनि परिवार । भवियणनें तारै देइ धरम उपदेश । दूध साकरथी पिण वाणी अधिक विशेस ॥ ३ ॥ पोसो पडिकमणो करियै ब्रतपचखाण । आठम तप करतां आठकरमनी हाण । आठमंगल थायें दिन २ कोडि कल्याण । जिन सुखसूरि कहै इम जीवत जनम प्रमाण ॥ ❁ ॥ इति अष्टमी स्तुतिः ॥ ८ ॥

॥ सर्वदिन स्तुतिः ॥

॥ ❁ ॥ मूरति मनमोहन कंचन कोमलकाय । सिद्धारथ नंदन त्रिसला देवि सुमाय । मृगनायक लंछन सातहाथ तनु मान । दिन दिन सुख दायक स्वामी श्रीव्रधमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वंदित पद अरविंद । कामित भर पूरण अभिनव सुरतरुकंद । भवियणनें तारै प्रवहण समनिसि दीस । चोवीसे जिनवर प्रणमुं विसवावीस ॥ २ ॥ अरथें करि आगम भाष्या श्रीभगवंत । गणधर तेगुंथ्या गुणनिधि ग्यान अनन्त । सुरगुरु पिण महिमा कहिनसके एकन्त । समरूं सुखदायक मनसुध सूत्रसिद्धन्त ॥ ३ ॥ सिद्धायिका देवी वारे विघनविशेष । सहु संकट चूरै पूरै आस असेष । अहनिसि करजोडी सेवै सुर नर इंद । जंपई गुणगण इम श्रीजिनलाभ सुरिंद ॥ ४ ॥ ॥ ❁॥
॥ ❁ ॥ इति श्रीमहावीर जिनस्तुतिः ॥ ९ ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ अथ दशमी स्तुतिः ॥

॥ ❁ ॥ अश्वसेन नरेसर वामा देवी नंद । नवकर तनु निरुपम नील वरण सुखकंद । अहिलंछण सेवित पउमावइ धरणिंद । प्रह‌ऊठी प्रणमुं नि-

सहस्र वालि गुणिये गुणणो नवपदकेरो सारो जी। इण परि निरमल तप आदरिये आगम साख उदारो जी ॥३॥ बिमल कमलदल लोयण सुंदर श्री चक्केसरि देवी जी। नवपद सेवक भविजन केरा विघनहरो सुर सेवीजी। श्रीखरतरगछ नायक सदगुरु श्रीजिनभक्ति मुणिंदाजी। तासु पसायें इणपरि पभणें श्रीजिनलाभ सुरिंदा जी॥४॥❋॥इति श्रीनवपदस्तुतिः॥❋॥॥१६॥

॥ अथ पर्युषणस्तुतिः ॥

॥❋॥ वालि वलिहुं ध्याउं गाऊं जिणवरवीर। जिण परब पजूसण दाख्या धरमनी सीर। आसाढ चौमासे हुंती दिनपंचास। पडीक्कमणो संवछरी करियै त्रिणउपवास ॥ १ ॥ चौवीसे जिनवर पूजा सतरप्रकार। करियै भलभावें भरिये पुण्यभंडार। वलिचैत्यप्रवाडें फिरतां लाभ अनंत। इम परब पजूसण सहुमें महिमावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वाचनायें वचाय। श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय। प्रतिदिन परभावना धूप अगर उक्खेवो। इम भवियण प्राणी परब पजूसण सेवो ॥ ३ ॥ वलि साहमी वछल करियै वारंवार। केइ भावना भावे केइ तपसी सीलधार। अठ्दीह पजूसण इम सेवत आणंद। सुयदेवी सानिध कहै जिनलाभ-सूरिंद ॥ ४ ॥ ❋ ॥ इति श्रीपर्जूषणापर्व्व स्तुतिः ॥ ❋ ॥ १७ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ पनरैतिथोंका स्तवन लिख्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सुगुण सनेही साजण श्री सीमंधरस्वामि। अरज सुणो इक जग गुरु मुझ आसा विसराम। पूरवविदेहैं विजयभली पुष्कलावई नाम। जिहां विचरै जिनवरजी धनते नयरीगाम ॥ १ ॥ धनते लोक सुणै जे जोजनगामनी वाणि। धनते महीयल चरणधरै जिहां जिनवर भाण। धनते भविजन जे रहै प्रभुताहरे परसंग। वदनकमल निरखी नितमाणै उछवअंग ॥२॥ सुगुरु मुखै प्रभु सुजस तुह्मीणो सांभलकान। मिलवानें उलसै मनमाहरो धरुं इक ध्यान। भगति जुगति करवानी छै मुझसगली जोड। पिण प्रभु लग पुहची जे तेहनही पगदोड ॥ ३ ॥ आडा डुंगर अतिवणा विचवहै नदियांपूरि किम मुझथी अवरायै प्रभुजी एतलीदूर। आंखडली उलजों करै जोयवा सुख जिनराज। पांखडली पाई नही ते विन किमसरै काज ॥ ४ ॥ वाट

डली वहतो कोई न मिलै सेंगूसाथ । कागलियो लिख आपूंहुं जिम तेहनें हाथ । जाणूं ससिहर साथे कहुं संदेशाजेह । पिण अलगो थई ऊपरि वामै निकलै तेह ॥ ५ ॥ जो कोई रीते प्रभुजी तुमथी एथ अवाय । तो इण भरतनावासी भविजन पावन थाय । साहिबनीतो सुनिजर सगलै सरिषी होय । पिणपोतानी प्रापति सारू फलप्रतिजोय ॥ ६ ॥ अलगोहुं पिणमाहरै तुमसुं साचीप्रीति । गुण गुणवंतना आवे हीयरै खिण २ चीत । हुंहुं सेवक तुंछे माहरो आतमराम । नहिंय विसारूं जीवुं जांलगि ताहरो नाम ॥ ७ ॥ साचै दिलथी मुझसुं धरज्यो धरमस्नेह । करुणाकर प्रभु कर जो मोपरि महिर अछेह । दूसमकाल तणो दुखटालो दीनदयाल । पालो विरुद संभालो निज सेवकसुं कृपाल ॥ ८ ॥ आसविलूधा अलग थकी पिण करै अरदास । पिण मोटानी महिरलतां नविथाय निरास । केईवसै प्रभु पासे केइ वसैछे दूर । राजमहिरनी रीते सकलनें जाणें हजूर ॥ ९ ॥ शिवसुख दायक नायक लायक स्वामिसुरंग । ध्यायक ध्येय स्वरूपलहे निज आतमभंग । सहिजे एक पलक जोथाये प्रभु तुझसंग । लाभउदय जिनचंद्र लहै नितप्रेम अभंग १०॥

॥ ❀ ॥ इति श्री सीमंधरस्वामी स्तवनं ॥ ❀ ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ श्रीसंखेश्वरपार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ ❀ ॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर भेटियै । भवना संचित पाप परा सब मेटियै । मनधर भाव अनंत चरणयुग सेवता । अणहुंतें इककोरि चतुरविध देवता ॥ १ ॥ ध्यानधरूं प्रभुदूरथकी हुं ताहरो । जल जिमलीनो मीन सदा मनमाहरो । भव २ तुमहीजदेव चरणहूं सिरधरूं । भवसायरथी तार अरज आहीजकरूं ॥ २ ॥ भूख त्रिषा तप सीत आतम एनविसहे । तप जप संयम भारतणो नवि निरवहे । पिण जिणवरना नामतणी आसतवणी । एहिज छे आधार जगतगुरु अलभणी ॥ ३ ॥ तुम दरसण विनसामि भवो दधि हुं फिरयो । महिया दुक्ख अनेक न कारज कोसरयो । मिलिया हिव प्रभु मुझ सदासुख दीजीयें । चउगइ संकट चूर जगतजस लीजीये ॥ ४ ॥ यादवपति श्रीकृष्ण तणी आरति हरी । सेनाकोध सचेत जरा दूरेंकरी । परचा पूरण पास

रयण जिमदीपतो । जयवंतो जिणचंदसयल रिपुजीपतो ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥
॥ ❋ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं ॥ १ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ अथ द्वितियादिन सीमंधरस्तवन ॥

॥ ❋ ॥ सफल संसार अवतार ए हुं गिणुं । सामि सीमंधरा तुह्म नगतै नणुं । नेटवा पायकमल नाव हीयमै घणो । करीय सुपमाय जे वीनवुं ते सुणो ॥ १ ॥ तुह्मसुं कूड अरिहंतसुं राखियै । जिसो अछै तिसो कर जोमि करि नाषियै । अति सवल मुझ हियै मोह माया घणी । एक मन नगति किमकरूं त्रिनुवन धणी ॥ २ ॥ जीव आरति करै नव नवी परिगडै । रीसचटको चढै लोन वयरी नडै । नयण रस वयण रस काम रस रसीयो । तेम अरिहंत तूं हियडै नवि वसीउ ॥ ३ ॥ दिवसनें राति हियडै अनेरो धरूं । मूढमन रींझवा वलिय माया करूं । तूंहीज अरिहंत जाणें जिसो आचरूं । तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ ४ ॥ कम्मवसि सुक्खनें डुक्ख जेहुंसहुं । मनतणी वात अरिहंत किणनें कहुं । करि दया करि मया देव करुणापरा । डुक्ख हरि सुक्ख करि सामि सीमंधरा ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम वयण पिणसुणुं । धर्म नकराय प्रनुपाप पोते घणुं । एक अरिहंततूं देव बीजो नही । एह आधार जग जाणज्यो अह्म सही ॥ ६ ॥ धण कणय माय पिय पुत्त परियण सहू । हस्यो वोल्यो रम्यो रंगरातो बहू । जय जयो जगतगुरु जीव जीवन धरा । तुह्म सम-वरू नही अवर वाल्हे सरा ॥ ७ ॥ आमिय सम वांणि जाणुं सदा सांनलुं । वार वर परषदा मांहि आवी मिलुं । चित्तजाणुं सदा सामि पायउलगुं । किम करूं ठाम पुंमर गिरि वेगलूं ॥ ८ ॥ नोलडा नगतितूं चित्तहारै किस्यै । पुण्य-संयोग प्रनु दृष्टिगोचर हुस्यै । जेहनें नांम मन वयण तन उल्लस्यै । दूरथी ढूकमा जेम हियडे वसै ॥ ९ ॥ नल नलो एणि संसार सहु ए अछै । सामि सीमंधरा ते सहू तुम पछै । ध्यान करतां सुपन मांहि आवीमिलै । देखियै नयण तो चित्त आरति टलै ॥ १० ॥ सामि सोहा मणा नाम मन गह गहै । तेहसुं नेह जे वात तुह्मची कहै । तुह्म पाय नेटवा अति घणुं टलवलुं । पंख जो होयतो सहिय आवीमिलुं ॥ ११ ॥ मेरुगिर लेखणी आनकागल करूं । खीर सागर तणा दूध खडिया नरूं । तुह्म मिलवा तणा सामि संदेसमा । इंद्र

पिण लिखिय नसके अछे एवमा ॥ १२ ॥ आपणें रंग जरि वात सुण जेतली। ऊपजे सामि न कहाय सुख तेतली। सुणो सीमंधरा राज राजेसरा। ताहरनें कोडि प्रभुपूरि सवि माहरा ॥ १३ ॥ पुव्व भवि मोह वसि नेह हुवे जेहनें। समरिये एणि संसार नित तेहनें। मेहनें मोर जिम कमल भमरोरमें। तेम अरिहंततूं चित्त मोरें गमें ॥१४॥ खरो अरिहंतनो ध्यान हियरें वस्युं। बापरो पापहिव रहिय करस्यै किसुं। गामि जिम गुरुडवर पंख आवे वही। ततखिण सर्पनी जाति नसकै रही ॥ १५ ॥ पापमें कज्ज सावज्ज सहु परिहरी। सामि सीमंधरा तुह्म पाय अणु सरी। सुद्ध चारित्र कहियै प्रभू पालसुं। दुक्ख भंडार संसार भय टालसुं ॥ १६ ॥ तुह्म हुंदास हुं तुह्म सेवकसही। एहमें बात अरि-हंत आगलिकही। एवडी माहरी भगति जाणी करी। आप ज्यो बापजी सार केवल सही ॥ १७ ॥ कलश ॥ इम रुद्धि वृद्धि समृद्धि कारण दुरित वारण सहुकरो। उवज्झाय वर श्री भक्तिलाभै थुणयो श्रीसीमंधरो। जयजयो जगत गुरु जीव जीवन करो सामि मया घणी। करजोडि वलि वलि वीनवुं प्रभु पूरि आस्या मनतणी ॥ १८ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ ❀ ॥ इति श्री सीमंधरजीरी वीनती संपूर्णं ॥ २ ॥ ॥ श्री ॥ ❀ ॥ श्री ॥ ❀ ॥

॥ अथ पंचमी वृद्धस्तवन ॥

॥ ❀ ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय। निरमल न्यानउपाय। पांचमि तप भणुंए। जन्म सफल गिणुंए ॥ १ ॥ चउवीसमो जिनचंद। केवल न्यान दिणंद। त्रिगडे गहगह्योए। भवियणनें कह्यो ए ॥ २ ॥ न्यान वडो संसार। न्यान मुगति दातार। न्यान दीवो कह्योए। साचो सरदह्योए ॥ ३ ॥ न्यान लोचन सुविलास। लोकालोक प्रकास। न्यान विना पसुए। नर जाणें किसुंए ॥४॥ अधिक आराधक जाण। भगवती सूत्रप्रमाण। न्यानी सर्वेतुए। किरिया देश-तुए ॥ ५ ॥ न्यानी सासोसास। करम करै जेनास। नारकिने सहीए। कोड वरस कहीए ॥ ६ ॥ न्यानतणो अधिकार। बोल्या सूत्र मझार। किरिया छे सही ए। पिण पाछे कही ए ॥ ७ ॥ किरिया सहित जो न्यान। हुवेतो अति परधान। सोनानें सुरो ए। संख दूधे भर्यो ए ॥ ८ ॥ महा निशीथ मझार। पांचमि अक्षर सार। भगवंत भाषियोए। गणधर साखियो ए ॥ ९ ॥ (ढाल २

खनें। जिम जलधर आगम मोर॥ सो० ॥ ५ ॥ किसकै हरि हर किसकै ब्रह्मा। किसकै दिलमें रांम। मेरै मनमें तूं वसै । साहिब सिव सुखनो ठाम ॥ सो० अ० ॥ ६ ॥ माता वामा धन्य पिता जसु । श्रीअश्वसेन नरेश । जनम पुरी वणारसी। धन धन काशीनो देस॥ सो० अ० ॥ ७ ॥ संवत सतैरैसै वावीसै। वदि वैसाख वखाण । आठम दिन भलै भावसुं। मोरी जात्र चढी परिमाण॥ सो० अ० ॥ ८ ॥ सानिध कारी विघन निवारी। पर उपगारी पास । श्रीजिनचंद जुहारतां । मोरी सफलफली सहु आस॥ सो० अ० ॥ ९ ॥ इति श्री पार्श्वजिन स्तवनं ॥ ८ ॥ ॥ ❃ ॥

॥ अथ दशमी वृद्धस्तवन ॥

॥ ❃ ॥ पास जिनेसर जगति लोए। गवडी पुर मंमण गुण निलोए। तवन करिस प्रभु ताहरो ए। मन वंछित पूरो माहरो ए॥ १ ॥ नयरी नाम वणारसि ए। सुर नयरी जिन रिद्धै वंसी ए। तेण पुरीछै दीपतो ए। अस्वसेन राजा रिपु जीपतो ए॥ २ ॥ वामा तसुघरि नार ए। तसु गुणहि नलभै पार ए। तासु उयर अवतार ए। तसु अतिसय रूप उदार ए॥ ३ ॥ चवद सुपन तिण निसि लह्याए। अनुक्रम करि तेसहु मन ग्रह्याए। पूछै भूपतिनें कह्या ए। करजोडि कह्या जे जिम लह्या ए॥ ४ ॥ (ढाल २)। प्रथम सुपनगज निरख्यो। मायतणोमन हरख्यो। बीजै वृषभ उदार। धरणी जिण धरयो भार ॥ ५ ॥ तीजै सिंह प्रधान। जसुबल कोयनमान । चउथैं देखी श्री देवी। कमल वसै सुर सेवी॥ ६ ॥ पांचमै पुष्फनी माला । पंचवरण सुविशाला। छठे दीठोएचंद। ग्रहगण केरोएइंद॥ ७॥ सातमें सूरज सार । दूरकियो अंधकार। आठमें धजलहकंती । वरण विचित्र सोहंती ॥ ८ ॥ नवमें पूरण कुंभ। भरियो निरमल अंभ। देखि सरोवर दसमें। मनह थयो अति विशमें ॥ ९ ॥ समुद्र इग्यारमें ठामें। खीर जलधि जसु नामें। वारम देव विमान। वाजित्र ध्वनि गीत गान॥१०॥ तेरम रतननी राशि। दहदिसि ज्योति प्रकाशि। सुपन चवदमें ए दीठो। पावक धूमथी मीठो॥ ११ ॥ सुपन कह्या सुविचार। हरख्यो भूपउदार। पुत्ररतन होस्यै ताहरै। थास्यै उदय हमारै॥ १२ ॥ (दुहा) चवदसुपन श्रवणेसुणी। हरषकियो सुविचार। सुंदर सुत तुमे जनमस्यो। कुल

दीपक आधार॥ १३ ॥ वामाप्रीतम वचन सुणि। आवी मंदर जत्ति। देव सुगु रुकीरत करी। जनम कियो सुकयत्थ॥ १४॥ इण अनुक्रमि ऊग्यो दिवस कीधा सुपन विचार। ते घरि पहुता आपणै। दीधा दान अपार॥ १५॥ (ढाल) ३ ॥❀॥ हिवजनम्या जगगुरु जगत्रहुऒ जयकार। खिण इक नार किये पायो सुक्ख अपार। दिशिकमरी मिलकर सूत्रकरम निशिकीध। करि थानक पुहती वंछित तेहनो सिद्ध॥ १६॥ तिणहीज निशि चौसठ इंद्रमिली तिहां आवे। लेई निज भगते सुरगिर स्नात्र करावे। करि जनम महोछव जननी पासे ठावें। तिहांथी सुर सवमिली दीप नंदीसर जावें॥ १७॥ इम रयण विहाणी ऊगो दिवस उदार। घर२ गाईजै कीजै मङ्गलच्यार। इग्या रम दिवसे मिली सहू परिवार। तसु नाम दियो श्री उत्तम पास कुमार ॥ १८॥ प्रभु वाधै दिन २ कलाकरी जिम चंद। त्रिहुं न्यान विराजित रूप जिसो देविंद। गुणकला विचक्षण विद्या तणोय निधान। योवन वय आयो परणायो राजान॥ १९॥ (ढाल ४)॥ ❀ ॥ कुमर पदै प्रभु रहितां काल सुखे गमें ए। आयो मन वैराग संयम लेवासमें ए। तव लो गंतिय देव जणावे अवसरू ए। देई संवछरी दान याचक जन सुख करू ए॥ २०॥ स्वामी संयमलेइ इंद्रादिक सव मिल्या ए। देश विदेश विहार करी क्रम निरदल्या ए। पामीय केवल न्यान सुरै महिमा करी ए। थापिय चउविह संघ मुगति रमणी वरी ए॥ २१ ॥ (ढाल)॥ ५॥ ॥ ❀ ॥ इम श्रीगोडी पास तणा गुण जे नर गावे। ते नर नारी इह पर लोगसु वंछित पावे। संघ करी संघ पत्ति जिके गवडी पुर जावे। चोर धाड संकट टले विघन बुराई न आवे॥ २२॥ धरणराय पउमावइ जास वहे सिर आण। सांवल वरण सुशोभित नवकर काय प्रमाण। कल्पवृक्ष चिन्तामणि काम गवी सम तोले। श्री गुणशेखर सीस समय रंग इण परितोले॥२३)॥ इति श्री पार्श्व जिन स्तवनं॥ १०॥ ॥❀॥

॥ अथ एकादशी वृहद्स्तवन॥

॥ ❀ ॥ समवसरण बैठा भगवंत। धरम प्रकासे श्री अरिहंत। बारे परषदा बैठी जुडी। मिगसर सुदि इग्यारस वडी॥ १॥ मल्लिनाथना ती

न कल्याण । जनम दिक्षानें केवल न्यान । अरि दीक्षा लीधी रूखमी ॥ मि० ॥ २ ॥ नमिनें ऊपनो केवल न्यान । पांच कल्याणक अति परधान । ए तिथिनी महिमा ए वखी ॥ मि० ॥ ३ ॥ पांच भरत ऐरवत इम हीज । पांच कल्याणक हुवै तिम हीज । पंचासनी संक्षा परगखी ॥ मि० ॥ ४ ॥ अतीत अनागति गिणतां एम । दोढसै कल्याणक थायै तेम । कुण तिथछै एतिथ जे वखी ॥ मि० ॥ ५ ॥ अनंत चौवीसी इण परि गिणो । लाभ अनंत उपवासां तणो । ए तिथि सहु तिथि सिर राखखी ॥ मि० ॥ ६ ॥ मोन पणें रह्या श्री मल्लिनाथ । एक दिवस संयम ब्रत साथ । मोनतणी परि ब्रत इम पखी ॥ मि० ॥ ७ ॥ अठपुहरी पोसो लीजीयै । चौविहार विधसुं कीजीयै । पिण परमादन कीजै घखी ॥ मि० ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजै उपवास । जावजीव पिण अधिक उल्हास । ए तिथ मोक्ष तणी पावखी ॥ ॥ मि० ॥ ९ ॥ ऊजमणो कीजै श्रीकार न्यानना उपगरण इग्यार २ ॥ करो काउसग्ग गुरुपाये पखी ॥ मि० ॥ १० ॥ देहरै स्नात्र करी जै वली । पोथी पूजी जै मनरली । मुगति पुरी कीजै ढूकखी ॥ मि० ॥ ॥ ११ ॥ मोन इग्यारस मोटो पर्व । आराध्यां सुखलहीयै सर्व । ब्रत पच्चक्खाण करो आखखी ॥ मि० ॥ १२ ॥ जेसल सोल इक्यासी समें । कीधो तवन सहू मन गमें । समय सुंदर कहे करो धाहखी ॥ मि० ॥ १३ ॥ ॥ ❋ ॥

इति श्री एकादसी वृध स्तवनं संपूर्णं ॥ ११ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ तुमेरे मनमें प्रभु तुमेरे दिलमें । ध्यान धरुं पल २ में । पास जिणेसर अन्तर जामी । सेवकरुं छिन २ में ॥ (तुं० १)॥ काहू को मन तरुणीसुं राच्यो । काहू को चित्त धनमें । मेरो मन प्रभु तुमहीसुं राच्यो । ज्युं चातक चितघनमें । (तुं० २) जोगीसर तेरी गति जाणें । अलख निरंजण छिनमें । कनक कीरति सुख सागर तुमही । साहिब तीन भवनमें ॥ (तुं ३ ॥ इति पार्श्व जिन स्तवनं ॥ ११ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ अथ सास्वता असास्वता जिन बिंब नमस्कार स्तवन ॥

॥❋॥ (देशी सूरती) महकळी प्रभु ध्यांनधरुं नमुं सिध अनन्त । त्रिभुवन मांहे नमणकरुं जेबिंबरहंत । भुवन पति व्यन्तर योतषि वैमानिक मांह । अ-

दूजुत सास्वता बिंबनसुं मनधरि उछाह ॥१॥ पंचमेरु वेताढ्य हिमाचल निषध प्रमांण । नीलवंत चित्रसेल कुंम्ल गजदंत वखांण ॥ रुचक नंदीसर मानु षोत्तर आदि सास्वता जांण । रिषभानन चंद्रानन वारिषेण वधमाण ॥ २ ॥ आठकोम अल्छप्पन लाख सत्ताणुं हजार ॥ चवसै छयासी चैत्य सास्वता मंगलकार । सहस अठावीस नवसै पचवीस कोम मिलाय । तेपन लख चवसै अठ्यासी जग जिनराय ॥ ३ ॥ केइ आचार्य मतें आठकोम सत्ता वन लाख । दोयसे अछाणुं त्रिभुवनमां सहुचैत्यनी साख । अछावन लख पनरेसै वयालीसकोम । अम्तीस सहस बिंबसहु सतअसीकी जोम ॥ ४ ॥ मगध कोसल अंग बंग कलिंग काशी कुरुदेस । सोरठ कछ विदेह जां गल कुसावर्त्त कहेस । भंग सोवीर वेराट मलय सांमिल सूरसेन । वरण पंचाल दशार्ण कुणाल देसमें चैन ॥ ५ ॥ लाट विदर सिंधु देससहु केकइ अर्द्ध जांण । साढा पचवीस देश भरतमें आर्य प्रधांन । दोय कोम अछावन लाख छयासी हजार । नवसे तिहुत्तर ग्रांम नगर मांहे बिंब अपार ॥ ६ ॥ वसुसत सातअसी जंबुद्वीप सहू आर्य होय । धातकी खंम सहस एक सातसै चौतीस जोय । एताही अर्द्ध पुष्करमांहें देस गि णाय । ग्रांम नगर मांहे बिंब अनेक नसुं गुणगाय ॥ ७ ॥ सिद्धशेल उर्जि त शिखरगिरि मोटाधांम । अष्टापद चंपा पावापुरि शिवसुख ठांम । तारंगा अर्बुद राजग्रही क्षेत्र प्रमांण । अंतरीक धूलेवा राणपुरो जगभांण ॥ ८ ॥ द्वीप असंख्या जल थल पर्वत सिखर सुहाय । कनक धातु पाखाण रयण सहु बिंबरहाय । इम त्रिहुंलोक असास्वती सास्वती थांपना देख । त्रि करण सुद्धे नित प्रति प्रणसुं सहु गुण लेख ॥ ९ ॥ थापना भगवंते कही आगम मांह प्रमांण । अंग उपांग देखी मन निश्चय राखो सुजांण । जे उतसुत्र वचनके भाषक जासी निगोद । अनंत काल भमतां क्षणभर नहिं पांमें विनोद ॥ १० ॥ सोम्य मूरत प्रभुनी देखी भविपांमें बोध । आर्द्र कु-मरकी रीते देखो आगम सोध । द्रव्यभाव विधिसंयुक्त सुर नर पूजे जेय । गुण पिंमस्थ पदस्थ रूपस्थ रूपातीत लेय ॥ ११ ॥ रिषभादिक चौवीस तिर्थंकर नसुं मन लाय । गणधर सहु संघ मंगलकारी नित प्रति थाय ।

जन्म मरण सहु दुख दूरै करो दीनदयाल । गछ खरतर गुरु लक्ष्मीप्रधान मोहन प्रतिपाल ॥ १२ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥
इति त्रिभुवन मंडण सर्व जिन बिंब नमस्कार स्तवनं ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ अथ वैराग्य सिज्झाय लि० ॥

॥ ❋ ॥ भूलो मन भमरा कांइभमें । भमियो दिवसनें रात । माया रोवांध्यो प्राणीयो । भमीयो परमल जात ॥ १ ॥ भू० ॥ कुंभ काचो काया कारमी । जेहना करोरे जतन्न । विणसतां वार लागै नही । निरमल राखोरे मन्न ॥ २ ॥ भू० ॥ केहना छोरू केहना वाछरू । केहनां मायनैं बाप । प्राणी जास्ये एकलो । साथे पुण्यनें पाप ॥ ३ ॥ भू० ॥ आस्यातोडूंगर जेवडी । मरवो पगलां रै हेठ । धन संची संच कांई करो । करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ भू० ॥ लख पति छत्र पति सबगए । गएलाखोंके लाख । गरभ करीरे गोखे वैसता । भए जलबल राख ॥ ५ ॥ भू० ॥ भव सायर जल दुख भरयो । तिरवो छैरे जेह । विचमें बीह सबलो अछै । करमें वायनें मेह ॥ ६ ॥ भू० ॥ उलट नही मारग चालवो । जायवो पहिलैरे पार । आगलि नही हटवाणीयो । संबल लेज्योरे साथ ॥ ७ ॥ भू० ॥ मूरख कहै धन माहरो । धन केहनो न थाय । वस्त्रविना जाय पोढवो । लख पति लाकड मांय ॥ ८ ॥ भू० ॥ महमंद कहै वस्तु वोरीयै । जे कुछआवैरे साथ । अपणो लाभ उवारीयै । लेखो साहिब हाथ ॥ ९ ॥ भू० ॥ इति ॥

॥ अथ क्रोधनी सिज्झाय लि० ॥

॥ ❋ ॥ कडुवारे फलछे क्रोधना । ग्यानी इम बोलै । रीसतणो रस जाणिइं । हलाहल तोलै ॥ क० ॥ १ ॥ क्रोधें कोडि पूरवतणो । संजम फल जाय । क्रोध सहित तप जे करै । ते तो लेखे न थाय ॥ २ ॥ क० ॥ साधु घणो तपियो हुं तो । धरतो मन वैराग । शिष्यना क्रोध थकी थयो । चंड कोसियो नाग ॥ क० ॥ ३ ॥ आगि ऊठै जे घर थकी । ते पहलुं घरबालें । जलनो जोग जो नवि मिलै । तो पासेनुं पर जालें ॥ क० ॥ ४ ॥ क्रोध तणी गति एहवी । कहै केवल नांणी । हांणि करे जे हेतनी । जा

लवजो इमजाणी ॥ क० ॥ ५॥ उदय रतन कहे क्रोधनें । काढजो गलें साही । काया करजो निरमली । उपशम रसनाही ॥ क० ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति क्रोधसिज्झाय सं० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ अथ उपदेशमाला पोसह सिज्झाय लि० ॥

॥ ❀ ॥ जगचूडामणि नूत । उसजो वीरो तिलोय सिरि तिलउ । एगो लोगा इचो । एगो चक्खू तिहुअणस्स ॥ १ ॥ संवछर मुसन जिणो । बम्मासे वद्धमाण जिणचंदो । इइ विहरिया निरसणा । जएज्जए उव माणेणं ॥ २ ॥ जइला तिलोय नाहो । विसहइ बहुयाइं असरिस जणस्स । इय जीयंत कराइं । एस खमा सव्व साहूणं ॥ ३ ॥ न चइज्जइ चालेउ । महइ महा वद्धमाण जिण चंदो । उवसग्ग सहस्सेहिवि । मेरु जहा वाय गुंजाहिं ॥ ४ ॥ नदो विणीय विणउ । पढम गणहरो समत्त सुयनाणी । जाणंतो वि तमत्थं । विह्मिय हियउ सुणइ सव्वं ॥ ५ ॥ जं आण वेइ राया । पयइउ तं सिरेण इछंति । इय गुरुजण मुह नणियं । कयं जलिउ डेहिं सोयव्वं ॥६॥ जह सुर गणाण इंदो । गह गण तारागणाण जहचंदो । जहय पयाण नरींदो । गण स्सवि गुरू तहा णंदो ॥ ७॥ बालुत्ति मही पालो । न पया परि हवइ एस गुरु उवमा । जंवापुरउ काउं । विहरंति मुणी तहा सोवि ॥८॥ पमिरूवो तेयस्सी । जुगप्पहाणा गमो महुर वक्को । गंनीरो धिईमंतो । उवएस परोय आयरिउ ॥ ९ ॥ अपरिस्सावी सोमो । संगह सीलो अनिग्गह मईय । अविकत्थणो अचवलो । पसंत हियउ गुरू होई ॥ १० ॥ कइयावि जिण वरिंदा । पत्ता अयराभरं पहं दाउं । आयरिएहिं पवयणं । धारिज्जइ संपयं मयलं ॥ ११ ॥ अणुगम्मए नगवई । राय सुयज्जा सहस्स वंदेहिं । तहवि न करेइ माणं । परियछइ तं तहा नूणं ॥ १२ ॥ दिण दिक्खियस्स दमगस्स । अनिमुहा अज्जचंदणा अज्जा । नेछइ आसण गहणं । सो विणउ सव्व अज्जाणं ॥ १३ ॥ वरससय दिक्खियाए । अज्जाए अज्ज दिक्खिउ साहू । अनिगमण वंदण नमंसणेण । विणएण सो पुज्जो ॥ १४ ॥ धम्मो पुरस्स प्पनवो । पुरस वर देसिउ पुरस जिठो । लोएवि पहू पुरसो । किंपुण लोगुत्तमे धम्मे ॥ १५ ॥ संवाहणस्स रणो । तइया वाणारसीइ नयरीए । कन्ना

सहस्स माहियं । आसी किररूववंतीणं ॥ १६ ॥ तहविय सा रायसिरी । उ ल्लट्टंती न ताइया ताहिं । उयरठिएण इक्केण । ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिलाणस्सु बहुयाणवि । मज्जाउ इह समत्त घर सारो । रायपुरिसेहिं निज्जइ । जणेवि पुरसो जहिं नत्थि ॥ १८ ॥ किं परजण बहु जाणा वणाहिं । वर मप्प सक्खियं सुकयं । इह भरह चक्कवट्टी । पसन्न चंदोय दिठंता ॥ १९ ॥ वेसो वि अप्पमाणो । असंजम पएसु वट्टमाणस्स । किं परिय त्तियवेसं । विसं नमारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्खइ वेसो । संकइवेसेण दिक्खिउमि अहं । उम्मग्गेण पमंतं । रक्खइ राया जणवउंय ॥ २१ ॥ अप्पा जाणइ अप्पा । जहठिउ अप्पसक्खिउ धम्मो । अप्पा करेइ तं तह । जह अप्प सुहावहं होई ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो । आविस्सइ जेण जेण भावेण । सो तंमि तंमि समए । सुहा सुहं बंधए कम्मं ॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो । तोनवि सी उन्ह वाय विज्झडिउ । संवछर मणसीउ । बाहुबलि तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विगप्पिय चिंतिएण । सछं द बुद्धि चरिएण । कत्तो पारत्त हियं । कीरइ गुरु अणुवएसेणं ॥ २५ ॥ थद्धो निरोवयारी । अविणीउ गविउ निरवणामो । साहुजणस्स गरहिउ । जणेवि वयणिज्जयं लहइ ॥ २६ ॥ थोवेणावि सप्पुरिसा । सणं कुमारुब्ब के इबुज्झंति । देहे खण परिहाणी । जंकिर देवेहिं सेकहियं ॥ २७ ॥ जइ ता लव सत्तम सुर । विमाण वासीवि परिवमंति सुरा । चिंतिज्जंतं सेमं । संसारे सासयं कयरं ॥ २८ ॥ कहतं भन्नइ सुक्खं । सुचिरेणावि जस्स दुक्ख मल्लि हियए । जंच मरणावसाणे । भव संसाराणु बंधिंच ॥ २९ ॥ उवएस सहस्से हिवि । बोहिज्जं तो न बुज्झई कोई । जह बंभदत्त राया । उदाइ निव मारउ चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए । अपरिचत्ताइ राय लछीए । जीवा सकम्म कलिमल । भरिय भरातो पमंति अहे ॥ ३१ ॥ वोत्तूणवि जीवाणं । सदुक्कराइंति पावचरियाइं । भयवं जा सा सा सा । पच्चाए सो हु इणमो ते ॥ ३२ ॥ पमि वज्जि ऊण दोसे । नियए सम्मंच पायवम्मियाए । तो किर मिगावईए । उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

इति पोसह सिज्झाय समाप्त उपदेश माला ॥❋॥ ॥❋॥ ॥❋॥

॥ ❋ ॥ अथ राईसंथारा पोसह सिज्झाय ॥ ❋ ॥

॥❋॥ निस्सिही २ णमो खमासमणाणं । गोयमाईणं महामुणीणं । (नवकार ३ करेमिभंते ३ कहीये)। अणुजाणह चिठिज्जा । अणुजाणह परमगुरू। गुण गण रयणे हिं मंभिअ सरीरा । बहु पभिपुन्ना पोरिसी । राई संथारए ठामि ॥ १ ॥ अणु जाणह संथारं। बाहु वहाणेण वामपासेणं। कुकुम पाय पसारण । अंतरंतु पमज्जए नूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संमासं । नवट्टंतेय काय पभिलेहा । दव्वाई नवज्ञगं । ऊसास निरुंभणा लोयं जइमे हुज्ज पमाउ। इमस्स देहस्सि माइरयणीए। आहार मुवहि देहं। सवं तिविहेण वोसरिअं ॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधण। कलहा नक्खाण पर परीवाउ । अरइ रई पेसुन्नं । माया मोसंच मिछत्तं ॥ ५ ॥ वोसरिसु इमाइं मुक्खमग्ग। संसग्ग विग्घ नूआइं । डुग्गइ निबंधणाइं । अठारस पाव ठाणाइं ॥ ६ ॥ एगोहं नत्थि मे कोवि । नाह मन्नस्स कस्सवि । एवं अदीण मणसो । अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासउ अप्पा। नाणदं सण संजुत्त। सेसामे वाहिरा नावा । सव्वे संजोग लक्खणा ॥ ८ ॥ संजोग मूला जीवेणं । पत्ता डुक्खपरंपरा । तह्मा संजोग संबंधं। सबं तिविहेण वोसरे ॥ ९॥ अरिहंतो महदेवो । जाव ज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो । जिण पन्नत्तं तत्तं । इय सम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥ चत्तारिमंगलं। अरिहंता मंगलं । सिद्धामंगलं । साहू मंगलं । केवलि पन्नत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा । अरिहंता लोगुत्तमा । सिद्धा लोगुत्तमा । साहू लोगुत्तमा । केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि । अरिहंते सरणं पवज्जामि । सिद्धेसरणं पवज्जामि । साहू सरणं पवज्जामि । केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ अरिहंता मंगलं मज्झ । अरिहंता मज्झ देवया । अरिहंता कित्ति अत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मज्झ । सिद्धाय मज्झ देवया । सिद्धाय कित्ति अत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ २ ॥ आयरिया मंगलं मज्झ। आयरिया मज्झदेवया । आयरिआ कित्ति अत्ताणं। वोसिरामित्ति पावगं ॥ ३ ॥ नवज्झाया मंगलं मज्झ । नवज्झाया मज्झ देवया । नवज्झाया कित्ति

अत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ ४ ॥ साहूणो मंगलं मज्झ । साहूणो मज्झ देवया । साहूणो कित्तिअत्ताणं । वोसिरामित्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अगणि मारुअ । इक्किके सत्त जोणि लक्खाउ । वण पत्तेय अणंते । दस चउ दस जोणि लक्खाउ ॥ १ ॥ विगलिंदिएसु दो दो । चउरो चउरोय नारय सुरेसु । तिरिएसु हुंति चउरो । चउदस लक्खाय मणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सव्व जीवे । सव्वे जीवा खमंतुमे । मित्तीमे सव्व भूएसु । वैरं मज्झ न केणवि ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ निंदिअ । गरहिअ दुगंछिअं सम्मं । तिविहेण पडिकंतो वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमाविअ मइ खमिअ । सव्वहजीव निकाय । सिद्धह साख आलोयणह । मज्झह वैर नभाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु । चउदह राज भमंतु । तेमइं सव्व खमाविआ । मज्झवि तेह खमंतु इति राई संथारा गाथा समाप्ता ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ सदाकालका अवश्य कर्त्तव्य । सामायक, पडिक्कमणा अठपुहरी (तथा) चौ पुहरी पोसा, । देवबांदणा, पच्चक्खाण पारणा, छ म्मासी तप चिंतना, सर्वकी अनुक्रमें शास्त्रानुसारे विधि लि० ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रणम्य श्रीजिनाधीशं । सदगुरुं च विशेषतः ।
श्राद्धाहोरात्र कृत्यानि । लिख्यन्ते लोकभाषया ॥ १ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ प्रथम प्रभात सामायक विधि लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्रावक दोय घडी रात्र रह्यां पोशहशालायें । अथवा गुरुकनें । अथवा घरनें एक प्रदेशें (आवी) प्रथम दिवस संध्याये पडिलेह्या वस्त्र पहिरी । (जो) गुरूरो योग न हुवै (तो) आप प्रमार्जित थानकै । खमासमण पूर्वक तीन नवकार गुणी थापनाजी थापै (पछे) खमासमण देई कहै । इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन् । सामायक मुहपत्ती पडिलेहुं (गुरुकहै पडिलेह) पछै इच्छंकही । दूजी खमासमण देई । मुहपत्ती पडिलेहै । ऊभो होय खमा०कहै । इच्छा० सं० भ० । सामायक संदिस्साहूं (गुरु कहै संदिस्सावेह) पछै इच्छंकही । वलेख०देनें कहै । इच्छाका० सं० भ० । सामायिक ठाउं (गुरु कहै ठाएह) पछै इच्छं कही । खमासमण देई । अर्धावनतकाय ऊभो थको । तीन नवकार गुणी कहैं । इच्छकार भगवन पसाउकरी

सामायिकदंम उच्चरावोजी (गुरु कहे उच्चरावेमो) पछे । करेमिभंते सामाइयं (इत्यादि) सामायकसूत्र । गुरुवचन अनुभापण करतो थको । तीनवार उच री । खमासमण देई । इछाका०सं०भ० । इरियावहियं पडिकमामि (गुरुकहे पमिक्कमह) पछे इछं कही । इछामि पमिक्कमिउं इरियावहियाए (इत्यादि पाठकहे) इरियावही पमिक्कमी । एक लोगस्सनो काउसग्गकरी । णमो अ रिहंताणं कही । काउसग्गपारी । मुखें प्रगट लोगस्स कही । खमासमण देई इछा० सं० भ० । वेसणो संदिस्सावूं (गुरु कहे संदिस्सावेह) पछे इछं क ही । वले खमासमण देई । इछाका० सं० भ० । वेसणो ठाउं (गुरु कहे ठा एह) पछे इछं कही । खमासमण देई । इछाका० सं० भ० । सिज्झाय सं दिस्साउं (गुरुकहे संदिस्सावेह) पछे इछं कही । वलेखमासमण देई । इछा का० सं० भ० । सिज्झाय करूं (गुरुकहे करेह) इछं कही । वले खमासमण देई । ऊभो थको॰ आठ नवकार सिज्झाय करे । तथा शीतकालादि हुवे (तो) खमासमण देई । इछाका०सं०भ० । पांगरणो संदिस्सावूं (गुरु कहे संदिस्सावेह) पछे इछं कही । खमासमण देई । इछा० सं० भ० । पांगरणो पमिग्गाउं (गुरु कहे पमिग्गाएह) पछे इछं कही वस्त्रग्रहण करे । तथा सामायकवंत (अथवा) पोसहीता श्रावकप्रतें (कोई) सामायकवंत (अथ वा) पोसहीनो श्रावक वांदे (तो) वंदामो एहवुं कहे । जो कोई बीजो वांदे (तो) सिज्झायं करेह । एहवो कहे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति प्रभात सामायक ग्रहणविधि ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधि लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ (हिवे) एक खमा समण देई । इछाका० सं० भ० । चैत्यवंदन करुं (गुरुकहे करेह) पछे इछं कही । जयउ सामी २ (इत्यादि जय वीय राय सूधी चैत्यवंदन करे । पछे खमासमण देई । इछाका०सं० भ० । कुसुमिण दु स्सुमिण राई प्रायछित्त विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं (गुरु कहे करेह) पछे इछंकही । कुसुमिण दुस्सुमिण राई प्रायछित्त विसोहणत्थं करेमि का उस्सग्गं । अन्नत्थ ऊससिएणं (इत्यादिकही) (४) लोगस्सनो काउसग्ग । चंदेसु निम्मलयरा ॥ सूधी चिंतवी । णमो अरिहंताणं कही । काउसग्ग

पारी। मुखें लोगस्स कहै (जो) रात्रें मोटको गुण संबंधी दूसण लागो हुवे (तो) काउसग्ग मांहें। सागरवरगंभीरा। सूधी चिंतवीयै (इतिसंप्रदायः। ॥ ❋ ॥ किहां इक पहिलां कुसुमिण डुस्समिण काउसग्ग करी। पछै चैत्यवंदन करवो कह्योछै। पिण परमार्थ एकहीजछै। पछै। पडिक्कमण वेला सीम सिज्झाय ध्यान करै ॥ ❋ ॥ हिवै पडिक्कमण ठाववानो अवसर हुवां ॥ १ खमासमण देई (श्री आचार्यजी मिश्र) कही वांदीयै ॥ २ खमासमण देई (श्री उपाध्यायजी मिश्र) कही वांदीयै ॥ ३ खमासमणें। जंगम युग प्रधान वर्त्तमान भट्टारक श्रीपुज्यजी का नाम कही वांदीयै ॥ ४ खमासमणें। सर्व साधूजीकुं वांदीयै ॥ इम च्यार खमासमणें पडि कम णो ठावी। इछकार समस्त श्रावको वांदूं (कही) गोडा लीयै वैसी मस्तक नमावी। दोय हाथे। मुहपत्ती मुखें देई। सव्वस्सवि राइय (इत्यादि कहै) पिण इछा कारेण संदिस्सह इछं (इसोन कहै) पछे शक्रस्तव कही। ऊभो थई। करेमि भंते सामाइयं। सावज्जं जोगं पच्चक्खामि (इत्यादि कही) इछामि ठाउं काउसग्गं। जोमे राइउ (इत्यादि पाठ कही) तस्सुत्तरी। अन्नत्थू ससिएणं कही। चारित्र शुद्धि निमित्तें ॥ १ लोगस्सनों काउसग्ग करी (पारी) दर्शन शुद्धि निमित्तें। लोगस्स कही। सव्वलो ए अरिहंत चेइयाणं करेमि काउसग्गं। वंदण वत्तिआ ए (इत्यादि कही) १ लोगस्सनो काउसग्ग करी (पारी) ज्ञानातीचार शुद्धि निमत्तें। पुक्खर वर दीवड्ढे। (कही) सुयस्स भगवउ करेमि काउसग्गं। वंदणव त्तिआए (इत्यादि कही) काउसग्ग करै। काउसग्ग मांहें। आजूणा चौपुहरी रात्रि मांहें। इत्यादि आलोयण पाठ चिंतवे ॥ ❋ ॥ ॥ (अनें एनावैतो) आठ नव कार चिंतवीयै। पछै काउसग्ग पारी। सिद्धाणं बुद्धाणं (कही) संडासा प्रमार्जन पूर्वक वैसी (मुहपत्ती पडिलेहै) पछै दो वांद णादे (ते इम) अविग्रह बाहिर ऊभो थको। आधो नमी ॥ इछामि खमा स। वंदि° जाव°। नि°। अणुजाणह मेमिउग्गहं (इतरो कही) भूमि प्रमार्जतो थको। निस्सही कही। कांइक अवग्रह मांहि पैसी। संडा सा प्रमार्जी। ऊकडू वैसी। डावे हाथ मुहपत्ती लेई। डावे कान थी जी

मणा कान लगें निलाड पूंजी। मुहपत्ती आगे मेल्ही। तेहनें मध्यभागें गुरुचरण कल्पना करी। अहो कायं (इत्यादि आवर्त्त करी) क्युं हिक ऊंचो नमी। मस्तके अंजली करी। गुरुसांही दृष्टिराखी। खमणिज्जो भे किलामो (इत्यादि पाठ कहे) पछे। फेर जत्ताभे। (इत्यादि आवर्त्तन कर) ऊभो थई। पाछे पगे भूमि पुंजतो। अवग्रह वाहिर स्वस्थानें आवी। आवस्सियाए (इत्यादि पाठ) सर्व कहे। बीजी वार वली इम हीज करे। (पिण) अवग्रह वाहिर न नीकले। तिहां ऊभोज सर्व पाठ कहे। आवस्सियाए पद नकहे। (इम सर्वत्र जाणिवूं) पछे अवग्रह मांहि रही कहे। इछाका० सं० भ०। राइयं आलोवूं (गुरु कहै आलोएह) पछे। इछं आलोएमि जोमेराईउ (इत्यादि पाठ ऊचरतो) काउसग्ग मांहे चिंतव्या। रात्रिसंबंधी अतीचार। गुरु समक्ष आलोवे। पछे। सव्वस्सविराइय (इत्यादि पाठ कहे) तिहां इछाका० सं० भ० एपद कहिवे करी। आलोया अतीचार नों प्रायश्चित्त मांगे (गुरु कहे पडिक्क मह) पछे। इछंतस्स मिछामि दुक्कडं (कही) संडासा प्रमार्जी। आसणें बेसी। जीमणो गोडो ऊंचोराषी। डावो गोडो नीचो करी (एहवूं कहै) भगवन् सूत्रभणुं (गुरु कहे भणह) पछे इछं कही। ३ नवकार। ३ करेमि भंते (अथवा) १ नवकार। १ करेमि भंते (कही) इछामि पडिक्कमिउं। जोमेराइउ (इत्यादि कही) वंदित्तू सुत्र। तंनिंदे तंच गरिहामि (सूधी कहे) पछे ऊभो थई। अब्भु ठिउमि आराहणाए (इत्यादि संपूर्ण कही) बे वांदणा देई॥ अवग्रह मांहि थको हीज कहे। इछाका०॥ सं०। भ०। अब्भुठिउंमि अभिंतर। राइयं (कही) संडासा प्रमार्जन पूर्वक गोडालीये बेसी। बेवांह पडिलेही। मुहपत्ती वांम हाथसुं मुखें देई। दक्षिण हाथ गुरु सांह्मो करी। नीचो नम्यो थको। जंकिंचि अप्पत्तियं (इत्यादि संपूर्ण कहे) तिवारे गुरु पिण मिछामि दुक्कडं कहे) पछे। बे वांदणादेई। भूमि प्रमार्जता। पाछे पगे अवग्रह बाहिर आवी। आयरिय उवझाए। इत्यादि गाथा ३ कहे। पछे। करेमि भंते०। इछामि ठामि काउसग्गं। तस्सुत्तरी। (इत्यादि कही) काउसग्ग करे। काउसग्ग मांहे।

श्रीवीर कृत छम्मासीतप चिंतवै (जो) छम्मासी तपन जाणे (तो) ६ लोगस्स, अथवा, २४नवकारनो कावसग्ग करै ऐसी प्रवर्त्तीहै। पछै जे पच्चक्खाण करवो हुवै (ते) हियामांहि धारी। काउसग्ग पारी। लोगस्स कही। ऊकडूबैसी। मुहपत्ती पडिलेही। बे वांदणा देई। सकल तीरथ नामलेई। नमस्कार करी (कहै) इछ कार भगवन पसाउ करी पच्चक्खाण करावो जी (पछै) गुरु मुखें पच्चक्खांणकरै। गुरु अभावें थापना समक्षें (अथवा) साधर्मी मुखें पच्चक्खांण करै (पछै) इछामो अणुसठिं कही, बैसै (तिवारै) गुरु १ थुई कह्यां पछै। मस्तकें अंजली करी। नमो खमासमणाणं। नमो र्हतसिद्धा कही॥ संसार दावानल इत्यादि (अथवा) नमोस्तु वर्द्ध मानाय। इत्यादि (अथवा) पर समय तिमर (इत्यादि तीन गाथा भणी) शक्रस्तव कहै। पछै। ऊभो थई। अरिहंत चेईयाणं करेमि काउसग्गं। वंदणवत्तिआए (इत्यादि कही) काउसग्ग मांहें १ नवकार चिंतवी। एक श्रावक प्रथम काउसग्ग पारी। नमोर्हत सिद्धा कही। एक गाथा स्तुति कहै। बीजा सर्व काउसग्ग मांहें रह्या सुणें (पछै) णमो अरिहंताणं कही। काउसग्ग पारै। इम आगे पिण जाणवो। (पछै) लोगस्स कही। सवलोए अरिहंत चेइआणं। वंदणवत्ति० । अन्नत्थू०। (इत्यादि कही) १ नवकारनों काउसग्ग करी (पारी) बीजी स्तुति कही। सिद्धाणं बुद्धाणं कहै। (पछै) वेयावच्च गराणं०। अन्नत्थू० कही। १ नवकारका० करी। (पारी) नमो र्हत सिद्धा कही। चौथी स्तुति कही। (बैसी)। नमोत्थुणं कहै। पछै तीन खमासमणें। पूर्वोक्त रीतें। आचार्य। उपाध्याय। सर्व साधू वांदे। इति प्रभाती पडिक्कमण विधि. ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनःइतना विशेष है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ इतनी विधि कियां पछे थिरता हुवै (तो) उत्तर दिशें। सीमंधर स्वामी सांहमां बैसी। कम्म भूमी २ (इत्यादि) संपूर्ण चैत्यवंदन करै (प्रांतें) अरिहंत चेईयाणं करेमि काउसग्गं। वंदणवत्ति०अन्नत्थू० कही। १ नवकार चिंतवी (पारी) सीमंधरस्वामीनी स्तुति कहै। इम हीज थिरता हुवै (तो) श्रीसिद्धाचलजी नो चैत्यवंदन करै॥ पछे पडिलेहण

करै (ते इम) खमासमणदेई । इच्छाका० सं० भ० । पडिलेहण संदिस्साउं (गुरु कहै संदिस्साएह) बीजे खमासमणे । इच्छा० सं० भ० । पडिलेहण करुं (गुरु कहै करेह) पछै । इच्छं कही । मुहपत्ती पडिलेहे । (इमहीज दोइ खमासमणें । अंग पडिलेहण संदिस्साउं । अंग पडिलेहण करुं (कही) धोतियो कणदोरो पडिलेही । खमासमणदेई । इच्छकार भगवन् पसाउ करी पडिलेहण पडिलेहा वोजी (इम कही) थापनाचार्य पडिलेही । राखे (अनें) जो गुर्वादिक थापनाचार्य पडिलेहै । तोपिण । खमासमण देई आग्यामांगे । पछै खमासमण देई । इच्छा० सं० भ० । मुहपत्ती पडिलेहुं (गुरुकहै पडिलेहेह) पछै इच्छं कही । मुहपत्ती पडिलेही । दोय खमासमणें इच्छाका० सं० भ० । उंही पडिलेहण संदिस्साऊं । करुं (कही) कंबल वस्त्रादि पडिलेहे । पछै । पोसहशाला प्रमार्जी । काजो विधसुं परठी । खमासमण देई । इरियावही पडिक्कमें (एमूलविध जाणवी) ॥ ❀ ॥ इतरी स्थिरतानहुवे तो पिण दृष्टि पडिलेहण करवी । हिवणां पिण प्रायें इमहीज करता दीसेछे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवे सामायक पारणेंकी विधि कहेछे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पछै सामायक पारे । १ खमासमण देई । मुहपत्ती पडिलेहै फेर खमासमण देई इच्छा० सं० भ० । सामायक पारुं (गुरु कहै पुणोवि कायव्वो) पछै यथाशक्ति कही । वल्ले खमासमण देई (कहै) इच्छाका० सं० भ० । सामायक पारेमि (गुरु कहै आयारोनमोत्तव्वो) पछै तहत्तिक ही । अर्द्ध नम्र कर्नो थको । तीननवकारगुणी । नीचो गोमार्जीये बेसी । मस्तक नमावी । भयवंदसन्नभद्दो (इत्यादी गाथा कहै) (अथवा) पहिलां सामायक पारी । पछै पडिलेहण करै (इहां) यथायोग्य अवसरै गुरुनें सुहराई पूछे (ते इम एक खमासमण देई कहै । इच्छकार भगवन् सुहराई- सुखतप शरीर- निरावाध- संयम यात्रा- सुखें निरवहेछोजी- छे पूज्यजी साता (इत्यादि पूछी) बीजो खमासमण देवे । श्रीजिन पति सूरि जीनी समाचारीमें इम कह्यो छे ॥ ❀ ॥ इति सामायक पारणविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❋ ॥ अथ संध्याकाल सामायक विधि लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ हिवै पाछलै पहुर धर्मशाला प्रमार्जी । वस्त्रादि पडिलेहै । जो अवेलो आयो हुवै (तो) दृष्टि पडिलेहण करै । पछै । गुरु आगै (अथवा) थापनाचार्यजी आगै आवी । भूमी प्रमार्जी । आसण बांम पास मूंकी । खमासमण देई (कहै) इच्छाका० सं० भ० । सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं (गुरु कहै पडिलेहेह) पछै इछं कही । वले खमासमणदेई इच्छाका० सं० भ० । सामायक संदिस्साउं (गुरु० संदिस्सावेह) फेर खमासमण देई । इच्छाका० सं० भ० । सामायक ठाउं (गुरु० ठाएह) पछै इछं कही । फेर खमासमण देई । अर्धावनत थई । तीन नवकार गुणी (कहै) इछकार भगवन् पसाउ करी सामायिक दंरू उच्चरावो जी (गुरु० उच्चरावेमो) पछै । करेमि भंते सामाइयं (इत्यादि) सामायक सूत्र गुरुवचन अनुभाषण करतो थको । तीन वार उचरी । खमासमण देई । इच्छाका० सं० भ० । इरिया वहियं पडिक्कमामि (गुरु कहै पडिक्कमह) पछै इछं कही । इच्छामि पडिक्कमिउं । इरिया वहियाए (इत्यादि पाठें इरियावही पडिक्कमी । १ लोगस्स नो काउसग्ग करी । णमो अरिहंताणं कही । काउसग्ग पारी । मुखें प्रगट लोगस्स कही । नीचावैसी । मुहपत्ती पडिलेही । वांदणा देई (कहै) इछकार भगवन पसाउ करी पच्चक्खाण करावोजी पछै (गुरु) दिवस चरम पच्चक्खाण करावै ॥ गुरु अभावे थापनाचार्य समक्षें (अथवा) स्वमुखें (तथा) वडेरा साधर्मी मुखें पचखै (अनें) जो तिविहार उपवास कीधो हुवै (तो) मुहपत्ती पडिलेही । पच्चक्खाण करै । वांदणा नद्यै (अने) जो चउविहार उपवास हुवै (तो) पच्चक्खाण करवोछै नही । ते माटै । मुहपत्ती नही पडिलेहै । एविस्तार विधिछै । पछै १ खमासमण देई । इच्छाका० सं० भ० । सिझाय संदिस्साउं (गुरु कहै संदिस्सावेह) पछै इछं कही । वले खमासमण देई । इच्छा० । सं० । भ० । सिझाय करुं (गुरु० करेह) पछै इछं कही । खमासमण देई । ऊभो थको (मधुरस्वरें) ८ नवकाररनी सिझाय करै । पछै खमासमण देई । इच्छा० सं० भ० । वैसणो संदिस्साउं (गुरु० सं

दिस्सावेह) फेर खमासमण देई । इच्छा० सं० भ० । बेसणो ठाउं । (गुरु० ठाएह) पछे इच्छं कही । जो शीतकालादि हुवे (तो) खमासमण देई । इच्छा० सं० भ० । पांगरणो संदिस्साउं (गुरु० संदिस्सावेह) फेर खमासमण देई । इच्छा० सं० भ० । पांगरणो पडिग्गाउं (गुरु० पडिग्गाएह) इच्छंकही शुभध्यान करे ॥❀॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

॥ ❀ ॥ अथ देवसी पडिक्कमण विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ २ खमासमण देई ॥ इच्छा० सं० भ० । चैत्य वंदन करूं (गुरु कहे करेह) पछे इच्छं कही । जयतिहुयण० । जय महायस (प्रमुख) नमस्कार कही । नमोत्थुणं कही । अरिहंत चेइयाणं० (इत्यादि पूर्वोक्त रीतें) च्यार थुई ए देव वांदे । च्यार खमासमणें आचार्यादिक वांदी । पछे इच्छकार समस्त श्रावको वांदुं । इम कही गोडालिये बेसी । मस्तक नमावी । सव्वस्सवि देव सिय (इत्यादि) तस्स मिच्छामि दुक्कडं कहे (पिण) इच्छा कारेण संदिस्सह इच्छं (एपद न कहे) पछे ऊभा थई । करेमि भंते सामाइयं० । इच्छामि ठाउ काउ सग्गं । जोमे देवसिउ० । तस्सुत्तरी० ॥ अन्नत्थू ससिएणं० ॥) इत्यादि कही (काउसग्ग करे । काउसग्ग माहें । आजूणा चोपहरा दिवसमें) (इत्यादि पाठ मनमें चिंतवी) णमो अरिहंताणं कही । काउसग्ग पारी । लोगस्स कहे । संडासा प्रमार्जन पूर्वक बेसी । मुहपत्ती पडिलेही । बे वांदणा देवे । पछे अवग्रह मांहि ऊभो थको कहे ॥ इच्छा० सं० भ० ॥ देवसियं आलोउं । गुरु कहे आलोएह । पछे । इच्छं आलोएमि० पाठ कहे । आजूणा चोपहर दिवस० । लघु अतीचार आलोवे । पछे सव्वस्सवि देवसिय (इत्यादि) इच्छा कारेण संदिसह । इसो कहे । तिवारे (गुरु कहे पडिक्कमह) पछे । इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं (कही) संडासा प्रमार्जी । प्रमार्जित भूमें आसणें बेसी कहे । भगवन सूत्र भणुं (गुरु कहे भणह) पछे इच्छं कही । तीन नवकार ३ करेमि भंते (अथवा) १ नवकार १ करेमि भंते (कही) इच्छामि पडिक्कमिउं । जोमेदेवसीउ (इत्यादि कही) एक श्रावक वंदित्तू कहे । बीजा सर्व सुणें । पछे ऊभो थई । अब्भुट्ठिओमि आराहणाए (इत्यादि सं

पूर्ण पाठ कही) बे वांदणा देवै । अवग्रह मांहिज ऊभो थको । इछाका० सं० भ० । अभुठिओमि अभिंतर । देव सियं खामेउं (गुरु कहे खामेह) पछे इछं खामेमि देवसियं (कही) गोमालीये बैसी । वाम हाथें मुह पत्ती मुखें धरी । दक्षिण हाथ गुरु सनमुख करी । मस्तक नमावी (सर्व पाठ कहै) पछे विधिसुं बे वांदणादेइ । आयरिय उवझाए (इत्यादि ३ गाथा कही) करेमिभंते सामाइयं ॥ इछामि ठाउं काउसग्गं (इत्यादि कही) चारित्र शुद्धिनिमित्ते दोयलोगस्सनो काउसग्ग करै (पारी) दर्शन शुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही । सबलोए अरिहंतचे० । वंदण० । अन्नत्थू० कही ॥ १ लोगस्सनों काउसग्ग करै (पारी) ज्ञान शुद्धि निमित्तें । पुक्खरवर दीवड्ढे (कही) सुयस्स भगवउ० । वंदण व० । अन्नत्थू कही । १ लोगस्सनों काउसग्ग करै (पारी) सिद्धाणं (कही) वेयावच्च गराणं न कहै । पछे । सुयदेवयाए करेमि काउसग्गं । अन्नत्थू कही । एक नवकारनों काउसग्ग करी । गुरु संयोग नही हुवै (तो) एक श्रावक काउसग्ग पारी । नमोर्ह्तसिद्धा० कही । श्रुतदेवतानी स्तुति कहै । (गुरु हुवै तो गुरु कहै) बीजासर्व स्तुति सुणकै काउसग्ग पारें । पछे । खित्त देवयाए करेमि काउसग्गं । अन्नत्थू कही । एक नवकार चिंतवी । पूर्वली परें (क्षेत्र देवतानी स्तुति कहै) पछै ऊभो थको । १ नवकार कही । संडाशा प्रमार्जी । ऊकडू बैसी । मुहपत्ती पडिलेही । विधसुं बे वांदणा देई । इछामो अणुसट्ठिं कही । बैसै (पछै गुरु एक स्तुति कह्यां पूठे : श्रावक समस्त मस्तकें अंजली करी । णमो खमासणाणं । णमो र्ह्तसिद्धा कही । णमोस्तु वर्द्ध मानाय) इत्यादि तीन स्तुति कहे (श्राविका । णमो खमासमणाणं । कही । संसार दावानी तीन स्तुतिकहै । पछे णमो त्थुणं कही । एकश्रावक खमासमण देई कहै । इछाका० सं० भ० । स्तवन भणुं । बीजा सर्व खमासमण देई कहै । इछा० सं० भ० । स्तवन सांभलुं (गुरु कहै भणह; सांभलह) पछे आसणें बैसी । नमो र्ह्तसिद्धा० पूर्वक । वडो स्तवन कहै । पछे तीन खमासमणें । आचार्य उपाध्याय सर्व साधू वांदी । चोथे खमासमणे इछा० सं० भ० । देवसी प्रायछित्त

विशुद्धि निमित्तं काउसग्ग करुं (गुरु कहे करेह) पछे इछं कही। देवसी प्रायछित्त विसुद्धि निमत्तं। अन्नत्थू कही। च्यार लोगस्सनो काउसग्ग करे (पारी) लोगस्स कहे। पछे खमासमण देई। इछा का० सं० भ०। खुद्दो वद्दव उहडावणत्थं करेमि काउसग्गं। अन्नत्थू०) इत्यादि कही) च्यार लोगस्सनो काउसग्ग करे (पारी) लोगस्स कहे ॥ वैसी। खमासमण देई। थंभणा पार्श्वनाथ जीनों चैत्य वंदन करे। जय वीयराय कह्यां पछे खमासमण पूर्वक मस्तक नमावी ॥ सिरि थंभणयठिय पास सामिणो (इत्यादि दोय गाथा कहे) ऊभा थई। वंदणव० अन्न० कही ४लोगस्सनो काउसग्ग करे (पारी) प्रगट लोगस्स कहे (इम हीज) दादा जी श्रीजिन दत्त सूरिजीनो काउसग्ग करे) पारी मुखे लोगस्स कहे। पछे। दादाजी श्रीजिन कुशल सूरिजीनो काउसग्ग करे। (पारि) मुखे लोगस्स कहे पछे। छोटी शांति कहे (जो) शांति न आवे (तो) १६ नवकारनो काउसग्ग करे। पछे। २ खमासमण देई। चउकसायनो चैत्यवंदन जय वीयराय सूधी करे। सर्व मंगल कहे ॥ चउकसायनो चैत्यवंदन सूती वखत करनेंकाहे (पिण) हिवणा प्रवृत्ति ऐसीजहै ॥ पछे पूर्वोक्तरीतें सामा यक पारे। इति देवसी पडिक्कमण विधिः संपूर्णं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अठपुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रात्रीनें पाछले विघडियें निद्रा दूर करीनें। पंचपरमेष्टि स्मरण करी। गृहचिंता परिहरी। पर्वदिवस थकी। प्रथम दिवसें। पडिलेही राख्याजे पोसहना उपगरण लेई। पोसह शालायें थापनाचार्य समीपें। अथवा गुरुनो संयोग हुवे (तो) गुरुनें पासें आवी। भूमीप्रमार्जी। एक खमा समण देई। इरियावही पडिक्कमें। पछे खमासमण देई। इछाका० सं० भ०। पोसह मुहपत्ती पडिलेहुं। (गुरु कहे पडिलेहेह) इछं कही। खमासमण देई। मुहपत्ती पडिलेहे। पछे ऊभो थई। खमासमण देई। इछाका० सं० भ०। पोसह संदिस्साउं (गुरु कहे संदिस्सावेह)। पछे इछं कही। खमासमण देई। इछाका० सं० भ०। पोसह ठाउं) गुरुकहे। ठाएह (पछे इछं कही। खमासमण देई। ऊभो थई। आधो सरीर नमावी।

मुखे मुहपत्ती देई। मधुर स्वरे। तीन नवकार गुणी कहे । इछकार जग वन पसाउ करी। पोसह दंम्क उच्चरावोजी) गुरु० उच्चरावेमो) । पछे करे मिभंते पोसहं। आहा०। जाव अहोरत्तंवा०। अप्पाणंबो०॥ एपाठ तीनवार गुरुवचन अनुभाषण करतो ऊचरै ॥ ❋ ॥ पछे एक खमासमणें । इछा का० सं० भ० । सामायक मुहपत्ती पमिलेहुं (गुरु कहै पमिलेहेह) बीजी खमासमण देई। मुहपत्ती पमिलेहै। पछे । दोय खमासमणें सामायक संदिस्साउं । सामायक ठाउं (कही) खमासमण देई । अर्द्धावनत गात्रऊभो थको । तीन नवकार । तीन करेमि भंते ऊचरी । दोय खमासमणें । बैसणो संदिस्साउं। बैसणो ठाउं । कही । पछे दोय खमासमणें । सिझाय संदिस्साउं । सिझाय करुं (कही) खमासमण देई। ऊभो थको । आठ नवकारनी सिझाय करै। सीतादि परीसहे दोय खमासमणें । पांगरणुं संदिस्साउं । पांगरणुं पमिग्घाउं (कहै) । ए सर्व सामायक विधि पूर्वं कही है तिमहीज करवी। (पिणइतनो विशेष है) पहिलां इरियावही पमिक्कमीहै। ते माटै । इहां सामायक दंम्क ऊचर्यां पछे । इरियावही नही पमिक्कमीजे॥ ❋ ॥ पीछे चैत्यवंदन । जय बीयराय सूधी करी । कुसुमण दुस्समिण काउसग्ग करै । पछे पमिक्कमण वेला सीम सिझाय ध्यान करे । पछे पूर्वोक्तरीतें पमिक्कमण करै (पिण इतरो विशेषहै) च्यारे थुई ए देव वांद्यां पीछे । खमासमण देई (कहे) इछाका० सं० भ० । बहुवेलं संदिस्साउं (गुरु कहे) संदिस्सावेह (पछे इछं कही) खमासमण देई (कहै) इछाका० सं० भ० । बहुवेलं करुं (गुरु कहै करेह) पछे इछं कही। तीन खमासमणें ॥ श्री आचार्यजी मिश्र १ । श्रीउपाध्यायजी मिश्र २। तीजे सर्व साधू वांदी । कम्म भूमिहि २। (इत्यादि नमस्कार भणें) जो पमिलेहण वेला नही हुवे (तो) सीमंधर स्वामीनो चैत्य वंदनादि करी । सिझाय करै । हिवै पमिलेहण वेला पमिलेहण करै) । ते विधिपूर्वैं लिखीछे । (तोपिण) संक्षेपें फेर लिखेहें ॥ ❋ ॥ दोय खमासमणें । इछा० सं० भ० । पमिलेहण करुं (कहो) मुहपत्ती पमिलेहे । पछे दोय खमासमणें । अंग पमिलेहण संदिस्साउं । अंग पमिलेहण करुं (कहे) पछे

(गुरु वचनें) इच्छं कही । धोतियो कणदोरो पडिलेही । वस्त्र पहिरी । खमासमण देई । इच्छकार भगवन पसाउकरी पडिलेहण करावोजी । (इम कही) । थापनाचार्य पडिलेही थापे । अनें जो (गुर्वादिक) थापनाचार्य पडिलेहें । (तो) पिण (खमासमण देई । उक्त रीतें आग्यामांगे । पछे खमासमण देई । इच्छाका० सं० भ० । उपधि मुहपत्ती पडिलेहुं (गुरु कहे पडिलेहेह) पछे इच्छं कही । मुहपत्ती पडिलेही । दोय खमास मणें । इच्छाका० सं० भ० । उही पडिलेहण संदिस्साउं (गुरु० संदिस्सा वेह) उही पडिलेहण करुं (गुरु० करेह) पछे इच्छं कही । कंबल वस्त्रा दि पडिलेही । पोसहसाला प्रमार्जी । काजो विधिसुं परिठवी । एक खमा समण देई इरियावही पडिकमें (इहां आचार दिन करमें कह्योछे) ॥ ❀ ॥ दोयखमासमणें । इच्छाका० सं भ० । वसती संदिस्साउं । वसती पडिलेहुं (कही) । वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे (इत्यादि) पिण विधि प्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥ ❀ ॥ हिवे एक खमासमणें । इच्छाका० सं० भ० । सिझाय संदिस्साउं । (गुरु कहे संदिस्सावेह) बीजे खमासमणें । इच्छाका० सं० भ० । सिझाय करुं । (गुरु कहे करेह) पछे इच्छं कही । नवकार १ कथन पूर्वक (उपदेश माला) प्रमुख सिझाय करी । नवकार एक कही । धर्म ध्यान करे । भणें गुणें वखांण सुणें ॥ ❀ ॥ इम करतां पूंण प्रहर दिन चढ्यां । उग्वाडा पोरिसी आगम्या । बहु पडिपुन्ना पोरिसी। कही । खमासमण देई । इरियावही पडिकमी । दोय खमासमणें । इच्छाका० सं० भ० । पडिलेहण करुं । (गुरु वचनें) । इच्छं कही । मुह पत्ती पडिलेही । पान भोजन पात्र पडिलेही राखे । पछेसिज्झाय ध्यानकरे ॥

॥ ❀ ॥ हिवे काल वेलायें । आवस्सही पूर्वक देहरे जई । पांचेशक्रस्त वे देववांदे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवे पांचेशक्रस्तवे देववांदण विधि दो प्रकारसें लिखिये हैं ॥ ❀ ॥ तीन प्रदक्षिणा देई । तीनवार नमस्कार करी । भूमि प्रमार्जी । पुरुष हुवे तो) प्रभुजी सुं दक्षिणपासे वैसे । स्त्रीहुवे ते वांम पासे वैसे । पछे । इच्छाका० सं० भ० । चैत्य वंदन करुं । इच्छं कही । पछे नमोत्थुणं

कहै । खमासमण देई । इरियावही पमिक्कमें । एक लोगस्सनो काउसग्ग करे । मुखें लोगस्स कहै । संमाशा प्रमार्जी बैसै । तीन (तथा) च्यार (तथा) पांच आदि देई । नमस्कार कहै । जंकिंच नाम तित्थं । (इत्यादि कही) पछै । नमोत्थुणं कहै (ऊनो थई) अरिहंत चेई याणं करेमि का उसग्गं । वंदण वत्ती० । अन्नत्थू० । कही । १ नवकारनो काउसग्ग करे (पारी) एक थुईकी गाथा कहै ॥ पछै लोगस्स । सब लोए अरि० । वंदण० अनत्थू० । कही । १ नव० । (पारी) २ थुई की गाथा कहै । पछै । पुक्खर वरदी० । सुअस्सभग० । वंदण० । अनत्थू० । कही । १ नव० का० (पारी) ३ थुई कीगा० । पछै सिद्धाणं बुद्धाणं० । वेयावव्वगराणं० । अनत्थू० । (इत्यादि कथन पूर्वक) चोथी थुईसे देववांदी । नमोत्थुणं कहै फेर अरिहंतचे०कही । इसीतरे । चार थुईए देव वांदी बैसे । नमोत्थुणं कहै । नमोर्हत्सिद्धाचार्यो पा० (इत्यादि कही) पछे स्तवन कहै । पछे जय वीयराय कही । (नमोत्थुणं) सव्वे तिविहेण वंदामि पर्यंत कहै ॥ ❀ ॥ इम पांचे शक्रस्तवे देववंदन विधिः ॥ ❀ ॥ प्रवचन सारोद्धार प्रमुख ग्रंथमें कहीछै) ॥ ❀ ॥ तथा चैत्य वंदन वृहद्भाष्यमें इम कह्योछै ॥ १ ॥ ❀ ॥ नमस्कार कथन पूर्वक । शक्रस्तव कही । इरियावही प्रति क्रमणादि करै।वली नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही । दोयवार च्यार थुईसें देववांदै । फेर शक्रस्तव कही । जावंति चेइयाइं गाथा भणी । खमाममण पूर्वक । जा वंतिके० वीजी गाथा कही । स्तवन कहै । वली नमोत्थुणं कही । जय वीय राय कहे ॥ ❀ ॥ इति देव वंदण विधिः ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पछें निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहि आवी । इरियावही पमि क्कमें । पछै सिझाय ध्यान करै ॥ ❀ ॥ जो तिविहार उपवास कियो हुवै (तो) पच्चक्खाण वेला पूर्ण हुवां । जलपीणेंकुं पच्चक्खाण पारै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै पच्चक्खाण पारणें की विधि लिखिये है ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ खमासमण देई । इरियावही पमिक्कमें । फेर एक खमा० । इ छा० सं० भ० । पच्चक्खाण पारवा मुहपत्ती पडिलेहुं (गुरु कहे पमि०) पछे इछं कही । खमा० देई । मुहपत्ती पमिलेहै । फेर एक खमा० देई ।

इछा॰ सं॰ भ॰ । पाणहार अमुक पच्चक्खाण पारुं (गुरु कहे पुणोवि कायव्वो) पछे यथाशक्ती कही । खमासमण देई । इछाका॰ सं॰ भ॰ । पाणहार पारिखुं (गुरु कहे आयारो नमोत्तव्वो) पछे तहत्ति कही । १ नवकारगुणी । अमुक पच्चक्खाण फासियं । पालियं । सोहियं । तीरियं । किट्टियं । आराहियं । जंच नआराहियं । तस्स मिछामि दुक्कडं (कही) चैत्य वंदन करे क्षणमात्र सिझाय करी । यथा संभवे । अतिथि संविभाग करी पाणी पीवे

॥ ❀ ॥ तथा उपधान वाही हुवे । (तो) पोरसी प्रमुख पच्चक्खाण पारी । आहार करे । पछे आसण बेठो थको हीज । दिवस चरम पचखे । पछे । इरियावही पडिक्कमी । चैत्य वंदन करे । (ए चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्ते छे) । ॥ ❀ ॥ इति पच्चक्खाण पारणेकी विधि ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पछे जो बहिर्भूमि जावणो हुवे (तो) आवस्सहीकही । उपयोगीथको । निर्जीव स्थंडिले जई । अणुजाणह जस्सुग्गहो कही । पूर्व । उत्तर । सूर्य ग्रामादिकने पूठि अणदेई । मल मुत्र परिठवे । प्राशुक जले शुद्ध थई । वार तीन वोसिरामि २ । एहवूं कहिवे करी । मल मुत्र वोसरावी पोसह शालायें । निस्सही पूर्वक (पेसी) इरियावही पडिक्कमे । खमासमण देई । कहे । इछाका॰ सं॰ भ॰ । गमणा गमणं आलोयहं (गुरु कहे आलोएह) पछे इछं कही । गमणागमण आलोवे ॥ ❀ ॥ (तेइम) आवस्सही करी । प्राशुक देशें जई । संडासा पूंजी । थंडिलो पडिलेही । उच्चार प्रश्रवण वोसरावी । निस्सही करी । पोसह शालायें आव्यो आवंति जंनेहिं । जंखंडियं । जंविराहियं । तस्समिछामि दुक्कडं ॥ इम कही बेसे । पछे पडिलेहण वेला सीम सिज्झाय ध्यान करे ॥ हिवे पाछले प्रहर । इरियावही पडिक्कमी । खमासमण देई कहे । इछाका॰ सं॰ भ॰ । पडिलेहण करुं । (गुरु कहेक॰) पछे इछं कही । दूजे खमासमणे । इछाका॰ सं॰ भ॰ । पोसहशाला प्रमार्जु (गुरु कहे) प्रमार्जेह पछे इछं कही । मुहपत्ती पडिलेही । दोय खमासमणे । अंग पडिलेहण संदिसाउं । अंग पडिलेहण करुं । (कहे) पछे (गुरुवचने) इछं कही मुहपत्ती पडिलेही । डंडासणो पूंजणी प्रमुख मोंमार्जी । पोसहशाला प्रमा

जें (पछे) काजो शुद्ध करी । ऊधरी । एकांतें विखरतो परठवी । ईरियाव ही पडिक्कमी । खमासमण पूर्वक कहै । इछकार भगवन पसाउ करी प डिलेहणा पडिलेहावोजी । पछे थापनाचार्य पडिलेही । थापे । गुरु समीपे (अथवा) थापनाचार्य समीपें । एक खमासमण देई । इछाका० सं० भ० । मुहपत्ती पडिलेहुं (गुरु कहै पडिलेहेह पछे इछं कही) खमा- समण देई । मुहपत्ती पडिलेहै । पछे दोय खमासमणें । इछा० सं० भ० सिझाय संदिस्साउं । सिझाय करुं (कही) उत्करीतें क्षणमात्र सिझाय करी । तिविहार उपवास कीधो हुवै । (तो) गुरुशाखें । पाणिहार पच्चखे ॥ उपधानवाही प्रमुख । आहार कीधो हुवै (तो) वांदणां दोय देई । पच्च क्खांण करै ॥ ❋ ॥ (पछे) एक खमासमण देई । इछाका० सं० भ० । उप धि थंडिला पडिलेहण संदिस्साउं । बीजै खमासमणें । इछाका० सं० भ० उपधि थंडिला पडिलेहुं (गुरुवचनें) इछं कही । दोय खमासमणें । इछा का० सं० भ । बैसणो संदिस्साउं । बैसणोठाउं । कही (बैसै) वस्त्र कंबला दि पडिलेहै । पुंजणी हुवै (तो) ते पिण । मुहपत्ती सुं पडिलेहै । उपवा सी तोछै । तेमाटें । सर्बपाछो कडिपटो धोतीयो कणदोरो पडिलेहै ॥ ❋ ॥ उपधानवाही प्रमुख भोजन कीधो हुवै (तो कडिपटादि पडिलेह्यां पछै । वस्त्रकंबलादि पडिलेहै । (एविशेष छै) । पछे कालबेला सीम सिज्झाय ध्या न करै ॥ (पीछे) उच्चार प्रश्रवण २४ थंडिला पडिलेहै (जो) चउदस हुवै । (तो) पाखी चउमासी पडिक्कमणो करै । संवछरियें संवछरी पडि क्कमणो करै ॥ ❋ ॥ तिहां देवसी पडिक्कमणो पूर्वें लिख्योछै । तिमहीज करै । (पिण इतरो विशेष छै) । इछा० । देवसियं आलोएमि । इत्यादि । देव सी आलोयां पछे । गाणे कमणे । चंकमणे । (इत्यादि पाठ कहै) (तथा) खुद्दो वद्दव काउसग्ग कियां । पछे । दोय खमासमणें । इछाका० सं० भ० सिझाय संदिस्साउं । सिझाय करुं (कही) बेठो थको । तीन नवकार प्रमुख सिझाय करै इति ॥ ❋ ॥ पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणाकी विधि आगे लिखी है ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ हिवै पडिक्कमणो हुवां पछे । साधुनी वेयाच्च कर । पोरसी

म सिझाय ध्यान करे । जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवे तो आसन्न
हितो थको । भूमि प्रमार्जे । थंडिल स्थानकें जई । देहसंका निवारे ।
श्रवण वोसरावी । स्वस्थानकें आवे । (भगवन्) बहु पडिपुन्ना पोरसी ।
इम कही) खमासमण देई । इरियावही पडिक्कमें । पीछे राई संथारा
विधि करे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवे राई संथारा विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ खमासमण देई । इच्छा० सं० भ० । राई संथारा मुहपत्ती पडिले
हूं । (गुरु कहे पडिलेह) पछे इच्छं कही । खमासमण देई । मुहपत्ती
पडिलेहे । एक खमासमणें । इच्छा० सं० भ० । राई संथारो संदिस्साउं ।
बीजे खमासमणें । इच्छा० सं० भ० । राई संथारो ठावूं (पछे) गुरुवचनें ।
इच्छं कही । चउक्कसाय पडिम ल्लुरण । (इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक
जय वीयराय सूधी चैत्यवंदन करे । भूमि प्रमार्जी । संथारो उत्तर पट्टो
पाथरे । पछे शरीर प्रमार्जी । निस्सही २ इम कही । संथारे बेसी । तीन नव
कार । तीन करेमि भंते । कुचरी । णमो खमासमणाणं । गोयमाईणं महा
मुणीणं । अणुजाणह चिट्ठिज्जा । अणुजाणह परमगुरु । (इत्यादि) राई संथा
रा गाथा भणी । वामहाथ सिराणे देई । सोवे । निद्रानावे । जांसीम । मुनि
वर चारित्र चितवे । पसवाडो फेरे (तो) शरीर संथारो प्रमार्जी फेरवे । जो
देह शंकाये ऊठे (तो) पूर्वोक्त विधे देहशंका निवारी । इरियावही पडि
क्कमें । पछे जघन्यें पिण । तीन गाथानी सिझाय करी सोवे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इति राई संथारा विधि कही ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवे रात्रीनें पाछिले पुहर ऊठी । नवकारादि गुणी । इरियावही
पडिकमें । खमासमण देई । कुसुमिण दुस्सुमिण काउसग्ग करी । पूर्वोक्त
विधे सामायिक लेवे । इहां इरियावही न पडिक्कमें । पछे दोय खमासमणें ।
सिझाय संदिस्सावी । आठ नवकार गुणी । पडिक्कमण वेलासीम सिझाय
करे । पडिक्कमण वेला हुवां । पडिक्कमणो पूर्वली परे करे । (पिण इतरो
विशेषछे) । राई आलोवां पछे । संथारा उवट्टणकी (इत्यादि पाठ कहे)
इम संपूर्ण पडिक्कमणो करी । पडिलेहण वेलायें । पूर्वोक्त विधे पडिलेहण

करी। धर्म्मशाला पूंजी। काजो ऊधरी। इरियावही पडिक्कमें। दोय खमास मणें। सिझाय संदिसावी। उपदेशमाला प्रमुख सिझाय करै। पछै पोसहपारै॥

॥ ❋ ॥ हिवै पोसहपारणेंकी विधि लिखियै है ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ खमासमण देई। मुहपत्ती पडिलेहै। फेर। खमासमण देई कहै। इछा० सं० भ०। पोसह पारुं (गुरु कहै पुणोवि कायव्वो) पछै यथा शक्ति कही। खमासमण देई (कहै)। इछा० सं० भ०। पोसह पारयुं। (गुरु कहै आयारो न मोत्तव्वो)। पछै तहत्ति कहै। खमासमण देई। तीन नवकार अर्द्धावनत गात्र ऊभो थको गुणी। खमासमण देई। मुहपत्ती पडिलेहै। पीछै खमाममण देई कहै। इछाका० सं० भ०। सा मायक पारुं (गुरु कहै पुणोवि कायव्वो। पछै यथा शक्ति कही। खमा समण देई। इछाका० सं० भ०। सामायक पारयुं (गुरु कहै आयारो न मोत्तव्वो (पछै तहत्ति कही) खमाममण देई। अर्द्धावनत गात्र ऊभो थको। हाथ जोड्यां। मुहपत्ती मुखें दियां थकां। तीन नवकार गु णी। भंभासा पडिले है। गोडालीयै बैसी। मस्तक नमावी। भयवं दस न्नभद्दो (इत्यादि भावनारूप गाथा कहै) पछै पोसहना उपगरण संवरी। देहरै जई। देव जुहारै। घरे आवी। आहार निष्पन्न हुवो देखी। साधु समीपें आवै। अतिथि संविभाग व्रत साचवण निमित्तें। साधु भणी नि मंत्रणा करी। घरे लेजावै। साधू पिण शुद्ध आहार लेई। स्वस्थानकें आ वे। तिवार पछै साधूनें जे आहार दीधो। तेहनो हीज। शेष आहार आ प करै॥ इति अठपुहरी पोसह ग्रहण पारण विधिः॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ हिवै दिन ऊगां पछै पोसहलै तेहनीं विधि लि० ॥

॥ ❋ ॥ घर थकी निश्चित थई। धर्मस्थानके आवी। सर्व उपगरण प डिलेही। कचरो विधिसुं परिठवी। इरिया वही पडिक्कमें। खमासमण पूर्व क आग्या मांगी। पोसह मुहपत्ती पडिलेहै। आगे पोसह ग्रहणनी वि धि पूर्व लिखी है। तिमहीज जाणवी (पिण) दिवस पोसह हीज करणो हुवे (तो) (पोसह दंडक ऊचरतां) जावदिवसं पज्जुवासामि। (एह वो पाठ कहै) अनें जो। अठपुहरी करवो हुवे (तो) जाव अहोरत्तिं प

च्छुवासामि । (एहवो कहे) पछे सामायिक विधि सर्व करी । चैत्यवंदण कुसुमिण दुस्सुमिण काउसग्ग करी । पडिक्कमणों करी । दोय खमासमणें बहु वेलं संदिस्सावे २ (अने जो) पूर्व्वें पडिक्कमणो गुरु साथे कस्यो हुवे (तो) पडिक्कमणानें अंतें । पडिलेही राख्या । जे वस्त्र । ते पहरी । पोसह सामायक सर्व विधि करी । दोय खमासमणें । बहुवेलं संदिस्सावे । २ (तथा) जो गुरु सें जूदो पडिक्कमणो कस्यो हुवे (तो) गुरु पासे आवी । पोसह सामायक सर्व विधि करी । आलोयण खामणादि निमित्तें । मुहपत्ती पडिलेही । बे वांदणा देई । इच्छाका° सं° भ° । राइयं आलोऊं । (गुरु कहे आलोएह) पछे राई आलोवे । फेर १ खमासमण देई । इच्छाका° सं° भ° । अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर । राईयं खामेमि (गुरु कहे खामेह) पीछे सर्व पाठ कहे । राई खामें । पहिलां पडिक्कमणामें नवकारसी पचख्योथो । तेमाटें । पछे । गुरु शाखे पच्चक्खाण उपवासनो करे । पछे । दोय खमासमणें । बहुवेलं संदिस्साउं° २ । (ए तीन प्रकारका विकल्प जाणवा) । हिवे पडिलेहणनो पूर्व करीछे । (तो पिण) । आदेश मांगवो । (तेइम) खमासमण देई । इच्छा° सं° भ° पडिलेहण संदिस्साउं । बीजे खमासमणें । पडिलेहण करूं (कही) मुहपत्ती पडिले हे । पछे । इमहीज दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्सावी । मुहपत्ती पडिलेहे । पछे । वले खमासमण देई । इच्छकार भगवन पसाउ करी पडिलेहण पडिलेहावो जी । (इम कहे) पछे । एक खमासमण देई । इच्छाका° सं° भ° । उपधि मुहपत्ती पडिलेहुं (कही) कोई वस्त्र अण पडिलेह्यो राख्यो हुवे (तो) पडिलेहे । (नहींतो) वली आसण पडिलेहे । पछे दोय खमासमणें । सिझाय संदिस्सावी । उपदेशमाला प्रमुख सिझाय करे । आगे सर्व क्रिया पूर्वे अठपुहरी पोसहमें लिखीछे । तिमहीज जांणवी । पिण इहां । अठ पुहरी पोसहनो) पाछली राते वली सामायिक न लेवे । जिणें दिवस संघ्या चोपुहरी पोसह लीधो हुवे । (ते) पाछले पुहर । पच्चक्खाण कियां पछे । दोय खमासमणें । उंडीपडिलेहण संदिस्साउं । उंडी पडिलेहण करूं । (कहे) पिण थंडिला पद नकहे । अनें थंडिला नहीं पडिलेहे । यह

निकेवल दिनसंबंधी पोसह ग्रहण करणेंमें विसेष विधिही सो बतलाई ॥ ❋ ॥ इति दिन संबंधी पोसह ग्रहण विधि संपूर्णम् ॥ ❋ ॥

॥❋॥ अथ रात्रि संबंधी चौपहरी पोसहनी विधि लि० ॥❋॥

॥ ❋ ॥ तिहां जिणें प्रथम चौपुहरी । पोसो ऊचरयो है । पछै संध्यानी पडिलेहण करतां । रात्रि पोसहनो भावथयो । (तो) पच्चक्खाण कियां पछै । दोय खमासमणें । पोसह मुहपत्ती पडिलेही । तीन नवकार गुणी तीनवार पोसह दंडक उच्चरे । (तिहां) जाव रत्तिं पज्जुवासामि (इम) पाठ ऊचरै । पछै । सामायक विधि पूर्वे लिखी है तिम करै (पिण) सामायक उचरयां पछी । दोय खमासमणें । सिझाय संदिस्सावी । आठ नवकार कही । बैसणो संदिस्सावी । पांगरणो संदिस्सावै । पीछै । दोय खमासमणें । इछाका० सं० भ० । उंही थंडिला पडि लेहण संदिस्साउं । उंही थंडिला पडिलेहण करुं (गुरु कहै करेह) इछंकही । उपधि पडिले है) आगे सर्वक्रिया पूर्वे लिखी तिम जांणवी । (तथा) जे श्रावक उपवासी तो । व्यग्रपणें । दिवसें पोसह न करी सक्यो । ते रात्रि पोस हनों भावथयां । पाछले पुहर धर्म स्थानके आवै । जो वसती प्रमार्जी हुवे । (तो सरयो) नहींतो वसती प्रमार्जी । काजो परठवी । सर्व उपग रण पडिलेही । इरियावही पडिकमें । पीछै चौविहार पच्चक्खाण करी । दोय खमासमणें । पोसह मुहपत्ती पडिलेही । दोय खमा समण देई । पो सह संदिस्सावै । फेर । खमासमण देई । तीन नवकार गुणी । तीनवेर पोसह दंडक ऊचरै । (तिहां) दिवस सेसं रत्तिं पज्जुवासामि (कहै) संध्या हुवे । (तो) रत्तिं पज्जुवासामि कहै पीछै । बिहुं खमासमणें सामायक मुहपत्ती पडिलेहै । दोय खमासमण देई । सामायक संदिस्सावें । फेर खमासमण देई । तीन नवकार गुणी । तीन करेमिभंते ऊचरै । दोय खमासमण देई । सिझाय संदिस्सावी । आठ नवकार कहे । फेर दो खमा समण देई । वैसणो संदिस्सावी । शीतादिकें वे खमासमण देई । पांग रणुं संदिस्सावे । पीछे । वे खमासमण देई । अंग पडिलेहण संदिस्सावी । मुहपत्ती पडिलेहै । फेर वे खमा समण देई । उंही थंडिला पडिलेहण

संदिस्सावी। (जो) अण पडिलेह्यो उपगरण हुवै। (तो) पडिलेहै (जो) सर्व उपगरण पडिलेह्या हुवै। (तोपिण) थानक शून्यता टालवा भणी। वले आसण पडिलेहै। पडिक्कमण वेलासीम सिझाय ध्यान करै। पीछै। उच्चार प्रश्रवणना (२४) थंडिला पडिलेही पडिक्कमणों करै। (तथा) पाछलीरातें। वली सामायक नलेवै। इतना निकेवल रात्रिसंबंधी पोसहलेवाना विकल्प जाणवा)॥ ❋ ॥ इति रात्रि पोसह विधि संपूर्णम्॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ २४ थंडिला पडिलेहण पाठ लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ आगाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ २ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ ४ ॥ आगाढे मज्झे पासवणे अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ ६ ॥ ❋ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ७ ॥ आगाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ८ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मज्झे पासवणे अहियासे ॥ ११ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ १२ ॥ ❋ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ १६ ॥ अणागाढे मज्झे पासवणे अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ १८ ॥ ❋ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ १९ ॥ अणागाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २० ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ २२ ॥ अणागाढे मज्झे पासवणे अहियासे ॥ २३ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ २४ ॥ एथंडिला पडिलेहण पाठकह्या ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ हिवै थंडिला कहां २ करणा सोकहे है ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ६ थंडिला सय्याके दोनुं तरफ, दहणें पासे (३) वामपासे (३) पडिले है ॥ ६ थंडिला दरवज्जेके भीतर पासे दाहिणें ३ वामें ३ पडिले है ॥

६ थंमिला दरवजे के वाहर दोनुं पासे पमिले है ॥ ६ थंमिला (जहां) उच्चार प्रश्रवणकी जगा दोनुं तरफ पमिले है ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ इति २४ थंमिला पमि लेहण विधि संपूर्णम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ अथ पाक्षिकादिक पडिक्कमण विधि लिख्यते ॥

॥ ❋ ॥ (तिहां) प्रथम वंदित्तू सूत्र पर्यंत । देवसिक पमिक्कमी । १ । खमासमण देई । देवसी आलोइयं पमिक्कंता । इच्छा० सं० भ० । पक्खी मुहपत्ती पमिलेहुं । (चौमासे) चौमासी० मुह० (संवछरीयें) संवछरी मुहपत्ती पमिलेहुं । पछे (गुरुकहै पमिलेह) पछे इछं कहे । दूजी खमासणदेई । मुहपत्ती पमिलेही । वांदणाद्ये । तिहां (पक्खीमें) पख्खो वइक्कंतो । (चौमासी में) चौमासी वइक्कंतो । (संवछरीमें) संवछरो वइक्कंतो । इम यथा योग्य कहै । (पछे गुरु कहै) पुण्यवंतो देवसीनें स्थानिके पाक्खिक (चउमासिक) संवछरिक भणज्यो । ठीक जयणा करज्यो । मधुर स्वरें पमिक्कमज्यो । खासैं सो विवरा सुध खासज्यो । मांमलमें सावचेत रहज्यो पछे सगलाही कहै । तहत्ति । पछे ऊठी । इच्छाका० सं० भ० । संबुघा खामणेणं । अब्भुट्ठिओवि अभिंतर । पक्खियं (३) खामेउं (गुरु कहै खामेह) पछे मस्तकैं अंजली करतो थको । इछं खामेमि पक्खियं (३) कही । गोमालीयें वैसी । मस्तक नमावी । दक्षिण हाथ गुरु साहमो करी मुहपत्ती मुखें देई । (पक्खियें) पनरसन्हं दिवसाणं । पनरसन्हं राईणं । जंकिंचि अप्पत्तियं । (इत्यादि सर्वपाठ कहै) चउमासे ॥ चउण्हं मासाणं । अट्ठण्हं पक्खाणं । वीसोत्तरसो राइं दियाणं । जंकिंचि अप्पत्तियं (इत्यादि कहै) संवछरीयें ॥ डुवालस सण्हं मासाणं । चोवीसण्हं पक्खाणं । तिन्निसय सट्ठि राइं दियाणं । जंकिंचि अप्पत्तियं (इत्यादिकहै) तिवारे (गुरु पिण मिछामि डुक्कमं कहै) । तिहां दोय साधु उचरता हुवै (तो) पाखियें (३) चोमासीयें (५) संवछरियें (७)साधुनें खमावे । पछे ऊठी । अवग्रह मांहि रह्यो कहै । इच्छाका० सं० भ० । पक्खियं आलो ऊं (गुरु कहै आलोएह) पछे इछं आलोएमि । जोमे पक्खिउ (३) अइ यारो कउ (इत्यादि सूत्र भणी) संक्षेपें (अथवा) विस्तारें । पाखी

चौमासी। संवछरी। अतीचार आलोवै। पछै। सवस्सवि पक्खिय (३) इत्यादि। इछाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहै। तिवारे (गुरु कहै) चउत्थे ण पडिक्कमह (चौमासै) छठेण पडिक्कमह (संवछरीयें)। अट्ठमेण पडिक्क मह। इछं। तस्समिछामि दुक्कडं (कही) द्वादशावर्त्त वांदणादेवै। पछै। इछा कारेण संदिस्सह भगवन्। देवसियं आलोइयं पडिक्कंता (१) पत्तेय खामणेणं। अब्भुठिओमि अभिंतर। पक्खियं। (३) खामेउं। (गुरु कहै खा०) पछै। इछंखामेमि पक्खियं। ३ (इत्यादि पाठ) सर्व पूर्वे कह्यो। तिम कही। मिछामि दुक्कडं देई। खमावै। पछै। बे वांदणादेई। भगवन् देवसियं आलोइयं पडिक्कंता। पक्खियं (३) पडिक्कमावेह। (गुरु कहै सम्मं पडिक्कमह)। पछै इछंकही। करेमि भंते सामाइयं। इछामि ठामि काउसग्गं। जोमे पक्खिउ (३) (इत्यादि कही) तस्सुत्तरी० अन्न त्थू० कही। काउसग्ग करै) गुरु पाखी सूत्र कहै। ते सांभलै। अनें गुरु थकी जूदा पडिक्कमता हुवै (तो) एक श्रावक खमासमण देई। कहै। भगवन सूत्र भणुं। (गुरु० भणह)। इसो वचन मनमें धारी। (इछं कही। ऊभो थको। हाथ जोडी। मुहपत्ती मुखें देई। तीन नवकार कही। मधुर स्वरै सूत्रार्थ मनमें चिंतवतो। (वंदित्तू सूत्र गुणें) बीजाश्रा वक। करेमि भंते०। इछामि ठाउं काउसग्गं। तस्सुत्तरी (अन्नत्थू कही) काउसग्गमें रह्या सुणें (सूत्रप्रांते) णमो अरिहंताणं कही (काउसग्गपारी) ऊभा थका तीन नवकार गुणी (बैसै) पछै तीन नवकार (३) करे मि भंते कही। इछामि पडिक्कमिउं। जो मे पक्खिउ (३) इत्यादि कही। (वंदित्तू सूत्र गुणें) पडिक्कमे देवसियं सव्वं। (एहनें ठिकाणें) पडिक्कमे पक्खियं। चौमासीयं। संवछरीयं (सर्व कहै) पछै ऊठी। अब्भुठिओमि आराहणाए (इत्यादि परीपूर्ण भणी) खमासमण देई। इछा० सं० भ०। मूल गुण उत्तरगुण अतीचार विशुद्धि निमित्तं। काउसग्ग करूं (गुरु कहै करेह (पछै इछं कही। करेमि भंते सामा०। इछामि ठाउं काउसग्गं। तस्सु०। अन्नत्थू। (इत्यादि कही) पाखियें (१२) लोगस्स। चौमासे। (२०) लोगस्स। संवछरीयें (४०) लोगस्सनो काउसग्ग करै। एक नव

कार ऊपर । काउसग्ग करी । (पारी) लोगस्स कहै । बैसी । मुहपत्ती पडिलेही । बे वांदणा देई । इच्छा० सं० भ० । समाप्ति खामणेणं । अब्भुट्ठिओमि अभिंतर । पक्खियं । (३) खामेऊं (गुरु कहै खामेह) पछै । इच्छं खामेमि पक्खियं । (इत्यादि पाठ) पूर्वे कह्यो । तिम कहै । (पछै) इच्छाका० सं० भ० । पाखी (३) खामणा खामूं (गुरु कहै) । पुण्यवंतो च्यारवेर खमासमण देई । तीन २ नवकार कही । पाखी (३) समाप्त खामणा खामह । पछै । श्रावक एक खमासमण देई । मस्तक नींचो नमावी तीन नवकार गुणें । इम च्यार वार कहे । पछे । (गुरु कहै नित्थारग पारगाहोह (पछै । श्रावक कहै । इच्छं । इच्छामो अणुसट्ठिं (कही) (गुरु कहै) पुण्यवंतो । पाखीनें लेखै । एक उपवास । (अथवा) दोय आंबिल) अथवा) तीन नीवी । (अथवा) च्यार एकासणां । (अथवा) बेहजार सिज्झाय करी । एक उपवासनी पैठ पूरज्यो । पाखीनें स्थानकै देवसिक भणिज्यो ॥ इम चौमासै एसर्व दुगणो कहणो । संवछरीयें त्रिगुणो कहणो पछै जिणें तपकीधो हुवै । ते पइट्ठियं कहै । न कीधो हुवै । ते कहै तहत्ति । पछै बे वांदणां देई । अब्भुट्ठिओमि अभिंतर । देवसियं खामेमि । इत्यादि कहै) पछै बे वांदणा देई । आयरिय उवझाए० तीन गाथा कहै । इम आगै सर्व विधि । देव सिक पडिक्कमणानी करै । पिण इतरो विशेष है । श्रुत देवतानो काउसग्ग करी । स्तुति कहै । पीछे भवण देवयाए करेमि काउसग्गं (इत्यादि विधें) भवन देवतानों काउसग्ग करी । स्तुतिकही । क्षेत्र देवतानो काउसग्ग करै । (तथा) तीने पर्वे । वडो स्तवन अजित शांति कहणो । लघुस्तवन । उपसर्ग हर स्तोत्र कहणो । तथा पडिक्कमणो पूरो हुवां । पछै । एक श्रावक गुर्वाज्ञायें । नमोर्ह्त्सिद्धा कही । शांति स्तोत्र १७ गाथा प्रमाण कहै । बीजा सर्वसुणें । जिणांनें रात्री पोसह न हुवै (ते) पोसह सामायिक पारी मांडलै ॥ ❀ ॥

इति पाक्षिकादि (३) पडिक्कमणविधिः कही ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ रात्री प्रतिक्रमण मांहें छम्मासी तपचिंतन विधिः ॥

॥ ❀ ॥ श्रीमहावीर स्वामीना तीर्थमें उत्कृष्टो छम्मासी तपहै ॥ रे जीव

ते करि सके। नकरिसकुं । इम एक दिन ऊणो । करि सकै (न करिसकुं) इम एकेक दिन ऊणो करतां । उगुण तीस दिन ऊणा छम्मास हुवै । तिहां सूधी पूछियै। पछै। (पंचमासी) करि सकै । न करिसकुं । एक दिन ऊणी पंचमासी करि सकै (न करिसकुं) । इम एकेक दिन ऊणो करतां उगुण तीस दिन ऊणी । पंचमासी लगें पूछियें । पछै। (चउमासी) एक दिन ऊणी । दोय दिन ऊणी । इमहीज त्रिमासी । दुमासी । यावत् (एक मासकरि सकै) । नकरि सकुं । पछै। एक दिन ऊणो कियां । सो लह दिननो चौत्रीसम तप थाइ । ते करि सकै (न करिसकुं) । पछै। बे बे भात घटावतां पूछियै। (इम) बत्रीसम करि सकै (न करिसकुं)। (इम) त्रीसम। अठा वीसम । छवीसम । चौवीसम। बावीसम। वीसम। अठार सम । शोलसम । चौदसम । बारसम । दशम । अठम। छठ। चउत्थ तप करि सकै । (न करि सकुं) । (इम) आंबिल । निवी। एकासणो पुरिमड्ढ । पोरसी । नवकारसी । (तांई) जो पच्चक्खांण करवो हुवै। (सो) मनमें धारी। काउसग्ग पारै ॥ इति छम्मासी तप चिंतवन विधिः ॥

॥ ❀ ॥ अथ प्रशस्तिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दुहा ॥ श्रीजिन चंद सुरिंद। नितुराजत गछ राजान। वाचक अमृत धर्म गणि । सीस क्षमा कल्याण ॥ १ ॥ सय अढार अड़तीस मझि। जेशलमेरु सुथान। श्रावक विधि संग्रह कियो । मूल ग्रंथ अनुमान ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ आचार ग्रंथनामः ॥ ❀ ॥

श्रीजिनप्रभसूरि कृत विधि प्रपा ॥ १ ॥ खरतर मंडलाचार्य तरुण प्रभ सूरि कृत षडावश्यक बालाबोधं ॥ २ ॥ सामाचारी शतकं ॥ ३ ॥ वंदारुवृत्तिं ॥ ४ ॥ प्रवचन सारोद्धारवृत्तिं ॥ ५ ॥ आचार दिनकरं ॥ ६ ॥ श्रीजिन पतिसूरि सामाचारी पत्रं ॥ ७ ॥ शिवनिधानो पाध्याय कृत लघु विधि प्रपा दि ॥ ८ ॥ ग्रंथाश्च विलोक्य अयं विधि प्रकाशो निर्म्मित ॥ ❀ ॥

इति श्रावक विधि प्रकाशः परि पूर्णतामगात् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❋ ॥ अथ साधू (अने) श्रावक । दोनुं टंक पडिक्कमणो करे । तेहनो हेतु (नांव) मुतलब लिखतेहें ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ तिहां पापसेती निवर्त्तन होणो (ते) पडिक्कमणो कहिये ॥ तथा ॥ ग्यानाचार १ दर्शनाचार २ चारित्राचार ३ तपाचार ४ वीर्याचार ५ (एपंच आचार सुद्धि निमित्तें) श्रीगुरु साखें । अनें गुरु अन्नावे । थापनाचार्य शाखे पडिक्कमणो करवो (तेहना छ अध्ययनछे) सामाइयं १। चउवीसत्थउ २। वंदणयं ३ । पडिक्कमणं ४। काउस्सग्गो ५। पच्चक्खाण ६ मिति (तिहां) सामायिकें करी चारित्राचारनी सुद्धिथायै । चउवीसत्थें करी दर्शना चारनी सुद्धता थायै । वांदणें करी ग्यानादिक आचार सुद्ध थाये । पडिक्कमणें करी ग्यानादिकना अतीचारांनी सुद्धि थायै । अनें पडिक्कमणाथी जे अतीचार शुद्धनथाइ (ते) काउसग्गें शुद्धथाइ । पच्चक्खाणें करी तपाचार शुद्धथाइ । अनें वीर्याचार इणें छएकरी शुद्ध थाइ ॥ हिवै देव वांदनादि अनुक्रमें पडिक्कमणो थापै । (तेहना हेतु कहै) ॥ सुद्ध पडिक्कमणो मोक्षनो कारण छे । ते मंगल विना निर्विघ्नपणें प्रमाण नचढे । तिसवास्तै धुरैं अवश्य मंगल करवो । तिहां मंगल तो अनेक प्रकारनो है । पिण श्रीदेव गुरु वंदन सरीखो बीजो मंगल कोई नही (तेमाटे) प्रथम नमस्कार शक्रस्तव पूर्वक च्यारे थुईए देववांदी । च्यारे खमासमणे गुरुवांदे ॥ लोकमें पिण पहिलां राजानें नमस्कार करी (पछे) प्रधान प्रमुखनें नमें । इहां राजा समांन तीर्थंकर (अने) प्रधानादिक समान आचार्यादिक छै (इम मंगल कर) पडिक्कमणानें धुरे समस्त अतीचारनो बीजक (सव्वस्सवि देवसिय) इत्यादि कही मिछामि दुक्कडं देवे । पछैं ज्ञानादिक मांहे । चारित्रना अधिकपणा हुंती । प्रथम चारित्राचार शुद्धि निमित्तें । करेमि भंते सामाइयं (इत्यादि तीन सूत्र भणें) तिहां समता परिणामें सर्व धर्म कार्यकरवा (ते माटें) प्रथम सामायक आवश्यक कह्यो ॥ ❋ ॥ पछे प्रभातनी पडिलेहण थी मांडी । दिवसना कीधा अतीचार गुरु आगें आलोइवाछै । ते धारयां विना भली रीतें आलोवाइ नही (ते माटें) काउसग्ग करे । अतीचार मनमें धारे । पछे लोगस्स कहै (जे माटे) एसामायिका

दिक सुद्ध मार्ग (इहां) रिषजादि चउवीस तीर्थंकरे आपसेव्यो (अनें) ज व्य जीवनें उपदिस्यो । ते कारणें । बीजे आवश्यके चउवीस जगवंतनी स्त वना करवी कही ॥ ❋ ॥ पछे धर्ममांहें विनयना प्रधानपणा हुंती । गुरुनें वांदणा देई । अतीचार आलोइवा । अनें वांदणाछे । तेशरीर सुद्ध विना नदेणी (ते माटे) प्रथम मुहपत्ती पमिलेही । सुद्धकरी । तिणथी काया पमि लेहे ॥ तीजै आवश्यके वांदणा देवी कही ॥ ❋ ॥ पछे गुरु आगे । अती चार आलोई प्रायश्चित्त मांगे (गुरु कहै पमिक्कमह) (जे माटे) कित ना इक अतीचार तो आलोयां थी सुद्ध थया । अनें कितना इक न थया (ते सुद्ध करवानो) चोथो आवश्यक पमिक्कमणो कह्यो ॥ ❋ ॥ तिहां उत्तम कार्य सर्व नवकार पूर्वक करवा (ते माटे) प्रथम नवकार कहै । अ नें समजाव धारी पमिक्कमवुं (ते माटे) पछे सामायिक सूत्र कहै । तिवार पछे साधु श्रावक आप आपणा अतीचार पमिक्कमवा निमित्तें सूत्रजणें । पछे समस्त अतीचार रूप जार निवर्त्तवे करी । हलको हुवो थको । ऊजो थई सूत्र पूर्ण करै । इम अतीचार पमिक्कमी । श्रीगुरुनें विषे पोतानो कीधो कोई अपराध खमाइवा निमित्तें । वांदणा देवै । पछे गुरु प्रमुखनें खमावी काउसग्ग निमित्तें । फेर वांदणा देवै । ए वांदणा गुरुनें अपणो आधीन पणो जणाइवा निमित्ते पिण जाणवी । पछे (श्रावक) आयरिय उवझाए (इत्यादी तीन गाथा जणें) हिवे आलोयण पमिमकणा थी शुद्ध न थया (जे) चारित्रादिकना मोटा अतीचार (ते) शुद्ध करवानें अर्थें पांचमो आ बश्यक काउसग्ग करै ॥ ❋ ॥ तिहां । प्रथम सामायिकादि तीन सूत्र ज णी । चारित्राचार सुद्धि निमित्तें दोइ लोगस्स चिंतवै । इहां तीजी वार वले सामायक उच्चारण कीधो (ते) सर्व धर्म क्रिया समता परिणामें की धी सफल थाइ । ए अर्थे । पछे ज्ञान थी समकित अधिको है (ते माटें) दर्शनाचार शुद्धि निमित्तें लोगस्स कही । सवलोए (इत्यादि) सूत्र जणी । एक लोगस्सनो काउसग्ग करै । पछे श्रुतज्ञानाचार शुद्धि निमित्तें । पुक्खरवर दीवड्ढे (कही) सुयस्स जगवउ (इत्यादि जणी) बीजो एक लोगस्सनो काउसग्ग करै (इहां) प्रथम काउसग्ग दोय लोगस्सनो कह्यो । ते ज्ञाना

दिक थी चारित्रनो अधिकपणो छे (ते माटे) वली । ग्यानादिकनी अपेक्षा यें, चारित्रनें अतीचार घणा लागे । तेपिण कारण जाणवो । पछे । ज्ञान । दर्शन । चारित्राचार । निरतीचार पणें आचरवाना फलभूत श्रीसिद्ध भगवान, तिणारी स्तवना । सिद्धाणं बुद्धाणं (इत्यादि भणें) पछै । हिवणां उपगारी श्री महावीर स्वामीछे (ते माटे) जो देवाण विदेवो (इत्यादि तेहुंनी स्तवना करै) पछे महा तीर्थपणा हुंती । उर्जिंत शेल सिहरे (इत्यादि तीर्थ स्तवना करै) इम । चारित्र, दर्शन, ज्ञानाचार सुद्ध करी । समस्त धर्म क्रियानो श्रुतज्ञान कारणछे (तेमाटें) श्रुति समृद्धि निमित्तें । श्रुत देवतानों काउसग्ग करी स्तुति कहै । पछै जेहना क्षेत्र में रहियै । क्षेत्र देवतानों काउसग्ग करी । स्तुति कहै । (सिद्धांत माहें) तीजे ब्रतें निरंतर अवग्रह याचना रूप भावना कहीछे । ते साचवणें निमित्तें ए काउसग्ग संभवै है । ए दोनुं काउसग्ग पूर्वधारीये आचरया छे । (आवश्यक वृत्ति, चूर्णि, भाष्यादिक माहे) श्रीहरिभद्र सूरि प्रमुख मोटे आचार्यें कह्याछे (ते माटें) प्रमाण है । पछे काउसग्ग थी । केई अतीचार सुद्ध न थया ते सुद्धकरवानें । छहो आवश्यक पचक्खाण कह्यो ॥ ❁ ॥ तेपूर्वें कीयो होय (तो) इहां तेहनें ठामें । मंगलीक निमित्तें । नवकार एक कही । मुहपत्ती (अनें) काया पडिलेही । श्रीगुरुनें वांदणादेई । इछामो अणुसठिं कहै । तुह्मारी आज्ञायें में पडिक्कमणो कीधो । एहवुं गुरुनें जणाविवा निमित्तें । ए वांदणा कह्या । इतरे पडिक्कमणो परिपूर्णथयो ॥ ❁ ॥ (हिवै) निर्विघ्नपणें पडिक्कमणो पूर्ण हुवा थकी घणो हर्ष ऊपनो । तिणें करी । गुरु एक स्तुति कह्यां थकां । सर्व साधु श्रावक वर्द्धमान स्वरे । तीन स्तुति कहै (इहां गुरुना वचननें अंते) शिष्यादिक । नमो खमासमणाणं (एहवो गुरुनें नमस्कार कहै) ते गुरु वचननो बहुमान रूपछे । पछै शक्रस्तव कही । आचार्यादिकनें वांदै । सर्व धर्म क्रिया श्रीदेवगुरु भक्ति पूर्वक सफल थायै (ते माटें) पडिक्कमणांनें प्रारंभे (तथा) अंतें । देव गुरु वंदन कह्यो ॥ ❁ ॥ हिवै पडिक्कमणां मांहें । चारित्रादि सुद्धि निमित्तें । पूर्वे काउसग्ग कीधा छे । तोपिण वली विशेष शुद्धि निमित्तें । च्यार लोगस्स

नो काउसग्ग करी। मंगल निमित्तें लोगस्स कहै। जे साधु श्रावक आत्मा थींहुवै। ते ए हेतु समझी। विधि पूर्वक उपयोग सुं पडिक्कमणो करै। ते लीलायें भवसमुद्र तरै। सिद्धि संपदा वरै॥ ❀ ॥ आवश्यक वृत्त्यादेः। प्रति क्रमण हेतवः। निबद्धा भाषयोद्धृत्य। साधु श्राद्धादि हेतवे॥ १ ॥ वाचकामृत धर्माणां। शिष्येणात्म हितेछना। क्षमाकल्याण गणिना। बीकानेर पुरे मुदा॥ २ ॥ इति प्रतिक्रमण हेतवः संपूर्णम्॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधरजिनचैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ जयजय त्रिभुवन आदिनाथ पंचमगति गामी ॥ जयजय करुणा शांतिदांत भविजन हितकामी॥ जयजय इंद नरिंदवृंद सेवत सिरनामी। जयजय अतिशय नंतवंत अंतर गति जामी ॥ १ ॥ पूर्व विदेह विराजताए। श्री सीमंधर स्वामि। त्रिकरण सुध त्रिहुंकालमें। नित प्रति करुं प्रणाम॥ २ ॥ इति॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सीमंधरजिनस्तवन॥ ❀ ॥

॥ पूर्वविदेह पुखलावती। जयोजगापतीरे। श्रीसीमंधरस्वामि प्रहसमनित नमुंरे॥ १ ॥ जगत्रय भाव प्रकाशता। भविप्रतिबो धतारे। उपगारी अरिहंत॥ प्रह० ॥ २ ॥ धन्यनयरी धन्यते नरा। धन्यते धरारे॥ बिचरै जिहां जिन राज। प्र० ॥ ३ ॥ धन्य दिवश धन्य तेघडी। देखसुं आंखडीरे। भक्तिवछल भगवंत। प्रह० ॥ ४ ॥ महरनिजर अवधारजो। पतित उधारजोरे। जिनहरख वर्णे ससनेह। प्रहसम नितन मुंरे॥ ५ ॥ ॥ इति पदम्॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ श्रीसीमंधरसाहिबा। वीनतडी अवधारलालरे। परम पुरुष परमेसरू। आतम परम आधारलालरे०॥ श्री० ॥ १ ॥ केवल ग्यान दिवाकरू। भांगे सादिअनंत लालरे भासक लोकालोकको। ग्यायक गेयअनंतलालरे॥ श्री० ॥ २ ॥ इंद्रचंद्रचक्रीसरू। सुरनर रहे कर जोड लालरे। पदपंकज सेवे सदा। अणहुंतें इककोड लालरे॥ श्री० ॥ ३ ॥ चरणकमल पिंजरवसे। मुझ मन हंस नितमेवलालरे। चरणसरण मोहि आसरो। भव२ देवाधिदेवलालरे॥

॥ श्री० ॥ ४ ॥ अधमउधारण जो तुमे । दूर हरो भवदुःखजालरे । कहे जिन हरष मयाकरी । दे ज्यो अविचल सुखकालरे (श्री० ॥ ५ ॥

॥ इति सीमंधरजिनस्तवनम् ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्री सिद्धगिरी चैत्यवंदन ॥ ❋ ॥

॥ जय जय नाभिनरिंद नंद सिद्धाचलमंमण । जय २ प्रथम जिणंद चंद भव दुःख विहंमण । जयजय साधु सुरिंद वृंद वंदिय परमेश्वर । जय २ जगदा नंद कंद श्री रिषभ जिनेश्वर ॥ १ ॥ अमृत समजिन धर्म नोए । दायक जगमें जाण । त्वत्पद पंकज प्रीतिधर । निसदिन नमत कल्याण ॥ २ ॥ इति० ॥

॥ ❋ ॥ पुनः ॥ ❋ ॥

॥ सिद्धो विज्जाइचक्की नमि विनमि मुणी पुंमरियो मुणिं दो वाली पज्जुन्न संबो भरह सुग मुणी सेलगो पंथगो अ रामो कोमी पंच द्रावड नरवई नारद पंडुपुत्ता । मुत्ताएवं अणेगे विमल गिरि महं तित्थमेयं नमामि ॥ १ ॥

॥ ❋ ॥ अथ सिद्धगिरी स्तवन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ आज पुंमर गिरिभेटिया । प्रगट्यो परमआनंदा । मोह तिमर दूरेगए । भागा भवभयफंदा ॥ आ० ॥ १ ॥ मरुदेवाजीकेलामला । नाभिराय के नंदा रिषभजिनेसर सुखकरू । दिनमणिज्युंदीपंदा ॥ आ० ॥ २ ॥ पूर वनिनाणुं रायणतले । आया प्रथम जिणंदा । नेमिविना सहुजिनवरें । इन गिरि कोंसेवंदा ॥ आ० ॥ ३ ॥ कलुकाले इण भरतमें । तारण जाऊ ममंदा । अनंत जीव मुगतेंगया । वीतराग भाषिंदा ॥ आ० ॥ ४ ॥ चौमुख जिननें आदले । नववसिबिंब सोहंदा । आतमागुण निरमलकरी । मोहन सुःखपा वंदा ॥ आ० ॥ ५ ॥ ॥ ❋ ॥ इति सिद्धगिरी स्तवनम् ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सिद्धाचल गिरिभेव्यारे । धन्य भाग हमारा । सि० (टेर) एगि रवरनी महिमा मोटी । कहतांनावेपारा । रायण रूंख समोसरचा स्वामी । पूरव निनाणुं वारारे ॥ धन्य० सिद्धा० १ ॥ मूलनायक श्रीआदिजिनेसर । चोमुख प्रतिमा चारा । अष्ट द्रव्यसुं पूजाभावे । समकित मूल आधारारे ॥

ध० सि०२ ॥ भाव भगतिसुं प्रभुगुण गावे अपणा जनम सुधारा । यात्राकरी भविजन सुभभावे नरक तिर्यंच गति वारारे ॥ ध० सि० ३ ॥ दूर देशांतर थी हूंआयो श्रवण सुणीगुण ताहरा । पतित उधारण विरुध तुमारो । एतीरथ जगसारारे ॥ ध० सि० ४ ॥ संवत अढार वयांसी आषाढे । वदि आठम भोमवारा प्रभुजीके चरण प्रताप संगमें । कुमारतन प्रभुप्यारारे ध० सि० ५ ॥ इति पदम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्रीआदिजिनचैत्यवंदन ॥ ❋ ॥

जय २ जगदानंदन । जयजय वरनाभि नंदन जिणंद । जय २ करुणा सागर । मनोरथा अद्य फलतामे ॥ १ ॥ अद्य मे सफलं जन्म । अद्य मे सफला क्रिया । प्रयास सफलोमेद्य । दर्शना दादिमप्रभो ॥ २ ॥ प्रातरुत्थाय एनार्हं । मारुदेवो नमस्कृतः । हेलयामोहभूपाल । तेन नूनं नमस्कृतः ॥ ३ ॥ सुकृतं संचितंयेनः । दुकृतं तेन मुंचितं । येनः प्रथमनाथस्य । चरणां भोजनं चितं ॥ ४ ॥ त्रिभुवना भयदान विधायनी । त्रिभुवना द्भुति वंछित दायनी । त्रिभुवनः प्रभुतः पदशालिने । भगवते रिषभाय नमोनमः ॥५॥ इति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्रीशान्तिजिनचैत्यवंदन ॥ ❋ ॥

शांतये शांति कामाय । विघ्नशांति विधायिने । नमः शांति स्वरूपाय । शांतेपदमुपेयुषे ॥ १ ॥ अशिवं शमया मास । गर्भसंस्थोपि यःपुराः । तन्ना माग्रहणादेवः । विघ्नासाम्यंति सांप्रतं ॥ २ ॥ श्रीशांति नाम मंत्रंयो । जपेत् निर्मल मानसः । श्रेयःसंपद्यते तस्य । पापशांतिर्भवेदपि ॥ ३ ॥ इति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः ॥ ❋ ॥

शोलम जिनवर शांतिनाथ सेवो सिरनामी । कांचन वरण सरीर कांति अतिशय अभिरामी । अचिरा अंगज विश्वशेन नरपति कुलचंद । मृगलंछन धरपति कमल सेवइ सुरवृंद ॥ १ ॥ जगमांह अमृत देवए । जासु अखंभित आण । एकमनें आराधतां । लहिये कोभिकल्याण ॥ २ ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्रीनेमिजिनचैत्यवंदन ॥ ❋ ॥

महसम भणसुं नेमिनाथ जिनवर जयवंत । यादवकुल अवतंस हंस उत्तम

गुणवंत । समुद्रविजय शिवा देवीमात मति सहज उदार । सुंदर स्याम सरीर जोति सोहे सुखकार ॥ १ ॥ गढगिरनारइ जिणें लह्योए । अमृत समतस बाण ध्यानधरंता एहनो । प्रगटे परम कल्याण ॥ २ ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ श्रीपार्श्वजिनचैत्यवंदन ॥ ❁ ॥

ॐह्रींश्रीपार्श्वनाथाय । विश्वचिंतामणीयते । ॐधरणेंद्र वैरोट्या । पद्मादेवी युतायते ॥ १ ॥ सिताष्ट दलमध्यस्थ । वत्र पद्मासनायते । ॐअसिआउसाश्री । लब्धा लक्ष्मीं नमोनमः ॥ २ ॥ ॐदिक्पाला ग्रहाधीशं । यक्षणीयक्ष सेविता । ग्रहायुता ह्रूंइजया । क्षापरा जितयान्वितः ॥ ३ ॥ शांतितुष्टि महापुष्टि । धृति कीर्त्ति विधायिने । विघ्नवाला नलवेत्ताला । सर्वाधि व्याधि नाशने ॥ ४ ॥ श्रीशंखेश्वर मंरुण । पार्श्वजिन प्रणतिकल्प तरुकल्प । चूरयदृष्ट व्रातं । पूरय मे वांछितं नाथः ॥ ❁ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ पुनः ॥ २ ॥ ❁ ॥

॥ अभिनव मंगल माला । करणं हरणं दुरंति दुरितस्य । श्री पार्श्वनाथ चरणं । प्रतिपन्नो भावतः सरणं ॥ १ ॥ आयासेन विना लक्ष्मी । विनाक्लेपेण वैभवं । विनै वत्तपसा सिद्धि । जंपतां पार्श्वनामते ॥ २ ॥ पार्श्वजिनशा सनंते । निवह महामोह तिमर विध्वंसि । महिरत्न दीपकल्पं । तनोतु तेजो विवेकाख्यं ॥ ३ ॥ तुरेषां चरणो जिव्हे । कुरुस्तोत्रं चरणोनमः । हर्षासु सुचितां दृष्टी । आएषु परमेश्वरः ॥ ४ ॥ भवे भवांतरे वापि । दुःखेवा यदिवा सुखे । पार्श्व ध्यानेनमयांतु । वासुराः पुन्य भासुराः ॥ ५ ॥ ❁ ॥ इति ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ पुनः ॥ ३ ॥ ❁ ॥

॥ अमर तरु कामधेनु । चिंता माणि काम कुंभ माईया । तुहसामि पास सेवय । गयांइ सव्वेवि दासत्तं ॥ १ ॥ खंभिक्कांति भगंदर । ज्वर काश शास शूलतन निवहा । सिरि सामल पास पहु । तुह नाम पयंरु पवणेण ॥ २ ॥ जय धरणिंदनमंसिअ । पउमावइ पमुह सेविअ सुपास । ॐह्रीं अर्हं ममसिद्धि कुणसु पास ॥ ३ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ पुनः ॥ ४ ॥ ❁ ॥

॥ ॐममहरउ जरं । ममहरउ विहुरं भरंभा मरं । हरउ चोरारि मारिवाही ।

हरउ ममं पास तित्थयरो ॥ १ ॥ एगंतर जरं निच्चजरं । सीअजरं उएहजरं वेला जरं । तह तइयजरं चउत्थजरं । हरउ ममं पास तित्थयरो ॥ २ ॥ जिण दत्ताणा पालण परस्ससंघस्स विहि समुग्गस्स । आरोग्ग सोहग्गं अपवग्गं । कुणउपास जिणो ॥ ३ ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्री वीरजिन चैत्यवंदन ॥ ❋ ॥

वंदुं जगदाधार सार सिवसंपति कारण । जन्म जरा मरणादिरूप भवताप निवारण । श्री सिद्धारथ तात मात त्रिशला तनजात । सोवन वरण सरीरवीर त्रिभुवन विख्यात ॥ १ ॥ अमृत रूपे राजताए । चउवीसम जिनभाण । क्षमा प्रमुख कल्याण गुण आपोकरिसुपसाय ॥ २ ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः ॥ २ ॥ ❋ ॥

॥ वीरस्सर्वे सुरासुरेंद्र महितो वीरं बुधा संश्रिताः । वीरेणा भिहतस्स कर्म निचयो वीराय नित्यंनमः । वीरात्तीर्थमिदं प्रवर्त्तमतुलं वीरस्य घोरं तपो । श्री वीरे धृतिकीर्ति कांति निचयः श्री वीरभद्रंदिशः ॥ १ ॥ इति ॥

॥ ❋ ॥ अथ तप गछ विशेष विधि संग्रह ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ पंचिंदिअ ॥ ❋ ॥

॥ पंचिंदिअ संवरणो । तह नवविह बंभचेर गुत्तिधरो । चउविह कसाय मुक्को । इअ अठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंचमह व्वयजुत्तो । पंचविहायार पालण समत्थो । पंच समिउ तिगुत्तो । छत्तीसगुणो गुरु मज्झ ॥ २ ॥ इति ॥

❋ ॥ अथखमासमण ॥ ❋

॥ इछामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीही आए मत्थएण वंदामि ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ अथ सुगुरुनें शातासुख पृछा ॥

॥ इछकार सुहराइ सुहदेवसी सुखतप शरीर निरावाध सुख संजम जात्रा निर्वहोछोजी स्वामी शाताछेजी भात पाणीनो लाभ देजोजी ॥ इति ॥

॥ ❋ ॥ अथ सामायक पारवागाथा ॥ ❋ ॥

॥ सामाइय वयजुत्तो । जावमणे होइ नियम संजुत्तो । छिन्नइ असुहं

कम्मं । सामाइअ जात्ति आवारा ॥ १ ॥ सामाइअं मिउकए । समणो इव सावउ हवइ जह्मा । ए ए ण कारणेणं । वहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ २ ॥ सामायिक विधिं लीधुं विधिं पारिउं । विधिकरतां जे कोइ अविधि हुवो होय । ते सविहुं मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जगचिन्तामणिचैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ इछाकारेण सं० । चैत्यवंदन करुं ॥ इछं ॥ जगचिंतामणि जगनाह । जगगुरु जगरक्कण । जगबंधव जगसत्थवाह । जगभाव विअरक्कण ॥ १ ॥ अठावय संठविअ रूव । कम्मठ विणासण । चउवीसंपि जिनवर जयंतु अप्पडिहय सासण॥१॥कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं । पढमसंघयणि उक्कोसय सत्तरिसय । जिणवराण विहरंतलप्भइ । नवकोडिहिं केवलिण । कोडि सहस्स नवसाहु गम्मइ । संपइ जिणवर वीससुणि । बिहुं कोडिहिं वरनाण । समणह कोडी सहसडुअ । थुणिजअ निच्चविहाण ॥ २ ॥ जयउसामी जयउसामी रिसह सत्तुंजि । उज्जिंत पहुनेमिजिण । जयउ वीर सच्चउरि मंडण । भरु अच्छहिं मुणिसुव्वय । महुरि पास डुहडुरिअ खंडण ॥ अवर विदेहिं तिछयरा । चिहुं दिसि विदिसि जंकेवि । तीआणागय संपइअ वंदुं जिण सव्वेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा । लरकाछप्पन्न अठकोडीउ । वत्तीस बासिआइं । तिअलोए चेइए वंदे ॥ ५ ॥ पनरसकोडि सयाइं । कोडी बायाललरक अडवन्ना । वत्तीस सहस असिआइं । सासय बिंबाइं पणमामि ॥ ५ ॥ जंकिं चिनामतित्थं कहके नमोत्थुणं कहे ॥ जावंति चेइयाइं । जावंति केविसाहू ॥ नमोर्हतसिद्धा० ॥ उवसग्गहरं पासं ॥ कहके भावपूर्वक जो स्तवन बोलना होय सो बोलके दोनूं हाथ जोड मस्तक चढाय जयवीयराय संपूर्ण कहे ॥

॥ ❀ ॥ अथ जयवीअराय ॥ ❀ ॥

॥ जयवीअराय जगगुरु । होउममं तुह पभावउ भयवं । भवनिव्वेउ । मग्गा । णुसारिया इठ फल सिद्धि ॥ १ ॥ लोग विरुद्धचाउ । गुरु जण पूआ परत्थ करणंच । सुह गुरु जो गोतवयण सेवणा आभव मखंडा ॥ २ ॥ वारिज्जइ जइ विनिआ । णवंधणं वीअराय तुह समए । तहवि ममहुज्ज सेवा भवे भवे तुह्म चलणाणं ॥ ३ ॥ डुरक रकउ कम्म रकउ । समाहि मरणंच

बोहित्ता जोअ ॥ संपज्जउ महएअं । तुहनाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥ सर्व मंगल मांगल्यं । सर्व कल्याण कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणं जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥ पीछे ऊजाहोके ॥ अरिहंत चेइयाणं ॥ वंदण वत्तिआए । अन्नत्थू कहके एक नवकारको कावसग्ग करके स्तुतिकहे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कल्लाण कंदं स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं । संतिंतवो नेमिजिणं मुणिंदं । पासं पयासं सुगणि कठाणं ॥ जत्तीय वंदे सिरि बद्ध माणं ॥ १ ॥ अपार संसार समुद्दपारं पत्ता सिवं दिंतु सुइकसारं । सबे जिणंदा सुर विंद वंदा । कल्लाण वल्लीण विशाल कंदा ॥ २ ॥ निवाणमग्गे वरजाणकप्पं । पणा सियासे स कुवाइदप्पं । मयंजिणाणं सरणं बुहाणं । नमामि निच्चंति जगप्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदिंदुगो क्षीरतुसार वन्ना । सरोज हत्थाकमले निसन्ना । वाए सिरी पुढय वग्गहढ्ढा । सुहायसा अह्मसया पसत्था ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विशाल लोचन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विशाल लोचन दलं । प्रोद्यद्दंताशुकेशरं । प्रातर्वीर जिनेंद्रस्य सुख पद्मं पुनातुवः ॥ १ ॥ येषा मभिषेक कर्म कृत्वा । मत्ता हर्ष जरात् सुखं सुरेंद्राः । तृणमपि गणयंतिनैव नार्कं । प्रातःसंतु शिवाय ते जिनेंद्राः ॥ २ ॥ कलंक निर्मुक्त ममुक्त पूर्णतं । कुतर्क राहु ग्रसनं सदोदयं ॥ अपूर्व चन्द्र जिन चन्द्र जाषितं । दिनागमे नौमि बुधैर्नमस्कृतं ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जगवानादि वंदन ॥ ❀ ॥

॥ जगवानहं ॥ आचार्यहं ॥ उपाध्यायहं ॥ सर्वसाधुहं ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अतीचारनी८गाथा ॥ ❀ ॥

॥ नाणंमि दंसणं मिय । चरणंमि तवेअ तहय विरियंमि । आयरणं आ-यारो । इअएसो पंचहा जणिओ ॥ १ ॥ काले विणए वहुमाणे । उवहाणे तहय निन्हवणे । वंजण अत्थ तदुजए । अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअनिकंखिअ । निवितिगिछा अमूढ दिठीअ । उववूह थिरीकरणे । वच्छल्ल पजावणे अठ ॥ ३ ॥ पणिहाण जोगजुत्तो । पंचहिं समइहिं तिहिं

गुत्तीहिं । एसचरित्ता यारो । अठविहो होइ नायवो ॥ ४ ॥ वारस विहंमि वितवे । अभिंतर बाहिरे कुशलदिठे । अगिलाइ अणाजीवी । नायवो सोतवायारो ॥ ५ ॥ अणसण मूणोअरिया । वित्तीसंखेवणं रसचाओ । काय किलेसो संलीणआय । बझोतवोहोइ ॥ ६ ॥ पायछित्तंविणउ । वेयावच्चं तहेव सिझोओ । जाणं उस्सग्गोविय । अभिंतरओ तवोहोइ ॥ ७ ॥ अणगूहिय बलविरिओ । परिक्कमइ जोजहुत्तमाउत्तो । जुंजइ अजहाथामं । नायवो वीरि आयारो॥ ८ ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ सुत्रदेवता स्तुति ॥ ❋ ॥

॥ सुअ देवया जगवई नाणा वरणी अकम्म संघायं । तेसिंखवेउ सययं । जेसिंसुअ सायरे जत्ती ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ खेत्रदेवता स्तुति ॥ ❋ ॥

॥ जीसे खित्तेसाहु । दंसणनाणेहि चरण सहिएहिं । साहंति मुरकमग्गं । सादेवी हरउ दुरिआइं ॥ १ ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ अढ्ढाइज्जेसुमुनिवंदन ॥ ❋ ॥

॥ अढ्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु । पन्नरससु कम्मजूमीसु ॥ जावंतकेविसाहू रयहरण गुछपडिग्गहधारा ॥ पंच महव्वय धारा, अठारस सहस्स सीलांगधारा॥ अरक यायारचरित्ता, तेसवे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥१॥ इति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ वरकनक ॥ ❋ ॥

॥ वरकनक शंख विद्रुम । मरकत घन सन्निभं विगतमोहं । सप्ततिशतं जिनानां । सर्वामर पूजितं वंदे ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ पोसह पारवा गाथा ॥ ❋ ॥

॥ सागरचंदो कामो । चंदवडिंसो सुदंसणोधन्नो । जेसिंपोसह पडिमा । अखंडिआजीविअंतेवि ॥ १ ॥ धन्नासलाहणिज्जा सुलसा आनंद कामदेवाय । जेसिंपसंसइ जयवं । दढव्वयंतं महावीरो ॥ २ ॥ पोसहविधेंलीधुंविधें पारिडं । विधिकरतां जे कोइ अविधिहुओहोइ । तेसविहुं मन वचन कायायेंकरी मिछामिदुक्कडं ॥ ३ ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ अथ भरहेसरनी सझाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भरहेसर बाहुबली । अभय कुमारोअ ढंढण कुमारो । सिरिओ अणियाउत्तो । अयमत्तो नागदत्तोअ ॥ १ ॥ मेअज्ज थूलिभद्दो । वयररिसि नंदिसेण सीहगिरी । कयवन्नोअ सुकोसल । पुंडरिओ केसि करकंडू ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल सुदंसण । साल महासाल सालिभद्दोअ । भद्दोअ दसन्नभद्दो । पसन्नचंदोअ जसभद्दो ॥ ३ ॥ जंबू पहु वंकचूलो । गय सुकमालो अवंति सुकुमालो । धन्नो इलाइ पुत्तो । चिलाइपुत्तोअ बाहुमुणी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्ज रक्खिअ । अज्ज सुहथ्थी उदायगो मणगो । कालयसूरिसंबो । पज्जुन्नो मूलदेवोअ ॥ ५ ॥ पभवो विन्हुकुमारो । अद्दकुमारो दढप्पहारीअ । सिज्जंस कूरगडुअ । सिज्जंभव मेहकुमारोअ ॥ ६ ॥ एमाइ महा सत्ता । दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता । जेसिं नाम ग्गहणे । पावपबंधा विलय जंति ॥ ७ ॥ सुलसा चंदन बाला । मणोरमा मयणरेहा दमयंती । नमया सुंदरी सीया । नंदा भद्दा सुभद्दाय ॥ ८ ॥ राइमई रिसिदत्ता । पउमावई अंजणा सिरि देवी । जिठ सुजिठ मिगावई । पभावई चिल्लणा । देवी ॥ ९ ॥ बंभी सुंदरी रुप्पिणी । रेवई कुंती सिवा जयंतीय । देवीई दोवई धारणी । कलावई पुप्फचूलाय ॥ १० ॥ पउमावईय गोरी । गंधारी लष्मणा सुसीमाय । जंबूवई सचभाया । रुप्पिणी कन्हठ महिसीओ ॥ ॥ ११ ॥ जक्खाय जक्खदिन्ना । भूआ तह चेव भूअदिन्नाय । सेणा वेणा रेणा । भअणीओ थूलिभद्दस्स ॥ १२ ॥ इच्चाई महासईओ । जयंति अकलंक सील कलिआओ । अज्जवि वज्जई जासिं । जस पडहो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥ इति सता सतीओनी सिझाय ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मन्हजिणाणं सिझाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मन्ह जिणाणं आणं । मिछं परिहरह धर सम्मत्तं । छविह आवस्सयंमि । उज्जुत्तो होई पइ दिवसं ॥ १ ॥ पव्वेसु पोसहवयं । दाणं शीलं तवोअ भावोअ । सझाय नमुक्कारो । परो वयारोअ जयणाअ ॥ २ ॥ जिणपूआ जिणथुणिणं । गुरुथुअ साहम्मिआण वछ्छं । ववहारस्सय सुधी । रहयत्ता तिथ्थयत्ताय ॥ ३ ॥ उवशम विवेक संवर । भासा समिई

छजीव करुणाय । धम्मिअ जण संसग्गो । करणदमो चरिण परिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरी वहुमाणो । पुथ्थय लिहणं पन्नावणा तित्थे । सड्ढाण किच मेअं । निच्चं गुरुवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥ ५० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सकल तीर्थ वंदना ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल तीर्थ वंदूं करजोड । जिनवरनामें मंगल कोम । पहेलें स्वर्गें लाख बत्तीश । जिनवर चइत्य नमुं निशदीश ॥ १ ॥ बीजे लाख अठावीश कह्या तीजे बारलाख सर्दह्या । चोथे स्वर्गें अम लख धार । पांचमे वंदूं लाखज चार ॥ २ ॥ छठें स्वर्गें सहस पचास । सातमें चालीश सहस प्रसाद । आठमें स्वर्गें छ हजार । नव दशमें वंदूं शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार बारमें त्रणशे सार । नवग्रैवेयकें त्रणशे अढार । पांच अनुत्तर सर्वे मली । लाख चौराशी अधिका वली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणुं त्रेवीश सार ॥ जिनवर भुंवन तणो अधिकार । लांबा शो जोजन विस्तार । पचास ऊंचा बोहोत्तर धार ॥ ५ ॥ एकशो अशी बिंब परिणाम । सभासहित एक चैत्यें जाण । शो कोम बावन कोम संभाल । लाख चोराणुं सहस चौंआल ॥ ६ ॥ सातशें ऊपर साठ विशाल । सवी बिंब प्रणमुं त्रण काल । सात कोमनें बोहोत्तर लाख । भुवनपतीमां देवल भाख ॥ ७ ॥ एकशो अशी बिंब प्रमाण । एक एक चइत्यें संख्या जाण । तेरशे कोम निव्याशी कोम साठ लाख वंदूं करजोम ॥ ८ ॥ बत्रीशेंनें ओगणसाठ । तिर्छालोकमां चइ त्यनो पाठ । त्रण लाख एकाणुं हजार । त्रणशे वीश ते बिंब जुहार ॥ ९ ॥ व्यंतर योतिषीमां वली जेह । शाश्वता जिनवर वंदूं तेह । रिखभ चंद्रानन वारिखेण । वर्द्धमान नामें गुणशेण ॥ १० ॥ समेत सिखर वंदूं जिनवीश । अष्टापद वंदूं चोवीश । विमलाचल नें गढ गिरनार । आबूऊपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥ शंखेश्वर केशरीयो सार । तारंगे श्रीअजित जुहार । अंतरीक वरकाणो पाश । जीरावलोनें थंभण पाश ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पाटण जेह । जिनवर चैत्य नमूं गुण गेह । विहरमान वंदूं जिन वीश । सिद्ध अनंत नमुं निशिदीश ॥ १३ ॥ अढी द्वीपमां जे अणगार । अढार सहस शीलांगना धार । पंच महाव्रत सुमती सार । पाले पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥

बाह्य अभ्यिंतर तप उजमाल । ते मुनि वंदूं गुणमणि माल । नित नित कठी कीर्त्ति करूं । जीव कहे भव सायर तरूं ॥ १५ ॥ इति ॥ १५ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ सकलार्हत् स्तोत्र ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सकलार्हत्प्रतिष्ठान । मधिष्ठानं शिव श्रियः । भूर्भुवः स्वस्त्रयीशान । मार्हत्यं प्रणिदध्महे ॥ १ ॥ नामाकृति द्रव्यभावैः । पुनत स्त्रिजगज्जनं । क्षेत्रे कालेच सर्वस्मि । न्नर्हतः समुपास्महे ॥ २ ॥ आदिमं पृथिवीनाथ । मादिमं निःपरिग्रह । मादिमं तीर्थनाथंच । रुषभस्वामिनं स्तुमः ॥ ३ ॥ अर्हंत मजितं विश्व । कमलाकर भास्करं । अम्लान केवला दर्श । संक्रांत जगतं स्तुवे ॥ ४ ॥ विश्व भव्य जनाराम । कुल्या तुल्या जयंतु ताः देशना समये वाचः । श्रीसंभव जगत्पतेः ॥ ५ ॥ अनेकांत मतांभोधि । समुल्लासन चंद्रमाः । दद्या दमंद मानंदं । भगवान भिनंदनः ॥ ६ ॥ द्युसत्किरीट शाणाग्रो । तेजितां घ्रि नखावलिः । भगवान् सुमतिस्वामी । तनोत्वभिमता निवः ॥ ७ ॥ पद्मप्रभ प्रभोर्देह । भासः पुष्णंतु वः श्रियं । अंतरंगारी मथने । कोपाटो पादिवारुणाः ॥ ८ ॥ श्रीसुपार्श्वजिनेंद्राय । महेंद्र महितांघ्रये । नमश्चतु वर्ण संघ । गगनाभोग भास्वते ॥ ९ ॥ चंद्रप्रभ प्रभोश्चंद्र । मरीचि नि चियो ज्वला । मूर्त्ति मूर्त्तसित ध्यान । निर्मितेव श्रियेऽ स्तुवः ॥१०॥ कराम ल कवद्विश्वं । कलयन् केवलश्रिया । अचिंत्य महात्म्य निधिः । सुविधिर्बो धयेऽ स्तुवः ॥ ११ ॥ सत्वानां परमानंद । कंदो भ्देदनवांबुदः । स्याद्वादामृत निस्पंदी । शीतलः पातुवो जिनः॥१२॥भवरोगार्त्त जंतूना । मगदंकार दर्शनः । निःश्रेयस श्रीरमण । श्रेयांसः श्रेयसेऽस्तुवः ॥१३॥ विश्वोपकारकी भूत । तीर्थ कृत्कर्म निर्मितिः । सुरासुर नरैः पूज्यो । वासुपूज्यः पुनातुवः ॥ १४ ॥ विम ल स्वामिनो वाचः । कृतककोद सोदराः । जयंति त्रिजगच्चेतो । जलनै र्मल्यहेतवः । ॥ १५ ॥ स्वयंभू रमणस्पर्धि । करुणा रस वारिणा । अनंत जिदनंतांवः । भयछतु सुखश्रियां ॥ १६ ॥ कल्पद्रुमसधर्म्माण । मिष्टप्राप्तौ शरीरिणां । चतुर्धा धर्म्मदेष्टारं । धर्म्मनाथं मुपास्महे ॥ १७ ॥ सुधासोदर वाग्ज्योत्स्ना । निर्म्मली कृत दिङमुखः । मृगलक्ष्मा तमःशांत्ये । शांतिनाथ जिनोस्तुवः ॥ १८ ॥ श्रीकुंथुनाथो भगवान् । सनाथो तिशयर्धिभिः । सुरा

सुर नृनाथाना । मेकनाथोऽस्तुवः श्रिये !! १९ ॥ अरनाथस्तु भगवां । श्च तुर्थारनभोरविः चतुर्थ पुरुषार्थश्री । विलासं वितनो तुवः ॥ २० ॥ सुरासुर नराधीश । मयूर नव वारिदं । कर्म्मद्रून्मूलने हस्ति । मल्लं मल्लि मभिष्टुमः ॥ २१ ॥ जगन्महा मोहनिद्रा । प्रत्यूषसमयोपम । मुनि सुव्रत नाथस्य देशना वचनं स्तुमः ॥ २२ ॥ लुठंतो नमतां मूर्ध्नि । निर्मली कार कारिणं । वारि प्लवा इवनमेः । पांतु पादनखांशवः ॥२३॥ यदु वंश समुद्रेंदुः । कर्म्म कक्ष हुताशनः । अरिष्टनेमि र्भगवान् । भूयाद्वोऽरिष्ट नाशनः ॥ २४ ॥ कमठे धरणेंद्रेच । स्वोचितं कर्म कुर्व्वति । प्रभुस्तुल्य मनो वृत्तिः । पार्श्व नाथः श्रियेऽस्तुवः ॥ २५ ॥ श्रीमते बीरनाथाय । सनाथायाद्भुत श्रिया । महानंदा सरोराज । मरालायार्हते नमः ॥ २६ ॥ कृतापराधेपिजने । कृपामंथरतारयोः । ईषद्बाष्पार्द्रयोर्भद्र । श्रीबीर जिननेत्रयोः ॥ २७ ॥ जयति विजितान्यतेजाः । सुरा सुराधीश सेवितः श्रीमान् । विमलस्त्रास विरहित । स्त्रिभुवन चूडामणि र्भगवान् ॥ २८ ॥ वीरः सर्व्व सुरासुरेन्द्र महिता बीरं बुधाः संश्रिताः । वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो वीराय नित्यं नमः । वीरातीर्थ मिदं प्रवृत्त मतुलं वीरस्य घोरं तपो । श्रीवीरे धृति कीर्त्ति कांति निचयः । श्रीवीरभद्रं दिश ॥ २९ ॥ अवनि तल गतानां कृत्रिमा कृत्रिमानां । वरभुवन गतानां दिव्य बैमानिकानां । इह मनुज कृतानां देवराजार्चितानां । जिनवर भुवनानां भावतोहं नमामि ॥ ३० ॥ इति ॥ ५२ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ शांतिकर स्तोत्र ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ संतिकरं संतिजिणं । जगसरणं जयसिरीइ दायारं । समरामि भत्त पालग । निव्वाणी गरूडकय सेवं ॥ १ ॥ ओं सनमो विप्पोसहि पत्ताणं । संतिसामिपायाणं । झौं स्वाहा मंतेणं । सव्वाशिव दुरिअ हरणाणं ॥ २ ॥ ॐ संतिं नमुकारो । खेलोसहि माइ लद्धि पत्ताणं । सो ह्रीं नमो सव्वो सहि । पत्ताणं चंदेइ सिरीं ॥ ३ ॥ वाणी तिहुअण सामिणी । सिरि देवी जख्खराय गाणि पिडगा । गह दिसिपाल सुरिंदा । सयावि रख्खंतु जिणभत्ते ॥ ४ ॥ रख्खंतु ममरोहिणी । पन्नत्ती वज्जासिंखला सया । वज्जंकुसि चकेसरी नरदत्ता कालि महाकाली ॥५॥ गोरी तह गंधारी । महजाला माणवीअ वइ

रुट्टा। अच्छुत्ता माणसिआ। महामाणसिआओ देवीओ ॥ ६ ॥ जख्खा गोमुह महजख्खा। तिमुह जख्खेसु तुंबरू कुसुमो। मायंग विजय अजिओ। बंभो माणुओ सुर कुमारो ॥ ७ ॥ छम्मुह पायाल किन्नर। गरुलो गंधव्व तहय जख्खिंदो। कुबेर वरुणो भिउमी। गोमेहो पासमायंगो ॥ ८ ॥ देवीओ चक्केसरी। अजिआ दुरिआरी कालि महा काली। अच्चुअ संता जाला। सुतारया सोअ सिरिवच्छा ॥ ९ ॥ चंभा विजयंकुसि पन्नइत्ति। निव्वाणि अच्चुआ धरणी। वइरुट्ट छुत्त गंधारी। अंब पउमावई सिद्धा ॥ १० ॥ इअ तिथ्थ रख्खण रया। अन्नेवि सुरा सुरी चउहावि। व्यंतर जोइणि पमुहा। कुणंतु रख्खं सया अह्मं ॥ ११ ॥ एवं सुदिट्ठि सुरगण। सहिओ संघस्स संति जिण चंदो। मझवि करेउ रख्खं। मुणि सुंदर सूरि थुअमहिमा ॥ १२ ॥ इअ संतिनाह सम्मद्दिट्ठि। रख्खं सरइ तिकालं जो। सव्वोवद्दव रहिओ। सलहइ सुह संपयं परमं ॥ १३ ॥ तव गछ गयण दिणयर। जुगवर सिरि सोम सुंदर गुरूणं। सुपसाय लद्ध गणहर। विज्जा सिद्धि भणइ सीसो ॥ १४ ॥

॥ ❋ ॥ श्री सीमंधर जिन चैत्य वंदन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सीमंधर परमातमा। शिव सुखना दाता। पुख्खल वई विजये जयो। सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्व विदेह पुंडरीगिणी। नयरीयें शोहे। श्री श्रेयांस राजा तिहां। भविअण मन मोहे ॥ २ ॥ चउद सुपन निर्मल लही। सत्यकी राणी मात। कुंथु अर जिन अंतरें। श्री सीमंधर जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमें प्रभु जनमीया। वली यौवन पावे। मात पिता हरखें करी। रुकमिणी परणावे ॥ ४ ॥ भोगवी सुख संसारनां। संजम मन लावे। मुनिसुव्रत नमी अंतरे। दिक्षा प्रभु पावे ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो क्षय करी। पाम्या केवल नाण। वृखभ लंछनें शोभता। सर्व भावना जाण ॥ ॥ ६ ॥ चोराशी जस गणधरा। मुनिवर एक शो कोड। त्रण भुवनमां जोअतां। नहिं कोइ एहनी जोड ॥ ७ ॥ दस लाख कह्या केवली। प्रभुजीनो परिवार। एक समय त्रएय कालना। जाणे सर्व विचार ॥ ८ ॥ उदय पेढाल जिनांतरे ए। थाशे जिनवर सिद्ध। जस विजय जिन प्रणमतां। शुभ वंछित फल लीध ॥ ९ ॥ इति चैत्य वंदन ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः द्वितीय चैत्य वंदन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्री सीमंधर जग धणी । आन्नरतें आवो । करुणावंत करुणा करी । अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल न्नक्त तुमें धणी ए । जो होवे अम नाथ । न्नवो न्नव हुं छूं ताहरो । नहीं मेल्लुं हवे साथ ॥ २ ॥ सयल संग छंमी करी ए । चारित्र लेइशुं । पाय तुमारा सेविनें । शिवरमणी वरिशुं ॥ ३ ॥ ए अलजो मुजने घणो ए । पूरो सीमंधर देव । इहां थकी हुं वीनवुं । अवधारो मुज सेव ॥ ४ ॥ इति द्वितीय चैत्य वंदन ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्री सिद्धगिरी चैत्य वंदन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ विमल केवल ज्ञान कमला । कलित त्रिन्नुवन हितकरं । सुरराज संस्तुत चरणपंकज । नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर शृंग मंमण प्रवर गुण गण न्नूधरं । सुर असुर किन्नर कोमि सेवित नमो० ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरी गण गाय जिन गुण मनहरं । निर्जरावली नमें अहनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधी । कोमि पण मुनि मन हरं । श्री विमल गिरिवर शृंग सिद्धा ॥ नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुरिंद मुनिवर । कोमिनंत ए गिरिवरं । मुक्ति रमणी वर्या रंगें ॥ नमो० ॥ ५ ॥ पाताल नर सुरलोक मांही । विमल गिरिवर तो परं । नहि अधिक तीरथ तीर्थप ति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ इम विमल गिरिवर शिखर मंमण । दुःख विहंमण ध्याइ यें । निज शुद्ध सत्ता साधनार्थें परम ज्योतिनें पाइए ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा । परम पद स्थिति जयकरं । गिरिराज सेवा करण तत्पर । पद्मविजय सुहित करं ॥ ८ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः सिद्धगिरी चैत्य वंदन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्री शेत्रुंजय सिद्ध खेत्र । दीठे दुर्गति वारे । न्नाव धरीनें जे चढे । तेने न्नवपार उतारे ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम । सकल तीरथनोराय । पूर्व नवाणुं रिखन्नदेव । ज्यां ठवीआ प्रन्नुपाय ॥ २ ॥ सूरज कुंम सोहामणो । कवम जक्ष अन्निराम । नान्निरायां कुलमंमणो जिनवर करूं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति द्वितीय चैत्य ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ श्री परमात्मा चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ परमेसर परमातमा । पावन परमिठ । जय जगगुरु देवाधिदेव । नयणे में दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अधिकार सार । करुणा रससिंधु । जगती जन आधार एक । निःकारण वंधू ॥ २ ॥ गुण अनंत प्रभुता हरा ए । किम ही कल्यान जाय । राम प्रभु जिन ध्यानथी । चिदानंद सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुणो चंदाजी सीमंधर परमातम पासें जावजो । मुझ वीनतमी प्रेम धरीनें इण परें तुमें संभलावजो । (ए आंकणी) जे त्रणय भुवननो नायकछे । जस चौशठ इंद्र पायकछे । नाण दरसण जेहनें खायक छे ॥ सुणो॰ ॥ १ ॥ जेनी कंचन बरणी कायाछे । जस धोरी लंछन पायाछे । पुंमरीगणी नगरीनो रायाछे ॥ सुणो॰ ॥ २ ॥ बार पर्षदा मांहि बिराजे छे । जस चौत्रीश अतिशय छाजैछे । गुण पांत्रीश वाणीयें गाजे छे । सुणो॰ ॥ ३ ॥ भविजननें ते पमि बोहेछे । तुम अधिक शीतल गुण शोहेछे । रूप देखी भविजन मोहेछे ॥ सुणो॰ ॥ ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसीओ छुं । पण भरतमां दूरें वसीओ छुं । महा मोह राय कर फसीओ छुं ॥ सुणो॰ ॥ ५ ॥ पण साहिब चित्तमां धरीयोछे तुम आणा खड्ग कर ग्रहीयोछे । तब कांइक मुझथी डरीयोछे ॥ सुणो॰ ॥ ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूठे हवे पूरो । कहे पद्म विजय थाऊं शूरो । तो वाधे मुज मन अति नूरो ॥ सु॰ ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सिद्धगिरी स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आंखमीयें रे में आज । शेत्रुंजो दीठोरे । सवा लाख टकानो दहामोरे । लागे मुनें मीठोरे (ए आकणी) सफल थयो मारा मननो उमाहो ॥ वाला मारा ॥ भवनो संशय भाग्योरे । नरक तिर्यंच गति दूर निवारी । चरणे प्रभुजीनें लाग्योरे ॥ शेत्रुं॰ ॥ १ ॥ मानव भवनो लाहो लीधो वा॰ ॥ देहडी पावन कीधीरे । सोना रूपानें फूलडे वधावी । प्रेमें प्रदक्षिणा दीधीरे ॥ शेत्रुं॰ ॥ २ ॥ दूधडे पखालीनें केशर घोली ॥ वा॰ ॥ श्री आ

दीश्वर पूज्यारे। श्री सिद्धाचल नयणें जोतां । पाप भेवासी धूज्यारे ॥ शेत्रुं० ॥ ३ ॥ स्वयमुख सुधर्मा सुरपति आगें ॥ वा० ॥ वीरजिणंद इम बोलेरे। त्रण जुवनमां तीरथ मोटुं । नहिं कोइ शेत्रुंजा तोलेरे ॥ शेत्रुं० ॥ ४ ॥ इंद्र सरीखा ए तीरथनी ॥ वा० ॥ चाकरी चित्तमां चाहेरे। कायानी तो कासल टाले । सूरज कुंभमां नाहेरे ॥ शेत्रुं० ॥ ५ ॥ कांकरे कांकरे श्रीसिद्धखेत्रें वा० ॥ साधु अनंता शीधारे । ते माटे ए तीरथ मोटुं । उधार अनंता कीधारे ॥ शेत्रुं० ॥ ६ ॥ नाभिराया सुत नयणे जोतां ॥ वा० ॥ मेह अमीरस वूठयारे। उदयरतन कहे आज मारे पोतें। श्री आदीश्वर तूठयारे ॥ शेत्रुं०

॥ ❋ ॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ विमलाचल नित वंदियें। कीजे एहनी सेवा । मानुं हाथ ए धर्मनो शिवतरु फल लेवा ॥ वि० ॥ १ ॥ उजल जिन गृह मंगली । तिहां दीपे उत्तंगा । मानुं हिमगिरि विभ्रमें । आई अंबर गंगा ॥ वि० ॥ ॥ २ ॥ कोइ अनेरूं जग नहीं। ए तीरथ तोले। इम श्रीमुख हरिआगलें श्री सीमंधर बोले ॥ वि० ॥ ३ ॥ जे सगला तीरथ करया। जात्रा फल लहीयें। तेहथी ए गिरि भेटतां। शत गणुं फल कहीयें ॥ वि० ॥ ४ ॥ जनम सफल होय तेहनो । जे ए गिरि वंदे । सुजश विजय संपद लहे। तेनर चिरनंदे ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्री पंच तीर्थ स्तवन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्लोक ॥ श्री शत्रुंजय मुख्य तीर्थ तिलकं श्री नाभिराजंगजं वंदे रैवत शैल मौलि मुकुटं श्रीनेमिनाथं यथा। तारंगे अजितं जिनं भृगु पुरे श्रीसुव्रतं स्थंभने । श्रीपार्श्वं प्रणमामि सत्यनगरे श्रीवर्द्धमानं त्रिधा ॥ १ ॥ वंदेऽनुत्तर कल्प तल्प भुवने ग्रैवेयके व्यंतरे । ज्यौतिष्का मर मंदराद्रि वसतो स्तीर्थंकरा नादरान् । जंबू पुष्कर धातकीषु रुचके नंदीश्वरे कुंडले। येचान्येपि जिना नमानि सततं तान् कृतिमाऽकृत्रिमान् ॥ २ ॥ श्री मद्वीरजिनास्य पद्म ह्रदतो निर्गम्यते गौतम। गंगा वर्त्तन मेत्य या भवि भव मिथ्यात्व वैताढ्यकं। उत्पत्ति स्थिति संहति त्रिपथगा ज्ञानां बुधा वृद्धिगा। मामे कर्ममलं हरत्व विकलं श्रीद्वादशांगी नदी ॥ ३ ॥ शक्र श्रेंद्र

रवि ग्रहा श्च धरण व्रह्मेंद्र शांत्यंबिका । दिगपालाः सकपर्दिगो सुखगणा श्चक्रेश्वरी भारती । येन्ये ज्ञानतपक्रिया व्रतिविधिः श्रीतीर्थयात्रादिषु । श्री संघस्य तुरा चतुर्विध सुरा स्ते संतु भद्रंकराः ॥ ४ ॥ इति श्रीपंचतीर्थ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेमराजुल सिझाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नदी जमुनाके तीर ऊमे दोय पंखीया (ए देशी) पिउजी पिउजीरे नाम जपुं दिन रातियां ॥ पिउजी चाल्या परदेश । तपे मोरी गतीयां । पग पग जोती वाट वालेसर कब मिले । नीर विछोह्यां मीनके । तेज्युं टलवले ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर सेज साहिब विण नविगमे । जिहारे वालेसर नाम तिहां मारूं मन भमे । जो होवे सज्जन दूर तोहि पासें वसे । किहां सायर किहां चंद देखी मन उल्लसे ॥ २ ॥ निःस्नेहीशुं प्रीत मकरजोको सही । पतंग जलावे देह दीपक मनमें नहीं । माणसनो विजोग म होजो केहनें । सालेरे साल समान हइआमां तेहने ॥ ३ ॥ विरह व्यथानी पीम जोवन वय अति दहे । जेनो पियु परदेश ते माणस दुःख सहे । झुरी झुरी पंजर कीध, काया कमला जिसी । हजुअ न आव्योनेम मली नयणें हसी ॥ ४ ॥ जेने जेहशुं रंग टाल्यो ते नवी टलें चकवा रयणी विजोग तेतो दिवसें मलें । आंबा केरो स्वाद निंबू ते न वि करे । जे नाह्या गंगा नीर ते छिल्लर केम तरे ॥ ५ ॥ जे रम्या मालती फूल धत्तूरे केम रमे । जेहनें घीयशुं प्रेम छे तेलें केम जमें । जेहनें चतुरशुं नेह ते अवरनें शुं करे । नव जोवन तजी प्रेम वैरागीथै फरे ॥ ६ ॥ राजुल रूप निधान के पोहती सहसावनें । जइ वांद्या प्रभु नेम संजम लेई एकमनें । पांम्यां केवल ज्ञान के पोहती मन रली । रूपविजय प्रभुनेम भेटे आशा फली ॥ ७ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आउखा सिझायः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आऊखो तूटानें सांधो को नहींरे । तिण कारण मकरो जीव प्रमादरे । जरा आव्यानें शरणुं को नहींरे । हिंसा छोमीनें दया पालरे ॥ आऊ० ॥ १ ॥ कुटुंब कबीला नारी कारणेंरे । मूरख संच्यां वहुला पाप र । चोर तणी परे छेमी झूरशेरे । सहीश इहलोक परलोक संतापरे ॥

आ० ॥ २ ॥ ऊंचा चणाव्या मंदिर मालियारे । दे दे धरतीमें ऊंडी नींवरे एक दिन अणजाण्युं ऊठी चालवुंरे । सुख दुःख सहेशे आपणो जीवरे आ० ॥ ३ ॥ चक्रवर्ति हरिबल राणो केशवोरे । जो जो वली इंद्र सुरांनो नाथरे॥ ऊगी ऊगीनें नवेही आथम्यारे। जो जो कोइ अचरज वाली वा तरे ॥ आ० ॥ ४ ॥ अथिर संसार तजी मुनी नीसर्यारे। करता मुनि नव ला विहाररे। भारंड पंखीनी दीधी उपमारे । न धरे ममता नेह लगाररे ॥ आ० ॥ ५ ॥ चारित्र पाले रूडी रीतशुंरे । देवे मुनि अपनो उपदेशरे । तीको मुनिवर सिधासी मोक्षनेंरे। जश लेई इह लोक परलोकरे॥ आ० ॥ ॥ ६ ॥ शब्द रूप देखी समता धरोरे। मकरो मुनि भण्यानुं अभिमानरे । ऋषि चोथमल सूत्र देखिनेंरे। जोड कीधी जालोर मझाररे ॥ आऊ० ॥ ७ ॥

॥ ❁ ॥ पंचतीर्थी चैत्य वंदन ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ आज देव अरिहंत नमुं। समरूं तारूं नाम । ज्यां ज्यां प्रति मा जिनतणी। त्यां त्यां करूं प्रणाम ॥ १ ॥ शेत्रुंजय श्रीआदिदेव । नेम नमुं गिरनार। तारंगे श्री अजित नाथ। आबू रिखभ जुहार ॥ २ ॥ अष्टा पद गिरि ऊपरें। जिनचोवीशी जोय॥ मणिमय मूरति मानशुं । भरतें भरावी सोय ॥ ३ ॥ समेत शिखर तीरथ वडुं । ज्यां वीशे जिन पाय । वै भारकागिरि ऊपरें। श्री वीर जिनेश्वर राय ॥ ४ ॥ मांडवगढनो राजियो । नामें देव सुपाश। रिखभ कहै जिन समरतां। पोहोचै मननी आश ॥ ५ ॥

॥ ❁ ॥ दूज तिथीको चैत्य वंदन ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ दुविध धर्म जिणें उपदिश्यो । चोथा अभिनंदन। बीजे ज न्म्या ते प्रभु। भवदुःख निकंदन ॥ १ ॥ दुविध ध्यान तुह्मे परिहरो। आदरो दोयध्यान। एम प्रकाश्युं सुमति जिन। ते चविया बीज दिन । ॥ २ ॥ दोय बंधन राग द्वेष। तेहनें भवि तजियें। मुझ परे शीतल जिन क हे। बीज दिन शिव भजियें ॥ ३ ॥ जीवा जीव पदार्थनुं। करोनाण सुजाण बीज दिनें वासुपूज्य परें। लहो केवल नाण ॥ ४॥ निश्चय नय व्यवहार दोय। एकांत न ग्रहीयें। अर जिन बीज दिनें चवी। एमजिन आगल क हीयें ॥ ५ ॥ वर्त्तमान चोवीशीये। एम जिन कल्याण । बीजदिनें केई पा

मीया। प्रज्ञु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चौवीशीयें । हुआ बहुत कल्याण। जिन उत्तम पद पद्मनें । नमतां होय सुख खाण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ ❁ ॥ ग्यान पंचमीको चैत्य वंदन ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ त्रिगडे बेठा वीरजिन । ज्ञाखे ज्ञविजन आगे । त्रिकरणशुं त्रिहुं लोक जन । निसुणो मन रागें ॥ १ ॥ आराहो ज्ञवि ज्ञावसे । पांचम अजुवाली । ज्ञान आराधन कारणें । येहज तिथ्थि निहाली ॥ २ ॥ ज्ञान विना पशु सारिखा। जाणो इण संसार । ज्ञान आराधनथी लहुं। शिवपद सुखश्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही। काश कुसुम उपमान । लोका लोकप्रकाशकर । ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासो सासमें। करे कर्मनो खेह। पूर्व कोमी वरसां लगे । अज्ञानेंकरे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही । सर्व आराधकज्ञान । ज्ञान तणो महिमा घणो। अंग पांचमे ज्ञगवान ॥ ६ ॥ पंच माश लघु पंचमी । जावजीव उत्कृष्टी । पंच वरश पंच माशनी । पंचमी करो शुज्रदृष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए । काउसग्ग लोगस्स केरो । ऊजमणुं करो ज्ञावशुं । टाले ज्ञव फेरो ॥ ८ ॥ इण परें पंचमी आराहीयें ए । आणी ज्ञाव अपार । वरदत्त गुण मंजरी परें। रंग विजय लहोसार ॥ ९ ॥ इति चैत्य वंदनं ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ अष्टमीको चैत्य वंदन ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ महा शुदि आठमनें दीने । विजया सुत जायो । तेम फागुण शुदि आठमें । संज्ञव चव आयो ॥ १ ॥ चइतर वदनी आठमें । जनम्या रुषज्ञ जिणंद। दिक्षा पण ए दिन लही। हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥ माधवशुदि आठम दिनें । आठ कर्म कस्या दूर । अज्ञिनंदन चोथा प्रज्ञु। पाम्या सुख ज्ञरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम ऊजली । जनम्या सुमति जिणंद । आठजाति कलशें करी । न्हवरावे सुर इंद्र ॥ ४ ॥ जनम्या जेठवदि आठमें। मुनि सुव्रत स्वामी । नेम आषाढ शुदि आठमें । पंचमी गति पामी ॥ ५ ॥ श्रावण वदनी आठमें। नमि जनम्या जगज्ञाण। तिम श्रावण शुदि आठमें । पासजीनो निर्वाण ॥ ६ ॥ ज्ञाद्रवा वदि आठम दिनें चविया स्वामी सुपास। जिन उत्तम पदपद्मनें । सेव्यांथी शिववास ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शाशन नायक वीरजी ! प्रनुकेवल पायो । संघ चतुर्विध थापवा । महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माधव सित एकादशी । सोमल द्विजयज्ञ इंद्रनूति आदें मल्या । एकादश विग्य ॥ २ ॥ एकादशसें चतुगुणा । तेह नों परिवार । वेद अर्थ अवलो करे । मन अनिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संशय हरीए । एकादश गणधार । वीरें थाप्या वंदियें । जिन शासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर मल्लि पाश । वर चरण विलाशी ॥ रुषन अजित सुमति नमी । मल्ली घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रन शिव वास पास । नवनवना तोडी । एकादशी दिन आपणी । रिद्धि सगली जोडी ॥ ६ ॥ दश खेत्रें त्रिहुं कालनां । दैढशें कल्याण । वरस अग्यार एकादशी । आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अगीयार अंग लखावीयें । एकादश पाठा । पूंजणी ठवणी विंटणी । मसी कागल काठा ॥ ८ ॥ अगीयार अव्रत छांफवा ए । वहो पफिमा आगियार । खिमाविजय जिन शासनें । सफल करो अवतार ॥ ९ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सीमंधर जिनवर सुखकर साहेब देव । अरिहंत सकलनी । नाव धरी करूं सेव । सकलागम पारग गणधर नाखित वाणी । जयवंती आणा ज्ञान विमल गुणखाणी ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ए थुई चार वखत पण कहेवायछे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर जिनस्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री सीमंधर देव सुहंकर । मुनि मन पंकज हंसाजी । कुंथुअर जिन अंतर जनम्या तिहुअणयश परशंसा जी । सुव्रत नमि अंतर वरदीक्षा शिक्षा जगत निरासेंजी । उदय पेढाल जिनांतरमां प्रनु जाशे शिव वहु पासें जी ॥ १ ॥ बत्रीश चउसठि चउसठि मलिया इग सय सठि उक्किठा जी ॥ चउ अफ अफ मली मध्यम कालें वीस जिनेश्वर दिठा जी ॥ दो चउ चार जघन्य दशजंबू धायई पुख्खर मफारें जी ॥ पूजो प्रणमो आचारांगें प्रवचन सार उद्धारें जी ॥ २ ॥ सीमंधर वर केवल पामी जिनपद खवण निमित्तेंजी ॥ अर्थनी देशन वस्तु निवेशन देतां सु

णत विनीतेंजी । द्वादश अंग पूरवयुत रचिया गणधर लब्धि विकासिया जी। अपज्जवसिय जिनागम वंदो अक्षर पदना रसिया जी ॥ ३ ॥ आणा रंगी समकित संगी विविध नंग व्रतधारी जी । चउविह संघ तीरथ रखवाली सहु उपद्रव हरनारी जी । पंचांगुली सुरी शासन देवी देती तस जश ऋद्धीजी । श्री शुभवीर कहे शिव साधन कार्य शकलमां सिद्धीजी ॥ ४ ॥ ❋ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ बीजतिथिकी स्तुति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दिन सकल मनोहर बीज दिवस सु विशेष । राय राणा प्रणमें चंद्र तणी ज्यां रेख । तिहां चंद्रविमानें शाश्वत जिनवर जेह । हु बीज तणे दिन प्रणमुं आंणि नेह ॥ १ ॥ अभिनंदन चंदन शीतल शीतल नाथ । अरनाथ सुमति जिन वासुपूज्य शिव साथ । इत्यादिक जिनवर जन्म ज्ञान निरवाण । हुं बीज तणें दिन प्रणमूं ते सुविहाण ॥ २ ॥ परकास्यो बीजें दुविध धर्म भगवंत । जेम विमला कमला विउल नयन विकसंत । आगम अति अनुपम जिहां निश्चय व्यवहार । बीजें सवि कीजें पातिकनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी कमल सुकोमल चीर । चक्केसरि केसरी सरस सुगंध शरीर । कर जोडी बीजें हुं प्रणमुं तस पाय । इम लब्धिविजय कहे पूरो मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति

॥ ❋ ॥ अथ पंचमीनी स्तुति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्रावण शुदि दिन पंचमी ए। जनम्या नेम जिणंद तो । श्याम वरण तन शोभतो ए। मुख शारदको चंद तो । सहस वरस प्रभु आउखो ए । ब्रह्मचारी भगवंत तो । अष्ट करम हेलें हणीए । पोहोता मुक्ति मझार तो। वासुपूज्य चंपापुरि ए । नेम मुक्ति गिरनार तो । पावापुरी नगरीमां वली ए। श्री वीरतणुं निर्वाण तो । समेत सिखर वीश सिद्ध हुआ ए। शिर वहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमिनाथ ज्ञानी हुवा ए। भाख्यो सार वचन्न तो ॥ जीवदया गुण वेलडी ए। कीजे तास जतन्न तो । मृषा न बोलो मानवी ए । चोरी चित्त निवार तो। अनन्त तीर्थंकर इम कहे ए । परहरियें परनार तो ॥३॥ गोमेद नामें जक्ष भलो ए। देवीश्री अंबिका नाम तो। शा

सन सानिध्य जे करे ए । करै वलि धरमनां काम तो । तपगछ नायक गुण नि लो ए । श्री विजय सेन सूरिराय तो । रिखन दास पाय सेवतां ए । सफ ल करै अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ अथ अष्टमीनी स्तुति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ मंगल आठ करी जस आगल नाव धरी सुरराजाजी । आ ठ जातिना कलश करीने न्हवरावें जिनराजाजी । वीर जिनेश्वर जन्म महोत्सव करतां शिव सुख साधेजी । आठमनुं तप करतां अम घर मंग ल कमला वाधैजी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी गजगंजन । अष्टापदपरे व लीयाजी । आठमें आठ सरूप विचारी । मद आठे तस गलियाजी । अ ष्टमी गतिपरें पहोता जिनवर फरस आठ नहिं अंगजी । आठमनूं तप करतां अम घर नित्य नित्य वाधे रंगजी ॥ २ ॥ प्रातीहारज आठ वि राजे । समवसरण जिन राजेजी ॥ आठमे आठ शो आगम नाखी । नवि मन संशय नांजेजी । आठे जे प्रवचननी माता पाले निरतीचारोजी । आठमनें दिन अष्ट प्रकारें जीवदया चित्त धारोजी ॥ ३ ॥ अष्ट प्रकारी पूजा करीनें मानव नव फल लीजेंजी । सिघाइ देवी जिनवर सेवी अ ष्टमहासिद्धि दीजेंजी । आठमनुं तप करतां लीजें निर्मल केवल ज्ञान जी । धीर विमल कवि सेवक नय कहे तपथी कोडकल्याणजी ॥ ४ ॥

॥ ❋ ॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ एकादशी अति रूअडी । गोविंद पूछे नेम । कोण कारण ए प र्व मोहोटुं । कहो मुजशुं तेम । जिनवर कल्याणक अति घणां । एकशो ने पंचाश । तेणें कारण ए पर्व मोहोटुं । करो मौन उपवास ॥ १ ॥ अ गिआर श्रावक तणीप्रतिमा । कहे ते जिनवर देव । एकादशी एम अधिक सेवो । वन गजा जिमरेव । चोवीश जिनवर सयल सुखकर जैसा सुरतरु चं ग । जेम गंगनिर्मल नीरजेहवुं करो जिनसुं रंग । अगीआर अंग लखावियें । अगीयार पाठासार । अगीआर कवली विंटणां ठवणी पूंजणी सार । चाबखी चंगी विविध रंगी शास्त्रतणें अनुसार । एकादशी एम उजमो । जेम पामियें न वपार ॥ २ ॥ वर कमलनयणी कमलवयणी कमल सुकोमल काय । भुजडंम

चंरू अखंम जेहनें समरतां सुख थाय । एकादशी एम मन वशी गणि हर्ष पंम्ति शीश । शासन देवी विघन निवारो संघ तणां निश दीश ॥ ४ ॥

॥ ❋ ॥ अथ स्नातस्याचवदशनी स्तुति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ स्नातस्या प्रतिमस्य मेरुशिखरे । शच्या विभोः शैशवे । रूपालोकन विस्मया हत रस भ्रांत्या भ्रमचक्षुषा । उन्मृष्टं नयन प्रभा धवलितं क्षीरोदकाशंकया । वक्रं यस्य पुनः पुनः सजयति श्रीवर्द्धमानो जिनः ॥ ॥ १ ॥ हंसां साहत पद्मरेणु कपिश क्षीरार्णवां भो भृतैः । कुंभै रप्सरसां पयोधर भर प्रस्पर्धिभिः कांचनैः । येषां मंदर रत्नशैल शिखरे जन्माभिषेकः कृतः । सर्वै सर्व सुरा सुरेश्वर गणै स्तेषां नतोहं क्रमान् ॥ २ ॥ अर्हद्वक्र प्रसूतं गणधर रचितं द्वादशांगं विशालं । चित्रं बह्वर्थ युक्तं मुनिगण वृषभैर्धारितं बुद्धिमद्भिः । मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रत चरण फलं ज्ञेय भाव प्रदीपं । भक्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुत मह मखिलं सर्व लोकैक सारं ॥ ३ ॥ निष्पंक व्योमनील द्युतिमल सदृशं बालचंद्राभ दंष्ट्रं । मत्तं घंटारवेण प्रसृत मदजलं पूरयंतं समंतात् । आरूढो दिव्य नागं विचरति गगने कामदः कामरूपी । यक्षः सर्वानुभूति र्दिशतु मम सदा सर्व कार्येषु सिद्धिं ॥ ४ ॥ इति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्री शत्रुंजय गिरि तीरथ सार । गिरिवर मांहे जेम मेरु उदार । ठाकुरराम अपार । मंत्र मांहिं नवकारज जाणुं । तारा मांहे जेम चंद्र वखाणुं । जलधर मांहे जल जाणुं । पंखी मांहे जेम उत्तम हंस । कुल मांहें जिम रुषभनो वंश । नाभि तणो जे अंश । क्षमावंत मांहे जेम अरिहंता । तपशूरा मुनिवर महंता । शत्रुंजय गिरि गुणवंता ॥ १ ॥ रुषभ अजित संभव अभिनंदा । सुमतिनाथ मुख पूनम चंदा । पद्म प्रभ सुख कंदा । श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रभ सुविधी । शीतल श्रेयांस सेवो बहु बुधी । वासुपूज्य मति सुधी विमल अनंत जिन धर्म ए शांती । कंथु अर मल्लि नमुं एकांती । मुनिसुव्रत शुद्ध पंथी । नमी पासने वीर चोवीश । नेम विना ए जिन त्रेवीश । सिद्ध गिरि आव्या ईश ॥ २ ॥ भरतराय जिन सायें बोले । स्वामी शत्रुंजय गिर कुण तोले । जिननुं वचन अमोले । रुषभ कहे सुणो भरतराय । छहरी पा

लंता जे नरजाय। पातिक चूको थाय । पशु पंखी जेइण गिरि आवे । नव त्रीजे ते सिद्धज थावे। अजरामर पद पावे। जिनमतमें शेत्रुंजो वखाण्यो। ते में आगम दिलमांहे आण्यो । सुणतां सुख नरआण्यो ॥ २ ॥ संघ पति नरत नरेसर आवे। सोवन तणां प्रासाद करावे । मणिमय मूरति ठावे। नाजिराया मरुदेवी माता। ब्राह्मी सुंदरी वहेन विख्याता । मूर्त्ति नवाणुं भ्राता गोमुखनें चक्केसरी देवी। शेत्रुंजय सार करे नित्य मेवी । तपगछ ऊपर हेवी श्रीविजय सेन सूरीश्वर राया। श्री विजयदेवसूरी प्रणमी पाया। रुषन्न दास गुणगाया ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ सीमंधर जिन स्तुति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ महाविदेहखेत्रें सीमंधर स्वामी सोनाना सिंहासणजी । रूपानां कोशीशा विराजे रत्नना दीवा दीपेजी । कुंकुमवर्णी गहुंली विराजे मोतीना अक्षत सारजी । त्यां बेठा सीमंधर स्वामी बोले मधुरी वाणीजी ॥ १ ॥ केशर चंदन नरीरे कचोली । कस्तूरी वरासजी । पहलीरे पूजा अमारीरे होजो ऊगम ते परन्नातजी ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ सामायक लेवा विधि ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रथम ऊंचे आसनें पुस्तक प्रमुख मुंकीनें। श्रावक, श्राविका, कटासणुं । मुहपत्ती, चरवलो लई । शुद्ध वस्त्रपहरी । जग्या पुंजी। कटासण ऊपर वेशी, मुहपत्ती मावा हाथमां मुख पासें राखी । जमणो हाथ थापना जी सन्मुख राखी। एक नवकार गणी (पंचिंदिअ) कही । इच्छामि खमासमण देई। इरिया वहिया। तस्सउत्तरी । अन्नत्थ ऊससिएणं। कहे। एक लोगस्सनो (अथवा) चार नवकारनो काउसग्ग करे (पारी) प्रगट लोगस्स कहे । खमासमण देई। इच्छाकारेण संदिसह नगवन् सामायक मुहपत्ती पमिलेहुं ॥ इच्छं ॥ इमकही ।मुहपत्ती,तथा,अंगनी पमिलेहणना पंचाश बोल कही । मुहपत्ती पमिलेहीऐं। पछी खमासमण देई । इच्छाकारेण संदिसह नगवन् सामायक संदिसाउं ॥ इच्छं ॥ वली खमासमण देई । इच्छा० ॥ सामायक ठाउं ॥ इच्छं ॥ एम कही। बे हाथ जोमी । एक नवकार गणी । इच्छकार नगवन् पसाय करी सामायक दंमक उच्चरावोजी। पछी गुरु प्रमुख वमेरा करेमि

भंते कहे । पछी खमासमण देई । इच्छा० बेसणो संदिस्साउं ॥ खमा० इच्छा ० ॥ बेसणो ठाउं ॥ खमा ० इच्छा ० ॥ सिझाय संदिस्साउं ॥ खमा ० इच्छा ० ॥ सझाय करुं । इच्छं । एम कही । त्रण नवकार गणवा । पछी बे घमी सझाय धर्म ध्यान करवुं । इति सामायक लेवानी विधि ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ सामायिक पारवा विधि ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ खमासमण देई । इरिया वही पमिक्कमाथी (यावत्) लोगस्स सूधी कही ॥ खमा ० ॥ इच्छा ० ॥ मुहपत्ती पमिलेहुं (एम कही) मुहपत्ती पमिले ही । खमासमण देई ॥ इच्छा ० ॥ सामायिक पारुं । यथाशक्ती । वली खमास मण देई ॥ इच्छा ० ॥ सामायिक पारयुं तहत्ती कही । पछी जमणो हाथ चरवला ऊपर अथवा कटासणा ऊपर थापी । एक नवकार गणी (सामाइय वयजुत्तो ०) कहिए ॥ पछी जमणो हाथ थापना सामो सवलो राखीने एक नवकार गणीअें ॥ इति सामायिक पारवानो विधि ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दैवशिक प्रतिक्रमण विधि ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रथम सामायिक लीजें । पाणी वावरयुं होय (तो) मुहप त्ती पडि लेहवी । अनें आहार वावरयो होय (तो) वांदणां देवा । तिहा बी जा वांदणांमां (आवसीआए) ए पाठन कहेवो । पछी यथा शक्ति पच्चख्खा ण करवुं । पछी खमासमण देई । इच्छा० कही । वमेरायें (अथवा) पोतें । चैत्यवंदन कहेवुं । पछी जंकिंचि० । नमोथ्थुणं० कही । ऊभाथईने । अरिहंतचे इयाणं कही । एक नवकारनो काऊस्सग्ग करी । नमोऽर्हत्० । कहीनें । प्रथम थुई कहेवी ॥ पछी । लोगस्स०सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं कही । एक नवकार नो काउसग्ग पारीनें । बीजी थुई कहेवी ॥ पछी पुख्खरवरदी० कही । सु अस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं । वंदण० । कही । एक नवकारनो काउ स्सग्ग पारी । त्रीजी थुई कहेवी । पछी सिद्धाणं बुद्धाणं कही । वेयावच्च ग राणं० करेमि काऊस्सग्गं । अन्नत्थू० । कही । एक नवकारनो काऊसग्ग पारी । नमोऽर्हत्० । कही । चोथी थुई कहेवी ॥ पछी बेशीनें नमोथ्थुणं कहेवुं (पछी) चार खमासमण देवापूर्वक । भगवानः आचार्यः उपाध्यायः सर्व सा धुभ्यः । प्रतें थोभ वंदन करीयें । पछी इच्छाकारेण० ॥ (दैवसिक प्रतिक्रमण.

गाउं) एम कही । जमणो हाथ, चवला अथवा कटासणा ऊपर थापीने । इच्छं सवस्सवि देवसिअ० ॥ कहेवुं ॥ पछी ऊजा थई । करेमि भंते । इच्छामिठामि काउसग्गं । जोमे देवसिओ० ॥ तस्स उत्तरी० कहीनें ॥ अतीचारनी आठ गाथानो काउसग्ग करवो । आठ गाथा न आवडे तो आठ नवकारनो का उसग्ग करवो ॥ ते काउस्सग पारीनें लोगस्स कहवो । पछी बेसीनें । त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ती पडिलेहीनें । वांदणा बे देवां ॥ पछी ऊजा थईनें । इच्छा कारे० ॥ देवसिअं आलोउं ॥ इच्छं आलोएमि जोमे देवसिओ० ॥ कहीने सात लाख कहेवा । पछी अढार पापस्थानक आलोइनें । सवस्सवि देवसि अ । कहीने बेसवुं । बेसीनें एक नवकार गणी । करेमिभंते । इच्छामि पडि क्कमिउं कहीने ॥ वंदित्तु कहेवुं ॥ पछी वांदणां बे देवा । पछी । अब्भुठिओहं । अभ्भितर देवसिअं खामीनें । वांदणां बे देवा । पछी ऊजा थई आयरिय उ वज्झाए, कहीने । करेमि भंते० ॥ इच्छामि ठामि० जोमे देवसिओ० ॥ तस्स उत्तरी० ॥ कही । बे लोगस्स, अथवा, आठ नवकारनो काउसग्ग करवो । ते पारीनें लोगस्स कही । सबलोए अरिहंत चेइयाणं । वंदण०कही । एक लोग स्स (अथवा) चार नवकारनो काउसग्ग पारीनें । पुख्खरवरदी० ॥ सुअस्स भगवओ करेमि० ॥ वंदण० करीनें । एक लोगस्स (अथवा) चार नवका रनो काउसग्ग करवो । ते पारीनें । सिध्धाणं बुध्धाणं० कही । सुअ देवया ए करेमि काउसग्गं । अन्नत्थू० कही । एक नवकारनो काउसग्ग करवो । ते पारी । नमोऽर्हत० कही । (पुरुषें) सुय देवयानी पहेली थुई कहेवी (अने) स्त्रीयें, कमल दलनी पहेली थुई कहेवी । पछी खेत्र देवयाए करेमि काउसग्गं० ॥ एक नवकारनो काउसग्ग पारी । नमोऽर्हत० कही । क्षेत्र देवतानी बीजी थुई । स्त्रीयें (तथा) पुरुषें बन्नेनें कहेवी । पछी एक नवकार प्रगट गुणी (बेसीने) छठा आवश्यकनी मुह पत्ती पडिलेहीने । बे वांदणां दीजे (पछी) सामायक, चउवीसथ्थो, वंदनक, प डिक्कमणुं, काउसग्ग, अनें पचख्खाण, करुंछुंजी । एम ए छ आवश्यक संभा रवा । पछी इच्छामो अणुसर्द्धि । नमो खमासमणाणं० । कही । नमोऽर्हत० कहीनें पुरुष । नमोस्तु वर्द्धमानाय । कहे । अनें स्त्रीयां संसार दावानी थुई त्रण

कहे। पछी नमोथ्थुणं कही स्तवन कहेवुं (पछी) वरकनक कही जगवान् आदे वांदवा। पछी जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी। अढाइज्जेसु कहेवुं। पछी देवसिअ पायछित्तनो काउसग्ग चार लोगस्स (अथवा) शोल नवकारनो करवो। ते काउसग्ग पारी। प्रगट लोगस्स कही। बेसीने। खमासमण देइ। इच्छा०। सिझाय संदिसाउं। बिजुं खमासमण देई। इच्छा० सिझाय जणुं। एम सिझायनो आदेश मागी। एक नवकार गणी। सिझाय कहवी। पछी एक नवकार गणी। खमासमण देई दुःखखय्खओ कम्मखओ नो काउसग्ग। चार लोगस्सनो संपूर्ण (अथवा) शोल नवकारनो करवो। ते एक वडेरे (अथवा) पोतें पारीने। नमों ऽर्हत कही। लघुशांति कहीनें। प्रगट लोगस्स कहे (पछी) इरिया वही०॥ तस्स उत्तरी०॥ कही॥ एक लोगस्स (अथवा) चार नवकाररो काउसग्ग करी। प्रगट लोगस्स कहेवो। पछी चउक्कसाय०॥ नमुथ्थुणं० कही॥ जावंति, बे। कहीने। उवसग्ग हरं०॥ जयवीयराय० कही। मुहपत्ती पडिलेहवी। पछी इच्छामि०॥ इच्छा० सामायिक पारुं यथाशक्ति। इच्छामि०। इच्छा का०॥ सामायिक पार्युं; तहत्ति कही पछी जमणो हाथ उपधी ऊपर स्थापी। एक नवकार गणीने सामाइअ वयजुत्तो कहेवुं। पछी थापेलि स्थापना होय तो एक नवकार गणी उठे। एवं प्रतिक्रमण विधि कह्यो। बाकी अंतरविधि मोहोटाथी समजवो। इति देवसी प्रतिक्रमण विधि॥ ❀॥

॥ ❀ ॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम पूर्वली रीतें सामायिक लेवूं। पछी। इच्छा०। इच्छा०। कही कुसुमिण दुसमिणनो काउसग्ग चार लोग्गस्सनो (अथवा) शोल नवकारनो करी। पारी। प्रगट लोगस्स कहेवो। पछी खमासमण देई। जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन- जय वीयराय सुधी कहेवुं। पछी चार खमासण पूर्वक। जगवान्। आचार्य। उपाध्याय। अनें सर्व साधु। प्रत्येकें वांदवा। पछी खमासमण बे देइ। सझायनो आदेश मांगी। एक नवकार गणीनें। जरहे सरनी सझाय कहीने (फरी) एक नवकार गणवो। पछी इच्छकार सुहराईनो पाठ कहेवो। पछी इच्छाका०। राई प्रतिक्रमण ठाऊं। क

हीने। जमणो हाथ उपधी ऊपर थापीने। पछी। इछं सव्वस्सवि राइय दु चिंतिय० ॥ कही। नमोथ्थुणं (तथा) करेमि भंते कही। इछामि ठामि काउ सग्गं० ॥ तस्सउत्तरी० कही ॥ एक लोगस्स (अथवा) चार नवकारनो काउस्सग्ग। पारीनें। प्रगट लोगस्स कही। सव्वलोए अरिहंत०। कही। एक लोगस्स (अथवा) चार नवकारनो काउसग्ग करवो। पछी। पुख्खर वरदी० ॥ सुअस्स० ॥ वंदण० ॥ कही। अताचारनी आठ गाथानो (अथवा) न आवडे तो। आठ नवकारनो काउस्सग्ग पारी। सिध्धाणं बुध्धाणं कही नें। त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ती पडिलेही। वांदणां वे देवा। (तिहांथी लेनें) अभ्भुठिओ खामि। वांदणां वे दीजें (तिहां सुधी) देवसीनी रीतें जाणवुं। पण (जे) ठेकाणे देवसिअं आवे (ते) ठेकाणे राइयं कहेवुं। पछी आयरिअ उवझाए० ॥ करेमि भंते० ॥ इछामि ठामि० ॥ तस्स उत्तरी० कही ॥ तपचिंतामणि करतां न आवडे तो। चार लोगस्स (अथवा) शोल नवकारनो काउस्सग्ग करवो। ते पारी प्रगट लोगस्स कही। छठा आवश्यकनी मुहपत्ती पडिलेही। वांदणां बे देवा। (पछी) सकल तीर्थ वंदन करीनें। यथाशक्तियें पच्चख्खाण करवुं। पछी इछाकारेण संदिसह भगवन्। सामायिक, चउवीसत्थो, वंदन, पडिक्कमण, काउसग्ग, पच्चख्खाण, क र्युं छे जी। एम छ आवश्यक संभारवा। पछी पच्चख्खाण कर्युं होय तो कर्युं छे जी (अने) धार्युं होय तो धार्युं छेजी। एम कहेवुं। पछी इछा मो अणुसठिं० नमो खमासमणाणं० ॥ नमोऽर्हत्०। कहीने। विशाल लोचन० ॥ नमोथ्थुणं० ॥ अरिहंत चेइयाणं० ॥ कही। एक नवकारनो काउसग्ग पारी। नमोऽर्हत् कही। कल्याणकंदं नी प्रथम थोय कहेवी पछी लोगस्स०। पुख्खरवरदी० ॥ सिध्धाणं बुध्धाणं० कही ॥ अनुक्रमें चार थोयो कहीए छीए (तिहां सुधी) सर्व कहेवुं। पछी नमोथ्थुणं० कही। भग वान् आदि चारने। चार खमासमणेंवांदवा। पछी जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी। अढाइज्जेसु कहेवुं। (पछी) सीमंधर स्वामीनुं चैत्यवंदन, स्तवन जयवीय राय० ॥ काउसग्ग, थोय, पर्यंत कहीये। तिहां सुधी करवुं ॥ पछी खमासमण पूर्वक श्रीसिध्धाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय, काउसग्ग० ॥

अने थोय कहीयें ठियें। तिहां सुधी करवुं । पछी सामायक पारवानी विधि नीरीते सामायक पारवुं॥ इति॥ ❀॥ ॥❀॥ ॥❀॥ ॥❀॥

॥❀॥ अथ पक्खि प्रतिक्रमण विधि ❀॥

॥❀॥ प्रथम दैवसिक प्रतिक्रमणमां वंदित्तु कही रहियें (तिहां सुधी) सर्व कहेवूं। पण चैत्यवंदन, सकलार्हततुं, कहेवूं। अनें थोयो, स्नातस्यानी कहेवी। पछी खमासमण देईनें। इच्छाकारेण संदिसह भगवान्। देवसिअं आलोईअं पडिक्कंता। इच्छाकारेण०॥ पक्खि मुहपत्ति पडिलेहुं । एम कही मुहपत्ती पडिलेहिये। पछी वांदणां बे दीजें । पछी इच्छाकारे० संबुद्धा खामणेणं अब्भुठ्ठिओहं अभिंतर। पक्खिअं खामेऊं इच्छं खामेमि पक्खिअं । पन्नरस दिवसाणं। पन्नरस राइआणं। जंकिंचि अपत्तियं० कही। इच्छाकारेण सं० ॥ पक्खिअं आलोएमि इच्छं आलोएमि । जो मे पक्खिओ अईआरोकओ कही। इच्छाकारेण सं०॥ पक्खी अतीचार आलोऊं (एम कही) वृद्धअतीचार कहियें। पछी एवंकारे श्रावकतणे धर्मे श्री समकित मूल बारव्रत। एकशो चोवीश अतीचार मांहें। जे कोई अतीचार। पक्ष दिवस मांहे । सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय तेसवे हुं मने वचने कायायें करी मिछामि दुक्कडं॥ सवस्सवि पक्खिअ दुच्चिंतिअ। दुब्भासिय। दुच्चिठ्ठिअ। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ इच्छकारि भगवन् पसाओ करी पक्खीय तप प्रसाद करोजी। एम उच्चार करी आवी रीतें कहिए॥ चउथ्थेण एक उपवास। बे आंबिल। त्रण नीवि। चार एकासणा। आठ बे आसणा बे हजार सझाय। यथाशक्ति तपकरी प्रवेश कर्यो होय (तो) पइठ्ठी कहीए करवो होय (तो) तहत्ति कहीयें। न करवो होय (तो) अण बोल्या रहीयें। पछी वांदणा (बे) दीजे। पछी इच्छाका० ॥ पत्तेअ खामणेणं अब्भुठ्ठिओहं अभिंतर। पक्खिअं खामेऊं। इच्छं खामेमि पक्खिअं। पन्नरस दिवसाणं। पन्नरस राईयाणं। जंकिंचि अपत्तियं०॥ पछी वांदणा (बे) दीजें। पछी देवसिअं आलोईअं पडिक्कंता। इच्छाका०॥ भगवन्० पक्खिअं पडिक्कमुं । सम्मं पडिक्कमामि॥ इच्छं॥ एम कही। करेमिभंते सामाइयं० कही ॥ इच्छामि पडिक्कमिऊं। जोमे पक्खिओ०कहेवो। पछी खमासमण देई । इच्छाकारेण

संदि० ॥ पक्खिसूत्रपढुं । एम कही । त्रण नवकार गणी । साधु न होय तो त्रण नवकार गणीने । श्रावक वंदित्तु कहे । (पछी) सुअ देवयानी थुई कहेवी पछी हेठा बेसी । जमणो ढींचण ऊंचो राखी । एक नवकार गणी । करेमि भंते० ॥ इच्छामि पडि० कही ॥ वंदित्तु कहेवुं ॥ पछी करेमिभंते० इच्छामि ठामि काउसग्गं । जोमे पक्खिओ० ॥ तस्स उत्तरी० ॥ अन्नथ्थ० ॥ कहीने बार १२ लोगस्सनो काउसग्ग करवो (ते लोगस्स) चंदेसुनिम्मलयरा, सूधी कहेवा ॥ (अथवा) अडतालीश नवकारनो । काउसग्ग करी पारवो ॥ पारीनें । प्रगट लोगस्स कही । मुहपत्ती पडिलेहिनें । वांदणा बे दीजें । पछी इच्छाका० ॥ समाप्ति खामणेणं । अब्भुठिओहं अभिंतर० ॥ पक्खिअं खामेऊ । इच्छं खामेमि पक्खिअं । पन्नरस दिवसाणं । पन्नरस राइयाणं । जिंकिंचि अपत्तियं० कही । पछी खमासमण देईनें । इच्छाका० ॥ कही । पक्खि खामणा खामुं । एम कही खामणा चार खामवां ॥ पछी देवसी प्रतिक्रमणामा वंदित्तु कह्या पछी । बे वांदणां देईनें (तिहांथी) ते सामायक पारीयें । तिहां सर्व सूधी देवसीनी पेठें जाणवुं । पण । सुअ देवयानी थुईनें ठेकाणें, ज्ञानादिनी थोयो कहेवी । स्तवन अजित शांतिनुं कहेवुं । सझायनें ठिकाणें उवसग्गहरं (तथा) संसारदावानी थुई । चार कहेवी ॥ अनें लघुशांतिनें ठेकाणे मोहटी शांति कहेवी ॥ ❁ ॥ इति पक्खी प्रति० ॥

॥ ❁ ॥ अथ चौमासी प्रतिक्रमण विधि ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ ये ऊपर कह्या मुजब पक्खिना विधि प्रमाणे करवुं (पण) एटलुं विशेष । जे बार लोगस्सना काउसग्गने ठेकाणे (वीश) लोगस्सनो काउसग्ग करवो (अनें) पक्खिना आगारनें ठिकाणे । चउमाशीना केहवा । यथा । तपनें ठेकाणे । छठेणं बे उपवास । बार आंबिल । छ निवी । आठ एकाशणा शोल बे आसणा । चार हजार सझाय । ए रीते कहीए ॥ इति ॥

॥ ❁ ॥ अथ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ एपणऊपर लख्या मुजब । पक्खिना विधि प्रमाणे करवुं (पण) बार लोगस्सना काउसग्गने ठेकाणे । चालीश लोगस्स (अथवा) एकशोनें शाठ नवकारनो काउसग्ग करवो (अने) तपनें ठेकाणे । अठम भत्तं

(एटले) त्रण उपवास छ आंबिल । नवनीवि । बार एकासणां । चौवीस बेआसणां अने छ हजार सझाय (ए रीते कहेवुं) अने पख्खिना आगारने ठेकाणें संवतसरीना आगार कहेवा ॥ इति पंच प्रतिक्रमण विधिः संपूर्णः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पडिलेहण करवानो विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवकार पंचिंदिअ कही । इरीयावही पडिक्कमवी । थापना होय तो नवकार पंचिंदिअ न कहेवुं । पछी तस्सउत्तरी कही । एक लोगस्स (अथवा) चार नवकारनो काउसग्ग करी ! प्रगट लोगस्स कही । ऊभे पगें बेसी मुहपत्ति. चरवलो, कटासणुं, उत्तरासण, धोतीउं, कंदोरो, आदिनो पडिलेहण करवूं । पछी काजो काढी । जीव कलेवर सचित्त आदि जोवुं । पछी काजो कहाडनार थापनाजी सन्मुख ऊभो रही । इरिया वही पडिक्कमें । पछी । काजो परठववा जग्या शोधी । त्रणवार अणुजाणह जस्सगो कही । काजो परठवे । पछी त्रण वार, वोसिरे, कहे ॥ इति पडिलेहण करवानो विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पच्चख्खाण पारवानो विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम इरियावहियाए पडिक्कमीयें (पछी) जगचिंतामणिनुं चइत्यवंदन । जयवीयराय सुधी करवुं (पछी) मन्हजिणाणंनी सझाय कही मुहपत्ती पडिलेही । इछामि ० ॥ इछाका ० ॥ पच्चख्खाण पारूं । यथाशक्ति इछामि ० ॥ इछाका० ॥ पच्चख्खाण पारयुं । तहत्ति । एम कही । जमणो हाथ, कटासणां (अथवा) चरवला ऊपर थापी एक नवकार गणी । पच्चख्खाण करयुं होय ते कहेवुं । ते लखीयें छीयें ॥ उग्गएसूरे नमुक्कार सहिअं । पोरिसिं साढपोरसिं । गंठिसहियं मुंठिसहिअं पचख्खाण करयुं चउविहार । आंबिल, नींवि, एकासणुं, बे आसणुं, करयुं तीविहार । पचख्खाण फासिअं । पालिअं । सोहिअं । तीरिअं । किट्टिअं । आराहिअं । जंच न आराहिअं । तस्स मिछामि दुक्कडं । एमकही । एक नवकार गणवो ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीमहावीरजिन छंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सेवो वीरनें चित्तमां नित्यधारो । अरिक्रोधनें मन्नथी दूरवारो । संतोष वृत्ती धरो चित्तमांहिं । राग द्वेषथी दूर थाओ उछाहिं ॥ १ ॥ पड्या मोहना पासमां जेह प्राणी । शुद्ध तत्त्वनी वात तेणें न जाणी । मनु जन्म

पामी वृथा कां गमोछो। जैन मार्ग छंमी तुलाकां जमोछो ॥ २ ॥ अलो भी अमानी नीरागी तजोछो। सलोभी समानी सरागी भजोछो। हरी ह रादि अन्यथी शुं रमोछो। नदी गंग मूकी गलीमा पडोछो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथें असि चक्र धारा। केइ देव घाले गले रुंम माला। केइ देव उत्संगें राखे छे वामा। केइ देव साथें रमें वृंद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे ले ई जपमाला। केइ मांसभक्षी महाविक्कराला। केइ योगिणी भोगिणी भोग रागें। केइ रुद्रणी छागनो होम मांगे ॥ ५ ॥ इसा देव देवी तणी आश राखे। तदा मुक्तिनां सुःखने केम चाखे। जदा लोभना थोकनो पार ना व्यो। यदा मधनो बिंदुओ मन्नभाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवलां आपणी आ श राखे। तेह पिंम्नें मन्नशुं लेअ चाखे। दीन हीननी भीरु ते केम भाजे। फुटो ढोल होये कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ भ्राता भजो मोक्ष दाता। अलोभी प्रभूने भजो विश्वख्याता। रत्न चिंता म णि सारिखो एह साचो। कलंकी काचना पिंडशुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंद बुधी जेह प्राणी कहेछे। सवि धर्म एकत्व भूलो भमेछे। कीहां सर्षवाने कीहां मेरु धीरं। कीहां कायरानें कीहां शूरवीरं ॥ ९ ॥ कीहां स्वर्णथालं कीहां कुंभखंमं। कीहां कोद्रवानें कीहां खीरमंडं। कीहां खीरसिंधु कीहां क्षारनीरं। कीहां कामधेनु कीहां छागखीरं ॥ १० ॥ कीहां सत्यवाचा की हां कूडवाणी। कीहां रंकनारी कीहां रायराणी। कीहां नारकीनें कीहां देव भोगी। कीहां इंद्र देही कीहां कुष्ट रोगी ॥ ११ कीहां कर्म घाती कीहां कर्म धारी। नमो वीर स्वामी भजोअन्य वारी। जिसी सेजमां स्व प्रथी राज्यपामी। राचे मंदबुध्धि हारि जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अथिर सुःख सं सारमां मन्न माचे। जना मूढमा श्रेष्टशुं इष्ट वाजे। तजो मोह माया ह रो दंभरोशी। सजो पुण्य पोशी भजो ते अरोशी ॥ १३ ॥ गति चार सं सार अपार पामी। आव्या आश धारी प्रभू पाय स्वामी। तुहीं तुहीं तु हीं प्रभु धर्म रागी। भव फेरनी शृंखला मोह भागी ॥ १४ ॥ मानीये वीर जी अर्जछे एक मोरी। दीजे दासकुं सेवना चरण तोरी। पुण्य उदय हुओ गुरु आज मेरो। विवेकें लह्यो में प्रभु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥ ॥श्री॥

॥ ❀ ॥ अथ नवकारनो छंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ वंछित पूरे विविध परें। श्री जिन शासन सार। निश्चें थीनवकार नित। जपतां जय जयकार ॥ १ ॥ अम्सठ अक्षर अधिक फल। नव पद नवे निधान। वीतराग श्रीमुख वदे। पंच परमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त। समर्यां संपति थाय। संचित सागर सातनां। पातक दूर पुलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र शिर मुकुट मणि। सद्गुरु जाषित सार। सो जवियां मन शुद्धशुं। नित जपीयें नवकार ॥४॥ (छंद हाटकी) नवकार थकी श्रीपाल नरेशर पाम्यो राज्य प्रसिद्ध। समशान विषे शिव नाम कुमरनें सोवन पुरिसो सिद्ध। नवलाख जपंता नरक निवारे पामें जवनो पार। सो जवियां जत्तें चोखें चित्तें नित जपीयें नवकार ॥ ५ ॥ बांधी वम्शाखा छीकें वेसी हेठल कुंम हुताश। तस्करनें मंत्र समप्यों श्रावकें उड्यो ते आकाश। विधिरीतें जप्यां विषधर विष टाले ढाले अमृत धार ॥ सो० ॥ ६ ॥ बीजोरा कारण राय महाबल व्यंतर दुष्ट विरोध। जेणें नवकारें हत्या टाली पाम्यो यक्ष प्रतिबोध। नवलाख जपंतां थाये जिनवर इस्योछे अधिकार ॥ सो० ॥ ७ ॥ पल्लीपति शीख्यो मुनिवर पासें महा मंत्र मन शुद्ध। परजव ते राजसिंह पृथिवीपति पाम्यो परिगल रिद्ध। ए मंत्रथकी अमरापुर पोहतो चारुदत्त सुविचार॥ सो० ॥ ॥ ८ ॥ संन्यासी काशी तप साधंतो पंचाग्नि परजाले। दीठो श्रीपास कुमारें पन्नग अधबलतो ते टाले। संजलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख इंद्र जुवन अवतार ॥ सो० ॥ ॥ ९ ॥ मनुशुद्धं जपतां मयणासुंदरी पामी प्रिय संयोग। इण ध्यानें कुष्ट टल्युं उंबरनुं रगत पित्तनो रोग। निश्चेंशुं जपतां नवनिध थाये धर्म तणो आधार ॥ सो० ॥ १० ॥ घटमांहि कृष्ण जुजंगम घाल्यो। घरणी करवा घात। परमेष्टि प्रजावें हार फूलनो वसुधा मांहि विख्यात ॥ कमलावतीये पिंगल कीधो पाप तणो परिहार ॥ सो० ॥ ११ ॥ गयणांगण जाती राखी गिहिणी पामी बाण प्रहार। पद पंच सुणंतां पांडुपति घर ते थइ कुंतानार। ए मंत्र अमूलक महिमा मंदिर जवदुःख जंजणहार ॥ सो० ॥ १२ ॥ कंबल संबलें कादव काढ्यां शकट

पांचशें माल । दीधे नवकारें गया देवलोकें विलसे अमर विमान । ए मं त्रथकी संपति वसुधामां लही विलसे जैन विहार ॥ सो० ॥ १३ ॥ आगें चोवीशी हुई अनंती । होशे वार अनंत । नवकार तणी कोइ आद न जाणे एम भाखे अरिहंत ॥ पूरव दिशि चारे आदि प्रपंचें समरयांसंप तिसार ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्टी सुरपद ते पण पामे जे कृत कर्म क गेर ॥ पुंमरगिरिऊपर प्रत्यक्ष पेख्यो मणिधरनें एकमोर । सह गुरु सन्मुख विधियें समरतां सफल जनम संसार ॥ सो० ॥ १५ ॥ सूलीकारोपण तस्कर कीधो लोहखरो परसिद्ध । तिहांसेठें नवकार सुणाव्यो पाम्यो अमरनी रुद्ध । शेठनें घर आवी विघ्न निवारयो सुरें करी मनोहार ॥ सो० ॥ १६ ॥ पंचपरमेष्टि ज्ञानज पंचह पंच दान चारित्र ॥ पंच सिझाय महा व्रत पंच हु पंच सुमति समकित्त । पंच प्रमाद विषय तजो पंचह पालो पंचाचार ॥ ॥ सो० ॥ ॥ १७ ॥ कलश (छप्पय) नित जपीयें नवकार सार संपति सुखदाय क । सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो एम जंपेश्री जगनायक । श्री अरिहंत सुसिद्ध शुद्ध आचार्य भणीजें । श्री उवझाय सुसाधु पंच परमेष्टि थुणीजें । नव कार सार संसारछे । कुशल लाभवाचक कहे । एक चित्तें आराधतां विधि रुद्धि वंछित लहे ॥ १८ ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः नवकार छंद ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सुख कारण भवियण समरुं श्रीनवकार । जिन शासन आगम चउदे पूरवसार । इण मंत्रनी महिमा कहितां नलहुं पार । सुरतरु जिम चिंतित वंछित फल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव सेव करें करजोम । भुइ मंमल विचरे तारे भवियण कोम । सुरछंदें विलसें अतिसय जास अनंत । पहिले पद नमियें अरि गंजन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पनरें भेदें सिद्ध थया भगवंत । पंचमि गति पुहता अष्ट करम करिहंत । कल अकल सरूपी पंचा नंतक जेह । जिनवर पाय प्रणमुं बीजेपद वलि एह ॥ ३ ॥ गछ भार धुरंधर सुंदर ससिहर सोम । करि सारण वारण गुणछत्तीसे थोम । श्रुत जाण शिरोमणि सागर जेम गंभीर । तीजे पद नमियें आचारज गुण धीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सूत्र भणावेसार । तप विध संयोगे भाखे अरथ

विचार। मुनिवर गुण युत्ता ते कहियै ऊवजाय । चोथै पद नमियै अह निश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पंचाश्रव टालै पालै पंचाचार । तपशी गुण धारी वारी विषय विकार। तस थावर पीहर लोक मांहे जे साध । त्रिविधै ते प्रणमुं परमारथ गुण लाध ॥ ६ ॥ अरि करि हरि सायण मायण नूत वेत्ताल। सवि पापपणासै थास्ये मंगल माल। इण समरयां संकट दूरटलै तत्काल । जंपे जिण गुण इम सुरवर सीस रसाल ॥ ७ ॥ इति नवकार स्त०

॥ ❁ ॥ अथ श्रीनवकार मंत्र आत्म रक्षा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ ॐ परमेष्टी नमस्कारं। सारं नव पदात्मकं। आत्मरक्षा करं वज्र पंजराभं स्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं । शिरस्कं शिर सिस्थितं । ॐ नमो सव्व सिद्धाणं। मुखे मुख पटंबरं ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरियाणं। अंगरख्या तिशायिनी। ॐ नमो ऊवझायाणं । आयुधं हस्तयो दृढं। ॐनमोलोए सव्वसाहूणं। मोचके पादयो शुभे । एसो पंच नमुंक्कारो। शिला वज्रमईतले । सव्व पावप्पणासणो । वप्रो वज्र मयोवही । मंगलाणंच सव्वेसिं । खादि रंगार घातका । स्वाहां तंच पदं ग्येयं । पढमं हवइ मंगलं। वप्रो परि वज्रमयं। पिधानं देहरक्षणे। महाप्रभावा रक्षेयं। क्षुद्रो पद्रव नाशनी परमेष्टी पदोद्भूता । कथिता पूर्व सूरिभिः। यश्चैवं कुरुते रक्षां। परमेष्टी पदे सदा । तस्यनस्या द्भयं व्याधी । राधिश्चापि कदाचनः ॥ इति आत्मरक्षाः

॥ ❁ ॥ अथ श्री शंखेश्वर पार्श्वजिन छंद ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ सेवो पाश संखेसरो मन शुद्धे । नमो नाथ निश्चे करी एक बुद्धे । देवी देवतां अन्यनें शुं नमो छो । अहो भव्यलोको भुला कां भमो छो ॥ १ ॥ त्रैलोक्नना नाथने शुं तजो छो । पड्या पाशमां भूतने कां भजो छो । सुरधेनु छंमी अजा शुं अजो छो । महापंथ मूंकी कुपंथे व्रजो छो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काचमाटे । ग्रहे कोण रासभने हस्ति साटे । सुरद्रुम उपार कुण आक वावे । महा मूढ ते आकुला अंत पावे ॥ ३ ॥ किहां कांकरो ने किहां मेरुशृंगं । किहां केशरीने किहां ते कुरंगं किहां विश्वनाथं किहां अन्य देवा । करो एकचित्तें प्रभु पाश सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रभावती प्राणनाथं । सहू जीवने जे करे छे सनाथं । महा तत्व

जाणी सदा जेह ध्यावे । तेहनां दुःख दारिद्र दूरें गमावे ॥ ५ ॥ पामी मानुषोने वृथा कां गमो छो । कुशीलें करी देहनें कां दमो छो । नहीं मुक्तिवासं विना वीतरागं । भजो भगवंतं तजो दृष्टिरागं ॥ ६ ॥ उदयरत्न भाखे सदा हेत आणी । दयाभाव कीजें मोहे दास जाणी । मोरे आज मोतीयडे मेह वूठा । प्रभु पाश शंखेश्वरो आपतूठा ॥ ७ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्रीगौतमाष्टक छंद ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ वीर जिणेसर केरो शीश । गौतम नाम जपो निशदीश । जो कीजें गौतमनुं ध्यान । तो घर विलशै नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामें गिरिवर चढे । मनवंछित लीला संपजे । गौतम नामें नावे रोग । गौतम नामें सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंकडा । तस नामें नावे ढूकडा । भूत प्रेत नविमंडे प्राण । ते गौतमनां करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामें निर्मल काय । गौतम नामें वाधे आय । गौतम जिनशासन शणगार । गौतम नामें जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा घ्रत गोल । मनवंछित कापड तंबोल । घरेसुघरणी निर्मल चित्त । गौतम नामें पुत्र विनीत्त ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल भाण । गौतम नाम जपो जग जाण । मोहोटा मंदिर मेरुसमान । गौतम नामें सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोडानी जोड वारू विलशै वंछित कोड । महीयल मानें मोहोटा राय । जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले । उत्तम नरनी संगत मले । गौतम नामें निर्मल ज्ञान । गौतम नामें वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहु । गुरु गौतमना गुण छे वहु । कहे लावण्य समय कर जोड । गौतम तूठे संपति कोड ॥ ९ ॥ इति ॥ १०९ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्री शोल सतीनो छंद ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ आदि नाथ आदें जिनवर वंदी । सफल मनोरथ कीजियें ए । प्रभातें उठी मंगलीक कामें । सोल सतीनां नाम लीजियें ए ॥ १ ॥ बाल कुमारी जग हितकारी । ब्राह्मी भरतनी वेहेनडी ए । घट घट व्यापक अक्षर रूपें । शोल सतीमांहि जे वडी ए ॥ २ ॥ बाहुबल भगिनी सतीय शिरोमणि । सुंदरी नामें रिषभ सुता ए । अंग स्वरूपी त्रिभुवन मांहे । जे

ह अनोपम गुणछता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला वालपणाथी । शीयलवती शुद्ध श्राविका ए । अम्दना बाकुला वीर प्रतिलाभ्या । केवल लही व्रत भाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुआ धारिणी नंदनी । राजिमती नेम वल्लभा ए । जोवन वेशें कामनें जीत्यो । संजम लेइ देव डुल्लभा ए ॥ ५ ॥ पंच भरतारी पांम्व नारी । द्रुपद तनया वखाणीयें ए । एक शो आठे चीर पूराणां शीयल महिमा तस जाणीयें ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम । कौशल्या कुलचंद्रिका ए । शीयल सलूणी राम जनेता । पुण्य तणी प्रनालिका ए ॥ ७ ॥ कोशंविक ठामें शतानिक नामें । राज्य करे रंग राजीयो ए । तस घर वरणी मृगावती सती । सुरनुवनें जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शीयलें न काची । राची नहीं विषयारसें ए । मुखडुं जोतां पाप पुलाए । नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामनी । जनकसुता शीता शती ए । जग सहु जाणे धीज करंतां । अनल शीतल थयो शीयलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी वांधी । कूवाथकी जल काढीयुं ए । कलंक उतारवा सतीय सुनद्रा । चंपा बार उघाडीयुं ए ॥ ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शीयल अखंम्ति । शिवा शिवपद गामिनी ए । जेहने नामें निर्मल थइयें । बलिहारी तस नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुरे पांडुरायनी । कुंतानामें कामिनी ए । पांम्व माता दशे दशारनी । बहेन पतिव्रता पद्मनी ए ॥ १३ ॥ शीयलावती नामें शीलव्रत धारिणी । त्रिविधें तेहनें वंदीयें ए । नाम जपंतां पातिक जाए । दरिशण डुरित निकंदियें ए ॥ १४ ॥ निषधा नगरी नलहनरिंदनी । दमदंती तस गेहिनी ए । संकट पडतां शीयलज राख्युं । त्रिभुवन कीर्त्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीताजग जन पूजित । पुष्पचूला नें प्रनावती ए । विश्व विख्याता कामितदाता । शोलमीसती पदमावती ए॥१६॥वीरें नाखी शास्त्रें साखी । उदयरतन नाखे सुदा ए । वाहाणुं वातां जे नर नणशे । ते लेशे सुख संपदा ए ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री तीर्थमाला स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शेत्रुंजय ऋषन समोसर्या । नला गुण नर्याेरे । सीधा साधु अनंत । तीरथ ते नमुंरे । तीन कल्याणक तिहां थया । मुगतें गयारे । ने

मीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो । गिरि सेहरोरे । जरतें जराव्या बिंब ॥ ती० ॥ आबू चौमुख अतिजलो । त्रिजुवन तिलोरे । विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो । रलीयामणोरे । सीधा तीर्थंकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीये । हीये हरखीयेंरे । सीधा श्री वासुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरी । रुद्धे जरीरे । मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेशलमेर जुहारीयें । दुःख वारीयेंरे । अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ वीकानेरज वंदीयें । चिरनंदीयेंरे । अरिहंत देहरा आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो शंखेश्वरो । पंचासरोरे । फलोधी थंजणपाश ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरीक अंजावरो । अमीझरोरे । जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो । जात्रा करोरे । राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ॥ ६ ॥ श्रीनाम्पोलाई जादवो । गोमी स्तवोरे ॥ श्रीवरकाणो पाश ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरा । बावन जलारे । रुचक कुंमले चार चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशाश्वती । प्रतिमा ढतीरे । स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां । होजो मुज इहां रे । समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री राणकपुरजीनुं स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीराणपुरो रलीयामणुंरे लाल । श्री आदीसर देव । मन मोहुंरे । उत्तंग तोरण देहरूरे ला० ॥ निरखीजें नित्यमेव ॥ म० ॥ १ ॥ चउवीश मंमप चिहुं दिशेंरे ला० ॥ चउमुख प्रतिमा चार ॥ म० ॥ त्रिजुवनदीपक देहरेरे ला० ॥ समोवम नहीं संसार ॥ म० ॥ श्री० ॥ २ ॥ देहरी चोराशी दीपतीरे ला० ॥ मांड्यो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ जलें जुहारया जोंयरांरे ला० ॥ सूतां ऊठी सवेर ॥ म० ॥ श्री० ॥ ॥ ३ ॥ देश जाणीतुं देहरूरे ला० ॥ मोटो देश मेवाम ॥ म० ॥ लख्ख नवाणुं लगावि यारे ला० ॥ धन धन्नो पोरवाम ॥ म० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ खरतर वसई खांतशुंरे ला० ॥ निरखंतां सुख थाय ॥ म० ॥ पांच प्राशाद बीजा वलीरे ला० ॥ जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ आज कृतारथ हुं थयोरे ला० ॥ आज जयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवर तणीरे ला० ॥ दूरें गयुं दुख दंद ॥ म० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ संवत शोल

छियंतरेंरे ला० ॥ मागशिर माश मझार ॥ म० ॥ राण पुरें यात्रा करीरे ला० ॥ समयसुंदर सुखकार म० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री सीमंधर जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुक्खलवइ विजयें जयेंरे । नयरी पुंम्रीगणी सार । श्री सीमंधर साहिबारे । राय श्रेयांस कुमार । (जिणंदराय धरज्यो धर्म सनेह) ॥ १ ॥ (आंकणी) ॥ मोहोटा न्हाना अंतरोरे । गिरुआ नवि दाखंत । शशि दरिशण सायर वधेरे । कैरव वन विकसंत ॥ जि० ॥ २ ॥ ठाम कुठाम न लेखवेरे । जग वरसंत जलधार । करदोय कुसुमें वासियेंरे । छाया सवि आधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ राय नें रंक सरिखा गणें रे । उद्योतें शशि सूर । गंगाजल ते बिहु तणा रे । ताप करे सवि दूर ॥ जि० ॥ ४ ॥ सरिखा सहुने तारवा रे । तिम तुमे छो महाराज । मुजशुं अंतर किम करो रे । बांह ग्रह्यानी लाज ॥ जि० ॥ ५ ॥ मुख देखी टीलुं करे रे । ते नवि होय प्रमाण । मुजरो माने सवि तणो रे । साहिब तेह सुजाण ॥ जि० ॥ ६ ॥ वृषभलंछन माता सत्यकी रे । नंदन रुकमणी कंत । वाचक जश इम वीनवे रे । भयभंजन भगवंत ॥ जि० ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री महावीर स्वामीनुं हालरिउं प्रारंभ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ माता त्रिशला फुलावे पुत्र पालणे । गावे हालो हालो हालरुवानां गीत । सोना रूपानें वली रत्नें जडियुं पालणुं । रेशम दोरी घूघरी वागे घुम घुम रीत । हालो हालो हालो हालो मारा नंदनें ॥ १ ॥ जिनजी पार्श्व प्रभुथी वरस अढीशें अंतरें । होशे चोवीशमो तीर्थंकर जिन परमाण । केशी स्वामी मुखथी एवी वाणी सांभली । साची साची हुइ ते मारे अमृत वाण । हा० ॥ २ ॥ चौदे स्वपनें होवे चक्रीके जिनराज । वीता बारे चक्री नहि हुवे चक्री राज । जिनजी पाश प्रभुना श्री केशी गणधार । तेहने वचनें जाण्या चोवीशमा जिनराज । मारी कूखें आव्या तारण तरण जिहाज । मारी कूखें आव्या त्रणय भुवन शिर ताज । मारी कूखें आव्या संघ तीरथनी लाज । हुंतो पुण्य पनोती इंद्राणी थइ आज ॥ हा० ॥ मुझनें डोहोलो उपन्यो जे बेसुं गज अंबाडीयें । सिंहासन पर बेसुं चामर छत्र ध

राय । ए सहु लक्षण सुजने नंदन ताहरा तेजना । तेदिन संभारुंने आनंद अंग न माय ॥ हा० ॥ ३ ॥ करतल पगतल लक्षण एक हजारनें आठ छे । तेहथी निश्चय जाण्या जिनवर श्री जगदीश । नंदन जमणी जंगें लंछन सिंह बिराजतो । में पहले सुपने दीठो विशवा वीश ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला बंधव नंदीवर्द्धनना तमे । नंदन भोजाइयोना देवरडो सुकुमाल हसशे भोजाइयो कही देवर माहरा लाड्का । हसशे रमशेनें वली चुंटी खणशे गाल । हशशे रमशे नें वली ठुंसा देशे गाल ॥ हा० ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेडा राजाना भाणेज छो । नंदन नवला पांचशें मामीना भाणेज छो । नंदन मामलिआना भाणेजा सुकुमाल । हशशे हाथे उछाली कहीने नाहना भाणजा । आंख्यो आंजी ने वली टवकुं करशे गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे टोपी आगलां । रतने जडीआ झालर मोती कशबी कोर । नीला पीलानें वली राता सरवे जातिनां । पहेरावशे मामी मारा नंद किशोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सूखडली सहु लावशे । नंदन गजुवे भरशे लाडू मोती चूर । नंदन मुखडां जोइने लेशे मामी भामणां । नंदन मामी कहेशे जीवो सुख भरपूर ॥ हा० ॥ ९ ॥ नंदन नवला चेडा मामानी साते सती । मारी भत्रीजीने बेन तमारी नंद । ते पण गुंजो भरवा लाखणसाई लावशे । तुमनें जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजें लावशें लाख टकानो घूघरो । वली शूडा मेनां पोपट ने गजराज । सारस हंस कोयल तीतरने वली मोर जी । मामी लावशे रमवा नंद तमारे काज ॥ हा० ॥ ११ ॥ छप्पन कुमरी अमरी जलकलशें नवरावीआ । नंदन तमने अमनें केलीघरनी मांहे । फूलनी वृष्टि कीधी योजन एकने मंडलें । बहु चिरंजीवो आशीष दीधी तुमने त्यांहे ॥ हा० ॥ १२ ॥ तमने मेरू गिरिवर सुरपतियें नवराविआ । निरखी हरखी सुकृत लाभ कमाय । मुखडा ऊपर वारुं कोटी कोटी चंद्रमा । वली तनपर वारुं ग्रह गणनो समुदाय ॥ हा० १३ ॥ नंदन नवला भणवा नीशालें पण मूकशुं । गजपर अंबाडी बेसाडी मोहोटे साज । पसली भरशुं श्रीफल फोफल नागरवेलशुं ।

सुखमली लेशुं नीशाली आने काज ॥ हा० ॥ १४ ॥ नंदन नवला मोहोटा थाशोने परणावशुं । वहूवर सरखी जोमी लावशुं राजकुमार । सरखा वेवाइ वेवाणुंने पधरावशुं । वर वहू पोंखी लेशुं जोड़ जोड़ने दीदार ॥ हा० ॥ ॥ १५ ॥ पीअर सासर मारा बेहु पक्ष नंदन उजला । माहरी कूखें आव्या तात पनोता नंद । माहरे आंगण वूठा अमृत दूधे मेहुला । माहरे आंगण फलिआ सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० ॥ १६ ॥ इणि परें गायुं माता त्रिशला सुतनुं पालणुं । जे कोइ गाशे लेशे पुत्र तणा साम्राज । बलीमोरा नगरें वरणव्युं बीरनुं हालरुं । जय जय मंगल होजो दीपविजय कविराज ॥ हा० ॥ १७ ॥ इति० ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ निंदावारक सझाय ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ निंदा मकरजो कोइनी पारकी रे । निंदानां बोल्या महा पापरे वयर विरोध वाधे घणोरे । निंदा करतां न गणे माय बापरे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुह्मेरे । पगमां बलती देखो सहु कोयरे । परना मैला में धोयां लूगडां रे । कहो केम उजला होयरे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संभालो सहुको आपणोरे । निंदानी मूको परी टेवरे । थोमे घणे अवगुणे सहु भर्यारे । केहनां नलिया चुए कहेनां नेवरे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे । तप जप कीधुं सहु जायरे । निंदा करो तो करजो आपणी रे । जेम छूटकबारो थायरे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहुको तणोरे । जेह्मां देखो एक विचाररे । कृष्णपरें सुख पामशोरे । समयसुंदर सुखकाररे ॥ निं० ॥ ५ ॥ ❋ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्री आनंदघनजी कृत स्तवन सं० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ करम परीक्षाकरण कुमरचल्योरे ॥ ए देशी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ऋषभजिनेश्वर प्रीतम माहरोरे । ओर न चाहुंरे कंत । रींझ्यो साहेब संग न परिहरेरे । भांगे सादि अनंत ॥ ऋषभ० ॥ १ ॥ प्रीत सगाइरे जगमां सहु करे रे । प्रीत सगाइ न कोय । प्रीति सगाइरे निरुपाधिक कहीरे । सोपाधिक धन खोय ॥ ऋषभ० ॥ २ ॥ कोई कंत कारण काष्ट भक्षण करेरे । मिलसुं कंतने धाय ए मेलो नवि कहीये संभवेरे ।

मेलो ठाम न ठाम ॥ ऋषन्न० ॥ ३ ॥ कोई पति रंजन अति घणो तप करेरे । पति रंजन तन ताप । ए पति रंजनमें नवि चित्त धरयुंरे । रंजन धातु मिलाप ॥ ऋषन्न० ॥ ४ ॥ कोई कहे लीलारे अलख अलख तणीरे । लख पूरे मन आस । दोष रहित ने लीला नवि घटेरे । लीला दोष विलास ॥ ऋषन्न० ॥ ५ ॥ चित्त प्रसन्नेरे पूजन फल कह्युंरे । पूज अखंडित एह । कपट रहित थई आतम अरपणारे । आनंद घन पद एह ॥ ऋष० ॥ ६ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्री अजित जिन स्तवनम् ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ मारुं मन मोह्युंरे श्रीबिमलाचलें ॥ ए चाल ॥ ❋ ॥

पंथडो निहालुं रे बीजा जिनतणोरे । अजित २ गुण धाम । जे तें जीत्यारे तेणे हुं जीतियोरे । पुरुष किस्युं मुऊ नाम ॥ पंथ० ॥ १ ॥ चरम नयण करी मारग जोवतोरे । न्नूलो सयल संसार । जेणे नयणे करी मारगजोइयेंरे । नयण ते दिव्य विचार ॥ पंथ० ॥ २ ॥ पुरुष परंपर अनुन्नव जोवतां रे । अंधो अंध पुलाय । वस्तु विचारेरे जो आगमें करी रे । तो चरण धरण नही ठाय ॥ पंथ० ॥ ३ ॥ तर्क विचारें रे वाद परं परारे । पार न पहोचे कोय । अन्निमतें वस्तु वस्तुगतें कहे रे । ते विरला जग जोय ॥ पंथ० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारें रे दिव्य नयण तणोरे । विरह पड्यो निरधार । तरतम जोगेरें तरतम वासनारे । वासित बोध आधार ॥ पंथ० ॥ ५ ॥ काल लबधि लही पंथ निहालस्युंरे । ए आस्या अविलंब । ए जन जीवेरे जिनजी जाणजोरे । आनंद घन मत अंब ॥ पंथ० ॥ ६ ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्री संन्नवजिन स्तवन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ रातमी रमीनें किहां थी आवियारे ॥ ए चाल ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ संन्नवदेव त धुर सेवो मवेरे । लही प्रन्नु सेवन न्नेद । सेवन कारण पहेली न्नूमिकारे । अन्नय अद्वेश अखेद ॥ संन्नव० ॥ १ ॥ न्नयचंचलताहो जे परिणामनी रे । द्वेष अरोचक न्नाव । खेद प्रवृत्तीहो करतां थाकीयें रे । दोष अबोध लखाव ॥ संन्नव० ॥ २ ॥ चरमावर्त्तहो चरम करण तथा रे । न्नव परिणति परि पाक । दोष टले वली दृष्टी खुले न्नलीरे प्रापति प्रवचन वाक ॥ संन्नव ॥ ३ ॥ परिचय पातिक घातिक साधस्यूं

रे। अकुशल अपचय चेत। अथ अध्यातम श्रवण मनन करीरे। परीशीलन नय हेत॥ संभव० ॥ ४॥ कारण जोगेंहो कारज नीपजेरे। एमां कोई न वाद। पण कारण विण कारज साधीयेंरे। ए जिन मत उनमाद॥ संभव०॥ ५॥ मुग्ध सुगम करी सेवन आदरेरे। सेवन अगम अनूप देजो कदाचित सेवक याचनारे। आनंदघन रस रूप॥ संभव०॥ ❀॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अभिनंदन जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज निहेजोरे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अभिनंदन जिन दरिशण तरसीये। दरशण दुर्लभदेव। मत २ भेदेंरे जो जई पूछीयें। सहु थापे अह मेव॥ अभि०॥ १॥ सामान्ये करी दरशण दोहलूं। निरणय सकल विशेष। मदमें घेरयोरे अंधो किम करे। रवि शशि रूप विलेख। अभि०॥ २॥ हेतु विवादें हो चित्त धरी जोईयें। अति दुरगम नय वाद। आगमवादें हो गुरुगमको नही। ए शबलो विषवाद॥ अभि०॥ ३॥ घाती डूंगर आडा अतिघणा। तुझ दरिशण जगनाथ। धीठाई करी मारग संचरूं। संगू कोई न साथ॥ अभि०॥ ४॥ दरिशण २ रटतो जो फरूं तो रण रोझ समान। जेहने पीपासा हो अमृत पाननी। किम भाजे विष पान॥ अभि०॥ ५॥ तरस न आवेहो मरण जीवन तणो। सीजे जो दरिशण काज। दरिशण दुर्लभ सुलभ कृपा थकी। आनंदघन महाराज॥ अभि०॥ ६॥ ❀॥ ॥ ❀॥ ॥ ❀॥ ॥ ❀॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री सुमति जिनस्तवन लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग वसंत (तथा) केदारो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा। दरपण जिम अविकार। सुग्यानी॥ मति तरपण बहु सम्मत जाणीयें। परिसरपण सुविचार॥ सुग्यानी॥ सुमति०॥ १॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आतमा। वहिरातम धुरि भेद॥ सु०॥ बीजो अंतर आतम तीसरो। परमातम अविछेद॥ सु०॥ सुमति०॥ २॥ आतम बुद्धे हो कायादिक ग्रह्यो। वहिरातम अघरूप। सुग्यानी। कायादिकनो हो साखी धर रह्यो। अंतर आतम रूप॥ सुग्यानी॥ सुमति०॥ ३॥ ज्ञानानंदेवो पूरण पावनो। वरजित सकल

उपाधि ॥ सुग्यानी ॥ अतिंद्रिय गुण गण मणि आगरू । इय परमातम साध ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ ४ ॥ बहिरातम तज अंतर आतमा । रूप थई थिर भाव ॥ सु० ॥ परमातमनुं हो आतम भाववूं । आतम अरपण दाव सु० ॥ सुमति० ॥ ५ ॥ आतम अरपण वस्तु विचारतां । भरमटले मति दोष ॥ सु० ॥ परम पदारथ संपति संपजे । आनंदघन रस पोष सु० ॥ सुमति० ॥ ६ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्री शीतलजिनस्तवन लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ गुणह विसाला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ शीतल जिनपति ललित त्रिभंगी । विविध भंगी मन मोहेरे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता । उदाशीनता सोहेरे ॥ शी० ॥ १ ॥ सर्व जंतु हित करणी करुणा । कर्म विदारण तीक्ष्णारे । हाना दाना रहित परणामी । उदाशीनता विक्षणारे ॥ शी० ॥ २ ॥ परदुःख छेदन इछा करुणा, तीक्ष्ण पर दुख रीझेरे । उदासीनता उभय विलक्षण । एक ठामें केम सीझेरे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अभयदान ते मललक्षय करुणा । तीक्ष्णता गुण भावेरे । प्रेरण विणु कृत उदाशीनता । इम विरोध मति नावेरे ॥ शी० ॥ ॥ ४ ॥ शक्ति व्यक्ति त्रिभुवन प्रभुता । निग्रंथता संयोगेरे । योगी भोगी वक्ता मौनी । अनुपयोगि उपयोगें रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु भंग त्रिभंगी । चमत्कार चित्त देती रे । अचरिजकारी चित्र विचित्रा । आनंदघन पद लेतीरे ॥ ❋ ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्रीकुंथुजिनस्तवनप्रारंभः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ रागगुर्जरी अंबरदेहो मुरारी हमारो० ए चाल ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ मनडुं किमही न बाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥ जिम जिम जतन करीनें राखुं । तिम तिम अलगुं भाजे हो ॥ कुं० ॥ १ ॥ रजनी वासर वसती ऊजड़ । गयण पायालें जाय । साप खायने मुखडुं थोथुं । एह उखाणो न्याय हो ॥ कुं० ॥ २ ॥ मुगतितणा अभिलाषी तपीया । ज्ञानने ध्यान अभ्यासें । वयरीडुं कांइ एहवुं चिंते । नाखे अवलें पासें हो ॥ कुं० ॥ ३ ॥ आगम आगम धरने हाथें । नावे किणविध आंकुं । किहां कणे

जो हठकरी हटकूं। तो व्याल ताणी परें वांकूं हो ॥ कुं० ॥ ४ ॥ जो ठग कहुं तो ठगतो न देखुं। साहुकार पण नाही। सर्व मांहेने सहुथी अलगुं। ए अचरिज मन मांही हो ॥ कुं० ॥ ५ ॥ जे जे कहुं ते कान न धारे। आपमतें रहे कालो ॥ सुर नर पंम्ति जन समजावे। समजे न महा रोसालो हो ॥ कुं० ॥ ६ ॥ में जाएयुं ए लिंग नपुंसक। सकल मरदनें ठेले। बीजी वातें समरथ छे नर। एहनें कोइन जेले हो ॥ कुं० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तेणें सगलुं साध्युं। एह वात नही खोटी। एम कहे साध्युं ते नवी मानुं। ए कहिवतछे मोटी हो ॥ कुं० ॥ ८ ॥ मनडुं दुराराध्य ते वस आणुं। ते आगमथी मतिआणुं। आनंदघन प्रनु माहरुं आणो। तो साचुं करी जाणुं हो ॥ कुं० ॥ ९ ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ देव वांदवानो विधि ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रथम इरियावही पडिकमवाथी मांमीनें (यावत्) लोगस्स कही पछी उत्तरासण करी। चैत्यवंदन। नमुत्थुणं कही, अर्धुं जयवीअराय। आलव मखंमा सूधी हाथ जोमी। कहे। (वली) चैत्यवंदन, कहीने। नमुत्थुणं। कही. (यावत्) चार थोयो कहीये छीयें तिहां सूधी बधुं कहेवुं। पछी नमुत्थुणं कही। (वली) चार थोयो कहीयें त्यां सुधी बधुं कहेवुं। पछी नमुत्थुणं; (तथा) बे जावंती कही। स्तवन कही। अर्धुं जयवीअराय आलवमखंमा सूधी कही। पछी चैत्यवंदन कही। नमुत्थुणं कही। (आखो) जय वीयराय कहेवो ॥ इहां सवारें देव वांदवां। (तेमां) मन्ह जिणाणं नी सज्झाय कहेवी। अने मध्यान्हे (तथा) सांजे देव वांदवामां सज्झाय न कहेवी ॥ इति देव वांदवानो विधि ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ज्ञान विमलजी कृत, चउमाशी देववंदन विधिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रथम इरियावही पमिकमी काउसग्ग करी। लोगस्स० कही एक खमासमण देई। इच्छाका० श्री रुषभजिन आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं। एम कही चैत्यवं० करे ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्री आदि जिन चैत्य वंदन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रथम जिनेसर रुषज देव। सवठथी चवियां। वदि चउथें

आषाढनी । शक्रें संस्तविया । अष्टमी चैत्रह वदि तणी । दिवसें प्रभुजाया । दिक्षा पण तिणहीज दिने । चउनाणी थाया । फागण वदि इग्यारसी ए । ज्ञान लहे शुभ ध्यान । महा वदि तेरशें शिव लह्या । परमानंद निधान ॥ १ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥❋॥

॥ ❋ ॥ इहां नमुत्थुणं॰ । अरिहंत चेइयाणं॰ । वंदण वत्तिया कही । एक नवकारनो कावसग्ग पारी । ४ थुई क्रमसें कहियें । ते लिखियें छेयें ॥

॥ ❋ ॥ अथ थोय जोडो प्रारंभः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ रुषभ जिन सुहाया श्री मरुदेवी माया । कनक वरण काया मंगला जासजाया । वृषभ लंछन पाया देवनर नारी गाया । पण सय धनु छाया ते प्रभु ध्यान ध्याया ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी जिन त्रेवीश उदार । एक नेम विना सवि समवसर्या निरधार । गिरि करुणें आवी पोहता गढ गिरनार । चैत्री पूनम दिनें ते वंदूं जय कार ॥ २ ॥ ज्ञाता धर्म कथांगें अंत गरु सुत्र मझार । सिध्धा चलें सीधा बोल्या बहु अणगार । ते माटें ए गिरि सवि तीरथ शिरदार । जिन भेटे थावे । सुख संपति विस्तार ॥ ३ ॥ गौमुख चक्केश्वरी शासननी रखवाल । ए तीरथ केरी सानिध करे संभाल । गिरुओ जस महिमा संप्रति कालें जास । श्रीज्ञान विमल सूरी नामे लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ इहां । नमुत्थुणं, जावंती (बे) कही नमोर्हत्॰ कही स्तवन कहेवुं॥

॥ ❋ ॥ अथ श्रीआदिजिन स्तवन प्रारंभः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (ललनानी देशी) आदि करन अरिहंतजी । उलगभी अवधार ललना ॥ प्रथम जिणेसर प्रणमीयें । वंछित फल दातार ॥ ललना ॥ १ ॥ आदिकरण अरिहंतजी (ए आंकणी) उपगारी अवनी तलें । गुण अनंत भगवान ॥ ललना ॥ अविनाशी अक्षयकला । वरते अतिशय धाम ॥ ललना ॥ आ॰ ॥ २ ॥ गृहवासें पण जेहनें । अमृत फलनो आहार ॥ ललना । ते अमृत फलनें लहे । ए उगतुं निरधार ॥ ललना ॥ आ॰ ॥ ३ ॥ वंश इक्षाग छे जेहनो । चढतो रस सुविशेष ॥ ललना ॥ भरतादिक थया केवली अनुभव फल रस देख ॥ ललना ॥ आ॰ ॥ ४ ॥ नाभिराय कुल मंरुणो

मरुदेवी सर हंम ॥ ललना ॥ ऋषभदेव नित वांदियें । ज्ञान विमल अवतंस ॥ ललना ॥ ॥ ५ ॥ इति श्रीऋषभ जिन स्त० ॥ १ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पछी जय वीयराय अर्धो कहवुं । एक खमासमण देई । इच्छा० श्री अजितनाथजी आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्री अजित नाथ चैत्य वंदन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ शुदि वैशाखनी तेरशें । चविया विजयंत । माह शुदि आठमे जनमिया । बीजा श्री अजित । माहशुदि नवमें थया । पोषी इग्यारस । उज्वल उज्वल केवली । थया अक्षय कृपारस । वैशाख शुक्ल पंचमी दिने ए । पंचम गति लह्याजेह । धीर विमल कविरायनो । नय प्रणमे धरी नेह ॥ २ ॥ इति ॥ पछी नमोत्थुणं अरिहंत चे० कही । एक नवकारको कायसग्ग करके । थुईकी गाथा कहे (इसी तरे सब ठिकाणों विध करवो)॥

॥ ❋ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अजित जिन पतीनो । देह कंचन जरीनो । भविकजन नगीनो जेहथी मोहलीनो । हुं तुज पदलीनो । जेम जलमांहे मीनो । नवि होय ते दीनो । ताहरे ध्यानें पीनो ॥ १ ॥ इति अजित नाथ थोय ॥ २ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्री संभवनाथ चैत्य वंदन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सत्तम ग्रैवेयक थकी । चविया श्री संभव । फागुण शुदि आठम दिनें । शुदि चउदसी अभिनव ॥ १ ॥ मृगशिर मासें जनमीया । तणी पूनम संजम । कार्त्तिक वदी पंचमी दिनें । लहे केवल निरूपम । पंचमी चैत्रनी उजली ए । शिव पोहोता जिनराज । ज्ञान विमल प्रभु प्रणमतां । सीझे सगला काज ॥ २ ॥ इति चैत्य वंदनं ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जिन संभववारु । संभनें अश्वधारु । भवजलनिधि तारु । काम गद तीव दारु । सुरतरु परिवारु । दूसमाकाल मारु । शिव सुख किरतारु । तेहना ध्यान सारु ॥ १ ॥ इति थोय समाप्त ॥ ३ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अभिनंदन जिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जयंत विमान थकी चव्या । अभिनंदन राया । वैशाख शुदि चोथे माघ सुदि बीजे जाया । माहाशुदि बारशें ग्रहिय दिख्ख । पोषशुदि चनुदस । केवल शुदि वैशाखनी । आठमे शिव सुख रस । चनुथा जिनवरनें नमी ए ॥ चनुगति भ्रमण निवार । ज्ञान विमल गणपति कहे । जिन गुणनो नही पार ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तुति प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अभिनंदन वंदो । साम्य माकंद कंदो । नृप संवर नंदो । घ र्षिता शेष कंदो । तम तिमिर दिणंदो । लंछनें वानरिंदो । जस आगल मंदो । सौम्य गुण सार दिंदो ॥ १ ॥ इति थोय ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री सुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावण शुदि बीजे चव्या । मेहलीनें जयंत । पंचमी गति दाय क नमुं । पंचम जिन सुमति । शुदि वैशाखनी आठमें । जनम्या तिम सं जम । शुदि नवमी वैशाखनी । निरुपम जस शम दम । चैत्र इग्यारस ऊज ली ए । केवल पामें देव । शिव पाम्या तिणे नवमीयें । नय कहे करो तस सेव ॥ १ ॥ इति चैत्य वंदन ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुमति सुमति आपें दुःखनी कोडि कापे । सुमति सुजन व्यापे । बोधिनु बीज व्यापे । अविचल पद थापे । जाप दीप प्रतापें । कुमति कदही नावें । जो प्रनु ध्यान व्यापे ॥ १ ॥ इति सुमति जिन० ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री पद्म प्रन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवम ग्रैवेयकथी चव्या । माहावदि छठ दिवसें । कातीवदि बा रसें जनम । सुर नर सवि हरखे । वदि तेरस संजम ग्रहे । पद्मप्रन स्वामी चैत्री पूनम केवली । वलि शिवगति पामी । मृगशिर वदि इग्यारसें । रक्त कमल समवान । नय विमल जिन राजनुं । धरीयें निरमल ध्यान ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पद्मप्रनु सोहावे । चित्तमां नित्य आवे । सुगति वधु मनावे ।

रक्त तनु कांति फावे । दुःख निकट नावे । संतती सौख्य पावे । प्रभु गुणगण ध्यावे । अष्ट महा सिद्धि थावे ॥ १ ॥ ❀ ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री सुपार्श्वजिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ छठा ग्रैवेयकथी चवी । जिनराज सुपास । भादरवा वदि आठमे । अवतरिया खास । जेठ सुक्ल बारसी जणया । तस तेरसे संजम । फागुण वदि छठे केवली । शिव लहे तस सत्तामि । सत्तम जिनवर नामथी ए । साते ईति समंत । ज्ञान विमल सूरि नितु लहे । तेज प्रताप महंत ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ फले कामित आशे नामथी दुःख नाशे । महिम महि प्रकाशे सातमा श्री सुपासें । सुरनर जस दास । संपदानो निवास । गाय भवि गुणरास जेहना धरी उल्लास ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री चंद्र प्रभजिन चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चंद्रप्रभ जिन आठमा । चंद्रप्रभ सम देह । अवतरीया विजयंतथी । वदि पंचमी चैत्रेह । पोष वदि बारसें जनमीया । तस तेरसे साध फागुण वदिनी सातमे । केवल निराबाध । भाद्रव सातम शिव लह्या ए । पूरी पूरण ध्यान । अठ महासिद्धि संपजे । नय कहे जिन अभिधान ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुभ नरगति पामी उधर्म धर्म्मधामी । जिन नमो शिरनामी चंद्र प्रभ नाम स्वामी । प्रभु अंतरजामी जेहमां नहिय खामी । शिवगति वरगामी सेवना पुण्यें पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ अथ सुविधिनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गोरा सुविध जिणंद नाम । बीजुं पुष्प दंत । फागुण वदि नवमें चव्या । मेहली सुर आनंत । मृग शिर वदि पंचमें जाया । तस छठें दिक्षा । कार्ती शुदि त्रीजें केवली । दिये बहु परें शिक्षा । शुदि नवमी भाद्रवा तणी ए । अजर अमर पद होय । धीर विमल सेवक कहे । ए नमतां सुखहोय ॥ १ ॥ इति स्तवनं ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुविधि जिन नदंत। नाम वली पुष्फ दंत । सुमति तरुणि कंत। संतथी जेह संत । कीयो कर्मडुरंत । लब्धि लीला वरंत। नव ज लधि तरंत। तेनमीजे महांत ॥ १ ॥ इति थोय ॥ ❀ ॥ ९ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शीतलनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्राणत कल्पथकी चव्या। शीतल जिन दशमा। वदि वैशाषनी छठे। जाणि दाघज्वर प्रशम्या॥ महावदि बारस जनम दिख्या। तस बारसें लीध। वदि पोष चनुदश दिने। केवली परसिद्ध। वदि बीजे वैशाखनी ए। मोक्ष गया जिनराज। ज्ञान विमल जिनराजथी। सीजे सगला काज॥ १ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुण शीतल देवा वालही तुझ सेवा । जेम गज मन रेवा। तुंही देवाधि देवा। पर आण वदेवा शमछे नित्यमेवा । सुख सुगति लहेवा हेतु दुःख खपेवा ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ १० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री श्रेयांसनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अच्युत कल्पथकी चव्या। श्रेयांस जिणंद । जेठ अंधारी दिवस छठें। करत वहु आनंद । फागुण वदि बारसें जनम। दीक्षा तस तेरस। केवली माह अमावसि। देसना चंदन रस । वदि श्रावण त्रीजे लह्या ए। शिव सुख अखय अनंत । सकल समीहित पूरणो । नय कहे ए भगवंत॥ १ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सविजिन अवतंस। जास इख्याग वंश । विजित मदन कंस शुद्ध चारित्रहंस। कृत भय विध्वंस। तीर्थनाथ श्रेयांस । वृषभ ककुद अंश। ते नमुं पुण्य वंश॥ १ ॥ ❀ ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री वासु पूज्य चैत्य वंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्राणतथी इहां आविया । ज्येष्ठ शुदी नवम । जनम्या फागु

ण चौदशी। अमावसी संजम। माह शुदि बीजे केवली। चौदशि आष
ढी। शुदि शिव पाम्या कर्म कष्ट। सवि दूरे काढी। वासुपूज्य जिन बारम
ए। विद्रुम रंगें काय। श्री नयविमल कहे इस्युं। जिन नमतां सुख थाय

॥ ❁ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ वसुदेव नृप तात। श्री जयादेवी मात। अरुण कमलगात
महिष लंछन विख्यात। जसगुण अवदात। शीत जाणे निवात। होय नि
सुखशात। ध्यावतां दिवस रात ॥ १ ॥ इति ॥ ❁ ॥ १२ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ विमलनाथ चैत्यवंदन ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अठम कल्पथकी चव्या। माधव शुदि बारस। शुदि महात्रीजे
जणया। तस चोथे व्रत रस। शुदि पोष छठं लह्या। वर निर्मल केवल
वदि सातमि आषाढनी। पाम्या पद अविचल। विमल जिणेसर वंदिये
ए। ज्ञान विमल करी चित्त। तेरसमो जिन नितु दिये। पुण्य परिघल
वित्त ॥ १ ॥ इति ॥ ❁ ॥ १३ ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁

॥ ❁ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ विमल विमल भावे वंदतां दुःख जावे। नव निधि घर आ
वे विश्वमां मान पावे। सुवर लंछन फावे जोमिजर स्वेद थावे। म
विनति जणावे। स्वामिशुं ध्यान ध्यावे ॥ १३ ॥ इति विमलनाथ स्तुति।

॥ ❁ अथ श्री अनंतनाथ चैत्यवंदन ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ प्राणत थकी चविया इहां। श्रावणवदि सातम। वैशाखवदि
तेरसी दिनें। जनम्या चउदस रातम। वदि वैशाखे चउदसि। केवल पुण्य प
म्या। चैत्रशुदि पंचमीदिने। शिववनिता काम्या। अनंतजिनेश्वर चउदम
ए। कीधा दुष्मन अंत। ज्ञानविमल कहेनामथी। तेज प्रताप अनंत ॥ १४॥

॥ ❁ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अनंत जिन नमीजें कर्मनी कोट छीजें। शिव सुख फल ली
जें सिद्धि लीला वरीजें। बोधि बीज मोह दीजें एहनुं काज कीजें। सु
मन अति रीझे स्वामिनुं कार्य सीझे ॥ १ ॥ ❁ ॥ १४ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्री धर्मनाथ जिन चैत्यवंदन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ वैशाख सुदि सातमे । चविया श्री धर्म । विजय थकी माह मासनी । शुदि त्रीजें जनम । तेरस माहिं ऊजली । लीयें संजम भार । पोषि पूनमे केवली । गुणना भंडार । जेठी पांचमि ऊजली ए । शिवपद पाम्या जेह । नय कहे ए जिन प्रणमतां । वाधे धर्म सनेह ॥ १५ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ धर्म जिन पतीनो ध्यान रस मांहें भीनो । वररमण शचीनो । जेहने वर्ण लीनो । त्रिभुवन सुख कीनो लंछने वज्र दीनो । नवि होय ते दीनो जेहने तुं वसीनो ॥ १ ॥ ❋ ॥ इति ॥ १५ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ अथ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ भाद्रवा वदि सातम दिने । सवठर्था चविया । वदि तेरस जेठें जणया । दुःख दोहग समीया । जेठि चउदस वदि दिने । लीये संजमवेम । केवल उज्जल पोसनी । नवमी दिन खेम । पंचम चक्री परवडा ए । शोलमा श्रीजिनराज । जेठ वदि तेरशें शिव लह्या । नय कहे सारो काज ॥ १६ ॥

॥ ❋ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जिन पति जयकारी पंचमो चक्रधारी । त्रिभुवन सुखकारी सप्त भय ईतिवारी । सहस चउसठनारी चउद रत्नाधिकारी । जिन शांति जीतारी मोहे हस्ति मृगारी ॥ १ ॥ शुभ केशर घोली मांहें कर्पूर चोली । पेहरी सीत पटोली वासियें गंधधूली । भरी पुष्पपटोली टालीयें दुःख होली । सवि जिनवर टोली पूजीयें भाव लोली ॥ २ ॥ शुभ अंग इग्यार तेम उपांग वलि बार । मूल सुत्रते चार नंदी अनुयोगद्वार । दशपयन्न उदार छेदखट् वृत्ति सार । प्रवचन विस्तार भाष्य निर्युक्तिसार ॥ ३ ॥ जय जय जय नंदा जैन सुरिंदा । करे परमानंदा टालता दुःखदंदा । ज्ञानविमल सुरिंदा साम्य कंदा । वरविमल गिरिंदा ध्यानथी नित्य भद्दा ॥ ४ ॥ इति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (मोतीभानी देशी) सकल समीहित सुरतरु कंदा । शांति कर

ण श्री शांति जिणंदा । साहिबा जिनराज हमारा । मोहना जिनराज हमारा ॥ सा० ॥ (ए आंकणी) त्रिकरण शुद्ध चरण तुज विलगो । पलक मात्र न रहुं हिवे अलगो ॥ सा० ॥ १ ॥ विलगो ते अलगो केम जाशे । छंड्यो पण तुझें नवि छंडाशे ॥ सा० ॥ प्रभु तुझे कोइशुं नेह न लावो । वीतराग कही सवि समजावो ॥ सा० ॥ २ ॥ बीजा अवर कहो एम समजे पण छोरु दीधाथी रीजे ॥ सा० ॥ बालकना हठथी नवि चाले । जे मांगे ते मावित्र आले ॥ सा० ॥ ३ ॥ भक्तिखांची मन मांहे आण्यो । सहज स्वभावें पण में जाण्यो ॥ सा० ॥ माहरे एक प्रतिज्ञा साची । तुम पदसेवा अंकें जाची ॥ सा० ॥ ४ ॥ कवजे आव्यानो छूटीजें । जेह मुह मांगे तेहज दीजें ॥ सा० ॥ अभेद पण जो मनमां मलशो । कवजेथी प्रभु तो नीकलशो ॥ सा० ॥ ५ ॥ अख्खय भाव निधी तुम पाम । आपी दासने पूरो आश । ज्ञान विमल समकित प्रभुताई । दीधी साहेब एह वडाई ॥ सा० ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री कुंथुनाथ जिन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावण वदि नवमी दिनें सवठथी चविया । वदि चउदश वैशाखनी जिन कुंथु जणीया । वदि पंचमी वैशाखनी लीये संजम भार । शुदि त्रीजें चैत्रहतणी लहे केवल सार । पडवा दिन वैशाखनीए पाम्या अविचल ठाण । छठा चक्री जयकरु ज्ञानविमल सुख खाण ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन कुंथु दयाला छाग लंछन सुहाला । जस गुण शुभ माला कंठे पेहरो विशाला । नमति भवि त्रिकाला मंगल श्रेणि माला । त्रिभुवन तेजाला नाहरे तेज माला ॥ १७ ॥ इति कुंथुनाथ जिन स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अरनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सरवारथथी आविया फागुण शुदि बीजें । मृगशिर शुदि दशमी जाया अरदेव नमीजे । मृगशिर शुदि एकादशी संजम आदरीयो कार्ती उज्वल बारमें । केवल गुण वरीयो । शुदि दशमी मृगशिर तणी ए शिवपद लहे जिननाथ । सत्तम चक्रीने नमुं नय कहे जोडी हाथ ॥ १८ ॥

॥ ❋ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अराजिन ए जुहारूं कर्मनो क्लेश वारूं । अहनिश संभारूं ताह रूं नाम धारूं । कृत जय जय कारूं प्राप्त संसार सारूं । नविहोय ते सारूं आपणो आप तारूं ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्री मल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ चव्या जयंत विमानथी फागुण शुदि चनुथें । मृगशिर शुदि इग्यारसें जनम्या निर्ग्रंथे । ज्ञान लह्या एकणादिनें कल्याणक तीन । फागु ण सुदि बारमें लहे शिव सदन अदीन । मल्लिजिणेसर नीजमाए । ग्रणी शमा जिनराज । अणपरणया अणरूप पद । भवजल तरण जहाज ॥ १९ ॥

॥ ❋ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जिन मल्ली महिला वानछे जेहनीला । ए अचरिज लीला स्त्री तणें नाम पीला । दुशमन सवि पील्या स्वामि जोछे वसीला । अविचल सुख लीला दीजियें सुणि रंगीला ॥ १९ ॥ इति मल्लिजिन स्तुति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्री मुनि सुव्रत जिन चैत्यवंदन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अपराजितथी आविया । श्रावण शुदि पूनम । आठम जेठ अंधारमी । थयो सुव्रत जनम । फागुण शुदि बारस व्रते । वदि बारसें ज्ञान फागुणनी तेम जेठनी । नवमी कृष्ण निर्वाण । वर्ण श्याम गुण उज्जला । ति हुयण करे प्रकाश । ज्ञान विमल जिनराजना । सुरनर नायक दास ॥२०॥

॥ ❋ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ मुनि सुव्रत स्वामी हुं नमुं शीश नामी । मुझ अंतर जामी का मदाता अकामी । दुःखदोहग वामी पुण्यथी सेव पामी । शम्या सर्व दा रामी राज्यता पूर्ण पामी ॥ १ ॥ इति ॥ २० ॥ ॥ ❋ ॥ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्री नमीनाथ चैत्यवंदन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ आशो शुदि पूनम दिने प्राणतथी आया । श्रावणवदि आ ठम दिनें नमी जिनवर जाया । वदि नवमी आषाढनी थया तिहां अणगा

२। मृगशिर शुदि इग्यारसें वर केवल धार। वदि दशमी वैशाखनी ए। अखय अनंता सुक्ख। नय कहे श्री जिननामथी। नासे दोहग डुक्ख ॥ २१ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमी जिनवर मानो जेह नही विश्वगानो । सुत वप्रा मानो पुण्य केरो खजानो। कनक कमल वानो कुंभ छे जे कृपानो । सविनुवन प्रमानो तेहशुं एक तानो ॥ २१ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री नेमीनाथ चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀॥ अपराजितथी आविया। काती वदि बारस। श्रावण शुदि पंचमी जण्या। यादव अवतंस। श्रावण सुदि छठे संजमी। आसोज अमावस नाण। शुदि आषाढनी आठमे। शिवसुख लहे प्रमाण। अरिठ नेमि अणपरणीया ए। राजिमतीना कंत। ज्ञान विमल गुण एहना। लोकोत्तर वृत्तंत ॥२२॥ इति॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गया शस्त्रागारें शंख निज हाथ धारें। कियो शब्द प्रचारें विश्व कंप्यो तिवारें। हरि संशय धारे। एहनी कोड सारे । जयो नेम कुमारे। बालथी ब्रह्म चारे ॥ १ ॥ चार जंबू द्वीपें विचरंता जिन देव । अमवान की खंभे सुरनर सारे सेव। अम पुष्कर अरधें इणिपरें वीस जिनेश । संप्रतिए सोहे पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण शम भवजल निधिने तारे। कोहादिक मोटा मछतणा भय वारें । जिहां जीवदया रस सरस सुधारस दाख्यो। भवि भाव धरीनें चित्त करीनें चाख्यो ॥ ३ ॥ जिन शासन सान्निध्य कारी विघन विमारे। समकित दृष्टी सुर महिमा जास वधारे। शेत्रुंज गिरि सेवो जिम पामो भवपार । कवि धीर विमलनो शिष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ म्हो म्होरे यादव दो धणीया। दोधणीयां दोवार धणीयां । म्हो म्होरे यादव० ॥ (ए आकणी)। भोज महिराण शिवादेवी जाया। तुमे छो आधार अन्तरजामीयां ॥ १ ॥ म्हो० ॥ नाह विवाह चाह करीआए । क्युं जावन

फिर रथ चलीयां ॥ रहो० ॥ पशुय पोकार सुणीय किय करुणा । गोरूडी ए पशुपंखी चलीयां ॥ रहो० ॥ २ ॥ गोद विछाउं में बली जाउं । करुं वीनति चरणे पलीयां ॥ रहो० ॥ पियुविण दीहते वरिस समोवड । न गमें स्वपनमें सेजडीयां ॥ रहो० ॥ ३ ॥ विरह दिवानी ब्रिजपति जोवन । वाली वनघर सेरडीयां ॥ रहो० ॥ अष्टभवांतर नेह निवाहत । नवमे भवते वीछलीयां ॥ रहो० ॥ ४ ॥ सहसा वनमांहे स्वामि सुणीनें । राजुल रैवत गिरि चलीयां ॥ रहो० ॥ पियुकर निजशिरें हाथे देवा । व्रतचाखे चारित्र शेलडीयां ॥ रहो० ॥ ५ ॥ जादववंश विभूषण नेमजी । राजुल मीठी वेललीयां ॥ रहो० ॥ ज्ञानविमल गुणे दंपती निरखत । हरषत होत मेरी आंख लीयां ॥ रहो० ॥६॥

॥ ❋ ॥ अथ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ कृष्ण चोथ चैत्रहतणी प्राणतथी आया । पोषवदि दशमी जनम त्रिभुवन सुख पाया । पोषवदि इग्यारशें लहे मुनिवर पंथ । कमठासुर उपसर्गनो टाल्यो पलीमंथ । चैत्रकृष्ण चोथह दिनें ए । ज्ञानविमल गुण नूर । श्रावण शुदि आठमें लह्या । अविचल सुख भरपूर ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ ❋ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जलधर अनुकारें । पुण्य वल्ली वधारे । कृत सुकृत संचारे विघननें जे विलारे । नवनिधि आगारें कष्टनी कोडि वारे । मुझ प्राणाधारे मात वामा मल्हारे ॥ १ ॥ अर जनम सुहावे वीर चारित्र पावे । अनुभव लयलावे केवल ज्ञान पावे । षटजे कल्याण संप्रतिजे प्रमाणें । सवि जिनवर भाण श्री निवासाहि ठाण ॥ २ ॥ दश विधि आचार ज्ञानना जिहां विचार दश सत्य प्रकार पच्चख्खाणादि विचार । मुनि दश गुण धार जेभया जिहां उदार । ते प्रवचन सार ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशि दिशि पाला जे महा लोग पाला । सुरनर महिपाला शुद्ध दृष्टी कृपाला । नय विमल विशाला ज्ञान लक्ष्मी मयाला । जय मंगल माला पास नामें सुलाला ॥ ४ ॥

॥ ❋ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ थारे माथे पचरंगी पाव सोनेरो छोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

भनुपामजिणेसर नुवन दिनेसर संक्रो ॥ साहिबजी ॥ लो ला अलवेसर धीरम मंदर नूधरो ॥ साहिबजी ॥ तुं अगम अगोचर कृत शुचि सुंदर संवरो ॥ सा० ॥ पद नमित पुरंदर तहुं छवि निरमल जलधरो ॥ सा० ॥ १ ॥ तुं अक्षय अरूपी ब्रह्मसरूपी ध्यानमां ॥ सा० ॥ ध्याये जे जोगी तुमगुण नोगी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकासी निश्चयवासी निजमतें ॥ सा० ॥ जिन आतम दरसी अमल अजेसी नयमतें ॥ सा० ॥ ॥ २ ॥ षट दर्शन नासे युक्ति निरासें शासनें ॥ सा० ॥ स्यादवाद विशालें सहज समाजे नावनें ॥ सा० ॥ तुं ज्ञाननें ज्ञानें आतम ध्यानें आतमा ॥ सा० ॥ परमागम वेदी नेद अनेदी नही तमा ॥ सा० ॥ ३ ॥ एक अनेके बहुत विवेकें देखियें ॥ सा० ॥ आतम ततकामी अगुण अकामी लेखियें ॥ सा० ॥ सविगुण आरामी ठो बहु नामी ध्यानमां ॥ सा० ॥ आपेगत नामी अंतरजामी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ ४ ॥ तुं अनीयन चारी नियन विचारी योगमां ॥ सा० ॥ अध्यातम सेली एम बहु फेली आगमें ॥ सा० ॥ तुं धर्म संन्यासी सहज विलासी समगुणें ॥ सा० ॥ मोहारि विनाशी तुं जित काशी कविजणे ॥ सा० ॥ ५ ॥ ज्ञान दर्शन खायक गुणमणी लायक नाथ छे ॥ सा० ॥ दुर्गति दुःख घायक गुणनिधि दायक हाथ छे ॥ सा० ॥ जिन मन मथ सायक त्रिनुवन नायक रंजणो ॥ सा० ॥ अनेकांति एकांती तुं वेदांती अगंजणो ॥ सा० ॥ ६ ॥ ध्यानानलयोगें पुद्गल नोगें तें दह्या ॥ सा० ॥ अंतररिपु हणीया मूलथी खणीया नविरह्या ॥ सा० ॥ तुंहेतु मर्मायो सुरवर नमियो सहुकहे॥सा०॥ए जगथी न्यारो चारित्र तुमारो कुणलहे ॥ सा० ॥७॥ इम तुम गुण थुणीयें कर्मनें हणीयें पलकमां ॥ सा० ॥ पण नवि अवगणीयें सेवक गणीयें ललकमां ॥ सा० ॥ वामाचे नंदा त्रिनुवन इंदा सं थुणे ॥सा०॥ ज्ञानविमल सूरिंदा तुमपय वंदा गुण नणे॥सा०॥८॥इति॥ ॥

॥ ॥ अथ श्री वर्धमान जिन चैत्यवंदन ॥ ॥

॥ ॥ शुदि आषाढ ठठ दिवसें प्राणतथी चवीया । तेरस चैत्रह शुदि दिनें त्रिशलायें जणीया । मृगशिर वदि दशमी दिनें आपे संजम आराधे

फिर रथ चलीयां ॥ रहो० ॥ पशुय पोकार सुणीय किय करुणा । छोलदी ए पशुपंखी चलीयां ॥ रहो० ॥ २ ॥ गोद विछाउं में बली जाउं । करुं वीनति चरणे पलीयां ॥ रहो० ॥ पियुविण दीहते वरिस समोवड । न गमें स्वपनमें सेजडीयां ॥ रहो० ॥ ३ ॥ विरह दिवानी विलपाति जोवन । वामी वनघर सेरडीयां ॥ रहो० ॥ अष्टभवांतर नेह निवाहत । नवमे भवते वीछलीयां ॥ रहो० ॥ ४ ॥ सहसा वनमांहे स्वामि सुणीनें । राजुल रैवत गिरि चलीयां ॥ रहो० ॥ पियुकर निजशिरें हाथे देवा । व्रतचाखे चारित्र शेलडीयां ॥ रहो० ॥ ५ ॥ जादववंश विभूषण नेमजी । राजुल मीठी वेलमीयां ॥ रहो० ॥ ज्ञानविमल गुणे दंपती निरखत । हरषत होत मेरी आंख लीयां ॥ रहो० ॥६॥

॥ ❋ ॥ अथ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ कृष्ण चोथ चैत्रहतणी! प्राणतथी आया । पोषवदि दशमी जनम त्रिभुवन सुख पाया । पोषवदि इग्यारशें लहे मुनिवर पंथ । कमठासुर उपसर्गनो टाल्यो पलीमंथ । चैत्रकृष्ण चोथह दिनें ए । ज्ञानविमल गुण नूर । श्रावण शुदि आठमें लह्या । अविचल सुख भरपूर ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ ❋ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जलधर अनुकारें । पुण्य वल्ली वधारे । कृत सुकृत संचारे वि घननें जे विभारे । नवनिधि आगारें कष्टनी कोडि वारे । मुझ प्राणाधारे मात वामा मल्हारे ॥ १ ॥ अर जनम सुहावे वीर चारित्र पावे । अनुभव लयलावे केवल ज्ञान पावे । षटजे कल्याण संप्रतिजे प्रमाणें । सवि जिनवर भाण श्री निवासाहि ठाण ॥ २ ॥ दश विधि आचार ज्ञानना जिहां विचार दश सत्य प्रकार पच्चख्खाणादि विचार । मुनि दश गुण धार जेभया जिहां उदार । ते प्रवचन सार ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशि दिशि पाला जे महा लोग पाला । सुरनर महिपाला शुद्ध दृष्टी कृपाला । नय विमल विशाला ज्ञान लक्षी मयाला । जय मंगल माला पास नामें सुखाला ॥ ४ ॥

॥ ❋ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ थारे माथे पचरंगी पाघ सोनेरो छोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

अनुपमजिणेसर जुवन दिनेसर संकरो ॥ साहिबजी ॥ ली ला अलवेसर धीरम मंदर जूधरो ॥ साहिबजी ॥ तुं अगम अगोचर कृत शुचि सुंदर संवरो ॥ सा० ॥ पद नमित पुरंदर तनुं छवि निरमल जलधरो ॥ सा० ॥ १ ॥ तुं अक्षय अरूपी ब्रह्मसरूपी ध्यानमां ॥ सा० ॥ ध्याये जे जोगी तुमगुण जोगी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकाशी निश्चयवासी निजमतें ॥ सा० ॥ जिन आतम दरसी अमल अजेसी नयमतें ॥ सा० ॥ ॥ २ ॥ षट दर्शन जासे युक्ति निरासें शासनें ॥ सा० ॥ स्यादवाद विशालें सहज समाजे जावनें ॥ सा० ॥ तुं ज्ञाननें ज्ञानें आतम ध्यानें आतमा ॥ सा० ॥ परमागम वेदी जेद अजेदी नही तमा ॥ सा० ॥ ३ ॥ एक अनेकें बहुन विवेकें देखियें ॥ सा० ॥ आतम ततकामी अगुण अकामी लेखियें ॥ सा० ॥ सविगुण आरामी छो बहु नामी ध्यानमां ॥ सा० ॥ आपेगत नामी अंतरजामी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ ४ ॥ तुं अनायत चारी नियत विचारी योगमां ॥ सा० ॥ अध्यातम सेली एम बहु फेली आगमें ॥ सा० ॥ तुं धर्म संन्यासी सहज विलासी समगुणें ॥ सा० ॥ मोहारि विनाशी तुं जिन काशी कविजणे ॥ सा० ॥ ५ ॥ ज्ञान दर्शन खायक गुणमणी लायक नाथ छे ॥ सा० ॥ दुर्गति दुःख घायक गुणनिधि दायक हाथ छे ॥ सा० ॥ जिन मन मथ सायक त्रिजुवन नायक रंजणो ॥ सा० ॥ अनेकांति एकांती तुं वेदांती अगंजणो ॥ सा० ॥ ६ ॥ ध्यानानलयोगें पुद्गल जोगें नें दह्या ॥ सा० ॥ अंतररिपु हणीया मूलथी खणीया नविरह्या ॥ सा० ॥ तुंहेतु समीयो सुरवर नमियो सहूरुहे॥सा०॥ए जगथी न्यारो चरित्र तुमारो क्रुणलहे ॥ सा० ॥७॥ इम तुम गुण थुणीयें कर्मनें हणीयें पलकमां ॥ सा० ॥ पण नवि अवगणियें सेवक गणीयें ललकमां ॥ सा० ॥ वामाचे नंदा त्रिजुवन इंदा सं थुणो ॥सा०॥ ज्ञानविमल सूरिंदा तुमपय चंदा गुण जणो॥सा०॥८॥इति॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ अथ श्री वर्धमान जिन चैत्यवंदन ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ शुदि आषाढ छठ दिवसें प्राणतथी चवीया । तेरस चैत्रह शुदि दिनें त्रिशलायें जणीया । मृगशिर वदि दशमी दिनें आपे संजम आराधे

शुदि दशमी वैशाखनी वर केवल साधै । काती कृष्ण अमावसीए । शिव गति करे उद्योत । ज्ञान विमल गौतम लहे । पर्व दीपोत्सव होत ॥ २४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जह्यो भवजल तीर धर्म कोटीर हीर । दुरति रज समीर मोह मूसार सीर । दुरित दहन नीर मेरुथी अधिक धीर । चरम श्री जिनवीर चरण कल्पद्रु कीर ॥ १ ॥ इम जिनवर माला पुण्य नीर प्रवाला । जग जंतु दयाला धर्मनी शास्त्र शाला । कृत सुकृत सुगाला ज्ञान लीला विशाला सुरनर महिपाला वंदता छे त्रिकाला ॥ २ ॥ श्री जिनवर वाणी द्वादशांगी रचाणी । सगुण रयण खाणी पुण्य पीयूष पाणी । नवम रस रंगाणी सिद्धि सुखनी निशाणी । दुह पीलण घाणी सांभलोभाव जाणी ॥ ३ ॥ जिनमत रखवाला जे वली लोग पाला । समकित गुणवाला देव देवी कृपाला । करो मंगल माला टालिने मोह हाला । सहज सुख रसाला बोध दीजें विशाला ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज गईथी हुं समवसरणमें ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वंदो वीर जिणेसर राया । त्रिशला माता जायाजी । हरि लंछन कंचन वनकाया । मुझ मन मंदिर आयाजी ॥ वंदोवीर० ॥ १ ॥ दुषम समये शासन जेहना । शीतल चंदन छायाजी । जे सेवंतां भविजन मधुकर । दिन दिन होत सवायाजी ॥ वंदो० ॥ २ ॥ ते धन्य प्राणी सदगति जाणी । जस मनमां जिन आयाजी । वंदन पूजन सेवन कीधी । तेकाजननी मायाजी ॥ वंदो० ॥ ३ ॥ कर्म कठिन भेदन बलवत्तर । वीर बिरुद जिन पायाजी । ए कल मल अतुली बल अरिहा । दुशमन दूर गमायाजी ॥ वंदो० ॥ ४ ॥ वंछित पूरण संकट चूरण तुं मात पिता तुं सहायाजी । सिंहपरें चारित्र आराधी । सुजश निशान वजायाजी ॥ वंदो० ॥ ५ ॥ गुण अनंत भगवंत विराजे । वर्धमान जिनराया । जी । धीर विमल कवि सेवक नय कहे । शुद्ध समकित गुण दायाजी ॥ वंदो० ॥ ५ ॥ इति ॥ इहां । पूरण जय वीयराय कहेवो ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शाश्वता अशाश्वता जिन चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल मंगलकार एही । सिद्ध सकल पयठाण । स्याद्वाद सा

धन पद एही अध्यातम गुणगाण ॥ १ ॥ (सहीए नमो जिणाणं) ॥ २ ॥ ए (आंकणी) ॥ त्रिहुं तेरखख्ख सग्ग कोमि जवणवई । सासय जिणहरमाणं । तेरशें नव्याशी कोमी सग्गसहि विंवह परिमाणं ॥ ३ ॥ सही० ॥ मेरु वेताढ्य वखारा कंचन । यमक कुंमद्रह जाणुं । एकत्रीश ओगणयासी जिनवर । मानवलोकें वखाणुं ॥ ४ ॥ स० ॥ त्रिलख इक्यासी सहस चारसो व्याशी अधिक विंब जाणुं । रुचक कुंडल नंदीसर प्रमुखें । सुंदर अशी चेइया णुं ॥ ५ ॥ स० ॥ अमशत शय सहसा चालीसा । बिंबतणुं परिमाणं । सरवाले बत्रीशसें गुण सही । तिर्यक् लोकें चेईयाणं ॥ ६ ॥ स० ॥ प्रतिमा त्रण लख सहस एकाणुं । चनसय तेवीस परिमाणं । साठ चोबारा अवर त्रिबारा । रुचक कुंड नंदीगाणं ॥ स० ॥ बार देवलोकें नवग्रैवेयकें । अ नुत्तर पंच विमाणं । लाख चोराशी सहस सत्ताणुं । त्रेवीश चेई जाणुं ॥ ७ ॥ स० ॥ एकसो बावन कोमि लख चोराणुं । सहस चुमालीस आणुं । सातशें साठ ऊपर उर्ध्व लोकें । जिन पमिमा मन आणुं ॥ ९ ॥ ॥ स० ॥ त्रिभुवन मांहे सासय जिनहर । सगवन्न लख्ख बसें व्याशी । आठ कोमि अथ प्रतिमा संख्या । सुणजो सम कित वासी ॥ १० ॥ स० ॥ पन्न रशें कोडी बेंतालीश कोमी । तेम अठावन्न लख्खा । छत्रीश सहस अशी व लि साधिक । सासय बिंबनी संख्या ॥ ११ ॥ स० ॥ एकसो वीश त्रिबारें प्रतिमा । चोमुखें शत चोवीश । पांच सभा तिहां साठ वधारो । एकशत अशी जगीश ॥ १२ ॥ स० ॥ रुषभ चंद्राननने वर्धमान । वारिखेण चनुनामें व्यंतर ज्योतिषी मांहे असंख्या । जिन वर पमिमा मानें ॥ १३ ॥ स० ॥ सकल सुरासुर जावना जावे । समकित गुण दीपावे । परित्त संसार करी शिव जावे । कुमति नेम न जावे ॥ १४ ॥ स० ॥ पातालेनें तिर्यक लोकें । पाणमय घणु परिमाण । कर्ध्व सग्गक्क पाणमय धणु माणुं । सासय असासय जाण ॥ १५ ॥ स० ॥ तीर्थ विशेष वली शासय विणु । शत्रुंजा दिक बहुला । ते सविहुने त्रिविधें नमतां । पातक जावे सगला ॥ १६ ॥ स० ॥ ज्ञानविमल प्रनुनाम जपंता । लहीये कोडि कल्याण । सनहु मनोरथ सगला सीके । जनम सफल सुविहाण ॥ १७ ॥ स० नयहर

णा कीधी केवल पशुवां देखीनेहो० के ॥ पशु० ॥ पूरण पाली प्रीत वली निज नारनेंहो० ॥ वली० ॥ आपी संजम ज्ञार पोहोंचाडी पारनें हो० ॥ पो० ॥ ४ ॥ जण जणशुं जे प्रीत करे ते जन घणाहो० ॥ करे० ॥ निरवाहे धरी नेहके ते विरला सुण्या हो० ॥ ते वि० ॥ राजिमतीनो कंत वखाणे कविजना हो० ॥ वखा ॥ तुह्मेतो दीधो छेहके तेहना थिरमना हो० के ॥ तेहना० ॥ ५ ॥ जादव नाथ सनाथ करो मुजने सदाहो० ॥ करो० ॥ दिओ मुज शिर हाथ होवे जेम संपदा हो० ॥ होवे० ॥ जलि जलि मरे पतंग, दीवानें मन नही हो० ॥ दीवा० ॥ नाणें मन असवार, घोडो दौडे सहीहो० ॥ घोडो० ॥ ६ ॥ सबला साथे प्रीत, निबलनें नवि कही हो० ॥ निबल० ॥ पण लागीजे थोडी, किहां जाओ वही हो० ॥ किहां० ॥ जे सज्जनशुं होय ते जीड न जंजीयेहो० के ॥ जीड० ॥ तुमचा मुनि ज्यारे होओ तो, कर्मनें भंजीयेहो० के ॥ कर्म० ॥ ७ ॥ तो दुशमन होय दूर, कोणे नविगंजीयेहो० ॥ कोणे० ॥ प्राणाधार पवित्रके, दरशन दीजीयेंहो० के ॥ दर० ॥ ज्ञानविमल सुखपूर, मलीनें कीजीयें हो० म० ॥ ८ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री आबूतीर्थ स्तवन० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चालो चालोने राज गिरिधर रमवा जइयें (ए चाल) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आवो आवोने राज श्री अर्बुद गिरिवर जइयें ॥ श्री जिनवरनी जक्ति करीनें आतम निर्मल थइयें ॥ आवो० ॥ आंकणी ॥ विमल वसहीना प्रथम जिणेसर । मुख निरखें सुख पइयें । चंपक केतकी प्रमुख कुसुम वर । कंठे टोडर ठवियें ॥ आवो ॥ १ ॥ जिमणे पासे लुणग वसही श्री नेमीसर नमीयें । राजि मती वर नयणें निरखो । दुःख दोहग सवि गमीयें ॥ आवो० ॥ २ ॥ सिद्धाचल श्री ऋषज जिणेसर । रेवत नेम समरीयें । ओ दो वसिनी यात्रा करता । बिहुं तीरथ चित्त धरीयें ॥ आवो० ॥ ३ ॥ मंडप मंडप विविध कोरणी । निरखी हियडे ठरियें । श्री जिन वरना बिंब निहाली । नरजव सफलो करीयें ॥ आवो० ॥ ४ ॥ अविचल गढ आदीश्वर प्रणमी । अशुज करम सवि हरीयें । पाश शांति निरखी जब नयणें । मन मोह्यो डुंगरीयें ॥ आवो० ॥ ५ ॥ पाजें चढतां उजम

बांधे। जेम घोडे पाखरीयें । सकल जिनेसर पूजी केशर । पाप पडल सवि हरीयें ॥ आवो० ॥ ६ ॥ एकण ध्यानें प्रभुने ध्यातां । मनमांहि नवि मरीयें ज्ञान विमल कहे प्रभु सुपसायें । सकल संघ सुख करीयें ॥ आवो० ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अष्टापद गिरि स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अष्टापद गिरि यात्रा करणकुं । रावण प्रतिहरी आया । पुष्पक नामें विमानें बेशी । मंदोदरी सुहाया ॥ १ ॥ श्री जिन पूजीयें लाल । समकित निर्मल कीजें । नयणें निरखी हो लाल । नरभव सफलो कीजें । हीयडे हरखी लाल । समता संग करीजें । (आंकणी) चउमुख चउगति हरण प्रसादें । चउवीसे जिनबेठा । चउदिशि सिंहासन समनासा । पूरवदिशि दोय जिठा ॥ श्री० ॥ २ ॥ संभव आदें दक्षिण चारे । पश्चिमे आठ सुपासा । धर्म आदि उत्तर दिशि जाणो । एवं जिनचउवीशा ॥ श्री० ॥ ३ ॥ बेठा सिंह तणें आकारे । जिन हर भरते कीधा । रयण बिंब मूरति थापीनें । जगजश वाद प्रसिद्धा ॥ ४ ॥ करे मंदोदरी राणी नाटक । रावण तांत बजावे । मादल वीणा ताल तंबूरो । पगरव ठम ठम कावे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ भक्ति भावें एम नाटक करतां । तूटी तंती विचालें । साधी आप नसा निज करनी । लघु कलाशुं ततकालें ॥ श्री० ॥ ६ ॥ द्रव्य भावशुं भक्ति न खंडी । तो अक्षय पद साध्युं समकित सुरतरु फल पामीनें । तीर्थंकर पद लाध्युं ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इणि परें भविजन जे जिन आगें । बहुपरें भावना भावे । ज्ञान विमल गुण नेहना अह निश । सुर नर नायक गावे ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इति० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री समेत शिखर स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समेत शिखर गिरि भेटीयें रे । मेटवा भवना पास । आतम सुख वरवा भणी रे । ए तीरथ गुण निवासरे ॥ १ ॥ भवियां भेवो तीरथ एह । समेत शिखर गुण गेहरे ॥ भवि० ॥ से० ॥ (ए आकणी) ॥ समेत शिखर कलपें कह्यो रे । वीश टुंक अधिकार । वीश तीर्थंकर शिव वर्या रे । बहु मुनिनें परिवाररे ॥ भ० ॥ २ ॥ से० ॥ सिद्ध क्षेत्र मां हे वस्यां रे । भाखें नय व्यवहार । निश्चय निज स्वरूपमां रे । दोय नय प्रभुजीना सार ॥ भ० ॥ ३ ॥ से० ॥ म० ॥ आगम वचन विचारतां रे । थति दुर्ग

मनयवाद । वस्तु तत्व जिणे जाणीयें रे । ते आगम स्यादवादरे ॥ ज० ॥ ४ ॥ से० ॥ स० ॥ जय रथ राय तणी परें रे । जात्रा करो मनरंग । जव दुःखने देइ अंजली रे । थाये सिद्धि वधूनो संगरे ॥ ज० ॥ ५ ॥ स० ॥ समकित युत जात्रा करेंरे । तो शिव हेतु थाय । जव हेतु किरिया त्यागथीरे । आतम गुण प्रगटायरे ॥ ज० ॥ ६ ॥ से० ॥ जेह समयें सम कित थयोरे । तेह समयें होय नाण । ज्ञान विमल गुरु जाखीयोरे । आवश्यक जाष्यनी वाणरे ॥ ज० ॥ ७ ॥ से० ॥ स० ॥ इति चौमाशी देववंदन विधिः ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ श्री पर्युषणपर्व स्तुतिः ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ सत्तरजेदी जिन पूजा रचीनें स्नात्रमहोछव कीजेजी । ढोल द मामा जेरी नफेरी झल्लरिनाद सुणीजेजी । वीरजिन आगल जावना जावी मानवजव फल लीजेजी । परब पजूसण पूरव पुण्यें आव्या इम जाणीजेजी ॥ १ ॥ मास पास वली दशम दुवालस चत्तारी अछ कीजेजी । ऊपर वलि दशदोय करीनें जिन चौवीश पूजीजेंजी । बमा कल्पनो बछकरीनें वीरवखाण सुणीजेजी । पमवानें दिन जन्म महोत्सव धवल मंगल वरतीजेजी ॥ २ ॥ आठ दिवसलगे अमर पलावी अछमनुं तप कीजेजी । नागकेतुनी परें केवल लहियें जो सुजजावें रहियेंजी । तेलाधर दिन त्रण्य कल्याणक गणधर वाद वदीजेजी । पास नेमीसर अंतर त्रीजे ऋषज च रित्र सुणीजेजी ॥ ३ ॥ बारशें सुत्रनें समाचारी संवत्सरी पमिक्कमियेजी । चैत्यप्रवामी विधिसुंकीजे सकल जंतुनें खामीजेजी । पारणानें दिन सामीव त्सल कीजे अधिक वमाईजी । मान विजय कहे सकल मनोरथ पूरो देवी सिद्धाईजी ॥ ४ ॥ इति ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ श्री नेम राजीमती बारमाशो ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ सीयालै खाट्ट जलीरे लाल (ए चाल) ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ तोरणथी रथ फेरीयोरे लाल । नीठुर नेम कुमार । प्रेमविलूधी प दमणी हो लाल । वीनवै राजुलनार ॥१॥ (हो रंगीला नेम, सुणमांहरी अर रस) । सहीयांसुं राजुल कहै हो लाल । मगसिर नायो पीउ । प्रीतम विण दाहरो हो लाल । धीरज न धरे जीव ॥ २ ॥ हो० ॥ पोसमहीनो आ

वीयो हो लाल । आयो मोडुख देण । तो सूरतनें सांवलाहो लाल । देखण तरसेंनेण ॥ ३ ॥ हो० ॥ माहमहीनो सीपमेंहो लाल । प्रीतमंग पोढे नारि प्रीतम विणहुं एकली हो लाल । केमरहुं निरधार ॥ ४ ॥ हो० ॥ होली खेले हेतसुंरे लाल । फागुणमें नरनारी । हुं किणसुं खेलुं हिवे हो लाल । पास नही भरतार ॥ ५ ॥ हो० ॥ चेतमहीनें चांदणीरे लाल । संजोगण सुख देण । विरहणनें वालम विनारे लाल । रोवन जावे रेण ॥ ६ ॥ हो० ॥ वन हरीया वेसाखमेंरे लाल । मांजररही महकाय । अरजसुणी अवला तणी हो लाल । तपन मिटावो आई ॥ ७ हो० ॥ जेठ तपे लू आकरो हो लाल । दाझे कोमल गात । ससनेही साहिव विनारे लाल । कुण पूछे सुखवात ॥८॥ हो० ॥ आसाढे काली घटा हो लाल । उनमि आयो मेह । कंत मिल्या निज नारसुंरे लाल । धरती मिलीया मेह ॥ ९ ॥ हो० ॥ श्रावण चमके दाम नी हो लाल । वनवरसे झलवाड । इण रुत सूनां एकली हो लाल । क्युं करि रेण विहाड ॥ १० ॥ हो० ॥ काली कालाहण मिली हो लाल । चाद्र वडे चरखंत । अरज सुणीनें साहिवा हो लाल । पूरो मोमन खंत ॥ ११ ॥ हो० ॥ आशोजे आंसुझरे हो लाल । नाह विना निसि दीस । मारन पूछी साहिवे हो लाल । राखिरह्यो मनरीस ॥ १२ ॥ हो० ॥ काती ढिढ ज्ञानी करोरे लाल । जाइ मिली गिरनार । देखी मुख निज नाहनो हो लाल । सफल गिणें अवतार ॥ १३ ॥ हो० ॥ संयमले पीउ में हथे होलाल । पांमे भ्रवनो पार । इणपर पालें प्रीतनी हो लाल । धन धन ते नरनारि ॥ १४ ॥ जे कीधी पसुऊपरे हो लाल । सो परिकरिज्यो देव । चंद्रजणी थोकरि दयाहो लाल । प्रभुचरणांरी सेव ॥ १५ ॥ हो० ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

इति श्री नेमिराजुल बारे मासो संपूर्णम ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ अजीमगंज नेमिजिन नूतन चैत्य प्रतिष्ठा स्त० ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ केशरियानें अराजको० (इस चालमें) ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ आज मैंतो प्रभु दरशण में पायो । मेरो रोम रोम हुलसायो

आ० ॥ अनंत काल भव जल माहि भमतां । मिथ्या मत भरमायो । कुमति नारसंग इतउत डोलत । चेतन बहु दुःख पायो ॥ आ० ॥ १ ॥ पुन्य संयोगै नरभवपामी । सुमति नार संग चायो । हीनपुण्यतें मोह पकरकै । विषय कषाय रमायो ॥ आ० ॥ २ ॥ सुगुरु प्रसादैं प्रभुगुण महमा । श्रवण सुणी हरषायो । अवसर पाय नेम पद पंकज । अलि जिम चित्त लुभायो ॥ आ० ॥ ३ ॥ समुद्र विजै सिवादेवीके नंदन । सहु सुर नर दिल भायो । इंद्र इंद्राणी मंगल गावत । मोतियन चोक पुरायो ॥ आ० ॥ ४ ॥ धन्य घमी धन्यभाग हमारो । आनंद आज सवायो । तारण तरण बाल ब्रह्मचारी नेम जिनंद वधायो ॥ आ० ॥ ५ ॥ पूरब देश अजीमगंजमें । श्री संघ चित्त उमायो । स्थापना चैत्य बिंव की करनें । जिनध्रम जगदीपायो ॥ आ० ॥ ६ ॥ सिखि सागर रजनीस नंद सन् । माधव सुद सुनि भायो । श्री जिन चंद सुरिंदके श्री वर । हितप्रिय मोहन गायो ॥ आ० ॥ ७ ॥ १९४३, वै । सु । ७ ॥ अजीमगंजे पंचायती श्री नेमिजिन नूतन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवपद स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ जीया चतुर सुजाण । नवपदके गुण गायरे ॥ जी० ॥ नवपद महिमा जगमें मोटी । गणधर पारन पायरे जी० ॥ १ ॥ करम निकाचित दूर करणकों । सुंदर सुध उपायरे ॥ जी० ॥ २ ॥ इनको पुष्ट आलंबन करतां अजरामर सुखपायरे ॥ जी० ॥ ३ ॥ ए जिनभए आगामी होयगे । नवपद संग पसायरे ॥ जी० ॥ ४ ॥ परम क्षमा शिव रमणी वरके । शमर शमर गुणगायरे ॥ जी० ॥ ४ ॥ इतिपदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ सकल शाश्वता अशाश्वता चैत्य नमस्कार स्त० ॥❀॥

॥ ❀ ॥सद्भक्त्या देवलोके रवि शशि भुवने व्यंतराणां निकाये । नक्षत्राणां निवाशे ग्रहगण पटले तारकाणां विमाने । पाताले पन्नगेंद्र स्फुटिक मणिकणे व्यस्तसांद्रां धिकारे । श्री मत्तीर्थं कराणां प्रति दिवस महं तत्र चैत्यांनिवंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचक गिरवरे कुंडले हस्तिदंते । वक्षारे कुट नंदीश्वर कनक गिरौ नैषधे नीलवंते । चित्रेशैले विचित्रे यमक गिरवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ २ ॥ श्री० ॥ श्री शैले वंध्य शृंगे विमल गिरवरे अर्बुदे पाव

के वा। सम्मेते तारकेवा कुलगिरि शिखरेष्टापदे स्वर्ण शैले। सह्याद्रौ चोज्ज यंते विपुल गिरवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ॥ ३॥ श्री०॥ आघाटे मेदपाटे क्षिति तट मुकुटे चित्रकोटे त्रिकोटे। लाटे नाटेच घाटे विकट घन तटे देवकूटे विराटे। कर्णाटे हेमकूटे निकट तरकटे चित्रकोटेच जोटे॥ श्री०॥ ४॥ श्री माले मालवेवा मलपति निखले मेखले पिठलेवा। नेपाले नाह लेवा कुवलय तिलके सिंघले मेखलेवा। डाहले कौशलेवा विगलित सलिले जंगलेवा तवाले॥ श्री०॥ ५॥ अंगे वंगे कलिंगे सुगत जनपदे सुप्रियागे तिलंगे। गोडे चौडे मुरेंद्रे वर तर द्रविडे उद्रीयाणे पुंड्रे। आद्रे माद्रे पुलिंद्रे द्रविपल कुवले कान्हि कुब्जे सुराष्ट्रे॥ श्री०॥ ६॥ चंपायां चंद्र मुख्यां गजपुर मथुरा पत्तने चोज्जयिन्यां। कौशांब्यां कौशला यां कनक पुरवरे देवगिर्यां मकाश्यां। नासिक्ये राजगेहे दशपुर नगरे भद्दले तांमलिप्त्यां॥ ७॥ श्री०॥ स्वर्गे मर्त्यंत रक्षे गिरि शिखर हृदे स्वर्नदी नीरतीरे। शैलाग्रे नागलोके जलनिधि पुलने भूरुहाणां निकुंजे। ग्रामे रण्ये वनेवा स्थल जल विषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं॥ ८॥ श्री०॥ इत्थं श्री जैन चैत्यं स्तुति मति मनसा भक्तिभाजां प्रसिध्दात्। प्रोद्यत्कल्याण हेतुः कलि मलि हरणं ये पठंते विशिष्टं। तेषां श्री तीर्थ यात्रा फल मति मतुलं जायते मानवानां। कार्यं सिध्दि स्तवोच्चै फलवति मततां चित्त मानंद कारी॥ ९॥ इति श्री तीर्थ माला स्तुति संपूर्णम्॥ ॐ॥

॥ ॐ॥ श्री आदिजिन आरती॥ ॐ॥

॥ ॐ॥ अपछरा करती आरती जिन आगे। हांरे जिन आगेरे जिन आगे। हांरे एतो अविचल सुखडा मांगे। हांरे नाभीनंदन पास॥ अप छरा०॥ १॥ तांथेई नाटक नाचती पाय ठमके। हांरे दोयचरणे झांझर झमके। हांरे सोवन घूघरी घमके। हांरे लेती फूदडी बाल॥ अप०॥ २॥ तालमृदंगनें वांशली डफवीणा। हांरे रूडा गावंती स्वरझीणा। हांरे मधुर सुरासुर नयणां। हांरे जोती मुखडुं निहाल॥ अप०॥ ३॥ धन्य मरुदेवी मातनें प्रभुजाया। हांरे तोरी कंचन वरणी काया। हांरे मेंतो पूरवपून्यें पाया। हांरे तोतो देख्यो दीदार॥ अप०॥ ४॥ प्राणजीवन

परमेश्वर प्रभुप्यारो हां रे प्रभु सेवक हुं छुं तारो । हां रे भवो भवना दुख मा वारो । हां रे तुमे दीनदयाल ॥ अप० ॥ ५ ॥ सेवकजाणी आपणो चित्त धरजो । हां रे मोरी आपदा सगली हरजो । हां रे मुनि माणक सुखीउ करजो । हां रे जाणी पोतानुं बाल ॥ अप० ॥ ६ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्राद्ध दिन कृत्य (तथा) देव वंदन भाष्यसें मंदर जाणेंकी पूजन करनेंकी विधि ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रथम श्रावक दो च्यार घमी रात्ररहते उठके (प्रथम) दिलमें नवकार मंत्रका स्मरण करै ॥ में कोणहुं, क्या मेरी जातिहै, क्या मेरा कृत्य है, क्या मेरा धर्महै (इत्यादि) धर्म जागरणासें दिलको सावचेत करै (पीछे) मलमूत्रकी बाधा दूर करके, अंगशुचीभूत करै ॥ सामायक, प्रतिक्रमणादि करके, विधिसंयुक्त घरदेराशरकी पूजाकरै (पीछे) यथाशक्ती अछा वस्त्र आभूषण पहरके, घोमा, हाथी, रथ, पालखी, सिपाई, नोकर, भाई, बंधु (इत्यादि) परिवार सहित पूजाके लायक, फल फूल प्रमुख, उत्तम, द्रव्य हाथ में लेके । भव्यजीवोंको मोक्ष मार्ग दिखाता हुआ, जिनशाशनकी प्रभावना करता हुआ, जिनमंदर जावै । जिनमंदरमें प्रवेश करके १० त्रिक विधि शाचवन करे (सो १० त्रिक लिखतेहे) (पहिला त्रिक) ३ निस्सही) कहणेंका (जिसमें) १ निस्सही, जिनमंदरमें पेशतेही कहै (कहे पीछे) संसार घर संबंधी कुभी कार्य विचारणा न करै ॥ १ ॥ (दूसरी) निस्सही, प्रदक्षिणा तीन दिये पीछे कहै । जिन मंदरमें फूटा टूटा ठीकक्रानेंकी सारसंभाल रक्खीथी सोभीछोमै । इहां द्रव्य पूजा करणी मोकली रही ॥ २ ॥ तीसरी निस्सही कहे पीछे, निकेवल भाव पूजा करै । पिण द्रव्य पूजा न करै ॥ ❋ ॥ यह प्रथम निस्सही त्रिक कहा ॥ ❋ ॥ ॥

॥ ❋ ॥ (दूसरा त्रिक) ज्ञान त्रिककी आराधना करनेंको प्रभूके दक्षिणावर्त्तसें तीन प्रदक्षिणादेवे ॥ ❋ ॥ (तीसरा त्रिक) मूल नायकजीके बिंबको पंचांग मिलाके, तीन वेर नमस्कार करे ॥ ३ ॥ (चौथा त्रिक) प्रभूकी अंग १ । अग्र २ । भाव ३ ॥ त्रिविध प्रकार पूजा करै ॥ (अब निस्सही किये पीछे । कृत्य, अकृत्य (तथा) पूजा विधि, संक्षिप्त लिखते हैं ॥

निस्सही किये पीछे, मनोगुप्ती, वचन गुप्ती, काय गुप्ती, करके युक्त रहै। पांचो इंद्रियांको बशमें रक्खै। गमनां गमनमें उपयोगी रहै। गीतादिक अन्यका सुनके चित्तमें व्याकुलता न रक्खे। कुछभी देव कार्यकों छोडके और कार्यकी विचारणा न करै। राज कथादि संपूर्ण विकथा छोडै। जन्म (और) कर्मके, अनुगत वचन न बोले (अर्थात्) कोईके माता पितादिक का किया थका, खोटा कार्यकों प्रगट न करै (तथा) कर्मानुगत वचन आंधेकों आंधा, गोलेकों गोला (इत्यादि वचन) नबोलै॥ निस्सही किये पीछे, जिन मंदरमें धर्म्म संयुक्त, आत्म हितकारी, प्रमाणोपेत वचन बोलना चाहिये॥ (जिसनें) मन, वचन, कायाके खोटै व्यापारोंका निषेध अपनी आत्मासें कियाहे (उसके भावसें) निस्सही होय (और) जिसनें दूषणका त्याग न कियाहे। उसके केवल शब्द उच्चारण मात्र, द्रव्य निस्सही होय (इसवास्ते) पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरके, आठतहके उज्जल वस्त्रसें मुखकोश बांधे। धूपादिकसें अंग अपना सुध करे। भावसें, दूशरी निस्सही कहते, मुलगुंभारैमें प्रवेश करै। जयणा संयुक्त पूजा करे। पूजा करते हुए, शरीरमें खाज न खुणें। खेल खंखार न करै। निकेवल भगवानकी स्तवनामें चित्त रक्खे। प्रथम सुगंधयुक्त जल पंचामृतसें स्नात्र करावे। सुकमाल अच्छा कोमल सुगंध युक्त वस्त्रसें भगवानका अंगलूहे। कपूर कस्तूरी मिश्रित सुध केशर चंदनका विलेपनकरै॥ सुभवर्ण, सुभगंध युक्त, जीवादि रहित, निर्दोस। गुलाब, चंपा, चंपेली, केवडा, जाई, जुई, मोगरादिक पुष्पसें पूजा करे। अष्टांग धूप अगरबत्ती खेवै॥ मंगलदीप करे। अखंड उज्जल अक्षतांसें प्रभूके सन्मुख अष्ट मंगलीक लिखे॥ दर्पण १। भद्रासण २। वर्धमान सरावसंपुट ३। श्रीवत्स ४। मछयुग ५। कलश ६। स्वस्तिक ७। नंद्यावर्त्त ८। (ऐसा) अष्ट मंगलकी रचना करे। पंच वर्ण फूलोंसे अष्ट मंगलीक पूजे। सुंदर कुंकम मिश्रित चंदनसें हत्थोदेवे। उत्तम नैवेद्य चढावे। अच्छा खाद्य फल चढावे। (इत्यादि) पूजाकीविधि, आरती पर्यंत। राय प्रशेणी, ग्यातार्धर्म कथा, जीवाभिगमादि, सिधांतोंमें लिख्ये मुजब करे (पीछे) अंतरंग भक्तीसें प्रभूके सन्मुख नाटक करे॥ (जैसें)

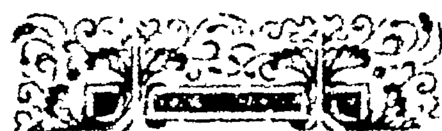
देवेंद्र, दानवेंद्र नारद, इनोंनें (तथा) उदाई राजाकी, राणी प्रभावतीनें द्रोपदीनें नाटक किया (और) रावण प्रमुख, कई जीवोंनें अष्टापदादि ऊपर नाटक करके, तीर्थंकर गोत्र उपार्जन किया (तैसें) प्रभूके सन्मुख शंकारहित होके । उत्तम पुरुष नाटक करै ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (अब) जल चंदन पुष्पादिकसें पूजा करै (सो) अंगपूजा ॥ १ ॥ प्रभूके सन्मुख नैवेद्य प्रमुख चढावै (सो) अग्र पूजा ॥ २ ॥ प्रभूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करै (सो) भाव पूजा ॥ ३ ॥ (यह द्रव्य पूजाका विचार गर्भित चोथा त्रिक कहा) ॥ ❋ ॥ (अब पांचमा त्रिक) ॥ ❋ ॥ तीन अवस्था विचारणी ॥ पिंडस्थ (१) पदस्थ (२) रूपातीत ॥ ३ ॥ इसमें पिंडस्थ अवस्थाके तीन भेद ॥ जन्मावस्था ॥ १ ॥ राज्यावस्था ॥ २ ॥ श्रमणावस्था ॥ ३ ॥ (और) केवल अवस्थाको विचार करणा (सो) पदस्थ अवस्था ॥ निरंजनाकार (सो) सिद्धावस्था । तिसकुं रूपातीत अवस्था कहतेहै ॥ ❋ ॥ (अबछठात्रिक) तीन दिशा छोडके प्रभूके सामनें निजर रखै । उर्द्ध १ ॥ अध २ ॥ तिरछी ३ ॥ दहणी । वांइ । पिछाडी । निजर नही करै ॥ ❋ ॥ (अब सातमा त्रिक) तीन वेर धरती प्रमार्जकें । उस ठिकाणें चैत्यवंदन करै ॥ ❋ ॥ (अब आठमा त्रिक) ॥ ❋ ॥ वर्णादिक तीन संपदाका ॥ हरफशुद्ध उच्चारण करै (सो) वर्ण शुद्धि ॥ १ ॥ हरफोंके अर्थपर आलंबन रक्खै (सो) अर्थशुद्धि २ ॥ आलंबन एक जिन प्रतिमाका रक्खै (सो) मन सुद्धि ॥ ३ ॥ ❋ ॥ (अब नवमात्रिक) ॥ ❋ ॥ तीन मुद्रा करनी ॥ जोग मुद्रा १ ॥ जिनमुद्रा २ ॥ मुक्ताशुक्ति मुद्रा ३ ॥ (इसमें) जोग मुद्रा किसकुं कहते है ॥ पद्म कोशाकारे । दोनुं हाथ परस्पर अंगुली मिलानी । एजोग मुद्रायें सक्रस्तव कहिये १ ॥ काउसग्ग मुद्रा (सो) जिन मुद्रा २ ॥ (और) दोसीपका जोडा जिस आकार हाथ रखना । (सो) मुक्ता शुक्तिमुद्रा ३ ॥ इस मुद्रासें प्रणिधान (जय वीयराय) इत्यादि करै (अब दशमात्रिक) ॥ ❋ ॥ प्रणिधान तीन ॥ जिन वंदन प्रणिधान १ ॥ मुनि वंदन प्रणिधान २ । प्रार्थना प्रणिधान ३ ॥ इसमें (जो) जावंति चे

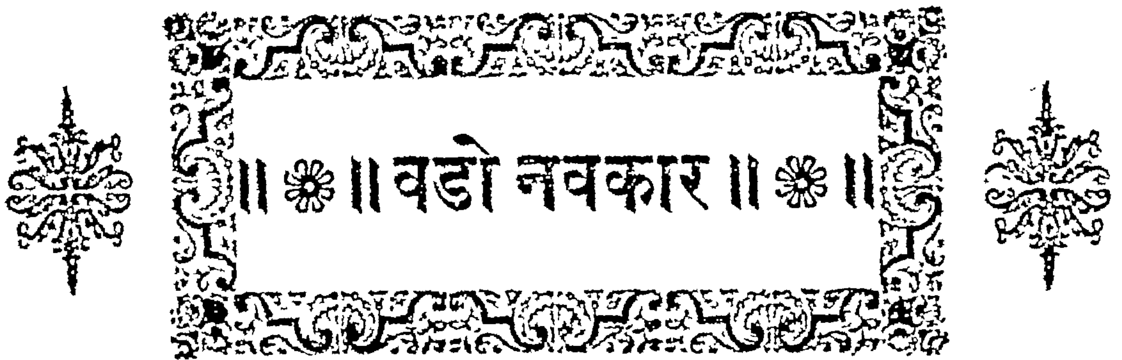
इयाइं (इत्यादि) इहसंतो तत्थ संताइं (तक) जिन वंदन प्रणिधान १ ॥ जावंति केवि साहु (इत्यादि) तिविहेण तिदंम विरियाणं (इहां तक) मुनि वंदन प्रणिधान २ ॥ जय वीयरायसें (लेकें) आन्नवम खंमा तक। प्रार्थना रूप प्रणिधान ३ ॥ ❀ ॥ (ऐसें दशत्रिकका पहला द्वार कहा) ॥❀॥ (अब पांच अभिगमन साचवणेंका दूसरा द्वार कहतेहें) ॥ ❀ ॥ सचित्त द्रव्य कुशमादिक अपनेंपास होय, उसकुं अलग रख देना १ ॥ (और) राज चिन्ह, मुगट, छत्र, खड्ग, चामर, पादुका, अचित्त वस्तू छोमना । आभूषण प्रमुख पहस्या रखना २ । मन एकाग्र करना ३ ॥ एक पट्ट उत्तरासंग करना ४ ॥ जिन विंब देखतेही (नमो भुवण वंधुणो) ऐसें नमस्कार करना ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ए दूसरा द्वार कहा ॥ ❀ ॥ (अब तीसरा द्वार दो दिशीका) पुरष दहणी दिशा वेठा। भगवंतकों वांदे ॥ स्त्री, बांइ दिश बैठके भगवंत को वांदे ॥ ❀ ॥ (अब चौथा द्वार तीन अभिग्रह) ॥ ❀ ॥ अभिग्रह देव वांदणांमें कहाहे ॥ (जघन्य) नव हाथ दूर वैठके देव वांदे १ ॥ (मध्यम) नव हाथसें उपरांत बैठके देव वांदे २ ॥ (उत्कृष्ट) ६० हाथ दूर वेठके देव वांदे ३॥ (अब पांचमा द्वार चैत्यवंदनका) ॥ ❀ ॥ (सो) जघन्य १॥ मध्यम २ ॥ उत्कृष्ट ३ ॥ तीन भेद हे (तिहां) णमो अरिहंताणं (इत्यादिक कहके) वा । एक दोय गाथाका नमस्कार कहके । शक्रस्तव कहना (ए जघन्य चेत्य वंदन १) जिस देव वंदनमें स्थापनार्हत स्तवदंमक। नमोत्थुणंसें (लेके) अरिहंत चेइयाणं (इत्यादिक संपूर्ण कही) एक स्तुति कहे (सो) ॥ मध्यम चैत्यवंदन (तथा) कोई आचार्य कहे ॥ पांच दंमक सहित। थूई गाथा (४) कहे (सो) मध्यम चैत्यवंदन कहिये ॥ (तथा) विधिपूर्वक शक्रस्तवादि पांच दंमक । जय वीयराय पर्यंत । आठ थुई ए देव वांदे । (सो) उत्कृष्ट चैत्य वंदन कहिये ॥ ❀ ॥ (अब छठा द्वार पंचांग प्रणिपात करे । दो जानु । दो हाथ (और) मस्तक (ए) पांच अंग मिलायके जमीनमें लगावे ॥ ❀ ॥ (अब सातमा द्वार) ॥ ❀ ॥ जघन्यें एक गाथासें लेकर उत्कृष्ट एक सो आठ श्लोक (तथा) काव्यसें प्रभूकी स्तवना करे ॥ ❀ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❁ ॥ अथ मोटी पंचतीर्थ आरती ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ पहली रे आरती प्रथम जिणंदा। शत्रुंजय मंमण रुषभ जिणंदा ॥ जय जय आरती आदिजिणंदकी ॥ दूशरी आरती मरुदेवी नंदा। जुगला धरम निवार करंदा ॥ जय० ॥ १ ॥ तीशरी आरती त्रिजुवन मोहे। रत्न सिंघासन मारा प्रजुजीनें सोहे ॥ जय० ॥ चोथी आरति नित्य नवी पूजा। देव रुषभ देव अवर न दूजा ॥ जय० ॥ २ ॥ पांचमि आरति प्रजुजीनें जावे। प्रजुजीना गुण सेवक इम गावे ॥ ज० ॥ ३ ॥ ❁ ॥ आरती कीजें प्रजु शांति जिणंदकी। मृगलंछनकी में जानं बलिहारी। जय जय आरती शांति तुमारी। विश्वसेन अचिराजीको नंदा। शांति जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ जय० ॥ ४ ॥ आरति कीजें प्रजु नेम जिणंदकी। शंख लंछनकी में जानं बलिहारी ॥ आ० ॥ समुद्रविजय शिवा देवीको नंदा। नेमि जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ॥ ५ ॥ आरति कीजै प्रजु पाश जिणंदकी। फणिंदलंछनकी में जानं बलि हारी ॥ आ० ॥ अश्वसेन वामा देवीको नंदा। पाश जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ॥ ६ ॥ आरति कीजै महावीर जिणंदकी। सिंह लंछनकी में जानं बलिहारी ॥ आ० ॥ शिद्धारथ त्रिशलाको नंदा। वीरजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ॥ ७ ॥ आरति कीजें प्रजु चोवीश जिणंदकी। चोवीश जिणंदकी में जानं बलिहारी। चरणकमल नित सेवत इंदा। चोवीश जिणंद मुख पूनम चंदा ॥ आ० ॥ ८ ॥ कर जोमी सेवक इम बोले। नहि कोइ माहरा प्रजुजीनें तोले ॥ आ० ॥ ९ ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❁ ॥



॥श्रीः॥



॥❀॥ वडो नवकार ॥❀॥

॥ ❀ ॥ किंकप्पत्तरु रे अयांण चिंतउ मणभितरि । किंचिंतामणि कामधेनु आराहोवहुपरि । चित्रावेली काजकिसै देसंतर लंघउ । रयणरासि कारण किसै सायरउलंघउ । चवदह पूरवसार युगे लधो ए नवकार । सयलकाज महियलसरै दुत्तरतरै संसार । केवलिभासिय रीतिजिके नवकार आराहै । भोगविसुक्ख अनंत अंत परमप्पयसाहै । इणझाणें सुररिद्धि पुत्त सुहविलसै वहुपरि । इणझाणें सुरलोक इंदपद पामेंसुन्दरि । एहमंत्र सासतो जगे अचिंत चिंतामणिएह । समरण पापसवे टलै रिद्धिसिद्धि नियगेह ॥ २ ॥ नियसिर ऊपर झांण मझचिंतवे कमलनर । कंचनमय अठदलसहित तिहांमांहिंकनकवर । तिहांवैठा अरिहंतदेव पउमासण फिटकमाणि । सेयवत्थ पहेरेवि पढमपय चिंतउ नियमणि । निवारिय चउगइगमण पामिय सासयसुक्ख । अरिहंतझाणइं तुमलहो जिमअजरामर सुक्ख ॥ ३ ॥ पनरजेय तिहां सिद्ध वीयपद जे आराहे । रातेविद्रुमतणें वणानियसोहग साहइ । रातीधोवत पहिर जपइ सिद्धहिं पुव्वइं दिसि । सयललोय तिहां नरहहोइ ततखिणसइंवासि । मूलमंत्र वसीकरण अवरसहु जगधंध । मणिमूली ओषधकरइ बुद्धिहीण जाचंध ॥ ४ ॥ दक्षिणदिसपंखडी जपे णमो आयरियाणं । सोवनवणह सीससहित उवएसहनाणं । रिद्धि सिद्धि कारणें भाल ऊपर जे ध्यावइ । पहिरवि पीलावत्थतेह मनवंछियपावइ । इण झाणेंनवनिधिहुवे रोगकष्टेनविहोइ । गजरथ हयवरपालखी । चामर

वन्न सिरजोइ ॥ ५ ॥ नीलवण उवझाय सीस पाढंता पश्चिम । आराहिजे अंग पुव्वधारंत मणोरम । पश्चिमदिश पंखडी कमल ऊपर सुहझाणं । जोवो परमाणंद देवगय तासु विमाणं । गुरु लघु जे लक्खे विउर तिहां नरबहुफल होइ । भावविहुणा जे जपे तिहां फलसिद्ध न कोइ ॥ ६ ॥ सर्वसाधु उत्तरविभाग सांमला बइठा । जिण धर्मलोय पयासयंत चारित गुणजिठा । मणवयण काएहिं जपे जे एकै झाणै । पंचवण तिहां नाणझाण गुण एहपमाणें । अनंतचोवीसी जगहुईए । होसी अवर अनंत । आदिकोई जाणें नही इण नवकारह मंत ॥ ७ ॥ एसो पंच नमोकारो । पद दिशिअगनेहिं । सव्व पावप्पणासणो पदजप नेरेहिं । वायवदिस झाएह मंगलाणंचसव्वेसिं । पढमंहवइमंगलं ईसाणपएसिं । चिहुंदिस चिहुं विदिसे मिलिय अठदल कमल ठवेइ । जो गुरु लघु जाणी जपे सो घणपापखवेइ ॥ ८ ॥ इणप्रभावधरणिंदहुन्त पायालहसामी । समली कुमर उप्पण भिल्ल सुरलोयहगामी । संबल कंबल वेबलध पहुता देवांकप्पे । सूलीदीधो चोर देव थयोनवकारह जप्पें । शिवकुमार मनवंचिकरि । जोगीलीयो मसांण । सोनापुरसो सीधलो । इणनवकार प्रमाण !! ९ ॥ छींकेबैठो चोर एक आकासैगामी । अहिफिट्टी हुइ फूलमाल नवकारह नामी । वालरुआ चारंत बाल जलनदीप्रवाहे । वींध्यो कंटहि उयर मंत जपियो मनमांहे । चिंत्या काज सवे सरे । ईरति परति विमास । पालितसूरि तणी परे । विद्या सिद्धआकास ॥ १० ॥ चोरधाड संकट टले राजावसिहोवे । तित्थंकर सो होइ लाखगुणविधिसुं जोवे । साइण डाइण भूत प्रेत वेताल न प्रहवइ । आधि व्याधि ग्रहतणी पीड ते किमहि न होवइ । कुष्ठ जलोदर रोग सवे नासइ एणहमंत । मयणासुंदरितणीपरे नवपय झाण करंत ॥ ११ ॥ एक जीह इनमंत्रतणा गुण किता वखाणुं । नाणहीण छउमत्थएह गुण पारन जाणुं । जिमसेत्तुंजे तित्थराउ महिमा उदयवंतो । तिममंतह धुरि एह मंत्रराजा जेवंतो । तित्थंकरगणहरपणिय चउदे पूरवसार । इणगुण अंत न कोलहइ गुणगुरुउ नवकार ॥ १२ ॥ अडसंपय नवपय सहित इगसठ लघु अक्खर । गुरुअक्खर सत्तेव एहजाणो परमाक्खर । गुरुजिणवल्लहसूरिभ

णे सिवसुक्खहकारण । नरय तिरियगइ रोग सोग बहुदुक्ख निवारण । जल थल पब्बय वन गहन समरण हुवे इकचित्त । पंचपरमेष्ठि मंत्रहतणी सेवा देज्यो नित्त ॥ १३ ॥ इति पंच परमेष्ठि नमस्कारमहात्म्यसंपूर्णम् ॥

॥ ❋ ॥ अथ तिजय पहुत्त स्तोत्र ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ तिजय पहुत्त पयासं । अठ महा पाडिहेर जुत्ताणं । समय खित्त छिआणं । सरेमि चक्कं जिणिंदाणं ॥ १ ॥ पणवीसा य असीया । पनरस पणास जिणवर समूहो । नासेउ सयलदुरिअं । भविआणं भत्तिजुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणयाला विअ । तीसा पणहत्तरी जिणवरिंदा । गह भूअ रक्ख साइणी । घोरुवसग्गं पणासेउ ॥ ३ ॥ सत्तरि पणतीसाविअ । सठी पंचेव जिणगणोएसो । वाहि जल जलण हरि करि । चोरारि महाभयं हरउ ॥ ४ ॥ पणपणाय दसेवअ । पणठी तहयचेव चालीसा । रक्खंतु मे सरीरं देवा सुरपणमिआ सिधा ॥ ५ ॥ ॐ हरहुंहः सरसुंसः । हरहुंहः तहयचेव सरसुंसः । आलिहअ नामगप्भं । चक्कं किर सव्वउ भद्दं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणि पणत्ति वज्जश्रृंखला । तहय वज्जअंकुसिआ । चक्केसरि नरदत्ता । कालि महाकालि तहयगोरी ॥ ७ ॥ गंधारि महाजाला । माणवि वइरुट तहयअछुत्ता । माणसि महमाणसिआ । विजादेवीउ रक्खंतु ॥ ८ ॥ पंचदस कम्मभूमिसु उप्पन्नं सत्तरिं जिणाणसयं । विविहरयणाए वण्णो । वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥ ९ ॥ चउतीस अइसय जुआ । अठ महापाडिहेर कयसोहा । तित्थयरा गयमोहा । झाए अव्वा पयत्तेण ॥ १० ॥ ॐ वरकणय संखविद्दुम । मरगय घणसंनिहं विगय मोहं । सत्तरिसयं जिणाणं । सव्वामरपूइअं वंदे स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ भुवणवइ वाणमंतर । जोइसवासी विमाणवासीअ । जे केवि दुठदेवा । ते सव्वे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेणं । फलहे लिहिऊण खालिअंपीअं । एगंतर गहभूगय । साइणिभूअंपणासेइ ॥ १३ ॥ इय सत्तरिसय जंतं । सम्मंमंतं दुवारि पडिलिहिअं । दुरिआरि विजयवंतं । निब्भंतं निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥ इति सप्तत्युत्तरशतजिनचक्र स्तोत्रं ॥

॥ ❀ ॥ अथ दोसावहार स्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोसावहारदक्खो । नालीयायर वियासिगोपसरो । रयणत्तयस्सज णउ । पासजिणो जयउ जयचक्खू ॥ १ ॥ कयकुवलय पडिबोहो । हरिणं कियविग्गहो कलानिलउ । विहियार विंद महणो । दियराओ जयउ पास जिणो ॥ २ ॥ कंतीइ निज्जिणंतो । सिंदूरं पुहविनंदणो कूरो । जयजंतुश्रम यवको । सुमंगलो जयउ पहुपासो ॥ ३ ॥ उप्पलदलनीलरुई । हरिमंगल संथुओ इलाणंदो । रयणीयरदारउ मह । बूहोपसीयउ पासजिणो ॥ ४ ॥ नाहियवाय वियड्ढो । नायत्थोणायरायकयपूउ । सिरिपासनाहदेवो । देवाय रिउ सुहंदिसउ ॥ ५ ॥ रायावट्ट समुज्जल । तणुप्पह मंडलोमहाभूई । असुरे हिंनमिज्जंतो । पासजिणिंदो कवीजयउ ॥ ६ ॥ तिमिरासि समारूढो । संतो दुक्खावहोजयंमिथिरो । बहुल तमासरिससरी । जहचक्खुसुउ जयउपासो ॥ ७ ॥ कवलीकयदोसायर । मायंडरहं श्रहो तणुविमुक्कं । लोयाभरणीभूयं । पासजिणं सत्तमंसरह ॥ ८ ॥ दुरिआइं पासनाहो । सिहावमाली नहो भ वणकेऊ । दूरंतमरासीउ । सत्तमठाणठिउ हरउ ॥ ९ ॥ इय नवगह थुइग भ्भं । जिणपहसूरीहिं गुंफिअं थवणं । तुहपास पढइ जोतं । असुहाविगहा नपीडंति ॥ १० ॥ इति नवग्रहस्तुतिगर्भित श्रीपार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जगद्गुरु ९ ग्रहस्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जगद्गुरु नमस्कृत्य । श्रुत्वा सद्गुरुभाषितं । ग्रहशांतिं प्रवि स्यामि । लोकानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ जिनेंद्राः खेचराज्ञेया । पूजनीया विधिक्रमात । पुष्पैर्विलेपनै धूपैः । नैवेद्यै स्तुष्टिहेतवे ॥ २ ॥ पद्मप्रभस्यमार्त्तंडः चंद्र श्चंद्रप्रभस्यच । वासुपूज्योभूमिपुत्रो । बुधोप्यष्टजिनेश्वराः ॥ ३ ॥ विमलानंतधर्माणां । शांति कुंथु नमि स्तथा । वर्द्धमानो जिनेंद्राणां । पादपद्मे बुधंन्यसेत् ॥ ४ ॥ ऋषभाजितसुपार्श्वा । श्चाभिनंदनशीतलौ । सुमतिःसंभ वःस्वामी । श्रेयांसश्चबृहस्पतिः ॥ ५ ॥ सुविधे कथितः शुक्रः । सुव्रतश्चश नैश्वरः । नेमिनाथोभवेद्राहुः । केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥ ६ ॥ जन्मलग्नेचरा शौच । यदा पीडंति खेचराः । तदा संपूजयेद्धीमान् । खेचरैः सहितान् जि नान् ॥ ७ ॥ पुष्पैर्गंधादिभिर्धूपै । नैवेद्यैः फलसंयुतैः । वर्णसदृस दानैश्च

वासोभिर्दक्षिणान्वितैः ॥ ८ ॥ ॐ आदित्यसोम मङ्गल । बुधगुरुशुक्र शनैश्च रोराहुः । केतुःप्रमुखाखेटा । जिनपतिपुरतोवतिष्ठंतु ॥ ९ ॥ जिननामकृतोच्चारा । देशनक्षत्रवर्णके । स्तुताश्चपूजिताभक्त्या । ग्रहाः संतुसुखावहा ॥ १० ॥ जिनानामग्रतः स्थित्वा । ग्रहाणांतुष्टिहेतवे । नमस्कारशतंभक्त्या । जपेदष्टोत्तरं नरं ॥ ११ ॥ भद्रबाहु रुवाचेदं । पंचमः श्रुतकेवली । विद्याप्रवादतः पूर्वाद्‌ । ग्रहशांतिर्विनिर्मितः ॥ १२ ॥ इति श्रीनवग्रहशांतिकारकजिनस्तोत्रं ॥

॥ ❀ ॥ अथ धम्मो मंगल स्वाध्याय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धम्मो मंगलमुक्किठं । अहिंसा संजमो तवो । देवावि तं नमंसंति । जस्स धम्मेसयामणो ॥ १ ॥ जहा दुम्मस्सपुप्फेसु । भमरो आविअइरसं । नय पुप्फं किलामेइ । सोअपीणेइअप्पयं ॥ २ ॥ एमेए समणावुत्ता । जेलोए संति साहुणो । विहंगमाव पुप्फेसु । दाणभत्तेसणेरया ॥ ३ ॥ वयंच वित्तिलब्भामो । नवकोइउवहम्मइ । अहागडे सूरीयंते । पुप्फेसुभमरो जहा ॥ ४ ॥ महुकारसमावुद्धा । जे भवंति अणिस्सिआ । णाणापिंडरयादंता । तेणवुच्चंति साहुणोत्तिबेमि ॥ ५ ॥ दुमपुप्फियानामअज्झयणंसम्मत्तं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ अथ जिनपंजरस्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं अर्हद्भ्योनमोनमः । ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः । ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं आचार्य्येभ्योनमोनमः । ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हंउपाध्यायेभ्यो नमोनमः । ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हंश्री गौतमस्वामि प्रमुख सर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एषः पंचनमस्कारः । सर्वपापक्षयंकरः । मंगलानांचसर्वेषां । प्रथमं भवतिमंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ जएविजए । अर्हंपरमात्मनेनमः । कमलप्रभसूरिंद्रो । भाषतेजिनपंजरं ॥ ३ ॥ एकभक्तोपवासेन । त्रिकालंयः पठेदिदं । मनोभिलषितंसर्वं । फलंसलभतेध्रुवं ॥ ४ ॥ भूशय्या ब्रह्मचर्येण क्रोधलोभविवर्जितः । देवताग्रेपवित्रात्मा । षण्मासैर्लभतेफलं ॥ ५ ॥ अर्हंतंस्थापयेन्मुर्धनि । सिद्धंचक्षुर्ललाटके । आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये । उपाध्यायंतुघ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृंदं मुखस्याग्रे ॥ मनःशुद्धंविधायच । सूर्यचंद्रनिरोधेन । सुधीःसर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी । वामपार्श्वे स्थितो

जिनः। अंगसंधिषु सर्वज्ञ। परमेष्टिशिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वाशांश्रीजिनोरक्षे। दाग्नेयींविजितेंद्रियः । दक्षिणाशांपरंब्रह्म । नैरुतिंचत्रिकालवित् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो । वायवंपरमेश्वरः । उत्तरांतीर्थकृतसर्वा। मीशानींचानिरंजनः ॥ १० ॥ पातालंभगवानर्हं । नाकाशं पुरुषोत्तमः । रोहिणी प्रमुखा देव्यो। रक्षंतुसकलंकुलं ॥ ११ ॥ ऋषभोमस्तकंरक्षे । दजितोपिविलोचने। संभवःकर्णयुगलं। नाशिकां चाभिनंदनः ॥ १२ ॥ उष्टौ श्रीसुमती रक्षेत् । दंता न्पद्मप्रभोविभुः। जिह्वां सुपार्श्वदेवोयं । तालु चंद्रप्रभोविभुः ॥ १३ ॥ कंठं श्रीसुविधीरक्षेत्। हृदयं श्रीसुशीतलः । श्रेयांसोवाहुयुगलं वासुपूज्यः करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुली विंमलोरक्षे। दनंतोसौस्तनावपि। सुधर्मो प्युदरा स्थीनि। श्रीशांतिर्नाभिमंडलं ॥ १५ ॥ श्रीकुंथुर्गुह्यकंरक्षे। दरोरोमकटीतटं। मल्लिरुरूपृष्ठिवंशं । जंघेचमुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमीरक्षेत् । श्रीनेमिश्चरणद्वयं । श्रीपार्श्वनाथःसर्वांगं। वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवी जलतेजस्क । वाय्वाकाशमयंजगत्। रक्षेदशेषपापेभ्यो । वीतरागोनिरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारेस्मशानेवा । संग्रामेशत्रुसंकटे । व्याघ्रचौराग्निसर्पादि । भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणप्राप्ते । दारिद्यापत्समाश्रिते । अपुत्रत्वेमहादोषे। मूर्खत्वेरोगपीडिते ॥ २० ॥ डाकिनी शाकिनी ग्रस्ते । महा ग्रह गणार्दिते। नद्युत्तारे ध्ववैषम्ये। व्यसनेचापदिस्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुत्थाय। यःस्मरेज्जिनपंजरं। तस्य किंचिद्भयंनास्ति। लभ्यते सुखसंपदं ॥ २२ ॥ जिनपंजर नामेदं। यःस्मरत्यनुवासरं । कमलप्रभराजेंद्रः । श्रियंसलभतेनरः ॥ २३ ॥ प्रातःसमुत्थायपठेत्कृतज्ञो । यस्तोत्रमेतज्जिनपंजराख्यं। आसादयेत्सः कमलप्रभाख्यं । लक्ष्मीं मनोवांछितपूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे । देवप्रभाचार्य्यपदाब्जहंसः । वादींद्रचूडामणिरेपजेनो। जीयाद्गुरुः श्रीकमलप्रभाख्यः ॥ २५ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रसंपूर्णम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ इस महाप्रभावीक जिनपंजरस्तोत्रकों सुद्धगुरूकेपास सीखके प्रभातसमें सदागुणें तो कोई शरीरमें उपद्रव न होय ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ लघु जिनसहस्रनामः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने । वक्ष्ये तस्यैव नामा
नि । मोक्ष्यसौख्याभिलापया ॥ १ ॥ निर्मलः शाश्वतो शुद्धः । निर्विकल्पो
निरामयः । निःशरीरो निरातंको । सिद्धः सूक्ष्मो निरंजनः ॥ २ ॥ निष्कलं
को निरालंबो । निर्मोहो निर्मलोत्तमः । निर्भयो निरहंकारो । निर्विकारो
थनिषक्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषो निरुजःशांतः । निर्भेद्यो निर्ममःशिवः । निस्त
रंगो निराकारो । निष्कर्मोनिष्कलप्रभुः ॥ ४ ॥ निर्वादो निरुपज्ञानः । नि
रागो निरवोजिनः । निःशब्दःप्रतिमश्लेष्टः । उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥ ५ ॥
निःसंगात् प्राप्तकैवल्यो । नैष्टकः शब्दवर्जितः । अनिंद्यो महापूतात्मा । जग
त्शिखर शेखरः ॥ ६ ॥ निःशब्दो गुणसंपन्न । पापताप प्रणाशनः । सोपि
योगात् शुभंप्राप्तः । कर्मचोतिबलावहः ॥ ७ ॥ अजरो अमरः सिद्धः । अ
चिंतःअक्षयो विभुः । अमूर्त्तः अच्युतोब्रह्म । विष्णुरीश प्रजापतिः ॥ ८ ॥
अनिंद्यो विश्वनाथश्च । अजो अनुपमोभवः । अप्रमेयो जगन्नाथ । बोधरूपो
जिनात्मकः ॥ ९ ॥ अव्ययः सकलाराध्यो । निष्पन्नो ज्ञानलोचनः । अछे
द्यो निर्मलो नित्यः । सर्वसल्यविवर्जितः ॥ १० ॥ अजेयः सर्वतोभद्रः ।
निष्कषायो भवांतकः । विश्वनाथः स्वयंबुद्धः वीतरागोजिनेश्वरः ॥ ११ ॥
अंतको सहजानंदः । अवाङ्मानसगोचरः । असाध्यःशुद्धचैतन्यः । कर्म नो
कर्मवर्जितः ॥ १२ ॥ अनंतो विमल ज्ञानी । स्पृहीश्च निष्प्रकाशकः । कर्म्मो
जितो महात्मानः । लोकत्रयशिरोमणिः ॥ १३ ॥ अव्याबाधो वरःशंभुः ।
विश्ववेदी पितामहः । सर्वभूताहितोदेव । सर्वलोकसरण्यकः ॥ १४ ॥ आ
नंदरूपचैतन्यो । भगवां त्रिजगद्गुरुः । अनंतानंतधीशक्तिः । सत्यव्यक्तव्य
यात्मकः ॥ १५ ॥ अष्टकर्म्मविनिर्मुक्तः । सप्तधातुविवर्जित । गौरवादित्रया
दूरः । सर्वज्ञानादिसंयुतः ॥ १६ ॥ अभयः प्राप्तकैवल्यः । निर्माणो निरपे
क्षकः । निष्कलं केवलज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्रदायकः ॥ १७ ॥ अनामयो
महाराध्यो । वरदो ज्ञानपावकः । सर्वेशःसतसुखावासः । जिनेंद्रोमुनिसंस्तुतः
॥ १८ ॥ अन्यूनपरमज्ञानी । विश्वतत्वप्रकाशकः । प्रभुर्वो भगवान्नाथः । प्र
स्तुतः पुण्यकारकः ॥ १९ ॥ शंकरः सुगतो रौद्रः । सर्वज्ञो मदनांतकः । ईश्व

रो भुवनाधीशः । सचित्तः पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सद्योजातमहात्मानं । विमुक्तो मुक्तिवल्लभः । योगींद्रो नादिसंसिद्धः । निरीहो ज्ञानगोचरः ॥ २१ ॥ सदा शिवां चतुर्वक्रः । सत्सौख्य त्रिपुरांतकः । त्रिनेत्रः त्रिजगत्पूज्यः । कल्याणको ष्टमूर्त्तिकः ॥ २२ ॥ सर्वसाधुजनैर्वंद्यः । सर्वपापविवर्जित । सर्वदेवाधिकोदेवोः । सर्वभूत हितंकरः ॥ २३ ॥ स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धःपापनाशनः । तनुमात्रश्चिदानंदः । चैतन्यश्चैत्यवैभवः ॥ २४ ॥ सकलातिशयोदेव । मु क्तिस्थोमहतांमहः । मुक्तिकार्यायसंतुष्टो । निरागः परमेश्वरः ॥ २५ ॥ महा देवो महावीरो । महामोहविनाशकः । महाभावो महादर्शः । महामुक्तिप्र दायकः ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महात्मकः । महर्द्धि को महावीर्यो । महांतिकपदस्थितः ॥ २७ ॥ महापूज्यो महावंद्यो । महा विघ्नविनाशकः । महासौख्यो महापुंसो । महामहिमअच्युतः ॥ २८ ॥ मुक्ता मुक्तिजसंबोधः एकानेकाविनिश्चलः । सर्वबंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानकः ॥ २९ ॥ महाशूरो महाधीरो । महादुःखविनाशकः । महामुक्तिप्रदोधीरो । म हाद्द्यो महागुरुः ॥ ३० ॥ निर्मारोमारविध्वंसी । निष्कामोविषयाच्च्युतः । भ गवंतो महाशांतो । शांतिकल्याणकारकः ॥ ३१ ॥ परमात्मा परंज्योतिः । परमेष्ठी परमेश्वरः । परमात्मापरानंदोः । परंपरम आत्मकः ॥ ३२ ॥ प्रस्तुता नंतविज्ञानी । सख्यानिर्वाणसंयुतः । नाकृतिं नाक्षरोवर्णी । व्योमरूपो जिता त्मकः ॥ ३३ ॥ व्यक्ताव्यक्तजसंबोधः । संसारछेदकारणः । निरवद्योमहा राध्यः । कर्मजिद्धर्मनायकः ॥ ३४ ॥ बोधसत्सु जगद्वंद्यो । विश्वात्मा नर कांतकः । स्वयंभू पापहृत्पूज्यः । पुनीतोविभवःस्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो म हातीतो । रूपातीतो निरंजनः । अनंतज्ञानसंपूर्णो । देव देवेशनायकः॥३६॥ वरेण्योभवविध्वंसी । योगिनांज्ञानगोचरः । जन्ममृत्युजरातीतः । सर्वविघ्नहरो हरः ॥ ३७ ॥ विश्वदृक्भव्यसंबंधः । पवित्रोगुणसागरः । प्रसन्नः परमा राध्यः लोकालोकप्रकाशकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्भो जगत्स्वामी । इंद्रवंद्यःसुरार्चितः । निष्प्रपंचोनिरातंको । निःशेष क्लेशनाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोकसंसेव्यो लोकालोक विलोकनः । लोकोत्तमो त्रिलोकेशो । लोकाग्र शिखरस्थितः

॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि । ये पठन्ति पुनः पुनः । ते निर्वाणपदंयांति । मुच्यतेनात्र संशयः ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इति भद्रबाहुस्वामिना विरचितं लघुसहस्रनाम संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वुटकर महाप्रभावीकस्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकलमङ्गल केलिनिवेशनं । सहृदयं हृदयं गमदेशनं । अभिनतोत्तम भक्तिसुरेश्वरं । नमत शीतलनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ सहजसुन्दर सद्गुण मंन्दिरं । विमल केवलबोध विकस्वरं । अतिसुवर्णसुवर्ण समद्युतं । प्रवरबंधुरल क्षणसंयुतं ॥ २ ॥ (युग्मं) यदीयभक्ति र्भविनां भवे भवे । भवेदभीष्टार्थनिदानमद्भुतं । सएव नन्दात्म समुद्भवो जिनः। समर्चनीयः खलुशीतलः प्रभुः॥३॥ कर्मोज्जितस्तान् भविनः सुशीतलान् । कुर्वन्मुदावाक् सुधया दयापरः । सदेव देवो भवतात्सदेव मे । सदिष्ट सिध्द्यै जिनराजशीतलः ॥ ४ ॥ अधिगतशिवशर्मा वीतमोहादिकर्मा । दृढरथ तनुजन्मा सर्वतः साधधर्मो । त्रिदशमहित मूर्त्तिः स्फूर्त्तिमत्पुण्यकीर्त्तिः । जयतु गतभवार्त्तिः शीतलः सौम्यमूर्त्तिः ॥५॥ ॥ ❀ ॥ इति श्रीशीतलजिनःस्तोत्रम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀॥

॥ ❀ ॥ विशदगुण विचित्रं सच्चरित्रं दधानो। दलित दुरितराशि र्विश्वविश्वावदातः । प्रकट महिमरम्यो दुर्मतीनामगम्यो । जयतु जिनपतिः श्रीपार्श्वचिंतामणीशः ॥ १ ॥ कमठ कुमतिवल्ली मूल मुन्मूलयन्ती । पदमकृतपदाब्जे यस्य भृङ्गीवपद्मा । अविकृतमति कायोत्सर्गमुद्रान्वितोसौ । जगतिबहुमतोस्मान् पातुवामांगजन्मा ॥ २ ॥ अविचलमणिविभ्रत सत्फणानां सहस्रं । बहुलविमलभास्व द्भूषणोद्भासिगात्रः । गुरुतर वरभक्त्या भक्तचित्ताङ्गभाजां । भवतु शिवसमृध्द्यै चाश्वसेनिर्जिनेंद्रः ॥ ३ ॥ कुपितकरिमृगेश व्यालदावानलाब्धिप्रहरणगदगुप्त्यातंकशंकापहर्त्ता । विकसितमुखपद्मः सत्पुरेसूरताख्ये । जयतु भुजगलक्ष्मीभ्राजमानोजिनेंद्रः ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥ ॥ ❀ ॥ इति पार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यस्य ज्ञानदयासिन्धो । र्दर्शनंश्रेयसे ध्रुवं । सश्रीमानपार्श्वतीर्थेशो निषेव्यः सततं सतां॥१॥वामासूनोर्यशः पुंजे । स्गायस्यानघागुणाः । रमयंते येन सस्मायां । भवेत् प्राचीन बर्हिषां ॥ २ ॥ विहाय विषयासक्तान् ।

संसारिक सुरासुरान् । सेव्यता मक्तयोधीराः । पार्श्वे देवो परःप्रभुः ॥ ३ ॥ जिनाः सर्वार्थदानेन । येन कल्पद्रुमाश्रपि । भवेदभ्यर्चितो लोके । सश्रियेचामृतायच ॥ ४ ॥ संस्तुतो मधुरश्लोकैः । जैनलाभप्रदायकः । कल्याणकारको भूयात् । श्रीमान्शंखेश्वरःप्रभुः ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
॥ ❀ ॥ इति श्रीसमस्यामयीशंखेश्वरपार्श्वेजिनस्तुतिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लक्ष्मीनिदानं गुरुकर्मदानं । मद्धर्मदानं जगतेददानं । यद्धेशपार्श्वी शितपादपार्श्वे । नुवामिपार्श्वेभवभेदपार्श्वे ॥ १ ॥ स्मेरातसीसूनसमप्रभावा । समप्रभावा भवदीयमूर्त्तिः । विभाति वामांभव त्रिलोके । भवत्रिलोकेन समर्चनीय ॥ २ ॥ तवेशपत्यं कजमादरेण । हृद्यादधाना जनतादरेण । मुक्ताभवेदेकपदे पराया । निर्वेशवनसौख्यपरंपरायाः ॥ ३ ॥ निःशेषभूवर्षितदानवारी।येन्मानसे त्वं ध्रियसे सदैव।सएव गव्युत्तम दानवारी। प्रोच्चारितोद्दामयशाःसदैवः॥४॥देवाधि देवाधिहर स्त्वमेव ॥ सुज्ञान सुज्ञानभि बुधरूपः । सारांग सारांग वितीर्णभूयः । कल्याण कल्याणकृदंगभाजां ॥५॥ येरर्च्यसे त्वं वरवैद्यराज । मनोभिरामैः सुमनोभिरामै । कर्माभिधैरुज्झितभूघनास्ते । विसारिलोकेश विसारि लोके ॥ ६ ॥ इत्थं ते जिनपुंगवस्य भगवन् प्रोद्दामधामान्वितं । पादाब्जं परभागभृतत्रिभुवन स्तुत्यंस्तुवन्तोनिशं । दक्षं कर्मविपक्ष पक्षदलने भव्या भवंतु क्षमाः । कल्याणाश्रय मुक्तिमाशुमखिलं तीर्त्वा भवांभोनिधिं ॥ ७ ॥ इति विविधयमकयुक्तश्रीपार्श्वजिनस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शालिनीछन्दः ॥ ❀ ॥ गौभीग्रामे स्तंभने चारुतीर्थे । जीरावल्यां पत्तने लोद्रवाख्ये । वाणारस्यांचापि विख्यातकीर्तिश्रीपार्श्वेशं नौमि शंखेश्वरस्थं ॥ १ ॥ इष्टार्थानां स्पर्शने पारिजातं । वामादेव्यानन्दनं देववंद्यं । स्वर्गेभूमौ नागलोके प्रसिद्धं ॥ श्रीपा० ॥२॥ भित्वाभेद्यं कर्मजालं विशालं । प्राप्यानन्तं ज्ञानरत्नंचिरत्नं । लब्धामंदानंद निर्वाणसौख्यं ॥ ३ ॥ श्रीपा० ॥ विश्वाधीशंविश्वलोके पवित्रं । पापागम्यं मोक्षलक्ष्मीकलत्रं । अंभोजाक्षं सर्वदा सुप्रसन्नं । श्रीपा० ॥ ४ ॥ वर्षेरम्येखंगदोर्नागचंद्र । संख्येमासे माधवे कृष्णपक्षे । प्राप्तं पुण्ये दर्शनं यस्य तंच ॥ श्रीपा० ॥ ५ ॥ ❀ ॥
॥ ❀ ॥ इतिशंखेश्वरजिनस्तवः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विशदसद्गुण राजि विराजितं । घनघना घननाद विज्राजितं । ज्रजत ज्रक्तिज्ञरेण रमेश्वरं । जगति पार्श्वजिनेश मनेश्वरं ॥ १ ॥ विविधवर्ण विजूषितविग्रहाः । विहितडुर्द्दमदर्प्पकनिग्रहाः । वसुयुगार्कमिताः सुकृताकराः । जिनवराः प्रज्ञवंतु शिवंकरा ॥ ३ ॥ रुचिरवर्ण निवद्धमानिन्दितं । सुमनसां प्रकरैरजिवंदितं । निखिलसाधुजनाः खलुनिर्मिदं । जिनमतं नमतां चितशमेदं ॥ ३ ॥ सकलज्रव्य सरोजविकाशिका । कुमतिसंत मसोच्चयनाशिका । जिनवरानन पद्मगतोन्मुदा । ज्रवतु वाग्जिनलाज्ञ शुज्ञार्थदा ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ इति पार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीमत्पार्श्व जिनेश्वरस्यविलसद् ज्ञानामृतांज्ञोनिधेः । सद्भावेन परस्वरूपविरते मुक्त्यास्पदेतस्थुषः । सद्भूतप्रतिविंवतस्तु सुतरां गोमीपुरोद्भासिनः । सोल्लासं प्रणिपत्य सत्य मनसा तत्रैव नित्यं स्मरे ॥ १ ॥ यत्पादांबुज दर्शनोत्सुकधियो ज्रव्या व्रजंतोध्वनि । स्पृश्यंन्ते नहि डुष्टजंतुनिवहैर्वन्येर्नवा तस्करैः । नैवोज्वालदवानलै र्जलचराकीर्णैर्जलैर्जातुनो । सःश्रीपार्श्वविज्ञुर्व्यचिन्त्यमहिमा हश्योनकेषांज्रवेत् ॥ २ ॥ हित्वान्तः करणाद्रुतं कुटिलतां मोहादिनोद्भाविताः । धृत्वा निर्मलज्रावनांच विधिना यद्भक्तिमातन्वता । लज्यन्ते नरराज निर्जर वर श्रेणी सुखानिक्रमा । न्मुक्तिश्री रपि सैवसुद्धमनसा संसेव्यतांविश्वपाः ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इति श्रीगोडीपार्श्वजिनस्तोत्रं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आद्यः श्रीऋषज्ञ स्ततोजितजिनः श्रीसंज्ञवस्तीर्थकृत् । सुश्रीमान् ज्ञिनंदनश्च सुमतिः श्रीसद्मपद्मप्रज्ञः । पृथ्वीकांक्षिलव सुपार्श्वजिनपस्तीर्थेशचंद्रप्रज्ञः । सर्व्वज्ञः सुविधिर्जिनो मुनिमतः श्रीशीतलःसौम्यदृक् ॥ १ ॥ श्रेयांस प्रजुर्वासुपुज्य विमला ननेश धर्म्मेश्वराः । शांतिः कुंथु रर स्ततो जिनरिपु मल्लिजिनः सुव्रतः । अर्हंतो नमिनेमिरुद्धमुनिपो विश्वत्रयेविश्रुतो । श्रीमत्पार्श्वजिनः प्रसिद्धमहिमा श्रीवर्द्धमानः प्रज्ञुः ॥ २ ॥ एते श्रीजिनपुङ्गवाः परमचिद्रूपाश्चतुर्विंशति । निश्शेषोत्तम ज्रव्यजंतुहृदयां जोजप्रबोधोद्यतः । वंद्यन्ते सुरवृन्दवंद्यविशदश्लोकप्रजानिर्ज्रय । श्रीसंपत्तिनिवास विक्रमपुरेसद्भक्तितः प्रत्यहं ॥३॥

॥ ❀ ॥ इति चतुर्विंशति जिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मंगलाष्टकं लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीमन्नम्र सुरासुरेन्द्रमुकुट प्रद्योतिरत्नप्रभा । भास्वत्पादनखेन्दव प्रवचनां भोधौ व्यवस्थायिनः। ये सर्वे जिनसिद्धसूरिसुगता स्ते पाठकासाधवः स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ १ ॥ सम्यग्दर्शनबोधवृत्तमम लं रत्नत्रयं पावनं । मुक्तिश्रीनगरायनं जिनपतेःस्वर्गापवर्गप्रदः । धर्म्मःसु क्तिसुधाश्च चैत्यमखिलं जैनालयंश्चालयं। प्रोक्तंतत्त्रिविधं चतुर्विध ममीकुर्वं तुमे मङ्गलं ॥ २ ॥ नाभेयादिजिनाधिपा स्त्रिभुवने ख्याताश्चतुर्विंशतिः । श्री मन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो येचक्रिणो द्वादश । ये विष्णु प्रतिविष्णु लाङ्गलधराः सप्ताधिकाविंशती । त्रैलोक्ये भयदा त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ ३ ॥ कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरी। चंपायां वसुपूज्य सज्जिनपतेः। सम्मेदशैलेर्हतां । शेषाणामपि चोर्ज्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो । निर्वाणा विनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्व्वंतु मेमङ्गलं ॥ ४ ॥ ज्योति र्व्यंतर भावनामरगृहे मेरौकुलाद्रौस्थिता । जंबू शाल्मलि चैत्यशाखिषु तथा वक्षार रूप्यादिषु। इक्ष्वाकारगिरौच कुंण्डलनगे द्वीपेच नंदीश्वरे। शैलेयेमनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वं तु मे मङ्गलं ॥ ५ ॥ यो गर्भावतरोपिजयत्यर्हतां जन्माभिषेकोत्सवे। योजातः परिनिक्रमे वचभवो यःकेवलज्ञानभाक्। यः कैवल्यपुरप्रवेश महिमासंभावितः स्वर्गिभिः कल्याणानिच तानिपंचसततं कुर्वंतुमे मंगलं ॥६॥ येपंचौपधिरुद्धयः श्रुततपो रुद्धिंगता पंचये । येचाष्टांगमहानिमित्तकुशला येष्टौविधाचारणा । पंचज्ञानधराश्च येपिबलिनो ये बुद्धि रुद्धीश्वरा । सप्तैते सकलाश्च ते गण भृताः कुर्वंतुमे मङ्गलं ॥७॥ देव्याश्चाष्ट जयादिका द्विगुणिता विद्या दिका देवता ॥ श्रीतीर्थंकर मातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्षीश्वराः । द्वात्रिंश तत्रिदशा ग्रहा निधिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा । दिक्पाला दश इत्यमीसुरगणाः कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥ ८ ॥ इत्थं श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदं कल्याण कालेर्हतां। पूर्वाण्हेपि महोत्सवेपि सततं श्रीसौख्यसंपत्करं । ये शृण्वंति पठंति तैश्च मनुजै र्धर्मार्थकामान्विता । लक्ष्मीराश्रयते विपायरहिताः कुर्वंतु मे मङ्गलं ॥९॥

॥ इति श्रीमङ्गलाष्टकं संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ परमात्मास्तोत्रः ॥ ❀ ॥

॥ शिवं शुद्ध बुद्धं परं विश्वनाथं । नदेवं नबंधु नैकर्म नकर्त्ता । नअंगं न संगं नइच्छा नकामं । चिदानन्दरूपं नमोवीतरागं ॥ १ ॥ नबंधो नमोक्षो नरा गादिलोकं । नजोगं नभोगं नव्याधि र्नशोकं । नक्रोधं नमानं नमाया नलोभं (चि०)॥ २ ॥ नहस्तो नपादो नघ्राणं नजिह्वा । नचक्षु र्नकर्णं नवक्त्रं ननि द्रा । नस्वादं नखेदं नवर्णं नमुद्रा । (चि०)॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्यु नमोदं नचिंता । नक्षुद्र नभीतं नकृष्यं नतुंदा । नस्वामी नभृत्यं नदेवो नमर्त्यो । चि० ॥ त्रिदंडे त्रिखंडे हरे विश्वव्यापं । हृषीकेश विध्वंशकर्म्मारिजालं । नपु ण्यं नपापं नअक्षा नप्राणं (चि०)॥ ५ ॥ नबाल्यं नवृद्धं नविद्धि न्नमूढा । नछेद्यं नभेद्यं नमूर्त्ति र्नेमीहा । नकृष्णं नशुक्लं नमोहं नतंद्रा । (चि०) ॥६॥ नआद्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या । नद्रव्यं नक्षेत्रं नदृष्टो नभव्या । नगुर्वो न शिष्यो नआद्यो नदीनं ॥ (चि०) ॥७॥ इदंज्ञानरूपं स्वयंतत्ववेदी । नपूर्णो नशून्यं सचेतन्यरूपं । अन्योनिजिणं नपरमार्थमेकं । (चि०) ॥ ८ ॥ आत्मा रामगुणाकरं गुणनिधिं चैतन्यरत्नाकरं । सर्वेभूतगतागते सुखदुःख ज्ञातात्वया सर्वगं । त्रैलोक्याधिपतिं स्वयंस्वमनसाध्यायंति योगेश्वराः । वंदे तंहरिवंश हर्षहृदयं श्रीमान हृदभ्युतः ॥ ९ ॥ ❀ ॥ इति श्रीपरमात्मास्तोत्रं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नमस्कारस्तोत्र. ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दर्शनं देवदेवस्य । दर्शनं पापनासनं । दर्शनं स्वर्गसोपानं । दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेंद्राणां । साधूनां वंदनेनच । नतिष्ठति चिरं पापं । छिद्रहस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ दर्शनं जिनसूर्यस्य । संसारध्वांतना शनं । बोधनंचित्तपद्मस्य । समस्तार्थप्रकाशकं ॥ ३ ॥ दर्शनं जिनचंद्रस्य । सद्धर्म्मामृतवर्षणं । जन्मदाघविनासाय । वृद्धणंसुखवारिधेः ॥ ४ ॥ जिनेभक्ति जिनेभक्ति । जिनेभक्ति दिनेदिने । सदामेस्तु सदामेस्तु । सदामेस्तु भवे भवे ॥ ५ ॥ नहित्राता नहित्राता । नहित्राता जगत्रये । वीतरागसमोदेवो । न भूतो न भविस्यति ॥ ६ ॥ अन्यथाशरणं नास्ति । त्वमेवशरणं मम । तस्मात् सर्वप्रयत्नेन । रक्षरक्ष जिनेश्वर ॥ ७॥ वीतरागं मुखंदृष्ट्वा । पद्मरागसमप्रभं । नेकजन्म कृतंपापं । दर्शनेन विनस्यति ॥ ८ ॥ अर्हंतो मंगलं नित्यं

सिद्धाजगतिमंगलं । मंगलंसाधवोमुख्यं । धर्म्मःसर्व्वत्रमंगलं ॥ ९ ॥ लोको त्तमाह्यर्हंतः सिद्धालोकोत्तमाः सदा। लोकोत्तमोयतीशानां। धर्मोलोको त्तमोर्हतां ॥ १० ॥ शरणं सर्व्वदार्हंतः । सिद्धाशरणमंगलं । साधवः शरणं लोके। धर्म्मशरणमर्हतां ॥ ११ ॥ इति श्रीनमस्कारस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ ऋषिमंडल स्तोत्र ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ आद्यंताक्षरसंलक्ष । मक्षरंवाप्ययतस्थितं । अग्निज्वाला समंना द। विंदुरेखा समन्वितं ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रांतं । मनोमलविशोधकं देदीप्यमानं हृत्पद्मे। तत्पदं नौमि निर्मलं ॥ २ ॥ अर्हन्न मित्यक्षरंब्रह्म । वाच कंपरमेष्टिनः सिद्धचक्रस्य सद्बीजं । सर्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमो र्हद्भ्य ईशेभ्यः । ॐ सिद्धेभ्योनमोनमः । ॐ नमः सर्वसूरिभ्यः । उपाध्यायेभ्यः ॐ नमः ॥ ४ ॥ ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः । ॐ ज्ञानेभ्योनमोनमः । ॐ नम स्तत्त्वदृष्टिभ्य । श्चारित्रेभ्यस्तु ॐ नमः ॥ ५ ॥ श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्येत । द र्हदाद्यष्टकंशुभं । स्थानेष्वष्टसुविन्यस्तं । पृथग्बीजसमन्वितं ॥ ६ ॥ आद्यं पदंशिखांरक्षे। त्परंरक्षेत्तुमस्तकं। तृतीयं रक्षेन्नेत्रेद्वे। तुर्यंरक्षेचनासिकां ॥ ७ ॥ पंचमंतु मुखंरक्षेत्। षष्टंरक्षेचघंटिकां । नाभ्यंतंसप्तमंरक्षे । द्रक्षेत्पादांतमष्टमं ॥ ८ ॥ पूर्वप्रणवतः सांत । सरेफोब्द्यब्धिपंचपान् । सप्ताष्टदशसूर्यांकान् । श्रितोविंदुस्वरानपृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षराआद्याः । पंचातोज्ञानदर्शन । श्चारित्रेभ्यो नमो मध्ये। ह्रीं सांतह समलंकृतः ॥ १० ॥ ❋ ॥ ॐ । ह्रां । ह्रीं । ह्रुं । ह्रूं । ह्रे । ह्रै । ह्रौं । ह्रः । असिआउसा ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यो नमः ॥ ❋ ॥ जंबूवृक्षधरोद्वीपः । क्षारोदधिसमावृतः । अर्हदाद्यष्टकैरष्ट । काष्टाधिष्टैरलंकृतः ॥ ११ ॥ तन्मध्य संगतोमेरुः । कूटलक्षैरलंकृतः । उच्चै स्त्वैस्तरस्तार । स्तारामंडलमंडितः ॥ १२ ॥ तस्योपरिसकारांतं । बीजम ध्यास्यसर्वगं । नमामि विंवमार्हत्यं । ललाटस्थं निरंजनं ॥ १३ ॥ अक्षयं निर्मलंशांतं । वहुलं जाड्यतोज्झितं । निरीहं निरहंकारं । सारं सारतरंघ नं ॥ १४ ॥ अनुद्धतं शुभं स्फीतं । सात्त्विकं राजसंमतं। तामसं चिर संबुद्धं। तैजसंशर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारंच निराकारं। सरसं विरसंपरं परापरं परातीतं । परंपर परापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णंच । त्रिवर्णं

तुर्यवर्णकं । पंचवर्णं महावर्णं । सपरंच परापरं ॥ १७ ॥ सकलं निष्कलं तुष्टं । निर्वृतं भ्रांतिवर्जितं । निरंजनं निराकारं । निर्लेपं वीतसंश्रयं ॥ १८॥ ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं । बुद्धं सिद्धं मतंगुरु । ज्योतीरूपं महादेवं । लोकालोक प्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु वर्णांतः सरेफोबिंदुमंडितः । तुर्यस्वरस मायुक्तो । बहुधानादमालितः ॥ २० ॥ अस्मिन्बीजे स्थिताः सर्वे । वृष भाद्याजिनोत्तमाः । वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता । ध्यातव्या स्तत्रसंगताः ॥ २१ ॥ नादश्चंद्रसमाकारो । बिंदुर्नीलसमप्रभः । कलारुणसमासांतः । स्वर्णाभः सर्व तोमुखः ॥ २२ ॥ शिरःसंलीन ईकारो । विनीलोवर्णतः स्मृतः । वर्णानुसारसं लीनं । तीर्थकृन्मंडलंस्तुमः ॥ २३ ॥ चंद्रप्रभ पुष्पदंतौ । नादस्थितिसमा श्रितौ । बिंदुमध्यगतौनेमि । सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥२४॥ पद्मप्रभुवासुपूज्यौ । कलापदमधिष्टितौ । शिरईस्थितिसंलीनौ । पार्श्वमल्लीजिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थकृतःसर्वे । हरस्थाने नियोजिताः । मायाबीजाक्षरंप्राप्ता । श्चतुर्विं शतिरर्हतां ॥ २६ ॥ गतरागद्वेषमोहाः । सर्वपापविवर्जिताः । सर्वदाः सर्व कालेषु । ते भवंतु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्ययश्चक्रं । तस्य चक्रस्य या विभा । तयाछादित सर्वाङ्गं । मामांहिनस्तु डाकिनि ॥ २८ ॥ देवदेवस्य० । मामांहिनस्तु राकिनी ॥ २९ ॥ देवदे० । मामांहिनस्तु लाकिनी ॥ ३० ॥ देव० । मामांहिनस्तु काकिनी ॥ ३१ ॥ देवदे० । मामांहिनस्तु शाकिनी ॥ ३२ ॥ देव० । मामांहिनस्तुहाकिनी ॥ ३३ ॥ देव० । मामांहिनस्तु याकिनी ॥ ३४ ॥ देव० । मामांहिंसंतुपन्नगाः ॥ ३५ ॥ देव० । मामांहिं संतु हस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदे० । मामांहिंसंतु राक्षसाः ॥ ३७ ॥ देव० । मामांहिंसंतुवह्नयः ॥ ३८ ॥ देव० । मामांहिंसंतु सिंहकाः ॥ ३९ ॥ देव० । मामांहिंसंतु दुर्जनाः ॥ ४० ॥ देव० । मामांहिंसंतु नृमिपाः ॥ ४१ ॥ श्री गौतमस्ययामुद्रा । तस्यायाभुविलब्धयः । तान्नि रम्युद्यतज्योति । रर्हंसर्व निधीश्वराः ॥ ४२ ॥ पातालवासिनो देवा । देवाभूपीठि वासिनः । स्वर्वा सिनोपि ये देवाः । सर्वे रक्षंतु मामितः ॥ ४३ ॥ येअवधिलब्धयो येतु । परमावधिलब्धयः । ते सर्वे मुनयोदेवाः । मांसं रक्षंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दु र्जनाभूतवैतालाः । पिशाचामुद्गलास्तथा । ते सर्वे प्युपशाम्यंतु । देवदेव

त्वं ॥ १३ ॥ संपूर्णमंडलशशांककलाकलाप । शुभ्रागुणास्त्रिभुवनं तवलंघ यंति । ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं । कस्तान्निवारयति संचरतोयथेष्टं ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्रयदिते त्रिदशांगनाभि । र्नीतं मनागपिमनो नविकार मार्गं । कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन । किंमंदराद्रिशिखरं चलितंकदा चित् ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्त्ति रपवर्जित तैलपूरः । कृत्स्नंजगतत्रयमिदं प्रग टी करोषि । गम्यो न जातु मरुतां चलिता चलानां । दीपोपरस्त्वमसिना थ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासिनराहुगम्यः । स्पष्टी क रोषि सहसायुगपज्जगंति । नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः । सूर्यातिशायिम हमासि मुनींद्रलोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं । गम्यं न राहुवदनस्य नवारिदानां । विभ्राजते तव मुखाब्ज मनल्पकांति । विद्योतय ज्जगद पूर्वशशांकबिंबं ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनान्हि विवस्वतावा । युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तमस्सुनाथ । निष्पन्नशालिवनशालिनिजीवलोके । कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानंयथा त्वयि विभाति कृतावकाशं । नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु । तेजःस्फु रन्मणिषु याति यथा महत्वं । नैवंतु काचसकले किरणाकुलेपि ॥ २० ॥ मन्येवरं हरिहरादय एव दृष्टा । दृष्टे षु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति । किं वीक्षितेन भवताभुवियेन नान्यः । कश्चि न्मनोहरतिनाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणांशतानिशतशो जनयंतिपुत्रान् नान्याश्रुतं त्वदुपमं जननीप्रसूता । सर्वादिशोदधति भानि सहस्ररश्मिं । प्रा च्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालं ॥ २२ ॥ त्वामामनन्तिमुनयः परमं पुमांस । मादित्यवर्णममलं तमसःपुरस्तात् । त्वामेवसम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्यु । ना न्यःशिवः शिवपदस्य मुनींद्रपन्थाः ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं विभु मचिंत्य मसंख्य माद्यं । ब्रह्माण मीश्वर मनन्त मनङ्गकेतु । योगीश्वरं विदितयोग मनेक मेकं । ज्ञानस्वरूप ममलं प्रवदन्तिसन्तः ॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधा । त्त्वंशंकरोसि भुवनत्रय शंकरत्वात् धातासिधीर शिवमार्ग विधेर्विधानात् । व्य क्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नम स्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ । तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय । तुभ्यं नम स्त्रि जगतः परमेश्वराय । तुभ्यं नमो जिनभवो दधिशोषणाय ॥ २६ ॥ कोविस्मयोत्र यदि नामगुणैरशेषै ।

स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश । दोषैरुपात्त विबुधाश्रयजातगर्वैः । स्वप्नां तरेपि न कदाचिदपीक्षितोसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूखा । मा भाति रूपममलं भवतो नितान्तं । स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं । विम्बं रवेरिवपयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमयूख शिखाविचित्रे । वि भ्राजते तव वपुः कनकावदातं । विम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानं । तुङ्गो दयाद्रिशिरसीव सहस्र रश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचामरचारुशोभं । वि भ्राजते तव वपुः कलधौतकांतं । उद्यच्छशांक शुचिनिर्झर वारिधार । मुच्चै स्तटं सुरगिरेरिवशातकौंभं ॥ ३० ॥ छत्रत्रयं तवविभाति शशांककांत । मुच्चैः स्थितंस्थगितभानुकरप्रतापं । मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं । प्रख्यापयत् त्रिजगतःपरमेश्वरत्वं ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेम नवपंकज पुंजकांति । पर्युल्लसन्नख मयूख शिखाभिरामौ । पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्रधत्तः । पद्मानि तत्र वि बुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं तथा तव विभूति रभूज्जिनेंद्र । धर्म्मोप देशन विधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रभादिनकृतः प्रहतान्धकारा । तादृ क्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोपि ॥ ३३ ॥ श्च्योतन्मदा विलविलोल कपोल मूल । मत्तभ्रमद्भ्रमरनाद विवृद्धकोपं । ऐरावताभमिभमुद्धत मापतन्तं । दृष्ट्वा भयं भवतिनोभवदाश्रितानां ॥ ३४ ॥ भिन्नेभकुंभ गलदुज्वल शोणिताक्त । मुक्ताफल प्रकरभूषित भूमिभागः । वद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोपि । नाक्रा मति क्रमयुगाचलसंश्रितंते ॥ ३५ ॥ कल्पान्तकालपवनोद्धतवन्हिकल्पं । दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गं । विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं । त्वं नामकीर्त्तनजलं शमयत्यशेषं ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समदकोकिल कंठनीलं । क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फण मापतन्तं । आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंकः । स्त्वन्नाम नागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरङ्ग गजगर्जित भीमना द । माजौबलं बलवता मपि भूपतीनां । उद्यद्दिवाकरमयूख शिखापविद्धं । त्वत्कीर्त्तनात्तमइवाशुभिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवा ह । वेगावतारतरणातुरयोधभीमे । युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षाः । त्व त्पादपंकजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ३९ ॥ अंभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र । पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवाग्नौ । रङ्गत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा । स्त्रासं

विहायभवतः स्मरणाद्व्रजन्ति ॥ ४० ॥ उद्भूतभीषणजलोदरभार भुग्नाः । शौच्यांदशा मुपगताश्च्युतजीविताशाः । त्वत्पादपंकज रजोमृतदिग्धदेहा । मर्त्याभवन्ति मकरध्वज तुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरशृंखलवेष्टिताङ्गा । गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः । त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंन्तः । सद्यः स्वयं विगत बंध भया भवन्ति ॥ ४२ ॥ मत्त द्विपेंद्र मृगराज दवानलाहि संग्रामवारिधि महोदरबन्धनोत्थं । तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव । यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्रगुणैर्निबद्धां । भक्त्या मया रुचिरवर्ण विचित्रपुष्पां । धत्तेजनो य इह कंठगतामजस्रं । तंमानतुंग मवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४४॥ इतिश्रीभक्तामरस्तोत्रम् ॥२॥❋॥

॥ ❋ ॥ अथ कल्याणमंदिरस्तोत्र ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ कल्याणमन्दिर मुदारमवद्यभेदि । भीता भयप्रदमनिन्दित मंह्रिपद्मं । संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु । पोतायमानमभिनम्यजिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्यस्वयं सुरगुरुर्गरिमांबुराशेः । स्तोत्रं सुविस्तृतमति र्नविभुर्विधातुं । तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो ।स्तस्याहमेष किलसंस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ (युग्मं॥) सामान्यतोपि तव वर्णयितुं स्वरूप । मस्मादृशाः कथमधीश भवंतधीशाः । धृष्टोपि कोशिकशिशु र्यदिवादिवांधो । रूपं प्ररूपयति किं किलघर्म रश्मेः ॥ ॥ ३ ॥ मोहक्षया दनुभवन्नपि नाथमर्त्यो । नूनं गुणान् गुणयितुं न तव क्षमेत। कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोपि यस्मा । न्मीयेत केन जलधे र्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोस्मि तवनाथ जडाशयोपि । कर्त्तुंस्तवं लसदसंख्य गुणाकरस्य । बालोपि किं ननिजबाहु युगं वितत्य । विस्तीर्णतां कथयति स्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवेश । वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः । जातातदेव मसमीक्षित कारितेयं । जल्पंति वा निजगिरा ननु पक्षिणोपि ॥ ६ ॥ आस्ताम चिंत्यमहिमा जिनसंस्तवस्ते । नामापिपाति भवतो भवतो जगंति । तीव्रातपो पहतपांथ जनान्निदाघे । प्रीणाति पद्मसरसः सरसोनिलोपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्त्तिनि त्वयिविभो शिथलीभवंति । जंतो क्षणेन निवडाअपि कर्म्मबंधाः । सद्यो भुजङ्गममया इवमध्यभाग । मभ्यागते वनशिखंडिनिचंदनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यंत एव मनुजाः सहसाजिनेंद्र ।

रौद्रै रुपद्रवशतै स्त्वयिवीक्षितेपि। गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे। चौरै रिवाशुपशवः प्रपलायमानैः॥ ९॥ त्वंतारको जिनकथं भविनां तएव। त्वा मुद्वहंति हृदयेन यदुत्तरंतः। यद्वादृतिस्तरति यज्जल मेषनून। मंतर्गतस्यम स्तः सकिलानुभावः॥ १०॥ यस्मिन्हर प्रभृतयोपि हतप्रभावा। सोपि त्वया रतिपतिः क्षपितःक्षणेनः। विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन। पीतं न किं तदपिदुर्द्धरवाग्नवेन॥ ११॥ स्वामिण तुल्प गरिमाणमपिप्रपन्ना। स्त्वांजंतवः कथमहो हृदयेदधानाः। जन्मोदधिं लघुतरंत्यतिलाघवेन। चिं त्यो नहंतमहतां यदिवा प्रभाव॥ १२॥ क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तो। ध्वस्तास्तदावतकथं किलकर्म्मचौराः। प्लोपत्यमुत्र यदिवा शि शिरापिलोके। नीलद्रुमानि विपिनानि न किं हिमानी॥ १३॥ त्वां योगि नो जिन सदा परमात्मरूप। मन्वेषयंतिहृदयां बुजकोशदेशे। पूतस्य नि र्मलरुचेर्यदिवा किमन्य। दक्षस्य संभविपदं ननुकर्णिकाया॥ १४॥ ध्याना जिनेश भवतो भविनः क्षणेन। देहंविहाय परमात्मदशां व्रजंति। तीव्रान लादुपलभाव मुपास्यलोके। चामीकरत्वमचिरा दिवधातुभेदाः॥ १५॥ अन्त सदैव जिन यस्य विभाव्यसेत्वं। भव्ये कथं तदपि नाशयसे शरीरं। एततस्वरूप मथ मध्यविवर्त्तिनोहि। यद्विग्रहं प्रसमयंति महानुभावाः॥ १६॥ आत्मामनीपि भिरयं त्वदभेदबुद्ध्या। ध्यातोजिनेंद्रभवतीह भवत्प्रभावः। पानीयमप्य मृतमित्यनु चिंत्यमानं। किं नामनो विषविकार मपाकरोति॥१७॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि। नूनंविभो हरिहरादि धियाप्रपन्नाः। किंका चकामलिभिरी शसितोपि शंखो। नो गृह्यते विविधवर्ण विपर्ययेण॥ १८॥ धर्म्मोपदेशसमये सविधानुभावा। दास्तांजनोभवति ते तरुरप्यशोक। अ भ्युद्गते दिनपतो समहीरुहोपि। किंवा विबोधमुपयाति न जीवलोकः॥१९॥ चित्रंविभो कथमवाङ्मुखवृंतमेव। विष्वक्पतत्यविरलासुरपुष्पवृष्टिः। त्वद्गो चरे सुमनसां यदिवामुनीश। गच्छंति नून मधएवहि बंधनानि॥ २०॥ स्थाने गभीरहृदयोदधिसंभवायाः। पीयूषतां तव गिरः समुदीरयंति। पीत्वा यतः परमसंमदसंगभाजो। भव्याव्रजंति तरसाप्यजरामरत्वं॥ २१॥ स्वा मिन् सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो। मन्ये वदंति शुचयः सुरचामरौघाः। यस्मै

र्तिं विदधते मुनिपुंगवाय । ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥ श्यामं गभीरगिर मुज्वलहेमरत्न । सिंहासनस्थमिहभव्य शिखंडिनस्तां । आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै । श्चामीकराद्रिशिरसी वनवांबुवाहं ॥ २३ ॥ उद्गच्छता तवशति द्युतिमंडलेन । लुप्तच्छद च्छविरशोक तरुर्बभूव । सांनिध्यतोपि यदिवा तव वीतराग । नीरागतां व्रजति कोन सचेतनोपि ॥ २४ ॥ भो भो प्रमादमवधूय भजध्वमेन । मागत्यनिर्वृतिपुरी प्रति सार्थवाहं । एतन्निवेदयति देव जगतत्रयाय । मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुंदुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ । तारान्वितोविधुरयं विहताधिकारः । मुक्ताकलापकलितो च्छसितातपत्र । व्याजात्रिधाधृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरित जगतत्रय पिंडितेन । कांति प्रताप यशसामिव संचयेन । माणिक्य हेम रजत प्रविनिर्मितेन । शालत्रयेणभगवन्नभितोविभासि ॥ २७ ॥ दिव्यस्रजो जिन नमत् त्रिदशाधिपाना । मुत्सृज्यरत्नरचितानपि मौलिबंधान् । पादौ श्रयंति भवतो यदिवा परत्र । त्वतसङ्गमे सुमनसो नरमन्तएव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ जन्म जलधेर्विपराङ्मुखोपि । यत्तारयस्य सुमतो निजपृष्ठलग्नान् । युक्तंहि पार्थिव निपस्य सतस्तवेव । चित्रंविभो यदसिकर्म विपाकशून्यः ॥२९॥ विश्वेश्वरोपि जनपालक दुर्गतस्त्वं । किंवाक्षर प्रकृतिरप्य लिपिः त्वमीश । अज्ञानवत्यपिसदैव कथंचदेव । ज्ञानंत्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥ प्राग्भार संभृतनभांसि रजांसिरोषा । दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि । छायापिते स्तवननाथ हता हताशो । ग्रस्तस्त्वमीभि रयमेव परंदुरात्मा ॥३१॥ यग्गर्जदूर्जित घनौघमदभ्रभीम । भ्रश्यत्तडिन्मुशल मांसलघोरधारं । दैत्येन मुक्त मथदुस्तरवारिदध्रे । तेनैवतस्य जिनदुस्तर वारिकृत्यं ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्त्यमुंड । प्रालंवभृद्भयदवक्रविनिर्यदग्निः । प्रेतव्रजः प्रतिभवंतमपीरितोयः । सोस्याभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसंध्य । माराधयंति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः । भक्त्युल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः । पादद्वयं तवविभो भुविजन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिणपार भववारिनिधौ मुनीश । मन्येन मे श्रवणगोचरतां गतोसि । आकर्णितेतु तवगोत्र पवित्रमंत्रे । किंवा विपद्विषधरी सविधंसमेति ॥ ३५ ॥ ज

न्मांतरेपि तव पादयुगं नदेव । मन्ये मया महित मीहित दानदक्षं । तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवानां । जातो निकेतन महं मथिता शयानां ॥ ३६ ॥ नूनं नमोहतिमिरा वृतलोचनेन । पूर्वंविभो सकृदपि प्रविलोकितोसि । मर्मा विधो विधुरयंति हिमामनर्थाः । प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथे ते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोपि महितोपि निरीक्षितोपि । नूनं नचेतसि मया विधृतोसिभक्त्या । जातोस्मि तेन जनबांधवदुःखपात्रं । यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति नभावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य । कारुण्यपुण्यवसते वशिनांवरे ण्य । भक्त्यानते मयि महेश दयांविधाय । दुःखांकुरोद्दलन तत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणंशरणंशरण्य । मासाद्यसादितरिपुप्रथितावदातं । त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानवंध्यो । वध्योस्मिचेद्भुवनपावनहाहतोस्मि ॥४०॥ देवेन्द्रवंद्यविदिताखिलवस्तुसार । संसारतारकविभोभुवनाधिनाथ । त्रायस्व देव करुणा हृदिमांपुनीहि । सीदंत मद्यभयद व्यसनांबुराशे ॥ ४१ ॥ यद्य स्तिनाथ भवदंघ्रि सरोरुहाणां । भक्तेःफलं किमपिसंतत संचितायाः । तन्मे त्वदेक शरणस्य शरण्यभूयाः । स्वामीत्वमेव भुवनेत्र भवांतरेपि ॥ ४२ ॥ इ त्थंसमाहितधियो विधिवज्जिनेंद्र । सांद्रोल्लसत्पुलक कंचुकितांगभागाः । त्व द्बिंबनिर्म्मल मुखांबुजबद्धलक्ष्या । येसंस्तवंतवविभो रचयंतिभव्याः ॥ ४३ ॥ जननयनकुमुदचंद्र । प्रभास्वराः स्वर्गसंपदोभुक्ता । ते विगलितमलनिचया । अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ ४४ ॥ ॥ इति कल्याणमंदिरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ ॥

॥ ॥ अथ सेत्रुंजरास ॥ ॥

॥ ॥ श्रीरिसहेसरपायनमी । आणीमनआणंद । रासभणुं रलियाम णो । सेत्रुंजेनोसुखकंद ॥ १ ॥ संवतच्यारसनोतरे । हुवाधनेसरसूर । तिण सेत्रुंजमहातमकियो । शिलादित्यहजूर ॥ २ ॥ वीरजिणंदसमोसर्या । से त्रुंजेऊपरजेम । इन्द्रादिक आगलिकह्यो । सेत्रुंजमाहातमएम ॥ ३ ॥ सेत्रुं जतीरथ सारिखो । नहीछे तीरथकोय । स्वर्गमृत्यु पातालमे । तीरथसगलाजो य ॥ ४ ॥ नामेनवनिधिसंपजे । दीठांदुरितपुलाय । भेटतां भवभयटलै । से वंतांसुखथाय ॥ ५ ॥ जंबूनामेंदीपए । दक्षिणभरतमझार । सोरठदेससुहाम णो । तिहां छे तीरथसार ॥ ६ ॥ ॥ ढालपहिलीः रामगिरि ॥ ॥

॥ सेत्रुंजोनेंश्रीपुंमरीक । सिध्धक्षेत्रकहुं तहतीक । विमलाचलनेकरूं परणाम । एसेत्रुंजेना इकवीसनांम ॥ १ ॥ सुरगिरिनें महागिरि पुन्यरास । श्रीपद पर्वत इंद्रप्रकास । महातीरथपूरवेसुखकाम ए०॥२॥ सासतोपर्वतनें दृढशक्ति । मुक्ति निलो तिणकीजेभक्ति । पुष्फदंत महापदम सुठाम । ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वीपीठ सुभद्र कैलाश । पातालमूल अकर्मकतास । सर्वकाम कीजे गुणग्राम । ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेत्रुंजैनाइकवीसनाम । जपैजवेठाअपणैठांम । सेत्रुंजजात्रानोफल लहे । महावीरभगवंतइमकहे ॥ ५ ॥ ❋ ॥ दुहा ॥ ❋ ॥ सेत्रुंजोपहिलैअरै असीजोयणपरमांण । पिहुलो मूल ऊंचपण । छवीसजोयणजाण ॥ १ ॥ सित्तरजोयणजाणवो । बीजे अरैविशाल । बीसजोयणऊंचोकह्यो । मुजवंदणा त्रिकाल ॥ २ ॥ साठजोयणतीजैअरै । पिहुलो तीरथराय । सोलजोयण ऊंचोसही । ध्यानधरूं चितलाय ॥ ३ ॥ पचासजोयण पिहुलपण । चोथै अरे मझार । ऊंचो दसजोयण अचल । नितप्रणमें नरनार ॥ ४ ॥ बार जोयण पंचम अरै । मूलतणै विशतार । दोजोयण ऊंचोअछे । सेत्रुंजतीरथ सार ॥ ५ ॥ सातहाथ छठेअरै । पिहुलो परवतएह । ऊंचोहोस्यै सतध नुष । सासतोतीरथएह ॥ ६ ॥ ❋ ॥ ढाल ॥ जिनवरसुं मेरोमनलीणो ॥❋॥ केवलन्यानी प्रमुखतीर्थंकर । अनंतसीधाइणठामरे । अनंतवली सीझसे इणठामे । तिणकरुं नितपरणामरे ॥ १ ॥ सेत्रुंजैसाधुअनंतासीधा । सीझसीब लीय अनंतरे । जिणसेत्रुंजतीरथ नहीभेट्यो । तेगरभावासकहंतरे ॥ सेत्रुं० ॥ २ ॥ फागुणसुदि आठमनें दिवसे । रिषभदेव सुखकाररे । रायणरूंख समोसस्यास्वामी । पूरवनिनाणुं वाररे । से० ॥ ३ ॥ भरतपुत्रचेत्रीपूनमदिन । इणसेत्रुंज गिरिआयरे । पांचकोडिसूं पुंमरीकसीधा । तिण पुंमरीक कहायरे । से० ॥ ४ ॥ नमि विनमि राजाविद्याधर । बेबेकोडिसंघातरे । फागुणसुदिदशमी दिनसीधा । तिणप्रणमुंपरभातरे । से० ॥ ५ ॥ चेत्रमासवदि चउदसनेंदिन नमिपुत्री चोसाठिरे । अणसणकरि सेत्रुंजेगिर ऊपर । एसहुसीधा एकठरे । से० ॥ ६ ॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा । द्राविड़ने वारिखिल्लरे । कातीसुदि पूनमदिनसीधा । दशकोडिसुं मुनिशिल्लरे । से० ॥७॥ पांचे पांडव इणगिरसीधा । नवनारद रिषिरायरे । संब प्रद्युन गयाइहां मुगते । आठेकरमखपायरे ।

से० ॥ ८ ॥ नेमिविना तेवीसतीर्थंकर । समोसस्था गिरिशृंगरे । अजित शांति तीर्थंकरबेऊ । रह्या चोमासोरंगरे ॥ से० ॥ ९ ॥ सहससाधुपरिवार संघाते । थावच्चा सुकशावरे । पांचसे साधुसुं सेलगसुनिवर । सेत्रुंजे सिवसुख लाधरे ॥ से० ॥ १० ॥ असंख्यातामुनि सेत्रुंजेसीधा । भरतेसरनें पाटरे । राम अनें भरतादिक सीधा । मुक्तितणी एवाटरे ॥ से० ॥ ११ ॥ जालिमयाली नें उवयाली । प्रमुख साधुनीकोम्हिरे । साधुअनंता सेत्रुंजेसीधा प्रणमुं बेकरजोम्हिरे ॥ से० ॥ १२ ॥ ढालचौपाईनी ॥ ॥ सेत्रुंजेनाकहुं सोलउधार । तेसुणिज्यो सहुको सुविचार । सुणतां आणंद अंगनमाय । जनमजनमना पातिकजाय ॥१॥ रुषभदेव अयोध्यापुरी । समवसस्था स्वामी हितकरी । भरतगयो वंदणनेकाज । येउपदेसदियोजिनराज॥२॥जगमांहे मोटा अरिहंतदेव । चोसठ इंद्र करेजससुसेव । तेहथीमोटो संघकहाय । जेहनें प्रणमें जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेहथीमोटो संघवीकह्यो । भरतसुणीनें मनगहगह्यो । भरत कहेतेकिमपामिये । प्रभु कहे सेत्रुंजे जात्राकिये ॥ ४ ॥ भरतकहे संघवीपद मुझ । थेआपोहुं अंगजतुझ । इंद्रेआण्याअक्षतवास । प्रभु आपे संघवीपदतास ॥ ५ ॥ इंद्रेतिणवेला ततकाल । भरत सुभद्रा बिहुंनेमाल । पहिरावी घर संमेल्हिया । सखरसोनाना रथआपिया ॥ ६ ॥ रिषभदेवनी प्रतिमावली । रतनतणीदीधीमनरली । भरते गणधर वरतेडिया । सांतिक पोष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्रीमूंकी सहुदेस । भरतनेडावोसंघआसेस । आयोसंघ अयोध्यापुरी । प्रथमथकी रथजात्राकरी ॥ ८ ॥ संघ भगति कीधी अतिघणी। संघचलायो सेत्रुंजाभणी । गणधर बाहुबलकेवली । मुनिवरकोडि साथेवलि यावली ॥९॥ चक्रवर्त्तिनी सगलीरिद्धि । भरतें साथे लीधीसिद्धि । हयगयरथ पायक परवार । तेतो कहतां नावेपार ॥ १० ॥ भरतेसर संघवीकहवाय । मारगचैत्य उधरतोजाय । संघ आयो सेत्रुंजेपास । सहुनीपुगी मननीआस ॥ ११ ॥ नयणें निरख्यो सेत्रुंजराय । माणि माणक मोत्यांसुं वधाय । तिण ठामें रही महोछवकियो । नगर आणंदपुर वासियो ॥ १२ ॥ संघसेत्रुंजा उपर चढ्यो । फरसंता पातिक झडपड्यो । केवलन्यानी पगला तिहां । प्रणम्यारायण रूखने जिहां ॥१३॥ केवलन्यानी भगतिनिमित्त । ईशानेंद्र आ

णीसुपवित्त। नदीसेत्रुंजै सोहामणी। भरतेंदीठी कौतुकभणी॥ १४॥ गणधर देवतणे उपदेस। इंद्रैवलिदीधो आदेस। श्रीआदिनाथ तणोदेहरो। भरत करायो गिरिसेहरो॥ १५॥ सोनानो प्रसाद उत्तंग। रतन तणी प्रतिमा मनरंग। भरतै श्रीआदीसरतणी। प्रतिमाथापी सोहामणी॥ १६॥ मरुदेवानी प्रतिमाभली। माहीपूनिम थापीरली।ब्राह्मी सुंदरी प्रमुखप्रासाद। भरतैथाप्या नवलैनाद॥ १८॥ इमअनेक प्रतिमाप्रासाद। भरतकराया गुरुसुप्रसाद। भरत तणोपहिलो उधार। सगलोही जाणै संसार॥ १९॥ ❀॥ ढाल सिंधूमो आसाउरी॥ ❀॥ भरत तणें पाटै आठमें। दंडवीरज थयो रायोजी। भरत तणीपर संघकीयो। सेत्रुंजसंघवी कहायो जी॥ १॥ सेत्रुंजैउधारसांभलो। सोलमोटा श्रीकारोजी। असंख्यात वीजावलि। तेह नकहुं अधिकारोजी से०॥ २॥ चैत्यकरायो रूपातणो। सोनानो बिंबसारोजी। मूलगोबिंबभंडारीयो। पछिमदिश तिणवारोजी। से०॥ ३॥ सेत्रुंजैनी जात्राकरी। सफलकियो अवतारोजी। दंडवीरज राजातणो। एवीजो उधारोजी॥ से०॥ ४॥ सोसागरोपम वितिक्रम्या। दंडवीरजथी जिवारोजी। ईशानेंद्रकरावीयो। एतीजो उधारोजी॥ से०॥ ५॥ चोथा देवलोकनो धणी। माहेंद्र नाम उदारोजी। तिणसेत्रुंजैनो करावीयो। ए चोथो उधारोजी॥ से०॥ ६॥ पांचमा देवलोकनोधणी। ब्रह्मेंद्र समकित धारोजी। तिणसेत्रुंजैनो करावीयो। ए पांचमो उधारोजी॥ से०॥ ७॥ भुवनपती इंद्रनोकीयो। ए छठो उधारोजी। चक्रवर्त्तिसगरतणोकीयो। ए सातमो उधारोजी॥ से०॥८॥ अभिनंदन पासै सुण्यो। सेत्रुंजनो अधिकारो जी। व्यंतरइंद्र करावीयो। ए आठमो उधारोजी। से०॥ ९॥ चंद्रप्रभुस्वामिनोपोतरो। चंद्रशेखरनाम मल्हारोजी। चंद्रजसराय करावीयो। ए नवमो उधारोजी। से०॥ १०॥ शांतिनाथनी सुणीदेशना। शांतिनाथ सुत सुविचारोजी। चक्रधर राय करावीयो। ए दशमो उधारोजी। से०॥ ११॥ दशरथसुत जगदीपतो। मुनिसुव्रत स्वामी वारोजी। श्रीरामचंद्र करावीयो। ए इग्यारमो उधारोजी॥ से०॥ १२॥ पांडवकहे अम्हेपापीया। किमछूटां मोरीमायोजी। कहेकुंती सेत्रुंजतणी। यात्रकीयां पाप जायोजी॥ से०॥ १३॥ पांचेपांडव संघ

करी । सेत्रुंज भेट्यो अपारोजी । काष्टचैत्य बिंबलेपना । ए बारमो उधारोजी । से० ॥ १४ ॥ मम्माणी पाषाणनी । प्रतिमां सुंदरसरूपोजी । श्रीसेत्रुंजैनो संघकरी । थापी सकल सरूपोजी । से० ॥ १५ ॥ अठोत्तर सोवरसांगयां विक्रमनृपथी जिवारोजी । पोरवाडजावड करावीयो । एतेरमो उधारोजी । से० ॥ १६ ॥ संवत बार तिमोत्तरे । श्रीमाली सुविचारोजी । वाहडदे मुहते करावीयो । ए चवदमो उधारोजी ॥ से० ॥ १७ ॥ संवत तेरे इकोत्तरे । देसल हर अधिकारोजी । समरे साहकरावीयो । ए पनरमो उधारोजी । से० ॥ १८ ॥ संवत पनर सत्यासीये । वेसाखवदि सुभवारो जी । करमेंडोसी करावीयो । एसोलमो उधारोजी ॥ से० ॥ १९ ॥ संप्रतिकाले सोलमो । एवरतेछेउधा रोजी । नितनित कीजे वंदना । पामीजे भवपारोजी ॥ से० ॥ २० ॥ दुहा । वलिसेत्रुंज महातमकहुं । सांभलो जिमछे तेम । सूरिधनेसरइमकहे । महावी रकह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दरसणी । सेत्रुंजे पुजनीक । भगवंतनो वेसवां दतां । लाभहुवेतहतीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजाऊपरे । चैत्यकरावेजेह । दल परमाण समोलहे । पल्योपमसुखदेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो । नवो नीपावेकोय । जीर्णोधार करावतां । आठगुणो फलहोइ ॥ ४ ॥ सिरऊपरि गागरधरी । स्नात्र करावे नारि । चक्रवर्त्तिनी स्त्रीथई । सिवसुख पामेंसार॥५॥ कार्ती पूनिम सेत्रुंजे । चढिने करे उपवास । नारकी सोसागर समो । करे करमनो नास ॥ ६ ॥ कार्तीपरब मोटो कह्यो । जिहां सीधा दशकोडि । ब्रह्म स्त्री बा लकहत्या । पापथी नाखेछोडि ॥ ७ ॥ सहसलाख श्रावग भणी । भोजन पुन्यविशेष । सेत्रुंज साधु पडिलाभतां । अधिको तेहथी देख ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ढाल ५ ॥ ❀ ॥ धन २ अवंतीसुकुमालने एहनी ॥ ❀ ॥ सेत्रुंजेगयां पाप छूटी थे । लीजे आलोयण एमोजी । तप जप कीजे तिहां रही । तीर्थंकर कह्यो तेमोजी ॥ १ ॥ से० । जिणसोनानी चोरीकरी । ए आलोयणतासोजी । चैत्रीदिन सेत्रुंज चढी । एककरे उपवासोजी ॥ २ ॥ से० ॥ वस्तु तणी चोरीकरी । सात आंबिल सुध थायोजी । कार्ती सातदिन तपकीयां । रतनहरण पाप जायो जी ॥ ३ ॥ से० ॥ कांसी पीतल तांबा रजतनी । चोरी कीधी जेणोजी । सातदिवस पुरमढकरे । तो छूटे गिरि एणोजी ॥ ४ ॥ से० ।

मोती प्रवाला मूंगीया। जिण चोरया नरनारोजी। आंबिलकरि पूजाकरै। त्रिणटंक सुद्ध आचारोजी ॥ ५ से० ॥ धान पाणी रसचोरीया। जे छूटै सिद्धक्षेत्रोजी। सेत्रुंज तलहटीसाधुनें। पडिलाभैं सुध चित्तोजी ॥ ६ से०। वस्त्राभरण जिणेंहरया। तेछूटै इण मेलोजी। आदिनाथनी पूजाकरै। प्रहऊठीवहुवेलोजी ॥ ७ से० ॥ देवगुरुनो धनजेहरै। तेसुद्धथायेएमोजी। अधिकोद्रव्य खरचै तिहां। पात्रपोषै वहुप्रेमोजी ॥ ८ ॥ से ॥ गायभैंसयो गामही। गजनोचोरणहारोजी। छैतेवस्तु तीरथै। अरिहंतध्यान प्रकारोजी ॥ ९ ॥ से० ॥ पुस्तक देहरापारका। तिहां लिखै अपणो नामोजी। छूटै छम्मासीतपकीयां। सामायक तिणठामोजी ॥ १० ॥ से० ॥ कुंवारी परिव्राजका सधव अधव गुरु नारोजी। व्रतभांजे तिणनें कह्यो। छम्मासी तप सारोजी ॥ ११ ॥से० ॥ गौ विप्र स्त्री वालक रिषी। एहनोघातक जेहोजी। प्रतिमा आगै आलोवतां। छूटै तप करि तेहोजी ॥ १२ ॥ से० ॥ ❀ ॥ ढाल ६ कुं मरभलै आवीयोए ॥ एहनी ॥ ❀ ॥ संप्रतिकालै सोलमोए। एवरतैछै उद्धार। सेत्रुंज यात्रा करूंए। सफलकरुं अवतार ॥ १ से० ॥ छहरी पालतां चालीयैए। सेत्रुंज केरी वाट ॥ से० ॥ पालीतासें पहुचीयैए। संघ मिल्या वहुथाट ॥ २ ॥ से० ॥ ललितसरोवर पेषीयैए। वलि सत्तानीवाव। से० ॥ तिहां विसरामोलीजियैए। वडनेचोतरै आवि ॥ ३ ॥ से० ॥ पाली ताणें पाजडीए। चढीयै उठिपरभात ॥ से० ॥ सेत्रुंजनदीय सोहामणीए। दूर थकींदेखंत ॥ ४ ॥ से० ॥ चढियै हिंगुलाजनें हडैए। कलिकुंडनमीयै पास। से० ॥ वारीमांहे पेसीयैए। आणी अंग उल्लास ॥ ५ ॥ से०। मरुदेवी टूंक मनोहरूए। गजचढी मरुदेवी माय ॥ से० ॥ शांतिनाथ जिनसोलमोए। प्रणमीजैतसुपाय ॥ से० ॥ ६ ॥ वंस पोरवाडे परगडोए। सोमजीसाहमल्हार। से०। रूपजी संघवी करावीयोए। चौमुख मूलउद्धार ॥ से० ॥ ७ ॥ चौमुखप्रतिमा चरचीयैए। भमतीमांहि भलाविंव। पांचेपांडवपूजियैए। अदभुतआदिप्रलंब से० ॥ ८ ॥ खरतरवसहीखांतिसुंए। विंव जुहारुं अनेक ॥ से० ॥ नेमिनाथ चवरी नसुंए। टालुंअलगनछेग ॥ से० ॥ ९ ॥ धरमदुवार मांहेंनीसरुंए। कुगतिकरुं अतिदूर ॥ से० ॥ आवुं आदिनाथदेहरेए। करमकरुं चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥

मूलनायक प्रणमुंमुदाए । आदिनाथ भगवंत ॥ से० देवजहारुं देहेरुए । भ मतीमांहि भमंत ॥ से० ॥ ११ ॥ सेत्रुंजेऊपरि कीजीयेए । पांचेठाम सनात्र । से० । कलश अठोत्तरसो करुंए । निरमल नीरसुगात्र ॥ से० ॥ १२ ॥ प्रथम आदीसर आगलेए । पुंडरीक गणधार ॥ से० ॥ रायणतलपगलानसुंए । शांतिनाथ सुखकार ॥ से० ॥ १३ ॥ रायणतलपगलानसुंए । चौमुखमति माच्यार ॥ से० ॥ बीजीभूमि बिंबावलीए । पुंडरीकगणधार ॥ से० ॥ १४ ॥ सूरजकुंडनिहालीयेए । अतिभलीउलकाझोल ॥ से० ॥ चेलणातलाई सिध सिलाए । अंगफरसुं उलोल से० ॥ १५ ॥ आदिपुरपाजे ऊतरुंए । सिद्धवरूलुंविसरांम ॥ से० ॥ चैत्यप्रवाड इणपरि करीए । सीधावंछितकाम ॥ से० ॥ १६ ॥ जात्राकरी सेत्रुंज तणीए । सफलकीयो अवतार ॥ से० ॥ कुसलखेमसुं आवीयोए । संघसहूपरिवार ॥ से० ॥ १७ ॥ सेत्रुंजरास सोहामणोए । सांभलज्यो सहुकोइ ॥ से० ॥ घर बैठां भणोंभावसुंए । तसुजात्राफलहोइ ॥ से० ॥ १८ ॥ संवत सोल वयांमीयेए । सावणवदिसुखकार । से० ॥ रासभण्यो सेत्रुंजतणोए । नगर नागोर मझार ॥ से० ॥ १९ ॥ गिरुवो गछखरतरतणोए । श्रीजिनचंदसुरीस । से० । प्रथमसिष्य श्रीपूजनाए । सकलचंद सुजगीस ॥ से० ॥ २० ॥ तासुसीसजगजाणीयेए । समेसुंदरउवझाय । से० । रासरच्यो तिणरूवडोए । सुणतां आणंदथाय ॥ से० ॥ २१ ॥

॥ ❀ ॥ इति श्रीसेत्रुंजरास संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीसम्मेतसिखरजीकोरास ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वांदी वीस जिनेसरू । रचस्युं रासरसाल । तीरथ शिखर समेतनो । महिमा बडो विशाल ॥ १ ॥ मोटो तीरथ महियले । प्रगट्यो शिखर समेत । कोडाकोडी मुनिवरु । सिद्धि गया इहखेत ॥ २ ॥ तीरथ शिखर समेतए । फरस्यां पापपुलाय । भविजन भेटो भावसुं । ज्युं सुख संपद थाय ॥ ३ ॥ महिमा सिखरसमेतनो । कहि नसकै कविकोय । गुण अनंत भगवंतना । तिमए तीरथ होय ॥ ४ ॥ ढाल ॥ १ ॥ चोपईनी ॥ ❀ ॥ सिखर शिखर समो नहीकोय । एहनो महिमा सबजग होय । वीसजिनेसर मुगतेगया । मुनिजन ध्यानधरीने रह्या ॥ १ ॥

प्रथम अयोध्यानगरी भली । तिहां जितशत्रु नरेसर बली । विजया राणी नें सुतजाण । अजित कुमर सहुगुणनीखाण ॥ २ ॥ जसुइंद्रादिक सेवा करे । इंद्राणी अतिउछव धरे । तीर्थंकरनी पदवी लही । अंतर अरिजिण साध्या सही ॥ ३ ॥ अनुक्रम इमभोगवतां भोग । पुन्यप्रसाद मिल्यो सहु जोग । अवसर दे संवछर दांन । संजम लीनो आप सुजान ॥ ४ ॥ कर्मख पावी पाम्यो ग्यान । केवलदर्शन लह्योप्रधान । विचरै पुहवी मंमल मांहि । भव्यजीव प्रतिबोधन तांहि ॥ ५ ॥ सिंह सेनादिक गणधरभया । पंचाणवै संख्या सहु थया । एकलाख मुनिवर परिवरया । श्रावक श्रावकणी बहुकरया ॥ ६ ॥ तीन लाख वलि तीस हजार । साधवियां जाणो सुविचार । श्रावक सहस अठाणुं सही । दोय लाख संख्या गहगही ॥ ७ ॥ पांच लाख पेंतालीस हजार । श्रावकणी संख्या सुविचार । बहुत्तर लाख पूरबनो आय । कंचनवरण सरीरसुहाय ॥ ८ ॥ साढा च्यारसे धनुष सरीर । मानलह्यो प्रभु गुण गंभीर । गजलांछन प्रभुजीनो जाण । अमृतसम जसुमीठी वाण ॥ ९ ॥ अनुक्रम प्रभुजी सिखरसमेत । गिरवर पर आव्या निजहेत । सहस मुनिस्वरनें परिवार । मासखमण अणसण कर सार ॥ १० ॥ चैत्री सुदि पूनिमनें दिनें । मुक्तिगए प्रभु तीरथइणें । भूचर खेचर किंनरसुरी । इंद्रादिक सहु उछव करी ॥ ११ ॥ थाप्यो तीरथ मोटो मही । अठाइ महोछव कियोसही । ए तीरथनी जात्राकरे । ते भवियणअक्षयसुख लहे ॥ १२ ॥ दुहा ॥ ❀ ॥ श्रीसंभव जिनराजजी । गएइहांनिर्वाण । शिखरसमेत सुहामणो । प्रगट्यो तीरथ जाण ॥ १ ॥ ❀ ॥ सुगुणसनेही साजन श्रीसीमंधरस्वामि, एचाल ॥ सावत्थी नगरी भरी धनसंपद सहुथोक । जैतारीनृप राजकरे सुखियासवलोक । सेनाराणी मीठीवाणी गुणनी खाण । जेहनें सुत श्रीसंभव जनम्या सकल सुजाण ॥ १ ॥ कंचनवरण सरीरमनोहर प्रभुनोजाण । लंछन अश्वतणो सोहे प्रभुनो परधांन । साठलाख पूरबनो प्रभुनो आयुप्रमाण । धनुख च्यारसे उचपणे प्रभुदेह वखाण ॥ २ ॥ एकसो दोय संख्यायें प्रभुनें गणधर होय । दोयलाखमुनि जेहनें गुणवरता जगजोय । तीन लाख श्रमणी वली ऊपर सहस छत्तीस । भूमंमल विचरे प्रभु श्रमे

नव जगदीस ॥ ३ ॥ तीन लाख वलि सहस त्रयाणुं श्रावक लोक । पटलख सहस छत्तीस श्रावकणी संख्याथोक । त्रिमुख यक्ष अरु दुरितादेवी सानिध कार । विचरंतां प्रभु सकल संयमें जय जय कार ॥ ४ ॥ सहस श्रमण परिवारे प्रभुजी शिखर समेत । एकमास संलेखणकीनी निज पदहेत । इण गिरि ऊपर पायो प्रभुजी पद निरवांण । तीरथमहिमां महियल मोटी थइय सुजाण ॥ ५ ॥ ❀ दुहा ❀ ॥ अभिनंदन जिन वंदिये । पायो पद निरवांण । शिखर समेत सुहामणो । भेटो तीर्थसुजांण ॥ १ ॥ सहसश्रमणसुं सुक्संजमधरो एचाल ॥ ❀ ॥ नगरी अजोध्या सुरपुरी समतली । संवरराजा सोहैमनरली । सिद्धार्था राणी तसुनंदए । अभिनंदण जिन भगव्याचंदए (उल्लालो) चंदए सोवन वरणसोहै धनुष साढीतीनसे । सुंदर शरीर प्रमाण द्युतिकर कपिलंछन तेनित वसे । पूर्वलाख पचास आयु गणधर इकसो सोलए । तीनलाख मुनि छलाख आर्या सहस त्रिसतसोलए ॥ १ ॥ (चाल) सहसअठ्यासी दोलख श्राद्धनी । संख्या चोलखसत्तावीसनी । श्रावकएयांरी संख्या जाणए । नायक यक्ष कालिकाठाणए (उल्लालो) ठाणए शिखर समेत ऊपर मासएक संलेख णा । इकसहस साधू परवरया प्रभु मुक्ति पहुचे पेषणा । इमही अयोध्या मेघ नरवर देवी मात सुमंगला । श्रीसुमति जिनवर जाए नंदन सदाहोत सुमंगला ॥ २ ॥ (चाल) सोवनवर्ण धनुषतनुतीनसे । लंछनक्रौंच सोहे सुजगे हसे । पूरव लाख पच्यासी आउए । इकसो गणधर गुणगण लाउए (उल्लालो) लाउए मुनि त्रिणलाख सोहै सहसवीस प्रमाणए । पणलक्ष तीस हजार साध्वी श्रावक दोय लक्षजाणए । संख्या इक्यासी सहस ऊपर श्रावका इम आनीये । पणलाख सोले सहस तुंबरु महाकाली मांनीये । श्रीशिखर ऊपर सातसंख्या सहस साधुसुंसंगए । करमासकी संलेखणा प्रभुमुक्तिपहुता चंगए ॥ ३ ॥ (चाल) इम कोसंबी नगरीनाताए । धरनृपतात सुसीमामाताए । पद्मप्रभ सुतसु अंगजना थए । लंछनकमल नामो सुलहाथए (उल्लालो) हाथए धनुषप्रमाणपूराआढा इसे तनुकलो । तीस लाख पूरव थितकहावे एकसोगणधर लहो । तनुतीन ती सहसार साधू वीससहस लखच्यारए । साध्वी दोयलाख सहस त्रिहंतर श्राव कसंख्या सारए ॥ ४ ॥ (चाल) पांचलाख वलि पांचहजारए । श्रावकएयांरी

संख्यासारए । कुसुमदेव स्यामादेवी कही । लालवरण तनुसोहै प्रजुसही । (ज्ञालो) सोहए सिखरसमेत ऊपर आठसेत्रिण मुनिवरा । करमास संले खन प्रजुनी सेव करहे सुरवरा। श्रीपदमप्रजूजी मुक्तिपहुता गिरिशिखर महिमाजई । तसु चरणपंकज वालवंदे हृदय आणंद गहगही ॥ ५ ॥ दुहा॥ श्रीसुपास जिणंदना । पदपंकज आराम । जविजन भ्रमर सुसेवतां । पामें वंछितकाम ॥ १ ॥ श्रीसीमंधर साहिबा, ए चाल ॥ ❀ ॥ नगर वणारसी सोजता । राजा तात प्रतिष्टलालरे । देवी पृथवीमातजी । स्वास्तिकलंछन सिष्टलालरे ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्वजिणंदजी । वीस पूरवलख आयुलालरे । धनुष दोयसैदेहनो । कंचनवरण सुहाय लालरे ॥ २ ॥ श्री० ॥ पंचाणवै गणधर कह्या । साधू त्रिणलाख होय लालरे । च्यारलाख तीस ऊपरे । सहस साध वियां जोय लालरे ॥ ३ ॥ श्री० ॥ सहससतावन लक्षनी । श्रावकसंख्या थाय लालरे । च्यारलाख वलीत्रेणवै । सहस श्रावकणीजाय लालरे ॥ ४ ॥ श्री० ॥ मातंगयक्ष सांतासुरी । पांचसै मुनि परवार लालरे । करिअणसण सुगतैगया । नामलियां निस्तार लालरे ॥ ५ ॥ श्रीसु० ॥ नगर चंद्रपुर इण परै । राजातात महेस लालरे । देवी मातालक्ष्मणा । सुत चंद्रप्रजु वेशला लरे ॥ ६ ॥ श्रीचंद्रप्रजु वंदियै । चंद्रवरण तनुदेह लालरे । लंछन चंद्रतणो जलो । धनुषदोढसै देह लालरे ॥ ७ ॥ श्रीचं० ॥ जविक कमल प्रतिबोधना सेवै सुर नर यक्ष लालरे । दसलाखपूरव आऊखा । तेणवे गणधर दक्षला लरे ॥ ८ ॥ श्रीचं० ॥ दोयलख सहस पचाणवे । मुनिश्रमणी तीनलक्ष ला लरे । असीसहस संख्याकही । श्रावकवलि दोयलक्षलालरे ॥ ९ ॥ श्रीचं० ॥ लाखपचास ऊपरवली । श्राविका चउलक्षधार लालरे । सहसइकाणवे ऊ परे । प्रजुजीनो परिवार लालरे । ॥ १० ॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव जृकुटीसुरी । सहससाधु परिवार लालरे । संलेखन इकमासनी । पुहता मुक्तिमझार लालरे ॥ ११ ॥ श्रीचं० ॥ दुहा ॥ जय श्रीसुविध जिनेसरू । जगपति दीनदया ल । समेतसिखर सुगतेगया । जविजनके प्रतिपाल ॥ ढाल ॥ ❀ ॥ श्रीविम लाचलसिरतिलो एचाल ॥ ❀ ॥ नयर काकंदी नरपति । एम पितासुग्रीव । देवीरामा मातासुत । जए सुविधसुजजीव ॥ १ ॥ रजतवरण समतनुमत । ध

नुष एकपरिमांण। दोय लाख पूरब कह्यो। प्रभुनो आयु सुजांण॥ २॥ अठ्या मी संख्याजये। गणधर परम प्रधान। लख दो मुनि विंशति सहस। इकलख श्रमणीजांण॥ ३॥ दोयलक्ष श्रावक कह्या। अरु गुणतीसहजार। एक लख चौलख सहस। श्रावकणी सुविचार॥ ४॥ सुरीसुतारा सुरअजित। श्रीसंघ सानिधकार। सहससाधु परिवारसुं। आए सिखर सुचार॥ ५॥ मासस लेखणा कर प्रभु। मुक्तिगए इहठोर। तीरथ महिमा महियलें। प्रगटी च्यारुं ओर॥ ६॥ इमहीज शीतलनाथनो। हिवसुणज्यो अधिकार। भद्दिलपुर दृढ रथ पिता। मातनंदा सुखकार॥ ७॥ लंछन सुभ श्रीवछनो। श्रीशीतल जिन चंद। कंचनवरण नेऊधनुष। मानसरीर अमंद॥ ८॥ एकलाख पूरब कह्यो। प्रभुनो आयुप्रमाण। इक्यासी गणधर कह्या। मुनि इकलाख सुजाण॥ ९॥ एकलाख चालीससहस। श्रमणी संख्या ओर। सहस तयासी दोय लख। श्रावक संख्या जोर॥ १०॥ सहस अठावन लक्षचौ। श्रावकणी सु विचार। देवी असोका ब्रह्मयक्ष। सहु संघ सानिधकार॥ ११॥ सिखरस मेत सहसएक। साधूनें परिवार। मुक्तिगए प्रभुमासकी। संलेखन करसार॥ १२॥ ॥ ढाल॥ धन २ संप्रतिसाचो राजा एहनी॥ ॥ सिंहपुरी नगरी तिहांराजा। विष्णुनरेसर तातजी। कंचनवरण श्रेयांस प्रभुजी। जप-ज्या विष्णु सुमातजी॥ १॥ नमोरे २ श्री त्रिभुवन राजा। खड्ग लंछन प्रभु पायजी। धनुष असी देहमांन चोरासी। लाख बरसनो आयुजी॥ २॥ न०॥ गणधर बहुत्तर सहसचोरासी। मुनि श्रमणी तीन लक्षजी। तीन सहस वलि सहस गुण्यासी। श्रावक पुण दोय लक्खजी॥ ३॥ नमो०॥ अडतालीस सहस वलि चौलख। श्राविका जाणो सारजी। जक्ष अमर सुरी मांनवी जांणी। श्रीसंघ सानिध कारजी॥ ४॥ न०॥ सहस मुनीसरनें परिवारें। प्रभुजी सिखर समेतजी। मास संलेखन कर प्रभुपहुता। मुक्तिम हिल सुखखेतजी॥ ५॥ न०॥ हिव कंपिलपुर नाम नृपति। श्रीकृतवर्मसुमा तजी। स्यामादेवी अंगजकरना। विमलनाथजगनाथजी॥ ६॥ न०॥ सूकरलं छन गोपनकाया। साठधनुष देहमांनजी। साठलाख बरसनो आयु। शिष्य स तावन जानजी॥ ७॥ न०॥ साठसहस मुनि अन्नाय इकलख। श्रमणी श्रावक

जांणजी। आठसहस दोयलक्ष श्राविका। चौलक्षसंख्या आंणजी॥८॥न०॥ षणमुख सुरवर विदितादेवी। प्रभुजी सिखरसमेतजी। षटहजार साधुपरिवारे। मुक्तिगए सुखहेतजी॥९॥न०॥नगरी नाम अजोध्या नरवर। सिंहसेन जगसार जी। सुजसामात तिणें सुतजायो। प्रभुजी अनंतकुमारजी॥१० न०॥ लंछन श्येन सोवनसमकाया। धनुषपचास प्रमांणजी। तीसलाख वछरनोआयु। गण धर पचवीस आंणजी॥११॥न०॥ छासठसहससुनीसरसोहै। वासठश्रमणीह जारजी। छहजार लाख दोय श्रावक। श्रावकणी इमधारजी॥१२॥न०॥ च्यारलाख वलि चवदहजारए। अंकुसादेवी होयजी। पातालयक्ष श्रीसंघके सानिध। कारी नितप्रति जोयजी॥१३ न०॥ आठसैमुनिवरनें परिवारे। शि खरसमेत प्रधानजी। माससंलेखन करगिरऊपर। पुहतापद निरवांणजी॥१४ न०॥ ❀॥ दुहा॥ ❀॥ ऐसें धर्मजिणेसरू। पुहता पदनिर्वांण। शिखर समेत गिरंदपर। नमो २ जगभांण १॥❀॥ जगतगुरु त्रिशलानंदनजी एचा ल॥❀॥ रत्नपुरी नगरीधणीजी। भानुराय सुजांण। राणीसुव्रता मातनेंजी। धर्मनाथ गुणखांण॥१॥ जगतपति धर्मजिनेसरसार॥ धनुषपैंतालीस तनुक ह्योजी। वज्रलंछन सुखकार॥२ ज०॥ चोतीसगणधर मुनिकह्याजी। चौ सठसहस प्रमांण। श्रमणी वासठ सहस स्युंजी। श्रावक दोयलक्षमान॥३॥ ज०॥ च्यारसहस वलि ऊपरांजी। चौलाख एक हजार। श्रावकणी सं ख्याकहीजी। दसलक्ष आयुविचार॥४ ज०॥ किंनरसुर यत्नासुरीजी। एकसहस परिवार। समेत शिखर सुगतैंगयाजी। वांदू वारहजार॥५॥ ज० हथणापुर विश्वसेननाजी। अचिरामात उदार। शांतिजिनेसर जनमियाजी। त्रिभुवन जय २ कार॥६॥ (जगतपति शांति जिनेसरसार)॥ मृगलांछन सोवनसमोजी। देही धनुपचालीस। आयुवरषइकलाखनोजी। छत्तीस गणधर सीस॥७॥ ज०॥ वासठसहस मुनि छसेंजी। इगसठ श्रमणी हजार। दो यलाख श्रावककह्या जी। ऊपरनेऊ हजार॥८॥ज०॥ सहसत्रयाणुं श्रा विका जी। तीनलाख परिवार। गरुडयक्ष देवीसुरा जी। श्रीसंघ सानिधकार॥९॥ज०॥ नवसें मुनि परिवारस्युंजी। आया शिखर समेत। मासखमणकर मुक्तिमें जी। पुहता निजपदहेत॥१०॥ ज०॥ ऐसें हथिणा पुर भणोजी

राजासूर सुतान । कुंथुनाथ जिन जनमीयाजी । कंचनतनु श्रीमान ॥ ११ ॥ (जगतपति कुंथुजिनेसर सार) ॥ लागलंछन पेंतालीसनोजी । धनुषदेहनो मान । सहस पंचाणवे वरपनोजी । आयु प्रभुनोजान ॥ १२ ॥ ज० ॥ पेंतीसगणधर दीपताजी । साठसहस मुनि जान । उपरे साठसहस वलीजी । श्रमणी संख्यामान ॥ १३ ॥ ज० ॥ सहस गुणियासी लक्षनीजी । श्रावक संख्या होय । सहस इक्यासी तीन लाखनी जी । श्राविका संख्याजोय ॥ १४ ॥ ज० ॥ सातसे साधू परवरयाजी । देवीबला गंधर्व । कुंथुनाथ सुगतें गयाजी । माससंलेखणसर्व ॥ १५ ॥ ज० ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ ❀ ॥ श्रीअरिनाथ जिनंदनो । कहस्युं अब अधिकार । श्रोता सुणज्यो प्रेमधर । थासेलाभअपार ॥ १ ॥ (देसीबिछियानी) अरेलाला श्रीजिनकुशल सूरी सरू ए चा० ॥ ॥ अरेलाला श्रीअरिनाथ जिनेसरू । जिहां नगरी अयोध्या चंदरेलाला । तात सुदर्शन मातजी । नंदादेवी ना नंदरे लाला ॥ २ ॥ श्री अ० ॥ लंछन नंद्यावर्त्तनो । तीसधनुष देहीनो मानरे लाला । कंचनवरण सुहामणो । आयु सहस चोरासी प्रमाणरे लाला ॥ ३ ॥ श्री० ॥ इकलाख श्रावक ऊपरे । वली संख्या अधिकी जाणरे लाला । सहसबहुत्तर तीननी । लक्ष श्राविका संख्या आणरे लाला ॥ ४ ॥ श्री० ॥ देवदेवी सानिधकरे । इकसहस मुनि परिवाररे लाला । मुक्ति गए इणगिरि प्रभु । कर माससंलेखन साररे लाला ॥ ५ ॥ श्री० ॥ मिथिलानगरी प्रभावती । मात पिता श्री कुंभरायरे लाला । लंछनकलस पचीसनो । वपु धनुष सोवनसम कायरे लाला ॥ ६ (श्रीमल्लिनाथ जिनेसरू) ॥ सहस पचावन वर्षनो । थित गणधरअठावीसरे लाला । भविककमल प्रतिबोधना । जगनायक श्रीजगदीसरे लाला ॥ ७ ॥ श्रीम० ॥ चालीस सहस मुनीसरू । श्रमणी पचावनसहसरे लाला । सहस त्र्यासी लक्षनी । श्रावकनी संख्या साररे लाला ॥ ८ ॥ श्रीम० ॥ श्राविका सित्तरसहसनी । लक्षतीन संख्या सुविचाररे लाला । सहस मुनी परिवारसुं । गए मुक्ति संलेखण धाररे लाला ॥ श्रीम० ॥ राजगृही राजा पिता । सुमित्र पद्मासनी मातरे लाला । श्यामवरण तनु शोभतो । जे कच्छप लंछन विख्यातरे लाला ॥ ९ (श्रीमुनिसुव्रतस्वामिजी) ॥ धनुष

वीस देही तणो । आयुवच्छर तीसहजाररे लाला । अष्टादश गणधर थया । तीससहस मुनीसर साररे लाला ॥ १० ॥ श्रीमु० ॥ श्रमणी सहस पचीसनी । संख्यावहुत्तर हजाररे लाला । इक लक्ष ऊपरि श्राविका । तीन लक्ष प चास हजाररे लाला ॥ ११ ॥ श्री मुनि० ॥ वरुणयक्ष देवी भली । नर दत्ता सानिधकाररे लाला । सहस मुनि परिवारसें । गए मुक्ति महल सुख साररे लाला ॥ १२ ॥ श्री० ॥ विजयपिता विप्रामातजी । सोवन सम श्रीनमिनाथ रे लाला । नीलकमल लंछन कह्यो । वपु धनुख पनर आयु साथरे लाला ॥ १३ ॥ (श्रीनमिनाथ जिनेसरू) ॥ दसहजार वरस तणो । गणधर सित्तर परमाणरे लाला । वीस इकतालीस सहस किम । साधु साधवी संख्या जाणरे लाला ॥ १४ ॥ श्रीनमि० ॥ इकलख सित्तर सहस नी । तीनलक्ष सहस वलि होयरे लाला । श्रावक संख्या श्राविका । अ नुक्रमकरि संख्या जोय रे लाला ॥ १५ ॥ श्री० ॥ विचरंता भूमंडलें । आया सिखर समेत मझार रे लाला । भ्रकुटी यक्ष गंधारी सुरी । इक स हस मुनि परिवाररे लाला ॥ १६ ॥ श्री० दुहा ॥ ❁ ॥ परमेसर श्री पास नी । महिमा जगति विख्यात । सिखर सिरोमणि सहसफण । जगजी वन जगतात ॥ १ ॥ ❁ ॥ ढाल ॥ आदरजीव क्षमागुण आदर एहनी ॥ ॥ ❁ ॥ जय जय परमपुरुष पुरषोत्तम । पारस पारस नाथ जी । सांवरिया साहिव जग नायक । नाम अनेक विख्यात जी ॥ २ ॥ जय २ सिखर समेत सिरोमणि । श्रीसांवरिया पास जी । ध्यावे सेवें जेनरतेहनी । पूरे वंछित आसजी ॥ २ ॥ जय० २ ॥ कासीदेस वणारसि नगरी । श्रीअश्वसेन नरिंद जी । वामा माता जग विख्याता । तेहना सुत सुख कंदजी ॥ ॥ ३ ॥ जय० २ ॥ पन्नग लंछन नीलवरण छवि । देही शुभ नवहाथ जी । आयू एक सो वरस प्रमाणें । गणधर दस प्रभु साथजी ॥ ४ ॥ जय० २ ॥ सोल सहस मुनिवर अरुश्रमणी । कही अम्तीस हजार जी । भूमंडल विचरे भविजनकुं । वोधवीज दातारजी ॥ ५ ॥ ज० ॥ चोसठ स हस लाख इक श्रावक । गुणचालीस हजार जी । तीन लाख श्रावकणी संख्या । पार्श्व यक्ष सुर सारजी ॥ ६ ॥ ज० ॥ वीस जिनेसर मुगते पुह

ता। महिमा थइयअपार जी। तिणए तीरथ प्रगट्यो जगमें । मुक्तितणो दातार जी॥ ७॥ जय० २॥ छहरी पाले जेनर आवे। भेटै सिखर गिरिंद जी। ते नर मनवंछित फल पामें। ए सुरतरुनो कंदजी॥ ८॥ जय०२॥ बहुविध संघ तणी करै भक्ति । संघपति नांम धराय जी । सफल करै संपद निज पामी। जेहनो सुजस सवाय जी॥ १० ॥ जय० ॥ परभव सुरनर संपद पामें। जात्रा करै गहगाटजी। साधर्मी वछल मुनि भक्ती। पूजा उछव थाट जी॥ ११॥ जय० ॥ टुंक टुंक पर चरण प्रभूना। पूजो भविजन भाव जी । ध्यान धरो जिनवरनो मनमें। आनंद अधिक उछाव जी॥ १२ ॥ ज० ॥ रास रच्यो श्रीसिखर गिरिनो। सुणतां नवनिधि थाय जी। तिणए भविजन भाव धरीनें । सुण ज्यो मनथिर लाय जी॥ १३ ॥ ज० ॥ खरतर गछपति महिमा धारी । कीरति जग विख्यात जी। जय श्रीजिन सौभाग्य सूरीसर। अमृतवचन सुगात जी॥ १४ ॥ ज० ॥ तासुपसाये रासरच्यो ए। अमृत समुद्रनें सीस जी। बालचंद्र निज मति अनुसारे। सोधो विबुध जगीस जी॥ १५ ॥ ज०॥ संवत अगणीसे सितरोत्तरे। सुदि वैशाष सुढाल जी। रास अजीमगंज मांहि कीनो। भणतां मंगल माल जी॥ १६ ॥ ज० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

इति श्री सिखरजीको रास संपूर्णम्॥ २०१॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ गौतम रास लिख्यते ॥ ॥

॥ ॥ वीरजिणेसर चरण कमल कमलाकय वासो। पणमवि पभणिसु सामि साल गोयम गुरु रासो । मण तणु वयणे एकंत करवि निसुणहु भो भविया। जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गहगहिया॥ १ ॥ जंबूदीव सिरि भरह खित्त खोणी तल मंडण। मगहदेस सेणियनरेस रिउदल बल खंडण। धणवर गुब्बर गाम नाम जिहां गुण गण सज्जा। विप्पवसे वसु भूइ तत्थ तसु पुहवी भज्जा॥ २ ॥ ताणपुत्त सिरि इंदभूइ भूवलय पसिद्धो । चउदह विज्जा विविहरूव नारी रस लुद्धो । विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर। सात हाथ सुपमाण देह रूपहि रंभावर॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जणवि पंकजजलपाडिय । तेजहि तारा चंद सूर आकास भमाडि

य। रूवहि मयण अनंग करवि मेल्यो निरधाम्यिय। धीरम मेरु गंभीर सिंधु चंगम चय चाम्यिय॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास जणजंपै किंचिय एकाकी कित भित्त इत्थ गुण मेल्या संचिय। अहवा निच्चय पुव्व जम्म जिणवर इण अंचिय। रंभा पउमा गवरि गंग रतिहा विधि वंचिय॥ ५॥ नय बुध नय गुरु कविण कोय जसु आगल रहियो। पंचसयां गुण पात्र छात्र हींडेपर वरियो। करय निरंतर यज्ञ करम मिथ्या मति मोहिय। अण चल होस्ये चरमनाण दंसणह विसोहिय॥ ६॥ (वस्तु) ॥ ❀ ॥ जंवूदीव जंवूदीव भरह वासंमि। खोणीतल मंडण। मगह देस सेणिय नरेसर। वरगुव्वर गाम तिहां। विप्प वसै वसभूइ। सुंदर तसु पुहवि भज्जा। स यल गुण गण रूव निहांण। ताणपुत्त विज्जानिलो। गौयम अतिहि सुजाण॥ ७॥ (भास)॥ चरम जिणेसर केवलनांणी। चोविहसंघ पइठा जाणी। पावापुर सामी संपत्तो। चउविह देव निकायहिं जुत्तो॥ ८॥ देवहि समवसरण तिहांकीजे। जिणदीठे मिथ्या मत छीजे। त्रिभुवन गुरु सिंहासन वैठा। ततखिण मोह दिगंतपइठा॥ ९॥ क्रोध मान माया मदपूरा। जाये नाठा जिम दिन चोरा। देवदुंदुभी आगासे वाजी। धरमनरेसर आव्यो गाजी॥ १०॥ कुसम वृष्टि विरचै तिहां देवा। चउसठ इंद्रज मांगेसेवा। चामरछत्र सिरोवरि सोहै। रूवहि जिणवर जगसहु मोहै॥ ११॥ उपसम रसभर वर वर संता। जोजनवाणि वखाण करंता। जांणवि वर्द्धमान जिण पाया। सुर नर किन्नर आवइराया॥ १२॥ कंत समोहिय जलहल कंता। गयण विमाणहि रण रण कंता। पेखवि इंद भूइ मनचिंते। सुरआवे अम जज्ञ हुवंते॥ १३॥ तीर तरंडक जिमते वहिता। समवसरण पुहता गह गहिता। तो अभिमानें गोयमजंपे। इण अवसर कोपे तणुकंपे॥ १४॥ मूढा लोक अजाण्युं वोले। सुर जाणंता इम कांइ मोले। मो आगल कोइ जाण भणीजे। मेरु अवर किम ओपम दीजे॥ १५॥ (वस्तु) वीर जिणवर वीरजिणवर नांण संपन्न पावापुर सुरमहिय। पत्तनाह संसारतारण। तिहिं देवइ निम्माहिय। समवसरण बहु सुक्ख कारण। जिणवर जग उज्जोयकरे। तेजहिकर दिनकार। सिंहासण सांमी ठव्यो। हुउ तो

जय जय कार ॥ १६ ॥ (भास) तोचढियो घणमाण गजे । इंद भूइ भूय देवतो ॥ हुंकारो करमंचरिय । कवणसु जिणवर देवतो ॥ जोजन भूमि समो सरण । पखवि प्रथमारंभतो ॥ दहदिस देखे विबुध वधू । आवंती सुररंभतो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंड ध्वज । कोसीसे नवघाटतो ॥ वय रविवर्जित जंतुगण । प्राती हारिज आठतो ॥ सुर नर किन्नर असुर वर । इंद्र इंद्राणी रायतो ॥ चित्त चमक्किय चिंतवए । सेवंतां प्रभुपायतो ॥ १८ ॥ सहस किरण सांमी वीरजिण । पेषवि रूप विसालतो ॥ एहअसंभव संभव ए । साचो ए इन्द्रजाल तो ॥ तो बोलावइ त्रिजग गुरु । इंद्रभूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसा सामि सवे । फेरू वेदपएण तो ॥ १९ ॥ मान मेल्ल मद ठेल्ल करे । भगतहिं नाम्यो सीसतो ॥ पंचसयांसुं व्रत लियो ए । गोयम पहिलो सीसतो ॥ बंधव संजम सुणवि करे । अगनभूइ आवेयतो ॥ नाम लेई आभास करे । ते पिण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहर रयण । थाप्या वीर इग्यारतो ॥ तो उपदेशे भुवन गुरु । संयम सुं व्रतबार तो ॥ बिहुं उपवासें पारणो ए । आपणपे विहरंत तो ॥ गोयम संयम जगसयल । जय जय कार करंत तो ॥ २१ ॥ (वस्तु) ॥ ❀ ॥ इंद्र भूइ २ चढियो बहुमान । हुंकारो करि कंप तो । समवसरण पहुतो तुरंततो ॥ जेहसंसा सामिसवे । चरमनाह फेरू फुरंततो ॥ बोधबीजसंजाय मने । गोयम भवहि विरत्त ॥ दिक्खलेई सिख्यासही । गणहरपयसंपत्त ॥ २२ ॥ (भास) ॥ ❀ ॥ आज हुओ सुविहाण । आज पचेलिम पुण्य भरो । दीठा गोयमसामि । जो निय नयणे अमियभरो ॥ समवसरण मझार । जे जे संसा ऊपजे ए । ते ते पर उपगार । कारण पूछे मुनिपवरो ॥ २३ ॥ जीहां दीजे दीख । तीहां केवल ऊपजे ए । आपकन्हें अणहुंत । गोयम दीजे दान इम । गुरु ऊपर गुरु भक्ति । सामी गोयम उपनिय । इणछल केवल नाण । रागज राखे रंगभरे ॥ २४ ॥ जो अष्टापद सेल । वंदे चढ चउवीस जिण । आतम लबधि वसेण । चरम सरीरी सो मुनि । इय देसणा निसुणेह । गोयम गणहर संचलिय । तापस पनरसए ण । जो मुनि दीठो आवतो ए ॥ २५ ॥ तप सोसिय निय अंग । अम्हां स

गतिन ऊपजैए । किमचढस्यै दृढकाय । गज जिम दीसै गाजतोए । गिरु ओ ए अभिमान । तापस जो मन चिंतवै ए । तो मुनि चढियो वेग । आलंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न । दंड कलस ध्वज वड सहिय । पेषवि परमाणंद । जिणहर भरतेसर महिय । निय २ काय प्रमाण । चिहुं दिसि संठिय जिणह बिंब । पण मवि मन उल्लास । गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामिनो जीव । तिर्यक जृंभक देवतिहां । प्रतिबोध्या पुंडरीक । कंडरीक अध्ययनभणी । बलता गोयमसाम सवि तापस प्रतिबोध करे । लेई आपण साथ । चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीरखांड घृत आण । अमिय वूठ अंगूठ ठवे । गोयम एकण पात्र । करावै पारणो सवे । पंचसयां सुभभाव । उजल भरियो खीर मिसे साचा गुरु संयोग । कवलत केवल रूप हुय ॥ २९ ॥ पंचसयां जिणनाह । समवसरण प्राकारत्रय । पेषवि केवल नाण । उप्पन्नो उज्जोयकरे । जाणें जण विपीयूष । गाजंती घनमेघजिम । जिणवांणी निसुणेवि । नाणीहुआ पंचस यां ॥ ३० ॥ (वस्तु) इण अनुक्रम २ नाणसंपन्न । पनरैसै परिवारिय । हरिय दुरिय जिणनाह वंदइ । जाणेवि जगगुरु वयण । तिहिंनाण अप्पाण निंदइ । चरमजिनेसर इमभणे । गोयम मकरिस खेव । छेहजाय आपणसही । हो स्यां तुल्लावेव ॥ ३१ ॥ (भास) ॥ ❀ ॥ सामियो ए वीरजिणंद । पूनमचंद जिम उल्लसिय । विहरियो ए भरह वासंमि । वरसवहुत्तर संवसिय । ठवतो ए कणय पउमेण । पायकमल संघे सहिय । आवियो ए नयणा णंद । नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेषियोए गोयम सामि । देवसमा प्रतिबोधकरे आपणोए त्रिसलादेवि । नंदन पुहतो परमपए । वलतोए देव आकास । पेषवि जाएयो जिणसमेए । तो मुनिए मनविषवाद । नादभेद जिमऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इणसमें ए सामियदेख । आपकनाहूं टालियो ए । जाणतोए तिहुअणनाह । लोक विवहारन पालियो ए । अतिभलोए कीयलो सामि । जाएयो केवल मांगस्येए । चिंतव्योए बालक जेम । अहवा केडे लाग स्येए ॥ ३४ ॥ हूं किमए वीरजिणंद । भगतांहिं भोले भोलव्योए । आ पणोए उंचलो नेह । नाह नसंपे साचव्योए । साचोए एवीतराग । नेह

न देजे वालियो ए । तिणसमेंए गोयमचित्त । राग वैरागे वालियोए ॥ २५ ॥ आवतो ए जो उलट । रहितो रागें साहियो ए । केवलए नाण उपन्न । गोयम सहिज उमाहियो ए । तिहुअणए जय जय कार । केवल महिमा सुर करे ए । गण धरा करय वखांण । भविया भवजिम निस्तरे ए ॥ २६ ॥ (वस्तु) ॥ पढम गणहर २ वरपचास । गिहवासे संवसिय । तीसवरस संजम विभूसिय । सिरिकेवल नाणपुण । बारवरस तिहुअण नमंसिय । राजग्रही नयरी ठव्यो । बाणवइ वरसाउ । सामी गोयम गुण निलो । होस्ये सिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥ (भास) ॥ ❀ ॥ जिमसहकारे कोयलटहुके । जिम कुसमावन परमल महके । जिमचंदन सोगंधनिधि । जिम गंगाजल लहिरयां लहके । जिमकणया चल तेजें झलके । तिम गोयम सोभाग निधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे हंसा । जिम सुरतरुवर कणय वतंसा । जिम महुयरराजीव वने ॥ जिम रयणायर रयणे विलसे । जिम अंबर तारा गण विकसे । तिम गोयम गुरु केवलवने ॥ ३९ ॥ पुनम निसि जिम ससियर सोहे । सुरतरु महिमा जिम जगमोहे । पूरव दिसि जिम सहस करो । पंचानन जिम गिरवर राजे । नरवइ घर जिम मेंगलगाजे ॥ तिम जिन सासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम सुरु तरुवर सोहे साखा । जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा । जिम वन केतकि मह महे ए । जिम भूमीपति भुयबल चमके । जिम जिनमंदिर घंटारणके । गोयम लबधे गहगह्योए ॥ ४१ ॥ चिंताम णि करचढीयो आज । सुरतरु सारे वंछिय काज । कामकुंभ सह वसिहुआए । कामगवी पूरे मनकामी । अष्ट महासिधि आवे धामी । सामी गोयम अणुसरोए ॥ ४२ ॥ पणवक्षर पहिलो पभणीजे । मायाबीजो श्रवण सुणीजे । श्रीमति सोभा संभवो ए । देवां धुर अरिहंत नमीजे । विनय पहु उवझायथुणीजे । इण मंत्रे गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां कांय करीजे । देस देसांतर कांय भमीजे । कवण काज आयास करो । प्रहऊठी गोयम समरीजे । काज समग्गल ततखिण सीझे । नवनिधिविलसे तिहां घरे ॥ ४४ ॥ चवदय सय बारोतर वरसे । गोयम गणहर केवल दिवसे । कीयो कवित उपगारपरो । आदहि मंगल ए पभणीजे । परवमहोत्सव

पहिलो दीजै । रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धनमाता जिण उयरे धरियो । धन्य पिता जिण कुल अवतरियो । धन्य सुगुरु जिण दीखियो ए । विनयवंत विद्याभंमार । तसुगुण पुहवि नलब्भइ पार । वम्जिम सा खा विस्तरो ए । गोयम स्वामिनो रास नणीजै । चनविहसंघ रलियायत कीजै । रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन लुलो दिरावो । माणक मोतियां चोक पूरावो । रयण सिंघासण वेसणो ए । तिहां वैठी गुरु देसना देसी । नविक जीवना काज सरेसी । नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति गोतमरास संपूर्णम् ॥ इति षट् रासः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग प्रजाती जेकरै । प्रहऊगमते सूर । नूखा नोजन संपजे । कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत वसै । लब्धितणा नंमार । जे गुरु गोतम समरियै । मनवंछित दातार ॥ २ ॥ पुंमरीक गोयम मुहा । गणधर गुण संपन्न । प्रहऊठीनें प्रणमतां । चवदेसै बावन्न ॥ ३ ॥ खंति खमं गुणकलियं । सुविणियं सव्वलद्धि संपणं । वीरस्स पढमसीसं । गोयमसामी नमंसामी ॥ ४ ॥ सर्वारिष्ट प्रणासाय । सर्वानीष्टार्थदायने । सर्वलब्धि निधानाय । गोतमस्वामिने नमः ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ स्तुति संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंच विदेह विषे विहरंता । वीस जिनेसर जग जयवंता । चरणकमल तसु नामुं सीस । अहनिसि समरूं ते जगदीस ॥ १ ॥ पंचमेरु पासै ऊलकंता । सोहै वीस महा गजदंता । तिण ऊपरि जे जिणवर वीस । ते जिणवर पणमुं निसि दीस ॥ २ ॥ गणहर कहिय डुवालसअंग । थानकवीस नणया तिहां चंग । तिणऊपरि जे आणै रंग । तेनर पामैं सुक्ख अनंग ॥ ३ ॥ जिणसासण देवी चनवीस । पूरे सुजमन तणीजगीस । संघतणा जेविघन निवारे । तिहु अण जन मन वंछित सारे ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ इति वीसविहरमाणस्तुतिः ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तुति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मम दमोत्तम वस्तु महापणं । सकल केवल निर्मल सद्गुणं । नगर जेसलमेर विभूषणं । नजति पार्श्वजिनं गतदूषणं ॥ १ ॥ सुर नरेश्वर

नम्र पदांबुजाः । स्मर महीरुह भंग मतंगजाः । सकल तीर्थंकराः सुख कारका । इह जयंतु जगज्जन तारकाः ॥ २ ॥ श्रयति यः सुकृती जिन शासनं । विपुल मंगलकेलि विलासनं । सकल पुण्य रमोदय धारिका । फलति तस्य मनोरथ मालिका ॥ ३ ॥ विकट संकट कोटि विनाशिनी । जिनमताश्रित सौख्य विकासिनी । नर नरेश्वर किन्नर सेविता । जयतु सा जिनशासन देवता ॥ ४ ॥ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तुतिः ॥ ३ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ श्रीआदिजिन स्तुति ॥ ॥

॥ ॥ वर मुत्तियहार सुतारगणं । परचित्त कलत्त सुपत्तधणं । पयपंकय उप्पय देवगणं । श्रीअच्चुय वंदूं आदिजिणं ॥१॥ निवलोय नमंसिय पायजुआ । घणमोह महीरुह मुत्तिगया । परिपालिअ निच्चल जीवदया । ममकुंतु जिणागम सुक्खगया ॥२ ॥ पणयंगि महातम रोरहरं । कल्लाण पयोरुह वुद्धिकरं । सुहमग्ग कुमग्ग पयासकरं । पणमामि जिणागम मन्हि करं ॥ ३ ॥ सिरिइंद समुज्जल गायलया । सुहझाण विणम्मिय पगलया । असुरिंद सुरेंद सुरप्पणया । ममवाणि सुहाणि कुणेसुसया ॥४॥ ॥ इति श्रीआदिजिनस्तुतिः ॥४॥

॥ ॥ अथ श्रीवीरजिन स्तुति ॥ ॥

॥ ॥ यदंघ्रि नमना देव । देहिनः संति सुस्थिताः । तस्मै नमोस्तु वीराय । सर्वविघ्नविघातिने ॥ १ ॥ सुरपति नत चरण युगान । नाभेयजिनादि जिनपती नौमि । यद्वचन पालनपरा । जलांजलिं ददतु दुःखेभ्यः ॥ २ ॥ वदंति वृंदारुगणा अतो जिनाः । सदर्थतो यद्रचयंति सूत्रतः । गणाधिपा स्तीर्थ समर्थन क्षणे । तदंगिना मस्तु मतं नु मुक्तये ॥ ३ ॥ शक्रः सुरा सुरवरैः सहदेवताभिः । सर्वज्ञ शासन सुखाय समुद्यताभिः । श्रीवर्द्धमान जिनदत्त मतप्रवृत्तान् । भव्यान् जनानवतु नित्य ममंगलेभ्यः ॥ ४ ॥ इति श्रीमहावीरस्तुतिः संपूर्णा ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ श्रीअजितजिन स्तुति ॥ ॥

॥ ॥ विजयनायक ज्ञायक जितशत्रु विजयानंद । पयजुग नितप्रणमे देव अनेकेबिंद । नायकहिनें नाहिंगे गत मनथंभे फणींद । श्रीकुलसहितें वंदो अजितजिणंद ॥ १ ॥ व्यास मानीहालन थानिमय वलि चोवीस ।

दिलरंजण देसन तेहना गुण पेंतीस । अगणित रिधधारी आचारीमां ईस । एहगुणना धारक वांदुं जिनचौवीस ॥ २ ॥ सुध अरथ अनोपम जिन भाषित सिधांत । स्याद्वाद नयादिक हेतु युक्त नविभ्रांत । पाप कर दम पाणी सदगतिनी सहिनाणी । सुणियै नितभविका आगमकेरी वाणी ॥ ३ ॥ सासणनी साचीदेवी सानिधकारी । दुख कष्ट निवारण सेवीजै सुखकारी । साचै मनसमरै ते सुख लाभ अपारी । जिनलाभ पयंपै हो ज्यो जय जय कारी ॥ ❋ ॥ इति अजितनाथ स्तुतिः ॥ ६ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्रीशीतलजिन स्तुति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सुख समकित दायक कामित सुरतरु कंद । दृढरथ नृपराणी नंदा केरोनंद । भद्दलपुर सामी फेरै भवनाफंद । चित्तचोखै नमियै श्रीशीतल जिनचंद ॥ १ ॥ अतीत अनागत हुआ होस्ये अनंत । संप्रतिका लै जेक्षेत्रविदेह विचरंत । त्रिहुं भवणे ठवणा सासय असासय संत । ते सगला त्रिकरण प्रणमुं श्री अरिहंत ॥ २ ॥ कालिक उक्तालिक अंग अनंगपविठ्ठ । नय भंग निक्खेपा स्यादवाद मित सिठ । भविजन उपगारी भारी जिन उपदेश । श्रुत श्रवणे सुणतां नासै कोम्हिक्लेस ॥ ३ ॥ ब्रह्म जक्ष असोका सासन सुरि सुविचार । संघ सानिधकारी निरमल समकितवार । चिंता दुखचूरै पूरय मनहजगीस । ध्यान तेहनो धरीयै कहै जिनलाभ सूरीस ॥ ४ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ इति श्रीशीतलजिनस्तुतिः ॥ ७ ॥

॥ ❋ ॥ अथ समवसरण भावगर्भित स्तुति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ मिल चौविहसुरवर विरचै त्रिगडो सार । अढी गाऊ उंचो पिहुलो जोयण वार । विच कनक सिंहासण पदमासन सुखकार । श्री तीरथनायक वैसे चौमुखधार ॥ १ ॥ तीनछत्र शिरोवरि चामर ढालै इंद देव दुंदुभि वाजै भांजै कुमतीफंद । भामंडलपूठे झलके जाण दिणंद । तिहुअण जन मन मोहै सयलजिणंद ॥ २ ॥ द्रव्य भावसु ठवणा नाम निक्खेपाच्यार । जिण गणहर भाष्या सूत्रसिधांत मझार । जिनवरनी पडिमा जिनसारिपी सुखकार । सुभभावें वंदो पूजो जग जय कार ॥ ३ ॥ दुःखहरणी मंगलकरणी जिनवरवाणी । भवछेद कृपाणी मीठी अमिय समाणी । म

नमुक्ते आणी मतिवृको जविभाणी । सुयदेविपसायें पामें जयति सुनाणी ॥ ४ ॥ ॐ ॥ इति श्रीसमवसरण भावगर्भितजिनस्तुतिः ॥ ८ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ श्रीनेमिजिन स्तुति ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सुर असुर वंदिय पायपंकज मयणमल्ल अक्षोभितं । घन सुघन स्याम सरीर सुंदर शंख लंछन सोभितं । सिवा देवि नंदन त्रिजग वंदन भविक कमल दिनेश्वरं । गिरनार गिरिवर सिखर वंदुं नेमिनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ अष्टापदें श्रीआदि जिनवर वीर जिनपावापुरे । वासुपूज्य चंपापुरियसीधा नेमि रेवय गिरिवरे । सम्मेत सिखरें वीस जिनवर मुगति पहुता मुनिवरू । चउवीस जिनवर तेहवंदुं सयल संघें सुखकरु ॥ २ ॥ इग्यार अंग उपांगबारे दसपयन्ना जाणियें । छछेद ग्रंन्थ पसत्थ अत्था च्यार मूल वखाणियें । अनुयोग द्वार उदार नंदी सूत्र जिनमत गाइयें । इह वृत्ति चूरणि भाष्य पेंतालीस आगम ध्याइये ॥ ३ ॥ दुहुं दिसें बालक दोय जेहनें सदा भवियण सुखकरू । दुखहरे अंबा लुंब सुंदर दुरिय दोहग अप हरू । गिरनार मंडण नेमि जिनवर चरण पंकज सेवियें । श्रीसंघ सहुनें सदामंगल करो अंबा देवियें ॥ ४ ॥ ॥ ॐ ॥
इति गिरनार मंडण श्रीनेमि जिनस्तुतिः ॥ ९ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ श्रीदेवार्यं । विश्वेवर्यं । पूर्णानंदं । सत्कायंदं ॥ १ ॥ तीर्थाधीशाः । शुभादेशाः । सर्वेत्रीर्थं । शं कुर्वं तु ॥ २ ॥ अर्हद्वाचो । वाचो युक्त्या । क्षमाः सद्भिः । पापं ध्नंतु ॥ ३ ॥ शांता कांता । मित्रा देवी । शांत्यै दांत्यै । शश्वद्भवात् ॥ ४ ॥ इति श्रीवीर प्रभु स्तुतिः ॥ १० ॥ ॥

॥ ॐ ॥ अथ श्रीशीतलजिन स्तुति ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ त्रिभुवन जन नायक दायक वंछित दान । भवि कमल विकासन भासन सूर समान । मणमुं सहुलोयें नंदाराणी नंद । श्रीभद्दिल मंडिरे शीतलनाथ जिणंद ॥ १ ॥ उज्जल गुण धारी अविकारी अरिहंत । भविजन हितकारी महिमावंत महंत । उपगारी अविचल जयकारी जग दीस । नित निरमल चित्ते वंदो जिन चौवीस ॥ २ ॥ जिहां नेगम संग्रह आदिकनय सुविचार । स्यादस्ति प्रमुख वलि सप्तभंगि विस्तार । पेंतीस

गुणेंकरी सोभे अति सुविसाल । तेकंठे ठवियै जिनवाणी वरमाल ॥ ३ ॥ कमलासन सोहै नील वरण तनुकांत । निज च्यार भुजै करि राजै अतिसय वंत । श्रीदेवी अशोका सोक हरण सुखकंद । इम भक्तै पभणे श्रीजिनलाभ सूरिंद ॥ ४ ॥ ❋ ॥ इति श्रीशीतल जिनस्तुतिः ॥ ११ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तुतिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्री सर्वज्ञं ज्योतीरूपं विश्वाधीसं देवेंद्रं । काम्याकारं लीलागारं साध्वाचारं श्रीतारं । ज्ञानोदारं विद्यासारं कीर्त्तिस्फारं श्रीकारं । गीर्वाणै र्वन्द्यं सानंदं भक्त्या वन्दे श्रीपार्श्वं ॥ १ ॥ जाग्रद्द्वीपे जंबूद्वीपे स्वर्ण श्शैले श्रीशैले । चंचच्चक्रे ज्योतिश्चक्रे तुगत्वाढ्ये वैताढ्ये । श्रेयस्कारे वक्षस्कारे देवावासे सोल्लासे । येवर्त्तन्ते सर्वाधीशा स्तेसौख्यं वो देयासुः ॥ २ ॥ सम्यग् ज्ञानं शुक्लध्यानं श्रुत्वा ध्यानं सन्मानं । त्रैलोक्य श्रीरामारम्यं विभ्रद्भम्यं प्राकाम्यं । अर्हद्वक्त्रां भोजोद्भूतं शश्वत्पूतं संगीतं । लक्ष्मीकांतं वर्णोपेतं वंदेव्यक्तं सिद्धांतं ॥ ३ ॥ भव्यानां भक्तयानां कल्याणं कुर्वंती बिभ्राणा । शीर्षे सौम्शीरं कोटीरं तारं हारं वक्षोजे । विख्याता भोगेंद्रोपेता सालंकारा सल्हादं । यच्छंती पद्मादेवी सद्बुद्धिं वृद्धिं वैडुष्यं ॥ ४ ॥ ❋ ॥

इति श्री पार्श्वजिन स्तुतिः ॥ १२ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्रीदीपमाला स्तुतिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ पापायां पुरि चारु षष्ठतपसा पर्यंकपर्यासनः । क्ष्मापाल प्रभु हस्तपाल विपुल श्रीशुक्लशालामनु । गोसे कार्त्तिक दर्श नागकरणे तूर्यार कांते शुभे । स्वातौ यः । शिवमाप पाप रहितं संस्तौमि वीर प्रभुं ॥ १ ॥ यन्न भोगमनोद्भव व्रतवर ज्ञानाह्वयासि क्षणे । संभूयाशु सुपर्व संततिरहो चक्रे मह स्तत् क्षणात् । श्रीमन्नाभिभवादि वीरचरमा स्ते श्री जिनाधीश्वराः । संघाया नवचेतसे विदधतां श्रेयांस्यनेनांसिच ॥ २ ॥ अर्थात्पूर्वमिदं जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाभिधः । तत्पश्चा द्गणनायका विरचयां चक्रुस्तरां सूत्रतः । श्रीमत्तीर्थं समर्थनेक समये सम्यग् दृशां भूस्पृशां । भूयाज्ज्ञावक कारकं प्रवचनं चेतश्चमत्कारिच ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थ भावनपरा सिद्धायिका देवता । चंचच्चक्रधरा सुरासुर नता पायादपायादसौ । अर्हन श्रीजि

नचंद्रगी स्तुमतिनो भव्यात्मनः प्राणिनो । याचके वम कष्टहस्ति निवने माईलविक्रीफितं ॥ ४ ॥ इति दीपमालिका स्तुतिः ॥ १३ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सिद्धारथ ताता जगत विख्याता त्रिसलादेवी माय । तिहां जगगुरु जनम्या सब दुखविरम्या महावीरजिनराय । प्रभुलेई दिक्षा कर हित शिख्या देईसंवत्सरीदान । बहु करमखपेवा शिवसुखलेवा कीधो तपशुभध्यान ॥ १ ॥ वर केवलपामी अंतरजामी वदिकार्त्ती शुभदीस । अमावसजानें पिछलीरातें सुगतिगया जगदीस । वलि गोतम गणधर मोटामुनिवर पाम्या पंचमज्ञान । थयातत्वप्रकासी शोकविनासी पहुतासुगति निदान ॥ २ ॥ सुरपति संचरिया रतनजथरिया रातथई तिहां काली । जन दीवा कीधा कार जसीधा निशाथई उजवाली । सहुलोके हरखी निजरेंनिरखी परवकियो दीवाली । वलि भोजन भगतें निज निज सगतें जींमें सेवसुहाली ॥ ३ ॥ सिद्धायिकादेवी विघनहरेवी वंछित दे निरधारी । करे संघनेसाता जिमजग माता एहवी शकति अपारी । जिणगुण इमगावे शिवसुखपावे सुणज्यो भविजनप्राणी । जिनचंदजतीसर महामुनीसर जंपे एहवी वाणी ॥ ४ ॥ ॥ इति श्री दीपमालिका स्तुति ॥ १४ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ मोटा गोटा स्तवन संग्रह ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ मनमोहन महाराज । तीन भुवन सिरताज ॥ आंछे लाल ॥ नगर प्रधान पुर राजीया जी ॥ १ ॥ पास जिणंद प्रधान । निरमल सुगुण निधान ॥ आंछे लाल ॥ वामा सुत पदि भागीया जी ॥ २ ॥ सेवक नोसंताल । कर्मनो सर्ग जनकाल ॥ आंछे लाल ॥ संकट सहु प्रभु पदि दलयाजी ॥ ३ ॥ जिन गर्भ चकचुर । प्रगट्यो आनंद पुर ॥ आंछे लाल ॥ चाट विगमना शिवपन्थी जी ॥४॥ प्रभुजीनें परसाद । चीना सहु विखवाद ॥ आंछे लाल । मन वंछित नृप सहु फलयाजी ॥ ५ ॥ ध्यान समाधिनी थाप । सिवलियाछो प्रभु आप ॥ आंछे लाल ॥ देख्यो दरसण पनि गदाजी ॥ ६ ॥ अमृत धर्म सुजाण । सौम दृष्या कल्याण ॥ आंछे लाल ॥ बालक इम चंदनी कहे जी ॥ ७ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ इति श्रीमन मोहन पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥ ॥ १ ॥ ॐ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्री पार्श्व जिनस्तवन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जय २ श्रीजिन राज । जग जन अन्तर जामी । तारण तरण जिहाज । परमातम परिणामी ॥ १ ॥ परम पुरुष परमेस । परमानंद प्र धान । परम प्रकास विसेस । निरमल ज्ञान निधान ॥ २ ॥ जगपति पा स जिणंद । प्रभु तुह्म हो उप गारी । सुनियै सेवक जान । ऐसी अरज हमारी ॥ ३ ॥ मोह महामद भूलि । मैं बहुकाल गमायो । निजपर भा व विवेक । सुध सुभाव नपायो ॥ ४ ॥ निरमल चेतन भाव । कर्म कर्ल कित कीनो । ताकारण गुण छोरि । पर औगुण चित दीनो ॥ ५ ॥ निज अवगुण सुणिकान । दिलमें रोस भराउं । अछता निज गुणगान । सुनिवैकुं उमाहुं ॥ ६ ॥ आश्रव पांचे असुध । दिलसें दूर नजावे । कुम ति कदाग्रह जोग । समता सुध न आवे ॥ ७ ॥ अब कछु पुण्य संयोग । प्रभु तुझ मुद्रा देखी । सुध अध्यातम लीन । भाव असुध उवेखी ॥ ८ ॥ निरखि २ प्रभुबिंब । मनमें आनंदपाऊं । गाऊं तुझगुणग्राम । देव अवर नविचाहुं ॥ ९ ॥ करुणाकरि प्रभुमुझ । आतम निरमल कीजे । सुधदसा प्रगटाय । मोह विकलता छीजे ॥ १० ॥ भव२ निजपद सेव । प्रभु सेवककुं दीजे । श्री जिन भक्ति पसाय । सुमति विलाश वरीजे ॥ ११ ॥ ॥ ❋ ॥
॥ ❋ ॥ इति श्री पार्श्वजिन स्तवनं ॥ ४ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ भविका श्रीजिनबिंब जुहारो ॥ आतम परम आधारोरे । (भ विकाश्रीजि०) जिनप्रतिमा जिनसारषी जाणो । नकरो संकाकाई । आ गमवाणीनें अनुसारे । राखो प्रीत सवाईरे ॥ भ० श्री० ॥ १ ॥ जे जिनविं ब स्वरूप न जाणें । तेकहिये किम जाणें । भूला तेह अज्ञानें भरिया । न ही तिहां तत्वपिछाणोरे ॥ भ० श्री० ॥ २ ॥ अंबड श्रावक श्रेणिक राजा । रावण प्रमुख अनेक । विविध परे जिन भगति करंता । पाम्या धरम वि वेकरे ॥ भ० श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु भगते जोतां । होय नि श्चय उपगार । परमारथ गुण प्रगटे पूरण । जोज्यो आद्र कुमाररे ॥ भ० श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारे जलचर । छे बहु जलधि मझार । तेदेखी

वहूत्ता महादिक। पाम्या विगन प्रकारे॥ ज० श्री० ॥५॥ पांचमा अंगे जिन प्रतिमानो। प्रगटपणें अधिकार। सुरीयाजसुर जिनवर पूज्या। राय पसेणी मझारे॥ ज० श्री०॥६॥ दशमें अंगे अहिंसादाखी। जिनपूज्यां जिनराज। एहवा आगम अरथमरोर्मी। करियें केम अकाजरे॥ ज० श्री ॥७॥ समकित धारी सतीय द्रुपदी। जिनपूज्या मनरंगे। जोज्यो एहनो अरथ विचारी। छठे ग्याना अंगरे॥ ज० श्री० ॥ ८ ॥ विजय सुरे जिम जिनवर पुजा। कीधी चितथिर राखी। द्रव्य भाव विहुं भेदे कीनी। जीवा भिगम ते माखीरे॥ ज० श्री०॥९॥ इत्यादिक बहु आगम साखे। कोइ संका मति कर ज्यो। जिनप्रतिमा देखी नित नवज्यो। प्रेम घणो चित्त धर ज्योरे॥ ज० श्री० ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रभुपासपसाये। सरथा हो ज्यो सवाई। श्रीजिनलाभ सुगुरु उपदेसें। श्रीजिन चंद्र सवाईरे॥ ११ ॥ ज० श्री० ॥ इति श्रीचिन्तामणि पार्श्वजिनस्तवनं॥ ६ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ अंतरजामी सुण अलवेसर। महिमा त्रिजग तुमारी। सांभल नें आवो तुमतीरे। जन्ममरण दुखवारो॥ १॥ (सेवक अरज करेंछेहो राज। अम्हनें शिवसुख आलो) ॥ (आंकणी) सहुकोनां मनवंछित पूरो। चिंता सहुनी चूरो। एह विरुद्छे राज तुह्मारो। किम राखो छो दूरो सेव०॥ २॥ सेवकनें विल विलतो देखी। मनमें महिरन धरसो। करुणासा गर किम कहवासो। ज्यो उपगार नकरसो॥ सेव०॥ ३ लटपटनो हिव कामनहीं छे। परतिख दरसण दीजें। धुंवाडे धीजुं नहीसाहिब। पेट पड्यां पतीजें॥ ४ ॥ श्री संखेसर मंडण साहिब। वीनतडी अवधारो। क हे जिनहर्ष मयाकर मुझपर। भवसायरथी तारो॥ सेवक०॥५॥ ॥ ॥ इति श्री पार्श्वजिनस्तवनं॥ ॥ ७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ पुनः ॥ ॥

॥ ॥ जगतारी जिनराज। दुखदाहीणोरे। वामासुत वरदाय। त्रिभुवन राणोरे॥ १॥ पांचकमल प्रभुअंग। निरखत निरख्योरे। तीनकमल मुख संग। ध्यानप्रतख्योरे॥ २॥ वदन महोदय देख। चंद लजाणोरे। गगन

नमें निसदीस । इम मन आणुरे ॥ ३ ॥ सुरमणि ज्युं सुखकार । नयण विराजे रे । हृदय कमल सुविलास । थाल ज्युं गाजे रे ॥ ४ ॥ प्रनु कर चरण विलोक । पंकज हारयो रे । ततखिण निज संवास । जलमें धारयो रे ॥ ५ ॥ इम सरवंग उदार । श्रीजिन राया रे । साचे पुण्य संयोग । साहिब पायारे ॥ ६ ॥ प्रनु गुण अनुनव नीर । सांग सुरंगे रे । टाल्यो पातिक पंक । आतम संगे रे ॥ ७ ॥ वरस अढार चौतीस । वदि वैशाखे रे । प्रनु हर पांचम दीस । सहु संघ साखें रे ॥ ८ ॥ नगर महेवा मांहि । पास जुहारया रे । श्रीजिन चंद मुणिंद । वंछित सारया रे ॥ ९ ॥ ❋ ॥ इति पार्श्व जिन स्तवनं ॥ ❋ ॥ ७ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्रीरुषनजिन स्तवन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (ढाल) पाटो धरजी पाटीये पधारो ए० ॥ सुणि २ सेत्रुंज गिरस्वामी । जगजीवन अंतरजामी । हुंतो अरजकरुं सिरनामी । कृपानिध वीनती अवधारो ॥ १ ॥ नवसायर पार उतारो । निज सेवक वानवधारो ॥ कृ० ॥ प्रनु मूरति मोहन गारी । निरख्यां हरखे नरनारी । जाउं वारी हुं वार हजारी ॥ कृ० ॥ २ ॥ हिव किसिय विमासण कीजे । मुझ उपर महिर धरीजे । दिलरंजन दरसण दीजे ॥ कृ० ॥ ३ ॥ आज सयल मनोरथ फलिया । नव नवना पातिक टलिया । प्रनु जो मुझ सैमुख मिलिया ॥ कृ० ॥ ॥ ४ ॥ समरयां संकट टलि जाये । नव नव नित मंगल थाये । मुझ आतम पुण्य नराये । कृ० ॥ ५ ॥ कर जोमी वीनति कीजे । केसर चंदन चरचीजे । दिन धन धन तेह गिणीजे ॥ कृ० ॥ ६ ॥ प्रनु दरस सरस लहितोरो । अति हरखित हुवो चित्त मोरो । जिम दीठां चंद चकोरो ॥ कृ० ॥ ७ ॥ परतिख प्रनु पंचमे आरे । विषमा नय संकट वारे । सहु सेवक काज सुधारे ॥ कृ० ॥ ८ ॥ सेवो स्वामि सदा सुखदाई । कमणा न रहे घर काई । वाधे संपति सोन सवाई ॥ कृ० ॥ ९ ॥ नानिराय कुअंवर चंदा । नव जन मन नयण आणंदा । ओलगे सुर असुर सुरिंदा ॥ कृ० ॥ १० ॥ जयकारी रिषन्न जिणंदा । महसम घर परम आणंदा । वंदे श्रीजिन नक्ति सूरिंदा ॥ कृ० ॥ ११ ॥ इति श्री रुषन देवजी स्तवन संपूर्णम् ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीविमलजिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ घर अंगण सुरतरु फल्योजी । कवण कनक फल खाय । गयवर बांध्यो बारणेंजी । खर किम आवे दाय ॥ १ ॥ विमल जिन माहरे तुझसुं प्रीति । सुर सम्यक्तवित सुं मिल्यां जी । हीयडो हींसे केम ॥ वि० २ ॥ ॥ २ ॥ मन गमता मेवा लहीजी । कुणखल खावा जाय । आदर साहिब नो लहीजी । कुणल्ये रांक मनाय ॥ वि० ॥ ३ ॥ पाच ग्रते कुण काचनें जी । अलव पसारे हाथ । कुण सुरतरु थी कठिनें जी । बांवल थाले बाथ ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव अवर जो हुं करूं जी । तो प्रभु तुमची आण । श्री जिनराज भवो भवेजी । तुंहीज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ इति श्री विमल जिन स्तवनं ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मोरा साहिब हो श्री सीतलनाथकि । वीनती सुणो इकमोरडी । दुख भांजे हो जग दीन दयाल कि । बात सुणोंसे तोरडी ॥ १ ॥ (मो०) तिण तोरेहो हुं आयो पासकि । मुझ मन आस्या छे घणी । कर जोडी हो कहुं मननी वातकि । तुं सुणि जे त्रिभुवन धणी ॥ २ ॥ (मो०) हुं भमियोहो भव समुद्र मझार कि । दुक्ख अनंता में सह्या । ते जाणो हो तुं हीज जिन राज कि । में किमजावें ते कह्या ॥ ३ ॥ (मो०) भाग जोगें हो तोरो श्री भगवंत कि । दरसण नयणे निरखियो । मन मान्यो हो मोरे तुं साहिब कि । हियडो हेजे हरखियो ॥ ४ ॥ (मो०) एक निश्चे हो में कीधो आज कि । तुझ विण देव बीजो नही । चिंतामणि हो जो पायो रतन कि । काच ग्रहे कहो कुण सही ॥ ५ ॥ (मो०) पंचामृत हो जिण भोजन कीध कि । खल खावा मन किम थाये । केल तांइहो जो अमृत पीयनो । खारे जल कहो कुण पीवे ॥ ६ ॥ (मो०) सोनां केरो हो जो पहरयो हारकि । चिरमठि कुण पहिरे होवे । जसु गांठे हो लाल कोडि मल्य कि । काच करी ग्रह कुण लावे ॥ ७ ॥ (मो०) घर मांहे हो जो प्रगट्यो निधानको । देश देसांतर कुण भमे । मोटा नीरो जो पीयो पीवनो । पाछुं पांणी कुण धमे ॥ ८ ॥ (मो०) जिम

कीधो हो जवहर व्यापार कि । मणि हारी मन किम गमें । जिण कीधो हो सदा हाल हुकम्म कि । ते तूं कारो किम खमें ॥ ९ ॥ (मो०) तूं साहिब हो मोरो जीवन प्राण कि । हुं सेवक प्रभु ताहरो । मुझ जीवत हो आज जनम प्रमाण कि । भव दुख भागो माहरो ॥ १० ॥ (मो० ॥ तुझ मूरति हो देखंता प्राय कि । समवसरण मुझ संभरे । जिन प्रतिमा हो जिन सरिषी जाण कि । मूरख जे सांसो करे ॥ ११ ॥ (मो०) तुह्म दरसण हो मुझ आणंद पूर कि । जिम जग चंद चकोरडा । तुह्म नामें हो मोरा पाप पुलाय कि । जिम दिन ऊगे चोरडा ॥ २ ॥ (मो०) तुह्म दरसण हो मुझ मन उछरंग कि । मेह आगम जिम मोरडा । तुह्म नामें हो सुख संपत्ति थाय कि । मन वंछित फल मोरडा ॥ १३ ॥ (मो०) हुं मांगुं हो हिव अविहड प्रेम कि । नित नित करूं निहोरडा । मुझ देज्यो हो स्वामी भव भव सेव कि । चरण न छोडुं तोरडा ॥ १४ ॥ (मो०) कलश ॥ इम अमर सर पुर संव सुख कर मात नंदा नन्दनो । सकलाप शीतल नाथ स्वामी सकल जन आनंदनो । श्रीवछ लंछन वरण कंचन रूप सुंदर सोह ए । एतवन कीधो समय सुंदर सुणित जनमन मोहए ॥ १५ ॥ इति श्री शीतल नाथ जिन स्तवनम् ॥ १२ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ८४ आसातना स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) विलसे ऋद्धिनी ॥ जय २ जिण पास जगत्र धणी । सोभा ताहरी संसार सुणी । आयो हुं पिण धर आस घणी । करिवा सेवा तुम चरण तणी ॥ १ ॥ धन २ जे न पडे जंजाले । उपयोग सुं वेसे जिन आले । आसातना चउरासी टाले । सास्वता सुख ते हीज संभाले ॥ २ ॥ जे नाखे श्लेखम जिन हरमें । कलह करे गाली जूयरमें । धनुपादि कला सीखण ढूके । कुरलो तंबोल भखें थूके ॥ ३ ॥ मुरे वायवडी लघु नीत तणी । संज्ञा कुंगलिया दोष सुणी । नख केस समारण रुधिर क्रिया । चांदीनी नाखे चांबडिया ॥ ४ ॥ दांतणनें वमन पीये कावो । खावे धांणी फुली खावो । सूवे वेसामण विसरावे । अज गज पसुनें दामण दावे ॥ ५ ॥ सिर नासा कान दसन आखे । नख गाल वपुपना मल नाखे । मिलणो

लेखो करे मंत्रणो । विहचण अपणो कारि धन धरणो ॥ ६ ॥ वेसे पग ऊपरि पग चढियां । थापे छांणा ऊंके दुहणीयां । सूकवे कप्पड पप्पड व लियां । नासीय छिपे नृपभय पडियां ॥ ७ ॥ शोके रोवे विकथाज कहे । इहां संख्या वेनालीस लहे । हथियार वल्लें पशु बांधे । तापे नांणां प रखेरांधे ॥ ८ ॥ नांजी निसही जिन गृह पेसे । धरे छत्रनें मंडपमें वेसे । पहिरे वस्त्र अनें पनही । चामर वींझे मनठाम नही ॥ ९ ॥ नवु तेल सचित्त फल फूल लीवे । नूषण तजि आप कुरूप थीये । दरसणथी सिर अंजलि नधरे । इग साडे उत्तरा संग न करे ॥ १० ॥ डोगो सिर पेच मोड जो डे । दडिये रमनें वेसे होडे । सयणांसुं जुहार करे मुजरो । करे भंड चेष्टा कहे वचन बुरो ॥ ११ ॥ धरे धरणो झगडे ज्ञतंठी । सिर गुंथे बांधे पालं ठी । पसारे पग पहरे चाखडीयां । पग झटक दिखावे दुर वसीयां ॥ १२ ॥ कर दस लूहे मैथुन मंडे । जुआ वलि ओंठ तिहां छंडे । उघाडे गुह्य करे । वयदां । काढे व्यापार तणा कयदां ॥ १३ ॥ जिनहर परनालनो नीरधरे । अंघोले पीवाठाम भरे । दूषण जिन भवनमें एदाख्या । देव वंदन भाष्यमें जे भाष्या ॥ १४ ॥ सुज्ञानी श्रावक सगानिजनां । आसातन टाले वार सनां । परमाद वसे कोई थावे । आलोयां पाप सहुजावे ॥ १५ ॥ तंबोल नें भोजन पान जुआ । मल मूत्र सयन स्त्री नोग हुआ । नूषण पनही ए जघन्य दसे । वरज्या जिन मंदिर मांहिवसे ॥ १६ ॥ द्रव्यनने भावन दोय पूजा । एहनाभेद भेदकह्या दूजा । सेवा प्रभुनी मन सुध करे । वंछि त सुख लीला नेह वरे ॥ १७ ॥ (कलश) ॥ ॥ इम नव्यप्राणी चाव आणी विवेकी श्रुत वासना । जिन विंब आगे परी वरजे चोरासी आसातना । ते गोत्र सीथे कर उपार्जे नमे जेहनें केवली । गुण ज्ञान श्री क्षमसीह वंदे जैन सासन ने गली ॥ १८ ॥ इति श्रीचोरासी आसातना स्तवनं ॥ १३ ॥ ॥

॥ ॥ अथ २४ जिनदेहमान स्तवन लिख्यते ॥ ॥

॥ ॥ प्रणमुं श्रवण जिनेसर पाय । धनुष पांचसे ऊंचीकाय । बीजो अजित जिन सुरु मन वसे । साल धनुष साढाच्यारसे ॥ १ ॥ तीजो में नव सुख दातार । ऊंची काय धनुष सौच्यार । अभिनंदन जिनसुं मनली

न । देह धनुषसो साढा तीन ॥ २ ॥ पंचम सुमति नाथ जगवान । धनुष तीनसो देहीमान । पदम प्रन्नु पूरे मन आस । देह धनुष दोयसे पंचास ॥ ३ ॥ सामि सुपारस सत्तम होय । देह प्रमाण धनुषसो दोय । चंद्रा प्रन्नु जिन मुऊ मन वसे । देह प्रमाण धनुष दोढसे ॥ ४ ॥ सुविध नाथ नमिये सुविवेक । ऊंच प्रमाण धनुषसो एक । सीतल नाथ नमें जगसवे । देह प्रमाण धनुष जसुनिवे ॥ ५ ॥ श्रीश्रेयांस नमुं ऊलसी । ऊंच प्रमाण धनुष तनु असी । वासपूज्य वारम जिन चंद । मान धनुष सित्तर सुख कंद ॥ ६ ॥ विमल विमल गुणकरि गंजीर । साठि धनुष जसुमान सरीर । अनन्त ज्ञान अनन्त प्रकास । देह प्रमाण धनुष पंचास ॥ ७ ॥ पनरम धरमनाथ जगदीस । मान धनुष जसु पेंतालीस । शांति करण सोलम जिन शांति । देह धनुष चालीस सोजंति ॥ ८ ॥ सतरम कुंथु जिन जगदाधार । मान धनुष पेंत्रीस उदार । अर अढारम दीन दयाल । त्रीस धनुष तनु अति सुविशाल ॥ ९ ॥ मल्लि नाथ जिन उगुणीसमो । मान पचीस धनुष पय नमो । वीसम मुनिसुव्रत अरिहंत । वीस धनुष तनु मान कहंत ॥ १० ॥ इक्वीसम नमि जिन राजान । पनरे धनुष तनु रूप निधान । बावीसम श्रीनेमि जिणंद । दस धनु दीपे जाण दिणंद ॥ ११ ॥ तेवीसम श्रीपारस नाथ । नील वरण सोहे नव हाथ । चोवीसमा जिनवर श्रीवीर । सात हाथ जगनाथ सरीर ॥ १२ ॥ इण परि ए जिणवर चोवीस । प्रणमें प्रहसम धरीय जगीस । तांधर रिद्धि सिद्धि उछरंग । रंगविनें प्रणमें मुनि रंग ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥ इति श्रीचोवीस जिन देह मान स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ २४ जिन आयुप्रमाण स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रुषन्न देव प्रणमुं जिनराय । लाख चोराशी पूरव आय । बीजो अजित जसु सूत्रे साख । आउ बहुत्तर पूरवलाख ॥ १ ॥ तीर्थंकर संन्नव तीसरो । आउलाख पूरव साठिरो । अन्निनंदन पूरे मन आस । आउला ख पूरव पंचास ॥ २ ॥ सुमतिनाथ पंचम जगदीस । आउ लाख पूरव चालीस । श्रीपदम प्रन्नुनी ए थितिजाण । लाख तीस पूरव परिमाण ॥ ३ ॥ श्रीसुपार्श्व लख पूरव वीस । दस लख पुरव चंद प्रन्नु ईस ।

सुविधि नाथ लख पूरब दोय । इक लख पूरब शीतल थिति होय ॥ ४ ॥ आउ वरस चोरासी लाख । श्रीश्रेयांस तणो श्रुत साख । लाख बहुत्तर व रसां तणो । वासु पुज्य परमाउप गिणो ॥ ५ ॥ विमल आउ लख साठि वरीस । वरस अनंत तणो लख तीस । लाखवरस दस धरम दिणंद । ला ख वरस श्रीशांति जिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस थिति पंचाणवे । श्रीकुंथु ना थ तणीमनवे । सहस चोरासी अर जिनतणी । मलि सहस पंचावन भणी ॥ ७ ॥ वरस संपूरण त्रीस हजार । मुनि सुव्रत परमाउ उदार । दी स सहस नमिजिन थिति भणी । वरस सहस नेमीसर तणी ॥ ८ ॥ पास वरस एकसो सुख कंद । वरस बहुत्तर वीर जिनंद । ऋषभ तणा तेरे अवतार । सात चंद्र प्रभु ईसर बार ॥ ९ ॥ सुव्रत भव नव नव नेमीस । पार्श्व वीर दश सत्तावीस । त्रिहुं त्रिहुं भव सतरे जगदीस । सगला भव एकसो अरतीस ॥ १० ॥ सिधि लही सहुनें धन धन्न । गणधर चवदे से बावन्न । सहुनें मुनि लख अठावीस । सहस ऊपरें अरतालीस ॥ ११ ॥ लाख चमाल अयांल हजार । पडधिक सहु साधवी सोल्यार । श्रावक ला ख पचावन जुवे । अरतालीस सहस ऊपरें ॥ १२ ॥ एक कोडि श्राविका सुजगीस । लाख पांच सहस अरतीस । ए संघ चतुर्विध सहु जिन त णो । रंगविनें प्रणमों हित घणो ॥ १३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

इति श्रीचोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ ६३ सिलाका पुरुष स्तवन लि० ॥ ॥

॥ ॥ (ढाल १) धरम महारथ सारथि सारं । एचाल ॥ ॥ सदगुरु चरणकमल मनधारं । ऊमठ उत्तम नरअधिकारं । पभणसु श्रुत अनुसारं । जेहनें नाम लिये निसतारं । आपण सफल हुवे अवतारं । पामी जे भव पारं ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन । सुमति पदम प्रभु नयणा नंदन सत्तम तेम सुपास । चंद्र प्रभुनें सुविधि सीतल जिन । श्रेयांस वासपुज्य जिण सुखरासि । विमलनाथ कल्यान ॥ २ ॥ अनंत धर्म श्रीशांति जिनेसर कुंथुनाथ अरमल्लि सुहंकर । मुनि सुव्रत नमि नेमि । पार्श्व वीरए जिन चोवीस जगवत्सल जगगुरु जगदीस । प्रणमीजे धर प्रेम ॥ ३ ॥ (ढाल २) प्रथ

म सुपनगज निरखो एचाल ॥ ❋ ॥ प्रथम भरतनर इंद्र । बीजो सगरसु रिंद । मघवा तीजो उदार । चोथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पांचम सांति चक्रीस । छठो कुंथु गणीस । सातमो अर नरनाथ । आठम सुभूमि सनाथ ॥ ५ ॥ नवमो पदमनरेस । हरषेण दसम कहेस । इग्यारम जय ताम । बारम ब्रह्म दत्त नाम ॥ ६ ॥ एह चक्रीसर बार । खेत्रभरत सिणगार । मघवा सनत् कुमार । पुहता स्वरग मझार ॥ ७ ॥ सुभुम अनें ब्रह्मदत्त । सत्तम निरय निरत्त । आठ थया सिवगामी । तेप्रणमुं सिरनामी ॥ ५ ॥ (ढाल ३) ॥ ❋ ॥ मुनिवर आर्य सुहस्ति एचाल ॥ ❋ ॥ पहिलो त्रिपष्टि जाण । द्विपष्ट दूसरो तीजो स्वयं प्रभु जाणिये ए । पुरषोत्तम ए चोथो । पंचम परगमो । पुरुष सिंह प्रमाणीये ए ॥ ९ ॥ छठो पुरुष पुंडरीक । दत्त तिम सातमो । लक्ष्मण नामें आठमोए । नवमो कृष्णनरेस । एनव केसवा । प्रहऊठी ए पिण नमुए ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव । नारकी सातमी । आगला पंच छठी गयाए । सातमो पंचम नैर । चौथी आठमो । नवमो तीजी नारीयाए ॥ ११ ॥ अचल विजयनें भद्र । सुप्रभु सुदर्शण । आनंद नंदन सुभमतीए । रामचंद्र बलभद्र । बलदेव एनव । आठ थया तिहां सिवगती ए ॥ १२ ॥ बलभद्र ब्रह्म देवलोक । काल उसप्पणी । जास्यै सिवकृष्ण सासणेंए । अथवा निपुलाक नाम । तीर्थंकर होस्ये । चवदमो इम बहुश्रुत भणेंए ॥ १ ३ ॥ (ढाल) कुमर पणें प्रभु रहतां काल सुखे गमेंए एचाल ॥ ❋ ॥ अस्वग्रीवनें तारक मेरुक वालि मधु तिसा ए । निशुंभ बलय प्रल्हाद रावण जरासिंधु जिसा ए । ए नव प्रति वासुदेव नरक गति गामिया ए । ते पिण भाव जिणेस केई प्रणमुं मुदा ए ॥ १४ ॥ (ढाल ५) सफल संसारनी ॥ ❋ ॥ सांतिनें कुंथु अरि एहभव एकही । चक्रधर तीर्थंकर दोय पदवी लही । वीर वासुदेव अरिहंत भव जू जूआ । देह तिण साठ पिण जीव गुण सठ थया ॥ १५ ॥ वासुदेव बलीय बलदेव केरा पिता । एकहीज थाय नवगण जे से ठना । तीन चक्रधर तणा मिलिय बारे टल्या । एम त्रेसठना तात इक वन मिल्या ॥ १६ ॥ तीन चक्र भव तणी ढाल दीजे जिसे । माय मझुनी थई साठ लेखे इसे । एह नर रयणनो ध्यान नित जे धरे । तेह सुर पद लही

मोक्ष पदवी वरे ॥ १७ ॥ (कलश) इम थुणया तीर्थंकर चक्रीसर वासुदेव बलदेव ए । प्रति वासुदेव सुमेवजेहनी करे सुर नर सेव ए । त्रेसठ सिलाका पुरुष उत्तम जगें जयवंता सदा । सहसमें तेहना चरण पंकज नमें मुनि वसतो मुदा ॥ १८ ॥ इति त्रेसठ सिलाका पुरुष स्तवनं ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ अजितशांतिजिनस्तवन लिख्यते ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ मंगल कमला कंदए । सुखसागर पूनिमचंदए । जगगुरु अजिय जिणंदए । शांतिसर नयणानंदए ॥ १ ॥ विहुं जिनवर प्रणमेवए । विहुं गुणगाइस संखेवए । पुण्य भंडार भरेसए । मानवभव सफल करेसए ॥ २ ॥ कोस्हि लाखपचासए । सागर जिणसासण भासए । सिरिअजिण श्रु बंसए । उवझाय सरोवर हंसए ॥ ३ ॥ इण अवसर तिहां राजीयोए । राजा जितशत्रु जग गाजीयोए । विजया तसुवर नारए । तिहुं रसयति पामासारए ॥ ४ ॥ कूखहिं जिन अवतारए । तिणराय मनाव्योहारए । उयरख स्यो दसमासए । पनु पूरी जगणी आसए ॥ ५ ॥ तिहूं जण मन आणंदीयोए । सुतनाम अजिअजिण तो दीयोए । तिहुअण सयल उछाहए । क्रम क्रम वाधे जगनाहए ॥ ६ ॥ हंस धवल सारस तणीए । गति सुललित तिजगति निरजाणीए । मलपति चाले गेलए । जाणें नयण अमीरस रेलए ॥ ७ ॥ धवल समो संसारए । बलि न्यान विवेक विचारए । गुणदेखी गज गहगहीए । लंछण मिसि पगलागी रहीए ॥ ८ ॥ जोवनवय जब आवीयोए । नय परणणी परिणावियोए । पायमाथे नव काजए । प्रभु पाले पुहवीराजए ॥ ९ ॥ हिव हथणाउर ठामए । विश्वसेण नरेसर नामए । राणी अचिरा देवए । मनहर सुत्तराणें देवए ॥ १० ॥ चवदह सुपनें परवर्योए । अचिरा कुखें सुत अवतर्योए । मानवदेव मन्नाणीयोए । चक्रीसर जिणवर जाणीयोए ॥ ११ ॥ देस नयर हुइ संतिए । तिणनाम दीयो सिरि शांतिए । जिणगुण कृण जाणें फडाए । तिहुं भुवणें नहु उपमानहीए ॥ १२ ॥ नयण सलूणी तिलकलीए । बनगिंधे मीठे गयकलीए । नयण समाधि निरोयए । इणलंछणे नारंगिनंमोयए ॥ १३ ॥ गीतहीं मग सुरंगए । तिण पत्तणो लोक कुरंगए । तो तसुवमो शशि संकए । तिणवाल्यो नाम कलंकए ॥ १४ ॥ इणपर सुग भणि सास

भल्योए । जयभंजण स्वामी सांभल्योए । आणंदीयो मनआपणोए। पायसेवे मिस लंछण तणोए ॥ १५ ॥ लीलापति परणें वणीए । नव नवीय कुमरि रायां तणीए। वल छल अरियण जोगवेए । पीयराय भलीपर भोगवेए ॥ १६ ॥ कुमरतणें मंमल समेंए । पंचाससहस वरसां गमेंए। तोतेजे दिणयर जिसोए। ऊपन्नो चक्करयण तिसोए ॥ १७ ॥ साधी भरह छहखंमए। वरतावी आंण अखंमए । चवदरयण नवनिहि सहीए । वसु सोलसहस जक्खे अहीए ॥ १८ ॥ सहसवहुत्तर पुरवराए। बत्तीस मौम्मबद्ध नरवराए । पायक गामे कोमए। छिन्नवे नमें वेकरजोमए ॥१९॥ हय गय रह वर जूजुवाए। लखचौरासी मंदिर हुवाए। लाख त्रि वाजित्र घम घमेंए। बत्तीस सहस नाटक रमेंए। ॥२०॥ रूपजिसी सुरसुंदरीए । लक्षण लावन्य लीला भरीए । जंगम सौहग देहरीए । इसी चौसठसहस अंतेउरीए ॥ २१ ॥ अवरज रिद्धि प्रकारए। मणि कंचण रयण भंमारए । ते कहिवा कुण जाणए । वपु वपुरे पुण्य प्रमाणए ॥ २२ ॥ इम चक्कीसर पंचमोए । चौथो दूसमसूशम समोए। वरस सहस पचवीसए । सबपूरी मनह जगीसए ॥ २३ ॥ इणपरि विहुं तिर्थंकराए । चिरपाली राज विविहपराए । जाणी अवसर सारए । विहुं लीधो संजमभारए ॥ २४ ॥ विहुं खमदम धीरम धरीए । विहुं मोह मयण मद परहरीए । विहुं जिण झाण समाणए । विहुं पाम्यो केवलनाणए ॥ २५ ॥ विहुं देवहि कोमहि महिय । विहुं चौतीसे अतिसय सहिय। समवसरण विहुंठाणए । विहुं जोयणवांणि वखांणए ॥ २६ ॥ नाचे रणकत नेउरीए । विहुं आगलि इंद्र अंतेउरीए । टिग मिग जोवे जग सहुए रंगहि गुणगावे सुरवहुए ॥ २७ ॥ विहुंसिर छत्र चमर बिमल । विहुं पगतल नव सोवन कमल । विहु जिन तणें बिहारए । नविरोग नसोग नमारिए ॥ २८ ॥ विहुं चयार भुवणभरीए । विहुं सिद्धि रमणि सयंवरीए । विहुं भंजी भवफंदए। विहुं ऊदयो परमाणंदए ॥ २९ ॥ इम वीजोनें सोलमोए। जांणे चिंतामणि सुरतरुसमोए । थुणिअ निसंक विहाणए । तिहां इह परिभव नवि हाणए ॥ ३० ॥ विहुं उत्तव मंगलकरण । विहुं संघसयल दुरियहरण । विहुं वरकमल वयण नयण । विहुं श्री जिनराय भुवण

रयण ॥ ३१ ॥ इमजगतें जोगिमलणाए । श्रीअजिय शांति जिण थुइ अणीए । सरण विहुं जिणपायए । सिरि मेरुनंदन उवझायए ॥ ३२ ॥ इति श्री अजित शांतिजिन वृहत्स्तवन संपूर्णम् ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण स्तवन ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (ढाल कपूर हुवे अति ऊजलोरे एचाल) ॥ ॐ ॥ वरधमान जिनवर तणाजी । चरण नमुं चितलाय । ग्यान क्रिया जिण उपदिसे जी । शिव सुखतणो उपाय ॥ १ ॥ (भविक जन धर श्रीजिन उपदेस । छूटे कर्म कलेस भ०) ॥ पडिलेहण मुहपति तणीजी । भाषीते पचवीस । तिहां भाव विचारीयें जी । इम भाषे जगदीस ॥ २ ॥ (भ०) प्रथम वेपास विलोकियें जी । सूत्र अरथनी दृष्टि । एपडिलेहण दृष्टिनी जी । करे धर्मनी पुष्टि ॥ ३ ॥ (भ०) समकित मिथ्या मिश्रनीजी । मोहनी तीन नो त्याग । कामराग स्नेहराग नें जी । तज वलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥ (भ०) सौप थकु नज गुरु थकी जी । वाम हाथ करनाल । नव अखोडा आदरो जी । नव पखोडा समाल ॥ ५ ॥ (भ०) देव तत्व गुरु तत्व सुं जी । धर्म तत्व ग्रह सार । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो जी । तीन तणो परिहार ॥ ६ ॥ (भ०) ग्यान दरसण चारित्रना जी । संग्रह तीन आचार । तजो विराधन तीन एजी । गह अरथ अवधार ॥ ७ ॥ (भ०) मन वच कायानी सदाजी । गुपति ग्रही जे सुद्ध । पडिहरीयें वलि जाणनें जी । तीन दंड विसुद्ध ॥ ८ ॥ (भ०) पडिलेहणा पचवीसए जी । मुहपत्ती नी सार । हिव पडिलेहण अंगनी जी । ते पिण चतुर विचार ॥ ९ ॥ (भ०) हास्य रति अरति दोयनें जी । सुद्ध करो वाम बांह । तजि भय शोक दुगंछना जी । दक्षिण पिण करे ताह ॥ १० ॥ (भ०) कृष्णादि लेस्या तीन एजी । ते शिर थी परिहरु । रिद्धि रस शाता गारवा जी । करि छाती थी परिहरु ॥ ११ ॥ (भ०) काढ सल्ल तीन उर थकी जी । माया नियाण मिथ्यात । च्यार कषाय ये पगतणी जी । ठांवादिक परिख्यात ॥ १२ ॥ (भ०) षट काय विराधना जी । पगथ लिएहँ सुद्ध होय । ए पडिलेहण अंगनी जी । पचवीसे तुं जोय ॥ १३ ॥ (भ०) इम पडिलेहण जे

करै जी। धर मन ग्यान विवेक। सकल करम दूरे करै जी । पामें सुक्ख अनेक ॥ १४ ॥ (भ० कलश) इम वीरजिणवर तणा मुख थी अरथ गण धर सांभली। कहै सूत्र वाणी मन सुहाणी सुणो भवियण मन रली। उव झाय वर सिरि लब्धकीरति सुख थकी ए संग्रही। मुह पती पडिलेहण तणी विधि लब्धि वल्लभ गणि कही ॥ १५ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति श्रीमुह पत्ती पडिलेहण स्तवनं ॥ १४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सिद्धगिरि स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री विमलाचल शिर तिलो। आदीसर अरिहंत। जुगला धर म निवारणो। भयभंजण भगवंत ॥ १ ॥ श्री० ॥ मुझ मन ऊलट अति घणो (रे) सोदिन सफल गिणेस। स्वामी श्रीरिसहे सरू। जव नयणे नि रखेस ॥ २ ॥ श्री० ॥ जंगम तीरथ विहरता। साधु तणें परिवार । आदि जिणंद समोसरया। पूरव निनांणुंवार ॥ ३ ॥ श्री० ॥ अचरा विजया नंद नें। जग बंधव जगतात। इण गिरि चउमासै रह्या। थिवर कहै ए वात ॥ ४ ॥ श्री० ॥ पामें शिव सुख सासता। गणधर श्री पुंडरीक । पुंडरगिरि तिण कारणें । भगति करो निर भीक ॥ ५ ॥ श्री० ॥ नमिनें विनमि स होदरू। विद्याधर बलवंत। सेत्रुंज सिखर समोसरया । जे गरुवा गुणवं त ॥ ६ ॥ श्री० ॥ थावच्चा मुनिवर सुक। सहस २ परिवार । पंथग वय णे जागीयो। सो सेलग अणगार ॥ ७ ॥ श्री० ॥ पांडव पांच महाबली। सुणी जादव निरवाण। ते सीधा सिद्धा चलै । सुर नर करै वखांण ॥ ८ ॥ श्री० ॥ इम सीधा इणडूंगरे। मुनिवर कोडा कोडि ।पाज चढंता सांभ रे। ते प्रणमुं कर जोडि ॥ ९ ॥ श्री० ॥ जे बाघणि प्रति बूझवी । ते दर वाजे जोय। गोमुख यक्ष कवड मिली । सानिध कारी होय ॥ १० ॥ श्री० ॥ जे विधसुं यात्रा करै। सुर नर सेवकतास । राज समुद्र गुण गा वतां। अविचल लीलविलास ॥ ११ ॥ श्री० ॥ इति सेत्रुंजय स्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री रिषभ जिनेसर स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऋषभ जिनेसर दिनकर साहिब । वीनतडी अवधारोरे (ज गनातारू। मुझ तारोजी कृपा निधि स्वामी) ॥ जग जमवाद प्रगटले ता

हरो। अविचल सुख दातारो रे ॥ ज० ॥ १ मु० ॥ निजगुण भोक्ता पर गुण लोपा। आतम सगति जगायारे॥ ज० अविनासी अविचल अविकारी शिववासी जिन रायारे ॥ ज० मु० ॥ इत्यादिक गुण श्रवणे निसुणी। हुं तुम चरणे आयो रे॥ ज० ॥ तुम रींझावण हेतैं ततखिण। नाटक खेलम चायो रे॥ ज०॥ ३ मु० ॥ काल अनंत रह्यो एकेंद्री। तरु साधारण पामी रे॥ ज० ॥ वरस संख्याता वलि विकलेंद्री। वेषधरथा दुख धामी रे॥ ज० ॥ ४ ॥ मु०॥ सुर नर तिरि वलि नरक तणीगति। पंचेंद्रीपणो धारयोरे ज० ॥ चोवीसे दंडक मांहि भमियो। अबतो हुं पिण हारयो रे॥ ज० ॥ ५ ॥ मु० ॥ भवनाटक नितकरतो नवनव। हुं तुझ आगलि नाच्योरे ॥ ज० ॥ समरथ साहिब सुरतरु सरिषो। निरखी तुझनें जाच्योरे॥ ज० ॥ ६ ॥ मु० ॥ जो मुझ नाटक देखी रींझया। तो मुझ वंछित दीजेरे ॥ ज० ॥ जो नविरींझया तो मुझ भाषो। वलि नाटक नवि कीजेरे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मु० ॥ लालच धरि हु सेवा सारुं। तुं दुखडा नविकापे रे ॥ ज० ॥ दातासेती सूंबभलेरो। बहिलो ऊतर आपे रे ॥ ज० ८ मु० ॥ तुझ सरिषा साहिब पिण महारो। जो नवि कारज सारोरे ॥ ज० ॥ तो मुझ करम तणी गति अवली। दोस नकोई तुमारोरे ॥ ज० ९ मु० ॥ दीनदयाल दयाकरि दीजै। सुध समकित सहिनाणीरे ॥ ज० ॥ सुगुण सेवकना वंछित पूरो। तेहीजगुण मणिखाणी रे ॥ ज० १० मु० ॥ वर्ष अढारे गुणतालीसे। ज्येष्टसुदी सोमवारोरे ॥ ज० ॥ लालचंद प्रतिपददिन भेट्या। वीकानेर मझारोरे ॥ ज० ११ मु० ॥ ॥ ❋ ॥ इति श्री ऋषभ देवजी स्तवनं ॥ १६ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्री महावीर वीनती लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ वीर सुणो मोरी वीनती। कर जोमीहो कहुं मननी वात। बालकनी परिवीनवुं। मोरा सामीहो तूं त्रिभुवन तात ॥ १ ॥ वी० ॥ तुम दरसण विणहुं भम्यो। भव मांहेंहो सामी समुद्र मझार। दुक्ख अनंता में सह्या। ते कहितांहो किमआवे पार ॥ २ ॥ वी० ॥ पर उपगारी तुंप्रभु। दुखभांजेंहो जग दीनदयाल। तिणतोरे चरणें हुं आवीयो। सामी मुझनेंहो निज नयण निहाल ॥ ३ ॥ वी० ॥ अपराधी पिण ऊधरया। तें कीधीहो करुणा मोरासाम।

हुं तो परम भगत ताहरो । तिणतारोहो नहीं ढीलनो काम ॥ ४ ॥ वी० ॥ शूलपाणि प्रति बूझव्या । जिण कीधाहो तुझनें उपसर्ग । भंक दीयो चंभको सीये । तें दीधोहो तसु आठमोसर्ग । ५ ॥ वी० ॥ गोशालो गुनही घणुं । जिण बोल्याहो तोरा अवरणवाद । ते बलतो तें राखीयो । सीतलेस्याहो मूं की सुप्रसाद ॥ ६ ॥ वी० ॥ ए कुणछे इंद्रजालीयो । इम कहितां हो आयो तुमतीर । ते गोतमनें तें कीयो । पोतानोहो प्रभुतानो वजीर ॥ ७ ॥ वी० ॥ वचन उत्थाप्या ताहरा । जे झगड्योहो तुझसाथ जमाल । तेहनें पिण पनरें भवे । सिव गामीहो तें कीधो कृपाल ॥ ८ ॥ वी० ॥ अेमत्तो रिषि जेरम्यो । जल मांहेंहो बांधी माटीनी पाल । तिरती मूंकी काचली । तें तारयो हो तेहनें ततकाल ॥ ९ ॥ वी० ॥ मेघकुमर रिषि दूहव्यो । चितचूकोहो चारितथी अपार । एकावतारी तेहनें । तें कीधो हो करुणा भंडार ॥ १० ॥ वी० ॥ बार वरस वेस्याघरे । रह्यो मुंकीहो संयमनोभार । नंदखेण पिण उधरयो । सुर पदवीहो दीधी अतिसार ॥ ११ ॥ वी० ॥ पंच महाव्रत परिहरी । ग्रहवासेहो वसिया वरस चोवीस । ते पिण आद्रकुमारनें । तें तारयो हो तोरी एह जगीस ॥ १२ ॥ वी० ॥ राय श्रेणक राणी चेलणा । रूप देखीहो चित चूका जेह । समवसरण साधु साधवी । तें कीधा हो आराधिक तेह ॥ १३ ॥ वी० ॥ विरत नहीं नहीं श्रावकी । नहीं पोसोहो नहीं आदर दीख । ते पिण श्रेणिकरायनें । तें कीधोहो सामी आपसरीख ॥ १४ ॥ वी० ॥ इम अनेक तें उधरया । कहुं नोगहो केता अवदात । सारकरो हिवमाहरी । मनमांहेंहो आणो मोरभी वात ॥ १५ ॥ वी ॥ सूधो संजम नविपले । नही तेहवोहो मुझ दरसण नाण । पिण आधारछे एतलो । इक तोरोहो धरुं निश्चल ध्यान ॥ १६ ॥ वी० ॥ मेह महीतल वरसतो । नविजोवेहो सम विखमी ठाम । गरुआ सहिजे गुण करे । स्वामी सारो हो मोरा बंछित काम ॥१७॥ वी० ॥ तुम नामें सुख संपदा तुम नामें हो दुख जाये दूर । तुम नामें बंछित फले । तुम नामें हो मुझ आणंद पूर ॥ १८ ॥ वी० ॥ (कलश) ॥ ॥ इम नगर जेशलमेर मंडण तीर्थंकर चोवीसमो । सासना धीसर सिंह लंछन सेवतां सुरतरु समो ।

जिणचंद त्रिसला मात नंदन सकल चंद कला निलो । वाचना चारज स मय सुंदर संथुण्यो त्रिजुवन तिलो ॥ १९ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ इति श्री महावीर जिन स्तवनं ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ चोवीस दंमक स्तवन लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (ढाल आदर जीव क्षमागुण आदर) एचाल ॥ ❋ ॥ पूर म नोरथ पासजिनेसर । एहकरुं अरदासजी । तारण तरण विरुद तुज सांज लि । आयो हुं धरि आस जी ॥ १ ॥ (पू०) इण संसार समुद्र अथागै जमियो जवजल मांहि जी । गिल गिचिया जिम आयो गिडतो । साहिब हाथे साहिजी ॥ २ ॥ (पू०) तुं ग्यानीतो पिण तुज आगे । वीतक कहीयै बात जी । चौवीसे दंमक हुं जमियो । वरणुं तेह विख्यात जी ॥ ३ ॥ (पू०) साते नरक तणो इक दंमक । असुरादिक दस जाणजी । पांच थावर नें तीन विकलेंद्री । उगणीस गिणती आणजी ॥ ४ ॥ (पू०) ॥ पंचेंद्री तिर्यंच नें मानव । एह थया इकवीस जी । व्यंतर ज्योतिषीनें वेमानिक । इम दंम क चोवीस जी ॥ ५ ॥ (पू०) पंचेंद्री तिर्यंच अनें नर । परयाप्ता जे हो य जी । एचौविह देवां मे उपजै । इम देवां गति दोय जी ॥ ६ ॥ (पू०) असंख्यात आउखै नर तिरि । निहचै देवज थायजी । निज आउखे सम के उछे । पिण अधिकें नवि जायजी ॥ ७ ॥ (पू०) जवनपती कै व्यंतर तांई । समूर्छिम तिरयंच जी । सरग आठमा तांई पुहचै । गरजज सुकृत सं चजी ॥ ८ ॥ (पू०) आउ संख्यातै जे गरजज । नर तिरयंच विवेक जी । बादर पृथवीनें वलिपाणी । वनसपती प्रत्येक जी ॥ ९ ॥ (पू०) परि याप्ता इण पांचें ठामें । आवी उपजै देवजी । इण पांचामाहें पिण आगै । अधिकाई कहुं हेवजी ॥ १० ॥ (पू०) तीजा सरग थकी मांमी सुर । एकेंद्री नवि थाय जी । अठम थी ऊपरिला सगला । मांनव मांहै जायजी ॥ ११ ॥ ❋ ॥ (पू०) (ढाल २ आज निहेज्योरे दीसै नाहलोएचाल ।) ॥ ❋ ॥ नरक तणी गति आगति इण परै । जीवजमें संसार । दोय ग तिनें दोय आगति जाणीयै । वलोय विशेष विचार ॥ १२ ॥ (न०) संख्या तें आउ परयापता । पंचेंद्री तिरयंच । तिम हीज मनुष्य एहिज वे नरक

में । जाये पाप प्रपंच ॥ १३ ॥ (न०) प्रथम नरक लागि जाय असन्नि यो । गोह नकुल तिम वीय । गृध्र प्रमुख पंखी त्रीजी लगे । सींह प्रमुख चो थीय ॥ १४ (न०) पंचमी नरकै सीमा सापणी । छठी लागि स्त्री जाय । सातमीये मांणस के माछलो । ऊपजे गरभज आय ॥ १५ ॥ (न०) न रक थकी आवे विहुं दंडके । तिरयंच के नर थाय । ते पिण गरभज नें परयापता । संख्या ती जसुआय ॥ १६ ॥ (न०) नारकियांनें नरकथी नीसरयां । जे फल प्रापत होय । उतकृष्टे भांगे करि तेकहुं । पिण निश्चै नही कोय ॥ १७ ॥ (न०) प्रथम नरकथी चवि चक्रवर्त्ति हुवे । वीजी हरि वलदेव । तीजी लगि तीर्थंकर पद लहे । चोथी केवल हेव ॥ १८ ॥ (न०) पंचमी नरकनो सरव विरति लहे । छठी देस विरत्त । सातमी न रक नो समकित हीज लहे । न हुवै अधिक निमित्त ॥ १९ ॥ (न० ॥ ढाल ३) ॥ ॥ (करम परीक्षा करण कुमर चल्यो रे) ए चाल ॥ ॥ मानव गति विण सुगति हुवै नहीरे । एहनो इम अधिकार । आऊ संख्या ते नर सहु दंडकेरे । आवी लहे अवतार ॥ २० ॥ (मा०) तेऊ वाऊ दंडक वेतजीरे । वीजा जे वावीस । तिहांथी आया थाये मानवीरे । सुख दुःख कर्मस रीस ॥ २१ ॥ (मा०) नर तिरयंच असंखी आउखैरे । सातमी नरकना तेम । तिहां थी मरनें मनुष्य हुवै नही रे । अरिहंत भाष्यो एम ॥ २२ ॥ (मा०) वासुदेव वल देव तथा वलीरे । चक्रवर्त्तिनें अरिहंत । सरग नर गना आया ए हुवेरे । नर तिरथी न हुवंत ॥ २३ ॥ (मा०) चोविह दे व थकी चवि ऊपजेरे । चक्रवर्त्ति वल देव । वासुदेव तीर्थंकर ए हुवे रे । वेमानक थकी वेव ॥ २४ ॥ (मा०) (ढाल ४ नाभि अने मरुदेवा) ए चाल ॥ ॥ हिव तिरयंच तणी गति आगति कहीये अशेष । जीवभमें इण परभव मांहें करम विशेष । आऊ संख्याती जे नर तिर्यंच विचार । ते म गला तिरयंचा मांहें लहे अवतार ॥ २५ ॥ जिण तिरयंचां मांहे आवे नारक देव । ते कह्या पहिली तिण कारण नकहुं हेव । पंचेंद्री तिरयंच संख्याते आऊखे जेह । ते मरी चिहुं गतिमां जावे इहां नही संदेह ॥ २६ ॥ थावर पांच तीने विकलेंद्री आठ कहावे । तिहां थी आउसंख्याता नर ति

रयंचमें आवे । विकल चवी लहै सरब विरति पिण मुगति न पावै । तेऊ वाऊ थी आयो तेहनें समकितनावै ॥ २७ ॥ नारक वरजीनें सगलाही जीव संसार । पृथवी आउ वनस्पती मांहि लहै अवतार । एतीने इहांथी चवि आवै दसे ठामें । थावर विकल तिरी नर मांहे उतपत पामें ॥ २८ ॥ पृथवी काय आदि देई दस दंडके एह । तेऊ वाऊ मांहे आवी उपजै तेह । मनुष्य विना नवमांहे तेऊ वाऊ बे जावै । विकलेंद्री ते दसमांहि जावै पूठाही आवै ॥ २९ ॥ एम अनादि तणो मिथ्याती जीव एकंत । वनस्पती मांहें तिहां रहीयो काल अनंत । पुढवी पाणी अगनि अनेंचोथो वलि वाय । काल चक्र असंख्याता तांइ जीव रहाय ॥ ३० ॥ बेइंद्री तेइंद्री अनें चौरिंद्री मझारें । संख्याता वरसां लगें भमियो करम प्रकारें । सात आठ भव लगितां नर तिरयंचमें रहियो । हिव मांनव भव लहिनें साधुनो वेषमें रहियो ॥ ३१ ॥ राग द्वेष छूटे नही किम छूवे छूटकवार । पिणछै महारे मनसुध ताहरो एक आधार । तारण तरण में त्रिकरण सुद्धै अरिहंत लाधो । हिव संसार घणो भमिवो तो पुदगल आधो ॥ ३२ ॥ तुं मन वंछित पूरण आपदाचूरण सामी । ताहरी सेवलही तो में नवनिध सिध पामी । अवरन कांइ इछंइण भव तुंहीज देव । सूधे मन एक होज्यो भव भव ताहरीसेव ॥ ३३ ॥ (कलश) ॥ इम सकल सुखकर नगर जेशल मेर महिमा दिन दिनें । संवत्तसतरें उगणतीसें दिवस दीवालीतणें । गुण विमलचंद समान वाचक विजेहरष सुसीसए । श्री पासना गुण एम गावै धरमसी सुजगीसए ॥ ३४ ॥ ॥ ❋ ॥ इति श्री चौवीस दंडक स्तवनम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ इरियावही मिछामि दुकडसंख्या स्तवन लि० ॥

॥ ❋ ॥ प्रभु प्रणमुंरे पास जिणेसर थंभणो एहनी ॥ ❋ ॥ पद पंकज रे प्रणमी वीरजिनंदना । त्रिकरण सुधरे करि मुनिवर पय वंदना । प्रेम तेरे पडिकमी जिम इरियावही । श्रीवीर नीरे वाणी तहत्तकरि सरदही । (उ०) सरदही वाणी मन सुहाणी चित्त आणी तेवली । मिछामि दुकड तणी संख्या कहिसुं जिम कही केवली । भू दग जलण तिम वाउ वणसइ विगल पण इंद्री तणी । करतां विराहण करम बंध्या दूर ते करिवा भ

णी ॥ १ ॥ (चाल) पुढवी दगरे वाऊ तेऊ वणस्सई । पण थावररे बादर सुहम दसेथई । प्रत्येकजरे वणस्सइ इग्यारह थया । बावीसेरे पज्जत्तग अपज्जत्तया । (उल्लालो) पज्जत्त अपज्जत्तग वखाण्या विगल तिय छहन्नालए। जल थल खचर नुयंग उइपण इंद्रिय तिरि अम्भ्रालए। घम्मादि साते नरक पुढवी नारकी तिहां सात जे। ते चवद नेदे करी जाणो पज्जत्तय अपजत्त जे ॥ २ ॥ (चाल) पनरह विधरे सुर गिण परमाहम्मिया । किल विखियारे त्रिविध करम ते निम्मिया। जंन्निय दसरे नव लोगांतिक जाणिये सोलह विधरे व्यंतर देव वखाणिये। (उल्लालो) वखाणिये दसविध नुवन पतिना तार रवि शशि रिषि गहा। चर थिर दसेविध जोइसी सुर वखाण्या जिणवर जहा। बारह विमानक पण अणुत्तर नवग्रीवेके नव नण्या। पज्जत्त अपजत्तग अठाणुं अधिक सतसंख्यागिण्या॥॥ (ढाल २) मेघ आगम सही ए० ॥ पंचनरत वलि ऐरवत पंच पंच विदेहवर नूमिका ए । खेत्र ए पनरह करम नूमि जाणीये असि कसि मसिहि आजीविकाए । हेमवत खेत्र वलि तिम हरिवर्ष रम्यक ऐरण्यवत सहीए। मेरुपिण पाखती चारि २ खेत्र दस कुरु अकरम नूमीकहीए ॥ ४ ॥ हिमगिरि सिहरीय दाढ चीयारि लवण समुद्रमांहि विस्तरीए । सात २ अंतर दोय पासे दीप उप्पन्न अन्तर धरीए । दोइसे नेद उइ आगला जांणि मणुय पज्जत्त अपज्जत्तयाए। एक सो एक समुर्छिम नेद तीनसे तीनमणुआ थयाए॥ ५॥ (ढाल ३)॥ (हिव जनम्या जगगुरु०) ए० ॥ पणसय त्रेसठिविध जीवसहू ने एह अन्निहय आदिक दस गुणित करीजे तेह । पणसहस छसे वलि त्रीस अधिकने जाणि । ते रागे दोसे उगुणा करी वखाण ॥ ६ ॥ हुइ सहस इग्यारह उइसय साठि प्रमाण । ए प्रवचनवाणी जाणी हितजर आण। मनवच काया करि त्रिगुणाकरि त्रिअंक । तेतीस महस सत सातअसी निःसंक ॥ ७ ॥ वलि करण करावण अनुमति त्रिगुणा किद्ध। इक्कलख सहसइग तिसय चालीस प्रसिद्ध। अतीत अनागत वर्त्तमान वलिकाल। जे थइयविराधना तिणी त्रिगुण संन्नाल ॥ ८ ॥ तीन लाख सहस च्यार वेसे अधिक तेथाय। अरिहंत प्रमुख छह माखे उगुणा थाय। इम लाख

अढारह वलि सहस चउवीस । इकसो वीसोत्तर हुइ संख्या निसदीस ॥ ९ ॥ (ढाल ४) चोपईनी ॥❋॥ इण परि मिछामि डुकडंदेई । नविक तरया नवजल निधिकेई । तरे अछे वलि आगलि तरिसी । निरमल केवल लखमी वरिसी ॥ १० ॥ इरियावही धरम गंगाजल । न्हाण करे आतमक रि निरमल । सें मुखनाषे वीर जिणेसर । सूत्रकरी गूंथे ते श्रुतधर ॥ ११ ॥ इम पडिक्कमी मुनिवर अइमत्तो । वीरसीस केवल पदपत्तो । त्रिकरण सुध तसु पय प्रणमी जे । मानव जनम सफल इम कीजे ॥ १२ ॥ (कलश) ॥ ❋ ॥ इम वीरजिणवर ग्यान दिणयर सयललोय सुहंकरो । तियलोय सामी सिद्धिगामी सुद्ध धरम धुरंधरो । उवझाय लक्ष्मी कीर्त्ति सीसे जैनवा णी मन धरी । गणि लब्धिवल्लभ तवन करि इम संथुणयो नावे करी ॥ १३ ॥ इति इरियावही मिछामि डुक्कड संख्या स्तवनं ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ पंचसमवाय स्तवन लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सिद्धारथ सुतवंदिये । जगदीपक जिनराज । वस्तुनाव सब जा णिये । जिन आगम थी आज ॥ १ ॥ स्यादवादथी संपजे । सकल वस्तु विख्यात । सप्तनंगी रचना विना । वंधन बैसे वात ॥ २ ॥ वाद वदे नय जूजु आ । आप आपणें ठाम । पूरण वस्तु विचारतां । कोई न आवे काम ॥ ३ ॥ अंध प्ररूपे एहगज । ग्रही अवयव एकेक । दृष्टिवंत लहे पूर्णगज । अ वयव मिली अनेक ॥ ४ ॥ संयुत सकल नये करी । जुगत २ सुध बोध । धन जिनसासन जगजयो । तिहां नही कोइ विरोध ॥ ५ ॥ (ढाल १ आ साउरी राग ॥) श्रीजिन सासन जगजयकारी । स्यादवाद शुद्धसरूपरे । नयएकांत मिथ्यात्वनिवारण । अकल अनंग अनूपरे ॥ ६ ॥ श्री० । कोई कहे एकाल तणें वस । सकल जगत गत होयरे । काले उपजे विणसे का ले । अवरन कारन कोयरे ॥ ७ ॥ श्री० । काले गर्न धरे जगवनिता । काले जनमें पूतरे । काले बोले काले चाले ! काले झाले वर सूतरे ॥ ८ ॥ श्री० ॥ काले दूध थकी दही थाये । काले फल परिपाकरे । विविध पदारथ का ल उपाये । अंतकरे वेवाकरे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ जिन चउवीसे बारचकवे । वासुदेव बलवंतरे । काले कवलित कोई नदीसे । जसुकरता सुर सेवरे

॥ १० ॥ श्री० ॥ उत्सर्प्पणि अवसर्पणि आरा । छे छे जूजूयें जांतरे । पटरितु काल विशेष विचारो । भिन्नभिन्न दिन रातरे ॥ ११ ॥ श्री० ॥ काले बाल विलास मनो हर । योवन कालाकेशरे । वुद्धपणें हुयवलि २ दुर्बल । सकति नही लवलेसरे ॥ १२ ॥ श्री० ॥ (ढाल २ गिरु आ गुण श्रीवीरजी ए चाल) ॥ ॥ ॥ तव सुजाव वादी वदेजी । कालकिस्युं करे रंक । वस्तु सुजावे नीपजे जी । विणसे तिमज निस्संक ॥ १३ ॥ (विवेकी जुओ २ वस्तु सु जाव) ॥ छते योग जोवनवती जी । वांझणि न जणें बाल । मूंछनही महिला मुखे जी । करतल ऊगे न बाल ॥ १४ ॥ वि० ॥ विणस जाव नवि संपजे जी । किमह पदारथ कोय । अंब नलागे नींवमेंजी । वागवसंते जोय ॥ १५ ॥ वि० ॥ मोर पींछ कुणचीतरे जी । कुण करे संध्या रंग । अंगवि विध सविजीवनाजी । सुंदर नयन कुरंग ॥ १६ ॥ वि० ॥ कांटा बोरबंबूल नाजी । कुणें अणियाला कीध । रूप रंग गुण जूजूआजी । तस फल फू ल प्रसिद्ध ॥ १७ ॥ वि० ॥ विसहर मस्तके नितवसेजी । मणिहरे विस तत काल । परवत थिर चल वायरोजी । ऊरध अगननी झाल ॥ १८ ॥ वि० ॥ मछ तुंब जलमां तरेजी । बूडे काग पाहाण । पंख जाति गयणें फिरे जी । इणपरे सहिज विनाण ॥ १९ ॥ वि० ॥ वाय सूंठ थी उपसमें जी । हरडे करे विरेच । सीझेनहि कणकांगमो जी । सकल सुजाव अनेक ॥ २० ॥ वि० ॥ देश विशेषे काठनोजी । जुयमां थाये पाखाण । संख अस्थिनो नी पजे जी । क्षेत्र सजाव प्रमाण ॥ २१ ॥ वि० ॥ रवि तातो शशि सीयलो जी । जव्या दिक वहु जाव । छए द्रव्य आपापणा जी । न तजे कोई सजाव ॥ २२ ॥ वि० ॥ ॥ (ढाल ३) कपूर हुवे अति ऊजलो रे एचाल ॥ काल किस्युं करे वापमोरे । वस्तु सुजाव अकज्ज । जो नहोइ जवतव्यता जी । तो किम सीझे कज्ज रे ॥ २३ ॥ (प्राणी मकरो मनजंजाल) ॥ एतो जा वी जाव निहाल रे ॥ प्रा० ॥ जलधितरे जंगल फिरे जी । कोमि यतन करे कोय । अणजावी होवे नहीं जी । जावी होय ते होय रे ॥ २४ ॥ प्रा० ॥ आंब मोर वसंतमां जी । झाले कोई लाख । खरचा केई खांखटी जी । केइ आंबा केई साख रे ॥ २५ ॥ प्रा० ॥ वांउल जिम जवतव्यता जी । जि

ण २ दिशे उजाय । परवस मन माणस तणो जी । तृण जिम पूठे धाय रे ॥ २६ ॥ प्रा० ॥ नियत वसैं विण चिंतव्यूं जी । आवी मिले ततकाल । वरसां सोनुं चिंतव्यो जी । नियम करै विसराल रे ॥ २७ ॥ प्रा० ॥ आठमो चक्रि सुजूमि तेजी । समुद्र पड्यो विकराल । ब्रह्मदत्त चक्री तणा जी । नयन हरै गोवाल रे ॥ २८ ॥ प्रा० ॥ कोकूहा कोयल करै जी । किम रा खीसरे प्राण । आहेमी शर ताकीयो जी । ऊपर जमें सींचाणरे ॥ २९ ॥ प्रा० ॥ आहेमी नागें मस्यो जी । वाण लग्यो सींचाण । कोकूहो उमी गयो जी । जोउ नियत परमाणरे ॥३०॥प्रा०॥ सस्त्र हण्या संग्राम मांजी । रानपड्यां जीवंत । मंदिर मांहें मानवी जी । राख्याही नरहंतरे ॥ ३१ ॥ प्रा० ॥ (ढाल४ राग मारुणी मनोहरणी) ॥ ❋ ॥ काल स्वजाव नियत मति कूमी । करम करै ते थाय । करमें नरय तिरय नर सुर गति । जीव जवंतरे जाय ॥ ३२ ॥ (चेत न चेतज्योरे करम न बूटै कोय) ॥ करमें राम वस्या वनवासे । सीता पामी आल । कर्मै लंका पति रावणनुं । राज्य थयो विसराल ॥ ३३ ॥ चे० ॥ कर्मै कीमी कर्मै कुंजर । कर्मै नर गुणवंत । कर्मै रोग सोग छुख पीमित । जनम जायै विलसंत ॥ ३४ ॥ (चे०) कर्मै वरस लगे रिसहेसर । उदक न पामें अन्न । कर्मै जिननें जोउ गिमारै । खीलारोप्या कन्न ॥ ३५ ॥ चे० ॥ कर्मै एक सुख पालै वैसै । सेवक सेवै पाय । एक हय गय चढ्या चतुर नर । एक आगल ऊजाय ॥ ३६ ॥ चे० ॥ उद्यम मानी अंधतणी परि । जगहीं मे हाहूतो । कर्म वली ते लहै सकल फल । सुख जर सेजे सूतो ॥ ३७ ॥ चे० ॥ उंदर एकै कीधो उद्यम । करंमीयो करकोले । मांहे घणा दिवसनो जूखो । नागरह्यो मममोले ॥ ३८ ॥ चे० ॥ बिवर करी मूषक तसु मुखमां दीये आपणुं देह । मार्ग लही वन नाग पधारया । कर्म मर्म जोवो एह ॥ ३९ ॥ चे० ॥ (ढाल ५ मी) ॥ (तो चोढियो घण मान गजे एचाल) ॥ ❋ ॥ हिव उद्यम वादी जणेए एच्यारे असमत्थतो । सकल पदारथ साधवा ए । उद्यम एक समरत्थतो ॥ ४० ॥ उद्यम करतां मानवी ए । स्युं नविसीझै काजतो । रामें रयणायर तणी ए । लीधो लंका राजतो ॥ ४१ ॥ करम नियतिनें अनुसरे ए । जेहमां सत्वन होयतो । देवल वाव सुख पंखि

या ए । पिउ पेसंता जोयतो ॥ ४२ ॥ विण उद्यम किम नीकले ए । तिल माहेंथी तेलतो । उद्यम थी ऊंची चढेए । जोवो एकेंद्रिय वेलतो ॥ ४३ ॥ उद्यम करतां इकसमें ए । जेह नसीझे काजतो । ते फिर उद्यमथी हुवेए । जो नवि आवे वाजतो ॥ ४४ ॥ उद्यम करि ऊरयां विनाए । नविरंधाये अन्नतो । आवी न पमें कोलीयोए । मुखमां खेपै जतन्नतो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत उद्यम पिताए । उद्यम कीधा कर्म्म तो । उद्यम थी दूरे टलै ए । जोउ कर्म नों मर्म तो ॥ ४६ ॥ दृढप्रहार हत्या करीए । कीधा पापअनंततो । उद्यमथी षट मासमां ए । आप थया अरिहंत तो ॥ ४७ ॥ टीपे २ सरवर नरे ए । काकरे २ पालतो । गिर जेहवा गढ नीपजे ए । उद्यम सकल निहालतो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जल बिंदुओए । करे पाहाणमां ठामतो । उद्यम थी विद्या नणें ए । उद्यम जोमे दामतो ॥ ४९ ॥ (ढाल६) एलिंमी किहा राखी एदेशी ॥ ❀ ॥ एपांचेही वाद करंतां । श्री जिनचरणे आवे । अमीयरसे जिन वयण सुणीनें । आणंद अंग नमायेरे ॥ ५० ॥ (प्राणी समकित मतिम न आणोरे । नय एकांत मताणोरे । ते मिथ्या मत जाणोरे । आंकणी) ॥ एपांचे समुदाय मिल्या विण । कोई काज न सीझे । आंगुल जोगे कवल तणी पर । जे बूझे तें रीझेरे ॥ ५१ ॥ प्रा० ॥ आग्रह आणी कोई एकने । एहमां दिये वमाई । पिण सेनामिल सकल रणं गण । जीते सुनट लमाईरे ॥ ५२ ॥ प्राणी० । तंतुसन्नावे पट उपजावे । काल क्रमें वणाई नवतव्यता होयें तें नीपजे । नही तो विघन घणाईरे ॥ ५३ ॥ प्राणीस० । तंतुवाय उद्यम नोक्तादिक । नाग्य सवल सहकारी । एपांचे मिल सकल पदारथ । उतपत जोवो विचारी रे ॥ ५४ ॥ प्राणी० ॥ नियति वसें हलुकर्म थइने निगोद थकी नीकलियो । पुण्यें मनुज नवादिक पामी । सदगुरुनें जई मिलियोरे ॥ ५५ ॥ प्रा० ॥ नवथितनो परपाक थयो तब । पंमित वीर्य उलसियो । नव्यस्वन्नावे शिव गति गामी । शिव पुर जईनें वसियोरे ॥ ५६ ॥ प्रा० ॥ वर्द्धमान जिन इण परि वीनवे । सासन नायक गावो । संघ सकल सुख दाई जेहथी । स्यादवाद रसपावोरे ॥ ५७ ॥ प्रा० ॥ (कलश) इम धर्म नायक सुगति दायक वीर जिनवर संथुण्यो । सय सतर संवत

वन्हिलोचन वर्ष हर्ष धरी घणो। श्री विजय देव सूरींद पटधर विजय प्रभु मुणिंदए। कीर्त्ति विजय वाचक सीस इण परि विनय कहै आणंदए ॥५८॥ इति पंच समवाय स्तवनं समाप्तम्॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ १४ गुणठाणास्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ थंजणपुर श्रीपास जिणंदो ॥ एचाल ॥ ❀ ॥ सुमतिजिणंद सुमतिदातार। वंदुं मनसुध वारंवार। आणीजाव अपार। चवदै गुणथानक सुविचार। कहिस्युं सूत्र अरथ मनधार। पामें जिम जवपार॥ १ ॥ प्रथम मिथ्यात कह्यो गुणठाणो। बीजो सास्वादन मन आणो। तीजो मिश्र वखाणुं। चोथो अविरत नाम कहाणो। देशविरति पंचम परमाणो छठो प्रमत्त पिछाणुं ॥ २ ॥ अपरमत्त सत्तम सजहीजै। अठम अपूरव करण कहीजे। अनिवृत्ति नाम नवम्म। सूखमलोज दसम सुविचार। उपशांत मोह नाम इग्यार। खीणमोह बारम्म ॥ ३ ॥ तेरम सयोगी गुणधाम। चनदम थयो अयोगी नाम। वरणुं प्रथम विचार। कुगुरु कुदेव कुधर्म्म वखाण। तेह लक्षण मिथ्या गुणठाण। तेहना पंचप्रकार॥ ४ ॥ (ढाल २) सफल संसारनी ॥ ❀ ॥ जेह एकान्त नय पक्ष थापी रहै। प्रथम एकान्त मिथ्यामती ते कहै। ग्रंथ उत्थापि थापै कुमति आपणी। कहै विपरीति मिथ्यामती ते जणी ॥ ५ ॥ जैन शिव देव गुरु सहु नमें सारिखा। तृतीय ते विनय मिथ्यामती पारिखा। सूत्र नवि सरदहै रहै विकलप वर्णे। संसयी नाम मिथ्यात चोथो जणें॥ ६ ॥ समझ नही काय निज धंधराती रहै। एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै। एह अनादि अनंत अजव्यनें। करिय अनादि थिति अंत सुजव्यनें॥ ७॥ जेम नर खीर घृत खंड जीमनें वमें। सरस रस पाय वलि स्वाद केहवोगमें। चोथ पंचम छठे ठाण चढिनें पडै। किणहि कषाय वसिआय पहिले अडै॥ ८ ॥ रहै विच एक समयादि षट आवली। सहीय सासादनें थिति इसी सांजली। हिव इहां मिश्रगुण ठाण त्रीजो कहे। जेह उत्कृष्ट अंतर महुरत लहै ॥ ९ ॥ (ढाल ३) बेकर जोमीताम ॥ एहनी ॥ ❀ ॥ पहिला चार कषाय। शमकरि समकिती। कैतो सादि मिथ्यामती ए। ए बेहिज लहै मिश्र। सत्य असत्य जिहां।

सरदहणावेतं ढतीए ॥१०॥ मिश्र गुणालय मांहि। मरण लहै नही। आ नुबंध नपमैं नवो ए। कैतो लहै मिथ्यात। कै समकित लहै। मतिसर खी गति पर नवै ए॥ ११ ॥ च्यार अप्रत्याख्यान। नदय करी लहै। म तिविण किहां समकित पणो ए। ते अविरत गुणठाण। तेतीस सागर। साधिक थिति एहनी नणो ए॥१२॥ दया नपशम संवेग। निरवेद आ सता। समकित गुण पांचे धरैए। सहु जिन वचन प्रमाण। जिन सास न तणी। अधिक २ नन्नत करै ए॥१३॥ केईक समकित पाय। पुदग लअरधतां। नत्कृष्टा नवमें रहै ए। केईक नेदी गंठि। अंतर महुरतें। चढतें गुण सिवपद लहै ए॥१४॥ च्यार कषाय प्रथम्म। त्रिणवलि मोह नी। मिथ्या मिश्र सम्यक्तनीए। साते प्रकृतिजास। परही नपसमें। ते नपसम समकित धणी ए॥१५॥ जिण साते क्षय कीध। ते नर क्षायकी। तिणहीज नव सिव अनुसरैए। आगलि वांध्यो आन। तातें तिहां थकी। तीजै चोथै नवतरै ए॥१६॥ (ढाल ४) इणपुर कंबल कोइन लेसी॥ ए चाल॥ ❀॥ पंचम देसविरति गुणठाण। प्रगटै चनकमी प्रत्याख्यान। जेण तजे बावीस अनक्ष। पाम्यो श्रावकपणो प्रतक्ष ॥ १७ ॥ गुण इक वीस तिके पिण धारै। साचावारै ब्रत संनारै। पूजादिक षटकारज साधै। इग्यारै प्रतिमा आराधै॥१८॥ आरत रोद्र ध्यान हुवे मंद। आयो मध्य धरम आनंद। आठ बरस ऊणी पुव्वकोरु। पंचम गुण ठाणें थिति जोरु ॥१९॥ हिव आगै साते गुणथान। इक २ अंतर महुरत मान। पंच प्रमाद वसै जिण ठाम। तेण प्रमत्त ढठो गुणधाम॥२०॥ थिवर कलप जिन कलप आचार। साधै षट् आवस्यक सार। नदयत चोथा च्यार क षाय। तेण प्रमत्त गुणठाण कहाय॥ २१ ॥ सूधो राखे चित्तसमाधै। धर मध्यान एकांत आराधै। जिहां प्रमाद क्रिया विघनासे। अप्रमत्त सत्तम गुण नासे॥ २२ ॥ (ढाल ५) नदी यमुनाके तीर नमै दोय पंखीया॥ ए चाल॥ ❀॥ पहिलै अंसै अष्टम गुणठाणा तणें। आरंनें दोयश्रेणि संखेपे ते गणें। नपशम श्रेणि चढे जे नरहुवे नपसमी। क्षपक श्रेणि क्षाय क प्रकृति दशक्षय गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढता परिणाम अपूरव गुण ल

हैं। अष्टम नाम अपूरव करण तिणें कहै । सुकल ध्याननो पहिलो पायो आदरै। निरमल मन परिणाम अडिग ध्यानें धरै॥ २४॥ हिव अनिवृत्त करण नवमो गुण जाणियै । जिहां भाव थिर रूप निवृत्ति न जाणियै। क्रोध माननें माया संजलणा हणें । उदै नही जिहां वेद अवेद पणें ति णें॥ २५॥ जिहां रहै सूखम लोभ कांइक शिव अभिलखै । ते सूखम संपराय दशम पंडित दखै । संत मोह इण नाम इग्यारम गुण कहे । मोह प्रकृति जिण ठाम सहु उपसम लहै॥ २६ ॥ श्रेणिचढ्यो जो काल करै किणही परै । तो थायै अह मिंद्र अवर गति नादरै। च्यारवार सम श्रेणि लहै संसारमें। एक भवे दोय श्रेणि अधिक न हुवै किमें॥ २७॥ चढि इग्यारम सीम समी पहिलै पडै। मोह उदै उत्कृष्ट अरध पुगदल रडै। खिपक श्रेणि इग्यारम गुणठाणो नही। दशम थकी बारम्म चढै ध्यानें रही॥ २८॥ (ढाल ६ एक दिन कोई मागध आयो पुरंदर पास)॥ ए चाल॥ ❀ ॥ खीण मोह नामें गुण ठाणो बारम जाण। मोह खपायो नैमो आयो केवल नाण। प्रगट पणें जिहां चारित अमल यथा आख्यात । हिव आगैं तेरम गुणठाण तणी कहै वात॥ २९ ॥ घातीय चौकर्म्म क्षयगई र हीय अघातीय एम। प्रकृति पच्यासी जेहनें जूना कापड जेम । दरसण ज्ञान वीरज सुख चारित पंच अनंत । केवल ज्ञान प्रगट थयो विचरै श्री भगवंत ॥ ३०॥ देखै लोक अलोकनी छानी परगट वात । महिमावंत अ ढारे दूपण रहित विख्यात । आठेवरसे ऊणी कही इक पूरव कोडि । उत्कृ ष्टी तेरम गुण ठाणें ए थिति जोडि॥ ३१॥ कर सेलेसी करण निरूध्या मन वच काय । तेण अयोगी अंत समइ सहु प्रकृति खपाय । पांचे लघु अक्षर ऊचरतां जेहनो मान । पंचम गतिपामें सिवपद चउदम गुणथान । ॥ ३२॥ त्रीजै बारमें तेरमें मांहे न मरै कोइ । पहिलो बीजो चोथो पर भव साथे होइ। नारक देवनी गतिमांहे लाभे पहिलाच्यार । धुरला पांच तिरी मांहिमणुए सर्व्व विचार॥ ३३॥ (कलश)॥ इम नगर बाहड मेरुमं डण सुमति जिण सुपसाउले । गुणठाण चवद विचार वरण्यो भेद आगम नें भले। संवत्त सतरेसे छत्तीसे श्रावण वदि एकादसी । वाचक विजय श्री

हरष सानिध कहै मुनि इम धर्म्मसी ॥ ३४ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥
इति श्री चतुर्द्दश गुण स्थान विचार स्तवनं ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ समवसरण विचार गर्भित स्तवन लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दुहा) श्रीजिन सासन सेहरो । जगगुरु पास जिणंद । प्रणमी जेहना पाय कमल । आवी चौसठ इंद्र ॥ १ ॥ तीर्थंकर आवे तिहां । त्रिगडो करे तयार । सम कित करणी साचवे । एह कहुं अधिकार ॥ २ ॥ करे प्रसंसा समकिती । मिथ्यात्वी होवे मूंक । सूर्य देख हरखे सहू । घणें अंधारे घूक ॥ ३ ॥ ❋ ॥ ढाल वीर वखाणी० एचाल ॥ ❋ ॥ आप अरिहंत जले आविया जी । गावे अपछरह गंधर्व्व । समवरण रचै सुरवराजी । संखेपे ते कहुं सर्व्व ॥ ४ ॥ आ० ॥ जुवन पति वीश इंद्रें मिल्या जी । सोलह व्यंतर सार । जोइश दु दश वेमाणिय जुड्या जी । चौसठ इंद्र सुविचार ॥ ५ ॥ आ० ॥ पवन सुरपुंज परमार जैजी । जूमि योजन समजाल । मेघ कुमर रचै मेघनें जी । करीय सुगंध छिडकाल ॥ ६ ॥ आ० ॥ अगर कपूर सुज धूपणाजी । करय श्री अगन कुमार । वांणव्यंतर हिव वेगसुं जी । रचय मणिपीठका सार ॥ ७ ॥ आ० ॥ पुहुप पंच वरण ऊरध मुखे जी । वरष ए जानु परिमाण । जवणवइ देव त्रिगडो जलो जी । करय ते सुणल सुजाण ॥ ८ ॥ आ० ॥ रचय गढ प्रथम रूपा तणोजी । सोवन कांगरे सार । रवि शशि रयण कोसीसको जी । कनक नो बीय प्रकार ॥ ९ ॥ आ० ॥ रतन गढ रतननें कांगरे जी । रचय वेमाणि सुरराज । जलो त्रीजोगढ जीतरेजी । जीहां विराजे जिनराज ॥ १० ॥ आ० ॥ जींत ऊंची धणु पांचसे जी । सवा तेत्रीस विसतार । धनुषसे तेरगढ आंतरोजी । पोल पंचास धणु च्यार ॥ ११ ॥ आ० ॥ दश पंच २ त्रिहुं गढतणी जी । पावडी वीश हजार । थाक श्रम नहीय चढतां थकां जी । एक कर उच्चविस्तार ॥ १२ ॥ आ० ॥ पंच धणु सहस पृथवी थकी जी । उच्च रहे त्रिगढ आकाश । ते हतल सहु यथा स्थित वसै जी । नगर आराम आवाश ॥ १३ ॥ आ० ॥ तोरण चिहुं २ दिस तिहां जी । नील मणि मोर निरमाण । दुसय धणु मध्य मणि पीठिका जी । उच्च जिण देह परिमाण ॥ १४ ॥ आ० ॥ च्यार आस

ण तिहां चिहुं दिसेंजी । मोतीयें झाक झमाल । सम विचक्षण ईसांणमें जी ॥ देव छंदो सुविसाल ॥ १५ ॥ आ० ॥ देव दुंदुभि नाद उपदिसें जी। जिन गुण गावसी तेह। अह्म जिम आइं शिर ऊपरें जी । गाजसी तेह गुण गेह ॥ १६ ॥ आ० ॥ (ढाल) सफल संसारनी ॥ ❋ ॥ पुवदिशि आसणें आइ वैसे पहू । सुरकृत चौमुख रूपदेखे सहु । दीपै अशोक तरु वार गुण देह थी। देखि हरखें सहू मोर जिम मेहथी ॥ १७ ॥ मोतियां जालि त्रिण छत्र सु विसालए । रूप चिहुं चिहुं दिसें चामर ढालए । योजन गामनी बांणि श्री जिनतणी । भगवंत उपदिसें वार परषद भणी ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणा रूपथी अगनिकूणें करी । गणधर साधवी तिम वेमाणीय सुरी । ज्योतषी भुवणनी विंतरी स्त्री पणें। नैरुत्त कूंण जिन वाणि ऊभी सुणें । त्रिहुं तणा पति वाय कूणमें जाणए । सुर वैमाणीय नर नारि ईसाण ए । वारह परष दा मद मछर छोंम ए । भूख त्रिष वीसरै सुणें कर जोमए ॥ १९ ॥ पूठ भामंमल तेज प्रकास ए । जोयण सहस धज ऊंच आकास ए । झल हलै तेज ध्रुम चक्र गगनें सही । महक सहु वारणें धूप धांणा सही ॥ २० ॥ वाहण वहिल सहुधरीय पहिलै गढै । होइ पग चारि नरनारि ऊंचा चढे । जिन तणी वाणि सुणि जीव तिरजंच ए । वैर तजि बीय गढ रहै सुख संच ए ॥ २१ ॥ पुण्यवंत पुरषते परषद वारमें । सुणें जिन वाणि धन गणय अवतार में । चौविह देव जिण देव सेवा रचै । मणिम यी मांहिली प्रोलमांहे वसै ॥ २२ ॥ चिहुं दिसि वाटली वावि चौ जाणी यै । विदसि चौकूण दोइ २ वखाणियै ॥ आठ जिहां वावि जल अमृत जेम ए । स्नान पानें वपु निरमल हेम ए ॥ २३ ॥ जय विजय जयंत अपराजिया । मध्य कंचण गढै प्रोल वसंतिया । तुंवरु पुरुष खट्टंग अर्चि माल ए। रजतगढ प्रोलना एह रखवाल ए ॥ २४ ॥ पहिल त्रिगमो नहुअ जिण पुर ग्राम ए। देव महर्द्धिक रचै तिण ठाम ए । करण वारवार नहीं का रण कोई ए । आठ प्रातीहारज ते सही होइ ए ॥ २५ ॥ जिण समवसर णनी ऋद्धि दीठी जीये । तेह धन धन्य अवतार पायो तिये । पास अरदा स सुणी वंछित पूरज्यो । हिव मुझ ताहरो सुध दरसण हुज्यो ॥ २६ ॥

(कलश) इम समवसरणें ऋद्धिवरणें सहू जिनवर सारखी । सरद है ते लहै सुद्ध समकित परम जिन भ्रम पारखी । प्रकरण सिद्धांते गुरू परंपर सुणी सहु अधिकार ए । संस्तव्यो पास जिणंद पाठक धर्म वर्द्धन धार ए ॥ २७ ॥ इति समव सरण विचार भाषा गर्भित स्तवन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ आबूजी तीर्थ महिमा स्तवन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जात्रीड़ा भाई आबूजीनी जात्र करे ज्यो । जात्र भणी उमहे ज्यो । तुह्मे नरभव लाहो लीज्योरे ॥ जात्री० ॥ पंचतीरथी मांहेगाजे । आबू मारूडै देस विराजैरे ॥ जा० ॥ स्वरगथी वादै लागो । ऊंचो अंबरीयै जाइ लागोरे ॥ १ ॥ जा० ॥ एतो देवांनो वास कहावै । निरखंता त्रिपति नथावेरे ॥ जा० ॥ एतो डूंगरीयानो राजा । एहनीठे वारह पाजारे ॥ २ ॥ जा० ॥ ठहरिउ वास वणाव्यो । एतो चंपला अंबलां छायोरे ॥ जा० ॥ सरवर झरणा झाझा । जिहां तिहां वनवेल्यां आझारे ॥ ३ ॥ जा० ॥ भार अढारे वणराई । एतो इहांहीज निजरे आईरे ॥ जा० ॥ दह दिस परमल आवे । फूलड़ानो रंग सुहावेरे ॥ ४ ॥ जा० ॥ ऊपर भूमि विसाला । देव ल दीठ रखीयालारे ॥ जा० ॥ विमल मंत्री वरदाई । चक्केसरि देवि सहाईरे ॥ ५ ॥ जा० ॥ पोरवाड़ वंस वदीतो । जिण दल पतिसाही जीतोरे ॥ जा० ॥ देवल तेण करायो । पाहण आरास मंड़ायोरे ॥ ६ ॥ जा० ॥ झीणी २ कोरणी केरघो । दल मांखण जेम उकेरयोरे ॥ जा० ॥ नवी २ भांतिवनाई । जिहां तिहां कोरणीया झिणाईरे ॥ ७ ॥ जा० ॥ उत्तरै पाहणजेतो । जोपीजे पाहण ते तोरे ॥ जा० ॥ आदिजिणेसर सामी । प्रतिमा थापी हित कामीरे ॥ ८ ॥ जा० उगणीस कोड़ सोनईया । द्रव्य लागति करि जस लीयारे ॥ जा० ॥ करजो डीनें आगे । मंत्री जिनवर पाय लागेरे ॥ ९ ॥ जा० ॥ पूठै चढीया हाथी । मंड़ाणा पति साह साथीरे ॥ जा० ॥ इण देवल सम वडकोई । भूमं डल मांहि न होईरे ॥ जा० ॥ १० ॥ वलि तिण वंस विगताला । वस्तुपाल अने तेजपालारे ॥ जा० ॥ देवनमी रिद्धिपाई । इहां तियां पिण सफल क राईरे ॥ ११ ॥ जा० ॥ तेहवो जिणहर पासें । वारकोड़नी लागति भासेरे जा० ॥ देवराणी जेठाणी । आलानी अजब कहांणीरे ॥ १२ ॥ जा० ॥

इहां देवल सोह वधारी। नेमनाथजी वाल ब्रह्मचारी रे ॥ जा० ॥ कसवट पांहण केरी। सूरति सुरमा रंग हेरी रे ॥ १३ ॥ जा० ॥ देवल वाम्हो दीठो। तेतो लागै नयणे मीठोरे ॥ जा० ॥ तिहां केई देवल पासे। लोकजोवै घणो तमासोरे ॥ १४ ॥ जा० ॥ त्रिणगाउ आगल जाईयै। देवल देखी सुख लहीयै रे ॥ जा० ॥ चौमुख प्रतिमा च्यारो। आदिनाथ देव जुहारो रे ॥ १५ ॥ जा० ॥ सोवनमें साते धातो। झिग मिग रही दिननें रातो रे ॥ जा० ॥ मण चवदेसै चम्मालो। जिण बिंबनो भार निहालो रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ श्रीमाली भोम सोभागी। जिणवरथी जसुलय लागी रे ॥ जा० ॥ एहनी करणी वाह वाहो। इहांलीधो लखमी लाहो रे ॥ १७ ॥ जा० ॥ ए डुंगरीयै आवी। जिण जात्रकरै मनभावी रे ॥ जा० ॥ जिहां तिहां पूज रचावै। नाटकीया नाच करावे रे ॥ १८ ॥ जा० ॥ रातीजोगो दिवरावो। जिणवरना जस गुण गावोरे ॥ जा० ॥ साहमी वछल कीज्यो। जातम्लीनो जस लीज्यो रे ॥ १९ ॥ जा० ॥ आगेथी आवी चाली। वातां केई अचरिज वाली रे ॥ जा० ॥ सुणीयैछै जे कोई। अहिनाणें जो ज्यो तेई रे ॥ २० ॥ जा० ॥ ए तीरथ गुणगावे। जात्रानो फलते पावे रे ॥ जा० ॥ ए तीरथ सम तोले। कुणआवै रूप चंद वोलेरे ॥ २१ ॥ जा० इति आबूजी स्तवनं॥❋॥

॥ ❋ ॥ अथ श्रीशीतल जिन चैत्य प्रतिष्टा स्तवन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ भवी जिनपूजो रे शीतल जिन पती रे। नयना नंदन चंद। प्रभुजी विराजैरे सूरति सिंदरेरे। नंदा देवीना नंद ॥ १ ॥ भ० ॥ जग हितकारी रे जिनजी अवतरयारे। श्रीदढरथ नृप गेह। श्रीवछ सोहै रे लांछन सुंदरूरे। कनकवर्णी प्रभुदेह ॥ २ ॥ भ० ॥ विषय निवारी रे संयम संग्रह्योरे। लाधुं केवल नांण। सघन घनाघन जिमभ्रम दरसतारे। विचरया त्रिभुवन भांण ॥ ३ ॥ भ० । वेदनी प्रमुख जे सेष रह्या हुतारे। च्यार अघाती कर्म। दूर निवारयारे अनुक्रम तेहनें रे। पाम्युं शिव पद सर्म ॥ ४ ॥ भ० ॥ संप्रतिकालें रे श्रीजिन राजनो रे। पूजीजे प्रतिबिंब। प्रतिदिन लहीयैरे प्रभु सुप्रसाद थी रे। वांछित फल अविलंब ॥ ५ ॥ भ० ॥ श्रीजिनवरनो बिंब विलोकतां रे। दुष्कृत दूर पुलाय। इंद्रीयनिग्रह सुग्रह संपजे रे। समकित पिण दढ

थाइ ॥ ६ ॥ भ० ॥ श्रीसद्गुरुना मुखथी सांभल्यारे। एहवा वचन विलास। ते वहुमानेंरे निज चित्तमें धर्‍यारे। नेमीसुत भाईदास ॥ ७ ॥ भ० ॥ चैत्य कराव्युं रे सुंदर सोभतो रे। मनधरि अधिक उलास। शीतल प्रभुनो रे बिंब भरावीयो रे। सहस फणा वलि पास ॥८॥भ० ॥ वरस अढारह सत्तावीसमें रे। माधव मास मझार। उज्जल द्वादसी दिवसे थापीयारे। बिंब अनेक उदार॥९॥ भ० ॥ एकसो इक्यासी सहु मेले थयारे। बिंबादिक सुविचार। कीध प्रतिष्ठा ते दिन तेहनी रे। विधपूर्वक मन धार ॥ १० ॥ भ० ॥ श्री जिनलाभ सूरीश्वर दीपतारे। श्रीखर तर गछ भाण । तासपसाय में शीतल जिन थुणपारे। विबुध क्षमाकल्याण ॥ ११ ॥ भ० ॥ ❋ ॥ इति शीतल जिन स्तवनं ॥ ❋॥

॥ ❋ ॥ अथ अढाई द्वीप २० विरहमान स्तवन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ वंदुं मनसुध विहरमाण जिणेसर वीस। दीप अढीमें दीपे जे वंता जगदीस। केवल ग्यांननें धारे तारे करि उपगार। किण २ ठामें कुण २ जिन कहिस्युं सुविचार ॥ १ ॥ पेंतालीस लक्ष जोयण मानुक्ष क्षेत्र प्रमाण । वलियाकारे आधे पुष्करसीमा जाण । दोय समुद्रे सोहे दीप अढाई सार। तिणमें पनरे करमा भूमीनो कहूं अधिकार ॥ २ ॥ पहिलो जंबूदीप समे विच थाल आकार। लांबो पिहुलो इकलख जोयणनें विसतार। मोटो तेहनें मध्य सुदरशण नामें मेर। तिणथी दिसा विदिसांनी गिणती च्यारे फेर ॥ ३ ॥ मेरुथकी दक्षणदिसि एहभरत सुभक्षेत्र । पांचसे छवीस जोयण छकला तेहनो वेत्र । उत्तरखंडमें एहवो ऐरवतक्षेत्र कहाय। इण विहुं करमांभूमी अरा छई फिरता जाइ ॥ ४ ॥ तेत्रीस सहस्र छसे चौरासी जोयण जाण। च्यारकला ए महाविदेह विखंभ वखाण। वावीससे तेरे जोयण एकविजे पहुलाण। एहवी वत्तीस विजय विराजे जेहनें ठाण॥ ५ ॥ मेरुविचे कर पूरव पछिम दोय विभाग। सोले२ विजय तिहां विचरे श्रीवीतराग। सासते चोथे आरे तारे श्रीअरिहंत। एहवो महाविदेह करम भूमि भीजीनंत ॥ ६ ॥ पूरवविदेह विजे पुष्कलावति आठमी ठाम। पुंडरीकणीनगरी तिहां श्री सीमंधर स्वांम। वप्रविजे पचीसमी विजया पुरनो नाम। पछिम विदेह वीजो जुगमंधर कीजे प्रणाम ॥७॥ तिमहीज नवमी वछविजे वलि पूरवविदेह। नयर सु

सीमा त्रीजो बाहु नमुं धरि नेह। नलिनावत्तै चौवीसमी पच्छिम विदेह वखाण। वीतसोका नगरी तिहां चौथो सुबाहु जांण॥८॥ए च्यारेई जिणवर जंबूद्वीप मझार। महाविदेह सुदरशण मेरुतणे परकार। एहवो जंबूद्वीप महागढ जेम गिरंद। खाई रूपे दोइलख जोयण लवणसमंद॥९॥(ढाल दीवाली दिन आवीयो एचाल)॥ दीपे बीजो दीपए। धन २ धातकीखंड। पिहुलो चिहुं लख जोयणे। मंडल रूपे मंड ॥१०॥ दी०॥ दोइ भरत दोइ ऐरवत। दोइ वलि महाविदेह। करमभूमी षटछै जिहां। तणहीज नामें एह ॥ ११॥ दी०॥ पूरब पच्छिम धातकी। खंड गिणीजे दोउ। विजयमेरू पूरब दिसै। पच्छिम अचलमेरु जोइ॥१२॥ दी०॥ इक २ मेरुनें आंतरै। करमभूमि तीन २। निज २ मेरुथी मांभिनें। लेखो चिहुं दिस लीन॥१३॥ दी०॥श्रीसुजात जिन पांचमो। छठो स्वयंप्रभू ईस। रिषभानन जिन सातमो। समरीजे निस दीश॥१४॥ दी०॥ अनंत वीरज जिन आठमो। ए च्यारे जिन राय। पूरब धातकी खंडमें महाविदेह रहाय॥१५॥ दी०॥ पहिली चिहुं जिननी परै। विजय नगर दिशिठाण। तिणहीज नामें अनुक्रमें। विजय मेरु अहि नाण॥१६॥ दी०॥ नवमो सूर प्रभु नमुं। दसमो देवविशाल। इम वज्रधर इग्यारमों। त्रिकरण नमुं त्रिहुंकाल॥१७॥ दी०॥ बारमो चंद्रानन जिन। पच्छिम धातकी मांहि। बिचरै च्यारे जिणवरा। अचलमेरु उछाहि॥ १८॥ दी०॥ एहवो धातकी खंडए। परदक्षणा परकार। अठलख जोयण वींटीयो समुद्र कालोदधि सार॥१९॥ दी०॥ (ढाल ३ पहिली प्रतिमा एकणमासनी० एचाल)॥ कालोदधिनें पैले पारए। बींट्यो चूडी जेम विचालए। सोलह लख जोयण विसतारए। दीप पुष्कर वर अति सुखकारए। (त्रु०) सुखकार पुष्कर दीप त्रीजो तेहनें आधेपगे। विचपड्यो परवत मानुपोत्तर मनुष्यक्षेत्र तहांलगै। तिण आधिकर अठलाख जोयण अरधपुष्कर एकए। तिहां करमभूमी छए कहीजे धातकी खंड जेमए॥ २०॥ (ढाल) आधे पुष्करनें पूरब दिसे। मंदरनामें मेरु तिहांवसे। पच्छिम विद्युमाली मेरुए। इहां किण इतरो नामें फेरए। (त्रु०) फेरए इतरो इहां नामें अवरठामें को नही। एक एक मेरे तीन तीने करमभूमी तिहां कही। इम भरत ऐरवत महा

विदेहे नांमसरखो हेतए । तिणहीज नामें विजे सगली सासता ध्रमखेतए ॥ २१ ॥ (ढाल) धातकीखंडै तिम पुष्कर सही । इहां खेत्रांनी रचना विध कही । वार २ कहतांए विसतारए । पहिला परलेज्यो सुविचारए । (त्रु०) सुविचार वाकी तेहसगलो नगर तिमहीज मनगमें । पूरबै पछिम जेहनीते तेह तिमहीज अनुक्रमें । श्रीचंद्रवाहु जुजंग ईसर नेम च्यार तिर्थ करा । पूरबे पुष्कर अरधमां हे सरबजीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ (ढाल) वैरसेन वंदुं जिन सतरमो । श्रीमहाजद्र अढारम नित नमो । देवजसा जगणीसम देवए । जसोरिध वीसम जिण देवए । (त्रु०) जिणच्यार पुष्कर अरध मांहि कह्या पछिम जागए । तिहां मेरु विद्युन्मालि चिहुंदिशि विचरता वीत रागए । चौरासी पूरबलाख वरसां आउ इक २ जिनतणो । पांचसै धनुष सरीर सोहे सोवन वरण सुहामणो ॥ २३ ॥ (ढाल) कालजघन्यै एजिण वीसए । हिव उतकृष्टे जेदकहीसए । एकसो सत्तरि तिहां जिणवर कहे । पांचे जरते जिमपांचे लहै । (त्रु०) जिणलहै पांचे तेमपांचे ऐरवत मिल दशहुवा । इक २ विदेहे वत्तीस विजयां तिहां पिणहै जू जू आ । एकसो सत्तरि एम जिनवर कोमिनवसय वलि केवली । नव सहस कोमी अवर मुनिवर वंदीये नित ते वली ॥ २४ ॥ (ढाल) इहां जरतें ऐरवतें आजए पांचमें आरे नही जिनराजए । धन २ पांचे महाविदेहए । विचरै वीसे जिन गुणगेहए । (त्रु०) गुणगेह दोप अढार वरजित अतिसया चौतीसए । चौसठि इंद नरिंद सेवित नमुं ते निसदीसए । तिहां आज तारण तरण विचरै केवली दोय कोमए । दोईसहस कोमि सुसाधु वीजा नमुं वे कर जोमए ॥ २५ ॥ (कलश) इम अढीदीपै पनर करमाजूमि खेत्र प्रमाणए । सिधांत प्रकरण मांहजाष्या वीस विहरमाणए । श्रीनगर जेशलमेर संवत सतर गुणतीसै समे । सुख विजय हरप जिणंद सानिध नेहधरि ध्रमसीनमें ॥ ॥ २६ ॥ इति श्रीमेरुपर्वत कर्मजूम्यादि विचार गर्जितं विंशति विहरमाण जिनानां वृद्धिस्तवनं ॥ ❋ ॥ १ जंबुद्वीप, २ धातकी खंम, आधो पुष्कलद्वीप, एवं २ ॥ द्वीपमें ५ जरत ५ ऐरवत, ५ महाविदेह, १५ कर्मजूमीमें विचरता सास्वता २० विहरमानको मेरा नमस्कार हुवो ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सकल शास्वताचैत्य नमस्कार स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल वेकर जोमीताम एचाल)॥ रिषभानन वधमांन। चंद्रानन जिन। वारिषेण नामें जिणाए ॥ १ ॥ तेह तणा प्रासाद । त्रिभुवन सासता प्रणमुं बिंब सोहामणाए ॥ २ ॥ चेईहर सगकोमि । लाख बहुत्तर । चे ईय प्रतिमा सो असीए ॥ ३ ॥ तेरसें निव्यासी कोमि । साठ लाख सुंद र। भुवनपती मांहि मन वसीए ॥ ४ ॥ बारें देव लोक प्रासाद । चौरासी लाख। सहस बिन्नूनें सातसैए ॥ ५ ॥ (ढाल २ आव्यो तिहां नरहर एचाल) ॥ ❀ ॥ हिवे नव ग्रीवेकै पंचानुत्तर सार । चेईहर त्रणसय त्रेवीसा सुविचार प्रत्येकै प्रतिमा वीसासो तिहां जांण। अमत्रीस सहस सत साठ अबे गु ण खांण ॥ ६ ॥ नंदीसर बांवन कुंमल रुचिक वखांण। चऊ २ चेई हर साठ सवे त्रिहुं ठांण। इकसो चौवीसे गुण प्रतिमा चिहुंनाम । बारसें चालीसा सात सहस प्रणमाम ॥ ७ ॥ नंदीसर विदिसै सोलस कुलगिरि तीस। मेरूवन अस्सी दस कुरु गजदंते वीस। मानुषोत्तर परवत च्यार २ इखुकार। ओसो अति सुंदर वक्खस्कार मभार ॥ ८ ॥ (ढाल ३)॥ दिग्गज गिरचालीस । असीद्रह सुजगीस । कंचन गिर वरुए। एक सहस धरुए ॥ ९ ॥ वृत्त दीरघ वैताढ्य। वीस सतरसो आढ्य । सत्तर महानदीए। पं च चूला सदीए ॥ १० ॥ जंबू प्रमुख दसरुक्ख। इग्यारैसे सत्तर सुक्ख। कुं मत्रणसय असीए। वीस जमग वसी ए ॥११॥ (ढाल ४)॥ त्रिण सहस सो एक निवांणुं रे। जिनवर प्रासाद वखांणुं। वीस सो ए अंक गुणीये रे। ती र्थंकर प्रतिमा थुणीये ॥ १२ ॥ त्रिण लाख सहस वलि त्र्यासीरे । प्रतिमा आठ सोनै असी। सरवाले सव मेली जे रे। जिनवर प्रासाद नमीजे ॥ १३ ॥ आठ कोमि सत्तावन लक्खारे। दोयसें निव्यासी कयलक्खा । हिव प्रतिमा ग्यांन कहीजेरे। जिनवरनी आंण वहीजे ॥ १४ ॥ पनरेसें बेतालीस को मी रे। अमवन लख अधिके जोमी। बत्तीस सहस अधिक कहीयेरे । प्रति मा सगली सरदहीये ॥ १५ ॥ (ढाल ५ मी)॥ जोइस विंतर प्रतिमा सा सती। असंख्यात वलि जेहोजी। पाय कमल तेहना नित प्रणमीये। सो वन वरण सुदेहोजी ॥ १ ॥ विनय करी जिन प्रतिमा वंदीये । सुंदर सकल

सरूपोजी । पूजे प्रतिमा चोविह देवता । वलिय विद्याधर नूपोजी ॥ २ ॥ वि० ॥ जिन प्रतिमा बोली जिन सारखी । हित सुख मोक्ष नी दानोजी । भवियणनें भवसायर तारवा । प्रवहण जेम प्रधांनोजी ॥ ३ ॥ वि० ॥ जीवाभिगम प्रमुख मांहि भाषीयो । एसहु अरथ विचारोजी । सांभलितां भणतां सुख संपदा । हियमैं हरष अपारोजी ॥ ४ ॥ वि० ॥ (कलश)॥ इम सासता प्रासाद प्रतिमां संथुणया जिनवर तणा । चिहुं नांम जिण चंद तणा त्रिभुवन सकलचंद सुहावणा । वाचना चारज समय सुंदर गुणभणें अभिरामए । त्रिहुं काल त्रिकरण शुद्ध होय ज्यो सदा मुझ परणांमए ॥ ❋ ॥
इति शास्वता जिनचैत्य बिंबसंख्या स्तवनं ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवन लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ हां रे हुंतो भरवागईथी त्रटजमुनाके तीरजो० एचाल० ॥ हां रे ह्मारे धरमजिणं दसुं लागी पूरण प्रीतजो । जीवरूलो ललचाणो जिनजीनी भलगेंरेलो । हां रेमुनें थास्यें कोइक समैंप्रभु सुप्रसन्न जो । वातरूलीतवथास्ये माहरी सवि वगेरेलो॥१॥ हां रेकोई दुर्जननो भंभेरयो माहरो नाथजो । भलवस्ये नहिक्यारे कीधी चाकरी रेलो । हां रेमोरा स्वामीसरीषो कुणछे दुनियां माहिं जो । जईयेरे जिम तेहने घर आस्याकरी रेलो ॥ २ ॥ हां रे जस सेव्यांसेती स्वारथनी नसिद्धजो । ठालीरे सीकरवी तेहथीगोठडीरेलो । हां रेकांई झूठुंखायते मिठाइनें माटेंजो । क्याहीरे परमारथनी नहि प्रीतडीरेलो ॥३॥ हांरेप्रभु अंतरजांमी जीवनप्राणाधारजो । वायोरे नवि जाएयो कलियुग वायरो रेलो । हां रे मोरा लायक नायक भगति वच्छल भगवांनजो । वारूरे गुणकेरा साहिब सायरूरे लो ॥ ४ ॥ हां रेप्रभु लागी मुझनें ताहरी माया जोरजो । अलगारे रह्याथी होइत भोगलोरेलो । हां रे कुण जांणें अंतर गतिनी विण महाराजजो । हेजेंरे हसी बोलो ठंभी आंमलोरेलो ॥ ५ ॥ हां रेताहरे मुखनें मटकें अटक्यूं माहरुं मन्नजो । आंखरूली अणीआली कांमणगारीयुंरेलो । हां रे माहरा नयणां लंपट जोवे खिण खिण तुझजो । रातीरे प्रभुरागे नरहे वारीयां रेलो ॥ ६ ॥ हां रे प्रभु अलगा तोपिण जाणज्यो करीनें

हजूरजो। ताहरीरे वलिहारी हुंजाउं वारणें रेलो। हां रे कवि रूपविबुधनो मो हन करै अरदासजो। गिरूआ थई मन आंणो कलट अतिवणोरेलो॥ ७ ॥ इतिश्री धर्म नाथ जिन स्तवनं॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दर्शन द्वार स्तवन॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समकित द्वारगुंभारे पेसतांजी। पापपडल गयादूररे। मोहन मरुदे वीनो लाल्होजी। दीठो मीठो आनंदपूररे॥ १॥ स०॥ आयूवरजित सातेकर्म नीजी। सागर कोडा कोडी हीणरे। स्थिती पढम करणें करी जीवनेंजी। वीरज अपूरवनो घरलीधरे॥२॥ स०॥ भुंगलभागी आद कषायनीजी। मिथ्यातमो हनी सांकलसाथरे। बार उघाडा सम संवेग नांजी। अनुभव भवनें वेठो नाथरे॥ ३॥ स०॥ तोरण बांधुं जीवदया तणुंजी। साथीयो पूरो सरधारूपरे। धूपघ टी प्रभुगुण अनुमोदनाजी। द्विगुण मंगल आठ अनूपरे॥ ४॥ स०॥ सं वरपांणी अंगपखालणेंजी। केशर चंदन उत्तम ध्यांनरे। आतम गुण रुची मृग मद मह महेंजी। पंचाचार कुशम परधानरे॥ ५॥ स०॥ भाव पूजानें पा वत आतमाजी। पूजो परमेसर पुन्यपवित्ररे। कारणजोगें कारज नीपजेजी खिमा विजय जिन आगम रीतरे॥ ६॥ स०॥ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥ इति श्री आदीश्वरजिन स्तवनं संपूर्णं॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीअष्टापद तीर्थ स्तवन॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मनडो अष्टापद मोह्यो माहरो जी। नाम जपुं निसदीसजी। च त्तारी अठ दश दोय वंदियाजी। चिहुंदिस जिन चौवीसजी॥ १॥ म०॥ जो जन जोजन अंतरेंजी। पावड साला आठजी। आठ जोजन ऊंचो देहरोजी दुख दोहग जाये नाठजी॥२॥ म०॥ भरतें भराव्या भला देहराजी। सोनें प्यारा थंभजी। आप मूरति करे सेवनाजी। जांणे जोईजे अचंभजी॥ ३॥ म०॥ गौतमस्वामि तिहां चढ्याजी। आंणी भागीरथ गंगजी। गोत्र तीर्थंकर बां धियोजी। रावण नाटक रंगजी॥ ४॥ म०॥ देवे नदीथी मुक्नें पांखडीजी आवुं केम हजूरजी। समय सुंदर कहे वंदनाजी। प्रह ऊगमतें सूरजी॥ ५॥ म०॥ इति श्री अष्टापद स्तवनं॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

सरूपोजी । पूजे प्रतिमा चोविह देवता । वलिय विद्याधर नूपोजी ॥ २ ॥ वि० ॥ जिन प्रतिमा बोली जिन सारखी । हित सुख मोक्ष नी दानोजी । भवियणनें भवसायर तारवा । प्रवहण जेम प्रधांनोजी ॥ ३ ॥ वि० ॥ जीवाभिगम प्रमुख मांहि भाषीयो । एसहु अरथ विचारोजी । सांभलितां भणतां सुख संपदा । हियमें हरष अपारोजी ॥ ४ ॥ वि० ॥ (कलश)॥ इम सासता प्रासाद प्रतिमां संथुणया जिनवर तणा । चिहुं नांम जिण चंद तणा त्रिभुवन सकलचंद सुहावणा । वाचना चारज समय सुंदर गुणभणें अभिरामए । त्रिहुं काल त्रिकरण शुद्ध होय ज्यो सदा मुझ परणांमए ॥ ❋ ॥

इति शास्वता जिनचैत्य बिंबसंख्या स्तवनं ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवन लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ हां रे हुंतो भरवागईथी त्रटजसुनाके तीरजो० एचाल० ॥ हां रे ह्मारे धरमजिणं दसुं लागी पूरण प्रीतजो । जीवम्हलो ललचाणो जिनजीनी उंलगेंरेलो । हां रेसुनें थास्यें कोइक समेंप्रभु सुप्रसन्न जो । वातम्हलीतबथास्ये माहरी सबि वगेरेलो ॥१॥ हां रेकोई दुर्जननो भंभेरयो माहरो नाथजो । उंलव स्ये नहिक्यारे कीधी चाकरी रेलो । हां रेमोरा स्वामीसरीषो कुणछे दुनियां माहिं जो । जईयेरे जिम तेहने घर आस्याकरी रेलो ॥ २ ॥ हां रे जस सेव्यांसेती स्वारथनी नसिद्धजो । ठालीरे सीकरवी तेहथीगोठडीरेलो । हां रेकांई झूठुंखायते मिठाइनें माटेंजो । क्याहीरे परमारथनी नहि प्रीतडीरेलो ॥३॥ हांरेप्रभु अंतरजांमी जीवनप्राणाधारजो । वायोरे नवि जाणयो कलियुग वायरो रेलो । हां रे मोरा लायक नायक भगति वछल भगवांनजो । वारूरे गुणकेरा साहिब सायरूरे लो ॥ ४ ॥ हां रेप्रभु लागी मुझनें ताहरी माया जोरजो । अलगारे रह्याथी होइत भोगलोरेलो । हां रे कुण जांणें अंतर गतिनी विण महाराजजो । हेजेंरे हसी बोलो ठंमी आंमलोरेलो ॥ ५ ॥ हां रेताहरे मुखनें मटकें अटक्यूं माहरुं मन्नजो । आंखम्हली अणीआली कांमणगारीयुंरेलो । हां रे माहरा नयणां लंपट जोवे खिण खिण तुझजो । रातीरे प्रभुरागे नरहे वारीयां रेलो ॥ ६ ॥ हां रे प्रभु अलगा तोपिण जाणज्यो करीनें

हजूरजो। ताहरीरे वलिहारी हुंजाउं वारणें रेजो। हां रे कवि रूपविबुधनो मो हन करै अरदासजो। गिरूआ थई मन आंणो ऊलट अतिघणोरेजो ॥ ७ ॥ इतिश्री धर्म नाथ जिन स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दर्शन द्वार स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समकित द्वारगुंजारे पेसतांजी। पापपडल गयादूररे। मोहन मरुदे वीनो लाडलोजी। दीठो मीठो आनंदपूररे ॥ १ ॥ स० ॥ आयूवराजित सातेकर्म नीजी। सागर कोडा कोडी हीणरे। स्थिती पढम करणें करी जीवनेंजी। वीरज अपूरवनो घरलीधरे ॥२॥ स० ॥ भुंगलभागी आद कषायनीजी। मिथ्यातमो हनी सांकलसाथरे। बार उघाडा सम संवेग नांजी। अनुभव भवनें वेठो नाथरे ॥ ३ ॥ स० ॥ तोरण बांधुं जीवदया तणुंजी। साथीयो पूरो सरधारूपरे। धूपघ टी प्रभुगुण अनुमोदनाजी। द्विगुण मंगल आठ अनूपरे ॥ ४ ॥ स० ॥ सं वरपांणी अंगपखालणेंजी। केशर चंदन उत्तम ध्यांनरे। आतम गुण रुची मृग मद मह महेंजी। पंचाचार कुशम परधानरे ॥ ५ ॥ स० ॥ भाव पूजानें पा वत आतमाजी। पूजो परमेसर पुन्यपवित्ररे। कारणजोगें कारज नीपजेजी खिमा विजय जिन आगम रीतरे ॥ ६ ॥ स० ॥ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥ इति श्री आदीश्वरजिन स्तवनं संपूर्णं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीअष्टापद तीर्थ स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मनडो अष्टापद मोह्यो माहरो जी। नाम जपुं निसदीसजी। च त्तारी अठ दश दोय वंदियाजी। चिहुंदिस जिन चौवीसजी ॥ १ ॥ म० ॥ जो जन जोजन अंतरेंजी। पावड साला आठजी। आठ जोजन ऊंचो देहरोजी दुख दोहग जाये नाठजी ॥ २ ॥ म० ॥ भरतें भराव्या भला देहराजी। सोभे प्यारा थंभजी। आप मूरति करे सेवनाजी। जांणे जोईजे अचंभजी ॥ ३ ॥ म० ॥ गौतमस्वामि तिहां चढयाजी। आंणी भागीरथ गंगजी। गोत्र तीर्थंकर बां धियोजी। रावण नाटक रंगजी ॥ ४ ॥ म० ॥ देवे नंदीधी सुणनें पांखडीजी आवुं केम हजूरजी। समय सुंदर कहै वंदनाजी। प्रह ऊगमतें सूरजी ॥ ५ ॥ म० ॥ इति श्री अष्टापद स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री अजित जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अनंत जिन आपज्योरे) ॥ एचाल ॥ ज्ञानादिक गुण संपदारे तुझ अनंत अपार । तेशांभलतां ऊपनीरे । रुचि तिण पारउतार ॥ १ ॥ अजिताजिन तारज्योरे । तारज्योदीन दयाल । अजित जि० (आंकणी०) जे जे कारण जेहनोरे । सांमग्री संयोग । मिलतां कार्य नीपजेंरे । कर्त्ता तनय प्रयोग ॥ २ ॥ अ० ता० ॥ कार्य सिद्धि कर्त्ता वसुरे । लहि कारण संजोग । निज पद कारक प्रभु मिल्यारे । होय निमित्त भभोग ॥ ३ ॥ अ० ता० अ० अज कुल गत केसरी लहेंरे । निज पद सिंघ निहाल । तिम प्रभुभक्तें भवि लहेंरे । आतिम शक्ति संभाल ॥ ४ ॥ (अ० ता०) ॥ कारण पद कर्त्ता पणेंरे करि आरोप अभेद । निज पद अर्थी प्रभुथकीरे । करै अनेक उमेद ॥ ५ ॥ (अ० ता० अ०) अहवा परमातम प्रभूरे । परमानंद स्वरूप । स्याद्वाद सत्तारसीरे । अमल अखंरू अनूप ॥ ६ ॥ (अ० ता० अ०) आरोपित सुख भ्रमट ल्योरे । भास्यो अव्याबाध । समरयो अभि लाखी पणोरे। कर्त्ता साधन साध्य ॥ ७ ॥ अ० ता० अ० ॥ ग्राहकता स्वांमित्वतारे । व्यापक भोक्ता भाव । कारणता कारज दशारे । सकल ग्रह्युं निज भाव ॥ ८ ॥ अ० ता० अ० ॥ श्रद्धा भासन रमणतारे । दांनादिक परिणांम । सकल थया सत्तारसीरे । जिनवर दरशन पांमि ॥ ९ ॥ अ० ता० अ० ॥ तिणें निर्यामक माहणोरे । वैद्य गोप आधार । देवचंद सुख सागरूरे । भाव धरम दातार ॥ १० ॥ अ० ता० अ० ॥ इति श्री अजित जिन स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सिझायमाला लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढंढण रिषजीनें वंदणा ॥ हुंबारी ॥ उतकृष्टो अणगाररे ॥ हुंबारी लाल ॥ अभिग्रहलीधो एहवो ॥ हुं० ॥ लेस्युं सुध आहाररे ॥ हुं० ॥ १ ॥ ढं० ॥ नितप्रति ऊठै गोचरी ॥ हुं० ॥ नमिलै शुध आहाररे ॥ हुं० ॥ मूल नले अणसूझतो ॥ हुं० ॥ पंजर कीधो गातरे ॥ हुं० ॥ २ ॥ ढं० ॥ हरिपूछे श्रीनेमिनें ॥ हुं० ॥ मुनिवर सहस अढाररे ॥ हुंवा ॥ उतकृष्टो कुण एहमें ॥ हुं० ॥ मुझनें कहो विचाररे ॥ हुंवा० ॥ ढंढ० ॥ ॥ ३ ॥ ढंढण अधिको दाखियो ॥ हुं० ॥ श्रीमुख नेमि जिणंदरे ॥ हुं० ॥

कृष्ण क्रमाह्यो वांदवा ॥ हुं० ॥ धन जादव कुल चंदरे ॥ हुं० ॥४॥ ढं०॥ गलियारें मुनिवर मिल्या ॥ हुंवा ॥ वांद्या कृष्णनरेसरे ॥ हुं० ॥ किणही मिथ्यात्वी देखनें ॥ हुं० ॥ आएयो भावविसेसरे ॥ हुं ॥ ५ ॥ ढं ॥ मुझ घरआवो साधुजी ॥ हुं ॥ ल्यो मोदक छै सुझरे ॥ हुं० ॥ मुनिवर विहरीनें पांगुरचा ॥ हुं ॥ आया प्रभुजीनें पासरे ॥ हुं ॥ ६ ॥ ढं ॥ मुझलब धै मोदक मिल्या ॥ हुं ॥ कहोनें तुमे किर पालरे ॥ हुं० ॥ लब्धिनही बन्न ताहरी ॥हुं॥ श्रीपति लबधि निधानरे ॥ हुं ॥ ७ ॥ ढं० ॥ एलेवा जुगतो नहीं ॥ हुं ॥ चाल्या परठवा काजरे ॥ हुं ॥ ईंटनिवाहैं जाइनें ॥ हुं ॥ चूरें करम समाजरे ॥ हुं ॥ ८ ॥ ढं ॥ आणी चढती भावना ॥ हुं० ॥ पाम्यो केवल नाणरे ॥ हुं ॥ ढंढणरिषि मुगतें गया ॥ हुं ॥ कहै जिन हरष सुजाणरे ॥ हुं० ॥ ९ ॥ ढं ॥ इति ढंढण मुनी सिझाय संपूर्णम् ॥ ❀

॥ ❀ ॥ अथ धन्नारिषि सिझाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीजिन वांणी रे धन्ना । अमीय समाणी मोरा नंदन । मन मैंतो मानीरे नंदन ताहरै ॥ १ ॥ तुं अतिही वैरागीरे धन्ना । धरमनो रागी मोरा नंदन । माहरो तो मनमोरे किम परचावसुं ॥ २ ॥ दस दिसि दीसै रे धन्ना । तो विनसूनी (मो०) । अनुमति देतां रे जीभ वहे नही ॥ ३ ॥ वत्तीसे नारीहो धन्ना । अतिही पियारी । (मो) । बाणी तो बोलेरे मधुर सुहामणी ॥ ४ ॥ बालकतो कामणीरे धन्ना । वय पिण तरुणी । (मो०) । गज गति चालेरे चाल सुहा वणी ॥ ५ ॥ ए घरमंदिर धन्ना । ए सुख सज्या । (मो०) कोम्बित्तीसे धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांणोरे धन्ना । वय पिण जाणो । (मो०) भोगवि ले-ज्योरे भोग सुहा मणो ॥ ७ ॥ व्रत अति दोहिलोरे धन्ना । नहीय सुहेलो (मो०) सुगम नही छैरे साधु कहावणो ॥ ८ ॥ घर घर भिक्षा हो धन्ना । गुरुतणी सिख्या । (मो) कहनी तो रहणीरे नही छै सारषी ॥ ९ ॥ इक वारें सुणीयै हो धन्ना । आगम भणीयै । (मो०) । जिनवर जांणोहो दुकर जोगछै ॥ १० ॥ बनवासे रहणा हो धन्ना । परीसह सहनो । (मो) । कोमल केसां रे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें भाख्यो हो अम्मा । फू

ठन आख्यो (मोरी अम्मा) दुक्कर मारग जननी दाखीयो ॥ १२ ॥ सुख अभिलाषी हे अम्मा । फूलन आखी । (मोरी अम्मा) । कायरमारग जननी दाखीयो ॥ १३ ॥ एजग स्वारथी हे अम्मा । नही परमारथि । (मोरी अम्मा) बीर बखाएयोरे परषदा सहु सुएयो ॥ १४ ॥ मैं इम जाएयो हे अम्मा । बीर बखाएयो । (मोरी अम्मा) । एधन जोवन आऊ थिर नही ॥ १५ ॥ अनुमति दीजे हे अम्मा । ढीलन कीजै । (मोरी) । जोखिण जाइसु फिर आवै नही ॥ १६ ॥ अनुमति आपी हो अम्मा । जीव सुखपायो ॥ (मो०) संजम लीधोरे मनमां गह गह्यो ॥ १७ ॥ छठ २ पारणें हे अम्मा । विगय निवारण ॥ (मो०) ॥ बीरबख्याएयो सुरनर आगलै ॥ १८ ॥ सुख संजम पालै हे अम्मा । दूषण टालै ॥ (मो०) ॥ अंग इग्यारह अरथ रूडा भर्णे ॥ १९ ॥ संजम पाल्यो हे अम्मा । नव पख वारू ॥ मो० ॥ मास संथारे हो सरबारथ सिद्धि लह्यो ॥ २० ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

इति श्रीधन्नाऋषि सिझाय संपूर्णम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ कर्म सिझाय लिख्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ देव दानव तीर्थंकर गणधर । हरिहर नरवर सबला । कर्म प्रमाणें सुख दुख पाम्यां । सबल हुवा महा निबलारे प्राणी । कर्म्म समो नही कोई ॥ १ ॥ आदी सरजीनें कर्म्म अटारच्या । बरस दिवस रह्या भूखा । बीरनें बारै बरस दुख दीधा । उपना ब्राह्मणी कूखेरे ॥ प्रा०॥२ क०॥ साठ सहस सुत मारच्या एकणदिन । जोध जुवान नर जैसा । सगर हुवो महापुत्रनो दुखियो । कर्म्म तणा फल अैसारे ॥ प्रा० ॥ ३ क० ॥ बत्तीस सहस देसांरो साहिब । चक्री सनत कुमार । सोले रोग शरीरमें उपना । कर्म कीयो तनु छाररे ॥ प्रा० ॥ ४ क० ॥ कर्म्म हवाल कीया हरीचंदनें वेची सुतारा राणी । बार वरस लगमाथै आएयो । नीच तणें घर पाणीरे प्रा० ॥ ५ क० ॥ दधिवाहन राजानी बेटी । चावी चंदनबाला । चौपदज्युं चौहटामें वेची । कर्म्म तणा ए चालारे ॥ प्रा० ॥ ६ क० ॥ संभूम नामें आठमो चक्री । कर्में सायर नाख्यो । सोलै सहस जक्ष ऊभा देखै । पिण किणही नविराख्योरे ॥ प्रा० ॥ ७ क० ॥ ब्रह्मदत्त नामें बारमो चक्री । क

मैं कीधो आंधो । इमजाणी प्राणी थेकांइ । कर्म्म कोई मति बांधोरे ॥ प्रा० ॥ ८ क० ॥ छप्पन कोम यादवनो साहिब । कृष्ण महाबल जाणी। अटवी मांहि मूंवो एक लमो । विल २ करतो पाणीरे ॥ प्रा० ॥ ९ क० ॥ पांमव पांच महा झूझारा । हारी द्रोपदा नारी । बारै बरस लग बन रुम बमिया । भमिया जेम भीख्यारीरे ॥ प्रा० ॥ १० क० ॥ बीस भुजा दस मस्तक हुंता । लखमण रावण मारयो । एक लखै जग सहु नर जीत्यो ते पिण कर्म्मसुं हारयोरे ॥ प्रा० ॥ ११ क० ॥ लखमण राम महा बल वंता । अरु सतवंती शीता । कर्म प्रमाणे सुख दुःख पाम्या । बीतक बहु तसवीतारे ॥ प्रा० ॥ १२ क० ॥ समकितधारी श्रेणिक राजा । बेटै बांध्यो मुसके । धरमी नरनें करम धकायो । करमसुं जोरन किसकारे ॥ प्रा० ॥ १३ क० ॥ सतीय सिरोमणी द्रौपदी कहीयें । जिन सम अवरन कोई। पांच पुरुषनी हुइ ते नारी । पूरब कर्म्म कमाईरे ॥ प्रा० ॥ १४ क० ॥ आभानगरी नो जे स्वामी । साचो राजा चंद । मांई कीधो पंखी कूकडो । कर्म्म नाख्यो ते फंदरे ॥ प्रा० ॥ १५ क० ॥ ईशरदेव पारबती नारी करता पुरुष कहावे । अहिनिस महिल मसाणमें बासो । भिख्या भोजन खावैरे ॥ प्रा० ॥ १६ क० ॥ सहस किरण सूरज परितापी । रातदिवस रहे अटतो । सोलकला ससिधर जगचावो । दिन २ जाये घटतोरे ॥ प्रा० ॥ १७ क० ॥ इम अनेक खंड्या नर करमें । भांज्या ते पिण साजा । ऋद्धि हरष करजोमीनें वीनवे । नमो २ करम महाराजारे ॥ प्रा० १८ क० ॥ इति श्री कर्म्मसिझाय संपूर्णम् ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ शीता सिझाय लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जल जलती मिलती घणीरे । झालो झाल अपाररे । सुजाण शीता । जाणें केसू फूलियारे लाल । राता खेर अङ्गाररे ॥ सु० ॥ १ ॥ धीज करे शीतासतीरे लाल । सील तणें परिमाणरे ॥ सु० ॥ लखमण राम खुशीथयारे लाल । निरखे राणो राणरे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जलेंरे लाल । पावक पासें आयरे ॥ सु० ॥ ऊभी जाणें सुरङ्गनारे लाल । अनुपम रूप दिखायरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलीया घणारे लाल । ऊ

ज्ञा करै हाय हायरे ॥ सु० ॥ जस्म हुसी इण आगमेंरे लाल । राम करै अन्यायरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव बिन बांछ्यो हुवैरे लाल । सुपनेंही मन कोयरे ॥ सु० ॥ तोमुझ अगनि प्रजालज्योरे लाल । नहीं तो पाणी होयरे सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पैठी आगमेंरे लाल । तुरत अगनि थयो नीररे ॥ सु० ॥ जाणें द्रह जलसुं भरयोरे लाल । झीलै धरम सुधीररे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुशम बरषा करैरे लाल । एह सती सिरदाररे ॥ सु० ॥ शीता धीजै ऊतरीरे लाल । साख भरैसंसाररे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियायत सहुको थयारे लाल । सगलै थया उछरंगरे ॥ सु० ॥ लखमण राम खुसी थयारे लाल । शीता शील सुरंगरे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जगमांहें जस जेहनोरे लाल । अविचल शील कहायरे ॥ सु० ॥ कहै जिन हरष सती तणारे लाल । नित प्रणमी जै पायरे ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति शीतासती सिझाय संमाप्तम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ अनाथी रुषि सिझाय लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्रेणिक रय वाडी चढयो । पेखियो मुनी एकंत । वर रूप कांतै मोहियो । राय पूछैरे कहैरे बिरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुंरे अनाथीनिग्रंथ । तिणमें लीधोरे साधूजीनो पंथ ॥ (श्रे०) ॥ इण कोसंबी नगरी वसें । मुझपिता परघल धन्न । परवार पूरे परवरयो । हुं छुं तेहनोरे पुत्र रतंन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ इक दिवस मुझ वेदना । ऊपनी ते न खमाय । मात पिता सहु झूरी रह्या । तोही पिणरे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरडी गुणमन उरडी । उरडी अबला नार । कोरडी पीडामें सही । नही कीधीरे मोरडी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राज बैद्य बुलाइया । कीधला कोडि उपाय । बावना चंदन लेपिया । पिण तोहीरे दाह नविजाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ वेदना जो मुझ उपसमें । तो लेवुं संजम भार । इम चिंतवतां वेदन गई व्रत लीधोरे हरष अपार ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जग मांहि को केहनो नही । तेभणी हुंरे अनाथ । वीत रागनो धरम वाहरो । कोइ नहीरे सुगतिनो साथ श्रे० ॥ ७ ॥ करजोडी राजा गुणस्तवे । धन धनतूं अनगार । श्रेणिक समकित तिहां लहे । वांदी पुंहचैरे नगरमझार ॥ श्रे० ॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी

गावतां। कर्म्मनी तूटे कोमि। गणि समय सुंदर तेहना । पाय वांदे रे बे करजोमि ॥ श्रे० ॥ ९ ॥ इति अनाथी मुनी सिज्झाय समाप्तम् ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ प्रतिक्रमण सिझाय लि० ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ करि पमिक्कमणो भावसुं । दोयघमी सुभ झाण ॥ लालरे ॥ परभवजातां जीवनें । संबल साचो जाण ॥ लालरे ॥ १ ॥ (करि पमिक्कम णो भाव सुं०) ॥ श्रीमुख वीरसमुच्चरे। श्रेणिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाखखंमी सोना तणी। दीयै दिन प्रतिदान ॥ ला ॥ २ (करि०) ॥ लाख बरस लग तेहने। इम दीयै द्रव्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामायकनी तु ला। नावै तेह लगार ॥ ला० ॥ ३ (करि०) सामायक परसादथी। लहीयै अमरविमान ॥ ला० ॥ धरमसीह मुनिवर कहै। मुगति तणो ए नि दान ॥ ला० ॥ ४ (करि) ॥ ❁ ॥ इति प्रतिक्रमण सिझाय संपूर्णम् ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ सप्तव्यसन सिझाय लि० ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ सात बिसननारे संग मतां करो। सुण तेहनों सुबिचार ॥ बिवे की ॥ सात नरक नारे भाई सातेई । आपे दुक्ख अपार ॥ बिवेकी। १ सा० ॥ प्रथम जुवानेंरे बिसनपड्यां थकां। पांमव पांच प्रसिद्ध ॥ बिवेकी ॥ नलराजा पिण इण बिसनें पड्यो। खोइ सहू राज रिद्ध ॥ बि० २ सा० ॥ दूसरे मांस भक्षण अवगुण घणां। करै परजीव संहार ॥ बि० ॥ महा स तकनी नारि रेवती। नरक गई निरधार ॥ बि० ३ सा० ॥ तीजे मदरा पा न बिसनतजी। चितधरी बली चाह ॥ बि० ॥ दीपायणरिष दुहव्यो जाद वें। द्वारकानो थयो दाह ॥ बि० ४ सा० ॥ चोथे बिसनें वेश्याघर बसे। लोकमें न रहे लाज ॥ बि० ॥ कयवन्नादिकनो गयो कायदो । कुबिसनें रे काज ॥ बि० ५ सा० ॥ पाप आहेर्में कुबिसन साचवे । प्राणी हणीयें प्रहार ॥ बि० ॥ मारी मृगली श्रेणिक नृप गयो। पहिली नरक मझार ॥ बि० ॥ ६ सा० ॥ छठे चोरीनें बिसनें करी। जीव लहे दुक्खजोर ॥ बि० ॥ मुंज देवराजाये मारियो। चावो हुंमक चोर ॥ बि० ७ सा० ॥ परस्त्रीय सं गत कुबिसनसातमें। हाणि कुजस बहु होय ॥ बि० ॥ राणो रावण शीता अपहरी। नास लंकानोरे जोय ॥ बि० ८ सा० ॥ इम जाणी भव्य तुमे आ

दरो। सीख सुगुरुनीरे सार ॥ बि० ॥ इण जव परजव आणंद अति घणा। कहै धमसी सुखकार ॥ बि० ९ सा० ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ उपदेस सिझाय लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दमका नांहि जरोसा साहै। करले चलनेंका सामान ॥ १ ॥ तन पिंजरसें निकश जाइगा। छिनमें पंछी प्राण ॥ द० १ ॥ लख चौरासी जोजन जटक्यो। उपनों गरजा धान। सवानवमास बश्यो अंधकूपमें। मनुष्यरूप सनमान ॥ द० २ ॥ उत्तम कुलमें जनम लियो है ॥ सुखमें खाण अरुपाण। जीरपम्यां तेरै कोइयन साथी। साथी दान अरु ध्यान ॥ द० ॥ ॥ ३ ॥ आशा त्रिशनां बिकथा निद्रा। कुमता रूप निधान। दिन २ बधै पापकी संगत। ब्यापैं क्रोध अरुमान ॥ द० ॥ ४ ॥ चलते फिरते सोवत जागत। करत खाण अरुपाण। छिन २ आयु घटतहैं तेरो। होत देहकी हाण ॥ द० ॥ ५ ॥ माल मुलक अरु सुखसंपत में। होय रह्या गलतान। देखत२ विनस जायगा। मतकर मान गुमान ॥ द० ६ ॥ झूठा सब यह जगत पसारा। नारी विषकी खान। माया ममता आदिके बैरी। इनसैं कहा पहचान ॥ द० ७ ॥ पांचूं चोर मुंसें घर तेरो। इन की खोटी बाणि। अठबैरी तेरे संग फिर तुहै। मोह बमा सुलतान ॥ द० ॥ ॥ ८ ॥ कोइ रहणें पावे नही जगमें। यह तु निहचै जानि। अजहुं छांझि समझि कुटलाई। मूरख तर अज्ञान ॥ द० ॥ ९ ॥ जाई बंध अरु सजन संबंधी। राखै तेरा मान। अंतसमें कोई कामन आवै। किसपै मान गुमान ॥ द० ॥ १० ॥ जप तप शील पालो सुज संगत। देह सुपात्रे दान। सेंहित साध चरण चितल्यावो। प्रजु जज तज अजिमान ॥ द० ॥ ॥ ११ ॥ इति उपदेश सिज्झाय संपूर्णम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जंजं विहिणा लिहिअं। तंतं परिणमइ सयल लोयस्स। इह जाणे विणुधीरा। विहुरेवि नकायरा हुंती ॥ १ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ बाहूबलजीनी सिझाय लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ईसर आंबा आंबलीरे। एचाल ॥ ❋ ॥ बाहूबल चारित लीयोरे। साचो धरिवैराग। जरतेसर इम वीनवैरे। वार २ पाय लाग। हरष

भर मुझसुं बोलज्योरे (थानें बाबाजीरी आण । थानें ऋषभ देव जीरी आण । थेतो मकरो खेंचा ताण । थेतो माहरे जीवन प्राण) । हरष० । मुझ सुंबो० । (आंकणी) ॥ १ ॥ हुंतो भाई ताहरोरे । जेमें कीधो दोस । तो पिण खमज्यो भाई म्हारे । गस्वा नकरे रोस ॥ ह० ॥ २ ॥ आवो बांह देई मिलांरे । जोवो आंख उघाड़ । बोलो मीठा बोलम्हारे । पूरो मननो लाड़ ॥ ह० ॥ ३ ॥ खीलो नाखुं तोम्हनेंरे । जिण कुल जाई वेढ । नायो आयुध सालमेंरे । ज्युं बांभण घर ढेढ ॥ ह० ॥ ४ ॥ भाजीना भलंभम्हारे । किमसंभलाये कान । जातां पांव वहे नहींरे । तुम्हनें मुंकी रान ॥ ह० ॥ ॥ ५ ॥ तूं जीत्यो हूं हारीयोरे । देव भरे छे साख । तुझ सरिखो जगको नहीरे । मुझ सरिषाछे लाख ॥ ह० ॥ ६ ॥ माथे सूरज आवीयोरे । प सीनो सारो गात । वेसो भोजन जीमियेंरे । खारक दाख निवात ॥ ह० ॥ ॥ ७ ॥ निम्रांणूं एकण मतेंरे । मुझनें लोभी जाण । ते सहु मुझनें परिहरयो रे ज्युं वरसाले छाण ॥ ह० ॥ ८ ॥ तुंमाहरे जीवन आतमारे । तुंहीज माहरे बांह । दिस सूनी भाई विनारे । आवोनें घरजांह ॥ ह० ॥ ९ ॥ बोल घणाई बोलियारे । भरतेसर महाराज । हाथीना दांत जे नीकल्यारे । ते पाछान वीजाय ॥ ह० ॥ १० ॥ अभिमानी सिर सेहरोरे । बाहूबल रिषिराय सीधा करम खपायनेंरे । विमल कीरति गुणगाय ॥ ह० ॥ ११ ॥ ॥ ❀ ॥ इति बाहूबल सिज्झाय संपूरणम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चेलणा महासती सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीरवांदी वलतां थकांजी । चेलणा दीठेरे निग्रंथ । राति वन मांहि काउसग रह्यो जी । साधतो मुगतिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी । सतीय सीरोमणि जाण । चेडा राजानी साते सुता जी । श्रेणिक शीयल परमाण ॥ २ ॥ वी० ॥ शीत ठंठार सबलो पडे जी । चेलणा प्रीतम साथ । चारित्तीयो चित्तमें वस्यो जी । सोवडि बाहिर रह्यो हाथ ॥ ३ ॥ वी० ॥ झबक जागी कहे चेलणा जी । किम करतो हुस्ये तेह । कुसती मन मांहिं ए कुणवस्यो जी । श्रेणिक पड्योरे संदेह ॥ ४ ॥ वी० ॥ अंतेउर परो जालज्यो जी । श्रेणिक दीयोरे आदेस । भग

वंत सांसो भांजियो जी। चम कियो चित्तनरेस ॥५॥ वी०॥ वीरवांदी वल तां थकां जी। पैसतां नगर मझार। धुंवानो धोर देखी करीजी। जा जा हरे अभय कुमार ॥६॥ वी०॥ तातनो वचन पाली करी जी। ब्रतलि यो अभय कुमार। समय सुंदर कहै चेलणा जी। पामिया भवतणो पार ॥७॥ वी०॥ इति चेलणा महासती सिझाय संपूर्णम्॥ ॥❀॥

॥❀॥ अथ बाहूबलजी सिझाय लि०॥❀॥

॥❀॥ राजतणा अति लोभीया। भरत बाहूबल झूझैरे। मूंठि उपा डी मारिवा। बाहूबल प्रतिबूझैरे॥ १॥ बीरा झांरा गजथकी ऊतरो। ब्राह्मी सुंदरी भासैरे। रुषभ जिणेसर मोकली। बाहूबलनें पासैरे॥ १॥ बी० (गजचढ्यां केवल न होईरे)॥ २॥ बी०॥ लोचकरी चारितलीयो। व लि आयो अभिमानोरे। लघु बंधव वांडुं नही। काउसग्ग रह्यो सुभ ध्यानोरे॥ ३॥ बी०॥ बरस दिवस काउसग रह्यो। बेलड़ियां वींटाणोरे। पंखी माला मांड़ीया। सीत ताप सूकाणोरे॥ ४॥ बी०॥ साधवी वचन सुण्या इसा। चमक्यो चित्तमझारोरे। हय गय रथमें परिहरया। पिण न विसुंक्यो अहंकारोरे॥ ५॥ बी०॥ वैरागें मन वालीयो। मूंक्यो निज अभिमानोरे। पांव उपाडी वांदिवा। ऊपनों केवल नाणोरे॥ ६॥ बी०॥ पहुतो केवलि परषदा। बाहूबल रिषि रायारे। अजर अमर पदवी लहै। समय सुंदर वंदै पायारे॥ ७॥ बी०॥❀॥ ॥❀॥ ॥❀॥ इति बाहूबल सिझाय संपूर्णम्॥❀॥ ॥❀॥ ॥❀॥

॥❀॥ अथ अरणकमुनी सिझाय लि०॥❀॥

॥❀॥ अरणक मुनिवर चाल्यागोचरी। तड़कै दाझै सीसोजी। पाय उ भरांणारे बेळूपर जलै। तन सुकमाल मुनीसो जी॥ १ अ०॥ मुख कमला णोरे मालतीफूलज्युं। ऊभो गोखने हेठोजी। खरै डुपहुरै रे दीठो एकलो। मोही माननी मीठोजी ॥ २॥ अ०॥ वयण रंगीलेरे नयणे वेधियो। रिषथं भ्यो तिणवारो जी। दासीनें कहै जाय उतावली। उरिष तेडी आणो जी ॥ ३॥ अ०॥ पावन कीजे रिषिघर आंगणो। वहिरो मोदक सारो जी। नव जोवन रस काया कांइदहो। सफल करो अवतारो जी ॥ ४॥ अ०॥ चंद्रा

वदनीरे चारित चूकव्यो । सुखविलसै दिन रातोजी । इकदिन गोखेरे रमतो सोगटे । तब दीठी निज मातो जी ॥ ५ अ० ॥ अरणक अरणक करती मायफिरे । गलियें गलियें मझारो जी । कहि किण दीठोरे माहरो अरण लो । पूछे लोक हजारो जी ॥ ६ अ० ॥ उतर तिहां थीरे जननी पाय न म्यो । मनमें लाज्यो तिवारोजी । धिग् धिग् पापीरे माहरा जीवनें । एहमें अकारज कीधो जी ॥ ७ अ० ॥ अगन धुखंतीरे सीला ऊपरै । अरणक अणसण कीधो जी । समय सुंदर कहै धनते मुनिवरू । मनवंछित फल सी धोजी ॥ ८ अ० ॥ इति अरणक मुनि सिझाय संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सचित्त अचित्त सिझाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढालचौपईनी) ॥ प्रवचन अमरी समरी सदा । गुरुपद पंकज प्रणमीसुदा । वस्तु तणा कहुं काल प्रमांण । सचित्त अचित्त विधि लहै जिम मांण ॥ १ ॥ बिहुं रुतु मिली चौमासा मांन । षटरुतु मिलीनें वरिस प्रमां ण । वर्षा शीत उष्ण त्रिणकाल । त्रिहुं चौमासें वरस रसाल ॥ २ ॥ श्रावण भाद्रव आसू मास । काती इम वरसाला वास । मागसिर पोस माहनें फा ग । ए च्यारे सीयाला लाग ॥ ३ ॥ चैत्र वैशाखनें ज्येष्ट आसाढ । उष्णकाल एच्यार अगाढ । वर्षा शरद शशिर हेमंत । वशंत ग्रीष्म षट्रुतु इम तंत ॥ ४ ॥ राध्युं विदल रहै चउयाम । ओदन आठपुहुर अभिरांम । महरसोल दधि कां जी बाट । पछे रहेतो जीवनिवास ॥ ५ ॥ पापड लोड्या वटक प्रमांण । च्यारपहुर तिम पोलीमांन । पनर दिवस वर्षापकवान । त्रीसदिवस सीयाला मांन ॥ ६ ॥ वीस दिवस उन्हाले रहे । पछे अभक्ष थाये जिनकहे । मात्र प्रमुख नींवी पकवांन । चलितरसे तसकाल प्रमाण ॥ ७ ॥ धांन धोयण उघमी पर माण । दोयघमी जरवांणी जांण । फल धोयण एक प्रहर प्रमाण । त्रिफला जल उघमीनुं मांन ॥ ८ ॥ त्रिणवारे ऊकलिनुं जेह । सुध उष्णाजल कहियें तेह । प्रहर तीन चउ पंच प्रमाण । वर्षा शीत उन्हाले जांण ॥ ९ ॥ श्रा वण भाद्रवमें दिनपंच । मिश्रलोट अणचालित संच । मिगसर पोसें त्रिण दिन जांण । आसू काती चउदिन मांन ॥ १० ॥ माह फागुणें कह्यो पण याम । चैत्र वैशाष चउप्रहर प्रमाण । जेठ आसाढ प्रहर त्रिण जोय । ति

ए उपरांत सचित्त ते होय ॥ ११ ॥ गोहूं शालि षष्धान कपास । जव त्रि णवरसैं अचित्त होय खास । विदल सर्व तिल तूंवरदाल । पांच वरसे होइ अचित्त विशाल ॥ १२ ॥ अलसी कोद्रव कांगनें ज्वार । सातेवरसें अचि त्त विचार । शीत ताप वर्षादिक जोय । सचित्त जोनि अचित्त तेहोय ॥ १३ ॥ हरडै पींपर मिरच विदाम । खारक द्राख एला अभिराम । जोय ण शत जल वटमां वहै । साठिजोयण थलमांहै रहै ॥ १४ ॥ सचित्तवस्तु प्रवहणनी जेह । थाइं अचित्त प्रवचन कहै एह । धूम अगनि परीयापणैं करी । अचित्तयोनि तसथायै खरी ॥ १५ ॥ बारपहुर रहै ऊगलीराव । सोलपहुर राईता अजाब । कमाह विगय परिसेक्यो धांन । पहिरचोवीस गोमूत्रनुंमान ॥ १६ ॥ अति खारुं घृत कालातील । पलटाई वर्णादिक रील । काचो दूधरहै बहुबार । एह अभक्ष कहै मुनिसार ॥ १७ ॥ ढुंढणीयादिक विदलनीदाल । सेक्या धांनपरैं तसकाल । च्यारपहुर सीरो लापसी । विदलपरै ते प्रवचन वसी ॥ १८ ॥ प्रथम दिवस प्रारंभी गिएयो । काल प्रमाण सवि केहनुं भएयो । चलित रस जेहनो जिहांथाय । तिहां ते वस्तु अभक्ष कहिवाय ॥ १९ ॥ धवलो सैंधव कह्यो अचित्त । श्राध विधैं अल्यरां प्रतीत । एकालादिक उहरां जेथाय । तेह अचित्त थापना न थाय ॥ २० ॥ गीतारथनें वयणैं जोय । आचीरण अनाचीरण होय । आई धांन अंकुर नीक लै । तबते वस्तु अभक्षमां भिलै ॥ २१ ॥ गेरू मणसिल लवण हरियाल । आवै जलवट मांहि रसाल । तेह अचित्त होइ प्रवचन साखि । पिण ले वानी नही तसुभाखि ॥ २२ ॥ इम बोल्यो लवलेश विचार । विस्तर प्रवचन सारोध्दार । धीरविमल पंभित सुपसाय । कवि नय विमल कहै सिझाय ॥२३॥ इति सचित्त अचित्त वस्तु स्वरूप सिझाय ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ १९ दोश कानसग्ग सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल देव समरी अरिहंत । प्रणमी सदगुरु गुणें महंत । उगणी सदोष काउसग्ग तणा । बोलुं श्रुतअनुसारें सुणया ॥ १ ॥ घोटक दोष कह्यो वलिएह । वांको पगराखे वलिजेह । लत्तादोष बीजो हवेसुणो । भील हला वै जे अति घणो ॥ २ ॥ थंभीगण लेई जेरहै । थंभदोष ते तीजो कहै । मा

लदोष चौथो कह्यो एह। मस्तक अमकावी रहैजेह ॥ ३ ॥ पग अंगूठा मे
लीरहे। नखिदोषते पंचमकहै । वेऊं पग भेलाकरै जेह । नउल दोष छठो
कह्यो एह ॥ ४ ॥ गुह्यठामि राखे निजहाथि। शवरी दोष कह्यो जगनाथ।
मुख चालना करे अति घणी । खलित दोष अष्टम तेसुणी ॥ ५ ॥ घूंघट ता
णीनें जेरहे । वहुदोष ते नवमो लहै । लग थडतूं पहिरे पहिरणुं । दशमें
दोष लंबोत्तर भणुं ॥ ६ ॥ हृदय स्थल आछादितरहे। ते थण दोष इग्यारमो
लहै। वस्त्रासुं ढांक्यो सविदेह। संयति दोष वारसमो एह॥ ७ ॥ भांपण चा
लोकरे अति घणुं । भमुहदोष तेरसमो भणुं । अंगुली हलावे संख्याकाज।
चवदमो दोष कह्यो जिनराज॥ ८ ॥ नेत्र तणा चालाजे करे। वायस दोष
पनरमो धरे। पहिरयावस्त्र संकोमी रहे। कपित्थदोष सोलसमो लहे ॥ ९ ॥
मस्तक धूणावे अतिघणुं। ते सिरकंप सतरमो भणुं। महिरानी परि जे वडव
मै। वारुणी दोष अठारमो चमै ॥ १० ॥ मूकदोष कह्यो उगणी समो। तेह
करी कालसग मतगमो। त्रिणदोष एमाहिला टलै। सोल दोष साधवीनें मिलै
॥ ११ ॥ लंबुत्तर १ थणनें २ संयती ३। दोष एह बोल्या जगपती। बहूदोष चौ
थौ जवमिले। च्यार दोष श्राविकानें टलै ॥ १२ ॥ कालसगथी समता सुख
थाय। कठिन कर्मनी कोमि पुलाय। कालसग करतां सवि सुख होइ। कालस
ग सम तप नकह्यो कोय॥ १३ ॥ दोष रहित कालसग कीजीये । जिम स
हिजे शिवफल लीजीये। पंमित धीर विमलनो सीस। कवि नय विमल कहे
निशिदीश ॥ १४ ॥ इति कालसग्गना १९ दोष सिझाय संपूर्ण ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आलोयण स्वरूप सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल मफल संसार एचाल)॥ ए धन सासन वीरजिनवर तणो। जा
स परसाद उपगार थाये घणो। सूत्र सिधांत गुरु मुख थकी सांभली। लहीय
सम कित अनें विरति लहीये वली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यांन धर तप जप खप
करे। जिण थकी जीव संसार सागर तिरे। दोष लागा जिके गुरु मुख आलो
इये । जीव निर्मल हुवे वस्त्र जिम धोइये॥ २ ॥ दोष लागे तिके च्यार प्र
कारना। धुरथकी नामनें अरथ ते धारणा । किणही कारण वसे पापजे की
जीये । प्रथम ते नांम संकप्प कहीजीये ॥ ३ ॥ कीजीये जेह कंदर्प प्रमुखे

ण उपरांत सचित्त ते होय ॥ ११ ॥ गोहूं शालि षष्धान कपास । जव त्रिणवरसैं अचित्त होय खास । विदल सर्व तिल तूंवरदाल । पांच वरसै होइ अचित्त विशाल ॥ १२ ॥ अलसी कोद्रव कांगनें ज्वार । सातेवरसें अचित्त विचार । शीत ताप वर्षादिक जोय । सचित्त जोनि अचित्त तेहोय ॥ १३ ॥ हररै पींपर मिरच विदाम । खारक द्राख एला अभिराम । जोयण शत जल वटमां वहै । साठिजोयण थलमांहै रहै ॥ १४ ॥ सचित्तवस्तु प्रवहणनी जेह । थाइ अचित्त प्रवचन कहै एह । धूम अगनि परीयापणैं करी । अचित्तयोनि तसथायै खरी ॥ १५ ॥ बारपहुर रहै उगलीराव । सोलपहुर राइता अजाब । कम्हाह विगय परिसेक्यो धांन । पहिरचोवीस गोमूत्रनुंमान ॥ १६ ॥ अति खारुं घृत कालातील । पलटाई वर्णादिक रील । काचो दूधरहै बहुबार । एह अभक्ष कहै मुनिसार ॥ १७ ॥ ढुंढणीयादिक विदलनीदाल । सेक्या धांनपरैं तसकाल । च्यारपहुर सीरो लापसी । विदलपरैं ते प्रवचन वसी ॥ १८ ॥ प्रथम दिवस प्रारंभी गिणयो । काल प्रमाण सवि केहनुं भणयो । चलित रस जेहनो जिहांथाय । तिहां ते वस्तु अभक्ष कहिवाय ॥ १९ ॥ धवलो सैंधव कह्यो अचित्त । श्राद्ध विधैं अख्यरां प्रतीत । एकालादिक उहरां जेथाय । तेह अचित्त थापना न थाय ॥ २० ॥ गीतारथनें वयणैं जोय । आचीरण अनाचीरण होय । आई धांन अंकुर नीकलै । तबते वस्तु अभक्षमां भिलै ॥ २१ ॥ गेरू मणसिल लवण हरियाल । आवै जलवट मांहि रसाल । तेह अचित्त होइ प्रवचन साखि । पिण ले वानी नही तसुभाखि ॥ २२ ॥ इम बोल्यो लवलेश विचार । विस्तर प्रवचन सारोध्दार । धीरविमल पंम्ति सुपसाय । कवि नय विमल कहै सिझाय ॥ २३ ॥ इति सचित्त अचित्त वस्तु स्वरूप सिझाय ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ १९ दोश काउसग्ग सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल देव समरी अरिहंत । प्रणमी सदगुरु गुणें महंत । उगणीसदोष काउसग्ग तणा । बोलुं श्रुतअनुसारै सुणया ॥ १ ॥ घोटक दोष कह्यो वलिएह । वांको पगराखे वलिजेह । लत्तादोष बीजो हवैसुणो । भील हलावै जे अति घणो ॥ २ ॥ उंठीगण लेई जेरहै । थंभदोष ते तीजो कहै । मा

लदोष चौथो कह्यो एह । मस्तक अम्कावी रहैजेह ॥ ३ ॥ पग अंगूठा मे लीरहे । नष्विदोपते पंचमकहे । वेऊं पग भेलाकरै जेह । नवल दोष ढठो कह्यो एह ॥ ४ ॥ गुह्यठामि राखे निजहाथि । शवरी दोष कह्यो जगनाथ । मुख चालना करे अति घणी । खलित दोष अष्टम तेसुणी ॥ ५ ॥ घूंघट ता णीनें जेरहे । वहुदोष ते नवमो लहे । लम्ब थडतूं पहिरे पहिरणुं । दशमें दोष लंबोत्तर भणुं ॥ ६ ॥ हृदय स्थल आछादितरहे । ते थण दोष इग्यारमो लहे । वस्त्रासुं ढांक्यो सविदेह । संयति दोष वारसमो एह ॥ ७ ॥ भांपण चा लोकरे अति घणुं । भमुहदोष तेरसमो भणुं । अंगुली हलावे संख्याकाज । चवदमो दोष कह्यो जिनराज ॥ ८ ॥ नेत्र तणा चालाजे करे । वायस दोष पनरमो धरे । पहिरयावस्त्र संकोची रहै । कपित्थदोष सोलममो लहे ॥ ९ ॥ मस्तक धूणावे अतिवणुं । ते सिरकंप सतरमो भणुं । महिरानी परि जे वडव डै । वारुणी दोष अढारमो चडै ॥ १० ॥ मूकदोष कह्यो उगणी समो । तेह करी काउसग मतगमो । त्रिणदोष एमाहिला टले । सोल दोष साधवीनें मिलै ॥ ११ ॥ लंबुत्तर १ थणनें २ संयती ३। दोष एह बोल्या जगपती । वहूदोष चौ थो जवमिले । च्यार दोष श्राविकानें टले ॥ १२ ॥ काउसगथी समता सुख थाय । कठिन कर्मनी कोडि पुलाय । काउसग करतां सवि सुख होइ । काउस ग सम तप नकह्यो कोय ॥ १३ ॥ दोष रहित काउसग कीजीये । जिम स हिजे शिवफल लीजीये । पंडित धीर विमलनो सीस । कवि नय विमल कहे निशिदीश ॥ १४ ॥ इति काउसग्गना १९ दोष सिझाय संपूर्ण ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आलोयण स्वरूप सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥❀॥ (ढाल सफल संसार एचाल)॥ ए धन सासन वीरजिनवर तणो । जा स परसाद उपगार थाये घणो । सूत्र सिद्धांत गुरु मुख थकी सांभली । लहीय सम कित अनें विरति लहीये वली ॥ १ ॥ धर्मना ध्यांन धर तप जप खप करे । जिण थकी जीव संसार सागर तिरे । दोष लागा जिके गुरु मुख आलो इये । जीव निर्मल हुवे वस्त्र जिम धोइये ॥ २ ॥ दोष लागे तिके च्यार प्र कारना । धुरथकी नामनें अरथ ते धारणा । किणही कारण वसे पापजे की जीये । प्रथम ते नाम संकप्प कहीजीये ॥ ३ ॥ कीजीये जेह कंदर्प्प प्रमुषे

करी । दोष ते वीय परमादसंज्ञा धरी । कूदतां गर्वतां होय हिंसा जिहां। दर्प्पड़ण नांमकरी दोष तीजो तिहां ॥ ४ ॥ विणसतां जीव जीवनेंगि नरकैं जिको । चौथो आकुट्टियादोष ऊपजै तिको । अनुक्रमैं च्यारए अधिक इक एकथी । दोष धर प्रायश्चित्त लेह विवेकथी ॥ ५॥ (ढाल २) अन्यदिवस कोई मागधआयो पुरंदरपास ए चाल ॥❋॥ पाटी पोथी कवली नवकरवाली जोय । ग्याननाउपगरण तणी आशातन कीधी होय । जघन्यथी पुरमड्ढ एकासणो आंबिल उपवास । अनुक्रम एह आलोयण सुगुरु वताईतास ॥ ६ ॥ एजो खंम्ति थायै अथवा किहांइ गमाय । तोवलिनवा करायां दोष सहु मिटजाय । थापना अणपम्लिेह्यां पुरमड्ढनो तपधार । गिरतां एकासणनें गमतां चौथ विचार ॥ ७ ॥ दर्शनना अतीचार तिहां पुरमड्ढजघन्य । एकासण आंबिल अठम चिहुंभेदे मन्न । आशातन गुरु देवनी साहमीसुं अप्रीति । जघन्य एकासणनी आलोयण चढती रीत ॥ ८ ॥ अनंतकाय आरंभ विनास्यां चौथ प्रसिद्ध । बि ति चउरिंद्री त्रसायां एकासणथी वृद्ध । बहु बि ति चौरिंद्रिय हएयां बि ति चउ उपवास । संकप्पादि चिहुंविधि डुगुणा डुगुण प्रकाश ॥ ९ ॥ उद्देही कुलिया वम्भा कीडी नगरा भंग । बहुत जलोयां मूंक्या दसउपवास प्रसंग । वमन विरेचन कृमिपातन आंबिल इक एक । जीवांणी ढोलंतां दोइउपवास विवेक ॥ १० ॥ संकप्पादिक एक पंचेंद्री उपद्रव होइ । दोइ त्रिण आठ दसे उपवासैं आलोयण जोइ । बहुपंचेंद्री उपद्रव छठ अठमें दश वीश । चिहुं प्रकारैं चढती आलोयण सुणलेसीस ॥ ११ ॥ पंचेंद्रीनें लकम्भी प्रमुखें कीध प्रहार । एकासण आंबिल उपवासनें छठ विचार । साध समक्षें लोकसमक्षें राजसमक्ष । कूम्भा आलदीयां डुइचौथरु छठ प्रतक्ष ॥१२॥ उपवास दश दंम्भायां तेम मरायां वीस । इकलख असीसहस नवकार गुणो तजिरीस । पख चोमाश वरस लग इक त्रिण दश उपवास । अधिको क्रोधकरै तो आलोयण नहिं तास ॥ १३ ॥ सूक्ष्मावम्भना दोषकीयां गुरु ऊपर रोस । जीवविराधन कीधा बहु असतीना पोस । करीय डुवालस वारहजार गुणो नवकार । मिच्छा डुकम्भ देई आलोवो वारोवार ॥ १४ ॥ (ढाल ३) वेकर जोम्भीतांम ॥ एचाल ॥ विणकी

धां पच्चखांण । विणदीधा वांदणा । पडिक्कमणा विध पांतरैए । अणोकानें अ सिज्झाय । तिहां अविधें भणयां । इक २ आंबिल आचरैए ॥ १५ ॥ गंठ सीनें एकत्र । निवी आंबिल । भांगे आलोयण इमैंए । एक पांच षट आठ । नवकरवालीय । गुण नवकार अनुक्रमेंए ॥ १६ ॥ उपवासभंग उपवास । आंबिल ऊपरां । अधिकोदंड वखांणीयैए । पांचम आठम आदि । भंगकी या वली । फिरअही पातिक हाणीयैए ॥ १७ ॥ ऊखल मूशल आग । चूलो वरदीयें । दीधें अठम तपकरैए । मांगीसईं दीध । कातरणी छुरी । आंबिल चढता आदरैए ॥ १८ ॥ जीव करावें युद्ध । रात्री भोजन । जल तिरणो खे लण जूओए । पापतणा उपदेश । परद्रोह चिंतव्यां । उपवासइक २ जूजूओ ए ॥ १९ ॥ पनरे करमादांन । नियमकरी भंग । मद्यमांस माखण भख्या ए । आलोयण उपवास । संकप्पादिक । चिहुं भेदें चढता लिख्याए ॥ २० ॥ बोल्या मिरखावाद । अदत्ता दांनलुं । जघन्य एकासण जांणीयें ए । अति उत्कृष्टी एण । जांण आलोयण । उपवास दस २ आंणीयें ए ॥ २१ ॥ (ढाल ४) ॥ सुगण सनेही मेरे लाला (एचाल) चौथै व्रत भागे अतीचार । ज घन्य छठ आलोयण धार । मध्यइ दस उपवास विचार । उत्कृष्टा गुण लख न वकार ॥ २२ ॥ परिग्रह विरमणदोष प्रसंग । तीन गुण व्रत मांहे भंग । च्यार सिक्षा व्रतनें अतीचारे । आंबिल त्रिणप्रत्येकें धारे ॥ २३ ॥ सीलतणी नव वाडि कहाय । तिहां जोलागो दोष जणाय । स्त्रीयनें फरस हुआं अविवेके । इक आंबिल कीजे प्रत्येकें ॥ २४ ॥ साधु अनें श्रावक पोसाध । एकेंद्रीस चित्त संघट्ट कीध । वीसर भोलें सचित्त जल पीध । दंड एकासण आंबिल दीध ॥ २५ ॥ विण धोआं विण जूह्या पात्रे । एकासण तिम पुरमढ मात्रे । गईं मुह पत्ती आंबिल सारो । तिम ठवे अठम अवधारो ॥ २६ ॥ च्यार आगार ठनंभी राखै । व्रत पचखांण करे पद साखे । दोपे मिच्छामि दुक्कड दाखै । आ लोयणलेतां अभिलाखे ॥ २७ ॥ आलोयणनो अति विस्तार । पूरो कहितां नावे पार । तोपिण संक्षेपे तंनसार । निरमल मन करनां विस्तार ॥ २८ ॥ धन श्रीवीर जिनेसर स्वांमी । जसु आगम वचनें विधि पामी । जीतकल्प ठांणांगे आदि । वली परंपर गुरु सुप्रसाद ॥ २९ ॥ (कलश) इम जेह य

रमी चित्त विरमी पाप सर्व आलोइनें । एकांत पूछे गुरु बतावे शक्तिवय तसु जो इनें। बिधएह करसी तेहतिरसी धरमवंत तणे धुरे।ए तवन श्रीध्रमसी ह कीधो चौपनें फल वधि पुरै ॥ ३० ॥ इति आलोयण स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ इहां क्रोधका सिझाय प्रतिक्रमण विधमें लिषआएहैं ॥

॥ ❋ ॥ अथ मानकी सिझाय लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥रेजीव मांन नकीजिये। मानें विनय नआवैरे। विनय विना विद्या नहीं। तोकिम समकित पावेंरे॥ १ ॥रे०॥ समकितविन चारित्र नहीं। चारित्र विण नहीं मुक्तीरे। मुक्तिना सुखछे सास्वता। तेकिम लहीइं जुक्तीरे॥२॥रे०॥ विनय वड्यो संसारमां। जगमांहे अधिकारीरे। मानें गुणजाये गली । प्रा णी जोज्यो विचारी रे ॥ ३ ॥ मानकियो जो रावणें। ते तो रामें मारयोरे । दुरजोधन गरवें करी। अंतेवर ते हारयोरे ॥ रे० ॥ ४ ॥ सूका लाकडा सारिखो। दुख दाई ए खोटोरे। उदय रतन कहै माननें। देज्यो तुमे देसो टोरे ॥ रे० ॥ ५ ॥ ❋ ॥ इति मानकी सिझाय संपूर्ण ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ मायाकी सिझाय लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ समकितनूं मूल जाणीये जी। सत्य वचन साख्यात। साचा में समकित वसें जी। मायामां मिथ्यातरे (प्रांणी मकरिस माया लगार ॥ १ ॥ मुख मीठी झूठे मनेंजी। कूड कपटनो कोट। जीभेंतो जी जी करै जी। चितमां ताके चोटरे ॥ प्रां० ॥ २ ॥ आप गरजें आघो पडै जी। पिण न धरे विसवास। मनसुं राखे आंतरोजी। ए मायानो पासरे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ जेसुं बांधी प्रीतडी जी। तेसुं रहे प्रतिकूल। मयल नछंडै मन त णोजी। ए मायानो मूलरे॥ प्रां० ॥ ४ ॥ तप कीधो माया करीजी। मि त्र सुं राखैरे भेद। मल्लि जिनेसर जाणजो जी। तो पाम्या स्त्री वेदरे प्रा० ॥ ५ ॥ उदय रतन कहे सांभलोजी। मेलो मायानी बुधि। सुगति पुरी जावा तणोजी। ए मारगछे सुधरे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ लोभकी सिझाय लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ तुमे लक्षण जो ज्यो लोभनारे। लोभे जन पामें खोभनारे।

लोभें माहा मन मोहला करेरे। लोभें दुरघट पंथे संचरेरे ॥ तु० ॥ १ ॥ तजे लोभ तेहना लेउं भामणारे । वलि पाय नमीनें करुं खामणारे. । लोभे मरजादा नरहे केहनीरे । तुमे संगत मेलो तेहनी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ लोभे घर मेहली रणमां मरेरे। लोभे उंचते नीचुं आचरेरे । लोभें पापभणी पगला भरेरे। लोभे अकारज करतां न ओसरेरे ॥ तु० ॥ ३ ॥ लोभे मनडुं नरहे निरमलुंरे। लोभें सगपण नासें वेगलुंरे। लोभें नरहे मेतनें पावलुंरे। लोभे धन मेले बहु एगलुंरे ॥ तु० ॥ ४ ॥ लोभें पुत्र प्रतें पिता हणेरे। लोभें हत्या पातिक नविगणेरे । ते तो दाम तणें लोभें करीरे। ऊपर मणिधर थायें ते मरीरे ॥ तु० ॥ ५ ॥ जोतां लोभनें थोभ दीसे न हीरे। एहवो सूत्र सिद्धांते कह्युं सहीरे । लोभें चक्री संभूम नामें ज्वोरे। ते तो समुद्र मांहे बूडी मुंवोरे ॥ तु० ॥ ६ ॥ इम जाणीनें लोभनें छंडज्यो रे। एक धर्म सुं ममता मंडज्योरे। कवि उदय रतन भाषे मुदारे। वंदुं लोभ तजे तेहनें सदारे ॥ ७ ॥ इति श्री लोभकी सिझाय संपूर्ण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ भरत चक्रवर्त्ति सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भरतजी मनहीमें वेरागी । मनहीमें वेरागी । भरतजी म० ॥ टेक ॥ सहस बत्तीस मुगट बद्ध राजा । सेवा करे वडभागी । चोसठ सहस अंतेवरि जाके । तोही न हुवा अनुरागी । (भरतजी मनहीमें वैरागी) ॥ १ ॥ लाख चोरासी तुरंगम जाके। छन्नुं कोडहे पागी। लाख चोरासी गजरथ सोहियें। सुरता धरम सुं लागी ॥ भर० ॥ २ ॥ च्यार कोड मण अन्नज उपजे । लुंण दशलाख मण लागे। तीन कोड गोकुल नित दूझे। एक कोडि हलमागी ॥ भर० ॥ ३ ॥ सहस बत्तीस देस वड भागी । भए मस्तके त्यागी । छन्नुं कोड गांमके अधि पति । तोही न हुआ अनुरागी ॥ भर० ॥ ४ ॥ नव निध रतन चउगमा बाजे। मन चिंता सरव भागी । कनक कीरत मुनिवर वंदतहे । दीजो सुमति में मांगी ॥ ५ ॥ भर० ॥ ❀ ॥ इति भरतजीकी स्वाध्याय संपूर्ण ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गर्भाधान उतपत्ति विचार वैराग्यसि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उतपति जोय जीव आपणी । मनमांहि विमास । गरभावासे

जीवमो । वसीयो नवमास ॥ १ ॥ उ० ॥ नार तणी नाभीतलै । जिन वचनें जोय । फूलतणी जिम नालिका । तिम नाभी छै दोय ॥ २ ॥ उ० ॥ तसुतल जोनि कहीजियै । वर फूल समान । आंब तणी मांजर जिसो । तिहां मांस प्रधान ॥ ३ ॥ उ० ॥ रुधिर श्रवै तिहां मांसथी । रितुकाल सदीव । रुधिर शुक्र जोगै करी । तिहां उपजै जीव ॥ ४ ॥ उ० ॥ जे अपावन पवनें करी । वासित दुरगंध । तिणथानक तूं ऊपनो । हिव हून अंध मंध ॥ ५ ॥ उ० ॥ नाभी वांसतणी घणुं । भरीयै रूवाल । तातीलोह सिलाकतें । जालै ततकाल ॥ ६ ॥ उ० ॥ तिम महिलानी जोन में । छै नव लख जीव । पुरुष प्रसंगे तेसहू । मरि जाय सदीव ॥ ७ ॥ उ० ॥ ऊपजै नर नारी मिल्यां । पांचेइंद्री जेह । तेह तणी संख्या नही । तजो कारज एह ॥ ८ ॥ उ० ॥ नवलख जीव टिकै तिहां । उत्कृष्टीवार । जीव जघन्य पणें टिकै । एक दोय त्रिण च्यारि ॥ ९ ॥ उ० ॥ जीव जघन्य तिहां रहै । महुरत परिमाण । बार बरसनी थिति तिहां । उत्कृष्टी जाण ॥ १० ॥ उ० ॥ तिहां गरभै कोइ जीवमो । जंपै जग दीस । फिर नर आवंतो रहै । संबत्सर चोवीस ॥ ११ ॥ उ० ॥ महिला वरस पिचावनें । कहीयै नीरबीज । पिचहत्तर वरसां पछै । थायै पुरुष अबीज ॥ १२ ॥ उ० ॥ जीमणी कूखै नर वसे । तिम वामें नारि । वीच नपुंसक जाणीयै । जिन वचन विचार ॥ १३ ॥ उ० ॥ हिव सामान्य पणें इहां । आयो गरभावास । सातदिना ऊपरि रहै । नरगत नवमास ॥ १४ ॥ उ० ॥ आठ वरस तिरयंच रहे । उत्कृष्टे काल । गरभा वासे भोगव्यां । इम बहु जंजाल ॥ १५ ॥ उ० ॥ कारमण कायें कर लीयो । पहिलो आहार । शुक्र अनें श्रोणित तणो । नही झूठ लिगार ॥ १६ ॥ उ० ॥ परजापत पूरी नही । तिहां विसवा वीस । तिण आहारे तुंथयो । ऊदारक मीस ॥ १७ ॥ उ० ॥ पवन अछै उदरे तिको । ऊपजाये अंग । अगनिकरै थिर तेहनें । जल सरस सुरंग ॥ १८ ॥ उ० ॥ कठन पणें प्रथवी रचे । अवगाह आकास । पांच भूत शरीरमें । इम करे प्रकाश ॥ १९ ॥ उ० ॥ बारे महुरत तां पछै । विलसे नरनारि । गरभतणी उतपति तिहां । नही अवर प्रकार ॥ २० ॥

उ० ॥ कलिल हुवे दिन सातमै । अरबुद दिन सात । अरबुदथी पेसी वधे । घनमांस कहात ॥ २१ ॥ उ० ॥ मांसतणी बोटी हुवै । अम्ताखी स टंक । प्रथम मास जिनवर कहे । मन धरो निस्संक ॥ २२ ॥ उ० ॥ सुथिर मांसबीजे हुवे । हिवे तीजे मास । करम तणें वसि ऊपजे । मा ता मन आस ॥ २३ ॥ उ० ॥ चोथै मासे मातना । प्रणमें सहु अंग । हाथ अनें पग पांचमें । तिम सुतकोसंग ॥ २४ ॥ उ० पित्त रुधिर छठे पम्ने । सातमें इण संच । नव धमणी नस सातसे । पेसी सय पंच ॥ २५ ॥ उ० ॥ रोमराय पिण सातमें । साढी तीन कोम्नि । उपजे ऊणें केतखै । इम आगम जोड ॥ २६ ॥ उ० आठमै मासैं नीपनो । इम सकल शरीर । ऊंधे शिर वेदन सहे । जंपे जिनवीर ॥ २७ ॥ उ० ॥ शोणित शुक्र सखे पमा । लघुनें वम्नीत । वात पित्त कफ गरभथी । थाये नरनीत ॥ २८ ॥ उ० ॥ मात तणी सुंहटी लगे । बालकनो नाल । रस आहार करे तिहां । आवे तत काल ॥ २९ ॥ उ० ॥ जननी ल्ये आहार ते । जाय नाडो ना ड । रोम इंद्री नख चख वधे । तिम मींजीने हाम्न ॥ ३० ॥ उ० ॥ सबहु अंगे ऊलसे । सरवंग आहार । कवल आहार करैं नही । गरभें सुविचार ॥ ३१ ॥ उ० ॥ मास बीजे किण जीवनें । थायें ज्ञान विभंग । अथवा अवधि कही जीये । तिण ज्ञान प्रसंग ॥ ३२ ॥ उ० ॥ कटक करें वेक्री यपणें । झुझी नरके जाय । को जिन वचन सुणी करी । मरी सुर पिण थाय ॥ ३३ ॥ उ० ॥ ऊंधेमुख गोम्ना हीये । सहि तो बहु पीम्न । दृष्टि आगलि बिहुं हाथसुं । रहे मुठीभीम्न ॥ ३४ ॥ उ० ॥ नरविण वस्त्र ज लादिके । ऊपजे आधान । अथवा बिहुं नारी मिल्यां । कह्यो गरभ विधान ॥ ३५ ॥ उ० ॥ कोई उत्तम चिंतवे । देखी दुख वास । पुन्य करी तिम नीकलुं । नाऊं गरभावास ॥ ३६ ॥ उ० ॥ ऊंठकोम्नि चांपे सुई । कोई समकाल । तिणथी गरभे अठगुणी । सहे वेदन बाल ॥ ३७ ॥ उ० ॥ माता सूखे सूखीयो । सुखणी सुखथाय । माता खुनी ते सुवे । परवस दि न जाय ॥ ३८ ॥ उ० ॥ गरभ थकी दुख लखगुणो । जामें जिनवार । जन्मथयां दुख कोम्नगं । धिग् मोह विकार ॥ ३९ ॥ उ० ॥ उपज्या अशु

चि पणौ जिहां। मल मूत्र कलेस। पिंम अशुचि करि पूरीयो। किहां सुचि लवलेस ॥ ४० ॥ उ० ॥ तुरत रुदन करतो थको। जामें जिणवार। मात पयोधर मुख ठवै। पीयै दूध तिवार ॥ ४१ ॥ उ० दिन दिन दीसै दीपतो। करै रंग अपार। लाम कोम माता पिता। पूरै सुविचार ॥ ४२ ॥ उ० ॥ श्रोत्र इग्यारै नारिनें। नव नरनें जाण। रात दिवस वहिता रहै। चेतो चतुर सुजाण ॥ ४३ ॥ उ० ॥ सात धातु साते त्वचा। छै सातसै नाम। नवसै नाडी पिंममें। तिम तीनसै हाम ॥ ४४ ॥ उ० ॥ संधि एकसो साठछै। सत्तोत्तरसो मरम। तीन दोष पेसी पांचसै। ढांकीछै चरम ॥ ४५ ॥ उ० ॥ रुधिर सेर दस देहमें। पेसाब सरीष। सेर पांच चरवी तिहां। दोय सेर पुरीष ॥ ४६ ॥ उ० ॥ पित्त टांक चोसठ अछै। वीरज बत्तीस। टांक बत्तीस सलेखमां। जाणैं जगदीस ॥ ४७ ॥ उ० ॥ इण परमाण थकी यदा। ऊंछो अधिको थाय। व्यापै रोग शरीर में। नवि चालै काय ॥ ४८ ॥ उ० ॥ पोख्यो पहिलै दाहकै। इम वधियो अंग। खान पान भूषण भला। करै नवनवा अंग ॥ ४९ ॥ उ० ॥ हिव बीजै दसकै भणयो। विद्या विवध प्रकार। तीजै दसकै तेहनें। जाग्यो काम विकार ॥ ५० ॥ उ० ॥ जिण थानक तुं ऊपनो। तिणमें मन जाय। चौथे दसकै धन तणो। करै कोमि उपाय ॥ ५१ ॥ उ० ॥ पहुतो दसकै पांचमैं। मनमें ससनेह। वेटावेटी पोतरा। परणावै तेह ॥ ५२ ॥ उ० ॥ छठै दसके प्राणीयो। वलै परवस थाय। जरा आवी जोवन गयो। तृष्णा तोही न जाय ॥ ५३ ॥ उ० ॥ आवे दसके सातमें। हिव प्राणी तेह। वल भागो बूढो थयो। नारी न धरे सनेह ॥ ५४ ॥ उ० ॥ आठमें दसके मोसलो। खलिया सहु दांत। कर कंपावै सिर धुणें। करै फोकट वात ॥ ५५ ॥ उ० ॥ नवमें दसके प्राणीयो। तन सूकत जाय। सालै वचन वहुवां तणां। दिन झूरतां जाय ॥ ५६ ॥ उ० ॥ खाट पड्यो खूं खूं करै। सहु गाली देह। हाल हुकम हालै नही। दीयो परजन छेह ॥ ५७ ॥ उ० ॥ आंख गलै वेपुम मिलै। पमै मुंहमै लाल। बेटा वेटीनें वहू। नकरै सार संभाल ॥ ५८ ॥ उ० ॥ दसमें दसके आवीयो। तव पूरी आय। पुण्य पाप फल भोगवी। प्राणी

परभव जाय ॥ ५९ ॥ भ० ॥ दस दृष्टांते दोहिलो । लह्यो नर भव सार । श्री जिन धरम समाचरो । पामो जिम भवपार ॥ ६० ॥ भ० ॥ चरण पणें जे तप तपे । पाले निरमल शील । ते संसार तरी करी । लहे अविचल लील ॥ ६१ ॥ भ० ॥ कोडि रतन कवडी सटे । कांई गमेंरे गिंवार । धरम पखे पिण जीवनें । नही कोई आधार ॥ ६२ ॥ भ० । काया माया कारमी । कारमो परिवार । तन धन जोवन कारिमो । साचो धरम संभार ॥ ६३ ॥ भ० ॥ चवदे राज प्रमाण ए । छे लोक महंत । जनम मरण करि फरसियो । तेवार अणंत ॥ ६४ ॥ भ० ॥ आप सवारथिया सहू । नही केहनो कोय । विण स्वारथ आण पूजतां । सुत पिण वेरी होय ॥ ६५ भ० ॥ जरा न आवे जांलगे । जांलग सबल शरीर । धरम करो जीवतां लगे । होइ साहस धीर ॥ ६६ ॥ भ० ॥ आरजदेस लह्यो हिवे । लाधो गुरु संयोग । अंग थकी आलस तजो । करो सुकृत संयोग ॥ ६७ ॥ भ० ॥ श्री नमिराय तणी परें । चेतो चित मांहि । स्वारथना सहुको सगा । कोई किणरो नांहि ॥ ६८ ॥ भ० ॥ भोग संजोग तजीसहू । थया जे अणगार धन धन तसु माता पिता । धन धन अवतार ॥ ६९ ॥ भ० ॥ सुरतरु सुरमणि सारिखो । सेवो जिन धरम । जिणथी सुख संपति वधे । कीजे तेहिज कर्म ॥ ७० ॥ भ० ॥ तंदुल वेयाली अछे । एहनो अधिकार । तिणथी उधरनें कह्यो । नहीं कूड लिगार ॥ ७१ ॥ भ० ॥ (कलश) इह जेनधर्म्म विचार सांभलि लीये संयम भार ए । परि सीह केरा सदा पाले नेम निरती चार ए । संसारना सुख सकल भोगवि ते लहे भवपार ए । श्रीजिन हरष सुशीस रंगे इम कहे श्रीसार ए ॥ ७२ ॥ भ० ॥ ॥ ॥ ॥
इति उपदेश वहुत्तरी संपूर्ण ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ विजयसेठ विजयासेठाणीको चोढालियो लि० ॥

॥ ॥ प्रह उठीरे पंच परमेष्टि सदा नमुं । मनसुधेरे तेहनें चरणे नित नमुं । धुरि तेहनें रे अरिहंत सिद्ध वखाणिये । आचारजरे उपाध्याय मन आणिये । (उल्लालो) आणिये निज मन भाव सुधे उपाध्याय नमूं वली । जे पनरह करम भूमि मांहे साधु प्रणमुं ते वली । जिम कृष्ण

पक्षनें सुक्लपक्षवालि शील पाल्यो ते सुणो। भरतारनें स्त्री विन्हे तेहनो चरित भावेसुं भणो ॥ १ ॥ (ढाल) भरत क्षेत्रे रे समुद्र तीर दक्षण दिसें। कछदेसैरे बिजय सेठ श्रावक वसे। शील ब्रतरे अंधारा पक्षनो लियो । बाला पणेरे एहवो निश्चो मन कियो। (उल्लालो) मन कीयो एहवो तेण निश्चै पख्य अंधारे पालस्युं। हुं शील निश्चै एह विरुद्ध विषय सेवा टालस्युं। इक अछै सुंदर रूप बिजया नाम कन्या तेवली। तिण शुक्ल पक्षनो शील लीधो सुगुरु जोगै मन रली ॥ २ ॥ (ढाल) कर्म्म जोगैरे मांहो मांहि ते विहुं तणो। शुभ दिवसैरे हुओ विवाह सुहामणो। तब विजयारे शोलै शृंगार भला करी। पिउ मंदिररे पोहती मन उल्लट धरी। (उल्लालो) मन धरी उल्लट अधिक पहुती पिया पासै सुन्दरी। ते देखि हरषै सेठ बोलै शील निश्चो संभरी। मुझ शील निश्चो पख अंधारे तेहना दिन तीनछै। ते नेम पाली सुकलप ख्य हुं भोग भोगवस्युं पछै ॥ ३ ॥ (चाल) इम सांभलरे विजया तब वि लखी थई। पिऊ पूछैरे किम चिंता तुझनें भई। तब विजयारे कहै शुक्ल पक्ष ब्रतमें लीयो। ब्रत चोथेरे बाला पण निश्चो कीयो। (उल्लालो) बाला पणेंमें कीयो निश्चे शुक्लपक्ष ब्रत पालस्युं। तो उभै पक्ष हिव शील पाली नियम दूषण टालस्युं। तुह्मे अवरनारी परणने हिव सुक्ल पक्ष सुख भोगवो कृष्ण पक्ष निज नियम पाली अभिग्रह इम जोगवो ॥ ४ ॥ (ढाल) तब व लतोरे तसु भरतार कहै इसो। विषया रसरे कालकूट विषछै तिसो। ते छं री रे शील ब्रत दोनुं पालस्यां। एह वार्त्तारे मात पिता न जणावस्यां॥उ०॥ मात पिता जब जाणस्ये तब दिख्य लेसां धरदया। इम अभिग्रह लेइनें ते भाव चारित्रीया थया। एकत्र सज्या सयन करतां खड्ग धारा ब्रत धरे। मन वचन काया करी सूधो शील वेऊं आचरे ॥ ५ ॥ (ढाल)॥ विमल केवली एक। चंपा नयरीयै। ततखिण आवि समोसरयाए। आणी अधिक विवेक। श्रावक जिण दास।कहै विनय गुण परिवरयो ए॥६॥सहस चोरासी साधु मुझ घर पारणो।करे मनोरथ तो फलै ए। केवल ज्ञान अगाध। कहै श्रावक सुणो। एह वाततो नवि मिलेए॥७॥ किहां एतला अणगार। किहां वलि सूझतो। भातपाणी नही एतलोए। तो हिव तेह विचार। करो तुह्मे

जिम तिम । फल अह्म हुवे तेतलोए ॥ ८ ॥ अठे हिवे कच्छदेस । सेठ विजय वली । विजया भार्या तसु घरेए । भावयती ग्रह वास । तेहनें भोजन दीधां फल हुवे तेतलोए ॥ ९ ॥ जिणदास कहै भगवंत । तेमांहि एतला कुण गुण कुण व्रतठे घणा ए । केवली कहै अनंत । गुण तसु शीलना । कृष्ण शुक्लपक्ष व्रत तणा ए ॥ १० ॥ (ढाल) ३ ॥ दानकहे जगहुं वडो एचाल ॥ केवलीनें मुख सांभली । श्रावक तेजिनदासरे । कच्छदेसें हिव आवीयो । पूरे निज मन आसरे ॥ ११ ॥ (धन २ शील सुहामणो) ॥ शील समो नही कोईरे । शीलें देव सानिध करे । शीलथी शिव सुख होईरे ॥ ध० ॥ १२ ॥ सेठ विजय विजया भणी । भगतसुं भोजन देईरे । सहस चोरासी साधुना । पारणानो फल लेईरे ॥ ध० ॥ १३ ॥ मात पिता पूछे तेहनें । एहनो शील वखाणरे । केवलीनें मुख जिम सुण्यो । तिम कहै ते गुण जाणरे ॥ ध० ॥ १४ ॥ सहस चोरासी साधुनें । पारणो दीये कोई भायरे । कृष्ण शुक्ल पक्ष दंपती । भोजननो फल थायरे ॥ ध० ॥ १५ ॥ मात पिता जवजाणीयो । प्रगट हुओ संबंधरे । सेठ विजय विजया लीयो । चारित्र अप्रतिबंधोरे ॥ ध० ॥ १६ ॥ (ढाल) ४ ॥ केवलीनें पासें । चारित्र लेई उदार । मन ममता मूंकी । पाले निरती चार ॥ १७ ॥ आठ करम खपावी । पाम्यो केवल नाण । ते मुगते पहुता । दंपती सुगण सुजाण ॥ १८ ॥ तेहना गुण गावे । भावें जे नर नार । ते वंछित सुख लहै । पहुंचे भवनें पार ॥ १९ ॥ (कलस) इम कृष्णपक्षलें शुक्ल पख्ये शील पाल्यो निरमलो । ते दंपतीना भाव सुधे सदा सुभ गुण सांभलो । जिम दुरित दोहग दूर जाये सुक्ख थाये बहुपरे । वलि सकल मंगल मनह वंछित कुशल नित घर अवतरे ॥ इति कृष्ण शुक्ल पक्ष चोढा० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ इखुकार राजा भृगुप्रोहित सि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ महिला में बेठी राणी कमलावती । जोणीतो उभे मारगखेह । जोवें तमासो इखुकार नगरमें । कोनिक उपनो मनमें एह ॥ १ ॥ (सांभल हे दासी आज नगरमें बहढो किम घणो) । कातो परधान सखी मंगीया । काकेई लूंट्या राजा गांव । काकोई गाडवो धन नीसरयो । गाम रह्या ठे

ठामो ठाम ॥ २ ॥ सां० ॥ ब्रा० ॥ नातो परधान बाइजी रूंमीया । ना को राजा लूंट्या गांव । भ्रगू परोहित धन तज नीसरयो । राजारै धन लेवा चाव ॥ ३ ॥ (सांभल हे राणी हुकम करो तो कोई गाम्हो इहां धरां) ॥ वे टांतो तिणरा संजम लीयो । वरज्यो घणुं ही पिता मात । ते पिण चारित ले वा ऊमह्या । भ्रगू जशा तिणें मोह लल चात ॥ ४ ॥ (सांभल हे० हु क०) ॥ इम सुण कमलावती राणी इम कहै । इहां तो कमी नहीं काय । सांभलनें राणी माथो धुणीयो । राजारी ममता नही ठाय ॥ ५ ॥ (सां० दासी राजानें एवातां जुगती नही) । महिलांसुं राणी कमलावती । आईछै राजारे हजूर । वचन कहै राजानें आकरा । जाणें पोरस चढियो बोलै सूर ॥ ६ ॥ (सांभलहो राजा ब्राह्मण छोम्ही रिद्धक्युं आदरो) । कर जोम्ही कमला कहै । सांभल कंत सुजाण । ब्राह्मण जेरिद्ध परिहरी । ते तो घर मांहे मत आण । (सां० । राजा०) ॥ ७ ॥ एरिद्धसुं अपणें कांई घणो हुसी । राजारा मोटा छै भाग । वमियै आहाररी वांछा कुण करै । कै कुतरा कै काग ॥ ८ ॥ सां० ॥ राजा० । ब्रा० । वमियो आ हार पीछो नर भखे । नही परसंसवा जोग । भ्रगू प्रोहित रिद्ध तजनीस रयो । थे जाएयो छै आसीर्ह्लारे भोग ॥ ९ ॥ (सां । राजा ब्रा०) ॥ संकलपियोम्हो पाछो किमलीयै । सांभलहो महाराज । दान दियो थे पहिलां हाथसुं । ते पूछो लेतांनावै थानें लाज ॥ १० ॥ (सां राजा ब्रा० निहचैतो मरणो राजा इक दिनें । छोम्हीनें काम विसेष । वीजो तो जगमें सरणो को नही । तारै जिनजीरो ध्रम एक ॥ ११ ॥ (सां० राजा) ॥ सगलै जगतरो धन भेलो करी । थे घालो भंम्हारां रै मांहि । तो पिण त्रिसना राजा पापणी । त्रिपत न मनम्हो थाय ॥ १२ ॥ (सां० ब्रा०) । सांभलनें इखुकार राजा बोलीयो । तुं भापैनी वचन संभाल । कातनें रा णी ओलो वाजीयो । काकोई कीधी मतवाल ॥ १३ ॥ (सां० । राणी राजानें करम्हा वचन न वोलीयै) । नांतो राजाजी ओलो वाजीयो । नाकोई कीधी मत वाल । ब्राह्मणरो वमियो धन थे आदरो । वरजण आईहो नृपाल ॥ (सां० राजा ब्रा०) ॥ १४ ॥ वलतो राजा राणीनें इम कहे ।

इसमी वैरागण थाय । अजूंतो निजरां आवै नही । तुं बेठी छै वर मांय (सां० । राणी राजानें क०) ॥ १५ ॥ उत्तर बालीतो दीसै नही । इसमी आई छै मतवाल । हुंतो घर छोडीनें नीसरी । थे पिण छोडो हो नृपाल । (सां० । राजा आग्या देवो तो संयम आदरुं) ॥ १६ ॥ रतन जडतरो राजा पींजरो । तिणमें सूवटो पडियो फंद । इण रीतै हुं थांरै राजमें । रहिनें पासुं आणंद । (सां० राजा आग्या) ॥ १७ ॥ सनेह रूपिया तांतण तोडनें । आरंभ धनसुं रहस्यां दूर । विरकत थई मोन पणें रह्या । थे पिण होयज्यो सूर ॥ (सां० राजाआ०) ॥ १८ ॥ दवतोलागी हो राजा वन मझे । हिरण सिसा बलै मांय । गिरधपंखी ज्युं आमिप देखनें । मन मांहें हरपित थाय । (सां० राजा राग द्रेपरा भोगा लग रह्या) ॥ १९ ॥ मांहो मांहे खेधो ईसको । दस प्राण रहित कीधो काल । उसमणतो म नमें हरप पाम्यो घणो । जाणें ते माहरो मिटियो साल । (सां० हो रा जा रागद्रेप) ॥ २० ॥ इण दिष्टांते लोभी मूरख थका । मुरछ रह्या भोग मांहि । पेलानें दुखियो देखी चेतै नही । लागी राग द्रेपरी लाय ॥ (सां० राजा राग०) ॥ २१ ॥ मांसरी बोटी पंखीरी चांचमां । नरपासै पंखी प ड्यो आय । आमिप सम भोग छोडनें । चारित्र लेस्यां चित्त लाय ॥ (सां० प्राणी संयमथी सुखपांमीये) ॥ २२ ॥ महल पिलंगादिक अथि रछे । ने पांम्या छे आपणें हाथ । कामभोगमें रक्त होय रह्या । ते तज होयसां नाथ ॥ (सां० राजा सं०) ॥ २३ ॥ पांचे इंद्र्यांरा भोग छोडनें । द्रव्य भावे हलकाथाय । सहज वाल पंखीनीपरे । विचरस्यां अपणी दाय ॥ (सां० प्राणी सं०) ॥ २४ ॥ गिरध पंखीज्युं भोग जाणजो । एह काम वधारै संसार । सापज्युं मोर थकी डरतो रहे । ज्यूं पापसुं संकस्यां इण वार ॥ (सां० । प्राणी सं०) ॥ २५ ॥ मोह तजी संतोपसुं । लेस्यां संय मभार । ममता तजी समता ग्रहो । करस्यां उग्र विहार (सां० प्राणी सं०) ॥ २६ ॥ तन धन जोबन कारमो । चंचल बीज समान । खिण २ छूटै आउखो । मूरख करै रे गुमान ॥ (सां० प्राणी सं०) ॥ २७ ॥ हस्तीज्युं बंधण तोडनें । आप वनसुखे जाय । करम बंधण तूटै संयम लियां । सुणो

कहुंतुं महाराय ॥ (सां० राजा सं०) ॥ २८ ॥ इम सुणनें इखुकार राजा चेतियो । छोरुीनें मोटको राज । कायरनें तो ए तजतां दोहिलो । विप्र सहित सारया काज ॥ (सां० राणी सं०) ॥ २९ ॥ मोह न राख्यो परिग्रह छोरूके । पायो जिन धरम सुजाण । तपस्या सगलांही आदरी । उत्कृष्टो पराक्रम आण ॥ (सां० प्राणी सं०) ॥ ३० ॥ सुधसंयम पालै सदा । सु मति गुपति दयाल । भमरानी परे करै गोचरी । रिष टालै दोष वयाल ॥ (सां० प्राणी सं०) ॥ ३१ ॥ तारण तरण जिहाज छै । भव्य जीवनें उ तारै पार । केवल ज्ञान उपायनें । सुख पाम्यां श्रीकार ॥ ३२ ॥ (सां० प्राणी सं०) । मोहनिवारी प्राणी समझनें । निरमल भावना भाव । छए जणा थोमा कालमें । सुगति बिराज्या जाय । (सां० प्राणी सं०) ॥ ३३ ॥ राजा सहित राणी कमलावती । भृगु पुरोहित जशा नार । प्रोहित भृगुना दोय दीकरा । शिव सुख पाम्यो सार ॥ ३४ ॥ (सां० प्राणी सं०) इति श्री इखुकार राजा भृगु प्रोहितरो अधिकार संपूर्णम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥❋॥(अब नव पदके (९) चैत्यवंदन (९) स्तवन(९)थुई लिखते हैं॥❋॥

॥ ❋ ॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्री इष्टदेवायनमः ॥ ❋ ॥ जय २ श्री अरिहंत भानु । भवि क मल विकाशी । लोकालोक अरूपि रूपि । समवस्तु प्रकाशी ॥ १ ॥ समुद्घा त सुभ केवलै । क्षय कृत मल राशी । शुक्ल चरम शुचि पादसें । भयो वर अविनाशी ॥ २ ॥ अंतरङ्ग रिपु गण हणीए । हुय अप्पा अरिहंत । तसु पद पंकजमें रहित । हीर धरम नित संत ॥ ३ ॥ इति अरिहंत पद चैत्यवंदनं ॥ जिंकिंचि० । नमोऽर्हत्० ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ प्रथम पद स्तवन लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (पूजो मनरली, हां हो दादा कुशल सुरिंद पू० एदेशी) ॥ श्रीतेरमगुण वसिके कंत । कर्मकुं भंजे श्री अरिहंत । (मन मानले) । अष्ट समय में समय तीन । सर्व आहार थी होवें हीन ॥ (म०) बादर काये मन वच जोग । तनु २ में फुन हद तनु योग ॥ (म०) सुखम कायते मन वच रोक । निज वीर्ये ताकुं कर फोक (मन०) ॥ २ ॥ संज्ञी मात्रके मन

व्यापार । वेइंद्रीनें वाक्य प्रचार (म०) आदि समय रह्यो पणक सुजी व । सुखम लह्यो तिण जोग अतीव (म०) एणां योग थी समयें एक। हीना संख गुणो कर ठेक (मनमा०) समया संखें जोग निरोध । कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध (मन०) वेद समें ना हारता पाय । कुशल कहै ते श्री जिनराय । (म०) तेरमे गुणमें गुण समें देव । आपोसा जगकुं नितमेव (म०) ॥ ५ ॥ इति अरिहंतपद स्तवनम् ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अरिहंत पदस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपो जी । केवल ग्यान की ज्योति प्रकाशक अनंतगुणें करि पूरो जी । तीजे भव थानक आराधी गोत्र तीर्थंकर नूरोजी । वारे गुणांकरी एहवा अरिहंत आराधो गुण नूरोजी ॥ इति अरिहंत पदस्तुतिः ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सिद्धपद चैत्यवंदन ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री शैलेसी पूर्वप्रांत । तनु हिंनन भागी । पुव्व पत्तयपसंगसें ऊरधगत जागी ॥ १ ॥ समय एकमें लोकप्रांत । गये निगुण निरागी । चेतन भूपें आतमरूप । सुदिसा लही सागी ॥ २ ॥ केवल दंसण नाण थी ए । रूपातीत स्वभाव । सिद्ध भये तसु हीर धर्म । वंदे धरि शुभ भाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपद चैत्यवंदन ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सिद्धपद स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ थां रे महिला ऊपर मेह झरोखे बीजली ॥ (ए चाल) ॥ ❀ ॥ अष्ट वरस नग मास हीना कोडी पूर्वमें (म्हाराजाल ही०) । उत्कृष्टो करे वास सयोगी धाममें (म्हा० म०) ॥ अजोगी के अंत तजे भव भव्य ता (म्हारा० न०) । शैलेसीलहे कर्म दले गुणश्रेणिना (म्हा० द०) ॥ १ ॥ ह्रस्वाक्षर पंच काल रहे ते योगमें । (म्हा० र०) तेरम प्रकृतिनो अन्त करीनें अन्तमें (म्हा० क०) गमन करे नगरऊमें अक्रिय होयनें (म्हा० अ०) पुव्व पयोग असंग स्वभाव अबंधनें (म्हा० स्व० २) इण गुण नवपरमाण जोजन लहे फरी (म्हा० जो०) वसेज विगदा भाश निरालंबन मही (म्हा० नि०) मध्ये जोजन अट घनाकृति अन्तमें (म्हा० घ०) मही पकृर्या हीन भणी

सिद्धांतमें (म्हा०ज०)॥ ३ ॥ तनुपब्भारा नाम शिलासें जोयनें (म्हा०शि०) युग लोचनमें भाग अलोककुं स्पर्शनें। लघु अंगुल बत्तीस प्रमाणऽवगाहना (म्हा० प्र०) त्रिधनु शतपंच गुणासें हीनता (म्हा०) मिलिया एकमें नंत अवाधा नालही (म्हा० अ०) अष्ट प्राणधरि रम्य सिरोही जो सही (म्हा० सि०) वीजोपद श्रीसिद्ध धरो मन गेहमें (म्हा० धरो०) कुशलभये जग जीव मिलोगा तेहमें (म्हारा० मि०)॥५॥❋॥ इति सिद्धपद स्तवनम् ॥❋॥

॥ ❋ ॥ अथ सिद्धपदस्तुतिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अष्ट करमकुं धमन करीनें गमन कियो सिववाशी जी । अव्या वाध सादि अनादि चिदानंद चिदराशी जी । पर मातम पद पूरण विलाशी अघ घन दाघ विनाशी जी । अनंत चतुष्टमय शिवपद ध्यावो केवल ग्यानी भाशी जी ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ इति सिद्धपद स्तुतिः ॥ २ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ तृतीय पद नमस्कारः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जिन पदकुल सुखरस अनिल । मितरस गुण धारी । प्रवल सबल घन मोहकी । जिणते चमुहारी ॥ १ ॥ ऋज्वादिक जिनराज गीत । नयतन विस्तारी । भव कूपै पापें पम्त । जगजन निस्तारी ॥ २ ॥ पंचा चारी जीवके । आचारिज पदसार । तिनकुं बंदे हीर धर्म । अठोत्तर सो वार ॥ ३ ॥ इति आचार्य पद नमस्कारः ॥ ३ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ आचार्य पद स्तवन लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (नणदल वींदलीलै एचाल)॥ ❋ ॥ खंती खग्गथी जेणें । हणयो क्रोध सुभट सम देणेंहो । (गणपति गुणपेखी) । मान महागि रि वयरे । अति सोभन मद्दव वयरें (होग० १) दंभरूप विश वेली । वर अज्जव कीलै ठेलीहो (ग०)। मुर्छा वेलथी भरियो । लोह सागर मुत्तें तरियोहो(ग०)॥ २ ॥ मदन नाग मद हीनो । जिण दम शम जंत्रें की नो हो (ग०) मोह महामल ताड्यो । पुण वैराग मुगरें पाड्यो हो (ग०) ॥ ३ ॥ दोश गयंद वस कीनो । धरि उपशम अंकुस लीनो हो (ग०) अं तरंग रिपुभेद्या । सुर वर पिण जिण णिपेद्याहो (ग० ४) रस कृति गुणथी

लीनो । सूत्र अरथे आगम पीनोहो (ग०) आचारिज पद एहवो । धरी जीव कुशललना सेवोहो (ग०) ॥ ५ ॥ इति आचार्य स्त० ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आचार्यपद स्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंचाचारकुं पाले उजवाले दोष रहित गुणधारी जी । गुण छत्तीसे आगमधारी द्वादश अंग विचारी जी । प्रबल सबल घनमोह हरणकुं अनिल समो गुणवाणी जी । क्षमा सहत जे संयम पाले आचारज गुणध्यानीजी ॥ इति आचार्य पद स्तुति ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चतुर्थ पद नमस्कारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धन धन श्री उवझाय राय । सठता घन भंजन । जिनवर दिसत दुवाल संग । कर कृत जन रंजन ॥ १ ॥ गुणव्रण भंजण मण गयंद । सुय श्रृणि कियगंजण । कुणालंथ लोय लोयणं । जत्थय सुय मंजण ॥ २ ॥ महा प्राणमें जिन लह्यो ए । आगमसें पद तुर्य । तिनपें अहि निश हीर धर्म । वंदे पाठक वर्य ॥ ३ ॥ इति उपाध्याय चैत्य० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ उपाध्याय पद स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शांवलिया अलगा रहोनें । (एचाल) दुयनें २ दूरी दुयनें । चेतन आपे सठनें (दूरीहोयनें) तुं मुझपास क्युं आवे (दू०) तुझनें कुण वतलावे । (दू० आंकणी) तो संगे निज पंचेंद्रीनो । रचना चरम तुलाणो । नाणावरणी खय उपशमसे । भावेंद्री मंमाणो (दू०) ॥ १ ॥ द्रव्ये ते परजासेंकीना । जाति नाम व्यपदेश । एवंतो गो तुरग गजादिक किण कर्म उपदेश (दू०) ॥ २ ॥ इत्यादिक बहु मुझकुं शंका । तेरे संगे ला गी । नीलवर्ण की शमतासेती । मैंजयो तोसुं रागी (दू०) ॥ ३ ॥ उप क हीयें हणीयो भवियानो । अधियां लाजन आय । आधीनां मन पीमाना में । मायो येन निलाय (दू०) ॥ ४ ॥ आधिक्ये स्मरीयें वर आगम । सूत्र में ते उवझाय । ततसेवातें हणि मठताकुं । चेतन कुशलना पाय (दू०) ॥ ५ ॥ इति चतुर्थ पद स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❁ ॥ अथ उपाध्याय पद स्तुतिः ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अंग इग्यारे चउदे पूरव गुण पचवीसना धारी जी । सूत्र अरथधर पाठक कहियै जोग समाधि विचारी जी । तप गुण सूरा आगमपूरा नय निक्षेपै तारी जी । मुनि गुणधारी बुध विस्तारी पाठक पूजो अविकारी जी ॥ ❁ ॥ इति उपाध्याय स्तुति ॥ ४ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ पंचमपद नमस्कारः ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ दंशण नाण चरित्त करी । वर शिवपद गामी । धर्म शुक्लसुचि चक्रसें । आदिम खय कामी ॥ १ ॥ गुण पमत्त अपमत्ततें । भये अंतरजामी । मांनस इंदिय दमनभूत । शम दम अभिरामी ॥ २ ॥ चारुति घन गुण गण भर्यो ए । पंचम पद मुनिराज । तत्पद पंकज नमतहै हीर धर्मके काज ॥ ३ ॥ इति साधुपद चैत्यवंदनं ॥ ५ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ साधु पद स्तवन लि० ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ मालन मालन मति कहो (एचाल) निकषाया जगजन कहै । धारे चउगति वसनसें रोसहो (मुनिंदजी) राग हांन भय तुं करै । (साहिबा) शिव रमणीसें हेतहो (मुनिंदजी) ॥ १ ॥ सर्वप्रमादतजी रहै (सा०) छठैपूरव कोरुहो (मु०) शत सोगम आगम करै (सा०) लघुकाले गुण आदिहो मु० ॥ २ ॥ स्त्यानर्द्धि निद्राउदै सा० । पामें कर्म निकंद हो (मु०) प्रचला निद्रामें रही (सा०) । बारम गुणनो बास हो (मु०) ॥ ३ ॥ स्थिति रस घात प्रमुख करै (मा०) जो गुण संख्या तीत हो (मु०) तो पिण तिण जगमें लही (सा०) त्रिक घन गुणनी ख्यात हो (मु०) ॥ ४ ॥ रयण त्रयसें शिव पथें (सा०) साधन परवर जीव हो (मु०) । साधु हुवइ तसु धर्ममें (सा०) कुशल भवतु जगती वहो (मु०) ॥ ५ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ ❁ ॥ अथ साधूपद स्तुतिः ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ सुमति गुपतिकर संजम पालै दोष बयालीश टालेजी पटकाया गोकल रख वाले नवविध ब्रह्मव्रत पालेजी । पंच महाव्रत सूधा पाले धर्म शुक्ल उजवाले जी ॥ क्षपक श्रेणिकारि कर्म खपावे इमपद गुण उपजावे जी ॥ इति साधू पदस्तुति ॥ ५ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दर्शनपद नमस्कार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हुय पुग्गल परियट्ट । अड्ढ परमित संसार । गंठिभेद तब करिलहे । सब गुण आधार ॥ १ ॥ क्षायक वेदक शशि असंख । उवशम पण वार । विनाजेण चारित्र नाण । नही हुवै शिव दातार ॥ २ ॥ श्रीसुदेव गुरु धर्मनीए । रुचि लक्षन अभिराम । दरशनकुं गणि हीर धर्म । अह निश करत प्रणांम ॥ इति दर्शनपद नमस्कारः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दर्शनपद स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रामचंद्रके बाग आंबो मोह रह्योरी (ए चाल) ॥ ❀ ॥ देव श्रीजिनराज । गुरुते साधु भएयोरी । धर्म जिनेश्वर प्रोक्त । लक्षण बोधि तणोरी ॥ १ ॥ बोधलाभके काज । सप्तम नरक भलोरी । तेण विना सुर लोक । तातें अधिक बुरोरी ॥ २ ॥ मिथ्या तापे तप्त । बोधही छांहलहेरी । उपशम ख्यायक वेद । ईश्वर तीन कहेरी ॥ ३ ॥ भव सायर हे अपार । फुण अस्ताघ कह्योरी । जसु लाभै ते होय । गोसपद मात्र खरोरी ॥ ४ ॥ यदभावें अप्रमाण । नाण चारित्त भलारी । बोध धर्ममें जीव । लाभै कुशल कलारी ॥ ५ ॥ इति दर्शनपद स्तवनं ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दर्शन पदस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनपन्नत्त तत्व सूधासरधै समकित गुण उज वालै जी । भेद छेद करि आतम निरखी पशु टाली सुर पावै जी । प्रत्याख्यानें समतुल्य भाष्यो गणधर अरिहंत सूराजी । ए दरशण पद नित नित वंदो भवसागरको तीरा जी ॥ इति दर्शनपद स्तुति ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ग्यानपद नमस्कार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ द्विभादिक रस राम वन्हि । मित आदम नाण । भाव मिला पर्से जिन जनित । सुय वीश प्रमाण ॥ १ ॥ भवगुण पज्जव उहि दोय । मण लोचन नांण । लोकालोक सुरूप जाण । इक केवल भाण ॥ २ ॥ नानावरणी नासथीए । चेतन नाण प्रकाश । सप्तम पदमें हीर धर्म । नित चाहत अवकाश ॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ग्यानपद स्तवन ॥ लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ह्मांरै अति उछरंगे (ए चाल) जिनवर भाषित आगम भणि या । तत्व यथास्थिति गमिया जी (म्हारै जगजनतारू) ते उत्तम वर नाण कहायै । भवि जन अहनिशि चाहै जी (म्हा०)॥ १ ॥ भ क्षा भक्ष कुपंथ सुपंथा । पेयापेय अग्रंथाजी (म्हा०) देव कुदेव अहित हित धारी । जाणें जेण विचारी जी (म्हा०)॥ २ ॥ श्रुति मति दोयछे इं द्री सारू । तेण परोक्ष बिचारूजी । (म्हा०) उंही मण केवल है वारू । जीव प्रतक्ष सुधारू जी (म्हा०)॥ ३ ॥ अयवि जस्स बलें जगजाणें । लोकादिक अनुमानें जी । (म्हा०) त्रिभुवन पूजै जासु पसायें । धारी शुभ अध्यवसायें जी (म्हा०)॥ ४ ॥ नाणा वरणी उपशम क्षयथी । चे तन नाणकुं विलशैंजी (म्हा०)। सप्तम पदमें भविजन हरषै । निशदिन कुशलता निरखै जी (म्हा०)। इति नाणपद स्तवनं ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ग्यान पदस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मतिश्रुत इंद्री जनित कहियै लहीये गुण गंभीरो जी । आतमधारी गणधर विचारी द्वादश अंग विस्तारोजी । अवधि मनपर्यव केवल वलि प्रत्यक्ष रूप अवधारोजी । ए पांच ग्यानकुं वंदो पूजो भविजननें सुखकारो जी ॥ ❀ ॥ इति ज्ञानपदस्तुति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टमपद नमस्कार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जस्स पयायें साहु पाय । जुग २ समितेंद । नमन करें सुभ भावलाय । फुण नरपति वृन्द ॥ १ ॥ जंपै धारि अरिहंतराय । कारि कर्म निकंद । सुमति पंच तीनगुप्तियुत । दे सुक्ख अमंद ॥ २ ॥ इषु क्रति मान कषाय थीए । रहित लेस सुचिवंत । जीव चरत्तकुं हीरधर्म । नमन करत नितसंत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदनं ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चारित्र पद स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ निर्विकल्प अज निर्गुणी । चिदाभास निस्संग (सुग्यानी सां भलो) मूर्त्तिहीन चेतन करै । रूपी पुदगल रंग ॥ (सुग्यानी सां०)

॥ १ ॥ स्पर्द्धक कारण वर्गणा ॥ कार्यें कारण भाव (सु०) कृत्वा जोग सुधामता । लब्धा संखस्वभाव (सु०) ॥ २ ॥ पर्याप्त लघु जोगमें । वृद्धि लहै जुगमान (सु०) मध्ये वसु समयें लहै । अंते द्वौ तेजाण (सु) ॥ ३ ॥ सहकारी मानस मुखा । कारण रम्य वलेण (सु०) प्राप्तावस्र प्रकारता । सप्त प्रकृतका तेन (सु०) ॥ ४ ॥ तद्बोधन रूपी भलो । चेतन संयमधाम (सु०) कर घन मिल पद धर्ममें । कुशल भवतु अभिराम (सु०) ॥ ५ ॥ इति चारित्रपद० ॥ ❋ ॥　　　　॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ चारित्र पदस्तुतिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ करम अपचय दूर खपावै आतम ध्यान लगावै जी । बारै भावना सूधी भावै सागरपार उतारै जी । षटखंड राजकुं दूर तजीनें चक्री संजमधारै जी । एहवो चारित्रपद नित बंदो आतम गुण हितकारै जी ॥ इति चारित्र पद स्तुतिः ॥ ८ ॥ ❋ ॥　　　　॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ तपपद नमस्कार लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्री रुषभादिक तीर्थनाथ । तद्भव शिव जाण । बिहिअंतै रपि वाह्य । मध्य द्वादश परिमाण ॥ १ ॥ बसु कर मित आमोसही । आदिक लब्धि निदान । भेदै समतायुत खिणें । दृग्घन कर्म विमान ॥ २ ॥ नवमो श्रीतपपद भलोए । इछा रोध सरूप । बंदनसें नित हीरधर्म । दूरभवतु भवकूप ॥ ३ ॥ इति तपपद चैत्यवंदनं ॥ ९ ॥ ❋ ॥　　　　॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ तपपद स्तवन लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ वारश भेद भएया जिनराजे । वाह्य मध्यतणा जगकाजेरे । (शिवपद श्रेणि) । तिण भव सिद्धितणा वरव्याता । जिनवर पिण तपना कर्त्ता रे ॥ १ ॥ (शि०) शमता सहिते जिनते भारी । भजी कर्म चमु पिणहारी रे (शि०) जीव कनकसें कर्म कचोरा । दहै तप पावनका जोरारे (शि०) ॥ २ ॥ तप तरुवरना कुशमहै रुद्धि । देव नरनी फलते सिद्धी रे (शि०) पाप सकलहै तमनी राशी । तप भानूसें जाये नाशी रे (शि०) ॥ ३ ॥ जस्स पसाये लहियें वारू । लब्धां सगली जगहित कारू रे (शि०) अति दुक्कर फुण साध्यता हीना । काम तातें वारू कीनारे ।

(शि०) ॥ ४ ॥ इच्छा रोधन रूपी कहियै । तपपदही चेतन वहियैरे (शि०) पाठक हीर धर्म कृपासें । नवपद कुशलाकूं ज्ञासेरे ॥ शि० ॥ ५ ॥ इति श्रीतपपद स्तवनम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥❋॥

॥ ❋ ॥ अथ तपपदस्तुतिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ इच्छारोधन तपते ज्ञाष्यो आगम तेहनो साखी जी । द्रव्य ज्ञावसें द्वादश दाखी जोगसमाधि राखी जी । चेतन निजगुण परणित पेखी तेहीज तप गुण दाखी जी । लबधि सकलनो कारण देखी ईश्वरसें मुख ज्ञाषी जी ॥ इति तपपदस्तुतिः ॥ ९ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ २४ जिन चैत्यवंदन लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्री मदृषज्ञ सर्वज्ञ । वृषज्ञांक सुवर्णरुक् । जय देवाधिदेवार्ह । नाज्ञि राजेन्द्र नन्दन ॥ १ ॥ युगस्पादौ त्वयायेन । ज्ञान त्रय युतेन यत् । जनन्या मरुदेवायाः । पावनं जठरं कृतं ॥ २ ॥ इति ऋषज्ञ स्तुतिः ॥ १ ॥

॥ ❋ ॥ अर्हता जितनाथेन । गजलांछन शालिना । जित शत्रू महीपाल । पुत्रेण कनकत्विषा ॥ ३ ॥ विजया कुक्षि रत्नेन । ज्ञगवंस्त्वयका जिनः । जिता रागादयो येन । वंदेत्वां सर्वदा मुदा ॥ ४ ॥ इत्य जितस्तुतिः ॥ २ ॥

॥ ❋ ॥ जितारि नृपतेर्वर्य्यात । शंज्ञवः शंज्ञवाज्ञिधः । शेनायानंदनो हेम । वर्णो गंधर्व लांछनः ॥ ५ ॥ सर्व सौख्यप्रदो मुख्य । ज्ञान दर्शन संयुतः । मुनीनां पुङ्गवो देवो । नित्यं दिशतुमांजिनः ॥ ६ ॥ इति शंज्ञव स्तुतिः ३

॥ ❋ ॥ सिद्धार्थानंदनं सार्व । वीतरागं जगत्पतिं । श्री संवर समुत्पन्नं प्लवगांकं हिरण्यज्ञं ॥ ७ ॥ अज्ञिनन्दन नामानं । विशुद्ध हृदयः सदा । यस्तौति परयाज्ञक्तया । सना लोकेज्ञिनंद्यते ॥ ८ ॥ इत्यज्ञिनंदन स्तुतिः ॥ ४ ॥

॥ ❋ ॥ मेघाज्ञिध धरित्रीश । तनयो मङ्गलप्रदः । क्रौंच लक्षण ज्ञृद्देम । मरीचि मंङ्गलांगजः ॥ ९ ॥ सत्यं सुमति नाथेश । सुमतिं तनुसत्तमां । ज्ञविनां पुण्यकर्तॄणां । स्वर्ग सौख्यवल्लिप्रदं ॥ १० ॥ इति सुमति स्तुतिः ॥ ५ ॥

॥❋॥ सुशीमा पुत्र सत्कोक । नदद्युति धराधर । धरा ज्ञिध नृपोद्भूत । पद्म लक्षण धारक ॥ ११ ॥ ज्ञवाब्धौ ज्ञवसंकीर्णे । दुस्तरे पततां नृणां । त्राणाय सततं देव । पद्मप्रज्ञ जिनेश्वर ॥ १२ ॥ इति पद्मप्रज्ञ स्तुतिः ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीसुपार्श्वाभिधो देवः। पृथ्वीजः स्वस्तिकांकभृत्। प्रतिष्ट नृप संजात। श्चामीकर करोजिनः ॥ १३ ॥ समुद्र इव गंभीरः। कर्मणां भेदने परः। यः सार्वः परमब्रह्मा। स्तंनौमि सदा विभूं ॥१४॥ इति सुपार्श्व स्तुतिः ७

॥ ❀ ॥ चंद्रप्रभ प्रभोकांत। चंद्रलक्षण संयुत। स्तमापति भविज्ञान। तमो व्यूह विनासनः ॥ १५ ॥ संसार जलधेर्नाथ। महसेन नृपोद्भवः। लक्ष्मणा पुत्र मांस्वामि। भव केवल वोधभृत् ॥ १६ ॥ इति चंद्रप्रभ स्तुतिः ॥ ८ ॥

॥ ❀ ॥ (अत्राद्यछत्रबंधः श्लोकः) ॥ संस्तु तो वो ददत्वाशु। सुरासुर नरेश्वरैः। सुविधिर्वांछित शर्म्म। सुग्रीव नृपनंदनः ॥ १७ ॥ यस्यासीज्जननी रामा। माननीया दिवौ कसां। मान मुक्तो वदातोयो। मायौ मकरलांछिनः ॥ १८ ॥ इति सुविधनाथ स्तुतिः ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ (चामर बंधाविमौ) ॥ श्रीमच्छीतलनाथेश। नन्दा दृढरथात्मजा। भास्वत्सुवर्ण वद्देह। श्रीवत्सांभ्रांक धारकः ॥ १९ ॥ त्वदीय चरणांभोजः। सेवकानां वपुर्भृतां। प्राक् कृतं वृजनव्यूहं। दुष्टं शंभोद्यहे बिभौ ॥ १० ॥ इति शीतलनाथ स्तुतिः ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ विष्णु वंशार्क वद्देवो। बिष्णु पुत्रो हिरण्यभः। श्रेयो वृद्धि करो जस्सं। खम्गलांछिन भृज्जिनः ॥ २१ ॥ हित्वा कर्म रिपून् सार्व। श्रेयांस श्रेयसैः सह। परज्ञान मयेनत्वं। महानन्दपदं परं। इति श्रेयांस स्तुतिः ॥ ११ ॥

॥❀॥वरी वर्त्ति तरामीहा। भवतां भवतां यदि। झटिति छेदितुं चित्ते। भोभव्याः प्राप्नु मक्षरं ॥ २३ ॥ त्तदाभजध्व मेनंहि। वासुपुज्यं जया सुतं। वसुपूज्य कुलोत्तंसं। महिषां कंच रक्तभं ॥२४॥ इति वासुपूज्य स्तुतिः २

॥❀॥ श्रीमद्विमलनाथेंद्र। कृतवर्म समुद्भव। शूकरांक धर श्यामा। पुत्रकल्याण दीधिते ॥ २५ ॥ चंद्रवद्विमल ज्ञान। त्वदीय स्मरणं विना। कुर्व्वन्प्येतिनो ब्रह्म। प्रक्रियां नातिविस्तरां ॥ २६ ॥ इति विमलस्तुतिः ॥१३॥

॥❀॥ हेमवर्णस्य पुत्रस्य। सुयशः सिंह सेनयोः। देवस्य श्येनचिन्हस्य। वर्य्यानन्त गुणोदधेः ॥ २७ ॥ इंद्रादयोपि यस्यांतं। गुणानां लेभिरे नहि। अनन्तस्य गुणान्तस्य। क्षमोवक्तुं नरः कथं ॥ २८ ॥ इत्यनन्तस्तुतिः॥१४॥

॥❀॥ सुव्रतापुत्र वज्रांक। भानुवंशार्कसन्निभ। कनकप्रभ सर्वज्ञ। ध

र्म्मनाथाभिधेश्वर ॥ २९ ॥ तवागोपि पुरश्चारी । भूतले यात्यशोकतां । अनु त्तरफलाः संति । सतां संगत योपिहि ॥ ३० ॥ इति धर्म्मनाथ स्तुतिः ॥१५॥

॥ ❁ ॥ विश्वसेन धराधीशं । नन्दनं मृगलक्षणं । आचिरेयं सुवर्णांगं । कलायामि जिनेश्वरं ॥ ३१ ॥ तं श्रीमच्छांति नामानं । यस्याग्रे कुर्वते मुदा । प्राज्यां सुमनसां वृष्टिं । विबुधा विबुधप्रियां ॥ ३१ ॥ इति शांतिनाथ स्तुतिः

॥❁॥ श्रीसुतायाः श्रियपुत्र । श्रेयस्कर हिरण्यभ । सूरि भूपति संजात । छागलक्षणधारक ॥ ३३ ॥ कुंथुनाथजिनेशस्य । तीर्थंकर जगत्पते । मदीयं पापसंदोहं । भवांतर कृतं घनं ॥ ३४ ॥ इति कुंथुनाथ स्तुतिः ॥ १७ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ सुदर्शन नृपोद्भूतं । नन्दावर्त्तांक संयुतं । अंभोज वन्निराजेपं । देवीपुत्रं सुवर्णाभं ॥ ३५ ॥ जगन्मुख्यागुणाः सर्व्वे । धुर्य्यप्रभुतया जिनं । चरीकर्मि नमस्तस्मा । अरायपरमात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथ स्तुतिः ॥ १८ ॥

॥ ❁ ॥ कुंभ प्रभावती पुत्रौ । नीलवर्णो घटांकभृत् । जगन्मित्र इव ध्वान्त । नाशना ध्रिदितः सदा ॥ ३७ ॥ छत्र त्रय युतोभाति । देवयो विष्टपत्रये । तस्य श्रीमल्लिनाथस्य । स्मरणेन मुदा सखे ॥३८॥ इति मल्लिनाथ स्तुतिः

॥❁॥ सुमित्र नृपतेः सूनो । पद्माकुक्षि पवित्रकृत् । कुर्म्म लक्षण भूकर्म्म दायक श्यामलछवे ॥ ३९ ॥ मुनिसुव्रत देवेन । क्षीणकर्म्मारि मंभ्फल । देहि त्वं मेव्ययीभावं । पदं तत्पुरुषोत्तमः ॥ ४० ॥ इति मुनिसुव्रत स्तुतिः ॥२०॥

॥ ❁ ॥ श्रीमद्विजय भूपाल । कुलोत्तंस हिरण्यरुक् । वप्रासुत नमिनाथ । नीलोत्पल सदंकभृत् ॥ ४१ ॥ यस्ते पंच जनोदेवः । निन्दाच कुस्तेश्वयं । सएति परमज्ञानं । कोपि नह्यत्र संशयः ॥ ४२ ॥ इति नमिनाथ स्तुतिः ।

॥ ❁ ॥ शिवायास्तनयेवर्य्ये । समुद्रविजयोद्भवे । हरिवंश हरो शंभो । शंखांके कमल प्रभे ॥ ४२ ॥ त्यक्त राजी मती स्नेहे । नेमनाथे जितस्मरे । सिद्धि प्रमदयामाला । मत्यक्षेपि जिनेश्वरे ॥ ४४ ॥ इति नेमनाथ स्तुतिः २२

॥ ❁ ॥ अश्वशेनाख्य भूपाल । सुतेन परमेष्ठिना । वामेयेन दितायेन । कमठ स्याभिमानता ॥ ४५ ॥ तस्मै श्रीपार्श्वनाथाय । नमोस्तु मामकं सदा । पवनासन चिन्हाय । नीलवर्णाय संभवे ॥४६ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथ स्तु०

॥ ❁ ॥ श्रीमत्सिद्धार्थ वंशार्क । त्रिशलेय जगन्मणे । महा नाद ध्वजा

र्हंत । कल्याणं कर सर्व्वदा ॥ ४७ ॥ चरमस्तीर्थ कृद्वीर । मोहेभहननेमृ गात् । त्वद्भक्ति दत्तचित्ताय । कमलां देहिमे जिनः ॥४८॥ इति स्तुः॥२४॥

॥ ❋ ॥ इति श्रीक्षमा कल्याणजी कृत २४ जिनेश्वर स्तवना संपूर्णम् ॥

॥ ❋ ॥ अथ थुट्कर नमस्कार लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ यत्र श्रीभरतेश्वरः शुचिमनाः पूर्वादि दिक्षुक्रमात् । तीर्थेशः किल युग्मवर्णवसुदिक संख्यान संख्याश्रियः । साधु स्थापयतिस्म विस्मित हृदा हर्म्यं नगाधीश्वरं । तं चाष्टापद तीर्थराजमनिशं द्रष्टुं समीहे स्वयं ॥ १॥ इत्यष्टापद स्तुतिः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ लसद्भि पंचाशदधीश्वरालयै । बिराजिते श्रीमति शाश्वताश्रये । नन्दीश्वरे द्वीपवरे जिनेश्वरान् । वंदे प्रमोदाद्भवभीति शांतये ॥ १ ॥ ॥ ❋ ॥ इति नंदीश्वर स्तुतिः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ शकल कुशलवल्ली पुष्करावर्त्त मेघो । दुरिततिमिर भानुः कल्प वृक्षोपमानुः । भवजल निधिपोतः सर्व संपत्ति हेतुः । स भवतु सततंवः श्रेयसे पार्श्व देवः ॥ इति श्री पार्श्व जिन स्तुतिः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दर्शनाद्दुरित ध्वंसी । वंदना द्वांछित प्रदः । पूजना त्पूरकः श्रीणां । जिनःसाक्षात्सुरद्रुमः ॥ १ ॥ इति जिन स्तुतिः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सुवर्ण वर्णं गजराजगामिनं । प्रलंब बाहु सुविशाल लोचनं । नरा मरेंद्रै स्तुतपादपंकजं । नमामि भक्त्या ऋषभं जिनोत्तमं ॥ १ ॥ ❋ ॥ इति आदिजिन स्तुतिः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नमस्कार समोमंत्रः । शत्रुं जय समोगिरिः । वीतराग समो देवो । न भूतो न भविष्यति ॥ १ ॥ दिट्ठे तुह सुहकमले । तिन्निविणठ्ठाइ निरवसेसाइं । दारिद्दं दोहग्गं । जम्मंतर संचियं पावं ॥ १ ॥ पाताले यानि बिंबानि । यानि बिंबानि भूतले । स्वर्गेपि यानि बिंबानि । तानि वंदे निरन्तरं ॥ १ ॥ प्रशमरसनिमग्नं दृष्टियुग्मं प्रशन्नं । वदनकमलमंकः कामिनीसंगशून्यः । कर युग मपि यत्ते शस्त्र संबंध वंध्यं । तदसि जगति देवो वीतराग स्त्वमेव ॥ १ ॥ ❋ ॥ इति सर्व जिन स्तुतिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ हत्था जेह सुलक्खणा । जे जिनवर पुजन्त । एकण धम्मं वा

हिरा। परघर कम्मकरंत ॥ १ ॥ जव बीजांकुर जनना । रागाद्याःक्षय मु पागता यस्य । ब्रह्मा वा विष्णुर्वा । हरो जिनोवा नमस्तस्मै ॥ १ ॥ इति ॥

॥ ❋ ॥ अथ सदाके देववंदनमें (तथा) दशमें दिन । उंजी पारणकी विधिमें कहणेंका (चै०) (स्त०) थुई लि० ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नवपद चैत्यवंदन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जो धुरि सिरि अरिहंत मूलदढ पीढिपइठिउ। सिद्धि सूरि उव ऊाय साहु चिहुंसाहगरिठिउ । दंसण नाण चरित्त तवहिं पमसाहें सुन्द रू। तत्तक्खर सर वग्ग लद्धि गुरुपय दल मंबरू। दिशिवाल जक्ख जक्खणी पमुह सुर कुसुमेहि अलंकियउ। सो सिद्धचक्क गुरुकप्पतरु अह्म मम वंछि यदियउ ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः नवपद चैत्यवंदन लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ श्री अरिहंत उदार कांति । अति सुन्दर रूप । सेवो सिद्ध अ नन्तशांत । आतम गुण जूप ॥ १ ॥ आचारज उवऊाय साधु । शमता रस धाम । जिनजाषित सिद्धांतशुद्ध । अनुजव अजिराम ॥ २ ॥ बोधबीज गुण संपदाए । नाण चरण तव शुद्ध । ध्यावो परमानन्दपद । ए नवपद अवि रुद्ध ॥ ३ ॥ इह परजव आनन्द कंद । जगमांहि प्रसिद्धो । चिंतामणि सम जास जोग । बहु पुण्यै लद्धो ॥ ४ ॥ तिहु अण सार अपार एह महिमा मनधारो । परिहर परजंजाल जाल । नित एह संजारो ॥ ५ ॥ सिद्धचक्क पदसेवतां । सहजानन्द स्वरूप । अमृतमय कल्याण निधि । प्रगटे चेतन जूप ॥ ६ ॥ इति श्री सिद्धचक्र नमस्कार संपूर्णम् ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ नवपद वृद्धस्तवन लि० ॥❋॥

॥ ❋ ॥ सुरमणी समसहु मंत्रमां । नवपद अजिरामीरे लोय । (अहो नव०) करुणा सागर गुणनिधी । जग अंतरजामीरे लो० । (अहो जग०) ॥ १ ॥ त्रिजुवन जनपूजित सदा । लोकालोक प्रकासी रे । लो० (अहो लोका०) । एहवा श्री अरिहंत जी । नमुं चित्त उल्लासीरे लो० । (अ० न०) २ । अष्ट करम दलक्षय करी । थया सिद्ध सरूपीरे लो० । (अ० थ०) सिद्ध नमो जवि जावथी । जे अगम अरूपी रे लो० (अ० जे)

॥ ३ ॥ गुण छत्तीसे सोजता। सुंदर सुखकारी रे लो०। (अ० सुं०) आचारज तीजे पदे। वंदु अविकारीरे लो०। (अहोवं०) ॥ ४ ॥ आगम धारी उपशमी। तप दुविध आराधीरे लो०। (अ० त०) चोथे पद पाठक नमो। संवेग समाधीरे लो०। अ० सं०) ॥ ५ ॥ पंचाचार पालणपरा पंचाश्रव त्यागीरे लो०। (अहोपं०) गुण रागी मुनि पांचमें। प्रणमुं वड़ जागीरे लो०। (अ० प्र०) ॥ ६ ॥ निज परगुणनें उलखे ॥ श्रुत श्रद्धा आवै रे लो०। (अ० श्रु०) छठे गुण दरशण नमो। आतम शुज जावे रे। (लो० अ० आ०) ॥ ७ ॥ ग्यान नमो गुण सातमें। जे पंच प्रकारे रे लो० (अ० जे०) लोकादिक षद् द्रव्यना सहुजाव विचारेरे लो (अ० स०) ॥ ८ ॥ आठमें चारित्र पद नमो। परजाव निवारी रे (लो० अ० प०) खंत्यादिक दस धर्मनो। जेह छे अधिकारी रे लो०। (अ० जे०) ॥ ९ ॥ नवमें वलि तपपद नमो। बाह्याभ्यंतर जेदैरे लो०। (अ० बा०) बांध्या काल अनंतना। जे कर्म उछेदै रे लो०। (अ० जे०) ॥ १० ॥ ए नवपद बहुमानथी। ध्यावें शुज जावे रे लो०। (अ० ध्या०) नृप श्री पालतणी परे। मन वंछित पावै रे लो०। (अ० म०) ॥ ११ ॥ आसू चैत्रक माशमां। नव आंबिल करियैरे लो। (अ० न०) नव जली विधियुत करी। शिव कमला वरियैरे लो०। (अ० शि०) ॥ १२ ॥ सिद्ध चक्रनी बहुपरे। वर महिमा कीजैरे लो०। (अ० व०) श्री जिनलाज कहे सदा। अनुपम जश लीजेरे लो०। (अ० अ०) ॥ १३ ॥ इति० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनःनवपद स्तवन लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (राग मारु) ॥ तीरथनायक जिनवरू जी। अतिसय जास अनूप। सिद्ध अनन्त महागुणी जी। परमानंद सरूप। (जविक मन धारज्योरे) ॥ १ ॥ धारज्यो नवपदध्यान (ज० श्री आचारज गणधरूरे। गुण छत्तीश निवास। पाठक पदधर मुनिवरू जी। श्रुतदायक सुविलाश (ज०) ॥ २ ॥ सुमति गुपतिधर सोजता जी। साधू शमतावंत। सम्यग् दर्शन सुंदरू जी। ज्ञान प्रकाश अनन्त। (ज०) ॥ ३ ॥ संवर साधना चरण छे रे। तप उत्तम विधि होय। ए नवपदना ध्यान थीरे। निरुपाधिक

सुख होय। (ज०) ॥ ४ ॥ अमृतसम जिनधर्मनोरे। मूलए नवपद जाण। अविचल अनुभव कारणें जी। नितप्रतिनमत कल्याण (ज०) ॥ ५ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (राग प्रभाती) नवपद ध्यान धरोरे (भविका न०) मन वच काया कर एकंते। विकथा दूर हरोरे (न० ॥ १ ॥ मंत्रजमी अरुतंत्र वणेरा। इन सबकों विसरोरे। अरिहंतादिक नवपद जपनें। पुण्य भंडार भरोरे ॥ २ ॥ (न०) अष्टसिध नव निध मंगल माला। संपति सहज वरोरे। लालचंद याकी बलिहारी। शिवतरु बीज खरोरे ॥ ३ ॥ (नव०) ॥ इति श्रीसिद्धचक्र स्तवनं ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ नवपद थुई लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नित प्रति हुं प्रणमुं सिद्धचक्र सुभ भाव। हिवकारज सिद्धि नो लाधो एह उपाय। तुझ नाम पसायें आरति व्याधि पुलाय। इग तुझ अनुग्रहथी सुख संपति सुझ थाय ॥ १ ॥ श्री अरिहंत नमियें सिद्ध सूरी उवझाय। मुनिवर त्रिक करनें दंशण नाण सुहाय। दुगविधि चारित्तें बुध विध तप मन भाय। ये नवपद ध्यावतां निरुपम शिव सुख थाय ॥ २ ॥ विद्या परवादें जानो ए अधिकार। श्रीगुरु उपदेशें सिद्धचक्र उद्धार। प्रवचन अनुसारें भाष्यो एह विचार। भविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणभंडार ॥ ३ ॥ जिनधरम अनुरागी चक्केसरि सुखकार। सेवकनें आपै सुख संपति परिवार। हिव निद्धि उदयकरि चारित्र नंदी मन भाय। जिनचंद सूरी सर खरतर पति सुपसाय ॥ ❋ ॥ इति नवपद स्तुतिः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ जैतीसंयुक्त नवपदओली करण विधि लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (प्रथम) आसोज शुदि ७ (अथवा) चैत्रसुदि ७ सें ओली सरू करै। (कदास) तिथि घटी हुवे तो छठ मे, वढी होय तो, आठिम सें सरू करै। (पिण) आंबिल नव पूनिमतक करै। (तिहां) प्रथम भूमि शुद्ध करके। मांडणादिक सें चित्रत करै। पीछे बाजोट ऊपरि सिद्ध चक्र थापे त्रिकाल पूजा करें। (सोलिखते हैं) प्रभात समय राई पडिकमणो करिके। पीछें वस्त्र पडिलेहै। (जहां) सिद्ध चक्र स्थापना है। तहां

आयके पांच शक्रस्तवे देव वांदै। पीछे नव चैत्ये। (अथवा) नव प्रतिमा आगे। नव चैत्यवंदण करै। वास क्षेप पूजा करै। पीछे केसर चंदनसें पूजा करै। पीछे मध्यान्ह समय, पांचशक्र स्तवे देव वांदै। पीछे गुरु पासे आयके। राई आलोवे। अब्भुट्ठिमि खमायके आंबिलनो पच्चक्खाण करै। प्रथम अरिहंत पदका वरण सपेद है। (इससें) आंबिल में चावल (अनें) गरम पाणी यह दोइ द्रव्य लेसुं। ऐसो आंबिल पचखै। (पीछै) अरिहंत पदके बारे गुण है सो चिंतविके बारै नमस्कार करै। सो लिखते हैं (प्रथम सर्व ठिकाणें) इच्छामिखमासमणो। वं० इत्यादि कहिके नमस्कार करै ॥

॥ ❀ ॥ अरिहंतके १२ गुणः ॥ ❀ ॥

१ ॥ अशोक वृक्ष प्रति हार्य संयुताय श्री अरिहंताय नमः ॥
२ ॥ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥
३ ॥ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥
४ ॥ चामरयुग प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥
५ ॥ स्वर्ण सिंहासण प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥
६ ॥ भामंडल प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥
७ ॥ दुंदुभिप्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥
८ ॥ छत्रत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥
९ ॥ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअरि० ॥
१० ॥ पूजातिशय संयुताय श्रीअरि ० ॥
११ ॥ वचनातिशय संयुताय श्रीअरि० ॥
१२ ॥ अपाया पगमातिशय संयुताय श्रीअरि० ॥

॥ ❀ ॥ इत्यादि नमस्कार करके। अन्नत्थू मसियेणं। (कहिके) १२ वारे लोगस्सको काउसग्ग करै। एकलोगस्स प्रगट कहे। पीछे स्वस्थानक जाके। चैत्यवंदन करै। पचक्खाण पारिके। आंबिल करै। पहले जल पीवे (जव) चैत्यनंदन करिके पीवै। पीछे फेर चैत्यनंदन करिके तिविहार पचक्खाण करै। (ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं)। इस पदको २००० गुणनो करै। श्रीपालजीको चरित्र नवपद महिमा सुणें। पूण पहिर दिन

रहणेंसें (तीसरीवेर) पांच शक्रस्तवे देव वांदे । सामायक लेके दिन गते पडिक्कमणो करे । आरतीके समय, दीप, धूप, कुशम, पूजा करे । (अथवा) पहिले आरती प्रमुख करिके पीछे पडिक्कमणो करे । (सोनेंके समय) इरिया वही पडिक्कमके । चैत्यवंदन करिके । राई संथारा गाथागुणके सोवे । निद्रा न आवे (जहांतक) नवपदका गुण स्मरण करे ॥ इति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ द्वितीय दिवश विधि लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अब इसीतरे दूशरे दिन प्रभाति करणी सब करिके, सिद्धपदका लाल वर्ण है । (इसीसें) गहुंके रोटीको (आंबिल करे (ॐ ह्रीँ णमो सिद्धाणं) इसपदको गुणणो दो हजार करे । सिद्धपदके आठगुण है । सो (८) गुणांको गुरु नमस्कार करावे (सो लिखते हैं) ।

॥ ❋ ॥ सिद्ध पदके (८) गुण ॥ ❋ ॥

१ ॥ अनन्त ज्ञान संयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
२ ॥ अनन्त दर्शन संयुताय श्रीसि० ॥
३ ॥ अव्याबाध गुण संयुताय श्रीसि० ॥
४ ॥ अनन्त चारित्र गुण संयुताय श्रीसि० ॥
५ ॥ अक्षय स्थिति गुण संयुताय श्रीसि० ॥
६ ॥ अरूपी निरंजन गुण संयुताय श्रीसि० ॥
७ ॥ अगुरुलघु गुण संयुताय श्रीसि० ॥
८ ॥ अनन्त वीर्य गुण संयुताय श्रीसि० ॥

॥ ॥ यह आठे नमस्कार करिके । अन्नत्थूससि० आठ लोगस्सको काउसग्ग करे । एक लोगस्स कहिके पारे । पीछे पूर्वोक्त करणी अनुक्रमसें करे ॥ ❋ ॥ इति द्वितीय दिवश विधिः ॥ २ ॥ ❋ ॥ ॥❋॥

॥ ❋ ॥ अथ तृतीय दिवश विधि लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पूर्वोक्त विधिसें प्रभात कर्त्तव्य करे । आचार्यपद पीले वर्ण है (इसीसें) चिणाकी दालका आंबिल करे । (ॐ ह्रीँ णमो आयरियाणं) इस पदको गुणनो दोहजार करे । आचार्य पदके (३६) गुण याद कर के छत्तीस नमस्कार करे (सो लिखते हैं) ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❁ ॥ आचार्य पदके (३६) गुण ॥ ❁ ॥

१ ॥ प्रतिरूप गुणसंयुताय श्री आचार्याय नमः ॥
२ ॥ सूर्यवत्तेजस्वी गुणसंयुताय श्री आचार्याय नमः ॥
३ ॥ युगप्रधानागम संयुताय श्री आचार्याय नमः ॥
४ ॥ मधुरवाक्य गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
५ ॥ गांभीर्य गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
६ ॥ धैर्य गुण संयुताय श्रीआ० ॥
७ ॥ उपदेश गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
८ ॥ अपरिश्रावी गुण संयुताय श्रीआचा० ॥
९ ॥ सौम्य प्रकृति गुण संयुताय श्रीआ०
१० ॥ शील गुण संयुताय श्री० ॥
११ ॥ अविग्रह गुण संयुताय श्री० ॥
१२ ॥ अविकथक गुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१३ ॥ अचपल गुण संयुताथ श्रीआ० ॥
१४ ॥ प्रसंत वदनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१५ ॥ क्षमा गुण संयुताय श्रीआ० ॥
१६ ॥ रूजुगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१७ ॥ मृदु गुण संयुताय श्रीआ०
१८ ॥ सर्व संगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१९ ॥ द्वादश विधि तपगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२० ॥ सप्तदशविध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२१ ॥ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२२ ॥ शौचगुण संयुताय श्रीआ०
२३ ॥ अकिंचन गुण संयुताय श्रीआ०
२४ ॥ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ०
२५ ॥ अनित्य भावना भावकाय श्रीआ०
२६ ॥ अशरण भावना भावकाय श्रीआ०

२७ ॥ संसार स्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ॥
२८ ॥ एकत्व स्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ॥
२९ ॥ अन्यत्व भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३० ॥ अशुचि भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३१ ॥ आश्रव भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३२ ॥ संवर भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३३ ॥ निर्जरा भावना भाव काय श्रीआ० ॥
३४ ॥ लोक स्वरूप भावना भाव काय श्रीआ० ॥
३५ ॥ बोधदुर्लभ भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३६ ॥ धर्म्म दुर्लभ भावना भावकाय श्रीआ० ॥

॥ ❋ ॥ यह छत्तीस नमस्कार करिके। अन्नत्थू ससिएणं (इत्यादि) कहिके। छत्तीस (३६) लोगस्सको काउसग्ग करै। एक लोगस्स ऊंचै स्वरसें कहिके पारै। यथोक्त करणी। अनुक्रमसें करै ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ चतुर्थ दिवश विधि लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (ॐ ह्रीँ णमो उवझायाणं) इस पदको (२) हजार गुणनो करै। हरया मूंगाकी दाल प्रमुखका आंबिल करै। उपाध्याय पदके (२५) गुण यादकरि के नमस्कार करै ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ उपाध्यायके (२५) गुण ॥ ❋ ॥

१ ॥ आचारांग सुत्र पठन गुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ॥
२ ॥ सुयगडांग सुत्र पठन गुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ॥
३ ॥ श्रीठाणांग सुत्र पठन गुण युक्ताय श्रीउ० ॥
४ ॥ श्रीसमवायांग सुत्र पठन गुण युक्ताय० ॥
५ ॥ श्रीभगवती सुत्र पवन गुण युक्ताय० ॥
६ ॥ श्रीज्ञाता सुत्र पठन गुण युक्ताय० ॥
७ ॥ श्रीउपाशकदशा सुत्र पठन गुण युक्ताय० ॥
८ ॥ श्रीअन्तगडदशा सुत्र पठन गुण युक्ताय० ॥
९ ॥ श्रीअणुत्तरोववाई सुत्र पठन गुण युक्ताय० ॥

१० ॥ श्रीप्रश्न व्याकरण सुत्र पठन गुण यु० ॥
११ ॥ श्रीविपाक सुत्र पठन गुण यु० ॥
१२ ॥ उत्पाद पूर्व पठन गुण यु० ॥
१३ ॥ आग्रायणी पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
१४ ॥ वीर्य प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
१५ ॥ अस्ति प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
१६ ॥ ज्ञान प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ता० ॥
१७ ॥ सत्य प्रवाद पूर्व पठन गुण यु० ॥
१८ ॥ आत्म प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
१९ ॥ कर्म्म प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
२० ॥ प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
२१ ॥ विद्या प्रवाद पूर्व पठन गुण युक्ताय० ॥
२२ ॥ अबिंध्य प्रवाद पूर्व पठन गुण यु० ॥
२३ ॥ प्राणायाम प्रवाद पूर्व पठन गुण यु० ॥
२४ ॥ क्रिया विशाल पूर्व पठन गुण यु० ॥
२५ ॥ लोक बिंदुसार पूर्व पठन गुण यु० ॥

॥ ❋ ॥ इस रीतसें पचवीश नमस्कार करै (खमाहोके) अन्नत्थूस० (इत्यादि कहिके) पचवीश लोगस्सका काउस्सग्ग करै। एक लोगस्स कहके पारे। (पीछे) पुर्वोक्त करणी करै। इति चतुर्थ दिवश विधिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ पंचम दिवश विधि लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (ऊँ ह्रीं णमोलोए सव्वसाहूणं) इस पदको (२) हजार गुणनो करै। साधु पद काले वर्ण है (इससें) उम्दका आंबिल करै। सर्व साधु पदके सत्तावीश गुण चिंतवके नमस्कार करै ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ साधु पदके (२७) गुण ॥ ❋ ॥

१ ॥ प्राणातिपात विरमणव्रत युक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
२ ॥ मृषावाद विरमण व्रत यु० श्रीसा० ॥
३ ॥ अदत्तादान विरमण व्रत यु० श्रीसा० ॥

४ ॥ मैथुन विरमण व्रत यु० श्रीसा० ॥
५ ॥ परिग्रह विरमण व्रत यु० श्रीसा० ॥
६ ॥ रात्रिभोजन विरमणव्रत यु० श्रीसा० ॥
७ ॥ पृथ्वीकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
८ ॥ अप्पकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
९ ॥ तेऊकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१० ॥ वाऊकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
११ ॥ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१२ ॥ त्रसकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥
१३ ॥ एकेंद्री जीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१४ ॥ बेइंद्रीजीव रक्षाय श्रीसा० ॥
१५ ॥ तेइंद्री जीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१६ ॥ चौरिंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१७ ॥ पंचेंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥
१८ ॥ लोभ निग्रह काय श्रीसा० ॥
१९ ॥ क्षमा गुण युक्ताय श्रीसा० ॥
२० ॥ शुभ भावना भाव काय श्रीसा० ॥
२१ ॥ प्रतिलेखनादि क्रिया शुध्दकारकाय श्रीसा० ॥
२२ ॥ संयम योग युक्ताय श्रीसा० ॥
२३ ॥ मनोगुप्ति युक्ताय श्रीसा० ॥
२४ ॥ वचनगुप्ति युक्ताय श्रीसा० ॥
२५ ॥ काय गुप्ति युक्ताय श्रीसा० ॥
२६ ॥ सीतादि द्वाविंशति परीशहसहण तत्पराय० ॥
२७ ॥ मरणांत उपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा० ॥

॥ ❀ ॥ इस रीतसें सातवीश नमस्कार करे (खमा होके) अन्नत्थू स० (इत्यादि कहिके) सातवीश लोगस्सका काउसग्ग करे । एक लोगस्स कहके पारे (पीछे) पूर्वोक्त करणी करे । (यह पंच परमेष्टि पदके

सर्व गुण मिलाणेंसें) (१०८) होय (इसीसें) जैनमें माळाके दाणे (१०८) होते है ॥ इति पंचम दिवश विधिः ॥ ❃ ॥ ॥ ❃ ॥

॥ ❃ ॥ अथ षष्टम दिवस विधि लि० ॥ ❃ ॥

॥ ❃ ॥ (ॐ ह्रीं णमो दंसणस्स) इस पदको (२) हजार गुणनो करें। दर्शन पद सपेद वर्ण (इससें) तंदुलका आंबिल करें। सम्यक्तके सतसठि गुण चिंतवके नमस्कार करें॥ ❃ ॥ ॥ ❃ ॥

॥ ❃ ॥ अथ सम्यक्तके सतसठि भेद लि० ॥ ❃ ॥

१ ॥ परमार्थ संस्तवरूप श्री सद्दर्शनाय नमः ॥
२ ॥ परमार्थ ज्ञातृसेवन रूप सद्दर्शनाय नमः ॥
३ ॥ व्यापन्नदर्शन वर्जन रूप सद्दर्शनाय नमः ॥
४ ॥ कुदर्शन वर्जन रूप सद्दर्शनाय नमः ॥
५ ॥ शुश्रूषा रूप सद्दर्शनाय नमः ॥
६ ॥ धर्म राग रूप सद्दर्शनाय नमः ॥
७ ॥ वैयावृत्त रूप सद्दर्शनाय नमः ॥
८ ॥ अर्हद्विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
९ ॥ सिद्ध विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१० ॥ चैत्य विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
११ ॥ श्रुत विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१२ ॥ धर्म विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१३ ॥ साधुवर्ग विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१४ ॥ आचार्य विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१५ ॥ उपाध्याय विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१६ ॥ प्रवचन विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१७ ॥ दर्शन विनयरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
१८ ॥ संसारे जिनसार मिति चिंतनरूप सद्द० ॥
१९ ॥ संसारे जिनमतिसार मिति चिंतनरूपस० ॥
२० ॥ संसारे जिनमतिस्थित साध्वादिसार मिति चिंतनरूप सद्द० ॥

२१ ॥ शंका दूषण रहिताय सद्दर्शनाय नमः ॥
२२ ॥ कांक्षा दूषण रहिताय सद्दर्शनाय नमः ॥
२३ ॥ विचिकित्सा रूप दूषण रहिताय० ॥
२४ ॥ कुदृष्टि प्रशंसा दूषण रहिताय० ॥
२५ ॥ तत्परिचय दूषण रहिताय० ॥
२६ ॥ प्रवचन प्रभावक रूप स० ॥
२७ ॥ धर्मकथा प्रभावक रूप स० ॥
२८ ॥ वादी प्रभावक रूप स० ॥
२९ ॥ नैमित्तक प्रभावकरूप स० ॥
३० ॥ तपस्वी प्रभावकरूप सद्द० ॥
३१ ॥ प्रज्ञप्तयादि विद्या भृत्प्रभावकरूप स० ॥
३२ ॥ चूर्णां जनादि सिद्धप्रभावकरूप स० ॥
३३ ॥ कविप्रभावकरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
३४ ॥ जिनशाशने कौशलता भूषनरूप स० ॥
३५ ॥ प्रभावना भूषणरूप स० ॥
३६ ॥ तीर्थसेवा भूषणरूप स० ॥
३७ ॥ थैर्यता भूषणरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
३८ ॥ जिनशाशने भक्ति भूषणरूप० ॥
३९ ॥ उपशम गुणरूप सद्दर्शनाय नमः ॥
४० ॥ संवेग गुणरूप श्रीस० ॥
४१ ॥ निर्वेद गुणरूप श्री सद्दर्शनाय नमः ॥
४२ ॥ अनुकंपा गुणरूप श्रीस० ॥
४३ ॥ आस्तिका गुणरूप श्रीस० ॥
४४ ॥ परतीर्थकादि वंदन वर्जन रूप श्रीस० ॥
४५ ॥ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जनरूप श्रीस० ॥
४६ ॥ परतीर्थकादि आलाप वर्जनरूप श्रीस० ॥
४७ परतीर्थकादि संलाप वर्जनरूप ॥

४८ परतीर्थकादि अशनादि दानवर्जनरूप श्रीस० ॥
४९ ॥ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषण वर्जनरूप श्रीस० ॥
५० ॥ राजाभियोगाकार युक्त श्रीस० ॥
५१ ॥ गणाभि योगाकार युक्त श्रीस० ॥
५२ ॥ वलाभि योगाकार युक्त श्रीस० ॥
५३ ॥ सुराभि योगाकार युक्त श्रीस० ॥
५४ ॥ कांतार वृत्याकार युक्त श्रीस० ॥
५५ ॥ गुरु निग्रहकार युक्त श्रीस० ॥
५६ ॥ सम्यक्त चारित्र धर्मस्य मूलमिति चिंतनरूप श्री० ॥
५७ ॥ चारित्र धर्म पुरस्य द्वार मिति चिंतन० श्रीस० ॥
५८ ॥ चारित्र धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतन० श्रीस० ॥
५९ ॥ चारित्र धर्मस्याधार मिति चिंतन० श्रीस० ॥
६० ॥ चारित्र धर्मस्य भाजन मिति चिंतन० श्रीस० ॥
६१ ॥ चारित्र धर्मस्य निधि सन्निभ मिति चिं० श्री० ॥
६२ ॥ अस्ति जीवेति श्रद्धानस्थान युक्त श्रीस० ॥
६३ ॥ सचजीव नित्येति श्रद्धान स्थान युक्त श्री० ॥
६४ ॥ सचजीव कर्म्माणि करोतीति श्रद्धान स्थान यु० श्री० ॥
६५ ॥ सचजीव कृत कर्म्माणि वेदयतीति श्रद्धान स्थान यु० ॥
६६ ॥ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धान स्थान युक्त श्री० ॥
६७ ॥ अस्ति पुनर्मोक्षो पायेति श्रद्धान स्थान यु० श्रीस० ॥

॥ ❁ इस रीतसें सतसठि नमस्कार करै। (खमासमणा) अन्नत्थू ससि एणं० (इत्यादि कहिके (६७) लोगस्स (अथवा) ७ लोगस्सको काव सग्ग करै। एक लोगस्स कहके पारे। (पीछे पूर्वोक्त करणी करे ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ सप्तम दिवश विधि लि० ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ (ॐ ह्रीँ णमो नाणस्स) इस पदको (२) हजार गुणनो करै। ज्ञान पद उज्वल वर्ण है (इससें) तंदुलका आंबिल करे। इकावन भेद ग्यान पदके चिंतवके नमस्कार करै॥ ❁ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ज्ञानपदके (५१) भेद लि०

१ ॥ स्पर्शनेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
२ ॥ रसनेंद्री व्यंजनावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥
३ ॥ घ्राणेंद्री व्यंजनावग्रह मति ज्ञानाय नम ः ॥
४ ॥ श्रोत्रेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
५ ॥ स्पर्शनेंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
६ ॥ रसनेंद्री अर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
७ ॥ घ्राणेंद्री अर्थावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥
८ ॥ चक्षुरिंद्री अर्थावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥
९ ॥ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥
१० ॥ मनऽर्थावग्रह मति ज्ञानाय नमः ॥
११ ॥ स्पर्शनेंद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥
१२ ॥ रसनेंद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥
१३ ॥ घ्राणेंद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥
१४ ॥ चक्षुरिंद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥
१५ ॥ श्रोत्रेंद्री ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥
१६ ॥ मनें करी ईहा मति ज्ञानाय नमः ॥
१७ ॥ स्पर्शनेंद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
१८ ॥ रसनेंद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
१९ ॥ घ्राणेंद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
२० ॥ चक्षुरिंद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
२१ ॥ श्रोत्रेंद्री अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
२२ ॥ मन करी अपाय मति ज्ञानाय नमः ॥
२३ ॥ स्पर्शनेंद्री धारणा मति ज्ञानाय नमः ॥
२४ ॥ रसनेंद्री धारणा मति ज्ञानाय नमः ॥
२५ ॥ घ्राणेंद्री धारणा मति ज्ञानाय नमः ॥
२६ ॥ चक्षुरिंद्री धारणा मति० ॥

२७ ॥ श्रोत्रेंद्री धारणा मति० ॥
२८ ॥ मनो धारणा मति ज्ञानायनमः ॥
२९ ॥ अक्षर श्रुत ज्ञानाय नमः ॥
३० ॥ अनक्षर श्रुत ज्ञानाय नमः ॥
३१ ॥ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३२ ॥ असंज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३३ ॥ सम्यक् श्रुतग्यानाय नमः ॥
३४ ॥ मिथ्या श्रुतग्यानाय नमः ॥
३५ ॥ सादि श्रुतग्यानाय नमः ॥
३६ ॥ अनादि श्रुतग्यानाय नमः ॥
३७ ॥ सपर्य वसति श्रुतग्यानाय नमः ॥
३८ ॥ अपर्य वसति श्रुतग्यानाय नमः ॥
३९ ॥ गामिक श्रुतग्यानाय नमः ॥
४० ॥ अगमिक श्रुतग्यानाय नमः ॥
४१ ॥ अंग प्रविष्ट श्रुत० ॥
४२ ॥ अनंग प्रविष्ट श्रुत० ॥
४३ ॥ अणुगामि अवधिग्यानाय नमः ॥
४४ ॥ अणूणगामि अवधिग्यानाय नमः ॥
४५ ॥ वद्धमान अवधि० ॥
४६ ॥ हीयमान अवधि० ॥
४७ ॥ प्रतिपाती अवधि० ॥
४८ ॥ अप्रतिपाती अवधि० ॥
४९ ॥ ऋजुमति मनः पर्यवग्यानाय नमः ॥
५० ॥ विपुलमति मनः पर्यवग्यानाय नमः ॥
५१ ॥ लोका लोक प्रकाशक श्री केवलग्यानाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ इस रीतसें (५१) नमस्कार करै । (खमा होके) अन्नत्थ ऊससिएणं० (इत्यादि कहै) (५१) लोगस्सका काउस्सग्ग करिके । प्रगट

लोगस्स कहै। पीछे सर्व पूर्वोक्त करणी करै। इति सप्तम दिवश विधिः ॥ ७॥

॥ ❋ ॥ अथ अष्टम दिवश विधि लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (ॐ ह्रीँ णमो चारित्तस्स) इस पदको (२) हजार गुणनो करै। चारित्र पदका उज्वल वर्ण हे। (इसीसें) तंडुलका आंबिलकरै। सित्तर भेद चारित्र पदके। चिंतवके नमस्कार करै ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ चारित्र पदके (७०) भेद लि० ॥ ❋ ॥

१ ॥ प्राणाति पात विरमणरूप चारित्राय नमः ॥
२ ॥ मृषावाद विरमणरूप चारित्राय नमः ॥
३ ॥ अदत्तादान विरमण रूप चारित्राय नमः ॥
४ ॥ मैथुन विरमण रूप चारित्राय नमः ॥
५ ॥ परिग्रह विरमण रूप चारित्राय नमः ॥
६ ॥ क्षमा धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥
७ ॥ आर्यव धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥
८ ॥ मृदुता धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥
९ मुक्तधर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥
१० ॥ तपो धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥
११ ॥ संयम धर्म्म रूप चारित्रेभ्यो नमः ॥
१२ ॥ सत्य धर्म्म रूप चारि० ॥
१३ ॥ शौच धर्म्म रूप चारि० ॥
१४ ॥ अकिंचन धर्म्म रूप चारि० ॥
१५ ॥ वंभ्र धर्म्म रूप चारि०
१६ ॥ प्रथवी रक्षासंयम चारित्रेभ्यो नमः ॥
१७ ॥ उदग रक्षा संयम चारि० ॥
१८ ॥ तेऊ रक्षा संयम चारि० ॥
१९ ॥ वाऊ रक्षा संयम चारि० ॥
२० ॥ वनस्पति रक्षा संयम चारि० ॥
२१ ॥ वेइंद्री रक्षा संयम चारि० ॥

२२ ॥ तेइंद्री रक्षा संयम चारि० ॥
२३ ॥ चौरिंद्री रक्षा संयम चारि० ॥
२४ ॥ पंचेन्द्री रक्षा संयम चारि० ॥
२५ ॥ अजीवं रक्षा संयम चारि० ॥
२६ ॥ प्रेक्षा संयम चारि० ॥
२७ ॥ उपेक्षा संयम चारि० ॥
२८ ॥ अतिरक्त वस्त्र भक्तादि परठण त्यागरूप संयम चारि० ॥
२९ ॥ प्रमार्जन रूप संयम चारि० ॥
३० ॥ मनः संयम चारि० ॥
३१ ॥ वाक्संयम चारि० ॥
३२ ॥ काया संयम चारि० ॥
३३ ॥ आचार्य वैयावृत्यरूप संयम चारि० ॥
३४ ॥ उपाध्याय वैयावृत्यरूप संयम चारि० ॥
३५ ॥ तपस्वी वैयावृत्यरूप चारि० ॥
३६ ॥ लघुशिष्यादि वैयावृत्य रूप चारि ॥
३७ ॥ गिलाण साधु वैयावृत्यरूप चारि० ॥
३८ ॥ साधु वैयावृत्य रूप चारि० ॥
३९ ॥ श्रमणो पाशक वैयावृत्यरूप चा० ॥
४० ॥ संघ वैयावृत्यरूप चारि० ॥
४१ ॥ कुल वैयावृत्य रूप चारित्रे० ॥
४२ ॥ गण वैयावृत्य रूप चारि० ॥
४३ ॥ पशुपंडगादि रहित वशति वसण ब्रह्म गुप्त चारि० ॥
४४ ॥ स्त्री हास्यादि विकथा वर्जन ब्रह्म गुप्त चा० ॥
४५ ॥ स्त्री आशन वर्जन ब्रह्म गुप्त चा० ॥
४६ ॥ स्त्री अंगोपांग निरीक्षण वर्जन ब्रह्म०
४७ ॥ कुड्यंतर सहित स्त्री हाव भाव सुणन वर्जन ब्रह्म० ॥
४८ ॥ पूर्व स्त्री संभोग चिंतन वर्जन ब्रह्म० ॥

४९ ॥ अति सरस आहार वर्जन ब्रह्म० ॥
५० ॥ अति आहार करण वर्जन ब्रह्म० ॥
५१ ॥ अंग विभूषा वर्जन ब्रह्म०
५२ ॥ अणशण तपोरूप चारित्रेभ्योनमः ॥
५३ ॥ ऊणोदरी तपो रूप चा० ॥
५४ ॥ वित्ति संखेव तपो रूप चा० ॥
५५ ॥ रस त्याग तपो रूप चा० ॥
५६ ॥ कायकिलेस तपो रूप चा० ॥
५७ ॥ संलेखणा तपो रूप चा० ॥
५८ ॥ प्रायश्चित्त तपो रूप चा० ॥
५९ ॥ विनय तपो रूप चा० ॥
६० ॥ वेयावच्च तपो रूप चा०॥
६१ ॥ सिज्झाय तपो रूप चा० ॥
६२ ॥ ध्यानतपो रूप चारित्रेभ्योनमः ॥
६३ ॥ उपसर्ग तपो रूप चा० ॥
६४ ॥ अनंत ग्यान संयुक्त चा० ॥
६५ ॥ अनंत दर्शन संयुक्त चा० ॥
६६ ॥ अनंत चारित्र संयुक्त चा० ॥
६७ ॥ क्रोध निग्रह करण चा० ॥
६८ ॥ मान निग्रह करण चा० ॥
६९ ॥ माया निग्रह करण चा० ॥
७० ॥ लोभ निग्रह करण चारित्रेभ्यो नमः ॥

॥❀॥ इस रीतसें (७०) नमस्कार करे। (खमा होके)। अन्नत्थू ससि एणं० (इत्यादि कहै) (७०) लोगस्सका काउसग्ग करिके। एक लोगस्स कहे (पीछे) पूर्वोक्त करणी सब करे । इति अष्टम दिवस विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवम दिवश विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ॐ ह्रीं णमो तवस्स) इस पदको (२) हजार गुणनो करे।

तप पदका उज्वल वर्ण है(इसीसें) तंडुलका आंविल करे। पचास भेद तप पदके चिंतवके नमस्कार करे ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ तप पदके (५०) भेद लि० ॥ ❋ ॥

१ ॥ यावत् कथक तपसे नमः ॥
२ ॥ इत्वर तप भेद तपसे नमः ॥
३ ॥ वाह्य ऊणोदरी तपभेद तपसे नमः ॥
४ ॥ अभ्यंतर ऊणोदरी तपभेद तपसे नमः ॥
५ ॥ द्रव्यतप वित्ती संखेप तपभेद तपसे नमः ॥
६ ॥ क्षेत्रतप वित्ती संखेप तपभेद तपसे नमः ॥
७ ॥ कालतप वित्ती संखेप तपभेद तपसे नमः ॥
८ ॥ भाव तप वित्ती संखेप तपभेद तपसे नमः ॥
९ ॥ काय किलेस तपभेद तपसे नमः ॥
१० ॥ रस त्याग तपसे नमः ॥
११ ॥ इंद्री कषाय जोग विषयक संलीणता तपसे नमः ॥
१२ ॥ स्त्री पशु पंमकादि वर्जितस्थान अवस्थित संलीण ता० ॥
१३ ॥ आलोयण प्रायछित्त तपसे नमः ॥
१४ ॥ पमिक्कमण प्रायछित्त तपसे नमः ॥
१५ ॥ मिश्र प्रायछित्त तपसे नमः ॥
१६ ॥ विवेक प्रायछित्त तपसे नमः ॥
१७ ॥ उपसर्ग प्रायछित्त तपसे नमः ॥
१८ ॥ तप प्रायछित्त तपसे नमः ॥
१९ ॥ भेद प्रायछित्त तपसे नमः ॥
२० ॥ मूल प्रायछित्त तपसे नमः ॥
२१ ॥ अणवस्थित प्रायछित्त तपसे नमः ॥
२२ ॥ पारंचिय प्रायछित्त तपसे नमः ॥
२३ ॥ त्याग विनय रूप तपसे नमः ॥
२४ ॥ दर्शन विनय रूप तपसे नमः ॥

२५ ॥ चारित्र विनय रूप तपसे नमः ॥
२६ ॥ गुर्वादिक मनविनय रूप तपसे नमः ॥
२७ ॥ वचन विनयरूप तपसे नमः ॥
२८ ॥ काय विनयरूप तपसे नमः ॥
२९ ॥ उपचारक विनयरूप तपसे नमः ॥
३० ॥ आचार्य वेयावच्च तपसे नमः ॥
३१ ॥ उपाध्याय वेयावच्च तपसे नमः ॥
३२ ॥ साधू वेयावच्च तपसे नमः ॥
३३ ॥ तपस्वी वेयावच्च तपसे नमः ॥
३४ ॥ लघु सिख्यादि वेयावच्च तपसे नमः ॥
३५ ॥ गिलाण साधु वेयावच्च तपसे नमः ॥
३६ ॥ श्रमणो पाशक वेयावच्च तपसे नमः ॥
३७ ॥ संघ वेयावच्च तपसे नमः ॥
३८ ॥ कुल वेयावच्च तपसे नमः ॥
३९ ॥ गण वेयावच्च तपसे नमः ॥
४० ॥ वायणा तपसे नमः ॥
४१ ॥ प्रछनातपसे नमः ॥
४२ ॥ परावर्त्तना तपसे नमः ॥
४३ ॥ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ॥
४४ ॥ धर्म्म कथा तपसे नमः ॥
४५ ॥ आर्त्तध्यान निवृत्त तपसे नमः ॥
४६ ॥ रौद्रध्यान निवृत्त तपसे नमः ॥
४७ ॥ धर्म्म ध्यान चिंतन तपसे नमः ॥
४८ ॥ शुक्लध्यान चिंतन तपसे नमः ॥
४९ ॥ वाह्य उपसर्ग तपसे नमः ॥
५० ॥ अभ्यंतर उपसर्ग तपसे नमः ॥

॥ ॐ ॥ इस रीतसें (५०) नमस्कार करे । (खडा होके) अक्षत्

सासि एणं (इत्यादि कहै) (५०) लोगस्सका काउसग्ग करिके। एक लोगस्स कहै। (पीछे) पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ तपस्या ग्रहण करणेंकों गुरूकेपास जाणेकी विधिः लिख्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रथम शुभ दिन, शुभ वर्ग देखके अछा वस्त्र आभूषण पहरे। लिलाडके तिलक करै ॥ दोव। सरसुं। मस्तकमें धारण करै। हाथके मोली बांधके। अक्षत। सुपारी। श्रीफल। नैवेद्य। यथाशक्ति रोकनाणो लेके। नवकार गुणतोथको। गुरूके पास जावै। द्वादशावर्त्त वांदणा करके। ग्यान पूजा करै। पीछे बहुत प्रमोदवंत होके। गुरुके मुखसें उक्त तप ग्रहण करै (सो) तपस्या ग्रहण करणेकी विधि आगै लिखें गे ॥ इति तपस्याग्रहण करणेंकों पोशाल जाणेकी विधिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ संक्षेप ऊजमणा विधिः लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पंच वर्णके धान्यसें सिद्धचक्रकों मंडन करे। सिद्धचक्रजी के चौ तरफ तीन गढ चूर्णके आकार वनावे। पहिले गढमांहे। अष्टदल कमलके आकार नवपद स्थापन करै। पद २ के वर्ण गुण प्रमाणें। रत्नादिक चढावे। (और) पंचवर्णके फूल। पंचवर्णके धान्य। नवनालेरका गोटा रंगके। जिसपदका जेसा वर्ण होइ (तेसे ही) रंगका गोला चढावै। पंच वर्णी। नव धजा चढावै ॥ दूसरे वलयमें। सोले श्रीफल (अथवा) पूंगी फल चढावे। तीसरे वलयमें (४८) छुहारा चढावे ॥ नव निधानके ठिकाणें (९) नव वडा फल चढावै ॥ दश दिग्पाल। नवग्रहकों। पकान्न प्रमुख चढावै ॥ इत्यादिक विविधसंयुक्त। सिद्धचक्र स्थापना। वर देहरासर आगे करै। (और) जिनमंदिर मांहे। वाह्य मंडपे ५ ॥ ७ हाथ प्रमाणें मंडल रचना करै। विस्तारसें सव विधि गुरुके वचनसें करके। नवपदजीकी पूजा पढायके कलस ढाले। धवल मंगल गीतगान गावे। वाजित्र वजावे। (इसीतरे) महा महोछव। उदार चित्तसें करे। मंगल दीप आरती प्रमुख करै। दूसरे दिन विसर्जन करै ॥ इति संखेप सिद्धचक्र मंडल विधिः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❁ ॥ सिद्धचक्र संखेपउद्यापन विधिः ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अब दशमें दिन गुरूके पास आके उली तपकों पारें । तप पारण की विधि आगे लिखेंगे । (तथा) उद्यापनमें ग्यान भक्तिके कारण । ९ पूठा । ९ विटांगणा । ९ पुस्तक । ९ लेखण । ९ ठवणी । ९ झिल मिल । ९ रुमाल । ९ मोरा । ९ मिजासणा । ९ थापना । ९ चंद्रूआ । ९ पूठिआ । ९ आरती । ९ कलश । ९ जापमाला । ९ मंदर । ९ प्रतिमा । ९ तिलक । ९ मुगट । (इत्यादिक) अनेक नव नव चीज वणावै । शक्ति न होय तो यथाशक्ती रोकनाणो चढावै । देव पदको देवपदमें देवै । गुरु पद को गुरु पदमें देवे । ग्यानपदको ग्यानखाते लगावे । इत्यादिक यथाजोग्य शुभ क्षेत्रे खरच करै ॥ इति सिद्धचक्र संक्षेप उद्यापन विधिः ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ द्वादशमाश सकल पर्वाधिकार लि० ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ तत्र प्रथम चैत्रमाश चतुपर्वाधिकारः ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ चेत्रमास में । चैत्र सुद ७ सें लेके, चैत्र सुद १५ पर्यंत ९ दिन अति उत्तम हे । (सो) अति उत्तमता का कारण कहते है । बारे मासमें तीन अठाही महोछव आता हे । (जिसमें) । चैत्र आसोज का दोय अठाई महोछव सास्वता है । चैत्र सुद ८ (सें) चैत्र सुद पूनम आसोज सुद ८ (सें) आसोज सुद १५ (यह) दोनुं मासके आठ दिनोंमें । निश्चै सेती । च्यारुंनिकाय के देवता इंद्र सब भेला होके । आठमा नंदीसर द्वीप जावे (पुन्याहं २) कहते थके । अष्ट द्रव्यसें पूजन करे । गीत गान नाटकादिकसें अनेक तरेकी भक्ति करे । पीछे नवमें दिन । अपणों २ जन्मकुं सफल मानते हुए । अपनें २ । देवलोक जावे । (इसी माफक) तीसरी अठाई आसाढ चौमासेकी (१४) पीछे । (४२) दिन जानेंसें संवछरी पर्व साचवणें को आठ दिन अठाई महोछव करे । अब यह नव दिनोंमें । चार पर्वसेवन करणे योग्य हे ॥ ❁ ॥ प्रथम नवपद जीकी उली । इसी नव दिनोंमें विधिसंयुक्त करे । (सो) विधिपूर्व लिखी हे । इससें इहां न लिखी । यह सिद्ध चक्रमंडल (और) नवपदजी की उलीका अधिकार (दशमा विद्या प्रवाद पूर्व्वसें) उद्धरण करके । भव्य

जीवोंके अनंत सुखप्राप्तिके कारण । चवदै पूर्वधारक श्री भद्रबाहु स्वामी जीनें प्रशिद्ध किया । (इसीसें) सर्व भव्य जीवोंके यह तप प्रमाण है । यह तपकों अपणी कुयुक्ति लगायके । जो पुरष खंम्न करते है । उस का अनंत संसार । भगवानका वचनसें मालूम होता है (शास्त्रोंमे लिखा है) हे गोतम । अपणी कुटलताईसें (जो) सुत्रको एक हरफ उत्था पण करेगा (सो) अनंत संसार बढावेगा । (सुत्र किसकुं कहते है) सुत्तं गण हर रइयं । तहेव पत्तेय बुद्धि रइयंच । सुय केवलिणा रइयं । अभिन्न दस पुव्विणा रइयं ॥ १ ॥ (अर्थ) गणधरोंका रचाहुवा (तेसेंही) प्रत्तेक बुद्धिका रचा हुआ । श्रुतकेवली चवदै पुर्वधारी का रचा हुवा । संपूर्ण दश पूर्वधारीका रचा हुआ कों । भगवाननें सुत्रकी संज्ञा कही है इसीसें प्रमाण है ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टापदउज्ञीकरण विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इसी चैत्रमासमें सुद (८) सें लेके । पूर्णमासी तक । (केई भव्य जीव) अष्टापदजीकी उज्ञी करते है (जिसमें) पडिक्कमणा । देववंदन । देवपूजा । इत्यादिक सर्व विधि नवपदजीकी उज्ञी तुल्य करै (इतना विशेष है) श्रीअष्टापद तीर्थाय नमः । (इसी पदको) २००० गुणनो (वा) वीस जाप करे । अरिहंत पदके १२ गुणकों नमस्कार करै । आंबिल (वा) एकासणेंको पचक्खाण करै । पीछे पूर्णमाशीके दिन अष्टापदजी पर्वतकी स्थापना करके । विधिसंयुक्त (२४) भगवंतकी पूजा करै (एसें) चैत्र । आसोज । दो उज्ञी करणेंसें । चार वरसमें । एक उज्ञी करनेंसें आठ वरसमें संपूर्ण होय । पीछे भक्तिसंयुक्त ऊजमणो करै (साहमी वछल करै (इत्यादि) विशेष विधि गुरुके मुखसें जानके करै) ॥ ❀ ॥ इति द्वितीय अष्टापद उज्ञी पर्वाधिकारः कथितः ॥

॥ ❀ ॥ श्रीवीरजिन जन्म कल्याणक पर्वाधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अब तीसरो पर्व) चैत्र सुद १३ के दिन । श्रीमहावीरस्वामी को जन्म कल्याण भयो है (इसीसें) सर्व ठिकाणें । धर्मरागी पुरुष गुरूके मुखसें समझके जलयात्रादिक संपूर्ण जन्मकल्याणकको महोत्व

व करै। (एसैंही) रूद्धीवंत श्रावककों, धर्मका उद्योत के खातर, सर्व ज गवंतके कल्याणकके दिन (जो) कल्याणक होय । उसीका महोत्व करना चाहिये। ऐसी शक्ति न होय (तो) शाशनके अधिपति । देवा धिदेव (श्रीमहावीर स्वामीके) च्यवन कल्याणकसें लेके । निर्वाण क ल्याणक पर्यन्त । (जिस दिन) जो कल्याणक होय । उसीका महोत्व पूजन करणा चहिये (इसीसे) धर्मका उद्योत होय। श्रीसंघमें परम आ नंद होय ॥ ❋ ॥ इति शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्वाधिकारः कथितः॥

॥ ❋ ॥ चैत्री पूनम पर्वाधिकारः ॥ ४ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ चैत्री पूनम पर्वका अधिकार (समाचारी शतकानुसारे) लिखते है ॥ ❋ ॥ प्रथम चावलके पुंजसें सेत्रुंजय पर्वतकों स्थापन करै. (तिसपर) पट्टा रखके। श्रीपुंडरीक गणधर (वा) श्रीरूषभ देव स्वामी का बिंबस्थापन करै। अक्षत मोत्यां करके पर्वतकों वधावै । केशर चंदनसें पर्वतकों पूजे । सब श्रीसंघ इकठे होके। पर्वतके चौफेर तीन प्रदक्षणा देवै । पीछे पूजन सरू करै (यथा) ॥ ❋ ॥ दश (१०) वीश (२०) तीश (३०) चत्ता (४०) पन्ना (५०) पुप्फदामेण लहई। चउत्थ छठम अठम दसम दुवालसम फलाइंच ॥ १ ॥ अब प्रथम (१०) प्रकारसें पूजनके अधिकार लिखते है ॥ ❋ ॥ एकाग्रचित्तसें । अष्टमंगलीक आगे रखके शुद्धोदकसें मूलप्रतिमा कों न्हवण करावे । पीछे श्रीसंघ खमा होके। दश नमस्कार उच्चार पूर्वक । १० फूल (तथा) १० फूलमाला चढा के। प्रतिमाके १० तिलक करै। (यथाशक्ति) सुपारी । नालेर (इत्या दि) सर्व बीज उत्कृष्टसें दश २ ॥ जघन्यें नालेर १ सुपारी १० और फ लफूल यथासंभव चढावे। धूप खेवै। कपूरकी आरती करै । पीछे सिद्ध गिरि गुणगर्भित चैत्यवंदन करके। पांचशक्र स्तवे देव वांदे । १० खमा स मण देके (श्रीसिद्धक्षेत्र पुंडरीक गणधराय नमः) इस पदकों १० वेर नम स्कार करै। पीछे (श्रीसेत्रुंजय पुंडरीक आराधनार्थं करेमि काउसग्गं)। अन्नत्थ् ससि० कहके । १० लोगस्सका काउसग्ग करै । (इहां केई आ चार्य कहै) बहुत उत्सव होय । वेला कम रहै । (तव) एक लोगस्स

को कावसग्ग करै । १० जैतीके ठिकाणें १० गाथाको स्तवन कहै। पीछे अनेक प्रकारका वाजित्र वजावै ॥ ❀ ॥ इति प्रथम पूजाविधिः ॥❀॥

॥ ❀ ॥ (अब इसी तरे) वीश । तीश । चालीश । पचाश यह च्यारोंपूजाके भेद जान लेना । (इतनाही विसेष है) दूशरी पूजामें १० के ठिकाणें २० की विधिकरै ॥ तीसरी पूजामें १० के ठिकाणें । ३० की विधि करै ॥ चौथी पूजामें १० के ठिकाणें, सब विधि ४० की करै ॥ पांचमी पूजामें सब विधि ५० की करै ॥ (तथा) सिद्ध क्षेत्र श्रीपुंडरीकाय नमः । इस पदको २००० गुणनो करै । उत्कृष्टसें पांचू पूजामें । जूदी २ धजा चढावै । जघन्यसें पांच पूजा किये पीछे १ धजा चढावै । यह तप । गुरूके मुखसें लेके । जघन्यें १ वरस । (वेसी होसकै तो) ७ वरस । उत्कृष्टसें १२ वरस । विधि संयुक्त तपस्या करै । गुरूके मुखसें उपदेश सुणें । संपूर्ण तप हुवां पीछै । सिद्ध गिरीकी यात्रा करे । ग्यान पूजा करै । गुरु भक्ती करे । साहमी वछल करै । (यह) चैत्रीपूनमके दिन । श्री ऋषभ देव स्वामीके । प्रथम गणधर श्री पुंडरीकजी । पांचकोडि साधू साथ अक्षय सुखकों प्राप्तभये (इसीसें) प्रथम श्रीभरत चक्रवर्त्ति । चैत्री पूनमको आराधन करके । श्री पुंडरीक गणधर की प्रतमा स्थापन करके । (यह) चैत्री पूनम पर्व्व प्रसिद्ध किया ॥ यह चैत्री पूनम आराधन करनेंसें । इस भवमें अनेक सुख संपदा प्राप्त होय । स्त्रियोंके पुत्र पुत्र्यादिक की वांछा पूरण होय । (और) आधि व्याधि सोग संताप सब दूर होय । परभवमें देवादिक ऋद्धिप्राप्त होय । क्षीण कर्मों होनेंसें अक्षय सुखको प्राप्त होय ॥ इति चैत्र माश पर्व्वाधिकारः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चैत्री पूनम स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) पयमणमीरे जिन वरना सुपसाउले । पुंडरगिररे गाइसहुं सुभ भावलें । प्रति सुरागिररे सहस जीभ जो मुख हुवे । किम तेनररे विमला चलना गुण तवे । (उलालो) किम तवे गुणगण एह गिरिना जिहां मुनि सीधा वहु । गिररायना गुणछे अनंता कहे जिणवर सुख सहु । निज जनम सफलो करण कारण केतला गुण भाषियें । तिर

पंच नारक तणी गतिना दुःख दूरे राखियै ॥ १ ॥ (चाल) जिन राजारे पहिलो आदि जिनेसरू। तसु नंदनरे चक्रवर्त्ति भरतेसरू। तसु अंगजरे पुंमरीक गुण गण निलो। शम दम रसरे विनय विवेक गुणे भलो (उल्लालो) गुणभलो अनुक्रम आदि जिनवर पास संयम सिवपुरी। पुंमरीक गणधर प्रथम विहरै सुमति गुपतै संचरी। पण कोमि साथे विमल गिरवर मुगति पदवी पाव ए। सुदि चैत्र पूनिम तेण ए गिरी पुंमरीक कहावए ॥ २ ॥ (चाल) हिव चैत्री रे पूनिम पर्व सुहामणो। सेत्रुं जैरे आराध्यां फल हुवै घणो। मन सुधरे आपणपै थानक रही। आराध्यांरे यात्र पुन्य पामें सही (उल्लालो) ते पुन्य पामें दान तप जप धर्म्म ध्यान मने धरै। बहु भाव भत्तैं त्रिविध पूजा आदि जिनवरनी करै। भावना भावै तेण दिवशै पंच कोमि गुणो फलै। अनुक्रमे ते नर मुगति पामी सिद्ध सुंदरनें मिलै ॥ ३ ॥ (चाल) दश वीशारे तीश चालीश पूजा कही। पन्नासांरे श्रावक निरती सरदही। चउथ छठेरे अठम दसम दुवालसैं। पूजा फलरे अनुक्रम ए मुऊ मन वसैं। (उल्लालो) मनवसैं पूज कपूर धूवै मासखमण फले वली। सामन्न धूवे पक्खनो फल जे करै मननी रली। हिव पूजनी विधि जेम गुरु मुख सुणीअछे परंपरा। ते मोहमाया कपटछंमी सुणो भवीयण सादरा ॥ ४ ॥ ❋ ॥ (ढाल) तंदुल राशि विमल गिर थापी। तसुऊपरि पट्टादिक आपी। प्रतिमा आदि जिणेसर केरी। पुंमरीकनी थापी निवेरी ॥ ५ ॥ सेत्रुंज गिरिनें मन चिंतीजे। करमतणा मल दूर करीजे। मोती तंदुल करीय वधावो। तीन प्रदक्षिण पूजरचावो ॥ ६ ॥ मंगलीक पहिला तिहां आठ। करमबंध दूरे करि आठ। प्रतिमा मूल सनात्र करेवा। जिनवरना गुणहीयडे धरेवा ॥ ७ ॥ कुभाथई नवकार गुणंता। दश दश जेती तिलक करंता। माला पुष्प पुंगीफल ढोवो। मेरु भरण वर धूप उखेवो ॥ ❋ ॥ (ढाल) शक्र स्तव पांचे देववांदै। जवन्यना वंदण पाप छेदै। दशे नमस्कार करंत जेती। राखी करी दृष्टि जिनेंद्र सेती ॥ ९ ॥ आराधिवा कीजे काउसग्ग। जिणें कीयै भाजे कर्म्म वग्ग। लोगस्स उज्जोय दसे वखाणुं। वेला प्रमाणें अहिं पगआणुं ॥ १० ॥ इणें प्रकारे धुर

पूज एह । इसी परे वीजी च्यार तेह । दशां तणी वृद्धि तिहां गिणीजें । एक चित्त सूधे मुज्झ पुन्य कीजें ॥ ११ ॥ धजा तणो रोप तिहां करीजें । एकेक पूठे अथवा गिणीजें । सहुत्तरे आराति मंगलेवो । पछे प्रभु आगलि ते करेवो ॥ १२ ॥ (कलश) इम करिय पूजा यथायोगें संघपूजा आदरो । साहमी वच्छल करो भविका भव समुद्र लीलावरो । संपदा सोहग तेह मानव ऋद्धि वृद्धि वहुलहे । श्री अमरमाणिक सीस सुपरें साधु कीरति इम कहे ॥ १३ ॥ इति श्रीचैत्री पूनिम स्तवनम् ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ नंदीसर द्वीप स्तवन लि० ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ नंदीसर वावन्न जिनाले । शाश्वता चौमुखसोहेरे । ऋखभानन चंद्रानन वारषेण । वरधमान मन मोहेरे (नं०) ॥ १ ॥ आठमो द्वीप नंदीसर अदभुत । वलयाकार विराजेरे । तेहनें मध्य चिहुं दिश शोभत । अंजन गिरवरछाजेरे ॥ २ ॥ (नं०) जोयण सहस चउरासी ऊंचा । ऊंचपणें अभिरामारे । मूलें पृथुल सहसदश जोयण । उवरि सहस इक स्यामारे ॥ ३ ॥ (नं०) ते ऊपर प्राशाद प्रभुना । अति उत्तंग उदारारे । साधूजंघा विद्याचारण । वांदे विविध प्रकारारे ॥ ४ ॥ (नं०) चैत्ये चैत्ये एकसो चोवीस । विंब संख्या सविदाखीरे । ध्यावो सेवो भविजन भक्तें । सुध आगम करि साखीरे ॥ ५ ॥ (नं०) ऊंचपणें सहु जोयण वहुत्तर । सो जोयण आयामारे । पिहुलपणें पंचास जोयणना । प्रभु प्राशाद सुठामारे ॥ ६ ॥ (नं०) धनुष पांचसें आयत प्रभुनी । विविध रतनमय कायारे । जिन कल्याणक उछव करवा । सुरपति भगतें आयारे ॥ ७ ॥ (नं०) अंजन अंजन चिहुं गिरी उवरे । चोमुख वावि विशालारे । वावि वावि विच इक इक पर्वत । राजतरंग रसालारे ॥ ८ ॥ (नं०) चौसठि सहस जोयण उत्तंगे । दश सहस सम पिहुलारे । चिहुंदिशि सोभ सोहे दधिमुख गिर । तिहां प्राशाद सुविमलारे ॥ ९ ॥ (नं०) वावि वाविनें अंतर विदिशें । रतिकर पर्वत रूडारे । दोय दोय संख्या ए जगदीसे । कह्या नही एकूडारे ॥ १० ॥ (नं०) जोयणसहस मान दश ऊंचा । दश दश सहस विस्तारारे । झल्लरि सम संठाण जगद्गुरु । निश्चय ए निरधारारे ॥ ११ ॥ (नं०) ते ऊपर प्राशा

द सतोरण। अंजनगिरि परि माणें रे। जिन प्रतिमानी संख्या तेहिज। श्रीजिनराज वखाणें रे ॥ १२ ॥ (नं०) इम प्राशाद प्रचूना बावन। नंदीसर वरद्वीपे रे। द्रव्य भाव विध पूज करंता। मोह महाभड जीपे रे ॥ १३ ॥ (नं०) प्रवचन सार उद्धार प्रकरणें। जीवाभिगमें जाणोरे। इम अधिकार छे ग्रंथ अनेकै। इहां संका मत आणोरे ॥ १४ ॥ (नं०) जिम सुरपति विरचे तिहां पूजा। ते अनुभव इहां ल्यावोरे। ध्यावो जिम पावो परमातम। जैनचंद्र गुणगावोरे ॥ १४ ॥ (नं०) इति नंदीसर द्वीप स्तवनम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नंदीश्वर तपस्याकरण विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शुभदिन शुभ घमी गुरूके पास नंदीश्वर तप ग्रहण करै। नंदीश्वर द्वीपके चारूं दिश तरफ (५२) चैत्यकी अपेक्षायें। अमावसके अमावस (५२) उपवास करै। जिस दिन जो माहाराजके नामका उपवास होय। उसी नामको २००० गुणनो करै (सो लिखते है) ॥ ❀ ॥

॥१॥ऋषभाननजी सर्वज्ञाय नमः॥❀॥२॥ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः॥❀॥
॥ ३ ॥ श्रीवारषेणजी सर्व० ॥ ४ ॥ ❀ ॥ श्रीवर्द्धमानजी सर्व० ॥ ❀ ॥

(यह) च्यार नामकों (४) वेर सुलटा (४) वेर उलटा गिणें। अनुक्रमें (१३) उपवास करनेंसें एक उली होय ॥ (४) वार उली करणेंसें, यह तप संपूर्ण होय। पीछे शक्ति माफक ऊजमणो करै। नंदीसर द्वीप को मंमल वणावे। पूजा करावे। (इत्यादि महामहोछव करके)। ग्यान पूजा करे। साहमी वछल करै। मंमल पूजाकी विसेष विधि गुरूके वचनसें जाणके करै। इति नंदीसर तपस्याधिकारः ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वैशाख माशमध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वैशाखके महिनेमें (मिती) वैशाख सुद ३ हे (सो) अक्षय तृतीया नामसें पर्व प्रसिद्ध हे (इस दिन) श्रीऋषभ देव स्वामीके। चारित्र ग्रहण कियां पीछे। बारे माशीका पारणा। सोमयश राजाके पुत्र। श्रीश्रेयांस कुमरजीके हाथसें। इक्षुरस सेती हुवा (उसी समय) उत्तम दानके प्रभावसें। सर्व देवगण प्रमोदवंत होके। सुगंध जलकी वर्षा ॥ १ ॥ सुगंध पुष्पोंकी वर्षा ॥ २ ॥ (१२॥) कोम सोनइयोंकी वर्षा ॥ ३ ॥ आकास

सें अहो दानं २ ऐसें उदघोषणा ॥ ४ ॥ देव दुंदुभि वाजित्र ॥ ५ ॥ ऐसे पांच द्रव्य प्रगट किये । श्रेयांस कुमरका जश तीन भुवनमें विस्तरण हुआ । (इसी दिनसें) आहार देणेंकी विधि सबकों मालुम हुई । इस दान के प्रभावसें श्रेयांस कुमर अक्षय सुखकों प्राप्त हुवा । (इसीसें) अक्षय तृतीया पर्व्व श्रीसंघमें परम मंगलकारी है । इस पर्व्वके आणेंसें । अछे वस्त्र आभूषण पहरके । भगवंतके मंदर जावे । अष्ट द्रव्यसें पूजन करे । स्नात्र । अष्ट प्रकारी । सत्तरभेदी (इत्यादिक) पूजा करावे ॥ पीछे गुरूके मुखसें एकासणादिक पच्चक्खाण करके । पर्व्वकी महमा सुणें । अपनें घरमें मंगलीक भोजन तैयार होनेंसें । गुरूकों वहरायके । सर्व कुटंब इकठे होके जीमें । और (जो) मंगल कार्य करणा होय (सो) इसी दिन करे । (इस माफक) इस पर्व्वकों जो भव्यजीव सेवन करेंगे । उसीके तप तेज सदा वढते रहेंगे । अलं विस्तरेण ॥ इति अक्षय तीज पर्वाधिकारः

॥ ❀ ॥ अथ तृतीय ज्येष्ठमाशा पर्वाधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ज्येष्ट कृष्ण त्रयोदशी (१३) के दिन (शोलमा) श्रीशांतिनाथ स्वामीका निर्व्वाण कल्याणक है । (इसीसें) यह दिन बडा उत्तम है । सर्व ठिकाणें श्रीसंघ इकठे होके । । विधि संयुक्त शांति पूजाका महोछव करावे । शांति जल लेजाके । अपनें २ घरमें छांटे । इस शांति पूजाके करानेंसें । मारी हेजा । (इत्यादि समुदाइक रोग) कभी श्री संघमें व्याप्त न होय (अथवा) कोई श्रावकके घरमें रोग चालो रहतो होय (वा) बहुत चिंता रहती होय (तो) इसी दिन शांति पूजाका उछव कराणा चाहिये । (इसीसें) आधि व्याधि ग्रहादिककी पीडा सर्व दूर होय । अनेक मंगल श्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्टवद (१३) पर्वाधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आषाढ माश मध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आषाढ सुद १४ के दिन । चौमाशी १४ इस नामसें पर्व्व प्रसिद्ध है (सो) लिखते है ॥ (यथा) सामायका वस्यकपोषधानि । देवार्च्चन स्नात्र विलेपनानि । ब्रह्मक्रिया दान तपो मुखानि । भव्या श्चतुर्मासक मंडनानि ॥ १ ॥ (अर्थ) भोभव्या एतानि सामायकादि धर्म कृत्यानि । चतुर्मास

कस्य मंडनानि अलंकार न्नूतानि विद्यंते ॥ अहो नव्य प्राणी जीवो (यह) सामायक कों आदलेके (जो) धर्म कृत्यहै (सो) चोमासै के मंम्नहै। अलंकार समानहै । (यथा शक्ति) यह चौमासे पर्वमें । केइ जीव । सामायक । पम्किमणा । पोशा । करै । केइ नगवानके मंदरमें नानाप्रकारकी पूजा करै । केइ शीलव्रत पालै । केइ सुपात्र दान देवै । केइ नाना प्रकारकी तपस्या करै जैसो धर्मकाम अपणी शक्तिसें वण आवै (सो करै) इसमें विरोध नहीं । कोई प्रकारसें धर्मका नद्योत करणा चाहियै (जिससें) सर्व श्रीसंघमें कल्याण माला प्रगट होय । और चौमाशी (१४) के दिन । सर्व मंदर दरशन करनेकों जावै । पांच शक्र स्तव देव वांदै । पीछे गुरूके पास जाके । चौमासे पर्वका व्याख्यान सुणें। सर्व चीजका प्रमाण करके । नपरांत सोगन लेवै । सांऊकों चोमाशी पम्किमणो करै । (इसी माफक) काती चौमाशै । फागुण चौमाशैकों पिण सेवन करै ॥ इति चतुर्माश पर्वाधिकारः कथितः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रावण माश मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावण माशमें कई नव्य जीव । मम्माई आदिक खेत्रोंमें । नाना प्रकारकी पूजा नाटकादिउत्सव, अंगी रचना करायके चौमाशै पर्वका नद्योत करते हैं । (इसी माफक) सर्वठिकाणें नाना प्रकारकी पूजा कराणी चहियै । और वहुत ठिकाणें की श्रावकण्यां इस महिनें में कई तरैकीतपस्या करै है । (जिसमें) नत्तम फलकी देनें वाली कई तपस्या (विधि प्रपाक ग्रंथसें) नध्धरण करके । संखेपविधिसें इहां लिखतेहैं ॥

॥ ❀ ॥ अथ दुटकर तपस्या विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुरिमढ्ढ १ । एकासण १ । नीवी १ । आंविल १ । नपवास १ । (यह १ लत्ती) इसी तरै पांच लत्ती करै । तपो दिन २५ । ऊजमणें (२५) । लाडू चढावै ॥ ❀ ॥ इति इंद्रि जय तप ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एकासण १ । नीवी १ । आंविल १ । नपवास १ । (इसी तरै) लत्ती च्यार करै । तपो दिन १६ । ऊज मणें १६ लाडू चढावै ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इति कषाय जयतपः २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नीवी १ । आंबिल १ । उपवास १ । (इसी तरे) उली ३ । करै। तपोदिन ९ । ऊजमणें नव । लाडू चढावे ॥❀॥ इति योगशुद्धि तपः ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ इकसार उपवास ३ । (अथवा) एकांतर उपवास ३ । ऊजमणें ज्ञान पूजा करै ॥ ❀ ॥ इति नाणतपः ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इकसार उपवास ३ । (अथवा) एकांतर उपवास ३ । ऊजमणें स्नात्र पूजा करावै ॥ ❀ ॥ इति दर्शन तपः ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इकसार उपवास ३ (अथवा) एकांतर उपवास (३) ऊजमणइ । गोतम स्वामीकी पूजा करै ॥ इति चारित्र तप ॥ ६ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अठम १ । छठ १ । उपवास १ । एकाशण १ । एकल ठाणो १ । दत्ति १ । नीवी १ । आंबिल १ । (यह एक उली) इसी तरै, उली आठ करै। तपोदिन (८८) ऊजमणें रूपानो वृक्ष । सोनानो कुहाडो करायके । ग्यान खाते देवे ॥ इति आठ कर्म सूडण तपः ॥ ७ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ भाद्रवा वदि चउथसें लेके । पनरै दिन पर्यंत (इकसार) एकाशणा (अथवा) बिआशणा करै । घर देहरासर आगे (अथवा) अच्छे ठिकाणें कलश स्थापन करै । एक मुठी चावल सदा कलशमें भरै । संवछरीके दिन कलश ऊपर नालेर रखके । महोत्सव पूर्बक मंदर लाके देव आगे रक्खे । स्नात्र पूजा करै । ज्ञान पूजा करै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति अक्षयनिधि तपः ॥ ८ ॥❀॥ श्रीवासु पूज्य पूजा पूर्बक । रोहणी नक्षत्र दिने । उपवास । (वा) नीवी । आंबिल । सात वरशः सात माश करै (श्रीवासु पुज्य स्वामी सर्बज्ञाय नमः) इस पदको २००० गुणनो करै । गुरूके पास स्तवन सुणें (सो) स्तवन आगे लिखेंगे ॥ ऊजमणें ज्ञानके उपगरणसें। ज्ञान भक्ति गुरुभक्ति करै ॥ इति रोहिणी तपः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुदपक्षके पांचमके दिन । श्रीनेमि । अंबिका, पूजा पूर्बक । पांच एकाशणादिक तप करै। अंबिका देवीकों वेस चढावे ॥ ❀ ॥

इति अंबिका तपः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुद पक्षमें इग्यारसके दिन । सिद्धांत पूजापूर्बक । मोन संयुक्त उपवास करै ॥ इति श्रुत देवता तपः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

कस्य मंडनानि अलंकार नूतानि विद्यंते ॥ अहो नव्य प्राणी जीवो (यह) सामायक कों आदलेके (जो) धर्म कृत्यहै (सो) चोमासे के मंन्नहै। अलंकार समानहै । (यथा शक्ति) यह चौमासे पर्व्वमें । केइ जीव । सामायक । पम्किमणा । पोशा । करै । केइ नगवानके मंदरमें नानाप्रकार की पूजा करै । केइ शीलव्रत पाले । केइ सुपात्र दान देवै । केइ नाना प्रकारकी तपस्या करै जैसो धर्मकाम अपणी शक्तिसें बण आवै (सो करै) इसमें विरोध नहीं । कोई प्रकारसें धर्मका नद्योत करणा चाहियै (जिससें) सर्व श्रीसंघमें कल्याण माला प्रगट होय । और चौमाशी (१४) के दिन । सर्व मंदर दरशन करनेकों जावै । पांच शक्र स्तव देव वांदै । पीछे गुरूके पास जाके । चौमासे पर्वका व्याख्यान सुणें। सर्व चीजका प्रमाण करके । नपरांत सोगन लेवै। सांझकों चौमाशी पम्किमणो करै। (इसी माफक) काती चौमाशै । फागुण चौमाशैकों पिण सेवन करै॥ इति चतुर्मांश पर्व्वाधिकारः कथितः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्रावण माश मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्रावण माशमें कई नव्य जीव । मम्माई आदिक खेत्रोमें । नाना प्रकारकी पूजा नाटकादि नछव, अंगी रचना करायके चौमाशै पर्व्व-का नद्योत करते हैं। (इसी माफक) सर्व्वठिकाणें नाना प्रकारकी पूजा कराणी चहियै । और बहुत ठिकाणों की श्रावकएयां इस महिनें में कई तरेकीतपस्या करै हे । (जिसमें) नत्तम फलकी दैनें वाली कई तपस्या (विधि प्रपाक ग्रंथसें) नद्धरण करके। संखेपविधिसें इहां लिखतेहैं ॥

॥ ❋ ॥ अथ फुटकर तपस्या विधि लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुरिमड्ढ १ । एकासण १ । नीवी १ । आंबिल १। नपवास १। (यह १ नली) इसी तरे पांच नली करै । तपो दिन २५। फुलमणें (२५)। लाडू चढावै ॥ ❋ ॥ इति इंद्रि जय तप ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ एकासण १ । नीवी १ । आंबिल १ । नपवास १ । (इसी तरे) नली च्यार करै। तपो दिन १६ । फुल मणें १६ लाडू चढावै ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ इति कषाय जयतपः २ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नीवी १। आंबिल १। उपवास १। (इसी तरें)उली ३। करें। तपोदिन ९। ऊजमणें नव। लाडू चढावें ॥❋॥ इति योगशुद्धि तपः ॥ ३॥

॥ ❋ ॥ इकसार उपवास ३। (अथवा) एकांतर उपवास ३। ऊजमणें ज्ञान पूजा करें ॥ ❋ ॥ इति नाणतपः ॥ ४॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ इकसार उपवास ३। (अथवा) एकांतर उपवास ३। ऊजमणें स्नात्र पूजा करावे ॥ ❋ ॥ इति दर्शन तपः ॥ ५॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ इकसार उपवास ३ (अथवा) एकांतर उपवास (३) ऊजमणइ। गोतम स्वामीकी पूजा करें ॥ इति चारित्र तप ॥ ६ ॥ ❋ ॥

॥❋॥ अठम १। छठ १। उपवास १। एकाशण १। एकल ठाणो १। दत्ति १। नीवी १। आंबिल १। (यह एक उली) इसी तरे, उली आठ करें। तपोदिन (८८) ऊजमणें रूपानो वृक्ष। सोनानो कुहाडो करायके। ग्यान खाते देवे ॥ इति आठ कर्म सूदण तपः ॥ ७ ॥ ॥❋॥

॥ ❋ ॥ भाद्रवा वदि चउथसें लेके। पनरे दिन पर्यंत (इकसार) एकाशणा (अथवा) विआशणा करें। घर देहरासर आगे (अथवा) अच्छे ठिकाणें कलश स्थापन करें। एक मुठी चावल सदा कलशमें भरें। संवछरीके दिन कलश ऊपर नालेर रखके। महोतसव पूर्वक मंदर लाके देव आगे रक्खे। स्नात्र पूजा करें। ज्ञान पूजा करें ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

इति अक्षयनिधि तपः ॥ ८ ॥❋॥ श्रीवासु पूज्य पूजा पूर्वक। रोहणी नक्षत्र दिने। उपवास। (वा) नीवी। आंबिल। सात वरश- सात माश करें (श्रीवासु पुज्य स्वामी सर्वज्ञाय नमः) इस पदको २००० गुणनो करें। गुरूके पास स्तवन सुणें (सो) स्तवन आगे लिखेंगे ॥ ऊजमणें ज्ञानके उपगरणसें। ज्ञान भक्ति गुरुभक्ति करें ॥ इति रोहिणी तपः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सुदपक्षके पांचमके दिन। श्रीनेमि। अंबिका. पूजा पूर्वक। पांच एकाशणादिक तप करें। अंबिका देवीको वेस चढावें ॥ ❋ ॥

इति अंबिका तपः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सुद पक्षमें इग्यारसके दिन। सिद्धांत पूजापूर्वक। मोन संयुक्त उपवास करें ॥ इति श्रुत देवता तपः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

१० । पूनमसें सरू करै । पारणें साधू पडिलाभै । ग्यान पूजा करै ॥ ❀ ॥
इति दारिद्र हरण तपः ॥ २८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एकेंद्रियें उपवास १ । वेंद्रीयें छठ १ । तेंद्रीयें अठम १ । चौरिंद्रीयें दशम १ । पंचेंद्रीयें द्वादशम १ । छकायें चतुर्दशम १ । तप करै । उजमणें, सुंखडीसें, स्त्री ६ जीमावे ॥ ❀ ॥ इति छकाय आलोयण तपः ॥ २९॥
॥ ❀ ॥ नीवी (आठ) निरंतर करै । इति सासू सुखतपः ॥ ३० ॥ ❀ ॥
॥ ❀ ॥ आंबिल (आठ) निरंतर करै ॥ इति सुसरसुख तपः ॥ ३१ ॥ ❀ ॥
॥ ❀ ॥ छठ (पांच) करै ॥ इति पुत्री सुख तपः ॥ ३२ ॥ ॥ ❀ ॥
॥ ❀ ॥ अठम (पांच) करै इति वेटा सुख तपः ॥ ३३ ॥ ॥ ❀ ॥
॥ ❀ ॥ उपवास (आठ) एकांतरकरै ॥ इति भर्त्तार सुख तपः ॥ ३४ ॥❀॥
॥ ❀ ॥ निवी (पांच) निरंतर करै ॥ इति जेठ सुख तपः ॥ ३५ ॥ ❀ ॥
॥ ❀ ॥ एकाशणा (पांच) निरंतर करै ॥ इतिदेवर सुखतपः ॥ ३६ ॥ ❀॥
छठ ५ । एकाशणा पांच । एकांतर करै ॥ इति पिता माता सुख तपः ॥३७॥

॥ ❀ ॥ इत्यादिक कई तरेकी तपस्या वहुत ठिकाणेंकी श्राविका करै है । (इसीसें) सर्व श्राविकाके उपगारार्थ शास्त्रोंसें उध्धरण करके । संखेप विधिसें इहां लिखी है । वेसी शक्ति होय (तो) पूजा । साहमी वछल तीर्थ यात्रा । (इत्यादिक) सातुं शुभखेत्रोंमें । अपणा धन खरच करै । धर्मका उद्योत करै । इस तपस्या के प्रभावसें । (इस भवमें) संसार संबंधी दुखदारिद्र दूर होके । सर्व कुटंबमें सुख संपदा होय । (परभवमें) देवादिक रूधी प्राप्त होय । (किंबहुना) इति छुटकर तपस्या विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ भाद्रवमाशमध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भाद्रवमहिनेंमें । मिती भाद्रवासुद ४ (तथा) कई मतके अपेक्षायें ५ तिथकों । संवछरी नामसें पर्व्वप्रशिध है । (प्रथम इस संवछरी पर्वकी महमा कहते है) (जेसें) जगतमें अनेक मंत्र है । पर नवकार मंत्र समान कोइ मंत्र नही (१) तीर्थोंमें शत्रुंजय समान कोईतीर्थ नही (२) पांच दानमें । अभयदान । सुपात्रदान । समान कोई दान नही (३) गुणमांहें विनयगुण (४) । व्रतमांहें ब्रह्मव्रत (५) । नियम

मांहें संतोष नियम (६)। तपमांहें उपशम तप (७) दर्शनमांहें जैन दर्शन (८) । जलमांहें गंगाजल (९) । अलंकारमांहें चूडामणि (१०) ज्योतिषी मांहें चंद्रमा (११)। तेजवंत मांहें सूर्य (१२) । तुरंग मांहें पंच वल्लभ किशोर (१३) नृत्यकलावंत मांहें मोर (१४) गज मांहें ऐरावण (१५) दैत्यमांहें रावण (१६)। वनमांहें नन्दनवन (१७)। काष्ट मांहें चंदन (१८) साहसीक मांहें विक्रमादित्य (१९) । न्यायवंत मांहें श्रीराम (२०) रूपवंत मांहें काम (२१) । सती मांहें शीता (२२) । सुगंध मांहें कस्तूरी (२३) वस्तु मांहें तेजनतूरी (२४) । वाजित्रमांहें भंभा (२५) स्त्रीमांहें रंभा (२६) धातुमांहें स्वर्ण (२७) दातारमांहें कर्ण (२८)। गौ मांहें कामधेनु (२९)। वृक्ष मांहें कल्पवृक्ष (३०)। जलमांहें अमृत (३१) स्नेहमांहें घृत (३२)। (इत्यादिक) सर्व वस्तू में एक एक चीज उत्तम होती है। (इसी माफक) सर्व पर्वोंमे उत्कृष्ट राजाधिराज· श्री संवत्सरी पर्व (दूशरो नाम) श्रीपर्यूषणा पर्वकों । भगवंत श्री महावीर स्वामीजीनें उत्तम वर्णन कियो ॥ ॐ ॥ (अब श्री पर्यूषण पर्व आनेसें) (प्रथम) श्रीसाधुके करनें योग्य धर्मकृत्य कहते है ॥ ॐ ॥ संवत्सरी प्रतिक्रमण करे ॥ १ ॥ लोचकरावै २ तेलेका तप करे ३ ॥ सर्व मंदरोंमें भगवंतकी भाव स्तवना करे ४। सर्व श्रीसंघसें खमावै ५। यह पंचकारणके वास्ते, श्रीतीर्थंकर गणधरोंनें श्रीपर्यूषणा पर्व्व प्रवर्त्तन किया ॥

॥ ॐ ॥ अवश्यश्रावक संवत्सरी पर्व आराधन करनेंकों आठदिन अठाही महोछव करे (सो) कल्पलता शास्त्रसें लिखतेंहें ॥ ॐ ॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी भक्ति करे । कल्पसूत्रजीकों विधि संयुक्त अपनें घर लेजावे। रात्री जागरण करावे। (प्रभात समय) नगरके सर्व श्रीसंघकों निमंत्रण करे। यथायोग्य सत्कार सन्मान करे। पीछे पुस्तक ग्राहक पुरुष सर्वसें उत्तम वस्त्र आभूषण पहरके। मुगट. छत्र· चामर, (इत्यादिक महन) साख्यात इंद्र महाराजको रूप बनाके· हाथी ऊपर (अथवा) पालखी ऊपर बैठे । अष्टमंगलीक रचित थालमें पुस्तक धरके । अपनें दोनुं हाथमें थाल रखे। दोनुं तरफ पुरुष अच्छा वस्त्र आभूषण पहरके। चमर ढाले।

अनेक प्रकारके बाजित्र बाजते हुये। दानें देते हुये, नाना प्रकारके श्रुत ज्ञानके गुण वर्णन करते हुये। नगरमें प्रदक्षिणा तुल्य फिरके। गुरूके पास आवे। गुरू पिण खमा होके। विनय संयुक्त पुस्तककों नमस्कार करके आगे रखे। श्री संघके आज्ञासें वाचना पूर्वक वाचे ॥ १ ॥ नगरमें सब ठिकाणें अमारि पम्हो फेरावे। दूशरो अपनें बचनसें (तथा) द्रव्यसें। कसाई धोबी। जम्भुंजा (इत्यादिक) सर्वके आरंज्ञ गेमावे ॥ २ ॥ सुपात्र दान देवे ॥ ३ ॥ विदाम, सुपारी, नालेरादिककी, परज्ञावना करे ॥ ४ ॥ श्रीवीतराग देवकी उदार ज्ञक्तिसें पूजा करे। चौदसके दिन। संबछरीके दिन चतुर्विध श्रीसंघ इकठे होके। सर्व मंदर दरशन करनें को जावे ॥ ५ ॥ सचित्तका परिहार करे ॥ ६ ॥ ब्रह्मचर्य पाले ॥ ७ ॥ चनुत्थ। छठ ॥ अठमादिक। तप करे ॥ ८ ॥ अपनें २ वित्तके अनुसारे, जन्म कल्याणक को महोछव करे ॥ ९ ॥ अठ पहरी पोशो करे ॥ १० ॥ संबछरी प्रतिक्रमण करे ॥ ११ ॥ निशल्य होके सर्व श्रीसंघसें खमावे ॥ १२ ॥ पारणेंके दिन पोशह पम्किमणें वाले साधर्मी ज्ञाइयोंकी ज्ञक्ति करे ॥ १३ ॥ गुरू ज्ञक्ति करे ॥ १४ ॥ संबछरी दान देवे। साहमी बछल करे ॥ १५ ॥ इस विधि संयुक्त (यह) कल्पसुत्र एकचित्त सुणनेंसें, आराधन करनेंसें, आठ ज्ञवमें सिद्धि स्थानककों प्राप्त होय। (और) केई उत्तम जीव। अत्यंत शुज्ञ ज्ञाव रखके। अठमादिक तप करिके युक्त, कल्प सुत्रजीकों बाचते है। और सुणनें वाले, प्रमाद, निद्रा, विकथा, गेम्के। अठमादिक तप करके युक्त। इकचित्तसें शुद्ध ज्ञाव रखके। इकवीश वेर सुणते है (सो) पुरष देवगतिकों प्राप्त होके। तीशरे ज्ञव सिद्धि स्थानकों प्राप्त होते है ॥ ❀ ॥ इस पर्यूषणा पर्वके महोछव (जो) ज्ञव्यजीव करते है। (सो) धन्य है। धर्मके प्रज्ञावीक है। अपणें लक्ष्मीसें धर्मका उद्योत करे है। उसी पुरषांकों नमस्कार है ॥ ❀ ॥ (अब कल्प सुत्रजीका महात्म कहते है) ॥ ❀ ॥ यह कल्पसुत्र, नवमा पूर्वसें उद्धरण किया हुवा। दशाश्रुत स्कंधका आठमा अध्ययन है। सर्व श्रीसंघके मंगलके कारण। श्रुतकेवली। श्रीज्ञद्रबाहु स्वामी प्रसिद्ध किया है। यह कल्पसुत्रके अनंते विषय है। (जेसें) सर्व

नदीकी वालूके जितने कण होय (तिससें पिण) एक सूत्रके अनंते विष य हे। इस कल्पसूत्रके महात्म (जो) देवाचार्य । हजार जीभ करके क हे (तो पिण) महात्मका एक अंश कह सकता नहीं। ऐसा इस पर्व का महात्म जानके (जो) भव्यजीव शुद्ध भावसें सेवन करेंगे (सो) अनेक तरेसें; रुधी; वृधी, सुख; सोभाग्यकों, प्राप्त होंगे (और) परभवमें देवादिक रुधी पायके मुक्तिसुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति पर्यूषण पर्वाधिकारः ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आश्विनमाश मध्ये पर्वाधिकार लि० ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आशोज महिनें मं। मिती आशोज सुद ७ सें लेके। आशोज सुद १५ तांइं। नवपद ओली (तथा) अष्टा पद ओली विधि संयुक्त करे। सो सर्व विधि पूर्व लिखी हे। उसी माफक करे ॥ ❀ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कार्तिक माश मध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कार्त्तिक महिनें में। मिती कार्त्तिकवद अमावस हे (सो) दीप मालिका नामसें पर्व प्रशिद्ध हे। (यह) दीपमालिका पर्व कबसें प्रशिद्ध हुआ (सो लिखते हे) चोवीशमा तीर्थंकर । श्रीमहावीर स्वामी। समस्त साधु, साध्वी, साथ विचरते थके । अंतकी चोमाशी पावापुरी आयके रहे (उहां) आगामी कालके सर्व भाव । भव्यजीवोंके आगे प्ररूपण किये। फेर। आपणा अंतसमय जानके । हस्तिपाल राजाके शुल्कशालामें आयके रहे । (अपनें पर) गौतम स्वामीका बहुत स्नेह देखके । निजीक गाम में, एक देव शर्मा ब्राह्मणकों। प्रतिबोध देनेंके लिये भेजा । (पिछाडी) प छाशन धारन करके । सोले पहर अखंड देशना देते हुये । पूरण बहुत्तर बरशको आऊखो पालके (इसी) अमावसके दिन। पिछली दो घडी रात्र रहनेंसें सिद्धि स्थानककों प्राप्त भए । जिस समय भगवंतका निर्वाण क ल्याणक हुआ (उस समय) चौसठ इंद्र देवता गणके आनें जानेंसें बडा उद्योत हुआ। और (जो) सर्व राजा, पोषधमें बेठे हुए थे (सो) भाव उ द्योतका अस्तपणा देखके । सर्व ठिकाणें रत्न धरके द्रव्य उद्योत किया । एकमके प्रातसमें देवतावोंके आते जाते बचन सुणके । श्रीगोतम स्वामी कों केवल ज्ञान उत्पन्न हुवो । (दूजके दिन) सुदर्शना बेन । अपना

भाई नंद वर्द्धन राजाको, घरमें बुलायके जिमाया। शोक दूर करायो। (जिस सें) भाई बीज प्रवर्त्तन हुई। (इसीसें) यह दीवाली पर्व बना उत्तम है। इस दीवालीके रात (जो) गुणनो करे (सो लिखते हैं)॥ ॥ ❁ ॥

१ ॥ श्री महावीर स्वामी सर्व ज्ञाय नमः ॥

२ ॥ श्री महावीर स्वामी पारंगताय नमः ॥

३ ॥ श्री गौतम स्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥

॥ ❁ ॥ इस एक २ पदको २००० गुणनो करै। उपवास करै। रात्री जागर्ण करै। निर्वाणके समय अष्ट द्रव्यसें थालभरके मंदर जावै। रोशनी करै। निर्वाण कल्याणककी आरती करै। दीपमाला चैत्यवंदन करके स्तवन बोले। निर्वाण कल्याणक अधिकार सुणें। गौतम रास सुणें। (इत्यादिक) उदार चित्तसें, सर्व ठिकाणें दीवाली पर्वका उछव करना चाहियै॥❁॥

॥ ❁ ॥ अथ निर्वाण आरती लि० ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ जय जगदीशर अति अलवेशर। वीर प्रभूराया ॥ पतित उधारण भव भयभंजण। बोधबीज दाया ॥ (जय २ जिनराया। आरति करुं मन भाया। होय कंचनकाया) ॥ १ (ज०)॥ क्षत्रीकुंड नगर अति सुंदर। सिधारथ राया। सुदि आसाढ छठके दिवशै। त्रिशला कुक्षआया (ज०) ॥ १ ॥ चवद सुपन देखी अति उत्तम। निज प्रीतम भाषे। अरथ भेद सहु निश्चै करनें। जिन गुण रस चाखे (ज०) ॥ २ ॥ चैत्र सुदी तेरश दिन उत्तम। सहु ग्रह उच्चपावे। जन्म लेई दिश कुमरी सहुना। आशन कंपावे (ज०) ३ ॥ उछव कर जावे निज थानक। इंद्र सहु आवे। मेरु शिखरपर स्नात्र महोछव। करि आनंद पावे (ज०) ॥ ४ ॥ वसुधारा वृष्टीकर सहु सुर। निज थानक जावे। सिधारथ करे जन्म महोछव। अचरज सहु पावे (ज०) ॥ ५ ॥ कंचन वरण तेज अति दीपत। हरिलंछन छाजे। कुल इख्वाकु अंग सहु लक्षण। शशिज्युं मुख राजे (ज०) ॥ ६ ॥ दान संवछर दे प्रभु लेवै। चारित्र सुख दाई। मार्गसीर्ख दशमी वद पक्षे। उत्तम तरु पाई (ज०) ॥ ७ ॥ बार वरश छद्मस्थ पणामें। दुकर तप पाले। माधव सुद दशमी के दिनकुं। दोख सहु टाले

(ज०) ॥ ८ ॥ केवल पाय सर्वासुर संगे। पावा पुर आवे। गुणगण लंकृत देशना देकें। संघ सहु पावे ॥ ९ ॥ नृमंमल विच बहुतजीवकुं अविचल सुख देवे। नर सुर इंद्र सर्वामिल पूजे। जगमें जश लेवे (ज०) ॥ १० ॥ चरम चौमाशि पावापुरि करके। अंत समय जाणी। हस्तिपालकी शुक्ल शालमें। सोले पहर वाणी (ज०) ॥ ११ ॥ पर्यंकासन छठ तपस्या। इक चित गुणधामी। कार्तिक कृष्ण अमावसके दिन। शिवकमला पामी (ज०) ॥ १२ ॥ इंद्रादिक निर्वाण महोत्सव। कारि प्रभु गुण गावे। देवमुखे गणधर गुरु गोतम। सुणने पछतावे (ज०) ॥ १३ ॥ वीतराग गुण मनमें धारी। अनित्यभाव भावे। केवल ग्यान प्रगट हुय ततखिण। सुर नर गुण गावे (ज०) ॥ १४ ॥ पंच कल्याणक शाशन पतिकी। आरति ज्यो गावे। शिवसुख लक्ष्मी प्रधान मिले जब। मोहन गुण पावे (ज०) ॥ १५ ॥ इति पंच कल्याणक आरती संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री दीपमाला चैत्यवंदन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय जय श्री जिन वर्द्धमान। सोवन समवान। सिंह लंछन सिद्धार्थराय। त्रिशला सुत भान ॥ १ ॥ वरस बहुत्तर आऊदेह। करसत्त प्रमाण ॥ ऋषभादिक सम जासवंस। इक्ष्वाग सम जांण ॥ २ ॥ छठभत्त संजम लियोए। कुंमग्राम पुर गाम। गणधर इग्यारे सहित। आपो शिव पुर स्वाम ॥ ३ ॥ चवद सहस मुनि स्वामि सीस। बत्तीस सहस। श्रमणी श्रावक एक लाख। गुणसठ सहस ॥ ४ ॥ तीन लाख श्राविका। वली सहस अढार। सुर मातंग सिद्धाइका। नित सानिधकार ॥ ५ ॥ एकाकी पावा पुरीए। छठभत्त सुजाण। प्रभु पोहता अमृत पदे। करो संघ कल्याण ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ पीछे जंकिंचिनामतित्थं०। नमोत्थुणं०। कही। दीपमाला निर्वाणक कल्याणकको स्तवन बोले ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ निर्वाण कल्याणक स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मारग देशक मोक्ष नोरे। केवल ग्यान निधान। भावदया सागर प्रभूरे। पर उपगारी प्रधानोरे ॥ १ ॥ (वीर प्रभु सिद्ध थया) संघ सकल आधारोरे। हिव इण भरतमां। कुण करस्ये उपगारोरे ॥ २ ॥ (वीर

प्रभु सिद्ध थया)। नाथ विहूणी सैन्य जूरे। वीर विहूणोरे संघ। साधे कुण आधार थीरे। परमानंद अभंगोरे॥ ३॥ (वीर०) मात विहूणा बालज्युंरे। अरहो परो अथमाय। वीर विहूणा जीवभारे। आकुल व्याकुल थायेरे॥ ४॥ (वी०)॥ शंसय छेदक वीरनोरे। विरहते केम खमाय। जे दीठें सुख ऊपजैरे। ते विण किम रहिवायोरे॥ ५॥ (वी०)॥ निर्यामक भव समुद्रनोरे। भव अटवी सत्थवाह। ते परमेशर विन मिल्यांरे। किम वाधे उछाहोरे॥ ६॥ (वी०)॥ वीर थकां पिण श्रुततणोरे। हुंतो परम आधार। हिवणा श्रुत आधारछेरे। एह जिन आगम सारोरे॥ ७॥ (वी०)॥ इण काले सब जीवनेंरे। आगमथी आनंद। ध्यावो सेवो भवि जनारे। जिन पडिमा सुख कंदोरे॥ ८॥ (वी०)॥ गणधर आचारज मुनीरे। सहुनें इणपरि सिद्ध। भव भव आगम संगथीरे। देवचंद्र पद लीधोरे॥ ९॥ (वी०)॥ इति निर्व्वाण कल्याणक स्तवनं॥ ❋॥

॥ ❋॥ ग्यान पंचमी पर्व्वाधिकारः २॥ ❋॥

॥ ❋॥ दूशरो कार्त्तिक महिनेमें, कार्त्तिक सुद पंचमी। (सो) ग्यानपंचमी नामसें पर्व प्रशिद्ध है। (इस दिन) सर्व भव्य जीवांकों ज्ञानको विशेष आराधन करनो चहिये। ज्ञानके समान संसारमें उत्तम पदार्थ कोईबी नही। सर्व तत्वमें ज्ञान समान कोई तत्व नही। मोक्ष मार्ग साधनकों ज्ञान समान कोई उपाय नही। इस ज्ञान पंचमीकों आराधनसें अनेक दुष्ट कर्म विछेद होय। गुंगापणो, मूर्ख पणो, वक्रपणो, (और) कोढादिकके रोग, सर्व दूर होय। (अनुक्रमें) ज्ञानावरणी कर्मके क्षय होनेंसें पांचों ज्ञान प्रगट होय (जेसें) वरदत्त गुणमंजरीके रोगादिकके सर्व उपद्रव दूर होके। मनोरथ पूर्णभए। उसी माफक (जो) ज्ञानपंचमीका आराधन करेगा। उसीका मनोरथ पूर्ण होगा॥ ॥ ❋॥

॥ ❋॥ ग्यान पंचमी देव वंदन विधिः॥ ❋॥

॥ ❋॥ प्रथम पवित्र स्थानके। चौकी पट्टे ऊपर ग्यानकों स्थापन करे। तिस आगे पांच साथिया करे। फल, फूल, प्रमुख चढावे। पांच वर्णांको दीपक चढावे। अगर कपूरको धूप खेवे। पूजा पढके। वास क्षेप, कपूर

सेः ग्यान पूजा करे। यथा शक्ती। रोकनाणो चढावे। (तथा) पूग, विदां गणादि चढावे। (ज्ञानपूजा लिखते हैं)॥ ❋ ॥ नमंति सामंत मही वनाहं । देवाय पूयं सुविहेय पुव्विं। भत्तीय चित्तं मणिदामएहिं। मंदार पुप्फं पसवेहि नाणं॥ १॥ तहेव सद्धा मणि मुत्तिएहिं। सुगंधपुप्फेहि वरंसिएहिं। पूयंति वंदंति नमंति नाणं। नाणस्सजाभाय भवक्खयाय॥ २॥ यह पूजा पढके, ज्ञान पूजा करे।(इसी तरे) द्रव्य पूजा करके (पीछे) भावपूजा करे (सो लिखते हैं)। १ खमासमण देके। इरिया वही पडिक्कमें। लोगस्स कहे। (बैठके) मुहपत्ती पडिलेहै। अणुजाणह। मेमी उग्गहं (इत्यादिक) दो वांदणा देवें। पीछे पांच खमा समण देके। ज्ञानको नमस्कार कहे॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ ज्ञानको नमस्कार लिख्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सकल वस्तु प्रतिभाश भानु निरमलसुख कारण। सम्यग्दर्शन पुष्टहेतु भव जलनिधि तारण। संयम तप आनंद कंद अन्नाण निवारण मार विकार प्रचार ताप तापित जिन ठारण॥ १॥ स्याद्वाद परिणाम धर्मपरणति पडिबोहण। साहु साहुणी संघ सर्व आराधन सोहण। मोह तिमर विध्वंस सूर मिथ्यात्व पणासण। आतमशक्ति अनंत शुद्ध प्रभुता परगासण॥ २॥ मति श्रुति अवधि विसुद्ध नाण मणपज्जव केवल। भेद पचास क्षायोपशमिक एक क्षायिक निरमल। दोय परोक्ष प्रथम तिहां प्रगपरतक्ष दीसतः। सकल प्रतक्ष प्रकाश भास ध्रुव केवल अपरमित॥ ३॥ धर्म्म सकलनो मूल शुद्ध त्रिपदी जिन भाखे। बाहिर अंग प्रधान खंध गणधर सुप्रकाशे। शाखा श्रीनिर्युक्ति भाष्य पडिशाखा दीपें। चूरण टीका पत्र पुष्प संशय मन जीपें॥ ४॥ पंचांगी सार बोध कह्या जिन पंचम अंगे। नंदी अनुयोग द्वार शाख मानो मन रंगे। वीरपरंपर जीत अनुभव उपगारी। अभ्यासो आगम अगम निरुपम सुखकारी॥ ५॥ मोह पंकहर नीरसम सिद्धांत अबाधे। देव चंद्र आणासहित नय भंग अगाधे। ए श्रुतज्ञान सोहामणो। सकल मोक्ष सुखकंद। भगते सेवो भविकजन। पामो परमानंद॥ ६॥ ❋॥ इति ज्ञानस्तुति॥ ❋॥ (इत्यादि) नमस्कार क

हिके। णमोत्थुणं०। जावंति चेइयाइं०। जावंति केवि साहू०। नमोर्हत्सि० (कहके) प्रणमुं श्रीगुरु पाय० (इत्यादि) ज्ञानके स्तवन बोलै। जय वीयराय० कहै। वंदण०। अनत्थू० कहके। एक नवकारको काउसग्ग करै। थुई कहै॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ थुई लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ देविंद वंदिय पएहि परूवियाणि। नाणाणि केवल मणोहि मइ सुयाणि। पंचावि पंचम गई सिय पंचमीए। पूया तवो गुणरयाण जियाणदिंतु ॥ १ ॥ ❋ ॥ यह स्तुति कहके। (ज्ञान आराधवा निमित्तं करेमि काउसग्गं) तस्सुत्तरी। अन्नत्थू० कहके। १ लोगस्सको काउसग्ग करै (पारके) बोधा गाधं० (इत्यादि गाथा पढके) पीछै आभणि बोहियनाणं। सुयनाणं चेव ओहिनाणंच। तह मणपज्जव नाणं। केवलनाणं च पंचमयं ॥ १ ॥ यह गाथा कहके। इच्छामि खमा०। श्रीमति ज्ञानाय नमः॥ १ ॥ श्रीश्रुतिज्ञानाय नमः ॥ २ ॥ श्रीअवधिज्ञानाय नमः ॥ ३ ॥ श्री मनः पर्यव ज्ञानाय नमः ॥ ४ ॥ समस्त लोकालोक भास्कर श्री केवल ज्ञानाय नमः ॥ ५ ॥ (इसी तरै) पांच नमस्कार करै। थिरता होय तो (५१) ज्ञानके गुणांकों नमस्कार करै (सो) पूर्वै नवपदजीके गुणनेंमें लिख्या है। उमी माफक करै। पीछे (ॐ ह्रीँ णमो नाणस्स) इस पदको २००० गुणनो करै। कम थिरता होय (तो) ५ जाप करै। ज्ञान पंचमीका व्याख्यान सुणें। थिरता होय (तो) इग्यारै अंगकी सिझायां पढै (वा) सुणें (सो) इग्यारै अंगकी सिझायां लिखतेहैं ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ प्रथम आचारांग सिझाय लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (ढाल हरीयालानी) पहिलो अंग सुहामणोरे। अनुपम आचारांगरे। (सुगुण नर) वीर जिनंदै भाखियोरे लाल। उववाई जाम उवंगरे (सु०) ॥ १ ॥ वलिहारीए अंगनीरे लाल। हुं जाउं वारं वाररे (सु०) विनये गोचरी आदरेरे लाल। जिहां साधु तणो आचाररे (सु० वलि०) ॥ २ ॥ सुयखंध दोयछे जेहनारे। प्रवर अध्ययन पचवीशरे (सु०) उद्देशादिक जाणियेरे लाल। पिच्याशी सुजगीसरे (सु० व०) ॥ ३ ॥ हेतु जुग

निकर सोभतारे। पद अढार हजारे (सु०)। अक्षर पदनें छेहमेंरे लाल। संख्याता ओंकाररे (सु० व०) ॥ ४ ॥ गमा अनंता जेहमांरे। वलि अनन्त पर्यायरे (सु०)। त्रस परित्तनोछे इहांरे लाल। थावर अनन्त कहायरे (सु० व०) ॥ ५ ॥ निवद्ध निकाचित सासतारे। जिनप्रणीतए भावरे (सु०) सुणतां आतम ऊलसेरे लाल। प्रगटे सहिज स्वभावरे (सु० व०) ॥ ६ ॥ सुगुण श्रावक वारू श्राविकारे। अंगै धरीय उल्लासरे (सु०) विधि पर्वक तुमे सांभलोरे लाल। गीतारथ गुरु पासरे (सु० व०) ॥ ७ ॥ ए सिद्धांत महिमानिलोरे। ऊतारे भव पाररे (सु०) विनयचंद्र कहे माहरेरे लाल। ए हीज अंग आधाररे (सु० वलि०) ॥८॥ इति आचारांग सिझाय॥१

॥ ❀ ॥ अथ सुयगडांग सूत्र सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल रसीयानी)। बीजोरे अंग तुमे सांभलो। मनोहर श्रीसुगडांग (मोरा साजन)। त्रिणसै तेशठ पाखंडी तणो। मत खंड्यो धर रंग (मो०) ॥१॥ (मीठीरे लागै वाणी जिन तणी) जागे जेहथीरे ग्यांन (मोरा सा०)। ए वाणी मन भाणी माहरे। मानुं सुधारे समान (मोरा०) (मीठी०) ॥ २ ॥ रायपसेणी उवांगछे जेहनो। एतो सूत्र गंभीर मो०। बहुश्रुत अरथ जाणें सहु। क्षीर नीर धनुर तीर (मो० मी०) ॥ ३ ॥ एहनारे सुयखंध दोयछे। वलि अध्ययन तेवीश (मो०) ॥ उद्देशा समुद्देशा जिहां भला। संख्यायेरे तेत्रीश (मो० मीठी०) ॥ ४ ॥ नय निक्षेप प्रमाण भरया। पद छत्तीश हजार (मो०)। संख्याता अक्षर पद मांहे। कुण लहे तेहनोरे पार (मो० मीठी०) ॥ ५ ॥ गमा अनंता पर्याय वली। भेद अनन्त जिण मांहि (मो०)। गुण अनन्त त्रस परित्त कह्या। थावर अनन्त जेमांहि (मो० मी०) ॥ ६ ॥ निवद्ध निकाचित जेमा सयकरा। जिनपन्नत्तारे भाव (मो०)। भाषीरे सुंदर एह प्ररूपणा। चरण करण नोरे जाव (मो० मीठी) ॥७॥ करीये भगत जुगत ए सूत्रनी। निहचै लहीयेरे मुक्ति (मो०)। विनयचंद्र कहे प्रगटे एह थी। आतम गुणनीरे शक्ति (मो० मीठी०) ॥ ८ ॥ ❀ ॥ इति श्रीसूयगडांग सिझायः ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (३) ठाणांग सूत्र सिझाय लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (ढाल) आठ टके कंकणो लीयोरी (ए चाल) त्रीजो अंग भलो कह्योरे। (जिनजी) नामें श्रीठाणांग । (मोरो मन मगन थयो)। हां रे देखी २ भाव। हां रे जीवाजीव स्वभाव (मो०) सकल जगत करी ठाजतोरे। जि०। जीवाभिगम उपांग (मो०) ॥१॥ एह अंग मुझ मन ब स्योरे । जि० ॥ जिम कोकिल दलअंब (मो०) गुहिर भाव कर जाग तोरे ॥ जि० ॥ आजतो एह आलंब (मो०)॥२॥ कूट शेल सिखरी सिलारे। जि० ॥ काननमें वलिकुंभ (मो०) गह्वर आगर द्रह नदी रे ॥ जि० ॥ जेहमें अछे रे उदंभ (मो०) ॥३॥ दश ठाणा अतिदीपतारे ॥ जि० ॥ गुण पर्याय प्र योग ॥ मो० ॥ परित्त जेहनी वाचनारे ॥ जि० ॥ संख्याता अनु योग (मो०)॥ ४ ॥ वेष्ट शिलोक निज्जुत्तसुंरे ॥ जि० ॥ संगहणी पभि चि त्त (मो०) ए सहु संख्याता जिहांरे ॥ जि० ॥ सुणतां उलसे चित्त (मो०) ॥५॥ सुयखंध इक राजतोरे। जि०। दश अध्ययन उदार (मो०) उद्देशादिक वीशछेरे। (जि०) पद बहुत्तर हजार (मो०) ॥ ६ ॥ रागी जिन शासन तणोरे ॥ जि० ॥ सुणें सिधांत वषांण (मो०) । विनय चंद्र कहे ते हुवेरे ॥ जि० ॥ परमारथरा जाण (मो०) ॥ ७ ॥ ॥ ❋ ॥

इति श्रीठाणांग सूत्र सिझायः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (४) समवायांग सूत्र सिझाय लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (ढाल) थांरा माहिलां ऊपर मेह झबोके वीजली (ए चाल) ॥ ❋ ॥ चौथो समवायांग सुणो श्रोता गुणी हो लाल ॥ सुणो० ॥ पन्नवणा उपांग करी सोभावणी हो लाल ॥ करी सो० ॥ अरध मागधी भाषा साखा सुरतणी हो लाल ॥ साखासु० ॥ समकित भाव कुसुम परमल व्यापी घणी हो लाल ॥ पर० ॥ १ ॥ जीव अजीवनें जीवाजीव समास थी हो लाल ॥ जीव० ॥ लहीये एहथी भाव विरोध कांइ नथी हो लाल ॥ वि० ॥ भांगा तीन स्वसमयादिकना जाणीये हो लाल ॥ यादि० ॥ लोक अलोकनें लो कालोक वखाणीये हो०॥लो०॥२॥ एक थकी छे सत समवाय प्ररूपणा हो ला ल ॥ सम० ॥ कोभा कोरू प्रमाणक जीव निरूपणा हो० ॥ जी० ॥ बारस

विह गणि पिटक तणी संख्या कही हो० ॥ त० ॥ सासता अरथ अनंतकि
है एहना सही होलाल ॥ है० ॥ ३ ॥ सुय खंध अध्ययन उद्देशादिके भ
ला हो लाल ॥ भ० ॥ संख्यायें एक एक प्रत्येके गुणनिला हो० ॥ प्रत्ये० ॥
पद एक लाख चोमाल सहस ते उत्तरा हो० ॥ स० ॥ पदनें अग्र उदग्र सं
ख्याता अक्षरा हो० ॥ सं० ॥ ४ ॥ भाष्य चूर्णि निर्युक्ति करी सोहै सदा हो०
करी० ॥ सुणतां भेद गंभीर त्रिपत न होय कदा हो० ॥ त्रिप० ॥ जेहनमावै
अंगकि अन्तरगतिहसी हो० ॥ अन्त० ॥ जलवरसं ते जोर कुणन हुवै
खुसी हो० ॥ कुण० ॥ ५ ॥ जाग्यो धरम सनेह जिणंदसुं माहरो हो० ।
जिणं० ॥ तजिया शास्त्र मिथ्यात सुत्र जाण्यो खरो हो० ॥ सु० ॥ जिम मा
लती लहीभृंग करीनें नविरहे हो० ॥ करी० ॥ ईश्वर शिर सुरगंग तजी परि
नवि वहे हो० ॥ तजी० ॥ ६ ॥ एप्रवचन निग्रंथ तणो जुगते वस्यो हो० ॥
तणो० ॥ साकर सेलडी द्राष थकी पिण मीठस्यो हो० ॥ थकी० ॥ स्युं कही
ये बहुवात विनयचंद्र इम कहे हो० ॥ वि० ॥ एहना सुणनें भाव श्रोता
अति गहगहे हो० ॥ श्रोता० ॥ ७ ॥ इति श्रीसमवायांग सूत्रसिझाय सं० ॥ ४ ॥

॥ ॥ अथ (५) भगवती सूत्र सिझाय लि० ॥ ॥

॥ ॥ (ढाल पंथीडानी) । पंचम अंगे भगवती जाणीयेरे । जिहां जि
नवरना वचन अथाहरे । हिमवंत परवत सेती नीकल्यारे । मानुं परतिख
गंगप्रवाहरे (पं०) ॥ १ ॥ सूरपन्नत्ती नामें परगमीरे । जेहनीं छे उद्दाम
उपांगरे । सूत्र तणी रचना दरीया जिसी रे । मांहिला अरथ ने सजल तरं
गरे (पं०) ॥ २ ॥ इहां तो सुयखंध एक अति भलोरे । एक सो एक
अध्ययन उदाररे । दश हजार उद्देशा जेहनारे । जिहां किण प्रश्न छत्तीश
हजाररे (पं०) ॥ ३ ॥ पद तो दोयलाख अरथे भर्यारे । ऊपरि सहस
अठयासी जाणरे । लोकालोक स्वरूपनी वर्णनारे । विवाह पन्नत्ती अधिक
प्रमाणरे (पं०) ॥ ४ ॥ करियै पूजा अनें परभावनारे । धरियै सदगुरु
उपररागरे । सुणियै सूत्र भगवती रागसुं रे । तो होय भव सागरनें त्यागरे
(पं०) ॥ ५ ॥ गोतम नामें द्रव्य चढाइयै रे । सम्यक् ज्ञान उदय होय जेमरे । कीजै
साधु तथा साहमी तणीरे । भगति युगति मन आणो प्रेमरे (पं०) ॥ ६ ॥

इण विधिसुं एह सूत्र आराधतां रे। इण भव सीझे वंछित काजरे । परभव विनय चंद्र कहै तेलहैरे। मोहन मुगति पुरीनो राजरे (पंच०) ॥ ७ ॥
इति श्रीभगवती सूत्र सिझाय सं० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (६) ज्ञातासूत्र सिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) कितलख लागा राजाजीरै मालियै । (एदेशी)। छठो अंग ते ज्ञाता सूत्र वखाणियै जी । जेहना छै अरथ अधिक उदंम हो (म्हांरा सुणजो धरिनेह सिधांतनी वातमीजी)। श्रवणे सुणतां गाढो रस ऊपजे जी। मधुर ता तार्जित जिम मधु खंम हो (म्हां०)॥ १ ॥ जंबुदीव पन्नत्ती उपांगछै जेहनो जी । इण मांहे जिन पूजानी विधि जोरहो (म्हां०) आर्चिक सुणि परम शांतिरस अनुभवै जी । चार्चिक सुणि करै सम सोर हो (म्हां०) ॥ २ ॥ नगर उद्यान चैत्य वनखंम सोहामणो जी। समवसरण राजाना मातनें तातहो (म्हां०) धरमाचारज धर्म कथा तिहां दाखवी जी। इहलोक परलोक रुधि विशेष सुहात हो (म्हां०)॥ ३ ॥ भोग परित्याग प्रवज्या पर्षदाजी। सूत्र परिग्रह वारू तप उपधान हो (म्हां०) संलेहण पचखाण पादपोप गमनताजी । स्वर्ग गमन शुभकुल उतपत्ति हो (म्हां०)॥ ४ ॥ बोधिलाभ वलितंतते अंतक्रया कहीजी। धर्मकथाना दोयछै सुअखंध हो (म्हां०)। पहिलाना उगणीश अध्ययन ते आजछै जी। बीजाना दशवर्ग महा अनुबंध हो (म्हां ०) ॥ ५ ॥ कंठ कोमि तिहां सचल कथानक भाषिया जी। भाष्यावलि उगणीस उद्देश हो (म्हां०) । संख्याता हजार भला पद एहना जी । एह थकी जाये कुमति कलेश हो (म्हां०)॥ ६ ॥ विनय करे जे गुरुनो बहु परे जी । तेहनें श्रुत सुणतां बहु फल होय हो (म्हां०)। ते रसिया मन वसिया विनय चंद्रनें जी। सो मांहें मिले जोयां एक के दोय हो (म्हां०)॥ ७ ॥ ❀ ॥
इति श्री ज्ञाता धर्म कथाङ्ग सिझायः ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (७) उपाशकदशा सूत्रसिझाय लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल विछियानी)। हिवे सातमो अंग ते सांभलो। उपाशगदशानांमें चंगरे। श्रमणो पाशकनी वर्णना। जसु चंदपन्नत्ती उपांगरे ॥ १ ॥

मन लागो मोरो सुत्रथी । एनो नव वैराग तरंगरे । रसराता ज्ञाता गुण लहे । परमारथ सुविहित संगरे (म०) ॥ २ ॥ इण अंगे सुयखंध एकछे अध्ययन उद्देश विचाररे । दश२संख्यायें दाखव्या । पद पिणसंख्यात हजाररे (म०) ॥ ३ आणंदादिक श्रावक तणो । सुणतां अधिकार रसाल रे । रस लागे जागे मोहनी । श्रोता जननें ततकालरे (म०) ॥ ४ ॥ श्रोता आगलतो वाचनां । गीतारथ पामें रीझरे । जे अर्द्ध दग्ध समझे नही । ते हसुं तो करवी धीज रे । (म०) ॥ ५ ॥ दश श्रावकनो इहां भाषिया । पण सूत्र भण्यो नहीं कोयरे । ते माटे शुद्ध श्रावक भणी । एक अरथ नी धारणा होय रे (म०) ॥ ६ ॥ साचो होय ते गरूपीये । निस्संकपणें सुजगीसरे । कवि विनय चंद्र कहे स्युं थयो । जो कुमती करस्ये रीसरे (म०) ॥ ७ ॥ इति श्रीउपाशक दशांग सिझायः ॥ ७ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (८) अंतगडदशांग सिझाय लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (ढाल) वीर वखाणी राणी चेलणाजी । इस चालमें ॥ ॐ ॥ आठमो अंग अंतगड दशाजी । सुणी करो कान पवित्र । अंतगड केवली जे थया जी । तेहनारे इहां आठ चरित्र ॥ १ ॥ कर्म कठिन दल चूरता जी । पूरता जगतनी आस । जिनवर देव इहां भासताजी । मा सता अर्थ सुविलास (आ०) ॥ २ ॥ सकल निक्षेप नय भंग थीजी । अंग ना भाव अभंग । सहिज सुरंगनी नलिकाजी । कलिपका जासु उतंग (आ०) ॥ ३ ॥ एक सुय खंध इण अंगनोजी । वर्ग छे आठ अभिराम आठ उद्देशा छे वर्गजी । संख्याता सहस पद ठाम ॥ (आ०) ॥ ४ ॥ आ ठमा अंगना पाठमें जी । एहवो अछेरे मीठास । सरस अनुभव रस ऊपजे जी । संपजे पुण्यनीराम (आ०) ॥ ५ ॥ विषय लंपट नर जे हुवे जी । निरविगयी सुण्या थाय । जिम महाविष विषधर तणो जी । नागमंत्रे सुण्या जाय (आ०) ॥ ६ ॥ अमृत वचन सुख वरसनी जी । सरस्वती अछेरे पसा य । जिम विनय चंद्र इण सूत्रनाजी । गुणलहे अभिप्राय (आ०) ॥ ७ ॥ इति श्रीअंतगड दशांग सिझायः ॥ ८ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

अहम्मदावाद मझारकि । जामकरी ए अंगनी (स०) वरत्या जय जय कार कि ॥ ४ ॥ संवत सतर पचावनें (स०) । वरषा रुतु नन्न माशकि । दशमी दिन शुदि पक्षमां (सु०) पूरण थई मन आसकि ॥ ५ ॥ श्रीजिन धर्मसूरि पाटवी (स०) । श्रीजिनचंद्र सूरीसकि । खरतर गछना राजीया (स०) त सु राजे सुजगीसकि ॥ ६ ॥ पाठक हरख निधानजी । सहे० । ज्ञान तिलक सुपसायकि । विनय चंद्र कहै में करी (स०) । अंग इग्यार सिझायकि । (सहे०) ॥ ७ ॥ इति श्रीइग्यारे अंग सिझायः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः ज्ञानको स्तवन लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ राग ठुमरी ॥ ❋ ॥ मेरे रे मनमांनी ज्ञानजरी । (मे०) परउपगारी सुगुरु बताई । पांचुं भेदे करी । मति श्रुति अवधि अवर मन पर्यव । केवल बोधवरी । (मे०) ॥ १ ॥ तपकर अग्नि मूंस दंशनकी । करमें धनल करी । सक्रिय संयम करतासुं मिल । सिद्ध रसानधरी । (मे०) ॥ २ ॥ पूरण पुन्य मिली मोय सजनी । सकला नन्ददरी । बालकहै अब विसरत नांहीं । पल छिन एकवरी । (मे०) ॥ ३ ॥ इति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः आगम स्तवन लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्रुत अतिहभलो । संघसकल आधार नमुं त्रिभुवन तिलो । (आंकणी) अरथे श्री वीर जिणंद आख्यो । सूत्रें श्रीगणधर गुरु जाख्यो । तदुजय थी जे मुनिवर राख्यो ॥ १ ॥ (श्रु०) । जेह थी जगनाव सकल जाणें । नय एकान्त मुनि जन नवितांणें । निश्चइ व्यवहार ते मन आणें ॥ २ (श्रु०) जिहां अङ्ग उपाङ्गछे अतिरूडा । छेद पइन्ना नहिं कूडा । मूलसुत्र नन्दी अनुयोग चूडा ॥ ३ ॥ (श्रु०) । जिहां निरयुगती सुत्रे संगी वलि नाष्य चूरणि टीका चङ्गी । पंचम अंगे कही पंचाङ्गी ॥ ४ ॥ (श्रु०) जिहां साधु श्रावक मारग लहिये । संवेग पखी वलि मग्दहिये । पत्रिण विन नवमारग कहिये ॥ ५ ॥ (श्रु०) । जेहनी अनुपेहा निन करिये । उपचारे दूषण परिहरिये । आराध्यां निज अनुनव वरिये ॥ ६ ॥ (श्रु०) जिन आगमना जे गुणगावे । शुद्धाशय जे मनमें ध्यावे । ते क्रमा कल्याण सदा पावे ॥ ७ ॥ (श्रु०) ॥ इति आगम स्त० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ कार्त्तिक चौमाशाधिकार लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ कार्त्तिक महिनेमें मिती कार्त्तिक सुद १४ केदिन। सब मन्दर दर्शन करनेंकों जाना। व्याख्यान सुणना। सामायकादिक धर्मकृत्य करना (इत्यादिक) सर्व अधिकार पूर्व, आसाढ चौमाशे तुल्य जानके कार्त्तिक चौमाशेका सेवन करे॥ इति कार्त्तिक चौमाशा सेवनविधिः॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ कार्त्तिक पूर्णमाशीका अधिकार लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रथम कार्त्तिक बद १ सें सेत्रुंजरास सुणें निवी (वा) एकाशणा, व्याशणादिक तप करे। दोंनुं टंक पडिकमणो करे। देव वंदनादिक करे। (ॐ ह्रीँ श्री सिद्धक्षेत्र अनन्तसिद्धाय नमः) इसीको एक जाप सदा करे। शक्ति होय (तो) सिद्ध गिरी यात्रा करनेंको जावे। काती पूनमके दिन विस्तार संयुक्त सिद्धगिरीकी पूजा करावे। अठाही महोछव करे। विस्तारसें देववंदनादिक विधि करे (२१) वेर सेत्रुंजरास सुणें। ॐ ह्रीँ श्री सिद्धक्षेत्र अनन्त सिद्धाय नमः। इसी पदसें (२१) जेती देवे। (कदास) सिद्ध गिरी जाणें की सक्ती न होय (तो) जहां सिद्ध गिरीका पटमंड्या होय। उहां महोछव संयुक्त दर्शन करनेंको जावे। पूजादिक सब विधि करे। छठ भक्त करके (वा) चतुर्थ भक्त करके। इस पर्वको आराधन करे। गुरुभक्ति करे। साहमी वछल करे। (इत्यादिक) विधिसंयुक्त सिद्धगिरीकी सेवना करनेंमें। सर्व अशुभ कर्म विध्वंस होके मंगलमाला प्रवर्त्तन होय॥ ❋ ॥ (इस दिन) श्री द्रावड वारखिल्ल प्रमुख दशकोडि साधु सिद्धिस्थानक प्राप्त भए (जिससें) इस दिन (जो) धर्मकृत्य किया हुआ, निस्संदेह दशकोडि गुणा फले। (इस) भरतक्षेत्रमें सिद्धगिरीके समान कोई उत्तम तीर्थ नहिं। (में पिण भव) उगणीसे तीशमें। चैत्रीपूनमकों यात्रा करता हुवा। सब भगवंतके बिंबोंका दरशण करके गिणती किया (सो) बारे हजार। तीनसे। अठावन १२३५८ बिंब हुआ। और बहुत ठिकाणें चरणोंकी स्थापना हे। अनन्ता साधु अणसण लेके परम पदकों प्राप्त भए हें (इसीसें) जो आसन भव्वी जीव होंगे (सो) सुभभावसें

इस तीर्थकों सेवन करेंगे। और जो सेवन करते हैं। उसी पुरुषोंकों नमस्कार है। उसी पुरुषोंके जीवतव्य धन्य है॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सिद्धगिरीके स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (देशी गरवानी)। ते दिन क्यारे आवसी हे। (जोरे वहिनी)। जासुं सिद्धाचलनी जात (मोरी सहीयां हे)। पाजे चढतां प्रेम सुंहे। (जोरे वहिनी)। गाइये गुण अखियात। (मोरी सहीयां हे। तेदि०)॥१॥ अदभुत ऊंचो देहरो हे। (जोरे वहिनी) मूल नायक आदिनाथ। (मोरी सहीयां हे)। भोली भगत भली परे हे। (जोरे०) निरख्यां होय सनाथ। (मोरी० ते०)॥ २ ॥ नाही निरमल नीरसुं हे। (जोरे०) पहिर खीरोदक चीर। (मोरी०) केसर भरीय कचोलमी हे। (जोरे०) पूजसुं सुगुण सुधीर। (मोरी० ते०)॥ ३ ॥ रूमी रायण छांहमीहे। (जोरे०) आदि जिणंद उदार। (मोरी०) तिहां जगनाथ समो सरथा हे। (जोरे०) पूरव निनांणुं वार। (मोरी० ते०)॥ ४ ॥ इण गिर वरियें ऊपरा हे। (जोरे०)। सीधा साधु अनंत। (मोरी०) चौमाशे रह्या दोय जिनवरा हे। (जोरे०) अजित जिणेसर शांति। (मोरी०ते०)॥ ५ ॥ चेलणा तलाई सिध सिला हे। (जोरे०) अदभुत उलका झोल। (मोरी०) सिद्धवड सेत्रुंजे नदी वहे। (जोरे०) करियै नित रंगरोल। (मोरी० ते०)॥ ६ ॥ इण डूंगर दीठां थकां हे। (जोरे०) ऊपजे परमानंद। (मोरी०) गहिरी गिरवर छांहडी हे। (जोरे०) चाहे नित जिणचंद (मोरी० तेदि०)॥ ७॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनम्॥१॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज आपे चालो सहीयो सिद्धाचल गिरजइये॥ सुणि वहनी ए गिरनी महिमा। आदिजिनंद इम भाखो। भरथादिक नरपतिनें आगल। इंद्रादिक सहु साखीरे (आज०)॥ १ ॥ इण गिरवरियें काल अनंते। साधु अनन्ता सीधा। जनम मरणनां दुख छोमीनें। अमल अलय गुण लीधारे (आ०)॥ २ ॥ इण गिर सनमुख पगला भरतां। आतम सुख सुभावे। कोड भवांरा पातिक कीधा। एक पलकमें जावेरे (आ०)॥ ३ ॥ मासतो तीरथ ए सेत्रुं जो। जोनां लागे मीठो। तीन भुवनमें इण गिर

तोले। बीजो कोइन दीठो रे (आ०) ॥ ४ ॥ नीरंजनसुं नेह धरीनें। आगे उंलग करस्यां । अद्भुत आदि जिनेसर निरखी । प्रेम सुधारस पीस्यां रे (आ०) ॥ ५ ॥ पुहसुगंधा लेइ पचरंगा । हार सुगंधा गूंथी । पहिरावी प्रभु कंठे लहिस्यां। शिव मारगनी सूथीरे (आ०) ॥ ६ ॥ गहिर स्वरे जिन वर गुण गातां । यात्र निनाणूं करिये । मन गमती भमती विचभमतां। भव सायर निसतरियें रे (आ०) ॥ ७ ॥ पूरवनिनाणूं वार प्रथम जिन। राय एलंखे आया। ते तीरथ सुभ भावे फरसी। करिये निरमलकायारे (आज०) ॥ ८ ॥ लाभ उदे ए गिरवर लहिये। कहे इम केवल नाणी। श्रीजिनचंद स दा हित वछल। प्रेम वर्णो चित आणीरे (आ०) ॥ ९ ॥ इति ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ पुनः ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ (श्रीचंद्रा प्रभु प्राहुणोरे ए देशी) ॥ ❁ ॥ नमोरे नमो सेत्रुंज गिरीरे । त्रिकरण शुद्ध त्रिकालरे । पाप पम्ल दूरे टलेरे । तूटे करम जंजालरे । (नमो०) ॥ १ ॥ पूरव निनाणुं समोसरयारे । प्रथम जिनंद जगदीशरे । वावीशम जिनवर विनारे । समो सरया तेवीशरे। (नमो०) ॥ २ ॥ साधु अनन्त अणशण ग्रही रे । सीधा एहीज ठोमरे । काल आगामी वलि सीझस्येंरे । साधु अनन्ती कोम्हिरे (नमो०) ॥ ३ ॥ अनंत कल्याणक भूमिकारे । महिमावंत महन्तरे । सासनो तीरथ ए सही रे। अतिशय जास अनन्तरे (न०) ॥ ४ ॥ कोम्हि भवंतर जेकियारे पातिक विविध उपाय रे । सेत्रुंजे सनमुख चालतां रे । पग पग ते सह जायरे। (नमो०) ॥ ५ ॥ धनदिन तेहीज जाणसुंरे। वहिस्युं सेत्रुंज केरी वा टरे। उहरी यथाविध पालस्यूंरे । संघ सहित गहिगाटरे (नमो०) ॥ ६ ॥ पगपग उछव अति घणारे । पग पग याचक दानरे । प्रेम भगति साहमी तणी रे। जीणोंद्धार प्रधान रे (नमो०) ॥ ७ ॥ धन ने गिर राय निरखसुंरे। वदनी मंगल मालरे। मणि मोतीयदे वधावस्युं रे । रजत सोवन भर थालरे (नमो०) ॥ ८ ॥ धन दिन ते गिर फरसस्युं रे । करस्युं पावन मोरी कारे। भगति जुगति जुहारसुंरे। नाभि नन्दन जिन रायरे (नमो०) ॥ ९ ॥ द्रव्य भाव करसुं सुदारे। पूजा विविध प्रकार रे । भावे भावना भावसुं रे।

करसुं सफल अवताररे (नमो०) ॥ १० ॥ रतनत्रयी जमती जली रे। देसुं ते धर वुधिरे। भव भव भ्रमण निवारसुं रे । लहिसुं आतम सुधिरे ॥ (नमो०) ॥ ११ ॥ विध फरसण मन माहरोरे। मोहि रह्यो दिन रातरे । पुन्य प्रबल थी पामियो रे। उज्जलगिरी केरी जातरे (नमो०) ॥१२॥ नाथ धूलेवा सु पसाय थीरे । कारज सगला सिद्धरे । कहै जिन हरष सूरी सदारे। होय जो मंगल वृद्धरे (नमो०) ॥ १३ ॥ इति सिद्धा० ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (देशी पंथीडानी) ॥ अंग उमावो मोनें अतिघणो। भेटवा विमल गिरंदरे। (पंथीभा)। नाभिराया कुल चंदलो। जिहां वसै मरुदेवी नन्दरे। (पंथीभा) । वहिलुं बोलैरे पंथी ह्मांरा वहिलुं बोलैरे ॥ १ ॥ सेत्रुंजो छे कितनीक दूररे (पंथीभा वहि०) । पाली ताणो नगर सुहामणो । रूभी ललिता सरनी पालरे (पंथीभा) जिहां अंबलारे वभला घणा । भुक रही चंपलानी भालरे (पंथीभा वहि०) ॥ २ ॥ धन ते पंखी पारेवभा। सेत्रुंज वसिया छे सोररे (पंथीभा) । ऊमाहो करीनें जे वर रहे । मांणस नहीं ते ढोर रे । (पंथीभा वहिलुं०) ॥ ३ ॥ सेत्रुंज वाटेजी चालतां । झीणी झीणीकर्मे खेहरे। (पंथीभा)। मेला थाये संघना कापभा। निरमल थाये देहरे । (पंथीभा वहिलुं०)॥ ४ ॥ ऊंचो देहरो आदि नाथ रो । आगल चौक विसाल रे (पंथीभा)। जिहां मिलमिल घणा मानवी। गावे प्रभुगुण मालरे । (पंथीभा वहिलुं०)॥ ५ ॥ घस केसर भरवाटका । पूजे जिनवर अंगरे । (पंथीडा) । फूलाहंदो सोहै प्रभुसिर सेहरो। दिवलानी जोति अभंगरे । (पंथीडा व०)॥ ६ ॥ ए गिरवर दीठां माहरे। ऊपजे परम आनन्दरे। (पंथीभा) मोनें भेटणरोजी कोभछे । प्रेम वर्णो जिनचंदरे। (पंथीभा व०)॥ ७॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनम् ॥ ४ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जात्रानिनाणुं करिये विमल गिरि (जात्रा०) ॥ पूरवनिनाणुं वार सेत्रुंज गिरि। ऋषभजिनंद समोसरिये (विम० जा०) । कोडि सहस भव पातिक तूटे। सेत्रुंज सामें भग भरिये। (विमल० जा०) १ ॥ चौ

थ छठ दोय अठम तपस्या । करि चढिये गिरवरिये । (वि० जा०) पुंड रीक पद जपिये हरखें । अध्यवसाय शुभ धरिये (वि० जा०) ॥ २ ॥ पापी अभवी निजर न देखे । हिंसक पिण उधरिये (वि० जा०)। भूमि संथारीनें नारितणो संग । दूर थकी पर हरिये (वि० जा०)॥ ३ ॥ ऐकल आहारीनें सचित्त परि हारी । गुरु साथे पद चरिये (वि० जा०) पडिकम णा दोय विधसुं कीजे । पाप पडल विष हरिये (वि० जा०)॥ ४ ॥ कलि काले ए तीरथमोटो । प्रवहण सम भवदरिये (वि० जा०)। उत्तम ए गिर वर सेवंतां । पदम कहे भवतरिये । (विम० जात्रा०)॥ ५ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ आज वधाई म्हांरे रंग वधाई । मोतीयनें० । ए चाल ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सिद्धगिरी भेटो भवि भावे । ज्युं सुखसंपति आनंद थावे । सि० ॥ ए गिरवरके भेटणसेती । पूरव संचित अघ सहु जावे ॥ सि० ॥ ॥ १ ॥ रायणरुंखे रिषभ जिनेसर । पूरव निनांणुं आया स्वभावे ॥ सि० ॥ पुंडर गिरकी महमा जिननें । भरतादिक सब जनकुं सुणावे ॥ सि० ॥ २ ॥ सासतो तीरथ तीन भुवनमें । शिवपुरि पाज प्रत्यक्ष कहावे ॥ सि० ॥ को डि अनंत साधू इण ऊपर । मुक्तिगये इण गिरके प्रभावें ॥ सि० ॥ ३ ॥ एकवार गिरकुं भेटणसें । सहस कोडनां पातक जावे ॥ सि० ॥ नाभिरा य मरुदेवीके नन्दन । आदिजिनंद भेट्यां सुखपावे ॥ सि० ॥ ४ ॥ अदभु तबिंब अनोपमसोभित । चोमुख जिनवर अति मनभावे ॥ सि० ॥ देशदे शांतरसें बहु नरगण । आय भलीविध पूज रचावे ॥ सि० ॥ ५ ॥ कपूर क स्तूरी केसर घोली । मनसुध प्रभुके चरणों चढावे ॥ सि० ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगट्यो । मनमें हरष आनन्द भरावे ॥ सि० ॥ ६ ॥ आज रवी कंचनमइ उगो । विमलाचल भेट्या सुखभावे ॥ सि० ॥ मुर्शिदाबाद अ जीमगंजमें । गोत्र दूधेड्या प्रगट कहावे ॥ सि० ॥ ७ ॥ मोहतिमर अघ दूर करणकों । बुध सिंह यात्राकरी सुभभावे ॥ सि० ॥ गगन जोग ग्रह इंदु संवछर । चैत्रउज्वल तेरस मन भावे ॥ सि० ॥ ८ ॥ आप्रहसें श्रीय

जयराजकुं । साथ भलीविध यात्रा करावै ॥ सि० ॥ संघ साथ श्री लक्ष्मी प्रधानना । शिष्य मोहन प्रभुना गुणगावै ॥ सि० ॥ ९ ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जिनविंब संख्यागर्भित सेत्रुंजरास लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ आदिजिनंद दिनंदसम । ज्योति रूप जगतेय । आतम गुण परकास कर । भवियणकुं सुख देय ॥ १ ॥ वाग्देवी प्रणमी करी । सद्गुरु सीस नमाय । सिद्ध क्षेत्रका गुण कहुं । सुमतानें सुपसाय ॥ २ ॥ सुमता वचने चालतां । सदा सुरंगी देह । सुरपति नरपति सहुनमें । पामेंशिवसुख तेह ॥ ३ ॥ सुमता जिम चेतन भणी । समझावे चित आय । प्रथम बात एही कहुं । सुणो भवी चितलाय ॥ ४ ॥ ❋ ॥ ढाल १ मारूजीकी ॥ ❋ ॥ सुमता कहे चेतन भणी । साहिवजी । छोड़ो मिथ्या जालहो । इक चित्ते एगिरि सेवियें ॥ सा० ॥ ज्यो निज गुण नी चाहहो ॥ इक० ॥ १ ॥ काल अनादीसें रह्यो ॥ सा० ॥ कुमति कथन बस होयहो । भवमांहे भमतां दुखसह्या ॥ सा० ॥ २ ॥ जन्म मरणकरि नव नवा ॥ सा० ॥ नटज्युं वेश वनां वहो । चउगतिमें नाटक तुम कियो ॥ सा० ॥ ३ ॥ नरक निगोदमें तुम रह्या ॥ सा० ॥ क्षण नहिं पाम्यो सुख हो । किम भूलो दुख देखी जिसा ॥ सा० ॥ ४ ॥ देव मनुष्य अवतार में ॥ सा० ॥ मोह विटंबणा दुःख हो । चित्तधरने दुर्जन छोडिये ॥ सा० ॥ ५ ॥ वल अपणो फोरयां विनां ॥ सा० ॥ दुर्जन नपड़े पायहो । जशलीजे दुर्जन क्षय करी ॥ सा० ॥ ६ ॥ मुझकुं कदेय न संभरी ॥ सा० ॥ तोपिण अवसर देखहो । तुमआगे वात सहू कही ॥ सा० ॥ ७ ॥ उत्तम नर जिणनें कह्यो ॥ सा० ॥ होय गुण अवगुण जांणहो । वलि जांणें मित्र कुमित्रनें ॥ सा० ॥ ८ ॥ मुझसें प्रेम धरी करी ॥ सा० ॥ कीजे वचन प्रमाण हो । जिन मारग उत्तम आदरो ॥ सा० ॥ ९ ॥ चारित्र धर्मनी आगन्या ॥ सा० ॥ धारो शिर पर आजहो । जिम पामो रंग वधामणा ॥ सा० ॥ १० ॥ श्रुध सरधा जलकुं ग्रही ॥ सा० ॥ वोवो समकित वीज हो । नवपल्लव धर्म तरू हुये ॥ सा० ॥ ११ ॥ उत्तम नर सुरपति पणो ॥ सा० ॥ पुष्प सुगंधी जाण हो । फलउपणका शिव सुख पांमस्यो ॥ सा० ॥ १२ ॥ उत्तम ग्यांन प्रकाशमें ॥

सा० ॥ सहु देखे निजरूप हो । परमातम पदकुं पिछांणिये ॥ सा० ॥ १३ ॥ तुं मुझ वल्लभहे सदा ॥ सा० ॥ तुम गुण अपरं पारहो । परमातम पद तुंही अछे ॥ सा० ॥ १४ ॥ पिण निश्चे व्यवहार में ॥ सा० ॥ निश्चे नयकुं जांणहो । व्यवहारे शुद्ध क्रिया करी ॥ सा० ॥ १५ ॥ निज निज शक्ती अनुसरे ॥ सा० ॥ पाले व्रत मन शुद्धहो । नव पदनो ध्यान हिये धरी । सा० ॥ १६ ॥ सिद्ध गिरी सवहण चढी ॥ सा० ॥ वेगें शिवपुर जायहो । भव सायर पार पामो सुखे ॥ सा० ॥ १७ ॥ इण परि सुमता आयके ॥ सा० ॥ समझावे भवि चित्तहो । सुखपांमे समझे भविजिके ॥ सा० ॥ ॥ ❀ ॥ (दुहा:) ॥ इणपर सुमता वयणसुण । आसन भवी जीव । हरख धरी व्रत आदरे । धर्म अमृत रस पीव ॥ १ ॥ सिद्ध गिरी इक अवसरे । आयावीर जिणंद । इन्द्रादिकसहु आयनें । वांद्या धर आणंद ॥ २ ॥ सिद्ध गिरीना गुणसहु । सुणवा भवि चितधार । प्रभुपद पंकज नमण कर । बैठा करी इकतार ॥ ३ ॥ भगवन दीनी देशना । सिद्धगिरी सम आज । जगमें कोइ तीरथ नहीं । परतिख शिवपुर पाज ॥ ४ ॥ काल अनादीसें रह्यो । नाम ठाम पर सिद्ध साधु अनंता इण गिरे । अणसण लही सिव लिद्ध ॥ ५ ॥ नामलियां सहु भय टले । दुख दारिद्र हुये दूर । दिनदिन अधकीसंपदा । पांमे सुख भरपूर ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥ (ढाल २) ॥ जंबूद्वीप मांहे कह्यो रे लाल दक्षिण भरत प्रमाणरे । (भविकनर) सहु देशां मांहे सिरे रे लाल । सोरठ देश वखांणरे ॥ भ० १ ॥ इण गिरनी महमा घणीरे लाल । कहे न सके कोई पाररे ॥ भ० ॥ (वीर जिनंदे भाखियोरे लाल) ॥ २ ॥ विमलाचल प्रणमुं सदारे लाल । आठ गुणां समनांगरे ॥ भ० ॥ वर वैगं शुभ भावथीरे लाल । ध्यान कीयां सुख पांमरे ॥ भ० ॥ वी० ॥ ३ ॥ प्रथम अनादी कालमेंरे लाल । अनंत सीधा इहां आयरे ॥ भ० ॥ अनंत साधु वलि सीधसीरेलाल । प्रणमुं ए गिरिरायरे ॥ भ० ॥ वी० ॥ ४ ॥ फागुण सुदि दशमी दिनें रे लाल । पुरव निनांणुं वाररे ॥ भ० ॥ आदि जिणंद समोसर्योरे लाल । चरण नमुं सुखकाररे ॥ भ० ॥ वी० ॥ पुंडरीक गणधर नमुंरे लाल । पंचकोडि मुनिसाथरे ॥ भ० ॥ चैत्री पुनम दिन आयनेंरे लाल । झाली शिवपुर वा

थरे ॥ ज० ॥ वी० ॥ ६ ॥ नमि विनमि दोदो कोमसें रे लाल । इणगिरि कीनो वासरे ॥ ज० ॥ फागुण सुद दसमी दिनें रे लाल । अविचल ज्योति प्रकाशरे ॥ ज० ॥ ७ ॥ नमि पुत्री चौसठ कही रे लाल । अणशण लही शिव पायरे ॥ ज० ॥ द्रावड संग काती पूनमें रे लाल । दसकोमि सीधा इहां आयरे ॥ ज० ॥ वी० ॥ ८ ॥ राम जरत पांमव कह्यारे लाल । वलि नारद नव आयरे ॥ ज० ॥ थावचा सेलग मुनी रे लाल । जालि मयाली शिव पायरे । ज० ॥ वी० ॥ ९ ॥ अजित शांति चौमासो रह्यारे लाल । जविजीवां हित काजरे ॥ ज० ॥ नेम विना सहु आवियारे लाल । एशिव पुरनी पाजरे । ज० ॥ वी० ॥ १० ॥ साधु अनंता प्रतिकंकरे रे लाल । सीधा ध्यान लगायरे ज० ॥ मनमोहन गिरि सेवतां रे लाल । पातिक दूर पुलायरे ॥ ज० ॥ वी० ॥ ११ ॥ (दुहाः) ॥ करजोमी नितप्रतिनमुं । सहू साधु मनजाय । सेत्रुंज महातम ग्रन्थसें । जेद सुणो चितलाय ॥ १ ॥ जरता दिकसें आजलग सोले उद्धार कहाय । ग्रंथान्तर में जेहना । जेद कह्या समजाय ॥ २ ॥ संप्रतिकाले एरह्यो । षोडसमो उद्धार । करमचंद मोसी तणो । जशरह्यो जग विस्तार ॥ ३ ॥ देव जुवन जिम सोजता । नववसि चैत्यना जाव । सुरपति नरपति सहुनमें । प्रगट्यां आतमदाव ॥ ४ ॥ सहु बिंबनी संख्या कहुं । जेनव वसिमें होय । मूलनायक वसिनांममें । प्रगट कहुं हुं जोय ॥ ५ ॥ (ढाल३) ॥ ❀ ॥ नमोरे नमो सेत्रुंजगिरीरे । (ए चाल) ॥❀॥ प्रणमुं ए गिरिरायनेंरे । धन्य दिवस थयो आजरे । सुमतानें सुपसायथीरे । मनवंछित फल्या काजरे ॥ १ ॥ प्र० ॥ प्रथम विमल वसि आयनेंरे । पूज्या जिनप्रति बिंबरे । सहु चैत्यामें सोजतारे । छप्पनसै छप्पन बिंबरे ॥ २ ॥ प्र० ॥ नाजिराय सुत जाणियेंरे । मूल नायक छवि शांतिरे । मोतीवसीमें बिंबरह्यारे । पचवीशसें वयालीस कांतिरे ॥ ३ ॥ प्र० ॥ बालावसिमें सोजतारे । च्यारसें पट्ट बिंबजाणरे । मूलनायक दोनुं वसीतणारे । आदिनाथ गुणखांणरे ॥ ४ ॥ प्र० ॥ अद्भुत बिंब मनोहरुरे । इग्यारें कर ऊंचो जाणरे । विस्तारमांन नवहाथनोरे । मुक्त छत्र जिम प्राणरे ॥ ५ ॥ प्र० ॥ चौथी प्रेमावसि हुं नमुंरे । आदिनाथ जगनाथरे । पांचसें अम्तीश जिहां रह्यारे । बिंब मिल्यां सहु साथरे ॥ प्र०

॥ ६ ॥ अजितनाथ स्वामी तणी रे । पांचमी हेमावसि थायरे । अमसठ ऊपर तीनसेरे । बिंबनसुं गुण गायरे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ ऊजमवसी छठी जांणियेरे पद्मप्रभु जगत्रांणरे । रिखभानन चंद्राननेरे । वारिखेण वधमांनरे ॥ ८ ॥ प्र० ॥ बावन जिनांला सास्वतारे । चौमुख नंदीसर भावरे । च्यारसे गुणती श सोभतारे । बिंब अनोपम रावरे ॥ ९ ॥ प्र० ॥ मूलनायक पार्श्व प्रभुत णी रे । प्रतिमा साकरवसि मांयरे । ओर तयांसी बिंबछेरे । नयणेदीठां सुख पायरे ॥ १० ॥ प्र० ॥ आदिनाथ छीपावसीरे । बीशबिंब सुविसालरे । नव मी खरतरवसि बिंबनी रे । ओपमा रविजिम भालरे ॥ ११ ॥ प्र० ॥ आदी शर चौमुख तणीरे । प्रतिमा चार सुख दायरे । ओर बिंब तेवीशसेरे । पंच दश देष्यां मनभायरे ॥ १२ ॥ प्र० ॥ बारे सहस त्रिणसे ऊपररे । अठाव न वलि होयरे । इम नववसि सहु बिंबनी रे । संख्या कहीमें जोयरे ॥ १३ ॥ प्र० ॥ पांन्डव मंदर जाणियें रे । मरुदेवी टुंक सुखकाररे । शाशनदेवीनी मंद री रे । नेमचवरी धर्मद्वाररे ॥ १४ ॥ प्र० ॥ रायण तल पगलानसुंरे । गणधर मंदर जायरे । चवदेसे बावन तणारे । नित नित प्रणमुं पायरे ॥ १५ ॥ पुं डरीक छबिमोहनीरे । देष्यां मनवस थायरे । भीमकुंड सुविमल भर्योरे । सूर्यकुंड जलनायरे ॥ १६ ॥ प्र० ॥ त्रिण पद बारे गाऊनीरे । भमती देवं तीनरे । उलखा झोल दरशण करीरे । सिद्धशिला सिद्धथांणरे ॥ १७ ॥ प्र० ॥ चेलणा तलाई सोभतीरे । अजित शांति थुंभ आतरे । भाम्बाडूंगर हस्त गिरीरे । कदमगिरी कीर्तीजातरे ॥ १८ ॥ प्र० ॥ इत्यादिक दरशण करीरे । सिद्धवड सेवुं आयरे । अगिणत चरण प्रभूतणारे । नमणकरुं मन लायरे ॥ १९ ॥ प्र० ॥ देवपुरी जिम सोभतीरे । सूंगार अनिहि विसालरे । सहुज नपदना जात्रवीरे । पूजे सहम मिल भालरे ॥ २० ॥ प्र० ॥ इम सिद्धगि रि मन लायनेंरे । त्रिकरण नमुं त्रिहुं कालरे । ओर नमुं सहु भव्यनेंरे । जे शुध आग्या पालरे ॥ २१ ॥ प्र० ॥ प्रतिदिन एगिरवर चढीरे । अष्टद्रव्य लेई हाथरे । द्रव्य भाव पूजा करैरे । मोहन सहु जगनाथरे ॥ २२ ॥ प्र० ॥ ॥ ॐ ॥ (दुहा) ॥ इण परि संख्या बिंबनी । करि आनम सुखदाय । अधि क बिंब कोइ थापसी । नमसुं चित्त लगाय ॥ १ ॥ मंदबुद्धि संयोगसें । रही

होय कबु नूल । तोपिण ओगुण ढांककें । संघ हुवै अनुकूल ॥ २ ॥ प्रबल पुन्य संयोगसें । मुझ सरिया सबकाज । दरसण पायो गिरितणो । पाम्योजग जश आज ॥ ३ ॥ दान शील तप नावना । नेद धरमना च्यार । नावविनां सहु ढारसम । नाव सहु सुखत्यार ॥ ४ ॥ जिन प्रतिमा जिन सारखी । नग वन् वचन प्रमाण । नाव धरी प्रनु पूजतां । लहिये सुख निर्वाण ॥ ५ ॥ शिव सुखसें वेमुखजिके । मिथ्या दृष्टी जीव । जिन प्रतिमा नुथापकर बांधे नवनी नीव ॥ ६ ॥ धन्य दिवश जे जगमें । मुझ आवे शुन नाव । मन वंढित सुख जब मिले । प्रगटै निज गुण दाव ॥ ७ ॥ चिंतामणि सुरत रुसमो । एतीरथ सुखकार । दिनप्रति गुणकोंसमरके । पामुं नवजल पार ॥८॥ (ढाल) सेत्रुंजसाधु अनंतासीधा (इस चालमे) एतीरथनी अद्भुत महमा । धारो चित्तमझाररे । पंचप्रमाद विषय सुखढंमी । नेटो गिरि सुखकाररे । एती०॥१॥ मनुषा जन्म पायके जेनवि । नेटै नहिं गिरि एहरे । तेनर गरनावासे कहिये पशुसम गिणती तेहरे ॥ ए० ॥ २ ॥ जो तीरथनी महिमा सुणके । नुथापे निज बुद्धिरे । ते नर काल अनंतो नमसी । डुर्लन पांमें सिद्धरे ॥ ए० ॥ ३ ॥ इम जांणी मन नावधरीनें । नवि मिल आवेधायरे । ढहरी संयुत गिरकुं सेवे । प्रात झठ मन नायरे ॥ ए० ॥ ४ ॥ इह नव परनव मांहेकीधा । जे नर पाप अघोररे । ते इण गिरके फरसण सेती । दूरहोय सहु चोररे ॥ ए० ॥ ५ ॥ रोग सोग सहुनांमें नासे । तूटे करम कठोररे । डुष्ट देव देवी कामण सहु । नागे तीरथ जोररे ॥ ए० ॥ ६ ॥ आलोयण लेई प्रनु साखे । पापमेल सहु धोयरे । खिणमें निजगुण नुज्वलपांमें । रजक दृष्टांत तुं जोयरे ॥ ए० ॥७॥ समकित धारी जे सुरवरनी । थापनारही इहां जोयरे । धर्मबंधव जाणी वसुद्रव्ये । पूजा करे सहु कोयरे ॥ ए० ॥ ८ ॥ देव सहाये सहु संघमांहे । आनंद मंगल होयरे । ईत नुपद्रव नय नहिंव्यापे । डुख दालिद्र सहु खोयरे ॥ ए० ॥ ९ ॥ तीरथ यात्रा कर तीरथनी । नगति करो मन शुद्धरे । तीर्थंकर पिण तीर्थनमीनें । देनुपदेश सुबुद्धिरे ॥ ए० ॥१०॥ निज निज शक्ति प्रमाणें जेनवि । सेलखेत्र निज वित्तरे । खरचे निज मन नाव धरीनें । पांमें सहु जगकित्तरे ॥ ए० ॥ ११ ॥ जिम तीरथ गुण गुरु मुख सुणिया । परतिख पांम्या आजरे । इण विध विंबचरण म

हु वंदी । सारथ्या आतम काजरे ॥ ए० ॥ १२ ॥ धन ए चैत्री पूनम दिवशें मन उगणीसे तीशरे । धन्यघडी धन्यवेला एहीज । पाम्यां त्रिभुवन ईशरे॥ए० ॥ १३ ॥ दीन दयाल दया निध उत्तम । रिषभदेव जिनरायरे । एहीजदेवरह्या त्रिभुवनमें । मोहनगुणनां दायरे ॥ ए०॥१४॥(दुहाः) ॥ करजोडी वीनतिकरुं सुणोगरीबनिवाज । कर्म भवन दूरेकरी । दीजे त्रिभुवन राज ॥ १ ॥ मोसे अधम संसारमें । कर्म सवन वस होय । तप जप संयम नहिपले । किमपांमुं पद तोय ॥२॥ जे तुमरी आग्याधरे । तेहनें दोजगराज । एहमें प्रभु अचरज नहि । अचरज मुझनें काज॥ ३ ॥ शशिगुण माहरोदेखके । खमिये सहु अपराध । तुं मरा वचन हियेवस्या । अचल अमृत रस स्वाद ॥ ४ ॥ तीन तत्व चोलरंगसें । रंगाणी मुझदेह । अबमिथ्यात पतंगको । रंगचढे नहि रेह ॥ ५ ॥ तुम सहाये जोमाहरो । चेतन निजगुणपाय । तो अविचल आग्याधरुं । तन मन वचन लगाय ॥ ६ ॥ इम वीनति प्रभुनी करी । समकित निरमल काज । द्रव्य क्षेत्र काल भाव विन । मिलेन शिवपुर राज ॥ ७ ॥ रत्न जडित सिंहासणें । रयण आभूषण सार । अद्भुत रथ बेठे प्रभु । उछव करे नर नार ॥ ८॥

(ढाल)॥ आज महोछव रंगरलीरी (इस चालमें)। आज उछवदिन मुझमन भायो ॥ आ०॥ संघसहु मिल गावे वधाई । रथ बेठा सोहे जिन रायो ॥ आ०॥ ॥ १ ॥ वीणा मृदंग ताल कंसाला । मधुर ध्वनी अंबर रहिछायो ॥ आ०॥२॥ मुर्शिदाबाद पूरब दिश छाजे । अजीमगंज गंगापार वसायो॥ आ० ॥३॥ बुध सिंह विसनचंद मिलभाई । गोत्र दुधेड्या मांय कहायो ॥ आ० ॥ ४ ॥ गिरि महमासुण भाव धरीनें । विधसें यात्र करी सुखपायो ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुन्य संयोग मिल्यो मोय सजनी । आनंद दायक संघ सवायो ॥ आ० ॥ ६ ॥ आज अंगणमोय सुरतरु फलियो । दुखदालिद्र सहु दूरगमायो ॥ आ० ॥ ७ ॥ आजमनोरथ सहु मुझ फलिया । आज आनंद मंगल वरतायो ॥ आ०॥८॥ गुरु खरतर जिन आग्या पालक । सोहे हंससूरि महारायो ॥ आ० ॥ ९ ॥ पाठक पद ज्ञायक गुणसोभित । सुखराज प्रमोद चेतन गुण पायो ॥ आ० ॥१०॥ विद्या विशाल वाचक सुखदायक । पंडित लक्ष्मी प्रधानपसायो ॥ आ०॥११॥ नासुशीश मोहन हित जांणी । उत्तम ए तीरथ गुणगायो ॥ आ० ॥ १२ ॥

होय कठु नूल । तोपिण ओगुण गंमके । संघ हुवै अनुकूल ॥ २ ॥ प्रबल पुन्य संयोगसें । मुझ सरिया सबकाज । दरसण पायो गिरितणो । पाम्योजग जश आज ॥ ३ ॥ दान शील तप नावना । नेद धरमना च्यार । नावविनां सहु गारसम । नाव सहु सुखत्यार ॥ ४ ॥ जिन प्रतिमा जिन सारखी । नग वन् वचन प्रमाण । नाव धरी प्रनु पूजतां । लहिये सुख निर्वाण ॥ ५ ॥ शिव सुखसें वेमुखजिके । मिथ्या दृष्टी जीव । जिन प्रतिमा उत्थापकर बांधे नवनी नीव ॥ ६ ॥ धन्य दिवश जे जगमें । मुझ आवे शुन नाव । मन वंछित सुख जब मिले । प्रगटै निज गुण दाव ॥ ७ ॥ चिंतामणि सुरत रुसमो । एतीरथ सुखकार । दिनप्रति गुणकोंसमरके । पामुं नवजल पार ॥८॥ (ढाल) सेत्रुंजसाधु अनंतासीधा (इस चालमे) एतीरथनी अद्भुत महमा । धारो चित्तमझाररे । पंचप्रमाद विषय सुखछंमी । नेटो गिरि सुखकाररे । एती०॥१॥ मनुषा जन्म पायके जेनवि । नेटै नाहिं गिरि एहरे । तेनर गरनावासै कहिये पशुसम गिणती तेहरे ॥ ए० ॥ २ ॥ जो तीरथनी महिमा सुणके । उत्थापे निज बुद्धिरे । ते नर काल अनंतो नमसी । डुर्लन पामें सिद्धरे॥ ए० ॥ ३ ॥ इम जांणी मन नावधरीनें । नवि मिल आवेधायरे । छहरी संयुत गिरकुं सेवे । प्रात उठ मन नायरे ॥ ए० ॥ ४ ॥ इह नव परनव मांहेकीधा । जे नर पाप अघोररे । ते इण गिरके फरसण सेती । दूरहोय सहु चोररे ॥ ए० ॥ ५ ॥ रोग सोग सहुनांमें नासे । तूटै करम कठोररे । डुष्ट देव देवी कामण सहु । नागे तीरथ जोररे ॥ ए० ॥ ६ ॥ आलोयण लेई प्रनु साखे । पापमेल सहु धोयरे । छिणमें निजगुण उज्वलपांमें । रजक दृष्टांत तुं जोयरे ॥ ए० ॥७॥ समकित धारी जे सुरवरनी । थापनारही इहां जोयरे । धर्मबंधव जाणी वसुद्रव्ये । पूजा करे सहु कोयरे ॥ ए० ॥ ८ ॥ देव सहाये सहु संघमांहे । आनंद मंगल होयरे । ईत उपद्रव नय नहिंव्यापे । डुख दालिद्र सहु खोयरे ॥ ए० ॥ ९ ॥ तीरथ यात्रा कर तीरथनी । नगति करो मन शुद्धरे । तीर्थंकर पिण तीर्थनमीनें । देउपदेश सुबुद्धिरे ॥ ए० ॥१०॥ निज निज शक्ति प्रमाणें जेनवि । सप्तखेत्र निज वित्तरे । खरचे निज मन नाव धरीनें । पामें सहु जगकित्तरे ॥ ए० ॥ ११ ॥ जिम तीरथ गुण गुरु मुख सुणिया । परतिख पांम्या आजरे । इण विध विनचरण म

हु वंदी । सारया आतम काजरे ॥ ए० ॥ १२ ॥ धन ए चैत्री पूनम दिवशै मन उगणीसे तीशरे । धन्यघमी धन्यवेला एहीज । पाम्यां त्रिभुवन ईशरे॥ए० ॥ १३ ॥ दीन दयाल दया निध उत्तम । रिषनदेव जिनरायरे । एहीजदेवरह्या त्रिभुवनमें । मोहनगुणनां दायरे ॥ ए०॥१४॥(दुहाः) ॥ करजोमी वीनतिकरुं सुणोगरीबनिवाज । कर्म भवन दूरेकरी । दीजे त्रिभुवन राज ॥ १ ॥ मोसे अधम संसारमें । कर्म सघन वस होय । तप जप संयम नहिपले । किमपांमुं पद तोय ॥२॥ जे तुमरी आग्याधरे । तेहनें दोजगराज । एहमें प्रनु अचरज नहि। अचरज मुऊनें काज॥ ३ ॥ शशिगुण माहरोदेखके । खमिये सहु अपराध । तुं मरा वचन हियेवस्या । अचल अमृत रस स्वाद ॥ ४ ॥ तीन तत्व चोलरंगसें। रंगाणी मुऊदेह । अवमिथ्यात पतंगको । रंगचढे नहि रेह ॥ ५ ॥ तुम सहाये जोमाहरो । चेतन निजगुणपाय । तो अविचल आग्याधरुं । तन मन वचन लगाय ॥ ६ ॥ इम वीनति प्रनुनी करी । समकित निरमल काज । द्रव्य क्षेत्र काल नाव विन । मिलेन शिवपुर राज ॥ ७ ॥ रत्न जमित सिंहासणों । रयण आनूषण सार । अद्नुत रथ बैठे प्रनु । उछव करे नर नार ॥ ८॥ (ढाल)॥ आज महोछव रंगरलीरी (इस चालमे)। आज उछवदिन मुऊमन नायो ॥ आ०॥ संघसहु मिल गावे वधाई । रथ बैठा सोहे जिन रायो ॥ आ०॥ ॥ १ ॥ वीणा मृदंग ताल कंसाला । मधुर ध्वनी अंबर रहिछायो ॥ आ०॥२॥ मुर्शिदावाद पूरव दिश छाजे । अजीमगंज गंगापार वसायो ॥आ० ॥३॥ बुध सिंह विसनचंद मिलनाई । गोत्र दुधेड्या मांय कहायो ॥ आ० ॥ ४ ॥ गिरि महमासुण नाव धरीनें । विधसें यात्र करी सुखपायो ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुन्य संयोग मिल्यो मांय सजनी । आनंद दायक संघ सवायो ॥ आ० ॥ ६ ॥ आज अंगणमोय सुरतरु फलियो । दुखदालिद्र सहु दूरगमायो ॥ आ० ॥ ७ ॥ आजमनोरथ सहु मुऊ फलिया । आज आनंद मंगल वरतायो ॥ आ०॥८॥ गुरु खरतर जिन आग्या पालक । सोहे हंससूरि महारायो ॥ आ० ॥ ९ ॥ पाठक पद लायक गुणसोनिन । सुगुण प्रमोद चेतन गुण पायो ॥ आ० ॥१०॥ विद्या विशाल वाचक सुखदायक । पंमित लक्ष्मी प्रधानपसायो ॥ आ०॥११॥ तासुशीश मोहन हित जांणी । उत्तम ए सौभग्य गुणगायो ॥ आ० ॥ १२ ॥

होय कटु चूल । तोपिण ओगुण गांमके । संघ हुवै अनुकूल ॥ २ ॥ प्रबल पुन्य संयोगसें । मुझ सरिया सबकाज । दरसण पायो गिरितणो । पाम्योजग जश आज ॥ ३ ॥ दान शील तप भावना । भेद धरमना च्यार । भावविनां सहु गारसम । भाव सहु सुखत्यार ॥ ४ ॥ जिन प्रतिमा जिन सारखी । भग वन् वचन प्रमाण । भाव धरी प्रभु पूजतां । लहिये सुख निर्वाण ॥ ५ ॥ शिव सुखसें वेमुखजिके । मिथ्या दृष्टी जीव । जिन प्रतिमा उथापकर बांधे भवनी नीव ॥ ६ ॥ धन्य दिवश जे जगमें । मुझ आवे शुभ भाव । मन वंछित सुख जब मिले । प्रगटै निज गुण दाव ॥ ७ ॥ चिंतामणि सुरत रुसमो । एतीरथ सुखकार । दिनप्रति गुणकोंसमरके । पामुं भवजल पार ॥८॥ (ढाल) सेत्रुंजसाधु अनंतासीधा (इस चालमे) एतीरथनी अद्भुत महमा । धा रो चित्तमझाररे । पंचप्रमाद विषय सुखछंडी । भेटो गिरि सुखकाररे । एती०॥१॥ मनुषा जन्म पायके जेभवि । भेटै नाहिं गिरि एहरे । तेनर गरभावासे कहिये पशुसम गिणती तेहरे ॥ ए० ॥ २ ॥ जो तीरथनी महिमा सुणके । उत्थापे निज बुद्धिरे । ते नर काल अनंतो भमसी । दुर्लभ पांमें सिद्धरे॥ ए० ॥ ३ ॥ इम जां णी मन भावधरीनें । भवि मिल आवेधायरे । ढहरी संयुत गिरकुं सेवे । प्रात ऊठ मन भायरे ॥ ए० ॥ ४ ॥ इह भव परभव मांहेकीधा । जे नर पाप अघोररे । ते इण गिरके फरसण सेती । दूरहोय सहु चोररे ॥ ए० ॥ ५ ॥ रोग सोग स हुनांमें नासे । तूटै करम कठोररे । दुष्ट देव देवी कामण सहु । भागे तीरथ जो ररे ॥ ए० ॥ ६ ॥ आलोयण लेई प्रभु साखे । पापमेल सहु धोयरे । छिणमें निजगुण उज्वलपांमें । रजक दृष्टांत तुं जोयरे ॥ ए० ॥७॥ समकित धारी जे सुरवरनी । थापनारही इहां जोयरे । धर्मबंधव जाणी वसुद्रव्ये । पूजा करे स हु कोयरे ॥ ए० ॥ ८ ॥ देव सहाये सहु संघमांहे । आनंद मंगल होयरे । ईत उपद्रव भय नहिंव्यापे । दुख दालिद्र सहु खोयरे ॥ ए० ॥ ९ ॥ तीरथ यात्रा कर तीरथनी । भगति करो मन शुद्धरे । तीर्थंकर पिण तीर्थनमीनें । देउपदेश सुबु द्धिरे ॥ ए० ॥१०॥ निज निज शक्ति प्रमाणें जेभवि । सेत्रखेत्र निज वित्तरे । ख रचे निज मन भाव धरीनें । पांमें सहु जगकित्तरे ॥ ए० ॥ ११ ॥ जिम ती रथ गुण गुरु मुख सुणिया । परतिख पांम्या आजरे । इण विध त्रिवचरण म

हु वंदी । सारया आतम काजरे ॥ ए० ॥ १२ ॥ धन ए चैत्री पूनम दिवशे मन उगणीसे नीशरे । धन्यघकी धन्यवेला एहीज । पाम्यां त्रिभुवन ईशरे॥ए० ॥ १३ ॥ दीन दयाल दया निध उत्तम । रिषभदेव जिनरायरे । एहीजदेवरह्या त्रिभुवनमें । मोहनगुणनां दायरे ॥ ए०॥१४॥(दुहाः) ॥ करजोमी वीनतिकरुं सुणोगरीवनिवाज । कर्म सघन दूरेकरी । दीजे त्रिभुवन राज ॥ १ ॥ मोसे अधम संसारमें । कर्म सघन वस होय । तप जप संयम नहिपले । किमपांमुं पद तोय ॥२॥ जे तुमरी आग्याधरे । तेहनें दोजगराज । एहमें प्रभु अचरज नहि । अचरज मुझनें काज ॥ ३ ॥ शशिगुण माहरोदेखके । खमिये सहु अपराध । तुं मरा वचन हियेवस्या । अचल अमृत रस स्वाद ॥ ४ ॥ तीन तत्व चोलरंगसें । रंगाणी मुझदेह । अवमिथ्यात पतंगको । रंगचढे नहि रेह ॥ ५ ॥ तुम सहाये जोमाहरो । चेतन निजगुणपाय । तो अविचल आग्याधरुं । तन मन वचन लगाय ॥ ६ ॥ इम वीनति प्रभुनी करी । समकित निरमल काज । द्रव्य क्षेत्र काल भाव बिन । मिलेन शिवपुर राज ॥ ७ ॥ रत्न जमित सिंहासणें । रयण आभूषण सार । अद्भुत रथ बैठे प्रभु । उछव करे नर नार ॥ ८॥ (ढाल)॥ आज महोछव रंगरलीरी (इस चालमे)। आज उछवदिन सुझमन भायो ॥ आ०॥ संघसहु मिल गावे वधाई । रथ बैठा सोहे जिन रायो ॥ आ०॥ ॥ १ ॥ वीणा मृदंग ताल कंसाला । मधुर ध्वनी अंबर रहिछायो ॥ आ०॥२॥ मुर्शिदावाद पूरव दिश छाजे । अजीमगंज गंगापार वसायो ॥ आ० ॥३॥ बुध सिंह बिसनचंद मिलभाई । गोत्र दुधेड्या मांय कहायो ॥ आ० ॥ ४ ॥ गिरि महमागुण भाव धरीनें । विधसें यात्र करी सुखपायो ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुन्य संयोग मिल्यो मोय सजनी । आनंद दायक संघ सवायो ॥ आ० ॥ ६ ॥ आज अंगणमोय सुरतरु फलियो । दुखदालिद्र सहु दूरगमायो ॥ आ० ॥ ७ ॥ आजमनोरथ सहु मुझ फलिया । आज आनंद मंगल वरतायो ॥ आ०॥८॥ गुरु खरतर जिन आग्या पालक । सोहे हंससूरि महारायो ॥ आ० ॥ ९ ॥ पाठक पद लायक गुणगोभिन । सुगुण प्रमोद चेतन गुण पायो ॥ आ० ॥१०॥ विद्या विशाल वाचक सुखदायक । पंडित लक्ष्मी प्रधानपसायो ॥ आ०॥११॥ तासुशीष मोहन हित जांणी । उत्तम ए तीरथ गुणगायो ॥ आ० ॥ १२ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ भावधर धन्य दिन आज सफलो गिएयो। आजमें सजनि आनंद पायो ॥ भा० ॥ हर्ख धरि निजरि भरि विमलगिर निरखकर। रजत माणि कनक मोतिय वधायो ॥ भा० ॥ १ ॥ पग पगै उमगधर पंथनित पूलतां। धन्य दोय चरण जिहां तलक आयो। आज धनदीह जागी सुकृतकी दिशा। आज धनदीह दिन सुजश गायो ॥ भा० ॥ २ ॥ दूर दुरगत टलिय यात्र विधसुं करी। पुन्य भंमार पोतै भरायो। वदत जिनराज मनरंग सुरगिर सिखर। रिषभ जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ भा० ॥ ३ ॥

॥ इति सिद्धगिरी स्तवनं ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

इति कार्त्तिक माश चतु पर्वाधिकारः ॥ ८ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ मार्गशीर्ष माश पर्वाधिकार लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ मिगसर महिनेमें मिती मिगसर सुद ११ (सो) मोन इग्यारस नामसें पर्व प्रसिद्ध है। इस दिन देढसै कल्याणक हुये (सो लिखते हैं) जन्म। दिक्षा। केवलज्ञान। यह। तीन कल्याणक। श्रीमल्लिनाथ स्वामीके हुये। श्री अरनाथ स्वामीनें दिक्षा अंगीकार करी ॥ श्रीनमिनाथ स्वामीनें केवल ग्यान उत्पन्न भयो। (ऐसें) इस भरतक्षेत्रमें वर्त्तमान चोवीशीके पांच कल्याणक हुए (इसी माफक) पांच भरत। पांच ऐरवतमें। चौवीशीके पांच२ कल्याणकमिलानेंसें। पचास कल्याणक हुये अतीत। अनागत। वर्त्तमान। कालके अपेक्षायें। दैढसे कल्याणक हुये। इसीसें यह दिन वडा उत्तम हे (इस दिन) मोन संयुक्त उपवास करै। अठपहरी पोसो करके। मोन इग्यारसको गुणनो करै। पोशहकी शक्ति न होय (तो) देशावगासी लेके गुणनो करै। (एसें) इग्यारे वरशमें इग्यारे उपवास करै। ओर (जो) इग्यारस करनेंकी इछा हो (तो) माशमें वद सुदकी। दोनुं एकादशी। इग्यारे वरश, इग्यारे महिनां करै। यह तपस्या करतां इग्यारे अंग शुद्धभावसें सुणें। इग्यारे अंग लिखायके देवै। पढनें वालूं का सहाय्य करै। तपस्या ग्रहण करनेंको (पारनेंको) गुरूके मुखसें विधि करै। यथा शक्ति आगम पूजा साहमी वछल करै ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ मोन एकादशीको गुणनो लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे अतीत २४ जिनपंच कल्याणक नामः ॥ ❀ ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम ॥ ❀ ॥

४ ॥ श्रीमहायश सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्रीसर्वानुभूति अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीसर्वानुभूतिनाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीसर्वानुभूतिसर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री श्रीधरनाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे वर्तमान २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ❀ ॥ २ ॥

२१ ॥ श्रीनमि सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्री मल्लि अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्री मल्लिनाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्री मल्लि सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्री अरिनाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे अनागत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ❀ ॥ ३ ॥

४ ॥ श्री स्वयंप्रभु सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री देवश्रुत अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री देवश्रुत नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री देवश्रुत सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री उदय नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकीखंडे पूर्वभरते अतीत २४ जिन पंचकल्याणक नामः ॥ ❀ ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ द्वितीय ॥ ❀ ॥

४ ॥ श्रीअकलंक सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्रीसुभंकर अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीसुभंकरनाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीसुभंकर सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीसप्तनाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकीखंडे पूर्वभरते वर्त्तमान २४जिनपंच कल्याणक नामः ॥ ❀ ॥ ५ ॥

२१ ॥ श्री ब्रह्मेंद्र सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्री गुणनाथ अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्री गुणनाथ नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्री गुणनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्री गांगिलनाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकी खंडे पूर्वभरते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥ ❀ ॥ ६ ॥

४ ॥ श्री सांप्रति सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री मुनिनाथ अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री मुनिनाथ नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री विशिष्ट नाथाय नमः ॥

॥ ❋ ॥ पुष्करार्द्धपूर्वभरते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ❋ ॥ ७ ॥

॥ प्रथम ॥

४ ॥ श्रीमृदु सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्रीव्यक्त अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीव्यक्त नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीव्यक्त सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीकलाशत नाथाय नमः ॥

॥ ❋ ॥ पुष्करार्द्ध पूर्वभरते वर्त्तमान २४ जिनपंच कल्याणक० ॥ ❋ ॥ ८ ॥

२१ ॥ श्रीअरण्यवास सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्री योगनाथ अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्री योगनाथ नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्री योगनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्री अयोग नाथाय नमः ॥

॥ ❋ ॥ पुष्करार्द्ध पूर्वभरते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥ ❋ ॥९॥

४ ॥ श्री परमसर्वज्ञाय नमः ।
६ ॥ श्री शुद्धार्त्ति अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री शुद्धार्त्ति नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री शुद्धार्त्ति सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री निष्केश नाथाय नमः ॥

॥ ❋ ॥ धातकीखंडे पश्चिमभरते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥ ❋ ॥ १० ॥

॥ द्वितीय ॥

४ ॥ श्रीसर्वार्थ सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्रीहरिचन्द्र अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीहरिचन्द्र नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीहरिचन्द्र सर्वज्ञाय नमः॥
७ ॥ श्रीमगधाधि नाथाय नमः ॥

॥ ❋ ॥ धातकीखंडे पश्चिमभरते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥ ❋ ॥ ११ ॥

२१ ॥ श्रीप्रयच्छ सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्री अक्षोभ अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्री अक्षोभ नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्री अक्षोभ सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्री मल्लि सिंह नाथाय नमः ॥

॥ ❋ ॥ धातकीखंडे पश्चिमभरते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ❋ ॥ १२ ॥

४ ॥ श्री आदिकर सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री धनद अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री धनद नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री धनद सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री पौष नाथाय नमः ॥

॥ ॐ ॥ पुष्करार्द्ध पश्चिमऐरवते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ॐ ॥ १३ ॥

॥ प्रथम ॥

४ ॥ श्री सर्वसर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री चारित्रनिधि अर्हतेनमः ॥
६ ॥ श्री चारित्रनिधि नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री चारित्रनिधि सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री प्रशमजिन नाथाय नमः ॥

॥ ॐ ॥ पुष्करार्द्ध पश्चिमऐरवते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ॐ ॥ १४ ॥

२१ ॥ श्री स्वामि सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्री विपरीत अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्री विपरीत नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्री विपरीत सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्री प्रसाद नाथाय नमः ॥

॥ ॐ ॥ पुष्करार्द्ध पश्चिमऐरवते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ॐ ॥ १५ ॥

४ ॥ श्री अघटित सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री भ्रमणेन्द्र अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री भ्रमणेंद्र नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री भ्रमणेन्द्र सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीऋषभचन्द्र नाथाय नमः ॥

॥ ॐ ॥ जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे अतीत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ॐ ॥ १६ ॥

॥ द्वितीय ॥

४ ॥ श्री दयांतसर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री अभिनंदन अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री अभिनंदन नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री अभिनंदन सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री रत्नेश नाथाय नमः ॥

॥ ॐ ॥ जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥ ॐ ॥ १७ ॥

२१ ॥ श्री शामकोष्ट सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्री मरुदेव अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्री मरुदेव नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्री मरुदेव सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्री अतिपार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ ॐ ॥ जंबूद्वीपे ऐरवत क्षेत्रे अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नामः ॥ ॐ ॥ १८ ॥

४ ॥ श्री नंदिषेण सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री व्रतधर अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री व्रतधर नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री व्रतधर सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीनिर्वाण नाथाय नमः ॥

॥ ❋ ॥ धातकीखंडे पूर्वऐरवते अतीत २४ जिन पञ्च कल्याणक नामः ॥ ❋ ॥ १९ ॥

॥ प्रथमः ॥

४ ॥ श्री सौदय सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री त्रिविक्रम अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री त्रिविक्रम नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री त्रिविक्रम सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री नारसिंह नाथाय नमः ॥

॥ ❋ ॥ धातकीखंडे पूर्वऐरवते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक नामः॥ ❋ ॥२०॥

२१ ॥ श्री खेमन्त सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्री संतोषित अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्री संतोषित नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्री संतोषित सर्वज्ञाय नमः॥
१८ ॥ श्री काम नाथाय नमः ॥

॥ ❋ ॥ धातकीखंडे पूर्वऐरवते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ❋ ॥ २१ ॥

४ ॥ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री चन्द्रदाह अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री चन्द्रदाह नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री चन्द्रदाह सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री दिलादित्य नाथाय नमः॥

॥ ❋ ॥ पुष्करार्द्ध पूर्व ऐरवते ॥ अतीत २४ जिन पंचकल्याणक नामः ॥ ❋ ॥ २२॥

॥ द्वितीय ॥

४ ॥ श्री अष्टाहिकसर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री वणिक अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री वणिक नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री वणिक सर्वज्ञाय नमः ॥
७॥ श्री उदयज्ञान नाथाय नमः ॥

॥ ❋ ॥ पुष्करार्द्ध पूर्वऐरवते वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक० ॥ ❋ ॥ २३ ॥

२१ ॥ श्रीतमोकन्दन सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्री सायकाक्ष अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्री सायकाक्ष नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्री सायकाक्ष सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्री खेमन्त नाथाय नमः ॥

॥ ❋ ॥ पुषकरार्द्ध पूर्वऐरवते अनागत २४ जिन पंच कल्याणक नमः ॥ २४ ॥

४ ॥ श्री निर्वाण सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री रविराज अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री रविराज नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्री रविराज सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्री प्रथमनाथ नाथाय नमः ॥

॥❀॥ धातकीखंडे पश्चिमऐर-
वते अतीत २४ जिन पंच
कल्याणक० ॥ ❀ ॥ २५ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम ॥ ❀

४ ॥ श्रीपुरूरव सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्रीअवबोध अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्री अवबोध नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीअवबोध सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीविक्रमेंद्र नाथाय नमः ॥

॥❀॥ धातकीखंडे पश्चिम ऐर-
वते वर्त्तमान २४ जिन पंच
कल्याणक नामः ॥❀॥२६॥

२१ ॥ श्रीसुशान्त सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ ॥ श्रीहर अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्रीहर नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्रीहर सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्रीनन्दकेश नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ धातकीखंडे पश्चिमऐर-
वते अनागत २४ जिन पंच
कल्याणक नामः ॥ २७ ॥

४ ॥ श्रीमहामृगेन्द्र सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्रीअमोचित अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीअमोचित नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीअमोचित सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीधर्मेन्द्र नाथाय नमः

॥❀॥ पुष्कराद्धे पश्चिमऐरवते
अतीत २४ जिन पंच
कल्याणक नामः ॥ ❀ ॥ २५ ॥

॥ ❀ ॥ द्वितीय ॥ ❀ ॥

४ ॥ श्रीअश्ववृन्द सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्री कुटिल अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीकुटिल नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीकुटिल सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीवर्द्धमान नाथाय नमः ॥

॥❀॥ पुष्कराद्धे पश्चिमऐरवते
वर्त्तमान २४ जिन पंच
कल्याणक० ॥ ❀ ॥ २६ ॥

२१ ॥ श्रीनन्दिक वर्द्धमानाय नमः ॥
१९ ॥ श्रीधर्मचन्द्र अर्हते नमः ॥
१९ ॥ श्रीधर्मचन्द्र नाथाय नमः ॥
१९ ॥ श्रीधर्मचन्द्र सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ ॥ श्रीविवेक नाथाय नमः ॥

॥ ❀ पुष्कराद्धे पश्चिमऐर-
वते अनागत २४ जिन पंच
कल्याणक० ॥ ❀ ॥ ३० ॥

४ ॥ श्रीकल्पाप सर्वज्ञाय नमः ॥
६ ॥ श्रीविमोघ अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीविमोघ नाथाय नमः ॥
६ ॥ श्रीविसोम सर्वज्ञाय नमः ॥
७ ॥ श्रीअरण्य नाथाय नमः ॥

॥ ❀ ॥ इति श्रीमौन एकादशी गुणनो संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एकेक कल्याणक की एकेक माला गुणनेंसें देढसे माला होय (जो) भव्यजीव शुद्ध चित्तसें गुणेंगे (सो) अल्प भवमें अनंत सुखकों प्राप्त होंगे इति मार्गशीर्ष माश पर्वाधिकारः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पोष मास मध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पोष महिनेंमें, मिती पोषवद १० (सो) पोष दसमी नामसें पर्व प्रसिद्ध है। इस दिन श्रीपार्श्वनाथ स्वामीका जन्म कल्याणक है। इसीसें यह दिन श्री संघमें परम आनंदकारी है। इस दिन श्रीपार्श्वनाथ स्वामीको अधिकार सुणें। एकाशणादिकको पच्चक्खाण करे। जहां श्रीपार्श्वनाथ स्वामीके नामसें तीर्थ प्रसिद्ध होय। जहां यात्रा करणें को जावे। कदास यात्रा करनें कों न जाय सकै (तो) जहां श्रीपार्श्वनाथ स्वामी की स्थापना होय। जहां महोत्सव संयुक्त दर्शण करनेंको जावे। जलयात्रादिक महोत्सव करके अष्टोत्तरी स्नात्र करावे (अथवा) पंचकल्याणकजी की (वा) सतर भेदी पूजा करावे। रात्री जागरण करावे। तोरण बांधै। गीत गान नाटकादिकसें अनेक तरे के उत्सव करे (और) जन्म कल्याणकादिक ॥ पाश जिनेसर जगति लोए० ॥ वाणी ब्रह्मा वादनी० ॥ इत्यादिक पार्श्वनाथ स्वामीके गुण गर्भित स्तवन पढै। (वा) सुणें। इसी तरे इस पर्वको सेवन करनेंमें। आधि व्याधि सोग संताप सर्व दूर होंगे। अनेक तरेसें ऋद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकों प्राप्त होंगे ॥ ❀ ॥ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जन्म कल्याणकको स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीचंद्रा प्रभु जिनवर साहब सुणियो० (इस चालमें)। पोश दसम दिन पारश प्रभुको। जन्म भयो सुखदाई। (में वारी जाउं०)। काशी देश बणारसी नगरी। अस्वशेन कुल आई। (में०) वामांउर अवतार लियो है ॥ सहु जीवन गुण दाई ॥ (में) १ ॥ एक सहस अष्टोत्तर लक्षण। अनुपम रूप सुहाई। (में०)। नील वरण छवि तीन ग्यानयुत। पार्श्व प्रभु वरदाई। (में वा०। २। पो०)। नरक जीव पिण छिण सुख पावन। दिश कुमरी मिलआई। (में०) सूतिका कर्म क

री निजथांनक । गई सहु हरख जराई (मेंवा० । ३ । पो०)॥ आशन कंपित सहु सुरवरना । देख ग्यांन भेद पाई । कोरा कोरि देव देवांगना मिल सहु आगल धाई । (मेंवा० पोश०) ४ ॥ सुरपति सक पंच रूपे कर । मेरु सिखर ले जाई । (में०) । स्नात्र महोछव अधिक आनंदसें । बसुविध पूज रचाई । (मेंवा० । ५ । पो०) । बत्तीसबद्ध नाटक प्रनु आगल । तत्ताथेई तान सुणाई । (में०) मात तीन इक्वीश भेद कर । मिष्ट वचन गुण गाई । (मेंवा० । ६ । पो०) । इम उछवकर प्रनुकों लेई । माता पास बैठाई । (में०) । रत्नकुक्षि धारक तूं जगमें । तुंसहु सुर नर माई । (मेंवा० पो०) । ७ । हरखधरी धनधान्य बहुविध । राजरिद्द फैलाई । (में०) नंदीशर अठाई महोछव । करि सहु थानक जाई । (मेंवा० ॥ ८ ॥ पोश०) । अश्वसेन कुलकम आचारे । जन्मउछव अधकाई । ध्वजतोरण वाजित्र बहु विध । मंगलध्वनि वरताई । (मेंवा० पोश०) ॥ ९ ॥ इम प्रनु जन्म कल्याणक दिवसे । सहु संघ हरख वधाई । (में०) लक्ष्मी प्रधान मोहन प्रनुसेवे । अहनिशि ध्यान लगाई । (मेंवा० पो०) । १० ॥ ॐ ॥ इति जन्म कल्याणक स्तवनं ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ श्रीगोडीपार्श्वजिन वृद्धस्तवन लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (दूहा) वाणी ब्रह्मावादनी । जागे जग विख्यात । पासतणा गुण गावतां । सुज सुख वसइ्योमान ॥ १ नांमें अणहलपुर । अहमदा वादे पास । गोडीनो धणी जागतो । सहुनी पूरे आस ॥ २ ॥ शुभ वेला शुभदिन थकी । महुरत एकमंनाण । प्रतिमा ने इह पाशनी । थई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥ ॐ ॥ (ढाल) ॥ ॐ ॥ गुणहि विशाला मंगलीक माला । वामानो सुत साचोजी । धण कण कंचण माणि माणकदे । गोडीनो धणी जाचोजी ॥ ४ ॥ (गु०) अणहलपुर पाटण मांहे प्रतिमा । तुरक तणे घर हूंतीजी । धणुनो नाम धणनो पांटा । धरनी पाति वितूती जी ॥ ५ ॥ (गु०) आगंनो जखलहनें कहिवे । सुहणो तुरकनें आपेजी । पास जिनेसर केरी प्रतिमा । सेवक सुख संतापेजी ॥ ६ ॥ (गु०) प्रह उठीनें पगट करजे । मेघा गोठीनें देजे जी । अधिको मलजे ओछो मलजे । टका पांचसे लेजेनों

॥ ७ ॥ (गु०) नहिं आपिस तो मारीस सुरभीस । मोर बंध बंधास्येजी। पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुझ । लाछ घणी घर जास्ये जी॥८॥(गु०) मारग पहिलो तुझनें मिलस्यै । साहथवाह जे गोठीजी । निलवट टीलो चोखा चे ढ्या । वस्तु वहे तसुपोठी जी ॥९॥ (गु)॥❋॥(दूहा)॥❋॥ मनसुं बीहनो तुरक भो । मांनें वचन प्रमाण । बीबीनें सुहणा तणो । संभलावे सहिनाण ॥ १० ॥ बीबी बोलै तुरकनें । बभा देव है कोइ । अवसताव परगटकरो । नहीं तर मारै सोय ॥ ११ ॥ पाछलीरात परोभीयै । पहली बंधै पाज । सुहणा माहें से ठनें । संभलावै यक्ष राज ॥ १२ ॥ ❋ ॥ (ढाल) ॥ ❋ ॥ एम कही यक्ष आयो राते । सारथ वाहुनें सुहणें जी । पाशतणी प्रतिमा तुं लेजे । लेतो शिरमत धुणे जी ॥ १३ ॥ (एम०) पांचशैटका तेहनें आपे । अधिको म आपिस वारोजी । जतन करी पुहचाभे थानकि । प्रतिमा गुण संभारो जी ॥ १४ ॥ (एम०) तुझनें होसी बहु फलदायक । भाई गोठीनें सुण जे जी । पूजीस प्रणमीस तेहनापाया । महलठीनें थुणजे जी॥१५॥ (एम०) सुहणो देईनें सुरचाल्यो । अपने थांनक पहुतो जी । पाटण मांहें सारथवाह हींडे तुरकनें जोतोजी ॥ १६ ॥ (ए०) ॥ तुरकै जातां दीठो गोठी । चो खा तिलक लिलाभै जी । संकेत पहुतो साचोजाणी । बोलावे बहुलाभै जी ॥ १७ ॥ (ए०) मुज घरि प्रतिमा तुझनें आपुं । श्रीपाश जिणेसर केरी जी । पांचसे टका जो मुझ आपें । मोलन मांगुं फेरीजी ॥ १८ ॥ (ए०) नांणो देई प्रतिमा लेई । थानक पहुतो रंगेजी । केशर चंदन मृगमद बोली विधसुं पूजा रंगेजी ॥ १९ ॥ (ए०) गादी रूभी रूनी कीधी । ते मांहि प्रतिमा राखेजी । अनुक्रम आव्या परिकरमांहे । श्री संघनें सुरसाखें जी ॥ २० ॥ (ए०) उछव दिन २ अधिकाथाये । सत्तर भेद सनात्रोजी । गाम २ ना दरशण करवा । आवे लोक भलातोजी ॥ २१ ॥ (ए०) ॥❋॥ (दूहा) इकदिन देखे अवधिसुं । परिकर पुरनो भंग । जतनकरुं प्रतिमा तणो । तीरथ अछे अभंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपे सेठनें । थल अरवी नझार । महिमा थास्यै अति घणी । प्रतिमा तिहां पुहचाड ॥ २३ ॥ कुश ल खेम तिहां अछे । तुझनें मुझनें जाणि । संका ठोमी काम करि । कर

तो मकर संक्राणि ॥ २४ ॥ ॥ (ढाल) ॥ ॥ पाश मनोरथ पूरा करै । वाहण एक त्रुपन्न जो तरै । परिकरथी परियाणो करै । इक थल चढ बीजै ऊतरै ॥ २५ ॥ वारै कोस आव्या जेतलै । प्रतिमा नविचालै ते तलै । गोठी मनह विमासण थई । पास भुवन मंडावूं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किमकरूं मयाण । कुटको कोइ नदीसे पाहाण । देवल पास जिनेसर तणो मंडावुं किम गरथे विणो ॥ २७ ॥ जलविन श्रीसंघरहस्ये किहां । सिलावटो किम आवे इहां । चिंतातुर थयो निद्रालहै । यक्षराज आवीनें कहै ॥ २८ ॥ गुंहली ऊपर नांणो जिहां । गरथवणो जाणी जे तिहां । स्वस्तिक सोपारीनें ठाणि । पाहण तणी ज्ञ्वटस्ये खाणि ॥ २९ ॥ श्रीफल सजल तिहां किल जुओ । अमृत जल नीरसमी कूओ । खाराकूआ तणो इह सैनांण । भूमि पड्यो छे नीलो छाण ॥ ३० ॥ सिलावटो सीरोही वसे । कोढपराजवियो किमसिसे । तिहां थकी तूं इहां आण जे । सत्यवचन मा हरो मान जे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मनथिर थापियो । सिलावटनें सुहणो दियो । रोगगमीनें पूरुं आस । पाश तणो मंडै आवास ॥ ३२ ॥ सुपन मांहे मान्यो नेवैण । हेम वरण देखाड्यो नेण । गोठी मनह मनोरथ हुवा । सिलावटने गया तेम्हवा ॥ ३३ ॥ सिला वटो आवे सूरमो । जांमें लारखांम्ह कुल चूरमो । घडै घाट करै कोरणी । लगन भलै पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ धंन २ कीधी पुनरणी । नाटक कौतिक करनी रणी । रंग मंडप रलियामणो रमे । जोनां मानवनों मन वसे ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्रासाद । स्वर्गसमो मंडै आवास । दिवश विचारी ईंडो चढ्यो । ततखिण देवल ऊपर चढ्यो ॥ ३६ ॥ शुभ लगन शुभ वेलावास । पद्मासण बैठा श्रीपास । महिमा मोटो मेरुसमान । एकल मिल चगरै के वान ॥ ३७ ॥ वान पुरुष पं सां नलो । नयन मांहि सुधा सांभलो । गोठी तणा गोतरीया सुहे थान करीनें पगनें पडे ॥ ३८ ॥ ॥ (दूहा) ॥ विघन विमासण ~ जगि । तेहनो प्रकृत सरूप । थात करै श्रीसंघनें । देखाडै नि~ ॥ ३९ ॥ गिरुओ गोडी पाशजिन । आपे अरथभंडार । नाहि धइ श्रीसंघनें । आस्या पूरणहार ॥ ४० ॥ नील पलाणें नीलहय । असवार । मारग चूका

मानवी । वाट दिखावण हार ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ वरण अढार तणो लहै भोग । विघन निवारै टालै रोग । पवित्र थई समरै जे जाप । टालै सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निरधननइ घरि धननो सूत । आपै अपुत्री यानें पुत्र । कायरनें सूरापण धरै । पार उतारै लही वरै ॥ ४३ ॥ दो भा गीनें दे सोभाग । पग विहूणानें आपै पग । गाम नहीं तेहनें द्येगाम । मन वंछित पूरै अभिराम ॥ ४४ ॥ निरधारयानें द्ये आधार । भवसायर ऊतारै पार । आरतीयानी आरत भंग । धरै ध्यान ते लहै सुरंग ॥ ४५ ॥ समरयां साद दीये यक्ष राज । तेहना मोटा अछै दिवाज । बुद्धि हीणानें बुद्धि प्र कास । गूंगानें द्यै वचन विलास ॥ ४६ ॥ दुखियानें सुखनो दातार । भय भंजण रंजण अवतार । बंधन तूटै वेमी तणा । श्री पार्श्वनाम अक्षर सम रणा ॥ ४७ ॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ श्री पार्श्वनाम अक्षर जपे । विश्वानर विक राल । हस्त यूथ दूरेटलै । दुष्घर सींह सियाल ॥ ४८ ॥ चोरतणा भयचूक वे । विष अमृत उपकार । विषधरनो विष ऊतरै । संग्रामें जय जय कार ॥४९॥ रोग सोग दालिद्र दुख । दोहग दूर पुलाय । परमेशर श्री पाशनो । महिमा मंत्र जपाय ॥ ५० ॥ ❀ ॥ (करखानी चाल) २ ॥ ❀ ॥ उंजितुं उंजितुं उंज उपशम धरी । ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीपार्श्व अक्षर जपंते ॥ भूतनें प्रेत झोटिंग व्यंतर सुरा उपसमै । वार इकवीश गुणंते ॥ ५१ ॥ (उं०) दु ष्टरा रोग सोगा जरा जंतनें । ताव एकांतरा दुत्तपंते । गर्भबंधन व्रणं सर्प विछु विषं । चालिका बालमेवा झखंते ॥५२॥ (उं०) साइणी माइणी रोहणी रंकणी । छोटका मोटका दोषहुंतें । दाढ उंदरतणी कोल नोला तणी । स्वा न [illegible]गाल विकरालदंते ॥ ५३ ॥ (उं०) धरणेंद्र पदमावती ममरसोभावती । वाट आघ[illegible]पटवी अटंने । लखमी लोडुं मिलै सुजश वेलावलै । मयल आस्या फलै मन [illegible]ने ॥ ५४ ॥ (उं०) अष्ट महाभय हरे कान पीमाट लै । उतरे सूल सीम[illegible]ने । वदत वर प्रीनसुं प्रीति विमला प्रभू । श्रीपार्श्व जिन नाम अभिराम मंते ॥ [illegible] ॥ (उंजितुं) ॥ ❀ ॥ इति श्रीगोमी पार्श्व नाथजी वृहस्तवन मं० ॥ ❀ ॥ [illegible]समाश पर्वाधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❋ ॥ अथ माघ माश मध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ माघ महिनेंमें, मिती माघ वदि १३ (सो) मेरु तेरस नाम सें पर्व प्रसिद्ध है । (इस दिन) श्रीऋषभ देव स्वामीको निर्वाण कल्या णक है। (इसीसें) भगवंत महाराज इसदिनकों उत्तम कहा है । (इस दिन) चौविहार उपवास करै । रत्नामई, पांचमेरू भगवानके आगे चढा वै। वीचमें १ वडो मेरू। च्यारुं दिश छोटामेरू । (ऐसें) पांच मेरू चढावै। ऐसी शक्ती न होय (तो) सोनेंके । चांदीके (वा) घृतके। मेरू करके च ढावे । आगे चारुं दिश तरफ चार चार नंद्यावर्त्त करै । अष्टप्रकारी सत्तर भेदी । पूजा पढायके । अष्ट द्रव्यसें पूजाकरै ॥ ❋ ॥ पीछे ॥ १ ॥ श्रीऋषभदेव स्वामी पारंगताय नमः)॥ इसी पदको दो हजार गुणनो करे। और जो कोई तेरसके दिन पोशह करै (तो) पूजादिक सब विधि पार णेंके दिन करे । अतिथि संविभाग करके पारणो करै । इसी विध संयुक्त १३ तेरै वरश (अथवा) १३ तेरै माश तपस्या करै । पीछे शक्ति माफ क बहुत उच्छवसें उद्यापन करै । तीर्थोंकी यात्रा करै । साहमी वछल (करै ॥ इहां दृष्टांत कहतेहैं ॥ (जैसें) अयोध्या नगरीमें । अनन्तवीर्य रा जाको पुत्र । पिंगल राय कुमर । गांगिल मुनीके पास । इस पर्वका अ धिकार सुनके । तपस्या करी । तपस्याके करनेंसे । सर्व रोग दूर हुये। तपस्या पूर्ण होनेसें । तेरे १३ मंदर बनवाया । १३ तेरै रत्नां मई। सुवर्ण मई। रूपे मई । प्रतिमा स्थापन करी ॥ १३ वेर, संघ सहत तीर्थों की या त्रा करी । तेरै वेर साहमी वछल किया । बहुत प्रकारसें ज्ञान भक्ति करी । अंतमें महसेन कुमरको राज्य देके । श्रीसुव्रताचार्य समीपे दिक्षाग्र हण करी । अनुक्रमें चवदे पूर्वकों पढके । सर्व कर्मकों क्षय करके । अ नंत सुखकों प्राप्त हुवा । इसी का विस्तार संबन्ध । मेरु तेरशका वखाण सुणनेंसें मालुम होगा । जो भव्य जीव इस पर्वकों विधि संयुक्त सेवन करेगा । (सो) इस भवमें परभवमें अनेक सुखकों प्राप्त होगा ॥ ❋ ॥ इति माव माश पर्वाधिकारः ॥ ❋ ॥　　॥ ❋ ॥　　॥ ❋ ॥

मानवी । वाट दिखावण हार ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ वरण अढार तणो लहै जोग । विघन निवारै टाले रोग । पवित्र थई समरै जे जाप । टाले सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निरधननइ घरि धननो सूत । आपे अपुत्री यानें पुत्र । कायरनें सूरापण धरे । पार उतारै लछी वरै ॥ ४३ ॥ दो भागीनें दै सोभाग । पग विहूणानें आपे पग । गाम नहीं तेहनें दै गाम । मन वंछित पूरे अभिराम ॥ ४४ ॥ निरधारयानें द्ये आधार । भवसायर ऊतारै पार । आरतीयानी आरत भंग । धरै ध्यान ते लहै सुरंग ॥ ४५ ॥ समरयां साद दीयें यक्ष राज । तेहना मोटा अछे दिवाज । बुद्धि हीणनें बुद्धि प्रकास । गूंगानें दै वचन विलास ॥ ४६ ॥ दुखियानें सुखनो दातार । भय भंजण रंजण अवतार । बंधन तूटै वेरी तणा । श्री पार्श्वनाम अक्षर समरणा ॥ ४७ ॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ श्री पार्श्वनाम अक्षर जपे । विश्वानर विकराल । हस्त यूथ दूरैटलै । दुष्ट सींह सियाल ॥ ४८ ॥ चोरतणा भयचूकवे । विष अमृत उपकार । विषधरनो विष ऊतरै । संग्रामें जय जय कार ॥४९॥ रोग सोग दालिद्र दुख । दोहग दूर पुलाय । परमेशर श्री पाशनो । महिमा मंत्र जपाय ॥ ५० ॥ ❀ ॥ (करूखानी चाल) २ ॥ ❀ ॥ भंजितुं भंजितुं भंज उपशम धरी । ॐ ह्रीं श्रीं श्रीपार्श्व अक्षर जपंते ॥ भूतनें प्रेत झोटिंग व्यंतर सुरा उपसमे । वार इकवीश गुणंते ॥ ५१ ॥ (भं०) दुष्टरा रोग सोगा जरा जंतनें । ताव एकांतरा दुत्तपंते । गर्भबंधन व्रणं सर्प विछु विषं । चालिका बालमेवा झखंते ॥५२॥ (भं०) साइणी डाइणी रोहणी रंकणी । ढोटका मोटका दोपहुंते । दाढ उंदरतणी कोल नोला तणी । स्वान [illegible] विकरालदंते ॥ ५३ ॥ (भं०) धरणेंद्र पद्मावती समरसोभावती । वाट आघ[illegible] अटवी अटंते । लखमी लोडुं मिलै सुजश वेलावलें । सयल आस्या फलै मन [illegible] ॥ ५४ ॥ (भं०) अष्ट महाभय हरै कान पीडा टलै । ऊतरै सूल सीस[illegible] । वदत वर प्रीतसुं प्रीति विमला प्रभू । श्रीपार्श्वजिन नाम अभिराम मंते ॥ [illegible] (भंजितुं) ॥ ❀ ॥ इति श्रीगोडी पार्श्वनाथजी वृद्धस्तवन सं० ॥ ❀ ॥ इ[illegible] समाश पर्वाधिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❋ ॥ अथ माघ माश मध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ माघ महिनेंमें, मिती माघ वदि १३ (सो) मेरु तेरस नाम सें पर्व प्रसिद्ध है । (इस दिन) श्रीऋषभ देव स्वामीको निर्वाण कल्याणक है । (इसीसें) भगवंत महाराज इसदिनकों उत्तम कहा है । (इस दिन) चौविहार उपवास करै । रत्नामई, पांचमेरू भगवानके आगे चढावै । बीचमें १ बडो मेरू । च्यारुं दिश छोटामेरू । (ऐसें) पांच मेरू चढावै । ऐसी शक्ती न होय (तो) सोनेंके । चांदीके (वा) घृतके । मेरू करके चढावै । आगे चारुं दिश तरफ चार चार नंद्यावर्त्त करै । अष्टप्रकारी सत्तर भेदी । पूजा पढायके । अष्ट द्रव्यसें पूजाकरै ॥ ❋ ॥ पीछे ॥ १ ॥ श्रीऋषभदेव स्वामी पारंगताय नमः)॥ इसी पदको दो हजार गुणनो करै । और जो कोई तेरसके दिन पोशह करै (तो) पूजादिक सब विधि पारणेके दिन करै । अतिथि संविभाग करके पारणो करै । इसी विध संयुक्त १३ तेरै वरश (अथवा) १३ तेरै माश तपस्या करै । पीछे शक्ति माफक बहुत उच्छवसें उद्यापन करै । तीर्थोंकी यात्रा करै । साहमी वच्छल (करै ॥ इहां दृष्टांत कहतेहैं ॥ (जैसें) अयोध्या नगरीमें । अनन्तवीर्य राजाको पुत्र । पिंगल राय कुमर । गांगिल मुनीके पास । इस पर्वका अधिकार सुनके । तपस्या करी । तपस्याके करनेंसे । सर्व रोग दूर हुये । तपस्या पूर्ण होनेसें । तेरै १३ मंदर बनवाया । १३ तेरै रत्नां मई । सुवर्ण मई । रूपे मई । प्रतिमा स्थापन करी ॥ १३ वेर, संघ सहत तीर्थों की यात्रा करी । तेरै वेर साहमी वच्छल किया । बहुत प्रकारसें ज्ञान भक्ति करी । अंतमें महसेन कुमरको राज्य देके । श्रीसुव्रताचार्य समीपे दिक्षाग्रहण करी । अनुक्रमें चवदे पूर्वकों पढके । सर्व कर्मकों क्षय करके । अनंत सुखकों प्राप्त हुवा । इसी का विस्तार संबन्ध । मेरु तेरशका वखाण सुणनेंसें मालुम होगा । जो भव्य जीव इस पर्वकों विधि संयुक्त सेवन करेगा । (सो) इस भवमें परभवमें अनेक सुखकों प्राप्त होगा ॥ ❋ ॥ इति माघ माश पर्वाधिकारः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ अथ फाल्गुन माश मध्ये पर्वाधिकार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ फाल्गुन महिनेमें, मिती फाल्गुन सुद १४ (सो) तीसरे चौमाशे की चौदश नामसें पर्व प्रसिद्ध है । इस दिनको (सर्व कर्त्तव्य) आषाढ चौमाशे तुल्य करे । सो पूर्वे लिख्यो है ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इहां विशेष होलीको अधिकार लिखते हैं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी । बारे माशमें, ६ अमोटका पर्व कहा । ३ तीन चौमाशा । २ दो ओली । १ पर्यूषणा । एवं ६ । (जिसमें) २ ओली । १ पर्यूषणा । यह ३ पर्वका अठाई महोछवतो सर्व ठिकाणें भव्य जीव करतेहें । और कार्त्तिक चौमाशेका उछव प्रायें बहुत ठिकाणें होता है । (परंतु) कलकत्ते जैसा महोछव कोई ठिकाणें देखा नहीं । (और) फाल्गुन चौमाशेका उछव मुर्शिदावादमें अछा होता है । पर कोई महोछव में आज्ञा विरुद्ध जो काम होय (सो) प्रशंसनीक नहीं । एकतो भगवंतके समोसरणके साथ । आज कालके । अमीर लोक । धूपके डरसें, खेहके डरसें । आपतो जाते नहीं (निकवेज) असमझ पुरुषाकों भेज देतेहें । पीछे वे पुरुष मदोन्मत्त हुए थके । कूदतां, नाचतां, भागतां, । समवसरणकों उछाला देते लेजाते हें । (उसमें) जितनी आशातना होतीहै । जितना कर्मबंधता हें । उसका भागी हम नहीं ॥ भगवंत को धर्म, विनय मूल १ । दया मूल २ । चारित्र मूल ३ है । (इससें) धन्य है जिसके माता, पिता, (सो) विनय विवेक संयुक्त शुद्धभावसें । सर्व धर्मकार्य करके धर्मको उद्योत करेहै । उसी पुरुषांकों नमस्कार हे । उसी महोछवकी प्रशंसना है । (इसीसें) आत्मार्थी धर्मज्ञ पुरुष है (सोतो) शशका चौमाशा पर्व जानके । सर्व ठिकाणें । भगवंतके धर्मको उद्योत करते थके । शुक्लध्यानरूप अग्नीसें (अष्टकर्म) रूपी काष्टकों जलाके होली करते हें । (पीछें) सुबोध जलसें स्नानकरके अत्यन्त सुन्दरता कों प्राप्त होते हें ॥ अब द्रव्यें, भावें, दो प्रकारसें, होलीका अधिकार कहणें की इछायें (प्रथम) द्रव्य होलीका अधिकार लिखते हें ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इस फाल्गुण माशमें, चौदश पूर्णमाशी के दिन (कई) अज्ञानी जीव,

विवेकसें, श्री जिनधर्मसें· विकल हुए थके । नींच जातके परंपराकों प्राप्त हुए थके । लकम् छाणादिक जलायके अग्निमई द्रव्य होलिका करै है। महा उत्तम चौमाशै पर्वका विराधन करै है। (दूशरे दिन) मलमुत्रा दिकसें क्रीमा करै है । खोटा वचन बोलै है। रासन्न माथे चढे है। अनेक जीवांकों दुःख उत्पादन करै है। (ऐसे जीव) शुद्ध बीतराग देवकी आग्याछो मके। भांम भरमा के कुल परंपराकों प्राप्त होते है। मिष्टान्न भोजनका खा णा छोमके। विष्टाको भोजन करते हें । दूधका पीणा छोमके। जानते थके पिसाब पीते हें। (ऐसे पुरुष) निकेवल कर्मांके वंध सघन करके। नीच ग तिकों उपार्जन करते हें । अनर्थदंमसें अनन्त भव संसारकी स्थिति बां धते हें। (इस वास्ते) आत्मार्थी भव्यजीवांकों । इस माफक । द्रव्य हो ली करनी उचित नहिं। (निकेवल) भाव होली करनी उचित है ॥ वसं तके स्तवन बोलै । रात्री जागर्ण करावै । भगवानके मंदरमें पूजा करावै। महोछव निकालै । नाना प्रकारके नाटक करै । साहमी वछल करै। सा धर्मी भाई आपसमें नाना प्रकारकी क्रीमा करे। (आगे) राजा लोक भी· वसंत रुतु आनेंसें सज्जन संवंधी साथ। नाना प्रकारके । जल । चं दन। केशर। अवीर। गुलाल । इत्यादिकसें क्रीडाकरी (सोतो) फेरभी शास्त्रोंमें देखते हें। (परंतु) यह मल मुत्रादिकसें खेलना। होली जलानी। पादत्राण खाणा । भंम चेष्टा करनी । अपनें धर्मकी मर्यादा । अपनें कु लकी मर्यादा । सर्व छोमके। भांड भरमाके गोदी वेठना। भांम भरमा के कुलकी मर्यादा करनी। ऐसी क्रीमा उत्तम पुरुषोंके (और) जिनधर्म वा ले भव्य जीवोंके । कोई ठिकाणें करनी कही नहीं। यह क्रीमा निकेव ल महामिथ्यात्वी नींच पुरषोंने चलाई ही। उसी पुरुषोंके देखादेख प्रायें अज्ञानी जीवः सवकोई करनेंकों लग गए। (देखो बडा आश्चर्य है)। जब मंदरजीमें पूजादिक महोछवका काम होता है। उस वखत बहुत कों फुरसत न होती है। (और जो केइ आते हे)। उनोंकों क्षात्रिया होनेंमें । अगामी नाटक करनें में । बमी लज्जा माछुम होती है । (और होलीके दिन) माता, पिता· भाई बैन, सर्वकी लज्जा छोमके। बहुत

दिलमें खुसी होके । पागलके माफक। उपानत खाते फिरते है। मन आवे ज्युं बोलतेहैं । कोई वेश्यादिक का नाटक करायके हजारुं वगशीस कर देते हैं । मनमें जानें, हमनें वडा नाम किया। पर अहो भाइयो। इसमें तुमारा कुछ नाम नहीं है। निकेवल महा अशुभ कर्म पैदा होता है। तुमारा कल्याण जवई होगा। ऐसी उमंगसें सर्व की लज्जा छोडके । भगवानका उछव करो । रात्री जागर्ण करो। नाटक करो । धर्मका उद्योत करो। (इसी तरें) होली खेलो (सो) तुमारा इह भव वी सुधरेंगे । परभववी सुधरेंगे । (यह) द्रव्ये, भावे, दोंनुं होलीका, यथावास्थित स्वरूप लिखा है। इसकों आत्मार्थी धर्मज्ञ पुरष तो देख करके प्रसन्न होंगे । यह खोटे मारग कों वंध करनें की प्ररूपणा रक्खेंगे। (ओर जो) महामूर्ख अज्ञानी जीव होंगे (सो) अपनें खेलनेंके वास्ते । सची वातकोंभी कुयुक्ती लगायके झुठ ठहरावेंगे । महारोस धारण करेंगे । (जैसें) कोइके पिताकों गाली देनेंसें रोस उत्पन्न होय (इसी तरें) यह भंड चेष्टा की निंदना देखके महारोस धारण करेंगे । (ओर जो) मध्यस्थ जीव होंगे (सो) ऐसा बोलेंगे । यह वात सच है। किसका पर्वहै । किसका खेलना है। निकेवल इसमें अनर्थ दंड लगता है। (परंतु) हम इकेला क्या करें। सर्व भाइ वंधकों खेलते देखके। हमसें रहा जाता नही । इससें खेलने हैं। (पर) यह पृथा वंध होयतो अछीहै । (इसीसें) अहो देवानुप्रियो सर्व ठिकाणें यह नीच खेलकों छोडके। उत्तम खेल खेलनेंकी प्रवर्त्तना करो। जिससें तुमारा तप तेज सदा बढता रहे । सदा आनन्द रहे । यह वारे माश के सर्व कर्त्तव्य। मेंनें अपनी वुद्धिसें न लिखा है । (किंतु) प्राचीन आचार्योंके व्याख्यानकी पद्धति देखके । सर्व वालजनके उपगारार्थ संक्षिप्तसें शुद्ध भाषामें प्रगट किये हैं (इसमें) आगम विरुद्ध उंगो अधको कहनेंमें आयो होय (तो) त्रिकरण सुधे मिछामि दुक्कड देताहुं। (ओर) नींच कर्मके वंध छोडानेंकों । कठोर वचनभी बोला है (सो) वाचके। गुणकों ग्रहण करना। परंतु रोस धारण न करना । मेरे तो शुद्ध नवकार मंत्र गुणनें वाले है (सो) सर्व परम मित्र है। सर्वके तप तेज वढते देख

कै, मेरा चित्तमें परम आनंद होता है । (और) त्रिकरण शुद्धै सर्व जीवा जोनिसें वेर बेर खमाता हुं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ खमिय खमाविय में खमिय । सवह जीव निकाय । सिद्धह साख आलोयण । मझह वैर नभाय ॥ १ ॥ सवे जीवा कम्मवसु । चवदह राज भमंत । तेमें सव्व खमाविआ । मझवितेह खमंतु ॥ इति फाल्गुन मा० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ भाव होली खेलनके स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ (रागधमाल) होरी खेलियै नरवहुरन ऐसोदाव । (हो०) दयामिठाई अति भलीरे । तप मेवा परधांन । सील अथाणो अति भलो (वारी) संयम नागर पांन । (हो०) ॥ १ ॥ लेस्या मादल भाव भफरे क्रोध मान दोय ताल । पांच सुमतिको अरगजो (वारी) नवतत्व लेहु गुलाल । (हो०) ॥ २ ॥ सुमता केसर घोलीयेरे । दमवाको छिरकाव । ग्यांन पिचरको पकरके (वारी) । सुगति वधू चितलाय । (हो०) ॥ ३ ॥ ऐसा साज वनायकैरे । ऋषभदेव गुण गाय । श्री जिनचंद इम खेलतां (वारी) भव भव पातिक जाय । (हो०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग वसंत होरी तालयत ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय बोलोरे पाश जिनेशरकी ॥ (ज०) ॥ मस्तक मुगुटसोहै मनमोहन । अंगीया सोहै केशरकी । (जे०) ॥ १ ॥ त्रिभुवन ज्योति अखंभ्ति तनकी । स्याम घटा जैसी जलधरकी ॥ (ज०) ॥ २ ॥ बालपणेंमें अद्भुत ग्यानसुं । करुणा कीधी विषधरकी ॥ (ज०) ॥ ३ ॥ कमठ उभाय वायज्युं बादल । जीतकरी अपनें घरकी ॥ (ज०) ॥ ४ ॥ मात वामा उयरे जिनजायो । राणी अश्वसेन नरेसरकी ॥ (ज०) ॥ ५ ॥ अष्ट करम दल सबल खपाए । श्रेणि चढ्या जे शिवपुरकी ॥ (ज०) ॥ ६ ॥ कहे जिन चंद मेरे प्रभुपारस । जैसी छाया सुरतरु की ॥ (ज०) ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः वसन्त होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मधुवनमें जाय मची होरी ॥ (म०) ॥ ग्यान गुलाल अबीर उडावो । सुमता केशर रंगघोली ॥ (म०) ॥ १ ॥ अमृत रूप धरम जिन वरको । सुखक्षमा कहे करजोडी ॥ (म०) ॥ २ ॥ इति पदं ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः वसंत होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यादव मनमेरो हरलीयोरे ॥ (या०)॥ संजम दूती कान लगी जव । शिवनारीपर चित्त दीयोरे ॥ (या०)॥ १ ॥ तोरणथी रथ फेर चले हो । नवभव नेह अलग कीयोरे ॥ (या०) ॥ २ ॥ मोह छोरू गिरनार सिधाए । नेमि जिणंदनें कहा कीयो रे ॥ (या०)॥ ३ ॥ तुमहो तीन भुवनके साहिब । सुरनर कहे तुमे चिरंजीयोरे ॥ (या०)॥ ४ ॥ वारवार मेरी वंदना हुयज्यो । चंद कहे मन हरखीयोरे ॥ (या०) ॥५॥ इतिपदं ॥❀॥

॥ ❀ ॥ पुनः वसन्त होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इक सुणले नाथ अरज मेरी (इ०)॥ १ ॥ इह संसार गहर तर सिंधु । भमर पम्त जिहां भवफेरी (इ०) ॥ २ ॥ क्रोधादिक वहु मगर मछ हे । ग्रहत जंतु नकरत देरी ॥ (इ०)॥ ३ ॥ ऐसे जलधिसें पार करो तो । तारण तरण विरुदतेरी ॥ (इ०) ॥ ४ ॥ धरम जिनेसर जग परमेशर । दूरकरो दुखकी वेरी ॥ (इ०) ॥ ५ ॥ परम क्षमागुण दायक लायक । अनुपम कीरति जगतेरी ॥ (इ०)॥ ६ ॥ इति पदं ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सांवरो सुखदाई । जाकी छवि वरणि न जाई । (आंकणी) । श्री अश्वसेन वामानन्दनकी । कीरति त्रिभुवन छाई । समेत सिखर गिर मंमन प्रभुको । देख दरश हरखाई । हृदय मेरो अति हुलसाई (सांव०) ॥ १ ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगट्यो । आज आनन्द वधाई । तीन भुवन को नायक निरख्यो । प्रगटी पूर्व पुण्याई । सफल मेरो जनम कहाई ॥ (सांव०)॥ २ ॥ प्रभुके सरस दरश विन पाये । भव भव भटक्योमें भाई अव तेरो चरण शरण चित चाहत । वाल कहे गुण गाई । प्रभुजीमें लगन लगाई (सां०)॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः रागिणी वसन्त ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैंना हरखाइ । आज तेरी मूरत निरखी ॥ (नैं०)॥ भवभव संचित पाप करम सव । देखत दूर पुलाई । सुमति वधारण कुमति विना

रण। ज्ञान विमल उलसाइ ॥ (आज०) ॥ १ ॥ वामानन्दन अतिछवि सुन्दर । महिमा वरणी नजाई। दीन दयाल दयाकर दीजै । आनन्द हरख सवाई ॥ आ० ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः होरी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ मनमोहन गजगतकी गामनी । आज चली गिरनार कामिनी ॥ (म०) (आंकणी) ॥ सुंदर रूप बनाय सखी सब । सिखरसेल जेसें चमके दामनी ॥ (म०) ॥ १ ॥ नेम प्रभुको व्याह मनायो । मोसें प्रीति लगाइ भामनी ॥ (म०) ॥ तोरण आय चले मोह छोरी । कौन चूक मोपे काढी भामनी ॥ (म०) ॥ २ ॥ मेंन तजुंगी नव भव कैरी । प्रीत बनी जैसी इंदु दामनी ॥ (म०) ॥ ३ ॥ राजुल पहली प्रीतम सेती । बालकहे भई सुगति गामनी ॥ (म०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः होरी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ रंग लग्यो गुरु ज्ञान । होरी चेतन खेलै । (रंग०) शील सुरंगी चीरमंगाये । पहिरे आप सुजान ॥ (हो०) ॥ पर मन्दिर तज अविचल लीजै । धर्म दया धर ध्यान ॥ (हो०) ॥ हिल मिल आप परमरस चाखे सुमति सखी पहिचान ॥ (हो०) ॥ ज्ञान गुलाल लाल रंग लागे । सोभै अद्भुत वान ॥ (हो०) ॥ सुमति अबीर उडाय जगतमें । बैठे शिव पुर थान (हो०) अनुभव राग मगन गुण गावे । तप जप सुन्दर तान (हो०) ऐसा खेल भविक जन धारे । वंछित पावै दान (हो०) इति पदम् ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः होरी (ताल यत्) ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ चिदानन्द खेलै फाग । हो हो होरी आई ॥ मन मृदङ्ग बजे तन मांहि । गावत आगम राग (हो०) ॥ ज्ञान गुलाल सदा रङ्ग लागे खेलत सुनत सुहाग (हो०) समकित केशर चीर रङ्गाउं । पहिरो मन वेराग (हो०) ॥ लाख चौराशी रामत छांमी । च्यारूं गतिमें भाग (हो०) अविचल सुख पंचम गति पावे । योग यतन कर जाग ॥ (हो०) ऐसा खेल भविक जन धारे । पावे भव दधि पार (हो०) चेतनता सुध होय जगत में । समकित के रङ्गभाग (हो०) ॥ ❋ ॥ इति पदम् ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ (पुनः होरी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ होरी आई, मेरो मन भयो. प्रसन्न प्रसन्न भयो: प्रसन्न न न न हे (हो०) ब्रज वनिता मिल नेम कुमर सङ्ग । फाग रमत हिये हसन हसन हसननन ननहे (हो०) ॥ १ ॥ बाजे तेताल मृदंग झांझ भफ । वीणा की धुनि जिम मेघ गरजन गरजन गरजन नन नहे (हो० ॥ २ ॥ उरूत गुलाल लाल भए बादल । हरि हलधर हीये हरखन हरखन हरखन नननहे (हो०) ॥ ३ ॥ सबल आधार चरण जिनजीको । सेवक कों नित दीजीये दरशन दरशन दरशन न न नहे (हो०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (पुनः होरी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ होरी खेलो नेमसें धाय धाय । दुरजनकी लाज मेरी करे बलाय (हो०) ज्ञान गुलाल अबीर उमावो । क्षमा करो रङ्ग लाय लाय (दु० हो०) ॥ १ ॥ शील संजम व्रत पान मिठाई । ध्यान धरूङ्गीमें गाय गाय (दु० हो०) ॥ २ ॥ अष्ट कर्म की खेह उमावो । ज्ञान हियेमें लाय लाय (दु० हो०) ॥ ३ ॥ जगत चन्दकी अरज बीनती । शरण गहीमें तेरी आय २ (दु० हो०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरे घटकी गगरया रङ्गसें भरी । शिव पुरकी बात पूछुं कनकी खरी । (मे०) परम जोत प्रभु सिद्ध सिला पर । परमातम निज ध्यान धरी । (शि०) ॥ १ ॥ मोहन रङ्गभरो रंग शिवपुर । अजर अमर पद सुक्खकरी (शि० मे०) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ में नें देखी अनोखी होरीरे (में०) सहसा वनकी कुंजगलिन में । अनुपम सोर मच्यो री (अ०) ॥ १ ॥ यादवपति श्रीनेमकुमरजी । सुमनामखी मिल गोरी (अ०) ॥ २ ॥ सुमता केशर भर पिचकारी । मारत हे बर जोरी ॥ (अ०) ॥ ३ ॥ ज्ञानगुलाल उमै अतिभारी । अबीर उमै भरझोरी । (अ०) ॥ ४ ॥ कपूर कहे प्रभु मोकुं सेवावो । अरज सुणो इक मोरी (अ०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ❀

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इकसुणले नाथ अरज मेरी इस चालमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुमे ध्यावोरे अंतरीक पारसकुं ॥ तु० ॥ अंतरीक प्रभुके ध्यावणसें दूरकरे दुख दालिद्रकुं ॥ तु० ॥ अस्वसेन कुलमें चिंतामणि । जिमरवि ऊगो सरदरुतुकुं ॥ तु० ॥ १ ॥ वांमाउर अवतार लियोहै । भव्यजीवनें तारणकुं ॥ तु० ॥ नील वरण तनज्योति अखंडित । लंछन अहि सुखकारणकुं ॥ तु० ॥ ॥ २ ॥ दक्षिणदिशमें सिरपुर नगरे । जिहां भेट्या जिनराजकुं ॥ तु० ॥ पार्श्वप्रभुको दरशण पायो । दूर हुआ भव भटकणसुं ॥ तु० ॥ ३ ॥ प्रगट प्रभूको अतिशय पेख्यो । अधर रहत भूमि ऊपरकुं ॥ तु० ॥ कपूर कस्तूरी केशर चंदन । अष्टद्रव्य लेके पूजनकुं ॥ तु० ॥ ४ ॥ अष्टकरम शत्रूकुं जीपके । जायचल्या राजशिवपुरकुं ॥ तु० ॥ दूधेड्या गोत्र उत्तम बुधसिंहपति । विशनचंद हितकारणकुं ॥तु० ॥५॥ उगणीसै गुणतीसे फागुण । यात्राकरी सुद तेरशकुं ॥ तु० ॥ श्री अजेराज ग्यानकुं चाहे । मुक्ति कमल इछा पूरणकुं ॥ तु० ॥ ६ ॥ इति श्रीअंतरीक पार्श्वजिन स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी राग काफी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बाबो रुषभ बेठे अलबेले । मारो गुलाल मुठी भरके । बावो० ॥ मुठी भरके पसली भरके ॥ बाबो० ॥ चुआ चुआ चंदन और अरगजा । केशरकी मटकी भरके ॥ बाबो० ॥ १ ॥ रतन जडित शिर छत्र विराजे । अंगी जमाव जरी जरके ॥ बाबो० ॥ २ ॥ बांहें बाजूबंध बहिरखा बिराजे । फूलनके गजरे सरके ॥ बाबो० ॥ नाभिराया मरुदेवीको नंदन । रमियें भवि आदेशरसें ॥ बाबो० ॥ आदिखान है दास तुमारो । तार लीओ अपनो करकें ॥ बाबो० ४ ॥ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेमन जाणं मोरी पीर । पीर पर रर रर रर । नेमन जाणं० ॥ तोरणथी रथ फेरवी चाल्या । दाझ्यो हैयना केरो हीर । हीर अर रर रर रर ॥ नेम० ॥ १ ॥ चंदवदनी मृग लोयणीरे । प्रेमनो मार्‍यो गुनें तीर । तीर तर रररर ॥ नेम० ॥ २ ॥ आंशुडां झरतां धरणी ढलीरे । जाणे आशाढो

नीर । नीर ज्ररररररर ॥ नेम० ॥ ३ ॥ शिवराज कहे नेम राजुलैंरे । कर्म रूपीआं फाड्या चीर । चीर चरररररर ॥ नेम० ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥

॥ पुनः होरी राग टप्पो ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ गिरिराजकूं हमारी वंदनारे । जिनराजकूं हमारी वंदनारे ॥ भव दुःख वारण शिवसुख कारण । देखत भव नहीं फंदनारे ॥ गिरि० ॥ ॥ १ ॥ नाभिराया मरु देवीको नंदन । प्रणमुं रुषभ जिनंदनारे ॥ गिरि० ॥ २ ॥ निशि वासर प्रभु ध्यान तुमारो । जिम चातक दिल चंदनारे ॥ ॥ गिरि० ॥ ३ ॥ चतुर कुशल कहे शरण तुमारो । सिद्धगिरि कर्मनिकंद नारे ॥ गिरि० ॥ जिन० ॥ ४ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः राग होरी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दरशन कीयो आज सिखरगिरिको ॥ दर० ॥ देख्यो मधु बन शीता नालो । ताको नीर वहेछे अति नीको ॥ द० ॥ १ ॥ वीश को शथी दरशन दीठो । भागो भरम सकल जियको ॥ द० ॥ २ ॥ वीशे टुंकें वीश गोमटमी । तामें चरण जिनेसरको ॥ द० ॥ ३ ॥ अब जिनवरके शरणें आयो । रसतो पायो मुगति पदको ॥ द० ॥ ४ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः होरी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सिद्ध गिरि जीको दरशन करले ॥ संघ यात्रा । संघयात्रा करनेंसें पाप कटत है । सिद्ध० ॥ (आंकणी) कोटि अनंता इन गिरि सिद्धा । ताकुं शीश नमय ले ॥ संघ० ॥ ॥ १ ॥ रिखभ जिनेश्वरजीको दरशन । शुद्ध आतम पावन करले ॥ संघ० ॥ २ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । भव भवका दुःखहरले ॥ संघ० ॥ ३ ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः होरी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ मेरो चेतन खेले होरीरे । ऐसी होरी । आज बरजोर रही ॥ मेरो० ॥ मन कर मोज प्रेमकर पाणी । करुणा केशर घोरी ॥ ऐसी० ॥ १ ॥ दया मिठाई तप बहु मेवा । समरस विमल कटोरी ॥ ऐसी० ॥ २ ॥ गुरुके वचन वारी मृदंग वजतहे । दे रुफ ज्ञान कटोरी ॥ ऐसी० ॥ ३ ॥ दान कहे सुमता सखीयनसें । चरण रहो जुग जुग जोरी ॥ ऐसी० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अनंतानंत प्रभुजीनी वाणी । आशातना तजरे प्राणी ॥ अनंता० ॥ श्री शीतल जिन शीतल वचनें । भाव दया चित्त आणी अनंता० ॥ १ ॥ जे जीव देव द्रव्यनें खावे । थई लोभ वशे अन्नाणी ॥ अनंता० ॥ २ ॥ सागर शेठ परें दुःख पामी । थई नारकीयें शुं प्राणी ॥ अनंता० ॥ ३ ॥ देवद्रव्य जे विधि ए वधारे । ते जिन थइ वरे शिवराणी ॥ अनंता० ॥४॥ धर्मचंद कर जोडी रागें । तारजो केवल नाणी ॥ अनंता०॥५॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॥ मोहे अपने रंगमें रंगदे ॥ मेरे साहेब । मेरे साहेब । आदि जिणंद चंद ॥ मोहे० ॥ (आंकणी) ॥ रंग तुंही रंग रेज तुंही हे । संजम रंग मोहे रंगदे ॥ मोहे० ॥ १ ॥ रंग मिथ्यात लग्यो हे अनादि को । सो अब इनकुं खिनदे ॥ मो० ॥ २ ॥ रत्नत्रयी रुद्धि तेरीमें देखी । मो अब मुजकुं सफदे ॥ मो० ॥ ३ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र रंग हे । वाविच केवल धरदे ॥ मोहे० ॥ ४ ॥ कहत भूधरदास समकित पावे । आप समाना करदे ॥ मोहे० ॥ ५ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरे पाश प्रभुजीके रंग मंरूप मांहे । खेलत संत वशंत ॥ ज्ञान गुलाल विवेक अरगजा । विनय अबीर विलसंत ॥ मेरे० ॥ १ ॥ प्रभुगुण प्रेम पिचरकी छूटत । समता सखिय मिलंत ॥ आगम लहर फूली फूलवाडी । मुनिवर भ्रमर गुंजंत ॥ मेरे० ॥ २ ॥ अंग आभूषण पंचेंद्रिय वश । गुरु सेवा मलहंत ॥ बार भावना गहेर कसुंबा । पीवत मन हरखंत ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ अद्भुत पंचमहाव्रत वागा । पहिरे तन शोहंत ॥ कहे जिन चंद्र प्रभुकी कृपासें । निरखे नवल वशंत ॥ मेरे० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रंग मच्यो जिन द्वार ॥ चालो खेलो ए होरी ॥ पाशजीके दरबारे ॥ चालो० ॥ फागुनके दिनचार ॥ चालो० ॥ रंग० ॥ (आंकणी) ॥ कनक कचोली केशर घोली । पूजो विविध प्रकारे ॥ चालो० ॥ १ ॥

कृष्णागरुको धूप घटत हे । परिमल महके अपाररे ॥ चालो० ॥ २ ॥ लाल गुलाल अबीर उमावत । पाशजीके दरबाररे ॥ चा० ॥ ३ ॥ जर पिचकारी गुलालकी छिरको । वामा देवी कुमाररे ॥ चालो० ॥ ४ ॥ ताल मृदंग वीण डफ वाजे । जेरी झुंगल रण काररे ॥ चालो० ॥ ५ ॥ सब सखीयन मिल नाटक करके । गावत मंगल साररे ॥ चालो० ॥ ६ ॥ रत्नसागर प्रनु जावना जावे । मुख बोले जयकाररे ॥ चालो० ॥ ७ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः होरी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नेमजीसें कहीयो मोरी । शामरेसें कहीयो मोरी । तोरण आए कोनें जर माए । ठेरु चले अजिमानी ॥ अरे लाला ॥ ठेरु चले० ॥ पशुवन के शिर दोष चढायो । तोमी प्रीत पुरानी ॥ दयादिलमें नही आनी ॥ (शामरेसें०) ॥ १ ॥ चूक पमी सो मुहसें कहीयो । ऐसी ना करी ए शोधानी ॥ अरे० ॥ आठ जवोंकी प्रीत वंधाणी । नवमे चले क्युं जानी ॥ शाम तेरी सुरत पिछानी (शामरेसें०) ॥ २ ॥ या जोरी जुगमें पूर नेह लागी, राजुल गुलकी बानी ॥ अरे०॥ बीनति सुन अमर पद दीजे। रंग विजय सुखदानी ॥ आवा गमन छिदानी (शामरेसें०) ॥ ३ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः होरी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ महाराज तोरे मंदिरमे वरसे रंग । हां रे हो । श्री चिंतामणि पाश प्रजुजी (तोरे मंदिरमें०) ॥टेक ॥ ज्ञान गुलाल अबीर अरगजा । सुमता नीर सुचंग (हां रे हो०) ॥ १ ॥ अनुजव लहर फूली फूलवामी । दिन दिन चढते रंग (हां रे हो०) ॥ २ ॥ उपशम वागा अंग अनोपम । शुक्ल ध्यानके संग (हां रे हो०) ॥ ३ ॥ अमरचंद चिंतामणि चित्त धर । तुजशुं आविहरु रंग (हां रे हो०) ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः होरी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ तोरी अंगीयां बनी है सुरंग । (हां रे हो) श्री चिंतामणिपाश ॥ प्रजुजी तोरी० ॥ सुविवेकी श्रावक मिल आए । आणी जाव अजंग ॥ हां रे हो श्री० ॥ ग्रह वंधीकी जांत जली है । बुंटीया नव नव रंग ॥ हां रे हो श्री चिं० ॥ १ ॥ जरकस जामो खूब बन्यो है । कोर केवमा मंग ॥ हां रे हो

श्री चिं० ॥ मस्तक मुकुट कानें दोय कुंडल । बाजूबंद सुचंग ॥ हां रे हो श्री चिं० ॥ २ ॥ फूलनकी गलमाल सोभत है । सौरंग वास सुगंध ॥ हां रे हो श्री चिं० ॥ त्रिभुवन साहब तखत विराजे । महिरवान मन रंग ॥ हां रे हो श्रीचिं० ॥ ३ ॥ सुर नर याकी सेवा करत है । रात दिवश धर रंग ॥ हां रे हो श्री चिं० ॥ मुनिजर है साहेबकी सबपर । संब है सकल सुरंग ॥ हां रे हो श्री चिं०॥ भावना भावो जिन गुण गावो । अमर घणें उछरंग ॥ हां रे हो श्री चिं० ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (पुनःहोरी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चिंतामणि चित्त ध्यावो रे । वंछित फल पावो ॥ सकल भविक जन मिलकर आवो । राग फाग गुण गावोरे ॥ वंछित० ॥१॥ अबीर गुलाल लाल संग लावो । भर भर मुठीया नमावो रे ॥ वं०॥ कुंकुम केशरकुं छिरकावो । भाव शुक्ल भल भावोरे ॥ वं० ॥ २ ॥ अंगी चंगी पुहप बनावो, दीपक ज्योति दीपावो रे ॥ वं० ॥ दरस सरस करकें सुख पावो । पुण्य भंडार भरावोरे ॥ वं० ॥ ३ ॥ वाजित्र वाजा विविध बजावो । नृत्य संगीत नचावो रे ॥वं० ॥ अमर सिंधुर आनंद वधावो । जिनजीसें लय लावो रे ॥ वं० ४ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मत मारो पिचकारी रे । मेंतो सगरी भीज गई ॥ म० ॥ ताल मृदंग बजत मन मांहि । गावत आगम राग ॥ लाल मेंतो सगरी भीज गई ॥ मत० ॥ १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागो । खेलत सुमति सोहाग ॥ पीया मेंतो सगरी भीज गई ॥ २ ॥ समकित केशर चीर रंगाकुं । पहिरुं मन वैराग ॥ लाल मेंतो० ॥ ३ ॥ लख चोराशी रामत छोडुं । चारों गति सोहाग ॥ पिया मेंतो० ॥ ४ ॥ ऐसा खेल खेले सब प्यारी । शिव सुंदरी वरमांग । लाल मेंतो० ॥ ५ ॥ ज्ञानसागर प्रभु विविध प्रकारें । इण विध खेले फाग ॥ लाल मेंतो० ॥ ६ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हां रे तुंनो जिन भज विलंब न कर हो । होरीके खेलइया ॥ हां० ॥ (आंकणी) ॥ समता लहेर संयममां झीलो । ममता लहेर परिहर

हो ॥ हो० ॥ १ ॥ विनय संभारीमें भरि पिचकारी । हां रे तुंतो, शिवरमणीकुं वरहो ॥ हो० ॥ ज्ञान गुलाल भरी तिहां जोरी । हां रे तुंतो, खेल वसंत वर घर हो ॥ हो० ॥ २ ॥ शील सुगंध आभूषण अंगे । हां रे तुंतो, आतम अनुभव वर हो ॥ हो० ॥ ज्ञान विज्ञान फूली फूल वारी । हां रे तुंतो, गुंजत मनमधुकर हो ॥ हो० ॥ ३ ॥ वामानंदन पाश जिनेमर । हां रे तुंतो, जगनायक जग गुरहो ॥ हो० ॥ श्रीजिनलाभ कहे प्रभु संगे । हां रे तुंतो, समतारस अनुसर हो ॥ हो० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः होरी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नेम मिलेतो बातां कीजीये ॥ होप्यारे ॥ नेम मि० ॥ टेक ॥ मेंहुं तुमारी खिजमतगारी । प्रेमका प्याला पीजीए ॥ हो० ॥ ने० ॥ १ ॥ हम है केतकी तुम हो भमरा । फिर फिर वासना लीजीयें ॥ हो० ॥ ने० ॥ २ ॥ मेंहुं धरती तुम हो मेहुला । कबहुं तो मिलना कीजीयै ॥ हो० ॥ ने० ॥ ३ ॥ नेम राजुल मिल मुक्ति सिधाए । रूपचंद पद दीजीये ॥ हो० ॥ ने० ॥ ४ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः होरी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ आतमतत्व विचारो ज्ञानसें । करम कटे ज्युं शुक्ल ध्यानसें ॥ आ० (आंकणी) ॥ पुद्गल जीव सरूप पिछान्यो । ममता मिट गइ सारी जानसें ॥ कर्म कटे ज्युं शुक्ल ध्यानसें ॥ आ० ॥१॥ क्रोधादिक अरी अंधकार समनाश भयो सब ज्ञान भानसें ॥ आ० ॥ २ ॥ परमातम पद पावत सोई । विनय भजत पद अचल थानसें ॥ आ० ॥ ३ ॥ इति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः होरी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ लाल तेरे नयनोंकी गति न्यारी ॥ एतो उपशम रसकी क्यारी ॥ लाल० ॥ (आंकणी) ॥ कामक्रोधादिक दोष रहित हे । नयन भये अविकारी ॥ निद्रा सुपनदशा नहिंयामें । दर्शनावरण निवारी ॥ लाल० ॥ १ ॥ ओरनयनमें काम क्रोध हे । बहुत भरी हे खुमारी ॥ परधन देख हरनकी इछा । यामें हे हुशियारी ॥ लाल० ॥ २ ॥ ऐसा लछन हे नयनोमें । क्युं पामे भव पारी ॥ ओही विचार करो दिल अपनें । होत कर्मसें भारी ॥

लाल० ॥ ३ ॥ धर्म विना कोई सरनां नहिं हे। एसो निश्चे धारी ॥ विनय कहे प्रभु भजन करो नित। ओही तारन हारी ॥ लाल० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दर्शन विन जीव संसार भम्यो ॥ दर्शन० ॥ चोराशी लख योनी भटकत। लहि मानव भव युंहि गम्यो ॥ द० ॥ १ ॥ पुन्यउदय श्रावक कुल पायो। घटमें ज्ञान उद्योग भयो ॥ द० ॥ २ ॥ माया ममता में निशदिन तुं। विषय विकारशुं नहिं विरम्यो ॥ द० ॥ ३ ॥ सार विवेक तुं धार रे चेतन। भटकत भ्रममें क्युं भटक्यो ॥ द० ॥ ४ ॥ कहत क्षमाकल्याण निरंतर। भज भगवंत तेरो पापशम्यो ॥ द० ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मत भोभो ल्हांनें युंहीरे। कोई चूक बतावो ॥ मत० ॥ अबीर गुलाल भाव सब रमतां। हमशुं कदेय न खेलो रे ॥ को० ॥ १ ॥ रथ फेरी प्रभुजी घर आये। चढिया छे गिरनारी रे ॥ को० ॥ २ ॥ बहुत हठाशुं व्याह रचायो, जीव देख दया आणी रे ॥ को० ॥ ३ ॥ राजुल कन्नी अरज करत हे। एक वार फिर जोवो रे ॥ को० ॥ ४ ॥ नेमि राजुल मिल मुक्ति सिधाए। पहेली राजुल नारीरे ॥ को० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः होरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अटक्यो चित्त हमारो री। जिन चरण कमलमें ॥ अट० ॥ शीतलनाथ जिनेसर साहिब। जिनवर प्राण आधारो री ॥ जि० ॥ १ ॥ माता नंदादेवीको नंदन. दृढरथ नृपको प्यारो री ॥ जि० ॥ २ ॥ श्रीवत्स लंछन जनम भद्दिलपुर। कुल इक्ष्वाग उदारो री ॥ जि० ॥ ३ ॥ नेवु धनुष शरीर सुशोभित। कनक वरण अतुकारोरी ॥ जि० ॥ ४ ॥ एक लक्ष पूरव आयु कहिये। नाम लीआं निस्तारो री ॥ जि० ॥ ५ ॥ दीनदयाल जगत प्रतिपालक। अब मोहे पार उतारो री ॥ जि० ॥ ६ ॥ हरखचंद का साहिब सचे। हुंतो दास तुमारो री ॥ जि० ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मंगल स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मंगल राजे गिरनार। नेम पद मंगल हे (देवा०) मंगल रा

जिमती पद मंगल। मंगल रह नेमि राज (ने०) मंगल गणपति मंगल पाठक। सब तपसी विचसार (ने०) मंगल धन धन्ना मुनि नायक। मंगल सब अनगार (ने०) जय जय खेम कुशल गुरु जंपै। आनन्द घन अवतार (ने०)। इति पदम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ इम माश द्वादश मध्य जे सहु पर्ब्ब सेवन कारनें। सहु भालजन उपगार कारन शुद्ध भाषा सारनें ॥ संवत् रसानलनंदवसुधा भाद्रशित एकादशी। गुरु गछ खरतर कलिकता पुर मोहन भाषा उपदिशी ॥ १ ॥ ❋ ॥ इति द्वादशमाश पर्ब्बाधिकारः ॥ १२ ॥ सं १८३६ ॥

॥ ❋ ॥ अथ द्वादश माश मध्ये प्रसिद्ध पर्ब्बाधिकार कथनानंतर। सांप्रति मखिलजिन पंचकल्याणक स्वरूप मुच्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जिस माशमें जितने दिन भगवंतके कल्याणकके हे। सो सर्वे भव्यजीवोंके सेवन करनें योग्य है। परंतुकोण तिथकों क्या कल्याण कहै। सो जाण्या बिना सेवन कर सकते नही। (और विशेष में) पंच कल्याणक तपस्या करनेंवाले भव्यजीवोंके अवस्य पंच कल्याणक टीप गुणनें विना काम चलता नहीं। इसीसें गुणनो करनें माफक बिधि प्रपाकसें पंच कल्याणक टीप लिखते हैं ॥

॥ ❋ ॥ अथ पंच कल्याणक टीप लि० ॥ ❋ ॥

(कार्त्तिक कृष्णपक्षे) ॥ ५ ॥

५ ॥ श्रीसंभवनाथजी सर्वज्ञाय० ॥
१२ ॥ श्रीपद्मप्रभुजी अर्हते नमः ॥
१२ ॥ श्रीनेमिनाथजी परमेष्टि० ॥
१३ ॥ श्रीपद्मप्रभुजी नाथाय० ॥
३० ॥ श्रीवर्द्धमानजी पारंगताय० ॥

(मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष) ॥ ४ ॥

५ ॥ श्रीसुविधिनाथजी अर्हते० ॥
६ ॥ श्रीसुविधिनाथजी नाथाय० ॥

(कार्त्तिक शुक्लपक्षे) ॥ २ ॥

३ ॥ श्रीसुविधिनाथजी सर्वज्ञाय० ॥
१२ ॥ श्रीअरनाथजी सर्वज्ञाय० ॥

(मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष) ॥ ९ ॥

१० ॥ श्रीअरनाथजी अर्हते नमः ॥
१० ॥ श्रीअरनाथजी पारंगताय० ॥
११ ॥ श्रीअरनाथजी नाथाय० ॥
११ ॥ श्रीमल्लिनाथजी अर्हते० ॥
११ ॥ श्रीमल्लिनाथजी नाथाय० ॥

१० ॥ श्रीवर्द्धमानजी नाथाय नमः ॥
११ ॥ श्रीपद्मप्रभुजी पारंगताय० ॥

(पोष कृष्णपक्षे) ॥ ५ ॥

१० ॥ श्रीपार्श्व नाथजी अर्हते० ॥
११ ॥ श्रीपार्श्व नाथजी नाथाय० ॥
१२ ॥ श्रीचंद्राप्रभुजी अर्हते नमः ॥
१३ ॥ श्रीचंद्राप्रभुजी नाथाय० ॥
१४ ॥ श्रीशीतलनाथजी सर्वज्ञा० ॥

(माघ कृष्णपक्षे ॥ ५ ॥)

६ ॥ श्रीपद्मप्रभुजी परमेष्टिने० ॥
१२ ॥ श्रीशीतलनाथजी अर्हं० ॥
१२ ॥ श्रीशीतलनाथजी नाथाय० ॥
१३ ॥ श्रीऋषभदेवजी पारंगता० ॥
३० ॥ श्रीश्रेयांसजी सर्वज्ञाय नमः ॥

(फाल्गुन कृष्णपक्षे) ॥ १० ॥

६ ॥ श्रीसुपार्श्वनाथजी सर्वज्ञाय०
७ ॥ श्रीसुपार्श्व नाथजी पारं० ॥
७ ॥ श्रीचंद्राप्रभुजी सर्वज्ञाय० ॥
९ ॥ श्रीसुविधिनाथजी परमेष्टि० ॥
११ ॥ श्रीऋषभदेवजी सर्वज्ञाय० ॥
१२ ॥ श्रीश्रेयांसजी अर्हते नमः ॥
१२ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी सर्वज्ञा० ॥
१३ ॥ श्रीश्रेयांसजी नाथाय० ॥
१४ ॥ श्रीवासुपुज्यजी अर्हते नमः ॥
३० ॥ श्रीवासुपुज्यजी नाथाय० ॥

(चैत्र कृष्णपक्षे) ॥ ५ ॥

११ ॥ श्रीमल्लिनाथजी सर्वज्ञा० ॥
११ ॥ श्रीनमिनाथजी सर्वज्ञाय० ॥
१४ ॥ श्रीसंभवनाथजी अर्हते० ॥
१५ ॥ श्रीसंभवनाथजी नाथाय० ॥

(पोष शुक्लपक्षे) ॥ ५ ॥

६ ॥ श्रीविमलनाथजी सर्व० ॥
९ ॥ श्रीशांतिनाथजी सर्व० ॥
११ ॥ श्रीअजितनाथजी सर्वज्ञा० ॥
१४ ॥ श्रीअभिनंदनजी सर्वज्ञा० ॥
१५ ॥ श्रीधर्म्म नाथजी सर्वज्ञा० ॥

(माघ शुक्लपक्षे) ॥ ९ ॥

२ ॥ श्रीअभिनंदजी अर्हते० ॥
२ ॥ श्रीवासुपुज्यजी सर्वज्ञाय० ॥
३ ॥ श्रीविमलनाथजी अर्हते० ॥
३ ॥ श्रीधर्म्म नाथजी अर्हते० ॥
४ ॥ श्रीविमलनाथजी नाथाय० ॥
८ ॥ श्रीअजितनाथजी अर्हतेनमः ॥
९ ॥ श्रीअजितनाथजी नाथाय० ॥
१२ ॥ श्रीअभिनंदनजी नाथाय० ॥
१३ ॥ श्रीधर्म्म नाथजी नाथाय० ॥

(फाल्गुन शुक्लपक्षे) ॥ ५ ॥

२ ॥ श्रीअरनाथजी परमेष्टिने० ॥
४ ॥ श्रीमल्लिनाथजी परमेष्टि० ॥
८ ॥ श्रीसंभवनाथजी परमेष्टि० ॥
१२ ॥ श्रीमल्लिनाथजी पारंगता० ॥
१२ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी नाथाय० ॥

४ ॥ श्रीसुपार्श्व नाथजी परमेष्टि०
४ ॥ श्री पार्श्व नाथजी सर्वज्ञाय०
५ ॥ श्रीचंद्रप्रभूजी परमेष्टि० ॥
८ ॥ श्रीआदिनाथजी अर्हते० ॥
८ ॥ श्रीआदिनाथजी नाथा० ॥

(वैशाख कृष्णपक्षे) ॥ ९ ॥

१ ॥ कुंथुनाथजी पारंगताय० ॥
२ ॥ श्रीशीतलनाथजी पारंग० ॥
५ ॥ श्रीकुंथुनाथजी नाथाय० ॥
६ ॥ श्रीशीतलनाथजी परमेष्टिने० ॥
१० ॥ श्रीनमिनाथजी पारंग० ॥
१३ ॥ श्रीअनंतनाथजी अर्हते० ॥
१४ ॥ श्रीअनंतनाथजी नाथा० ॥
१४ ॥ श्रीअनंतनाथजी सर्व० ॥
१४ ॥ श्रीकुंथुनाथजी अर्हते० ॥

(ज्येष्ट कृष्णपक्षे) ॥ ८ ॥

८ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी अर्हते० ॥
९ ॥ श्रीसुनिसुव्रतजी पारं० ॥
१३ ॥ श्रीशांतिनाथजी अर्हते० ॥
१३ ॥ श्रीशांतिनाथजी पारंग० ॥
१४ ॥ श्रीशांतिनाथजी नाथाय० ॥

(आषाढ कृष्णपक्षे) ॥ ३ ॥

४ ॥ श्रीआदिनाथजी परमेष्टि० ॥
७ ॥ श्रीविमलनाथजी पारंग० ॥
९ ॥ श्रीनमिनाथजी नाथाय० ॥

(चैत्र शुक्लपक्षे) ॥ ८ ॥

३ ॥ श्रीकुंथुनाथजी सर्वज्ञाय० ॥
५ ॥ श्रीअजितनाथजी पारंग० ॥
५ ॥ श्रीसंभवनाथजी पारंग० ॥
५ ॥ श्रीअनंतनाथजी पारंग० ॥
९ ॥ श्रीसुमतिनाथजी पारंग० ॥
११ ॥ श्रीसुमतिनाथजी सर्वज्ञा० ॥
१३ ॥ श्रीवर्द्धमानजी अर्हते० ॥
१५ ॥ श्रीपद्मप्रभूजी सर्वज्ञाय० ॥

(वैशाख शुक्लपक्षे) ॥ ८ ॥

४ ॥ श्रीअभिनंदनजी परमे० ॥
७ ॥ श्रीधर्म्म नाथजी परमेष्टि० ॥
८ ॥ श्रीअभिनंदनजी पारंग० ॥
८ ॥ श्रीसुमतिनाथजी अर्हते० ॥
१० ॥ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय० ॥
१२ ॥ श्रीविमलनाथजी पारं० ॥

(ज्येष्ट शुक्लपक्षे) ॥ ४ ॥

५ ॥ श्रीधर्म्मनाथजी पारंग० ॥
९ ॥ श्रीवासुपूज्यजी परमेष्टिने० ॥
१२ ॥ श्रीसुपार्श्व नाथजी अर्हते० ॥
१३ ॥ श्रीसुपार्श्व नाथजी नाथाय० ॥

(आषाढ शुक्लपक्षे) ॥ ३ ॥

६ ॥ श्रीवर्द्धमानजी परमेष्टि० ॥
८ ॥ श्रीनेमनाथजी पारंग० ॥
१४ ॥ श्रीवासुपूज्यजी पारंग० ॥

(श्रावण कृष्णपक्षे) ॥ ४ ॥
३ ॥ श्रीश्रेयांसजी पारंगताय०
७ ॥ श्रीअनंत नाथजी परमेष्टि०
८ ॥ श्रीनमिनाथजी अर्हते नमः ॥
९ ॥ श्रीकुंथुनाथजी परमेष्टिने नमः ॥

(भाद्रवा कृष्णपक्षे) ॥ २ ॥
७ ॥ श्रीचंद्रप्रभजी पारंगता० ॥
७ ॥ श्रीशांतिनाथजी परमे० ॥
८ ॥ श्रीसुपार्श्वनाथजी परमे० ॥

(आश्विन कृष्णपक्षे) ॥ २ ॥
१३ ॥ श्रीमहावीरजी गर्भापह० ॥
३० ॥ श्रीनेमिनाथजी सर्वज्ञाय नमः

(श्रावण शुक्लपक्षे) ॥ ५ ॥
२ ॥ श्रीसुमतिनाथजी परमेष्टि० ॥
५ ॥ श्रीनेमिनाथजी अर्हते नमः ॥
६ ॥ श्रीनेमिनाथजी नाथाय० ॥
८ ॥ श्रीपार्श्व नाथजी पारंग० ॥
१५ ॥ श्रीमुनिसुव्रतजी परमे० ॥

(भाद्रवा शुक्लपक्षे) ॥ १ ॥
९ ॥ श्रीसुविधिनाथजी पारंग० ॥

(आश्विन शुक्लपक्षे) ॥ १ ॥
१५ ॥ श्रीसुविधिनाथजी परमेष्टि० ॥

॥ ❀ ॥ इति पंचकल्याणक संपूर्ण ॥
॥ ❀ ॥ गर्भापहार पदमप्यस्ति ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचकल्याणक विधि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम शुभदिन शुभ वर्गी गुरूके पास । पंचकल्याणक तप ग्रहण करे । उपवास (वा) आंबिल एकासणा दिकको पचक्खाण करे । तीन टंक देव वंदन करे । पडिक्कमणो करे । (जिस दिन) जो महाराजको कल्याणक होय । उसीको २००० गुणनो करे । ओर (पास जिनेसर जगति लोए०) इत्यादि पंच कल्याणक भावगर्भित स्तवन पढे (वा) सुणे । जहां भगवंन के कल्याणक भूमि होय । (उहां) बडे महोत्सवसे संघ महत यात्रा करने कों जावे । विधिसंयुक्त यात्रा करे । ओर सर्व भगवंनों के पंच कल्याणकको उत्सव करे । (जो) शक्ति न हो (तो) शासनके अधिपति श्रीमहावीर स्वामी के पद कल्याणकका उत्सव जरूर करे ॥ ❀ ॥ अब २३ भगवंन की अपेक्षायें पांच. श्रीवीर प्रभूकीअपेक्षायें षट् कल्याणक संक्षेप उत्सव विधि लि० ॥ ❀ ॥ १ ॥ चवन कल्याणक कों (परमेष्टिनेनमः) कहिये (इस दिन) चवद स्वप्नादिक की पूजा करायके । चवन कल्याणकको उत्सव करे । हीरा चढावे ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ २ ॥ जन्म कल्याणक कों (अर्हते नमः) कहीयै (इस दिन) जलयात्रादिक महोछव करके । अष्टोत्तरी स्नात्रादिक करावे । वस्त्र चढावे ॥ २ ॥ ❀ ॥ ३ ॥ दिक्षा कल्याणक कों (नाथाय नमः) कहीयै (इस दिन) समोसरण निकालै । अशोकवृक्षादिकके नीचे स्थापन करके । दिक्षाको उछव करे । घृत गुरु वस्त्रादिक चढावे । शक्तिमाफक दान देवे ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ४ ॥ केवल ग्यान कल्याणककों (सर्वज्ञाय नमः) कहीयै । (इस दिन) समोसरणमें भगवंतकों स्थापन करके । आठ प्रातिहार्य प्रगट करै । नाना प्रकारके उछव करे । वस्त्र आभूषण चढावे । सपेदगोला चढावे ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ५ ॥ निर्वाण कल्याणककों (पारंगताय नमः) कहीयै । (इस दिन ।) निर्वाण कल्याणक के भावगर्भित उछव करे लाडूचढावे ॥ ५ ॥ (और) छठा गर्भापहार कल्याणकका उछव करणा होय तो चवण कल्याणकके उछव समान करे ॥ ६ ॥ (इसी तरै) सर्व कल्याणकके उछव करै । तपस्या पूर्ण होनें सें । पंचकल्याणक जीकी पूजा करावै । गुरूभक्ति करै । साहमी वछल करै । (इत्यादिक विधि संयुक्त यह तपस्या (जो) भव्य जीव करेंगे (सो) अनन्त सुख कों प्राप्त होंगे ॥ इति पंचकल्याणक तपस्या धिकारः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पख वासैको स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सीमंधर करजो मया (एदेशी) जंबुद्वीप सोहामणो । दक्षिण भरत उदार । राजग्रही नगरी भली । अलिका पुर अवतार ॥ १ ॥ (श्री मुनिसुव्रत स्वामी जी) । समरंता सुख थाय । मनवंछित फल पामीयै । दोहग दूरपुलाय ॥ २ ॥ (श्री०) राज करै तिहां राजियो । सुमित्र नरेसर नांम । पटराणी पद्मावती । शीलगुणें अभिराम ॥ ३ ॥ (श्री०) श्रावण ऊजल पूनमें । श्रीजिनवर हरिवंश । माताकुक्षि सरोवरै । अवतरीयो रायहंस । (श्री०) ॥ ४ ॥ जेठपढम पक्ष अष्ठमी । जायो श्री जिनराय ॥ जनम महोछव सुरकरे । त्रिभुवन हरख नमाय (श्री०) ॥ ५ ॥ शामल वरण सोहामणो । निरुपम रूपनिधान । जिनवर लंछन काछवो । वीशधनुष तनुमान (श्री०) ॥ ६ ॥ परणी नार प्रभावती । भोगपुरंदर

साम । राजलीला सुखभोगवे । पूरे वंछित काम (श्री०) ॥ ७ ॥ तब लोगांतिक देवता । आवि जंपे जयकार । प्रभु फागुणवदि बारसे । लीधो संजम भार (श्री०) ॥ ८ ॥ शुभ फागुणवदि बारसे । मनधर निरमल ध्यान । च्यारकर्म प्रभुचूरिया । पाम्यो केवलग्यान (श्री०) ॥ ९ ॥ (ढाल २) सुखकारण भवियण (एहनी) ॥ ततखिण तिहां मिलिया चलिया सुरनर कोडि । प्रभुना पदपंकज प्रणवे बेकरजोडी । बेकरजोडी भाव छोडी समवसरण विरतंत । माणक हेम रूपमय त्रिगडो छत्र त्रय झलकंत । सिंहासन बेठा तिहां स्वामी चोविह धर्मप्रकासे । बारे परखदा बेठी आगलि सुणे मन उल्हासे ॥ २४ ॥ तपनें अधिकारे पखवासो तपसार । पडिवा थी कीजे पनरह तिथ उदार । पनरह तिथि कीजे गुरु मुख लीजे जिस दिन हुवे उपवास । श्रीमुनिसुव्रत नाम जपीजे वांदी देव उल्लास । तप उजमणें रजत पालणो सोवन पूतलीचंग । मोदक थाल देहरे मूंकी जिनवर स्नात्र सुरंग ॥ ११ ॥ तप करिये निरन्तर अदुख दर्शनी जेम । मनवंछित केरा सुखपामी जे तेम । पुत्र मित्र परिवार परं अति वल्लभ भरतार । जस कीरत सोभाग वडाई महियल महिमा जांण । परभव सुगति फल लहीये एतपनें प्रमांण ॥ १२ ॥ थिर थापी चतुर्विध संघ तणो अधिकार । भरुयछ प्रमुख नगरादिक करिया विहार । विहार करी प्रतिबोधे खंदक पंचसयां परिवार । कात्तिकसेठ जितसत्तु तुरंगम सुव्रतनाम कुमार । तीश सहस वरस आऊखो पाले जग दया सार । श्रीसम्मेत सिखर परमेसर पुहता मुगति मझार ॥ १३ ॥ इम पंच कल्याणक थुणिया त्रिभुवन नाथ । मुनिसुव्रत स्वामी वीशमो जिनवरराय । वीशमो जिनवर राय जगत गुरु भयभंजण भगवंत । निराकार निरंजन निरुपम अजरामर अरिहंत । श्रीजिनचंद विनय शिरोमणि सकल चंद्र गणिसीस । वाचक समय सुन्दर इम पभणे पूरो मनह जगीस ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ १ ॥ इति पखवासा स्तवन संपूर्णम् ॥ ४४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पखवासा तप विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम शुभ दिन गुरुके पास तप ग्रहण करके सुद (१)

पडिवासें । पूर्णमासी तक । इकसार पनरे उपवास करै । जो शक्ती न हो (तो) प्रथम सुद पक्षकी पडवा १ । द्वितीय सुद पक्षकी दूज २ (ऐसें) अनुक्रमसें पनरे सुदपक्षमें तपस्या पूर्ण करै । श्री मुनिसुव्रत स्वामीके पंच कल्याणक जावगर्ब्भित स्तवन पढै । गुरूको संयोग होय (तो) गुरूके पास सुणें ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ इसीको (२०००) दो हजार गुणनो करै । और तपस्या ग्रहण करनेंकी (तथा) देववंदनादिककी विधि । पूर्वे खुलासा लिख दीनी है । उसी मुजब विवेकी जीव सब तपस्या की विधि करै । विधि संयुक्त करनें सें उत्तम फल मिलता है ॥ ❋ ॥ इति पखवासा विधिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ दश पच्चक्खाण स्तवन लि० ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहाः) ॥ सिद्धारथ नंदन नमूं । महावीर जगवंत । त्रिगडै बैठा जिनवरू । परषदबार मिलंत ॥ १ ॥ गणधर गौतम तिण समें । पूछै श्रीजिनराय । दश पचखाण किसा कह्या । कीयां कवण फल थाय ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ १ ॥ सीमंधर करज्योमया (एदेशी) ॥ श्रीजिनवर इम उपदिशै सांजल गोयम स्वाम । दश पचखाण कियां थकां । लहीयें अविचल ठाम ॥ श्री० ॥ ३ ॥ नवकारसी १ । बीजी पोरसी २ ॥ साढ पोरसी ३ । पुरमड्ढ ४ ॥ एकासण ५ ॥ नीवी ६ ॥ कही ॥ एकलठाण ७ ॥ देव द्धि ॥ (श्री ४) ॥ दात ८ । अंबिल ९ । उपवास १० । ही ॥ एहीज दश पच्चख्खाण । एहना फल सुण गोयमा । जू जूवा करूं वखाण ॥ (श्री० ५) ॥ रतन प्रजा १ । शर्कर प्रजा २ ॥ वालुक ३ । तीजी जांण ॥ पंक प्रजा ४ । तिम धूम प्रजा ५ ॥ तम प्रजा ६ । तम तम ७ । ठाम । (श्री० ६) ॥ नरक सात कही एसही । करम कठिन करजोर । जीव करम वस ते सही । उपजै तिण हीज ठोर (श्री० ७ ॥) छेदन जेदन ताडना । जूख त्रिषा वलित्रास । रोम रोम पीमा करै । परमाहम्मी तास (श्री० ८) ॥ रात दिवश खेत्रवेदना । तिलजर नहीं जिहां सुक्ख । किया करम जे जोगवे । पामें जीव बहुडुक्ख (श्री० ९) ॥ इकदिनरी नवकारसी । जे करै जाव

विशुद्ध। सो वरस नरकनो आऊखो। दूर करे ज्ञानबुद्धि (श्री० १०)॥ नित्य करे नवकारसी। ते नर नरक न जाय। नरहे पाप वलि पाछला। निरमल होवे जी काय (श्री०)॥ ११॥ ढाल २॥ श्रीविमलाचल सिर तिलो (ए चाल)॥ सुण गोतम पोरसी कियां। महामोटो फलहोय। भावसुं जे पोरसी करे। दुरगति छेदे सोय (सु० १२)। नरक मांहें जे नारकी। वरशे एक हजार। करम खपावे नरकमें। करता बहुत पुकार (सु० १३॥) एक दिवश नी पोरसी। जीव करे इकतार। करमहणें सहस एकना। निहचेसुं गण धार (सु०) १४॥ दुरगति मांहें नारकी। दसहजार प्रमाण। नरक आयु खिण एकमें। साढपोरसी करे हांण (सु०) १५। पुरमड्ढ करे नित जीवजे। नरके ते नविजाय। लाख वरश करमने दहे। पुरमड्ढ करम खपाय (सु०) १६॥ लाख वरश दश नारकी। पामें दुःख अनंत। इतरा करम एकासणें। दूर करे मनखंत (सु०) १७॥ एककोडि वरसांलगे। करम खपावे जीव। नीवीय करतां भावसुं। दुरगति हणें सदीव (सु०) १८॥ दश कोडी जीव नरकमें। जितरो करे कर्म दूर। तितरो एकलठांणही। करेमही चकचूर (सु०) १९॥ दात करंता प्राणीयो। सो कोडी परमांण। इतरा वरश दुरगति तणा। छेदे चतुर सुजांण (सु०) २०॥ आंबि लनो फल बहु कह्यो। कोडी एक हजार। करम खपावे इणपरे। भाव आंबिल अधिकार (सु०) २१॥ कोडी सहस दशवरशही। सहे दुःख नरक मझार। उपवास करे इक भावसुं। तो पामें सुगति मझार (सु०) २२॥ ढाल ३॥ केकेइ वरजायो (एदेशी)॥ लाख कोडी वरसां लगे। नरके करतां रीवरे। (गोतम गणधारी) छठम तप करतां थकां। सहीं न रक निवारे जीवरे (गो० २३) नरके वरश कोड लाखही। जीव लहे तिहां दुःखरे। ते दुःख अठम तप हुंती। दूरकरी पामें सुक्खरे (गो०) २४॥ छेदन भेदन नारकी। कोडा कोडि वरसोइरे। कुगति क्रमतिनें पर हरो। दशमें एतो फल होइरे (गो० २५) नितकाल जल पीवतां। कोडा कोडी वरशनो पापरे। दूरकरे खिण एकमें। निश्चेहोय निः पापरे (गो० २६) वलिय विशेषे फल कह्यो। पांचम करे उपवासरे। पामेंग्यां

न पांचेजला। करता त्रिनुवन परकासरे (गो०) २७ ॥ चवदश तप विधसुं करे। चवदह पूरव होय धाररे। इम अनेक फल तपतणा। कहितां वलि नावे पाररे (गो० २८)॥ मन वचने काया करी। तप करे जेनर नाररे। इग्यारे वरश एकादशी। करतां लहे नवपाररे (गो० २९)॥ आठम तप आराधतां। जीव न फिरे संसाररे। अनंत नवांना पापथी। छूटे जीव निरधाररे (गो० ३०)॥ तप हुंती पापी तरया। निसतरीयो अरजुन मालरे दृढप्रहारि तपसें तिरयो। चजहत्याना बूटा जालरे (गो० ३१)॥ तपना फल सूत्रे कया। पच्चक्खाण तणा दश नेदरे। अवर नेद पिणछे घणा। करतां छेदे त्रय वेदरे (गो० ३२)॥ कलशः॥ ❋ ॥ पच्चक्खाण दश विध फल प्ररूप्या महावीर जिण देवए। जे करे नवियण तप अखंमित तासु सुरपय सेवए। संवत्त निधिगुण अश्व शशि वलि पोशसुद दशमी दिनें। पदम रंग वाचक सीसगणिवर रामचंद्र तपविधि नणें (गो० ३३)॥ ॥ इति दश पच्चक्खाण वृद्ध स्तवनं ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ १० पच्चक्खाण तपविधिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ यह दश १० पच्चक्खाणके स्तवनमें। खुलासा दश पच्चक्खाणके नेद (और) वेला। तेला। पांचम। आठम। चौदश। (इत्यादिक) तपस्या करनेंके फल। नगवंत श्री महाबीर स्वामीके। वचन माफक। उत्तम पुरुषोनें रचना करी है। (इसीसें) धर्मरागी पुरुष। इसी स्तवनकों पढके। तपश्या करनेंमें आदरवंत होताहे। और कोईके दश पच्चक्खाण तप करनेंकी इछा हो (तो) पहले दिन। नवकारसी, दूशरे दिन पोरसी (इसी तरे) स्तवन मुजब १० पच्चक्खाण तप। दश दिवशे सेवन करे। सदा स्तवन सुणें। गुरूको संयोग न हो (तो) आपपढे। अंतमें पूजाकरावे। शक्ती माफक उद्यापन करे (इसी तपस्याके प्रसाद) खोटी गतिकों दूर करके। अछी गतिके बंध बांधे। महा ऐश्वर्यवंत होय। नाग्यवंत होय॥ ❋ ॥ इति दश पच्चक्खाण तप विधिः॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ वीश स्थांनक स्तवन लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्रीसिद्धाचल नेटिये (एदेशी)॥ वीश थांनक तपसेवीये।

अर करि सुभ परिणांम लाल रे । तीजे भव सेव्योथको । बांधे तीर्थंकर नाम लालरे । (वी०) ॥ १ ॥ तप रचना अथकी कही । ग्याता अंग म फार लालरे । सुणजो भवि तुमे भावसुं । चितसें करिये उच्चार लालरे (वी०) ॥ २ ॥ सुविहत गुरु पासे ग्रहे । वीश थानक तप एह लाल रे । निरदूषण सुभमहुरते । उचरीजे ससनेह लालरे (वी०) ॥ ३ ॥ अरिहंत १ । सिद्ध २ । प्रवचननमुं ३ ॥ सूरि ४ । थिवर ५ । उवझाय ६ । लालरे ॥ साधु ७ । नाण ८ । दंसण ९ । अरु ॥ विनय १० । नमुं उव साय लालरे (वी०) ॥ ४ ॥ चारित्र ११ । बंभ १२ । क्रियापदे १३ ॥ तप १४ । गोयम १५ । जिण १६ । ईस लालरे ॥ चारित्र १७ । ग्यान नं १८ । श्रुत १९ । भणी ॥ नमुं तीर्थ २० । पदवीश लालरे (वी०) ॥ ५ ॥ वीश दिवशमें एकही । पद गुणनो करमेव लालरे । अथवा दिन वी शांलगे । वीशे पद गुणमेव लालरे (वी०) ॥ ६ ॥ एकउली पदमासमें । पूरीजो नविहोय लालरे । फेरनवी करणी पडै । पिछली निष्फल जोय लालरे (वी०) ॥ ७ ॥ छठ अठम उपवाससुं । अथवा देखी शक्ति लालरे । पोसहकर आराधिये । देववांदे निज भक्तिलालरे (वी०) ॥ ॥ ८ ॥ संपूरण पद सेवतां । पोसहरो नही जोग लालरे । तोही सात पदेसही । पोसह करिये संजोग लालरे (वी०) ॥ ९ ॥ सूरि, थिवर पाठक, पदे । साधु, चारित्र, सुजांण लालरे । गोतम, तीर्थपदे, सही । सात थांनक मनमान लालरे । (वी०) ॥ १० ॥ पद पद दोठ करे सदा दोय दोय जाप हजार लालरे । पडिक्कमणो दोय टंकही । करिये पूजा सार लालरे (वी०) ॥ ११ ॥ शक्ति सुजस तप कीजीये । एक उली करो वीश लालरे । वीशा वीशी च्यारसे । तप संख्या कही एम लालरे (वी) ॥ १२ ॥ जिसदिन जो पद तप करे । तिसके गुण चितधार लालरे । काउसग्ग पर दक्षणा । सुख भणिये नवकार लालरे (वी०) ॥ १३ ॥ जिस पदकी स्तवना सुणें । कीजे जिन पद भक्ति लालरे (वी०) ॥ १४ ॥ सूतक जनम रितु कालमें । कतिधारयो उपवास लालरे । मोक्षेसे नहि लेखवो । निकेवल तपजास लालरे (वी०) ॥ १५ ॥ सावद्य त्या

ग पणो करै। सोकन धारै चित्त लालरे। शील आनूषण आदरै। मुखसुं बोलै सत्य लालरे। (वी०) ॥ १६ ॥ जेठ आषाढ वैशाखमें। मिगसर फागु ण माह लालरे। एषट् माशे मांहिनें। व्रत ग्रहीयै वम्भ लाग लालरे (वी०) ॥ १७ ॥ तप पूरण हुवां थकां। उजमणो निरधार लालरे। कीजे शक्ति विचारनें। उछव विवध प्रकार लालरे (वी०) ॥ १८ ॥ वीश वीश गिणती तणा। पुस्तक पूठा आदि लालरे। ग्यान तणी पूजा करै। मुंकीजे हठ वाद लालरे (वी०) ॥१९॥ फलवधी नगरनी श्राविका। कीधी विध चित्त लाय लालरे। जनम सफल करवा भणी। ओहीज मोक्ष उपाय लालरे (वी०) ॥ २० ॥ (कलश) ॥❋॥ इम वीर जिनवर तणी आग्या धार चित्त मझारए। सद्गुरुदेख आगम तणी रचना रची तप विधसारए। वसुनंद सि द्धी चंद्र वरसे चैत्र मास सुहंकरू। मुनि केसरी शशि गछ खरतर भणी स्तवना मन हरू ॥ २१ ॥ इति वीश स्थानक तप स्तवनं संपूर्णम् ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ वीश स्थानक तपकरण विधि लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ तिहां प्रथम शुभ मुहुर्त्तके दिन। नंदी स्थापना पूर्वक। सुवि हित गुरुके समीप। वीश स्थानक तप। विधिपूर्वक उचरै। एक उली दो माशसें लेकै (यावत्) छम्माशें पूरी करै। (कदाचित्) छम्माश मध्ये पूरी नकर सकै (तो) वा उली गिणती में नहीं। और नवी करणी पडै। एक उलीके वीश पद है (तिहां) कोई वीश दिनमें। वीशो पद जूदा २ गिणें कोई वीशों दिनमें एकजपद गिणें। दूसरै वीशों दिनमें दूसरो पद। (ऐसें) वीशों पदकी वीश उली करै। तिहां पदाराधनके दिन प्रबल शक्तिवंत। अठम तप करिकै आराधै। वीश अठमें एकउली होय (ऐसें) वीश उली (४००) अठमें आराधै। और तिससें होनशक्ति छठ तप करके आराधै। तिससें होनशक्ति चौविहार उपवास करके आराधै। तिससें हीन शक्ति त्रिविहार उपवास करके आराधै। तिससें हीन शक्ति आंबिल (तथा) ति विहार एकाशणा करके आराधै। तिहां शक्तिवान प्राणी। सर्व तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करै। (हीन शक्ति) दिन पोसह करै। वीशों पद पोसह सेती आराधै (जो) पोसह शक्ति सर्व पदमें न हो (तो)

आचार्य पदे १ उपाध्याय पदे २ थिवर पदे ३ साधू पदे ४ चारित्र पदे ५ गोतम पदे ६ तीर्थ पदे ७ यह सात थानके तो पोसहज करके आरावे । तथापि शक्ति न हो (तो) तिस दिन देशावगासिककरे । सावद्य व्यापार त्यजे । सो पिण नहोइ (तो) यथाशक्ति तप करी आरावे । अपणी ही ननान्नावे (तथा) मृतक जातक का सूतकमें उपवासादि तप न गिणें, न जावे । स्त्रियां पिण ऋतु समय का तप न गिणें (तथा) तपके दिन पोसह सहित करे (तो) बहोत श्रेयकारी है । सो न होसके । (तो) तपके दिन उन्नय टंक पडिक्कमण करे । तीन टंक देव वंदन करे । दो सहस्र (२०००) एक पदका जप करे । ब्रह्मचर्य पाले । नूमि शयन करे । तपके दिन अतिसावद्य आरंन्न व्यापार न करे । असत्य न बोले । सर्व दिन तप पदके गुण कीर्त्तनमें रहे । (तथा) तपके दिन पोसह करे (तो) पारणेके दिन जिन न्नक्ति करके पारणो करे । (जो) तपके दिन पोसह नहो (तो) उसी दिन श्रीजिन न्नक्ति करे । करावे । न्नावना न्नावे । (तथा) तपके दिन पदके गुण न्नेद प्रमाण संख्याई काउसग्ग करे । (तावन्मात्र) तद्गुण स्मरण पूर्वक खमासमण देई वंदना करे । उस पदका गुण यादकरके उदात्त स्वरे स्तवना करे । हर्षित रहे ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वीश स्थानक गुणनो और काउसग्गका प्रमाण लिखते हैं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (णमो अरिहंताणं) (२०००) गुणनो । लोगस्स १२ काउसग्ग ॥ ❀ ॥ १ ॥ ❀ ॥ (णमो सिद्धाणं) (२०००) गुणनो । लोगस्स १५ काउसग्ग ॥ ❀ ॥ २ ॥ ❀ ॥ (णमो पवयणस्स) (२०००) दो हजार गुणनो । लोगस्स ७ काउसग्ग ॥ ❀ ॥ ३ ॥ ❀ ॥ (णमो आयरियाणं) (२०००) दो हजार गुणनो । लोगस्स ३६ काउसग्ग ॥ ❀ ॥ ४ ॥ ❀ ॥ (नमो थेराणं) (२०००) दो हजार गुणनो । लोगस्स १० काउसग्ग ॥ ❀ ॥ ५ ॥ ❀ ॥ (णमो उवज्झायाणं (दो हजार गुणनो । लोगस्स २५ काउसग्ग ॥ ❀ ॥ ६ ॥ ❀ ॥ (णमो लोए सव्वसाहुणं) २००० गुणनो । लोगस्स २७ काउसग्ग ॥ ❀ ॥ ७ ॥ ❀ ॥ (णमो नाणस्स) २००० गुणनो । लो

गस्स ५ काउसग्ग ॥ ❋ ॥ ८ ॥ ❋ ॥ (णमो दंसणस्स (२०००) गुणनो। लोगस्स १७ काउसग्ग ॥ ❋ ॥ ९ ॥ ❋ ॥ (णमो विनयसंपणाणं) २००० गुणनो। लोगस्स १० काउसग्ग ॥ ❋ ॥ १० ॥ ❋ ॥ (णमो चारित्तस्स) २००० गुणनो। लोगस्स ६ काउसग्ग ॥ ❋ ॥ ११ ॥ ❋ ॥ (णमो बंजव्रय धारीणं) २००० गुणनो। लोगस्स ९ काउसग्ग ॥ ❋ ॥ १२ ॥ ❋ ॥ (णमो किरिआणं) २००० गुणनो । लोगस्स २५ काउसग्ग ॥ ❋ ॥ १३ ॥ ॥ ❋ ॥ (णमो तवस्सीणं) २००० गुणनो । लोगस्स १५ काउसग्ग ॥ ❋ ॥ १४ ॥ ❋ ॥ (णमो गोयमस्स) २००० गुणनो। लोगस्स १७ काउसग्ग ॥ ❋ ॥ १५ ॥ ❋ ॥ (णमो जिणाणं) २००० गुणनो। लोगस्स १० काउसग्ग ॥ ❋ ॥ १६ ॥ ❋ ॥ (णमो चरणस्स) दो हजार गुणनो। लोगस्स १२ काउसग्ग ॥ ❋ ॥ १७ ॥ ❋ ॥ (णमो नाणस्स) २००० गुणनो । लोगस्स ५ काउसग्ग ॥ ❋ ॥ १८ ॥ ❋ ॥ (णमो सुअनाणस्स) २००० गुणनो। लोगस्स १० काउसग्ग ॥ ❋ ॥ १९ ॥ ❋ ॥ (णमो तित्थस्स) २००० गुणनो। लोगस्स पांच काउसग्ग करै ॥ ❋ ॥ २० ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

इति वीश स्थानिक गुणनो संपूर्णम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

इत्यादि विधिसंयुक्त वीशों उलीमें सर्व पदके उछव महोछव प्रभावना ऊजमणा पूर्वक करे । जिन शाशन के उन्नतिके कारण करे । इतनी शक्ति न हो (तो) एक उली तो विशेष उछवादि सहित करणी चाहिये॥ इहां विधि प्रपाक ग्रंथसें वीश स्थानक सेवनविधि संक्षेप मात्र लिखी है (जो) गुरुको संयोग हुय । तबतो विस्तारसें वीशों पदकी जूदी जूदी विधि गुरुके मुखसें समझके करे (जो) गुरुका जोग न हो (तो) विवेक संयुक्त इस विधिकों देखके वीश स्थानक तप सेवन करे। वीश स्थानक तवन पढे (वा) सुणें। वीश स्थानकजीकी पूजा करावे । अपनी शक्ति माफक वीश वीश ग्यानोपगरण करावे। । देव पदको देव खाते लगावे । ग्यान पदको ग्यान खाते लगावे। गुरु पदको गुरु खाते लगावे। सर्व तीर्थोंकी यात्रा करे। साहमी वछल करे (इत्यादिक) द्रव्ये, भावे, विधिसंयुक्त सुध भावसें (जो) भव्य जीव यह वीश स्थानक पदकों सेवने करेंगे (सो) जिन नाम

कर्मको उपार्जन करके। तीशरे भव अनंत सुखको प्राप्त होंगे। इत्यलंविस्त रेण॥ ॥ इति बीशस्थानक तपउजी विधि संपूर्णम्॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ रोहणी तप स्तवन लि० ॥ ॥

॥ ॥ शाशण देवत सांमणीए। मुझ सानिध कीजे॥ भलो अक्षर प्रगति भणी। समझाई दीजे॥ मोटो तप रोहण तणोए। जिणरा गु ण गाउं॥ जिम सुख सोहग संपदाए वंछित फल पाउं॥ १॥ दक्षिण भ रते अङ्गदेस छे चंपानयरी। मघवा राजा राज करे तिण जीता वैरी। पाट तणी राणी रुक्मीए लखमी इण नामें। आठ पुत्र जाया जिणें ए मनमें सुख पामें॥ २॥ रोहणी नांमें पुत्रिकाए सबकुं सुखकारी। आठां पुत्रां ऊपराए तिणलागे प्यारी। वाधे चंद्र तणी कलाए जिम पख उजवाले। तिम ते कुमरी धाय माय पांचे प्रतिपाले॥ ३॥ कुमरीरूपे रुक्मीए घर अङ्गण बेठी। दीठी राजा खेलतीए तिण चिंता पेठी। तीन भुवन विच एहवी ए नहीं दूजी नारी। रंभा पदमा गवर गंग इण आगल.हारी॥ ४॥ पुरुष न दीसे कोइ इसो जिणनें परणाउं। आख्यां आगल साल व धे तिण चयन न पाउं। देश २ ना राजवीए ततखिण तेड़ाया। सबल सजाई साथ करी नरपति पिण आया॥ ५॥ वीतशोक राजा तणोए ते कुमर सोभागी। कन्या केरी आखंडीए तिण सेती लागी। कला देखे स कल लोक चढीया केई पाला। चित्रसेन रे कंठ ठवी कुमरी वरमाला॥ ६॥ देव अनें देवांगनाए जंपे जय २ कार। रलियायत थयो देखनें ए सारो संसार। करजोमी कहे लोक वखन कन्यारो जामो। वीत शोकनो कुमर थयो शिर ऊपर लाभो॥ ७॥ इम वीवाह थयो भलो ए दीया दान अपा र। घर आया परणी करीए हरख्यो परिवार। वीतशोक निज पुत्र नणी अपणो पाट दीधो। आपण संयम आदरी ए जगमें जश लीधो॥ ८॥ ढाल॥ ॥ प्रभु प्रणमुंरे पाशजिनेसर थंभणो (एदेशी)॥ ॥ तिण नयरीरे चित्रसेन राजा थयो। सुख मांहे रे केतलो काल वही गयो। इण अवसरे आठ पुत्र हुवा भला। चढते पखरे चंद जिसी चढती कला (ठलाणो) चढती कला हिव राय बेठो पास बेठी रोहणी। मालसी ऊमें

कंत सेती करै क्रीमा अति घणी। आठमो बालक गोद ऊपर रंगसुं राणी लियो। पुत्रनें प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ९ ॥ (चाल) इक कांमणरे गोख चढी द्रष्टे पडी। शिर पीटै रे दीनस्वरे रोवै खमी। बूढा पणरे मनगमतो बालक मुंओ। हुं एकजरे तिण अधिकेरो दुखहुवो (त्रु०) दुखहुवो देखी रोहणी हिव कहै इम प्रीतम भणी। एनार नाचै अनें कूदै कहो किम मोटा धणी। एहवो नाटक आजतांइ में कदे देख्यो नही। मुझनें तमासो अनें हाशो देखतां आवै सही ॥ १० ॥ (चाल) ॥ इण वचनें रे री सांणो राजा कहै ॥ तूंपापणी रे परतणी पीमा नवि लहै। ए दुखणी रे पुत्र मुंए तम फड करै। जब वीतै रे वेदना जाणी जै तरै। (त्रु०) जाणें तरै तुं वात दुखनी गरब गहली कामनी। इम कही राजा हाथ झाल्यो तेह ना बालक भणी। सातमी भुंयथी तलै नाख्यो तिसे हाहारवथयो। रोहणी हसती कहै प्रीतम पुत्र नीचै किम गयो ॥ ११ ॥ (चाल) हिव राजा रे पुत्र तणें शोकै करी। थयो मुरछितरे रोवै अति आंख्यां भरी। पमतो सुतरे सासणदेवत जांणियो। कंचन मइरे सिंहासण वैसांणियो। (उल्लालो) वैसांणियो करजोम आगै करै नाटक देवता। गोदीखिलावै के हसावै पाय पंकज सेवता। ऊपनो भूपतिनें अचंभो देखी ए कारण किसो। जो कोई ग्यानी गुरुपधारै पूछियै सांसो इसो ॥ १२ ॥ (चाल) चिंतवतां रे चारितिया आया तिसै। राजा पिणरे पुहतो वांदणनें तिसै। सुण देशनारे पूछै प्रस्न सुहामणो। कहो स्वामीरे पूरब भव बालक तणो ॥ (उल्लालो) बालक तणो भवभूप पूछै कहै इण पर केवली। रोहणी राणीरो भवांतर अनें राजानो वली। श्रीगुरु पासे पाछले भव रोहणी तप आदस्यो। तप तणें सगते साधु भगते तुम्म भवसायर तस्यो ॥ १३ ॥ (चाल) कहे राजा रे किम रोहणितप कीजीयै। विधि भाषो रे जिम तुम पासे लीजीयै। तब मुनिवररे विध रोहणरा तप तणी। इम जंपै रे चित्रसेन राजा भणी ॥ (चाल) राजा भणी विधएह जंपै चंद्र रोहण तप आविये। उपवास कीजे लाभ लीजे भली भावना भाविये। बारमा जिनवर तणी प्रतिमा पूजियै मनरङ्गस्तु। इम सात वरसां लगे कीजे तजी आलस अङ्गस्तुं ॥ १४ ॥ ॥ ❀ ॥

(ढाल)३ ॥ ॐ ॥ वीरसुणो मोरी वीनती (एचाल)॥ ॐ ॥ तप करिये रोहणि तणो । वली करियेहो उजमणो एम । तप करतां पातिक टले । तिण कीजे होतपसेती प्रेम ॥ १५ ॥ (त०)॥ देव जुहारी देहरे । तिण आगे हो कीजे वृक्ष अशोक । गुणनो वारम जिन तणो । भला नेवज हो धरीये सहु थोक ॥ १६ ॥ त० ॥ केशर चन्दन चरचीये । कीजे आगे हो आठे मङ्गलीक । विधसुं पुस्तक पूजीये । ते पांमें हो शिवपुर तहतीक ॥ १७ ॥ (त०) ॥ सेवा कीजे साधूनी । वलि दीजे हो मुंह मांग्यादान । संतोषी जे साहमी । मन रङ्गे हो कर २ पकवान ॥ १८ (त०) पाटी पोथी पुंठणा । मिस लेखण हो झिल मिल सुजगीस । नवकरवाली वीटणा । गुरु आगे हो धरो सत्ता वीस ॥ १९ (त०) ॥ चोथो व्रत पिण तिणदीनें । इम पाले हो मन आण विवेक । इण विध रोहणि आदरे । तेपांमें हो आनन्द अनेक ॥ २० ॥ ॥ॐ॥ (ढाल ४ धरम करो जिनवर तणो)॥ॐ॥ इम महिमा रोहण तणी । श्रीग्यांनी गुरु परकासे रे । चित्रसेननें रोहणी । वाशपूज्य तिर्थंकर पासे रे ॥ २१ (इ०)॥ इणपरि रोहणि आदरी । ऊपर उजमणो कीधो रे । चित्रसेननें रोहणी । मनसुधे संजम लीधोरे ॥ २२ (इ०)॥ आठे पुत्रे आदरी । दिख्या वारम जिन आगेरे । वलि नानाविध तप तपे । धरम तणी मति जागेरे ॥ २३ (इ०)॥ करि अणसण आराधना । लहि केवल शिवपद पायारे । जिनवाणी आणी हीये । प्रभु चरणां चितलाया रे ॥ २४ (इ०)॥ मनमोहन महिमानिलो । मेंतावियो शिवपुर गामीरे । मनमान्या साहिब तणी । हिव पुन्यें सेवा पामी रे ॥ २५ (इ०) ॥ ॐ ॥ कलश ॥ ॐ इम गगन मुनि चंद्र वरसे (१७२०) चोथ श्रावण सुद भली । में कही रोहण तणी महिमा सुगुरु मुख जिम सांभली । वाश पूज्य अमनें थया सुप्रशन चित्तनी चिंता टली । श्रीसारजिन गुण गावतां हिव सकल मन आस्या फली ॥ २८ ॥ इति रोहणी तप स्तवन संपूर्णम् ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ रोहणी तपविधिः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ शुभ दिन गुरुके पास रोहणी तप ग्रहण करे । रोहणी नक्षत्रके दिन उपवास करे । वारमा श्री वाश पूज्य स्वामीका पूजन करे । आ

गे अष्ट मंगलीक रचना करे । अष्ट द्रव्य चढावे । देव वंदनादिक करके धर्मोपदेश शुणें ॥ ❀॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीवाश पुज्यस्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इसी को (२०००) गुणनो करे । ऐसें सात वरश (यह) तप करनेंसें । सुख शौजाग्य बधेगा । विशेष अधिकार । यह रोहणी तप का स्तवन सुणनेंसें मालुम होगा (अलं विस्तरेण) इति रोहणीतप विधिः॥

॥ ❀ ॥ अथ उम्माशी तप स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गोतम स्वामीरे बुध दो निरमली । आपो करिय पसाय । महावीर स्वामी जे जे तप कीया । तेहनो कहिसुं विचार (वलि २ वांडुं वीरजी सुहामणा) ॥ १ ॥ नावठ जंजण सेव्यां सुख करे । गातां नवनिधि थाय । वारें वरसां वीरजी तपकीयो । दूरकरे सहु पाप (व०) ॥ २ ॥ वे करजोमी एहुं वीनवुं । श्रीजिन शाशन राय । नाम लियांथीं नव निधि संपजे । दरशण डुरित पुलाय (व०)॥ ३ ॥ नव चौमाशा जिनजीरा जांणिये । एक कियो उम्माश । पांचे ऊणा उ वलि जाणीये । वार के को जी माश (व०) ॥ ४ ॥ वहुत्तर माश खमण जग जीपता । उ दो माशीरे जाण । तीन अढाई दो दो कीया । दो दोढमाशी वखाण (व०) ॥ ५ ॥ जद्र महाजद्र शिवगति जाणीये । उत्तम एहना प्रकार । तिचमें पारणो स्वामी नवि कीयो । नवि कीयो चौथो आहार ॥ ४ ॥ (व०) तिहुं उपवासे प्रतिमा वारमी । कीवा वारे जी माश । दोयसे वेला जिनजीरा जाणीयें । इम गुणतीस विलास (व०) ॥ ६ ॥ तीनसे पारणा जिनजीरा जांणीयें । तीन गुणतीश पचाश । एहमें स्वामी केवल पामिया । पांम्या सुगति आवास (व०) ॥ ६ ॥ (कलशः) इम वीर जिनवर सयल सुखकर अतही डुकर तप करी । संयम सुपाली कर्म टाली स्वामी शिवरमणी वरी । सेवक पजणें वीर जिनवर चरण वंदित तुमतणा । संसार कूप पर्मंत रासो आपो स्वामी सुखघणा ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ इति उम्माशीतप स्तवनं ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ उम्माशी तप विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शाशनके अधिपति श्री महावीर स्वामी । सर्वमें उत्कृष्ट उम्माशी

तप कियो । (इसीसें) इस कालमें संघयण बल पराक्रमके हीनपणासें इ कसार छम्माशी तप न कर शके (तोपिण) छम्माशीके (१८०) उपवास करनेसें । जघन्य छम्माशी तपके फलकों प्राप्तहोय । और देववंदनादि सर्व क्रिया करे । छम्माशी तपका स्तवन शुणें । इस छम्माशी तपके स्तव नमें । सर्व तपस्या की संख्या कही है ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

१ ॥ श्री महावीर स्वामी नाथाय नमः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इसी को (२०००) गुणनो करे । भगवंत श्रीमहावीर स्वामीके नाम सें तीर्थ प्रसिद्ध होय । उहां यात्रा करनेंकों जावे । अनेकतरेसें शुद्धता बना जावे । शक्ति माफक उद्यापन करे । इस तपस्याके प्रशाद लघुकर्मी होके अनन्त सुखकों प्राप्त होय ॥ ❀ ॥ इति छम्मासी तप विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बारे माशी तप स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दांन उलट धरी दीजीये । (एदेशी) ॥❀॥ त्रिभुवन नायक तुं ध णी । आदि जिणेसर देवरे । चौसठइंद्र करे सदा । तुझपद पंकज सेवरे (त्रिभु०) ॥ १ ॥ प्रथम भूपाल प्रभु तुंथयो । इण अवसरपणी कालरे । तुझ सम अवरनको प्रभु । तुं प्रभु दीन दयालरे (त्रि०) ॥ २ ॥ प्रथम तीर्थं कर तुं सही । केवल ग्यान दिनंदरे । धर्म प्रज्ञापक प्रथम तूं । तूंही है प्रथम जिनंदरे । (त्रि०) ॥ ३ ॥ अंतर अरिजे आतम तणा । काल अनादि थितिजेहरे । ते तप शक्तिये तेंहण्या । आत्म वैरिज गुण गेहरे (त्रि०) ४ ॥ ताहरी शक्ति कुण कह शके । जेहनो अंत न पाररे । द्वादश माशनो तप कर्यो । नेह अपानक माररे (त्रि०) ॥ ५ ॥ एह उत्कृष्ट तप वरणव्यो । आगममें जिन राजरे । ते करवुं अति आकरुं तप विना किम सरे काजरे (त्रि०) ॥ ६) तीनशे साठ उपवास ते । जे इण पंचम कालरे । अवसर आदरे क्रम विना । ते पिण भवि सुविसालरे (त्रि०) ॥ ७ ॥ ए तप गुरुमुख आदरे । शास्त्र नर्ये अनुसाररे । पडिक्कम णादिक भावथी । शुद्ध क्रिया मन धाररे (त्रि०) ॥ ८ ॥ चित्तसमाधि सुभ भाव थी । धरे ताहरो ध्यानरे । ते नर उत्तम फल लहे । पामिलहे उत्तम ग्यानरे (त्रि०) ॥ ९ ॥ काल अनादि संसारमें । जन्म मरण नाना दु

क्खरे । ते लह्या धर्म पायांविनां । तप विनां किमहुवे सुक्खरे (त्रि०) ॥ १० ॥ हिव लह्यो नर भव पुन्यथी । वलिलह्यो श्रीजिनधर्मरे । तत्वनी रुचिथईहे मुझ। हिव मिट्यो मन तणो भर्मरे (त्रि०) ॥ ११ ॥ भव २ एक जिनराजनो । सरण हो ज्यो सुख काररे । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो। मैं कियो हिवे परिहाररे (त्रि०) ॥ १२ ॥ दर्शन ग्यान चारित्र ए । मोक्ष मारग सुविसालरे । भव २ जे मुझ संपजै । तो फलै मंगल मालरे (त्रि०) ॥ १३ ॥ श्रीजिनशाशन तप कह्यो । ते तप सुरतरु कंदरे । धन २ जेनर आ दरै । काटै ते करमनो फंदरे (त्रि०) ॥ १४ ॥ (कलशः) इम नाभि नंदन जगत वंदन सकल जन आनंदनो । मैंथुणयो धन दिन आजनो सुझ मात मरुदेवी नंदनो । संवत सुनेत्रा कास निधि शशि नयर श्रीवालूचरै श्रीजिन सौभाग्य सुरिंदके सुपसाय विजयविमल वरे ॥ १५ ॥ ॥ ❋ ॥ इति श्री बारै माशी तप स्तवन संपूर्णः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ बारै माशी तपविधिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रथमतिर्थंकर श्री ऋषभदेव स्वामी उत्कृष्ट बारै माशी तपस्या करी (इसीसें) भव्य जीव बारै माशी तपस्याका भाव लायके (३६०) तीन सै साठ उपवास करै। जिस दिन व्रत होय उसदिन देववंदनादि क्रिया करै। बारै माशी तपका स्तवन सुणौं ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ १ ॥ श्री ऋषभदेव स्वामी नाथाय नमः ॥ ❋ ॥

इसीको (२०००) गुणनो करै । तपस्या पूर्ण होनेंसें सिद्धगिरी यात्रा करनेंकों जावै । शक्तिमाफक उद्यापन उछव करै । इस तपस्याके प्रशाद भव्य जीवोंके कभी दुख दो भाग्य प्राप्ती न होय। सदा तप तेज बढतो रहे। इति बारै माशी तपस्याविधिः॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ अठाईस लब्धी तप स्तवन लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दुहा) प्रणमुं प्रथम जिनेसरु । शुद्धमनें सुखकार। लबधि अठावीस जिन कही । आगमनें अधिकार ॥ १ ॥ प्रश्न व्याकरणें प्रगट भगवती सुत्रमझार । पन्नवणा आवस्यके । वारू लबधि विचार ॥ २ ॥ आंबिल तप कर ऊपजे । लबधां अठावीस । एहिव परगट अरथसुं । मां

मलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ सफल संसारनी ॥ ❀ ॥ अनुक्रमें हिव अधिकार गाथा तणें। लबधिना नाम परिणाम सरिषा भणें। रोग सहु जाइ जसु अंग फरस्यां सही । प्रथम ते लबधि छे नाम आमो सही ॥ ४ ॥ जासु मल मूत्र उषध समा जाणीयें ॥ बीय विप्पोसही लबधि वखाणीयें। श्लेष्म उषध सारिखो जेहनो । तीजी खेलोसही नाम छे तेहनो ॥ ५ ॥ देहना मेलथी कोढ दूरे हुवे। चोथी जल्लोसही नाम तेहनो हवे। केश नख रोम सहु अंग फरसे सही । रहे नहीं रोग सव्वोसही ते कही ॥ ६ ॥ एक इंद्रिय करी पांच इंद्रिय तणा। भेद जाणें तिका नाम संभिन्नणा। वस्तु रूपी सहु जांणियें जिण करी। सातमी लबधि ते अवधि ग्यांनें करी ॥ ७ ॥ ❀ ॥ (ढाल) आव्यो तिहां नरहर (ए चाल) ॥ ॥ ❀ ॥ हिव आंगुल अढीयें ऊणो मांनुष क्षेत्र । संग्या पंचेंद्री तिहां जे असय विचित्र । तसु मननो चिंतित जांणें थूल प्रकार। ते ऋजुमति नांमें अष्ठम लबधि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुष क्षेत्रे संज्ञावंत। पंचेंद्रिय जे छे तसु मन वातां तंत। सूक्षम परजायें जाणें सहु परिणाम। ए नवमी कहीयें विपुलमती सुभ नाम ॥ ९ ॥ जिण लबधि प्रभावे उडी जाय आकाश । ते जंघा विद्याचारण लबधि प्रकाश। जसु वचन सरापे खिणमें खेरु थाय । ए लब्ध इग्यारमी आसी विस कहवाय ॥ १० ॥ सहु सूखम बादर देखे लोकालोक । ते केवल लबधी बारमिये सहु थोक। गणधर पद लहीयें तेरम लबधि प्रमाण। चवदम लबधे करी चव दे पूरव जाण ॥ ११ ॥ तीर्थंकर पदवी पामें पनरमी लबधि। सोलम सुखदाई चक्रवर्त्ति पदरिद्धि। बलदेव तणो पद लहियें सतरमी सार। अ ष्टारम आखा वासुदेव विस्तार ॥ १२ ॥ मिसरी घृत खीरे मेल्या जेह सवाद । एहवी जेह वाणी तणी सम परसाद। नणीयो नविभूले सुत्र अरथ सुविचार। ते कुटिक बुधी वीशम लबधि विचार ॥ १३ ॥ एके प द जणीयें आवे पद लख कोड । इक वीशमी लबधी पायाणु मारणी जोड। एके अरथे करी उपजे अरथ अनेक । बावीसम कहीये बीज बुद्धि सुविवेक ॥ १४ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ कपूर हुवे अति ऊजलो

क्खरे । ते लह्या धर्म पायांविनां । तप विनां किमहुवे सुक्खरे (त्रि०) ॥ १० ॥ हिव लह्यो नर भव पुन्यथी । वलिलह्यो श्रीजिनधर्मरे । तत्वनी रुचिथईहे मुझे । हिव मिट्यो मन तणो भर्मरे (त्रि०) ॥ ११ ॥ भव २ एक जिनराजनो । सरण हो ज्यो सुख काररे । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो । में कियो हिवे परिहाररे (त्रि०) ॥ १२ ॥ दर्शन ग्यान चारित्र ए । मोक्ष मारग सुविसालरे । भव २ जे मुझ संपजे । तो फले मंगल मालरे (त्रि०) ॥ १३ ॥ श्रीजिनशाशन तप कह्यो । ते तप सुरतरु कंदरे । धन २ जेनर आदरे । काटै ते करमनो फंदरे (त्रि०) ॥ १४ ॥ (कलशः) इम नाभि नंदन जगत वंदन सकल जन आनंदनो । मैंथुण्यो धन दिन आजनो मुझ मात मरुदेवी नंदनो । संवत सुनेत्रा कास निधि शशि नयर श्रीवालूचरे श्रीजिन सौभाग्य सुरिंदके सुपसाय विजयविमल वरे ॥ १५ ॥ ॥ ❋ ॥ इति श्री बारे माशी तप स्तवन संपूर्णः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ बारे माशी तपविधिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रथमतिर्थंकर श्री रुषभदेव स्वामी उत्कृष्ट बारे माशी तपस्या करी (इसीसें) भव्य जीव बारे माशी तपस्याका भाव लायके (३६०) तीन सै साठ उपवास करे । जिस दिन व्रत होय उसदिन देववंदनादि क्रिया करे । बारे माशी तपका स्तवन सुणें ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ १ ॥ श्री रुषभदेव स्वामी नाथाय नमः ॥ ❋ ॥ ॥

इसीको (२०००) गुणनो करे । तपस्या पूर्ण होनेंसें सिद्धगिरी यात्रा करनेंको जावे । शक्तिमाफक उद्यापन उछव करे । इस तपस्याके प्रशाद भव्य जीवोंके कभी दुख दो भाग्य प्राप्ती न होय । सदा तप तेज वढतो रहे । इति बारे माशी तपस्याविधिः॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ अठाईस लब्धी तप स्तवन लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दुहा) प्रणमुं प्रथम जिनेसरु । शुद्धमनें सुखकार । लबधि अठावीस जिन कही । आगमनें अधिकार ॥ १ ॥ प्रश्न व्याकरणें प्रगट भगवती सुत्रमझार । पन्नवणा आवस्यके । वारु लबधि विचार ॥ २ ॥ आंबिल तप कर ऊपजे । लबधां अठावीस । एहिव परगट अरथसुं । सां

भाजग्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ (ढाल) ॥ ॐ ॥ सफल संसारनी ॥ ॐ ॥ अनुक्रमें हेव अधिकार गाथा नणें। लबधिना नाम परिणाम सरिषा नणें। रोग सहु जाइ जसु अंग फरस्यां सही । प्रथम ते लबधि छे नाम आमो सही ॥ ४ ॥ जासु मल मूत्र उषध समा जाणीये ॥ बीय विप्पोसही लबधि वखाणीये। श्लेषम उषध सारिखो जेहनो । तीजी खेलोसही नाम छे तेहनो ॥ ५ ॥ देहना मेलथी कोढ दूरे हुवे । चोथी जल्लोसही नाम तेहनो ठवे। केश नख रोम सहु अंग फरसे सही । रहे नही रोग सव्वोसही ते कही ॥ ६ ॥ एक इंद्रिय करी पांच इंद्रिय तणा। भेद जाणें तिका नाम संभिन्नणा। वस्तु रूपी सहु जांणिये जिण करी । सातमी लबधि ते अवधि ग्यानें करी ॥ ७ ॥ ॐ ॥ (ढाल) आव्यो तिहां नरहर (ए चाल) ॥ ॥ ॐ ॥ हिव आंगुल अढीये ऊणो मांनुष क्षेत्र । संग्या पंचेंद्री तिहां जे वसय विचित्र । तसु मननो चिंतित जांणें थूल प्रकार। ते ऋजुमति नांमें अष्टम लबधि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुष क्षेत्रे संज्ञावंत । पंचेंद्रिय जे छे तसु मन वातां तंत। सूखम परजायें जाणें सहु परिणाम। ए नवमी कहीये विपुलमती सुभ नाम ॥ ९ ॥ जिण लबधि प्रभावे उडी जाय आकाश । ते जंघा विज्जाचारण लबधि प्रकाश । जसु वचन सरापे खिणमें खेरुंथाय । ए लब्ध इग्यारमी आसी विस कहवाय ॥ १० ॥ सहु सूखम बादर देखे लोकालोक । ते केवल लबधी बारमिये सहु थोक। गणधर पद लहीये तेरम लबधि प्रमाण। चवदम लबधे करी चवदे पूरव जाण ॥ ११ ॥ तीर्थंकर पदवी पांमें पनरमी लबधि। सोलम सुखदाई चक्रवर्त्ति पदारिद्धि । बलदेव तणो पद लहिये सतरमी सार। अठारम आखा वासुदेव विस्तार ॥ १२ ॥ मिसरी घृत खीरे मेल्या जेह सवाद । पहवी जेह वाणी उपणी मम परमाद। भणीयो नवि भूले सुत्र अरथ सुविचार। ते कोष्टिक बुधी वीशम लबधि विचार ॥ १३ ॥ एके पद भणीये आवे पद लख कोड । इक वीशमी लबधी पायाणु सारणी जोड। एके अरथे करी उपजे अरथ अनेक । बावीसम कहीये बीज बुद्धि सुविवेक ॥ १४ ॥ ॐ ॥ (ढाल) ॥ ॐ ॥ कपूर हुवे अति ऊजलो

रे (एचाल) ॥ ❀ ॥ सोलह देश तणी सहीरे। दाहक सगति वखाण। तेह लवधि तेवीसमीरे। तेजोलेश्या जाण ॥ १५ ॥ (चतुरनर सुण ज्यो ए सुविचार) । आगममें अधिकार। वारू लवधि विचार (च०) चवदह पूरव धर मुनिवरूरे। उपजन्ता संदेह। रूप नवो रचि मोकलै रे। लवधि आहारक एह (च०) ॥ १६ ॥ तेजो लेश्या अगनिनें रे। उपशम वा जल धार। मोटी लवधि पचवीश मीरे। शीतो लेश्या जांण (च०) ॥ १७ ॥ जेण सगति सुं विकुरवैं रे। विविध प्रकारै रूप। सदगुरु कहै छावीसमीरे। वैक्रिय लवधि अनूप (च०) ॥ १८ ॥ एकणपात्रे आदमी रे। जीमावे कोई लाख। तेह अक्षीण महाणसीरे। सत्तावीसमी साख (च०) ॥ १९ ॥ चूरे सेन चक्रीसनीरे। संघादिकनें काम। तेह पुलाक लवधि कहीरे। अठावीशमी नाम (च०) ॥ २० ॥ तेज शीत लेश्या विहुंरे। तेम पुलाक विचार। भगवती सूत्रमें भाषियो रे। ए त्रिहुंनो अधिकार (च०) ॥ २१ ॥ पन्नवणा आहारनीरे। कलपसूत्र गणधार। तीन तीन इक २ मिली रे। वारू आठ विचार (च०) ॥ २२ ॥ प्रश्ण व्याकरणें कहीरे। बाकी लवधां वीश। सांभलतां सुख ऊपजेरे। दोलत हुवै निशि दीश (च०) ॥ २३ ॥ ❀ ॥ (कलशः) ॥ ❀ ॥ संवत्त सतरैसे छवीशै मेरु तेरस दिन भलै। श्रीनगर सुख कर लूणकरणसर आदि जिन सुपसावलै। वाच ना चारज सुगुरु सांनिध विजय हरष विलासए। श्रीधर्म वर्द्धन स्तवन भ णतां प्रगट ग्यान प्रकाश ए ॥ २४ ॥ इति (२८) लब्धि स्तवनं ॥

॥ अथ अठाईस लब्धि तप विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (शुभदिन (गुरुके पास) । २८ लब्धि तप ग्रहण करे। अ नुक्रमसें २८ उपवास करे। स्तवन सुणें। (जिस दिन) जो लब्धी को उपवास होय। उसी लब्धी के नामको गुणनो करे। तप पूर्ण होनेंसें। श क्ति माफक उद्यापन करे। यह तपस्या करनेंसें निर्मल बुद्धि उत्पन्न होय। सदा आनंद रहे ॥ ❀ इति २८ लब्धि तप विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ १४ पूर्व स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ वेकर जोमी तांम (एचाल) । जिनवर

श्री वर्धमान। चरम तीर्थंकर। मह ऊठी प्रणमुं मुदा ए॥ श्रुतधर श्रीग णधार। सूरि शिरोमणी। नमतां नवनिधि संपदाए॥ १॥ चवदे पूरव ना म। सुत्रे जूजूवा। वीरजिणंदे जापीयाए॥ तेहिव सुगुरुपसाय। वरणव स्युं इहां। आगममें जिम उपदिस्याए॥ २॥ पहिला पूर्व उत्पाद १। दूजो अग्रायणी २। वीर्यवाद ३ तीजो नमुंए॥ अस्ति नास्ति प्रवाद ४। सत्ता जाणी ये। नाणगरयण ५ पंचम गिणुंए॥ ३॥ छठो सत्यप्रवाद ६। सत्तम आतम ७। कर्म प्रवाद अष्टम गिणोए ८॥ प्रत्याख्यान प्रवाद ९। नामें नवम। विद्या प्रवाद दशमो कह्योए १०॥ ४॥ इग्यारम नाम कल्याण ११। प्राणायु वारमो १२। क्रिया विशाल तेरम भणोए १३॥ बिंदुसार इण नाम १४। चवदे एकह्या। सास्त्र थकी में संग्रह्याए॥ ५॥ (ढाल २) श्रीविमलाचल सिरतिलो (पदेशी)॥ उत्पादपूर्वसोहामणो। कोटी पद परि मांण। पटभाव प्रगटछे ते जिहां। त्रिपदी भावविनांण॥ १॥ सर्वद्र व्य पर्यय तणो। जीव विशेष प्रमाण। दूजो पूर्व अग्रायणी। छिनूं लख पद जांण॥ २॥ पदलख सत्तर जेहनी। संख्या परगट एह। वीर्य प्रबल ना जीवनी। भापी तीजे तेह॥ ३॥ चोथे पूर्वे जे कयो। अस्ति नास्ति प्रवाद। पदसंख्या साठ लाखनी। सप्त भंगी स्याद्वाद॥ ४॥ ग्यानप्रवाद पद पंचमो। सूत्रे आण्यो जोड। मत्यादिक पण भेदसुं। पद संख्या इक कोडि॥ ५॥ सत्य प्रवाद छठोकहुं। भापुं सत्य स्वरूप। संख्यापद इग को डनी। भाषि आगम अनूप॥ ६॥ नित्यानित्यपणो इहां। आतमद्रव्य सुभाव। छवीस पद कोड जेहना। सुत्रेआण्यो भाव॥ ७॥ कर्मप्रवाद तणो हिवे। प्रगट पणो अधिकार। लाख असी पद जेहना। कोडी इग निरधार॥ ८॥ नवमो पूर्व कहुं हिवे। नामें प्रत्याख्यान। लाख चौरासी जेहना। पद संख्याचित्त आन॥ ९॥ अतिसय गुणसंयुत तणी। साधन साध्य निदांन। विद्या अनुपम भातशे। कोडी दस लख जांन॥ १०॥ कल्याण नाम इग्यारमो। छवीस कोड प्रमांण। ज्योतिष शास्त्र विचारसो चोविह देवकल्यांण॥ ११॥ प्राणायु पद बारमो। छप्पन लाख इग कोड। प्राण निरोधन जे क्रिया। भाखे आगमे जोड॥ १२॥ ख्यातिक्यादिक जे

कीया। छंद क्रिया सुविसाल। पद संख्या नव कोमनी। तेरमी किरिया विशाल॥ १३॥ लोकसार विंदु चवदमो। नामें अरथ निहाल। पद संख्या इग कोडनी। लाख पचवीश संज्ञाल॥ १४॥ लोकप्रत्यय देखण ज्ञणी। संख्या गज परिमाण। सोलसहस अरु तीनशै। उर तयांसी जाण॥ १५॥ पूरव संख्या एकही। गुणमालाथी देख। आगै बुधजन सोधज्यो। बाकी देशविशेष॥ (ढाल२) वीर जिणेसर उपदिशै (ए चाल)॥ सूत्रे गुंथे गणधरा। अरथे अरिहंत ज्ञाषेरे। ते श्रुत ग्यान नमुं सदा। पाप तिमर जिमनासैरे॥ १॥ (वाणीरे जिनंदनी) सुणज्यो चित हित आणीरे। तत्व रमणता अनुसरै। संपूरण गुण खाणीरे (वा०)॥ २॥ विषय कषाय तजी करी। ग्यान ज्ञगत उरधारीरे। विधि संयुत जिन मंदिरे। प्रज्ञुमुखपाश जुहारीरे (वा०)॥ ३॥ तप जप संयम आदरी। श्रीश्रुत ग्यान निधानोरे। सदगुरु चरण नमी करी। संवर जोग प्रधानोरे (वा०)॥ ४॥ अक्षत लेई ऊजला। गुंहली सुंदर कीजेरे। नांण दंसण चारित्रनी। ढिगली तीन धरीजैरे (वा०)॥ ५॥ चवद पूर्व ग्रत इणपरे। सुगुरु संजोगे लेईरे। विधिसुं पुस्तक पूजीयै। चित अति आदर देईरे॥ ६॥ (वा०) इम तप संपूरण थयां। ऊजमणो हिव कीजैरे। घरसारू धनखरचनें। नर ज्ञव लाहो लीजेरे (वा०)॥ ७॥ पूठा परत विटांगणा। पूरव नाम प्रमाणोरे। नवकरवाली कोथली। लेखण ठवणी जाणोरे॥ ८॥ देहरै देवजुहारनें। आरती मंगल कीजेरे। सनात्र पूजा वलि साचवी। तत्वसुधारस पीजेरे॥ ९॥ (वा०) इण पर तप आराधतां। दुरगति कारण छेदैरे। चवदह रज्जु सिरोमणि। जीव अक्षय गतिवेदैरे॥ १०॥ (वा०) तप आराधन विध ज्ञणी। आगम वचने जोईरे। ज्ञवियण पिणतुमे आदरो। ज्युं ज्ञव भ्रमण न होईरे॥ ११॥ (वा०) (कलशः) इमसयल सुख कर गछ खरतर तपै रविजिम क्रांतए। सौज्ञाग्य सूरि सुणिंद इण पर कह्यो पूर्ववृत्तंत ए। संवत अठारै वरश छिन्नूं नयर श्री बालूचरे। ए स्तवन ज्ञणतां श्रवणसुणतां सयल मन वंछित फले॥१२॥ॐ॥ इति चवदे पूर्व स्तवनं संपूर्णम्॥ॐ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१४) पूरब तपविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चवदे पूर्वकी तपस्याके (१४) उपवास करे । (जिस दिन जो पूर्वका उपवास होय । उसी पूर्वके नामसें (२०००) गुणनो करे । स्तवन सुणे । इस स्तवनमें १४ पूर्वके नाम । और विधि सर्व लिखी है । उसी मुजब विवेकी जीव गुरुसें समझके करे । यह तपस्याके करनेसें ज्ञाना वरणादि कर्मका क्षयोपशम होय । शुभ ज्ञानका उदय होय ॥ ❀ ॥ इति १४ पूर्व तपविधिः ॥ ❀ ॥   ॥ ❀ ॥   ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तिलक तपस्या स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ सासण देवी सारदा । वांणी सुधारस वेल । बालक हितकरणी वगसिये । सुबुधि सुरंगी रेल ॥ १ ॥ नवम अंग जिनपूजतां । मनलहि सुभपरिणाम । तप तिलके फल पामियें । दवदंती गुणधाम ॥ २ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ वीर जिणेसर उपदिसे (एदेशी) ॥ कमला जिम कुंभल पुरे । भुज बल नरपतिजेमोरे । पदमनी पदम सुवासना । भैनराज स्वमेनीमोरे (पदम०) ॥ १ ॥ परतख्य फल ए पुन्यना । ग्रसवीसुता पूरे माशेरे । दवदंती नाम दीपतो । गुणमणि बुधि प्रकाशेरे (प०) ॥ २ ॥ चौसठ कला विचक्षणा । रूप गुणें करी रंजारे । देव गुरु धर्म्म दीपावनी । ब्रतधारी दृढ वंजारे (प०) ॥ ३ ॥ प्रतिमा पूजे श्रीसांतीनी । देवे दीधी त्रिकालो रे । मात पिता प्रमोदसुं । स्वयंवर वर मालोरे । (पदमनी०) ॥ ४ ॥ उवझाया थिपर्श्री निगदनो । नल लिखीयो निरलोभेः । आनन्दसुं पंथआवतां । पूरब पुन्य उदयेरे (प०) ॥ ५ ॥ मक्षमरयणी तमभरी । मधु रव कुंत इहां वनमेंरे । मणि भाले तेज दिनमणी । जागत देखी अहो मनमेंरे (प०) ॥ ६ ॥ ग्यांनधारी गुरु कोइ मिले । पूछीये एह प्रमलोरे । कर्म भेले मुनि आवीया । परिसह जीत मदभोरे (प०) ॥ ७ ॥ पंच जीत पंच पालना । टालता दुस्तर भवजारे । संजम शुध में भालना । उत्तम शिव सुख कमलारे (प०) ॥ ८ ॥ (दूहा) भाणि तेजें मुनि वन्दये । स्वयर्की सी नरनार । देवे तीन प्रदक्षिणा । विधसुं चरण जुहार ॥ ९ ॥ देशना सुण पावन थया । ग्यान सुधारस पाय । को तप परभव निरम

क्रीया। छंद क्रिया सुविसाल। पद संख्या नव कोडनी। तेरमी किरिया विशाल ॥ १३ ॥ लोकसार विंदु चवदमो। नामें अरथ निहाल। पद संख्या इग कोडनी। लाख पचवीश संभाल ॥ १४ ॥ लोकप्रत्यय देखण भणी। संख्या गज परिमाण। सोलसहस अरु तीनशै। उर तयांसी जांण ॥ १५ ॥ पूरव संख्या एकही। गुणमालाथी देख। आगै बुधजन सोधज्यो। बाकी देशविशेष ॥ (ढाल३) वीर जिणेसर उपदिशै (ए चाल)॥ सूत्रे गुंथे गणधरा। अरथे अरिहंत भाषैरे। ते श्रुत ग्यान नमुं सदा। पाप तिमर जिमनासैरे ॥ १ ॥ (वाणीरे जिनंदनी) सुणज्यो चित हित आणीरे। तत्व रमणता अनुसरै। संपूरण गुण खाणीरे (वा०) ॥ २ ॥ विषय कषाय तजी करी। ग्यान भगत उरधारीरे। विधि संयुत जिन मंदिरै। प्रभुमुखपाश जुहारीरे (वा०) ॥ ३ ॥ तप जप संयम आदरी। श्रीश्रुत ग्यान निवानोरे। सदगुरु चरण नमी करी। संवर जोग प्रधानोरे (वा०) ॥ ४ ॥ अक्षत लेई ऊजला। गुंहली सुंदर कीजैरे। नांण दंसण चारित्रनी। ढिगली तीन धरीजैरे (वा०) ॥ ५ ॥ चवद पूर्व व्रत इणपरै। सुगुरु संजोगै लेईरे। विधिसुं पुस्तक पूजीयै। चित अति आदर देईरे ॥ ६ ॥ (वा०) इम तप संपूरण थयां। ऊजमणो हिव कीजैरे। घरसारू धनखरचनें। नर भव लाहो लीजैरे (वा०) ॥ ७ ॥ पूठा परत विटांगणा। पूरव नाम प्रमाणोरे। नवकरवाली कोथली। लेखण ठवणी जाणोरे ॥ ८ ॥ देहरै देवजुहारनें। आरती मंगल कीजैरे। सनात्र पूजा वलि साचवी। तत्वसुधारस पीजैरे ॥ ९ ॥ (वा०) इण पर तप आराधतां। दुरगति कारण छेदैरे। चवदह रज्जु सिरोमणि। जीव अक्षय गतिवेदैरे ॥ १० ॥ (वा०) तप आराधन विध भणी। आगम वचने जोईरे। भवियण पिणतुमे आदरो। ज्युं भव भ्रमण न होईरे ॥ ११ ॥ (वा०) (कलशः) इमसयल सुख कर गछ खरतर तपै रविजिम क्रांतए। सौभाग्य सूरि मुणिंद इण पर कह्यो पूर्ववृत्तंत ए। संवत अठारै वरश छिन्नूं नयर श्री वालूचरै। ए स्तवन भणतां श्रवणसुणतां सयल मन वंछित फलै ॥१२॥ ॥ इति चवदे पूर्व स्तवनं संपूर्णम् ॥ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१४) पूरव तपविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चवदे पूर्वकी तपस्याके (१४) उपवास करे। (जिस दिन जो पूर्वका उपवास होय । उसी पूर्वके नामसें (२०००) गुणनो करे। स्तवन सुणें। इस स्तवनमें १४ पूर्वके नाम । और विधि सर्व लिखी है । उसी मुजब विवेकी जीव गुरुसें समझके करे । यह तपस्याके करनेसें ज्ञाना वरणादि कर्मका क्षयोपशम होय । शुभ ज्ञानका उदय होय ॥ ❀ ॥ इति १४ पूर्व तपविधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तिलक तपस्या स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ सासण देवी सारदा । वांणी सुधारस वेल । बालक हितभणी वगसिये । सुबुधि सुरंगी रेल ॥ १ ॥ नवम अंग जिनपूजतां । मनलहि सुभपरिणाम । तप तिलके फल पामियें । दवदंती गुणधाम ॥ २ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ वीर जिणेसर उपदिसे (एदेशी) ॥ कमला जिम कुंभल पुरे । भुज बल नरपतिनामोरे । पदमनी पदम सुवासना । भेनगज स्वर्मनामोरे (पदम०) ॥ १ ॥ परतख्य फल ए पुन्यना । प्रसवीसुता पुरे माशेरे । दवदंती नाम दीपतो । गुणमणि बुधि प्रकाशेरे (प०) ॥ २ ॥ चोसठ कला विचक्षणा । रूप गुणें करी रंभारे । देव गुरु धर्म दीपावती । व्रतधारी दृढ थंभारे (प०) ॥ ३ ॥ प्रतिमा पूजे श्रीसांतीनी । देव दांधी त्रिकालो रे । मात पिता प्रमोदसुं । स्वयंवर वरमालोरे । (पदमनी०) ॥ ४ ॥ नवलाया थिपश्री लिपदनो । नल लिखी यो निरलोगेर । आनन्दसुं पंथआवतां । पूरव पुन्य उदाके रे (प०) ॥ ५ ॥ मझमरवणी तमजरी । मधु रव कुंन इहां वनमेंरे । माणि नाले तेज दिनमणी । जायन देसी अहो मनमेंरे (प०) ॥ ६ ॥ ग्यांनधारी गुरु कोइ मिले । पूछीये गुरु प्रतापोरे । कर्म बने न्यानि आवीया । परांगह जीत मदन्नोरे (प०) ॥ ७ ॥ पंच जीन पंच भावना । वासना दुल्मह मनसारे । संजम शुध संभावना । उगम शिव सुख कमलारे (प०) ॥ ८ ॥ (दूहा) मणि तेजें मुनि नरवये । ग्यपरका थी जनतार । देवै तीन प्रदक्षिणा । विधिसुं चरण जुहार ॥ ९ ॥ देशना सुण पावन भवा । ग्यान सुधाजल पाय । को तप परभव निम

कहे। कहिये श्रीमुनिराय ॥१०॥❀॥ (ढाल) भरथनृपभावसुं ए (एचाल)॥ मधुर स्वरे मुनिवर कहेए। नाणी गुरु सुपसाय। दीपक सहु लोकनाए॥ कर्म सुभासुभ परभवे ए। इह भव फल निपजाय। करम गति वांकमीए ॥ ११ ॥ उहि नाण भव प्रागनो ए। नृप सुणें निरमल भाव। समकित सा हीयो ए। धर्मवतीको नृप वधु ए। जांणयोहे तत्व प्रस्ताव। साची जिन वा सनाए॥ १२ ॥ चौथ प्रमुख नृप चूंपसुं ए। किरिया शुद्ध करी एह। भले चित्त भावसुं ए॥ नवांग पूजे तिलकसुं ए। चाढै जिन चौवीश। रयण कंचण जड्याए ॥ १३ ॥ ॥ तिलक २ सें पांमियो ए। समकित एह सती स। जनम सफलो गिणें ए। भगवन तपविधि भाषीये ए। नल कहे बोध चरीस। पीहर षटकायनाए॥ १४ ॥ आदिनाथ अरिहंतनाए। पट उपवास क हीस। त्री चौ वीहारस्युं ए॥ चौथ दोय जिन वीरनाए। अजिता दिक बा वीस। आणा गुरु शिर वहीए॥ १५ ॥ पोषध तीश त्रीनें थयाए। पूजन ति लक चढाय। तारक जगदीसनें ए। उद्यापन संघ भक्तिसुं ए। जन्म सफ ल नल राय। सूधैमन साधीये ए॥ १६ ॥ सुण वांणी सम कित ग्रहेए। पयप्रणमी गुरु वीर। चित्त उमाहीयो ए॥ इण पर जे भवि आदरे ए। थाये चरम शरीर। मूल सुख शाशतो ए॥ १७॥ कलशः॥ श्रीशांतिदाता त्रिज गत्राता भविक ध्याता सुखकरा। इम सतीय साध्यो तप आराध्यो सुजश वांध्यो शिव घरां। आगमे आखे सुरीय साखे सगुरु भाषे सुण यथा। सुद्ध ध्यावे भविक भावे विजय विमल जिनवर कथा॥ १८॥ ॥❀॥

इति तिलक तपस्या स्तवन संपूर्णम्॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ तिलक तपस्या विधिः ॥ ❀ ॥

॥❀॥ शुभ दिन गुरुके पास। तिलक तपस्या ग्रहण करके। तीश (३०) उपवास करे। (प्रथम) श्रीऋषभदेव स्वामीके (६) छ उपवास करे(जप)॥❀॥

॥ ❀ ॥ १ ॥ श्रीऋषभ देव स्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥ ❀ ॥

इस पदको (२०००) गुणनो करे। फेर श्रीमहावीर स्वामीके (२) दो उपवास करे। (जप)॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

१ ॥ श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥ ❀ ॥

इस पदको (२०००) गुणनो करे । और श्रीअजितनाथ स्वामीको आदलेके (२२) बाईस भगवंतके (२२) उपवास करे जब

॥ ❀ ॥ १ ॥ श्रीअजितनाथ स्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥ ॥ ❀ ॥

इसी अनुक्रममें बाईस भगवंतको गुणनो करे । (जिस दिन) जो महाराजके नामको उपवास होय । उसी नामको (२०००) गुणनो करे । और सर्व विधि स्तवनमें लिखी है । उसी मुजब करे ॥ इति तिलक तपस्या विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ शोलीयेको स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीर जिनेसर भाषीयो रे लाल । सहु व्रतमें सिर ताज (भवि प्राणीरे) । कषाय गंजन तप आदरो रे लाल । इणथी पातिक जाय (भ०वी०) ॥१॥ क्रोध वरण तप आदरेरे लाल । क्रोध गमावे फलनास (भ०) । मान करे जे प्राणियारे लाल । ते जगमें न सुहाय (भ०) ॥ २ ॥ भवमें माया आदरी रे लाल । स्त्री पणो पायो मल्लिनाथ (भ०) रूप परावृत कीया घणारे लाल । आषाढ भूति गणिका माय (भ० ३ वी०) च्यार कषाय है मूलगारे लाल । उत्तम सोले भेद (भ०) इम भव २ भ मतो थकोरे लाल । जीव पामें बहु खेद (भ० ४ वी०) एकाशण व्रत जे करेरे लाल । लाख वरस दुख हांणरे (भ०) नीवी व्रत दूजो कह्योरे लाल । एथारो जिन वर वांण (भ० ५) आंबिलनो फल बहु कह्योरे ला ल । उपजे लबधि अपार (भ०) उपवास करतां भावसुं रे लाल । पामें भवनो पार (भ० वी० ६) इम दिन शोले तप करेरे लाल । पूरण एव्रत थाय (भ०) देव गुरु पूजा करेरे लाल । तिणथी पातिक जाय (भ० ७) ए तप आदरथी करेरे लाल । मन वंछित फल थाय (भ०) नर सुर रि द्धि पिण भोगवेरे लाल । निश्चे सुगति जाय (भ० वी०) ॥ ८ ॥

इति १६ कषाय गंजन स्तवन संपूर्णम् ॥ इति शोलिया तप विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ शोलिये तपकी विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ क्रोध १ । मान २ । माया ३ । लोभ ४ । (यह ४ कषाय में) अनंतान बंधियो १ । अप्रत्याख्यानियो २ । प्रत्याख्यानियो ३ । सं जलणो ४ । (इस माफक) एकेक कषायके च्यार च्यार भेद करनेंसें

१६ भेद हुय (यह) १६ भेद कषायके दूर करनें कों । प्रथम एकाशणो १ । निवी २ । आंबिल ३ । उपवास ४ । इसी अनुक्रमसें १६ दिन तप करै । स्तवन सुणें । तप पूर्ण होणेंसें । यथाशक्ति उद्यापन करै ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (४५) पैंतालीस आगम तप विधिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ शुभ दिन गुरूके पास पैंतालीश आगम तप ग्रहण करै । २ दूज । ५ पांचम । ११ इग्यारस । (इत्यादि) ग्यान तिथिकै दिन । अनुक्रम सें उपवाश (वा) एकाशणा करै । (जिस दिन) जो आगमको तप होय । उसी आगमको गुणनो करै । सिद्धांत लिखावै । सिद्धांत सुणें । पढनें वालुंकों सहाज्य करै । अपनें शक्तिमाफक । सर्व ठिकाणें ज्ञानकी वृद्धि करे । (प्रणमुं श्रीगुरुपाय०) इत्यादि ज्ञानके स्तवन सुणें । ऐसें (४५) दिन तपस्या पूर्ण होनेंसें । पैंतालीस (४५) आगम की पूजा करावै । मंदर पोशालमें ग्यानका उपगरण चढावै । (इत्यादि) अत्यन्त खुशी होके (४५) आगमका आराधन करै । यह तपश्या के करनेंसें । मूरखपणा दूर होके । शुद्ध आत्म ज्ञानकी प्राप्ति होय ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

अब (४५) (आगमके नामलिखते हें) ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रथम इग्यारै अंगको गुणनो ॥ ❋ ॥

१ ॥ श्रीआचाराङ्गजी सूत्राय नमः ॥ १ ॥
२ ॥ श्रीसुयगर्भांगजी सूत्राय नमः ॥ २ ॥
३ ॥ श्रीठाणांगजी सूत्राय नमः ॥ ३ ॥
४ ॥ श्रीसमवायांगजी सूत्राय नम ॥ ४ ॥
५ ॥ श्रीभगवतीजी सूत्राय नमः ॥ ५ ॥
६ ॥ श्रीज्ञाताधर्मजी सूत्राय नमः ॥ ६ ॥
७ ॥ श्रीउपाशग दसाजी सूत्राय नमः ॥ ७ ॥
८ ॥ श्री अन्तगम दसाजी सूत्राय नमः ॥ ८ ॥
९ ॥ श्रीअनुत्तरोववाइजी सूत्राय नमः ॥ ९ ॥
१० ॥ श्रीप्रश्नव्याकरणजी सूत्राय नमः ॥ १० ॥
११ ॥ श्रीविपाकजी सूत्राय नमः ॥ ११ ॥

॥ ॥ अथ बारे उपांग नामः ॥ ॥

१ ॥ श्रीउववाईजी सूत्राय नमः ॥ १२ ॥
२ ॥ श्रीरायपसेणीजी सूत्राय नमः ॥ १३ ॥
३ ॥ श्रीजीवाभिगमजी सूत्राय नमः ॥ १४ ॥
४ ॥ श्रीपन्नवणाजी सूत्राय नमः ॥ १५ ॥
५ ॥ श्रीजंबुद्वीप पन्नत्तीजी सूत्राय नमः ॥ १६ ॥
६ ॥ श्रीचंदपन्नत्तीजी सूत्राय नमः ॥ १७ ॥
७ ॥ श्रीसूरपन्नत्तीजी सूत्राय नमः ॥ १८ ॥
८ ॥ श्रीकप्पियाजी सूत्राय नमः ॥ १९ ॥
९ ॥ श्रीकप्पवडंसियाजी सूत्राय नमः ॥ २० ॥
१० ॥ श्रीपुप्फीयाजी सूत्राय नमः ॥ २१ ॥
११ ॥ श्रीपुप्फचूलियाजी सूत्राय नमः ॥ २२ ॥
१२ ॥ श्रीवन्हीदसाजी सूत्राय नमः ॥ २३ ॥

॥ ॥ अथ छ छेदको गुणानो ॥ ॥

१ ॥ श्रीव्यवहार छेद सूत्राय नमः ॥ २४ ॥
२ ॥ श्रीबृहत्कल्पजी सूत्राय नमः ॥ २५ ॥
३ ॥ श्रीदसाश्रुतस्कंधजी सूत्राय नमः ॥ २६ ॥
४ ॥ श्रीनिशीथजी सूत्राय नमः ॥ २७ ॥
५ ॥ श्रीमहानिशीथजी सूत्राय नमः ॥ २८ ॥
६ ॥ श्रीजीतकल्पजी सूत्राय नमः ॥ २९ ॥

॥ ॥ अथ दश पयन्ना नामः ॥ ॥

१ ॥ श्रीचौशरण पयन्नाजी सूत्राय नमः ॥ ३० ॥
२ ॥ श्रीसंथारपयन्नाजी सूत्राय नमः ॥ ३१ ॥
३ ॥ श्रीतंदुलपयन्नाजी सूत्राय नमः ॥ ३२ ॥
४ ॥ श्रीचंदाविज्झिया सूत्राय नमः ॥ ३३ ॥
५ ॥ श्रीगणिविज्झिया सूत्राय नमः ॥ ३४ ॥
६ ॥ श्रीदेविंदविज्झिया सूत्राय नमः ॥ ३५ ॥

७ ॥ श्रीवीरथुवोजी सूत्राय नमः ॥ ३६ ॥
८ ॥ श्रीगछाचारजी सूत्राय नमः ॥ ३७॥
९ ॥ श्रीजोतिष्करंन्डजी सूत्राय नमः ॥ ३८ ॥
१० ॥ श्रीमहापच्चक्खाणजी सूत्राय नमः ॥ ३९ ॥

॥ ❁ ॥ मूलसूत्रजी का नामको गुणनो ॥ ❁ ॥

१ ॥ श्रीआवस्यकजी सूत्राय नमः ॥ ४० ॥
२ ॥ श्रीउत्तराध्ययन जी सूत्राय नमः ॥ ४१ ॥
३ ॥ श्रीउंघनिर्युक्तिजी सूत्राय नमः ॥ ४२ ॥
४ ॥ श्रीदशमीकालकजी सूत्राय नमः ॥ ४३ ॥
१ ॥ श्रीअनुयोगद्वारजी सूत्राय नमः ॥ ४४ ॥
२ ॥ श्रीनंदीसूत्रजी सूत्राय नमः ॥ ४५ ॥

॥ ❁ ॥ अथ ११ गणधर तपश्या विधिः ॥ ❁ ॥

॥❁॥ शुभ दिन गुरूके पाश (११) गणधर तप ग्रहण करे । (११) दिन उपवाश (वा) एकाशणा करे । (जिस दिन) जोगणधर महाराजको तप होय । उसी नामको (२०००) गुणनो करे ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ (११) गणधरोंका नाम लिखते हें ॥ ❁ ॥

१ ॥ श्रीइंद्रभूती गणधराय नमः ॥
२ ॥ श्रीअग्निभूति गणधराय नमः ॥
३ ॥ श्रीवायुभूति गणधराय नमः ॥
४ ॥ श्रीव्यक्तभूति गणधराय नमः ॥
५ ॥ श्रीसुधर्मास्वामी गणधराय नमः ॥
६ ॥ श्रीमंन्डित स्वामी गणधराय नमः ॥
७ ॥ श्रीमोर्यपुत्रजी गणधराय नमः
८ ॥ श्रीअकंपितजी गणधराय नमः ॥
९ ॥ श्रीअचलजी गणधराय नमः ॥
१० ॥ श्रीमेतार्यजी गणधराय नमः ॥
११ ॥ श्रीप्रभवजी गणधराय नमः ॥

॥ यह (११) गणधर। भगवंत श्रीमहावीर स्वामी के पास अर्थ शुणके । सर्व सूत्रके रचना करनें वाले भए । (इसी सें) सर्व भव्यजीव । परम मङ्गल जानके । यह तपस्या करै। शुद्ध भावसें गणधरपद आराधन करै। गोतमरास सुणें । पूर्ण होनेंसें । गणधर महाराजकी पूजा करै। आचार्यादिककी भक्ती करै । (यथाशक्ति) परमान्न भोजनसें साहमी वछल करै॥ इति एकादश गणधर तपविधिः॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ नवकार तपाविधि लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ शुभ दिन गुरूके पास नवकार तप ग्रहण करै । जिस पदका जितना हरफ होय। इतनाई उपवास करै। उसी पदको (२०००) गुणनो करै। (सो लिखते हें)॥

१ ॥ णमो अरिहंताणं। उपवास ॥ ७॥
२ ॥ णमो सिद्धाणं। उपवास ॥ ५ ॥
३ ॥ णमो आयरियाणं। उपवास ॥ ७ ॥
४ ॥ णमो उवझायाणं। उपवास ॥ ७ ॥
५ ॥ णमो लोए सव्वसाहूणं। उपवास ॥ ९ ॥
६ ॥ एसो पंच णमुक्कारो। उपवास ॥ ८ ॥
७ ॥ सव्वपावप्पणासणो। उपवास ॥ ८ ॥
८ ॥ मङ्गलाणंच सव्वेसिं। उपवास ॥ ८ ॥
९ ॥ पढमंहवइ मङ्गलं। उपवास ॥ ९ ॥

॥ ❋ ॥ ऐसें नवकार मंत्रका । ६८ उपवास करै। (किंकप्पत्तरु रे अयाण०) इत्यादि नवकार मंत्रका फलगर्भित स्तवन सुणें (सो) पूर्व लिख्यो हे। तप पूर्ण होनेंसें । यथाशक्ति नवपदको उछव करै। (यह) नवकार मंत्र १४ पूर्वको सार भूत है । जो भव्यजीव शुद्धभावसें सेवन करेंगे (सो) अनेक सुखकों प्राप्त होंगे। इति नवकार तपविधि संपूर्ण ॥

॥ ❋ ॥ अथ सर्व तपस्या प्रथम गुरुके पास ग्रहण करै (सो) विधि लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (प्रथम) ५ साथिया करें । (नमंत०) यह गाथा

पढके। शक्ति माफक ग्यान पूजा करे। इरियावही पडिकमें। एकलोगस्स को काउसग्ग करे। (पारके) प्रगट लोगस्स कहे। नीचा बेठके। मुहपत्ती पडिलेहै। दो वांदणा देवै। स्थापनाजीकों खमासमण देई (भगवन्) असुक तप गहणत्थं चेइयं वंदावेह। (इसो कहके) चैत्य वंदन करे। णमोत्थुणं (इत्यादि) अरिहंत चेइयाणं० (अन्नत्थू) कहके (४) थुई कहै। चोथीगाथा कहके। नीचावैठै। णमोत्थुणं कहै। (ऊभा होकै) (श्रीशांतिनाथ स्वामी आराधनार्थं करेमि काउसग्गं)। अनत्थू कहकै १ लोगस्सको काउसग्ग करै (पारकै) नमोऽर्हत सिद्धा। कहकै॥ श्रीमते शांतिनाथाय। नमः शांति विधायिने। त्रैलोक्य स्यामरा धीस। मुकुटाभ्यार्चितां घ्रिये॥ १॥ यह थुई कहै (शांतिदेवता आराधनार्थं करेमि काउसग्गं) अनत्थू० कहे॥ शांतिः शांतिकरः श्रीमान्। शांतिं दिशतु मे गुरुः। शांतिरेव सदा तेषां। येषां शांतिर्गृहे गृहे॥ १॥ यह थुई कहै। पीछे श्रुतदेवता। क्षेत्र देवता। भुवन देवताको काउसग्ग अनुक्रम सें करै। एक एक नवकारको काउसग्ग करके। अपणी २ थुई कहै। पीछे (शासन) देवताको काउसग्ग १ नवकारको करे॥ या पाति शासनं जैनं। सद्य प्रत्यूह नाशनी। साभिप्रेत समृध्यर्थं। भूयाच्छासनदेवता॥ १॥ यह थुई कहकै (समस्त वेयावृत्तिकर आराधनार्थं करेमि काउसग्गं) अनत्थू० एक नवकारको काउसग्ग करै। (पारकै) श्रीशक्र प्रमुखा यक्षाः। जिनशासन संस्थिताः। देवान् देव्य स्तदन्येपि। संघरक्षंत्वपायतः॥ १॥ यह थुई कहकै। नीचावेसै। नमोत्थुणं कहके। जयवीयराय तांई। चैत्यवंदन करे। खमासमण देके। भगवन् (असुक तप गहणत्थं करेमि काउसग्गं) एक लोगस्सको काउसग्ग करे (पारके) लोगस्स कहै। खमासमण देके। ३ नवकार गुणें। फेर खमासमण देकै (इछकार भगवन्) असुक तप गहण दंडक उच्चरावो जी। गुरु कहे उच्चरावेमो। (ऐसा कहे)॥ अहान्नं भंते। तुह्माणं समीवे। असुकतवं उवसंपज्जत्ताणं विहरामि। (तंजहा) दव्वउ। खित्तउ। कालउ। भावउ। दव्वउणं असुकतवं। खित्तउणं इत्थवाअन्नत्थ वा। कालउणं जावपरिमाणं। भावउणं जावगहेणं नगहिज्जामि। छलेणं न

व्वजिज्जामि। सन्निवाएणं नन्नविज्जामि। जाव अणेणवा। केणइ रोगायंकादि प रिणामवसेण। एसो मे परिणामोनपरिवज्जइ। तावमे एसतवो।(अन्नत्थ) राया भियोगेणं गणाभियो गेणं। बलाभियोगेणं देवाभियोगेणं। गुरुनिग्गहेणं। वि त्तीकंतारेणं। अन्नत्थणा भोगेणं। सहस्सागारेणं। महत्तरागारेणं। सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसरामि॥ जोतप ग्रहण करै उसी तपका नाम लेके। गुरुके पास ३ वेर यह पाठ सुणें॥ गुरु न हो (तो) थापनाचार्यजी समक्षे। तीन वेर यह पाठ पढे॥ (पीछे गुरू कहै) हत्थेणं। सूत्तेणं। अत्थेणं। तदुभ एणं। सम्मं धारिणीयं। गुरुगुणेहिं वुढ्ढाहि नित्थारगपारगाहोहि। (ऐसोगु रू कहै) पीछै खमासमण देके (गुरू मुखै) पच्चक्खाण करै। (अथवा) गुरू न हो (तो) आपमुखे करे। इति सर्व तपस्या ग्रहणविधिः संपूर्णम्॥

॥ ❋ ॥ अथ सर्व तप पारण बिधि लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रथम ग्यान पूजा करके। इरियावही पडिक्कमें। (अमुक तप पारिवा०) मुहपत्ती पडिलेहैं। २ वांदणा देवै। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् तुम्हेअह्मं अमुक तप पारावेह (गुरु कहै पारावेमो) इच्छामि खमासमणो०। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्। अमुक तप निक्खवणत्थं काउसग्गं करावेह। (गुरुकहै करावेमो) पीछे देववंदन करके। अमुकतप पारणार्थं करेमि काउसग्गं। अन्नत्थू कहके। १ नवकारको काउसग्ग करै। स्तुति गाथा कहै। पीछे णमोत्थुणं कहै। (बेठके) भगवन् अमुक तप करतां। अविधि आसातनायें करी। जो दूषण लागो होय। सोमन वचन कायाये करी मिछामि दुक्कडं। (और) ग्यान। भक्ति, द्रव्यसें, भावसें, क्रिया होय (सो) प्रमाण फलदायक होजो। (गुरू कहे नित्थारगपार गाहोह)। पीछे। पच्चक्खाण करै (अमुक तप आलोयण निमित्तं करे मि काउसग्गं) अन्नत्थु कहे। ४ लोगस्सको काउसग्ग करै। प्रगट लोगस्स कहै। पीछे उपगरण पात्र भत्तपानादिकसें साधु भक्ति करै। अपनें शक्ति माफक। जैन विद्याभ्यास कराणें वाले। विद्यागुरुकी भक्ति करै। साहमी वछल करै। पहरावणी करै। पीछे जाचकांकों दान सन्मान करै॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

इति सर्व तपस्या पारण विधि संपूर्णम्॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सूतक विचार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुत्र जन्म होणेंसें १० दिन सूतक । पुत्री जन्म्यां दिन १२ सूतक । (और) जो स्त्रीकै पुत्र होय । उस स्त्रीकै एक माशको सूतक । पुत्र होते मरण पामें (तो) दिन १ सूतक ॥ परदेशे मृत्यु होइ (तो) दिन १ सूतक ॥ गाय । भेंश । घोडी । सांढ । घर मांह व्यावै (तो) दिन १ सूतक । मरण हुवां कलेवर घर वाहर लेजाय । जहांतक सूतक । दाश दाशी अपनी नेष्टायें रहते । पुत्र पुत्रादिकका जन्म मरण हो (तो) दिन ३ सूतक (और) जितना महिनाको गर्भ गिरै । तितना दिन सूतक । (अब) कोईके जन्म मरणका सूतक होनेंसें १२ दिन देवपूजा न करै । (जिसमें) मृतकके सूतकमें । घरका मूलकांधिया १० दिन देवपूजा न करै । उर घरका तीन दिन देव पूजा न करै । (और) मृतकनें छूवा हो (तो) २४ पहर पडिक्कमण न करै (जो) सदाका अखंड नियम हो । (तो) समता भाव रखके संवर पणामें रहै । पर मुखसें नवकार मंत्रकाभी उच्चारण करै नहीं । स्थापना जी कै हाथ लगावै नहीं । और जो मृतक कों छूवा न हो (तो) आठ पहर पडिक्कमण न करै । भेंसकै जब बच्चा होय । तब १५ दिन पीछै दूध पीणो कल्पै । गायकै बच्चो होय (तो) १७ दिन पीछै दूध पीणो कल्पै । बकरीको दूध दिन ८ पीछै पीणो कल्पै ॥ ❀ ॥

॥ १ ॥ ऋतुवंती स्त्री चारदिन भांडादिकनें न छूवे ॥

॥ २ ॥ चार दिन प्रतिक्रमण न करै ॥

॥ ३ ॥ पांचदिन देवपूजा न करै ॥

॥ ४ ॥ रोगादिकारणें तीन दिवश उपरांत कोईस्त्रीके

रक्त चलतादीसे जिसका विशेष दोष नहीं । सुद्ध विवेकसें पवित्र होकर दिन ५ पीछे थापना पुस्तक छूवे । जिन दर्शन करे । अग्रपूजा करे । परंतु । अंग पूजा न करे । साधुकों पडिलाभे ऋतुवंती तपस्या करे सो तो सफल होय (परंतु) ऋतुदिनमें जिनपूजा, प्रतिक्रमणादिक क्रिया सफल न होय ॥ गेमाचर्चरी ग्रंथमें कहाहे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❁ ॥ जिसके घरमें जन्म मरणका सूतक होय। तहां १२ दिन साधु आहार पाणी न वहरे॥ सूतकवाले घरका जल अग्निसें १२ दिन देव पूजा न करे॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ निशीथ सूत्रके १६ शोलमाउद्देशामें जन्म मरण सूतक घर दुर्गंछनीक कहा है॥ ❁ ॥ गायके मुत्रमें २४ पहरपीछे। भैंशके मुत्रमें १६ पहर पीछे। गाडर, गधेडी, घोडीके, मुत्रमें ८ पहरपीछे। नरनारीके मुत्रमें चार पहर पीछे। समुर्छिम जीव उपजै॥ ❁ ॥

(इत्यादि) संक्षेप सूतकका विचार इहां लिखा है। विशेष विचार शास्त्रांतरसें जाणना॥ इति सूतक विचार संपूर्णम्॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥❁ ॥ श्रावक चवदे नियमका प्रमाणकरै (सो) लि०॥❁ ॥

॥ ❁ ॥ सचित्त १। दव्व २। विगई ३॥ पाणहि ४। तंबोल ५। वत्थ ६। कुसुमेसु ७॥ वाहण ८। सयण ९। विलेवण १०॥ बंभ ११। दिशि १२। न्हाण १३। भत्ते सु १४। (अर्थः)॥ श्रावक नितप्रति नियम संभाले। दिनमें जो वस्तु अपनें अंग खाते लगे। उसीका प्रमाण रक्खे। उपरांत त्याग करे। तहां प्रथम (सचित्त वस्तुको परिमाण करे) मट्टी सर्व जाति। पाणी सर्व जाति। जल, अग्नि, वायु। वनस्पतीका छेदन भेदन। तरकारी सर्वजाति। फल सर्वजाति। परवल। तोरी। केला। इत्यादि सचित्तका परमाण करे॥ १॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ (दूसरा द्रव्य परिमाण)॥ तहां धातु वस्तु की शली। (तथा) अपणी आंगुली विनां। जो वस्तु मुखमे दीजे। सो सर्व द्रव्यकी गिणती में आवे। नामांतर। स्वादांतर। स्वरूपांतर। परिणामांतर। द्रव्यांतर होणेंसें द्रव्यांतर होइ। (यथा) गहुं एक द्रव्य। तिसकी पतली रोटी। फीणा रोटी। वेढवा रोटी। बाटी। यह सर्व द्रव्य जूदा कहिये। (इस प्रकारे) सर्व द्रव्य खांणेमें आवे। भात दालि। रोटी। मांझियो। पलेव। तरकारी सर्व जाति। पापड। खीचीया। लडू सर्व जाति। फिणी घेवर। हेसमी। खाजा। (इत्यादि समस्त द्रव्य परिमाण करे) इहां उतकृष्ट द्रव्यको नाम ले रक्खे (तो) एकही द्रव्य कहीये। (जेसें) मेवेंका खीचडीका नाम

लेके रक्खे (सो) अनेक द्रव्य निष्पन्न है (परंतु) एक द्रव्य कहिये । इति द्रव्य प्रमाण दूसरा नियमः ॥ २ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (तीसरा विगय परिमाण नियमः) ॥ ❋ ॥ (तहां) दश विगयमें च्यार महाविगयका तो त्याग होताहै । (और ६ विगय) घृत १ । तेल २ । मीठा ३ । दूध ४ । दही ५ । कमाह विगय ६ । धारणा प्रमाण रखे ।

॥ ❋ ॥ (अथ चौथा पादत्राणनियमः ।) ॥ ❋ ॥ तहां । जूती । खमाऊ । मोजा । आपणा । इतना विराणा । ऐसें दिन प्रतें धारणाप्रमाण मोकलारक्खे ॥ इति पाणहि नियमः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (पांचमा तंबोल नियम मध्ये) ॥ ❋ ॥ पांन (तथा) बीमा । सुपारी । लवंग । इलायची । गोटी, वमी । जायफल । जावंत्री प्रमुख सव स्वादिम वस्तु । किरयाणा प्रमुख सर्वजात धारणा प्रमाण रक्खे ॥
इति तंबोल नियमः ॥ ५ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (छठा वस्त्र नियम मध्ये) ॥ ❋ ॥ पोसाक १ । तथा ४ । छूटा वस्त्र ५ । तथा ७ । मोकला रक्खै । पोसाक १ मध्ये । पघमी १ । जामो १ । कमरबंधो १ । धोती १ । इकपट्टो उतरासण १ । यह पांच वस्त्रकी एक पोसाक कहीयै । ऐसें नही कर सके (तो) ४० तथा ५० कपमा दिन मध्ये मोकला । पराया वस्त्र भूल चूकमें आवे (तो) जयणा ॥ ❋ ॥
इति वस्त्र नियमः ॥ ६ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

(❋ ॥ अथ सातमा फूल नियमः) ॥ ❋ ॥ तिहां गुलाब । चंपेली । वेला । केवमा । केतकी । कुंद । मचकुंद । सेवती । हजारा कमल (इत्यादि) सर्व फूलका धारणा प्रमाणें परिणाम करे ॥ ❋ ॥
इति फूल नियमः ७ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (आठमा वाहन नियमः) ॥ ❋ ॥ तिहां रथ । गामी । घुमवहिल । खमसल । कोच । पालकी । वोमा । हाथी । चोपाला म्याना । (इत्यादिक) सर्व थल वाहन जानो ॥ मोर पंखी । वतक । घुमदोम । लचकार । मगर । पनमोई । पलवार । वजरा । (इत्यादिक) सर्व नावजाति ।

सर्व तिरता । फिरता । चरता यह तीन प्रकारके वाहन धारणा प्रमाणें राखे ॥ ❀ ॥ इति वाहन नियम ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अथ शय्या नियमः) ॥ ❀ ॥ तिहां पिलंग । खाट । तखत । चौकी । पट्टा गद्दी । खुरसी । वनात । पट्टसूजनी । सेत्रुंजी । फुलीचा । चांदणी । सीतल पट्टी । सफ । चटाई सर्वजाति । दरखतकी छालका । चमडेका । कांबला । मुखमल । कारचोपी (इत्यादि) धारणा प्रमाणे शय्या प्रमाण करे ॥ ❀ ॥ इति शय्यानियमः ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अथ दशमा विलेपननियमः) ॥ ❀ ॥ तिहां । सरसोंका । राईका । आटेका । तेल । फुलेल । सर्व जातिका । केशर । चंदन । कपूर कस्तूरी । रोली (इत्यादि) शरीर सुख वास्ते । (तथा) रोगादिकारणें उपधादिकका विलेपन फोंमां ऊपरि मलम प्रमुख । आंखिमें अंजन (इत्यादि) अंगोपांगमें लगाणा (सो) विलेपन धारणा प्रमाणें परिमाण करे इति विलेपन नियमः १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अथ ब्रह्मचर्यनियमः) ॥ ❀ ॥ तिहां रात्रिकों (तथा) दिनकों । सूईडोरेके दृष्टांत भोगादिकका प्रमाण करे । स्वमकी, मन, वचनकी, जयणा ॥ ❀ ॥ इति ब्रह्मचर्य नियमः ॥ ११ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अथ दिशि नियमः) ॥ ❀ ॥ तिहां । पूरब १ । पश्चिम २ । उत्तर ३ । दक्षिण ४ । अग्निकूण ५ । नैरुतकूण ६ । वायव्यकूण ७ । ईशानकूण ८ । अधोदिशि ९ । उर्ध्वदिशि १० । यह दश दिशिकों अपनें जानेंका प्रमाण करे । चिठी लिखणी । आदमी भेजणा । देशांतरकी चीठी वाचणी । तिसकी जयणा ॥ इति दिशि नियमः) १२ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अथ तेरमा स्नान नियमः) ॥ ❀ ॥ तिहां । आजदिन मध्ये स्नान २ । तथा ४ । वेर मोकला । परंतु पाणीका तोल रखे (तथा) घमा प्रमुखका प्रमाण रखे । स्नान एक मध्ये इतनो पाणी खरच करुं । अधिक नही होउं ॥ ❀ ॥ इति स्नान नियमः १३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अथ चोदमा भात नियमः) ॥ ❀ ॥ दिनमध्ये भात सेर २ तथा ४ । दो वेर (तथा) च्यारवेर खाउं । उपरांत उविहार । (तथा)

चौविहार धारणा प्रमाणे रक्खें (तथा) दिनमध्ये जल पीणे में आवे। तिसका प्रमाण रक्खे। तोलसें तथा मापसें ॥ ❁ ॥ ॥
इति चौदह नियम भाषा ॥ १४ ॥ समाप्तम् ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ द्वादश व्रतग्रहण करण विधि ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ प्रथम जिनभुवन (अथवा) जिन प्रतिमा आगै शुद्ध सपेद वस्त्र पहिरके। चंदन केशरको तिलक करै। चावल चाढै। पीछे। अखंड तंदुल मुठी ३ थाल मध्ये रक्खै। तिन ऊपर नालेर रोकनाणो धरै। तीन प्रदक्षिणा देकै। इरियावही पडिक्कमे। (इच्छकार०) सम्यक्त सामाई आरोहणार्थं चेइयाइं वंदावेह (गुरु कहे वंदावेमो) चैत्यवंदण करै। बाम पासै चावलांको साथियो करै। श्रीफल धरै। पीछे गुरू वर्द्धमान विद्या अभिमंत्रित श्रावक मस्तकै वास क्षेप करै। वर्द्धमान स्तुतीसें देववंदन करावै। पीछे सतरै थूईमें नवकार १ एकको काउसग्ग करै। पीछे शासन देवी निमत्ते लोगस्स ४ काउसग्ग करै। (पारकै) प्रगट लोगस्स कहै। पीछे नमस्कार ३ गुणकै। शक्रस्तव कहै। नमोऽर्हत् सिद्धा० कहकै। बडो स्तवन कहे। पीछे जयवीयराय कहै। इति नंदी विधिः ॥ पीछे खमासमण देई। श्रुतसामायक। आरोहणार्थं काउसग्गं करावेह (गुरू कहे करावेमो) पीछे सम्यक्त सामाइ आरोपणार्थं करेमि काउसग्गं। च्यार ४ लोगस्सको काउसग्ग करै (पारकै प्रगट लोगस्स कहे। पीछे ३ बेर नवकार गुणके। गुरूके पास ३ बेर सम्यक्त दंडक उच्चरै ॥ (गुरू) पाठ बोलै। उशीकी मनमें धारणा रखे ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ (सूत्रं) (अहन्नं भंते) तुह्माणं समीवे मिच्छत्ताउ पडिक्कमामि। सम्मत्तं उवसंपज्जामि। नोमेकप्पइ। अज्जप्पभिइ अन्नतीत्थिएवा। अन्नतीत्थि देवयाणिवा। अन्नतीत्थि परिग्गहिय अरिहंतचेइयाणिवा। वंदित्तएवा। नमंसित्तएवा। पुव्विं अणालित्तएणं आलवित्तएवा (तेसिं) असणंवा। पाणंवा। खाइमंवा। साइमंवा दाउंवा। अणुप्पाउंवा। तेसिं गंधमल्लाइं पेसिउंवा। (नन्नत्थ) रायाभियोगेणं। गणाभियोगेणं। बलाभियोगेणं। देवाभियोगेणं। गुरुनिग्गहेणं। वित्ती कंतारेणं। तंचउव्विहं (तंजहा) दव्वउ।

खित्तउ। कालउ। भावउ। तत्थ (दव्वउ) दंसणदव्वाइं अहिगिच्च। (खित्तउ जाव भरह मझिमखंमे (कालउ) जावज्जीवाए। (भावउ) जाव गहेणं न गलिज्जामि। जाव सन्निवाएणं नभाविज्जामि। जाव केणइ उम्माइ वसेणं। एसो दंसण पालण परिणामो नपरिवमइ। तावमे एसो दंसणाभिग्गहो। अन्नत्थणा भोगेणं। सहस्सागारेणं। महत्तरागारेणं। सव्वसमाहिवत्तिआ गारेणं। वोसिरइ॥ (पीछे) उँ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः॥ ऐसे अक्षर श्रीगुरुके पाश हाथमें लिखाके। जिनप्रतिमाकों वाशक्षेप चढावै। नवकार पढतो थको ३ प्रदक्षिणा देकै (देव गुरू प्रतें वांदै) पीछे श्रुत सामायिक थिरी करणार्थे। सत्तावीश उत्साशप्रमाणें। एक लोगस्सको काउसग्ग करै। एक लोगस्स कहके पारे। पीछे सम्यक्तरूपी कल्पवृक्ष पायके। अति आनंद सें ऐसा अभिग्रह वचन बोलै॥ अरिहंतो महदेवो। जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो। जिन पन्नत्तंतत्तं। इय सम्मत्तं मए गहियं॥ १॥ पीछे गुरू धर्म्म देशना देवै। मिथ्यात्व वरजै। नित्य चैत्यवंदन इतनी वेर करूंगा। इतना नवकार नित्य गुणुंगा। केशरादि द्रव्य वर्षप्रतें इतना चढावुंगा। ग्यान· दर्शन चारित्रके· भक्ति अर्थे इतनो द्रव्य खरचूंगा। शील व्रत· इतनी पर्वतिथि पा लुंगा। नित्य पच्चक्खांण इस माफक करुंगा (दिनकों) नवकारस्यादि व्रत (तथा) रात्रीकों चउविहार। त्रिविहार। दुविहार। प्रमुख। और। बा वीश अभक्ष। वत्तीश अनंत काय। विदल प्रमुख सर्व छोडुंगा। (इत्या दि) अपनी धारणा माफक सर्ववस्तूका प्रमाण। गुरूके सन्मुख करै १२ व्रत ग्रहण करे। बारेव्रतकी टीप सुणें। जिसमें लिया हुवा व्रतकों अतीचार नलगे। ऐसा उपियोग सदारक्खै॥ इति सम्यक्तारोपण विधिः॥❀॥

॥❀॥ प्राणातिपातव्रत दंडक लि० (१)॥❀॥

॥❀॥ (अहन्नं भंते)। तुह्माणं समीवे। थूलग पाणाइ वायं संकप्पि उ निरवराहं पच्चक्खामि। जावज्जीवाए। दुग विहं। एगविहेणं (अथवा) दुविहं। तिविहेणं। मणेणं। वायाए। काएणं। न करेमि। न कारवेमि। तस्स भंते। पडिक्कमामि। निंदामि॥ गरिहामि। अप्पाणं वोसरामि॥ यह पहला व्रतका दंडक वार ३ उचरावे॥ १॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ (अहन्नं भंते । तुह्माणं समीवे । थूलगं मूसावायं । जीहा भेयाइहेतुअं । कन्नालीयं । गोवालीयं । भोमालीयं । थापणमोसा । कूडसा खीयं । पंचविहं पच्चक्खामि । दक्खिन्नाइ अविसए । दव्वउ । खित्तउ । कालउ । भावउ ॥ दव्वउणं मूसावायं । खित्तउणं इत्थवा अणत्थवा । कालउणं जावज्जीवाए । भावउणं जावगहेणं न गहिज्जामि । छलेणं न छलिज्जामि । अन्नेण केणवि रोगाइयं । एसो परिणामो न परिवरूइ । ताव अभिग्गह । दुविहं । तिविहेणं । अन्नत्थणा भोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्तरागारेणं । सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसरइ ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अहन्नंभंते तुह्माणं समीवे) । अदिन्नादाणं । खत्तखणणाइयं । चोरं काकरं । रायनिग्गह कारयं । सचित्ता चित्त वत्थुविसयं पच्चक्खामि । दव्वउ । खित्तउ । कालउ । भावउ ॥ दव्वउणं । अदिन्नादाणं । खित्तउणं इत्थवा अणत्थवा । कालउणं जावज्जीवं । भावउणं जावगहेणं न गहिज्जामि । छलेणं न छलिज्जामि । अणेण केणवि रोगाईयं । एसो परिणामो न परिवरूइ । ताव अभिग्गह । दुविहं । तिविहेणं । अन्नत्थ° सहस्सा° महत्त° सव्व° वोसिरइ ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अहन्नं भंते तुह्माणं समीवे) । उदारिय वैक्रियभेयं । थूलमेहुणं पच्चक्खामि । अहागहियभंगएणं । दिव्वं । तिरित्थं । माणसियं । एगविहं । एगविहेणं । पच्चक्खामि । दव्वउ । खित्तउ । कालउ । भावउ ॥ दव्वउणं मेहुणं । खित्तउणं इत्थवा अणत्थवा । कालउणं जावज्जीवाए । भावउणं । जावगहेणं न गहिज्जामि° । छलेणं° । अन्न° । सह° । मह° । सव्व° । वोसरइ ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अहन्नं भंते तुह्माणं समीवे) । परिग्गहंपडुच्च । अपरिमियपरिग्गहं पच्चक्खामि । धणधन्नाइ नवविहवत्थु विसयं । इच्छापरिमाणं उवसंपज्जामि । अहागहियभंगएणं । (तंजहा) दव्वउ । खित्तउ । कालउ । भावउ । दव्वउणं । नवविहपरिग्गहं । खित्तउणं । इत्थवा अणत्थवा । कालउणं जावज्जीवं । भावउणं जावगहेणं । नगहिज्जामी° । छले° । अन्न° । सह° । मह° । सव्व° । वोसिरइ ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अहन्नं भंते तुह्माणं समीवे । दिशिपरिमाणं पच्चख्खामि । (तंजहा) दव्वउ । खित्तउ । कालउ । भावउ । दव्वउणं । दिशिपरिमाणं । खित्तउणं धारणा परिमाणं । कालउणं जावज्जीवाए । भावउणं । जावगहेणं न गहिज्जामि । जाव छले० । तावअभिग्गह । अन्न० । सह० । मह० । सव्व० । वोसरइ ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अहन्नंभंते तुह्माणं समीवे । भोगोवभोगवयं (भोयणउ) अनंतकाय बहुबीया राइभोयणाइं परिहरामि । (कम्मओणं) पन्नरस कम्मादाणाइं । इंगालकम्माइयाइं । बहु सावज्जाइं खरकम्माइयं । रायाभियोगंच परिहरामि । (तंजहा) दव्वउ । खित्तउ । कालउ । भावउ ॥ दव्वउणं भोगोवभोगवयं । खित्तउणं इत्थवा अन्नत्थवा । कालउणं जावज्जीवाए । भावउणं जावगहेणं नगहिज्जामि० । छलेणं० । अन्न० । सह० । मह० । सव्व । वोसिरइ ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अहन्नं भंते तुह्माणं समीवे । अन्नत्थदंडं पच्चक्खामि । अवझाण । पापोपदेश । हिंसोपकरणदांन । प्रमाद चरितं । चउविहं अन्नत्थदंडं । जहा सत्तिए परिहरामि (तंजहा) दव्वउ । खित्तउ । कालउ । भावउ ॥ दव्वउणं अन्नत्थदंडं । खित्तउणं इत्थवा अन्नत्थवा । कालउणं जावज्जीवाए । भावउणं जावगहेणं नगहि० । छलेणं० । अन्न० । सह० । मह० । सव्व० । वोसिरइ ॥ ८ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (अहन्नं भंते) तुह्माणं समीवे । सामाइयं । पोसहोववासं । देसावगासियं । अतिथिसंविभागवयं । जहा सत्तीए पडिवज्जामि । इच्चयं सम्मत्तमूलं । पंचाणुव्वयं सत्तसिक्खावयं । दुवालसविहं सावगधम्मं उवसंपज्जत्ताणं विहरामि (तंजहा) । दव्वउ० अन्नत्थणाभोगेणं । सहस्सागारेणं । महत्तरागारेणं । सव्वसमाहि वत्तियागारेणं । वोसिरइ ॥ पदसाख । उ छंडी । च्यार आगार सहित पालुं ९ । १० । ११ । १२ । ॥ ❀ ॥

इति श्रावकको संक्षेप बारेव्रत उचरावण विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मुनिमालका लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रुषभ प्रमुख जिणपाय युग प्रणमुं । शिवसुख दायक मनह उ

ल्लास। पुंमरीक श्री गोतम आदिक। गणधरगुरु मन कमल विकास॥ ॥ १ ॥ (प्रहसम सूधा साधु नमुंनित। न्नावे श्रमण सुगुरु न्नगवंत। नाम ग्रहण करि पाप पखालूं। परमानंद सुमति विकसंत॥ २॥ (प्र०) न्नरथ महासुनि प्रथम चक्रीसर। बाहूबल उपशम न्नंमार। सूरयसा दिक आठ सुनीसर। पाम्यो विमलाचल न्नव पार॥ ३॥ (प्र०) रिखन्न वंस जे अनु क्रम हुवा। मुनिवर कोमी लाख असंख। श्रीसेत्रुंजे शिवपुर सीधा। क ल मल कालक मुंकी कंख॥ ४॥ (प्र०) सगर प्रमुख निरुपम नव चक्रव र्त्ति। साधु महाबल संयम सींह। अचलादिक बलदेव अष्टमुनि। राम रिषी सर नवम अबीह॥ ५॥ (प्र०) श्रीप्रतिबुद्धि प्रमुह छह सुंदर। श्रीमल्लि नाथ पूरवन्नव मित्र। पहुता परम यतीसर शिवपुर। पाली श्रीजिन आण प वित्र॥ ६॥ (प्र०) वंदुं विस्नु कुमार लबधि निधि। खंदग सूरना सीस से पंच। कार्तिक सेठ सुसाधु कीर्त्ति धर। श्रमण सुकोसल व्रत निरबंच॥ ७॥ (प्र०) श्रीयडुवंस अक्षोन्न सुसागर। प्रमुख आठ अणगार प्रधान। श्री रहनेमि नेमि जिन बंधव। निरमल गुण गण रयण निधांन॥ ८॥ (प्र०) जा ली मयालीनें उवयाली। पुरस सेण वारसेण प्रद्युन्न। संब अनें अनिरुद्ध रिषीसर। सत्यनेमि दृढनेमि सुधन्न॥ ९॥ (प्र०) कुमर अनीकज सा दिक षट्मुनि। गुणगिरुवो श्री गजसुकमाल। ढंढण रिष श्रीथावच्चा सुत। सहस साधु संजम सुकृपाल॥ १०॥ (प्र०) (राग धन्याश्री)॥ ॥ सहस श्रमणसुं सुक संयम धरो। पंचसयांसुं सेलग सुनिवरो। सिद्ध थया श्री पुंमर गिरवरो। करुणाकर प्रणमुं संपद करो। (उल्ला०) संपदकरो शम दम रिषीसर साधु सारण सोहए। अंतर प्रकासे तिमर नासे न्नविक जन मन मोहए। प्रत्येक बुद्ध प्रबुद्ध नारद मुनि प्रमुख पैंतालए। दमदंत महा रिष कुंजवारे साधु नमुं त्रिहुं कालए॥ ११॥ (चाल) रंग रिषन्नदत्त र त्तन त्रय गुणी। समरुं देवानंदा साहुणी। पांचे पांमव प्रणमुं मुनिपती। केशि पएशी बोधक जिनमती। (उल्लालो) जिनमती कालक पुत्र मेहल थिवर आणंद रक्खियो। अणगारका सव धर्म न्नाख्यो साधि शिवपुर म क्खियो। कालासवेसी पुत्र आतम अरथ साधक उपसमइ। श्रीपुंमरीक

महामुनीसर प्रणमीये सुज्ञ संयमी ॥ १२ ॥ (चाल) वंकुंवलकल चीरी केवली । श्रीअेमत्तो मुनिवर मनरली । श्रीकरकंडु दुमह नमि निग्ग या । निज २ देसे नरवर श्रीजुवा । (उल्लालो) श्रीजुवा एरिषजादि देखी थया वरु वइरागीया । संजम सिरि भजि मोह निद्रा तजीय जोगे जागी या । प्रत्येक बुद्धा च्यार सिद्धा सिद्ध थया एकण समें । सुप्रसन्न चंद मु निंद निरमम प्रेम प्रणमुं प्रहसमें ॥ १३ ॥ (चाल) खंते खुल्ल कुमार सु ध्याईये । लोहच्चामुनि चरणे जयलाइये । कालउदाई प्रमुख महामुणी । संजम सुद्ध जयंती साहुणी (उल्लालो) साहुणी जाणी जग वखाणी प रम पद सुख पामीया । श्री श्रमण भद्र सुभद्र सुंदर अचल आतम रामीया । श्री सुप्रतिष्ट यतीस सुव्रत साधुसुव्रत सेहरो । चारित्र रिष गुणवंत गोभद्र गरुआ गरिमा सागरो ॥ १४ ॥ (चाल) सिरीसिव राय रिषीसर वंदीये । दशा रण भद्र नमुं दुख छंदीये । अर्जुन माली सुख संजम धरो । सुदृढ प्रहारी शिवरमणी वरो । (उ०) शिवरमणीवरो श्रीकुरगडू क्षमावंत प्रसिद्ध । वलि च्यार उग्रविहार तपसी सहत सुविहत सिद्ध । कोडिन्न दिन्न अनें सेवाली पनर शतक तिडोत्तरा । गोतम प्रबोधत सिद्ध पुहता नमुं चरण करणा धरा ॥१५॥ (चाल) गरुआ श्रीगुणसागर गाईये । प्रथवी चंद्र प्रणम्यां सुख पाईये । खंद कुमार सदा अभिनंदीये । नमिह अरहमित्र मन आणंदीये । (उ०) आणंदीये मेतार्य मुनिवर भगतिसुं समरी करी । रूप इलापुत्र चिलापुत्र मृगापुत्र हीये धरी । श्रीइंद्रनाम निग्रंथ निर्मम धर्मरुचि धर्मोगिरो । तेतली पुत्र सुबुद्धि बोधित सु जितशत्रु मुनीसरो ॥ १६ ॥ (चाल) उदय २ कर जगि २ जस तणो । श्रमणसुदंशण शील सुहावणो । श्रीअभयसुत आद्रकु मारए । चित्त चतुरनर चित चमकारए । (उ०) चमकार सार सुजात रिषव दृदेव सांनिध जश धणी । गांगेय गिरुओ गुणेगाजे सु जिनपालन हित ध णी । श्रीधर्मघोष सुसीस धर्मरुचि साधु श्रीजिनदेव ए । श्रीकपिलरिषि ह रिकेश वलिमुनि नित नमुं निरलेवए ॥ १७ ॥ (चाल) जति जयघोष वि जयघोषे लउं । सेवुं श्रुतधर श्री देवलउं । श्रीइखुकार नृपनि कमलाव ती । गणी भृगुसुत प्रोहित सुजमती । (उ०) सुजमती जेहनी जशा भा

र्यो पुत्र दोय वखाणीये । ए ब्हुं लेई चारु चारित्र सुगति पुहता जाणीयें। क्षत्रिय मुनीसर साधु संजम धर्मरुचि सुमहाव्रती । निर्ग्रंथ नाथ अनाथ वंदुं समुद्रपालसु संयती ॥ १८ ॥ (चाल) कुम्मापुत्र नमुं केवल कव्यो । विध सुं शीतल शिवकमला मिल्यो । धन २ धन्नो सुरगिर धीरए। वीरप्रशंश्यो तपगुण वीरए। (उ०) श्रीवीर दिख्खित श्रीसुवाहु भद्रनंद कुमारए। आ दिक दसेरिष चरिय जेहना सुख विपाक उदारए। श्रीचंमरुद्र सुशीस खंद ग खिमानिधि कहीये इण कले। कुरुदत्तसुत तीसग सरोरुह रिष नम्यां आ स्याफले ॥ १० ॥ (चाल०) अंगप्रमुख रिषच्यारे आदरी । विधिसुं संजम सिद्धि वधू वरी । अने कुमार मुनि अजयं करो । हल्ल विहल्ल सु आतम हितकरो। (उ०) हितकरो दयाधर मेघमुनिवर नंदिषेण आराधीयै। सुनक्ष त्रनें सर्वानुभूती शमर शिवसुख साधीये । श्रीसींह साधु अनें उदायन चरम राज रिषीसरो । श्रीशालभद्र सुधन्न मुनिवर समरतां मंगल करो ॥ २० ॥ (राग धन्यासरी) ॥ वरु वैरागी वरनमुं । भुगवर जंबूसामि । भजव सि र्यं भव परगम्गौ । सुजश यशो भद्र स्वामि ॥ २१ ॥ (महामुनीसर नित नमुं जी । नामें घर नवनिद्ध । (वाधे रिद्ध समृद्ध) ॥ २२ ॥ (म०) ॥ जग संभूति विजे जयो । भद्रबाहु कृतभद्र । जग जोगीसर जागतो । मुनिवर श्रीथूलभद्र ॥ २३ ॥ (म०) भद्रबाहु स्वामी तणा । च्यारि शिष्य मुनिराय शीत परीसह जिण सह्या । सारथा २ आतम काज ॥ २४ ॥ (म०) ॥ अज्ज महागिरि जांणीये । अज्जसुहत्थि विशाल । संप्रति नृप पडि बोहीयो । श्री अवंती सुकमाल ॥ २५ ॥ (म०) ॥ आरिजसांमि प्रसंसीयो । अज्जसुभद्दमु नीस । अज्जमंगु महिमानिलो । सींहगिरीस मुणीस ॥ २६ ॥ (म०) ॥ धन गिरि थिवर महामुनी । श्रीवयरस्वामि मुनिराय । अरहदिण मुनि अपह रयो । भद्रगुप्त निरमाय ॥ २७ ॥ (म०) ॥ वयरसेन विद्यावरू । श्रीरक्षित गुरु दक्ष । पुसमित्र गुण गह गहे । प्रभु दुरबलका पक्ष ॥ २८ ॥ (म०) ॥ विजसाधु सुविधइ भरयो । श्री थंभिल सुमहिट्ठ । सूत्र अरथ रतनें भर्यां । क्षमाश्रमण देवर्द्धि ॥२९ ॥ (म०) ॥ पंचमकाल चरमामुनी। श्रीउपसं थर दयाल । सुधक्रिया खरतर सही । जिन आग्या प्रतिपाल ॥ ३० ॥ (म०)॥

इम पनर कर्मभूमी जिके । हुआ हुस्ये अनंत । वर्त्तमान श्रीसाधुजी । रतनत्रई गुणवंत ॥ ३१ ॥ (म०) ॥ ब्राह्मी सुंदरी राय मई । साहुणी चंदन बाल । आदिक शीलवती सती । त्रिकरण सुध त्रिकाल ॥ ३२ ॥ (म०) ॥ संवत सोल छत्तीसए । श्रीविमलनाथ सुरसाल । दिक्षा कल्याणक दिनें । गुंथी श्रीमुनि माल ॥ ३३ ॥ (म०) ॥ रिणीपुरे रलीया मणो । श्रीशीतल जिण चंद । सूरविजेराजे सदा । संघ अधिक आणंद॥ ३४ ॥ (म०) श्रीमति भद्र सुगुरू तणें । सुपसाये सुखकार । चारित संघ वखाणीयै । सदा २ जय कार ॥ ३५ ॥ (म०) मनहर श्रीमुनिमालका । गुणगण परमलपूर । कंठठ वइ उत्तम जिके । पामें सुखभरपूर ॥ ३६ ॥ (क०) महामुनीसर गावतां सुरतरु सफल समान । अष्ट महा सिद्धि वरफलै । सदा २ कल्याण ॥३८॥ (म०)॥ इति मुनिमालका संपूर्ण ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वर्त्तमान चोवीसीवंदुं । मन सूधे नितमेवरी माई । रुषभ अजित संभव अभिनंदन । सुमति पदम प्रभुसेवरी माई ॥ १ ॥ (वर०) श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रभु प्रणमुं । सुविध शीतल श्रेयांसरी माई । वाशपूज्य विमल अनंत धरम जिन । शांति कुंथु परसंसरी माई ॥ २ ॥ (व०) अरजिन मल्लि अनें मुनि सुव्रत । नमि नेमि पाश जिणंदरी माई । चो वीशमा श्रीवीर जिणेसर । प्रणमुं परमाणंदरी माई ॥ ३ ॥ (व०)॥ ढाल २ ॥ प्रहशम सुधा साधु नमुं नित (एहनी)। नित नित अतीत चोवीशी नमीये । जेहना नाम प्रगट ए जाण । केवलन्यानीनें निरवाणी । सागर महा जश विमल वखाण ॥ ४ ॥ नि०)॥ सर्व्वानुभूति श्रीधर दत्त जिनवर । दामोदर सुतजा श्री स्वामि । मुनिसुव्रत सुमति शिवगति जिन । श्री अस्ताग नेमीसर नांम ॥ ५ ॥ (नि०) ॥ अनिल यशोधर तेम कृतारथ । श्री जिनेसर सुधमति सुजगीस । शिवकर स्यंदन संप्रतिनामें । वंदीजे जिनवरचोवीश ॥ ६ ॥ (नि०) (ढाल२) सफल संसारनी ॥ जे भविस्यंति अनागए कालए । तेहचोवीश प्रणमीस त्रिहुं कालए । प्रथम महाराज श्रेणक तणो जीवए । श्रीपद्मनाभ प्रणमीस सदीवए ॥ १ ॥ वीरनो पितरीयो नाम सुपासए । हुसी जिन बीय सुरदेव सुप्रकासए

कोणिक सुत उदाई नरिंदए । तीसरो तेह सुपास जिणंदए ॥ २ ॥ सिष्य श्रीवीरनो पोट्टलो साधए । चोथो स्वयंप्रभु नांमआराधए । दृढायुष जीव सिद्धांतमें जाणीयै । पंचम सर्वानुभूति प्रमाणीयै ॥ ३ ॥ कीर्त्त इण नाम इक जीव कहीजीयै । देव श्रुत तेछठो स्वामि स लहीजीयै । शंषश्रावक हुस्ये उदयजिण सातमो । आणंदनो जीव पेढाल जिण आठमो ॥ ४ ॥ सुनंदनो जीव ते नवम पोट्टल जिणं । शतक श्रावक शतकीर्त्ति दशमो भणं । देवकी जीव मुनिसुव्रत इग्यारमो । सत्यकी जीव ते अमम जिण बारमो ॥ ५ ॥ वासुदेव जीव निकषाय जिन तेरमो । बलदेव जीव निपुलाक चवदम नमो । पनरमो निरमम देव सुलसाकही । रोहणी जीव चित्रगुप्त सोलम सही ॥ ६ ॥ समाधि जिन सतरमो श्रावका रेवती । अढारमो शहास जीव संवर जिनपती । दीपायन जीव यशोधर उगणीसमो । कृष्ण कोई जीव ते विजय जिनबीशमो ॥ ७ ॥ मल्लि इकवीशमो जीवनारद तणो । देव बावीशमो अंबड श्रावक भणो । तेवीशमो अमर जीव अनंत वीरज नमो । स्वाति बुध जीव ते भद्र चोवीशमो ॥ ८ ॥ एह आगाम चोवीश जिण जांणीया । प्रवचन सार उद्धारथी आणीया । केई पर सिद्धनें केई अप्रसिद्ध कह्या । शास्त्र अनुसारथी साच कर सरदह्या ॥ ९ ॥ ❋ ॥ (ढाल २) ॥ ❋ ॥ आज नहेजोरे दीसे नाहलो० ॥ ❋ ॥ विहर मान जिण वीशे वंदीये । महा विदेह विख्यात । सीमंधर युगमंधर बाहुजी । श्रीसुबाहु सुजात ॥ ६ ॥ (वि०) स्वयंप्रभु रिषभानन अनंतवीरजी । सूरप्रभु तेमविशाल । वज्रधर चंद्रानन चंद्रबाहुजी । भुजंग ईसर नेम भाल ॥ ७ ॥ (वि०) वेरसेन महाभद्र नमुं वली । देवयशा यसो रिद्ध । अढी द्वीपमें विचरे आजए । नाम लीये नव निद्ध ॥ ८ ॥ (वि० ढाल ४) ॥ ❋ ॥ रे जीव जिन धर्म कीजीये० ॥ ❋ ॥ च्यार तीर्थंकर शाश्वता । इणहीज अभिधान । रुषभानन चंद्रानन । वारिषेण वर्द्धमान ॥ ९ ॥ (च्या०) अठकोडि छप्पन लाखसुं । सत्ताणुं हजार । चउसे छयासी देहरा । त्रिहुं लोक मझार ॥ २० ॥ (च्या०) नवसे पणवीश कोडीया । बिंब त्रेपन लाख । सहस अठावीश च्यारसे । अठ्यासी भाख ॥ २१ ॥ (च्या०)

लिन्नूं जिणवर नामए । समरयां सुखदाय । प्रणम्यां पाप मिटै परा । सम कित सुद्ध थाय ॥ २२ ॥ (च्या०)॥ कलशः ॥ इम त्रिण चौवीशी वीश विहरमांन चौजिण शाशता । संथुएयां सतरैसै त्रयांलै अधिक आंणी आ सता । जिन रतन चिंतामणि तणी परि प्रबल वंछित पूरए । प्रहसमै त्रि करण सुद्ध प्रणमें सदा जिनचंद सूरए ॥ २३ ॥ ❀ ॥ इति श्रीत्रिण चौवी शी: वीस विहर मान, चौजिण शाश्वता, एवं लिन्नूं नगवंत नाम स्तवनं ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ उपधान तप स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीमहावीर धरम परगासे । बेठी परषदबारजी । अमृत वचन सुणी अति मीठा । पामें हरष अपारजी ॥ १ ॥ सुणो २ रे श्रावक उपधा न वह्यां विन । किम सूझै नवकारजी । उत्तराध्ययन बहुश्रुत अध्ययनें । ए ह नण्यो अधिकार जी ॥ २ (सुणो०) ॥ महा निशीथ सिद्धांत मांहे पि ण । उपधांन तप विस्तार जी । अनुक्रम सुद्धपरंपर दीसइ । सुविहित ग छ आचार जी ॥ ३ (सु०)॥ तप उपधान वह्यां विन किरिया । तुछ अलप फल जाण जी । जे उपधान वह्या नर नारी । तेहनो जनम प्रमाणजी ॥ ४ (सु०)॥ तप उपधान कह्यो सिद्धांते । जो नवि मानें जेहजी । अरिहं त देवनी आण विराधे । नमस्यै नव २ तेह जी ॥ ५ (सु०) ॥ अवइया घाटसमां नर नारी । विण उपधानें होय जी । किरिया करतां आदेश निरदे श । काम सरे नहीं कोइ जी ॥ ६ (सु०) इक घेवरनें खांमै नरियो । अति घणो मीठो थाय जी । एक श्रावक उपधान वहेतो । धन २ ते कहवायजी । ॥ ७ ॥ (सु०) ॥ (ढाल) ॥ नवकार तणो तप पहिलो वीसरू जाण । इरिया वहीनो तप बीजो वीसरू आण । इण विहुं उपधाने निश्चइ नांण मंनाण । चारे उपवासे गुरु मुख वेचे वांणि ॥ ८ ॥ पेंत्रीसरू त्रीजो णमोत्थुणं उप धांन । त्रिण वायण उगणीस तप उपवास प्रधान । अरिहंत चेइ तप चो थो चोकरू एह । उपवास अढाई वाणएक गुण गेह ॥ ९ ॥ पांचमो लोग स्स तप अठावीसरू नाम । साढापनरह उपवास वायणा त्रिणठाम । पुक्खर वरदी तप छठो बरूइ सार । साढात्रण उपवासे वांण एक सुविचार ॥ २० ॥ सिद्धाणं बुद्धाणं सातमो उपधान मान । उपवास करे इक चौविहार ततका

ल । एक वाणिकरे वलि गुरुमुख सरससरसाल । गछनायक पाशे पहेरे माल विशाल ॥ ११ ॥ माल पहरण अवशर आणी मनउछरंग । घर सारू वारू खरचे धन वहु जंग । अति उछव कीजै राती जोगो दिल खोल । गीतगान गवावे पावै अति रंग रोल ॥ १२ ॥ (ढाल) ॥ ए साते उपधान । विधसों जे वहे । ते सूधी किरिया करै ए । खिण न करै परमाद । जीव जतन करइ । पुंजि २ पगला जरै ए ॥ १३ ॥ न करै क्रोध कषाय । हस २ हसे नही । मरम केहनो नवि कहे ए । नाणें घरनोमोह । उतकृष्टी करे । साधु तणी रहणी रहै ए ॥ १४ ॥ पहुरसीम सिझाय । करपोरशि ज णी । ऊंचै स्वर बोलै नहीं ए । मनमांहें जावे एम । धन २ ए दिन । नरजव मांहि सफल सही ए ॥ १५ ॥ जेसाते उपधान । विधसेती वहे । पहिरे माल सोहावणीए । तेहनी किरिया शुद्ध । वहु फलदायक । करम निर्जरा अति घणी ए॥१६॥परजव पामे रिद्ध । देव तणा सुख । वत्रीस वद्ध नाटक पखे ए । लाजै लील विलास । अनुक्रम शिव सुख चढती पदवी जे चढे ए॥१७॥ (कलशः)॥इम वीरजिणवर जुवण दिणयर मात त्रिशला नंदणो । उपधानना फल कहे उत्तम जवियजण आणंदणो । जिणचंद जुग परधान सदगुरु सकल चंद मुनीसरो । तसुशीश वाचक समय सुंदर जणें वंछित सुख करो ॥ १८ ॥ ॥❋॥इति सात उपधांन गर्भित श्रीमहावीर स्वामी वृद्ध स्तवन संपूर्ण॥❋॥

॥ ❋ ॥ (इस) स्तवनमें उपधान तप करनेंकी सर्व विधि है । इसी मुजब विवेकी जीव करे । और उपधान तप ग्रहण (तथा) माला पहर ण विधि इहां न लिखी है (सो) सुद्ध गुरुके पास । विधि प्रपाक ग्रंथसें जाणके करे ॥ ❋ ॥ इति तत्वं ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ राग रागणी स्तवन लि०॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (राग कल्याण) ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ टुक निजर महरदी करणाहो ॥ टु० ॥ मैंहुं अधम पापकी मूरत । मेरा दोस न धरणा हो ॥ (टु०) ॥ १ ॥ अष्ट जवनकी प्रीत हमारी । नवमें जव निरवाहना हो ॥ (टु०) ॥ २ ॥ रूपचंद जगतनकी वीनती । आवागमण निवारणा हो ॥ (टु०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लोक चवदके पार किनारे । पूरण ब्रह्मका वासा हे । (लो०) पेंतालीस लाख जोजनकी सिला । फिटक रतन उजासा हे । निरमल जोत विराजे साहिव । ग्यान ध्यान परकासा है ॥ (लो०) १ ॥ पंच वरण की धजा फरूके । क्याकहुं अजव तमासा हे ॥ नाथ निरंजन नाम तुमारो । औरनकी क्या आसा है ॥ (लो०) २ ॥ चोसठ इन्द्र खरे वाके द्वारे । खिजमत वंदा खासा हे ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन । चरण कमलका दासा हे ॥ (लो०) ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सवी सखि वन ठन (सवी०) ठाढे । नाभि नृपत जूके द्वारे आगे । (स०) रिषभ कुमरको जनम भयो है । मंगल मुख्य उचारेरी ॥ (स०) १ ॥ ताल मृदंग रवाव मधुरी धुनि । वीणा वाजे सुरतारे । नाचत हाव भाव करी राजत । तानलेत सुरतारेरी (स०) ॥ २ ॥ सुरवनिता मिल गाइ वधाई । मोतीयन चोक सवारे । जगवंधव जगपतिकुं निरखत । आनंद हर्ष अपारेरी ॥ (स०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हो जिनतेंमे दरस परवारीयां (हो०) तुम विन भव २ में भटकंदा । अव मेंमी ओर निहारीयां ॥ (हो०) ॥ १ ॥ अष्ट करम मेंमे लार लगे हे । उनकुं वेग विमारीयां । चरण मरण गहे आण तुमादे । रूपचंद गुणगारीयां ॥ (हो०) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हांरे ह्मांरा रिषभ जिणंदनें गजरो चढाउंरे (ह्मां०) चंवेली चंपा गुलाब ल्याउंरे । जाइ जूइ मोगरो मालती । विध गुंथाउंरे (ह्मां०) १ ॥ अगर चंदन अक्षत नेवेद्य लाउंरे । धूप दीप फलसुगंध पुराय पाचुंरे (ह्मां०) २ ॥ इष्ट धरम आदिनाथ भाव भावुंरे । रिषभ दास पूरो आस गुण गावुंरे ॥ (ह्मां०) ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मन लीनो हमारो जिन चरणारे । पोत जलधि भव तरणारे ॥ (म० टेर) ॥ आदि पुरश जगतारण नि शुण्यो । कर्म विकट घन हरनारे ॥ (म०) १ ॥ नाभि तात मरुदेवी माता ॥ नंद ऋषभ सुख करनारे ॥ (म०) २ ॥ सव्यादिक प्रगट न जग तत्पर । कुमतांगन दलटरनारे ॥ (म०) ३ ॥ सारंग दृग शशिवदन मनोहर । अंग कनक सम वरनारे (म०) ४ ॥ श्रीजिन हंस सूरीसर जंपे । जिन शमरण दिल धरनारे ॥ (म०) ॥ ५ ॥ इति श्री ऋषभ देव स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग झिंझोटी) (२) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अजित अजित जिन ध्यान । (ह्मारे मनरे) (अ०) (टेरः) जितशत्रु विजयाको नंदनरे । वंदन त्रय युत ग्यान । (ह्मा०) १ ॥ त्रिहुं जग तारन टारन अघ कोरे । वारुं तन धन ज्यांन ॥ (ह्मा० अ०) २ ॥ जिन वचनामृत पान करीजैरे । केवल निरमल ग्यान ॥ (ह्मा०) ३ ॥ श्री जिन हंस सूरि प्रभु पाएरे । निवृति पुरिंदरस्थान ॥ (ह्मा० अ०) ॥ ४ ॥ इति श्रीअजित नाथ स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यह अरजी मोरी सहियां । मोहितारज्यो गह वहियां । (य०) मैं नांहि जानुं सहियां (य०) । मैं तारण तरण सुण्यो वे । मैं यातें शरणों गहीयां । इनतें भवार लहियां ॥ (मो० य०) ॥ १ ॥ इन करमनके वस होयके । मैं भटक्यो चिहुं गति महियां । मैं नांहि जानुं सहियां ॥ (य०) २ ॥ हित करकें दास निहारे । कर जोडि पभिहुं पइयां । शिव देति क्युं न सहियां । (मो० य०) ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग काफी) (५) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मुजरो मानी लीजे हो गोमीराय अरज सुणीनें ह्मारो (मु०) किरपा काज करी सेवकगनें । दिलभर दरशण दीजे हो (गो०) ॥ १ ॥ गुणनिधि गवडी दरशण दीजे । मकल करम दलडीजे हो (गो०) ॥ २ ॥ रूप विबुध कहे मो मन पभणें । प्रह ऊठी प्रणमी जे हो (गो०) ३ ॥ इति

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुमेंमा प्रभु इण दिल वसणावे । तेंमा तो गुण सुर गावं दाहो ॥ (प्र०) ॥ १ ॥ संतके सागर गुणके आगर । जोही ध्यावे सो पावं दाहो ॥ (प्र०) ॥ २ ॥ तुमहो तत्वज्ञानके दाता । भविजन ताप मिटावं दाहो ॥ (प्र०) ॥ कहैं जिनचंद ऐसे प्रभुमेरे । चरणकमल चित लावं दाहो (प्र०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हम जानतहे तुम तारोगे । (हम०) नाभिराय मरुदेवी को नंदन । मेरी ओर निहारोगे ॥ (हम०) ॥ १ ॥ आदि जिनेसर अन्तर जामी । खामी कबुन विचारोगे ॥ (ह०) ॥ २ ॥ जगजीवन जगतारक तुमहो । एही विरुद संभारोगे ॥ (ह०) ॥ ३ ॥ श्रीजिन सोभाग्य सुरिंद कुं साहिब । भवजल पार उतारोगे ॥ (ह०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंथीमा पंथ चलेगो । प्रभु भजले दिन च्यार ॥ (पं०) झूठी काया झूठी माया । झूठो सब परवार ॥ (पं०) ॥ १ ॥ बालपणेंमें खेल गमायो । जोबन माया जाल ॥ (पं०) ॥ २ ॥ बूढापण आयो धरम न पायो । पीछे करत पुकार ॥ (पं०) ॥ ३ ॥ क्याले आयो क्याले जा सी । पापपुण्य दोय लार ॥ (पं०) ॥ ४ ॥ दया मया कर पार्श्व पेवंती । अब तेरोही आधार ॥ (पं०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तेवीशमा जिनराज । जोरूं थांहरे कोन भुंमेगो (ते०) । अस्वसेन तात वामादेवी माता । तूं तारण संसार ॥ (जो०) ॥ १ ॥ कमठ विभारण नागकुं तारण । संभलाव्यो नवकार ॥ (जो०) ॥ २ ॥ विबुध कुशल कर जोमीनें वीनवे ॥ भव २ देज्यो दीदार ॥ (जो०) ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ (राग खंभायची) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कैसें काज सरे महाराजा जिन (कैसें०) भ्रमन २ जब चौ

रागीमें । सुख दुखसें जीया रुलत फिरै (म० के०) । ए रिपु कर्मवेरी भ टकावे । जाहीसें मेरो प्राण गरे ॥ (म० के०)॥ २ ॥ जो जीव सुखकी वंछा चाहे । प्रभु सेव्यां सें सब काज सरे ॥ (म० के०)॥ ३ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राजरी वधाई वाजे छे (महा०)। सरणाई सिरे नोवत बाजे । घनज्युं गाजैछे ॥ (महा०) १ ॥ इंद्राणी मिलमङ्गल गावे । मोतीयन चोक पुरावेछे ॥ (महा०)॥ २ ॥ सेवग प्रभुजीसें अरज करेछै । चरणारी सेवा प्यारी लागेछे ॥ (महा०)॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग अमाणो) (१)॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मोतिनकी माला जिनगलसोहै (मोति०) मस्तक मुगुट सोहै मनमोहन । कुंम्ल लागत वाला ॥ (जि०)॥ १ ॥ भजोरी भजो तुम लोक सहिरके । नहीय भजे सो काला । माणकपर प्रभु महिर करो तो । अपणा विरुद संभाला (जि०)॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग सोरठ) (१)॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रहे तुम आज क्युं जीवन दुराय ॥ (रहे०) ॥ जीव जीवन सखीयनमें प्यारी । हारी हाहा खाय ॥ (र०)॥ १ ॥ अविरत घुंघट पट उघारी । अनुभव मुख निरखाय । एते परभी मान न मेले । मूले व्याज वढाय ॥ (रहे०)॥ २ ॥ भव परणित परिपाक इते पर । आई धाई माय । अति आग्रह सब ग्यान सारकुं । लीने कंठ लगाय ॥ (रहे०)॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हेमाय वांकमी करमगति जायना कही । चिंतत और बनत कछु औरे । होनहार सो होय रही ॥ (हेमाय वां०) ॥ १ ॥ सकल साज सजीयो व्याहनकुं । राजुलकों तब चाह भई । सुनी नेम गिरनार सिधाए । वदन विलख मुरझाय रही ॥ (हेमाय वां) ॥ २ ॥ शीता सतीयोंही पति भगता । जांनत सकल मही । । झूठो दोष दियो जब रघुपति । पावक कुंममें धीज दही ॥ (हे० वां०) ॥ ३ ॥ क्षायक समकीती श्रेणक राजा । निज सुत कोणक बंधदई । सुध बुध विसरगई नरपतकी

आपणकी अपघात लही ॥ (हे० वां०) ॥ ४ ॥ छिनमें रंक छिनकमें राजा । अकल कथा किम जांण कही । उलट पलट बाजी नटसीकी । नवल सरब में व्याप रही ॥ (हे माय वां०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ह्मांनु प्यारो लागै छे जी । थांरो उपदेस । (ह्मांनुं) ॥ ग्यांन जगावण ओगुण मेटण । संशय रहे न लेस ॥ (ह्मां०) ॥ १ ॥ मोहतिमिर दुःख दूर करनकुं । जगत बढावत हेत । चंद फते नित एही चाहे । समकित सुखको खेत ॥ (ह्मां०) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरो पीया परसंग रमत है । में कैसें मनावूंरी (मे०) । सो तन संग रेन दिन रमतां । मोहि न बुलावेरी (मे०) ॥ १० ॥ हाहा करत सपी पड्यां परतहुं । कोई पीया मिलावेरी । विरहानल अति दुसह पीया विन । कोन बुझावेरी (मे०) ॥ २ ॥ सुमता संग ले अनुभव आयो । सब परठ सुनावेरी । ग्यान सार प्यारी दोउं हिलमिल । सोरठ गावेरी (मे०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग सोरठ मलार) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वरषित वचन झरी हो (सुगुरु मेरे) (व०) श्रीश्रुत ग्यांन गगन ते उमटी । ग्यांन घटा गहरी हो (सुगुरु मेरे) (व०) ॥ १ ॥ स्याद्वाद नय विजुरी चमकित । देखन कुमति डरी । अरथ विचार गुहर धुनि गरजित । रहत न एक घरी हो ॥ (सुगुरु मे०) ॥ २ ॥ श्रवानदी चढी अति जोरे । सुव सुभावधरी । सुभर भरयो सुमना रसमागर । समकित भूमि हरीहो ॥ (सुगुरु मेरे) ॥ ३ ॥ प्रगटे पुन्य अंकूर चिहुं दिस । पाप जवास जरी । चातक मोर पपइया भविजन । बोलत भक्तिभरी हो ॥ (सुगुरु मेरे व०) ॥ ४ ॥ दया दान व्रत संयम खेती । भविक किसांन करी । हरषचंद सुर नर शिव सुखकी । सहज सुभाव फली हो ॥ (सु० व०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ या घरी में रंग वन्यो है हांरे। (या०) तत्वारथकी चरचा पाई। साधर्मीको संग (व० या०) ॥ १ ॥ श्री जिनराज दयानिधि भेटे। हरष भयो अंग अंग। ऐसी विध भव २ मांहै मिलीयो। धर्मप्रसाद अभंग (व० या०) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ राग मलार ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ चिहुं ओर वदरिया वरसे (आलीरी) । अब घरर घरर घन गरजै ॥ (चि०) ॥ नेम प्रभु गिरनार सिधाए। देखणकुं जीया तरसे ॥ (चि०) ॥ १ ॥ दादुर मोर सोर सुन श्रवणें। नयनभए घन जरसे ॥ (चि०) ॥ २ ॥ ढुंढत ढुंढ सकल वन वनमें। कबहु पीयानां दरसे ॥ (चि०) ॥ ३ ॥ सोइ सफल जाएंगे सजनी। दिवस घरी जिन फरसे ॥ (चि०) ॥ ४ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ मोरवा पपइया बोले पीउ २ घनमें। नेम पीया रहे सहसावनमें ॥ (मो०) निशि अंधीयारी कारी वीजुरी भरावे। दूजी विरह आकुल भइ तनमें ॥ (मो०) ॥ १ ॥ झिरमिर वरषत गरजत दादुर ॥ सोरकरत रहे नदीयां रनमें। (मो०) ॥ २ ॥ आणंद ए सम देखण चाहे ॥ राजुल भइ है वैरागण छिनमें ॥ (मो०) ॥ ३ ॥ इतिपदम् ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ राग विहाग ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ समझ नर जीवन थोरो। थोरो थोरो थोरो। (स०) ॥ पल २ आयु घटत छिन २ ही। गलत जात जैसें ओरो ॥ (स०) ॥ १ ॥ या तनको तोही न भरोसो। छिन मासो छिन तोरो। जो कछु करे सो अवही करले। पुन परहो जिम फोरो ॥ (स०) ॥ २ ॥ तन धन आदि सकल सामग्री गरज २ घनघोरो। रूपचंद त्रिसनाको वांध्यो। जान वूझ भयो भोरो ॥ (स० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ मत कर मान गुमान। योवन धन ठगहे। (म०) वेजूकी

भींत उसको मोती। कोई घमी कोई पलहै ॥ (यो० म०)॥१॥ नदियां गहिरी नाव पुराणी। तारण हारा जिन है। रूपचंद कहै नाथ निरंजन आखर जंगल घर है॥ (यो० म०)॥ २॥ इति पदम्॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग मारु ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ निसदिन जोउं थांरी वाटमी घर आवोनी ढोला। (नि०) मुझ सरिखा तुझ लाख हे। मेरे तूंही अमोला। (नि०)॥ १ ॥ जौंहरी मोल करे लालनका। मेरा लाल अमोला। जिसके पटंतर को नहीं। उसका क्या मोला॥ (नि०)॥२॥ कोन सुनें किसपें कहुं। किसपे मांडुं खोला। तेरे मुखदीठे टले। मेरे मनका झोला॥ (नि०)॥ ३ ॥ मीत विवेक कहे हितकरतुं। सुमता सुन बोला। आणंदघन प्रनु आवसी। सेझमी रंगरोला॥ (नि०)॥ ४॥ इति पदम्॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग जैवंती (१॥) ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज तो हमारे नाग वीर प्रनु आए है। (आ०) चंदना खमी डुवार चित्तसें करे विचार। देखत दीदार हीये हरष नराये हैं॥ (आ०)॥१॥ आज मेरी आशाफली। अली मेरे रंगरली। विकशी आतमकली। प्रनूपात्र पाऐहे॥ (आ०)॥ २॥ धनदिन आजमेरो गयो सब कर्म फेरो। सुकृत बहुतेरो। नगवान दिल नाए है॥ (आ०)॥ ३॥ सिद्धारथ राय नंद मोहत सरद चंद। कहे जिनचंद चित आनंद वधाए हे॥ (आ०)॥ ४॥ इति पदम्॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग परज ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वावरोरे आज मनवो मारो ॥ (वा०)॥ आपरंगीला वाकी सेज रंगीली। ओर रंगीलो वाको सांवरोरे॥ (आ०)॥१॥ आपन आवे वारी न लिख नेजे। मीतकरनकुं उंनावरोरे॥ २ ॥ आनंद घन पीया निजघर आवे। मिटगयो मोह संतावरोरे॥ (आ०)॥ ३॥ इति पदम्॥

॥ ❀ ॥ राग जंगलो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रूपनविहारी थांरी तो उबि न्यारी॥(रि०)॥ प्रथम तीर्थंकर प्रथम जिनेसर। प्रथम यनी मन धारी हो॥ (रि०)॥१॥ धनुष पांचसे मान

मनोहर । काया कंचन वानी हो ॥ (रि०)॥ २ ॥ नाभिराय मरुदेवीको नंदन । वापरजीया कुरवानी हो ॥ (रि०) ॥ ३ ॥ युगला धरम निवारण स्वामी । प्रभुभो पर उपगारी हो ॥ (रि०) ॥ ४ ॥ केवल पाय प्रभु मुक्ति सिधाए । आवागमन निवारी हो ॥ (रि०) ॥ ५ ॥ आनंद वन प्रभु एती वीनती । तुमपर जाउं वलिहारी हो ॥ (रि०) ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुण मन हो न हार नटेरे ॥ (सु०) ॥ चित कछु उर विचारत है नर । उरही उखनेंरे ॥ (सु०) ॥ १ ॥ ऊपर वाज पारधी नीचे । चिमियां कैसें वचेंरे ॥ (सु०) ॥ २ ॥ होनहार वस भस्योहै पारधी । शर सींचांण मरेरे । (सु०) ॥ ३ ॥ होत पदारथ भावी भइया । क्युं जगचाह धरेरे ॥ (सु०) ॥ ४ ॥ उदय करमगत देख जगत की । जिनवर क्युं न भजेरे ॥ (सु०)॥५॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सहियोरी मिलचालो प्रभु पूजन काज ॥ (स०) ॥ समवशरन विच आप विराजे । वीरनाथ महाराज ॥ (स०) ॥ १ ॥ श्रेणक भूप चेलणा राणी । भक्ति करत है आज ॥ (स०) ॥ २ ॥ निज निज द्रव्य लीये पुरके जन । उमंग उमंग सुभ साज ॥ (स०) ॥ ३ ॥ वे प्रभु दीन दयाल जगतके । हितकर धर्म जिहाज ॥ (स०) ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग केहरवो) (२) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मनवा जिणंद गुण गायरे ॥ (म०) ॥ याजिनजीके दरस सरस तें । दुखदोहग मिट जायरे ॥ (म०) ॥ १ ॥ सुगुरु वचन परतीत मांनले । आतमसुं लय लायरे ॥ (म०) ॥ २ ॥ भव २ में तो कुं सुखदाई । आनंद वंछित पायरे ॥ (म०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चालो देखोरी मधुवनको राव (चा०) वामानंदन पाशजिनेसर । शिरपररे वाके चवर ढोलाय ॥ (चा०) ॥ १ ॥ तारण तरण जिनेसर लखके । भेटे सहु भवि चित सुख पाय ॥ (चा०) ॥ २ ॥ गंगा दरश उमाहोलागो । भवफलसुं वाके मन वच काय ॥ (चा०) ॥ इति पदम् ॥

॥ ❁ ॥ (राग घाटो) (२) ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ मेरो मन वशकर लीनो । जिनवर प्रभुपाश (मे०) ॥ १ ॥ ..ीयां कमल पांखमीयां । मुख सुंदर जास । (मे०) ॥ २ ॥ काने कुंड दोय झलके । शशि सूरज सम भास (मे०) ॥ नीलवरण तन सोहे । ..ुवन परकास ॥ (मे०) ॥ ३ ॥ प्रभु तुम शरण रहीनें । समरुं सासोसा ॥ (मे०) ॥ ४ ॥ लालचंद अरज सुणीनें । पूरो वंछित आश ॥ मे०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ पुनः ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ राखुंरे हमारा घटमें । जिनराज नाम तेरा ॥ (रा०) ॥ जागे ..ाव मेरा । अग्यानका अंधेरा । भागा भया उजेरा ॥ (रा०) ॥ १ ॥ ..रति तेरी रागे । देख्यां विभाव त्यागे । अध्यातम रूप जागे ॥ (रा०) ॥२॥ ..द्रा प्रमोदकारी । रूपजेसजू तिहारी । लागत मोहि प्यारी ॥ (रा०) ॥ ३ ॥ ..लोक्यनाथ तुम ही । हम हे अनाथ गुन ही । करिये सनाथ हम ही ॥ रा०) ॥ ४ ॥ प्रभुजी तिहारी साखे । जिन हर्ष सूरि भाखे । दिलमां ..या ही राखे ॥ (रा०) ॥ ५ ॥ ❁ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ राग ठुमरी जंगलो ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ सुणो सुजाण नेमजी । हांरे में खमी पुकारुं नेम तूंही तूंही तूंही । (सु०) ॥ अरज करत हुं मे पड्यां परतहुं । इतनी अरज मेरी मांनो सुजाण (नेमजी हां०) ॥ १ ॥ बिन अवगुण क्युं तजो मेरे साहिब महिर निजर मोपे आणो सुजाण (नेमजी) ॥ २ ॥ हरख चंद नेमी राजेमर । हुं भव २ की चेरी सुजांण (नेमजी०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❁ ॥ पुनः ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ नेरे दरसको चाह लग्यो । सखी स्याम वरण वन लाजारे (ने०) । वनमें जाय प्रभु दिक्षा लीनी । हमकुं लार लगा जारे (ने०)॥१॥ जाय चडे प्रभु गिरनार ऊपर । अब केमें विसराजारे (ने०) ॥ २ ॥ चैन विजे कहे धन २ राजुल । प्रभु चरणां चित लायजारे (ने०) ॥ ३ ॥ इति

मनोहर। काया कंचन वानी हो ॥ (रि०)॥ २ ॥ नाभिराय मरुदेवीको नंदन। बापरजीया कुरवानी हो ॥ (रि०) ॥ ३ ॥ युगला धरम निवारण स्वामी। प्रभुजो पर उपगारी हो ॥ (रि०)॥ ४ ॥ केवल पाय प्रभु मुक्ति सिधाए। आवागमन निवारी हो ॥ (रि०)॥ ५ ॥ आनंद वन प्रभु एती वीनती। तुमपर जाउं बलिहारी हो ॥ (रि०)॥ ६ ॥ इति पदम् ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ पुनः ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ सुण मन हो न हार नटैरे ॥ (सु०)॥ चित कछु उर विचारत है नर। ऊही उरवनैरे ॥ (सु०)॥ १ ॥ ऊपर वाज पारधी नींचे। चिमियां कैसें वचैरे ॥ (सु०)॥ २ ॥ होनहार वस फस्योहै पारधी। शर सींचाण मरेरे। (सु०)॥ ३ ॥ होत पदारथ भावी भइया। क्युं जगचाह धरेरे ॥ (सु०) ॥ ४ ॥ उदय करमगत देख जगत की। जिनवर क्युं न भजेरे ॥ (सु०)॥५॥

॥ ❁ ॥ पुनः ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ सहियोरी मिलचालो प्रभु पूजन काज ॥ (स०)॥ समवशरन विच आप विराजे। वीरनाथ महाराज ॥ (स०) ॥ १ ॥ श्रेणक नृप चेलणा राणी। भक्ति करत हे आज ॥ (स०)॥ २ ॥ निज निज द्रव्य लीये पुरके जन। उमंग उमंग सुभ साज ॥ (स०)॥ ३ ॥ वे प्रभु दीन दयाल जगतके। हितकर धर्म जिहाज ॥ (स०)॥ इति पदम् ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ (राग केहरवो) (२)॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ मनवा जिणंद गुण गायरे ॥ (म०)॥ याजिनजीके दरस सरस तें। दुखदोहग मिट जायरे ॥ (म०)॥ १ ॥ सुगुरु वचन परतीत मांनले। आतमसुं लय लायरे ॥ (म०)॥ २ ॥ भव २ में तो कुं सुखदाई। आनंद वंछित पायरे ॥ (म०)॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ पुनः ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ चालो देखोरी मधुवनको राव (चा०) वामानंदन पार्श्वजिनें सर। शिरपररे वाके चवर ढोलाय ॥ (चा०)॥ १ ॥ तारण तरण जिनेसर जलके। भेंटे सहु भवि चित सुख पाय ॥ (चा०)॥ २ ॥ गंगा दरश उमाहोलागो। कृपचंदसुं वाके मन वच काय ॥ (चा०)॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ (राग घाटो) (२) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरो मन वशकर लीनो । जिनवर प्रनुपाश (मे०) ॥ १ ॥ अखीयां कमल पांखरूीयां । मुख सुंदर जास । (मे०) ॥ २ ॥ काने कुंमल दोय झलके । शशि सूरज सम नास (मे०) ॥ नीलवरण तन सोहै । त्रिनुवन परकास ॥ (मे०) ॥ ३ ॥ प्रनु तुम शरण रहीनें । समरुं सासोसास ॥ (मे०) ॥ ४ ॥ लालचंद अरज सुणीनें । पूरो वंछित आश ॥ (मे०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राखुंरे हमारा घटमें । जिनराज नाम तेरा ॥ (रा०) ॥ जागे प्रनाव मेरा । अग्यानका अंधेरा । नागा नया उजेरा ॥ (रा०) ॥ १ ॥ सूरति तेरी रागे । देख्यां विनाव त्यागे । अध्यात्म रूप जागे ॥ (रा०) ॥२॥ मुद्रा प्रमोदकारी । रूपनेसजू तिहारी । लागत मोहि प्यारी ॥ (रा०) ॥ ३ ॥ त्रैलोक्यनाथ तुम ही । हम है अनाथ गुन ही । करियै सनाथ हम ही ॥ (रा०) ॥ ४ ॥ प्रनुजी तिहारी साखे । जिन हर्ष सूरि नाखे । दिलमां झया ही राखे ॥ (रा०) ॥ ५ ॥ ❀ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग ठुमरी जंगलो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुणो सुजाण नेमजी । हांरे मैं खमी पुकारुं नेम तूंही तूंही तूंही । (सु०) ॥ अरज करत हुं मैं पड्यां परतहुं । इतनी अरज मेरी मांनो सुजाण (नेमजी हां०) ॥ १ ॥ विन अवगुण क्युं तजो मेरे साहिब माहिर निजर मोपे आणो सुजाण (नेमजी) ॥ २ ॥ हरख चंद नेमी राजेमर । हुं नव २ की चेरी सुजांण (नेमजी०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तेरे दरसको चाह लग्यो । सखी स्याम वरण वन लाजारे (ते०) । वनमें जाय प्रनु दिक्षा लीनी । हमकुं लार लगा जारे (ते०)॥१॥ जाय चढे प्रनु गिरनार ऊपर । अब कैसें विसराजारे (ते०) ॥ २ ॥ चेन विजे कहै धन २ राजुल । प्रनू चरणां चित्त लायजारे (ते०) ॥ ३ ॥ इति

॥ ❁ ॥ पुनः ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ थांरे मुखमारीहो वारी राज । प्यारीछवी वरणी न जाय (थां०) सीस मुगट सोहे सिरटीको । कांने थांरे कुंमल सोजाय (थां०) ॥ १ ॥ मोहन गारी सूरत सारी । देख्यां ह्मांरो मनमो लोजाय (थां०) जरुक्ति नेंन जए निरखत ही । थांसु प्रन्नु प्रीतमली लगाय (थां०) ॥ २ ॥ नव २ पाश जिणंदजीकी सेवा । ऐसी ह्मांरे दिलमेंमे चाव (थां०) । वालक है तुमही प्रन्नु मेरे । ह्मांरे प्रन्नु तुमही सहाय । (थां० (॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❁ ॥ (राग काफी कानमो) ॥ ❁ ॥

ऐसी विधतेंने पाईरे । कटु करणी कलजा (ऐ०) उत्तम नर नव जैन धरम रुचि । सुगुरु सेवा सुख दाईरे । जसु पातक कलजा (ऐ०) ॥ १ ॥ हिंसा जूआ झूट परत्रिया । परिग्रह मद फल चोरीरे । घट जायगा दरजा (ऐ०) ॥ २ ॥ तप जप संयम शीलदान कर । आनंद सुमति सुहाईरे । नव जल निधि तरजा (ऐ०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❁ ॥ ॥❁॥

॥ ❁ ॥ (राग कालंगमो) ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ मोहि अपनो कर जांणो प्रन्नुजी ॥ (मो०) ॥ में मतिहीण महा हठवादी । सो तुमसें नहीं छानो । राग द्वेष अरु मोह महामद । वाधो खोट खजानो ॥ (प्र० मो०) ॥ १ ॥ ए रिपु कर्म पड्यो मुझ केमे । किसविध छूटै पानो । कुमति कदा ग्रह मांहि कलूझ्यो । ज्युं मदपान वयानो ॥ (प्र०) ॥ २ ॥ हुं नववाशी तूं शिववाशी । जानें सकल जिहांनो । विरुद लाखीणो सांम संन्नारो । तो हिव किम चिन तांणो ॥ (प्र०) ॥ ३ ॥ न्नक्ति सदाई शिवसुख दाना । संनवनाथ कहानो । श्रीजिन सोन्नाग्य सूरिंने निजवर । दीजे सुखप्रधानो ॥ (प्र०) ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ❁ ॥ (राग न्नैरवी)(१) ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ नेम जिणंद जी सें आखमली । मोरी रैन दिवस निन लग रहीरे ॥ (मो० ने०) ॥ पहली आय उन दोस्ती कीनी । ले पीछे छिटका य दईरे ॥ (ने०) ॥ २ ॥ पशुवन पर प्रन्नु दया करीनें । शिवरमणीनें वर

लेईरे ॥।(ने०) ॥ २ ॥ केइ भविक रसना कर दोस्ती । रत्न विमल पद पाय लईरे ॥ (ने०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ पुनः ॥ ❁ ॥

॥❁॥ आज प्रभु तोरे चरण लाग । मिथ्यात नींद में खोईरे ॥ (आ०)॥ दरशण कर परसण भयोमेरे । आनंद चित अब पोईरे ॥ (आ०) ॥ १ ॥ तुम विन ओर न कोइ मेरे । देख्यो त्रिभुवन जोईरे ॥ आ०) ॥ २ ॥ दास तुमारो करत वीनती । तुम प्रभु भव भव होईरे ॥ (आ०) ॥ इति पदम् ॥

॥ ❁ ॥ पुनः ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ रात गई अब प्रात होन भयो । क्या सोवे जीया जागरे (रा०) दोय घडी तरूको अब रहीयो । कछ धरम में लागरे ॥ (रा०) ॥ ॥ १ ॥ जिनवाणी उर वीच धारले । भुर भरम सर्व त्यागरे ॥ (रा०) ॥ २ ॥ आणंद सुगुरु वचन हित मानो। ए सूधो शिव मागरे ॥ (रा०) ॥ ३ ॥

॥❁ ॥ पुनः ॥ ❁

॥ ❁ ॥ तुम विन दीनानाथ दयानिध कोन खबर ले मेरी । (तु०) भ्रम । त फिरयो संसार जगतमें । मेटो भवनी फेरी । (तु०) ॥ २ ॥ ॥ भव २ के प्रभु तुम जगनायक । राखो शरणें तेरी । उदय आसरो पकड्यो तेरो शरन ग्रहीमें तेरी ॥ (तु०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ राग विभास ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ भोरभयो अब जाग बावरे ॥ (भो०) कोउ पुन्यतें नर भव पायो । क्युं भूतो अब पाय दावरे ॥ (भो०) ॥ १ ॥ धन वनिता सुत तात भ्रातकों । मोहमगन एह विकल भावरे । को इन तेरो तूं नहीं का को । इह संजोग अनाद सुभावरे ॥ १ ॥ (भो०) ॥ २ ॥ आरज देश उत्तम गुरु संगत । पाई तें बहु पुन्य प्रभावरे । ग्यांनसार जिनमारग लाधो । क्युं डूबे भव पाय नावरे ॥ (भो०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ (राग खट) ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ जागरे मन रैन विहानी (जा०) उदयो उदयाचल रवि मंडल

पुन्यकाल क्युं सोवे ग्यानी ॥ (जा०) ॥ १ ॥ कमल खंम वन वन विकसानी । अजुवन तेरी द्रग उघरानी । चेतन धर्म अनादि तुमारो । जम्ह संग तसें सुध विसरानी । (जा०) ॥ २ ॥ तुम कुल दोय अवस्था पइये । नींद सुपन एजम्ह नीसानी । आतम रूप संभार आपणो । कब तुमारे वर कुमती वरानी ॥ (जा०) ॥ ३ ॥ सुध बुध भूली निरुपम रूपकी । तातें घट वध होत कहांनी । निश्चै ग्यान स्वरूप तुमारो । ग्यांनसार पद निज रजधांनी ॥ (जा०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग वेलावल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सांवरो सलूणो सखी मेरे मन भावनो । रूप देखाय मेरो मन ललचावनो ॥ (सां०) ॥ १ ॥ तोरणसुं रथफेर चले पीया । ना जानुं ए काहिको रुसावनो ॥ (सां०) ॥ २ ॥ नव भव नेह निभाहो नेम तुम । याहीतें कहा वदन दुरावणो । आनंद राजुल याकी प्रीत कपटकी । भयो पीया मुगत सखीको पांवनो ॥ (सां०) इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग ललित ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज ऋषभ घर आवे (देखो माई आ०) रूप मनोहर जगदानंदन । सवहीके मन भावे (दे०) ॥१॥ केई मुगताफल थाल विशाला । केईमणि माणक लावे । हयगय रथ पायक केई कन्या । लेमभु वेग वधावे ॥ (दे०) ॥ २ ॥ श्रीश्रेयांस कुमर दानेसर । इक्षुरस दान वहि रावे ॥ उत्तम दान अधिक अमृत फल । साधुकीरत गुण गावे ॥ (दे०) ॥ ३ ॥ ॥❀॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग रामकली ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अंगन कलप फल्योरी । हमारे माई (अं०) । रुद्धि वृद्धि सिद्धि सुख संपति दायक । श्रीशांतिनाथ मिल्योरी (ह०) ॥ १ ॥ केशर चंदन मृग मद घोली । मांहि वरास मिल्योरी । पूजिन श्री शांतिनाथजी की प्रतिमा । अलग उदेग टल्योरी ॥ (ह० अं०) ॥ २ ॥ शरणें राख कृपाकर साहिब -!: ज्युंपारेवो पल्योरी । समय सुंदर कहे तुह्मारी कृपासें । दुरंहिसुं मोहिल्योरी (ह० अं०) ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कहोनें मोरा आतमराम । जिन मुख जोवा जइयेरे ॥ जिनजी नो दरसण छे अति दोहिलो । ते किम सोहिलो जाणोरे । वार २ मानव भव एहवो । जुम्वो सुसकल टाणोरे ॥ (क०) ॥ १ ॥ च्यार दिवशनो चटको मटको । देखीनें मतराचोरे । विनसी जातां वार न लागे । काया वटले काचोरे ॥ (क०) ॥ २ ॥ अनन्तगुणे भरियो हे जिनवर । पूरव पुण्यें पायोरे । एहनें देखी दिलमें आनन्द । कर तूं सदा सवायोरे ॥ (क०) ॥ ३ ॥ हीरो हाथ अमोलक आयो । मूढ हिवे मति गमजोरे । महिज मलूणा पास जिणंद जीसुं । राजी हुय चित रमज्योरे ॥ (क०) ॥ ४ ॥ मन मांनीना माहरा आतम । करजे सुकृत कमाईरे । लाभ उदय जिनचंद्र लहीनें । वरतूं सिध वधाईरे । (क०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ राग केदारो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भज मन नाभि नन्दन देव (भ०) ॥ ध्यांन मुनीजन अभि ग धारे । सुर नर करत हे सेव ॥ (भ०) ॥ १ ॥ चक्री नृपति वसे सुर पति । वासुदेव बलदेव । नमत ब्रह्मा रुद्र नारद । शेष मणिधर सेव ॥ (भ०) ॥ २ ॥ अशरन शरनहे विरुद जाको । भक्तिवछल भेव । राजसिंह प्रभु रुपत शिरपर । नाथ हे नित मेव ॥ (भ०) ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ताल ठुमरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आवोनेम रह जावो सदन । हम कोंन संतावोरे (आ०) व्याहन आए सकल सजन । पसुवनको सुन देख रुदन । गिरनारी चले निज अभि वनन । तपसीर बनावोरे ॥ (आ०) ॥ १ ॥ पूनम जेमे चं द्रवदन । मनमोहन मूरत स्याम वरन । मेरे नीकी लगी भव भवकी लगन मती छेह दिखावोरे ॥ (आ०) ॥ २ ॥ संयम दूती लागी श्रवण । प्रभुकुं मिलाये नीके भ्रमन । सब फूठे परेंगे कोल वचन । रथ फेरी न जावोरे ॥ (आ०) ॥ ३ ॥ कपूर कहे प्रभुजीके चरण । गहलल मन वैराग धरन । सेहुं दोह नेम जिनजीके शरण । शिवपुर तो बतावोरे ॥ (आ०) ॥ ४ ॥

॥ ❁ ॥ (खेमटा ताल दादरा) ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अधम जगकाम भये आगीवान । हे ना निकला मुखसें क भी भगवान ॥ यार नहीं देखा समो सरणा । किया भवदधिमें उदर भर णा । दोरुजो लेते भभूसरणा । दूर दुःख होते जनम मरणा । बेठ भव वरमें लगाया नहीं ध्यान । राज शिवपुरमें हुवा अपमान । करो अब दे खके काल खगवान ॥ हे० ॥ १ ॥ नाम जो जिनके दान देते । तो आ ठुं मद तुमसें दूर रहते । यारजो जिनके चरण सेते । तो शपी सुमताकों तुमें देते । रहे तप जपमें सदा जोसूर । वरे वो भव भव अगम सुख नूर । करे कपूर करम चकचूर । देखा जिन नूर हुवे दुख दूर । करो भव पार सुनो महरवान ॥ नानि० ॥ २ ॥ इति जिनपद स्तवनम् ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ (राग पीलू) ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ आयो सही अब जाउं कहां शरणागतकों शरणागत तेरी । (आ०) तोहू समान मिल्यो नहीं कोई । ढूंढ फिरयो धरती सब हेरी । (आ०) होय दयाल महा प्रभुजी अब । आन भई तुम सें भट भेरी ॥ (आ०) ॥ १ ॥ दास कल्याण करे वीनती सुन । पारशनाथ सुपारस मेरी ॥ (आ०) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ (राग खम्बाज) ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ घडी २ पल २ छिन २ निश दिन । प्रभुको समरण करले रे । (घ०) प्रभु समरण सब पाप कटतहे । अशुभ करम सब हरले रे ॥ (घ०) ॥ १ ॥ मन वच काय लगी चरणान नित । ज्ञान हियेमें धर ले रे ॥ (घ०) दोलन राम प्रभु गुणगावे । मनवंछित फल वरले रे ॥ २ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❁ ॥ अथ शिखरगिरी स्तवन ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ तुमतो भले विराजो जी । शांवलिया महाराज शिखरपर भ ले विराजो जी ॥ नेरे वाटे चौकी लागे । श्रावक जाण न पावे । हुकम कियो श्रीपाशजिनेसर । बांह पकड लेजावे ॥ (तु०) ॥ १ ॥ ऊंचा नीचा परबत सोहे । तले भिलनका वासा । पैंड पैंड पर सिंह धडूके । जिहां लिया तुह्म वासा ॥ (तु०) ॥ २ ॥ टूंक टूंकपर धजा विराजे । जातरके

झणकारे । झालरके झणकारे सेती । वाजे अविचल वाजा ॥ (तु०) ॥ ३ ॥ दूर देशथी यात्री आवे । पूजा आण रचावे । अष्टद्रव्य पूजामें लावे । मनवंछित फलपावे ॥ (तु०) ॥ ४ ॥ सुर नर मुनिवर वंदन आवे । महा परम सुख पावे । चंदखुस्याल चरणको सेवक । हरष हरष गुण गावे ॥ (तु०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ शिखर गिरिंद जुहारो । निज पातिक दूर निवारोरे ॥ (नवियां शि०)॥ इण सम तीर्थ न कोई । में देखा सहु जग जोईरे ॥ (न० सि०) ॥१॥ वीश जिनेसर आया । इहां मुक्ति पुरी सुख पायारे ॥ (न०)॥ कोमा कोमी मुनि सीधा । जिहां अजर अमरपद लीधारे । (न०) वीश चरण जिन सोहे । नविजन चात्रक मनमोहेरे ॥ (न०)॥ २ ॥ ध्रुव मठ मंदिर गाजे । जिहां पास प्रनु महाराजरे ॥ (न०)॥ ३ ॥ पावन तीरथ एहवो । इहां संसय धरवो न केहोरे (न०) तीर्थ आसानन टालो । नविजन लहरीवन पालोरे ॥ (न०) ॥ ४ ॥ नर नव लाहो लीजे । इण तीरथ म हिमा कीजेरे ॥ (न०) मय उगणीस ने तीसे । अगहन सुदि पंचमी दीसेरे ॥ ॥ (न०) ॥ ५ ॥ दूगम गोत्र सुहावे । नवि चंद गोविंद गुण गावेरे (न०) । जात्रा करी मनरंगे । चंदशिखर नणें अति चंगेरे ॥ (न०)॥६॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ शांवरिया जैसें वर्णे तैसें तारो० ॥ (इस चालमें)॥ शांवरियामें दीठो दरस तिहारो । मेरो नव नय बाधा टारो (शां०) अश्वसेन नंदन जगवंदन । जगबंधव जगप्यारो । नीलवरण द्युति श्रीजिनवरकी वामा उदर अवतारो ॥ (शां०) ॥ १ ॥ कमठ विमारण शिव सुखकारण । तारण तरण तिहारो । अलख अगोचर अगम अरूपी । निर्यामक सत्थवारो ॥ (शां०)॥ २ ॥ शिखर गिरी मंडन जिनवरजी । अदनुत महिमा वारो । करजोमी दोउ वीनती करत हे । बुधसिंह अरजी धारो ॥ (शां०) ॥ ३ ॥

॥ ॐ ॥ पावापुरी स्तवन लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ चरम प्रनु अरज हमारी धारो । मेरो आवागमन निवारो

(च०) (आंकणी) सिद्धारथ कुल जनम लियोहै। त्रिसला उदर अवतारो।
सुरगण कोम मिली सुरगिर पर । स्नात्र महोछव सारो॥ (च०) १ ॥ व
सुविध पूज रचत जिनवरकी। सफल करत अवतारो । जय जय शब्द
करत सुर नरवर। जय २ जगदाधारो॥ (च०) २ ॥ बाल अवस्था अतु
ल बली प्रनु । सहजा अतिसय चारो । दिक्षा ले प्रनु केवलपायो। श्री
संघ आनंदकारो॥ (च०) ३ ॥ सुंदर सूरत मोहनी मूरत। नाथ निरंज
न प्यारो। सीस मुगट सोहै अति सुंदर। गल मोतियनको हारो ॥ (च०)
॥ ४ ॥ समवसरणकी अदनुत महिमा। देखत नयना ठारो। नविजन चा
त्रक अति हरषावै। स्वामी नाथ निहारो ॥ (च०) ५ ॥ चरम चोमाशी
पावापुरिमें। कीधी जग हितकारो। शोले पहर लग अखंग देसना। प
दनिरवाण पधारो॥ (च०) ६ ॥ काल अनन्त नम्यो नव वनमें। कहत
न आवै पारो। अब तो प्रनुको सरण ग्रहीमें। कबहु न ठोडुं लारो ॥
(च०) ७ ॥ दूगरू गोत्रे इन्द्र चन्द्र सुत। चंद्र गोविंद श्रमकारो। जात्रा
करी प्रनुकी उछरंगै। जनम कृतारथ म्हारो (च०) ८ ॥ सय उगणीस ते
तीस मनोहर। अगहन दशमी उजारो। सिषरचंद प्रनु शिवसुख दायक।
पूरव पुन्य तुहारो॥ (च०) ९ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग केरवो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मैं मुख देख्यो गोडी पारसको। मेरो जनम सफल नयो
आज ॥ आजरे मैं मुख देख्यो गोडी पारसको॥ मेरो० ॥ (टेक)
अन्यदेवनकूं बहुत मैं ध्यायो। तोए न सर्योजी मेरो काज ॥ आ
जरे० ॥ १ ॥ नव नव नटकत शरणे हुं आयो। अब तो रखोजी मोरी
लाज ॥ आजरे० ॥ २ ॥ कमठ हरावन नागकूं तारन। संजलाव्यो नव
कार ॥ आजरे० ॥ ३ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन। तारण तरण जहा
ज ॥ (नलां०) तारण तरण महाराज ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ किरपा करोरे गोडीपाश जिनेसर। तुम स्वामी अंतरजा
मी ॥ टेक ॥ उंचे उंचे गढपर पासजी बिराजे। चारे तरफ ज्ञानी ध्यानी
किरपा० ॥ १ ॥ नील चरण तोरो अंग बिराजे। बदनकी जाऊं बलिहा

री किर० ॥ २ ॥ बांहे बाजुबंध बहेरखा बिराजे । कुंमलकी गति हे न्यारी ॥ किर० ॥ ३ ॥ ढूंढत ढूंढत में प्रभु पायो । पूरण पदवी अब पाई ॥ किर० ॥ ४ ॥ नाथ निरंजन नाम तुमारो । रूपचंद पदवी पाई ॥ किर०॥५॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मुजरा साहेब मुजरा साहेब । साहेब मुजरा मेरारे ॥ ॥ टेक ॥ साहेब सुविधि जिनेसर स्वामी । चरण पखालुं तेरारे ॥ मुजरा० ॥ १ ॥ केशर चंदन चरचूं अंगें । फूल चढावुं सेरारे । घंट बजावुं अगर उखेवुं । करुं प्रदक्षिणा फेरारे ॥ मुजरा० ॥ २ ॥ पंच शब्द वाजित्र बजावुं । नृत्य करुं अधिकेरारे ॥ रुपचंद गुण गावत हरखत । दास निरंजन तेरारे । मुजरा० ॥ ३ ॥ ❀ ॥इति० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ घंट वाजे घननननन । इंद्रलोक हरख भयो । जनमे वर्द्ध मान कुंवर । वीतराग तननननन ॥ घंट० ॥ १ ॥ मृदंग ताल गुण विशाल । झलरी नाद झननननन । घंट० ॥ २ ॥ रूपचंद रागरंग । होत ध्यान मगननननन ॥ घं० ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ निरंजन सांइआंरे । सांइ मेरा टुकसा मुजरालेत ॥ टेक ॥ तुम हो तीरथका देवनारे । हम गिरिवरका मोर ॥ रुम झुम रुम झुम मे हुला वरसे । कांड ठम ठम नाचे मोर ॥ निरंजन० ॥ १ ॥ हम गुण का जी कोयलीरे । प्रभु गुण आंबा मोहोर । मांजरके परमादसें कांइ । करने लागी सोर ॥ निरंजन० ॥ २ ॥ तुमहो अमर देवनारे । हम केशरका छोरु ॥ कनक कचोली हाथमां । कांइ पूजा करुं रंगरोल ॥ निरंजन० ॥ ॥ ३ ॥ तुमहो मोतिनकी लरीरे । हमगुण गुंडा डोर । रूपचंदकी वेटी अरज हे । दिलजर दरिशनदोर ॥ नि० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग कल्याण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एसे महेर बिच कोनसा दीवानहे ॥ टेक ॥ पानीके कोट पवनके कांगरे । दश दरवाजे मेंमान हे ॥ एसे० ॥ १ ॥ पांच इंद्रीके

त्रेवीश तस्कर । नगरकुं करत हैरान हे ॥ ऐसे० ॥ २ ॥ प्रजा पुकार सुनी तब जाग्यो । चेतन राय सुजाण हे ॥ ऐसे० ॥ ३ ॥ ज्ञानको बाण वचन रस भेदे । हाथमें लाल कमान हे ॥ ऐसे० ॥ ४ ॥ रूपचंद कहे तेहनें वारो । दुशमन करत गुमान है ॥ ए० ॥ ५ ॥॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री आदिजिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आय रहो दिल बागमें । सुन प्यारे जिनजी ॥ (आंकणी) चुन चुन कलीयों तोरे चरणे चढावुं । गुण अनंता तोरा रागमें ॥ सुन० ॥ ॥ १ ॥ मरुदेवी नंदन आदि जिनेश्वर । खेल अनंता तोरा बागमें ॥ सुन० ॥ ॥ २ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । जाउं विकसित वन फागमें (सुन० ३)

॥ ❀ ॥ श्री नेमिजिन स्तवन लि ॥ ❀॥

॥ ❀ ॥ रहो रहोरे यादव दोय घमियां । दोय घमीयांरे अब चार घमीयां ॥ र० ॥ ए आंकणी ॥ प्रेमका प्याला बोहोत मसाला । पीवत मधुरी सेलमीयां ॥ रहो० ॥ १ ॥ हाथशुं हाथ मिलाइ दीयो सांइ । फुलमा बिछावुं सेजमीयां ॥ रहो० ॥ २ ॥ राजुल गोमी चले गिरनारे । दीपत मोहन वेलमीयां ॥ रहो० ॥ ३ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । मुक्ति वधू गुण वेलमीयां ॥ रहो० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री गौडी पार्श्वजिन स्त० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बिराजो बंगलामें । बिराजो मंदिरमें । प्रनु गोमीचा पारश नाथ ॥ बि० ॥ ए टेक ॥ चुवा चुवा चंदन और अरगजा । केशर में गरकाव ॥ बि० ॥ १ ॥ शिरसोनेंको छत्र बिराजे । मोतियमां तपेरे खिलाड ॥ बि० ॥ २ ॥ नव सागरमें आइ पड्यो हुं । बांहे पकम मुज नाथ ॥ बि० ॥ ३ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । आवागमन निवार ॥ बि० ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ श्री नेमिजिन स्तवन० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कीनें देखा हमारा स्वामी । स्वामी अंतर जामीरे ॥ कीनें० ॥ टेक ॥ आठ नवनकी प्रीति प्रकाशी । नवमें गया शिवगामीरे ॥ कीनें० ॥ १ ॥ सहसावनकी कुंज गलिनमें । मिल्या मुने अंतरजामीरे ॥ कीनें ॥ २ ॥ आप चले गिरनारकी ऊपर । नारी तारी केवल पामीरे ॥

कीनें ॥ ३ ॥ कहे नथू प्रभु नेम नगीनो । कहुं हतुं आज शिर नामीरे ॥ कीनें० ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग आशावरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अवधू सो जोगी गुरु मेरा । उस पदका करेरे निवेडा ॥ अवधू० ॥ टेक० ॥ तरुवर एक मूल विन छाया । विन फूले फल लागा । शाखा पत्र नहीं कर उनकुं । अमृत गगनें लागा ॥ अ० ॥ १ ॥ तरुवर एक पंछी दोउ बेठे । एक गुरू एक चेला ॥ चेलेनें जुग चुण चुण खाया । गुरु निरंतर खेला ॥ अ० ॥ २ ॥ गगन मंडलमें अधविच कूवा । उहां हे अमीका वासा ॥ सुगुरा होवे सो भर भर पीवे । नगुरा जावे प्यासा ॥ अ०॥ ३ ॥ गगनमंडलमें गउआं विहानी । धरती दूध जमाया । माखन था सो विरला पाया । छाछ जगत भरमाया ॥ अ० ॥ ४ ॥ थड विन पत्र पत्र विन तुंबा । विन जिभ्या गुण गाया ॥ गावन वालेका रूप न रेखा । सुगुरु सोही बताया ॥ अ० ॥ ५ ॥ आतम अनुभव विन नही जानें । अंतर ज्योति जगावे । घट अंतर परखे सोही मूरत । आनंदघन पद पावे ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अवधू ऐसो ज्ञान विचारी । वामें कोण पुरुष कोण नारी ॥ अवधू० (टेक) बम्मनके घर न्हाती धोती । जोगीके घर चेली । कलमा पढ पढ भइरे तुरकनी । आपही आप अकेली ॥ अवधू० ॥ १ ॥ सुसरो हमारो बालो भोलो । सासू बाल कुंवारी । पिउजी हमारो पोढे पालणीये । में हुं झुलावन हारी ॥ अवधू० ॥ २ ॥ नहीं हुं परणी नहि हुं कुंवारी । पुत्र जणावन हारी । काली दाढीको मे कोइ नही छोड्यो । हजु हुं बाल कुंवारी ॥ अवधू० ॥ ३ ॥ अढी द्वीपमें खाट खटूली । गगन उशीकुं तलाइ । धरतीको छेडो आभकी पिछोडी । तोए न सोड भराणी ॥ अवधू० ॥ ४ ॥ गगन मंडलमें गाय वीआणी । वसुधा दूध जमाइ । सउरे सुनो भाइ विलोणां विलोवे । कोइ एक अमृत पाइरे ॥ अवधू० ॥ ५ ॥

नहीं जाउं सासरीए नहीं जाउं पीयरीये। पीयुजीकी सेज बिछाइ ॥ आनं दघन कहे सुनो भाइ साधो। ज्योतसें ज्योत मिलाईरे ॥ अवधू० ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वेर वेर नहीं आवे। अवशर। वेर वेर नहीं आवे (ए टेक) ज्युं जाणे त्युं करले जलाई। जनम जनम सुख पावे ॥ अवशर० ॥ १ ॥ तन धन जोवन सबही जूठो। प्राण पलकमें जावे ॥ अवशर० ॥ २ ॥ तन छूटे धन कोण कामको। कायकूं कृपण कहावे ॥ अव० ॥ ३ ॥ जाके दिलमें साच वसत हे। ताकूं जूठ न लावे ॥ अव० ॥ ४ ॥ आनंदघन प्रनु चलत पंथमें। समरि समरि गुण गावे ॥ अव० ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग केरवो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ए जिनके पाये लागरे। तुनें कहीयें केतो ॥ ए जिनकेपा० ॥ (ए टेक) ॥ आठोइ जाम फिरे मद मातो। मोह निंदरीयाशुं जागरे ॥ तुने० ॥ १ ॥ प्रनुजी प्रीतम विन नहीं कोइ प्रीतम। प्रनुजीनी पूजा व णी मागरे ॥ तुनें० ॥ २ ॥ नवका फेरा वारी करो जिन चंदा। आनंदघन पाये लागरे ॥ तुनें० ॥ ३ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हांरे चित्तमें धरोरे प्यारे चित्तमें धरो। एती शीख हमारी प्यारे चित्तमें धरो। (ए आंकणी) थोमासा जीवनकाज अरे नर। कायेकूं छल परपंच करो ॥ एती० ॥ १ ॥ कूड कपट परद्रोह करो तुम। अरे नर परलवथी न मरो ॥ एती० ॥ २ ॥ चिदानंद जो ए नही मानो तो। जनम मरणके छुःखमें परो ॥ एती० ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग गोमी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अवधू निरपक्ष विरला कोई। देख्या जग सब जोई ॥ अवधू० ॥ टेक ॥ समरस नाव नला चित्त जाके। थाप उत्थाप न होई ॥ अ विनाशीके घरकी बातां। जाणेंगे नर सोई ॥ अवधू० ॥ १ ॥ राव रंकमें नेद न जाणे। कनक उपल सम लेखे ॥ नारी नागणिको नहीं परिचय। तो शिव मंदिर देखे ॥ अवधू० ॥ २ ॥ निंदा स्तुति श्रवण सुणीनें। हर्ष

शोक नवि आणें ॥ ते जगमें जोगीसर पूरा । नित चडते गुणठाणें ॥ अवधू० ॥ ३ ॥ चंद्रसमान सौम्यता जाकी । सायर जेम गंभीरा ॥ अप्रमत्त भारंड परें नित्या । सुर गिरि सम शुचि धीरा ॥ अवधू० ॥ ४ ॥ पंकज नाम धराय पंकशुं । रहत कमल जिम न्यारा ॥ चिदानंद ऐसा जिन उत्तम । सो साहिबका प्यारा ॥ अवधू० ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ राग प्रभाती ॥ ॥

॥ ॥ चालणां जरूर जाकुं ताकुं कैसा सोवणां (ए आंकणी) भया जब प्रातकाल । माता धवरावे बाल । जगजन करत सकल सुख धोवणां ॥ चा० ॥ १ ॥ सुरनिके बंध छूटे धूवर भये अपूठे ॥ ग्वाल बाल मिलके । विलोवन विलोवणां ॥ चा० ॥ २ ॥ तज परमाद जाग तूंही तेरे काज लाग ॥ चिदानंद साथ पाय । वृथा नही खोवणा ॥ चा० ॥ ३ ॥

॥ ॥ राग केरवो ॥ ॥

॥ ॥ समज परी । मोहे समज परी । जग माया अब झूठी मोहे ॥ समज० ॥ ए आंकणी ॥ काल काल तुं क्या करे मूरख । नहीं भरोसा पल एक घरी ॥ जग० ॥ १ ॥ गाफिल छिनभर नांही रहो तुम । शिरपर घुमे तेरे काल अरी ॥ जग० ॥ चिदानंद ए बात हमारी प्यारे । जाणो तुम चित मांहे खरी ॥ जग० ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ राग गजल ॥ ॥

॥ ॥ राजुल पुकारे नेम पिया । ऐसी क्या करी ॥ मुझे छोरके चले हो चूक हमसें क्यापरी ॥ राजु० ॥१॥ हुइ आशकी निराश । उदाशीनता वरी ॥ प्यारा वरा नहीं हमेरा । शीतम पीरमें परी ॥ राजु० ॥ २ ॥ हमसें रह्यो न जाये । प्रीतम तुम विना घरी ॥ संयम लीजीयें दयाल । दया धर्म आदरी ॥ राजु० ॥ ३ ॥ निशदिन तुमेरा नाम । देते ज्ञानकी जरी ॥ मुनि चंदविजय चरण कमल । चित्तमें धरी ॥ राजु० ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ राग धन्याश्री ॥ ॥

॥ ॥ कौन किसीको मित्त । जगतमें कौन किसीको मित्त ॥ ए आंकणी ॥ मात तात अरुजात सजनसें । कोइ रहत निचिंत ॥ ज० ॥ १ ॥

सबही अपने स्वारथके है । परमारथ नाहिं प्रीत ॥ स्वारथ विणसे सगो न होसी । मित्ता मनमें चिंत ॥ ज० ॥ २ ॥ उठ चलेगो आप इकेलो । तुंही सुं सुविदीत ॥ कोनाहिं तेरो तुं नहीं किसको । एह अनादी रीत ॥ ज० ॥ ३ ॥ तातें एक भगवान भजनकी । राखो मनमें नीत ॥ ग्यान सार कहे येह धन्याश्री । गायो आतम गीत ॥ ज० ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वधाई ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बाजत रंग वधाई नगरमें ॥ बा० ॥ जय जयकार भयो जिनशासन । वीर जिणंदकी दुहाइ ॥ न० ॥ बा० ॥ १ ॥ सब सखियन मिल मंगल गावे । मोतीअन चौक पुराइ ॥ न० ॥ बा० ॥ २ ॥ केशर चंदन भरीय कचोली । साहिब ज्योति सवाइ ॥ न० ॥ बा० ॥ ३ ॥ हरखचंद प्रभु दरशन देखत । आवत नेन भराइ ॥ न० ॥ बा० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग केरवो ॥ ❀

॥ ❀ ॥ भलांजी मेरो नेम चल्यो गिरनार । एकेली जानसें ॥ मेरो० ॥ राजुल कन्नी अरज करे हे । (भलांजी मेरी) अरज सुनो महाराज ॥ एकेली० ॥ १ ॥ तोरण आय चले रथ फेरी । (भलांजी उवांतो) पशुवनकी सुनी हे पोकार ॥ एकेली० ॥ २ ॥ सहसावनकी कुंजगलिनमें । (भलांजी उवांतो) पंच महाव्रत धार ॥ एकेली० ॥ ३ ॥ हरखचंद प्रभु राजुल विनवे । (भलांजी मेरो) होजो मुक्तिमें वास ॥ एके० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीसुपाश जिनराज ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आदीसर जिनराज । त्रिभुवनके महाराज ॥ आजहो आयो रे में शरणें प्रभुजी तुम तणें जी ॥ १ ॥ उल्लस्यो ग्यान अंकूर । प्रगट्यो पुण्य पडूर । आजहो जागी रे मुझ मनमें तुमनी सेवना जी ॥ २ ॥ लगन लागी भरपूर । दोष गये सब दूर । आजहो छोडुं रे नहीं तुम पद सेवा सुखकरूजी ॥ ३ ॥ नाभिराय कुल चंद । मरुदेवीके नंद । आजहो राखो रे प्रभु मुझकुं निज चरणे सदा जी ॥ ४ ॥ अमृत धर्म सुजाण । शीश क्षमा कल्याण । आज हो रागें रे प्रभु आगे भा विनती करेजी ॥ ५ ॥ इति आदिजिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग केरवो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रसना सफल भई । में तो गुन गाये महाराज ॥ रसना० ॥ (ए आंकणी) ॥ परम आनंद प्रगट भयो मेरे । जब देखे जिनराज ॥ रसना० ॥ १ ॥ अति उज्वल जश गुन जिनजीको । संच्यो सुकृत समाज ॥ नाक नमन करतां प्रभुजीकुं । सारथा आतम काज ॥ रसना० ॥ २ ॥ पदपंकज प्रभुके फरसनही । दूर गई दुःख दाज । कहत क्षमाकल्याण सुपाठक । अब मोहि अविचल राज ॥ रसना० ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग केदारो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गोमी गाइये मन रंग ॥ गो० । एक ध्यानें एक तानें ॥ कर केदारो मंग ॥ गोमी० ॥ १ ॥ जात्रा कीजे अमृत पीजे । नीर वहेरी गंग ॥ रोग शोग क्लेश नासे । आलस नावे अंग ॥ गो० ॥ २ ॥ पोढतां प्रभु नाम लीजे । आणी मन उछरंग ॥ अजय तेहने कंध मांहे । कदिय न होवे चित्त भंग ॥ गो० ॥ ३ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हां रे हुं तो मोह्यो रे लाल । जिनमुखडानें मटके ॥ टेक ॥ नयण रसाला ने वयण सुखाला । चित्तडुं लीधुं चटके ॥ प्रभुजी केरी भक्ति करंतां । करम तणी कस तटके ॥ हां रे० ॥ १ ॥ मुज मन लोभी भमरतणी परें । जिनगुण कमलें अटके । रत्न चिंतामणि मुंकी राचे । कहो कोण काच तणे कटके ॥ हां रे० ॥ २ ॥ ए जिण गुणतां क्रोधादिक मद । आग पासथी हटके ॥ केवलनाणी बहु सुखदाणी । कुमति कुगति पटके ॥ हां रे० ॥ ३ ॥ ए जिनने जे दिलमां न आणे । तेतो भूल्या भटके ॥ भाव भगतिशुं उलग करतां । वंछित सुखमें मटके ॥ हां रे० ॥ ४ ॥ सुन्दर मंडप जिनराज केरो । जोतां हइडुं हटके । नित्य लाल कहे प्रभु ए मोह्यो । गुण गाऊं हुं लटके ॥ हां रे ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग काफी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रभुजीसें लागो म्हारो नेह सखीरी । अब कैसें कर छूटेरी ॥ प्र० ॥ टेक ॥ धिग धिग जगमें वाको जीयो । आपणा प्रभुजीमें रमेरी ॥

प्र० ॥ १ ॥ जो कोइ प्रभुजीसें नेह करेगो । शिव पुरनां सुख लेहसेरी ॥ प्र०॥२॥ सेवा राम प्रभू गांठ रेशमकी । लगी प्रीति नहीं तूटेरी ॥प्र० ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ राग रामगिरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रे जीव जिन धर्म कीजीये । धर्मनाचार प्रकार ॥ दान शीयल तप भावना । जगमां एतंत सार ॥ रे जीव ॥ १ ॥ वरश दिवसनें पारणें । आदीश्वर अणगार ॥ इक्षुरस दान वहरावीयो । श्री श्रेयांस कुमार ॥ रे जीव० ॥ २ ॥ चंपा पोल उघाडीयां । चालणीयें काढ्यो नीर ॥ शतीय सुभद्रा यश थयो । शीयल मेरु गंभीर ॥ रे जीव० ॥ ३ ॥ तप करी काया शोषवी । अरस निरस आहार ॥ वीरजिणंद वखाणीयो । धन धन्नो अणगार ॥ रे जीव० ॥ ४ ॥ अनित्य भावना भावतो । धरतो निश्चल ध्यान ॥ भरत आरीसा भुवनमें । पाम्यो केवल ज्ञान ॥ रे जीव० ॥ ५ ॥ जैन धर्म सुरतरु समो । जेनी शीतल छांय ॥ समय सुंदर कहे सेवतां । मन वंछित फल पाय ॥ रेजी० ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सोइ सोइ सारी रेन गुमाइ । वेरन निद्रा तुं कहांसें आइ ॥ सोइ० ॥ ए आंकणी ॥ निद्रा कहे मेंतो बाली रे भोली । बडे बडे मुनि जनकूं नाखुंरे ढोली ॥ सो० ॥ १ ॥ निद्रा कहे में तो जमकी दासी । एक हाथमें मुक्ती उर दूसरे हाथमें फासी ॥ सो० ॥ २ ॥ समयसुंदर कहे सुनो भाइ वनीयां । आप डुबे सारी डुब गइ दुनियां ॥ सो० ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ श्री चंद्राप्रभु स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चंद्रा प्रभुजीसें ध्यानरे । मोरी लागी लगनवा ॥ चं० ॥ लागील गनवा छोभी न छूटे । जबलग घटमें प्राणरे ॥ मोरी० ॥ चं० ॥ १ ॥ दान शीयल तप भावना भावो । जैन धर्म प्रतिपालरे ॥ मो० ॥ चं० ॥ २ ॥ हाथ जोड कर अरज करत हे । वंदत शेठखुशालरे ॥ मोरी० ॥ ३ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री वीरजिन स्तवन० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ते मुक्ति पुर गये रहेरे । बारी सकल करम दल क्षय कर ते ॥ मु० ॥ ए टेक ॥ अविनाशी अविकार हे । परमानम शिवधामरे ॥ समाधान

सरवंगे रूपी। मेरे मन वसे वसे रे ॥ वारी० ॥ १ ॥ शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध हे। वहे अनादि अनंतरे ॥ वीर प्रभुके आगे गोतम। अमृत पद लहे लहे रे ॥ वारी० ३

॥ ❀ ॥ राग काफी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ खतरा दूर करनां दूर करनां। एक ध्यान प्रभूका धरनां ॥ खतरा दूर करनां ॥ दू० ॥ टेक ॥ जबलग पांचो निर्मल करनां। तब लग जिन अनुसरनां ॥ खतरा० ॥ १ ॥ क्रोध मान माया परिहरनां। सुमति गुप्ति चित्त धरनां ॥ खतरा० ॥ २ ॥ संवर भाव सदा मन धरनां। आतम दुर गति हरनां ॥ खतरा० ॥ ३ ॥ धन कण कंचन कुं क्या करनां। आखर एक दिन मरनां ॥ खतरा० ॥ ४ ॥ ज्ञान उद्योत प्रभु पाए परनां। शिव सुंदरी सुख वरनां ॥ खतरा० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पानीमें मीन पियासी रे। सुन सुन आवत हांसी रे ॥ टेक ॥ सुखसागर भव गार भरयो हे। तुं कां भयो उदासी रे ॥ पानी० ॥ १ ॥ आतमज्ञान बिन नर भटकत हे। क्या मथुरा क्या काशी रे ॥ पा० ॥ २ ॥ मान मुनि कहे ए गुरु साचो। सहजे मिले अविनाशी रे ॥ पा० ॥३॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ गरवा चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धन धन रे दीवाली म्हारे आजनी रे। मेंतो छबी निरखी जिनराजनी रे ॥ धन धनरे दीवाली म्हारे आजनी रे ॥ टेक ॥ पहेरी अंगी अलौकिक जाननी रे। मांही बुट्टी दीसे भांत भांननी रे ॥ धन० ॥ १ ॥ माणी हीरा मुकुटमां जड्या बहुरे। कानें कुंडलनी शोभा शी कहुं रे ॥ धन० ॥ २ ॥ मुने किरपा करी ते हुं कहुं कशी रे। मोर वाहाले मुख गामुं जोयुं हसी रे ॥ धन० ॥ ३ ॥ प्रभु शांति जिणंद हृदये वस्यारे। थई सुदर्शनी चढती दशारे ॥ धन० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धन धन आजनो दिन रलियामणो रे। सूरज सोनानो उग्यो सोहामणो रे ॥ धन० ॥ टेक० ॥ वाहणुं वालां प्रभुने नयणे नम्योरे। जिन राज ने माहरे मन गम्यो रे ॥ धन० ॥ १ ॥ नव ग्रह गमा थया आरे आ

जथीरे । वली दशा ते श्री जिनराजथीरे ॥ धन० ॥ २ ॥ सुख जोतां ते दुख सखे गयुं रे । वालानुं ध्यान सदा चित्तमां रह्युं रे ॥ धन० ॥ ३ ॥ आपी सेवा ते शुद्ध मनथीखरीरे । सूर शशी ऊपरें करुणा करीरे ॥ धन० ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ह्मारे आज आनंद वधामणां रे । हुं तो लेउंरें वाहलाजीना जा मणारे ॥ ह्मा० ॥ टेक ॥ मुनें दास पोतानो जाणीयोरे । आथमतां ठेकाणें आणियोरे ॥ ह्मारे० ॥ १ ॥ आप्युं दरशन जे दुर्लभ देवनेंरे । मुने कीधुं तुं रहेजे मारी सेवमेंरे ॥ ह्मारे० ॥ २ ॥ एवो दीधो भरोसो साचा गुरूरे । प्रभु विना जगत् मिथ्या सहूरे ॥ ह्मारे० ॥ ३ ॥ लहेर करीने महारा मन रम्यारे । सूर शशीने जिनराजजी गम्यारे ॥ मारे० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सवा लाख टकानी जाये एक घडी ॥ स० ॥ ए संसार जेमा सांभेलां । वडपणा आया घोडे चडी ॥ मांगी तुंगीने छत्र धरायो । केनो कंदोरो केनी कडी ॥ सवा० ॥ १ ॥ साधो भाई जिननें संभारो । जन्म दशा जेम आवी चडी । कहे लींबो भजतुं भगवंतनें । मोक्षजवानी ए वात खरी ॥ सवा० ॥ २ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ लावण्यां संग्रह ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अगडदुं अगभडुं वाजे चौघडा । सवाइडंका साहेवका । छननं छ ननं अवाज होता । महेल बनाया गगनोंका ॥ कल्याण पारशनाथ नामका । नित नित वाजे चोघडा । तीन लोकमें सच्चा साहेब । पार्श्वनाथ अवतार बडा ॥ १ ॥ वणारशी नगरीमें तेरा जनमहे । माता वामाके नंदा ॥ अश्वसेनके कुलमें शोभे । जैसा सरदपूनम चंदा ॥ स्वर्गलोकमें हुवा आनंदा । इंद्राणी मंगल गावे ॥ तेत्रीश कोड देवता मिलकर । उछव करनेंकुं आवे ॥ २ ॥ कोइ आवतां कोइ गावतां । कोइ नाम लेता देवा ॥ चोसठ इंदर अरज करंता । चंद्र सूरज करता सेवा ॥ केई सुरनर साहेवके आगे । अरज करंता खडा खडा ॥ जिनके सरूपको पारन पावे । जिनका गुण हे सबसें बडा ॥ ३ ॥ दूर देशसें आया जोगी । बडे जोर तपस्या

करता ॥ नीचे लगाता ज्वाला जोगी । बडे बडे ओकें खाना ॥ बार बरस की उमर प्रभुकी । गोटे पनमें वहोन करना ॥ बरोबरीके लोये सोबती । तपशीकं देखन चला ॥ ४ ॥ ज्ञान देखके बोले जोगीसें । ऐसी तपस्या क्युं करता ॥ तु जोगी ने रे बडे लकडेमें । बडा नाग इक अध जलता ॥ पारस नाथ जोगीशुं कहेता । तोबी जोगी नही सुनता ॥ लकडे दीये फेंक जंगलमें । लोक तमासा देखता ॥ ५ ॥ क्या कीया वे जोगी तुमने । बडा नाग कों जला दीया ॥ दिया सार नवकार नागकुं । धरणीधर पदवीपाया ॥ बडी उमेदमें आया साहेब । संवत्सरीका दान दीया ॥ मात पिताकी आज्ञा ले कर । महाराजनें योग लीया ॥ ६ ॥ राज छोडके चले जंगलमें । झुगतीसें काउसग्ग कीया ॥ बडे धीर गंभीर प्रभुने । तीन लोकमें नाम किया ॥ उष्ण कालकी बडी धूपमें । नीरंजन निरंकार खडा । कमठासुरने कीया कडाका । नभमंडल बादल चडा ॥ ७ ॥ उहि दिनको कमठासुरनें । पील ला दावा जगवाया ॥ मेघमालिकी सेना लेकर । जलकुं जलदी बुलवाया ॥ बडा कीया घनघोर जोरसें । पवन चलाया मतवाला ॥ कडड कडड कर हुआ कडाका । चमक बीजका अजुवाला ॥ ८ ॥ मूशल धारा मेघ बरसता । गगन गाजता चोताला । मात खूनकी बडी उमीमें । प्रभु खडा है मतवाला ॥ नाक बरोबर आया पानी । नाथ निरंजन धीर खडा । पराजय नहि होय जिनंदका । ऐसा प्रभुका ध्यान चडा ॥ ९ ॥ संकटसें सिंहासन डोल्यो । हुवा घंटका अवाजा । अवधि ज्ञानसें इंद्र देख्या । धाले धाले धरणी गजा । धरणीधर जलदीमें आया । पदमावतीकुं संग लीया । पदमावतीनें लीये शीशपर । शेषनागनें छत्र कीया ॥ १० ॥ कोप ज्ञाय कीये कमठनें । कुछ इलाज नही चलना । नमनें वाला सा हैद उनकुं । जलने वाला क्या करना । जीने श्री जिनराज हाथके । कमठ हाथ दो जोड खडा । धरणीधर साहेबके आगे । अरजी करना खडा खडा ॥ ११ ॥ केवल पाय शिव पुरकुं पहोंचे । पार्श्वनाथ गुन मन वाला । लगी ल्योनमें ज्योत दीपकी । तीन जगका उजुवाला । सीशनगर में पार्श्वनाथका । देवल बनाया वेताला । बडे देवलमें इंदर मोहे । घंट

वाजता चौताला ॥ १२ ॥ वणी जुगतमें सिंवासन कर । कोट वनाया देव लका । जगो जगोपर शिखर चढाया । दरवाजा शुभ केवलका । ज्ञामंडलके आगें सोजता । मूल गंजारा आरसका । पीछें पचीश देरीयां सोजित । सिरे काम सिंघासनका ॥ १३ ॥ मूलनायकके ऊपर सोहें । सहस फणा प्रजु पारशका । चौमुखकी चतुराइ बनी हे । बहु काम हे सारसका । अ ढारसे पेंसठ सवाई । मुहूर्त्त फागुणमाश जला । सुदि त्रीजकुं तखतें वेठे । जगो जगोपर नाम चला ॥ १४ ॥ देश देशके संघ बहु मिलकर । तेरे दर्शनकुं आया । जगत गुरू जिनराज जगतमें । वणी तेरी अकल माया । धर्म चंद जोणता सवाइने । वणा सामी वात्सल्य कीया । सकल संघकी आज्ञा लेकर । वडा शिखर नीशान दीया ॥ १५ ॥ करमचंदनें देवचं दने । खेम चंदने खूब कीया । पारसनाथकुं तखत वेठाके । जगो जगो पर नाम कीया । कीर्त्ति विजय गुरु राजकुं प्रणमुं । पायगुरुका राज वणा । गुलावचंद साहेवके आगें । जिनशासनका काम वणा ॥ १६ ॥ तेजा गा वत चंग रंगसें । ग्यान ध्यानसें खणा खणा ॥ हाथ जोड कर अरजी कर ता । पारसनाथजी तुंही वणा ॥ वणा काम तेरे हे साहेव । मुखसें नहि कहणें आता ॥ शिव रमणीकुं वरी हे जिनजी । जविजनकूं सुखके दाता ॥ १७ ॥

॥ ॥ अथ नेमनाथजीकी लावणी ॥ ॥

॥ ॥ नेमनाथ मोरी अरज सुनीजे । मैं हुं दाशी चरनोकी । तोरन आइ फेर मत जाउ । तुमकुं सोगन यादवकी ॥ नेम० ॥ १ ॥ जान लेइ तुम व्याहन आए । लारे सेना माधवकी ॥ छप्पन कोरू यादव मिल आये । ए अवसर नहीं फिरनेंकी ॥ नेम० ॥ २ ॥ रथ फेरी गिरिवरकुं सि धाये । हमकुं छांणी नव जवकी । मेरे सामरे श्याम सजूने । मैं इहां नहीं अब रेनेंकी ॥ नेम० ॥ ३ ॥ सुण जिनजी मैं तोकुं कउं हुं । देखुं सोजा गिरिवरकी । मात पिता बंधव सब छंडी । जाशुं संगें यादवकी ॥ नेम० ॥ ॥ ४ ॥ हाथ जोरके वीनवे राजुल । वात सुनो पियु मुऊ वरकी । हमकुं छोड चले गिरधारी । अब हे प्रीतम सरणेकी ॥ नेम० ॥ ५ ॥ नेम कहे तुम सुनो हो राजुल । विपया रस हे विष सरिखी । ये संसार असार निरंतर ।

कर करनी ए तरनेंकी ॥ नेम० ॥ ६ ॥ पियुजी पासें संयम लीनो । जिनमें कारज शरनेंकी ॥ तपस्या करीनें उत्तम कीनी । ए भव पार उतरनेंकी नेम० ॥ ७ ॥ पीयुजी पहेलां राजुल नारी । पोहती सेज परमपदकी ॥ केवल पामी नेम सिधाए । येही शोभाहै जिनकी ॥ नेम० ॥ ८ ॥ चतुर कुशल ये कही लावनी । जिनसें काया उधरनेंकी । अरिहंत ध्यान धरे दिलमांहै । फिर फेरा नहिं फिरनेंकी ॥ नेम० ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनदाशजी कृत १० धन लावण्यां ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अरे तुम जपो मंत्र नवकार । सफल करलो अपनो अवतार । ध्यान तुम मनमें धरो नर नार । खाण दुःखकी ए है संसार । करो प्रभु ख्याल अरजी जिनदाश । रखो प्रभु मुझ चरणोंके पाश ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मरकजा कुमति नार काली । तेरी संगतसें गई लाली ॥ सोवत ममताकी में टाली । आतमा तपमें नहिं घाली ॥ अनंत भव बीत गया खाली । वेदना निगोदकी जाली ॥ अमरपद जिनदाश मांगे । सदा पद प्रभुजीके लागे ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शीश नित नमुं नाभिनंदन । चरण पर चढे केशर चंदन । करत सब इंद्रादिक वंदन । कटत है कर्मोका फंदन । साध्यो तें शिवपुर को साधन । सबे जीवनकुं सुख कंदन । जिनंद गुण जिनदाश गावे । शीस चरणोंसें नमावे ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वोजन हेया मेरा हसकर । चढाउं चंदन घुवा घसकर । पैठा में धर्मोमें धसकर । पाप दल दूर गया खसकर । चेतन हुवा खमा कमर कसकर । हटाया कर्मोका लसकर । श्री जिनराज जहाज लाया । शरण जिनदाश जोया साया ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समझ मन मेरा मतवाला । तुझे नहिं कोइ हटकणवाला । वरत्या तें हरबे कुगुरु काला । दिया तें कुगतिकुं ताला । फेरतो ममता की माला । पालतो जगसंग पर आला । दयामें दे दिया ताला । देखो जिनदासका चाला ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कीया में गणधर प्रेमपती । मुझे वरदायक हे सरसती । करी निर्मल निर्ग्रंथ मती । पृठ पर खमे जागना जती । मुझे वलवंत भई सो ल सती । मिटी मेरी दुर्गतकी सब गती । ऐसा वन जिनदाश गावे । अ चल पद भक्तिसें पावे ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ (❀ ॥

॥ ❀ ॥ विकट घट दुरगतका भारी । नीर ज्यां भरती कुमति नारी । वरछी उन नेनोंकी महारी । दुख्या केइ कामी संसारी । इनोंकी हो रही खुआरी । जीत्या कोइ सत्य धरमधारी । प्रभु तुम परमारथ पाया । शरण अब जिनदाश आया ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चेत नर निगोदका वासी । कराई जगमें तें हांसी । कुमति की पमी गले फांसी । सुमतिसुं रखी हे ऊदासी । कुमतिकी वसी सेज खासी । मान रह्यो ममताकुं मासी । हियो खोल अरिहंतकों परखो । करो जिनदा श आप सरखो ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अफल नर तेरी जिंदगानी । शीख सुत्रोंकी नहिं मानी ॥ कीया नहिं गुरु निर्ग्रंथ ग्यानी । कानसें लगी कुमति रानी । जगतमें उतर गया पानी । गति तेरी दुरगतिकी ठानी । सेवक तोरा जिनदाश वाजे । सुधारोगे तुमही काजें ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सफल नर तेरी जिंदगानी । शीख सूत्रोंकी तें मानी । कि या निज गुरु निर्ग्रंथग्यानी । कानसें लगी सुमति रानी । जगतमें अधिक चढ्यो पानी । गति तेरी सुरगतिकी ठानी । सेवक तेरा जिनदाश वाजे । सुधारोगे तुमहि काजें १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चल चेतन अब उठ कर अपनें । जिन मंदिर जइये । कीसी की भूंमी ना कहीयें रे । कीसीकी भूंमी ना कहीयें ॥ चल० ॥ (ए आंक णी) । चरन जिनवरजी का भेटो । चर० ॥ भवभव संचित पाप करम स ब । तन मनका मेटो । सुकृत कीजें । महाराज । सुकृत० ॥ जिनवरका गु ण भज लीजे । समकित अमृत रस पीजे । लाल जिन भक्तिको लहीयें ॥ लाल० ॥ चल० ॥ १ ॥ करो मत मुखसें वडाई ॥ करो० ॥ नजनामम नन म

नकी सुमतिमें घर रेनां जाई । रीतमें बोलो । मेरी जान । रीत० । आतम स मतामें तोलो । मन नरम पारका खोलो । मोन कर तन मनमें रहियें रे ॥ मोन० । चल० ॥ २ ॥ जोबन दिन चार तणो संगी रे ॥ जोबन० ॥ अं त समय चेतन ऊठ चाले । काया पमी नंगी । प्रीत सब तूटी । मेरी जा न ॥ प्रीत० ॥ आऊखाकी खरची खूटी । चेतनसे काया रूटी । सुख दुःख आप किया सहियें रे । सुख० ॥ चल० ॥ ३ ॥ जगतसे रहना कदा सी रे । जग० । परख्या में जिनराज हरो । मेरी दुरगतकी फासी । तजो सब धंदा । मेरी जान । तजो० । जिनवर मुख पूनम चंदा । जिनदास तुमा रा बंदा । मेरे एक जिन दर्शन चहियें रे ॥ मेरे० ॥ चल० ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ ॐ ॥ पुनः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ तुम भजो जिनेश्वर देव । मुगति पद पाईरे ॥ मुगति० ॥ अब अचल अखंडित ज्योत । सदा सुखदाई रे (ए आंकणी) में रुल्यो चोराशी मांहे भूल्योमें भरम । भूल्यो ० ॥ म्हारे उदय अनंता दुःख । बांध्यां जब कर्म ॥ में कदियक हुवो रंक । फिरयो तजि शरम ॥ फिरयो० ॥ अरु कदियक राजा भयो । गरथको गरम । जब गरब आण कर बोल्यो । पारका मर्म । पार० । पण निर्मल जगमें जेन । कीयो नहीं धर्म । अब मनख जनममें चेत० धर्मो सुख आईरे । धर्मो० ॥ अब० ॥ १ ॥ में सुर नरका सुख वार । अनंती पाया ॥ अनं० ॥ म्हारे शिव रमनाका सुःख । हाथ नहिं आया में कुगुरु ने कुदेव । भजा कर ध्याया ॥ भजा० ॥ में भटक्यो अनादि अग्यान । विषयभोग भाया । में पड्यो लोभके फंद । जोड्यो माया ॥ जोड़० ॥ पण छुट्यो अंत जब आय । कालने लाया । अब परहर सब परमाद । धर्म कर भाईरे ॥ धर्म० अब० ॥ २ ॥ अब दुर्लभ अवसर ल ह्यो । तूं सुकृत करे । तूं सुकृ० ॥ अब दान शीयल तप भाव । हीयामें धरे । तूं परमकी माला काट । पाप परिहरे ॥ पाप० अब वार वार क हूं तोरे । जगतमें तरे । तूं निर्मल नयणे देख । नरकसूं डरे ॥ नरक० ॥ तूं शील सुगुरुकी मान । अग्यानी तरे । अब धर श्रद्धा कर जान बेन में भाईरे ॥ बेन० अब० ॥ ३ ॥ अब जिनवर सुक मन भायो सदा गुन गा

उं ॥ सदा० ॥ अब इतनी किरपा करो । नरक नहीं जाउं ॥ अब भव भव मांहीं देव । जिनेसरपाउं जि० ॥ यें मन वच काया करी । चरण चित्त लाउं । ए दया धरम हितकार । सदा में चाउं ॥ सदा० ॥ ए चौरा शीके मांहे । फेर नहीं आउं । युं अरज करे जिनदाश । कीरत ए गाईरे ॥ कीरत० अब० ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुमति कुमति लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हां रे तुं कुमति कलेसण नार । लगी क्युं केरे ॥ लगी० ॥ च ल सरक खमी रहे दूर । तुजे कुण छेमे (ए आंकणी) हां रे तुं सुमतिको भरमायो । मुजे क्युं छोमी ॥ मुजे० ॥ मेरी सदा शाश्वती प्रीत । जिनकमें तोमी ॥ तुज विन सुनी मेरी सेज । कहुं करजोमी ॥ कहुं० ॥ उठ चलो हमारे संग । सुखें रहो पहोमी । युं झूर झूर कुमति आंसु । आंखसें रेमे । आंख० ॥ चल० ॥ १ ॥ हां रे तेरी नरक निगोदकी सेज । सेती में रू ठ्यो सेति० ॥ पकड्यो साचो जिनराज । संग तेरो छुट्यो । तेरी मूरख मानें वात । हैयाको फूट्यो ॥ हैया० ॥ में सहेज हुवो हुं दूर तार तेरो तूट्यो । तुं कर दूरसें वात । आव मत नेमे ॥ आ० ॥ चल० ॥ २ ॥ मेरी अनंतकालकी प्रीत । पलक नहींपाली ॥ पलक० ॥ सुमतिके लागो संग मुजे क्यों टाली । तुं सुमतिको शिरदार । सुनावे गाली ॥ सु० ॥ तेरी ह म दोनुं हे नार । गोरी उर काली । तुं हमकूं ठेले दूर । सुमतिकुं तेमे ॥ सुम० ॥ चल० ॥ ३ ॥ अब कुमतिको ललचायो । रती नहीं भगियो । रती० ॥ सुन कर सूत्रकी शीख । साच होय लगियो । चेतन कुमतिके सेज । दूरसूं भगियो ॥ दूर० ॥ जिनराज वचनको ग्यान । हेयेमें जगीयो । जिन दाश कुमति तुं वात । खोटी मत खेमे ॥ खो० ॥ चल० ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुम तजो जगतका ख्याल । इसका गानां ॥ इस० ॥ तेरी अ ल्प उमर छुट जाय । नरक उठ जानां । तें दिना चार जुग बीच । लिया हे वासा ॥ लिया० ॥ तेरे शिरपर बेठा काल । करेहे हासा । में बोलुं सा ची वात । झूठ नहीं मासा ॥ झू० ॥ तूं सूता हे कुण निंद । किसी कर

आसा ॥ अब सेव देव जिनराज । खलकमें खासा ॥ खल० ॥ तेरा जो वन पतंगका रंग । छुट सब आसा ॥ अब हीये धरो मेरी सीख । समजरे दिवाना ॥ सम० ॥ तु० ॥ १ ॥ अब बुरी जर्ज़ा मत यान । मोन कर रीजें मोन० ॥ प सुख मीठा संसार । भेद नही दीजें ॥ कर वीतराग विशवास । हिये धर लीजें ॥ हिये० ॥ पण नीच नारका संग । मांहे मत भीजें । अब भान विसनको संग । प्रीत मत कीजे ॥ प्रीत० ॥ तोहे दुरगति दे पहों चाय । तेरो तन छीजे ॥ तुं सुख दुखका सिरदार । रंक नही राना ॥ रंक० तुम० ॥ २ ॥ तुं विसर गया जुग बीच । नाम जिनवरका ॥ नाम० ॥ पच रह्या कुटुंबके काज । किया फंद घरका । तें दया धरम विन खोया जनम सब नरका ॥ जनम० ॥ तें पहले बांध्या पाप । कमाई मरखा ॥ अब लि या नही तें जान । बखत पर करका ॥ बखत० ॥ तेरीबीति सान सब जाय । जनम ज्युं खरका ॥ अब सुणो सीख सतगुरुकी । सुलटरे शानां ॥ सुल० ॥ तुम० ॥ ३ ॥ तेरी चरण सेज पर पोल्या । आनंद दिल आया ॥ आनं० ॥ मेरी लगी तृख सब प्यास । सुधारस पाया । मेरे सिरपर तुम सिरदार । जिनेसर गाया ॥ जिने० ॥ में चाउं चरनकी सेव । सफल कर काया । अब यो दोलत दरशनकी । मेरे पहि माया ॥ मेरे० ॥ युं अरज करे जिनदास अल्प गुण गाया । अब बुरा कुगुरु उपदेश । सुणो मत भाया ॥ धरे० ॥ तुम० ॥ ७ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ श्रीनेमिनाथ लावणी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ दे गया दगा सिरदार । सुनो मेरा भाई । सु० । लग रही नेम दरशनकी । सब्र असनाई (प आंकणी) । अब अजब अनोखो नेम । मेरे सिर छाजे ॥ मेर० ॥ जादवकी देखी जान । जगत सब लाजे । गनो नेम नवल मुकटांद । अनोखी छाजे । अनो० । सुर नर सब गावे गीत । गगन में गाजे । सब देश देशके नृप दुर्नीयो । देखन आई । दे० । दु० दे० ॥ १ ॥ सब चढना नेन तोरनकुं आनंद दिल धर कर । आनं० । सज आये तुरंगो माल । कौतोंना कर कर । में पायो परमानंद हरख हियो नर कर । हर० ॥ मैं भयो पति नेमनाथ । मेरो चित हर कर ॥ सखि सुन मंगल धर्मो

गनमें । आज चल आई ॥ आ० ल० ॥ दे० ॥ २ ॥ अब इण अवसरमें सुरत । श्यामकी लागी ॥ श्या० ॥ पशुअनकी सुनी पोकार । दया दिल जागी । जिन लही परवतकी वाट । तृष्णाकुं त्यागी ॥ तृष्णा० ॥ शिवरमणीके शिरविंद । वन्यो वैरागी । अब महेल चढी राजलकुं । खमी उट काई ॥ खमी० ॥ ल० दे० ॥ ३ ॥ अब रेतीके सरवरमें । टिके नही पानी ॥ टिके० जिन गुण गाया नहीं जाय । अलप जिंदगानी । अब कठण जीव उरगतिको । वन्यो मै दानी ॥ व० ॥ जिनदाश करो नव पार । दया दिल आनी । अब शरण सतीके वेठ । लावनी गाई । ला० ल० ॥ दे० ॥ ४ ॥

॥ ❁ ॥ श्री मगशी पार्श्वनाथकी लावणी ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ मुलक विच मगशी पारशका । वाज रह्या मंका । मुगतिगढ जीत लीया वंकारे । मुग० मुलक० (ए आंकणी) करम दल वलकूं क्षय कीया रे कर० । मुगति महेलमें केलि करे । अनुनव अमृत पीया । शाशता जीया । महाराज । शा० । कल्याणक कारज कीया । अमरा पुर पदवी लीया । कमठ जशका कर गये फंका रे क० । मुल० ॥ १ ॥ प्रनु पारश नजले नाईरे । प्रनु० । नाव नरमका मेट जोत । तेरी जगमें सवाई । टेककूं टालो । महाराज ॥ टेक० ॥ चंचल चित्तसें मत वालो । गुमान गरवकुं गालो । गरवसें धूल मली लंका रे ॥ गर० ॥ मुलक० ॥ ॥ २ ॥ मेरे शुन नाग्य उदय आया रे ॥ मेरे० ॥ इण पंचम आरामां हे प्रनु । मगशी पारश पाया । पापसें मरता । महाराज ॥ पाप० ॥ नवि जीव ध्यान दिल धरता । श्रावक नित समरण करता । मरण उःख मिट्यां मेरे अंगका रे ॥ मरण० ॥ मुलक० ॥ ३ ॥ महीमा मगशीकी अब जानी रे महि० ॥ लही नवम मेरी आंख विलोया । परख विना पानी । में जिनवर जाच्या । महाराज ॥ में जिन० ॥ जिनदास जिनंदसें राच्या । मगशी पारश हे साचा । करो मत मनमें कोइ शंका रे ॥ करो० मुलक० ॥ ४ ॥

॥ ❁ ॥ केशरीयानाथ लावणी ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ सुणजो वातां राव सदा शिव । मत चढ जानां धूलेवा ॥ गढपति उनका वगा अटंका । मत ठेमो तुम उन देवा । (ए आंकणी)

सकलावत चंमावत बोले । हमहीं नोकर उनहींका । हींदुपति वाके हाथ जोरे । तीन भुवन शिर है टीका ॥ सु० ॥ १ ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल सवेही । सुर नर वांके ध्यावत है । इंद्र चंद्र मुनि दर्शन आवे । मन की मोजां पावत है ॥ सु० ॥ २ ॥ गया राज उनहींसें आवे । निर्धनिया कुं धन देवे । बांझ खिलावे सुंदर लडका । सदा सुखी जेमनु सेवे ॥ सु० ॥ ३ ॥ तारे जिहाज समुद्रमें जडने । रोग निवारे सब तनका । नृप भुजंगम हरि करी नदीयां । चोरन बंधन अरि दलका ॥ सु० ॥ ४ ॥ धों धों धों धों धोंसा बाजे । दशो दिशामें है डंका । लाख तोनीया नहीं जलाइ । मन ललचावो गढ बंका ॥ सु० ॥ ५ ॥ रानाजीके कुमरावकी । मानत नांहीं ये बातां । थांरा किया थईजा पावो । में नहीं आवुं थां सातां ॥ सु० ॥ ६ ॥ मुंछ मरोडे चडे अभिमानें । जहर लग्या है निजरुंमे । रुपलदेव है साहिब सचा । देख तमासा फजरुंमें ॥ सु० ॥ ७ ॥ मयाराम सुन जणे मूलचंद । बडे मितांबर तुम देवा । फोज बिखरगइ घर घर थोडा । लखारोको तुम देवा सु० ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ वैराग्य लावणी लिख्यते ॥ ॥

॥ ॥ जब तन दोस्ती है इह मस्ती । काया मंगलकी । सासो स्वास गमग्ले साहिब । आउ घटे दिलकी ॥ १ ॥ (खबर नहीं है जुगमें पलकी । सुकृत करणा हो सोकरले । कुण जाणें कलकी) (ख०) तारा मंगल रवि चंद्रमा । सबही चलाचलकी । दिवस च्यारका चमत्कार है । बीजलियां जलकी ॥ (ख०) ॥ २ ॥ यां जग है सुपनें की माया । जुम बंद जलकी । बिनस जावतां बेर लागे । दुनियां जाय खलकी ॥ (ख०) ॥ ३ ॥ हंसाया देहीमें जब लग । खुशीहै महलकी । हंसा उठ चल्या जब देही । मिटीया जंगलकी ॥ (ख०) ॥ ४ ॥ मन मायन तन चंचल हस्ती । मस्ती है बलकी । सदगुरु अंकुश दीया आनके । पातां नइ सलकी ॥ (ख०) ॥ ५ ॥ मात पिता सुत बंधव नाहीं । सब जन मूलथलकी । काया माया मदे कारमी । हनें कब की ॥ (ख०) ॥ ६ ॥ कूड कपट कर माया जोडी । कर पापां हलकी । पोटली पाप सब शिर लेके । केसें होय हलकी

(ख०) ॥ ७ ॥ देवधरम साहिबको समरण । ए वातां थलकी । राग द्वेष ऊपजे नही जिनकुं । वीनती अखेमलकी ॥ (ख०) ॥ ८ ॥ इति ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ पुनः ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अरज हमारी सुणो दीनपति । कौन भांति तिरणां । हम दुखी फिरत संसार चतुर गति । सो तुमसें तिरना ॥ (अ०) ॥ १ ॥ घोर घोर नरक के भीतर । नाना दुख भरना । मारन ताडन छेदन भेदन । और देह धरनां ॥ (अ०) ॥ २ ॥ कबहुक तिर्यंच योनि पायके । गले पास परना । क्षुधा तृषा अरु शीत उष्णाता । मार मारकरना ॥ (अ०) ॥ ३ ॥ देव विभूति पायके सुंदर । देख देख झुरना । जब माला सुर झावण लागी । सोच किये मरना ॥ (अ०) ॥ ४ ॥ मनुष जनम पायके भटक्यो । कहुं नांही थिरनां । साहिब तुम सरणागत राखो । जनम मरण हरनां ॥ (अ०) ॥ ५ ॥ इति लावणी सं० ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ मुक्ति जाणेंकी झिगरी ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ (दूहा) तीर्थंकर महावीरनें । कौशल गणधर साज । कानन प्ररूप्या है दया । सब जीवन हित काज ॥ १ ॥ दान शील तप भावना । अशल खुलासा सार । जिणपुरषां धारण किया । पोहचा सुगति मझार ॥ २ ॥ चवदे सहस साधु हुवा । आर्यां छत्तीस हजार । लाखां श्रावक श्रावका । पाया भव जल पार ॥ ३ ॥ (चाल हीर रंझेका ख्यालकी) ॥ ❁ ॥ मेरी अदालत प्रभुजी कीजिये । जिन सासन नायक मुगती जाणेंकी झिगरी दीजिये (जि० टेर) खुद चेतन मुदई बना है । आठुं करम मुदाला । दाबा गरता मुगति मारगका । धोखा देजाय टालाजी (जि०) ॥ १ ॥ तप कागद इष्टांम लिया । तलवाणां खिमा विचारी । सिझाय ध्यान मजमुंन बनाकर । अरजी आन गुजारी जी (जि०) ॥ २ ॥ मैं जाना था सुगति मारगमें । करमूंनें आघेरा । धोखा देकर राह भुलाया । लुंट लिया सब मेराजी (जि०) ॥ ३ ॥ बोहत खराब किया करमुंनें । चौरासीके मांही । दुक्ख अनंता पाया मैंनें । अंत पार कछु नांही जी (जि०) ॥ ४ ॥ सब मिल पर्कोल कानूनी । पंच महाव्रत धारी । रत्न देख मसोदा कीना । तबमें अरजी मा

री जी (जि०) ॥ ५ ॥ पांचे सुमती तीन गुप्तीए । आठुं गवा बुलावो । शीघ्र अगेसर वमा चौथरी । उसकुं पुन्न मंगावोजी (जि०) ॥ ६ ॥ अरजी गुजरी चेतन तेरी । हुवा सफीना जारी । हाजर आवो छ्वाब लिखावो । लावो साबूती सारीजी (जि०) ॥ ७ ॥ आठुं सुदाले हाजर आए । मोह सुगन्यार बुलाये । च्यार कषायक आठ मदकुं । साथ गवाई में लाए जी (जि०) ॥ ८ ॥ (टेर सुदालेकी) ॥ जिनसासन नायक । झूठा दावा है चेतनजीवका । (जि०) हमनें नहीं खाया उसकुं । ए हमरे घर आया । करजा लेकर हमसें खाया । ऐसा फरेब मचायाजी (जि०) ॥ ९ ॥ विषयभोग में रमिया चेतन । वाटा नफा न जाना । करजदार जब लारें लागा । तब लागा पिस्तानाजी (जि० श्रु०) ॥ १० ॥ हाजर खरे गवाह हमारे । पूछिये हालसु सारा । विनां लियां करजा चेतनगें । कैसें करें किनारजी (जि० श्रु०) ॥ ११ ॥ (टेर) ॥ चेतन कहे सतावो मांही । सुन शासन सिरदार । इमानदार है गवा हमारे । जांणें सब संसार जी । (जि० मे०) ॥ १२ ॥ में चेतन अनाथ सतूजी । करम फरेबी भारी । जीव अनंते गह चतनकुं । ढूंढ चौगतीमें मार जी (जि०)॥ १३ ॥ वरे ? पंडित उगमुंडे । ऐसा दम बतलाया । धरम कहा हुं पाप कराया । ऐसा करज चढायाजी (जि० मे०) हिंसा मांहीं धरम बताया । तपस्या भेली सिखाया । इंद्रिय सुखमें मगन करीनें । झूठा जाल फैलाया जी (जि० मे०) ॥ १५ ॥ ऐसा करो इनसाफ सतूजी । अपील होन न पावे । हक सौ चेतनकी होवे । जनम मरण मिट जावेजी (जि०) । ग्यांन दर्शन रो सुननासें । दोनुंकुं समझाया । चेतनकी सिरगें करदीनां । करमुंका करज गमाया जी (जि०) ॥ १७ ॥ अनन्त करज जीथा करमोंका । चेतनसेंती छिलाया । सुध संजम जब करी जमानत । प्राणिका दुख मिटाया जी (जि०) ॥ १८ ॥ आश्रव रोक संवरको धारी । तपस्यामें चितलायो । जबदी करज अदा कर चेतन । गौया मुगतिकों आवो जी (जि० मे०) ॥ १९ ॥ सुध संजम जवकी जमानत । चेतन डिगरी पाई । फागुणसुद दसमी दिन मंगल । मन मुगतीमें अठाई जी (जि० मे०) ॥ २० ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ अनुभव पद फिगरी लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ साहब अदालतपर बैठ । श्रीपारश प्रवीण श्रैन उत्तम चला ए हे । शील हे सिरदार श्रोर दान हे दरोगा जाके दयारूपी वारण सत्त श्रावगण पर आए हे । ग्यान हे चपरासी ताको लग्यो हैं मोहोसल ताकी मालजामनीमें श्री जिनवरजी लिखाये हे । रोसकी रसुम और कमीसन लगे कर्मनकुं मोहकों म्याद इस तार लटकाए हे ॥ १ ॥ बेठके लिखेगा जब जीवकी जुबानबंदी तबके कुछ स्वाल जवाव सत्तगुरनें बताए हे । छोरू कारसाजी पायो पकड्यो अरिहंतजीको अनुभवपद पायवेकी फिगरी कराय लाए हे । अब तो दरकास मैनें करी हे तुमारे पास साहब जिनराज अरज मेरी सुणलीजीये ॥ अष्टकर्म आठुं जाम करत हे कारसाजी साहब बुलाय इसकुं पिसे मान कीजीयै ॥ २ ॥ में तो हुं गरीब मेरी करेगा उकीली कोन । पारश प्रवीण मेरी मिसल आज कीजीये । हारुं तो हाजर हजूर हीमें रह्यां करुं । जीतूं तो लगाय जुगल चरनमें लीजीये । अबतो फरीयाद नाथ करी हे तुमारेपास मेरी दाद दीजिये तो रावरी बडाई हे । मुनसबकी बात श्रोर मामलत अदालतकी अबतोंमें अफिलमान अरजी लगाई हे । झूठ मूठ कारसाजी करत हे पांच तीन साचो मत जैन जाकी श्रैन अधिकाई हे । मेरे ही पांच लोक मोहीकों झूठावत हे ॥ जातेंमें ग्वाही श्री जिनराजकी लिखाई हे । छोरू कारसाजी पायो पकड्यो अरिहंत जीको अनुभव पद पायवेकी फिगरी कराय लाए हे ॥ ❀ ॥

इति अनुभवपद पाणेंकी फिगरी संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उपदेशरूप लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुकृतकी बात तेरे हाथ । रतीनां रहीरे ॥ रतीनां० ॥ पुदगलमें मान्यो सुख । कलपना कहीरे ॥ सुकृत० ॥ जुग मांहे जैन निज सार । संघातें आवे ॥ संघा० ॥ इसकुं तज कर क्युं बेठो । विषय गुण गावे । अमृतकुं अलगो ढोल । विसन विषखावे ॥ विसन० ॥ सुगतिको मारग मेट । उवटमें जावे । थारी तुछ जिंदगानी मांहे । विकल बुधि भईरे ॥ विकल० ॥ पुदगल० ॥ १ ॥ थारे धन दोलत भंडार भर्या हे

मोती ॥ जव्या० ॥ शत्रु सज्जन सब बने । जगत होय गोती । कोई म
मले तेल फुलेल । धोवे कोइ धोती ॥ धोवे० ॥ सन्मुख उठ आवे अब
ला । तेरो मुख जोती । ऐसी संपत एक छिनमांहे । सब छूय जईरे ॥
सब० ॥ पुद्गल० ॥ २ ॥ तें खटरस खाया खूब खजाना खोया ॥ ख० ॥
निशिदिन सुखभर सुंदरीकी । सेजमें सोया । सजिया सोल सणगार । नारि
में मोह्या ॥ नार० ॥ तें अंतर घटका मेल । कदी नहीं धोया । या नरक
निगोदकी वाट । पकर कर लहीरे ॥ पकर० ॥ पुद्ग० ॥ ३ ॥ मन मा
तो आठ मदमांहे । गरवमें बोले ॥ गर० ॥ में सुख संपतको नाथ । मेरी
कुण तोले । दुर्बल करता पोकार । पलक नहीं खोले ॥ पल० ॥ आकर
होय खडा हजूर । चमर शिर ढोले । अब अवसर आयो हाथ । चेत तुं
सहीरे ॥ चेत० ॥ पुद्गल० ॥ ४ ॥ कायामें कीयो लाड । बनाई चंगी ॥
बना० ॥ पल पल पर पाल्यो पुन्य । तणो तिहां संगी । पकर्या पर भव
की वाट होय कुण संगी ॥ होय० ॥ तेरो हंस गयो आकाश । काया
पडी नंगी । जिनदास कहे कर्मोसुं । जोर तेरो नहीरे ॥ जोर० ॥ पुद्
गल में मान्यो० ॥ ५ ॥ ॥ १० ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥

॥ * ॥ पुनः ॥ * ॥

॥ * ॥ तुम तजकर राजुलनार तज्या सब वरे ॥ तज्या० ॥ में नमुं
नेमके पाय । गया गिरिवरे । में प्रीत पीयाकी कर कर पल्ले लागी ॥ पल्ले० ॥
तुम त्याग चले वन रंग । हुवे वैरागी । अब राजुल सरखी सती । भावसें
त्यागी ॥ भाव० ॥ थारे अंतर घटमें ज्योत । ग्यानकी जागी । थुं रानी राजुल
नार नयण नर जरे ॥ नय० ॥ में नमुं ॥ १ ॥ में अरज करुं कर जोड ।
चरी मन पल्लव ॥ करो० ॥ मेरे शिरपर तुम शिरदार । दूजो मोहे दरशा
न । अबतुम सांवरियानका देख जल्यो मन नरतन ॥ जल्यो० ॥ मेरे ॥ आयो
नयणोंमें नीर । जल्यो निरख नमन । मेरे नेम मिलनकी आश । मिलुं
किम करुं ॥ मिलुं० ॥ में० ॥ २ ॥ में नाहि कीनो तकरार । चले क्युं
रुठे ॥ चलै० ॥ मेरे घरमें कुटुंब परिवार । चार दिश रूठे । में तो रहुं
वनमें मांहे । जोबन सब लूटे ॥ जो० ॥ में चलूं पियाके साथ । प्रीत

क्युं तूटे। मेरे नेम विना नहिं और । जगतमें वररे ॥ जग० ॥ मे० ॥ ३ ॥ तुम तारी राजुल नार । मुगतिमें मेली ॥ मुग० ॥ पीछे नेम गये निरवाण करम सब ठेली । मे नित ऊगे परभात । नमुं पद पहली ॥ न० ॥ मेरे नेम विना नहि और । जगतमें बेली । युं अरज करे जिनदाश । सुणो जिनवररे ॥ सुणो० ॥ मे० ॥ ४ ॥ २१ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आप समझका वर नहीं पाया । दूजेकुं क्या समझावे ॥ बंका फिरे जिनदाश जगतमें । हीयो हाथमें नहीं आवे (ए आंकणी) दरस सवाद चाहनकी चित्तमें । चानक अधिकी आय लगे । इंद्रीका पर वसमे पडियो । ग्यानकला कहो केसें जगे । तृष्णानें जग लूंट लीयो हे । कपट करी परधनकुं ठगे । खाय खाय जोही मांस वधारयो । प्राणी किस विध चले पगे । विषय विपतकी करे चूंथणी । चरचासुं चित्त नहीं लावे ॥ बं० आ० ॥ १ ॥ अपने अवगुनकुं नहीं देखे । दूजाका अवगुण भाखे । हिंसाही में हूओ हजूरी । दया दूर दिलसें नाखे ॥ गुणवंतका गुण लोप मेरो मन । अवगुणके रसकुं चाखे ॥ तिनुही प्रणमे रागधरा में । मरणे जिनवर किम राखे ॥ ठग फांसीगर चोर अन्याई । धन मीसें इनकुं ध्यावे ॥ बं० आ० ॥२॥ अवगुणकी मेरी खान आतमा । अजान होयसो मोहेपूजे । नहीं गाममें रुख अंबको । एरंड अंब सरिखो सूजे । पारख नहीं हे हीये ग्यानकी । गुण अवगुनकुं कुण बूझे । गाभर देख कहे मुज वरसें । कामधेनु इतनी दूजे ॥ ऐसी मेरी अविनीत आतमा । अवगुन किम गाया जावे ॥ बं० आ० ॥ ३ ॥ क्रोध मान मायामें मातो । लोभ मांहे लपट्यो रहतो । गरथ गुमानी गमको गरजी । पीरू पारकी नहीं सेतो । लगानि नहीं गुरु देव धरमकी । कठण वचन मुखसें केतो । अंतर आंख न खुले हीयाकी । पूठ परम पदकुं देतो ॥ स्वांग सजी जिनदाश जैनको । माल मुलकको ठग खावे ॥ बंको० ॥ आप० ॥ ४ ॥ २१ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुगुरुकी लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमुं नमुं में गुरु निर्ग्रंथकुं । वेजिन मुद्राधारी हे । भुजल

कुपर प्रेम न करना । मनकी ममता मारी हे ॥ न० ॥ १ ॥ गरव गालकर गुपति गोपवे । गन निग्रंथकी न्यारी हे । कनक कामिनीके नहिं जोगी । वेपूरा ब्रह्मचारीहे ॥ न० ॥ २ ॥ छकायाके जीव अनाथी । उनके वे हित कारी हे । करम काटकर केवल पावे । ज्ञान गरथ गुण भारी हे ॥ न० ॥ ३ ॥ शुद्ध श्रद्धामें सुमति सेवी । निज आतमकुं तारी हे । जिनवरकुं जिनदाश वीनवे । उनके चरण बलिहारी हे ॥ न० ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कुगुरुकी लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तहुं तहुं में उन कुगुरुकुं । कनक कामिनी धारी हे । ज्ञान ध्यानकी बात न जानें । अष्ट करमसें भारी हे ॥ त० ॥ १ ॥ करी कपा लें वस्त्र लपेटी । शिरपर जटा वधारी हे । कान फाडकर मुद्रा पहेरना उनके घरमें नारी हे ॥ त० ॥ २ ॥ जोग लेई कर जीव विणासे । वे मद्य मांश आहारी हे । कुना पंथी जगतकुं करता । मुखसें कहे आचारी हे ॥ त० ॥ ३ ॥ कहुं औगुण कुगुरुका कव लग । साध नहीं संसारी हे । आप डुबे औरनकुं डुबावे । दुर्गतिका अधिकारी हे ॥ न० ॥ ४ ॥ समकित श्रद्धा जैन धर्मकी । नहिं कुगुरुकों प्यारी हे । जिनवरकुं जिनदाश वीनवे । कुगुरु संग लुवारी हे ॥ न० ॥ ५ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री नवपद लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जगतमें नव पद जयकारी । पुजतां रोग टले भारी (ए आंकणी) प्रथम पद तीर्थ पती राजे । दोष अष्टादशकुं त्याजे । आठ प्रातीहारज छाजे । जगत प्रभु गुण बारे साजे ॥ दोहा ॥ अष्ट करम दल जीतके । सकल सिध ते थाय । सिद्ध अनंत नमो बीजे पद । एक समय शिव जाय । प्रगट कीयो निज स्वरूप भारी ॥ जगत० ॥ १ ॥ तीजे पदमें गौतम केशी । उगा चंद्र सूरज जैसी । उगायों राजा परदेशी । एक नवमांहे शिव लेशी ॥ दोहा ॥ चोथे पद पाठक नमुं । श्रुत धारी उवझाय । सब साधू पंचम पदे । धन धन्नो मुनिराय । धनाय्यो वीर प्रभु भारी ॥ जगत० ॥ २ ॥ ॥ द्रव्य छटकी श्रद्धा व्यासे । सम संवेगादिक पासे । विना ए ज्ञान नहिं किरिया । जैन दरशनसें सब तरिया ॥ दोहा ॥

ज्ञान पदारथ सातमें । पदमें आतमराम । रमतां रम्य अध्यातमें । निज पद साधे काम । देखता वस्तु जगत सारी ॥ जगत० ॥ ४ ॥ जोगकी महिमा वहु जाणी । चक्रधर भोगी सब राणी । यती दश धरम करी सोहे । मुनि श्रावक सब मन मोहे ॥ दोहा ॥ करम निकाचित कापवा । तपकुठार करध्याय । क्षमायुत नवसुं पद धरे । कर्म मूल कट जाय । भजो तुम नवपद सुखकारी ॥ पू० ज० ॥ ४ ॥ श्री सिद्धचक्र भजो भाई । अचामल तप विधिसें थाई । पाप त्रिहुं जोगें परिहरजो । भाव श्रीपाल परें करजो ॥ दोहा ॥ संवत उगणीस सत्तरा समें । जेपुर श्री जिन पाश । चईत्र धवल पूनम दिनें। सकल फली मुझ आश । वाल कहे नव पद भवी प्यारी ॥ जगत० ॥५॥६१॥

॥ ❁ ॥ श्री केशरीयानाथ लावणी ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ (दूहा) आदिकरन आदिम जगत । आदि जिणंद जिनराज ॥
धूलेवनाथ जाचो धणी । वरनुं श्री महाराज ॥ १ ॥

॥ ❁ ॥ कास्यप गोत्र ईक्षाग वंशमें । मरुदेवा जननी जायो । नाभि नरेसर वंश उजालन । आदि धर्म जश प्रगटायो ॥ १ ॥ चोसठ सुरपति देव देवी मिल । मंदिर गिरपे न्हवरायो । इसो रुपज निधि प्रगट कल्प तरू । सुरनर मुनिजन नित्य ध्यायो ॥ २ ॥ खमग देशमें नगर धूलेवें । जास दमामा घुरता हें । जाकी महिमा अपरंपारा । कविजन कीर्त्ति करता हे ॥ ३ ॥ आदो मूरत काल असंख्यकी । पूजी सुरगण असुरिंदा । सुरपति नरपति वंदित पद जुग । वलि पूजित सूरज चंदा ॥ ४ ॥ लाख अग्यार हजार पंचाशी । वरश पांचशे पंचासा । इतनें वरश पर लंका गढमें । पूजित रावण गुनरासा ॥ ५ ॥ रामचंद्र शीता अरु लछमन । ए मूरत पूजन ल्याए । नयरी अयोध्या जाते अधविच । नयर उजेणी ठह राए ॥ ६ ॥ प्रजापाल नरपतिकी तनया । सुंदरि मयणां धरमनकी । बाप करम अरु आप करमकी । भई लराई मरमनकी ॥ ७ ॥ आप करमके ऊपर नृपनें । कुष्टी वरपें परणाई । मयणां चिनें कांई नवाई । करम ल खी सो बनि आई ॥ ८ ॥ इकदिन जिन पूजन गुरुवंदन । आई श्री जिन मंदिरपें । वंदन पूजन करके इकचित । ध्यान धरे मन कंदरपें ॥ ९ ॥ इनि ॥

॥ ❀ ॥ मोतिदाम छंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुंही अरिहंत तुंही भगवंत । तुंही जिनराज तुंही जगसंत । तुंही जगनाथ तुंही प्रतिपाल । तुंही मनमोहन तुंही दयाल ॥ १ ॥ तुंही भयभंजन भाव सरुप । तुंही अरि गंजन रंजन भूप । तुंही अविनासी तुंही वीतराग । तुंही महाराज तुंही बडभाग ॥ २ ॥ तुंही गुणधाम तुंही विसराम । तुंही नवनिधि तुंही वरनाम । तुंही अघनाश तुंही अविनाश । तुंही मतिवंत तुंही मतिवास ॥ ३ ॥ तुंही गुन केवल रूप अनंत । तुंही जगतारन तारन संत । तुंही जगध्येय तुंही जगध्यान । तुंही चिद्रूप तुंही जग भान ॥ ४ ॥ तुंही मम तात तुंही मम मात । तुंही मम भ्रात तुंही मम त्रात तुंही सरणागत राखण हार । तुंही दुख दोहग टालणहार ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लावणीकी चालमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ करुं अरज एक तोपें जिनपति । कोन कुधमें नहीं डरने ॥ पूरब करमके लिखित लेख जे । किसके टारे नहीं टरने ॥ १ ॥ पण तुझ शासन जगत हेलना । जगत ढंढेरा बाजत हे । आप कर्म अरु जैन धर्मके । फल पाइये यो लाजत हे ॥ २ ॥ यो दुख मोमें सह्यो जात नहीं । आदिनाथ जग रखपाला । करुना करके रोग निवारन । गुन कीजें जग प्रतिपाला ॥ ३ ॥ यक्ष मम न होय फल दीजोगो । हाथ नागो फल नव दीनो । मयणा तब उल्लास भइ । मन चिंते भव कारज सीनो ॥ ४ ॥ तोदिन मयण नीर तनु फरसें कुष्ट रोग सब नासत हे । कामदेव अरु अमर समीवक । नृप श्रीपाल सोहावत हे ॥ ५ ॥ या कलिमें प्रभु विहारी नूतन । प्रगट प्रबल हे जग मेंगे । आसु चैत्र मासमें महिमा । देश देशमें प्रभु नेरो ॥ ६ ॥ फिर बागड देश मरोड नगरमें । जगपर प्रभु करुना कीनी । जिनने परचा जग महिमा महिमा । अधिपति कुमर कि दीनी ॥ ७ ॥ दिलीपत कुम्भान जयो नव पादशाह अल्ला आयो । इन भून पल्लवको सूरन । ऊर मुल्लामें जन्मायो ॥ ८ ॥ बहुत दिनां लग कीनी लराइ । थाको यो बाबा बोले । देव हिंदुको सच्चो जाननी । तूं योजन कि कि मोले ॥ ९ ॥ सुनो बात काजी तु ओं तुम । एक बातमें जांगगा । तो आदम प्रतिपाल कहाइ । सांचसें

ये नासैगा ॥ १० ॥ गोवध करन लगे जब निजरें। देख शके क्यों प्रति पाला। करन युद्धजब भये महाबल। शस्त्र ऊमो ऊम विकराला ॥ ११ ॥
॥ ❁ ॥ (दूहा) महा युद्ध करनें लगे। घाव चोराशी अंग ॥ ❁ ॥
॥ करी मलोखा गामली। आये धुलेव सुरंग ॥ १ ॥

॥ ❁ ॥ लावणी ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ गाम धुलेवे वंश जालमें। गुप्त रहे हें प्रभु धरती। गाय एक कोडी वनीयनकी। आई वांहां चरती ॥ १ ॥ स्रवे तिहां पयधारा शिरपर। सांझ समें फिर नहीं दूझे। रीस करी तव गोपालन पर। गो पाल थरथर धूजे। दूजे दिन गो लारें आयो। लह्यो भेद कह्यो वनीयनपें। शेठ आय जब नजरें देख्यो। चकित भयो हें तन मन पें ॥ ३ ॥ मध्य रातमें सुपनो दीनो। रुषभ नाथकी मूरत हे। बाहिर निकासो करो लाप शी। भीतर मूरत पूरत हे ॥ ४ ॥ नव दिनमें सब घाव मिलासी। मत काढे तुं नव दिनमें। कियो शेठनें हुकुम प्रमाणें। आये संघ बहु ठ दिन में ॥ ५ ॥ के उपवासी के व्रतधारी। के अखुआणे पाउंचले। कई लोक कुं दुःकर बाधा। कब प्रभुको दरसन मिले ॥ ६ ॥ युं सब लोकां दरस त रसकी। कहे लोक मूरत काढो। लाओ लाओ महाराजकी मूरत। संघ सबे लीनो आमो ॥ ७ ॥ जबर दस्तसें दिवस सातमें। लापशी बाहिर तबकीने। अंस अंमभर ब्रण रहा ए। संघ लोक दर्शन दीने ॥ ८ ॥ फिर सुपनेमें द्रव्य दिखायो। संघे मिल देवल कीनो। मध्य विराजे रुषभ नख तपर। कलियुगमें यों जश लीनो ॥ ९ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥
॥ ❁ ॥ (दूहा) संवत अढार त्रेसठमें। भाउ सदा शिवराय ॥
॥ ❁ ॥ कियो धंगानो दुष्टनें। लाखुं नगर वनाय ॥ १ ॥

॥ ❁ ॥ मोतिदाम छंद ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ सदाशिवराय चिंते मन एह। लुंटे बहुधाम जमीपर जेह। जि नां पति नाथ धुलेव कहाय। लखो लग द्रव्य भंमार सुनाय ॥ १ ॥ जावां अब लुंटण गाम धुलेव। अहुं सब माल जडे नव खेव। आवो निज फोज लेइ दलगाज। तोपां दोयसाथ लीया बहु साज ॥ २ ॥ कंप्र दोय लार लीं

ए फीरंगाण । शेठां अर साथ लीये कोकवाण । तवां बहु लोक कहे महा राज । नही इह कारन कृत्य अकाज ॥ ३ ॥ ए नोवह जाजन देव कहाय । रहे नहीं लाज तिहांरिय कांय । तवां फिर बोले सदाशिव नृप । अहुं सब माल अबां चढी चूप ॥ ४ ॥ इसी कहि आवत दुष्ट करूर । कीयो नजराणह नाथ हजूर । रख्यो नहीं नाथ तवां नजराण । भयो मन चकित मान गिलाण ॥ ५ ॥ तवां मन चिंत जंभारी बुलाय । मीठे वच बोल सबे ललचाय । लई संग आय मुकाम मझार । कियो तब कूच लई सब लार ॥ ६ ॥ करे तब गाम पुकार पुकार । जंभारि सबेय पुकार पुकार । करो अब बाहर नाथ दयाल । गयो किहां आज गरीब निवाज । चढो अब बाहर राखण लाज ॥ ७ ॥ ॥

॥ ॥ दूहा ॥ ॥

॥ ॥ तण समें कोक शेठको । वहाण तारण काज । गये अधि पायक नाथजी । जेहे गए वहां गाज ॥ १ ॥ सुणो अरज पृथ्वीनाथजी । सहेर धूलेव मझार । कियो अकारज दुष्टनें । शीघ्र चलो जन तार ॥ २ ॥ आए तुरत महाराजजी । करवा जन संभाल । दो घोरू दोनूं चढे । जेहे अरु प्रतिपाल ॥ ३ ॥ जिह्न कोप आपें कियो । दश दिशि फोज हजार मार मार चो तरफसें । लई उमाडि त्यार ॥ ४ ॥　　॥ ॥　　॥ ॥

॥ ॥ भुजंगप्रयात छंद ॥ ॥

॥ ॥ कुरु कुरु कुरु बहे कोक बाणं । सणाणं सणाणं तीर तरकस्स बाणं । धुबाके धबाके चले नाल गोला । जिणा कस्सा जम्मन नयण कोला ॥ १ ॥ किते अंगपें शस्त्र घाव लागे । किते मारवें कंपने दूर भागे । किते देनपें निकण होवें वराका । किते धरधेर त्राम होवे निराका ॥ २ ॥ किते रस्तुला उज्जला पुकारे । किते दीन होके खुदाये संभारे । किते नाथपें केशरां फल माने । किते नाथकुं आगनां जीन जाने ॥ ३ ॥ सदाशीवने धाय लग्गो धबाके । फुनी नाल अगबेन दोनूं संहारे । सबे कोप जानी गये फोज भाजी । हुइ केशरी नाथकी जीन बाजी ॥ ४ ॥ सदाशीवने ज्यालडी लाल लीनी । सदाशीवने मूकली भून दीनी । इसी नाथ धूलेवको मई गाजी । सदा केशरा नाथकी जीन बाजी ॥ ५ ॥ ॥

॥ ❈ ॥ (दूहा) या विध कलियुग जगजना । तारया के जिनराज ॥
दीप विजय कविराजकुं । महेर करो महाराज ॥ १ ॥

॥ ❈ ॥ तुंही नवनिध तुंही अष्टसिद्ध । तुंही मन वंछित वंछित रि
तुंही सिरदार तुंही किरतार । तुंही सरणागत दीनदयाल ॥ १ ॥ तुंही क
कुंज्र तुंही कामधेन । तुंही सुरवृक्ष तुंही ममसेन । तुंही दक्षणावर्त्त दाय
देव । तुंही विसराम तुंही वसुसेव ॥ २ ॥ तुंही मम प्राण आधार जरूर । तुं
मम इछित दायक नूर । तुंही मम भूप तुंही पतशाह । तुंही मम रिध
भार अगाह ॥ ३ ॥ तुंही मम मंत्र तुंही मम यंत्र । तुंही मम सत्य तुंही मन
त्र । तुंही गछनायक तुंही श्री पूज्य । तुंही मम पुज्य तुंही जग पूज्य ॥ ४

॥ ❈ ॥ लावणी चाल ॥ ❈ ॥

॥ ❈ ॥ नाथ धुलेवा कीरत सुनके । देश देश नृप आवत हे । केश
गरकाव रहेंतें । केशर नाथ कहावत हे ॥ १ ॥ सहेर परगणे देश देशा
फिरे दुहाई नाथनकी । हिंदु मुसल वरु राणा हाजर । पूरे इछित स
मनकी ॥ २ ॥ जलवट थलवट वाट घाटमें । रण रावल दुःख दूर हरे
एकचित्त ध्यानें जे नित समरे । अखय खजाना अजर जरे ॥ ३ ॥ धिधिम
धिधिमप धमप धमप मप । ताल पखावज राजतहें । गम्गम दो गम्गम
गम्गम । धोंधों नोवत बाजतहें ॥ ४ ॥ हिंदूपति पतशाह उदेपुर । भीम
हके राजनमें । एह लावणी खूब बनाई । सकल संघके सागनमें ॥ ५
संवत अढार पचोत्तर वर्षे । फागुण सुदि तेरस दिवशें । मंगलकेदिन दी
विजयकुं । दरशन परसन दो उलसे ॥ ६ ॥ ॥ ❈ ॥ ॥ ❈

॥ ❈ ॥ कलश छप्पय छंद ॥ ❈ ॥

॥ ❈ ॥ समवसरन जव शरन । तीन लोक कलिमल हरन । धु
वरसत जल धरन । भरन पोष पावन करन । जुगल धर्म नीती हरन । स
करम ओघ घन जरन । मोह मल्ल अरि दरन । सुकल वरन शुभ पर
इंद्र चंद्र पद जुगल सेवन । जगद निद्ध तारन तरन । दीप विजय कवि
ज बहादुर । रुसल नाथ अशरन शरन ॥ १ ॥ ❈ ॥ ॥ ❈

॥ ॐ ॥ अजित नाथ महाराज । सबे दुःखदारिद्र भंजन । अजित नाथ महाराज । सबे नृप मनरंजन । अजित नाथ पृथ्विनाथ । समरथों बाहर धावे अजितनाथ पृथ्विनाथ । मंगल नाम गवावे । दीप विजय कविराज बहादुर खलक मुलक हाजर रहे । कलि जुग जयो देवनुं । सुरनर सबकीरत कहे॥२॥

॥ ॐ ॥ श्री नेमनाथकी जान वर्णन लावणी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ नेमकी जान बनी भारी । देखनकुं आवे नर नारी (ए आंकणी) अनंता घोडा और हाथी । मनखकी गिनती नहीं आती । रथ पर धजा जो फररांती । धमकसें धिरती थररांती ॥ दोहा ॥ समुद्र विजयका लाडला । नेम कुंवरका नाम । राजुलदेकुं आये परणवा । उग्रसेन घर ठाम । अमन भई नगरी सब सारी । नेमकी जान बनी भारी ॥ १ ॥ कसुंबल वाघा अति भारी । काने कुंडल छबिहे न्यारी । किलंगी तुररा सुखकारी । माल गले मोतीयनकी डारी ॥ दोहा ॥ काने कुंडल जग मगे । शीश मुगट झलकार । कांति भानुंकी करे उपमा । शोभा अधिक अपार बाज रहा बाजा टंकनारी ॥ नेम० ॥ २ ॥ तूट रही जनकी जहराई । क्या हमें आये बडे नाई । झरोखे राजुलदे आई । जानकुं देखी सुख पाई ॥ दोहा ॥ उग्रसेनजी देखके । मनमें करे विचार । बहोत जीव करि पकरा । वाको भरनो अपार । करी सब भोजनकी त्यारी ॥ नेम० ॥ ३ ॥ नेमजी तोरण पर आये । पशु जीव सबको कुरलाए । नेमजी वचन फरमाये । पशु जीव कायेकुं लाये ॥ दोहा ॥ याको भोजन होवसी । जान वासते एह । एह वचन सुनी नेमजी । थर थर कांपे देह । आवने चढनाये गिरनारी ॥ नेम० ॥ ४ ॥ पीछेसुं राजुलदे आई । हाथ जब पकड्यो छिनमांही । कहो नें जाव मेरा साई । और कुं छेडो सुखदाई ॥ दोहा ॥ मेरे नाथ [illegible] । छोगाला नेम कुमार । और नवनमें वर नहीं । कीनी क्यों दिदार । दीक्षा लेइ गिरनारमें धारी ॥ नेम० ॥ ५ ॥ साहेल्यां सखीयां समजावे । फिरी राजुलके नहीं आवे । जगत सब झूठो दरसावे । मैं अबनेम कुमर जावे । दोहा ॥ सोरठा [illegible] । सहेल्यां सब समजाय । सहेल्यां सखीयां विलखानी ॥ नेम० ॥ ६ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) या विध कलियुग जगजना । तारया के जिनराज ॥ दीप विजय कविराजकुं । महेर करो महाराज ॥ १ ॥

॥ ❀ ॥ तुंही नवनिद्ध तुंही अष्टसिद्ध । तुंही मन वंछित वंछित रिद्ध तुंही सिरदार तुंही किरतार । तुंही सरणागत दीनदयाल ॥ १ ॥ तुंही का कुंभ तुंही कामधेन । तुंही सुरवृक्ष तुंही ममसेन । तुंही दक्षणावर्त्त दायव देव । तुंही विसराम तुंही वम्सेव ॥ २ ॥ तुंही मम प्राण आधार जरूर । तुंह मम इछित दायक नूर । तुंही मम भूप तुंही पतशाह । तुंही मम रिद्ध भार अगाह ॥ ३ ॥ तुंही मम मंत्र तुंही मम यंत्र । तुंही मम सत्य तुंही मन त्र । तुंही गछनायक तुंही श्री पूज्य । तुंही मम पुज्य तुंही जग पूज्य ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ लावणी चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नाथ धुलेवा कीरत सुनके । देश देश नृप आवत हे । केशरमे गरकाव रहेते । केशर नाथ कहावत हे ॥ १ ॥ सहेर परगणे देश देशाव फिरे दुहाई नाथनकी । हिंदु मुसल्ल वरू राणा हाजर । पूरे इछित सब मनकी ॥ २ ॥ जलवट थलवट वाट घाटमें । रण रावल दुःख दूर हरे । एकचित्त ध्यानें जे नित समरे । अखय खजाना अजर भरे ॥ ३ ॥ धिधिमप धिधिमप धमप धमप मप । ताल पखावज राजतहें । गम्गम् दो गम्गम् दो गम्गम् । धोंधों नोबत वाजतहें ॥ ४ ॥ हिंदूपति पतशाह उदेपुर । भीमसि हके राजनमें । एह लावणी खूब बनाई । सकल संघके सागनमें ॥ ५ ॥ संवत अढार पचोत्तर वर्षे । फागुण सुदि तेरस दिवशे । मंगलकेदिन दीप विजयकुं । दरशन परसन दो उलसे ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कलश छप्पय छंद ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समवसरन जब शरन । तीन लोक कलिमल हरन । धुनि वरसत जल धरन । जरन पोष पावन करन । जुगल धर्म नीती हरन । सम करम ओघ वन जरन । मोह मल्ल अरि दरन । सुकल भरन शुभ चरन इंद्र चंद्र पद जुगल सेवन । जगद बिरुद तारन तरन । दीप विजय कविरा ज बहादुर । रुषभ नाथ अशरन शरन ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ॐ ॥ जगत नाथ महाराज । सबे दुःखदारिद्र भंजन । जगत नाथ महाराज । सबे नृप मनरंजन । जगत नाथ प्रथ्विनाथ । समरथों बाहर धायें जगतनाथ प्रथ्विनाथ । मंगल नाम गवायें । दीप विजय कविराज बहादुर मलक मुलक हाजर रहे । कलि जुग जयो देवतुं । सुरनर सबकीरत कहे॥२॥

॥ ॐ ॥ श्री नेमनाथकी जान वर्णन लावणी ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ नेमकी जान बनी भारी । देखनकुं आये नर नारी (ए आंकणी) अनंता घोडा और हाथी । मनख्की गिनती नहीं आती । रथ पर धजा जो फरराती । धमकसें धिरती थरराती ॥ दोहा ॥ समुद्र विजयका लाडला । नेम कुंवरका नाम । राजुलदेकुं आये परणवा । उग्रसेन घर ठाम । प्रसन भई नगरी सब भारी । नेमकी जान बनी भारी ॥ १ ॥ कसुंबल वाघा अति भारी । कानें कुंडल छबिहे न्यारी । किलंगी तुररा सुखकारी । साज गले मोतीयनकी डारी ॥ दोहा ॥ कानें कुंडल जग मगे । शीश मुगट झलकार । कोटि भानुंकी करुं उपमा । शोभा अधिक अपार बाज रहा बाजा टंकसारी ॥ नेम० ॥ २ ॥ वृद रही ननकी लहराई । ब्याहमें आय वेंइ भाई । झरोखे राजुलदे आई । जानकुं देखी सुख पाई ॥ दोहा ॥ उग्रसेनजी देखके । मनमें करे विचार । बहोत जीव करि एकठा । वाको भरयो अपार । करो सब भोजनकी त्यारी ॥ नेम० ॥ ३ ॥ नेमजी तोरण पर आये । पशु जीव सबही कुरलाये । नेमजी वचन फरमाये । पशु जीव कायके लाये ॥ दोहा ॥ याको भोजन होवसी । जान पावते एह । एह वचन सुनी नेमजी । थर थर कांपे देह । आयमें चढगये गिरनारी ॥ नेम० ॥ ४ ॥ पीछेसें राजुलदे आई । हाथ जब पकड्यो निजसांई । क्यों तुं जावे मेरे जाई । और वर हेरुं सुखदाई ॥ दोहा ॥ मेरे गोगर लेयकों । होगया नेम कुमार । और भुवनमें वर नहीं । कोदी करों विचार । दीक्षा जद राजुलने धारी ॥ नेम० ॥५॥ साहेल्यां सबही समझावे । देवे राजुलके मनमें आवे । जगत सब झूठो दरसावे । मैं सबनेम कुमर आवे । दोहा ॥ दीक्षा संयम लेयका । दीक्षा सयन हार । काजल दीनी पान सों पारि । स्यामनो सब नरनार । मेरउपरां सबकी सिरदारी ॥ नेम० ॥ ६ ॥

तज्या मन सोले सिणगारा । आभूषण रत्नजडित सारा । लगे मोहे सबही सुख खारा । गोरू कर चाली निरधारा ॥ दोहा ॥ मात पिता परिवारकुं । तज तां न लागी वार । विजोग कर चली आपथुं । जाय चढी गिरनार । फ रती ठोरी मा प्यारी ॥ नेम० ॥ ७ ॥ दया दिल पशुवनकी आई । त्याग जब कीनो तिनमांई । नेमि जिन गिरनारे जाई । पशुके बंधन छुडवाई ॥ दोहा ॥ नेम राजुल गिरनारपें । लीनो संजम दान । नवलराम करी ला वनी । उपन्यो केवल ज्ञान । जिनौंकी किरिया बुद्धि सारी ॥ नेम० ॥८॥

॥ ❀ ॥ श्री पार्श्वजिन आरती, लावणी चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आरति करुं श्रीपार्श्व प्रभुकी । जन्म बनारशी हे जिनका । घननं घननं वाजे घंट घण । ऐसा ध्यान धरुं जिनवरका ॥ आ० ॥ १ ॥ जब कमठासुर कोप कियो तब । स्याम घटा विजुरी चमका । गिरुओ गाजजल मूशलधारा । धरम धरडका जन शंका ॥ आ० ॥ २ ॥ थरर आ सन कंपे सुरको । तव धरणीधर चित्त चमका । फण विस्तार हजार किये तव । झमक जाय प्रभु तन ढंका ॥ आ० ॥ ३ ॥ जब पदमावति सब सि णगारे । नाथेइ नाचतले फिरका । भ्रमक भ्रमक धों मादल वाजत । घननं घुग्घुरके घरका ॥ आ० ॥ ४ ॥ धींधीं २ कट नोबत वाजे । धौंधौं कट छुंद ल्लि धोंका । याविधगीत संगीत वजन सब । गांधर्व गान करे जिनका ॥आ० ॥ ५ ॥ तननं तररर तंत ताल सब । रुफ झोंझों करते झंका । झेरण फेर णके झणकारे । झागम्दी झालरके झंका ॥आ०॥ ६ ॥ सुर नर इंद्र सब जे जे करते । जीवत सफल भया जिनका । अमृत उदय तिणवेर भयो सुख । को विस्तार कहे तिनका ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आदि जिनेशर पारणां ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आदि जिनेशर कियो पारणो । आ रस सेलडी ॥ आ० ॥ (टेक) वर्ष एकसो आठ शेलडी । रस भरियाछे नीका । उलट भाव श्रेयांस वहिरावे । मांमदिवी आ वृकारे ॥ आ० ॥ १ ॥ देव दुंदुभी वाज रहीहे । सोनइयांरी वरखा । चारे मासथुं कियो पारणो । गइ भूख मन तिरखारे ॥ आ० ॥ २ ॥ रुद्धि सिद्धि कारज मनो कामना । घर घर मंग

लाचार । दुनियां हरख वधामणा सिरै । आखात्रीज तिवाररे ॥ आ० ॥ ॥ ३ ॥ संकट काटो विघन निवारो । राखो हमारी लाज । वे कर जोमी नान्हू कहिता । ऋषभ देव महाराजरे ॥ आ० ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री नेमिनाथ चौमासो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ छाई घटा गगनमें कारी । राजुलकुं विरह दुःख भारी ॥ छा० ॥ टेक ॥ चौमासा लग्या रस भीना । अलि आषाढ रंग महीनां । चारुं तरफसें वादल पीना । वीजुलीनें चमकनां कीना । दिल होल धम्कता सीना । में अबला सखी पति हीना (लमाना) सररररर चलत समीर । थर ररर करत सरीर । भररररर भरत समीर । अलि कैसी करुं तदबीर बुरी तकदीर । पीया बिन प्यारी । राजुलकुं विरह दुःख भारी ॥ छा० ॥ १ ॥ श्रावनमें श्याम घनघोर । भरजोर बोलते मोर । दादुर मिल करते दोर । पिक पिक पपैया सोर । झम लग्यो बुंद झकजोर । विच चमके दामिनी कोर । (लमावणी) खम्मम्मम खव घन माला । तडडडडड ज ल परनाला । अडडडडड नाला खाला । मैं दुःखी हुइ बेहाल हीयेमें । साल हुई जलधारी ॥ रा० ॥ २ ॥ भाद्रवमें पवन प्राचीना । वादलमें धनु प रंगीना । जंगलमें नदी स्वरझीणा । ज्युं वाजे मनोहर बीणा । अबए सें कहो क्या जीना । प्रीतमनें मुझे दुःखदीना । (लमाना) युं विलपत मुख मुरझाई । सखीयन मिल दोम जगाई । युं विलखत वचन सुनाई । सखी देखो पीयाकी रीत । तोमके प्रीत गये गिरनारी ॥ रा० ॥ ३ ॥ आश्विनमें जरा नहीं धीर । यादु चंद भये वे पीर । उठ चली नेमके तीर । काटनकुं कर्म जं जीर । प्रीतमसें लीयो अक्सीर । व्रत संजम समकित हीर । (लमाना) शिव राजुल नेम सिधाये । इंद्रादिक जश गुण गाये । भविजन मिल शीश नमाये । मुनि कहे कपूरचंद प्रेमसें छंद । जाऊं बलिहारी ॥ रा० ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ श्री अजितनाथ महाराजकी लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री अजितनाथ महाराज । गरीबनिवाज । जरूर जिनवरजी । सेवक शिरनामें तनें उचारे अरजी । कर माफी मारावांक । रमलीयो रांक । अनंता भवमें ॥ २ ॥ आव्यो हुं ताराशरण । बली दुःख दवमें । क्रोधादिक

धुकता चार । खरेखर खार । लगया मुजकेरे ॥ २ ॥ वली पापी ह्मारो नाथ । ठेक ठेरेरे । आ मुजरो मुज भगवान । करुं गुणगान । ध्यानमां धरजी ॥ २ ॥ सेवक० ॥ १ ॥ में पूरण कर्या ने पाप । सुणजो आप । कहुं कर जोरी ॥ २ ॥ मुझ तुंमामां भगवान । भूल नहीं थोरी । जीवहिंसा अ परंपार । करी किरतार । हवेशुं करवुं ॥ २ ॥ झूटुं बहु बोली । साधनेंशुं हरखूं । तुझ खोलामां मुझ शीश । जाण जगदीश । गमें ते करजी ॥ २ ॥ सेवक० ॥ २ ॥ में किया बहुत कुकर्म । धरा नहीं धर्म पूर्ण हुं पापी ॥ २ ॥ अवलो थई तारी आण । मेंज उत्थापी । में मूरख निंदा घणी । मुनि पर तणी । करी हरखायो ॥ २ ॥ परदारा देखी लबारु । हुं ललचायो । किं कर कहे केशवलाल । आणीने व्हाल । दुःख तुं हरजी ॥ २ ॥ सेवक० ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मम्माई सहरमें चिंतामणि भेट्या चिंताचूरका ॥ टेक ॥ सब देशां काशी सिरे, सिरे नगर वणारशी धार । सहुराजा शिरसेहरो' सिरे अश्वसेन कुल तारजी ॥ म० १ ॥ वामाकूखे अवतरया, सिरे नीलवरण तनधन्न । सतवरपांको आयु कहीजे· नवकर देहरतन्नजी ॥ म०२ ॥ मस्तक मुगट काने युगकुंमल, हियरु नवसर हार· अंगियां सहुरयणेजमी, सिरे पीठलामंमल सारजी ॥ म० ॥ ३ ॥ तेजे रविजिम दीपता, सिरे मुखजिम पूनम चंद । हियरो हेजे निरख तां· सिरे सब इंद्रिनो वृंदजी ॥ मम्माई० ॥ लगणीसे गुणतीसमें· सिरे चैत्रकृ ष्णपक्ष भाण । यात्रकरी सुजवेद तिथीकों, संघवी बुधसिंह जाणजी ॥ म० ॥ ५ ॥ लुंपक गणमें सोलता· सिरे अजयराज जिनदास । संत्र सहाये भेटिया, करे सुक्ति कमल अरदासजी ॥ म० ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति श्री वंबई मंमण श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ लावणी संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीठोमा. श्रीगोमी पार्श्वनाथ लावणी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीठोडा मांहें प्रगट पधारे गोमी पाशजी ॥ वी० टेक ॥ मदधर देशमें गाम वीठोमा, उत्तम धरनी पाय । चंदनमल लोढाकों सुपनों मिलियों पुन्यपसायजी ॥ वी० १ ॥ संघसाथ चंदनमल वनमें· जोवे चिहुं दिशकेर । फिनीयथळ नजरह निर्धाकों, दीठो अकलंद रजी ॥ वी०२ ॥ अकलंदेस मग

नहुय दिलमें, अरजकरी करजोड़। अचरजवाली वात हुई जब, प्रगट भया सुंय फोडजी ॥ ३ ॥ ताम्रपात्रमें प्रभुमस्तकपर, जीवत अहिफण सार। केशर चंदन पुष्पादिकसें, पूजन अति मनुहरजी ॥ वी० ४ ॥ देशदेशके भविजन सुनके, उमंगधरी चितआय। गोडीचा पारशका दरशन, करतां दिलसुखपायजी ॥ वी० ५ ॥ रजतवर्ण दोयहीरा झलकत, रविजिम तेजदी पाय। अतिशय गुणपूरत प्रभु परितिख, शांति सूरत सुखदायजी ॥ वी० ॥ ६ ॥ अधिक संघकी भक्तिदेखके, प्रभु रहे दिन इकवीस, भाद्रवदसुद तृतिया रजनीको अदृश विशवावीशजी ॥ वी० ७ ॥ कलयुगमें ए अचरजकारी, महमा अध की देख, भविजीवां मन आनंद उपनो, कुमति कदाग्रह रेखजी ॥ वी० ८ ॥ धन्यघडी धन्य भाग हमारो, पायो प्रभुदीदार, नंदअनिल निधि चंद्र संवत्सर, सुभमहुरत तिथिवारजी ॥ वी० ९ ॥ करजोडी पारसप्रभु ध्यावे, सफल हुवे अवतार। लक्ष्मीप्रधान मिले शिवसंपद, मोहन हरख अपारजी ॥ वी० १० ॥ इति लावणी संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीऋषभ जिनस्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पोढो पोढोजी ऋषभ विहारे। निद्रावश नयण तिहारे ॥ पो० ॥ प्रभुआलस अंग हुलशाई। पूछे मरुदेवा माई ॥ पो० ॥ १ ॥ प्रभु नंदा सुमंगलाराणी। उन रुच रुच सेज संभारी ॥ पो० ॥ २ ॥ प्रभु नवलसुं नेह सनेहा। मनवंछित फल देहा ॥ पो० ॥ ३ ॥ प्यारे सेवक हित कर गावे। मनवंछित फल पावे ॥ पो० ॥ ४ ॥ अजर अमर पद पावे। कर जोडी शीश नमावे ॥ पो० ॥ ५ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दीवालीको स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धन धन मंगल एरे सकल दिन। पूजी प्रभातें चालीरे ॥ ❀ ॥ आज म्हारे दीवाली अजुवाली ॥ १ ॥ गावो गीत वधावो गुरुने। मोतीडे थाल पूरावो। चार चार आगे चतुर सुहागण। चरण कमल चित्त सारीरे ॥ आज० ॥ २ ॥ धन शुद्ध धन तेरस दिवशे। काली काली चउदश। पाप हणीजे पोसो कीजे। कर्म मेलो सर्व टालीरे ॥ आज म्हारे० ॥ ३ ॥ अमावस की परव दीवाली। फरती झाक झमाली। घर घर तो दीवडीया झलके

रात दीसे अजुवाली रे ॥ आज ह्मारे० ॥ ४ ॥ अमावसकी पिछली राते । आठ करम सहु टाली । श्री महावीर निरवाणे पोहोता । अजरामर मुख कारी रे ॥ आज ह्मारे० ॥ ५ ॥ पडिवा नें वली ज्रुहार पटोला । ए रत रूडी सारी ॥ गुरु गौतमनां चरण पखाली । रीझ पामी रढीयाली रे ॥ आज ह्मारे० ॥ ६ ॥ बीजें तो वली भावरु बीज । बेनरुनी अति वाहाली ॥ ए पांचे दिन होय रे पनोता । एवे एवे हरखे गाई रे ॥ आज ह्मारे० ॥७॥ हरखविजय पंडित इम बोले । करोसहु सेव सुंहाली ॥ रूपविजय पंडित गुणगावे । जय जय वाजे ताली रे ॥ आज ह्मारे० ॥ ८ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः दीपमाला स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ह्मारे दीवाली रे थई आज । प्रभु मुख जोवाने ॥ सरया सरयारे से वकनां काज । भवदुख खोवाने ॥ टेक ॥ महावीर स्वामी मुगतें पहोता ने । गौतम केवल ज्ञान रे ॥ धन अमावस्या धनदीवाली ह्मारे । वीर प्रभु निरवाण ॥ जिनमुख० ॥ ह्मारे दीवाली० ॥ १ ॥ चारित्र पाल्या नि र्मलांने । टाल्या ते विषय कषाय रे ॥ एवा प्रभुनें वांदिये तो । उतारे भव पार ॥ जिन० ॥ मा० ॥ २ ॥ बाकुला वोहोरया वीरजी ने । तारी चंदन बाला रे ॥ केवल लई प्रभु मुकतें पोहोता । पाम्या भवनो पार ॥ जि न० ॥ मा० ३ ॥ एवा मुनिनें वांदीयेंजे । पंचमज्ञानने धरतारे । समवसरण देई देशना रे ॥ प्रभु तारया नरने नार ॥ जिन० मा० ॥ ४ ॥ चोवीशमा जि नेसरु ने । मुकति तणा दातार रे ॥ कर जोडी कवियण एमभणे । मारो भ वनो फेरो टाल ॥ जिनमुख० ॥ मा० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आत्मलघुता स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यो जिनदास झूठो रे झूठो ॥ येने लेइ लाकडी कूटो ॥ यो० ॥ सुकृत सामो पग नहिं भरतो । ग्यान हीयाको खूटो ॥ सुधारयो सुधरे न हिंयडतां । जैसो लक्कडको ठुंठो ॥ यो० ॥ १ ॥ भणवा गुणवाका गुण नहिं आया । कोरोही पकड्यो पूठो ॥ गपोडा सुण कर लोक पूजता । ए अलग भाजको दूठो ॥ यो० ॥ २ ॥ पंडित गुरुकी सोवत पाई । चेलो नहिं हीयाको फूटो । साचा नरको संग न करतो । कूड कपट नहिं छूटो ।

यो० ॥ ३ ॥ झूठोहि बोले झूठोहि चाले । कपट करे एक मूठो ॥ साचो एह असार देखके । जिनदाश सबसुं रूठो ॥ यो० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मंगल स्तवन राग सामेरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कीजे मंगल चार । आज घरे नाथ पधारया ॥ कीजे० ॥ (आंकणी) ॥ पहेलुं मंगल प्रभुजीकुं पूजूं । घसी केशर घनसार ॥ आज० ॥ १ ॥ बीजुं मंगल अगर उखेवुं । कंठे ठवुं फुल हार ॥ आज० ॥ २ ॥ त्रीजुं मंगल आरती उतारुं । घंट वजावुं रणकार ॥ आज० ॥ ३ ॥ चोथुं मंगल प्रभु गुण गावुं । नाचूं ते थैथेकार ॥ आज० ॥ ४ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन । चरण कमल जाउं वार ॥ आज० ॥ ५ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीनेमनाथजीको नवरसो प्रारंभः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल पहली, गर्वाकी देशीमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समुद्र विजय कुल चंदलो । शामलियाजी । शिवादेवी मात मलार । वर पातलियाजी । एक दिन रमवा नीसरया ॥ शा० ॥ आव्या आयुधशाला मांहे ॥ व० ॥ १ ॥ सारंग धनुष चढावियुं ॥ शा० ॥ तेणे मोल्या आकाशें इंद्र ॥ व० ॥ चक्र उपाडीनें फेरव्युं ॥ शा० ॥ गदा लीधी करमांहे ॥ व० ॥ २ ॥ नेमें शंख वजाडीयो ॥ शा० ॥ तेणें गो ल्या माहिना मेर ॥ व० ॥ शेष नाग तिहां सल सल्या ॥ शा० ॥ खल भ लीया सायर सर्व ॥ व० ॥ ३ ॥ गिरिवर ट्रंक तूटी पड्यां ॥ शा० ॥ थरहर कंपे लोक ॥ व० ॥ कोइक वैरी ऊपनो ॥ शा० ॥ इम करता कृष्ण विचार ॥ व० ॥ ४ ॥ आव्या तिहां उतावला ॥ शा० ॥ जिहां छे नेम कुमार ॥ व० ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ शा० ॥ ताहरुं बल जोवानी खंत ॥ व० ५ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल बीजी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कृष्णें कर लंबावायो ॥ हसी बोलोजी । तुमें वालो नेम कुमार । अंतर खोलोजी । कमलनाल परें वालीयो ॥ हसी० ॥ कृष्ण नवि लागी वार ॥ अंत० ॥ १ नेमें कर लंबावीयो ॥ हसी० ॥ कृष्णे नवि वाल्यो जाय ॥ अंत० ॥ हाथें कृष्ण हिंचोलिया ॥ हसी० ॥ तिहां हरि मन झंखो थाय अं० ॥ २ ॥ नारी जो परणावीयें ॥ ह० ॥ तो बल ओछेरुं थाय ॥

अं० ॥ एम विचारी कृष्णजी ॥ ह० ॥ निजअंतेउर समजाय ॥ अं० ॥ ३ ॥ नेम विवाह मनायवा ॥ ह० ॥ सज्ज थाउ सगली नार ॥ अं० ॥ रूपचंद रंगें मिल्या ॥ ह० ॥ नाहरुं अतुली बलअरीहंत ॥ अंत० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल त्रीजी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राधाजी ने रुक्मणी । मोरा गिरधारी । सत्यभामा जांबुवती नार । मुकुटपर हुं वारी । चंद्रावती शिणगारीयें ॥ मोरा० ॥ गोपी मली बत्तीश हजार ॥ मुकुट० ॥ १ ॥ विवाह मानो नेमजी । देवर मोरा जी । मने करवाना बहु कोम । ए गुण तोराजी । नारी विनानुं आंगणुं ॥ देवर० ॥ जेम अलूणो धान ॥ ए गुण० ॥ २ ॥ नारी जो घरमां बदे ॥ देवर० ॥ तो पामें प्राहुणा मान ॥ ए गुण० ॥ नारी विना नर हाली जिसा ॥ देवर० वली वांढा कहशे लोक ॥ ए गुण० ॥ ३ ॥ ठेकरवाद न कीजीयें ॥ देव० ॥ तमें मकरो ताणो ताण ॥ ए गुण० ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ देवर० ॥ हवे उत्तर आपे नेम ॥ ए० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल चोथी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेम कहे तमे सांभलो ॥ मोरी भाभी जी । ए किशो काम विकार । मैं गत पामी जी । नारी मोहें जे पड्या ॥ मोरी० ॥ ते रुलीया गति चार ॥ में० ॥ १ ॥ रावण सरिखो एलव्यो ॥ मोरी० ॥ जे लइ गयो शीता नार ॥ में० ॥ नारी विषनी कूंपली ॥ मो० ॥ मायानी मोहन वेल ॥ में० ॥ २ ॥ छपन्न कोडि जादव मिल्या ॥ मोरी० ॥ इम कहे ने वारो वार ॥ में० ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ मोरी० ॥ नेम नहिं परणे निरधार ॥ में० ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल पांचमी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अवला बोल न बोलीयें । वर राजाजी । तमें परणो नेम कुमार । मकरो दिवाजाजी । एकवीश तीर्थंकर थया ॥ वर० ॥ ते तो सर्वे परण्या नार ॥ मकरो० ॥ १ ॥ नारी खाण रतन तणी ॥ वर० ॥ तेनुं मूल्य कोणे नवि थाय ॥ मकरो० ॥ नारीमांहेथी नर नीपना ॥ वर० ॥ तुम सरिखा श्रीभगवान । मकरो० ॥ २ ॥ नेम न बोले मुखथकी ॥ वर० ॥ मांड्यो विवाह मंडाण ॥ मकरो० ॥ उग्रसेन वर बेटडी ॥ वर० ॥ ते

नामें राजुल नार ॥ मकरो० ॥ ३ ॥ लीधुं लगन उतावळुं ॥ वर० ॥ आ प्या लीला श्रीफल हाथ ॥ मकरो० ॥ जीमण लाडू लापशी ॥ वर० ॥ वली सेवइयो कंसार ॥ मकरो० ॥ ४ ॥ आछी जलेबी पातली ॥ वर० ॥ वली मांहे घेवरनो भाग ॥ मकरो० ॥ खारी पुरीने दहीथरा ॥ वर० ॥ व ली खाजाने मगदाल ॥ मकरो० ॥ ५ ॥ लाखण साई हेशमी ॥ वर० ॥ मांहे मोतीचूरनो स्वाद ॥ मकरो० ॥ कूर रांधो कमोदनो ॥ वर० ॥ मां हे मसूरनी दाल ॥ सबल दिवाजाजी ॥ ६ ॥ खारक खजूर नें टोपरा ॥ वर० ॥ वली चारोलीने द्राख ॥ सबल० ॥ लवंग सोपारी एलची ॥ वर० ॥ वली पानना बीडा चार ॥ सबल० ॥ ७ ॥ सज्जन कुटुंब संतोषीया ॥ वर० ॥ बहु कीधी पेरामणी सार ॥ सबल० ॥ जान लेई यादव चढ्या ॥ वर० ॥ पाखरीया केकाण ॥ सबल० ॥ ८ ॥ हाथी रथ शणगारीया ॥ वर० ॥ केशरिया असवार ॥ सबल० ॥ इंद्र जोवाने आविया ॥ वर० ॥ इंद्राणी गावे गीत ॥ सबल० ॥ ९ ॥ तोरण आव्या नेमजी ॥ वर० ॥ ते नें निरखे राजुल नार ॥ सबल० ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ वर० ॥ ए जोवा सरखी जान ॥ सबल० ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल छठी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सखी कहे वर शामलो ॥ ए दीसेजी ॥ ते निरखे राजुल नार हइडुं हींसे जी ॥ काला गयवर हाथीया ॥ ए दी० ॥ वली कालो मेघ मलार ॥ हइडुं० ॥ १ ॥ काली अंजन आंखमां ॥ ए दीसेजी ॥ तेनुं मूल केणे नवि थाय ॥ हइडुं० ॥ काली कस्तूरी कही ॥ ए दीसेजी ॥ काला कृष्णागरु केश ॥ हइडुं० ॥ २ ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ ए दीसे जी ॥ सखि शामलीयो भरतार ॥ हइडुं० ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल सातमी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पशुअ पोकार सुणी करी । शुभ लीधी जो । विचारे श्रीवीतरा ग । तेणें दया कीधीजो । जो परणुं तो पशु मरे ॥ शु० ॥ मूकी अनुकंपा जाल तेणें० ॥ १ ॥ इम जाणी रथ वालीयो ॥ शु० ॥ फेरवनां दीनदयाल

अं० ॥ एम विचारी कृष्णजी ॥ ह० ॥ निजअंतेउर समझाय ॥ अं० ॥ ३ ॥ नेम विवाह मनायवा ॥ ह० ॥ सज्ज थाउ सगली नार ॥ अं० ॥ रूपचंद रंगें मिल्या ॥ ह० ॥ ताहरुं अतुली बलअरीहंत ॥ अंत० ॥ ४ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ढाल त्रीजी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ राधाजी ने रुक्मणी । मोरा गिरधारी । सत्यभामा जांबुवती नार । मुकुटपर हुं वारी । चंद्रावती शिणगारीयें ॥ मोरा० ॥ गोपी मली बत्तीश हजार ॥ मुकुट० ॥ १ ॥ विवाह मानो नेमजी । देवर मोरा जी । मने करवाना बहु कोड । ए गुण तोराजी । नारी विनानुं आंगणुं ॥ देवर० ॥ जेम अलूणो धान ॥ ए गुण० ॥ २ ॥ नारी जो घरमां वदे ॥ देवर० ॥ तो पामें प्राहुणा मान ॥ ए गुण० ॥ नारी विना नर हाली जिसा ॥ देवर० वली वांढा कहशे लोक ॥ ए गुण० ॥ ३ ॥ छोकरवाद न कीजीयें ॥ देव० ॥ तमें मकरो ताणो ताण ॥ ए गुण० ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ देवर० ॥ हवे उत्तर आपे नेम ॥ ए० ॥ ४ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ढाल चोथी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नेम कहे तमे सांभलो ॥ मोरी भाभी जी । ए किशो काम विकार । में गत पामी जी । नारी मोहें जे पड्या ॥ मोरी० ॥ ते रूवम्या गति चार ॥ में० ॥ १ ॥ रावण सरिखो एलव्यो ॥ मोरी० ॥ जे लइ गयो शीता नार ॥ में० ॥ नारी विषनी कूंपली ॥ मो० ॥ मायानी मोहन वेल ॥ में० ॥ २ ॥ छपन्न कोडि जादव मिल्या ॥ मोरी० ॥ इम कहे ते वारो वार ॥ में० ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ मोरी० ॥ नेम नहिं परणे निरधार ॥ में० ॥ ३ ॥

॥ ❋ ॥ ढाल पांचमी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अवला बोल न बोलीयें । वर राजाजी । तमें परणो नेम कुमार । मकरो दिवाजाजी । एकवीश तीर्थंकर थया ॥ वर० ॥ ते तो सर्व परण्या नार ॥ मकरो० ॥ १ ॥ नारी खाण रतन तणी ॥ वर० ॥ तेनुं मूल्य केणें नवि थाय ॥ मकरो० ॥ नारीमाहेथी नर नीपना ॥ वर० ॥ तुम सरिखा श्रीभगवान । मकरो० ॥ २ ॥ नेम न बोले मुखथकी ॥ वर० ॥ मांड्यो विवाह मंडाण ॥ मकरो० ॥ उग्रसेन घर बेटडी ॥ वर० ॥ ते

नामें राजुल नार ॥ मकरो० ॥ ३ ॥ जोवुं लगन उतावळुं ॥ वर० ॥ आ
प्या जोशी श्रीफळ हाथ ॥ मकरो० ॥ जीमण लाडू लापशी ॥ वर० ॥
वळी सेवड्यो कंसार ॥ मकरो० ॥ ४ ॥ आढी जलेबी पातळी ॥ वर० ॥
वळी मांहे घेवरनो जाग ॥ मकरो० ॥ खारी पुरीने दहीथरा ॥ वर० ॥ व
ली खाजाने मगदाळ ॥ मकरो० ॥ ५ ॥ लाखण साई हेशमी ॥ वर० ॥
मांहे मोतीचूरनो स्वाद ॥ मकरो० ॥ कूर रांधो कमोदनो ॥ वर० ॥ मां
हे मसूरनी दाळ ॥ सवळ दिवाजाजी ॥ ६ ॥ खारक खजूर नें टोपरा ॥
वर० ॥ वळी चारोळीने द्राख ॥ सवळ० ॥ लवंग सोपारी एलची ॥ वर० ॥
वळी पानना बीडा चार ॥ सवळ० ॥ ७ ॥ सज्जन कुटुंब संतोषीया ॥
वर० ॥ बहु कीधी पेरामणी सार ॥ सवळ० ॥ जान लेई यादव चढ्या ॥
वर० ॥ पाखरीया केकाण ॥ सवळ० ॥ ८ ॥ हाथी रथ शणगारीया ॥
वर० ॥ केशरिया असवार ॥ सवळ० ॥ इंद्र जोवाने आविया ॥ वर० ॥
इंद्राणी गावे गीत ॥ सवळ० ॥ ९ ॥ तोरण आव्या नेमजी ॥ वर० ॥ ते
नें निरखे राजुल नार ॥ सवळ० ॥ रूपचंद रंगें मळ्या ॥ वर० ॥ ए जोवा
सरखी जान ॥ सवळ० ॥ १० ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ढाल छठी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सखी कहे वर शामळो ॥ ए दीसेजी ॥ ते निरखे राजुल नार
हइडुं हींसे जी ॥ काला गयवर हाथीया ॥ ए दी० ॥ वळी कालो मेघ
मलार ॥ हइडुं० ॥ १ ॥ काली अंजन आंखमी ॥ ए दीसेजी ॥ तेनुं मूल
केणे नवि थाय ॥ हइडुं० ॥ काली कस्तूरी कही ॥ ए दीसेजी ॥ काला
कृष्णागरु केश ॥ हइडुं० ॥ २ ॥ रूपचंद रंगें मळ्या ॥ ए दीसे जी ॥
सखि शामळीयो भरतार ॥ हइडुं० ॥ ३ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ढाळ सातमी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पशुअ पोकार सुणी करी । शुध लीधी जी । विचारे श्रीवीतरा
ग । तेणें दया कीधीजी । जो परणुं तो पशु मरे ॥ शु० ॥ मूकी अनुकंपा
जाळ तेणें० ॥ १ ॥ इम जाणी रथ वालीयो ॥ शु० ॥ फेरवतां दीनदयाळ

॥ तेणें० ॥ पशुबंधन सर्व तोमीया ॥ शु० ॥ ते सर्व गया वनमांहे ॥ तेणें० ॥ २ ॥ रूपचंद रंगें मळ्या ॥ शु० ॥ प्रजु दीधुं वरसीदान ॥ तेणें० ॥ ३ ॥

॥ ❋ ॥ ढाल आठमी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ राजिमती धरणी ढळ्या ॥ मोरा वहालाजी ॥ अवगुण विण दीनानाथ ॥ हाथ नजाळ्यो जी ॥ आंगण आवी पाछा वळ्या ॥ मोरा० क्षत्री कुलमां लगावी लाज ॥ हाथ० ॥ १ ॥ तमें पशु तणी करुणा करी ॥ मोरा० ॥ तमने माणसनी नहिं मेर ॥ हाथ० ॥ आठ नव थया एकठा ॥ मोरा० ॥ कीधा तुमशुं रंग रोल ॥ हाथ० ॥ २ ॥ नवमे नवें तमें नेमजी ॥ मोरा० ॥ मुजने कां मेली जाउ ॥ हाथ० ॥ मारी आशा अंबर जेवमी ॥ मोरा० ॥ तमें केम उपामी कंत ॥ हाथ० ॥ ३ ॥ में कूमा कलंक चढाविया ॥ मोरा० ॥ नाख्या अण दीठा आल ॥ हाथ० ॥ में पंखी घाल्या पांजरे ॥ मोरा० ॥ वली जलमां नाखी जाल ॥ हाथ० ॥ ॥ ४ ॥ में साधुने संतापीया । मोरा० । में माय विछोड्या बाल ॥ हाथ० ॥ में कीमी दर उघामियां ॥ मोरा० ॥ मरमना बोल्या बोल ॥ हाथ० ॥ ५ ॥ अणगल पाणी में नरच्या ॥ मोरा० ॥ में गुरुनें दीधी गाल ॥ हाथ० ॥ में कठिण करम कीधा हशे ॥ मोरा० ॥ ते आवी लागा पाप ॥ हाथ० ॥ ॥ ६ ॥ इम करतां राजुल आविया ॥ मोरा० ॥ श्रीनेमीशरनी पास ॥ हाथ० ॥ रूपचंद रंगें मळ्या ॥ मोरा० ॥ राजुल लियो संयम नार ॥ हाथ० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ढाल नवमी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्रीनेम राजीमती एकठा ॥ साहेलमीयां ॥ जइ चढिया श्रीगिरनार । जिनगुण वेलमियां । पूठथी राजुल आवियां ॥ सा० ॥ संजम वती राजकुमार ॥ जिन० ॥ १ ॥ आज्ञा लेइ राजुल एकली ॥ सा० ॥ गिरनार उपर गुफामांहे ॥ जिन० ॥ वाटें जातां वर्षा थई ॥ सा० ॥ नीजाणां राजुलनांचीर ॥ जि० ॥ २ ॥ गुफा मांहे जइ शूकव्या ॥ सा० ॥ लागुं ते काचुं नीर ॥ जिन० ॥ अति सुकुमाल सोहामणुं ॥ सा० ॥ राणी राजीमतीनुं शरीर ॥ जिन० ॥ ३ ॥ रहनेमि तपस्या करे ॥ सा० ॥ देखि राजिमती निचोवे चीर ॥ जिन० ॥ प्रगट थई ते बोलीयो ॥ सा० ॥ नाजी म

करो मन उदास ॥ जिन० ॥ ४ ॥ नेम गयो तो जलुं थयुं ॥ सा० ॥ आप णे करशुं जोग विलास ॥ जि० ॥ उत्तम कुलनो ऊपनो ॥ सा० ॥ तुं बोल वि चारी बोल ॥ जि० ॥ ५ ॥ संयम रत्नने हारीया ॥ सा० ॥ वली कीधी व्रतनी घात ॥ जिन० ॥ रहनेमी तव बोलीयो ॥ सा० ॥ माता रा जीमती उगार ॥ जि० ॥ ६ ॥ नेमीसर कनें मोकल्या ॥ सा० ॥ फरी ली धो संयम जार ॥ जि० ॥ नेम राजुल केवल लई ॥ सा० ॥ पोहोता मु क्ति मझार ॥ जिन० ॥ ७ ॥ पीयु पहेली मुगतें गयी ॥ सा० ॥ राजीम ती तेणि वार ॥ जि० ॥ रूपचंद रंगें मल्या ॥ सा० ॥ प्रनु उतारो जवपार ॥ जिन० ॥ ८ ॥ ❀ ॥ इति नवरसो मं० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दान शील तप जाव चो ढालियो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम जिणेसर पाय नमी । पामी सुगुरुप्रसाद ॥ दान शीय ल तप जावना । बोलिश बहु संवाद ॥ १ ॥ वीर जिणंद समोसरया । रा जग्रही उद्यान । समवसरण देवें रच्युं । बेठा श्रीवर्धमान ॥ २ ॥ बेठीवारे परखदा । सुणवा जिनवर वाण ॥ दान कहे प्रनु हुं वडो । मुजने प्रथम वखाण ॥ ३ ॥ सांजलजो महुको तुमे । कुंण ठे मुज समान अरिहंत दीक्षा अवसरें । आपे पहिलुं दान ॥ ४ ॥ प्रथम पहोर दातारनुं । लीये सहु कोई नाम । दीधांरी देउल चढे । सीजे वंछित काम ॥ ५ ॥ ती र्थंकरने पारणें । कुण करशे मुज होड ॥ वृष्टि करुं सोवन तणी । साढी बाहर कोम ॥ ६ ॥ हुं जग सगलुं वश करुं । मुज मोहोटी ठे वात ॥ कु ण कुण दानथकी तरया । ते सुणजो अवदात ॥ ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल पहेली. ललना कीदेशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धन सारथवाह साधुने । दीधुं घृतनुं दान । ललना । तीर्थंकर पद में दीधुं । तिणे मुजने अजिमान । ललना ॥ १ ॥ दान कहे जग हुं वडो । मुज सरिखुं नहिं कोय ॥ ललना ॥ ऋद्धि समृद्धि सुख संपदा । दानें दोलत होय ॥ ललना ॥ दा० ॥ २ ॥ सुमुख नामें गाथापति । पमिलाज्यो अणगार ॥ ललना ॥ कुमर सुबाहु सुख लह्यां । तेनो मुज उपगार ॥ ललना ॥ दा० ॥ ३ ॥ पांचशें मुनिने पारणुं । देतो बोहोरी आण ॥ ल

लना ॥ भरत थयो चक्रवर्त्ति भलो । ते पण मुझ फल जाण ॥ ललना ॥ दा० ॥ ४ ॥ माश खमणने पारणें । पडिलाभ्यो ऋषिराय ॥ ललना ॥ शालिभद्र सुख भोगवे । दान तणे सुपसाय ॥ ललना ॥ दा० ॥ ५ ॥ आप्या उम्दना बाकुला । उत्तम पात्र विशेष ॥ ललना ॥ मूलदेव राजा थयो । दानतणां फल देख । ललना ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रथम जिणेसर पारणें । श्री श्रेयांस कुमार । ललना । सेलडीरस वहरावीयो । पाम्यो भवनो पार । ल लना ॥ दा० ॥ ७ ॥ चंदनबाला बाकुला । पडिलाभ्या महावीर । ललना । पंचदिव्य परगट थया । सुंदररूप शरीर ॥ ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूरव भव पारेवडुं । शरणे राख्युं सूर ॥ ललना ॥ तीर्थंकर चक्रवर्त्ति पणें । प्रगट्यो पुण्यपडूर । ललना ॥ दा० ॥ ९ ॥ गजभवें शशलो राखियो । करुणा कीधी सार ॥ ललना ॥ श्रेणिकनें घर अवतर्‍यो । अंगज मेघ कुमार ललना ॥ दा० ॥ १० ॥ एम अनेक में उध्धर्‍या । कहतां नावे पार ॥ ललना ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी । मुझ पहिलो अधिकार ललना ॥ दा० ॥ ११ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ शील कहे सुण दान तुं । किस्यो करे अहंकार । आडंबर आठे पहोर । याचकशुं व्यवहार ॥ १ ॥ अंतराय वलि ताहरे । भोग करम संसार । जिनवर कर नीचा करे । तुझने पडो धिक्कार ॥ २ ॥ गर्व मकर रे दान तुं । मुझ पुठें सहु कोय । चाकर चाले आगले । तो शुं राजा होय ॥ ३ ॥ जिन मंदिर सोना तणुं । नवुं निपावे कोय । सोवन कोडी दान दिये । शीयल समुं नहि कोय ॥ ४ ॥ शीलें संकट सविटलें । शीलें जश सोभाग ॥ शीलें सुर सानिध करे । शीयल वडो वैराग ॥ ५ ॥ शीलें सर्प न आभडे । शीलें शीतल आग । शीलें अरि करी केशरी । भय जाये सवि भाग ॥ ६ ॥ जनम मरणना भयथकी । में वो डाव्या अनेक । नाम कहुं हवे तेहना । सांभलजो सुविवेक ॥ ७ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ढाल बीजी ॥ पास जिणंद जुहारियें ए देशी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ शील कहे जग हुं वडो । मुझ वात सुणो अति मीठीरे ॥ लाभच लावे लोकनें । में दान तणी वात दीठीरे ॥ शी० ॥ १ ॥

कलह कारण जग जाणीयें । वली विरति नही पण कांइरे । ते नारद में सीझव्या । मुझ ज्ञुत्ते ए अधिकाईरे ॥ शी० ॥ २ ॥ त्रांहे पहेरच्या बेरखा । शंखराजायें दूषण दीधोरे । काप्यो हाथ कलावती । ते में नवपल्लव कीधोरे ॥ शी० ॥ ३ ॥ रावण घर शीता रही । तो रामचंद्रें घर आणीरे । शीतानुं कलंक उतारीयुं । में पावक कीधो पाणीरे ॥ शी० ॥ ४ ॥ चंपा बार उघाड्वा । वली चालणीयें काढ्युं नीरोरे । सतीय सुभद्रा जश थयो । में तस कीधी भीरोरे ॥ शी० ॥ ५ ॥ राजा मारण मांडियो । राणी अभयायें दूषण दाख्योरे । शूली सिंहासन में कीयो । में शेठ सुदर्शन राख्योरे ॥ शी० ॥ ६ ॥ शील सन्नाह मंत्रीसरें । आवतां अरिदल थंभ्योरे । तिहां पण सानिधमें करी । वली धरम कारज आरंभ्योरे ॥ शी० ॥ ७ ॥ पहिरण चीर प्रगट किया । में अष्टोत्तरशो वारोरे । पांडव नारी द्रोपदी । में राखी माम उदारोरे ॥ शी० ॥ ८ ॥ ब्राह्मी चंदन बालिका । वली शीलवती दमदंतीरे । चेडानी साते सुता । राजिमती सुंदरी कुंतीरे ॥ शी० ॥ ९ ॥ इत्यादिक में उद्धरया । नर नारीनां वृंदोरे । समयसुंदर प्रभु वीरजी । पहिले मुझ आणंदोरे ॥ शी० ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तप बोल्युं त्रटकी करी. दाननें तुं अवहील ॥ पण मुझ आगल तुं किस्युं । सांभलरे तुं शील ॥ १ ॥ सरसा भोजन तें तज्या । न गमे मीठा नाद । देह तणी शोभा तजी । तुझमां किस्यो मवाद ॥ २ ॥ नारीयकी भरतो रहे । कायर किस्युं वखाण । कूड कपट बहु केलवी । जिम तिम राखे प्राण ॥ ३ ॥ को विरलो तुझ आदरे । ठंगी सहु संसार । आप पक तुं भांजतो । बीजा भांजे चार ॥ ४ ॥ करम निकाचित तोडवा । भांजुं भव भय भीम । अरिहंत मुझनें आदरे । वरश छमाशी सीम ॥ ५ ॥ रुचक नंदीसर ऊपरें । मुझ लब्धें मुनि जाय । चैत्य जुहारे शाश्वता । आनंद अंग न माय ॥ ६ ॥ मोहोटा जोयण लाखना । लघु कुंथु आकार । हय गय रथ पायक तणां । रुप करे अणगार ॥ ७ ॥ मुझ फल फरसे उपशमे । कुष्टादिकना रोग । लब्धि अठावीश ऊपजे । उत्तम तप संजो

ग ॥ ८ ॥ जे में तारया ते कहुं । सुणजो मन उल्लास । चमत्कार चित्त पामशो । देशो मुझ शाबास ॥ ९ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ढाल त्रीजी ॥ नणदलनी देशी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दृढप्रहार अति पापीयो । हत्या कीधी चार हो । सुंदर । ते पण तिण नव उधरयो । मूंक्यो मुक्तिमझार हो ॥ सुंदर ॥ १ ॥ तप सारिखुं जगको नही । तप करे कर्मनुं सूमहो ॥ सुंदर ॥ तप करवुं अति दोहिलुं । तपमां नहीको कूम हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ २ ॥ सात माणस नित मारतो । करतो पाप अघोर हो ॥ सुंदर ॥ अर्जुनमालीमें उधरयो । छेद्या कर्म कठोर हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ३ ॥ नंदीषेणनें में कियो । स्त्रीवल्लन वसुदेव हो ॥ सुंदर ॥ बहुत्तर सहस अंतेउरी । सुख जोगवे नित्यमेव हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ४ ॥ रूप कुरूप कालो घणों । हरिकेशी चंडाल हो ॥ सुंदर ॥ सुर नर कोमी सेवा करे । ते में कीधी चाल हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ५ ॥ विष्णुकुमर लब्धें कियुं । लाख जोयणनुं रूप हो ॥ सुंदर ॥ श्रीसंघ केरे कारणें । ए मुझ शक्ति अनूप हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ६ ॥ अष्टापद गोतम चढ्या । वांद्या जिन चोवीश हो ॥ सुंदर ॥ तापस पण प्रतिबूझव्या तेणें मुझ अधिक जगीश हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ७ ॥ चौद सहस अणगारमां । श्री धन्नो अणगार हो ॥ सुंदर ॥ वीण जिणंद वखाणीयो । ए पण मुझ अधिकार हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ८ ॥ कृष्ण नरेसर आगले । दुक्कर कार कहाय हो ॥ सुंदर ॥ ढंढण नेमी प्रशंसीयो । मुझ महिमा सवि तेह हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ९ ॥ नंदीषेण वोहोरण गयो । गणिकायें कीधी हास हो ॥ सुंदर ॥ वृष्टि करी सोवन तणी । में तसु पूरी आश हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ १० ॥ एम बलनद्र प्रमुख बहु । तारया तपसी जीव हो ॥ सुंदर ॥ समय सुंदर प्रनु वीरजी । पहिलो मुझ प्रस्तावहो ॥ सुंदर तप० ॥ २

॥ ❋ ॥ ढाल चौथी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नाव कहे तप तुं किशुं । ऊेमयुं करे कषाय । पूर्व कोमी जो तप तपे । क्षणमां खेरू थाय ॥ १ ॥ खंधक आचारज प्रते । तें बाल्यो सवि देश । अधिक नियाणुं तुं करे । क्षमा नही लव लेश ॥ २ ॥ द्वीपाय

न ऋपि दूहव्या। सांब प्रद्युम्न सनाह। ते तत्र क्रोध करी तिहां। कीधो द्वारिका दाह ॥ ३ ॥ दान शीयल तप सांभलो। मकरो फुठ गुमान। जो क सहुको साखदे। धर्में भाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नपुंसक ठो त्रणे। छे व्याकरण ते साख। काम सरे नहि कोइनुं। भाव भणे में पाख ॥ ५ ॥ रस विण कनक न नीपजे। जल विण तरुअर वृद्धि। रसवति रस न हि लवण विण। तिम गुरु विण नहि सिद्धि ॥ ६ ॥ मंत्र यंत्र मणि औषधी। देव धर्म गुरु सेव। भाव विना ते सवि वृथा। भाव फले नितमेव ॥ ७ ॥ दान शील तप जे तुमें। निज निज कह्या वृत्तंत। तिहां जो भाव न हुंत तो। कोइ सिद्धी नवि हुंत ॥ ८ ॥ भाव कहे में एकले। तारथा बहु नर नार। सावधान थइ सांभलो। नाम कहुं निरधार ॥ ९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल चोथी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कानन मांहे काउसग्ग रह्योरे। प्रसन्नचंद ऋपिराय। ते में कीधो केवलीरे। ततक्षण करम खपाय ॥ १ ॥ सोभागी सुंदर। भाव वडो संसार। ए तो बीजो गुरु परिवार ॥ सो० ॥ दानादिक विण एकलोरे। पोहोंचाडुं भवपार ॥ सो० ॥ २ ॥ (ए आंकणी) वंश उपर चढी खेलतोरे एलापुत्र अपार। केवल ज्ञानीमें कियोरे। प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो० ॥ ३ ॥ भूख तृषा खमें अति घणीरे। करतो कूर आहार। केवल मांहि मा सुर करेरे। कूरगडु अणगार ॥ सो० ॥ ४ ॥ लालचथी लोभ वाधे घणोरे। आण्यो मन वेराग। कपिल थयो मुनि केवलीरे। ते गुरुनें सोभाग ॥ सो० ॥ ५ ॥ श्रेणिका सुत गलनो धणीरे। क्षीणजंघा बलि जाण। कीधो अंतगड केवलीरे। गंगाजल गुणखाण ॥ सो० ॥ ६ ॥ पन्नरसें तापस भणीरे। दीधी गोतमें दिक्ख। ततक्षण कीधा केवलीरे। जां गुरु मानी शीख ॥ सो० ॥ ७ ॥ पालक पापीयें पीलियारे। खंधक सूरिना शिष्य। जनम मरणथी छोडव्यारे। आपे गुरु आशीष ॥ सो० ॥ ८ ॥ चंड रुद्रनें चालतांरे। दीधो दंडप्रहार। नव दीक्षित थयो केवलीरे। ते गुरु पण तेणी वार ॥ सो० ॥ ९ ॥ धन रथ कारक साधुनेरे। पडिलाभ्यो उल्लास। मृगलो भावना भावतोरे। पोहोतो स्वर्ग आवास ॥ सो० ॥ १० ॥ निज

अपराध खमावतीरे। मुंक्यो मनथी मान। मृगावतीने में दियुंरे। निर्मल केवल ज्ञान॥ सो० ॥ ११ ॥ मरुदेवी गज ऊपरेंरे। देखी पुत्रनी ऋद्ध। मुऊनें मनमांहे धरच्योरे। ततक्षण पामी सिद्ध॥ सो० ॥ १२ ॥ वीर वंदन चाल्यो मारगेंरे। चांप्यो चपल तुरंग। दर्दुरनामें देवतारे। तेह थयो मुऊ संग॥ सो० ॥ १३ ॥ प्रनुपाय पूजन नीसरीरे। डुर्गला नामें नार। काल धर्म्म विचमां करीरे। पोहोती स्वर्ग मऊार॥ सो० ॥ १४ ॥ कायानी शोज्ञा कारिमीरे। रूप किसुं अज्ञिमान। न्नरत आरीशा ज्ञुवनमांरे। पाम्यो केवल ज्ञान॥ सो० ॥ १५ ॥ आषाढज्ञूति कलानिलोरे। प्रगट्यो न्नरत सरूप नाटक करतां पामियोरे। केवलज्ञान अनूप॥ सो० ॥ १६ ॥ दिक्षा दिन काउसग्ग रह्योरे। गजसुकुमाल मशाण॥ सोमल शीश प्रजालियुंरे। सिद्धि गयो शुज्ञ जाण॥ सो० ॥ १७ ॥ गुणसागर थयो केवलीरे। सांज्ञली पृथिवी चंद। पोतें केवल पामियोरे। सेवकरे सुर इंद्र॥ सो० ॥ १८ ॥ एम अनेकमें उद्धर्यारे। मूंक्या शिवपुर वास। समयसुंदर प्रभु वीरजीरे। मुऊने प्रथम प्रकाश॥ सो० ॥ १९ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ वीर कहे तुमे सांज्ञलो। दान शीयल तप न्नाव। निंदा छे अति पापिणी। धर्म कर्म प्रस्ताव॥ १ ॥ पर निंदा करतां थकां। पापें पिंम न्नराय। वेढ राढ वाधे घणी। डुर्गति प्राणी जाय॥ २ ॥ निंदक सरिखो पापियो। ज्ञूंमो कोई न दिठ। वलि चंमाल समो कह्यो। निंदक वदन अदिठ॥ ३ ॥ आदि प्रशंसा आपणी। करतो इंद नरिंद। लघुता पामे जो कर्मां। नासे निजगुण वृंद॥ ४ ॥ को केहनी म करो तुमे। निंदा ने अहंकार। आप आपणे ठामें रहो। सहुको न्नलो संसार॥ ५ ॥ तो पण अधिको न्नाव छे। एकाकी समरत्थ। दान शीयल तप त्रणे न्नलां। पण न्नाव विना अयकत्थ॥ ६ ॥ अंजन आंखें आंजतां। अधिको आणी रेख। रजमांही तज काढतां। अधिको न्नाव विशेष॥ ७ ॥ न्नगवंत हठ न्नंजण न्नणी। चारे समान गणंत। चार करी मुख आपणां। चउविध धर्म न्नणंत॥ ८ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल पांचमी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीर जिणेसर इम भणें रे। बेठी परखदा बार। धर्म करो तुमे प्राणिया रे। जिम पामो भव पाररे। धर्म हीये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चार प्रकारो रे। भवियण सांभलो। धर्म मुक्ति सुख कारो रे ॥ धर्म० ॥ (ए आंकणी) धर्मथकी धन संपजे रे। धर्मथकी सुख होय। धर्मथकी आरति टले रे। धर्म समो नहिं कोयरे ॥ धर्म० ॥ २ ॥ दुर्गति पडतां प्राणीया रे। राखे श्री जिनधर्म। कुटुंब सहुको कारीमुंरे। मत भूलो भवि भर्म रे॥ धर्म० ॥ ३ ॥ जीव जिके सुखिया हुआरे। वली होवे होसी जेह ते जिनवरना धर्मथी रे। मत कोई करो संदेह रे॥ धर्म० ॥ ४ ॥ सोलशें बासठ समेरे। सांगानेर मझार ॥ पद्मप्रभु सुपसाउलेरे। एह भाण्यो अधिकार रे ॥ धर्म० ॥ ५ ॥ सोहम सामी परंपरा रे। खरतर गछ कुलचंद। युगप्रधान जग परगडोरे। श्री जिनचंद सूरीस रे॥ धर्म० ॥ ६॥ तास शिष्य अतिदीपतो रे। विनय वंत जशवंत। आचारिज चढती कला रे। जिन सिंह सूरिमहंत रे॥ धर्म० ॥ ७॥ प्रथम शिष्य श्री पूज्यनारे। सकलचंद तस शिष्य। समयसुंदर वाचक भणें रे। संघ सदा सुजगीस रे॥ धर्म० ॥ ८ ॥ दान शील तप भावना रे। सरस रच्यो संवाद। भणतां गुणतां भावशुं रे। ऋद्धि समृद्धि सुप्रशादो रे॥ धर्म० ॥ ९ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ चक्रेश्वरी देवी आरती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जय जय आरति देवी तुमारी। नित्य प्रणमुं हुं तुम चरणारी जय० ॥ १ ॥ श्री सिद्धाचलगिरि रखवाली। नाम चकेसरी जग सोख्याली ॥ जय० ॥ २ ॥ सुविहित गछनी शासन देवी। सकल श्री संघने सुख करवी ॥ जय० ॥ ३ ॥ निलवट टीलडी रत्न विराजे। काने कुंडल दोय रवि शशि गाजे ॥ जय० ॥४॥ बांहे बाजुबंध बेरखा सोहे। नौलवर्ण सहु जन मन मोहे ॥ जय० ॥ ५ ॥ सोवन मय नित्य चूडी खलके। पाये नूपरना घम घम घमके ॥ जय० ॥ ६ ॥ वाहन गरुड चड्या सहु प्रेमें। तुझ गुण पार न पामुं केमें ॥ जय० ॥ ७ ॥ चूनडी जमामां देह अति दीपे। नवसरा हार जग सहु जीपे ॥ जय० ॥ ८ ॥ नित नित मानी

अपराध खमावंतीरे। मुंक्यो मनर्थी मान। मृगावतीने मैं दियुंरे। निर्मल केवल ज्ञान ॥ सो० ॥ ११ ॥ मरुदेवी गज ऊपरेंरे। देखी पुत्रनी ऋद्ध। मुझनें मनमांहे धरयोरे। ततक्षण पामी सिद्ध ॥ सो० ॥ १२ ॥ वीर वंदन चाल्यो मारगेंरे। चांप्यो चपल तुरंग। दर्दुरनामें देवतारे। तेह थयो मुझ संग ॥ सो० ॥ १३ ॥ प्रनुपाय पूजन नीसरीरे। दुर्गला नामें नार। काल धर्म्म विचमां करीरे। पोहोती स्वर्ग मझार ॥ सो० ॥ १४ ॥ कायानी शोना कारिमीरे। रूप किसुं अनिमान। नरत आरीशा नुवनमांरे। पाम्यो केवल ज्ञान ॥ सो० ॥ १५ ॥ आषाढनूति कलानिलोरे। प्रगट्यो नरत सरूप नाटक करतां पामियोरे। केवलज्ञान अनूप ॥ सो० ॥ १६ ॥ दिक्षा दिन काउसग्ग रह्योरे। गजसुकुमाल मशाण ॥ सोमल शीश प्रजालियुंरे। सिद्धि गयो शुन जाण ॥ सो० ॥ १७ ॥ गुणसागर थयो केवलीरे। सांनली पृथिवी चंद। पोतें केवल पामियोरे। सेवकरे सुर इंद्र ॥ सो० ॥ १८ ॥ एम अनेकमें नक्ष्रयारे। मूंक्या शिवपुर वास। समयसुंदर प्रभु वीरजीरे। मुझने प्रथम प्रकाश ॥ सो० ॥ १९ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ वीर कहे तुमे सांनलो। दान शीयल तप नाव। निंदा छे अति पापिणी। धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ पर निंदा करतां थकां। पापें पिंम नराय। वेढ राढ वाधै घणी। दुर्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक सरिखो पापियो। नूंमो कोई न दिठ। वलि चंमाल समो कह्यो। निंदक वदन अदिठ ॥ ३ ॥ आदि प्रशंसा आपणी। करतो इंद नरिंद। लघुता पामें लो कमां। नासे निजगुण वृंद ॥ ४ ॥ को केहनी म करो तुमे। निंदा ने अहंकार। आप आपणे ठामें रहो। सहुको नलो संसार ॥ ५ ॥ तो पण अधिको नाव छे। एकाकी समरत्थ। दान शीयल तप त्रणे नलां। पण नाव विना अयकत्थ ॥ ६ ॥ अंजन आंखें आंजतां। अधिको आणी रेख। रजमांही तज काढतां। अधिको नाव विशेष ॥ ७ ॥ नगवंत इंड नंजण नणी। चारे समान गणंत। चार करी मुख आपणां। चउविध धर्म नणंत ॥ ८ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ॥ ढाल पांचमी ॥ ॥

॥ ॥ वीर जिणेसर इम भणे रे। बेठी परखदा बार। धर्म करो तु मे प्राणिया रे। जिम पामो भव पाररे। धर्म हीये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चार प्रकारो रे। भवियण सांभलो। धर्म मुक्ति सुख कारो रे ॥ धर्म० ॥ (ए आंकणी) धर्मथकी धन संपजे रे। धर्मथकी सुख होय। धर्मथकी आरति टले रे। धर्म समो नहिं कोयरे ॥ धर्म० ॥ २ ॥ दुर्गति पड़तां प्राणीया रे। राखे श्री जिनधर्म। कुटुंब सहुको कारीमुंरे। मत भूलो भवि भर्म रे॥ धर्म० ॥ ३ ॥ जीव जिके सुखिया हूआरे। वली होवे होसी जेह ते जिनवरना धर्मथी रे। मत कोई करो संदेह रे॥ धर्म० ॥ ४ ॥ सोलशें छासठ समेंरे। सांगानेर मझार॥ पद्मप्रभु सुपसाउलेरे। एह भण्यो अधिकार रे ॥ धर्म० ॥ ५ ॥ सोहम सामी परंपरा रे। खरतर गछ कुलचंद। युगप्रधान जग परगडोरे। श्री जिनचंद सूरीस रे॥ धर्म० ॥ ६॥ तास शिष्य अतिदीपतो रे। विनय वंत जशवंत। आचारिज चढती कला रे। जिन सिंह सूरिमहंत रे॥ धर्म० ॥ ७॥ प्रथम शिष्य श्री पूज्यनारे। सकलचंद तस शिष्य। समयसुंदर वाचक भणे रे। संघ सदा सुजगीस रे॥ धर्म० ॥ ८ ॥ दान शील तप भावना रे। सरस रच्यो संवाद। भणतां गुणतां भावशुं रे। ऋद्धि समृद्धि सुप्रशादो रे॥ धर्म० ॥ ९ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ॥

॥ ॥ चक्रेश्वरी देवी आरती ॥ ॥

॥ ॥ जय जय आरति देवी तुमारी। नित्य प्रणमुं हुं तुम चरणारी जय० ॥ १ ॥ श्री सिद्धाचलगिरि रखवाली। नाम चक्केसरी जग सोख्याली ॥ जय० ॥ २ ॥ सुविहित गछनी शासन देवी। सकल श्री संघने सुःख करेवी ॥ जय० ॥ ३ ॥ निलवट टीलडी रत्न बिराजे। काने कुंडल दोय रवि शशि छाजे ॥ जय० ॥४॥ बांहे बाजुबंध बेरखा सोहे। नीलवर्ण सहु जन मन मोहे ॥ जय० ॥ ५ ॥ सोवन मय नित्य चूडी खलके। पायें घूघरखा घम घम घमके ॥ जय० ॥ ६ ॥ वाहन गरुड चढ्या बहु प्रेमें। तुझ गुण पार न पामुं केमें ॥ जय० ॥ ७ ॥ चूनडी जमामां देह अति दीपे। नवसरा हार जग मद्द जीपे ॥ जय० ॥ ८ ॥ नित नित मानी

आरती उतारे। रोग सोग जय दूर निवारे ॥ जय० ॥ ९ ॥ तस घर पुत्र पुत्रादिक गाजे। मन वंछित सुख संपद राजे ॥ जय० ॥ १० ॥ देवचंद्र मुनि आरति गावे। जय जय मंगल नित्य वधावे ॥ जय० ॥ ११ ॥

॥ ❀ ॥ बीकानेर, श्री कुंथुंजिनचैत्यप्रतिष्ठा स्त० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दादा चिरंजीवो० ॥ (इस चालमें) ॥ ❀ ॥ आज हर्ष भयो त्रिभुवन नायक कुंथु जिनेसर भेटिया ॥ (आ०) प्रभु मस्तक मुगट बिराजैछे। रविजिम कुंमलयुग छाजे छे। गुण सगला अंग समाजे छे ॥ (आ०) ॥ १ ॥ प्रभु चौतीश अतिशय धारक छे। वांणीना गुण बिस्तारक छे। सहु देवेंद्र जिणना पायक छे ॥ (आ०) ॥ २ ॥ प्रभु सिंहासण पर सोहैछे। जसु छत्रचामर शिर होवे छे। भवियणना मनकुं मोहे छे (आ०) ॥ ३ ॥ प्रभु ध्यांनें जे होय रंग राता। ते पामें नवनिधि सुखशाता। अवसानें मुक्तिपुरी पाता (आ०) ॥ ४ ॥ प्रभु कुगुरु कुदेवकुं मैं ध्यायो। जब काल अनादी दुखपायो। अबतो तुम शरणें हुं आयो (आ०) ॥ ५ ॥ प्रभु बिरुध तुह्मारा चित धरनें। भव भय टालो सुनिजर करनें। जिम जगमें सहु जस तुम वरनें (आ०) ॥ ६ ॥ संवत उगणीसै इकतीशै। जेठ उज्वल दशमी मन हींसै। करी चैत्य प्रतिष्टा शुभ दीसै। (आ०) ॥ ७ ॥ प्रभु आज सफल भयो दिन मेरो। रवि जिम प्रगट्या बीकानेरो। सहु आनंदकारक संघ तेरो (आ०) ॥ ८ ॥ जिन हंस सूरीश्वर महाराजा। थाप्या अतिशय धर जिनराजा। गुरु लक्ष्मीप्रधांन सेवणकाजा (आ०) ॥ ९ ॥ ❀ ॥

इति विक्रमपुर मध्ये श्री कुंथुनाथ जी चैत्यप्रतिष्ठा स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीशीतल जिन स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (श्रीशंखेसर पाशजिनेसर) ॥ (इस चालमें) ॥ ❀ ॥

श्रीशीतल जिनचंद अनंत गुणाकरू। महा गोप महामाहण जगपति सुख करू। जगगुरु जगदाधार शरण तोरै सदा। रहतां स्वपनमें दुक्ख पांमुं नहीं हुं कदा ॥ १ ॥ तूंही चिदानंद देव तूंही मुझ गुरु अछे। तूंही तात तुंही मात तूं ही बंधवअछे। कांम धेनुं चिंतामणि सुरतरु तुं सही। अक्षय

सुख दातार तुं ही पायो मही ॥ २ ॥ तुमनांमें अठसिद्ध नवे निध पाइये । दिन २ बदतो तेज कीरति जगत्ताइये । इंद नरिंद सहू वस होय तुम सेव तां । उछव आनंद होय सहूगुण केवतां ॥ ३ ॥ तप जप संजम भार कहू नहीं वणसके ॥ बहुल कर्मके जोर चित नहिं रहसके । जो आतम गुण ग्यांन प्रगट होय माहरो । तो पांमुं सहु भेद त्रिनकमें ताहरो । ब्रह्मा विष्णु महेश जाणुं मुझ सारखा । वीतरागतुं देव करीमें पारखा । दीनदयाल दया निधि शिवसुख दीजिये । मोहन निजगुण पाय एही जश लीजिये

इति जगन्मण्मण श्रीशीतलजिन स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (श्रीसंखेसर पाश०) (और) नदी जमुनाके तीर उडे दोय पंखिया । (म्हांरा लाल ज०) इस चालमें ॥ ❀ दृढरथ नंदानंद पूरण अतिशय धरु । वदन कमलको तेज देखी छिपे दिन करू । अंग उपांग लक्षण दीसे सहु दीपता । रूपे सुर नर इंद सहुकुं जीपता ॥ १ ॥ मुगट कुंडल गलहार बाजूबंध सोहता । वक्षस्थल श्रीवछ तिलक मनमोहता । छत्र चामर भामंडल गुण सहु फरसना । अणियाला दोय नेत्र अमीरस वरसता ॥ २ ॥ देव भुवन जिम चैत्य बणायो बहु भावसें । देखी प्रफुल्लित होय सहु गुण दावसें । अनुपम महमा देखि चित्त अति मोहियो । आनंद अधिक अपार हियामें सोहियो ॥ ३ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म सेव्यो बहुकालमें । मोह मिथ्यातके जोर पड्यो बहुजालमें । पूरण पुन्य हिव जोग प्रभु दरशण मिल्यो । भव भय संकट दुक्ख सहू निश्चे टल्यो ॥ ४ ॥ तारण भवजल मांहि शीतल प्रभु जाणियो । तुम गुण अपरंपार हिया में पिछांणियो । शिवसुख लक्ष्मी प्रधान सेवक बही भणी । मोहन प्रभु सुख कंद मिले शीतल धणी ॥ ५ ॥ ❀ ॥

इति कलकत्तामंमण श्री शीतलनाथजी स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ताल ठुमरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वीरप्रभु तेरी दोस्तीमें । मेरा सुपना गया मेहरवान भईरे ॥ (वी०) आप नहीं आवे बाथा पठावे । तेरी सुरत कुरबांन भईरे ॥ (वी०)

॥ १ ॥ शासन नायक एही अरज है । दीजे-दरश वमी वेर नईरे (वी०)॥२॥ आश दाशकी पूरन कीजे । चरण शरण लपटाइ रहीरे (वी०) ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन जीसें मोरी० (इस चालमें) ॥ सदा सहाई शांति जिनेसर नवडुख दूर गमाय (नलांजी नला नव०) । विश्वशेनके कुलमें सुर तरु । अचिराके नंद कहाय (न०) । जनम नूमि हथणा पुर जाके । मृग लंबन सुख दाय (न० ॥ १ ॥ स०) ॥ तीश अधिक दश धनुष प्रमाणें । काया कंचन सोनाय (न०) कुरुवंश कुल लाख बरश स्थित । केवल ग्यांन बरदाय (न० ॥ २ ॥ स०) गर्न थकां प्रनु शांति करी जब । शांति नाथ पद पाय (न०) नव नव नमतां शरणें आयो । अबतो करियै सहाय (न० ॥ ३ ॥ स०) ज्युं पारेवा ऊपर तुमनें । करुणा अधिक कराय (न०) परतिख प्रनुपुर कलि कत्तामें । सहु जन वांबित दाय (न० ॥ ४ ॥ स०) मुक्तिकमल कहै शिवसुख दायक । संकट दूर पुलाय (न० ॥ ५ ॥ स०) इति कलिकत्ता मंमन श्री शांतिनाथजी स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रनुजीकी महमा अजव वनीजी मारो मनमो लियोरे लोनाय (नलां जी प्रनु मनडोलियोरे लोनाय जी) । विश्वशेन अचराजीके नंदा । शांतिनाथ मन नाय (न० प्र०) मस्तक मुगट काने युग कुंमल । उर अंगियां रही गय (नलां० प्र०) ॥ १ ॥ मोहनी मूरत सोहनी सूरत सहु जनकूं सुखदाय । नाम ग्रहण करतां जिनजीको । सुरगण पर्फे सहु पाय (नलां० प्र०) ॥ २ ॥ ईत उपद्रव डुख सहु टाले । नित प्रति मंगल थाय (न०) मुक्तिकमल कहै सुरतरु सरिखा । मनवंबित फल दाय (नलां० प्र०) ॥ ३ ॥ इति द्वितीय शांतिनाथजी स्तवनम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ काती महोत्सव वधाई लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रथ चढ जाउ नंदन आवत है । (इस चालमें) ॥ ❀ ॥ आज नगरमें हरख वधाई । समवसरण प्रनु आवतहै । (आ०) धरम

जिनेशर जग परमेशर । शांति सूरत मनभावतहै (आ०) ॥ १ ॥ अनुपम रयण जडी उर अंगियां । मुगट कुंडल चित्त चावत है (आ०) ॥ २ ॥ छत्र चामर भामंडल दीपत । नवसर हार सुहावन है (आ०) ॥ ३ ॥ सरदशशि मुख कमल विराजत । रविजिम तेज फेलावत है (आ०) ॥ ४ ॥ नर नारी सहु अंग आभूषण । लुल लुल शीश नमावत है (आ०) ॥ ५ ॥ मणि मुगता फल अक्षत श्रीफल । भर भर थाल वधावत है (आ०) ॥ ६ ॥ वीणा मृदंग ताल कंसाला । मधुर ध्वनी गुण गावत है ॥ ७ ॥ सहुपुर इंद्र धजा अति दीपत । विविध वाजित्र सुहावत है ॥ ८ ॥ इत्यादिक आडंबर बहुविध । कहतां पार न आवत है ॥ ९ ॥ (आ०) कार्त्तिक सुद पूनम दिन उछव । देख सहु सुख पावत है (आ०) ॥ १० ॥ धन्यभाग कलिकत्ता पुरमें । मोहन प्रभु गुण गावत है । (आ०) ॥ ११ ॥ इति कलकत्ता कार्त्तिक महोछव वर्णन श्रीअरमनाथ स्वामी वधाई सं० ॥

॥ ❀ ॥ अथ शासन नायक वधाई ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (केशरियानें लाजको लोक० इस चालमें ॥ ❀ ॥

हमारे आज आनंद वधाई । प्रभु वीरचरण सुखदाई । (हमारे आज आनंद वधाई) सिद्धारथ नंदन जगवंदन । त्रिशला मात कहाई । कुखी कुंडमें जन्म लियो है । सुर नर आवे धाई (ह० आ०) ॥ १ ॥ कंचन वरण अधिक तन सोभित । लंछन व्याघ्र सुहाई । तीन ग्यान संयुत प्रभु कहिये । भवियणकुं सुखदाई (ह० आ०) ॥ २ ॥ केवल पाय सखी सुरसंगे । पावा पुरमें आई । समवसरण विच देशनादेतां । परखदा बार बनाई (ह० आ०) ॥ ३ ॥ भूमंडल विच बहुत जीवकुं । भवजल पार लंघाई । चरम चोमासि पावा पुरि करके । शिवपुर पंथ सिधाई (ह० आ०) ॥ ४ ॥ चोरासी लख जोनीमें फिरतां । काल अनादि गमाई । पुन्य संयोगे प्रभु तुम भेट्या । पातिक दूर पुलाई (ह० आ०) ॥ ५ ॥ तारण तरण जगतिजन वछल । सिवरमणी वरदाई । लछमी प्रधान सेवे कर जोरी । मोहन कहै सुखपाई (ह०) ॥ इति वधाई संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्रावककी करणी लि० ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्रावक तूं ऊठे परन्नात । च्यारघमी ले पिछलीरात । मनमें स मरे श्री नवकार । जिम लाभै नवसायर पार ॥ १ ॥ कवण देव कवण गुरुधर्म । कवण हमारे छे कुलकर्म । कवण हमारे छै व्यवसाय । एहवो चिंतवजे मन मांह ॥ २ ॥ सामायक लेजे मनशुद्धि । धरम तणी धरी हि यमै बुद्धि । पडिकमणो कर रयणी तणो । पातक आलोए आपणो ॥ ३ ॥ काया सगति करे पच्चखाण । सूधी पाले जिनवर आंण । नण जे गुण जे तवन सिझाय । जिण हुंती निसतारो थाइ ॥ ४ ॥ चीतारे नित चनदे नेम । पाले दया जीवें तां सीम । देहरै जाय जुहारे देव । द्रव्यत नावित कर जे सेव ॥ ५ ॥ पोशाले गुरु वंदन जाय । सुणे वखाण सदा चितलाय । निरदूषन सूझतो आहार । साधानें दीजे सुविचार ॥ ६ ॥ साहमी बछल करि जे घणा । सगपण मोटा साहमी तणा । दुखिया हीणा दीना देख । करि जे तास दया सु विसेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारै दीजे दान । मोटासूं मकरे अन्निमान । गुरुनें मुख लेजे आखमी । धरम न मेल्हे एका घडी ॥ ८ ॥ वारूशुद्ध करे व्यापार । उंगा अधिकानों परिहार । मनरे केहनी कूमी साष । कूमासोंस कथन मत नाष ॥ अनंतकाय कहियै बत्तीस अन्नक्ष वावीसे विसवा वीश । ते नक्षण न करी जै किमैं । काचा कवला फल मत जिमें ॥ १० ॥ रात्री नोजननो बहु दोष । जाणीनें करिजे सं तोष । साजी साबू लोहने गुली । मधु धाहडी मवेचे वली ॥ ११ ॥ वलि मकरावे रंगण पाम । दोषण घणा कह्या छै तास । पाणी गल जे वे वे वार । अणगल पीयां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करे जतन्न । पात क छोडी करिजे पुन्न । छाणां इंधण चूल्हे जोय । वावर जे जिम पाप न होइ ॥ १३ ॥ घृतनीपर वावर जे नीर । अणगल नीर मधोए चीर । बारे व्रत सूधा पाल जे । अतीचार सगला टाल जे ॥ १४ ॥ कहिया पनरे क रमा दान । पाप तणी पर हरि जे खान । शीश मलेजे अनरथ दंड । मि थ्या मेल मनरिजे पिंड ॥ १५ ॥ समकित शुद्ध हीयमै राख जे । बोल विचारीनें नाख जे । उत्तम ठामें खरचे वित्त । परउपगार करे शुन्नचित्त

॥ १६ ॥ तेल तक घृत दूधनें दही। उघाडा मतमेले सही । पांचे तिथ मक्के आरंभ । पाले शील तजे मनदंभ ॥ १७ ॥ दिवश्चरम कीजे चउविहार। च्यारे आहार तणोपरिहार । दिवश तणा आलोए पाप । जिम भाजे सगला संताप ॥ १८ ॥ संध्या आवश्यक साचवे । जिनवर चरण शरण भव भवे। च्यारे शरणां दृढ करि रए । सागारी अणशण लें सुण ॥ १९ ॥ करे मनोरथ मन एहवा। जाऊं तीर्थ शेत्रुंजे जेहवा । समेत शिखर आबू गिरनार । भेटीस कवहुं धन अवतार ॥ २० ॥ श्रावककी करनी छे एह । एहथी थाये भवनो छेह । आठे करम पडे पातला। पापतणा छूटे आमला ॥ २१ ॥ बारू लहीये अमर विमान । अनुक्रम पावे शिवपुर थान । कहे जिन हर्ष वर्णो ससनेह । करणी दुख हरणी छे एह ॥ २२ ॥ इति श्रावकके अहनिशि कर्त्तव्य संपुर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीपार्श्वजिन स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुण अर दाशा सुगुण निवाशा । अमचीपूरो प्रभु आशा राज (सु०) ॥ देख उदाशा अपणा दाशा । दीजे कतुक दिलाशा राज ॥ १ ॥ (सु०) ॥ चार्मा चटकी भव मांहे भटकी । नाच्यों में विध नटकी राज (सु०) हिव मन हटकी आपसुं अटकी । लागुं प्रभुपाय लटकी राज ॥ २ ॥ (सु०) ॥ ते हम टाली सुगति संभाली । प्रीत अमे हीज पाली राज (सु०) एक हथाली वाजे ताली । वात अचंभा वाली राज ॥ ३ ॥ (सु०) ॥ ते उपगारी पाश तुम्हारी । सेवामें विध सारी राज (सु०) ॥ तत्व विचारी मन सुध धारी । श्रीधमशी सुख कारी राज ॥ ४ ॥ (सु०) ॥ इनि श्रीपार्श्व जिन स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चोपड खेलन विचार स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग सोरठी) ॥ ❀ ॥ अरे माहरा प्राणीया (चतुर नर) चोपड इणविध खेलरे । अशुभ करम मल टारके (च०) । जाजम करवे राग रे । वर्णीय बिछायत वेमजो (च०) । जहां नहीं कुमतिको लागरे (अरे०) ॥ १ ॥ दान शील तप भावना (च०) । चोपड एह पसारे। आठ दाव एक बोलमें (च०) आठुंई करम निवारे ॥ २ ॥ (अरे०)

देव गुरु धर्म तीनुं भला (च०)। पाशा एही जाणरे। अवशर कर हाथे लीया (च०) उज्जल लेश्या आणरे॥ ३॥ दरशण ग्यांन चारित्र भला (च०) तीनुंई गुपती विचाररे। नव तत्व सात हिरदे धरो (च०)। एसव शोभा साररे॥ ४॥ (अ०) पड्या अठा रै रहणदे (च०) पोबारा ब्रत धाररे। दस लक्षण दस धरमहै (च०)। हितकर हीयै विचाररे॥ ५॥ (अ०) षट्काया छक्कीपकी (च०) हिरदै दया विचाररे। पुन्य उदै पंजकी पकी (च०) पंच महा ब्रत धाररे॥ ६॥ (अ०) च्यार तीन काणा पड्या (च०)। सातुंई विसन निवाररे। जे दुरगति दायक सही (च०)। वाधै अनंत संसाररे॥ ७॥ (अ०) चिहुं गति वाजी लग रही (च०) दुक्ख सह्या भरपूररे। करमकटै सुख ऊपजै (च०) रतनसागर कहै सूररे॥ ८॥ (अ०)॥ ❋॥ ॥ ❋॥ ॥ ❋॥
इति श्रीचौपड खेलन हित उपदेश सिझाय संपूर्णम्॥ ❋॥

॥ ❋॥ सेत्रुंज खेलन विचार स्तवन लि०॥ ❋॥

॥ ❋॥ सेत्रुंज खेल खिलारी। सब समझ देख सेत्रुंजकी वात। लख दोउं दल अपनें परायें की जात। काऊ बिध कर मोह बादस्याहकों मात। जब जाणुं तोय चतुर खेलन खिलार (हे से०)॥ १॥ आठुं कर्म पियादे आगे फूक्तेही आवे। काम क्रोध गज चलत थंभत नहीं थंभे। लोभ ऊंठ चारुं खूंटकी मरोड चल ध्यावे। मान मायाके तुरंग चालचपल देखावे। मिथ्या मत सो वजीर वीरवाके ढंग ठाम्यो। वाके मारवेकों दल अपनो संभार (हेसे०)॥२॥ तेरो ग्यान सो वजीर वीर तेरे ढंग ठाम्यो। आठों अंग समकितके पियादे हलकारो। त्याग सांढिया सवार पर सांढियां को मारो। सत्य वचन तुरंगसुं तुरंग निवारो। क्षमा शील दोय फील राखो दलकै अगामी। परदल कर मारो छिन में संहार (हे से०)। जप तप सत ब्रत याके घेरे चिहुं ओर जब वाके चलनें की काइ रहे नई ठोर। जब तेरी होगी जीत दूजो हारेगो खेलारी। जब सुजश को तेरे शिर वधेगो मोड। ठामे इंद्र धर्णेंद्र तोरे ढोलेंगे चवर। तेरो भजन भजेगो गुण अगाह (हे से०)॥ ३॥
इति मज्जनपुरुषोंके सेत्रुंज खेलन विचार संपूर्णम्॥ ॥ ❋॥ ॥ ❋॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीमहावीर स्वामीको पारणो लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दुहा) ॥ श्रीअरिहंत अनन्त गुण । अतिशय पूरणगात्र । मुनि जे ज्ञानी जे संयमी । ते कहीयें उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्र तणी अनुमोदना । करतो जीरणसेठ । श्रावक अच्चुय गति लहे । नव ग्रेवेकां हेठ ॥ २ ॥ दश चउमाशा वीर जी । विचरत संयम वास । वेशालापुर आवीया । इग्यारमी चोमाश ॥ ३ ॥ ढाल । एकवर वोभ्या हाथीया जी (एहनी) ॥ चोमाशी एह इग्यारमीजी । विचरत साहस धीर । वेशालापुर वाहिरे जी । आव्या श्री महावीर ॥ १ ॥ (जगतगुरु त्रिशला नन्दनजी) जलेयें भेट्या श्री जिनराय । सखीरी चौक पूरावो आय । मेरे लाग अनोपम थाय (ज०) ॥ २ ॥ बलदेवनो हे देहरोजी । तिहां प्रभु काउसग्ग लीध । पञ्च कलाण चउमाशनो जी । स्वामी ए तप कीध (जग०) ॥ ॥ ३ ॥ जीरणसेठ तिहां रहेजी । पाले श्रावक धर्म । आकारे तिण उलख्या जी । जांणे श्री जिन मर्म ॥ (ज०) ॥ ४ ॥ आज अछे उपवासीया जी । स्वामी श्री वधमान । काल्हि सही प्रभु जीमस्ये जी । में हथ देस्युं दान ॥ (ज०) ॥ ५ ॥ सदा सेठ इम चिंतवे जी । होसी सफल मुझ आस । पक्ष माश गिणतां थकां जी । पूरी थई चउमाश ॥ (ज०) ॥ ६ ॥ सामग्री आहारनी जी । जीरण कीध तयार । प्रभुनो मारग देखतो जी । बेठो वरने वार ॥ (ज०) ॥ ७ ॥ वारि आवे ने प्राहुणा जी । निहुल्या एकणवार । प्रभुजी कान पधारसी जी । में निहुल्या वारंवार ॥ (ज०) ॥ ८ ॥ पीछे करिस्युं पारणो जी । हुं प्रभुनें पडिलाभ । होय मनोरथ एहवो जी । तो विन वरसे आभ ॥ (ज०) ॥ ९ ॥ अवसर करीने गोचरी जी । श्रीसिद्धारथ पूत । वेशालापुर भवनां जी । पूरण वरेय पहुत्त ॥ (ज०) ॥ १० ॥ मिथ्यात्वी जांणे नहीं जी । जंगम तीरथ एह । सेठीनें कहे एहवो जी । को इक भिक्षु देह ॥ (ज०) ॥ ११ ॥ दासनरने साकुला जी । प्रभुनें आणी दीध । नीरागी नेहीलीया जी । तिहांप्रभु पारणो कीध ॥ (ज० ॥ १२ ॥ देव वजावे दुंदुभी जी । जय बोले करजोडि । हेम वृष्टि हुई तिहां जी । साढी बारह कोडि ॥ (ज०) ॥ १३ ॥ कहो सेठ तुमेस्युं दीयो जी । की

यो पारणो वीर। लोकां प्रतें इम कहै जी। में वैराई क्षीर ॥ (ज०) ॥ ॥ १४ ॥ राजादिक सहु ए कहै जी। धन धन पूरण सेठ। ऊंची करणी तैं करी जी। अवर सहू तुझ हेठ ॥ (ज०) ॥ १५ ॥ जीरण सेठ सुणै तवैजी। वाजित्र दुंदुभी नाद। अनन्त कीयो किहां पारणोजी। मनमें थयो विखवाद ॥ (ज०) ॥ १६ ॥ हुं जगमें अभागीयो जी। मेरै नाया सांम। कल्पवृक्ष किम पामीयै जी। मारू मंडल गाम ॥ (ज०) ॥ १७ ॥ जेता मनोरथ में कीया जी। तेता रह्या मनमांहि। निरधन जिम जिम चिंतवैजी। तिम तिम निरफल थाहि ॥ (ज०) ॥ १८ स्वामी तिहां कीयो पारणोजी। कीयो अनेथ विहार। आया पाश संतानीया जी। तिहां मुनि केवल धार ॥ (ज०) वेशालापुर राजीया जी। लोकांसुं आणंद। राय प्रश्न पूछै तिहांजी। सुगुरु चरण अरविंद ॥ (ज०) ॥ २० ॥ मेरै नगरमें को अछे जी। जीवपुन्य जशवंत। कहै केवली आजतो जी। जीरण सेठ महंत ॥ (ज०) ॥ २१ ॥ राय कहै किण कारणैंजी। जीरण सेठ महंत। दान दीयो जिनवीरनेंजी। पूरण ते जसवंत ॥ (ज०) ॥ २२ ॥ रायप्रतें कहै केवलीजी। पूरण दीनो दान। हेमवृष्टि फल तेहनें जी। अवरन कोई प्रमाण (ज०) ॥ २३ ॥ देवलोक तिण वारमैंजी। जीरण बाल्योबंध। विना दान दीना लह्यो जी। उत्तम फल संबंध ॥ (ज०) ॥ २४ ॥ धमी एक सुर दुंदुभी जी। जो न सुणं तो कान। लहि तो जीरण तो सहीजी। केवल अविचल ठाण ॥ (ज०) ॥ २५ ॥ राजा जीरणनें दीयोजी। अधिक मान सन्मान। मुख्य नगरमें थापीयोजी। जोवो पुन्यप्रमाण ॥ (ज०) ॥ २६ ॥ दान दीयो सुपात्रनें जी। ते निष्फल नवि जाय। पात्रदान अनुमोदतांजी। जीरण जिम फल थाय ॥ (ज०) ॥ २७ ॥ इम जाणी अनुदनाजी। दान सुपात्र रसाल। दान देवे सुपात्रनें जी। तेहनें नमें सुनिमाल ॥ (ज०) ॥ २८ ॥ इति श्री महावीर स्वामीको पारणो संपूर्णम् ॥

॥ ❀ ॥ अथ सब पापादिक आलोयण स्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वेकरजोडी वीनवुंजी। सुणि स्वामी सुविदीत। कूड कपट मूंकी करीजी। वात कहुं आपवीत ॥ १ ॥ (कृपानाथ मुझ वीनती अवधार)

तुं समरथ त्रिभुवन धणीजी । मुझनें उत्तर तार ॥ (कृ०) ॥ २ ॥ भवसायर भमतां थकां जी । दीठा दुःख अनन्त । भाग संयोगे भेटीयोजी । भय भं जण भगवंत ॥ (कृ०) ॥ ३ ॥ जे दुःख भांजे आपणोजी । तेहनें कही यें दुःख । परदुःख भंजण तूं सुण्यो जी । सेवकनें द्यो सुक्ख ॥ (कृ०) आलोयण लीधां पखेजी । जीव रुले संसार । रूपी लक्ष्मणा महासतीजी । एह सुणो अधिकार ॥ (कृ०) ॥ ५ ॥ दूषम काले दोहिलोजी । सूधो गुरु संयोग । परमारथ पीछे नहीं जी । गडर प्रवाही लोग ॥ (कृ०) ॥ ६ ॥ तिण तुझ आगलि आपणाजी । पाप आलोऊं आज । माय बाप आग लि बोलतां जी । बालक केही लाज ॥ (कृ०) ॥ ७ ॥ जिन धर्म २ सहू कहे जी । थापे अपणी वात । सामाचारी जूई जूई जी । संसय पडु मिथ्यात ॥ (कृ०) ॥ ८ ॥ जाण अजाण पणें करी जी । बोल्या उत्सूत्र बोल । रतनें काग उडावतां जी । हास्यो जनम निटोल ॥ (कृ०) ॥ ९ ॥ भगवंत भाख्यो ते किहां जी । किहां मुझ करणी एह । गजपाखर खर किम सहे जी । सबल विमासमण तेह ॥ (कृ०) ॥ १० ॥ आप परूपुं आकरो जी । जाणें लोक महंत । पिण न करुं परमादीयो जी । मासाहस दृष्टांत ॥ (कृ०) ॥ ११ ॥ काल अनंते में लह्या जी । तीन रतन श्रीकार । पिण परमादे पाडिया जी । किहां जई करुं पुकार ॥ (कृ०) ॥ १२ ॥ जाणुं उत्कृष्टी करुंजी । उद्यत करुंय विहार । धीरज जीव धरे नहीं जी । पोते बहु संसार ॥ (कृ०) ॥ १३ ॥ सहज पड्यो मुझ आकरो जी । नगमें रूडीवात । परनंद्या करतां थकां जी । जाये दिननें रात ॥ (कृ०) ॥ १४ ॥ किरिया करतां दोहिली जी । आलस आणें जीव । धरम पखे धंधे पड्योजी । नरगें करस्ये रीव ॥ (कृ०) ॥ १५ ॥ अण हुंता गुणको कहे जी । तो हरखुं निशि दीश । को हितसीख भली कहे जी । तो मन आणुं रीश ॥ (कृ०) ॥ १६ ॥ वाद भणी विद्याभणी जी । पर रंजण उपदेश । मन संवेग धस्यो नहीं जी । किम संसार तरेश ॥ (कृ०) ॥ १७ ॥ सू त्र सिद्धांत वखांणतांजी । सुणतां करम विपाक । खिण एक मनमांहि ऊपजे जी । मुझ मरकट वैराग ॥ (कृ०) ॥ १८ ॥ त्रिविध २ करि ऊचरुं जी । भ

गवंत तुह्म हजूर । वारवार भांखुं वलीजी । चूटकवारो दूर ॥ (कृ०) ॥ १९॥ आपकाज सुख राचितां जी । कीधा आरंभ कोम्र । जयणा न करी जी वलीजी । देव दयापर छोम्र ॥ (कृ०) ॥ २० ॥ वचन दोष व्यापक कह्या जी । दाख्या अनरथ दंम्र । कूम्र कपट बहु केलवी जी । व्रत कीधा शत खंम्र ॥ (कृ०) ॥ २१ ॥ अण दीधो लीजें त्रिणो जी । तोही अदत्तादान । ते दूषण लागा घणाजी । गिणतां नावै ग्यान ॥ २२ ॥ (कृ०) चंचल जीव रहै नहीं जी । राचै रमणी रूप । काम विटंबण सीकहुं जी । ते तूं जाणें सरूप ॥ २३ ॥ (कृ०) माया ममता मैं पड्योजी । कीधो अधिको लोभ । परग्रह मेल्यो कारमो जी । न चढी संयम सोभ ॥ २४ ॥ (कृ०) लागा मुझनें लालचै जी । रात्री भोजन दोष । मैं मनमूंक्यो माहरो जी । न धरयो धरम संतोष ॥ २५ ॥ (कृ०) इण भव पर भव दूहव्याजी । जीव चौराशी लाख । ते मुझ मिछामि दुकडंजी । भगवंत तोरी साख ॥ २६ ॥ (कृ०) करमा दांन पनरै कह्याजी । प्रगट अढारै पाप । जेमैं कीधा ते सहुजी । बगश २ माई बाप ॥ २७ ॥ (कृ०) मुझ आधारछै एतलोजी । सरदहिणाछै सुध । जिन धरम मीठो जगतमेंजी । जिम साकरनें दूध ॥ ॥ २८ ॥ (कृ०) रिषभदेव तुं राजीयोजी । सेत्रुंजगिरि सिणगार । पाप आलोया आपणाजी । करभव मोरी सार ॥ २९ ॥ (कृ०) मर्म एह जिन धर्मनोजी । पाप आलोयां जाय । मनसुं मिछामि दुकम्रंजी । देतां दूर पु जाय ॥ ३० ॥ (कृ०) तुं गति तुं मति तूं धणीजी । तुं साहिब तुं देव । आणधरुं शिरताहरी जी । भव २ ताहरी सेव॥ (कृ०)॥ ३१ ॥ (कलशः) ॥ इम चढीय सेत्रुंज चरण भेट्या नाभि नंदन जिनतणा । करजोमि आदि जि णंद आगे पाप आलोया आपणा । श्रीपूज्य जिनचंद सूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजश घणें । गणि सकलचंद सुसीस वाचक समयसुंदर गणि भणें ॥ ३२ ॥ ❀ इति आलोयणागर्भित स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः पद्मावती आलोयण सिझाय ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवे राणी पदमावती । जीवराशिखमावे । जाणपणुं जगदो हिलो । इणवेला आवे ॥ १ ॥ (तेमुझ मिछामि दुकम्र) । अरिहंतनी सा

ख । जेमें जीव विराधिया । चउरासी लाख ॥ २ ॥ (ते०) सात लाख प्रथ वीतणा । साते अप्पकाय । सातलाख तेऊकायना । सातेवली वाय ॥ ३ ॥ (ते०) दस प्रत्येकवनस्पती । चउदह साधारण । विति चउरिंद्री जीव ना । बेबेलाख विचार ॥ ४ ॥ (ते०) ॥ देवता तिरयंच नारकी । च्यार २ प्रकासी । चउदह लाख मनुष्यना । एलाख चउरासी ॥ ५ ॥ (ते०) इण भव परभव सेविया । जे पाप अढार । त्रिविध २ करि परिहरुं । दुरगति दातार ॥ ६ ॥ (ते०) हिंसा कीधी जीवनी । बोल्या मिरखावाद । दोष अदत्तादानना । मैथुन उनमाद ॥ ७ ॥ (ते०) परिग्रह मेल्यो कारिमो । कीधो क्रोध विसेष । मांन माया लोभमें कीया । वलि रागनें द्रेष ॥ ८ ॥ (ते०) कलहकरी जीव दूहव्या । दीना कूडा कलंक । निन्दा कीधी पार की । रति अरति निस्संक ॥ ९ ॥ (ते०) ॥ चाडी खाधी चोतरे । की धो थांपण मोसो । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो । भलो आणयो भरोसो ॥ १० ॥ (ते०) ॥ पाटकीनें भवमें किया । जीवना वधघात । चिर्मीमार भव चि डकला । मारया दिनराति ॥ ११ ॥ (ते०) मार्गीगरभव माछला । झाल्या जलवास । धीवर भील कोर्लोभवे । मृग मारया पास ॥ १२ ॥ (ते०) ॥ काजी मुल्लानें भवे । पढी मंत्र कठोर । जीव अनेक जबे किया । कीधा पा प अघोर ॥ १३ ॥ (ते०) ॥ कोटवालनें भवमें किवा । अकराकर दं ड । बंदीवांन मरावया । कोरडा छडी दंड ॥ १४ ॥ (ते०) ॥ परमाधर मीनइं भवे । दीधा नारकी दुःख । छेदन भेदन वेदना । तामणा अति ति ख ॥ १५ ॥ (ते०) ॥ कुंभारनें भवमें कीया । निम्माह पचाव्या । तेली भव तिल पीलीया । पापी पेट भराय ॥ १६ ॥ (ते०) हालीनें भव ह ल खड्या । फाड्या पृथवी पेट । सूड निदान घणा किया । दीधा बलध चपेट ॥ १७ ॥ (ते०) मालीनें भव रोपिया । नानाविध वृक्ष । मूल प त्र फल फूलना । लागा पापना लक्ष ॥ १८ ॥ (ते०) ॥ अघोवाई आंगर्मा । भरपा अधिकाभार । पोठी ऊंठ कीना पड्या । दया नाणी लि गार ॥ (ते०) १९ ॥ छीपानें भव छेतरयो । कीधा रांगणि पास । अग नि आरंभ कीना घणा । धातुर्वाद अभ्यास ॥ (ते०) ॥ २० ॥ सूरपणें

रण कूअता । मारुया मांणस वृंद । मदिरा मांश नक्षा घणा । खाधा मूल नें कंद ॥ (तें०) ॥ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी । पाणी ऊलंच्या । आ रंज कीधा अति घणा । पोतै पापज संच्या ॥ (ते०) ॥ २२ ॥ अंगार कर्म कीया वली । धरमे दव दीधा । सुंसलेई वीतरागना । कूमा कोशज पीधा ॥ (ते०) ॥ २३ ॥ विल्ली जव उंदर लिया । गीलोई हत्यारी । मूढग मार तणें जवें । में जूं लीख मारी ॥ (ते०) ॥ २४ ॥ जामजूंजातणें जवै । ए केंद्री जीव । ज्वारी चिणा गहुं सेकिया । पामंता रीव ॥ (ते०) ॥२५॥ खांमण पीसण गारना । आरंज अनेक । रांधण इंधण आगिना । कीया पाप उदेग ॥ (ते०) ॥२६॥ विकथा च्यार कीधी वली । सेव्या पंच प्रमाद । इष्ट वियोग पड्यां किया । रोदन विषवाद ॥ (ते०) ॥ २७ ॥ साधु अनें श्रावक तणा । व्रत लेईजागा । मूल अनें उत्तर तणा । दूषण मुझ लागा ॥ (ते०)॥ २८ ॥ साप विछु सिंह चीतरा । शिकरानें शमली । हिंसक जीव तणें जवें । हिंसा किधी सवली ॥ (ते०) ॥ २९ ॥ सूआवमै दूषण घणा । वलि गरज गलाव्या । जीवाणी ढोव्या घणा । सीलव्रत जंजाव्या ॥ (ते०) ॥ ३० ॥ जव अनंत जमतां थकां । कीया कुटंब संबंध । त्रिविध २ करि वोसरुं । तिणसुं प्रतिबंध ॥ (ते०) ॥ ३१ ॥ इणजव परजव इण परें । कीधा पाप अखत्र । त्रिविध २ करि वोसरूं । करुं जनम पवित्र ॥ (ते०) ॥३२॥ राग वेरामी जे सुणें । एत्रीजी ढाल । समय सुंदर कहै पापथी । छूटै ततकाल (ते०) ॥ ३३ ॥ ❋ ॥ इति श्री आलोयण सिझाय संपूर्णम् ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुन्य प्रकाश आलोयण वृहस्तवन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा । चोवीशे जिनराय । सद्गुरु सामिनी सरसती । प्रेमें प्रणमुंपाय ॥ १ ॥ त्रिजुवनपति त्रिशलातणो । नंदन गुणगंजीर । शासन नायक जगजयो । वर्द्धमान वम्वीर ॥ २ ॥ एक दिन वीरजिणंदनें । चरणें करी परिणाम । जविकजीवना हित जणी । पूछे गोतमस्वामि ॥ ३ ॥ मुगतिमारग आराधिइं । कहो किणिपरि अरिहंत । सुधा सरस तव वचनरस । जापें श्रीजगवंत ॥ ४ ॥ अतीचार १ आलोइए । व्रतधरीइं गुरुशाखि । जीव खमावो मयलजे । योनि चोरासी लाख २ ॥ ५ ॥

विधिसुं वलिवोसरावीइं । पापस्थानक अढार ४ । च्यारशरण नित अनुसरे ५। निंदो दुरितआचार६॥६॥शुभकरणी अनुमोदिइं ७ । भाव भलो मनआणि८। अणशण अवशर आदरी ९ । नवपद जपो सुजाण॥१०॥शुभगति आराधन तणा । ए छे दश अधिकार । चित्तआणीनें आदरो । जिम पामो भवपार ॥८॥

॥ ✿ ॥ (ढाल १) एचिंडी किहां राखी । इस चालमें ॥ ✿ ॥

॥ ✿ ॥ ज्ञान दरिशण चारित्र तप वीरज । ए पांचे आचार । एहतणा इहभव परभवना । आलोइयें अतीचाररे ॥ १ ॥ प्राणी ज्ञान भणो गुणखांणी । वीरवदें इमवांणीरे ॥ प्रा० ॥ गुरुउलवीयें नहीं गुरु विनयें । काले धरी बहुमांन । सुत्र अर्थ तदुभय करी सुधा । भणीइं वही उपधांनरे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी । ठवणी नोकरवाली । एहतणी कीधी आशातना । ज्ञान भक्ति नसंभालीरे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ इत्यादिक विपरीत पणाथी । ज्ञान विराध्युंजेह । आभव परभव वलिय भवो भव । मिछामिदुक्कड तेहरे ॥ प्रा०॥४॥ (समकितल्यो शुद्ध जांणी) ॥ जिनवचनें शंका नविकीजें । नवि परमत अभिलाप । साधुतणी निंदा परिहरजो । फल संदेह मराखिरे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ स० ॥ मूढपणुं छंडो परशंसा । गुणवंतनें आदरीइं । साहमीनें धर्मे करी थिरता । भगति प्रभावना करीयेरे० ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ स० ॥ संघचैत्य प्राशाद तणोजे । अवर्णवाद मनलेख्यो । द्रव्य देवको जे विणसाड्यो । विणसंतां उवेख्योरे ॥ प्रा०॥ ७ ॥ स० ॥ इत्यादिक विपरीत पणाथी । समकित खंड्युं जेह । आभव० ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ (चारित्रल्यो चितआंणी) पांचसुमति त्रिणगुपति विराधी । आठे प्रवचनमाय । साधुतणे धर्मे प्रमादें । अशुद्ध वचन मन कायरे॥ प्रा० ॥ ९ ॥ चा० ॥ श्रावकनें धर्मे सामायक । पोसहमां मनवाली । जे जयणापूर्वक जे आठ । प्रवचनमायनपालीरे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ चा० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी । चारित्रडोहल्युंजेह । आभव० ॥ मिछामि० ॥ ११ ॥ चा० ॥ बारे भेदे तप नवि कीधो । छते योगें निजशक्तें । धर्मे मन वच काया वीरज । नविफोरविउं भगतेंरे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ चा० ॥ तप वीरज आचारें इणपरें । विविध विराध्याजेह । आभव० ॥ मिछामि० ॥ प्रा० ॥

॥ १३ ॥ चा० ॥ वलीय विशेषें चारित्रकेरा । अतीचार आलोइयें । वीरजि णेसर वयणसुंणीनें । पापमयल सविधोइयें रे ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ढाल २॥पृथवी पाणी तेउ । वाउ वनस्पती । ए पांचे थावरकह्या ए । करीकरसण आरंभ । खेत्रजेखेडीयां । कूवा तलाव खणावीयाए ॥ १ ॥ घर आरंभअनेक । टांकां भोइरां । मेडी माल चिणावियाए । लिंपण गुंपण काज । एणिपरे परपरें । पृथवी काय विराधीयाए ॥ २ ॥ धोयण नाहण पाणी । झीलण अप्पकाय । छोति धोति करि दूहव्याए । भाठीगर कुंभार । लोह सोवनगरा । भाडभुंजा लिहालागराए ॥ ३ ॥ तापण सेकण काजें । वस्त्र निखारण । रंगण रांधण रसवतीए । इणिपरेंकर्मादान । परिपरेंकेलवी । तेऊ वाऊ विराधीयाए ॥ ४ ॥ वाडी वन आरांम । वावी वनस्पती । पान फूल फल चूंटीयाए । पोंहक पापड शाक । सेक्यां सूकव्या । छे द्यां छुंद्यां आथीयांए ॥ ५ ॥ अलसीनें एरंड । घाणी घालीनें । घणा तिलादिक पीलीयाए । घाली कोलु मांहिं । पीलीशेलडी । कंद मूल फलवेचीयाए ॥६॥ एम एकेंद्री जीव । हण्या हणावीया । हणतांजे अनुमोदीयाए । आभव परभवजेह । वलीय० ॥ तेमुऊ० ॥ ७ ॥ क्रमी सरमीया कीडा । गाडर गंडोला । इअल पूरा अलशीआए । वाला जलो चूडेल । विचलित रसतणा । वली अथां णां प्रमुखनांए ॥ ८ ॥ इमबेइंद्रीजीव । जेमें दूहव्या । ते मुऊ० ॥ उदेही जूंलीख । मांकड मकोडा । चांचड कीडी कंथुआए ॥ ९ ॥ गद्दहीया वी मेल । कांनखजूरडा । गींगोला धनेरीयाए । इमतेइंद्री जीव । जेमें दूहव्यां तेमुऊमि० ॥ १० ॥ माखी मछर डांस । मसा पतंगीया । कंशारी कोलि या वगाए । ढींकण वीच्छू तीड । भमरा भमरीय । कोंता वग पड मांकडीए ॥ ११ ॥ इमचौरिंद्री जीव । जेमेंदू० ॥ तेमुऊ० ॥ जलमांनांखी जाल । जल चर दूहव्या । वनमां मृग संतापीयाए ॥ १२ ॥ पीड्या पंखी जीव । पाडी पासमां । पोपट घाल्या पांजरेए ॥ इम पंचेंद्री जीव । जेमेंदू० ॥ तेमुऊ०॥१३॥

॥ ❀ ॥ ढाल ३ प्राणी वाणी हितकरीजी ॥ एचाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ क्रोध लोभ भय हासथी जी । बोल्या वचन असत्य । कूडकरी धनपारकाजी । लीधांजेह अदत्तरे ॥ १ ॥ जिनजी मिछा

मि दुक्कड आज । तुझमाखें महाराजरे । जिनजी । देई सारु काजरे ॥ जि ० ॥ मि० ॥ (आंकणी०) ॥ देव मनुज तिर्यंचनाजी । मैथुन सेव्याजेह । विषयारस लंपटपणेजी ॥ घणुं विटंब्यो देहरे ॥ २ ॥ जि० ॥ परि ग्रहनी ममता करीजी । भव २ मेली आथि । जेहाजिहां ते तिहां रहीजी । कोईन आवे साथिरे ॥ ३ ॥ जि० ॥ रयणी भोजन जे कर्याजी । कीधा भक्ष अभक्ष । रसना रसनी लालचेजी । पापकर्या परतक्षरे ॥ ४ ॥ जि० ॥ व्रत लेई वीसारीयाजी । वली भांग्यां पच्चखांण । कपटहेतु किरियाकरीजी । कीधा आप वखांणरे ॥ ५ ॥ जि० ॥ त्रिणढाले आठे दूहेजी । आलोया अ तीचार । शिवगति आराधन तणोजी । एपहिलो अधिकाररे ॥ ६ ॥ जि० ॥

॥ ❀ ॥ ढाल ४ ॥साहेलडीनी देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंचमहाव्रत आदरो ॥ साहेलडीरे० ॥ अथवा ल्यो व्रत बार तो सा० ॥ यथा शक्ति व्रत आदरी ॥ सा० ॥ पालो निरती चारतो । व्रतलीधा संभारीये ॥ सा० ॥ हीयडे धरीय विचारतो । शिवगति आ राधन तणो ॥ सा० ॥ ए बीजो अधिकारतो । जीवसवे खमावीइं ॥ सा० ॥ योनि चोराशीलाखतो । मनशुद्धे करो खांमणां ॥ सा० ॥ कोईशुं रोषनरा खि तो० । सर्वमित्र करी चिंतवो ॥ सा० ॥ कोइ न जाणो शत्रुतो । रागद्वेष इम परीहरो ॥ सा०॥ कीजे जन्म पवित्र तो० । साहमी संघ खमावियें ॥ सा०॥ जेउपनी अपरतीत तो० । सज्जन कुटुंब करी खांमणा ॥ सा० ॥ ए जिनशा सन रीततो० ॥ २ ॥ सर्वाये अनें खमावीयें ॥ सा० एहीज धर्मनो सारतो । शिवगति आराधन तणो ॥ सा० ॥एत्रीजो अधिकारतो । मृषावाद हिंसाचोरी ॥ सा० ॥ धनमूर्छा मैथुनतो । क्रोध मान माया तृष्णा ॥ सा० ॥ प्रेमद्वेषपैशू न्यतो ॥ ७ ॥ निंदा कलह न कीजीइं ॥ सा० ॥ कूडा न दीजे आलतो । रति अरती मिथ्यातजो ॥ सा० ॥ माया मोस जंजालतो ॥ ८ ॥ त्रिविध २ वोश रावियें ॥ सा० ॥ पापस्थान अढारतो । शिवगति आराधन तणो ॥ सा० ॥ एचोथो अधिकारतो ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल पांचमी ॥ हवेनिसुणो इहां आवीयाए ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जनमजरा मरणें करीए । ए संसार असारतो । कर्याकर्म सहु

अनुभवेंए । कोइन राखण हारतो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुंए । शरणसिद्ध भगवंत तो । शरणधर्म श्री जैननोए । साधुशरण गुणवंततो ॥ २ ॥ अवरमोह सवि परिहरीए । चार शरण चित्तधारतो । शिवगति आराधनतणोए । ए पांचमो अधिकारतो ॥ ३ ॥ आभव परभव जे करयाए पापकर्म केई लाखतो । आत्मशाखें निंदीयैए । पडिक्कमीयें गुरु शाखितो ॥ ४ ॥ मिथ्यामति वर्त्तोविआए । जे भाख्या उत्सूत्रतो । कुमति कदाग्र हनेंवसेंए ॥ वलि उथाप्या सूत्रतो । घड्या घडाव्या जे घणाए घरटी हल हथियार तो । भव २ मेली मुंकीआए । करतां जीव संहारतो ॥ ६ ॥ पापकरीनें पोषीआए । जनम २ परिवारतो । जनमांतर पुहतापछीए कोइन कीधी सारतो ॥ ७ ॥ आभव परभव जे करयाए । इम अधिकरण अनेकतो । त्रिविध २ वोसरावींइए । आणी हृदय विवेकतो ॥ ८ ॥ दुःकृत निंदा इम करीए । पापकरया परिहारतो । शिवगति आराधन तणोए । ए छठो अधिकारतो ॥ ९ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ढाल छठी ॥ आदितुं जोइनें आपणी ॥ ए चाल ॥ ❋ ॥

धन २ ते दिन माहरो । जिहां कीधो धर्म । दान शीयल तप आदरी । टाल्या दुष्कर्म ॥१॥ ध० ॥ शेत्रुंजादिक तीर्थनी । जे कीधी यात्र । युगतें जिनवर पूजीया । वली पोष्या पात्र ॥ २ ॥ ध० ॥ पुस्तक ज्ञान लिखावीया । जिणहर जिणचैत्य । संघ चतुर्विध साचव्या । ए सातेखेत्र ॥३॥ध०॥ पडिक्कमणां सुपरें करया । अनुकंपादान । साधू सूरि उवझायनें । दीधा बहुमान ॥४॥ध० ॥धर्मका रज अनुमोदिये । इम वारोवारि । शिवगति आराधन तणो । सातमो अधिकार ॥ ५ ॥ ध० ॥भाव भलो मन आणीये । चित्त आणी ठामि । समताभावे भावीयें । ए आतमराम ॥ ६ ॥ ध० ॥ सुख दुःख कारण जीवनें । कोई अ वर न होइ । कर्म आपजे आचरया । भोगवीयें सोय ॥ ७ ॥ ध० ॥ समता विणजे अनुसरे । प्राणी पुन्यकाम । छारि ऊपरिते लीपणुं । झांखर चित्राम ॥८॥ ध० ॥ भाव भली परें भावीइं । ए धर्मनोसार । शिवगति आराधन तणो ॥ आठमो अधिकार ॥ ९ ॥ ध० ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ ढाल सातमी रैवत गिरि ऊपरे (एचाल) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हवेअवसर जांणी करीय संलेखण सार । अणशण आदरीयें पच्चखी चारआहार । लखुता सवीमुंकी छांडी ममताअंग । एआतम खेलें समता ज्ञांनतरंग ॥ १ ॥ गति च्यारें कीधा आहारअनंत निःशंक । पण तृपतिनपाम्यो जीव लालचीउ रंक । दुलहो ए वली वली अणशणनो परिणाम । एहथी पामीजे शिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥ धन धन्ना शालिभद्र खंधो मेघकुमार ॥ अणशण आराधी पाम्यां भवनोपार । शिवमंदिर जास्यें करी एकअवतार । आराधन केरो ए नोमो अधिकार ॥३॥ दशमें अधिकारें महामंत्र नवकार । मनथी नवींमूंको शिव सुख फलसहकार । एजपतां जायें दुर्गति दोषविकार । सुपरें ए समरो चऊद पूरवनोसार ॥४॥ जन्मांतरें जातां जो पामें नवकार । तोपातिक गाली पामें सुरअवतार । एनवपद सरिखो मंत्र न कोईसार । इहभवनें परभवे सुखसंपति दातार ॥५॥ जुउभील भीलणी राजा राणीथाय । नवपद महिमाथी राजसिंह महाराय । राणी रतनवती वेहुं पाम्यांछे सुरभोग । इकभवथीलेस्यें सिद्धवधूसंयोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीनें एवली मंत्रफल्यो ततकाल । फणिधर फीटीनें प्रगटथई फूलमाल । शिवकुंमरें योगी सोवन पुरसो कीध । इम एणेंमंत्रे काज वणांनां सिद्ध । एदश अधिकारें वीरजिणेसर भाख्यो । आराधनकेरो विधि जिणें चित्तमाराख्यो । तिणेंपापपखाली भवभय दूरेंनाख्यो । जिन विनय करंतां सुमति अमृत रसचाख्यो ॥ ८ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमोभविभावथुंए ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सिद्धारथराय कुलतिलोए । त्रिशला मात मल्हारतो । अवनीतलें तुह्मे अवतर्याए । करवा अह्मउपगार ॥ १ ॥ (जयो जिन वीर जीए) टेक ॥ में अपराध कर्यावणाए । कहतां नलहुं पारतो । तुह्मचरणे आव्याभणीए । जो तारे तो तारि ॥ २ ॥ ज० ॥ आशकरीनें आवीउए । तुमचरणें महाराजनो । आव्यानें उवेखशोए । तोकिमरहस्यें लाज ॥ ३ ॥ ज० करम अलूजण आकराए । जनम मरण जंजालतो । हुंछुं एहथी ऊभग्योए । छोडविदेवदयाल ॥ ४ ॥ ज० ॥ आजमनोरथ मुझफल्याए । नाठादुःखदंदोल

तो । तूठो जिनचोवीशमोए । प्रगटया पुन्यकल्लोल ॥५॥ ज० ॥ नव २ वि नय तुह्मारमोए । नावन्नगति तुह्मपाय तो । देवदया करी दीजीयेंए । बोध वीज मुपसाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ कलशः॥ इयतरणतारण सुगतिकारण दुःखनिवारण जगजयो । श्री वीरजिणवर चरणथुणतां अधिकमन उल्लटथयो ॥ १ ॥ श्री विजय देव सूरिंदपटधर । तीरथजंगम इणजगें । तपगह्रपति श्रीविजयप्रन्नसूरि सूरितेजें जगमगें ॥ २ ॥ श्रीहीरविजय सूरी शिष्यवाचक । कीर्त्तिविजय सुरगुरु समो । तस शिष्य वाचक विनय विजयें । थुण्योजिन चोवीशमों । सइसत्तर संवत् उग णत्रीसें रही रानेर चोमाशए । विजयदशमी विजयकारण किउ गुण अभ्या सए । नर नवआराधन सिद्धिसाधन । सुकृतलील विलासए । निर्ज्जराहेतें स्तवन रचियुं । नामें पुण्यप्रकाशए ॥ ५ ॥ इति श्रीवीरजिन पुन्यप्रकाश० ॥

॥ ❋ ॥ श्री नेमि राजीमती सिझाय ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ देशी ऊमादे नटियाणीरी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पहिली तो समरूं हो सिद्ध बुद्धरी दाता सारदा । लागुं गुरां रे पाय । प्रनु गुण गास्यां हो नेमीसर साहिब जिन तणा । सुप्रमत आपे मोरी माय ॥ १ ॥ सोरी पुरहुंती हो नेमीसरसाहिब थेचढ्या । जानकरी यादुराय हसतीतो सिणगारयाहो नेमीसर साहिब थेनला । घोरूलांरी गिणती नकाय वाजातो अधकाहो नेमीसरसाहिब वाजता ॥ आया तोरणवार । महिल चढी नेंहो राजुल जोवे हरखसुं । मनमांहें हरख अपार ॥ ३ ॥ आंख फरूके हो सहेली ह्मांरी जीमणी । फिरताइ दीसेंछे नरतार । वाम्हो तो नरीयोहो नेमीसर साहिब जीवनो । पसुवानी सुणी रे पुकार ॥ ४ ॥ ऊनो तो रथनेंहो नेमीसर साहिब राखीयो ॥ ओ पशु वांध्यां छे किणकाज । गोरो तो होसीहो नेमीसर साहिब तुमतणो ॥ सारथी कहेछे महाराज ॥ ५ ॥ थोडा तो सुखनेंहो इ ण राजुल नारी रे कारणें । होसीहो जीवांनोसंहार । जीव बंध्यानेहो नेमीसर साहिब छोडिया । जीवसवेतिणवार ॥ ६ ॥ अणपरणी राजुलहो नेमीसरसा हिब छोमनें । जायचढ्या गिरनार । आठेतो करमांसुंहो नेमीसरसाहिब जीतवा । लीधो संयम नार ॥ ७ ॥ राजुल तो फूरेहो नेमीसरसाहिब एकली ।

जलविनमछली जेम । नवभवांरोहो नेमीसरसाहब छोडनें । नेमविन जीवुंकेम ॥ ८ ॥ सहीयां तो समझावैहो राजुल दुःख मत करो । एतो कालोछे भरतार पाछोतो राजुल भांषेहो सहेलीमारी थेसुणो । इणभव ए भरतार ॥ ९ ॥ राजुलतो चालीहो नेमीसरसाहिब वांदवा । साथे तो घणुंरे परवार । गिरनारे चढतांहो सब आगे पाछे नीकल्या । एकली रही छै राजुलनार ॥ १० ॥ मेहा तोवरस्याहो नेमीसरसाहिब अतिघणा । भीज्याछे सब सिणगार । गुफातो देखीहो राजुलनारी अतिभली । चीरनिचोवै राजुल नारी ॥ ११ ॥ गहणा तो वाज्या हो राजुल नारी रे अंगना । घूवरना झणकार । झणकातो सुणियाहो रह नेमि वैठे ध्यानमें । खोली छै पलक तिणवार ॥ १२ ॥ रूपै तो मोह्यो हो रहनेमि वैठो ध्यानमें । कहै सुंदर करो मोसुं प्यार । बोलीतो सुणकरहो राजुल अंग ढांकीयो । मांनै छोडी छै नेमभरतार ॥ १३ ॥ भोजनतो जीम्योहो रहनेमि खीरखांडनो । उलटी करी नाखै तेम । वैनेंतो माणसहो रहनेमि पाछो नही भखै । भखसी कागकुत्ताजेम ॥ १४ ॥ हुं तो माताहो रहनेमि थारै सारखी । हुं वडा भाईनी नार । पापतो धरस्योहो रहनेमि मारै ऊपर । तो पडस्यो थेनरक मझार ॥ १५ ॥ एहवा वचनें हो रहनेमि राजुल पाए नम्यो । पापख मावै वारंवार । कपडा तो पहर्या हो राजुल नारी आपणा । पुहती छै प्रभु दरबार ॥ १६ ॥ राजुलतो हरखैहो नेमीसर साहिब वांदीयां । वांदीनें लीधो संयम भार । केवलतो पालीहो नेमीसर साहिब निरमलो । पुहती छे सुगति मझार ॥ १७ ॥ केवल पालीहो नेमीसरसाहिब आगलै । मिलीयाछे मुगति मझार । माणक्य रंगेहो नेमीसरसाहिब गाईयो । ह्मारा आवागमण निवार ॥ १८ ॥ इति श्रीनेमि राजीमती सिझाय संपूर्ण ॥ ॥

॥ ॥ अथ श्री शालिभद्रको शिलोको लि० ॥ ॥

॥ ॥ सरसत सांमण समरुं सुखदाई । व्रधमानस्वामी प्रणमुं वरदाई । कुंवर शालिभद्ररो कहुं सिलोको । एक मनांथे सांभलज्यो लोको ॥ १ ॥ राजगृही नगरी जिनध्रम राजा । श्रेणक नांमें मोटो महाराजा । राणी चेलणा चोखी पटरांणी । शील संतोषे साची वखांणी ॥ २ ॥ मंत्रीसरकहियै अभै कुमारो । सगली सभामें ते हीज सिरदारो । सेठ गोभद्र नगरीमें सोहै । भ

द्रा सेठांणी ते मन मोहे ॥ ३ ॥ सुख सेती रहता कितरे के दिवसे । सुत सालिभद्र जन्म्यो शुभ दिवसे । वहिन सुभद्रा वीरो रमावे । मनभावे कोडे माता हुलरावे ॥ ४ ॥ इण विध वधतां हुवो जुवानो । पिता परणावे मोटो कर जांनो । बत्रीस गोरचांरो वालम कहीजे । सातमी भूमें सुखसेती रही जे ॥ ५ ॥ विहार करंता वन मांहे स्वांमी । आय ऊतरीया अंतर जांमी। गोभद्र शेठ वांदणनें वेठो । समकित धारी श्रावकसेठो ॥ ६ ॥ महावीर स्वामी देशना दीधी । समझ्यो श्रावकने दीख्याजीलीधी । व्रत लेईनें विधसुं विचारे । अंतकाल आयां अणशण उचारे ॥ ७ ॥ वैमानिकवासी देवता वदीतो । साधु गोभद्र हुवो सुवदीतो । अविध प्रयुंजी जांणें विरतं तो। भोगी सालभद्रनूं देखै एकांतो ॥ ८ ॥ भवपूरबरी वात संभाले । नयणें आपरो वेटो निहाले । मन मांहे देवता इसमो विमासे । आई निसरुं आगे जी पाशे ॥ ९ ॥ आगे तो लक्ष्मी इधकेरी हुंती । देवतानी दीधी हुई अनंती । पेई तेत्रीसे देवता पुहुचावे । सोनें में ग्रहणा जमीया शहु आवे ॥ १० ॥ तेत्रीसमी पेटी तिणमांहे नीकले । सूरज चंदा ज्यूं तेजें झल हले । मांणकनें हीरा सोनांमें जमीया । घाट सुघाटे देवतारां घमीया ॥ ११ ॥ सेहरो साहूनें साल भद्र जोगो । लाखां कोडांरा आंके त्रैलोको । शाठां घमीयांरी अंते शगलाई । नाखे आभूषण निरमायल खाई ॥ १२ ॥ दिन२ पेई देवता ते ल्यावे । शोनईया हीरा मांणक लावे । उत्तरीया ग्रहणा निरमायल थावे । वलती पेयांरी शार नकरावे ॥ १३ ॥ राजा चक्रवर्त्ति शुहणे न देखे । एहवा आभूषण पहरनें नाखे । केशर कस्तूरी मलया गिवासे । चोवानें चंदन फुलवाद वाशे ॥ १४ ॥ आठ पोहरनें वत्रीशे वडिया । पात्रांतो नाचे मुह आगे खमीयां । अपछरा शरिखी उपमा पावे । भांमणि वत्रीशे ते मन भावे ॥ १५ ॥ सुकलीणी सुंदर वत्रीशे राणी । पुन्य जोगें शेती एण दिन आणी । दिन २ वध ते हेतशुं निरखे । नारी पत भगती हितशुंजी परख ॥ १६ ॥ एक दिन व्यापारी परदेशी आया । वशत अमोलक विध २ री ल्याया । व्यापारी चोहटे वशतां देखाले । नगरीरा लोक आवीनेंहाले ॥ १७ ॥ रतन मे कांवल शोले निरखीनें । वां

णी या देखै निधशुंपरखीनें। वांणीया पूछै मोलवतावो। सवा लाख शोनइया नगद दीरावो॥१८॥ मोल शुणीनें शाहजी शलकै। कर २ नें वातां माहो मां मुलकै। वलता वांणीया नेमानही आवै। कूमी शुण गलां कुशले घर जावे॥१९॥ इस विध व्यापारी नगरीमें भमीया। जाये राजाकै चर्णोंजी नमीया। व्यापारी बोलै शुणो महाराजा। शोलेई कांबल शहुछै ताजा॥॥२०॥ इण कांबल में गुणछै एक मोटो। आपरे आगे न बोलुं खोटो। आगमें धोयां मेलज छंटै। मोल कांबलनो इधको तिणमां टै॥२१॥ शुण शुणीने राजा गह गहीयो। कांवल एक लेवा घणु ऊमहीयो। नगद शोनई या नहीं भंभारो। महीनारी मोलत करो ऊधारो॥२२॥ वलता व्योपारी बोलै इमवांणी। रावलीवांणी शाचीमें जांणी। शुणो महाराजा एक अरदाशो। पइशाखरचीरा नही अह्म पाशो॥२३॥ खरची दिवरावो कांबल रखवावो दूर देशांतर अह्मनेंछै जावो। परदेशी किम कर आपे ऊधार। नगद सोनइया कांबलव्योसार॥२४॥ इम कहि व्यापारी भैरैजी आया। आए भैरैनें घणुं पिछताया। माहोमां मिलनें मित्रांणो कीधो। आंपणो एको कारिज नसीधो॥२५॥ अबै अठासुं आघेरा चालो। सहिर सख रोसो नयणे निहालो। किरीयांणो वेची कारज सारीजे। सुंवारी मासी इण परि मारीजे॥२६॥ मुखसूं इम कहिता परदेशी आवे। मनमें इधकेरो ऊ चाट थावे। वांणी सुण इसभी भद्रा बोलावे। वहता व्यापारी ऊमारखावे॥२७॥ सूरा व्यापारी दीसोछो वीरा। बोलोछो इम किम बोल अधीरा। वसतां देखावो मोल वतावो। आखता हुयनें परामतजावो॥२८॥ व्यापा री कहै वभी विणयांणी। सही या लेसी वस्त अह्मांणी। फोकटणीवातां कहि २ नें फेरै। एवमोही मोल कठासुं भैरै॥२९॥ भाई कहीने भद्रा समझावे। इण घर कभीरो अंतन आवे। भोलैं भूलाछो किणरा भिम काया। दीसोछो भोलांतणा दडकाया॥३०॥ भद्रा तुंसांभल भोली विण यांणी। लीधी नहीं कांबल राजारी राणी। फूटरा घणुं फूंदाल्लासाहो। पै दीयां बैठा दीसे पतिसाहो॥३१॥ कांबल देखीनें ऊमाहो कीधो। मो लसुणीनें विलखो मुंह कीधो। सवालाख सोनइया एकणरा लागे। इस

मी नविजायें लीधी तुज आगे ॥ ३२ ॥ वलती सेठाणी वाणी इम भाषे । वीरा व्यापारी इम किम दाखे । कांवलसोलेंने कामण वत्रीसो । सरचावुं किम कर वहुअर वत्तीसो ॥ ३३ ॥ वेत विचारी हकाकरावो । ठीककहीनें मोल ठह रावो । व्यापारी बोले सुणो सेठाणी । लाख वीशरी आंणो हिमाणी ॥ ॥ ३४ ॥ भंभारी तेमीनें भद्रा इम भाषे । रती एकरो अंतर मतराखे । व्यापारी एहै वोलरासूरा । दामगिणीनें देज्यो थे पूरा ॥ ३५ ॥ खोलै भंभारी मोटो भखारो । तीजो गिणवाने साथे हुवो त्यारो । व्यापारी मोटो इकला रेंजी लेवे । दांम गिणींनें जिणनें सहु देवै ॥ ३६ ॥ पुखतो व्यापारी को ठार जोवै । अहिनांणे इंद्रपुर एहीज होवे । मोती परवाला मांणक मन मोहै । हीरा सोनइया सखरा ते सोहै ॥३७॥ पांचरत्नांरो पारन पेखे । रोक रु पइया दह दिश देखे । विधि २ रो नांणो व्यापारी निरखे । पुखतो व्यापारी ले लेनें परखे ॥ ३८ ॥ चितमें व्यापारी एहवोज चिंतै । रहीहुं देखुं सुहणो सुभरीतै । चकचूंदी आख्यां आवीनें चमकै । ठीकसेती चाले पगल्यारें ठ मकै ॥ ३९ ॥ अभवभतो पडतो आखडतो अरकै । पभ हडतो खिसतो खूणांसुं खरकै । तितरे भंभारी तडकनें बोलै । ज्यो वेगोनांणो घालां थां खोले ॥ ४० ॥ मालहमालांमाथे दिरावै । व्यापारीपाछा भेरें ते आवे । तिण वेला श्रेणक राजातेडावे । व्यापारी प्रतें आदर दिवरावै ॥ ४१ ॥ राजाजी कहे सुणो परदेश्यां । कांवल तुह्मांरी एक ह्मे लेश्यां । मोटी महाराणी हठनमूंकै । कांवल लेदीधां सहु धंध चूकै ॥ ४२ ॥ जिम तिम करीने जिनसां ह्मे देवां । लाखसवारो लेखो भरदेवां । मांनो व्यापारी कांवल ले आवो । नहिं अवथे माहरो वचन फिरावो ॥ ४३ ॥ व्यापारी मुखसुंएहवो प्रकासे । सोले इज कांवल हुंता अह्मपासे । सेठांणी भद्रा ने सहु लीया । दाम गिणीने अह्म नें तिण दीया ॥ ४४ ॥ अचरज पांमीनें राजा इम दाखे । सोदागर इसको कूमो कांई भाखे । एहवो कुणछे नगररीमें आज । लाखांवीशांरो काढे ते काज ॥ ४५ ॥ सोदागर जंपे सुणो महाराजा । सोवनमें घर नें रत्नांरा छाजा । माल अलेखे निजरे ह्मे दीठो । सालिभद्र नांमें मोटोछे सेठो ॥ ४६ ॥ कुगो आथमीयो तेनवी जांणो । मांनवरी देह सुर सुख मांणे । ढरसण नेहनो दी ।

गं जाणीजे । महाराजा मनमें सांसो नांणीजे ॥ ४७ ॥ सोदागिर सुखसुंवात सुणीनें । दिवरावे सीखसिरपाव देनें । ततखिण तिण वेला राजा तेभावे । अन्ने कुमार हजूर आवे ॥ ४८॥ कुंवरजी आवे मुजरोजी कीधो । महाराजा मोटो सन मांनदीधो । भाषे इमराजा सांभल कुमार । बेगाजिहां जावो भद्राघरवार॥४८॥ भद्रानो वेटो सालभद्रसाह । अह्मनें देखणरो इधको उछाह । तुरत कुंवरनें तेमीनें ल्यावो । वेगाहुइ जावो वारमल्यावो ॥ ५० ॥ कांबल एकलावो मोलकरीनें । सेठाणी प्रतै शनमांनदेनें । आया कुंवरजी शेठाणी आगै । वि धि शेती कांबल एकजमांगैः ॥ ५१ ॥ वोलै इम कूंवर सुणौ शेठांणी । ह ठि करनें बैठी मोटी महाराणी । महाराजा कांबल एक मंगावै । परबारो मोल पूरो दिरावै ॥ ५२ ॥ इण वातै तिलभर कूमम जांणो । ऊठो वरमै शुं कांवल एक आंणो । शालि कूंवरनें मेलो मो शाथ । वोलावै वेगो श्रेणक नर नाथ ॥ ५२ ॥ अन्ने कुमाररा मुखशुं ए वात । शुणी शेठांणी जंपै इम वात । आया थेभलै कुमरजी आप । दरशण तो दीठां सहुपुलीयाजी पाप ॥ ५४ ॥ तुह्म शरिखा पुन्यवंत घरांगण आया । दुख दोहग टलिया शहु शुख पाया । अरज अह्मारी एक अवधारो । सेवक मनरा सहु कारज सारो ॥ ५५ ॥ शोलैमें कांबल शगलाईलीया । तिके वधारी वत्तीशकीया । कांब ल एकेको वहुअरनें दीधो । ऊपर नविरहियो कांबल कोई बीयो ॥ ५६ ॥ देवता दीधा आभूपण आवे । तिके पहिरंता तनसुख पावे । वहुअर किम उढे कांबल ते करभा । खरखरा लागै अंगे ते खरभा ॥ ५७ ॥ मेंलेई सुक्या उत्तम जांणेनें । ऊतंभो दीधो वहुअर आंणेनें । शाशुजी एशुं महिमांनी कीधी । एहवी अलाविय शुं आंणीने दीधी ॥ ५८ ॥ ऊवटणो करनें वहूवां पगलूहे । नाख्या ते परहा निरमायल कूवै । कहोनें निरमायल किमकर दिरावे । निरमायल देऊं तो दूषण सुझथावे ॥ ५९ ॥ मोलायक बीजो का रिज फुरमावे । महाराजा कुमर स्यांनै तेभावै । नांन्हमीयो माहरो लीलानो लाभो । गहभरीयो शोभे गणकेरो गाभो ॥ ६० ॥ सातमी भूमें शुखशेती पोढे । नाटकीया नाचे अहिनिशि गोढे । काया मांनवरी कुमर ते दीशे । मोभां सुररायां इधको ते दीसे ॥ ६१ ॥ दरसण नो कोई देखण न पावे । लखगानें लोक आवे

न जावे । चालो हुंचालुं महाराजापासे । भद्रा इम भाषे मनरैउल्हासे ॥ ६२ ॥ दरबार आवे भद्रा मन भोली । शाथे शोगानें सहीयारी टोली । बे कर जोडी भद्रा इमबोलै । प्रथवीपति राजा शमकुण तोलै ॥ ६३ ॥ अरज अमारी एक अवधारो । महाराजा आंगण ह्लाहरे पधारो । सेवकरे ऊपर सुनिजर कीजे । शाल कुमरनें दरशण दीजे ॥ ६४ ॥ वयणशुणीनें बोलै महा राज । तूठा तुफ ऊपर आवां घर आज । जायै आगेनें जुक्त करावो । शा ल कुमरनें सन्मुख ल्यावो ॥ ६५ ॥ अशवारी करनें राजाजी आया । मिल २ नें सुहव मोतीयां वधाया । सिंघासण आशण सोवनरा देवे । आरतीयां कर२ ऊवारणा लेवै ॥ ६६ ॥ राजारे आगे भद्रा ते आवे । भोजनरी भक्ती सुफनें फु रमावे । राजाजी कहै युक्त करावो । महल तुमारा अमनें देखावो ॥ ६७ ॥ आलश छोमीनें भद्रा ते आवे । हुकमति होदा जल ऊनो दिवरावे । पीठी ऊ गटणा प्रथम करावे । शाथी शगलांनै शिनांन करावे ॥ ६८ ॥ क्रीडा पांणीरी करता तिण वेला । मंत्री महाराजा सगला शमेला । उत्तम अंगूठी राजाजी पारी । विलखाहुय जोवै शगली गोवारी ॥ ६९ ॥ राजाजी श्रेणक मनमें विचारे । शगली रिध्दरो शारथो ह्लारे । चिंता करीनै मनमांहे शोचे । पछ तावे पमीयां ऊजाआलोचे ॥ ७० ॥ सेठाणी भद्रा तुरतज शमधी । वाणीयां होवे आगल बुधी । जल कल ऊवामी ऊनी जोवावे । पाणी वीऊरीयां अंगूठी पावे ॥ ७१ ॥ मुंद्रमली लेई घरमांहे आवे । केई अंगुठी अवर निकलावे । त्यां भेली करनें भद्रा ते ल्यावे । ऊलखनें राजा मनमें ऊमावे ॥ ७२ ॥ स्नान करीनें शहुकोई शाथ । शालकुंवरनी देखे सहु आथ । पुन्यरो पूरो ए दीशे अं कूरो । शाहां शिरशोहै परतख्यशूरो ॥७३॥ शोनाराथाल रूपारी चोकी । सुख मलरी गादी दीधी ए कोकी । रतनारा फारा पाणीरा भरया । खाशा गंगोदक पसवोवे करिया ॥ ७४ ॥ मेवांने साकर सेलमी ल्यावे । खारक खजूरां पासे पुरशावे । खोपरा खासा खुरमाणी आवे । दाखांनें निमजा दाममलावे ॥ ७५ ॥ अखरोट आंबा केला नारंगी । पिसता सदाफल जंवेरी चंगी । रायण बीजो रा खरबूजा खासा । ककडी साकरीयां भेला पतासा ॥ ७६ ॥ सरदा अंजीर अगूर सखरा । बोर विदाम पुरसे ले सखरा । इण विधरामेवानें आणांनें पुरसे

सगला आरोगे मनरे ते हरसे ॥ ७७ ॥ सीरा सावूनी सखरीसुहाली । लाडू वि थररा ल्यावें नरथाली । लाडू सेवीया खासा गुलावी । सिंघकेशरीया ल्यावें सतावी ॥ ७८ ॥ वाजणा लाडू गाजणा लावें । कीटीरालाडू केशरिया आवे । भाजणालाडू मिरचाला भावें । लाजणांलाडू वाजणाभावें ॥ ७९ ॥ मगदरालाडू दालीया मुगता । लाडू कस्तुरिया ल्यावें ते गलता । मोतीजीचूर मिश्रीरालाडू । दीसैते मोटा देहरारा गाडू ॥ ८० ॥ ऊगरीया लाडू गुंदीयां झांखे । सहूकोपुरसंता जीजी मुख भाषे । पुर २ की पुरकी गुप चुप आवे । गूंदबफा घेवर जलेंबी लावे ॥ ८१ ॥ पूरी कचोरी पेफा हेसमीयां । खुरमा नें दोठा पाजा मनगमीया । दरभिस्त फीणा इंदरसाफा । आछी अकब री दहीथरा पूरा ॥ ८२ ॥ सकर पारानें लापशी आवें । सगला तिनसेती धोकरनें थावें । तरकारयां आवें ततखिणताजी । वालोर वथवो चिणारी भा जी ॥ ८३ ॥ सोवानें मेथी सरशुं सांगरिया । कैर कारेला पापर मोगरीयां कचनार कलीयां केवलाने फोग । आरोग्यां जाये तिणशुं सहुरोग ॥ ८४ ॥ वरीयांनै मोमी नीलावली वोर । करूंदा कोठ करपटा जोर । चवलानी फलि यां घेवराकाचा । आलन पेठा अद्रक साचा ॥ ८५ ॥ अरबी वांवलीयां खासी काचरीयां । मिरचानें शुंठ सुखसुं आचरीया । हलदीनें जूंण हींगसुं भा जी । तोरूं तुंगनें टींडसी ताजी ॥ ८६ ॥ आंवलीया आंबा नीबू आचार । रा इरे भेला राईता त्यार । खाटो मिरचांरी खासोपलेव । होसों पुरसावै हितकर नें हेव ॥ ८७ ॥ वासमतीचावल मुंगांरी दाल । मुरहावी ऊपर पुरसे रसाल । सि खरणनेयुक्त बूरो सिरावे । पाणी परघलसुं चलुआं करावे ॥८८॥ बीफापानारा लुंग सुपारी । तिलक करे देसहव नारी । आभूपण वागा पंचमाआवें । सिर दार देखी सहुनें पहरावैं ॥ ८९ ॥ राजा श्रेणक इणविध फुरमावे । इणघर रो स्वामी निजर न आवे । अखीयां ऊली हुकम हलावे । ह्यां घरआयां मु जरो क्युं नावे ॥ ९० ॥ आवीनें भद्रा एम पर्यंपे । एकवार देखो वररी सहुसं पें । महल महिपति शूं ऊपर जोवो । आराम करनें शाइतइक शोवो ॥ ९१ ॥ पहलीज भूंम प्रथवी पति चढीया । पूरा पुरपोत्तम शाखे जे पढीया । मंभांण घररो मनशुं आलोचै । रचीयो जाणे कर शाखनें शोचे ॥ ९२ ॥ ऊपरली वी

जी भूंमते आवे । ज्योतिझिगामिग निजरे देखावे । भद्रा कहै सुणीयै मोटा भू पालो । ताजी देखावुं तीजी है मालो ॥ ९३ ॥ तीशरी पोल चढीया तिण वेला । रतनारी जोत दीपै अतिकेला । आंख्यारे आगै अंधाली आवै । मन मां हे जांणै भद्रा भरमावै ॥ ९४ ॥ चौवारे चौथे चढीया तिण शेती हाथे कर झाले भद्रा हित शेती । निजर करीनें निरखे ते भूम । धम २ आवे धक्का करधूम ॥ ९५ ॥ श्रेणक राजा एम विचारै । फशीया फंदमांहे आवीड्यां रे । कुशलै घर जावां किणही भकार । दिन ऊगै करशी कवण दरवार ॥ ९६ ॥ आवीनें भद्रा एम पयंपै । प्रथवीपति मोटा क्युंमन कंपै । सुख सेती कीजे इहां विशरांम । तेमीहुं ल्यावुं ताहरो गुलाम ॥ ९७ ॥ शाल कुमरनें सुखमै वतलायो । घर आंगण वेठो श्रेणक आयो । वखतावर मोटा लेखविया राजा । आप चढीनें आया महाराजा ॥९८॥ ऊठो सिज्यासुं आलश छोमो राजा मिलनेंरो राखै अतिकोम्रो । पूतपधारो राजारै पावै । तसलीम करनें तुरत तुंआवे ॥९९॥ मातारा मुख सुं वांणी शुणवोलै । किरीयांणो श्रेणक नां खो ले खोलै । माताजी पूछो काशूं इण मोलै । भार भलायो वरो शहु तोलै ॥ १०० ॥ इतरा दिन थेई कांम चलायो । मन मान्यो माता हुकम हलायो अम्हकांणा काम रहोने अवै । भंमारभरीया मणिमांणक सवै ॥ १०१ ॥ नाणा रीतोट भारे घरनांही । मुंहमांग्यो देइ नाखो घरमांही । किरियांणो कोई पाछो मत फेरो । कहोने कासुंथे पूछोछो एरो ॥ १०२ ॥ सतवंती भद्रा वाणी इम वोलै । सुण२हो वेटा भूलोमतभोलै । पृथवीपति राजा श्रेणक सलहीजे । आपणरोस्वामी एह कहीजे ॥ १०३ ॥ रूठोए राजा विषरूप जाणो । तूठोए राजा सुरतरु सुपीयाणो । इणरी सुनिजरसुं अपनीरिध्धओपै । करे निरधनीया कहीये जो कोपै ॥ १०४ ॥ आशइणांरी वेटा वहु कीजे । पिण आसंगो पूरो नविकीजे । राजा वेसनर सरिखा जाणीजे । इण वातें कोई शांसो नां णीजें ॥ १०५ ॥ मातारा हुक्म माने तेसेछो । पावे लागे नआवें फिरऊो । श्रेणक राजारो सभावफूठो । खिणमांहे रूठो खिणमाहे तूठो ॥ १०६ ॥ जाणेंरो विलंब वेटा नहुकीजे । जाए राजारो दरशण कीजे । तो सुरत दीठां राजाजी रीझे । अण चिंत्या कारज इण वातें सीझे ॥ १०७ ॥

मातारा वचन मीठा सुणकानें । विषधर वहु कोपै ज्युं पयपानें । मनमां हे कुंवर वैराग आणें । भवसागर माया काची सहु जाणें ॥ १०८ ॥ पूर्वलै भवमें ऊंडो पुन्य कीधो । साधांने फाशु अशन नवि दीधो । वीतराग वचनें शांशोमें धरीयो । दरशण देवांरो में नवि करियो ॥ १०९ ॥ सामायक पोशो अवशर नवि कीधो । साधांरै मुखसें शमकित नविलीधो । ऊंडो पुण्य कारण इण भव अवतरीयो । नारी शिवरमणी मुझनें नवि वरियो ॥ ११० ॥ परवश शेती पर शेवा करणी । मातारी शीख मन मांहे धरणी । एहवो विचारी आयो मन भंगे । नरपति ले वैठो आपण ऊछरंगे ॥ ॥ १११ ॥ शाल कुमररी शोभा सराहै । मुखडो देखीनें राजा ऊमाहे । सुरगांरो वाशी सुरपति ज्युं ओपे । काया कुंवररी अधकीज ओपै ॥ ११२ ॥ मोटो महीपत मनमें विचारे । ए दीशे पुन्य एणसंसारै । माया घर मुंकी महला मतवंती । काया कंचण ज्युं उत्तम दीपंती ॥ ११३ ॥ मांखणसम काया कोमलछै इणरी । राग राखी नें राजा कर फेरी । कुमररी काया परसेवो वलीयो । कर फरसे ततखिण भील पर पलीयो ॥ ११४ ॥ भद्रा तिण वेला राजा प्रति भाषै । सीख कुमरनें द्यो शहुशाखे । जाये जनमंतर इण २ काया । परसेवा करनें फरिस्या नहु पाया ॥ ११५ ॥ स्वछंदाचारी सुख मांहे रहीयो आगम राजरो आजमें कहीयो । ऊठे सिय्यासुं भोलो भावडियो । अवसर राजरो इण भव लहीयो ॥ ११६ ॥ राजी होय राजा सीख समापी । रिधी अविचल सालनें आपी । कठ पंजर बंधन सुं सुक छूटे । वलतो फिर नावे वेगो तिण खूंटे ॥ ११७ ॥ उतरी कांचलीये अहिरुं जिमत्रासै । पाछो नवि जोवे परहो ते नासै । कुंवरजी चितरे ज्वाट बेठा । आवीने पोढणरीखाट जे सेंठा ॥ ११८ ॥ सहु त्रीया आवी शनमुख ऊभी । मुख सेंती उत्तर नवि दीये मोभी । माहो मांहि पूछे महिला मन भोली । रीसांणो साहव ना रंगरोली ॥ ११९ ॥ दोय चार घमीयां परखीनें दीठो । नाहरे चित्त सुं नेहभलो नीठो । सासू सुं वोले सरम खोलीनें । सुलकंती अंचल मुख ऊपर देनें ॥ १२० ॥ रावलो जायो राजी नही आज । मन खांचीयो दीसे सहीय आज । आवी कुमरनें समझावो आप । गुण अवगुण शुनो

करावो माफ ॥ १२१ ॥ पूत पनोती पारकी जाई । विन अवगुण कां ना खो धसकाई । नेहडलै भीनी गुणवंती गोरी । तिणसेती कीजे कांइ चित चोरी ॥ १२२ ॥ माता इतरा दिन हुं नवि समधो। सुभ करमी होइने सम कित सही लधो । कायानें माया काची सहु जांणी । गोरी ए दीसै दुरग त सहिनांणी ॥ १२३ ॥ मांताजी मोनें अनुमति आपो । सद्गुरु पस वाम्ने दिक्षा समापो । रहि २ रे बेटा एहवो कांई दाखै । शाइत भर नसरे झारे तो पाखै ॥ १२४ ॥ सुंहणेंही बेटा इसभो मति सोचे । वेत विचारी ऊंडो आलोचे । भरमायै किणरे बेटा नवि भमीयै । आपणा घररो कांई नावि गमीयै ॥ १२५ ॥ सहु वाते पूत तूंछै सधीरो । बाई सुभद्रा तणें इक वीरो । नांन्हभीया तो विण झारे नवि सरसी । कुटंबरी सार बेटा कुणकर सी ॥ १२६ ॥ कितराई वचन मोभीनें कहीया । मनमें कुमररै ते नावि र हीया । भीनो रंग चोल भगवंत धर्मे । मायारा जाल मूंक्या सुभ कर्मे ॥ ॥ १२७ ॥ हठकर माता हठ करी राखै । तपस्या चारित्र नहुवे तो पाखै हल फलीयो हिवणा बालक बुध करिनें । सही हुं जासुं भव सागर तरिनें ॥ १२८ ॥ पंडित हुइनें बेटा सुणि बात । हुं जानुं ताहरी मगली अंगधात । तो सेती चारित्र न पलै तिलमात । सुणरे बेटातूं वातरी वात ॥ ॥ १२९ ॥ माता ए जांण्यो हुकम करि राखुं । दिन दस आभा जिम ति महुं नांखुं । इतरामें इणरी बुधी फिरजासी । ललचांणो कांमणि लोभी योथासी ॥ १३० ॥ पोतारी काया पहिली वसि कीजे। कांमणि एकेकी दिन प्रति छोभीजे । वसि करि इंद्री घर वास वसीजे। करि २ तपस्यानें काया वसि कीजे ॥ १३१ ॥ सूधी सुण वात हियमामे धारे । कांमणि एकेकी दिनें प्रतिवारे । निरलोभी हुइनें लूखो मन राखे । चितसेती बेठो चारित्र रस चाखे ॥ १३२ ॥ सातमें दिन संझ्यारी वेला । धन्नोजी धर्मी आवे एकेला । सालानें सीख देनें इम भाखे । ऊंभो तूंसोच इवडो कांइ राखे ॥ १३३ ॥ थिर मन करिनें चालोथे आगे । पूठ पूरव सुं हुं मन रागे । आंपे मिल दोऊं करणी आदरस्यां । वेगा भव सायर पार उतरस्यां ॥ १३४ ॥ एक मन दोनुं होइ नीसरीया । सिंह पाखरीया जांणे केशरिया । सांभल स्या

मीरी देशना सूधी । समझा मन मांहे तुरत सुबुधी ॥ १२५ ॥ आयाघर पू
ठा आग्या ते मांगे । छलि २ मातानें पाए ते लागे । बंधन संकट सुं माता
मुंकावो । कल्यांण माहरो कोई जो चावो ॥ १२६ ॥ कूडो कथन अब कीजे
नवि माता । महावीर वचनें अह्ने रंग राता । चारित्रिया होसां चित्तमांहे
चोंका । धर्म करणी करनें ठेमां भव धोंका ॥ १२७ ॥ आजूणा वचन भद्रा
ते आखे । संजम लेसी ए सहू साखे । आमी अंतराय हुंस्यानें होऊं । ब
हिनोई सालो व्रतलो थे दोऊं ॥ १२८ ॥ सामग्री मेले सहु साथे आ
वे । गीत गुणवंती गुण बहु गावे । ढोल नगारा ढमके वजावे ।
प्रह ऊठी दरशण इण विधि पावे ॥ १२९ ॥ इरियावहि पडिक्कम पाप
आलोवे । मेल करमरा लागा सवधोवे । महावीर स्वांमी माथे कर दीधा
साल धन्नारा कारज सहु सीधा ॥ १४० ॥ भोलामण देई भद्रा घरि
आवे । सुभ मति देनें गोरयां समझावे । तिन दिन सेती तपस्या ते साधे ।
मास खमणादिक करे मन बाधे ॥ १४१ ॥ करमांरी गोठ काटे बेभाई ।
किरीयारी कमणा राखे नही काई । अणसण करीनें आऊखो पावे । सर्वा
रथ सिद्धे वासो सुख पावे ॥ १४२ ॥ महाविदेह मांनव भव लहिसी ।
करणी कर आठे करम ते दहसी । सुपसा ए दांन सहु कारज सरसी । सालो
वहिनोई दोनुं शिव वरसी ॥ १४३ ॥ सालभद्र धन्नो साधु कहाया । प्रहसम
ऊठे प्रणमुं ते पाया । गुण तिणांरा भवि जन गाया । मन सुध समरयां मुक्ति
दे माया ॥ १४४ ॥ मुहता महाजन मोटा मति धारी । देवी धर दीपे गांव
गुण कारी । मोटी महमाई थांन विराजे । ठाया तिणरी इधकी ते ठाजे ॥
॥ १४५ ॥ संवत सतरे इक्यासी वरसे । चोमासो कीधो चितचूंप हरखे । खे
मकीरतरी साख मवाई । तिणरा संतानिक वाचक वरदाई ॥ १४६ ॥ सो
म हरखनामें श्रमण कहीजे । लक्ष्मी समुद्र पाटे स लहीजे । गणी कनक
प्रिय गुरु सुपसाया । गुण तिणरा में सिंहा मुनि गाया ॥ १५७ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री शांतिजिन वृद्धस्तवन लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सारद मात नमुं शिरनामी । हुंगाउं त्रिभुवनके स्वामी । शांतिज
शांति जपे सबकोई । त्यां घर शांति सदा सुख होई ॥ १ ॥ शांति जपीनें

कीजे कामा । सोही काम हुवे अभिरामा । शांति जपी परदेश सिधावे । ते कुशले कमला लेई आवे ॥ २ ॥ गरज थकी प्रभु मार निवारी । शांतिज नाम दियो महतारी । जेनर शांतितणा गुण गावे । रिद्धि अचिंती जेनर पावे ॥ ३ ॥ ज्यांनरकों प्रभुशांति सहाई । त्यां नरकों काई आरत नाई । जो कछु वंछे सोई पूरे । दालिद्र दुष्ट मिथ्या मति चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन जोत प्रकाशी । घट घट भीतरके प्रभु वासी । स्वामि स्वरूप कह्यो नहिं जावे । कहतां मोमन अचरज आवें ॥ ५ ॥ डारदिये सबही हथियारा। जीता मोहतणा दलसारा । नारतजी शिवसुं रंगराचे । राजतजी पिण साहिब साचे ॥ ६ ॥ महाबल वंतज कहिये देवा । कायर कुंथुन एक हणेवा । ऋद्धिसयल प्रभु पाश कहीजे । भिक्षा आहारी नाम भणीजे ॥ ७ ॥ निंदक पूजक है समभायक । पिण सेवकही कों है सुखदायक । तज्यो परिग्रहतें जगनायक । नाम अतीत सवे विधलायक ॥ ८ ॥ शत्रु मित्र समचित्त भणीजै । नामदेव अरिहंत भणीजे । सयलजीव हितवंत कहीजे । सेवक जाण महापद दीजे ॥ ५ ॥ सायर जैसा होय गंभीरा । दोष नहीं इक मांह सरीरा । मेरुअचल जिम अंतर जामी । पिण न रहे प्रभु एकण ठामी ॥ १० ॥ लोक कहै जिनजी सहु देखे । पिण सुपनो कबहु नविपेखे । रीसविना बावीस परीसह । सेन्याजीती ते जगदीसह ॥ ११ ॥ मान विना जग आण मनायो । माया विना सबसुं लय लाई । लोभ विना गुण राशि ग्रहीजे । भिक्षु भए त्रिगभो सेवीजे । निग्रंथपणें शिर छत्र धरावे । नाम जती पिण चवर ढोलावै । अभयदान दाता सुख कारण । आगल चक्र चले अरिदारण ॥ १२ ॥ श्री जिनराज दयाल भणीजे । करम सबे कोही मूलखणीजे । चोवीह संवज तीरथ थापे । लछवणी देखै प्रभु आपे ॥ १४ ॥ विनयवंत भगवंत कहावे ॥ नां काऊकों शीश नमावे । अकिंचनको विरुध धरावे । सोपद पंकज आतम ठावे ॥ १५ ॥ तजतरुणी निज गुणकों ध्यावे । शिवरमणीकों साथ चलावे । रागनही पिण सेवककों तारे । द्वेष नहीं निगुणा संगवारे ॥ १६ ॥ तेरी महमा अद्भुत कहिये । तेरा गुणको पार न लहिये । तुं प्रभु समरथ साहिब मेरा । हुं मनमोहन सवके तेरा ॥ १७ ॥

तूं रे त्रिलोक तणो प्रतिपाला । हुं रे अनाथ अछुं रे दयाला । तूं सरणागत रा खण धीरा । तूंवलि तारक छे वडवीरा ॥ १८ ॥ तूंही जिसो वम् भागज पायो । तो मेरो कामचड्योरे सवायो । करजोडी प्रभु वीनवुं तो सुं । करो कृपा जिनवरजी मोसुं ॥ १९ ॥ जामण मरण निवारण वारो । भवसायरथी पारउतारो । सारंग हथणा पुर मंमण सोहे । तिहां श्री शांति सदा मनमोहे ॥ २० ॥ पदम सागर गुरु पाय पसाया । श्री गुण सागर के मन भाया । जे नरनारी इक चित्तगावे । ते मन वंछित शिवसुख पावे ॥ २१ ॥ ❀ ॥
इति श्री शांतिजिन स्तवनं शांतिकरणार्थं ॥ ❀ ॥ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जीवचार लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भुवण पइवं वीरं । नमिऊण भणामि अबुह बोहत्थं । जीव सरूवं किंचिवि । जह भणियं पुव्व सूरीहिं ॥ १ ॥ जीवा मुत्ता संसारिणोअ । तस थावराय संसारी । पुढवी जल जलण वाऊ । वणस्सई थावरा नेया ॥२॥ फलिअ मणि रयण विद्दुम । हिंगलू हरियाल मणसिल रसिंदा । कणगाइ धाउ सेढी । वणी अरणेट्टय पलेवा ॥ ३ ॥ अब्भय तूरीऊसं । मट्टी पाहाण जाइउ णेगा । सोवीरंजण लवणाई । पुढवी भेयाइं इच्चाइं ॥ ४ ॥ भूमंत रिक्ख मुदगं । उसाहिम करग हरितणु महिया । हुंतिघणोदहि माई । भेया णेगाय आउस्स ॥ ५ ॥ इंगाल जाल मुम्मुर । उक्कासणि कणग विज्जुमा ईया । अगणिजीयाणं भेया । नायव्वा निउणवुद्धीए ॥ ६ ॥ उब्भामग उक्क लिया । मंमलि मुह सुद्ध गुंजवायाय । घणतणु वायाइया । भेयाखलु वाउ कायस्स ॥ ७ ॥ साहारण पत्तेया । वणस्सई जीवा दुहासुए भणिया । जेसि मणंताणतणु । एगा साहारणा तेऊ ॥ ८ ॥ कंदाअंकुर किसलिय । पणगा सेवाल भूमिफोडाय । अल्लत्तिय गज्जर मोत्थ । वत्थुला थेग पल्लंका ॥ ९ ॥ कोमल फलंच सव्वं । गूढ, सिराइ सिणाइ पत्ताइं । थोहरि कुमार गुग्गुल । गिलोइ पमुहाइ छिन्नरुहा ॥ १० ॥ इच्चाइणो अणेगे । हवंति भेया अणंत कायाणं । तेसिं परिजाणणत्थं । लरकण भेयं सुए भणियं ॥ ११ ॥ गूढ सिर संधि पव्वं । सम भंग महीरगंच छिन्नरुहं । साहारणं सरीरं । तव्विवरिअं च पत्तेयं ॥ १२ ॥ एग सरीरे एगो । जीवो जे सिंतु तेअ पत्तेया । फल फुल्ल छल्लि

कठा । मूला पत्ताणि बीयाणी ॥ १३ ॥ पत्तेय तरु मुत्तुं । पंचवि पुढवाइणो सयलजोए । सुहुमा हवंति नियमा । अंतमहुत्ताउ अदिस्सा ॥ १४ ॥ संख कवड्डय गंमोल । जलोय चंदणग अलस लहुगाइ । मेहरी किमि पूअरगा । बेइंदिय माइ वाहाई ॥ १५ ॥ गोमी मंकण जूआ । पिपीलि उद्देहियाय मकोडा । इल्लिय घयमिल्लीउ । सावय गोगीम जाईउ॥१६॥गद्दहय चोरकीडा गोमयकीमाय धन्नकीमाय । कुंथु गोवालिय इल्लिया । तेइंदिय इंदि गोवाई ॥ १७ ॥ चउरिंदियाय विच्छू । ढिंकुण भमराय भमरिया तिड्डा । मच्छिय मंसा मसगा।कंसारी कवल मोलाई॥१८॥ पंचेंदियाय चउहा। नारय तिरिया मणुस्स देवाय । नेरइया सत्तविहा। नायव्वा पुढविभेएणं॥१९॥जलयर थलयर खयरा । तिविहा पंचेंदिया तिरिखकाय । सुसुमार मछ कछव । गाहा मगराय जलचारी ॥२०॥ चउपय उरपरि सप्पा । भुय परि सप्पाय थलयरा तिविहा । गोसप्प नवल पमुहा । बोधव्वाते समासेणं ॥ २१ ॥ खयरा रोमय परकी । चम्मय परकीय पायडाचेव । नर लोगाउ बाहिं । समुग्ग परकी विअय परकी ॥ २२ ॥ सव्वे जल थल खयरा । समुछिमा गब्भया दुहा हुंति । कम्मा कम्मग भूमि । अंतर दीवा मणुस्साय ॥ २३ ॥ दसहा भुवणाहि वई । अठ विहा वाण व्यंतरा हुंति । जोइसिया पंचविहा । दुविहा वेमाणिया देवा॥२४॥ सिद्धा पनरस भेया । तित्थ अतित्थाइ सिद्ध भेएणं । ए ए संखे वेणं । जीव विगप्पा समरकाया ॥ २५ ॥ ए ए सिं जीवाणं । सरीर माऊठिई सकायंमि पाणा जोणि पमाणं । जेसिंजं अठिनं भणमो ॥ २६ ॥ अंगुल असंख भागो । सरीर मेगिंदियाण सव्वेसिं । जोयण सहस्स महियं । नवरं पत्तेय रुकाणं ॥ २७ ॥ बारस जोयण तिन्नेव गाउआ । जोयणंच अणुकमसो । बेइंदिय तेइंदिय । चउरिंदिय देह मुच्चत्तं ॥२८॥ धनुसय पंच पमाणा । नेरइया सत्तमाइ पुढवीए । तत्तो अद्धद्धूणा । नेया रयणप्पहाजाव॥२९॥ जोयण सहस्स माणा । मछाउरगाय गब्भया हुंति । धणुअ पहुत्तं परकी । भुयचारी गाउ अपहुत्तं ॥ ॥३०॥खयरा धणुअ पहुत्तं । भुरगा उरगाय जोयण पहुत्तं । गाउय पहुत्तमित्ता समुछिमा चउप्पया भणिया ॥ ३१ ॥ छच्चेव गाउआइं । चउप्पया गब्भयामुणे यव्वा।कोस तिगुच मणुस्सा । उक्कोस सरीर माणेणं ॥ ३२ ॥ ईसाणंत सुराणं ।

रयणीउ सत्त देह उच्चत्तं । दुग दुग दुग चउ गेविज्ज । णुत्तरे इक्किक परि हाणी ॥ ३३ ॥ बावीसा पुढवीए । सत्तय आउस्स तिन्नि वाउस्स । वाससहस्सा दशतरु । गणाण तेऊ तिरत्ताऊ ॥ ३४ ॥ वासाणि वारसाऊ । बेइंदिय ते इंदियाण अणुक्कमसो । अउणापन्न दिणाइं । चउरिंदीणं तु छम्मासा ॥ ॥ ३५ ॥ सुर नेरइयाण ठिई । उक्कोसा सागराणि तित्तीसं । चउपय तिरिय मणुस्सा । तिन्निय पलिउवमा हुंति ॥ ३६ ॥ जलयर उर भुयगाणं । परमाऊ होइ पुव्वकोडीऊ । परकीणं पुण भणिउ । असंख भागो अ पलियस्स ॥ ३७ ॥ सव्वे सुहमा साहारणाय । समुछिमा मणुस्साय । उक्कोस जहन्नेणं । अंतमहुत्तं चिय जियंति ॥ ३८ ॥ ओगाहणा उमाणं । एवं संखेवउ समरकायं । जे पुण इछविसेसा । विसेस सुत्ताउ तेनेया ॥ ३९ ॥ एगिंदि याय सव्वे । असंख उसप्पणी सकायंमि । उववज्जंतिचयंतिअ । अणंत काया अणंताउ ॥ ४० ॥ संखिज्ज समा विगला । सत्तठ भवा पणिंदि तिरि मणुया । उववज्जंति सकाए । नारय देवाअ नोचेव ॥ ४१ ॥ दसहा जियाण पाणा । इंदिय ऊसास आउ बलरूवा । एगेंदिएसु चउरो । विगलेसु छसत्त अठेव ॥४२॥ असन्नि सन्नि पंचेंदिएसु । नव दस कमण बोधव्वा । तेहिंसह विप्पउगो । जीवाणं भन्नए मरणं ॥ ४३ ॥ एवं अणोर पारे । संसारे सायरंमि भीमंमि । पत्तो अणंत खुत्तो । जीवेहिं अपत्त धम्मेहिं ॥ ४४ ॥ तह चउरासी लरका । संखा जोणीण होइजीवाणं । पुढवाईण चउण्हं । पत्तेयं सत्त सत्तेव ॥ ४५ ॥ दस पत्तेय तरूणं । चउदस लरका हवंति इयरेसु । विगलें दियेसु दो दो । चउरो पंचेंदि तिरियाणं ॥ ४६ ॥ चउरो चउरो नारय सुरेसु । मणुआण चउदस हवंति । संपिंडियाय सव्वे । चुलसी लरकाउ जोणीणं ॥ ४७ ॥ सिद्धाण नत्थिदेवो । न आउ कम्मं न पाण जोणीउ । साइ अणंता तेसिं । ठिई जिणंदा गमे भणिया ॥ ४८ ॥ काले अणाइ निहिणे । जोणी गहणम्मि भीसणे इत्थ । भमिया भमिहंति चिरं । जीवा जिनवयण मलहंता ॥ ४९ ॥ तासंपइ संपत्ते । मणु अत्ते दुलहे विसम्मत्ते । सिरि संति सूरि सिठे । करेह भो उज्ज मंधम्मे ॥ ५० ॥ एसो जीव वियारो संखवं रुइण जाणणा हेऊ । संखित्तो उधरियो । रूदाउ सुअ समुद्दाउ ॥ ५१ ॥

॥ ❋ ॥ अथ नवतत्व प्रकरण लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जीवा जीवा पुन्नं पावा । सव संवरोय निज्जरणा । बंधो मुरकोय तहा । नवतत्ता हुंति नायव्वा ॥ १ ॥ चवदस चवदस वयालीसा । वयासीया हुंति वायाला । सत्तावन्नं वारस । चउनव भेया कमेणेसिं ॥ २ ॥ एग विह दुविह तिविहा । चउविहा पंच छविहा जीवा । चेयण तस इयरेहिं । वेय गई करण काएहिं ॥ ३ ॥ एगिंदिय सुहु मियरा । सन्नियर पणिंदिया य स विति चउ । अपजत्ता पज्जत्ता । कमेण चउदस जीय ठाणा ॥ ४ ॥ आहार सरीर इंद्रिय । पज्जत्ती आणपाण भास मणे । चउ पंच पंच छप्पिय । इग विगला सन्नि सन्नीणं ॥ ५ ॥ धम्मा धम्मा गासा । तिय तिय भेया तहेव अद्धाय । खंधा देस पएसा । परमाणु अजीव चउदसहा ॥ ६ ॥ धम्मा धम्मा पुग्गल । नह कालो पंच हुंति अजीवा । चलण सहावो धम्मो । थिर संठाणो अहम्मोय ॥ ७ ॥ अवगाहो आगासं । पुग्गल जीवाण पुग्गला चउहा । खंधा देस पएसा । परमाणु चेव नाइव्वा ॥ ८ ॥ समया वलिय महुत्ता । दीहा परकाय मास वरिसाय । भणिउ पलिया सागर । उसप्पणी सप्पणी कालो ॥ ९ ॥ एगा कोडी सतसठि लरक । सत्तहत्तरि सहस्साय । दोयसया सोलहिया । आवलियाणं महुत्तंमि ॥ १० ॥ तिन्नि सहस्सा सत्तय सयाइं । तेउत्तरिंच ऊसासा । एसमहुत्तो भणियो । सवेहिं अनंत नाणीहिं ॥ ११ ॥ सा उच्च गोय मणदुग । सुरदुग पंचेंदि जाइ पण देहा । आइति तणूण वंगा । आइम संघयण संठाणा ॥ १२ ॥ वन्न चउक्का गुरु लहु । परघा ऊसास आय वुज्जोयं । सुभखगई निमिण तसदस । सुरनर तिरियाउ तित्थयरं ॥ १३ ॥ तस बायर पज्जत्तं । पत्तेय थिरं सुभंच सुभगंच । सूसर आइज्ज जसं । तसाइ दसगं इमं होइ ॥ १४ ॥ नाणंतराइ दसगं । नववीए नीय साय मिछत्तं । थावर दस नरयतिगं । कसाय पणवीस तिरिय दुगं ॥ १५ ॥ इग विति चउ जाईउ । कुखगइ उवघाय हुंति पावस्स । अपसत्थं वन्न चउ । अपढम संघयण संठाणा ॥ १६ ॥ थावर सुहम अपज्जं । साहारण अथिर असुभ दुभगाणि । दूसर अणाई ज्जेहिं अजसेहिं वीय दसगंतु ॥ १७ ॥ इंदिय कसाय अव्वय । जोगा पंच चउ पंच तिन्नि कमा । किरियाउ पणवीसं । इमाउ ताउ अणुक्कमसो ॥ १८ ॥ काइय

अहिगरणिया । पाउसिया पारतावणी किरिया । पाणांई वाया रंजिय । परि ग्गहिया माय वत्तीया ॥ १९ ॥ मिछा दंसणवत्ती । अपच्चरकाणाय दिठि पुठीय । पाडु चिय सामंतो । वणीय नेसत्थि साहत्थी ॥ २० ॥ आणवणि वियारणिया अणजोगा । अणवकंख पचइया । अन्ना पउग समुदाण । पिज्ज दोसे रिया वहिया ॥ २१ ॥ समई गुत्ती परिसह । जइधम्मो जावणा चरित्ताणि । पण तिग डुवीस दस वारह । पंच जेएहिं सगवन्ना ॥ २२ ॥ इरिया जासे सणा दाणे । उच्चारे समई सुय । मणगुत्ती वयगुत्ती । काय गुत्तीय अठहा ॥ २३ ॥ खुहा पिवासा सी उन्हं । दंसा चेला रइत्थिउ । चरिया निसीहिया सिज्जा । अकोस वह जायणा ॥ २४ ॥ अलाज रोग तणफास । मल सकार परीसह । पन्ना अन्नाण सम्मत्तं । इय वावीस परीसहा ॥ ॥ २५ ॥ खंती मद्दव अज्जव । मुत्ती तव संजमेय वोधव्वे । सच्चं सोयं अकिंच णंच । वंजंच जइ धम्मो ॥ २६ ॥ पढम मणिच्च मसरणं । संसारो एगयाय अन्नत्तं । असुइत्तं आसव संवरोय । तह निज्जरा नवमी ॥ २७ ॥ लोग सहावो वोही । डुलहा धम्मस्स साहगारिहा । एयाउ जावणाउ । जावेयव्वा पयत्तेण ॥ २८ ॥ सामाइयत्थ पढमं । छेउठावणं जवेवीयं । परिहार विसु छीयं । सुहमंतह संपरायंच ॥ २९ ॥ तत्तो अहरकायं । खायं सव्वंमि जीव लोगंमि । जं चरिऊण सुविहिया । वच्चंति अयरा मरंठाणं॥३०॥अणसण मूणो इरिया । वित्ती संखेवणं रसच्चाउ । काय किलेसो संलीणयाय । वज्झो तवोहोइ ॥ ३१ ॥ पायछित्तं विणउ । वेया वच्चं तहेव सज्झाउ । जाणं उस्सगोविय अछितरउ तउ होइ ॥ ३२ ॥ वारस विहं तवो निज्जराय । वंधोय चउ विग प्पोय । पयइ ठिइ अणुजागो । पएस जेएहिं नाइव्वो ॥ ३३ ॥ पयई सहावा वुत्ता । ठिई काला वहारणं । अणुजागो रसोणेउ । पएसो दल संचउ ॥ ॥ ३४ ॥ पड पडिहार सि मज्जा । हड चित्त कुलाल जंमगारीणं । जह एएसिं जावा । कम्माणवि जाण तहजावा ॥ ३५ ॥ संतपय परूवणया । दव्व पमाणंच खित्त फुसणाय । कालोय अंतरं जाग । जावे अप्पावहुं चेव ॥ ३६ ॥ संतं सुद्ध पइत्ता । विज्जंतं ख कुसुम वन असंतं । मुरकत्ति पयं तस्स उ परूवणा मग्गणा ईहिं ॥ ३७ ॥ गइ इंदिय काए ।

जोए वेए कसाय नाणेसु । संजम दंसणलेसा । भव सम्मे सन्नि आहारे॥३८॥ नर गइ पणिंदि तसभव । सन्नि अहरकाय खइय सम्मत्ते । मुरकोणहार केवल । दंसण नाणे नसेसेसु ॥३९॥दव्वपमाणे सिध्धाणं। जीव दव्वाणि हुंति णं ताणि । लोगस्स असंखिज्जे । भागे इक्कोय सव्वेवि ॥ ४० ॥ फुसणा अहिया कालो । इगसिध्ध पडुच्च साईयाणंतो । पम्डिवाया भावाउ । सिध्धाणं अंतरं नत्थि ॥ ४१ ॥ सव्वजीयाण मणंते । भागे तेतेसि दंसणं नाणं । खइए भावे परिणामिएय । पुण होइ जीवत्तं ॥ ४२ ॥ थोवा नपुंस सिध्धा । थीनर सिध्धा कमेण संखगुणा । इय मुरकतत्तमेयं । नवतत्ता लेस उ भणिया ॥ ४३ ॥ जीवाइ नवपयत्थे । जो जाणइ तस्स होइ सम्मत्तं । भावेण सद्दहंतो । अयाण माणेइ सम्मत्तं ॥ ४४॥ सव्वाइं जिनेसर भासियाइं । वयणाइ नन्नहा हुंति । इय बुधी जस्समणे । सम्मत्तं निच्चलंतस्स ॥ ४५ ॥ अंतो मुहुत्त मित्तंपि । फासिअं हुज्ज जेहिं सम्मत्तं । तेसिं अवड्ढ पुग्गल । परियट्टो चेव संसारो॥४६॥ उसप्पणी अणंता । पुग्गल परियट्ट मुणेयव्वो । तेणंता ती अध्धा । अणागयध्धा अणंतगुणा ॥ ४७ ॥ जिण अजिण तित्थ तित्था । गिहि अन्न स लिंगथी नर नपुंसा । पत्तेय सयं बुध्धा । बुध्धवोही क्कणि क्काय ॥ ४८ ॥ जिण सिध्धा अरिहंता । अजिण सिध्धाय पुंडरिआ पमुहा । गणहारि तित्थसिध्धा । अतित्थ सिध्धाय मरुदेवी ॥ ४९ ॥ गिहि लिंग सिध्ध भरहो । वक्कल चीरीय अन्न लिंगम्मि । साहु सलिंग सिध्धा । थी सिध्धा चंदणा पमुहा ॥ ५० ॥ पुंसिध्धा गोयमाई । गांगेय पमुहं नपुंसया सिध्धा । पत्तेय सयंबुध्धा । भणिया करकंडु कविलाई ॥ ५१ ॥ तह बुध्ध बोहि गुरु बोहिया । इग समय इक्क सिध्धाय । इग समये वि अणेगा । सिध्धात्ते णेग सिध्धाय ॥ ५२ ॥ इति नवतत्व विचारः

॥ ❋ ॥ अथ दंडक प्रकरण लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नमिउं चउवीस जिणे । तस्सूत्त वियार लेस देसणउ । दंडग पएहिं तेच्चिय । थोसामि सुणेह भोभव्वा ॥ १ ॥ नेरइया असुराई । पुढवाइ वेंदीया दउचेव । गब्भय तिरिय मणुस्सा । विंतर जोइसिय वेमाणी ॥ २ ॥ संखत्तरिउ इमा । सरीर मोगाहणाय संघयणा । सन्ना संठाण कसाय । लेसिंदिय दु समुग्घाया ॥३॥ दिठ्ठी दंसण नाणे । जोगु वओगो ववाय चवण ठिई ।

पज्जत्ति किमाहारे । सन्नि गइ आगई वेए ॥ ४ ॥ चउगब्भ तिरिय वाउसु । मणुआणं पंचसेस ति सरीरा । थावर चउगे दुहउ । अंगुल संख भागतणु ॥ ५ ॥ सव्वेसिंपि जहन्ना । साहाविय अंगुलस्स संखंसो । उक्कोस पणसय धणु । नेरइया सत्तहत्थ सुरा॥६ ॥ गब्भतिरि सहस्स जोयण। वणस्सई अहिय जोयण सहस्सं । नर तेइंदिय तिगाऊ । वेइंदिय जोयणेबार ॥७॥ जोयण मेगं चउरिंदि । देह मुच्चत्तणं सुए भणियं ॥ वेउव्विय देहंपुण । अंगुल संखं समारंभे ॥ ८ ॥ देवनर अहिय लक्खं । तिरियाणं नव जोयण सयाणं । दुगुणंतु नारयाणं । भणियं वेउव्विय सरीरं ॥ ९ ॥ अंत मुहुत्तं निरए । मुहुत्त चत्तारि तिरिय मणुएसु । देवेसु अद्धमासो । उक्कोस विउव्वणा कालो ॥ १० ॥ थावर सुर नेरइया । असंघयणाय विगल छेवठ्ठा । संघयण छगं गब्भय । नर तिरिएसु मुणेयव्वं ॥ ११ ॥ सव्वेसिं चउदह वासन्ना । सव्वेसुराय चउरंसा । नर तिरिय छसंठाणा । हुंडा विगलेंदि नेरइया ॥ १२ ॥ नाणाविह धय सूई । बुब्बुअ वण वाउ तेउ अप्पकाया । पुढवी मसूर चंदा । कारा संठाणउ भणिया ॥ १३ ॥ सव्वेवि चउ कसाया । लेसछगं गब्भतिरिय मणुएसु । नारय तेऊ वाऊ । विगला वेमाणीय तिलेसा ॥ १४ ॥ जोइ सिय तेऊ लेसा । सेसा सव्वेवि हुंति चउलेसा । इंदिय दारं सुगमं । मणु आणं सत्त समुग्घाया ॥ १५ ॥ वेयणा कसाय मरणे । वेउव्विय तेयए य आहारे । केवलिय समुग्घाए । सत्तइमे हुंति सन्नीणं ॥ १६ ॥ एगिंदियाण केवली । तेय आहारग विणाउ चत्तारी । ते वेउव्विय वज्जा । विगला सन्नीण तंचेव ॥ १७ ॥ पण गब्भय तिरि सुरेसु । नारय वाऊसु चउर तिय सेसे । विगल दुदिठ्ठी थावर । मिच्छत्ती सेस तिय दिठ्ठी ॥ १८ ॥ थावर बितिसु अचक्खु । चउरिंदिसु तद्दुगं सुए भणियं । मणुआ चउ दंसणिणो । सेसेसु तिगं तिगं भणियं ॥ १९ ॥ अन्नाण नाण तियं । सुर तिरि निरिए थिरे अन्नाण दुगं । नाणा न्नाण दुविगले । मणुए पण नाण तिअ न्नाणा ॥ २० ॥ इक्कारस सुर निरए । तिरिएसु तेर पन्नर मणुएसु । विगले चउ पण वाए । जोग तिग थावरे होइ ॥ २१ ॥ उवउगा मणुएसु । बारस नव निरय तिरिय देवेसु । विगलदुगे पणछक्कं । चउरिंदिसु थावरे तियगं ॥ २२ ॥ संखम संखा समए ।

जोए वेए कसाय नाणेसु। संजम दंसणलेसा। नव सम्मे सन्नि आहारे॥३८॥ नर गइ पणिंदि तसजव। सन्नि अहरकाय खइय सम्मत्ते। मुरकोणहार केवल। दंसण नाणे नसेसेसु॥३९॥दव्वपमाणे सिद्धाणं। जीव दव्वाणि हुंति णं ताणि। लोगस्स असंखिज्जे। नागे इक्कोय सव्वेवि॥ ४० ॥ फुसणा अहिया कालो। इगसिद्ध पडुच्च साईयाणंतो। पम्विाया नावाउ। सिद्धाणं अंतरं नत्थि॥ ४१ ॥ सवजीयाण मणंते। नागे तेतेसि दंसणं नाणं। खइए नावे परिणामिएय। पुण होइ जीवत्तं ॥ ४२ ॥ थोवा नपुंस सिद्धा। थीनर सिद्धा कमेण संखगुणा। इय मुरकतत्तमेयं। नवतत्ता लेस उ नणिया॥ ४३॥ जीवाइ नवपयत्थे। जो जाणइ तस्स होइ सम्मत्तं। नावेण सद्दहंतो। अयाण माणेइ सम्मत्तं॥ ४४॥ सव्वाइं जिनेसर नासियाइं। वयणाइ नन्नहा हुंति। इय बुद्धी जस्समणे। सम्मत्तं निच्चलंतस्स ॥ ४५॥ अंतो मुहुत्त मित्तंपि। फासिअं हुज्ज जेहिं सम्मत्तं। तेसिं अवड्ढ पुग्गल। परियट्टो चेव संसारो॥४६॥ उसप्पणी अणंता। पुग्गल परियट्टउ मुणेयवो। तेणंता ती अद्धा। अणगयद्धा अणंतगुणा ॥ ४७॥ जिण अजिण तित्थ तित्था। गिहि अन्न स लिंगथी नर नपुंसा। पत्तेय सयं बुद्धा। बुद्धबोही कणि क्काय ॥ ४८॥ जिण सिद्धा अरिहंता। अजिण सिद्धाय पुंमरिआ पमुहा। गणहारि तित्थसिद्धा। अतित्थ सिद्धाय मरुदेवी॥ ४९॥ गिहि लिंग सिद्ध नरहो। वलकल चीरीय अन्न लिंगम्मि। साहु सलिंग सिद्धा। थी सिद्धा चंदणा पमुहा॥ ५०॥ पुंसिद्धा गोयमाई। गांगेय पमुहं नपुंसया सिद्धा। पत्तेय सयंबुद्धा। नणिया करकंडु कविलाई॥ ५१॥ तह बुद्ध बोहि गुरु बोहिया। इग समय इक सिद्धाय। इग समये वि अणेगा। सिद्धात्तं णेग सिद्धाय ॥ ५२ ॥ इति नवतत्व विचारः

॥ ❀ ॥ अथ दंमक प्रकरण लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमिउं चउवीस जिणे। तस्सूत्त वियार लेस देसणउ। दंमग पएहिं तेचिय। थोसामि सुणेह नोनवा॥ १ ॥ नेरइया असुराई। पुढवाई बेंदीया दउचेव। गप्नय तिरिय मणुस्सा। वितर जोइसिय वेमाणी॥ २ ॥ संखित्तयरिउ इमा। सरीर मोगाहणाय संघयणा। सन्ना संठाण कसाय। लेसिं दिय फु समग्घाया॥३॥ दिठ्ठी दंसण नाणे। जोगु वउगो ववाय चवण ठिई।

पज्जत्ति किमाहारे। सन्नि गइ आगई वेए॥ ४ ॥ चउगब्भ तिरिय वाउसु। मणुआणं पंचसेस ति सरीरा। थावर चउगे दुहओ। अंगुला संख भागतणु ॥ ५ ॥ सव्वेसिंपि जहन्ना। साहाविय अंगुलस्स संखंसो। उक्कोस पणसय धणु। नेरइया सत्तहत्थ सुरा॥६ ॥ गब्भतिरि सहस्स जोयण। वणस्सई अहिय जोयण सहस्सं। नर तेइंदिय तिगाऊ। बेइंदिय जोयणेबार ॥७॥ जोयणमेगं चउरिंदि। देह मुच्चत्तणं सुए भणियं॥ वेउव्विय देहंपुण। अंगुल संखं समारंभे ॥ ८ ॥ देवनर अहिय लक्खं। तिरियाणं नव जोयण सयाणं। दुगुणंतु नारयाणं। भणियं वेउव्विय सरीरं॥ ९ ॥ अंत महुत्तं निरए। मुहुत्त चत्तारि तिरिय मणुएसु। देवेसु अद्धमासो। उक्कोस विउव्वणा कालो ॥ १० ॥ थावर सुर नेरइया। असंघयणाय विगल छेवठ्ठा। संघयण छगं गब्भय। नर तिरिएसु मुणेयव्वं॥ ११॥ सव्वेसिं चउदह वासन्ना। सव्वेसुराय चउरंसा। नर तिरिय छसंठाणा। हुंडा विगलेंदि नेरइया॥ १२ ॥ नाणाविह धय सूई। बुब्बुअ वण वाउ तेउ अप्पकाया। पुहवी मसूर चंदा। कारा संठाणउ भणिया॥ १३ ॥ सव्वेवि चउ कसाया। लेसछगं गब्भतिरिय मणुएसु। नारय तेऊ वाऊ। विगला वेमाणीय तिलेसा॥ १४॥ जोइ सिय तेऊ लेसा। सेसा सव्वेवि हुंति चउलेसा। इंदिय दारं सुगमं। मणु आणं सत्त समुग्घाया ॥ १५ ॥ वेयणा कसाय मरणे। वेऊव्विय तेयएय आहारे। केवलिय समुग्घाए। सत्तइमे हुंति सन्नीणं॥ १६ ॥ एगिंदियाण केवली। तेय आहारग विणाउ चत्तारी। ते वेउव्विय वज्जा। विगला सन्नीण तंचेव ॥ १७ ॥ पण गब्भय तिरि सुरेसु। नारय वाऊसु चउर तिय सेसे। विगल दुदिठ्ठी थावर। मिच्छत्ती सेस तिय दिठ्ठी ॥ १८ ॥ थावर बितिसु अचक्खु। चउरिंदिसु तदुगं सुए भणियं। मणुआ चउ दंसणिणो। सेसेसु तिगं तिगं भणियं॥ १९ ॥ अन्नाण नाण तियं। सुर तिरि निरिए थिरे अन्नाण दुगं। नाणा नाण दुविगले। मणुए पण नाण तिअन्नाणा॥ २० ॥ इक्कारस सुर निरए। तिरिएसु तेर पन्नर मणुएसु। विगले चउ पण वाए। जोग तिग थावरे होइ ॥ २१ ॥ उवओगा मणुएसु। बारस नव निरय तिरिय देवेसु। विगलदुगे पणछक्कं। चउरिंदिसु थावरे तियगं॥ २२॥ संखम संखा समए।

गब्भय तिरि विगल नारय सुराय । मणुश्रा नियमा संखा । वण अणंता थावर असंखा ॥ २३ ॥ असन्निनर असंखा । जह उववाउ तहेव चवणेवि । वावीस सगति दसवास । सहस्स उक्किठ पुढवाई ॥ २४ ॥ तिदिणग्गि तिप ल्लाऊ । नर तिरि सुर निरय सागर तित्तीसा । विंतर पल्लं जोइस । वरिस लख्खा हियं पल्लियं ॥ २५ ॥ असुराण अहियअयरं देसूण दुपल्लयं नवनिकाए । वारस वासाणपण दिण।छम्मास उक्किठ विगलाऊ॥२६॥पुढवाई दस पयाणं । अंतमहुत्तं जहन्न आउठिई । दससहस्स वरस ठिईश्रा । भवणाहिव निरय विंतरिया ॥ २७ ॥ वेमाणिय जोइसिश्रा । पल्ल त्तयठंस आऊश्राहुंति । सुरनर तिरि निरएसु । छपज्जत्ती थावरे चउगं ॥ २८ ॥ विगले पंच पज्जत्ती । छद्दिसि आहार होइ सव्वेसिं । पणगाई पए भयणा। अहसन्नि तिगं भणिस्सामि॥२९॥ चउविह सुरतिरिएसु । निरएसु दीह कालगी सन्ना।विगले हेउवएसा । सन्ना रहिया थिरासव्वे ॥ ३० ॥ मणु आणदीह कालिश्र । दिठीवाउ वएसिश्राकेवि। पज्जपणतिरि मणुच्चिय । चउविह देवेसु गछंति ॥३१॥ संखाउ पज्जत्त पणिंदि। तिरिय नरेसु तहेव पज्जत्ते । भूदग पत्तेय वणे । एए सुच्चिय सुरागमणं॥३२॥ पज्जत्त संख गब्भय । तिरिय नरा निरय सत्तगे जंति । निर उवट्टा एएसु । उ व वज्जंति नसेसेसु ॥ ३३ ॥ पुढवी आऊ वणस्सई । मज्झे नारय विवज्जि आ जीवा सव्वेवि उव वज्जंति । निय निय कम्माणु माणेणं ॥३४ ॥ पुढवाइ दस पएसु । पुढवी आउ वणस्सई जंति । पुढ वाइ दस पएहिय । तेउ वाऊ सुउव वाउ ॥ ३५ ॥ तेऊ वाऊ गमणं । पुढवी पमुहंमी होइ पय नवगे । पुढ वाई ठाण दसगा । विग लाई तिय नहिं जंति ॥३६॥ गमणा गमणं गब्भय । तिरि आणं सयल जीव ठाणेसु । सव्वत्थ जंति मणुश्रा । तेऊ वाऊहिं नोइंति ॥ ३७ ॥ वेय तिय तिरि नरेसु । इत्थी पुरि सोय चउविह सुरेसु । थिर विगल नारएसु । नपुंस वेउ हवइएगो ॥ ३८ ॥ पज्ज मणु वाय रग्गी । वेमाणिय भ वण निरय विंतरिश्रा । जोइस चउपण तिरिश्रा । वेइंदिय ते इंदिय भू आऊ ॥ ३९ ॥ वाऊ वणस्सई विय । अहिश्रा अहिश्रा कमेणमे हुंति । सव्वेवि इमे भावा । जिणामगणंत सोपत्ता ॥ ४० ॥ संपइ तुम्हं भत्तस्स । दंडकपय भमण भग्ग हीयस्स । दंम तिय विरय सुलहं । लहु मम दिंतु सुक्क पयं ॥ ४१ ॥सि

रि जिणहंस मुणीसर । रज्जे सिरि धवलचंद सीसेण । गज सारेणं लिहिया । एसा विन्नत्ती अप्पहिआ ॥ ४२ ॥ इति दंमक प्रकरणम् ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीलघुसंघयणी लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नमिय जिणं सव्वन्नुं । जग पुज्जं जगगुरु महावीरं । जंबूद्दीव पयत्थे । वुच्छं सुत्ता सपरहेक ॥ १ ॥ खंमा जोयण वासा । पव्वय कूडाय तित्थ सेढीउ । विजयद्दह सलिलाउ । पिंमेसिं होइ संघयणी ॥ २ ॥ नउय सयं खंमाणं । नरह पमाणेण नाइए लक्खे । अहवा नउअ सय गुणं । नरह पमाणं हवइ लक्खं ॥ ३ ॥ अहविग खंमे नरहे । दो हिमवंतेअ हेमवइ चउरो । अठ महा हिमवंते । सोलस खंमाइ हरिवासे ॥ ४ ॥ बत्तीसं पुण निसढे । मिलिया तेसठि वीय पासेवि । चउसठिउ विदेहे । तिरासि पिंमेइ नउ असयं ॥ ५ ॥ जोयण परिमाणाइं । समचउरंसाइ इछ खंमाइं । लक्कस्सय परिहीए । तप्पाय गुणेय हुंतेव ॥ ६ ॥ विख्खंन वग्ग दहगुण । करणी वट्टस्स परिरउ होई । विक्खंन पाय गुणिउ । परिरउ तस्स गणिय पयं ॥ ७ ॥ परहि तिलक्ख सोलस । महस्स दोय सय सत्तवीस हिया । कोस तिगं अठावीसं । धणुसय तेरं गुलद्धहियं ॥ ८ ॥ सत्तेवय कोडिसया । नउआ छप्पन्न सय सहस्साइं । चउणउयंच महस्सा । सयं दिवड्ढंच साहियं ॥ ९ ॥ गाउअ मेगं पन्नरस । धणुसया तह धणूणि पन्नरस । सठिंच अंगुलाइ । जंबुद्दीवस्स गणियपयं ॥ १० ॥ नरहाइ सत्तवासा । वियढ्ढ चउ चउ रतिं सवट्टियरे । मोलस वक्खार गिरि । दो चित्त विचित्त जमगा ॥ ११ ॥ दो सय कणय गिरीणं । चउ गय दंताय तह सुमेरुय । छ वासहरा पिंमे । एगुण सत्तरि सयाफुछि ॥ १२ ॥ सोलस वक्खारेसु । चउ चउ कूडाय हुंति पत्तेयं । सोमणस गंधमायण । सत्तठय रुपि महाहिमके॥१३॥चउतीस वियड्ढेसु । विज्जुप्पह निसढ्ढ नील वंतेसु । तह मालवंत सुरगिरि । नव नव कूडाइं पत्तेयं ॥१४॥ हिम सिहरिसु इक्कारस। इय इगसठी गिरिसु कूडाणं । एगत्ते सव्वधणं । सय चउरो सत्त सठीय॥१५॥ चउसत्त अठनवगे । गारस कूमेहि गुणह जहसंखं । सोलस फुदुगुणयालं । दुवेय सगसठ सयचउरो ॥ १६ ॥ चउतीसं विजएसु । उसभकूडा अठमेरु जंबुम्मि । अठय देव कुराइ । हरी कूड हरिस्सहेसठी ॥ १७ ॥ मागह वरदाम

पन्नासं । तित्थविजयेसु ऐरवयभरहे । चउतीसा तिहिगुणिया । दुरुत्तर सयंतु तित्थाणं ॥ १८ ॥ विज्जाहर अभिउगीय । सेढीउ दुन्नि दुन्निवेयड्ढे । इय चउगुण चउतीसा । छत्तीस सयंतुसेढीणं ॥ १९ ॥ चक्की जेयव्वाइं । विजयाइं इत्थहुंतिचउतीसा । मह दह छ प्पउमाइं । कुरूसु दसगंति सोलसगं ॥ २० ॥ गंगा सिंधू रत्ता । रत्तवई चउनइउ पत्तेयं । चवदसहिं सहस्सेहिं । समगं वच्चंति जलहिंमि ॥ २१ ॥ एवंअभिंतरया । चउरो पुण अठवीस सहस्सेहिं । पुणरवि छप्पन्नेहिं । सहस्सेहिं जंतिचउसलिला ॥ २२ ॥ कुरूमझे चउरासी । सहसा तहय विजय सोलसेसु । वत्तीसाण नईणं । चउदस सहस्साइं पत्तेयं ॥ २३ ॥ चउदस सहस्सगुणिया । अडतीस नइउ विजय मझिल्ला । सीउयाए निवडंति । तहय सीयाइं एमेव ॥ २४ ॥ सीयासीउयावि य । वत्तीस सहस्स पंचलरकेहिं । सव्वेवि चउदस लरका । छप्पन्न सहस्स मेलविया ॥ २५ ॥ छजोयण सकोसे । गंगासिंधूण वित्थरोमूले । दशगुणिउ पज्जंते । इयदुदु गुणणेण सेसाणं ॥ २६ ॥ जोयणसय मुच्चिठा । कणय मया सिहरि चुल्ल हिमवंता । रूप्पि महा हिमवंता । दुसुच्चा रूप्प कणयमया ॥ २७ ॥ चत्तारि जोयणसए । उच्चिठो निसढ्ढ नीलवंतोय । निसढ्ढो तवणिज्ज मउ । वेरुलियो नीलवंतोय ॥ २८ ॥ सव्वेवि पव्वयरा । समय खित्तंमि मंदर विहूणा । धरणी तले मुवगाढा । उस्सेय चउत्थ भायंमि ॥ २९ ॥ खंडाई गाहाहिं । दसहिं दारेहिं जंवूद्दीवस्स । संघयणी सम्मत्ता । रइया हरिभद्द सूरीहिं ॥ ३० ॥

॥ ❀ ॥ इति श्री जंबुद्वीव संघयणी प्रकरणम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ अथ नवकारस्तवन० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीनवकार जपो मनरंगे । श्रीजिनसासन सारंरी माई ॥ सर्व मंगल मांहे पहिलोमंगल । जपतां जयजयकाररी माई । श्री० ॥ १ ॥ पहिलेपद त्रिभुवन जन पूजित । प्रणमुं श्रीअरिहंतरी माई । अष्टकर्म वरजत बीजे पद । ध्यावुंसिध्ध अनंतरी माई। श्री० ॥ २ ॥ आचारिज तीजे पदसमरुं । गुणछत्तीस निधानरी माई । चोथेपद उवझाय जपीजे । सूत्र सिध्धांत सुजाणरी माई ॥ श्री० ३ ॥ सर्वसाधु पंचम पद प्रणमुं । पंचमहाव्रत धारणी माई ॥ नवपद अष्ट इहां छे संपद । अडसठ वरण संभाररी माई ॥

श्री० ४ ॥ सातइहां गुरु अक्षर एहना । एकअक्षर उचाररी माई । सातसागरना पातिक जावे । पद पंचास विचाररी माई ॥ श्री० ॥ ५ ॥ संपूरण पणमे सागरना । पाप पूलावे दूररी माई ॥ इहभव खेमकुशल मनवंछित । परभव सुख भरपूररी माई॥श्री० ॥६ ॥ ईरति सोवन पुरिसो सांधो । सिवकुमार इणध्यानरी माई ॥ सर्पफीटि हुई फूलमाला । श्रीमतिनें परधांनरी ॥ माई॥श्री०॥७॥ जक्ष उपद्रव करतो निवारयो ॥ परचो एह परसिद्धरी माई ॥ चोरचंड पिंगलने हुंडक ॥ पामें सुर नर रिद्धरी माई॥श्री० ८ ॥ पंच परमेष्ठी मंत्र जगउत्तम ॥ चवदेपूरव साररी माई ॥ गुणबोले श्रीपदमराज गुरु । महिमाजासु अपाररी माई ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इति नवकारस्तवनम् ॥

॥ ॥ अथ श्रीगोतम स्वामी अष्टक ॥ ॥

॥ ॥ महकती गोतम प्रणमीजे । मन वंछित फलनो दातार । लबधि निधान सकल गुणसागर । श्रीवर्द्धमान प्रथम गणधार । मह० ॥ १ ॥ गोतम गोत्र चवद विद्यानिधि । प्रथवी मात पिता वसुभूत । जिनवर वांणि सुणी मनहरख्यो । बोलायो नामे इंद्रभूति । प्र० ॥ २ ॥ पंचमहाव्रत लेई प्रभूपासे येजिनवर त्रिपदी मनरंग । श्रीगोतम गणधर तिहां गूंथ्या । पूरव चवद दुवालश अंग । प्र० ॥ ३ ॥ लबधई अष्टापद गिर चढीयो । चैत्यवंदन जिनवर चोवीस । पनरेसे तिडोत्तर तापस।प्रतिबोधीकीधा निजसीस ॥ प्र०॥४ ॥ अद्भुत एह सुगरुनो अतिसय । जसुदीखे तसु केवलग्यांन । जावजीव छठ छठ तपपारणे । आपणपे गोचरिय मध्यान॥प्र०॥५॥कामधेनु सुरतरु चिंतामणि । नाम माहीं जसु करेरे निवास।ते सदगुरुनो नाम जपंता । लाभे लखमी लील विलास ॥ प्र० ॥ ६ ॥ लाभघणो विणजे व्यापारे । आवे प्रवहण कुशले षेम ते सदगुरुनो ध्यांन धरंता । पामें पुत्र कलत्र बहु प्रेम ॥ प्र० ॥ ७ ॥ गोतम स्वांमितणा गुणगानां । अष्ट महासिद्ध नवेरे निधांन । समय सुंदर कहे सुगुरु प्रसादे । पुन्य उदय प्रगट्यो परधांन॥प्र० ॥८॥ इति गोतम स्वामि अ० ॥

॥ ॥ अथ श्री चिंतामणि स्तवन ॥ ॥

॥ ॥ आणी मनसुधी आसना ॥ देव जुहारुं सासना । पार्श्वनाथ मनवंछित पूर । चिंतामण मेरी चिंता चूर ॥ १ ॥ अणियाली तोरी आंखडी ।जाणे

कमलतणी पांखडी मुख दीठां दुख जावे दूर ॥ चिं ॥ २ ॥ को केहनें को केहनें नमें । ह्मारे मनमें तूंहिं जगमें। सदा ज्हारुं ऊगोसूर ॥ चिं ॥ ३ ॥ वीछडीया वाले सर मेल । वैरी दुसमण पाछा ठेल । तूं छे ह्मारे हाजरा हजूर ॥ ॥ चिं ॥ ४ ॥ मुजमन लागी तुमसूं प्रीत । बीजो कोयन आवे चीत । करो मुझ तेज प्रताप पडूर । चिं ॥ ५ ॥ येह स्तोतर मनमें धरें । तेहना चिंत्या कारज सरें । आधि व्याधि दुख जावे दूर । चिं॥६॥ भव भव देज्यो तुम पाय सेव । श्रीचिंतामणि अरिहंत देव । समयसुंदर कहे सुख भरपूर ॥ चिं ॥ ७ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ८ कर्मकी मूलोत्तर प्रकृतिका नाम ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम आठ मूल प्रकृतिका नाम ॥ ❀ ॥

१ ज्ञानावरणीय कर्म । २ दर्शनावरणीय कर्म । ३ वेदनीय कर्म । ४ मोहनीय कर्म । ५ आयुः कर्म । ६ नाम कर्म । ७ गोत्र कर्म । ८ अंतराय कर्म । पहेला ज्ञानावरणीय कर्मकी उत्तर प्रकृति पांच ॥

१ मतिज्ञानावरणीय । २ श्रुतज्ञानावरणीय । ३ अवधिज्ञानावरणीय । ४ मनःपर्यवज्ञानावणीय । ५ केवलज्ञानावरणीय ॥

॥ ❀ ॥ दूजा दर्शनावरणीय कर्मकी उत्तर प्रकृति नव ॥ ❀ ॥

१ चक्षुदर्शनावरणीय । २ अचक्षुदर्शनावरणीय ।३ अवधिदर्शनावरणीय । ४केवलदर्शनावरणीय । ५ निद्रा । ६ निद्रा निद्रा । ७ प्रचला । ८ प्रचला प्रचला । ९ थीणद्धी ॥

॥ ❀ ॥ तीजा वेदनीय कर्मनी उत्तर प्रकृतिदो ॥ ❀ ॥

१ शातावेदनीय. २ अशाता वेदनीय

॥ चोथा मोहनीय कर्मकी उत्तर प्रकृति अठवीश ॥

१ सम्यक्त्व मोहनीय. २ मिश्रमोहनीय. ३ मिथ्यात्वमोहनीय. ४ अनंतानुबंधी क्रोध. ५ अप्रत्याख्यानी क्रोध. ६ प्रत्याख्यानी क्रोध. ७ संज्वलन क्रोध. ८ अनंतानुबंधी मान. ९ अप्रत्याख्यानी मान. १० संज्वलनमान. ११ प्रत्याख्यानी मान. १२ अनंतानुबंधीमाया. १३ अप्रत्याख्यानी माया. १४ प्रत्याख्यानीमाया. १५ संज्वलन माया. १६ अनंतानुबंधी लोभ. १७

अप्रत्याख्यानी लोभ. १८ प्रत्याख्यानी लोभ. १९ संज्वलन लोभ. २० हास्य नोकषाय. २१ रति नोकषाय. २२ अरति नोकषाय. २३ शोक नोकषाय २४ भयनोकषाय. २५ जुगुप्सा नोकषाय. २६ पुरुषवेद नोकषाय. २७ स्त्रीवेद नोकषाय. २८ नपुंसकवेद नोकषाय. ॥

॥ पंचमा आयुः कर्मकी उत्तर प्रकृति चार ॥

१ देवायु. २ मनुष्यायु. ३ तिर्यगायु. ४ नरकायु.

॥ ॥ छठा नामकर्मकी उत्तर प्रकृति १०३ ॥ ॥

१ नरकगति नामकर्म. २ तिर्यग्गति नामकर्म. ३ मनुष्यगति नामकर्म. ४ देवगति नामकर्म. ५ एकेंद्रिय जातिनाम. ६ बेंद्रिय जातिनाम. ७ तेंद्रिय जातिनाम. ८ चतुरींद्रिय जातिनाम. ९ पंचेंद्रिय जातिनाम. १० औदारिक शरीरनाम. ११ वैक्रिय शरीरनाम. १२ आहारकशरीरनाम. १३ तैजसशरीर नाम. १४ कार्मणशरीर नाम. १५ औदारिक अंगोपांग. १६ वैक्रिय अंगोपांग. १७ आहारक अंगोपांग. १८ औदारिक औदारिक बंधन. १९ औदारिक तैजस बंधन. २० औदारिक कार्मण बंधन. २१ औदारिक तैजसकार्मण बंधन २२ वैक्रियवैक्रिय बंधन. २३ वैक्रिय तैजसबंधन. २४ वैक्रियकार्मण बंधन. २५ वैक्रिय तैजस कार्मण बंधन. २६ आहारक आहारक बंधन. २७ आहारक तैजसबंधन. २८ आहारक कार्मण बंधन. २९ आहारक तैजस कार्मण बंधन ३० तैजस तैजस बंधन ३१ तैजस कार्मण बंधन. ३२ कार्मण कार्मण बंधन ३३ औदारिक संघातन. ३४ वैक्रिय संघातन ३५ आहारक संघातन. ३६ तैजस संघातन. ३७ कार्मण संघातन. ३८ वज्र ऋषभ नाराच संघयण. ३९ ऋषभ नाराचसंघयण. ४० नाराचसंघयण. ४१ अर्द्धनाराचसंघयण ४२ कीलीका संघयण. ४३ छेवट्ठो संघयण. ४४ समचतुरस्त्रसंस्थान. ४५ निग्रोध संस्थान. ४६ सादिसंस्थान. ४७ वामन संस्थान' ४८ कुब्ज संस्थान. ४९ हुंडक संस्थान. ५० कृष्णवर्ण नाम. ५१ नीलवर्ण नाम. ५२ लोहितवर्ण नाम. ५३ हारिद्रवर्ण नाम. ५४ श्वेतवर्ण नाम कर्म. ५५ सुगन्धि गंध. ५६ दुरभि गंध. ५७ तिक्तरस नामकर्म. ५८ कटुकरस नामकर्म. ५९ कषायरस नामकर्म. ६० आम्लरस नामकर्म. ६१ मधुररस नामकर्म. ६२ कर्कशस्पर्श नाम

कर्म. ६३ मृदुस्पर्श० ६४ गुरुस्पर्श नामकर्म. ६५ लघुस्पर्श नामकर्म ६६ शीतस्पर्श नामकर्म. ६७ उष्णस्पर्श नामकर्म ६८ स्निग्धस्पर्श नाम कर्म. ६९ रूक्षस्पर्श नाम कर्म ७० नरकानुपूर्व्वी. ७१ तिर्यगानुपूर्व्वी. ७२ मनुष्यानुपूर्व्वी. ७३ देवानुपूर्व्वी. ७४ शुभ विहायोगति. ७५ अशुभ विहायोगति. ७६ पराघात नामकर्म. ७७ उच्छ्वास नामकर्म. ७८ आतप नामकर्म. ७९ उद्योत नामकर्म. ८० अगुरुलघु नाम कर्म. ८१ तीर्थंकर नाम कर्म. ८२ निर्माण नामकर्म. ८३ उपघात नामकर्म. ८४ त्रसनाम कर्म. ८५ बादर नाम कर्म. ८६ पर्याप्त नाम कर्म. ८७ प्रत्येक नाम कर्म. ८८ स्थिर नामकर्म. ८९ शुभ नाम कर्म. ९० सौभाग्य नाम कर्म. ९१ सुस्वर नाम कर्म. ९२ आदेयनाम कर्म. ९३ यशः कीर्त्ति नाम कर्म. ९४ स्थावर नाम कर्म. ९५ सूक्ष्म नाम कर्म. ९६ अपर्याप्त नाम कर्म. ९७ साधारण नाम कर्म. ९८ अस्थिर नाम कर्म. ९९ अशुभ नाम कर्म. १०० दुर्भाग्य नाम कर्म. १०१ दुःस्वर नाम कर्म. १०२ अनादेय नाम कर्म. १०३ अयशोऽकीर्त्ति नाम कर्म.

॥ ❋ ॥ सातमा गोत्रकर्मकी उत्तर प्रकृति दो ॥ ❋ ॥

१ उच्चैर्गोत्र. २ नीचैर्गोत्र.

॥ आठमा अंतराय कर्मकी उत्तर प्रकृति पांच ॥

१ दानांतराय. २ लाभांतराय. ३ भोगांतराय, ४ उपभोगांतराय. ५ वीर्यांतराय. (इसप्रमाणे आठ कर्मकी एकशो अठावन उत्तर प्रकृति जाणनी.)

॥ ❋ ॥ अथ नव तत्व नामः ॥ ❋ ॥

जीवतत्व, २ अजीवतत्व, ३ पुन्यतत्व, ४ पापतत्व, ५ आश्रवतत्व, ६ संवरतत्व, ७ निर्जरातत्व, ८ बंधतत्व. ९ मोक्षतत्व. ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥



॥ ❀ श्री जिनार्चन विधिः ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अर्हत्कल्पानुसारें सदैव जिन पूजन विधि किंचित्मात्र लिखते हें ॥ भगवंतके मंदिर (वा) घर देरासरके विषे । चोटीकूं बांधके शुद्ध वस्त्र पहरके, उत्तरासंग जिनोपवीत मुखकोससहित । एकांतके विषे पूर्व दिशा, उत्तरदिशा तरफ, बेठके परमेश्वरकी पूजा करे ॥ प्रथम जल, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल, आदि चीजांकूं मंत्रों सें पवित्र करे (यथा) ॥ ॐ आपो अप्प काया एकेंद्रिय जीव निर्वद्या र्हत्पूजाया निर्व्यथाः संतु । निरपायाः संतु । सद्गतयः संतु । नमेस्तु संघट्टण हिंसापापमर्हदर्चने॥ इस मंत्रसें जल मंत्रणा ॥❀॥ ॐ वनस्पतयो वनस्पतिकाया जीवा एकेंद्रिया निरवद्यार्हत्पूजायां निर्व्यथाः संतु । निरपायाः संतु । सद्गतयः संतु । नमेस्तु संघट्टन हिंसा पापमर्हदर्चने ॥ इति पत्र पुष्प फल धूप चंदनादि अभिमंत्रण मंत्र ॥❀॥ ॐ अग्नयो अग्निकाया जीवा एकेंद्रिया निरवद्या अर्हत्पूजायां निर्व्यथाः संतु । निरपायाः संतु । सद्गतयः संतु । नमेस्तु संघट्टन हिंसा पापमर्हदर्चने ॥ इति वन्हि दीपाद्यभिमंत्रणं ॥ फेर वास चूर्ण फूल गंधादिक हाथमें लेके मंत्र पढे ॥ ॐ त्रसरूपोहं संसारिजीवः सुवासनः सुमेधा एक चित्तो निरवद्यार्हदर्चने निर्व्यथोभूयासं । निःपापोभूयासं । मत्संश्रिता अन्येपि संसारिजीवा निरवद्यार्हदर्चने निर्व्यथा भूयासुः निरुपद्रवा भूयासुः ॥ इस मंत्रसें केशर मंत्रके अपणें तिलक करे ॥ ❀ ॥ पुष्पसें अपनें मस्तककी पूजा करे (फेर) पुष्प अक्षत आदि हाथमें लेके मंत्र पढे ॥ तन्मंत्रो यथा ॥ ॐ पृथिव्यप्तेजो वायु वनस्पति त्रसकाया

एक द्वि त्रि चतुः पंचेंद्रिया स्तिर्यङ् मनुष्या नारक देवगति गता। चतुर्द
ज्वात्मक लोकाकाश निवासिनः। इह जिनार्च्चने कृतानुमोदना संतु। नि
पापाः संतु। निरपायाः संतुः। सुखिनः संतुः। प्राप्त कामाः संतुः। मुक्ताः
संतुः। बोध माप्नुवंति॥ इस मंत्रसें मंत्रकै दशदिशामें गंध जल अक्षतादिक
क्षेपन करे। फेर यह श्लोक कहे॥ शिवमस्तु सर्व जगतः। परहित नि
ता भवंति भूतगणाः। दोषा प्रयांतु नाशं। सर्वत्र सुखी भवतु लोक
॥ १ ॥ सर्वेपि संतु सुखिनः सर्वेसंतु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यं
माकश्चिद्दुःख भाग्भवेत्॥ २॥ फेर मंत्र पढे॥ ॐ भूतधात्री पवित्रास्तु।
अधिवासितास्तु। इस मंत्रसें मंत्रितजलसें जमीन पवित्र करे (फेर) स्थि
रायशास्वताय निश्चलाय पीठायनमः॥ फेरपखाल करवाके परमेश्वरकुं पढ
ऊपर स्थापन करे। थिरबिंब होय तो वेदी ऊपर पखाल करावे॥ पीछे इस
मंत्रकूं पढे॥ ॐ अत्रक्षेत्रे। अत्रकाले। नामार्हतो। रूपार्हतो। द्रव्यार्हतो।
भावार्हतः। समागताः। सुस्थिताः। सुनिष्ठिताः। सुप्रतिष्ठाः संतु॥ इति
अर्हत्प्रतिमा स्थापन मंत्र॥ फेर मौनसहित अगामी पुष्पग्रहण करके मं
पढे। ॐ नमो अर्हद्भ्यः सिद्धेभ्यः। स्तीर्णेभ्यः। स्तारकेभ्यः। बोधकेभ्यः
सर्वजंतुहितेभ्यः। इह कल्पना बिंबे भगवंतोर्हतः सुप्रतिष्ठिताः संतु॥ यह
मंत्र मौन सहित पढके भगवंतके चरणऊपर पुष्पस्थापन करे। फेर पुष्प
जल हाथमें लेके कहे॥ यथा॥ स्वागतमस्तु। सुस्थितिरस्तु। सुप्रतिष्ठास्तु
पुष्पाभिषेकेन अर्घ्यमस्तु। पाद्यमस्तु। आचमनीयमस्तु। सर्वोपचारैः पूजास्तु
॥ इस मंत्रसें मंत्रित जिन प्रतिमाऊपर जलसहित पुष्प चढावे॥ (फेर) जलग्र
हण करके मंत्र पढे॥ ॐ अर्हतं तर्प्पणंपद्यं। प्राणदं मलनाशनं। जलंजिनार्च्चने
त्रैव। जायतां सुखहेतवे॥१॥ इस मंत्रसें मंत्रित जल करके अभिषेक करावे।
फेर चंदन कुंकुम कस्तुरी आदिगंध वस्तु हाथमें ग्रहण करके। यह मंत्र
पढे॥ ॐ अर्हतं॥ इदं गंधं महामोदं। बृंहणं प्रीणनं सदा। जिनार्च्चनेच स
त्कर्मे। संसिध्द्यौ जायतांमम॥ १ ॥ ऐसा पढके विविधगंध वस्तूका विलेपन
करे। फेर। पुष्पपत्रिका हाथमें ग्रहण करके। यह मंत्र पढे। ॐ अर्हतं।
नानावर्णमहामोदं। सर्वत्रिदशवल्लभं। जिनार्च्चनेच संसिध्द्यौ। सुखं भवत

मेसदा ॥ १ ॥ इति पुष्पपूजा ॥ फेर अक्षत ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हंतं । प्रीणनं निर्म्मलं थल्यं । मांगल्यं सर्वसिद्धिदं । जीवनं कार्यसंसिद्ध्यो । भूयान्मेजिनमंदिरं ॥ १ ॥ इस मंत्रसें मंत्रित अक्षतका तीनपुंज करे । फेर पूंगीफल जातीफलादिवस्तु ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हंतं । जन्मफलं स्वर्गफलं । पुन्यमोक्षफलं फलं । दद्याज्जिनार्चने त्रैव । जिनपादाग्र संस्थितः ॥ इति जिन पादाग्रे फलपूजा ॥ (फेर) धूप ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हंतं । श्रीखंडागरु कस्तूरी । द्रुमनिर्यास संभवः । प्रीणनः सर्व देवानां । धूपोस्तु जिनपूजने ॥ १ ॥ इस मंत्रसें धूप क्षेपन करे । फेर पुष्प ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हंतं । पंचज्ञान महाज्योति । र्म्मयायध्वांत घातने । द्योतनाय प्रतिमायाः । दीपो भूयात्सदार्हते ॥ १ ॥ इति दीपमध्ये पुष्पन्यासः ॥ फेर पुष्प ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हं भगवद्भ्यो अर्हद्भ्यो जल गंध पुष्पाक्षत फल धूपदीपैः संप्रदानमस्तु । ॐ पुण्याहं २ । प्रीयंतां २ । भगवंतोर्हंत त्रिलोक्यस्थिताः । नामाकृतिः द्रव्यभावयुताः स्वाहाः । इति पुनर्जिन पूजनं ॥ पीछे वास चूर्ण ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ सूर्य सोमांगारक बुध गुरु शुक्र शनैश्वर राहु केतु मुख्याग्रहाः इह जिन पादाग्रे समायांतु पूजां प्रतीछंतु । ऐसा कहके नवग्रहोंकी वासचूर्णसें पूजा करे ॥ फेर यह मंत्र पढे ॥ आचमनमस्तु गंधमस्तु पुष्पमस्तु अक्षतमस्तु फलमस्तु धूपोस्तु दीपोस्तु ॥ पीछे अनुक्रमसें जल. गंध. पुष्प. अक्षत. फल धूप. दीप. नैवेद्य करके नवग्रहोंकी पूजा करे । फेर हाथमें पुष्प ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ सूर्य सोमांगारक शुक्र बुध गुरु शनैश्वर राहु केतु प्रमुखाग्रहाः सुपूजिताः संतु । सानुग्रहाः संतु । तुष्टिदाः संतु । पुष्टिदाः संतु । मांगल्यदाः संतुः । महोत्सवदाः संतु ॥ ऐसा कहके ग्रहोंकूं पुष्प चढावे ॥ इसी रीतीसें ॥ ॐ इंद्राग्नि यम नैरुति वरुण वायु कुबेर ईशान नाग ब्रह्मणो लोकपालाः सविनायकः सक्षेत्रपालाः इह जिन पादाग्रे समागछंतु ॥ इस मंत्रसें पूजापट्ट ऊपर लोकपालोंकी वास चूर्णसें पूजा करे । फेर यह मंत्र पढे ॥ आचमनमस्तु । पुष्पमस्तु । अक्षतमस्तु । फलमस्तु । धूपोस्तु । दीपोस्तु । फेर । अनुक्रमसें जल. गंध. पुष्प, अक्षत. फल, धूप. दीप, नैवेद्य करके लोकपालोंकी

पूजा करे । फेर हाथमें पुष्प ग्रहण करके । यह मंत्र पढे ॥ ॐ इंद्राग्नि यमनैरृति वरुण वायु कुबेर ईशान नाग ब्रह्मणो लोकपालाः । सविनायकाः सक्षेत्रपालाः । सुपूजिताः संतुः । सानुग्रहाः संतु । तुष्टिदाः संतु । पुष्टिदाः संतु । महोत्सवदा संतुः ॥ ऐसा कहके लोकपालोंकी फूलसें पूजा करे । फेर पुष्पांजलि ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ अस्मत्पूर्व्व गोत्र संभवाः देवगति गताः सुपूजिताः संतु । सानुग्रहाः संतु । तुष्टिदाः संतु । पुष्टिदाः संतु । मांगल्यदाः संतु । महोत्सवदाः संतु । (ऐसा कहके) जिन पादाग्रे पट्टोपरि पुष्पांजलि चढावे । फेर पुष्पांजलि ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हं अर्हद्भक्ताष्ट नवत्युत्तरशतं देव जातयः स देवाः पूजां प्रतीछंतु । सुपूजिताः संतु । सानुग्रहाः संतु । तुष्टिदाः संतु । मांगल्यदाः संतु । महोत्सवदाः संतु । ऐसा कहके परमेश्वरके चरण कमलआगे पुष्पांजलि चढावे ॥ फेर हाथमें पुष्पांजलि ग्रहण करके । अर्हन्मंत्र स्मरणकरके तिस पुष्पोंसें जिन प्रतिमाकी पूजा करे । तन्मंत्रोयथा ॥ ॐ अर्हं णमो अरिहंताणं । ॐ अर्हं णमो सयंसंबुद्धाणं । ॐ अर्हं णमो आयरियाणं ॥ श्लोकः ॥ अयंतु त्रिप दोमंत्र । श्रीमतामर्हतांपरः । भोगमोक्ष प्रदोनित्यं । सर्वपाप निकृंतनः॥१॥इस अर्हत्मंत्रकों अपवित्रपणेंसें नहिंजपना । (तथा) नास्तिकोंकूं मिथ्या त्वियोंकूं न देना । फेर१०८वार इस मंत्रका जाप करे । तिसके वाद । नैवेद्य दोय रकेबीयोंमें रखके । अंजलीमें जलग्रहण करके । यह मंत्र पढे ॥ ॐ अर्हं । नाना षड्रस संपूर्णं । नैवेद्यं सर्व्वमुत्तमं । जिनाग्रे ढौकितं सर्व्वं । सं पदा ममजायते ॥ १ ॥ यह कहके नैवेद्यपासे, जलक्षेपन करे । फेर जल ग्रहण करके यह मंत्र पढे ॥ ॐ सर्व्वे गणेश क्षेत्रपालाद्याः सर्व्वग्रहाः सर्व्वदि ग्पालाद्या । सर्व्वे अस्मत्पूर्वजोद्भवादेवाः । सर्व्वे अष्टनवत्युत्तरशतं देवजातयः । सदेव्योर्हद्भक्ताः । अनेन नैवेद्येन संतर्प्पितास्संतु । तुष्टिं पुष्टिं संतुः । मांगल्यं० महो० ॥ ऐसा कहके दूसरे नैवेद्य पासे जल माले ॥ पीछे पुष्पांजली हाथमें लेके पढे ॥ योजन्मकाले पुरुषोत्तमस्य । सुमेरुशृंगे कृतमज्जनैश्च । देवैं प्रदत्त कुशमांजलिः प्रीतिभक्त्या । ददातु सर्वाणि समीहितानि ॥ १ ॥ राज्याभिषेक समये त्रिदशाधिपेन । छत्रध्वजांकुरलयोः पदयोर्जिनस्य । क्षिप्तोतिभक्तिः कु

श्रुमांजलीयं । स प्रीणयत्वाहुदिनं सुधीयां ॥ २ ॥ देवेंद्रोक्त केवले जिनपतौ सानंद भक्त्यागतैः । संदेहं व्यपरोपण क्रमश्रुत व्याख्यान तुष्टयान्वयैः । आमोदान्वित पारिजात कुशुमैर्यत्स्वामि पादाग्रतो । मुक्तः सः प्रतनोतु चिन्मय हृदां भद्राणि पुष्पांजलि ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ यह तीन वृत्त कहके तीन पुष्पांजलि क्षेपन करे ॥ फेर लवण हाथमें लेके यह वृत्त पढे ॥ लावण्य पुण्यांग भृतोर्हतोयः । स्तद्दृष्टि भावं सहसैवधत्ते । सविश्वभर्तुर्लवणावतारो । गर्भावतारं सुधिया विहर्त्तुं ॥ १ ॥ लावण्यैक निधेर्विश्व । भर्त्तु स्तवद्रविहेतुकृत् । लवणो त्तारणं कुर्या । द्भवसागर तारणं ॥ २ ॥ यह दोय वृत्त कहके दोयदफे लवण उतारे ॥ फेर लवणमिश्र जल लेके यह वृत्त पढे ॥ सत्कारता सदा भक्तां । निर्हंतु कर्म मोद्यमः । लवणार्चि र्लवणांधुः । पिपाति सेवते पदौ ॥ १ ॥ ऐसा कहके लवण जल उवारणा करे ॥ फेर आरती लेके यह पढे ॥ सप्तर्भीति विघातार्हं । सप्तव्यसन नाशकृत् । यत्सप्तनरकद्वारा । सप्तारात्रिकांगतं ॥ १ ॥ सप्तांग राज्य फलदान कृतप्रमोदं । सत्सप्त तत्वविदनंतकृतप्रबोधं । तवचक्र हस्तधृतसंगत सप्तदीप । मारात्रिकं भवतु सप्तम सद्गुणायां ॥ ऐसा कहके आरती उतारे ॥ फेर मंगलदीप लेके यह पढे ॥ विश्वत्रय भवेर्जीवैः । सदेवा सुर मानवैः । चिन्मंगलं श्रीजिनेंद्रात् । प्रार्थनीयं दिनेदिने ॥ १ ॥ यन्मंगलं भगवतः प्रथमार्हतः श्री । संयोजनैः प्रनिव नृप विवाहकाले । सर्वाःसुरासुर वधूमुख गीयमानं । सर्पिर्भिश्र सुमनोभि र्दीर्घमासा ॥ २ ॥ दास्यं गतेषु सकलेषु सुरासुरेषु । राज्येर्हतः प्रथम सृष्टि कृतोयदासीत् । मन्मंगलं मिथन पाणिग तीर्थवारि । पादाभिषेक विधिनान्युपचीयमानं ॥ ३ ॥ यत्त्रिश्वाधिपतेः समस्ततनु भृत्संसारनिस्तारणे । तीर्थप्रष्टि सुपसुपिप्रतिदिनं वृद्धिर्गतं मंगलं । तत्संप्रत्युपनीतनपूजनविधौ विश्वात्मना सर्हतां । भूयान्मंगल मक्षयंच जगते स्वस्त्यस्तु संघायच ॥ ४ ॥ यह चारवृत्त कहके मंगलदीप आरती उतारे ॥ फेर नमस्तव पढे ॥ यह सदेव जिन पूजन करणेकी विधि कही ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीदेवचंदजीकृत स्नात्रपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चौतीसे अतिशय जुत । वचनातिशयं जुत्त ॥ सो परमेसर देख

भवि । सिंहासणसंपत्त ॥ १ ॥ (ढाल) सिंहासण बैठा जगभाण । देखी भविजन गुण मणिखाण ॥ जेदीठे वुऊ निम्मल भाण । लहीये परम महोदय गाण ॥ १ ॥ ❀ ॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणन्दा । तोरा चरण कमल चोवीस पूजोरे ॥ चोवीस सोभागी । चोवीस वैरागी ॥ चोवीस जिनन्दा कुसुमांजलि मेलो आदि जिणन्दा ॥ १ ॥ ❀ ॥ इतना कही । कुसुमांजली चढाई जे । चरणां टीकी दीजे । हाथमें कुसुमांजली लेई । नमोऽर्हत् सिद्धा० कही । पढे ॥ ❀ ॥ (गाथा) जोनिअ गुण पज्जव रम्यो । तसु अनुभव एगत्त ॥ सुह पुग्गल आरोपतां । ज्योति सुरंग निरत्त ॥१॥(ढाल) जो निज आतमगुण आणन्दि । पुग्गलसंगे जेह अफन्दी ॥ जे परमेसर निज पदलीन । पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥ ❀ ॥ कुसुमांजलि मेलो शांति जिणन्दा । तोरा चरण कमल चो० ॥ कुसुमांजलि० ॥ २ ॥ ❀ ॥ कुसुमांजली चढाई जै । गोभां टीकी दीजे । फेर हाथमें, कुसुमांजली लेके नमो ऽर्हत्सिद्धा० कही पढे ॥ ❀ ॥ (गाथा) निम्मल नाण पयासकर । निम्मल गुण सम्पन्न ॥ निम्मल धम्मु वएस कर । सो परमप्पा धन्न ॥ १ ॥ (ढाल) लोका लोक प्रकासक नाणी । भविजन तारण जेहनी वाणी ॥ परमानन्द तणी नीसाणी । तसुभगतें सुऊमति ठहराणी ॥ २ ॥ कुसुमांजलि मेलो नेमि जिनन्दा तोरा च० ॥ ❀ ॥ ३ ॥ ❀ ॥ कुसु० दोनुं हाथे टीकी दीजे । मुखे पढे । नमो ऽर्हत्सिद्धा० ॥ ❀ ॥ (गाथा) जे सिद्धा सिद्धन्तिजे । सिद्धिस्सन्ति अणन्त ॥ जसु आलम्बन ठवियमण । सो सेवो अरिहन्त ॥ १ ॥ (ढाल) शिव सुख कारण जेह त्रिकाले । समपरिणामें जगति निहाले ॥ उत्तम साधुनो मार्ग देखाले । इन्द्रादिक जसु चरण पखाले ॥ कुसुमांजलि मेलो पास जिणन्दा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ कुसु० । दोनुं खांधे टीकी । दीजे । मुखे पढे नमो० ॥ ॥ ❀ ॥ (गाथा) सम्म दिठी देशजय साहु साहुणी सार ॥ आचारज उवझाय मुणि । जो निम्मल आधार ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ चोवीह संघे जे मन धार्‍यो । मोक्ष तणो कारण निरधार्‍यो ॥ विविह कुसुमवर जात गहेवी । तसु चरणें प्रणमंति ठवेवी ॥ २ ॥ कुसुमांजलि मेलो वीर जिणन्दा ॥ तोरा चरण कमल० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ कुसु० मस्तक

टीकी दीजे। नमो ऽर्हत्सिद्धा० कही। चमर हाथमें लेवे ॥ ❀ ॥ (वस्तु) सयल जिनवर २। नमिअ मनरङ्ग ॥ कल्लाण कविह संठविअ। करि सुधम्म सुपवित्त सुन्दर ॥ सयइक सत्तरि तित्थंकर। इकसमय विहर न्ति महियल। चवण समय इगवीस जिण ॥ जन्म समय इगवीस। भत्ति ह भावें पूजीया। करोसंघ सुजगीस ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एकदिन अचिरा हुलरावती। ए चाल ॥❀॥ भव तीजय समकित गुण रम्या। जिन भक्ति प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इन्द्रियसुख आसंसना। करी थानक वीशनी सेवना ॥ १ ॥ अतिराग प्रशस्त प्रभावता। मनभाव ना एहवी भावता ॥ सवजीव करूं शासन रसी। ऐसी भावदया मन उल्ल सी ॥ २ ॥ लही परिणाम एहवूं भलुं। निपजावी जिनपद निरमलुं ॥ आ उबंधे विचइ एकभव करी। श्रद्धा संवेगते थिरधरी ॥ ३ ॥ तिहां चवीअ ल हे नरभव उदार। भरते तिम ऐरवत तेजसार ॥ महाविदेह विजयपरधान। मझखंने अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥ (ढाल) पुन्यें सुपनाहे देखे। मनमां हरप विसेपे ॥ गजवर उज्जल सुन्दर। निरमल वृषभ मनोहर ॥ १॥ निरभय केसरी सींह। लखमी अतिहि अबीह ॥ अनुपम फूलनी माला। निरम ल शशि सुकमाला ॥ २ ॥ तेज तरणि अति दीपे। इन्द्रधजा जगजीपे ॥ पूरण कलस पंडूर। पद्मसरोवर पूर ॥ ३ ॥ इग्यारमें रयणायर। देखे मा ताजी गुणसायर ॥ बारमें भुवन विमान। तेरमें रतन निधान ॥ ४ ॥ अग नि शिखा निरधूम। देखे माताजी अनोपम ॥ हरखी रायनें भासे। राजा अरथ प्रकासे ॥ ५ ॥ जगपति जिनवर सुखकर। होस्ये पुत्र मनोहर ॥ इं द्रादिक जसु नमसे। सकल मनोरथ फलसे ॥ ६ ॥ ❀ ॥ (वस्तु) ॥ ❀ ॥ पुन्य उदय २ ॥ उपना जिननाह। माता तव रयणी समें। देखि सुपन हरखंत जागीअ। सुपन कही निज कंतने। सुपन अरथ सांभले सोभागीय। त्रिभुवन तिलक महागुणी। होस्ये पुत्र नि धान। इंद्रादिक जसु पायनमी ॥ करसें सिद्धि विधान ॥ ❀ ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ चंद्रा उलालानी ॥ ❀ ॥ सोहमपति आसन कंपीयो। देइ अ वधे मन आणंदीयो ॥ सुऊ आतम निरमल करण काज। भवजल ता

भवि । सिंहासणसंपत्त ॥ १ ॥ (ढाल) सिंहासण बैठा जगभाण । देखी भविजन गुण मणिखाण ॥ जेदीठे तुझ निम्मल भाण । लहीये परम महोदय गाण ॥ १ ॥ ❀ ॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणन्दा । तोरा चरण कमल चोवीस पूजोरे ॥ चोवीस सोभागी । चोवीस वैरागी ॥ चोवीस जिनन्दा कुसुमांजलि मेलो आदि जिणन्दा ॥ १ ॥ ❀ ॥ इतना कही । कुसुमांजली चढाई जे । चरणां टीकी दीजे । हाथमें कुसुमांजली लेई । नमोर्हत् सिद्धा० कही । पढे ॥ ❀ ॥ (गाथा) जोनिअ गुण पज्जव रम्यो । तसु अनुभव एगत्त ॥ सुह पुग्गल आरोपतां । ज्योति सुरंग निरत्त ॥१॥(ढाल) जो निज आतमगुण आणन्दि । पुग्गलसंगे जेह अफन्दी ॥ जे परमेसर निज पदलीन । पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥ ❀ ॥ कुसुमांजलि मेलो शांति जिणन्दा । तोरा चरण कमल चो० ॥ कुसुमांजलि० ॥ २ ॥ ❀ ॥ कुसुमांजली चढाई जै । गोडां टीकी दीजे । फेर हाथमें, कुसुमांजली लेके नमो र्हत्सिद्धा० कही पढे ॥ ❀ ॥ (गाथा) निम्मल नाण पयासकर । निम्मल गुण सम्पन्न ॥ निम्मल धम्मु वएस कर । सो परमप्पा धन्न ॥ १ ॥ (ढाल) लोका लोक प्रकासक नाणी । भविजन तारण जेहनी वाणी ॥ परमानन्द तणी नीसाणी । तसुभगतें मुझमति ठहराणी ॥ २ ॥ कुसुमांजलि मेलो नेमि जिनन्दा तोरा च० ॥ ❀ ॥ ३ ॥ ❀ ॥ कुसु० दोनुं हाथे टीकी दीजे । मुखे पढे । नमो र्हत्सिद्धा० ॥ ❀ ॥ (गाथा) जे सिद्धा सिज्झन्तिजे । सिझिस्सन्ति अणन्त ॥ जसु आलम्बन ठवियमण । सो सेवो अरिहन्त ॥ १ ॥ (ढाल) शिव सुख कारण जेह त्रिकाले । समपरिणामें जगति निहाले ॥ उत्तम साधुनो मार्ग देखाले । इन्द्रादिक जसु चरण पखाले ॥ कुसुमांजलि मेलो पास जिणन्दा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ कुसु० । दोनुं खांधे टीकी । दीजें । मुखे पढे नमो० ॥ ॥ ❀ ॥ (गाथा) सम्म दिट्ठी देशजय साहु साहुणी सार ॥ आचारज उवझाय मुणि । जो निम्मल आधार ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ चोवीह संघें जे मन धार्यो । मोक्ष तणो कारण निरधार्यो ॥ विविध कुसुमवर जात गहेवी । तसु चरणें प्रणमंति ठवेवी ॥ २ ॥ कुसुमांजलि मेलो वीर जिणन्दा ॥ तोरा चरण कमल० ॥ ५ ॥ ❀ ॥ कुसु० मस्तक

टीकी दीजे । नमो र्हत्सिद्धा० कही । चमर हाथमें लेवै ॥ ॥
(वस्तु) सयल जिनवर २ । नमिअ मनरङ्ग ॥ कल्लाण कविह संठविअ ।
करि सुधम्म सुपवित्त सुन्दर ॥ सयइक सत्तरि तित्थंकर । इकसमय विहर
न्ति महियल । चवण समय इगवीस जिण ॥ जन्म समय इगवीस । जत्ति
ह जावें पूजीया । क्लोसंघ सुजगीस ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ एकदिन अचिरा हुलरावती । ए चाल ॥॥ जव तीजय समकित
गुण रम्या । जिन जक्ति प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इन्द्रियसुख आसंसना ।
करी थानक वीशनी सेवना ॥ १ ॥ अतिराग प्रशस्त प्रजावता । मनजाव
ना एहवी जावता ॥ सबजीव करूं शासन रसी । ऐसी जावदया मन उल्ल
सी ॥ २ ॥ लही परिणाम एहवूं जलूं । निपजावी जिनपद निरमलुं ॥ आ
नुबंधे विचइ एकजव करी । श्रद्धा संवेगते थिरधरी ॥ ३ ॥ तिहां चवीअ ल
हे नरजव उदार । जरते तिम ऐरवत तेजसार ॥ महाविदेह विजयपरधान ।
मझखंने अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥ (ढाल) पुन्यें सुपनाहे देखे । मनमां
हरष विसेषे ॥ गजवर उज्ज्वल सुन्दर । निरमल वृषज मनोहर ॥ १॥ निरजय
केसरी सींह । लखमी अतिहि अबीह ॥ अनुपम फूलनी माला । निरम
ल शशि सुकमाला ॥ २ ॥ तेज तरणि अति दीपे । इन्द्रधजा जगजीपे ॥
पूरण कलस पंडूर । पद्मसरोवर पूर ॥ ३ ॥ इग्यारमें रयणायर । देखे मा
ताजी गुणसायर ॥ बारमें जुवन विमान । तेरमें रतन निधान ॥ ४ ॥ अग
नि शिखा निरधूम । देखे माताजी अनोपम ॥ हरखी रायनें जासे । राजा
अरथ प्रकासे ॥ ५ ॥ जगपति जिनवर सुखकर । होस्ये पुत्र मनोहर ॥ इं
द्रादिक जसु नमसे । सकल मनोरथ फलसे ॥ ६ ॥ ॥ (वस्तु)
॥ ॥ पुन्य उदय २ ॥ हुपना जिननाह । माता तब रयणी समें ।
देखि सुपन हरखंत जागीअ । सुपन कही निज कंतने । सुपन अरथ
सांजलें सोजागीय । त्रिजुवन तिलक महागुणी । होस्ये पुत्र नि
धान । इंद्रादिक जसु पायनमी ॥ करसे सिद्धि विधान ॥ ॥ १ ॥
(ढाल) ॥ चंद्रा उल्लालानी ॥ ॥ सोहमपति आसन कंपीयो । देइ अ
वधे मन आणंदीयो ॥ सुझ आतम निरमल करण काज । जवजल ता

रण प्रगट्यो जिहाज ॥ १ ॥ नव अम्बी पारग सत्थवाह । केवलनाणा ईअ गुण अगाह ॥ शिव साधन गुण अंकूर जेह । कारण उलट्यो आसाढि मेह ॥ २ ॥ हरखे विकसे तव रोमराय । वलयादिकमां निज तनुं नमाय ॥ सिंहासणथी ऊठ्यो सुरिंद । प्रणमंतो जिन आनन्द कन्द ॥ ३ ॥ सगअम पय समुहा आवितत्थ । करी अंजली प्रणमिअ मत्थ सत्थ ॥ सुख नापे एहुण आजसार । तियलोय पहू दीठो उदार ॥ ४ ॥ रेरे निसुणो सुरलोय देव । विषयानल तापित तनु समेव ॥ तसु शान्तिकरण जलधर समान । मिथ्याविष चूरण गरुडवान ॥ ५ ॥ ते देव जगत्तारण समत्थ । प्रगट्यो तसु प्रणमी हुवो सनत्थ ॥ इम जंपी सक्रस्तव करेवि । तव देव देवी हरखे सुणेवि ॥ ६ ॥ गावे तव रंभा गीतगान । सुरलोक हुवो मंगल निधान । नर खेत्रें आरज वंसठाम । जिनराज वधे सुर हर्ख धाम ॥ ७ ॥ पिता माता घरे उत्सव अलेष । जिन शासन मंगल अति विशेष ॥ सुरपति देवादिक हरखसंग । संयम अरथी जननें उमंग ॥ ८ ॥ सुभवेला लगनें तीर्थनाथ । जनम्या इंद्रादिक हर्ख साथ ॥ सुखपाम्यां त्रिभुवन सर्वजीव ॥ वधाई वधाइ थई अतीव ॥९॥❀॥ फूल अक्षतसें वधावे । ३ प्रदक्षिणा देवै । (पीछे) शक्रस्तव, ठाणं संपावियुंकामस्स । तक कहे । पीछे । रोली (तथा) केसरका हाथमें साथिया करे । धूपखेवै ॥ (ढाल) श्री शांति जिननो कलश कहिसुं० ॥ ए चाल ॥ ❀ ॥ श्री तीर्थपतिनो कलस मज्जन गाइये सुखकार । नर खेत्र मंमण दुह विहंमण । भविक मन आधार ॥ तिहां रावराणा हरख उत्सव । थयो जग जयकार ॥ दिशि कुमरी अवधि विशेष जाणी । लह्यो हरख अपार ॥ १ ॥ निअ अमर अमरी संग कुमरी । गावती गुणछंद ॥ जिन जननी पासे आय पहुती । गहकती आणंद ॥ हेमायनें जिनराज जायो । शचि वधायो रम्म । भ्रमजम्म निम्मल करण कारण । करिस सुई अकम्म ॥ २ ॥ तिहां भूमि सोधन दीप दरपण वायवींझणधार ॥ तिहां करिय कदली गेह जिनवर । जननी मज्जनकार ॥ वर राखमी जिनपाणि बांधी । दीये इम आसीस ॥ युगकोम कोमी चिरंजीवो । धर्मदायक ईस ॥ ३ ॥ (ढाल) उल्लालानी ॥ ❀ ॥ जिनरयणीजी दश दिश उज्जलता

धरे ॥ सुरस्वर्गनेंजी ज्योतिम चक्रते संचरे । जिन जनम्यार्जा जिण अव सर माता घरे ॥ तिण अवसरजी इंद्रासण पण थर हरे ॥ (त्रुटक) थरहरे आसन इंद्रचिंते कोन अवसर एबन्यो । जिन जन्म उत्सव काल जाणी अतिहि आणंद ऊपनो ॥ निजसिद्ध संपत्ति हेतु जिनवर जाणि भगतें ऊमह्यो । विकसंत वदन प्रमोद वधते देवनायक गहगह्यो ॥ १ ॥ (ढाल) तव सुरपति जी घंटानाद करावए ॥ सुरलोके जी घोषणा एहवि रावए । नरक्षेत्रें जी जिन वर जनम हुवो अछे । तसुभगतें जी सुरपति मंदि र गिर गछे ॥ (त्रुटक) गछे मंदिर शिखर ऊपर भुवन जीवन जिनत णो । जिन जन्म उत्सव करण कारण आवज्यो सविसुर घणो । तुम शुद्ध समकित थास्ये निरमल देव देवी निहालतां । आपणा पातिक सर्व जास्ये नाथ चरणपखालतां ॥ २ ॥ (ढाल) इम सांभलजी सुरवर कोडि बहु मिली । जिन वंदण जी मंदर गिरि साहमी चली । सोहम पतिजी जिन जननी घर आविया । जिन माताजी वांदी स्वामि वधा विया । (त्रूटक) वधाविया जिनवर हर्ष बहुले धन्यहुं कृतपुन्य ए । त्रैलोक्य नाय क देवदीठो मुझ समो कुण अन्यए । हे जगत जननी पुत्र तुह्मचो मेरु म ज्जन वरकरी । उछंग तुह्मचे वलिय थापिस आनमा पुन्यें भरी ॥ ३ ॥ (ढाल) सुरनायकजी जिन निज कर कमलें ठव्या ॥ पांच रूपें जी अति सय महिमायें स्तव्या । नाटक विधिजी तव बत्तीस आगल वहे । सुर कोडी जी जिन दरसणनें ऊमहे (त्रूटक) सुर कोडि कोडी नाचती वलि नाथ शचि गुण गावती । अपछरा कोडी हाथ जोडी हाव भाव दिखावती । जय जयो तूं जिन राज जग गुरु एमदे आसी सए । अह्मत्राण शरण आ धार जीवन एक तुं जगदीश ए ॥ ४ ॥ (ढाल) सुरगिरवर जी पांडुक व नमें चिहुं दिसें । गिरिसिल परजी सिंहासण सासय वसे । तिहां आणीजी शकें जिन खोलें ग्रह्या । चोसठे जी तिहां सुरपति आवी रह्या (त्रूटक) आविया सुरपति सर्व भगतें कलश श्रेणि बणाव ए । सिद्धार्थ पमुहा तीर्थौषधि सर्व वस्तु आणाव ए । अच्चुय पति तिहां हुकमकीनो देव कोडा कोडिनें । जिन मज्जनार्थ नीर लावो सवे सुर कर जोडिनें ॥ ५ ॥ ॐ ॥

रण प्रगट्यो जिहाज ॥ १ ॥ भव अटवी पारग सत्थवाह । केवलनाणा ईअ गुण अगाह ॥ शिव साधन गुण अंकूर जेह । कारण उलट्यो आसाढि मेह ॥ २ ॥ हरखें विकसे तव रोमराय । वलयादिकमां निज तनुं नमाय ॥ सिंहासणथी ऊठ्यो सुरिंद । प्रणमंतो जिन आनन्द कन्द ॥ ३ ॥ सगअड पय समुहा आवितत्थ । करी अंजली प्रणमिअ मत्थ सत्थ ॥ मुख भापे एहुण आजसार । तियलोय पहू दीठो उदार ॥ ४ ॥ रेरे निसुणो सुरलोय देव । विषयानल तापित तनु समेव ॥ तसु शान्तिकरण जलधर समान । मिथ्याविष चूरण गरुडवान ॥ ५ ॥ ते देव जगत्तारण समत्थ । प्रगट्यो तसु प्रणमी हुवो सनत्थ ॥ इम जंपी सक्रस्तव करेवि । तव देव देवी हरखे सुणेवि ॥ ६ ॥ गावैं तव रंभा गीतगान । सुरलोक हुवो मंगल निधान । नर खेत्रें आरज वंसठाम । जिनराज वधे सुर हर्ख धाम ॥ ७ ॥ पिता माता घरे उछव अलेप । जिन शासन मंगल अति विशेप ॥ सुरपति देवादिक हरखसंग । संयम अरथी जननें उमंग ॥ ८ ॥ सुभवेला लगनें तीर्थनाथ । जनम्या इंद्रादिक हर्ख साथ ॥ सुखपाम्यां त्रिभुवन सर्वजीव ॥ वधाई वधाइ थई अतीव ॥९॥ ॥ फूल अक्षतसें वधावे । ३ प्रदक्षिणा देवे । (पीछे) शक्रस्तव, ठाणं संपाविउंकामस्स । तक कहे । पीछे । रोली (तथा) केसरका हाथमें साथिया करै । धूपखेवै ॥ (ढाल) श्री शांति जिननो कलश कहिसुं० ॥ ए चाल ॥ ॥ श्री तीर्थपतिनो कलस मज्जन गाइये सुखकार । नर खेत्र मंमण दुह विहंरुण । भविक मन आधार ॥ तिहां रावराणा हरख उछव । थयो जग जयकार ॥ दिशि कुमरी अवधि विशेप जाणी । लह्यो हरख अपार ॥ १ ॥ निअ अमर अमरी संग कुमरी । गावती गुणछंद ॥ जिन जननी पासे आय पहुती । गहकती आणंद ॥ हेमायनें जिनराज जायो । शचि वधायो रम्म । असजम्म निम्मल करण कारण । करिस सूई अकम्म ॥ २ ॥ तिहां भूमि सोधन दीप दरपण वायवींझणधार ॥ तिहां करिय कदली गेह जिनवर । जननी मज्जनकार ॥ वर राखमी जिनपाणि बांधी । दीये इम आसीस ॥ युगकोड कोमी चिरंजीवो । धर्मदायक ईस ॥ ३ ॥ (ढाल) उल्लालानी ॥ ॥ जिनरयणीजी दश दिश उजलता

न्हवण करे प्रभु अंगे । करिय विलेपण पुष्फ मालठवि । वर आभरण अभं ग ॥ सो० ॥ १ ॥ तव सुर वर बहु जय २ रव करे । नचेथर आणंद । मोक्ष मारग सारथ पति पाम्यो । भांजिसु हिव भवफंद ॥ सो० ॥ २ ॥ कोमित्र त्तीस सोवन्न ऊवारी । वाजंते वरनाद । सुरपति संघ अमर श्री प्रभुनें । जननीनें सुप्रसाद । ३ सो० ॥ आणीथापे एम पयंपे । अह्म निसतारिया आज । पुत्र तुह्मारो धणीय अह्मारो । तारण तरण जिहाज ॥ ४ सो० ॥ मात जतन करि राखिज्यो एहनें । तुह्म सुत अह्म आधार । सुरपति भगति स हित नंदीसर । करे जिन भगति उदार ॥ ५ सो० ॥ निय निय कप्प गया सवि निर्झर । कहितां प्रभु गुणसार । दिक्षा केवल ज्ञान कल्याणक । इच्छा चित्त मझार ॥ सो० ॥ ६ ॥ खरतर गछ जिन आणा रंगी । राज सागर उवझाय । ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक । सुगुरु तणे सुपसाय ॥ सो० ७ ॥ देवचंद निज भगतें गायो । जनम महोछव छंद । बोधबीज अंकुरो उल्हस्यो । संघ सकल आणंद ॥ सो० ८ ॥ (ढाल)॥ इम पूजा भगतें करो । आतमहित काज । तजिय विभाव निजभावना । रमतां शिवराज ॥ १ ॥ इ० ॥ काल अनंतें जे हुवा । होस्ये जेह जिणंद । संपइ सीमंधर प्रभु । केवल नाण दिणंद ॥ इ० ॥ २ ॥ जनम महोछव इणि परे । श्रावक रुचिवंत । विरचे जिन प्रतिमा तणो । अनुमोदन खंत ॥ इ० ॥ ३ देवचंद जिन पूजनां । करता भवपार । जिन पडिमा जिन सारखी । कही सूत्र मझार ॥ इम० ॥ ४ ॥ इति स्नात्रपूजा विधि संपूर्णम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ १ जल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) गंगामागध क्षीरनिधि । औषध मिश्रितसार । कुसुमें वासित शुचिजलें । करो जिन स्नात्र उदार ॥ १ ॥ (ढाल) मणि कनकादिक अष्टविध करि भरी कलश सफार । शुभ रुचि जे जिनवर नमें नसुनदी दुरित प्रचार । मेरुशिखर जिम सुरवर जिनवर न्हवण प्रमान । करता वरना निज गुण समकित शुद्धि निधान ॥ १ ॥ (छंद) हर्ष भरी अप्सरावृंद आवे । स्नात्र करि एम आशीस भावे । जिहां लगे सुरगिरि जंबुदीवो ।

सर्व स्नात्रिया जलका कलश हाथमें लेके खडा रहे । मुखसें पढे (ढाल
शांतिनें कारणे इंद्र कलशा भरे । ए चाल ॥ ❋ ॥ आत्म साधन रसी दे
कोमी हसी । उल्लसीनें धसी खीरसागर दिसी ॥ पोमदह आदि दह गं
पमुहानई । तीर्थजल अमल लेवा भणी ते गई ॥ १ ॥ जाति अठ क
श करि सहस अठोत्तरा । छत्र चामर सिंहासणे सुभतरा । उपगरण
पुष्फचंगेरि पमुहासवे । आगमें भासिया तेम आणीठवे ॥ २ ॥ तीर्थ ज
भरिय करकलश करि देवता । गावता भावता धर्म्म उन्नतिरता । तिरिय न
अमरनें हर्ख उपजावता । धन्य अह्म सगति सुचि भगति इम भावता ॥ ३
सम कित बीज निज आत्म आरोपिता । कलश पाणीमिसें भक्तिजल सिं
चता । मेरु सिहरो वरें सर्व आव्या वही । शक्रउछंग जिन देषि मन ग
गही ॥ ४ ॥ ❋ ॥ (गाथा) ॥ ❋ ॥ हंहो देवा अणाई । कालो अदि
पुवो । तिलोय तारणो । तिलोय बंधु । मिछत्तमोह विध्वंसणो । आणाइ ति
न्ना विणासणो । देवाहि देवो दिछ्वो हिअय कामेहिं ॥ १ ॥ ❋ ॥ (ढाल तें
ज) ॥ ❋ ॥ एम पभणंति वण भुवण जोईसरा । देव वैमाणिया भत्ति धम्मायरा
केवि कप्पठिया केवि मित्ताणुगा केई वररमण वयणेण अइउछगा ॥ ५ ॥ (व
स्तु) तत्थु अच्चुय २ इंद्र आदेश । करजोडि सर्व देवगण । लेयकलश आदेस
पामीय । अदभुत रूप सरूपजुय । कवण एह पुछंत सामीय ॥ इंद्र कहे
जगतारणों । पारग अह्मपरमेस । नायक दायक धम्मनिहिं । करीयें तस
अभिषेस ॥ १ ॥ (ढाल ९ मी) तीर्थ कमल वर उदक भरीनें । पुषकर सा
गर आवै (एचाल) ॥ पूर्ण कलश सुचि उदकनी धारा । जिनवर अंगे
न्हामें । आतम निरमल भाव करंता वधतें शुभ परिणामें । अच्युता दिक
सुरपति मज्जन लोकपाल लोकांत । सामानिक इंद्राणी पमुहा इम अभिषे
क करंत ॥ १ ॥ पू० (गाहा) ॥ तव ईशान सुरिंदो । सक्कं पभणेइ करि
हु सुपसावो । तुह्म अंके मह नाहो । खिणमित्तं अह्म अप्पेह ॥ १ ॥ ता
सक्किंदो पभणई । साहमीय वछलंमि बहुलाहो । आणाइवंतेणं गिण्हह
होउ कयत्थाओ ॥ २ ॥ ❋ ॥ इतना कहके । सर्व स्नात्रिया, भगवान ऊपर
कलश ढाले । मुखेंपढे ॥ ❋ ॥ (ढाल) ॥ सोहम सुरपति वृषभ रूप करि ।

न्हवण करे प्रभु अंगे । करिय विलेपण पुष्फ माल ठवि । वर आभरण अभं ग ॥ सो० ॥ १ ॥ तब सुर वर बहु जय २ रव करे । नाचेधर आणंद । मोक्ष मारग सारथ पति पाम्यो । भांजिस्युं हिव भवफंद ॥ सो० ॥ २ ॥ कोमित्र त्तीस सोवन्न ऊवारी । वाजंते वरनाद । सुरपति संघ अमर श्री प्रभुनें । ज नर्नीनें सुप्रमाद । ३ सो० ॥ आणीथापे एम पयं पे । अह्म निसतारिया आ ज । पुत्र तुह्मारो धणीय अह्मारो । तारण तरण जिहाज ॥ ४ सो० ॥ मात जतन करि राखिज्यो एहनें । तुह्म सुत अह्म आधार । सुरपति भगति स हित नंदीसर । करे जिन भगति उदार ॥ ५ सो० ॥ निय निय कप्प गया सवि निर्जर । कहितां प्रभु गुणसार । दिक्षा केवल ज्ञान कल्याणक । इछा चित्त मझार ॥ सो० ॥ ६ ॥ खरतर गछ जिन आणा रंगी । राज सागर उ वझाय । ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक । सुगुरु तणे सुपसाय ॥ सो० ७ ॥ देवचंद निज भगतें गायो । जनम महोछव छंद । बोधबीज अंकूरो उल्ह स्यो । संघ सकल आणंद ॥ सो० ८ ॥ (ढाल) ॥ इम पूजा भगते क रो । आतमहित काज । तजिय विभाव निजभावना । रमनां शिवराज ॥ १ ॥ इ० ॥ काल अनंतें जे हुवा । होस्ये जेह जिणंद । संपइ सीमंधर प्रभु । केवल नाण दिणंद ॥ इ० ॥ २ ॥ जनम महोछव इणि परे । श्रावक रुचि वंत । विरचे जिन प्रतिमा तणो । अनुमोदन खंत ॥ इ० ॥ ३ देवचंद जिन पूजनां । करता भवपार । जिन पडिमा जिन सारखी । कही सूत्र मझार ॥ इम० ॥ ४ ॥ इति स्नात्रपूजा विधि संपूर्णम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ १ जल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) गंगामागध क्षीरनिधि । औषध मिश्रितसार । कुसुमें वा सित शुचिजलें । करो जिन स्नात्र उदार ॥ १ ॥ (ढाल) मणि कलकादि क अष्टविध करि भरी कलश मझार । शुभ रुचि जे जिनवर नमें तसुनहीं दुरित प्रचार । मेरुशिखर जिम सुरवर जिनवर न्हवण अमान । करता धर ता निज गुण समकित शुद्धि निधान ॥ १ ॥ (छंद) हर्से भरी अपसरावृंद आवे । स्नात्र करि एम आशीस भावे । जिहां लगे सुरगिरि जंबुदीवो ।

अमतणा नाथ जीवातु जीवो ॥ ३ ॥ ❀ ॥ (श्लोकः) ॥ विमल केवल भासन भास्करं । जगति जंतु महोदय कारणं । जिनवरं बहुमान जलौघतः । शुचिमनः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने । अनंतानंत ज्ञान शक्तये । जन्मजरा मृत्यु निवारणाय । श्री मज्जिनेंद्राय । जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ इति जलपूजा ॥ ❀ ॥ जलसें न्हवण करावे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ २ चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) बावना चंदन कुमकुमा । मृगमदनें घन सार ॥ जिन तनु लेपै तसुटले । मोह संताप विकार ॥ १ ॥ (ढाल) सकल संताप निवारण तारण सहु भवि चित्त । परम अनीहा अरिहा तनु चरचो भवि नित्त ॥ निज रूपे उपयोगी धारी जिनगुण गेह । भावचंदन सुह भाव थी टाले दुरित अछेह ॥ २ ॥ (चालि) जिन तनु चरचतां सकल नाकी कहे कुग्रह उणणता आज थाकी ॥ सफल अनिमेषता आज झाकी । भव्यता अह्म तणी आज पाकी ॥ ३ ॥ (श्लोकः) सकलमोह तिमिश्र विनासनं । परम शीतल भावयुतं जिनं ॥ विनय कुंकुम चंदन दर्शनें । सहज तत्व विकाश कृतेर्च्चये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने । अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये ॥ जन्मजरा मृत्यु निवारणाय । श्रीमज्जिनेंद्राय । चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥ इति चंदनपूजा ॥ ❀ ॥ केसर चंदन चढावे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ३ पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दुहा) शतपत्री वर मोगरा । चंपक जाइ गुलाव ॥ केतकी दमणो बोलसिरि । पूजो जिन भरि भाव ॥ १ ॥ (ढाल) अमल अखंडित विकसित सुभ सुमनो घन जाति । लाखीणो टोडरडवो अंगीरचो बहु भांति ॥ गुण कुसुमें निज आतम मंडित करवा भव्य ॥ गुणरागी जन्मत्यागी पुष्प चढावो नव्य ॥ २ ॥ (चालि) जगधणी पूजतां विविध फूले । सुरवरा ते गिणें तृण अमूले ॥ खंति धर मानवा जिनपद पूजे । तसुतणा पाप संताप धूजे ॥ ३ ॥ (श्लोकः) विकच निर्मल शुद्ध मनोरमे । विशद चेतन भाव समुद्भवैः ॥ सुपरिणाम प्रसून घनेर्नवैः । परमतत्व मयं हि यजाम्यहं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ ॥ ❀ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ४ धूप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) कृष्णागर मृगमद तगर । अंबर तुरुक लोबान । मेल सुगंध वनसार घन । करो जिननें धूपदान ॥ १ ॥ (ढाल) धूपघटी जिम म हमहे तिम दहे पातिक वृन्द ॥ अरति अनादिनी जावे पावे मन आणंद ॥ जे जिन पूजे धूपें भव कूपें फिर तेह ॥ नावे पावे ध्रुवघर आवे सुक्ख अ छेह ॥ २ ॥ (चालि) जिनघरे वासतां धूपपूरे । मिथ्यत्त दुर्गन्धता जाइ दूरे ॥ धूप जिम सहज ऊर्द्ध गन स्वभावे । कारिका उच्चगति भाव पावे ॥ ३ ॥ (श्लोकः) सकल कर्म्म महेंधन दाहनं । विमल संवर भावसु धूपनं ॥ असुभ पुग्गल संग विवर्जितं । जिनपतेः पुरतोस्तु सुहर्षितः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० । धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
इति धूप पूजा ॥ धूप अगरबत्ती खेवे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ५ दीपपूजा ॥ ❀ ॥

(दूहा) मणिमय रजत ताम्रना । पात्रकरी घृत पूर । वत्ती सूत्र कसुं बनी । करो प्रदीप सनूर ॥ १ ॥ (ढाल) मंगलदीप वधावो गावो जिन गुण गीत ॥ दीपथकी जिम आलिका मालिका मंगलनीत ॥ दीपतणी सुभ ज्योती द्योती जिन मुखचंद ॥ निरखी हरखो भविजन जिम लहो पूर्णा नंद ॥ २ ॥ (चाल) जिन गृहे दीपमाला प्रकासें । तेहथी तिमर अज्ञान नासें ॥ निजघटे ज्ञानज्योति विकासे । तेहथी जगतणा भावभासे ॥ ३ ॥ (श्लोकः) भविक निर्म्मल बोध विकासकं । जिनगृहे सुभ दीपक दीपनं ॥ सुगुण राग विसुद्ध समन्वितं । दधतुभाव विकास कृते जैना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० । दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
इति दीपपूजा ॥ ❀ ॥ मंगलदीप चढावे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ६ अक्षत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) अक्षत २ प्रस्थुं । जे जिन आगे सार । स्वस्तिक रचनां विस्तरे । निजगुण कर विस्तार ॥ १ ॥ (ढाल) उज्जल अमल अखंडित मं डित अक्षतसार । पुंजत्रय करी स्वस्तिक आस्तिक भावे रंग । निज सत्तानें

सन्मुख उनमुख भावे जेह । ज्ञानादिक गुणठावे भावे स्वस्तिक एह ॥ २ ॥
(चाल) स्वस्तिक पूरतां जिनप आगे । स्वस्ति श्री भद्र कल्याण जागे । जन्मजरा मरणादि असुभ भागे । नियत शिव सर्म रहै तासु आगे ॥ ३ ॥ (श्लोकः) सकल मंगलकेलि निकेतनं । परम मंगल भावमयं जिनं । श्र यति भव्यजना इति दर्शयन् । दधतु नाथ पुरोक्षत स्वस्तिकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने० । अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
इति अक्षतपूजा ॥ अखंड चावल चढावे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ७ नैवेद्यपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) सरस सुची पक्वान बहु । शालि दालि घृतपूर । धरो नैवेद्य जिन आगलै । क्षुधा दोष तसु दूर ॥ १ ॥ (ढाल) लपनश्री वर घेवर मधुतर मोतीचूर । सींहकेसरिया सेविया दालिया मोदक पूर । साकर द्राख सींघोडा भक्तिव्यंजन घृतसद्य । करो नैवेद्य जिन आगले जिम मिलै सुख अनवद्य ॥२॥ (चाल) ढोवतां भोज्य पर भाव त्यागे । भविजना निज गुण भोज्यमांगे । अक्षभणी अक्षतणो सरूप भोज्य । आपज्यो तातजी जगत पूज्य ॥ ३ ॥ (श्लोकः) सकल पुद्गलसंग विवर्जनं । सहज चेतनभाव विलासकं । सरसभोजन नव्य निवेदनात् । परम निर्वृति भाव महं स्पृहे ॥१॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने० । नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥
इति नैवेद्यपूजा ॥ ❀ ॥ नैवद्य मिठाई पक्वान चढावे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ ८ फलपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) पक बीजोरुं जिन करे । ठवतां सिवपद देइ । सरस मधुर रस फल गिणें । इह जिन भेट करेइ ॥ १ ॥ (ढाल) श्रीफल क दली सुरंग नारंगी आंबा सार ॥ अंजीर वंजीर दाडिम करणा पद्मबीज सफार ॥ मधुर सुस्वादिक उत्तम लोक आणंदित जेह । वरण गंधादिक र मणीक बहुफल ढोवै तेह ॥ २ ॥ (चाल) फलभर पुजतां जगत स्वा मी । मनुजगति वेलडै सफल पामी । सकल मनुष्येय गतिभेद रंगै । ध्यावतां फलसमाप्ति प्रसंगै ॥ ३ ॥ (श्लोकः) कटुक कर्मविपाक विनासनं । सरस पकफल व्रज ढोकनं । वहति मोक्षफलस्य प्रभोपुरः । कुरुत सिद्धि

फलाय महाजना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने० । फलं यजामहे स्वाहा ॥ इति फलपूजा ॥ ८ ॥ श्रीफल सुपारी नीलाफल प्रमुख चढावे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अर्घ पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दुहा) इम अड विधि जिनपूजना । विरचे जे थिरचित्त । मानवभव सफलो करे । वाधे समकित वित्त ॥ १ ॥ (ढाल) अगणित गुण मणि आगर नागर वंदित पाय । श्रुतधारी उपगारी श्री ज्ञान सागर उवझाय । तासु चरणकज सेवक मधुकर पय लयलीन । श्रीजिन पूजा गाई जिनवाणी रसपीन ॥ २ ॥ (चाल) संवत गुणयुग अचल इंदु । हर्षे परिगाइयो श्रीजिनेंदु । तासुफल सुकृत थी सकल प्राणी । लहेज्ञान ज्योत घन शिव निसानी ॥ ३ ॥ (श्लोकः) इति जिनवरवृंदं भक्तितः पूजयंति । सकल गुणनिधानं देव चंद्र स्तुवंति । प्रति दिवस मनंतं तत्व सुद्रास यंति । परम सहज रूपं मोक्ष सौख्यं श्रयंति ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमा० अर्घं यजामहे स्वाहा ॥ च्यारे खूणे धार दीजे ॥ इति अर्घ पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वस्त्र पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैलचूला । सिंहासनो परिमित स्नपनावसाने । दध्यक्षतैः कुसुमचंदन गंध धूपैः । कृत्वा चनंतु विदधाति सुवस्त्र पूजा ॥ १ ॥ तद्वत् श्रावक वर्ग एष विधिना लंकार वस्त्रादिकं । पूजा तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्या त्रिभक्त्याद्दतः । नीरागस्य निरंजनस्य विजता राते त्रिलोकीपतेः । स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृति कृते क्लेशक्षया कांक्षया ॥ ॐ ह्रीँ ॥ वस्त्रं० ॥ वस्त्र चढावे ॥ इति वस्त्रपूजाः ॥ इति अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ ❀ ॥ अथ निमक उतारण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अह पडिजग्गा पभुं । पया हिणं मुणिवयं करि ऊणं । पक्खइ सलूण लोण जलिंयंच । दूरिंग्ह अवहरंती ॥ १ ॥ पिक्खेविणं मुह जिणवरह । दीहर नयण सलूण । न्हावइ गुरु मछर भरिय । जलण पइस्सइ लूण ॥ २ ॥ लूण उत्तारिह जिणवरह । तिन्नि पयाहिणि देव । तड तड शब्द करंतिंय । विल्ला विलक्ष जलेण ॥ ३ ॥ जंजेण विकल थुई । जलेण तं नडइ लच्चसहस्स । जिणरूवा मछरेणवि । फुट्टइ लूणं तड तडस्स ॥ ४ ॥

॥ ❀ ॥ ए कही लूण अग्निशरण करे ॥ (पीछे) लूण पाणी लेई। मुखें गाथा कहे ॥ ❀ ॥ सव्ववि मुणवई जलविजल्ल। तंतह नमम्फइ पास। अह वि कयंतस्स निम्मलजं। निग्गुण बुद्धि पयास ॥ ५ ॥ जलण अणें विणु जलणहि पास। नरवि कयजाल नावहि पास। तिन्नि पयाहिणि दिन्निय पास। जिम जिय त्रुट्टे भव दुहपास ॥ ६ ॥ जलनिम्मल कर कमले हि लेविणुं। सुरवइ नावहि मुणिवई सेवणुं। पन्नणइ जिणवर तुहपइ सरणं। नयतुट्टइ लब्भइ सिद्धि गमणं ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ए कही लूण उतारी जल सरण कीजे ॥ इति निमक उतारण पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पुष्पमाला पहरावण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उन्नय पयय भत्तस्स। नियगाणे संठियं कुणं तस्स। जिण पासे नमिय जणस्स। पिठतुह हुय वहे पम्फणं ॥ १ ॥ सव्वो जिण प्पन्नावो। सरिसा सरिसेसु जेण रचंती। सव्वन्नूण अपासे। जम्मस्स नमणं न संकमणं ॥ २ ॥ अच्चंत दुःकरं पिहु। हुयवह निवडेण जडेण कयं। आणा सव्वन्नूणं। न कया सुकयत्थ मूलमिणं ॥ ३ ॥ ए कही माला चढाईजे ॥

॥ ❀ ॥ अथ तूटा फूल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवणेव मंगलेवो। जिणाण मुह लालि संवलिया। तित्थ पवत्तण समई। तियसे विमुक्का कुसुम वुठी ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
ए कही फूल उछालीजे प्रभु आगे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सतर भेद पूजाकी विधि लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम स्नात्र करे। पीछे। अष्ट प्रकारी पूजा करे। फिर सोना रूपा प्रमुखकी रकेबीमें। कुंकुम (तथा) केसर प्रमुखको साथियो करे। पीछे सुंदर कलश. केसर प्रमुख मिश्रित शुद्धजल भरी। रुपियो थापनाको कलशमेंरखी। कलश रकेबीमेंधरे। पीछे। स्नात्रिया मुख कोस उत्तरासण करके। तीन नवकार गुणें। तीन नमस्कार करी। हाथे धूपदेई। रकेबी हाथ धरे। मनथिर राखे। छींक वर्जे। स्नात्रिया प्रभुजी सन्मुख खड़ा रहे। कलश अडिग राखे। मुखे इम पढे। भावभले भगवंतनी (इत्यादी)।

॥ ॐ ॥ अथ सतर भेद पूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (दूहा) भावजलें भगवंतनी। पूजा सतर प्रकार। परगिव कीधी द्रोपदी। अंग छठे अधिकार॥ १ ॥ ॐ ॥ (राग सरपदो) ॥ ॐ ॥ ज्योति सकल जग जागती ॥ (आंकणी०) ॥ सरसति समरिसुजिनंद ॥ सतर सुविधि पूजा तणी। पभणिसु परमानन्द ॥ १ ॥ (गाहा) न्हवण (१) विलेवण (२) वत्थजुगं (३) गंधारुहणंच (४) पुप्फरोहणयं (५)। माला रोहण (६) वन्नयं (७)। चुन्न (८) पभागाय (९) आभरणे (१०) ॥२॥ मालकला सुयवंसुघरं (११) पुप्फंपगरंच (१२) अट्ठमंगलयं (१३) धूव उखेवो (१४) गीययं (१५)। नट्टं (१६) वज्जं (१७) तहाभणियं ॥ ३ ॥ सतर सुविध पूजा पवरं। ज्ञाता अंग मझार। द्रुपदसुता द्रोपदि परे। करियें विधि विस्तार ॥ ४ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा (राग देसाख) ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पूर्वमुख सावनं करि दसन पावनं। अहत धोती धरी उचित मानी। (अइयो०) ॥ विहत मुखकोसके खीर गंधोदके। सुकृत माणिक लश करि विवध वांनी ॥ (अ०) ॥ १ ॥ नमवि जिनपुंगवं लोमहस्ते नवं। मार्जनं करिअ वावारि वारी। (अ०)। जाणिय कुशमंजली कलश विधि मनरली। नवनि जिनइंद्र जिम तिम अगारी। (अ०) ॥ ॐ ॥ दूहा ॥ ॐ ॥ परमानंद पीयूष रस। न्हवण सुगति सोपान। धरम रूप तरु सींचवा। जलधर धारसमान ॥ १ ॥ पहली पूजा साचवे। श्रावक शुभ परिणाम। शुचि पखाल ननु जिणतणें। करइ सुकृत हित काम ॥ २ ॥

॥ ॐ ॥ अथ विधि (राग सारंग) ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ पूजा सतर प्रकारी। सुण जनकी। (पू०) परमानन्द तिण कल्चोरी सुधारस। तपतबुझीय मेरे तनकी ॥ (पू०) ॥ १ ॥ मनुकुं विलोकि तागि जनन प्रमारजित। करत पखाल सुचि धार घनकी। (पू०) न्हवण प्रथम निज दुजन पुलावन। पंककुंदरप जिम घनकी।। (पू०) ॥२॥ तरणि तारणि नवसिंध तिरणकी। मंजरी संपद फल बरधनकी। शिवपुर पंथ

दिखावण दीपी । धूमरी आपदवेल मरदनकी (पू०) ॥ ३ ॥ सकल कुशल रंग मिल्योरी सुमति संग । जागी सुदिशा सुज्ञ मेरे दिनकी । कहे साधु कीरति सारंग भरकरतां । आसफली मेरे मनकी (पू०) ॥ ४ ॥ ❋ ॥ इति प्रथम न्हवणपूजा ॥ १ ॥ ❋ ॥ पंचामृतसुं न्हवणकीजे (तथा) मावे पांवके अंगूठे जलधार दीजे ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सुंदर अङ्ग लूहणें करी । विंव प्रमार्जी । केसर चंदन मृगमद अगरादिकसें । कचोली भरी । लेकर खमारहे । मुखे० ॥ (रागरामगिरी) गात्र लूहे जिन मन रगङ्गसूं रे । (देवा) सखरसुवूपित वाससुं ॥ वाससुं (हांरे देवा) वा० । गंध कसायसुमेलिये ॥ १ ॥ नन्दन चंदन चंदमेलिये रे (देवा) ॥ नं० ॥ मांहे मृगमद कुंकुम भेलीये ॥ करलीये (हांरे देवा) क० । रय ण पिंगाणि कचोलीये ॥ २ ॥ पग जानु कर खंधे सिरे रे (देवा) भाल कंठ उर उदर न्तरे । दुखहरे (हांरे देवा) सुखकरे । तिलक नवेअंग की जीये ॥ ३ ॥ दूजीपूजा अनुसरे ॥ श्रावक दू० ॥ हरि विरचे जिम सुरगिरे । तिमकरे (हांरे देवा) ति० । जिणपर जनमन रंजीये ॥ गा० ४ ॥ राग ललितमें । दूहा ॥ ❋ ॥ करहु विलेपन सुखसदन । श्री जिनचन्द शरीर । तिलक नवे अंङ्गपूजतां । लहे भवोदधि तीर ॥ १ ॥ मिटे ताप तसु देहको । परम शसिरता संग । चित्तखेद सब उपसमे । सुखमें समर सीरंग ॥ २ ॥

॥ ❋ ॥ अथ विधि (राग ललित) ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ विलेपन कीजे जिनवर अंगे । जिनवर अंग सुगंधे ॥ वि० ॥ कुंकुम चन्दन मृगमद यक्षकर्दम । अगर मिश्रित मनरंगे ॥ वि० ॥ क्रम जानु कर संधे शिर भाल कंठ । उर उदरन्तर संगे । विलुंपति अघमेरो करत विलेपन । तपत बुझति जिम अंगे ॥ वि० २ ॥ नव अंग नव २ तिलक करतही । मिलत नवेनिध चंगइ । कहे साधु तन सुचि करसु ललित पूजा । जे सें गंग तरंगे ॥ वि० ३ ॥ ❋ ॥ इति द्वितीय विलेपन पूजा ॥ २ ॥ ❋ ॥ एकही विलेपन कीजे । नव अंग पूजीये ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ॥ अथ तृतीय वस्त्र युगल पूजा ॥ ॥

॥ ॥ अत्यन्त कोमल सुगंध अमोलक वस्त्र युगल पर । केसरनो माथियो करी । प्रभुजी आगे खमा रहे मुखे इम पढे ॥ ॥

॥ ॥ (दूहा) ॥ वसन युगल उज्जल विमल । आरोपे जिन अंग । लाभ ज्ञान दर्शन लहे । पूजा तृतीय प्रसंग ॥ १ ॥ (राग गोडी) ॥ कमल कोमल घन चन्दन चरचित । सुगंध गंधे अधिवासिया ए ॥ (हांरे) अड चो० ॥ कनक मंडित हिय-लालपल्लव शुचि । वसन युग कंति अधिवासिया ए ॥ (हांरे) अ० ॥ जिनप उत्तम अंगे सुविधि शक्रो यथा । करिय पहिरवाणी ढोइये ए ॥ (हांरे) अ० ॥ पापलूहण अंग लूहणो देवनें । वस्त्रयुग पुंज मल धोइये ए ॥ (हांरे) अ० २ ॥ ॥ इति ॥ ॥

॥ ॥ अथ विधिः (राग वैराडी) ॥ ॥

॥ ॥ देव दुष्य युग पूजा वन्यांहे जगतगुरु । (हे हांए) आगो वन्यांहि जगतगुरु । देव दुख्खहर अब इतनो मांगुं । तुंहीहि सवहि हितु तुंहीहि सुगतिदाता । तिण नमि २ प्रभु जीके चरणे लागूं ॥ दे० १ ॥ कहे साधु तीजी पूजा केवल दंसण नाण । देव दुष्य मिसदेहु उत्तम वागूं । अब ॥ अंजलि पुट सुगुण अमृतपाना । सवराकी दुख संशय धुरम जागूं ॥ दे० ॥ २ ॥ इति तृतीय वस्त्रयुगल पूजा ॥ एकठो वस्त्र युगल चढावे ॥ ॥

॥ ॥ अथ चतुर्थी सुगंधचूर्ण पूजा ॥ ॥

॥ ॥ अगर, चन्दन, कपूर, कुंकुम, कस्तूरीका, चूर्ण करी । कचोली भरी । आगे ऊभा रहे । मुखें इम पढे ॥ (गोडी रागमें । दूहा) ॥ पूजा चतुर्थी इण परे । सुमति सवारे वास । कुमति कुगति दूरे हरे । दहे मोह दुःपास ॥ १ ॥ राग सारंग ॥ ॥ (हां हां रे देवा) बावना चंदन घस कुमकुमा । चूरण विधि विरचै वासए । (हां हां रे देवा) कुसुम चूरण चंदन मृगमदा । कंकोल नणो वधि वासए ॥ (हां०) २ ॥ वास दशोदिश वासतें । पूजे जिनअंग उमंगए ॥ (हां०) ॥ लाभि भवन अधिवासीयो । अनुगामिक गन्ध प्रसंगए ॥ ३ ॥ इति ॥ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधिः (राग पुर्वी गौरी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरे प्रभुजीकी पूजा आनन्द मेले ॥ पू० ॥ वासभवन मोहो सबलोए । संपदा भेलै ॥ पू० १ ॥ सतर प्रकारी पूजा । विजय देवा तत्ताथे ई ॥ वि० ॥ अप्रमत्त गुण तोरा । चरण सेवै ॥ पू० २ ॥ कुंकुम चंदन वासे । पूजीये जिनराजता थेई । चतुरगति दुक्ख गोरी । चतुर्थी धनकि ॥ पू० ॥ ३ ॥ इति चतुर्थी वासक्षेप पूजा ॥ ४ ॥ ❀॥ एकही वासचूर्ण प्रभुजीके बिंब उपर डांटे । मंदिर में चूर्ण उगालै ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गुलाब, केतकी, पांचे तरे का फूल रकेबीमें रक्खी । मुखे इम पढे ॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ मन विकसे तिम विकसतां । पुहप अनेक प्रकार । प्रभु पूजा ए पंचमी । पंचमि गति दातार ॥ १ ॥ ❀ ॥ (राग कामोद) ॥ चंपक केतकी मालती ए । (हां रे अ०) कुंदकिरण मचकुंद । सोवन जाई जूइका । बलल सिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण उवरि धरे ए॥ (हां रे भ०)मुकुलित कुशम अनेक । सिव रमणीसें वर वरे । विध जिन पूज विवेक । वि० । इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि (राग कानरा) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सोहेरी माई वरणें । मन मोहेरी माई वरणें । (अहो वरणें) विविध कुशम जिन चरणें । (अ०) । विकसी हसीव जंपें साहिबकुं । रा ख प्रभू हम सरणें ॥ सो० ॥ १ ॥ पांचमी पूजा कुशम मुकुलितकी (कु०) पंच विषे (हां० पं०) दुख हरणें ॥ सो० ॥ कहे साधु कीरति भगति भगवं तकी । भविक नरा । (हां रे भ०) । सुख करणें ॥ २ ॥ सो० ॥ ❀ ॥ इति पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ पांच जातना पुष्प चढावे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ छठी पुष्पमाला रोहण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नाग· पुन्नाग, दमणो· गुलाब· पाम्रल, मोगरा· सेवनी· चंपेली· मालती (इत्यादि) पंच वरण फूलांनी माला हाथे लेई खडा रहे । (मु खे इम पढे) (दूहा) ॥ छठी पूजा ए छती । महा सुरभि पुष्पमाल । गुण गुंथी थापे गले । जेमटले दुख जाल ॥ १ ॥ (राग रामगिरी गुजरी)

॥ ❀ ॥ नाग पुन्नाग मंदार नवमालिका । मल्लिका सोग पारिव कलीए (भलां पा०) ॥ २ ॥ मरुक दमणक बकुल तिलक वासंतिका । लाल गुलाल पाडल निर्लीए । (भलां पा०) ॥ १ ॥ जासुमणि मोगरा बेउला मालती । पंचवरणे गुंथी मालतीए । (भलां गुं०) हेमाल जिनकंठ पीठे ठवी लह लहे । जाणि संताप सब पालतीए । (भलां०) ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधिः । (राग आसावरी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ देखी दामा कंठ जिन अधिक एधतनंदे । चकोरकुं देखि जिम चंदे । (दे०) ॥ १ ॥ पंचविधि वरणरची कुशमांकी ॥ जेसी रयणाहे (जे०) बजि सुह मंदे (देखी०) ॥ २ ॥ उठी रे तोमर पूजा नवमार धूजे सब अरियण (हां रे स०) होइ तिम वंदे । (दे०) ॥ ३ ॥ कहे साधु कीरत सकल आस्या सुख । भविक भगत (हां रे भ०) । जे जिन वंदे । (दे०) ॥ ४ ॥ इति उठी टोमर फूलमाला पूजा ॥ ६ ॥ एकही प्रभुजीके कंठे फूलमाला चढावे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सप्तमी अंगरचन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंचवरणा फूल केसरसें अंगीरचे । सो हाथे लेई । मुखे इम पढे ॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ केतकी चंपक केवडा । सोले तेम सुगान । चाढो जिम चढता हुवे । सातमी ये सुख सान ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ (राग केदारो गोडी) ॥ ❀ ॥ कुंकुम चरचित विविध पंच वरणक कुशमसुंए ॥ (हां रे अ०) कुंद गुलाबसुं चंपको दमणको जासलुंए ॥ १ ॥ सातमी पूजामें अंगी अलंकावे । अंग आलंक भिसमाननी सुगति आलिंगियेए ॥ २ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि (रागभैरवी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पंचवरणी अंगी रची कुशम जाती । (पं०) । कुंद मचकुंद गुलाब सिरोमणि । कर करणी मोहन जाती । (पं०) ॥ १ ॥ दमणक मरुक पाडल अरविंदो । अंग लई बेकलवानी । पागधि चंपा कल्हार मंदारो । थिग पद इत्त बनी भाती । (पं०) ॥ २ ॥ सुर नर किन्नर रमणि गाती । भेरवी कुगति बनातिदाती । (पं०) ॥ ३ ॥ इति सातमी अंगोरचन पूजा ॥ ७ ॥ सुगंध धूपसें करी आछन्न मसीमें जगवंतके शरीरे अंगी रचे ॥

॥ ❀ ॥ अथ आठमी गंधवटी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ घनसार, अगर, सेल्हारस, प्रमुखसें सुगंध वट्टी करि। जिनेस्वर नें आगे ले खमा रहे ॥ (दूहा) ॥ अगर सेल्हारस सार । सुमती पूजा आठमी । गंधवटी घनसार । लावें जिनतनु भावसुं ॥१॥(राग सोरठ) ॥ ❀ ❀

॥ ❀ ॥ कुंदकिरण शशि ऊजलो जी (देवा) । पावन घस घन सारो जी । सुरभि सिखर मृगनाभिनो जी (देवा) । चुन्नरोहण अधिकारो जी ॥ १ ॥ वस्तु सुगंध जव मोरियो जी (देवा) । अशुभ करम चूरी जे जी । अंगण सुरतरु मोरियो जी (देवा) । तव कुमती जन खीजे जी । (तव सुमती जनरीझे जी) ॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि (राग सामेरी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूजोरी माई जिनवर अंगसुगंधे (जिन० पू०) । गंधवटी घनसार उदारे । गोत्रतीर्थंकर बांधे । (भलां०२) (पू) ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर सेल्हारस । लावे जिन तनु रागे । धारकपूर भाव घन वरषत । सामेरी मति जागे ॥ (भलां २) (पू०) ॥ इति आठमी वरासचूर्णपूजा॥८

॥ ❀ ॥ अथ नवमीध्वज पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवे सधव स्त्री भेली होके ऊजल थाल में । कुंकुमको साथियो करे । अक्षत थाल में धरे । श्रीफल रुपानांणो धरे । धजा थालमें धरि सधव स्त्री माथे रक्खी । गीत गान गावतां । सर्व बाजित्र बाजतां । तीन प्रदक्षिणा देवे । पीछे ध्वजा ऊपरि गुरु पासें वासक्षेप करावे । प्रभु सन्मुख गुहली करे ॥ ऊपरि अक्षतांसें साथियो करे । सुपारी चढावे। मुखे ऐसा कहे ।

॥ ❀ ॥ (दूहा) मोहनध्वज धर मस्तके । सुहव गीत समूल । दीजे तीन प्रदक्षिणा । परसिध नवमी पूज ॥ १ ॥ (रागमेघगोडी) ॥ (वस्तु) सहस जोयण २ हेममय दंड युतपताक पंचवरण । घुमघुमंत घुग्घरीय वाजे । मृदुसमीर लहिके गयण (ल०) । जाण कुमतिदल सयल भाजे ॥ सुरपति जिम विरचे धजाए (हांगवि०) नवमी पूज सुरंग । (न०) तिमपर श्रावक धजवहन । (ति०) आपे दान अभंग । (आ०) १ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधि ॥ (राग नट्टनारायण) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनराज को ध्वजमोहन । ध्वज मोहनारे ध्वजमोहना ॥ (जि०) मोहन सुगुरु अधिवासीयो । कर पंचसबद त्रि प्रदक्षिणा ॥ (क०) सधव वधू सिर सोहना ॥ १ ॥ (जि०) भांतिवसन पंच वरण वन्योरी । विधकरी ध्वजको रोहण ॥ साधु भणति नवमीपूजा नव । पाप नीयांणा खोहणा । शिव मंदिरकुं अधिरोहणा । जन मोह्यो नट्टनारायणा (जि०) ॥ २ ॥ इति नवमी पूजा० ॥ ❀ ॥ एकही ध्वजा चढाई जै ॥

॥ ❀ ॥ अथ दशमी आभरण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पिरोजा, नीलम, लसणिया, मोती माणकसें जड्या । आभरण लेई सुखे इम पढे ॥ ॥ (राग केदारेमें) ॥ (दूहा) ॥ दशमी पूजा आभर ण । रचना यथा अनेक । सुरपति जिम अंगे रचै । तिम श्रावक सुविवेक ॥ १ ॥ शिर सोहे जिनवर तणें । रयण मुगट झलकंति । तिलक भाल अं गद भुजा । श्रवणकुंडल अति भांति ॥ २ ॥ ❀॥(राग अधभास गुंडमल्हार। आशावरी) ॥ ❀ ॥ पाच पीरोजा नीलू लसणिया । मोती माणिक लाल रसणीया । (हीरा सोहैरे) धूनी चूनी पुलकर केतना । जातिरूप सुभग अंक अंजना (मनमोहैरे) ॥ १ ॥ मौलिमुगट रयणे जडयो । काने कुंडल (हां रे) अति झगते जडयो । (नरहारूरे) । (मन वारूरे) ॥ भालतिलक वांहे अंगदा । आभरण दशमी पूजा मुदा । (सुखकारूरे)।(दुखहारूरे)॥२॥

॥ ❀ ॥ अथ विधिः ॥ (राग केदारो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रभु सिरसोहै ॥ मुगटमणि रयणे जडयो । (रय०) । अंगद बाहु तिलक भालस्थल । यहुनीको कोन घड्यो ॥ (प्र०) १ ॥ श्रवण कुं डल शशि तरुण मंडल जीपे । सुरतरुसें अलंकरयो । दुखकेदार चमर सिंहासन । छत्र शिर छवर धरयो । अलंकृत उचितवरयो ॥ २ (प्र०) ॥❀॥ इति दशमी आभरण पूजा ॥ १० ॥ एकही आभरण (तथा) रोकनांणो मंडल चढावे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ इग्यारमी फूलघर पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुगंध पुष्पकरी संयुक्त फुलघर हाथे लेई । सुखे इम पढे ॥ ❀ ॥

(दूहा) ॥ ❋ ॥ फूलगरो अतिसोजनो । फूंदे लहके फूल । महके परिमल फलमहा । इग्यारमी पूज अमूल ॥ १ ॥ ❋ ॥ (राग रामगिरी) ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ कोज अंकोल राय वेलि नवमालिका । कुंद मुचकुंद वर त्रिच कलूए (हां रे अईयो) तिलक दमणक दलं मोगरा परमलं । कोमला पारिध पारुलूए ॥ (हां० अ०) प्रमुख कुशमै रचे त्रिजुवन कुं रुचे । कुशमगेहं विचि तोरणूं ए ॥ (हां० अ०) शुद्ध चंद्रोदयं कुंवका लन्नयं । जालिका गोख चितचोरणूंए । (हां० अ०) ॥ २ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ विधि ॥ (राग रामगिरी) ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ मेरो मन मोह्यो माई री । फूलघर आनंद जीले (फू०) अ सत लसत दाम वघरी मनोहर । देखत तबही सब डुरितखीजे (फू०) ॥ ॥ १ ॥ कुशम मंम्प थंन्न शुद्ध चंद्रोदय । कोरणी चारु विनाण सजे । इ ग्यारमी पूज वर्णहि रामगिरी । विबुध विमान जैसें तिपुरिन्नजे (फू०) ॥ २ मे० ॥ इति इग्यारमी फूलघरपूजा ॥ ११ ॥ एकही फूलघर चढाईजे ।

॥ ❋ ॥ अथ वारमी पुष्पवर्षा पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पंचवर्णफूल गुलाबजल लेई । मुखे इम पढे ॥ (राग मल्हार) ॥ (दूहा) वरषे वारमी पूजमें । कुशम वादलिया फूल । हरण ताप डुःख लोकको । जानुसमा बहुमूल ॥ १ ॥ (राग नीममल्हार) कमखानी जाति॥

॥ ❋ ॥ मेघ वरसे नरी पुष्फवादल करी । जानु परमाण कर कुशम पगरं । पंचवरणे वाण्यो विकचि अनुक्रम चिण्यो । अधोवृंते नहीं पीडपम रं ॥ १ ॥ मे० १ ॥ वासमहके मिले । नमर नमरीमिले । मरस रस रंग ति ण डुख निवारी । जिनप आगे करे सुरप जिम सुखवरे । वारमी पूज ति णपर अगारी ॥ मे० ॥ २ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ विधिः (राग नीममलार) ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुष्फ वादलीया वरसे । सुसमां (अहो०) । योजन अस्तु चिहर वरस गंधोदक । मनुहर जानु समां (पु०) गमन आगमन की पी रनहीं नस्तु । इह जिनको अतिसय सुगुणं । गुंजत २ मधुकर इम पनणें ॥ गुं० ॥ मधुर वचन जिन गुण थुणाइ ॥ २ ॥ कुसुम सुपार सेवा जो करे ।

तसुपीम नही सुम्मणें । (पु०) । समवसरण पंचवरण अधोवृंत । बि
बुध रचे सुमना सुसमा ॥ ३ ॥ वारमी पूज भविक तिम करै । कुशम
विकस हस ऊचरै । तसु भीमबंधन अधरा हुवै । जेकर हिं जे जिननमें
॥ पु० ॥ ४ ॥ ❃ ॥ इति वारमी पुष्पवृष्टी पूजा ॥ एकही फूलनगालै ॥

॥ ❃ ॥ अथ तेरमी अष्ट मंगलीक पूजा ॥ ❃ ॥

॥ ❃ ॥ अष्टमंगलीक लेकर मुखे इम पढै ॥ ❃ ॥ रागवसंत ॥ ❃ ॥
(दूहा) तेरमीपूजा अवसरै । मंगल अष्टविधान । युगति रचै सुमतै स
ही । परमानंद निधान ॥ ❃ ॥ १ ॥ राग वसंत ॥ ❃ ॥ अतुल विमल मि
ल्या । अखंमगुणे भिल्या । शालि रजत तणा तंदुलाए । श्लषण समाजक
विथ पंचवरणक । चंद्रकिरण जैसा ऊजलाए ॥ १ ॥ (अ०) ॥ मेल मंगल
लिखै सयल मंगल आखै । जिनप आगलि सुथांनक धरै ए । तेरमीपू
जा विध तेरमी मन मेरै । अष्टमंगल अष्टसिद्धि करै ए ॥ (अ०) ॥ २ ॥

॥ ❃ ॥ अथ विधिः (राग कल्याण) ॥ ❃ ॥

॥ ❃ ॥ हांहो पुजावणी ते रसमें (हांहो रसमें ३) ॥ ते० ॥ अष्टमं
गल लिख कुशल निधान । तेज तरुणके रसमें ॥ पू० ॥ १ ॥ दप्पण भ
द्रासन नंद्यावर्त्त पूर्णकुंभ । मत्स्ययुग श्रीवत्स तसुमें । वर्द्धमान स्वस्तिक पूजा
मंगलकी । आनंद कल्याण सुख रसमें ॥ २ ॥ (पू०) ॥ ❃ ॥
इति तेरमी पूजा ॥ १३ ॥ ❃ ॥ अष्ट मंगलीक चढावै ॥ ❃ ॥

॥ ❃ ॥ अथ चौदमी धूप पूजा ॥ ❃ ॥

॥❃॥ धूप रकेबीमें धर मुखे इम पढै ॥❃॥ (दूहा) ॥❃ ॥ गंधवटी मृगमद
अगर । सेल्हारस घनसार । धरि प्रभु आगलि धूपणा । चवदमी पूजाचार
॥ १ ॥ (राग वेलावल) ॥❃॥ कृष्णागर कपूरचूर । सोगंध पंचेपूर । कुंदरुक
सेल्हारस सार । गंधवटी घनसार ॥ १ ॥ ❃ ॥ गंधवटी घनसार चंदन मृग
मदारस भेलि ये । श्रीवास धूप दशांग अंबर सुरभि बहु द्रव्य मेलिये ।
वेरुलिय दंड कनक मंडित धूप धाणो कर धरै । भववृत्तिधूपकरंति भोगं
रोग सोग अशुभ हरै ॥ २ ॥ ❃ ॥ ॥ ❃ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधिः ॥ (राग मालवी गोडी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सब अरति मथन मुदार धूपं। करति गंध रसालरे। (देवा क०) धाम धूमा वलिय धूसर। कलुप पातिक गालरे (देवा)॥ १ ॥ नु ऊर्ध्वगति सूचंति भविकं। मघमघै कर नालरे (देवा) चवदमी वामांग पूजा। दीये रयण विशालरे। आरती मंगल मालरे। मालवी गोडी तालरे (देवा० स०)॥ इति चौदमी धूप पूजा ॥ १४ ॥ एकही धूप धाणो प्रभूके वाये अंग धरी खेईजे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ १५ गीत गान पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (प्रभुजीके मुख आगे मधुर स्वरे गुण ग्राम गावे) ॥ ❀ ॥ (दूहा) कंठ भले आलाप कर। गावो जिन गुण गीत। भावो अधिकी भावना। पनरमी पूजा मीत ॥ १ ॥ (श्रीरागे आर्या) यछ्दनंत केवल मनंत फलमस्ति जैन गुण गानं। गुण वर्णतान वाद्यै। मात्रा भाषा लये युक्तं ॥ १ ॥ सप्तस्वर संगीतैः। स्थानैर्जयतादि ताल करणैश्च। चंचुर चारी चारी। गीतं गानं सुपीयूषं ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ विधिः ॥ (श्रीराग) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन गुणगानं श्रुत अमृतं। तारमंद्रादि अनाहत तानं। केवल जिम तिम फल अमृतं (जि०)॥ १ ॥ विबुध कुमार कुमरि आलापे सुरज उपांग नाद जनितं (जि०)। पाठ प्रबंध धृयो मतिमानं। आयति छंद सुरति सुमतं (जि०) ॥ २ ॥ सबद समान रुच्यो त्रिभुवनकुं। सुरनर गावे जिन चरितं। सप्तस्वर मान शिव श्रीगीतं। पनरमी पूज हरे दुरितं र। (जि०)॥ ३ ॥ ❀ ॥ इति पनरमी गीत पूजा ॥ १५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समान अवस्थावाली मघव स्त्रीयां (वा) कुमरयां भेली होके प्रभूके सन्मुख संका कंखा रहत नाटक करे। स्त्रीयांका जोग नवणे (तो) समान अवस्थावाला पुरुष नाटक करे। (वा) कुमर कुमरयां मिलके नाटक करे नाटक करणेमें केई जीव तीर्थंकर गोत्रबांधाहै। नाटक करतां मुखे इम पढे ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ कर जोडी नाटक करे। सजि सुंदर सिणगार।

भव नाटक ते नविभमें । सोलमी पूजा सार ॥ १ ॥ (राग सुद्ध नट्ट) (काव्य) भावादि प्यमणासु चारु चरणा संपुन्न चंदानना । सप्पिम्मा सम रूव वेसवयसो मत्तेभ कुंभत्थणा । लावणा सगुणापि कस्सरवई रागाइ आलावणा । कुम्मारी कुमरा विजै न पुरउ नच्चति सिंगारणा ॥ १ ॥ (गद्यं) तएणंते अठसयं कुमारि कुमरीउ । सूरियाभेणं देवेणं संदिठा । रंग मंरूवे पविठा । जिणनमंता । गायंता । वायंता । नच्चंतेत्ति ॥ २ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ बिधि (राग नट्ट त्रिगुण) ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नाचंती कुम्मार कुमरी द्रागरूदि तत्ता थेइय (अ०) ॥ द्रागरू दि २ कि थौंगि २ न । मुखें तत्ता थेइय (अ० १ ना०) वेणु बीणा मुरज वाजै । सोलही सिणगार साजै । तनन्ननन्नेईय (अइयो) ॥ घ्रणण घ्रण णण घुग्वरु घमकै । रणणणणेईय (अ० २ ना०) कसंती कंचूकी तरु णी । मंजरी फूंकार करणी । सोभंती कुमरीय (अइयो) हस्त कंहा वा दि भावै । ददन्ती भमरीय (अ० ना०) ॥ ३ ॥ सोलमी नाटक तणी । सूरीयाभे रावण कीनी ॥ सुगंध तत्तात्थेईय (अ०) जिमप भगतें भविक लीणा । आणंद तत्तात्थेईय (अ० ना०) ॥ ४ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

इति सोलमी नाटिक पूजा ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ सतरमी बाजित्र पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सतरमी पूजामें सब जातिका बाजित्र वजावे । मुखे इम पढै ॥ तत घन सुखिरै आनिधै । बाजित्र चौविध वाय । भगत भली भगवंतनी । सतरमी ए सुखदाय ॥ १ ॥ (गाहा) सुरमद्दल कंसालो । महुयर मद्दल सुवज्जए पणवो । सुरनारि नंदितूरो । पभणइ तूं नंद जिणनाह ॥ १ ॥ (राग मधुमाधवी) ॥ तूं नन्दि आनन्दि बोलत नन्दी । चरण कमल जंतु जगत्रय वन्दी ॥ (तूं०) ॥ ज्ञाननिर्मल वावन सुखवेदी । तिवलबोलै रंग अति हि आनन्दी । (तूं०) ॥ १ ॥ भेरी गयणवाजंती कुमति ताजंती । सेवै जैन जेणावंती । जैन शाशन जइवंत नंदंती ॥ उदयसिंघ परि परिय वदंती ॥ (तूं०) ॥ २ ॥ सेवभविक मधुमाधन फेरी । भवनी फेरी नप्पजणंती । कहै साधु सतरमी पूजा बाजित्रसव । मंगल मधुर धुनिकर कहंती (तूं०) ३ ॥ ❋ ॥

॥ ❁ ॥ अथ कलश पूजा (राग धन्यासरी) ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ भवितूं भण गुण जिनके सब दिन । तेजतरण मुखराजे । (ते०) कवितशतक आठ थुणत सक्रस्तव । थुय २ रंगे हमगाजे । (भवि० १) अ णहल पुर शांति शिव सुख दाई । नवनिधि सिध आवाजे । सतरसुपूज सुवि ध श्रावक की । भणीमें भगति हितकाजे (भ० २) श्रीजिनचंद्रसूरि खर तरपति । धरम वचन तसु राजे । संवत सोल अढार श्रावणधुरि । पंचमि दिवस समाजे (भ० ३) दयाकलशगुरु अमरमाणिक्यवर । तासुपसाये सु विध हुइ गाजे ॥ कहे साधु कीरत करत जिन संस्तव । सब लीला सुख साजे (भवि० ४) ॥ ❁ ॥ इति सतरभेदी पूजा समाप्ता ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ आरतीकरण विधि लि० ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ पूजाकियां पीछे । सब कपमा । पाघ प्रमुख पहरके ॥ उत्तरास ण करे ॥ पीछे प्रभू सन्मुख । अन्तर पट करी । आपके निलाडे कुंकूंको ति लक करे । पीछे पट दूरि करि । रकेबीमें साथियो करे । मांहि रूपाना णो । चावल सुपारी धरे । पीछे आरती दीपकसुं संजोयनें प्रभूके सन्मुख दक्षिण आवर्त्तसुं । वाजित्र सब बाजतां । आरती करे । मुखे पढे ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ आरती लि० ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ जेजे आरती शांति तुह्मारी । तोरा चरण कमलकी में जाऊं ब लिहारी ॥ (जेजे०) १ ॥ विश्वसेन अचिराजीके नंदा । शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ (जेजे० २) ॥ चालीस धनुष सोवनमें काया । मृगलंछण प्रभु चरण सुहाया ॥ (जे०) ॥ ३ ॥ चक्रवर्त्ति प्रभु पंचम सोहे । सोलम जिन वर सुर नर मोहे ॥ (जे०) ४ ॥ मंगल आरती जोरहि कीजे । जन्म जन्म को लाहो लीजे ॥ (जे०) ॥ करजोमी सेवक गुण गावे । सो नर नारी अमरपद पावे (जे०) ५ ॥ ❁ ॥ इति श्री आरती संपूर्णम् ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ श्रीसिद्धचक्रजीकी बमी पूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ नवपद जीकी महिमा संयुक्त पूजा लिखिये हे ॥ ❁ ॥ (दूहा) ॥ ❁ ॥ परम मंत्र प्रणमीकरी । तासधरी उर ध्यान । अरिहंतपद पूजा क रो । निज २ शक्ति प्रमाण ॥ १ ॥ ❁ ॥ (काव्य) उप्पन्न सन्नाण महो

॥ ❀ ॥ अथ कलश पूजा (राग धन्यासरी) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भवितूं भण गुण जिनके सब दिन । तेजतरण सुखराजे । (ते॰) कवितशतक आठ थुणत सक्रस्तव । थुय २ रंगै हमगाजे । (भवि॰ १) अणहल पुर शांति शिव सुख दाई । नवनिधि सिध आवाजै । सतरसुपूज सुविध श्रावक की । भणीमें भगति हितकाजे (भ॰ २) श्रीजिनचंद्रसूरि खरतरपति । धरम वचन तसु राजे । संवत सोल अढार श्रावणधुरि । पंचमि दिवस समाजे (भ॰ ३) दयाकलशगुरु अमरमाणिक्यवर । तासुपसाये सुविध हुइ गाजे ॥ कहै साधु कीरत करत जिन संस्तव । सव लीला सुख साजै (भवि॰ ४) ॥ ❀ ॥ इति सतरभेदी पूजा समाप्ता ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आरतीकरण विधि लि॰ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूजाकियां पीछै । सब कपभा । पाव प्रमुख पहरके ॥ उत्तरासण करै ॥ पीछै प्रभू सन्मुख । अन्तर पट करी । आपके निलाडे कुंकूंको तिलक करै । पीछे पट दूरि करि । रकेबीमें साथियो करे । मांहि रूपानाणो । चावल सुपारी धरे । पीछे आरती दीपकसुं संजोयनें प्रभूके सन्मुख दक्षिण आवर्त्तसुं । वाजित्र सब वाजतां । आरती करै । मुखें पढे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आरती लि॰ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जैजै आरती शांति तुह्मारी । तोरा चरण कमलकी में जाऊं बलिहारी ॥ (जैजै॰) १ ॥ विश्वसेन अचिराजीके नंदा । शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ (जैजै॰ २) ॥ चालीस धनुष सोवनमें काया । मृगलंछण प्रभु चरण सुहाया ॥ (जै॰) ॥ ३ ॥ चक्रवर्त्ति प्रभु पंचम सोहै । सोलम जिनवर सुर नर मोहै ॥ (जै॰) ४ ॥ मंगल आरती भोरहि कीजे । जन्म जन्म को लाहो लीजै ॥ (जै॰) ॥ करजोभी सेवक गुण गावै । सो नर नारी अमरपद पावे (जै॰) ५ ॥ ❀ ॥ इति श्री आरती संपूर्णम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीसिद्धचक्रजीकी वभी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नवपद जीकी महिमा संयुक्त पूजा लिखिये हे ॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ परम मंत्र प्रणमीकरो । तासधरी उर ध्यान । अरिहंतपद पूजा करो । निज २ सक्ति प्रमाण ॥ १ ॥ ❀ ॥ (काव्य) उप्पन्न सन्नाण महो

येरे । भेद छेद करि आतमा । अरिहंत रूपी थायेरे ॥ १२ ॥ वीर जिणे सर उपदिसें । सांभल जो चितलाईरे । आतम ध्याने आतमा । रुद्धि मिले सब आईरे । (वी०) ॥ १३ ॥ ❋ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने । अनंतानंत ज्ञानशक्तये । जन्म जरा मृत्यु, निवारणाय । श्रीम त्सिद्धचक्राय पंचामृतं १ । चंदनं २ । पुष्पं ३ । धूपं ४ । दीपं ५ । अक्षतं ६ । नैवेद्यं ७ । फलं ८ । वस्त्रं । वासं । ययामहे स्वाहा ॥ ❋ ॥ इति प्रथमपदे श्री अरिहंतस्य कलशपूजा ॥ १ ॥ ❋ ॥　　　　॥ ❋ ॥　　　　॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ २ श्रीसिद्धपदकी पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) दूजी पूजा सिद्ध की । कीजै दिल खुसियाल । अशुभ करम दूरे टलै । फलै मनोरथ माल ॥ ❋ ॥ (काव्य) सिद्धाण माणंद रमालयाणं । नमो नमो णंत चउक्कयाणं । समग्ग कम्मक्खय कार गाणं । जम्मं जरा दुक्ख निवारगाणं ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म्म क्षयें पार पाम्या । जरा जन्म मरणादि भय जेणवाम्या । निरावरणजे आत्म रूपै प्रसिद्धा । थया पार पामी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १५ ॥ त्रिभागोनदेहा वगाहात्मदेशा । रह्या ज्ञानमय जाति वर्णादिलेशा । सदानंद सौख्याश्रिता जोतिरूपा । अनाबाध अपुनर्भवादी स्वरूपा ॥ १६ ॥ ❋ ॥ सकल कर म मलक्षय करी । पूरण शुद्ध स्वरूपो जी । अव्याबाध प्रभुता मयी । आ तम संपति भूपो जी । (उल्लालो) जेभूप आतम सहज संपति शक्ति व्यक्ति पणें करी । स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल भावे गुण अनंता आदरी । स्व स्वभाव गुण पर्याय परणति सिद्ध साधन परभणी । मुनिराज मानसर हंस सम वर नमो सिद्ध महागुणी ॥ १६ ॥ ❋ ॥ (ढाल) ॥ ❋ ॥ समय पए संतर अणफरसी । चरम तिभाग विशेस । अवगाहन लहीजे शिव पुहता सिद्ध नमो ते असेसरे ॥ १७ ॥ (भ० सि०) पूरव प्रयोगनें गति परिणामे । बंधन छेद असंग । समय एक ऊरधगति जेहनी । ते सिद्ध प्रणमों रंगरे ॥ १८ ॥ (भ० सि०) निरमल सिद्ध सिलानें ऊपरि । जोयण एक लोकंत । सादि अनंत तिहां थिति जेहनी । ते सिद्ध प्रणमो संतरे ॥ १९ ॥ (भ० सि०) जाणें पिण न सकें कही पुरगुण । प्राकृत तिम गुणजास ।

थैरे । भेद छेद करि आतमा । अरिहंत रूपी थायैरे ॥ १२ ॥ वीर जिणे सर उपदिसैं । सांभल जो चितलाईरे । आतम ध्याने आतमा । ऋद्धि मिलै सब आईरे । (वी०) ॥ १३ ॥ ❋ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने । अनंतानंत ज्ञानशक्तये । जन्म जरा मृत्यु, निवारणाय । श्रीमत्सिद्धचक्राय पंचामृतं १ । चंदनं २ । पुष्पं ३ । धूपं ४ । दीपं ५ । अक्षतं ६ । नैवेद्यं ७ । फलं ८ । वस्त्रं । वासं । यजामहे स्वाहा ॥ ❋ ॥ इति प्रथमपदे श्री अरिहंतस्य कलशपूजा ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ २ श्रीसिद्धपदकी पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) दूजी पूजा सिद्ध की । कीजै दिल खुसियाल । अशुभ करम दूरै टलै । फलै मनोरथ माल ॥ ❋ ॥ (काव्य) सिद्धाण माणंद रमालयाणं । नमो नमो णंत चउक्कयाणं । समग्ग कम्मक्खय कारगाणं । जम्मं जरा दुक्ख निवारगाणं ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म क्षयें पार पाम्या । जरा जन्म मरणादि भय जेणवाम्या । निरावरणजे आतम रूपै प्रसिद्धा । थया पार पामी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १५ ॥ त्रिभागोनदेहा वगाहात्मदेशा । रह्या ज्ञानमय जाति वर्णादिलेशा । सदानंद सौख्याश्रिता जोतिरूपा । अनाबाध अपुनर्भवादी स्वरूपा ॥ १६ ॥ ❋ ॥ सकल करम मलक्षय करी । पूरण शुद्ध स्वरूपो जी । अव्याबाध प्रभुता मयी । आतम संपति भूपो जी । (उल्लालो) जेभूप आतम सहज संपति शक्ति व्यक्ति पणें करी । स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल भावै गुण अनंता आदरी । स्व स्वभाव गुण पर्याय परणति सिद्ध साधन परभणी । मुनिराज मानसर हंस सम वड नमो सिद्ध महागुणी ॥ १६ ॥ ❋ ॥ (ढाल) ॥ ❋ ॥ समय पए संतर अणफरसी । चरम तिभाग विशेस । अवगाहन लहीजे शिव पुहता सिद्ध नमो ते असेसरे ॥ १७ ॥ (भ० सि०) पूरव प्रयोगनें गति परिणामे । बंधन छेद असंग । समय एक ऊरधगति जेहनी । ते सिद्ध प्रणमों रंगरे ॥ १८ ॥ (भ० सि०) निरमल सिद्ध सिलानें ऊपरि । जोयण एक लोकंत । सादि अनंत तिहां थिति जेहनी । ते सिद्ध प्रणमो संतरे ॥ १९ ॥ (भ० सि०) जाणें पिण न सके कही पुरगुण । प्राकृत तिम गुणजास ।

येरे । भेद भेद करि आतमा । अरिहंत रूपी थायेरे ॥ १२ ॥ वीर जिणे सर उपदिसें । सांभल जो चितलाईरे । आतम ध्याने आतमा । रुद्धि मिलै सब आईरे । (वी०) ॥ १३ ॥ ❋ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने । अनंतानंत ज्ञानशक्तये । जन्म जरा मृत्यु, निवारणाय । श्रीम त्सिद्धचकाय पंचामृतं १ । चंदनं २ । पुष्पं ३ । धूपं ४ । दीपं ५ । अक्षतं ६ । नैवेद्यं ७ । फलं ८ । वस्त्रं । वासं । ययामहे स्वाहा ॥ ❋ ॥ इति प्रथमपदे श्री अरिहंतस्य कलशपूजा ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ २ श्रीसिद्धपदकी पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) दूजी पूजा सिद्ध की । कीजै दिल खुसियाल । अशुभ करम दूरे टलै । फलै मनोरथ माल ॥ ❋ ॥ (काव्य) सिद्धाण माणंद रमालयाणं । नमो नमो णंत चउक्कयाणं । समग्ग कम्मक्खय कार गाणं । जम्मं जरा दुक्ख निवारगाणं ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म्म क्षये पार पाम्या । जरा जन्म मरणादि भय जेणवाम्या । निरावरणजे आत्म रूपै प्रसिद्धा । थया पार पामी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १५ ॥ त्रिभागोनदेहा वगाहात्मदेशा । रह्या ज्ञानमय जाति वर्णादिलेशा । सदानंद सौख्याश्रिता जोतिरूपा । अनाबाध अपुनर्भवादी स्वरूपा ॥ १६ ॥ ❋ ॥ सकल कर म मलक्षय करी । पूरण शुद्ध स्वरूपो जी । अव्याबाध प्रभुता मयी । आ तम संपति भूपो जी । (उल्लालो) जेभूप आतम सहज संपति शक्ति व्यक्ति पणें करी । स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल भावे गुण अनंता आदरी । स्व स्वभाव गुण पर्याय परणति सिद्ध साधन परभणी । मुनिराज मानसर हंस सम वरु नमो सिद्ध महागुणी ॥ १६ ॥ ❋ ॥ (ढाल) ॥ ❋ ॥ समय पए संतर अणफरसी । चरम तिभाग विशेम । अवगाहन लहीजे शिव पुहता सिद्ध नमो ते असेसरे ॥ १७ ॥ (भ०सि०) पूरव प्रयोगनें गति परिणामे । बंधन छेद असंग । समय एक ऊरधगति जेहनी । ते सिद्ध प्रणमों रंगरे ॥ १८ ॥ (भ० सि०) निरमल सिद्ध सिलानें ऊपरि । जोयण एक लोकं त । सादि अनंत तिहां थिति जेहनी । ते सिद्ध प्रणमो संतरे ॥ १९ ॥ (भ० सि०) जाणें पिण न सके कही पुरगुण । प्राकृत तिम गुणजास ।

येरे । भेद भेद करि आतमा । अरिहंत रूपी थायेरे ॥ १२ ॥ बीर जिणेसर उपदिसैं । सांभल जो चितलाईरे । आतम ध्याने आतमा । ऋद्धि मिलै सब आईरे । (बी०) ॥ १३ ॥ ❋ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने । अनंतानंत ज्ञानशक्तये । जन्म जरा मृत्यु, निवारणाय । श्रीम त्सिद्धचकाय पंचामृतं १ । चंदनं २ । पुष्पं ३ । धूपं ४ । दीपं ५ । अक्षतं ६ । नैवेद्यं ७ । फलं ८ । वस्त्रं । वासं । ययामहे स्वाहा ॥ ❋ ॥ इति प्रथमपदे श्री अरिहंतस्य कलशपूजा ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ २ श्रीसिद्धपदकी पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) दूजी पूजा सिद्ध की । कीजै दिल खुसियाल । अशुभ करम दूरै टलै । फलै मनोरथ माल ॥ ❋ ॥ (काव्य) सिद्धाण माणंद रमालयाणं । नमो नमो णंत चउक्कयाणं । समग्ग कम्मक्खय कारगाणं । जम्मं जरा दुक्ख निवारगाणं ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म्म क्षयें पार पाम्या । जरा जन्म मरणादि भय जेणवाम्या । निरावरणजे आतम रूपै प्रसिद्धा । थया पार पामी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १५ ॥ त्रिभागोनदेहा वगाहात्मदेशा । रह्या ज्ञानमय जाति वर्णादिलेशा । सदानंद सौख्याश्रिता जोतिरूपा । अनाबाध अपुनर्भवादी स्वरूपा ॥ १६ ॥ ❋ ॥ सकल करम मलक्षय करी । पूरण शुद्ध स्वरूपो जी । अव्याबाध प्रभुता मयी । आतम संपति भूपो जी । (उल्लालो) जेभूप आतम सहज संपति शक्ति व्यक्ति पणें करी । स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल भावे गुण अनंता आदरी । स्व स्वभाव गुण पर्याय परणति सिद्ध साधन परभणी । मुनिराज मानसर हंस सम वर नमो सिद्ध महागुणी ॥ १६ ॥ ❋ ॥ (ढाल) ॥ ❋ ॥ समय पए संतर अणफरसी । चरम तिभाग विशेस । अवगाहन लहीजे शिव पुहता सिद्ध नमो ते असेसरे ॥ १७ ॥ (भ० सि०) पूरब प्रयोगनें गति परिणामे । बंधन छेद असंग । समय एक ऊरधगति जेहनी । ते सिद्ध प्रणमों रंगरे ॥ १८ ॥ (भ० सि०) निरमल सिद्ध सिलानें ऊपरि । जोयण एक लोकंत । सादि अनंत तिहां थिति जेहनी । ते सिद्ध प्रणमो संतरे ॥ १९ ॥ (भ० सि०) जाणें पिण न सके कही पुरगुण । प्राकृत तिम गुणजास ।

थ प्रगट नपटुते । आचारज चिरंजीवोरे (ज० सि०) ३०॥ ❁ ॥ (ढाल) ॥ ❁ ॥ ध्याता आचारज जला । महामंत्र सुज ध्यानीरे । पंच प्रस्थानें आतमा । आचारज होइ प्राणीरे (वी०) ३१ ॥ ॐ ह्रीं० ॥ ❁ ॥
इति तृतीय श्री आचार्यपद कलश पूजा (३) ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ चौथी पाठक पद पूजा लि० ॥ ❁ ॥

॥❁॥ (दूहा) गुण अनेक जगजेहना । सुंदर सोजित गात्र । जव झाया पद अरचियै । अनुजव रसनो पात्र॥१॥(काव्य)सुत्तत्थ वित्थारण तप्पराणं । नमो २ वायग कुंजराणं । गणस्स संधारण सायराणं । सव्वप्पणाव ज्जिय मछराणं ॥ १ ॥ नहीं सूरि पिण सुरि गुणनें सुहाया । नमुं वाचका त्यक्त मद मोह माया । वली द्वादशांगादि सूत्रार्थ दानें । जिके सावधानें निरुद्वाजिधांनें ॥ २ ॥ धरे पंचनें वर्ग वर्गित गुणौघा । प्रवादि द्विपोछेदनेंतुल्य सिंघा । गुणी गछ संधारणें स्थंज पूता । नपाध्याय ते वंदिइं चितप्रजूता ॥ ३ ॥ ❁ ॥ (ढाल) ❁ ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ । अज्जव मद्दव जुत्ताजी । सचंसोयं अकिंचणा । तव संयम गुण रत्ताजी । (नल्लालो) जेरम्या ब्रह्म सुगुप्त गुप्ता सुमति सुमता श्रुतधरा । स्याद्वादवादइं तत्वसाधक आत्मपर विजजनकरा । जवजीरु साधन धीर शासन वहन धोरी मुनिवरा । सिद्धांत वायन दानसमरथ नमो पाठक पदधरा ॥ ३३ ॥ ❁ ॥ (ढाल) ॥ ❁ ॥ द्वादश अंग सिझायकरै जे । पारग धारग तास । सूत्र अरथ विस्तार रसिकते । नमो नवझाय नल्लासरे ॥ (ज०सि०) ॥ ३४ ॥ अर्थ सूत्रनें दान विजागे । आचारज नवझाय । जवत्रिणहे जेलहै सिवसंपद । नमीयै ते सुपसायरे (ज०) ॥३५॥ मूरखशिष्य निपजाये जेप्रजु । पाहण पल्लव आणें । ते नवझाय सकल जन पूजित । सूत्र अरथ सविजाणेंरे ॥ (ज०सि०) ॥ ३६ ॥ राजकुमर सरिखा गणचिंतक । आचारज पदयोग । जे नवझाय सदा ते नमतां । नावे जव जय सोगरे ॥ (ज० सि०) ३७ ॥ बावना चंदन रस सम वयणें । अहित ताप सवि टाले । ते नवझाय नमी जे जेवाले । जिनशासन अजुवालेरे ॥ (ज०सि०) ॥ ३८ ॥ ❁ ॥

(ढाल) ॥ ❀ ॥ तपसिझायें रत सदा । द्वादश अंगनो ध्यातारे । उपाध्याय ते आतमा । जगबंधव जगभ्रातारे ॥ (वी० तु०) ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं० ॥ इति चोथे पदे श्रीपाठकजीकी कलश पूजा सं० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पांचमी साधू पदपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) मोक्षमारग साधन भणी । सावधान थया जेह । ते मुनिवर पद वंदतां । निरमल थायै देह ॥ १ ॥ (काव्य) साहूण संसाहिय संयमाणं । नमो २ शुद्ध दया दमाणं । तिगुत्त गुत्ताण समाहियाणं । मुणीण माणंद पय ट्ठियाणं ॥ ४० ॥ करे सेवना सूरि वायग गणीनी । करुं वर्णना तेहनी सी मुणीनी । समेता सदा पंचसुमती त्रिगुप्ता । त्रिगुप्ते नहीं कांमभोगेषु लिप्ता ॥ ४१ ॥ वली बाह्य अभ्यं तरें ग्रंथटाली । हुई मुक्तिनें जोग चारित्र पाली । शुभाष्टांग योगें रमै चित्तवाली । नमुं साधुनें तेह निज पाप टाली ॥ ४२ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ सकल विषय विष वारिनें । निकामी निस्संगी जी । भव दव ताप समावता । आतम साधन रंगी जी (उल्लालो) । जेरम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्म्मम निर्म्मदा । काउसग्ग मुद्रा धार आसन ध्यान अभ्यासी सदा । तप तेज दीपे कर्म्म जीपे नेव छीपे परभणी । मुनिराज करुणासिंधु त्रिभुवन बंधु प्रणमो हित भणी ॥ ४३ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ जिम तरु फूलै भमरो बेसै । पीड़ा तसु न उपाय । लेई रस आतम संतोषें । तिम मुनि गोचरी जायरे ॥ (भ० सि०) ॥ ४४ ॥ पांच इंद्रीनें जेनित जीपे । षट काया प्रतिपाल । संयम सतर प्रकार आराधे । वंदूं दीन दयालरे (भ० सि०) ॥ ४५ ॥ अढार सहस शीलांगना धोरी । अचल आचार चरित्र । मुनिमहंत जयणायुत वंदी । कीजे जनम पवित्ररे (भ० सि०) ॥ ४६ ॥ नवविध ब्रह्मगुपति जेपाले । बारह विह तपसूरा । एहवा मुनि नमींये जो प्रगटे । पूरब पुन्य अंकूरारे (भ० सि०) ॥ ४७ ॥ सोनातणी परे परिक्षा दीसे । दिन २ चढते वानें । संयम खपकरता मुनि नामिइं । देश काल अनुमानरे ॥ (भ० सि०) ॥ ४८ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ अप्रमत्त जेनित रहै । नवि हरखे नवि सोचैरे ।

साधु सूधा ते आतमा। स्युं मुंमे स्युं लोचैरे॥ (बी०)॥ ४९॥ ॐ ह्रीं०। इति पांचमे पदे श्रीसाधुजीकी कलश पूजा॥ ४०॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ छठी दर्शन पद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) जिनवर भाषित शुद्धनय। तत्वतणी परतीत। ते सम्यग् दरसन सदा। आदरियै शुभ रीत॥ १॥ ❀ ॥ (काव्य) जिणुत्त तत्ते रुइ लक्खणस्स। नमो २ निम्मल दंसणस्स। मिछत्त नासाइ समुग्गमस्स। मूलस्स सद्धम्म महा दुमस्स॥ विपर्या सहो वासना रूप मिथ्या। टलै जे अनादी अछै जे कुपथ्या। जिनोक्तै हुई सहज थी शुद्धध्यानं। कहीइं दर्शनं तेह परमं निधानं॥ ५०॥ विना जेहथी ज्ञान मज्ञान रूपं। चरित्रं विचित्रं भवारण्य कूपं। प्रकृति सातनें उपसमइ क्षय तेह होवै। तिहां आप रूपें सदा आप जोवै॥ ५१॥ ❀ ॥ (ढाल) ❀ ॥ सम्यग् दरसन गुण नमो। तत्त्व प्रतीत सरूपी जी। जसु निरधार स्वभाव छे। चेतन गुण जे अरूपी जी (चाल) जे अनूप श्रद्धा धरम प्रगटै सयल पर ईहा टलै। निज शुद्ध सत्ता भाव प्रगटै अनुभव करुणा ऊछलै। बहुमान परिणिति वस्तुतत्वें अहव सुरकारण पणें। निज साध्यदृष्टै सरब करणी तत्वता संपति गिणें॥ ५२॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ शुद्ध देव गुरु धर्म्म परिक्षा। सद्दहणा परिणाम। जेह पामी जै तेह नमी जै। सम्यग् दर्शन नामरे (भ० सि०) ५३॥ मल उपशम क्षय उपशम जेह थी। जे होइ त्रिविध अभंग। सम्यग्दर्शन तेह नमीजे। जिन धरमें दृढ रंग रे॥ (भ० सि०) ५४॥ पांचवार उपशम लही जे। क्षय उपशमीय असंख। एकवार क्षायक ते सम्यक्। दर्शन नमीइं असंख रे (भ० सि०) ५५॥ जेविण नाण प्रमाण न होवै। चारित्रतरु नवि फलिउ। सुख निरवाण न जे विण लहिइं। समकित दर्शन बली उरे॥ (भ० सि०)॥ ५६॥ सरुसठ बोले जे अलंकरिउ। ज्ञान चारित्रनुं मूल। समकित दर्शन ते नितप्रणमुं। सिवपंथनुं अनुकूलरे॥ (भ० सि०)॥५७॥❀॥ सम संवेगादिक गुणा खय उपशम जे आवेरे। दर्शन तेहिज आतमा। स्युं होय नाम धरावेरे॥ (वी०तुमे०)॥५८॥ (ॐ ह्रीं०)॥❀॥ इति छठे दर्शनपद कलश पूजा॥६॥

॥ ❀ ॥ अथ ७ में श्री ज्ञानपद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ सप्तम पद श्री ज्ञाननो । सिद्ध चक्र तप मांहि। आराधी जै सुभमनें । दिन २ अधिक उछाह ॥ १ ॥ (काव्य) अन्नाण सम्मोह तमो हरस्स । नमो २ नाण दिवायरस्स । पंचप्पयारस्सुवगारगस्स । सत्ताण सव्वत्थ पयासगस्स ॥ होई जेहथी ज्ञानशुद्ध प्रबोधै । यथा वर्ण नासे विचित्रा विबोधै । तिणें जाणीइं वस्तु षद्द्रव्य भावा। न होवै विकछा निजेछा स्वभावा ॥ ५९ ॥ होइं पंचमत्यादि सुग्यान भेदे । गुरुपासथी योग्यता तेह वेदइं । वली ज्ञेय हेया उपादेय रूपे। लहै चित्तमां जेमध्यान प्रदीपे ॥ ६० ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ भव्य नमो गुण ज्ञाननें। स्वपर प्रकाशक भावैं जी । परयाय धरम अनंतता । भेदा भेद स्वभावैं जी ॥ (चाल) ॥ जे मोख्य परणति सकल ज्ञायक बोध वास विलासता । मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्ध साधन लंछना । स्याद्वाद शंगी तत्वरंगी प्रथम भेद अभेदता । सविकल्पनें अविकल्प वस्तु सकल संसय छेदता ॥ ६१ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ भक्ष अभक्षन जे विण लहीयै। पेय अपेय विचार । कृत्य अकृत्य न जे विण लहीयै । ज्ञानते सकल आधाररे ॥ (भ०) ॥ ६२ ॥ प्रथम ज्ञाननें पछे अहिंसा । श्रीसिद्धाते भाख्युं । ज्ञाननें वंदो ज्ञान मनिंदो । ज्ञानीयै शिवसुख चाख्युं रे ॥ (भ० सि०) ॥ ६३ ॥ सकल क्रियानुं मूलते श्रद्धा । तेहनुं मूलजे कहीइं। तेह ज्ञान नित नित वंदीजे । ते विण कहो किम रहीइंरे॥ (भ० ६४)॥ पांच ज्ञान मांहें जेह सदागम । स्वपर प्रकाशक तेह । दीपकपरें त्रिभुवन उपगारी । वलि जिम रवि शशि मेहरे ॥ (भ० सि०) ॥ ६५ ॥ लोक उरध अध तिर्यग् जोतिष । वेमानिकनें सिद्धि । लोक अलोक प्रगट सवि जेहथी । तेज्ञानें मुक शुद्धीरे ॥ (भ० सि०) ॥ ६६ ॥ ❀ ॥ (ढाल)॥ ❀ ॥ ज्ञानावर्णी जे कर्म छे। क्षय उपशम तसु थायेरे। तो होइए हीज आतमा । ज्ञान अबोधता जाइंरे ॥ (वी० तु०) ॥ ६७॥ (ॐ ह्रीं पर०)॥ ❀ ॥ इति सातमी श्रीज्ञानपद कलश पूजा सं० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ आठमें श्रीचारित्र पद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) अष्टमपद चारित्रनो । पूजो धरी उमेद । पूजत अनुभव रस मिले । पातिक होय उछेद ॥ १ ॥ ❀ ॥ आराहिया खंभिअ सकियस्स । नमो नमो संयम वीरियस्स । सज्झावणा संग विवढ्ढियस्स । निवाण दाणाइ समुज्जयस्स ॥ वली ज्ञान फल ते धरीयै सुरंगै । निरासंसता द्वाररोध प्रसंगै । भवां बोध संतारणे यानतुल्यं । धरुं तेह चारित्र अप्राप्त मूल्यं ॥ ६८ ॥ होइं जास महिमा थकी रंक राजा । वली द्वादशांगी भणी होइ ताजा । वली पाप रूपोपि निःपाप थायै । थई सिद्धते कर्मनें पार जायै ॥ ६८ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ चारित्र गुण वलि वलि नमो । तत्व रमण जस मूलो जी । पर रमणीय पणो टलै । सकल सिद्धि अनुकूलो जी । (चाल) । प्रतिकूल आश्रव त्याग संयम तत्व थिरता दममयी । सुचि परम खंती मुनि दसेपद पंच संबर उपचयी । सामायिकादिक भेद धरमें यथा ख्याते पूर्णता । अकषाय अकुलस अमल उज्वल कामकस्मल चूरणता ॥ ७० ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ देशविरतिनें सर्व विरतिजे । ग्रहीयतिनें अभिराम । ते चारित्र जगत जयवंतो । कीजे तास प्रणाम रे । (भ० सि०) ॥ ७१ ॥ तृणपरे जेषट्खंम सुखछंमी । चक्रवर्त्ति पिण वरिउ । ते चारित्र अखय सुख कारण । ते में मन मांहि धरिउरे (भ० सि०) ॥ ७२ ॥ हुआ रांक पणें जे आदरि । पूजित इंद नरिंद । असरण सरण चरण ते वंदुं । वरिउ ज्ञान आनंदरे (भ० सि०) ॥ ७३ ॥ बारमास परजाइं जेहनें । अनुत्तर सुख अतिक्रमिइं । शुक्ल सुकल अभिजात्यते ऊपरि । ते चारित्रनें नमीइं रे (भ० सि०) ७४ ॥ चयते आठ करमनो संचय । रिक्त करै जे तेह । चारित्र नाम निरुक्तें भाष्युं । तेवंदुं गुण गेहरे (भ० सि०) ७५ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ जाणि चारित्र ते आतमा । निज स्वभाव मांहि रमतो रे । लेस्या शुद्ध अलंकरयो । मोहवनें नवि भमतो रे । (वी० तुमे०) ७६ ॥ ॐह्रीं प० ॥ ❀ ॥ इति आठमी श्रीचारित्रपद कलश पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवै ९ मी तप पद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) करमकाष्ट प्रतिजालवा । परतिख अगनि समान । ते

तप पद पूजो सदा । निरमल धरियै ध्यान ॥ १ ॥ कम्मद्दुमोन्मूल न कुंज रस्स । नमो २ तिव्व तवोयरस्स । अणेग लद्धीण निवंधणस्स । दुस्सज्झ अ त्थाणय साहणस्स ॥ ७७ ॥ इय नवपय सिद्धिं लद्धि विज्जा समिद्धं । पयडि य सर वग्गं ह्रींतिरेहा समग्गं । दिसिवय सुरसारं खोणि पीढावयारं । तिज य विजयचक्कं सिद्ध चक्कं नमामि ॥ ७८ ॥ त्रिकालक पणें कर्म्मकषाय टा ले । निकाचित पणें बांधिया तेहवाले । कह्यो तेह तप बाह्य अभ्यंतर दु भेदे । क्षमा युक्ति निर्हेत दुर्ध्यान छेदे ॥ ७८ ॥ होइं जास महिमाथकी लब्ध सिद्धि । अवांछक पणें कर्म्म आवरण शुद्धिः । तपो तेह तपजे महानंद हेतें । होइं सिद्धि सीमंतनी निज संकेतें ॥ ८० ॥ इम नव पद ध्यावै परम आनंद पावे । नव भव शिव जावै देव नर भवज पा वै । ज्ञान विमल गुण गावे सिद्ध चक्र प्रभावै । सव दुरति समावे विश्व जयकार पावे ॥ ८१ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ इछा रोधन तप नमो । बा ह्य अभ्यंतर भेदे जी । आतम सत्ता एकता । पर परणित उछेदेजी ॥ १ ॥ (उल्लालो) उछेद कर्म्म अनादि संतति जेह सिद्ध पणो वरइ । सुभयोग संग आहार टाली भाव अक्रियता करे । अंतर मुहुरत तत्व साधै सर्व संवरता करी । निज आतमसत्ता प्रगट भावैं करो तप गुण आदरी ॥ ८२ ॥ ॥ ❀ ॥ (ढाल) इम नव पद गुणमंडलं । चउनिक्षेप प्रमाणें जी । सात न यें जे आदरे । सम्यग् ज्ञानें जाणें जी । (चाल) निरधार सेती गुणें गुण णो करइ जे बहुमानए । जसुकरण ईहा तत्व रमणें थाये निरमल ध्यान ए । इम शुद्ध सत्ता भलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरे । अक्षय अनंत महंत चिदघन परम आनंदता वरे ॥ ८३ ॥ कलश ॥ इम सयल सुख कर गुण पुरंदर सिद्ध चक्र पदावली । सविलद्धि विज्जा सिद्धि मंदिर भाविक पूजो मनरली । उवझाय वर श्रीराज सारह ज्ञान धर्म सुराजता । गुरु दीपचंद सुचरण सेवक देवचंद्र सुशोभता ॥ ८४ ॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ जाणंता त्रिहुं ज्ञाने संयुत । ते भव सुगति जिणंद । जेह आदरे करम खपेवा । ते तप सुरतरु कंदरे ॥ (भ० सि०) ॥ ८५ ॥ करम निकाचित पणि क्ष य जाइं । । क्षमा सहित जेकरतां । ते तप नमीइं तेह दीपावे । जिन शासन

लजमंता रे ॥ (ज सि०) ॥ ८६ ॥ आमो सही पमुहा बहुलब्धी । होवे जास प्रभावे । अष्ट महासिधि नव निधि प्रगटे । नमीये ते तप भावेरे ॥ (भ० सि०) ॥ ८७ ॥ फल शिव सुख मोटुं सुर नरवर । संपति जेहनुं फूल । ते तप सुर तरु सरिषो वंदुं । शम मकरंद अमूलरे ॥ (भ० सि०) ॥ ॥ ८८ ॥ सर्व मंगल मांहि पहिलो मंगल । वरणवियो जे ग्रंथ । ते तप पद त्रिकरण नित नमिइं । वर सहाय शिवपंथरे ॥ भ०सि०) ॥ ८९ ॥ इम नव पद थुणतो तिहां लीणो । हुवे तनमय श्री पाल । सुजस विलास है चोथे खंभे । एह इग्यारमी ढालरे ॥ (भ०सि) ॥ ९० ॥ ❋ ॥ (ढाल) ॥ ❋ ॥ इछा रोधन संवरी । परणित समता योगे रे । तप ते एहिज आतमा । वरते निज गुण भोगे रे ॥ (वी०) ॥ ९१ ॥ आगमनो आगमतणो । भाव ते जांणो साचोरे । आतम भावे थिरहुवे । परभावे मत राचोरे ॥ (वी०) ॥ ९२ ॥ अष्ट सकल समृध्दिनी । घट मांहि ऋध्दि दा खी रे । तिम नव पद ऋध्दि जाणज्यो । आतमराम है साखीरे ॥ (वी०) ॥ ८३ ॥ योग असंख्य है जिन कह्या । नवपद मुख्यते जाणोरे । एह तणें अविलंबने । आतम ध्यान प्रमाणो रे ॥ (वी०) ॥ ९४ ॥ ढाल बारमी एहवी । चोथे खंभे पूरीरे । वाणी वाचक जस तणी । कोईनय रहीय अधूरी रे ॥ (वी०) ॥ ९५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने । अनन्तानन्त ज्ञान शक्तिये । जन्म जरा मृत्यु निवारणाय । श्रीमत् सिध्दचक्राय । वासं । पंचामृतं । चंदनं । पुष्पं । धूपं । दीपं । अक्षतं । नैवेद्यं । फलं । वस्त्रं । ययामहे ॥❋॥ इति श्री देवचंदजी, जस विजयजी महोपाध्याय कृत सिध्दचक्र महात्म, श्री नवपद पूजा सं० ॥ ❋ ॥

॥❋॥ अथ नवपद पूजादिकमें सामग्री चाहिये सो लि०॥❋॥

॥ ❋ ॥ (पंचामृत) दूध । दही । घृत । मिश्री । शुध्दजल ॥ केसर । सुगंध चंदन । कपूर । कस्तूरी । अंबर । रोली । मोली । छूटा फूल । फूलोंकी माला । फूलोंका चंद्रवा । धूप । चावल प्रमुख (नव) जातके धान । (नव) प्रकारके नैवेद्य । (नव) प्रकारके फल (नव) प्रकारके पक्कन स्तु । मिश्री । पतासा । उंना । विदाम । सुपारी । प्रमुख । अंगलूहणा

खातर सपेद वस्त्र। पहरावणी खातर उत्तम रेसमी प्रमुख वस्त्र। वासक्षेप। गुलाबजल। अत्तर। इत्यादिक। और (नव) नालीके कलस (९) रकेबी। परात। तसला आरती। मंगलदीप। भगवानके अंगी। समोसरण। इत्यादिक सब चीज पहली ठीक करके रक्खे। इससें। पूजामें। विघ्न न। होय। (इहां) संक्षेपविधि कही। विसेषविधि गुरूके मुखसें जाण लेणा॥

॥ ❁ ॥ अथ सबके जाणनेंकों। नवपदजीके पूजा करणेंकी कलस ढालणेंकी विधि कहते है॥ ❁ ॥

॥ ❁ चैत्र सुदि १५ (तथा) आसोज सुदि १५ के दिन। आंत्रिया नव करे। पंचामृत मोटै वर्गे प्रमुखमें करे। थापना में श्रीफल रोक नाणो धरे। पीछे गुरुके पास मंत्रायके। केसरसें तिलक करै। कांकणमोरा हाथमें वांधे। दहणें हाथमें साथियो करिके। विधि संयुक्त स्नात्र पढावे। पीछे श्री अरिहंत पदमें चावल (तथा) चंदन। पुष्प। धूप। दीप। नैवेद्य(प्रमुख) अष्टद्रव्य। वासक्षेप। नागरवेल पांन। रकेबीमें धरके। हाथमें रक्खे। नव कलशके मोली बांधै। कुंकुमका साथिया करै। पंचामृतसें भरिके कलश हाथ में लेके पूजा पढे। संपूर्ण होणें सें कलश ढाले। वर्गी परातमें प्रतिमा जी पधरावे। ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं। इस माफक कहतो थको। अरिहंत पदकी पूजा करे। अष्ट द्रव्य अनुक्रमें चढावे॥ इति प्रथम पूजा॥ ❁ ॥ ॥ १ ॥ (दूसरे) सिद्धपद रक्तवर्ण। गहूं रकेबीमें धरे। श्रीफल (तथा) अष्टद्रव्य लेकर। (९ कलश) पंचामृतसें भरिके पूजा पढे। (पूर्ण होणें सें) ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं कही। (कलश ढालै)। अष्ट द्रव्य चढावे॥ इति द्वितीय पूजा विधि २॥ ❁ ॥ (तीसरे) श्री आचार्यपद। पीलेवर्ण। चिणाकी दालि। अष्टद्रव्य। श्रीफल प्रमुख लेके। कलश (९) पंचामृत सें भरिके पूजा पढे। पूर्ण होणेसें। ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं (कही)। कलश ढाले। द्रव्य चढावे॥ ❁ ॥ इति तृतीय पूजा॥ ३॥ ❁ ॥ (चौथे श्री उपाध्याय पद। नीले वर्ण। मूंग प्रमुख अष्ट द्रव्य लेके पूर्वोक्त विधि सें पूजा करे। संपूर्ण होणेंसें॥ ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं (कही) कलश ढाले। अष्ट द्रव्य चढावे॥ इति चौथी पूजा विधि॥ ४॥ ❁ ॥ (पांचमें)

श्री सर्व साधुपद। स्यामवर्ण उरूद प्रमुख लेवै। और पूर्वोक्त विधिः। (पूर्ण हो नेसें) ॐ ह्रीँ णमो लोए सव्व साहूणं॥ इति पंचमी ५॥❀॥ (छठे) दर्शनपद स्वेत वर्ण। चावल प्रमुख पूर्वोक्त विधिसें। ॐ ह्रीँ णमो दंसणस्स॥ इति छठी पूजा विधि॥ ६॥ ❀॥ (सातमें) श्री ज्ञान पद। स्वेत वर्ण। चावल प्रमुख पूर्वो॰। ॐ ह्रीँ णमो नाणस्स॥ ❀॥ इति सातमी॰॥ ७॥ ❀॥ (आठमें) चारित्रपद। स्वेतवर्ण। चावल प्रमुख पूर्वोक्त विधिः। ॐ ह्रीँ णमो चारित्तस्स॥ इति आठमी पूजा विधि॥ ८॥ ❀॥(नवमें)तपपद। स्वेत वर्ण। चावल प्रमुख पूर्वोक्त विधसें। ॐ ह्रीँ णमो तवस्स (कही) कलश ढाले। अष्टद्रव्य चढावे। पीछे अष्ट प्रकारी पूजा करे। आरती करै॥ ❀॥

इति नवपदजीकी पूजा विधि संपूर्णम्॥ ❀॥ ॥❀॥

॥❀॥ अथ वासक्षेप पूजा लिख्यते॥ ❀॥

॥❀॥ तीरथपति अरिहानमूं। धरम धुरंधर धीरोजी। देशना अमृत वरसता। निज वीरज वरू वीरोजी॥ १॥ (चाल) वर अखय निर्मल ज्ञान भासन सर्व भाव प्रकासता। निज शुद्ध श्रद्धा आतमभावे चरण थि रता वासता। जिन नाम कर्म प्रभाव अतिसय प्रातिहारज सोभता। ज गजंतु करुणावंत भगवंत भविक जननें थोभता॥ १॥ ॐ ह्रीँ परमा॰॥ वासं यजामहे स्वाहा॥ ❀॥ इति अरि॰ वासक्षेप पूजा॥ ❀॥

॥❀॥ (ढाल)॥ ❀॥ सकल कर्म मलक्षय करी। पूरण शुद्ध स्वरूपो जी। अव्याबाध प्रभुता मई। आतम संपति भूपोजी। (चाल) जे भू प आतम सहज संपति शक्ति व्यक्तिपणें करी। स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल भावें गुण अनंता आदरी। स्वस्वभाव गुण पर्याय परणित सिद्ध साधन परभ णी। मुनिराज मानसर हंस सम वरू नमो सिद्ध महागुणी॥ २ ॥❀॥ ॥ ॐ ह्रीँ प॰॥ इति सिद्धपद पूजा॥ ❀॥ ॥❀॥

॥❀॥ (ढाल)॥ ❀॥ आचारज मुनिपति गणी। गुण छत्तीसे धामो जी। चिदानन्द रस स्वादता। परभावें निःकामो जी॥ ३॥ निःकाम निर मल शुद्ध चिदघन साध्य निज निर धारथी। वरज्ञान दरसन चरण वीरज साधना व्यापारथी। भविजीव बोधक तत्वसोधक सयल गुण संपतिधरा।

संवर समाधी गत उपाधी दुविध तप गुण आगरा ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ ॥ ❀ ॥
इति आचार्य पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ । अज्जव मद्दव जुत्ताजी । सच्चं सोय अकिंचणा । तव संयम गुण रत्ताजी ॥ १ ॥ (चाल) जे रम्या ब्रह्म सुगुप्ति गुप्ता सुमति समता श्रुतधरा । स्याद्वाद वादें तत्वसाधक आत्मपर विभजन करा । भव भीरु साधन धीर सासन वहन धोरी मुनिवरा । सिद्धान्त वायण दान समरथ नमो पाठक पदधरा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॐ० ॥
इति उपाध्याय पद पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ सकल विषय विषवारिनें । निकामी निस्संगीजी । भवपद ताप समावता । आतम साधन रंगी जी ॥ १ ॥ (चाल) ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा । काउसग्ग मुद्राधारि आसण ध्यान अभ्यासी सदा । तप तेज दीपे कर्म जीपे नैव छीपे पर भणी । मुनिराज करुणा सिंधु त्रिभुवन बंधु प्रणमुं हितभणी ॥ ५ ॥ ॐ० ॥ ❀ ॥
इति साधु पूजाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ सम्यग् दर्शन गुण नमो । तत्व प्रतीत सरूपीजी । जसु निरधार सुभाव छे । चेतनगुण जे अरूपी जी ॥ १ ॥ (चाल) जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटे सयलपर ईहा टले । निज शुद्ध सत्ता भाव प्रगटे अनुभव करुणा ऊछले । बहुमान परिणत वस्तु तत्वें अहव तसु कारण पणें । निज साध्य दृष्टे सरव करणी तत्वता संपतिगिणें ॥ ६ ॥ ॐ० ॥
इति ६ दर्शनपद पूजाः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ भव्य नमो गुण ज्ञाननें । स्वपर प्रकासक भावें जी । पर्याय धर्म अनन्तता । भेदाभेद स्वभावें जी ॥ १ ॥ (चाल) जे मोक्ष परिणत सकल ग्यायक बोध भावें सलक्षणा । मति आदि पंचप्रकार निरमल सिद्ध साधन लंछना । स्याद्वादशंगी तत्वरंगी प्रथम भेद अभेदता । सविकल्पनें अविकल्प वस्तु सकल संशय छेदता ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ० ॥ ❀ ॥
इति ज्ञान पूजाः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ ❀ ॥ चारित्रगुण वलि वलि नमुं । तत्व रमण जसु

न सुकारियें । (अजित० एक०) ॥ २ ॥ चिरसंचित घन दुरित तिमिर हर। तुम जिनत्नये तिमिरारियें । (अजित०) कहे शिवचंद्र अजित प्रभु मेरे। एह अरज न विसारियें । (अजित०) ३ ॥ (काव्यं) सलिल चं० ॥ ॥ ❋ ॥ ॐ ह्रीं० श्री मदजित जिनेंद्राय । वसुद्रव्यं यजा० ॥ ❋ ॥ इति श्री अजित जिनेंद्रास्याष्टविध पूजा ॥ २ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (३) श्रीसंनवजिन पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दोधक) ॥ ❋ ॥ जय जितारि संनव सदा। श्रीसंनव जिन राज। सकल लोक जिए जीतलीय । जीतो मोह समाज ॥ १ ॥ ❋ ॥ (राग) गंधवटी घनसार केसर मृगमदारस नेलीयै (ए चाल) ॥ ❋ ॥ अपरिमित वर शिखर सागर धार संनवकार ए । जिनराज संनव पाय वंदो लहो नवजल पार ए। वलि जलधिजात सुजात कुंजर कुंन नंजन जानियें। तसु जनक नाम समान नामा नये जिनत्तर आनियें ॥ १ ॥ जसु चरणपंकज मधुर मधुरस पान लय लागी रह्यो । मिलकरि सुरा सुर खचर व्यंतर नमर नितचित ऊमह्यो ॥ जसु चरणकमलै प्लवगलांछन कनक सुवरण कायए। सहु नुवन नायक सुमति दायक जननि सेना जायए ॥ २ ॥ जसु मधुर वाणी जगवखाणी तीस शर (३५) गुणधारिणी ॥ संसार सागर नय नरानर पतित पारउतारिणी । स्याद्वाद पक्ष कुठार धारा कुमति मद तरु दारिणी। प्रनुवाणी नित शिवचंद्र गणिकै हुवो मंगल कारिणी ॥ ३ ॥ (काव्यं) ❋ ॥ सलिल चंदन० ॥ ॐ ह्रीं श्री प० श्रीमत्संनव जिनेंद्राय वसुद्रव्यंय० ॥ ❋ ॥ इति तृतीय श्री संनव जिन पूजा ॥ ३ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (४) श्रीअनिनंदन पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥❋॥ (दोधक) ॥ ❋ ॥ श्रीचतुर्थ जिनवर सदा । पूजो नवि चितलाय। नगति युगति संकट हरण। करण तीन सुध थाय ॥ १ ॥ ❋ ॥ (राग सोरठी।) कुंद किरण शशि ऊजलो रे देवा०। (ए चाल) ॥ ❋ ॥ संवर नंदन जिनवरू रे (वाल्हा) अनिनंदन हित कामीरे । जग दनिनंदन जय करूरे। (वा०) दुरित निकंदन स्वामीरे ॥ १ ॥ लोकालोक प्रकासतारे (वा०) । करुना अविचल धामीरे । अव्यावाध अरूपिता रे ।

(वा०) । विमल चिदानंद रामीरे ॥ २॥ वांछित पूरण सुरमणी रे (वा०) ए प्रनु अंतर जामीरे । ऐसे जिन महाराजकुंरे । (वा०) चंद्र नमें सिर नामीरे ३ । (काव्यं) ४ ॥ ❀ ॥ सलिल चं० ॥ ॐ ह्रीँ श्रीप० श्रीमद नि नंदनजिनें० । वसु०॥❀॥इति श्रीचतुर्थोनिनंदन जिनेंद्रस्याष्टविध पूजा ४॥

॥ ❀ ॥ अथ (५) श्रीसुमति जिन पूजा लि ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ पंचम जिन नायक नमुं पंचमि गति दातार। पंचनाण वर विमल कज । वन विकसन दिनकार ॥ १ ॥ ❀ ॥ (राग केरवो) वंसी तेरी वैरिणि वाजेरे । वैरिणि वाजे (ए चाल (॥❀॥ सुध नाव चित्त थिर धारिकेंरे । (चित्त०) पूजो सुमति जिणंद । (सुधनाव०) जिन नक्ति करण रसीला । लहो परम आनंद ॥ १ ॥ (सुधनाव०) जिनराज सुमति समंद । करे कुमति निकंद । (सुध०) प्रनुना चरण अरविंदा । वंदे असुर सुरिंद (सुध०) ॥ २ ॥ कनकान तनु डुतिसोहै । प्रनु सुमंगला नंद (सुध०) करुणो पशम रस नारिया । वंदे नित शिवचंद । (सुध०) ॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिलचं० ॐ ह्रीँ० श्रीमत्सुमति जिनेंद्राय वसु द्रव्यं० इति श्री सुमति जिन पूजा ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (६) श्री पद्मप्रनु पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ हिवे पष्टम जिनवर तणी पूजन करहु उदार । नवि चित नक्ति धरी करी । सुख संपति करतार ॥ १ ॥ ❀ ॥ (राग सारंग) हांहों० । बावना चंदन घसि कुमकुमा (ए चाल) । (हां हो रे वाला) पदमप्रनु मुख चंद्रमा । नित सकल लोक सुखदाय ए (हां०) हरि सुर असुर चकोरना । नित निरख रह्या ललचायरे॥ १ ॥ (हां०) जिन मुख वचन अमृत तणो । जे श्रवण करे नविपानए (हां०) । ते अजरामरता लहे । हरिगण करे जसु गुण गानए (हां०) ॥ २ ॥ धर नृप कुल नन दिन मणि । प्रनु मात सुसीमा नंदए (हां०) । प्रनु दरसणतें प्रतिदिनें हुइ ज्यो शिवचंद आणंद ए ॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिल० । ॐ० । श्रीपद्म प्रनु जिनें० वसु० ॥ ❀ ॥ इति श्री पद्मप्रनु जिन पूजा ॥ ६ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (७) श्री सुपार्श्वजिन पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दोधक) ❋ श्रीसुपार्श्व सुरतरु समो । कामित पूरण काज । जो भवियण पूजो सदा । वसु विध पूज समाज ॥ १ ॥ (राग कल्याण) मेरा दिल लग्या जिने सरसें (ए चाल) ॥ ❋ ॥ मेरी लगी लगन जिन वरसें (मेरी०) जैसे चंद्र चकोर भमरकी । केतकि कमल मधुरसें (मेरी०) । एह सुपारस प्रभु भए पारस । गुण गण समरण फर सैं (मेरी०) चेतन लोहपणो परिहरकै । हुयल्यै कांचन सरिसै ॥ १ ॥ (मेरी०) ए प्रभु करुणा करकुं धरिल्यै । उर जिम कमल भमरसै (मेरी०) जे भवि जिनपद लगन धरै तसु । नही भय मरन असुरसै (मेरी०) ॥२॥ मात पृथवि तनु जात तनु द्युति । सम शुभ कांचन सरसै (मेरी०) कहै सिवचंद्र चित्त नित मेरो । रहो प्रभुपद लय भरसै ॥ ३ ॥ (मेरी०) (काव्यं) सलिल० ॐ ह्रीँ० श्रीमत्सुपार्श्वजिनेंद्राय ॥ वसुद्रव्यं० ॥ ❋ ॥ इति श्रीसुपार्श्वजिन पूजा ॥ ७ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (८) श्रीचन्द्रप्रभु पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दोधक) ॥ ❋ ॥ अष्टम जिनपद पूजियै । विविध कष्ट हरतार । अष्टसिद्धि नवनिधि लहै । जिन पूजन करतार ॥ १ ॥ ❋ ॥ (राग गुंड मिश्रित मल्हार) ॥ मेघ बरसै भरी कुसुम वादल करी । (ए चाल) परमपद पूर्व गिरिराज परि उदयलहि । विजित परचंद्र दिनकर अनन्ता । चंद्रप्रभु चंद्रिका विमल केवल कला । कलित सोभित सदा जिन महन्ता ॥ १ ॥ (परमपद०) । कुमतिमत तिमिर भर हरीय पुन भूरि भवि । कुमुद सुख करीय गुण रयण दरिया । गहिर भविसिंधु तारण तरणि गुण । धारि भव तारि जिनराज तरिया । (परमप०) ॥ २ ॥ राखियै आज मोहि लाज जिनराज प्रभु । करण सुख चरण जिन सरण परीया । परम शिव चंद्र पदपद्म मकरंद रस । पान नित करण ततपर भरीया ॥ ३ ॥ (पर०) (काव्यं) सलि० । ॐ ह्रीँ० श्रीमच्चन्द्रप्रभु जिनें० वसु० ॥ ❋ ॥ इति श्री चंद्रप्रभु पूजा ॥ ८ ॥ ❋ ॥ ॥❋॥

॥ ❀ ॥ अथ (९) श्रीसुविध जिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ सुविध २ समरण थकी । कामित फल प्रकटाय । अतिह गहन संसार वनि । वहुल अटन मिट जाय ॥ १ ॥ ❀ ॥ (राग (चंपक केतक मालती (एचाल (॥ ❀ ॥ सुविध चरणकज वंदीयैए । (अइयोवं०) नंदीयै अति चिरकाल । सिव तरवारि निकंदीयै । विघन कंद ततकाल ॥ १ ॥ आज जनम सफलो भयो । (हांए सफ०) दीठो प्रभुदीदार । तनु मन दृग विकसित भये । जिम कज लखि दिनकार ॥ २ ॥ अमृत जलधर वरसीयो । (हां० अइ० व०) भवि उर क्षेत्र मझार । दर्शन सुरतरु ऊगीयो । शिवफलनो दातार ॥ (काव्यं) सलिल० । ॐ ह्रीं० । श्रीमत्सुविधि जिनें वसु० ॥ ❀ ॥ इति श्रीसुविध जिन पूजा ॥ ९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१०) श्रीशीतल जिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) मुझ तनु मन शीतल करो । श्रीशीतल जिनराय । तुम समरण जलधारसें । अंतर तपति बुझाय ॥ १ ॥ (राग घाटो । दादा कुसल सुरिंद० इस चालमें) ॥ ❀ ॥ मेरे दीनदयाल तुम भये सकल लोक प्रतिपाल । (आ०) सुणि शीतल जिनवर महाराज । चरण शरण धर्यो प्रभुनो आज । (मेरे दी०) न नमुं सहु सविकारी देव । करिसुं चरणकमलनी सेव । (मेरे०) ॥ १ ॥ जेसें सुरमणि करतल पाय । कुणल्ये काच शकल ऊलसाय । (मेरे०) तुम सम सुरवर अवरन कोय । हेर २ जग निरख्यो जोय (मेरे०) ॥ २ ॥ प्रभु दरसण जलधर घनघोर । लखिय नितकरे भविजन मोर (मेरे०) । पद शिव चंद्र विमल भरतार । अरज एह उरधरिये सार (मेरे०) ॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिल० ॐ ह्रीं० श्रीमछीतल जिनेंद्राय वसु० ॥ ❀ ॥ इति श्रीशीतलजिनेंद्र पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (११) श्रीश्रेयांस जिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ श्री श्रेयांस जिनेंद्रपद । नद छुति सलिला धार । जे नेत्रे मज्जन करें । ते सुचि हुइ विधुनार ॥ १ ॥ (राग) सोहम सुरपति वृषभ रूप करि (इस चालमे) ॥ ❀ ॥ श्री श्रेयांस जिणेसर जगगुरु । इंद्रिय मदन सनंदहे । जसु वसु विध पूजनसें अरचो । उर धरि पर

मानंदहे । ए समकित धर श्रावक करणी । हरिणी भव मनरंग हे । विजयदेव जिन प्रतिमा पूजी । जीवाभिगम उवंग हे ॥ श्री० ॥ १ ॥ सूरीयाभ प्रभुपूजन करियो । राय पसेणी उपांगहे । ग्याता अंगे द्रुपदि श्राविका । पूज्या जिन प्रतिबिंबहे । काल लगै भमसी भव वनमें । मन्दमती भयभ्रांत हे ॥ (श्री०) ॥ २ ॥ विष्णुमात तनुजात विष्णु नृप । विमल कुलांबर हंस हे । सकल पुरंदर अमर असुर गण । शिरो वरि प्रभु अवतंस हे इम सुरवरनी परि श्रावक जे । पूजै जिन उछरंग हे । ते शिव चंद्र परमपद लहिस्यै । निश्चय करी भवभंग हे (श्री) ॥ ३ ॥❁॥ (काव्यं०) सलिल० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ० श्री श्रेयांस जिनेंद्राय ॥ ❁ ॥ ॥ इति ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ (१२) वासुपूज्य जिन पूजा लि० ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ (दोधक) ॥ ❁ ॥ हिवबारम जिनवर तणी । पूजन करियै सार । भाव भक्तियुत भवि सदा । द्रव्यभक्ति चितधार ॥ १ ॥ (राग) सब अरति मथनमुदार धूपं (एचाल) ॥ ❁ ॥ सकल जगजन करत वंदन । जय । नंदन सामिरे (देवा) दुरित ताप निकंद चंदन । परम शिव पद गामिरे (देवा) ॥ १ ॥ (सकल०) नृपतिवर वसु पूज्य नृपकुल । बिपिन नंदन जातरे (देवा) सुहरि चन्दन नन्द नन्दन । नन्द मदकिय घातरे (देवा) ॥ २ ॥ (स०) वासु पूज्य जिणेंद्र पूजो । सकल जन महाराज रे । (देवा) करत नुति शिव चंद्र प्रभुए । निखिल सुर सिरताज रे । देवा । (सक०) ॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिल० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ० श्रीमद्वासु पूज्य जिनेंद्राय वसु द्रव्यं ॥ ❁ ॥ इति श्रीवासुपूज्य जिन पूजा ॥ १२ ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ (१३) श्री बिमल जिन पूजा लि० ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ (दोधक) ॥ ❁ ॥ विमल २ जिन कर मुझे । मलिन करम करि दूर । तेरम प्रभु रमियै सदा । मुजभर मझि गुणपूर ॥ १ ॥ ❁ ॥ (राग) सिद्धचक्र पद वंदोरे भविका । ए चाल) ॥ ❁ ॥ विमल चरण कज वंदोरे । (सूरीजन) विम० (वंदनसें आनन्दोरे । (सू० वि०) जसु गणधर मुनिवर गण मधुकर । सेवत पद अरविंदो । श्यामा उदर सुगति मुगता फल । कृत वरमा नृप वंदोरे (सूरी०) ॥ १ ॥ सहु जग मेंमल विमल करणकूं ।

निज शासन नभचंदो। उदय भयो भवि कमुद विकसिवा। वर गुण रयण समंदो रे (सूरी०) ॥ २ ॥ यादि भव बंदि हरण भवि चाहो। प्रभुवंदो चिरनंदो। विमल चिदानंद वनमयरूपी। नित वंदत शिवचंदो रे (सूरी० ॥३ ॥ (काव्यं) सलिल० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं०। श्रीमत् विमलजिनें० ॥ ❀ ॥

इति श्रीविमल जिनपूजा ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१४) श्रीअनन्त जिनपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ हिव चवदम जिनपूजतां। हरिये विषय विकार। भो भवियण सुणिये सदा। ए प्रभु सरणाधार ॥ १ ॥ पंचवरणी अंगीरची० (ए चाल) ॥ ❀ ॥ पूजकरणी प्रभुनी दुरित निवारी। (दुरि) (आं०) अनन्त तरणी हिमकिरण तरुणतर। किरण निकर जीताहे भारी। अनन्त नाणवर दरसण तेजे। प्रभुसु यशोदरहे अवतारी (पूज०)॥ १ ॥ लोका लोक अनंत द्रव्यगुण। पर्याय प्रगट करण हारी। ताते अन्वयसुत जिन धरियो। अनंत नाम अनि मनुहारी (पूज०)॥ २ ॥ सिंहसेन नृप नन्दन वंदन। करत इंद्र चंद्र सुखकारी। सादि अनंत भंग थिति धरियो। पद शिव चंद्र विजयधारी (पूज०)॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिल०। ॐ ह्रीं० श्रीमच्चतुर्दश अनंत जिनें० वसु० ॥ ❀ ॥ इति श्री अनंत जिनपूजा ॥१४॥

॥ ❀ ॥ अथ (१५) श्रीधर्मजिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ भानु नृप कुल भानु कर। पनरम जिन सुर सार। सोजिन महुजग विपिन जन। हरख फलद जलधार ॥ १ ॥ (राग) धार सर्मारे यमुना तीरे। वसती वने वनमाली (ए चाल)॥❀ ॥ धर्म जिणेसर धरम धुरंधर। जगबंधव जगपाला। (मैं वारी जाउं। जग० धरम०)। सुव्रता नंदन पाप निकंदन। प्रभुजये दीन दयाला (मैंवा०। धर्म०) ॥ १॥ प्रभु धीरज गुण निरखि अमर गिरि। लाजि लीनो अचला धारा। (मैंवा०) जिन गंभीरता चमरसिंधु लखि। किय लोकांत विहारा। (मैं०। धर्म) ॥ २ ॥ एजिनचंद्र चरण अरचनतें। लहि जिनपति अवतारा। (मैंवा ०)। करम वेरि दलकारि भवि लहिस्यो। पद शिव चंद्र उदारा। (मैंवा० धर्म०)

॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिल चं० ॥ ॐ ह्रीं । श्रीप० श्रीमत धर्म जिनें० वसुद्र व्यं० ॥ ❋ ॥ इति श्री धर्मजिन पूजा ॥ १५ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (१६) श्री शान्तिजिन पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दोधक) अचिरा नयरे अवतरी । शांति करी सुखकार । मारि विकार मिटाय करि । नाम धरयो शांति सार ॥ १ ॥ ❋ ॥ (राग विलास) भाव धरि धन्य दिन आज सफलो गिणुं (ए चाल) ॥ ❋ ॥ शांति जिन चंद्र निज चरणकज शरणगत । तरणि गुणधारि भववारि तारी । कुमत जन विपिन जानि कुमति घन वृतनि तति । छितिनि शितधार तरवारि वारी ॥ (शांति०) ॥ एक भव पद उभय चक्रधर तीर्थंकर । धारिया वारिया विघन सारा । सकल मदमारिया विमल गुण धारिया । सारिया भक्ति वांछित अपारा ॥ (शांति०) हरिण लांछन धरा वरण सुवरण करा । सुरवरा हितधरा गतविकारा । मोहभट धरणिधर गण हरण वज्रधर । कुमुद शिव चंद्र पद रजनिकारा ॥ (शां०) ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीप० श्रीमत् षोम्शम शांति जिनेंद्राय वसु द्रव्यं० ॥ ❋ ॥ इति शांति जिन पूजा ॥ १६ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (१७) श्रीकंथुजिनपूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दोधक) सतरम जिनवर दीवसम । मझि भव सागर जाण । भक्ति युक्ति नित पूजियै । लहीयै अमल विनाण ॥ १ ॥ ❋ ॥ (राग) अरिहंतपद नित ध्याइयै (एचाल) ॥❋॥ कुंथुजिणंद गुणगाइयै । (वारि) मनवंछित फल पाइयें रे । प्रभु समरण लय लाइयै । (वा०) भवि भवतजि शिवजाइयैरे (कुंथु०) ॥ १ ॥ भवजल गत निज आतमा । (वा०) करुणा उर धरि ताइयै रे । चरण करण उपयोगिता । (वा०) ग्रहण करणकुं धाइयै रे । (वा० कुं०) ॥ २ ॥ ए प्रभु दरसण जीवनें । (वारि) अनुभव रसनो दाइयै रे । वर शिवचन्द्र विमल वधे । दिन २ सोभ सवाइयै रे । (कुं०) ॥ ३ ॥ (काव्यं) सलिलचं० । ॐ ह्रीं श्रीप० । श्रीकुंथु जिनें० । वसु० ॥ ❋ ॥ इति कुंथुजिन पूजा ॥ १४ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (१८) श्रीअरनाथ पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दोधक) ॥ ❋ ॥ जिनअढारमोध्याइयै । भवियण चित्तमझार

करण तीन इक करमुदा । प्रतिदिन जय जय कार ॥ १ ॥ ❀ ॥ (राग वसंत) संग लागोही आवे । कुणखेलै तोसुं होरी रे । संग० (ए चाल) ॥ ❀ ॥ निज विमल भक्तिसें । अरजिनसें नितरमियें रे । (निजवि०) । जिनगुण निजगुण तुल्य करणकुं । चंचल चित हय दमियें रे । (नि०) ॥ १ ॥ सुमति युवति संयम उर धरिकें । कुमति नारि संग गमियें रे ॥ (निज०) ॥ अनुभव अमृत पान करण तें । विषय विकृत विष दमियें रे । (निज० अर०) ॥ २ ॥ जिनवर संग रमण दवअनलें । पंक सघन वन थमियें रे । कहे शिवचंद्र जिनेंद्र रमणसें । भव रनमें नही भमियें रे ॥ ३ ॥ (निज०)(काव्यं) सलिल चं० ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीँ० । श्रीमदष्टादश अरजिनें० । वसु० ॥ ❀ ॥ इति अरजिनपूजा ॥ १८ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (१९) श्रीमल्लिजिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ उगणीसम जिन चरणकज । भमर होय लयलाय । सेवे तसु भवि भमरला । अगणित दुरित विलाय ॥ १ ॥ ❀ ॥ (राग) मल्लिजिणंद उपगारी रे वाला । मल्लिजिणंद उपगारी (हां रे हो रे वाला) वारी जाउं वारहजारी रे (वा० । मल्लिजि०) कुंभनरेसर गग नांगणमें । सहसकिरण अवतारी रे (वाला० म०) ॥ १ ॥ पूरव भव षट्मित्र नरिंद प्रति । बोधि सिंधु भवतारी । वेदत्रयी चिरही तनु धार्यो सकल संघ सुखकारी रे (वाला मल्लि०) ॥ २ ॥ सकल कुशल हरि चंदन तरुवर । नंदनवन अनुकारी । संघ चतुरविध भूरिखचरगण । प्रणत चंद्र अनुहारी रे (वा० मल्लि०) ॥ ४ ॥ (काव्यं) सलिल० । ॐ ह्रीँ० । श्रीमल्लिजिनें० जलं० ॥ ❀ ॥ इति मल्लिजिन पूजा ॥ १९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (२०) श्रीमुनिसुव्रताजिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) पद्मोदर वर पद्मनद । गतपर पद्म समान । विंशति तम प्रभु पूजियें । केवल लब्धि निधान ॥ १ ॥ ❀ ॥ (राग गरबो) मुणिचतुर सुजाण । परनारीसुं प्रीतडी क्यहूं न कीजियें (ए चाल) ॥ ❀ ॥ मुणिसुव्रताजिनेंद्र सुनिजर धरि मुझपर वर दरसण दीजियें । प्रभु दरस प्रीति निरुपाधिकता । कारये लहियें शिव साधकता । भव दुरत मिटें सिव वायकता ।

॥ १ ॥ (सुणि०) अमृतमें साध्यपणो विलसैं । प्रभु दरसण साधनता ल्लसै । तदसुझमें साधकता मिलसै । (सुणि०) ॥ २ ॥ भिन्नादिकरणता यदि विघटै । एकाधिकरणता यदि सुघटै । तद सुझ शिव साधकता प्रगटै । (सुणि०) ॥ ३ ॥ एकाधिकरणता सुझ करियै । भिन्नाधिकरणता परिहरियै । शिव चंद्र विमल पद तद वरियै (सुणि०) ॥ ४ ॥ (काव्यं) सलिल० । ॐ ह्रीं० । विंशतितम श्रीमत् मुनिसुब्रतजिनें० ॥ ❋ ॥

इति मुनिसुब्रत जिन पूजा ॥ २० ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (२१) श्रीनमि जिन पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दोधक) अंतरवैरि नमाविया । तब लहियो नमि नाम । भवियण ए प्रभु पूजसें । सरीयै वंछित काम ॥ १ ॥ (राग) हमआए हैं सरण तिहारे । तुम प्रभु सरणागत तारे वारी० (एचाल) । ❋ । श्रीनमि जिनवर चरण कमलमें । नयन भमर युग धरियैरे । तिण किय गुणमकरंद पानसें चेतन मद मत करियैरे । (वारी) चेतन मद मत करियैरे (श्रीनमि०) ॥ १ ॥ एह चरण कज अह निश विकसै । पर कज निसि कुमलावैं रे । (वारी पर) एन वले वलि तुहिन अनलसें । अपर कमल वल जावै रे । (वारी० अप०) ॥ २ ॥ ए पद कज गुन मधुरस पीवत । जीव अमरता पावै रे (वारी०) । अवर कमल रस लोभी मधु कर । कजगत गज गिल जावै रे (वारी०) ॥ ३ ॥ परकज निजगुण लच्छिपात्रहै । पद कज संपद देवै रे । तातै पदशिवचंद्र जिणिंदके । अहनिशि सुर नर सेवैं रे (वारी०) । श्री० ॥ ४ ॥ (काव्यं) सलिल० ॥ ॐ० श्री नमिजिनें० ॥ ❋ ॥

इति श्री नमिजिन पूजा ॥ २१ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (२२) श्रीनेमि जिन पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दोधक) बावीसम जिन जगगुरु । ब्रह्मचारी विख्यात । इण चंदन चंदन रसें । पाप ताप मिट जात ॥ १ ॥ (राग रामगिरी) गात्र लूहे जिनमन रंग सुरे । देवा (ए चाल) । नेमि जिणंद उर धारीयै रे (वाला) विसय कसाय निवारीयै (वाला) । (वारीयै) हां रे(वाला वारीयै) । ए जिन नैंन विसारीयैं रे ॥ १ ॥ जलधर जिम प्रभु गरजतारे (वाला) देशना

अमृत वरसतारे (वाला) (देस०) । वरसता हां रे वाला वरसता । भविक मोर सुणि उलसतारे ॥ २ ॥ समवसरण गिरि परि रह्यारे (वाला) । भामंडल चपला वह्यारे (वाला) । चपला वह्या । (हां रे) चपला वह्या सुर नर चातक उमह्या ॥ ३ ॥ बोध बीज उपजावीयोरे (वाला) । भवि नर क्षेत्र वधावीयो हांरे (वाला धा०) । भविक सुगति फल पावीयोरे॥४॥ (काव्यं) सलिल० ॥ ॐ ह्रीं० श्रीमन्नेमि जिनें० ॥ ❀ ॥

इति नेमि जिन पूजा (२२) ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (२३) श्री मत्पार्श्वजिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ अश्वसेन नंदन सदा । वामोदर खनि हीर । लोक सिखर सोहे प्रभु । विजित करम वरुवीर ॥ १ ॥ वाजे तेरा बिछुआ (इस ख्यालकी चालमें) ॥ ❀ ॥ पास जिणंदा प्रभु मेरे मन वसीया । पास जिणंदा० । मेरे मन वसीयारे । मेरे दिल वसीया (पास जि०) । शिव कमलानन कमल विमल कल । तर मकरंद पान अतिरसीया (पास जि०) ॥ १ ॥ वामा नंदन मोहनि मूरत । सकल लोक जन मन किय वसीया (पास जि०) । परमज्योति मुख चंद विलोकित । सुर नर निकर चकोर ह रसीया (चकोर ह०) (पास जि०) ॥ २ ॥ अंजन गिरि तनु द्युति जिन जलधर । देशना अमृत धार वरसीया (धारवर०) (पास जि०) । पीय कार भवि चिरकाल निरसीया । सुगति युवति तनु तुरत फरसीया (पास जि०) कुमुद सुपद शिवचंद्र जिणंदनी । वारीजाउं मन मेरो अतिह उल सीया (पास जि०) ॥ ४ ॥ (काव्यं (सलिल० । ॐ ह्रीं । त्रयो विंशत्तम श्रीमत्पार्श्वजिनें० ॥ इति श्रीपार्श्वजिन पूजा ॥ २३ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (२४) श्रीमद्वीरजिन पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोधक) ॥ ❀ ॥ वर इक्ष्वाककुल केतु सम । त्रिशलोदर अवतार । ए प्रभुनी नित कीजीये । विविध भक्ति सुखकार ॥ १ ॥ (राग तेजतरणि मुखराजे) । (हां रे मुखराजे) (प्रभु जीको ते०) (एचाल) ॥ ❀ ॥ चरम वीर जिन राया (हां रे) जिनराया । मेरे प्रभु चरम वीर जिनराया (आं०) । सिद्धारथकुल मंदिर धजसम । त्रिशला जननी जाया । निरु

पम सुंदर प्रनु दरसण तें । सकल लोक सुखपाया। (हां रे सुखपाया) (मेरे प्रनुच०) ॥ १ ॥ वामचरण अंगुष्ट फरसते । सुरगिरि वर कंपाया इंद्रनूति गणधर मुख मुनिजन । सुरपति वंदित पाया। (हां रे) (मेरे प्र०) ॥ २ ॥ वर्त्तमान शासन सुखदाया। चिदानंद घन काया । चंद्रकिरण गुण विमल रुचिर धर। शिवचंद्रगणि गुण गाया । (हां रे० मेरे प्र०) ॥ ३ ॥ वरस नंद मुनि नाग धरणि मित। द्वितीयाश्विन मनजाया। धवलपक्ष पंचमि तिथि शनियुत। पुरजय नगर सुहाया (मेरे०) ॥ ४॥ श्रीजिन हरख सूरीसर साहब। वर खरतर गछराया। क्षेमकीर्त्ति शाखा नूषण मणि। रूपचंद्र नवझाया (मेरे०) ॥ ५ ॥ महापूर्व जसु नूरि नरेश्वर । वंदे पद नलसाया। तासु शीसवाचक पुण्यशील गणि। तसु शिष्य नाम धराया (हां रे० मेरे प्र०) ॥ ६ ॥ समयसुंदर अनुग्रही रुषिमंमल। जिनकी सोन सवाया पूजरची पाठक शिवचंदे। आनंद संघ वधाया (हां रे० मेरे०) ॥ ७ ॥ (काव्यं) सलिल चंदन० ॥ ❋ ॥ ॐ ह्रीं श्रीप० चतुर्विंशति तम श्रीमद्वीरजिनेंद्राय वसुद्रव्यं ॥ इति श्रीमहावीरजिन पूजा विधिः ॥ २४ ॥

॥ ❋ ॥ स्नग्धरावृत्तद्वयं ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दुर्व्वार स्फार विघ्नोत्कट करटि घटोत्पाटन स्पष्ट जाग्रद। वीर्यप्राग्नारोत्पाट चंचत् कुशल हरिदरी जित्वरी दुर्नेतानां । संसारापार सिंधु त्तरण तरतरी नक्तिनाजा मजस्रं । नव्यानां ब्रह्मपद्म प्रवण मधुकरी शंकरी शंकरी सा ॥ १ ॥ लोकालोक प्रलोका स्खलित विमल सद्दर्शन ज्ञान नानुः। श्रीमज्जैनेश्वरीयं त्रिनुवन विनुतापि श्चतुर्विंशतिश्च । श्रीसिद्धा नंत नाथालय विशदलसत् सर्वलोकाग्रनाग। प्रासादाग्र प्रदेशे जगति विजयते वैजयंती जयंती ॥ २ ॥ इति रुषिमंमल स्तुतिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ नवपद आरती लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जय जय जगजन वंछित पूरण। सुरतरु अनिरामी । आतमरूप विमल करतारक । अनुनव परिणामी। (जय २ जगसारा २)। आरती पार उतारा। सिद्धचक्र सुखकारा ॥ १ ॥ जगनायक जगगुरु जिनचंदा। नज श्रीनगवन्ता। आतमराम रमा सुखनोगी। सिद्धा जयवंता। (जय०२)

पंचाचार दीपे आचारिज । जुगवर गुणधारी । धारक वाचक सूत्र अर्थना पाठक भवतारी (जय०) ॥ ३ ॥ सम दम रूप सकलगुण ज्ञायक । मोटा मुनिराया । दंशण नाण सदा जय कारक । संजम तपभाया (जय०) ॥ ४ ॥ नव पदसार परम गुरु भापे । सिद्धचक्र सुखकारी । ए भव परभव रिद्ध सिद्ध दायक । भव सायर वारी (जय०) ॥ ५ ॥ करजोडी सेवक गुण गावे । मनवंछित पावे । श्रीजिनचंद अखयपद पूजत । शिव कमला पावे (जय०) ॥ ६ ॥ इति श्रीनवपद आरती ॥ ❋ ॥ ॥❋॥

॥ ❋ ॥ अथ ऋषिमंडल आरती लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जय जय जिनराजा । (वारी ज०) आरती करुं शिवकाजा । भव भय दुख भाजा (जय०) ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव जिन राया । अभिनंदन सुमति । पद्म सुपारस चंद्रप्रभुते । दूर हुवे कुमति । (जय०)॥२॥ सुविध शीतल श्रेयांस सवाई । करि वारम जिनकी । विमल अनंत धर्म्म प्रभु शांति । हर आरति तनकी । (जय०) ॥ ३ ॥ कुंथुनाथ अरमल्लि मुनिसुव्रत । नमि नेमि श्रीकारा । पार्श्वजिनेश्वर वीर जिनंदा । आतमहितकारा । (जय०) ॥ ४ ॥ इण विधि आरति जे भवि करसी । भवसायर तरसी । श्रीजिनचंद अखयपद फरसी । शिव कमला वरसी । (जय०) ॥ ५ ॥ इति श्रीऋषिमंडल आरती ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ ऋषिमंडल सुननेंकी (वा) पूजनेंकी विधि ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (प्रथम) ॥ ❋ ॥ आद्यन्ताक्षर संलक्ष्य० । यह । ऋषमंडलस्तोत्र । धूप, दीपादि, विधि संयुक्त आठ महिनेतक प्रभात समय सुणें । ऋषिमंडल में (जो) मूलमंत्र है (सो) शुभदिन शुभवर्ग्गी । हाथमें फल फूल भेट शक्ति माफक लेई । गुरुके पास जावे । भेट धरके । विनयसंयुक्त मूलमंत्र ग्रहण करे । (उसका) ८००० जाप. आठ महिनामे करे । आंबिल करणेंकी शक्ति होय (तो) सदा करे । नहिं तो । आठम । चवदस । दो आंबिल जरूर करे । आठ महिनां हुयां बाद ऊजमणो करे । ऊजमणेंके दिन १०८ बेरसुणें । पीछे शक्ति होय (तो) विधिसंयुक्त । ऋषिमंडल स्थापन करायके पूजा करे । विशेष शक्ति होय तो (२४) प्रकारी पूजा करावे ।

पूजामें सामग्री ज्यो पहली नवपदजीकी विधके ठिकाणें लिखींहै (सो) सर्व सामग्री इहां (२४) चोईस लेणी। एक एक महाराजकी पूजा पढायके। प्रथम जल। पीछै चंदन। ऐसें अष्टद्रव्य अनुक्रमसें चढावे। (पीछै) संपूर्ण पूजा हुयां बाद। गुरुभक्ति करै। साहमी वत्सल करै। (इहां) विशेषविधि गुरूके मुखसें समझके करणी॥ (यह) ऋषमंडल सुणनेंवाले पूजणेंवाले भव्य जीवोंके घरमें कभी उपद्रव न होगा। सदा आनंद उछाह रहेगा। इत्यलंविस्तरेण। इति ऋषिमंडल सुणनें (वा) पूजन करनेंकी विधि॥

॥ ❀ ॥ अथ विंशतिपद पूजा विधि लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ सुखसंपति दायक सदा। जगनायक जिनचंद। विघनहरण मंगलकरण। नमो नाभि नृप नंद॥ १॥ लोकालोक प्रकासिका। जिनवाणी चितधार। विंशतिपद पूजनतणो। कहिस्युं विधि विसतार॥ २॥ जिनवर अंगै भाषिया। तप जप बहु परकार। विंशतिपद तप सारिसो। अवरन कोई उदार॥ ३॥ दान शील तप जप क्रिया॥ भाव विना फलहीन। जैसें भोजन लवण विन। नही सरस गुणपीन॥ ४॥ जे भवीयण सेवै सदा। भावै थानक वीश। ते तीर्थंकर पदलहै। वंदे सुर नर ईश॥ ५॥ (ढाल) श्री अरिहंतपद १ सिद्धपद २ ध्यावो। प्रवचन ३ आचारिज ४ गुणगावो। स्थविर पंचमपद ५ पुन उवझाया ६। तपसी ७ नाण ८ दंसण ९ मनभाया १ (उल्लालो) मनभाय विनया १० वश्यका ११ मलशील १२ किरीया १३ जानीयै। तप १४ विविध उत्तम पात्र १५ वेयावच्च १६ समाधि १७ वखानीयै। हितकर अपूरव नाणसंग्रह १८ धरो मन सुजगीसए। श्रुतभक्ति १९ फुनि तीरथप्रभावन २० एह थानकवीसए २॥ (ढाल) एथानकवीस २० जग जयकारा। जपतां लहीये जिनपद सारा। करम निकंदे विसवावीसै। भाख्या जग तारक जग दीसै॥ ३॥ (उल्लालो) जगदीश प्रथम जिणंद जगगुरु चरम जिनवर जी मुदा। भव तीसरे पद सकल सेवा लही जिनपति संपदा। बावीस जिनवर सकल सुखकर इंद्र जसु गुणगाइयै। इक दोय त्रिण सहुपद जपीनें तीर्थपति पद पाइये॥ ४॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ अरिहंतादिक पद सदा । भजीये तपकरी सुद्ध । अति निरमल सुभयोगता । करिके तसुगुण वुद्ध ॥ १ ॥ विमल पीठ त्रिक तदुपरे । ठवीये जिनवर वीस २० । पूजन उपगरण मेलि करि । अरचीजे सुजगीस ॥ २ ॥ एक एक ए पदतणी । द्रव्यपूजा परकार । पंच ५ अष्ट ८ विध जानीये । सत्तर १७ इगवीस सार ॥ ३ ॥ अष्ट जातिना कलश करि । विमलजले भरि पूर । पूजो भवीयण पद सहु । होय सकल दुखदूर ॥ ४ ॥ सोहे सहु परमेष्टिमें । जिनवर पद अभिराम । वेद ४ निक्षेपे समरीये । वधते सुभ परिणाम ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ (राग देसाख) पूर्वमुख सावनं करिदसन पावनं ए चाल ॥ ❀ ॥ सकल जगनायकं परमपद दायकं । लायकं जिनपदं विमलभानं (अईयो वि०) चतु रधिक तीस ३४ अतिशय अमल बार १२ गुण । वचन पणतीस ३५ गुणमणि निधानं ॥ १ ॥ (अइयोम०) ॥ सुखकरण जिन चरण पद्मसेवित सदा । भमर सुर असुर नर हृदयहारी (अईयो) एह जिनवर तणी आण पूरण सदा । दाम जिम जगत जन शिरमि धारी (अइ०) ॥ २ ॥ जिनपपद दरस पारस फरसतें हुवे । प्रगट निजरूप परि णति विलासं । तजी वहिरातम गिरीसारता भविलहे । अनुपमं आत्मकांचन प्रकासं (अ०) ॥ ३ ॥ हुवई जिनराज पद जाप रवि किरणतें । तुरत बहु दुरित भर तिमिरनासं । धन चिदानंद वरकंद घन भविलहे । तीर्थंकर चरण कमल विलासं । (अ०) ॥ ४ ॥ वर विवुध मणिलही काच लघु सकलकों । ग्रहण करिवा कवण कर पसारे । तिमलही जिन चरण सरण शुभयोगतें । अवर सुर सरण कुण चित्त धारे ॥ ५ ॥ प्रभुतणे पंचकल्याण केरे दिनें । प्रगट त्रिहुं लोकमें हुइ उजेरो । भविक देवपाल श्रेणिक प्रमुख जिनन मी । बांधीयो गोत्र जिनराजकेरो ॥ ६ ॥ जेह त्रिणकाल नितनमें जिन हरखसुं । तेह भवजल तिरे जनम लीजे । अधिक भव यदिकले तदपि नि श्चय करी । सप्त वलि अष्ट भव करीय सीजे (अइयोक०) ॥ ७ ॥ ❀ ॥ (काव्यं) ॥ ❀ ॥ णमोणंत विन्नाण महंसणाणं । सयाणंदिया मेरु जंतूग

णाणं। भवां भोज विहे यणे वारणाणं । णमो बोहियाणं वराणं जिणाणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भ्योनमः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥
॥ इति प्रथमपदे श्री जिनेंद्र पूजा ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (२) श्री सिद्धपद गुणवर्णन पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ तनु त्रिभागके घटनतें । घन अवगाहन जास। विमलनाण दंसण कीयो । लोकालोक प्रकास ॥ १ ॥ अविनाशी अ मित अचल । पदवासी अविकार । अगम अगोचर अजर अज । णमो सिद्ध जयकार ॥ २ ॥ ❋ ॥ (राग सोरठ) कुंदकिरण ससि ऊजलोरे देवा ॥ ए चाल ॥ ❋ ॥ अनुभव परमानंद सुंरे वाला । परमातम पद वंदोरे । करम निकंदौ वंदिनेंरे वाला । लहि जिनपद चिरनंदोरे ॥ १ ॥ गगन पए संतर वलीरे वाला । समयांतर अण फरसी रे । द्रव्य सगु ण परजायनारे वाला । एक समय विद दरसीरे ॥ २ ॥ एक समय रिजु गति करीरे वाला । भयेय परमपद रामी रे । भांगें सादि अनंत एरे वाला निरुपाधिक सुख धामी रे ॥ ३ ॥ अखिल करममल परिहरी रे वाला । सिद्ध सकल सुखकारीरे। विमल चिदानंद घन थयारे वाला । वर इगतीस गुण धारीरे ॥ ४ ॥ उतपन्नता १ वलि विगमतारे वाला २ । ध्रुवता ३ त्रि पदी संगेंरे । प्रभुमें अनंत चतुक्तारे वाला । सोहै सम क्रम भंगें रे ॥ ५ ॥ पन्नर भेद ए सिद्धथयारे वाला । सहजानंद स्वरूपीरे । परम ज्योतिमें परिणम्यारे वाला । अव्याबाध अरूपी रे ॥ ६ ॥ जिनवर पिण प्रणमें मु दारे वाला । एहनें दीक्षा अवसैंरे । तिण प्रभुपद गुण मालकारे वाला । कंठे धरीयें सुपरें रे ॥ ७ ॥ हस्तिपाल भवि भगति सूंरे वाला । सिद्ध परम पद भजिनेंरे। पद श्री जिनहरषे लह्योरे वाला । परगुण परिणति तजि नेंरे ॥ ८ ॥ (काव्यं) लोगग्गभासे परिसंठियाणं । बुद्धाण सिद्धाण मणिं दियाणं। निस्सेस कम्मक्खय कारगाणं। णमो सया मंगल धारगाणं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्री सिद्धेभ्योनमः ॥ २ ॥ इति द्वितीयपदे श्री सिद्ध पूजा ॥ २ ॥

॥ ❋ ॥ अथ तृतीय प्रवचन पद पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ पद तृतीय प्रवचननमो । ज्यंनभमो संसार । गमो

कुमति परिणमनता। दमो करण जयकार ॥ १ ॥ जैसें जलधर वृष्टितें। अखिल फलद विकसाय। तैसें प्रवचन भक्तितें। सुजपराणित उल्लसाय। २ (श्रीराग) जिनगुणानं श्रुत अमृतं ए चाल ॥❀॥ प्रवचन ध्यानं सुखकरणं। परिहरिये सहु विषय विकारं। करीयें प्रवचन आदरणं ॥ प्रवचन० १ ॥ सप्त भंगि रूपित ए प्रवचन। स्यादवाद मुद्राभरणं ॥ सप्तनयात्मक गुणमणि आगर। बोधिबीज उतपति करणं ॥ प्रवचन० ॥ २ ॥ जैसें अम्रित पान करणतें। हुवई सकल विष संहरणं। तैसें प्रवचन अम्रित पानें। कुमति हला हल प्रविशरणं ॥ ३ ॥ प्र० ॥ प्रवचनकों आधेय कहीयें। सकलसंघ तसु अधिकरणं। तिण एसंघ चतुरविध प्रवचन। एपद अखिल कलुपहरणं ॥४॥ प्र० ॥ यदि भविजन तुमए चाहतुहे। सुगतिरमणि जन वशकरणं। करणतीन इककरि तदकरीये। प्रवचन पद समरण धरणं ॥ ५ ॥ प्र० ॥ जिनवरजी पिण ए तीरथनें। प्रणमें मध्य समवसरणं। भवजल तारण तरणि समानं। एतीरथ अशरण शरणं ॥ ६ ॥ प्र० ॥ जिम भरतेसर संघ भगतिकरी। ल हीयो पुण्य फलाचरणं। चक्रीपद अनुभवि वलि शिवपद। लीधकरीय कम निरजरणं ॥ प्र० ॥ ७ ॥ नरपति संभव जिनहरपे करि। आराधी प्रवचन चरणं। करम निकंदि थया जगदीसर। जिन परमातर आभरणं ॥ प्र० ॥ ८ ॥ (काव्यं) ॥ अणंत संसुद्ध गुणाकरस्स। दुक्खंधया रुग दिवाकरस्स। अशंत जीवाण दयागिहस्स। णमो णमो संघ चउव्विहस्स ॥ ९ ॥ (ॐ ह्रीँ श्री प्रवचनायनमः) ॥ ३ ॥ इति तृतीयपदे श्री प्रवचन पूजा ॥ ३ ॥ ॥❀॥

॥❀॥ अथ चतुर्थ आचार्यपदपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ पदचतुर्थ नमीये सदा। सूरीसर महाराज। सोहम जंबू सारिसा। सकल साधु सिरताज ॥ १ ॥ सारण वारण चोयणा पडि चोयण करनार। प्रवचन कज विकसायवा। सहसकिरण अवतार ॥ २ ॥ (राग रामगिरी) गावत्तुहे जिनमनरंगसुंदेवा (ए चाल) ॥ ❀ ॥ आचारिज पद ध्याईयेरे वाला। नामविमल गुणगाईये ॥ पाईये (हांरेवाला) पाईये ॥ जिनपतिपद जग शिरतिलो रे ॥ १ ॥ आचारिज० ॥ जिनशासन उजवालनारे वाला। सकलजीव प्रतिपालना ॥ पालना (हांरेवाला)

पालता ॥ चरण करण मंग चालतारे ॥ २ ॥ आचारिज० ॥ सूरि सकल गुण सोहतारे वाला । सुर नर जन मनमोहता ॥ मोहता (हांरेवाला) मो० । भवीयणनें पमिबोहतारे ॥ ३ ॥ आचा० ॥ पंचाचार विराजितारे वाला। सजल जलद जिम गाजता ॥ गाजता (हांरेवाला) गाजता ॥ सूरि सकल शिर गाजतारे ॥ ४ ॥ आ०॥ उपदेशामृत वरसतारे वाला । दुरितताप सहु निरसिता ॥ निरसिता (हांरेवाला) निरसिता ॥ परमातम पद फरसतारे॥५॥ आचा० ॥ धरम धुरंधरता धरारे वाला । जगत्रांधव जगहितकरा ॥ हितकरा (हांरेवाला) हितकरा ॥ स्व परसमय विज्ञ गणधरारे ॥ ६ ॥ आ० ॥ पद श्री जिनहरषे ग्रह्योरे वाला । सूरीशर पद तपवह्यो । तपवह्यो (हांरेवाला) तपवह्यो । पुरुषोत्तम नृप शिव लह्योरे ॥ ७ ॥ आ० ॥ (काव्यं) कुवादि केली तरु सिंधुराणं । सूरीसराणं मुणि बंधुराणं । धीरत्त संताजिय मंदराणं । णमोसया मंगल मंदिराणं ॥ ८ ॥ (ॐ ह्रीँ श्री आचार्येभ्योनमः) ॥४॥❋॥ इति चतुर्थपदे श्री आचार्यपूजा ॥ ४॥ ॥ ❋ ॥ ॥❋॥

॥ ❋ ॥ अथ पंचम थिवर पदपूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ (दूहा) ❋ ॥ दुविध थविर जिनवर कह्या । द्रव्य भाव प्रकार । लौकिक लोकोत्तर वली । सुनियै भेद विचार ॥१॥ जनकादिक लौकिक थविर । लोकोत्तर अणगार । पंचमपदमें जानियै । दुतीय थविर अधिकार ॥ २ ॥ (सारंगराग) ॥ नितनमीयै थविर मुनीसरा । पंचमहाव्रत धारक वारक । कुमति जगत जन हितकरा ॥ १ ॥ नितनमीयै० ॥ २ ॥ संयमयोगे सीदत वालक । ग्लानादिक सहु मुनिवरा । एहनें उचित सहाय दीयणतें । वारे एहना दुखभरा ॥ २ ॥ नित० पर्याय वय श्रुति त्रिविध ए थविरा । वीसरु साठ समोपरा । वयधर समवायादिक पाठक । एहथविर गुणआगरा ॥ ३ ॥ नित० ॥ तीजैअंग कह्या दशथविरा । रतनत्रयीना गुणधरा । तेइह निरमलभावें ग्रहिवा । भविक सरोज दिवाकरा ॥ ४ ॥ नित्त० ॥ क्षीर जलधि सम अतिह गंभीरा । सुरगिरी गुरु धीरज धरा । शरणागत तारणता धारा । ग्यान विमल जल सागरा ॥ ५ ॥ नित० ॥ श्रुत तप धीरज ध्यान करणतें । द्रव्यादिक ग्याताविरा । तेह स्वरूप रमण थवि

राकह्या । नहिय धवल केशांकुरा ॥ ६ ॥ नित० ॥ एह थविर पद सेवी जग ते । पद्मोत्तर वसुधेसरा । पद श्रीजिनहरषे तिण लहीयो । मुनिवर कुमुद निशाकरा ॥ ७ ॥ नित० ॥ (कलश) सम्मत्त संयम पतित भविजन थ्र हिन थिरकरता जला । अवगुण अदूषित गुणविभूषित चंद्रकिरण समुज्ज ला । अष्टाधिका दशसहस शीलांगरथ रुचिर धाराधरा । भवसिंधु तारण प्रवर कारण नमो थविरमुनी सरा ॥ ८ ॥ (ॐ ह्रीँ श्रीस्थविरायनमः) ॥५॥ ❀ ॥ इति पंचमपदे श्रीस्थविरपूजा ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ षष्टपदे श्री उपाध्याय पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ प्रवर नाण दरशण चरण । धारक यतिभ्रम सार । समितिपंच त्रिणगुप्तिधर । निरुपम धीरजधार ॥ १ ॥ ❀ ॥

(राग भैरव) ॥ पंचवरणी अंगीरची कुसुमजाती (ए चाल) ॥ ❀ ॥ भावधरी उवझायावंदो विजयकारी । श्रीउवझाय परमपद वंदी । लहो जिनपद अतिशय धारी ॥ १ ॥ भाव० ॥ कुमती मदतरु भंजन सिंधुर । सुमतिकंद घन अवतारी । अंगडुवालस भणय भणावे । शिष्यभणी चित हितधारी ॥ २ ॥ भाव० ॥ सकल सूत्र उपदेश दीयणते । वाचक अति विमलाचारी । भव तीजे अभिन सुखपामे । सुर असुरेंद्र मनोहरी ॥ ३ ॥ भाव० ॥ हय ग ज वृष पंचानन सरिषा । करमकंद वर नर वारी । वासुदेव वासव नृप दिन कर । विधु भंभारि तुलाधारी ॥ ४ ॥ भाव० ॥ जंबू शीतानदि कांचनगि रि । चरमजलधि उपमभारी । एउपमा बहुश्रुतनी जाणो । उत्तराध्ययन कहीसारी ॥ ५ ॥ भाव० ॥ अमल पंचविंशति गुणमणि निधि । स कल भुवन जन उपगारी । शंशय तिमिर हरण वासरमणि । पाप ताप भानपवारी ॥ ६ ॥ भाव० ॥ प्रवर शंख पय भरीयो सोहे । तिमग्यान चरण वारी । महेंद्रपाल पाठक पद सेवी । लहीयो जिनपद विजितारी ॥ ७ ॥ भाव० ॥ (काव्यं) सव्वोहिबीजं कुरकारणाणं । णमो णमो वायग वारणाणं । कुबोहिदंतो हरिणोसराणं । विमोय मंताव पयोहराणं ॥ ८ ॥ (ॐ ह्रीँ श्रीउपाध्यायेभ्योनमः) ॥६॥ इतिषष्टपदे श्रीउपाध्यायपूजा॥६॥❀॥

॥ ❋ ॥ अथ सप्तम साधुपद पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जाणें जिनवाणी सरस । स्याद्वाद गुणवंत । मुनिकहीयै सिव पंथनें । साधे साधुकहंत ॥ १ ॥ समतारस जलझीलता । विशदानंद सुरूप तिण पांम्यो पद सप्तमें । नमोनमों मुनिभूप ॥ २ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

(राग गुंफमिश्रित भीम म०) मेघवरसेजरी पुष्फवादल करी ए चाल ॥ भक्तिधरि सातमें पद भजो मुनिवरा । सुखकरा विजित इंद्रिय विकारा । गुण सत्तावीस भूषणकरी शोभिता । क्षोभिता विकट क्रम सुभट सारा ॥१॥ भक्ति० ॥ चरणसत्तरि परम करणसत्तरि धरा । शिवकरण नाण किरिया प्रधाना । प्रतिदिनें दोष आहारना वरजिता । सप्तचालीस यतिध्रम निधाना ॥२॥ भक्ति० ॥ मदनमद भंजता कुमति जन गंजता । भक्तजन रंजता क्षांतिधरीया । सुमति धरिया सदा चरण परीयाजना । तारीया ग्यान गंभीर दरीया ॥ ३ ॥ भक्ति० ॥ त्रिणमणी समगिणें चतुरविध धरमना । परम उपदेश दायक उदारा । बहिर भ्यंतर भिदा बारविध अतिकठिन । तपतपै सकलजीउ अभयकारा ॥ ४ ॥ भक्ति० ॥ वलि अठावीस मनहरण गुण लबधि निधि । सातमें छठ गुणठाण वसीया । सप्त भयवारका प्रवर जिन आगन्या । धारका स्वगुण परिणमन रसीया ॥ ५ ॥ भक्ति० ॥ पंचपरमाद कल्लोलता कुलमहा । पारसंसार सागर जिहाजा । विविध नववाडि युत शीलव्रतके धरा । मधुर निजवाणि रंजित समाजा ॥ ६ ॥ भक्ति० ॥ कोडि नवसहस थुणीये महा मुनिवरा । वीरभद्र जिमकरीय साधुसेवा । परमपद जिनहरष सुग्रह्यो तसुतणा । चरणकज युगनमें सकलदेवा ॥ ७ ॥ भक्ति० ॥ (काव्यं) संतज्जिया सेस परीसहाणं । निस्सेस जीवाण दया गिहाणं । सन्नाण पज्जाय तरूवणाणं । णमोणमो होउ तवोधणाणं ॥ ८ ॥ (ॐ ह्रीँ श्री सर्व साधुभ्योनमः) ॥ ७ ॥ इति सप्तमपदे श्री साधु पूजा॥❋॥

॥ ❋ ॥ अथ अष्टम ज्ञानपद पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ विमलनाण खर किरण किय । लोका लोक प्रकाश । जीतलई निजतेजसें । जिन अनंत रविभास ॥ १ ॥ सहु संशय तम अपहरे । जय जय नाणदिणंद । नाण चरण समरण थकी । विलय होय दुखदंद

॥ २ ॥ ❀ ॥ (राग घाटो) मेरो मन वसकर लीनो । ए चाल ॥ ❀ ॥ भावे ग्यान वंदन करीये । शिवसुख तरुकंद । भावे० ॥ जिनचंद्र पद गुण धरीये । वरीये परम आनन्द ॥ १ ॥ भावे० ॥ मतिनाण श्रुत २ पुनरवधि ३ । मनपर्यव ४ जाण ॥ भावे० ॥ लोकालोकभाव प्रकाशी । वर केवल नाण ५ ॥ भावे० ॥ २ ॥ पंच ए इकावन ५१ भेदे । कह्यो जिनवर भान ॥ भावे० ॥ जगजीव जमता छेदे । ग्यानामृत रसपान ॥ भावे० ॥ विणग्यान कीधी किरिया । होय तसुफल ध्वंस ॥ भावे० ॥ महाफल प्रगट ए करीये । जिम पय जल हंस ॥ भावे० ॥ ४ ॥ वरनाण सहितसु किरिया । करी फल दातार ॥ भावे० ॥ हुवो ग्यान चरण रसीला । लहो भवजल पार ॥ भावे० ॥ ५ ॥ ग्यानानंद अमृतपीधो । भरतेसर महाराय ॥ भावे० ॥ तिणसें अमृतपद लीधो । सुरपति गुणगाय ॥ भावे० ॥ ॥ ६ ॥ सेवीग्यान जयत नरेशे । भये जिन महाराज ॥ भावे० ॥ सोहेग्यान ए त्रिभुवनमें । सहुपरि सिरताज ॥ भावे० ॥ ७ ॥ (काव्यं) दव्व पजाय गुणकरस्स । सयापयासी करणोद्धुरस्स । मिछत्त अन्नाण तमोहरस्स । णमो णमो नाण दिवायरस्स ॥ ८ ॥ (ॐ ह्रीँ श्रीज्ञानायनमः) ॥८॥ ॥❀॥ इति अष्टमपदे श्रीज्ञानपूजा ॥ ८ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवमी दर्शन पदपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ दर्शण आश्रय धर्म्मनो । एहना पट उपमान । दरशण विण नहि चरणविद । उत्तराध्ययने जान ॥ १ ॥ जिणदरशण फरस्यो भलो । अंतर महुरति मान । अरधपुग्गल परियटरहे । तसु संसारवितान ॥ २ ॥ ❀ ॥ (राग कामोद) चंपक केतक मालतीए । अडयो मालती ए ॥ (ए चाल) ॥❀॥ जिनदरसण मुफ मनवस्यो ए । (अड्यो मनवस्यो ए) । उपजत परम आनंद । जिनदरशन दरशन दीये । विमलनाण तरुकंद ॥ १ ॥ दरशण मोहरिपु जीर्नाया ए ॥ (अड्यो०) वर दरशण उल्लसंत । दरशण घट परगट हुआ । भवीयण भव भन्नमंत ॥ २ ॥ जिनवरदेव सुगुरु मनी ए । केवली कथित जिनधर्म । जीवनतत्त्व परिणतिरमें । ते दरशण फले शर्म ॥ ३ ॥ जिनप्रभु वचनो परि सदा ए ॥ (अड्यो०) ॥ थिर

शरदहण धरंत । इण लक्षणनें जानीयै । समकितवंत महंत ॥ ४ ॥ इग, डुग, ति, चो, शर, दश, विहा ए । (अइयो०) सतसठि ६७ भेद विचार । वलि परनीति समकित भएयो । द्रव्य भाव परकार ॥ ५ ॥ द्रव्यें जिनदरशण कह्योए । भावै समकित सार । द्रव्यत दरशण भावतो । दरशण कारणधार ॥ ६ ॥ द्रव्य दरश यदि गतबलीये । तदपि उत्तर हितकार । शय्यंभव जिनदरशणें । पायो दरशण सार ॥ ७ ॥ दरशण विण किरिया हता ए । अंकविना जिम बिंदु । वलि हणीयो विण चंद्रिका । वासरमें जिम इंदु ॥ ८ ॥ हरिविक्रम नृप सेवतोए । दरशण पद अभिराम । पद श्रीजिन हरषै धरयोए । वधते शुभपरिणाम ॥ ९ ॥ (काव्यं) अणंतविन्नाण सुकारणस्स । अणंत संसार विदारणस्स ॥ अणंत कम्मावलि धंसणस्स । णमो णमो निम्मल दंशणस्स ॥ १० ॥ (ॐ ह्रीं श्री दर्शनायनमः) ॥ ९ ॥ ❋ ॥ इति नवमपदे श्रीदर्शनपूजा ॥ ९ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (१०) बिनयपद पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ ❋ ॥ विनय भुवन रंजन करै । विनयै जस विसतार । विनय जीउ भूषित करै । विनयै जय जय कार ॥ १ ॥ विनयमूल जिनधर्म्मनो । विनय ग्यान तरु कंद । विनय सकलगुण सेहरो । जय जय विनय सभंद ॥ २ ॥ (राग सामेरी) पूजोरीमाई जिनवर (ए चाल) ॥ ❋ ॥ ध्यावोरीमाई विनय दशमपद ध्यावै । पंच भेद, दश विध, तेरस विध । वावन भेद गणेशैं ॥ ध्या० ॥ वासठ भेद कह्या आगममें । विनयतणा सुविसेसै ॥ १ ॥ ध्या० ॥ तीर्थंकर १ सिद्ध २ कुल ३ गण ४ संघा ५ । किरिया ६ ध्रम ७ वरनांणा ८ ॥ ध्या० ॥ नांणी ९ आचारिज १० मुनिथविरा ११ । पाठक १२ गणि १३ गुणजाणा ॥ २ ॥ ध्या० ॥ ए अरिहादिक तेरसपदनो । विनयकरै जेभावे ॥ ध्या० ते तीर्थंकरपद अनुभविनें । अमृतपद सुखपावे ॥ ३ ॥ ध्या० ॥ जिमकांचनमें मृदुगुण ला । नहीय कालिमा पावे । ध्या० ॥ तिणए सकल धातुमें उत्तम । नाम कल्याण कहावे ॥ ४ ॥ ध्या० ॥ तिमविनयीमें है मृदुतागुण । कुमति कठिनता नासे ॥ध्या०॥ कृष्णादिक लेश्यानी मलीनता । जाये विनयगुण भा

से ॥ ५ ॥ ध्या० ॥ दोयसहस अरु अधिक चिहुत्तर। देववंदन निरधारो ॥ ध्या० ॥ गुरुवंदन विधि च्यारसे बाणुं। भेदकरी उरधारो ॥ ६ ॥ ध्या० ॥ तीर्थंकरादिकनो मनरंगे। विनय चरण शुभध्यायो। धननामा भवि नामि जिनहरषे। तीर्थंकर पद पायो ॥ ७ ॥ ध्यावो० ॥ (काव्यं) आणंदिया से स जगज्जणस्स। कुंदिंदु पादा मलता चणस्स। सुधम्म छत्तस्स दयासयस्स। णमो णमो श्रीविनयालयस्स ॥८॥ (ॐ ह्रीं श्री विनयायनमः) ॥ १० ॥ इति दशमपदे श्रीविनयपूजा ॥ १० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (११) चारित्र पदपूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ इग्यारम पद नितनमुं। देश सरब चारित्र। पंक मलिनता दूरकरि। चेतन करै पवित्र ॥ १ ॥ एह चरण सेवन करै। रंकथकी सुरराय। तीन जगतपति पद दीये। जसु सुर नर गुणगाय ॥ २ ॥ (राग सारंग) बावना चंदन घसि कुमकुमा (ए चाल) ॥ चरण शरण सुभ मन हरख्यो। सुखकरण हरण वन पापए। (हांहो रे वाला)। एह चरण जलधर हरे। अग्यान तरुण तर तापए ॥ १ ॥ हां० ॥ आठ कषाय निवारनां। देशविरति प्रगट हुवे खासए ॥ हांहो रे० ॥ बार कषाय निवारीया। सम विरतिलहे गुणवासए ॥ २ ॥ हां० ॥ इगवासर सेव्यो थको। शुध सरबसं वर चारित्रए ॥ हां० वाला ॥ परमानंद घन पददीये। सुरलोक जनित सुख चित्रए ॥३॥ हां० वाला ॥ भव जय तरुगण छेदिवा। एसंयम निशित कुठारए ॥ हां० वाला ॥ ग्यान परंपर कारणे। अभिनपदनो हितकारए ॥ ४ ॥ हां० वाला ॥ चरण अनंतर कारणे। निरवाण तणो निरधारए ॥ हां० वाला ॥ सरवविरति सुचरणमें। पामे अरिहंत पदसारए ॥ ५ ॥ हां० वाला ॥ वरस चरण परजायमें। अनुत्तरसुख अतिक्रम होयए ॥ हां० ॥ वाला ॥ सतरभेद चारित्रना। कह्या जिनआगम जोयए ॥६॥ हां० वाला ॥ देशथी सम संयम किये। उज्जलना अनंतगुण थायए ॥ हां० वाला ॥ अरुणदेव सेवी चरणनें। भये जगगुरु जिन महारायए ॥ हां० ७ ॥ (काव्यं) कम्मोघ कंतार दवानलस्स। महोदयानंद लयाजलस्स। विन्नाण पंकेरुह

काणणस्स। णमोचरित्तस्स गुणापणस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री चारित्रायनमः ११ ॥ इति एकादशपदे श्री चारित्र पूजा ॥ ११ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (१२) ब्रह्मचर्य पद पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा) ॥ ❋ ॥ सुरतरु सुरमणि सुरगवी। कामकलश अवधार। ब्रह्मचर्य इणसम कह्यो। कामित फल दातार ॥ १ ॥ जिम जोतिषीयां रज निकर। सुरगणमें सुरराय । तिम सहुव्रत शिर सेहरो । ब्रह्मचारज कहिवाय ॥ २ ॥ (राग ख्याल) भला प्रभुगुण वालाहो (ए चालमें) ॥ ❋ ॥ भव भय हरणा, सिवसुख करणा; सदा भजोब्रह्मचारा (मैंवारी जाउं) सदाभजो० हो ॥ भव० ॥ शील विबुध तरु पालन करिवा। कहि जिनवर नववाराहो। दिव्योदारिक करण करावण । अनुमति विषय प्रकाराहो ॥ १ ॥ भव० ॥ त्रिकरण जोगै ए परिहरीये । भवीयै भेद अढाराहो ॥ भव० ॥ कनक कोडिनो दानदीयै नित। कनकचैत्य करताराहो ॥ भ० ॥ २ ॥ एह थी ब्रह्मचारज धारकनो। फल अगणित अवधारा हो ॥ भ० ॥ सहस चौरासी श्रमणदानफल। ब्रह्मव्रत फल समसाराहो ॥ भ० ३ ॥ विजयसेठ विजयासेठानी। उभयपक्ष्य ब्रह्मधाराहो ॥ भ० ॥ भये सुदर्शन सेठ शीलसे सुगतिवधू भरतारा हो ॥ भ० ४ ॥ सहस अढार शीलांग रथधारा। धारिकरे निसतारा हो ॥ भ० ॥ सिंहादिक वसुभय तरु भंजन। कुंजर मद मतवारा हो ॥ ४ ॥ भ० ॥ कलहकारि नारदरिषि सरिषे । तरथा भवजलधि अपारा हो ॥ भ० ॥ पच्चक्खाण विरति नहि एहमें। ए ब्रह्मव्रत उपगारा हो। भ० ॥ ५ ॥ सकल सुरासुर किन्नर नरवर। धरीय भगति हितकाराहो ॥ भ० ॥ ब्रह्मचारज व्रत धर नरवरके। प्रणमें चरण उदारा हो ॥ भ० ६ ॥ दशम अंग भणियो नरवर्मा। नरपति गुण आधारा हो ॥ भ० ॥ ब्रह्मचारिज व्रत पालि लह्योपद। जिनहरषे जयकारा हो ॥ भ० ॥ ७ ॥ (काव्यं) सग्गापवग्गग्ग सुहप्पयस्स । सुनिम्मलाणंत गुणालयस्स। सच्चव्वयाभूसण भूसणस्स णमोहि शीलस्स अदूसणस्स ॥ ८ ॥ (ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मचर्यायनमः) ॥ १२ ॥ इति द्वादशपदे श्री ब्रह्मचर्य पूजा ॥ १२ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ॐ ॥ अथ (१३) किरियापद पूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (दूहा) ॥ ॐ ॥ करम निरजरा हेतुहे । प्रवर क्रिया गुणखाण जिनशासननी स्थिति रही । किरिया रूपे जाण ॥ १ ॥ भुवनमांहि किरियाम ही । सकलशुद्ध विवहार । प्रवरनाण दरशण तणो । शुधकिरिया शिणगार ॥ २ ॥ (राग मालवी गौडी) ॥ भव अरतिमथन सुदारधूपं (ए चालमें) शुभध्यान किरिया हृदय धरिनें । धर्म सुक्ल उर धारे । आर्त्त रौद्रनी हेतु किरिया । अशुभ पणवीस वाररे ॥ १ शु० ॥ ग्यानवंत अशस्त्र भटहे । क्रिया शस्त्र वतंसरे । सुभटनाणी कियाशस्त्रे । करयकर्म अरिध्वंसरे ॥ २ ॥ शु० ॥ ग्यानमेती वदे शिव यदि । तेरमें गुणठाणरे । एकनाणें तद जिणेसर । कि मुनलहे निरवाणरे ॥ ३ ॥ शु० ॥ जिनप शैलेशी करण करि । चवदमें गुण ठाणरे । सरवसंवर चरण करणों । लहे पद निरवाणरे ॥ ४ ॥ शु० ॥ ए अ नंतर अमृतकारण । कह्यो जिनवर भाणिरे । सरव संवर चरण किरिया । न शिव इणविनु जाणिरे ॥ ५ ॥ शु० ॥ एकनाणें इक कियामें । नशिव वितरण शक्तिरे । कहे जिनवर उत्तरयोगे । लहे भविजन मुक्तिरे ॥ ६ ॥ शु० ॥ गर लमिश्रित सरस भोजन । अशुभ परिणति धाररे । अमृतसंयुत तेहभोजन रुचिर परिणति काररे ॥ ७ ॥ शु० ॥ ग्यानसहिना तेमकिरिया । करिकरे नि सताररे । ग्यानविन किरियानदीपे । मनोमन फलसाररे ॥ ८ ॥ शु० ॥ ग्या नपरिणति सुधी किरिया । तेह किरिया साररे । जयो हरिवाहन जिनेसर । सुध किरिया धाररे ॥ (काव्यं) विशुद्ध सन्नाण विभूषणस्स । सुसद्धि संप त्ति समुपोषणस्स । णमो सदाणंत गुणप्पदस्स । णमोणमो सुद्धकिया पदस्स । ॥ १० ॥ (ॐ ह्रीँ श्री क्रियायैनमः ॥ १३ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ इति त्रयोदशपदे श्री क्रियापद पूजा ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ (१४) तपपद पूजा लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (दूहा) ॥ ॐ ॥ शमतारस युत तप रुचिर । भणियो जिन जगभांन । शिव सुखसुख नंदन फलद । नंदन विपिन समान ॥ १ ॥ स घन करम कानन दहन । करन विमल तपजांन । विपिन धूमकेतन समो । जय तप सुगुण निधान ॥ २ ॥ (राग कल्याण) नेमी पूजावनी हे रूसमें

(ए चाल) ॥ मेरीलगी लगन तप चरणें ॥ सकल कुशलमैं प्रथम कुशलए। दुरित निकाचित हरणें ॥ १ ॥ मेरी॰ ॥ जैसें चक्रवाककी अरुणें । चकोरकी हिमकर किरणें ॥ मेरी॰ ॥ जैसें गणधरकी जिनचरणें । चातककी जलधरणें॥२॥ मे॰ ॥ जिनवर पिण तदभव शिवजाणें । त्रिण चउ नाण सुकरणें ॥ मे॰ ॥ तदपि सुकोमल करण चरणनें । ठवय कठिन तप करणें ॥ ३ ॥ मे॰ ॥ कपटसहित तप चरण धरणतें । वांछित फल नवितरणें ॥ मे॰ ॥ नितए दंभ रहित तपपदके । सुरपति गण गुण वरणें ॥ ४ ॥ मे॰ ॥ पीठ महापीठ मुनि मल्लीजिन । पूरव भव तप सरणें ॥ मे॰ ॥ रहीया तदपि कपट नवि छंड्यो । भये स्त्री गोत्रा चरणें ॥ ५ ॥ मे॰ ॥ दृढप्रहारि पांम्व घन करमी । छंड्या करमा वरणें । तपसें शोभलही त्रिभुवनमें । केवल कमला भरणें ॥ ६ ॥ मे॰ ॥ लाख इग्यारह असीहजारा । पंचसय शर दिन खिरणें । मासखमण करि नंदन मुनिवर । पांम्यो फल शिव धरणें ॥ ७ ॥ मे॰ ॥ तपकरीयो गुणरयण संवछर । खंधक समता दरणें । चवदसहस मुनिमें कह्यो अधिको । धन्नों तप आचरणें ॥ ८ ॥ मे॰ ॥ बाहिर भ्यंतर भेदै एतप । बारभेद अधिकरणें । वसिनें कनककेतु पांम्योपद । जिनहरषे भवतरणें ॥ ९ ॥ (काव्यं) लच्छी सरोजा वलिता वणस्स । सरूव संलग्ग सुपावणस्स । अमंगला नोकुह दुदवस्स । नमो नमो निम्मल सत्तवस्स ॥ १० ॥ (ॐ ह्रीं श्रीतपसे नमः) ॥ १४ ॥ ❋ ॥ इति श्रीतपपूजा ॥ १४ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (१५) गौतम गणधर पदपूजा लि॰ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ ❋ ॥ गौतमगणधर पनरमें । पदसेवो सुप्रसन्न । वलि सहु जिन गणधर नमो । चवदेसे बावन्न ॥ १ ॥ दान सकल जग वस करे । दानहरे दुरितारि । मन वांछित सहु सुख दीये । दान धरम हितकारि ॥ २ ॥ (राग सोरठ) ॥ मेंतेरी प्रीति पीछानीहो प्रभुमें (ए चाल) पनरम पद गुनगाना हो भवी । पनरमपद गुणगानाहो ॥ आं॰ ॥ भावधरी करीये मनरंगे । परम सुपात्रे दानाहोभवी ॥ पनर॰ ॥ १ ॥ पात्र कह्या द्रव्य भाव दुभेदे । द्रव्य लछन ए जाना हो भवी ॥ पन॰ ॥ सरवोत्तम उत्तम हुवे भाजन । रतन कनक रूपाना हो भवी ॥ २ ॥ पनर॰ ॥ मध्यमपात्र

कहीजै एहवा। ताम्रधातु निपजाना होभवी ॥ पनर० ॥ पात्र लोहादिक अ पर जातिना। तेह जघन्य कहाना हो भवी ॥ पन० ॥ ३ ॥ भावपात्रनो लक्षन कहीयै। सुनीयें सुगुण सयाना हो भवी ॥ पन० ॥ पंचम चरण धरैं वलिवरतै। क्षीणमोह गुणठाना होभवी ॥ पन० ॥ ४ ॥ रतनपात्र सम ते सर्वोत्तम। पात्र कह्या जिनभानाहो भवी ॥ प० ॥ प्रवरनाण किरियाधर मुनिवर। लाभालाभ समाना हो भवी ॥ प० ॥ ५ ॥ ते कांचन भाजन सम कहीया। भवजल तारन यांना हो भवी ॥ पन० ॥ सुधमन द्वादशव्रत दरशनधर। तारपात्र सम जांना हो भवी ॥ पन० ॥ ६ ॥ सुध समकित धर श्रेणिक परमुख। रह्या अविरत गुनठाना हो भवी ॥ प० ॥ ताम्रपात्र सम एहनें कहीयै। भावी गुण मणि खाना हो भवी ॥ पनर० ॥ ७ ॥ अपर सकल जन मिथ्यादृष्टी। लोहादिपात्र गिनाना होभवी ॥ पन० ॥ जिनशासन रंगै रंगाना। वाचंयम सुप्रमाना हो भवी ॥ पन० ॥ ८ ॥ एहनें दानदीये शिव लहीयै। एह सुपात्र पहिचाना हो भवी ॥ पन० ॥ पंचदान, दसदान, निकरमै। अभय सुपात्र महिराना हो भवी ॥ पन० ॥ ९ ॥ नरवाहन सुभपात्र दानतें। भये जिनहरष निधानाहो भवी ॥ पन० ॥ सालिभद्र वलि सुरसुख लहीयो। सुरनर करय वखाना हो भवी ॥ पनर० ॥ १० ॥ (काव्यं) अणंत विन्नाण विभाकरस्स। कुवालसंगी कमलाकरस्स। सुलद्धवासा जरगोयमस्स। णमो गणाधीसर गोयमस्स ॥ ११ ॥ (ॐ ह्रीँ श्री गौतमाय नमः) ॥१५॥ इति पंचदशपदे सुपात्रदानाधिकारे श्री गौतम पूजा ॥ १२ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (१६) वेयावच्च पदपूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ ❋ ॥ सोलमपदमें जानीये। वेयावच्चविधान। अखिल विमलगुण मणितणो। सोहै प्रवरनिधान ॥ १ ॥ जिन, सूरी, पाठक, मुनी। बालक, वृद्ध गिलांन, । तपसि, चैत्य, संघनो, करो। वेयावच्च प्रधान ॥ २ ॥ (राग) वालोह्मांरो कव मिलसी मन मेलू (ए चाल) सेवो भाई सोलमपद सुखकारी। श्रीजिनचंद्र प्रमुख दश पद नो। करल वेयावच्च भारी ॥ सेवो० ॥ श्रीतीर्थंकर त्रिभुवन शंकर। अवर केवली हारी। मन पर्यव धर अवधिनाण धर। चउद पूरव श्रुतधारी ॥ २ ॥ सेवो० ॥ दशपू

र्वी उत्कृष्ट चरणधर । लब्धिवंत अणगारी । एजिन कहीये इनवंदनतें। नविहुवै जिनअवतारी ॥ ३ ॥से०॥ जिनमंदिर बिंब करण करावै। पूजकरै म नुहारी । वेयावच्चकही ए जिनकी । करीये भवजल तारी ॥ ४ ॥ से० ॥ आचारज परमुख नवपदको । वेयावच्च विजितारी । भगतिपूर्व वस्त्रौषध अन्नजल। देवै गुण विस्तारी ॥ ५ ॥ से० ॥ पंचसय मुनिनी करीय वेयावच्च पूरबभव व्रतधारी । भरत बाहुबल चक्रीपदभुज । बललह्यो वरी शिवना री ॥ ६ ॥ से० ॥ नंदिषेण सुलसा मुनिजनकी । करीय वेयावच्च सारी। तिणसें सरगलोकमें ड्डयकी। भईय प्रसंसाभारी ॥ ७ ॥ से० ॥ इत्यादिक सो लमपद उधरै । बहुलभव्य कमजारी । तिणसें इणवेयावच्च पदकी। वारी जाउं बारहजारी ॥ ८ ॥ से० ॥ नृपजीमूत केतु सोलमपद । सेवीभयेदुख वारी। श्रीजिनहरष धरी हरिवंदत । शरणागत निसतारी ॥ ९ ॥ (काव्यं) मणुणसव्वा तिसयासयाणं। सुरासुराधीशर वंदियाणं। रवींदुबिंबा मल सग्गु णाणं। दयाधणाणं हि नमोजिणाणं॥ १० ॥ (ॐ ह्रीं श्रीजिनेभ्यो नमः)॥ ॥ १६ ॥ ❋ ॥ इति षोमशपदे श्रीवैयावृत्यपूजा ॥ १६ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (१७) समाधिपूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ ❋ ॥ सतरमपदमें सेवीये । सहु सुखकरण समाधि। जिण सेवनतें भविकनो । गमें व्याधि अरुआधि ॥ १ ॥ ब्रह्मनगर पथि विचरतां। वर पाथेय समान। ए समाधिपद जानीये । सुरमणि किय हेरान ॥ २ ॥ वाजे तेराविडुआ (इस कैरवारी चालमें) ॥ ❋ ॥ मेरोरे समाधि चरण चित वसीयो ॥ चर० ॥ तसुगुण समरणि कियो मनुवसीयो ॥ मे० ॥ सकल जगत जन जिनकुं स्तवतुहै । अनुभव रंगै अतिह विकसीयो ॥ १ ॥ मे० ॥ द्रव्यत भावत दुविध समाधि । सुरतरु मांनुं नित भुवन विलसीयो। मे०। अशन वसन सलिलादिक भक्ती। करय संघनी करुणा रसीयो ॥ मे० ॥ २ ॥ द्रव्यसमाधि प्रथम एसुनिये । कह्यो जिन लोकालोक दरसीयो ॥ मे० ॥ सारण वारण चोयण प्रमुखे। पतित सुथिरकरै श्रममें हरसीयो ॥ मे० ॥ ३ ॥ भावसमाधि दुतीयए कहीये। जोकरे सो जिनचरण फरसीयो॥ मे० ॥ सकल संघकों जो उपजावत। दुविध समाधि दुरित तसु नसीयो ॥ ४ ॥ मे० ॥ सु

मति पंच त्रिण गुपति धरैनित । सुरगिरिवरनो धीरज करसीयो ॥ मे० ॥ जगतजंतु अघतपति हरणकुं । अनुभव अम्रित धार वरसीयो ॥ ५ ॥ सुकल अनिल करमेंधन दाहत । जिणसें परगुण परिणति खिसीयो ॥ मे० ॥ ए मुनि तरणि तेज सम दीपत । अमृत सुखामृत पान तिरसीयो ॥ ६ ॥ मे० ॥ इणपदमें औसे मुनिजनके । समरणतें हुय जग अवतसीयो ॥ मे० ॥ एप दसेवी नृपतिपुरंदर । भये जगपति जिनहरष उल्लसीयो ॥ ७ ॥ (काव्यं) सव्विंदिया पार विकार दारी । अकारणा सेस जणोवगारी । महाभवातंक गणापहारी । जयोसदा सुद्ध चरित्त धारी ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीचारित्रधारिभ्योनमः

॥ ❋ ॥ अथ (१८) अपूर्व श्रुतग्रहण पदपूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ ❋ ॥ श्रुत अपूर्व ग्रहिवो सदा । अष्टादश पदमांहि । इणपद सेवक जनतणा । सहु संकट भय जांहि ॥ १ ॥ जैसी कुमति विशुद्धता । घोर तपैकरि होय । तत् अनंत गुणि शुद्धता । सुग्यानीकी जोय ॥ २ ॥ ❋ ॥ दिलदार यार गबरू । राखुंरे घुंघटदा पटमें (ए चाल) ॥❋॥ जिनचंद्र ग्यान तेरा । होजीतेरे विकट भवभटनें (आं०) ॥ सदपूर्व ग्यान धरणा । वितरै जिनेंद्र चरणा । करि सर्व कर्म हरणा ॥ १ ॥ जीते० । (जिनचंद्र०)॥ जगमें महोपकारी । भवसिंधु वारितारी । कुमतां धता बिदारी॥२॥ जी० ॥ जि० ॥ सहुभावनो प्रकासी । परमस्वरूप भासी । समकित सद्भवासी ॥ ३ ॥ जी० ॥ जि० ॥ विणहेतु विश्वबंधू । गुणरत्न राशिसिंधू । शमता पीयूष अंधू ॥ ४ ॥ जीते० ॥ जिन० ॥ स्याद्वाद पक्षगाजे । नयसप्तसें विराजे । एकांतपक्ष भाजे ॥५॥ जी० ॥ जि० ॥ लहि तीर्थ पावतारा । इणसें जिनेंद्रसारा । किया भव्यके उधारा ॥६॥ जी० ॥ जि० ॥ पद सेविए नरिंदा । भये सागरादि चंदा । जिनहर्षके समंदा ॥ ७ ॥ जी० ॥ जि० ॥ (काव्यं) सुद्धक्रिया मंभज मंभनस्स । संदेह संदोह विखंभनस्स । मुत्ती उपादान सुकारणस्स । नमो ही नाणस्स जयो धणस्स ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ ❋ ॥ इति श्रीअपूर्वश्रुत ग्रहणरूपा ज्ञानपूजा ॥ १८ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (१९) श्रुतपद पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ ❋ ॥ पाप ताप संहरण हरि । चंदन सम श्रुतसार ।

तत्वरमण कारण करण । अशरण शरण उदार ॥ १ ॥ इगुनवीस पदमें नजन । जिनवर श्रुतनी नक्ति । इन पद वंदनसें लहे । अमल नाण श्रुत मुक्ति । ॥ २ ॥ (राग) व्रजवासी कांन तें मोरी गागर ढोरी रे (अपर) आजआयोरे उछाह । जीवमानाच जिणंद आगें (इस चालमें) ॥ ❋ ॥ नविजन श्रुत नक्ति चरणशरण उर धरीयैरे । ए श्रुत नक्ति सुमंगल माल । विमल केवल कमला वरमाल ॥ नविजन० ॥ १ ॥ सकल द्रव्य गुणगण परयाय । प्रगट करण एश्रुत मनत्नाय ॥ नवि० ॥ अतुल अनंत किरण समवाय । धरण तरणिगण सम कहिवाय ॥ न० ॥ २ ॥ एश्रुत कुमति युवतिनें संग । अगणित रमणितणो करैनंग ॥ नवि० ॥ अरथै नाष्यो श्री जिनराज । सूत्रै गणधर मुनि सिरताज ॥ नवि० ॥ ३ ॥ ए श्रुतसागर अगमअपार । अनंत अमलगुण रयणाधार ॥ नवि० ॥ नव नय जलनिधि तरण जिहाज । निसुणि मगनत्नई सकल समाज ॥ न० ॥ ४ ॥ नवकोटी लगि तपकरि जीव । अग्यानीकरै जितनी सदीव ॥ नवि० ॥ करम निरजरा तितनी होय । ज्ञानीकै इकखिणमें जोय ॥ नवि० ॥ ५ ॥ एक सहस कोमि १०००००००००, बस्सय कोमि ६०००००००। चवुरतीस कोमि ३४००००००००, अट्ठर जोमि ॥ नवि० ॥ अमसठ लाखरु ६८००००० सात हजार ७००० । अमसय ८०० असीय ८० प्रमिति चितधार ॥ (१६०३४६८७८८०) नवि० ॥ ६ ॥ इतने वरणसें इकपद होय । एक श्लोकका गणितए जोय ॥ नवि० ॥ इकपदको परिमांण एजाण । इणपदसें आगम परिमाण ॥ नवि० ॥ ७ ॥ तीन कोमि ३०००००००० अरु अडसठ लाख ६८००००० सहस बयालीस ४२००० एपदनाख ॥ न० ॥ इतने पदमें अंग इग्यार । केरी गणना नवि चितधार ॥ न० ॥ ८ ॥ वारम दृष्टिवादको मान । असंख्यात पदको पहिचान ॥ न० ॥ इणको चवदपूरव इकदेश । इसको पारलह्यो हे गणेश ॥ न० ॥९॥ एह डुवालस अंग नुदार । एहनी जईये नित बलीहार ॥ न० ॥ एहनी द्रव्य नाव बहुनक्ति । करीयै धरीयै जिनपद युक्ति ॥ नवि० ॥ १० ॥ रत्नचूम नृप सुखमाधार । जिन श्रुतनक्ति करी हितकार ॥ न० ॥ नये जिनहरष परमपददाय । जिनके सुर नर पति गुनगाय ॥न०॥

॥ ११ ॥ (काव्यं) अन्नाणवल्ली वन वारणस्स । सुबोहि बीजांकुर कारण स्स । अणंत संसुद्ध गुणालयस्स । णमो दयामंदिर सद्गुयस्स ॥ १२ ॥ (ॐ ह्रीँ श्री श्रुतायनमः ॥ इति श्री श्रुतपूजा ॥ १९ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ २० तीर्थप्रभावन पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ प्रावचनी १, अरु ध्रमकथी २। वादि ३, निमत्ती ४ जांण । तपसी ५, विद्या ६, सिद्ध ७, बलि । कवी ८, एहमुनिभांण॥ १ ॥ भावतीर्थ प्रभूकह्या । प्रभावीक एअष्ट । तीर्थप्रभावन जेकरै । ते फललहै विशिष्ट ॥ २ ॥ ❋ ॥ (राग धन्यासिरी) तेजतरणि मुखराजै (ए चाल)॥ पर भावन जयकारा । (अहो जयकारा) तीरथ परभावन जयकारा ॥ जिन सेंभवसागर जलतरीयै । ते तीरथ गुणधारा । तीर० ॥ १॥ जिनके गणधर ती रथ कहीये । बलि सहु संघ सुखकारा । एह महातीरथ पहिचानो । वंदि लहो भवपारा ॥ तीर० ॥ २ ॥ अमसठ लौकिक तीरथ तजि करि। भज लोकोत्तर सारा । द्रव्यभाव दोयभेद लोकोत्तर । थिर जंगम भयहारा तीरथ० ॥ ३ ॥ पुंमरीक परमुख पंचतीरथ । चैत्यपंच परकारा । एह वर तीर थ थावर कहीयै । दीठां डुरित विदारा ॥ तीर० ॥ ४ ॥ श्री सीमंधर प्रमुख वीशजिन । विहरमान भवतारा । दोयकोमि केवलि विचरंतां । जंगम ती र्थ उदारा ॥ तीर० ॥ ५ ॥ संघ चतुर विध जंगम तीरथ । जिनशासन उ जीयारा । वरअनंत गुण भूषण भूषित । जिनकूं नमत जिनसारा ॥ ती० ॥ ॥ ६ ॥ ए तीरथ परभावना करीयै । सुभभावना आधारा । शिवकज जल विंशति तम पदकी । जाउं प्रतिदिन बलिहारा ॥ तीर० ॥ ७ ॥ ए तीरथ परभावना करतो । मेरुप्रभू अविकारा । पद जिनहरष लहीनें तरीया । भ वभय जलधि अपारा ॥ ८ ॥ तीर० ॥ ॥ (काव्यं) महा महा नंद पद प्रदाय । जगत्त्रयाधीश्वर वंदिताय । जिनश्रुतज्ञान पयोनदाय । नमोस्तु तीर्थाय शुभंददाय ॥ ९ ॥ (ॐ ह्रीँ श्री तीर्थायनमः) ॥ ❋ ॥ इति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ बिंशति पद स्तुति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (गरबो) सुणिचतुर सुजाण परनारीसुं प्रीतमी० (ए चाल) ॥ ॥ ❋ ॥ चितहरषधरी, अनुभवरंगै, वीश परमपद वंदीयै । शिव रमणि

वरी, केवल सखीय सहाय. करी चिरनंदीयै (आं०) एवीशचरण अशरण शरणा। चिरसंचित दुरित तिमिर हरणा । नित चित एपद समरण धरणा। चि० ॥ १ ॥ एपद समरण जिण चितधरीया।तरीया तरसै तरै भवदरीया। सदनंत भविक सहु भयहरीया॥ चि० ॥ २ ॥ एपद गुणसागर मनुहारा। वरणन तरणीयै वहुहारा। इंद्रादिक सुरन लह्यो पारा॥ चि० ॥ ३॥ एपद अतिशय महिमाधारा। आश्रितपद कमला भरतारा। जिनचंद्रा नंद घनपद कारा॥ चित० ॥ ४ ॥ जिनहरष सुरिंदके शिवकरणा । चंद्रामल गुण विंशति करणा। हुइज्यो प्रभुअरजए अवधरणा ॥ चि० ॥ ५ ॥ ❋ ॥ इति श्री समस्त विंशति पदस्तुति ॥ २१ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ कलश ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ एवीशथानक भुवननंदन अघ निकंदन जानीयै। विबुधेंद्र चंद्र नरेंद्र वंदित पद जिनेंद्र बखानीयै । ए वीशपद भव जलधि तारन तरण गुन पहिचानीयै । इमजानि भविजन कुशलकारन वीश पद उर आनीयै॥ १॥ इहवरस चंद्र दिनेंद्र हारिमुख विधि नयन क्षिति मिति धरू। तिह मासभाद्रव धवल दल तिथि पंचमी रविवासरू । बंगाल जनपद जिह विराजित शिखर तीरथ गिरीवरू। सहु नगर सोभित अजीम गंजपुर दुतीय वालूचरपुरू॥ २॥ खरतर गणेसर विजित सुरगुरु विमल गुण गिरिमाधरा। गुणभवन भविजन नलिन कानन नित विकासन दिनकरा मुनिचंद्र श्री जिनलाभ सूरिंद सुगुरु महीयल युगवरा। सकलेंद्र वंद्य जिनेंद्र शासन मंम्ना नित हितधरा॥ ३ ॥ तसुपट्ट उज्जल शिखरि गणवर उदय गिरि वासरकरा। योगींद्र वृंद नरेंद्र वंदित चरण पंकज गणधरा । आचार पंच छत्तीस गुणधर सकल आगम सागरा। युगप्रवर श्री जिनचंद्रसूरी गुरु सकल सूरीसरा॥४॥ तसुचरण कमलज युगलसेवन अहनिशिमधुकरता धरी। वलि सुगुरुपद अरविंद युगनी कृपा नित चित आदरी । गणधार श्री जिनहरषसूरी हरष धरी घन अवहरी। या वीशपदकी विविधि पूजन विधिनणी रचनाकरी॥ ५ ॥ इति श्री विंशति स्थानक स्तुतिमयःपूजा विधि॥

॥ ❋ ॥ अथ वीशस्थानककी आरती लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जीया चतुर सुजाण नवपदके गुन गायरे (एचाल)॥ ❋ ॥ पियाविंशतिथान मंगल आरती गायरे (आं०) सुमति पिया कहै चेतन पतिको । निसुण वचन मनलायरे ॥ पि० ॥१॥ यदि निजगुण परणति तुमचहीयै तिनको एह लपायरे । ॥ पि०)॥ आरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक । साधु सकल समुदायरे ॥ पि० ॥ २ ॥ इत्यादिक विंशतिपद समरण । भवभय हरण विधायरे ॥ पि० ॥ एह आरती दुरति वारती । अनुपम सुरसुखदायरे ॥ पि० ॥ ३ ॥ जैसें भगतै करत आरती । सकल सुरा सुर रायरे ॥ पि० ॥ तैसें भवितुमे करल आरती । एपद गुण चितलायरे ॥ पि० ॥ ४ ॥ पंच प्रदीप सें करय आरती । जेनित चित उल्लसायरे ॥ पि० ॥ तेलही पंच चिदा नंद घनता ॥ अचल अमर पद पायरे ॥ पि० ५ ॥ पंचप्रदीप अखंडित ज्योतै । दुरमती तिमिर विलायरे ॥ पि० ॥ एहआरती तुरत तारती । भवजल निपतत घायरे ॥ पि० ॥ ६ ॥ पद जिनहरषतणी एकरणी । मन हरणी कहिवायरे ॥ पिया० ॥ चंद्र विमल शिव सिद्धि निधि धरणी । वरणी किणविध जायरे ॥ पि० ॥ ७ ॥ इति वीश थानक आरती संपूर्णम् ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ स्त्रग्धरा छंद काव्य तीन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ योजीमुतां जनोघां, जन गिरिसदृशां, काश्निकेतु प्रमुक्तो । दुर्वार स्फार पंको त्कट तर समर; व्रातता गम्परूपा । अव्याबाधा व्ययो द्यत् परम पद दशां सदृशां योविभर्त्ते । योनित्यं क्षायिकाख्या क्षय विमल लसत्तै लपूर्त्ति दधानः ॥ १ ॥ स्याद्वादौ द्दामध्वामो ज्ज्वलद तुलकल प्रज्वल ज्जात वेदौ । ज्वाला माला कुलांगा जनित भव महा रण्य जातंक संगाः । यत्रानेके पतंगाः कुमत मिमतयो जीजनन्नष्टरंगा । भस्मी भावं स्वकीयं सकल भयहरः शंकर प्राणभाजां ॥ २ ॥ प्रध्वस्तां नंतचंच त्किरण गणलस त्सप्त संतिप्रतापो । लोका लोकाव लोका स्खलित विमलतो दग्रजाग्रत्प्रकाशः । त्रैलोक्या नंदन स्सप्रकृत कुशलक कंदन श्रामेरंदे । श्रीवामानंदनोयं जगति विजयतां जैनचंद्रः प्रदीपः ॥ ३ ॥ त्रिभिर्विशेषकं ॥ ❋ ॥ इति ॥ ❋ ॥

यह तीन काव्य आरती कियां पीछे दोनुं हाथ जोडके कहे ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ नंदीश्वराष्टमद्वीपांतर्गत द्वापंचाशज्जिनप्रासाद शाश्वत जिनप्रतिमार्चन विधि लिख्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दोधक) ॥ ❋ ॥ स्वस्तिश्री सुखकरण घन । विघनहरण जयकार । अश्वसेन नंदन चरण । शरण रुचिर नरधार ॥ १ ॥ जिनवाणी समरणकरी । सकल जीव सुखकार । कहिशुं नंदीश्वर जगत । पति पूजन विसतार ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ अखिलद्वीप सिरताज विराजै । अष्टमनंदीश्वर द्वीप गाजै । वलयाकार जगत सुखकारी । निरुपम अतिशय गुण मणि धारी ॥ ३ ॥ (उल्लालो) ॥ मणिधारि वावन विमलगिरवर जैनमंदिर युतसदा । शुभलक्तिधर निर्जर पुरंदर निरखिपांमे संपदा । इककोटि शत त्रिण सठिकोटिय चौरासिलख योजना । इण द्वीपनो चक्रवाल विष्कंभ मान जाणो भोजना ॥ ४ ॥ (ढाल) ॥ इणद्वीपै पूरब दक्षिण आसा । पश्चिम उत्तर दिश चउ पासा । चऊ अंजनगिरि सुखमा धारी । चारणसुर विद्याधर चारी ॥ ५ ॥ (उल्लालो) धरचारि निज द्युति भर विनिर्जित, सजल जलधर घनघटा । वलि चतुरशीति सहस्रयोजन तुंगता धरतास्फुटा । इणप्रवर अंजन शिखर शिखरें शाश्वता जिनमंदिरा । चउसंख्य सुंदर कनक कलशोपमधरा जग सुखकरा ॥ ६ ॥ (ढाल) ॥ इक इक अंजनगिरि चउपासा । चउपुक्करिणी प्रकट प्रकासा । विस्तर इगलख योजनसारा । तासुमांहि इक इक उदारा ॥ ७ ॥ (उल्लालो) इक इक उदारा सहस्र चउसठि योजनोन्नतता कुला । जिनराज मंदिर मंडिता सहु चंद्र किरण समुज्वला । दधिमुख धरा धर दीर्घका प्रति विदिशि दोय दोय रतिकरा । दश सहस्र योजन उन्नता धर उदय करुणा रुणवरा ॥ ८ ॥ (ढाल) ॥ जिनमंदिर युत रतिकर विमला । पूरबदिशि तेरस सहु अचला । एहरीतिपर त्रिणदिशि जांणो । इम वावन्न गिरेंद्र वखाणो ॥ [illegible] (९ [illegible] इव खाण शतयोजन सुदीर्घा वहुत्तर योजन प्रमा [illegible] विस्तरा जिनगृहसमा । शतएक [illegible]
इणरीति प्रतिमासाद प्रतिमा जा [illegible]
(दोधक) ऋषभानन

सकल । जिनप्रतिमा अभिधान ॥ ११ ॥ सुरगिरि सिखरै जिनतणो । जिन न्हवणोत्सव सार । करिकैं नंदीश्वर जई । हरिगण विबुध उदार ॥१२॥ अनुभव रसयुत भक्तिधर । हृदय सरोज मझार । इणपरि शाश्वत जिनतणी । करइ पूज अतिसार ॥ १३ ॥ पूरबदिशि अंजनगिरी । मंदिरगत जिनराज । अष्ट विध पूजायें सदा । अरची जै हितकाज ॥ १४ ॥ प्रथम पूज जिनराजनी । विमलजलै भरपूर । करियै न्हवण सदाभवी । होइ सकल दुखदूर ॥ १५ ॥ ॥ ❋ ॥ कुंदकिरण शशिऊजलोरे देवा (ए चाल) ॥ ❋ ॥ मिलिकरि सकल सुरासुरारे वाला । निज सेवक सुरपासेंरे । क्षीरजलधि मागध थकी रे वाला । सिंधुनदी गंगासें रे ॥ १ ॥ बलि वरदाम सुतीर्थसें रे वाला । विमल सलिल अणावैरे । मणि कनकादि कलस भरी रे वाला । उषधि कुसुम मिलावेरे ॥ २ ॥ इंद्रादिक सहु सुरगणारे वाला । शाश्वत जिन न्हवरावे रे । विमल सलिल धाराकरी रे वाला । कुमति तापनें गमावै रे ॥ ३ ॥ इण परि जेभगते भवी रे वाला । न्हवणकरै जिनअंगै रे । ते सुरवर सुख अनुभवीरे वाला । लहै शिवपद मनरंगै रे ॥ ४ ॥ द्रव्यपूज करि सुरवरारे वाला । करइ जिणिंद गुणगानारे । कुशल कुमुद विकसायवारे वाला । प्रभु शिव चंद्र समानारे ॥ ५ ॥ (काव्यं) दुरितदाघ वना तप वारणं । सकल भाव विकाशन कारणं । जगति भव्य भवोदधि तारणं । जिनगणं स्नपयाम्य मलैर्जलै ॥६॥ उँ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परमात्मनेभ्योऽनंतानंतज्ञानशक्तिभ्यः । प्रणत सकल सुरासुरेंद्र वितंद्रवृंदविहितभक्तिभ्यः । कठिन कर्मशालमालोन्मूलनवारणेभ्यो । जन्म मृत्यु निवारणकारणेभ्यो । नंदीश्वराष्टमद्वीपगत । पूर्वांजनगिरी शिखरस्थ । सिद्धायतन मंम्नाय मानेभ्यः। श्रीऋषभानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्द्धमाना, भिधाना ष्टोत्तरैकशत शाश्वतजिनेंद्रेभ्यो । जलं ययामहे स्वाहा इति प्रथम जलपूजा ॥ १ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ द्वितीय चंदन पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोधक ॥ ❋ ॥ द्वितीय पूज जिनराजकी । करहु भक्ति भरसार । वर सुगंध द्रव्यें करी । तरहु सिंधु संसार ॥ १ (राग भीममल्हार) मेघव रसै भरी पुष्फबादल करी (ए चाल) ॥❋॥ भक्तिधरि भवीयजन पूज महा

राजकुं। एह वरगंध द्रव्यै सदाई। विमल घनसार चंदन सरस मृगमदा। कुंकुमें कर विलेपन सुदाई ॥ १ ॥ भक्ति० ॥ जेभवी सुरभितर गंध द्रव्ये करी। सुरभि तनुकरै जिनराजकेरो। तेहनी चंद्रकर अमल यशवासना सुरभितम करइ सहुजग घणेरो ॥ २ ॥ भक्ति० ॥ एमवर सुरभितर द्रव्य सें सुरवरा। अरचकरि जगतपति बिंबसारा। परम शुभभावना भावता। गावता। विशद जिनवरगुणा अति अपारा ॥ ३ ॥ भ० ॥ सकल सुरगण मिली एमजंपै मुदा। भोसुरा आज जिनराज अरचो। विरति गुण रहित निजजन्म सफलो कीयो। सुमति संयोग दुरमति विगूचो ॥ ४ ॥ भ० ॥ दुतीय इमपूज करतां हरइ भव्यनो। पाप घनताप आपें अपारा। सरग निरवाण पुरपंथ प्रकटीकरण। विशद शिवचंद्र करगण उदारा ॥ ५ ॥ (काव्यं) मृगमदोज्ज्वल कुंकुम चंदनै। श्चिरतनांतर ताप निकंदनैः। जिनवरानघ तामस भास्करान्। स्वहित वृद्धिधियेच समर्चये ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ परमात्मनेभ्यो ऽनंतानंत ज्ञानशक्तिभ्यः। कठिन कर्मशाल मालोन्मूलनवारणेभ्यो। जन्म जरा मृत्यु निवारण कारणेभ्यो। नंदीश्वराष्टमद्वीपगत पूर्वांजनगिरि शिखरस्थ। सिद्धायतन मंडनाय मानेभ्यः। श्री ऋषभानन चंद्रानन, वारिषेण, वर्द्धमाना, भिधानाष्टोत्तरै कशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो। श्चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥ इति द्वितीय गंध पूजा ॥ २ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ तृतीय पुष्प पूजा ॥ ❋ ॥

॥❋॥ दोधक ॥ ❋ ॥ तृतीयपूज जिनराजनी। विकसित अतिहि रसाल सुरभि कुसुमकरी भविकजन। करीयै भक्ति विशाल। १ (राग भैरवी) पंचवरणी अंगीरची कुसुमजाती (ए चाल)॥ एह जिनकी पंकहरणी भगती सारी। मिलकरि हरिवर सकल सुरासुर। त्रिकरण इककरि हितकारी ॥ १ ॥ (एहजिनकी०) अनुभव रसयुत चित्त भक्तिधरि। पूरब पुण्य उदयभारी ॥ एह० ॥ इण विध कुसुम भक्ति जिनवरकी। करइ हरइ घन दुरितारी॥ एह० ॥ २ ॥ मालती नाग पुन्नाग केवडा। दमणक कुंद सुगंधि धारी ॥ एह० ॥ मरुक केतकी पद्म मोगरा। कुसम मालकरि मनुहारी ॥ एह० ॥ जिनवर कंठठवै प्रभुआगलि। कुसुम पुंज धरि दुःखवारी ॥ एह० ॥ इण विध पुष्प

भक्तिकरी भविजन। बरइ सकलजग शिरनारी ॥ ४ ॥ करिकै शुक्ल ध्यान पावकसें। भस्म विषम सम क्रम वारो ॥ एह० ॥ चिदानंद घन शिव चंद्रोपम। पामें अति गुण विस्तारी ॥ एह० ॥ (काव्यं) भव दवानल ताप घनाघनं। कुशल चंदन नंदन काननं। विशद शारद चंद्र समाननं। जिनगणं कुसुमैश्च समर्चये ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मनेभ्यो अनंता० ॥ प्रणत० कठिन० नंदीश्वरा० श्री रुषभानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्द्धमानाभिधानाऽष्टोत्तरै कशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्योपुष्पं यजामहेस्वाहा ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ इति तृतीय पुष्पपूजा ॥ ३ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ ४ धूपपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दोधक) ॥ जगनायक जिनचंदनी। एह चतुर्थी जांण। धूप पूज करीयें सदा। हरीयें कुमती अनाण ॥ १ ॥ (राग मालवी गोमी) ॥ सव अरतिमथन सुदारधूपं (ए चाल) ॥ जग कुशलकारि अघालिहरणं। धूपपूज उदाररे। धूप अनलै कुगति डुखभर। फलद दहत अपाररे ॥१॥जग० सरस चंदन अगर अंबर। मृगमदा घनसाररे। कुंदरुक्क वली सेल्हारस। करीयें गंधवटि साररे ॥ २ ॥ जग० ॥ रतनमय वर धूप धाणो। धूपभृत कर धाररे सुर पुरंदर पूजकरतां। लहै लाभ अपाररे ॥ ३ ॥ जग० ॥ धूप परिमल महमहैं जिम। तेम भुवन मझाररे। धूपपूजा ते भविकनो। गुणसुगंध विचाररे ॥ ४ ॥ जग० ॥ भवअंध कूप पतंग उधरत। धूप अरचन धाररे। कहत गणि शिवचंद पाठक। पूज चतुर्थी साररे ॥ जग० ॥ ५ ॥ (काव्यं) भवसु डुस्तर वारधितारकं। विषयसौख्य विकार निवारकं। निरुपमोत्तर मंगलकारकं। जिनगणं घृत धूप करायजे ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्म० श्रीरुषभानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्द्धमाना, भिधानाष्टोत्तरैकशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो धूपंयजामहे स्वाहा ॥ ❋ ॥ इति चतुर्थी धूपपूजा ॥ ४ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (५) दीपकपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दोधक) ॥ ❋ ॥ दीपपूज इह पंचमी। करीयै विविध प्रकार। दीपपूज करतो भविक। दीपै जगतमझार ॥ १ ॥ (राग कल्याण) तेरी पूजावणी तेरसमें (ए चाल) ॥ मेरी लगीय प्रीति प्रभुचरणें २ ॥ निजगुण

परणति करण करावण । सकल लोक सुखकरणें ॥ मेरी० ॥ १ ॥ गहिर सिंधु भव निपतीत तारण । तरण तरणि गुणधरणें ॥ मेरी० ॥ अनंतरूप धर दुरगति भयहर । परमज्योति अधिकरणें ॥ २ ॥ मेरी० ॥ करुणाधार विमलगुण आगर । निरुपम अशरण शरणें ॥ मेरी० ॥ ए जिनचरण दीप पूजनसें । अरचीजै दुखहरणें ॥ ३ ॥ मेरी० ॥ केवल विमल चिदानंद ल हीयै । दीपपूजके करणें ॥ मेरी० ॥ रतनदीपसें करै आरती । हरषित जिन गुण वरणें ॥ ४ ॥ मेरी० ॥ ए प्रभुचरण सेव भवि जनकुं । अम्रित पद सुवितरणें ॥ मेरी० ॥ कुमति रजनी अग्यान तिमिरहर । वर शिवचंद्र सुकिरणें ॥ मेरी० ॥ ५ ॥ (काव्यं) मदन सिंधुर सिंधुर वैरिणं । गुरुकषाय करेणु समीरणं । मदधरा धरता बल वैरिणं । जिनगणं प्रयजे सुप्रदीपकै ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हँ परमात्मने० । प्रणत० । कठिन० । नंदीश्वर० । श्री रुषभानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्द्धमाना, भिधाना ऽष्टोत्तरैकशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो । दीपं यजामहेस्वाहा ॥ ❀ ॥ इति पंचमी दीपपूजा ॥ ५ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (६) अक्षत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ (दूहा) ॥ छठी अक्षत अरचना । करियै धरि सुभभाव । बरियै सिद्धिबधू परम । अक्षय सुखनोदाव ॥ १ ॥ (राग सारंग) हां होरे देवा बावन्नाचंदन घसि कुमकुमा (ए चाल) ॥ हांहोरेवाला ॥ एजगदीशर हितकरू । अलवेसर जिनमहाराज ए (हांहो रेवाला) अतिगहिरा भव जलधि तें । प्रभु तारण तरण जिहाजए ॥ १ ॥ (हांहोरे०) भीमकरम कुंजर घटा । भंजन मृगराज समानए (हांहोरे०) भव्यकमल प्रतिबोधवा । ए प्रभु वासर महिरानए ॥ २ ॥ (हांहोरे०) रजतशालि तंदुलमयी । अक्षत पूजन अग्रसारए (हांहोरे०) ए पूजा जिनचंद्रनी । वांछित सुखनी दातारए ॥ ३ ॥ (हांहोरे०) ठवण जिनंद दरशण अछै । अनुभव रस तरुनो कंदए । (हांहोरे०) भाव जिणेसर दरशनो । कारण कह्यो सकल जिणंदए ॥ ४ ॥ हां० ॥ ए पाठक शिवचंद्रनें । जिनचरण शरण आधारए ॥ हां० ॥ प्रतिभव हुइज्यो एकही । छट्ठी अक्षत पूजा सारए ॥ ५ ॥ (काव्यं विजित मंदर भूधर धीरतं । निहत सागर राज गंभीरतं । प्रजित पातक योध सुवीरतं

जिनगणं प्रयजे ऽक्षतपूजया ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मभ्योऽनता० प्रणत० । कठिन० । नंदीश्वरा० श्री ऋषभानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्धमाना भिधानाऽष्टोत्तरैकशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो ऽक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ ❀ ॥ इति छठी अक्षत पूजा ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (७) नैवेद्य पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) हिव पूजा नैवेद्यनी । सप्तम अतिह रशाल । करीयें जिनवरनी अचल । लहीयें मंगल माल ॥ १ ॥ (राग) जिनगुणगानं श्रुत अमृतं (ए चाल) ॥❀॥ जिनवर दरसण वर अमृतं । एजिनदरसण अमित फ रसै । पामें अनुपम कांचनतं । तिणसें सुरपति प्रभुदरसण वरि । जगतें गावै जिनचरितं० ॥ २ ॥ जिन० ॥ मोदक घृत वर खज्जक परमुख । वरनैवेद्य सरस धरितं । हरि गण गज प्रभु आगलि ढोवै । मणि मय कनक थाल भरितं ॥ जि० ॥ ३ ॥ जेनैवेद्य करी जिन पूजन । करइतेह जग मन हरितं । अतिहीं स्वादु सुर गति शिव पद सुख । तातिं नितसेवैं भ वि तुरितं ॥ ४ ॥ जिन० ॥ विंशति पदमें एजिनपति पद । वर शिवचंद्र विमल अनितं । इण पद सेवक भविजन केरो । संचित भूरि हरइ दुरितं ॥ ५ ॥ जिन० ॥ (काव्यं) अनंत विज्ञान मयस्वरूपं । समस्त लोक त्रय भूति भूपं । लसद्गुणौघा मृत चारु कूपं । यजेसु नैवेद्य चया जिनौघं ॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मभ्यो० । प्रणत० । कठिन० । नंदी० । श्रीऋषभानन, चंद्रानन, वारिखेण, वर्द्धमाना, भिधानाष्टोत्तरैक शत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति सप्तमी नैवेद्य पूजा ॥ ७ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (८) फल पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ जिन फल पूजा अष्टमी । कष्ट अनिष्ट विदार । करीयें सुभभावें सदा । भरीयै पुण्यभंमार ॥ १ ॥ (राग धन्या सिरी) तेज तरणि मुखराजै (ए चाल) ॥ सुरनायक जशगावै । जिनजीको सुर० (आंकणी) निरमल मन वच काय करणतें । जुलि २ सीस नमावै । सुर अवतार सफल भयो मेरो । जिनपूजन सुपसावै ॥ १ ॥ जिनजीको सुर० नयन चकोर चंद्र समज्योती । संचित दुरित पुलावै । निरखि निरखि मन

मोहन मूरति। आनंद अंग न मावै ॥ २ ॥ जिनजीको० ॥ नालिकेर नारंगी कवला। केला आम्र अणावे। पुंगीफल दाडिम परमुख फल। जिनवर चरण चढावे ॥ ३ ॥ जिन० ॥ जे भवि फल पूजा जिनवरकी। करे करावे भावे। अनुमोदै तेपरम चिदानंद। घन अभित फलपावे ॥ जिन० ॥ ४ ॥ वरसअढार छिहोत्तर जेठे। प्रतिपद सुकल सुहावे। चंद्रसूनु वासर जयनगरै। खरतरगछ जगचावे ॥ जि० ॥ ५ ॥ श्रीजिन हर्षसूरि सूरीसर। विजयमान वडदावे। रूपचंद्र गणि पाठक पारिंद्र। वादींद्र विरुद धरावे ॥ जिनजी० ॥ ६ ॥ तासुशीश वाचक पुण्यशील शिष्य। समय सुंदर कहिरावे। तासुशीश पाठक शिव चंदें। पूजरची मनुभावे ॥ ७ ॥ जिनजी० ॥ जेनंदीश्वर शास्वत जिनकी। वसुविध पूज रचावे। ते जन सकल लोकके ईश्वर। तीर्थंकर पद पावे ॥ ८ ॥ जिन० ॥ (कलश) सुरपति सुरासुर, वृंद वंदित, चरण पंकज मघहरं। सद्वीप नंदीश्वर जिनालय, परमतर सुखमाकरं। अतविशद हिमकर चंद्रिकामल निखिलगुण मणिसागरं। जिनराज गण मह मर्च्चये वर फलचयैः करुणाकरं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं परमात्मभ्यो०। प्रणत०। कठिन०। नंदी०। श्री ऋषभानन, चंद्रानन, वारिषेण, वर्द्धमाना भिधानाष्टोत्तरकैशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यो फलं यजा महे स्वाहा ॥ ❋ ॥ इत्यष्टमी फल पूजा ॥ ८ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ दूहा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पूरबदिशि अंजन गिरी। मंदिरगत जिनराज। अष्टविध पूजायै सदा। अरचीजे हितकाज ॥ १ ॥ पूरब प्रमुख चिहुंदिशै। पुष्करणी अभिराम। दधिमुख चतुर्मंदिर जिना। अरचीजे शुभकाम ॥ २ ॥ ईशानादिक विदिशि गत। वसु रतिकर गिरिराज। मंदिरगत जिनराजकी। रचीये पूजसमाज ॥ ३ ॥ दक्षिण दिशिअंजनगिरी। मंदिरगत महाराज। वसुविध पूजाये सदा। पूजीजे हित काज ॥ ४ ॥ दक्षिण अंजन शैलने। चउदिशि दधिमुख सार। चतुर्मंदिर जिनरायकी। करीये पूजउदार ॥ ॥ ५ ॥ दक्षिण ईशानादिकै। विदिशें अतिह उदार। अष्ट रतिकर गिरिवर जिना। पूजो विविध प्रकार ॥ ६ ॥ पश्चिमदिशि अंजन गिरी।

मंदिर जिन महाराज । वसुविध पूजायें सदा । पूजो भविक समाज ॥ ७ ॥ पश्चिम अंजन शैलनें । चउदिशि दधिमुखधार । चउ मंदिर जगनाथकी । पूजकरो सुखकार ॥ ८ ॥ पश्चिम ईशानादिकै । विदिशैं जग हितकार । अम रतिकर गिरि जिन भतें । अरचुं जगदाधार ॥ ९ ॥ उत्त रदिशि अंजनगिरी । मंदिर गत जगराय । अष्टविधार्चनसैं भविक । अर चो जीउ सुखदाय ॥ १० ॥ उत्तर अंजन शैलनें । चउ दिशि दधिमुख । नाम । चउ मंदिर तीर्थेशनें । अरचो शुभपरिणाम ॥ ११ ॥ उत्तर ईशाना दिकै । विदिशैं रुचिराकार । वसु रतिकर गिरि जगप्रभू । पूजो अरति विदार ॥ १२ ॥ सकल संघ वलि जेठमल । कोठारी चितचंग । इनके आग्रह सें करी । एहपूज मन रंग ॥ १३ ॥ इति नंदीश्वरद्वीपकी पूजा सं० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ नंदीश्वर लघु अष्टप्रकारी पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ स्वर्वासिवासे सुतरां प्रकाशे । नंदीश्वरे द्वीप वरेष्टमेहम् । सुगंधि तीर्थांमि जलैः सुभक्तए । जिनेश्वराणां स्नपयामि मूर्त्तीः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरे । अष्टम द्वीपे । श्रीमत्शाश्वत जिनेश्वरेभ्यो । जलं० ॥ ❋ ॥ स्वर्वासिवासे सुतरां प्रकाशे । नंदीश्वरे द्वीपवरेष्ट मेहम् । कर्पूर स चंदन कुंकुमैश्च । समर्चये श्रीजिनराज मूर्त्तीः ॥ २ ॥ ❋ ॥ स्वर्वासिवा०।नंदी०।विकास भाक् शुद्धसुगंधि पुष्पैः । समर्चये श्रीजिनराज मूर्त्तीः ॥ ३॥❋॥स्वर्वासिवासे० नंदी० । तुरुक कृष्णा गुरु मुख्यधूपं । मुदा प्रयच्छामि जिनेश्वरेभ्यः ॥ ४ ॥ ॥❋॥स्वर्वासिवा०। नंदी०। सुनिर्मलाज्येन भृतैः प्रदीपैः । कुर्वे प्रमोदा जिन राज पूजाम् ॥ ५ ॥ ❋ ॥ स्वर्वासि० । नंदी० । स्वयं पुरस्ता जिन पुंगवानां। सदक्षतौघा नुप ढौकयामि ॥ ६ ॥❋॥ स्वर्वासि० । नंदी०। स्वयं पुरस्ता० । नैवेद्य जातान्युप ढौकयामि ॥ ७ ॥ ❋ ॥ स्वर्वासि० । नंदी० । स्वयंपुर० । फलानि चाग्रयाण्युप ढौकयामि ॥ ८ ॥ ❋॥ इत्थं जिनानां प्रविधाय पूजां। सद्रव्यतो भाव विशुद्धिभाजः । भव्यांगिनो नुक्रमतो लभंते । स्वर्गंच मोक्षं विरहाद्भवस्प ॥ ९ ॥ इत्यष्टप्रकार पूजाष्टकम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्रीनंदीश्वराष्टमे द्वीपे द्वापंचाशजिनालय पूजा विधिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ तहां पहला पूर्वदिशिमें चौमुख पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पूर्व दिशिके बीचमें अंजन गिरीके चौमुख आगे । अष्टद्रव्य नालेर पांन थापना लेकर खमा रहै ॥ नमोर्हत् सिद्धा० ॥ शिखरणी छंद ॥ दिशी श्रीपूर्वस्यां सुरवर युतै देवरमणैः । स्फुरत् तुंगे शृंगे जलदसदृशै कज्जल गिरौ ॥ जगत्पूज्ये सिद्धायतन उदिते भूमि विदिते । नमो नंदीद्वीपे ऋषभ जिननाथादि विभवैः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हंपरमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीऋषभानन चंद्रानन वारिषेण वर्द्धमाननामानो एकशत चतुर्विंशति अधिक शाश्वत जिननाथाय जलं चंदनं पुष्पं धूपं । दीपं अक्षतं नैवेद्यं फलं ॥ यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम पूजा ॥ १ ॥ ❋ ॥

॥❋॥ दधिमुखपर्वतपूर्वदिशिमें (पूर्ववत्) द्रव्यलेकेखडारहै ॥❋॥

॥ ❋ ॥ शिखरणी छंद ॥ ततः प्राच्यां वापी विमलसलिला देव रमणा । दनंद्या नंद्याकाजल जललिता तोरणभृता । तदुत्संगाधिस्थे दधिमुख गिरौ चैत्य निलये । नमंस्तत्र श्रीमदृषभजिननाथादि विभवे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हंपरमा० अष्टद्रव्यंयजा० ॥ २ ॥

॥ ❋ ॥ दधिमुखपर्वत दक्षिणदिशिमें ॥ शिखरणी छंद ॥ तदैताद्रेरम्या चलद नल सत्तोय निवहा । शुभ्रा मोघाप्राच्यां भ्रमर निकरैर्झंकृततरा।तदुत्संगाधिस्थे दधिमुखगिरौ चैत्य निलये । नमस्तत्र श्रीमदृषभजिननाथादि विभवे ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं पर० अष्टद्रव्यंयजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ३ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पश्चिम दिशि दधिमुखपर्वतमें ॥ शिखरणी छंद ॥ प्रतीच्या माशायां तदधि गिरितो मंजुलधरा । सुवापीगोस्तूपा सुर सरदिवा भांति सततं । तदुत्संगाधिस्थे दधिमुखगिरौ चैत्यनिलये । नम स्तत्रश्री मदृषभजिननाथादिविभवे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यंय० स्वाहा ॥ ४ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ उत्तरदिशिमें दधिमुख पर्वतपर ॥ शिखरणी छंद ॥ उदीच्यां सोपाना वतर दमरस्त्री व्रजवदा । सुदर्शाद्यानांता तदचलवरा त्पुष्करणिका।तदु

त्समाधिस्थे दधिमुख गिरौ चैत्यनिलये । नमस्तत्र श्रीमदृषभ जिननाथादि विभवे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं य० स्वाहाः ॥ ५ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ईसानकूणमें रतिकर पर्वतपर ॥ वसंततिलकाछंद ॥ वाप्यंतरे रतिकरः प्रथितावदातः । ईशानगो गिरिवरो मगनाश्रितश्च॥ तत्रस्थ चैत्य ऋषभादि जिनेश्वराणां । वंदे मुदाविशद बिंब मुदारवृत्त्या॥१ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ० अष्टद्रव्यंय० स्वाहा ॥ ६ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ॥ ❋ ॥ ईशानकूणमें दूसरा रतिकरपर्बतपर ॥ काव्यं ॥ तादृक्वरो रतिकरोपि तथा द्वितीयः। शैल स्सहोदरइव प्रचकास्ति यत्र । तत्रस्थ चैत्य ऋषभादि जिनेश्वराणां। वंदे मुदा विशदबिंब मुदारवृत्त्या ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यंय० ॥ ७ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अग्नि कूणमें प्रथम रतिकरपर्वतपर ॥ काव्यं ॥ अग्न्याश्रितो रतिकरो रति मूर्त्तिरूपः । स्वर्गांगणो वसुमतीव तथेव तस्य । तस्मिन् जिनालयवरेजगदीश्वराणां । रूपं ततोस्मि नरजन्म फलाभिलाषो ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रींऽर्हं० अष्टद्रव्यं० य० इति ॥ ८ ॥ ❋ ॥ ॥❋॥ ॥❋॥

॥❋॥अग्निकूणमें दूसरा रतिकर पर्वतपर ॥काव्यं॥तत्रैव तत्समधरस्समपंक्तितोभ्यो।गोत्रोत्तमो रतिकरो नरदेवकाम्य॥तस्मिन्जिना०रूपंततो०ॐ ह्रीं०॥९॥

॥ २ ॥ नैरुतकूणमें रतिकर पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ नैरुत्यगो रतिकर स्सुरशैलकीर्त्तिः ॥ विस्फूर्त्तिमूर्त्ति विजितः शुशुभे सदैव ॥ तत्रस्थ जैनभुवने भुवनोत्तमत्वे । संस्तोमि साधुऋषभादि प्रभुं सदाभं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं अष्टद्रव्यंय० ॥ १० ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नैरुतकूणमें दूसरे रतिकर पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ तस्यैव पार्श्वपरिवर्त्ति नगाधिराज॥ स्ततुल्यगो रतिकरो द्युतिभृद्दिगंतः । तत्रस्थजैन० ॥ संस्तोमि० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० । अष्टद्रव्यंय० स्वाहा ॥ ११ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ वायव्यकूणमें पहिले पर्वत रतिकरपर ॥ काव्यं ॥ गीर्वाण वर्गगतिदः शुभदो जनानां । वायव्यगो रतिकरः कुधर स्तथैव । तत्रापि पारगत मंदिरबिंब वृंदं । नित्यं नमामि वृषभादि जगत्प्रभूणां ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० स्वाहा ॥ १२ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ वायव्यकूणमें दूसरे रतिकरपर्वतपर ॥ काव्यं ॥ तत्सदृशो रतिकरः सुख चारुभूमिः । पद्मानुराग इतरः कलकेलि सद्म । तत्रापिपारग० । नित्यं नमामि० ॥ ॐ ह्रीँ श्री ऽर्हं । अष्टद्रव्यं यजा० ॥ १३ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दक्षिणदिशिमें अंजनगिरि पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्राछंद ॥ योदक्षिणस्यां दिशिभातिनित्यं । द्योतांजनाद्रीरमणीय ताद्रः । तस्योपरस्थे जिनराज चैत्ये । नौमि स्वयंभू रुषभादिजातं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्री अर्हं०॥१४॥

॥ ❀ ॥ पूर्वदिशि पुष्करणी दधिमुख पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ तत्पर्वता त्प्राक दिशि राजमाना । नंदोत्तरा पुष्करणी प्रधाना । दध्याननाद्रेः तदगाधतोये । चंद्राननाद्यं प्रणमामिसद्यः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हं० स्वाहा ॥ १५ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ दक्षिणदिशिमें अंजनगिरिंदाधिमुखपर्वतपर ॥ काव्यं ॥ नित्योद्योता दंजना दक्षिणस्यां । नंदावापी सार्वनाम तदंतः ॥ दध्यास्याद्रौ चंदनाद्यै र्भजामि॥प्राशादे श्रीवर्द्धमानादि सार्वं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्री ऽर्हं० ॥१६ ॥

॥ ❀ ॥ पश्चिमदिशि दधिमुखपर्वतपर ॥ काव्यं॥तस्यैवाद्रेः पश्चिमायां सुनंदा । तस्यामध्ये श्रीदधिस्यान्न गेंडुः । तस्मिन्चैत्यै श्रीजिनाधीश जालं । नामंनामं तंनमामि प्रकामं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्री ऽर्हं० स्वाहा ॥ १७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उत्तरदिशि वाप्यां दधिमुखे ॥ काव्यं ॥ उदीचीना दीर्घिका नंदिवर्द्धनीसान्वर्था तन्नगा तत्रसंस्थे । जैनावासे बारिषेणादिबिंब । मत्वानाथे मुक्तिसौख्यंनितांतं॥१॥ॐ ह्रीँ श्री॥अर्हंपरमात्म० अष्टद्रव्यं य० स्वाहा ॥१८॥

॥ ❀ ॥ ईशानकूणें प्रथमरतिकरविषै चैत्य० ॥ काव्यं ॥ रतिकरोस्ति जिनालय माश्रितो । विदिशि भैरव दैवत एतयोः । तदचलै रुषभादिजिनेश्वरं समनुनम्य रमामितदंतिके ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्री ऽर्हं० स्वाहा ॥ १९ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ईशानकूणे द्वितीयरतिकरपर्वते ॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितछंद ॥ तदपरोपि तथैव तदन्वितो । जिननिकेतन केतु सुमंडितः । तदचले रुषभादि जिनेश्वरं । समनुनम्य रमामित दंतिके ॥ ॐ ह्रीँ श्री परमात्मा० स्वाहा ॥२०॥

॥ ❀ ॥ अग्निकूणें रतिकरपर्वतें ॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितछंद ॥ रतिकरो जिनराज गृहांकितो । लसतिवन्हि बिदिग्भू क्षितिभूषितः । तदपरस्तदगे रुषभादिकं । नमत नाथ मनाथ सनाथकं ॥१॥ ॐ ह्रीँ श्री परमात्म० ॥२१॥

॥ ❋ ॥ अग्निकूणेंदूजे रतिकरपर्वतें ॥ काव्यं ॥ तद परापरगो नग नायको। रतिकर स्तादितै जिनमंदिरे । नति तति र्मतिरोह तुमामकी। लसदनं त गु णाकरते प्रनो ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्री परमा० स्वाहा ॥ २२ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नैऋतिकूणें प्रथमरतिकरें ॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितछंद ॥ विदिशि नैर्ऋतिगे जिनपालये । रतिकरे रुषनादि स्वयंनुवं । सुमनसा सुमनोत्नि रितोजनात् । यजत नव्यजना अतिनावतः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्री ऽर्हं० ॥ २३ ॥

॥ ❋ ॥ नैरूतें दूजे रतिकरें ॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितछंद ॥ तदितरः सम सीम धरा धरो । रतिकरो विनवेश्म विनर्त्तियः । तदचले जिनराज जगद्गुरु सतत नौमि मुदा रुषनादिकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्री परमा० स्वाहा ॥ २४॥❋॥

॥ ❋ ॥ वायव्यकूणें प्रथमरतिकरें ॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितछंद ॥ अनिल देव विदिग्धरणीधरो । रतिकरों जनतोस्ति तदिद्रगे ॥ नवतुमे रुषनादि ज गत्पतौ । सतविधानमनंत मनंतशः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ० ॥ २५ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ वायव्ये दूजे रतिकरें ॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितछंद ॥ रतिकरोपि तदन्यतरस्तथा । शिरसितस्य जिनायतने यथा । दधतुमे जिनपुंगवचंदना ॥ विधिवदंग नव त्यदपंकजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ ऽर्हं ॥ २६ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पश्चिम दिशि अंजनगिरि विषे चैत्यपूजाः ॥ काव्यं ॥ नंदीश्वरे नंदित पश्चिमायां । स्वयंप्रनः सुप्रन यांजनाद्रिः॥ तज्जैन सद्मे गतनीति छद्मे । नजामिनक्तया वृषनादिवृंदं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ ऽर्हं० ॥ २७ ॥ ॥ ❋ ॥

॥❋॥ पश्चिमदिशि अंजनगिरिसें पूर्वदिशि दधिमुखपर्वतें चैत्यगृहआगें ८ वस्तुलेईपढे ॥ काव्यं ॥ हिरणीछंद ॥ दधिमुखगिरि नंद्रा वाप्यां रराजत दंजना । दधिनिचैत्ये पौरस्त्याया सुरासुर सेवितः । जिनपतिगृह तस्मिन्नूध्वों जिनं रुषनादिकं ॥ नमनविषयी कृत्यास्वादं सुधारस जं लने ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्री ऽर्हं० ॥ २८ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दक्षिणदिशि दधिमुखरेविषे चैत्यचौमुखआगें अष्टप्रकारपूजा ॥ ॥ काव्यं ॥ हिरणीछंद ॥ कनजलविशालायांवाप्यांतदेवनगांजनात । दिनकर करा घौ घौ पाच्यां दधीतमुखा चलः । तदचलवरे देवावासे प्रनोचरणां बुजे । परमशरणं प्राप्यानंतं मुदं लनितोस्मिते ॥१ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ ऽर्हं० ॥२९॥

॥ ❀ ॥ पश्चिम दिशि दधिमुख चैत्यः ॥ काव्यं ॥ हिरणीछंद ॥ कमकुमुदा वाप्यांतस्मा च्चिलोच्चयतो जनात् वरुणककुभिः श्रीदध्यास्य स्तदङ्गु परिस्थिते। जिनपवसतौ श्रीमज्जैना कृर्ति विधिवदच्चूर्श। प्रणाति ताति जिनेत्वा नाथे स्वकीयसुखास्पदं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ३० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उत्तरदिशि दधिमुखचैत्यआगे अष्टप्रकार पूजा ॥ काव्यं ॥ हिरणीछंद ॥ जलधिसदृशां पुंडरियाद्याकिणीकिलदीर्धिका। दधिमुखनगःकौवेरीया तदंतरतौजनात्। तदुपरिगतेऽर्हत प्रासादे जिनेंद्रकदंबकं। ताजित दुरितौ जातो जातु प्रणम्य प्रभोः पुरः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ३१ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥उत्तरदिशि अंजनगिरिविषें अष्टप्रकार पूजा ॥ काव्यं ॥ हिरणीछंद ॥ जलधिसदृशा पुंडरियाद्या किणीकिल दीर्धिका।दधिमुखनगःकौवेरीया तदंतरतौ जनात्। तदुपरिगते ऽर्हतप्रासादे जिनेंद्र कदंबकं । ताजितदुरितौ जातो जातु प्रणम्यप्रभोः पुरः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ३२ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पश्चिम दिशि अंजनगिरितः दिर्धिकावापिके ईशान कूणमें प्रथम रतिकरैचैत्य ॥ काव्यं ॥ दीर्धिकयो रंतराल ईशांनग रतिकर नाम । तत्र विचित्र चरित्र जिनेश्वरध्यान। तद्गृहीत साधतसद्मनि श्रीरुषभादि राजान। मंतर्गत धृतिमत्यां वंदन सद्मान ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ३३ ॥

॥ ❀ ॥ पश्चिम दिशि अंजनगिरितः दीर्धिकावापीके ईशानकूणमें द्वितियरतिकरपर्वते जिनालयआगें ऽष्टप्रकारद्रव्यलेईऊभार है ॥ काव्यं ॥ तैनैव रीत्या रतिकर इतर स्तस्य समेन। शोभति सोन्नत यशसासोयं सोश्च गुणेन। तद्गृहीत साधित सद्मनि श्रीरुषभादिराजान। मंतर्गते धृतिमत्यां वंदे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० स्वाहा ॥ ३३ ॥❀॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिवे ऽग्निकूणकेविषे दोयरतिकरहै तिसमें पहिले रतिकरें॥ काव्यं ॥ धन्यतम स्त्वं रतिकरगिरवर रत्नसमान। विदिशि कृशानौ मलमितानां पुण्य प्रधान। श्रीरुषभानन प्रभृति प्रभूणामूर्द्धस्थितेन। सिरसिधृतः श्रीसिद्धायतनैं स्वयिकायेन ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ३४ ॥❀॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अग्नि कूणे दूसरा रतिकर चैत्य आगे ॥ काव्यं ॥ समश्रेणि स्थित विस्तृत पर्वत इतर स्त्वमेव। रतिकर रुचिर प्रभा खर जिनवर सद्म त

देव। शक्त्या त्रिकरण भक्त्या नम्यां नंदत एव। त्वामेव ददतु महोदय मेव श्री देवाधिदेव ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैरुत्तकूणें प्रथम रतिकर पर्वत चैत्य आगे ८ प्रकारें पूजा ॥काव्यं॥ भवत्रय त्रायक शिव सुख दायक रुषभादि देव। लब्धिबावलिमालित्य चैत्य विराजित एव। जातो नैरुत्त विदिश जग द्रतिकर कारक ईश। रति कर नत श्रयितो स्मि त्वा महमेवमुनीश ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ३६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नैरुत्यकूणें २ रतिकरे पूजा ॥ काव्यं ॥ अपरे रतिकर ऊपरि न भोचर चर्चित चैत्य। चंचुमुदं चचराचर केतु मुदार मुपेत्यं। श्री रुषभादि पदोत्पल उज्वल अकल कृपेश। चेतो मधुकर उपरम तिस्म मे मुक्तिरमेश ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं श्री परमात्म० ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काव्य कहे ॥ समराधीश विदिशित्वदा श्रयतो रतिकारः। उदया चलाति धरातल उत्तम जिनपविहार ॥ तत्र चतुर्विध शुद्धसुधा निधि विबुध विवंद्य। श्रीरुषभादि प्रभुं प्रणमामि यशोभर नंद्य१॥ॐ ह्रीं श्रीं परमात्म०३८।

॥ ❀ ॥ अन्यतरे रतिकर गिरि शिषरे प्रवर प्रासाद। उद्यत चातुर्द्वार उ दार अपार अनादि। चातुर्गत भव भ्रांति निवारक अभिनव भान। श्री रुष भादि जिनाय नमो नमो भानु समान ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं ॥ ३९ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उत्तरस्यां अंजन गिरि चैत्ये ॥ काव्यं ॥ चतुर शीति सहस्र योजन समुच्छ्रिते सांजन गिरि। मूलतो दश सहस्र योजन विस्तृतः शिरसोपरि। एक सहस्र योजन उदीचीनो रम्य श्री रमणायकः। स्तूयते तत्र सदैवमनका सार्वे श्री रुषभादिकः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ४० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काव्यं ॥ ततोंजनतोलक्ष योजनगते विजया सुनृता। प्राच्या सुवापि सत योजन लक्षमायत विसृता। अति कांत दधिमुख गिरि स्तस्यां अंबु मध्य गतोमता। स्तदुपरि प्रभु श्री रुषभ प्रभुत सनमामि प्रमोदतः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्म० ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ काव्यं ॥ परिपूर्ण पथो वैजयंति दाक्षिणात्या तदगिरे। विपुल गगनोत्कर्षे दधिमुख पर्वत स्तदभ्यंतरे। तस्य शिषरे धर्मनिकरे विशदतर जिनमंदिरे। गतदुर्मतोहंजिन नमन्न पि पुण्यपुल्लस दीदिरे ॥ १ ॥ ४२ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ काव्यं ॥ जलधि जयनि प्रतिचीनाजयंती वापीततः । तन्मध्य दधिमुख भूभृदुच्चै त स्तथै वात्र समासतः।जिनराज भुवनं शर्म सदनं कर्म शत्रु निकंदनं। ऋषभादिपत्कज पुनीतंमे भवतुभूयो वंदनं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ४३ ॥

॥ ❋ ॥ काव्यं ॥ अपराजितां भूराजितांजन पर्वता दुत्तरभूवि । निर्मं त्स्यकजकल्लोलकलिता द्योतयंती भुवोभुवि । नगमुख्य दधिमुख नदगमध्यै तदुपरि चैत्यालयै । ऋषभादि बोधिदमयिकरोवि बोधिलाभ गुणाशये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ४४ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (काव्यं) रमणीयकांजन रसाधरतो रतिकरो धरणी धव । ईशा नभूमौ तस्यमोलौ विश्वपति गृहपुंगवः । तत्र तादृश तदाकारं ऋषभप्र भृति कृपानिधिः । संस्मर्यचेतासि नमनलाभं लभे देव दयानिधिः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ४५ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (काव्यं) तत्साम्य द्वितीयो चला द्वितीये रतिकर द्युती मती सदा । सकल मंगलमाल दातारि दीनबंधु गृहे सुदा।ऋषभादि दीनानाथ सेवे प्रतिदिनत्वा प्रतिततः । तत्र भवभय दुःखनिकरा न्मुच्यतां मां प्रति यतः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ४६ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ काव्यं॥ वहुल विदिशि विभर्त्तिसोयं रतिंविभुवर गृहं । विश्वभूषण मखिलदूषण दुष्टदुर्मोति निर्ग्रहं । सद्भाव भावित भव्यभाविजन व्यनीत रवी श्रमः । ऋषभादि पुरुषोत्तम पुनीतं जयंतु योहि नगोत्तमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ४७ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ काव्यं ॥ अपर भूधर रूप सुंदर रतिकरे नत सुरनरे । विश्वेशविश द विहारधारे रत्नमय आनंदकरे । नाथ करुणाकर कृपालो श्रीश ऋषभादि प्रभो । त्वच्चरणसेवा सरण करणं दिशतु मांप्रतिहे विभो ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ४८ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ काव्यं ॥ हे भविजन नैऋति विदिशि । नगेंदु रतिकरोपरि जि नालये । भविजन ऋषभप्रभृति जिन । चंद्रमभिनौमि विशदाशये । ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऽर्हं० ॥ ४९ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥❋॥

॥ ❋ ॥ काव्यं ॥ हेरतिकर धन्यतमोऽसि । तदन्य आप्त निकेतन शोभित

हेतारक चेतो रमतु त्वदंत। उत्तम मे विभवोन्वितः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ ऽर्हं०॥५०॥

॥ काव्यं ॥ हेभविजन वायुविदिशि रतिकार। सानुनि जिन सद्मनि ततः हेजीवन श्रीऋषभादि स्वरूप। मनुभव तपस्यतु यतः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ० ॥ ५१ ॥

॥ ❀ ॥ काव्यं ॥ हेभविजन तत्सम रतिकरनाम। तत्रैवास्ति गुणोत्करः ॥ हेजिनपति चैत्यालय ऋषभादिदेव। ममैधी श्री सुखकरः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ ऽर्हं० ॥ ५२ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥ ॥❀॥

॥ कलश ॥ युगवराः श्रीकरा दुःखकश्मलहरा भूरिसूरीश्वराःसुचितराए। धर्मरुचिकारका भवसमुद्रतारका धीर्य गांभीर्य गुणसागराए ॥ दीपनंदीश्वरे, पंचाद्रिजिनगृहे, रुषभप्रमुखाः सतां बंधुराए। जैनचंद्राः सदा, त्रिभुवने सुकृतिनो, जयतु मद मान वन सिंधुराए॥ ५३ ॥ इति श्रीनंदीश्वर मंगल५२ चैत्यपूजनविधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ नंदीश्वरद्वीपतपस्याविधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम दीवालीसें तपश्या अंगीकारकरै ॥ प्रतिक्रमणादि पूजा देववंदन पर्यंत सर्वकृत्यकरकै गुणनो करै ॥ यथा ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रीऋषभादि वर्द्धमानांताशास्वता जिन सर्वज्ञायनमः ॥ इसको २००० गुणनोकरै। छठतपकरै। पीछे बारे मास अमावसको अमावस १२ उपवास करे। फेर दूसरी दीवाली आवै जब तेलोकरै। नंदीश्वर ५२ जिनालयकी थापना करके जूदा २ काव्य पूजापढके ॥ जल चंदनादि अष्टप्रकारसें पूजाकरे। सव फल धजा दीपक बावन चैत्ये चढावै ॥ इसीतरै उद्यापन साहमी वच्छलकरै ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नंदीश्वर दीपकी आरती लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जीया चतुर सुजाण। नवपदके गुण गायरे ॥ (ए चाल) ॥❀॥ जीया अष्टमद्वीप। मंगल आरती गायरे। परमानंद पद एहीज जपतां। अजरामर सुख पायरे ॥ जी० ॥ १ ॥ ऋषभानन चंद्रानन वारिषेण। वर्धमांन पद भायरे ॥ जी० ॥ एच्यारे जिन सास्वत सोहै। समरण मंगल थायरे ॥ जी० ॥ २ ॥ अष्टप्रकारी पूज मनोहर। मनशुद्ध कर मन भायरे ॥ जी० ॥ जन्मजरा दुःख दूरकरणतै। कीजै एह उपायरे ॥ जी० ॥ ३ ॥ पंच

प्रदीपसें आरती कीजे । ज्ञावे आवर्त्त कहायरे ॥ जी० ॥ जैन आरती पढै पढावै । तोथायै सुररायरे ॥ जी० ॥ ४ ॥ मंगलकारी विघननिवारी । सुख कारी लय लायरे ॥ जी० ॥ पंचमगति पांमें एहनां मै । जेगावै चितलायरे जी० ॥ ५ ॥ एहआरती नविजनमोहै । नांमें नव निध थायरे ॥ जी० ॥ सुखकारी ए सकल मनोहर । कर्पूरचंद्र गुणगायरे ॥ जी० ॥ ६ ॥ ❀ ॥ इति नंदीश्वरजीकी आरती संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अथैक विंशतिविध जिनेंद्रपूजा लिख्यते ॥❀॥

॥ ❀ ॥ दोधक ॥ मंगल हरिचंदन रुचिर । नंदन बिपिन उदार । वामानं दन पद पदम । वंदन करि जयकार ॥ १ ॥ प्रवचन मैं प्रज्ञुनी कही ॥ इकवी स परम प्रकार । पूजा हित सुख क्षेम शिव । पद करणी मनुहार॥ २ ॥ राग ॥ वासु पूज्यजिन अंतरजामी॥एचाल॥ए इकवीस विध पूजनकरीयै । जिननो नवनय हरियैरे । स्नपन । विलेपन २ भूषण ३ निरुपम । पुष्प ४ वास ५ उर धरियैरे ॥ ए० १ ॥ सुरनिधूप ६ फल ७ दीपक ८ तंडुल ९ । वरनैवेद्य । १० मधु करियैरे । पत्र ११ पुंगीफल १२ निरमल जलभृत । कलश १३ बिंब पुर धरियैरे ॥ ए० २॥ वसन युगल १४ सितछत्र १५ चमर१६धुनि । मधुरतूर नी १७ करियैरे गीत १८ नटन १९ जिनवर गुणनी स्तुति २०।कोशवृद्धि२१ शुज्ञ धरियैरे । ए० ३ ॥ इति इकवीस विधि पूजानाम पदम् ॥ १ ॥

(दूहा) प्रथम पूज ए जाणियै।न्हवण करै जिन अंग।इण अरचनतें नव्य नौ । होइ कुमति मलज्ञंग ॥१॥कलश सुंगध अवोटजलसुं नरी लेकरि खमो रहै ॥ रागदेशाख ॥ पूर्वमुखसावनं एदेशी॥ अन्यदा कनकगिरि राजशिखरो परै । जिन निलय तत्र जिनचंद्रवसिया । विविध वरज्ञक्ति नरकरणकूं सुरग णा।प्रज्ञुचरण पद्मनतिकरण रसिया॥अ०१॥आवि चउसठि जिनज्ञक्ति धरि ह रिगणा । मिलिकरी सुर असुर कोमि कोडी।तीर्थपति ध्यावता विमलगुण गा वता । प्रज्ञूदरश पावता पाणि जोडी ॥ अ० २ ॥ तीर्थ वरदाम परज्ञास माग धपदम।क्षीरसागर प्रमुख सलिल नरिया।सुरवरा कनक मणि रयण रजतादि मया।कलश करकमल ऊपरि धरिया अ०॥३॥कलश मुख पतितघन चंद्रकर वि मलतर । सलिल उरुधारसें सहुसुरेंद्रा । सुर गिरैं सकल जिनराजको न्हवण

करि।सफल किय निजजनम विगततंद्रा ॥ अ० ४ ॥ इणपरें सुभमती शुद्ध श्रावक सदा। विमलजलसें करै न्हवण जिनकौ। तेह शिवचंद्र कर विमलप दकुं लहै॥ हरिय संसरण संसारवनकौ ॥ अन्य० ५ ॥ काव्यं ॥घनतरांतर ताप विनाशनं। सकल मंगल शाल घनाघनं । जिनगण प्रमुदा जल धारया हितकृते स्नपयामि रमारया ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हं अनंतानंत ज्ञानशक्तिभ्यः सकल सुरवरेंद्र वृंद विहित भक्तिभ्यो जन्मजरामरण निवारणकारणेभ्यः कुम तिमत तरुणगण कानन समूलोन्मूलना वारणेभ्यो एहिलौकिक श्रीऋषभादि श्रीवर्द्धमान पर्य्यंतेभ्य श्चतुर्विंशतिजिनें द्रेभ्यो जलंयजामहे स्वाहा ॥ ॥ ❋ ॥ इति प्रथम जल पूजा ॥ १ ॥❋॥ ॥❋॥ ॥❋॥

॥ ❋ ॥ अथ चंदनपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा॥द्वितियपूज चंदन सरस। कुंकुम अरु घनसार। घसिके कारिये जिनतणैं। तिलक विलेपन सार ॥ १ ॥ अंगणवाऊं एलची रेवाला एचालमें। हरिचंदन वर मृगमदारे वाल्हा। कुंकुम वलि घनसाररे। म्हांरोमन जिनचरणे हो लगगयो। वसिकरि कनक कचौलीयारे वाल्हा। भरिकर धरि गंधसाररे ॥ म्हां० १ ॥ मिलिकरि सकल सुरेसरारे वाल्हा। जिन अरचन चितधाररे ॥ म्हां० ॥ करइ तिलक नव अंगमेरे वाल्हा। जिनके विलेपन साररे ॥म्हां०२॥ जिन नवतनु तिलकार्चनेरे वाल्हा। उपजितफल असमानरे ॥ म्हां० ॥ सुगतिरमणि भालस्थलैरे वाल्हा। भविहोय तिलक समानरे ॥ म्हां०॥ ३ ॥ लेभवियण इणपरिकैररे वाल्हा। चंदन पूजरसालरे ॥ म्हां० ॥ तेशिवचंद्र विमललहे रेवाला। निरुपम गुण मणि मालरे ॥ म्हां० ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ विमल भाव भरान्वित यार्चया । सुरभिचंदन जातसपर्यया । जिन वरेंद्रसुभूघनमर्चया। निशमहं सम पूजन वर्यया॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ० श्रीऋ षभादि चतुर्विंशतिजिनें द्रेभ्योश्चंदनं यजामहेस्वाहा ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ इति द्वितीय चंदनपूजा ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ आभूषणपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ तीजीपूजामें आभूषण अथवा रोकनाणौलेखभोरहै ॥ दूहा ॥ तृतीयपूज जिनराजनी। करहु भविक सुखदाय। मंभन मंभित

जिनतनू। करिये भक्ति मिलाय ॥ १ ॥ राग ॥ पासजिनेसर अरजसुणीजे एचाल ॥ भूषणपूज तीसरी हरिगण। विरचै हित सुख कारीरे। भूषणधरि जिनअंगें निरुपम। अनुभवरस लहै भारीरे ॥ भू० १ ॥ विविधरयण मणिमय अतिसुंदर।मौलिमुकुट अतिराजैरे। अरध चंद्र सम प्रभु भालस्थल।विमल तिलक दुतिछाजैरे ॥ भू० २ ॥ पूरणचंद्र तरणि मंडल दुति। कुंडल युगल सुसोहैरे। श्रवणे अंगद बाहुयुगलमें। त्रिभुवन जन मन मोहैरे॥भू०३॥कांचन थाल विसाल उरस्थल। हारि तार मणिहारारे। इणविधिपूजी शाश्वत जिनकुं। सफल गिणें अवतारारे॥ भू० ४ ॥ इणपरि सुधसमकितधर नरवर॥ पूजे जिन जयकारूरे। ते शिवचंद्र विमल जिन पतिपद । संपदलहै अतिवारूरे॥ भू० ५ ॥ काव्यं ॥ अतिमनोहरि निर्ग्गतदूषणै। विविध दीप्ततरा द्भुत भूषणैः। जिनवरौघ महं प्रयजामिस। त्तममनंतमनुत्तर सद्गुणं॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ० श्रीऋषभादि चतुर्विंशतिजिनेंद्रेभ्य भूषणंयजामहे स्वाहा ॥ ❋ ॥ इति तृतीय आभूषण पूजा ॥ ३ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ पुष्पपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ चौथीपूजामेंपुष्पमाला बूटाफूलजेईकभोरहै ॥ दूहा ॥ जे भवियण भगवंतनी। पूज चतुर्थी सार। रचई सुरभि कुसुमैं करी । लहै सिंधु भवपार ॥ १ ॥ रागभीममल्हार। गुंडमिश्रित ॥ मेघबरसैभरी ॥ एदेशी ॥ सुरभितर कुसुम पूजन भणी उमह्या ॥ शाश्वताजिनतणी सकलइंद्रा। कुंद मचकुंद अरविंद मंदारलहि। विजलसिरि बकुल दमणक वितंद्रा॥सु० ॥ १ ॥ तिलक सुम मोगरा मालती मल्लिका । नाग पुन्नाग नवमालिकाली। केतकी लाल गुल्लाल शरवरणयुत। जलज वलि थलज गुणशालि काली ॥ सु० ॥ २ ॥ घनघना घन घटाकार बादल विरचि। पुष्पके कुसुम जलधार बरसैं। बेग मिथ्यामतीदेषकै अवगिणैं। समकिती बहुलनर भमरहरसै ॥ सु० ॥ ३ ॥ इणपरैं जिनतणी कुसुम पूजन करी। जिन चरणपद्म हरि हुइ भमरिया। इणविधैं जेहजन कुसुम अरचन करै तेह अति गहिर भवसिंधु तरिया ॥ सु० ॥ ४ ॥ का० ॥ त्रिभुवनेश्वरता कमलालयं । सकलभाव निभाव

नतालयं । जिनचयं विमलाकृय चिन्मयं । सुकुसुमैः प्रमहासि सदोदयं ॥५॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ० कुसुमंयजामहेस्वाहा ॥ इति कुसुमपूजा ॥ ६ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचमी वासक्षेप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ❀ ॥ वास पूजए पंचमी । विरचै सुरवर सार । सुगतिवास करिवाभणी । उरधरि भावअपार ॥ १ ॥ एचूरण भरपूर । दुरितकरै चकचूर । एजिनेंद्र पूजन करतार । दुत्तर तरइ संसार ॥ २ ॥ राग वेलाउल । गंधवटी घनसार ॥ ए चाल ॥ बावनाचंदन विपिननंदन जनितसुभघनसारये । वलि तगर कृष्णागरसु कुंकुम मृगमदागंधसारये । कंकोल अंबर द्रव्यघसिकरि रुचिर चूरण करिअलौं । जिनराज अंग उपांग पूजौं लहौं पदजगसिर तिलौं ॥ ३ ॥ दूहा ॥ भावधरी भरपूर । सुरवर चढतै नूर । अरचै श्रीजिनपद सार । वधतैहरष अपार ॥ ४ ॥ ढालतेहिज ॥ वर वासपूजन भगति करतां गंध दहदिशि महमहै । इण भगतिकारक विमलजससें सकलजग सुरभित रहै । इण वासभगतै भगत भयहर अखिलमंगल नितलहै । शिवचंद्र विमल सुभाव पावक कुगति तति तरुवन दहै ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ वरतराकृत वाससदं चेया । निखिलपूजन सद्गुण धुर्यया । सकल विश्वगुरु गुणसद्गुरुं । जिनवरं प्रयजे सुनिशंकरं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ० वासंयजामहेस्वाहा ॥ इति पंचमी वासक्षेपपूजा ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ छठी धूपपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ए छठी पूजा मुदा । करै सकल सुरराय । इण दशांग वर धूपसें । अरचै जिन मनभाय ॥ १ ॥ राग ॥ साहिबा मोती घोनें हमारो ॥ए चाल॥ ❀ ॥किसनागरसेल्हारस सारा । सुरभि मृगमदा वर घन सारा ॥ भावधरी जिनपूजा करीयै भाव धरीप ॥ कुंदरुक्क सुरभित द्रव्य सारा । करइ गंधवट्टि अतिहितदारा ॥ भा०१ ॥ कनक जात वैडूर्य दंडजाणो । गंध वटीधर कर धूपधाणो ॥ भा० ॥ धूपपूज करता सुभ भरता । जिनवर अंग सुगंधि विरचिता ॥ भा० २ ॥ धूपधूम ऊरध दिसि जातै । करिहरिकै ऊरध गति तातै ॥ भा० ॥ जैसें धूप अनलमें जलियै । इण पूजनसें कर्मदल व लिये ॥ भा० ॥ ३ ॥ जैसें धूप गंध दिशि पसरै । तिम पूजकना वरगुण वि

त्तरे ॥ ज्ञा० ॥ तीनभुवनकुं सुरभित करियै । तातैं धूपपूज जर धरियै ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ इम शिवचंद्र कहै जोजविका । इण पूजनसें अंतकर जवका ॥ ज्ञा० ॥ सुरपति धूपपूज करिसारा । लहै जिनदरशसें हरष अपारा ॥ ज्ञा० ५ ॥ काव्यम् ॥ सुरभिधूप सुपूजनतः सदा । निज मनोमत मद्रकरं मुदा । सकल विघ्नहरं वरसिद्धये । जिनवरेंद्र कदंबक मंचये॥६ ॐ ह्रीं श्रीं० धूपंयजामहे स्वाहा॥ इति षष्टी धूपपूजा ॥ ६ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ फलपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) करण तीन इककरि जवी । करियै विगत विकार फलपूजा ए सातमी । वांछितफलदातार ॥ रागकामोद ॥ चंपक केतकिमालती ॥ एचाल ॥ नवरंगी नारंगीया हांरेनारंगीयाए अमल आम्रफल सार।सुखकरणा करणा जला।वरणया कविमनुहार ॥ १ ॥ जंबू नीबू करमदा हांरेअइयो क० ए । कर्कटि दाडिमसार।कदलीफलखारक वली फणस विदाम विचार ॥२ ॥ श्रीफल अरु जंबेरीयाए । निमजा पिसता दाष । इत्यादिक गतदोष वर । सुरभि स्वाडुफलजाष ॥ ३ ॥ एह विविध फलसें जरचो हांरे० फ० ए। कंचनथाल विशाल । जगनायक आगलिधरै । सुरपति जगति रसाल ॥ ४ ॥ इणपरि जविजन सुधमती हांरे० ए । फलपूजा करतार सुरसुख फल लहि तेहुवइ । शिववनिता जरतार ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ अति सुगंधियुतैर्गतिदूषणै । विविधसुंदरशाल विभूषणैः । प्रवरकांचनपात्र गतैः फलै । सुविमलैः प्रयजे जिनमंगलं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ० फलंयजामहेस्वाहा ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ इति सप्तमी फलपूजा ॥ ७ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ दीपपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा॥ जगगुरु पूजा अष्टमी।सुरपति जक्ति मिलाय । जिनमंदिर दीपककरै।हरै कुमति समुदाय॥१॥राग सारंग॥हांहोरे देवा बावना चंदन घस एचाल ॥ हांहोरेवाल्हा ॥ इंद्र चंद्र नागेंद्र सुरा । करै दीपक जक्ति रसालए ॥ हां० ॥कनक रयण मणि रजतना।वर पात्र करै घृतगाल ए ॥ हां० ॥ अनल ज्योतियुत वर्त्तिका।तसु मांझि धरि विमलप्रकामए॥हां०॥ करइ मंदिर मणि मालिका । नासै सहु तिमिर विलासए(हां०)२॥मंगलदीपककर धरी मं

गल मंदिर सुररायए(हां०)करि जिन आरति पुर धरै । प्रनु मुख लषि चित उल्लसायए ॥ हां०३॥ दीप पूज करतारनो । दुरितांतर तिमिर विला यए (हां०) लोकालोक प्रगट करू। केवल सूरज उल्लसायए (हां०)४ ॥ शैवचंद्र जिन पूजसें । इणपरि श्रावक मनभायए॥ हां० ॥ तेह होइ दीप क समो।त्रिभुवन मंदिर दीपायए॥ ५ ॥ काव्यं ॥ जलशनाभि कजासन जालया । करगवेश्वर तामलमालया । विमल मंगल दीपकमालया कमलया कलया जिनमर्चये ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं० दीपं यजामहे स्वाहा ॥ इत्यष्टमी दीपपूजा ॥ ९ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथाक्षत पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा)॥ एनवमी पूजा सुमति । करियै धरि सुभभाव। विमल चारु तंदुल तणी । हितकरणी एदाव ॥१॥ राग आनंद कल्याण ॥ पूजावणी तेरसमे ॥ एचाल ॥ प्रनु पूजा प्रवचने वरणी ॥ प्र० ॥ इंद्र चंद्र नागेंद्र सुरा सुर । समकित धर नर करणी ॥ प्र० ॥ अति अपार संसार जलधि जल ॥ नि पतित तारण तरणी ॥ प्र० ॥ १ ॥ हित सुख क्षेम परमपद परमा । नंद वृंद निधि धरणी ॥ प्र० ॥ ग्याता अंगेद्रूपदि श्राविका ॥ दृढ समकित गुण धरणी ॥ प्र० ॥ २ ॥ जिन महाराज तणी किय अरचा । सतरभेद श्रुतवरणी ॥ प्र० ॥ जेह अभव्य मंदमति कुमती । भव अनंत वन भ्रमणी ॥ प्र० ३ ॥ पूजकुथापे परतिख प्रनुनी । चितधरी कुमति कुरमणी ॥ प्र० ॥ वर शिवचंद्र किरणगण उज्जल । अक्षत तंदुल हरणी ॥ प्र० ॥ ४ ॥ सेवकरैं सुरराय समकिती । इणविध श्रावक करणी ॥ प्र० ॥ इह विपरीत मंदमति भाषै । पूजा शिवपुर सरणी ॥ प्र० ॥ ५ ॥ काव्यं ॥ अशकलोज्वल तंदुल मंगले । रजत शालिमयैः कृतमंगलैः । सकल विश्वपति सुरसेवितं । जिन वरेंद्र महं प्रयजेत्वहं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हंप० अ० अक्षतंयजामहेस्वाहा इति नवमी अक्षतपूजा ॥ ९ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ नैवेद्यपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ ❋ ॥ पूज एह नैवेद्यनी । दशमी अतिहउदार । भविक रियै हरियै विषम । दुर्जय विषय विकार ॥ १ ॥ रागरामगिरी ॥ गात्रलूहे

जिन ॥ ए चाल ॥ लपनश्री वर घृतवरारे वाल्हा ॥ सिंहकेसरीया सुखकरा । सुखकरा हां रेवाल्हा सुखकरा ॥ दालि शालि घृत युतिधरा ॥ ल० ॥ १ ॥ दाली यामोदक सेवियारेवाल्हा ॥ मोतीचूर जलेबीया । मनहरा हां रेवाल्हा म० द्राख सरकरा दुःखहरा ॥ २ ॥ इत्यादिक निरवद्यनैरे वाल्हा । थालजरी नैवेद्यनै॥ ढोईयै हां रेवाल्हा ढो०॥प्रजुपुर पातक धोईयै ।ल० ॥३॥ एहपूज सुखदायिनी रेवाल्हा ॥ दुरगति दुःख जरजायनी।हरिकरै हां० हरि०॥ तिम वलि श्रावक चित्त धरै ॥ ल० ४ ॥ काव्यं ॥ नैवेद्यपूजार्चित मिंद्रवंद्यं ॥ युतं समग्रा तिशयै रनिंद्यं । जित व्रजंवासवतांप्रगद्या । नैवेद्यजूपं प्रसुदाजिवंदे ॥५॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हं० अनंता नंतज्ञानशक्तिभ्यः नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति दशमी नैवेद्यपूजा ॥ १० ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ पत्रपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ उत्तमवृक्षकाअखंमसुगंध सुवर्णपत्रलेकैखमारहै ॥ (दूहा) पत्र पूज इग्यारमी । रिदय रमें सुरराय । करणदमीं करियै मुदा ॥ दरशन सुद्ध मिलाय ॥ १ ॥ रागजैरवी ॥ पंचवरणी अंगीर० ॥ एचाल ॥ पूजकरणी प्रजु जीनी कुशलकारी ॥ पू० ॥ नाग पुन्नाग मंदारसु मरवो कुंद अरविंद सुचुकुंद हारी ॥ अंब कदंब अशोक मल्लिका जाइजूही शतपत्रिवारी ॥ पू० ॥ १ ॥ जुजं गवल्लि परसुख सुरजितवर वर्णफलदल लेईसारी ॥ कनकपात्र धरि जिनबिंब आगलि ॥ ढौवै परमजक्तिमनधारी ॥ पू० २ ॥ एह जगतिकर सहु सुर ना यक ॥ दायक संपद फल जारी । इणपरसुध समकित धर जविजन ॥ पत्र पूज करणी सारी ॥ पू० ३ ॥ पद शिवचंद्र जिनेंद्रनो अरचन । करतांहोय सरण कारी । कुगति पतित जग जीवकुं उधरत । जिम सागर गति तरिवारी ॥ पू० ४ ॥ काव्यं ॥ सुरजि पत्र सदर्चन पूजितं ॥ परमचित्रकरातिशयैर्युतं ॥ सम सुरा सुर वासव वंदितं । जिनगणं मदनारिमहंयजे ५ ॐ ह्रीं० पत्रंयजा महेस्वाहा । इति इग्यारमी पत्रपूजा ॥ ११ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ पूंगीफलपूजा ॥ ❋ ॥

(दूहा) अति सुंदर तर पुंगफल । जिनवर चरण चढाय । पूज बारमी जानीये । करियै जवि मनजाय ॥ १ ॥ श्रीचंद्राप्रजु जिनवर साहि० एचाल

अरचीजै जिनचंद्र चरणकज भमरहोय भविसारा ॥ मैं वारी जाउं ॥ भ० ॥ जैसे कीट फीट हुय भमरी । ऐसाध्यानउपगारा ॥ अ० १ ॥ इह अखंड सुभ सरस पूंगफल । करलेई अमृत आहारा ॥ मैं० ॥ क० ॥ अ० ॥ भगति युगति धरि जिनवर आगलि । ढोवै हरष अपारा ॥ मैं०ढो० अ० २ ॥ इम सुरनायकनी परि जेभवि । निरखी जिन दीदारा ॥ मैं० ॥ सुंदर करियै जिनपद पूजन । तजि जंजाल अपारा ॥ मैं० ३ ॥ पूंगीफल पूजाफल सारा । चितधरि भवि मनुहारा ॥ मैं० ॥ पद शिवचंद्र लहो अवतारा । इम कहै प्रव चनसारा ॥ मैं० ॥ इ० अ० ४ ॥ काव्यं ॥ सकल विश्वजनौघ वशंकरं । चरण पद्मनता खिल शंकरं । दिनकरं हरणोघ तमोर्चिषां । जिनवरं वर पूंगफलैर्यजे ॥५॥ ॐ ह्रीं० पूंगीफलं यजामहे स्वाहा ॥ इति बारमी पूंगीफल पूंजा॥१२॥

॥ ❋ ॥ अथ कलश पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) कलश पूज एतेरमी । सहु मनगमी सुहाय । एह पूजसें भविकनो । पातिक दूर पुलाय ॥ १ ॥ राग ॥ दादा कुशल सुरिंद तुमद० ॥ ॥ एचाल ॥ बारी जय जिनराज जय २ सकल देव सिरताज ॥ वा० ॥ जय२ त्रिभुवनजन महाराज । सोहै प्रभुपुर बार समाज ॥ वा० ॥ तुम प्रभु जगमें दीनदयाल ॥ तुम प्रभु शरणागत प्रतिपाल ॥ वा० १ ॥ कलशपूज प्रभुनी अ तिसार । करीयै लहीयै भवजल पार ॥ वा० ॥ गंगा मागध वलि वरदाम । तीरथ जलभरीया सुखधाम ॥ वा० २ ॥ रयण कनक मणिना अवदात । सुषमा मंदिर कलश सुजात ॥ वा० ॥ अखिल पुरंदर कर परिधार । प्रभु पुर धरियै हरष अपार ॥ वा० ॥ ३ ॥ जैसें कलश पूजसें इंद । पूजे जगनायक जिनचंद ॥ वा० ॥ तेसें श्रावक समकिति वृंद । जिनपति पूजे परमानंद ॥ वा० ४ ॥ कहे शिवचंद्र हृदय सुविशाल । प्रभुगुण समरण दीपक माल ॥ वा० ॥ धरि हरि पापतिमिर गत पार । भगति करो भय निकर विदार । ॥ वा० ५ ॥ काव्यं ॥ कलशपुंज मनोरम पूजितां । जिनवरेंद्र तर्तिं घृतस न्मतिं । सुदृढ भक्तिजनैः कृतसन्निभं । प्रतिदिनं प्रयजेविजितस्पृहां ॥६॥ ॐ ह्रीं० कलशं यजामहे स्वाहा ॥ इति कलश पूजा ॥ १३ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ वस्त्र पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ वसन युगल पूजा हिवै । चउदमि मन उल्लसाय । करियै श्री जिनराजनी ॥ सकल जीउ सुखदाय ॥ १ ॥ राग वेलाउल । चित सेवा प्रभु चरण की क० ॥ एचाल ॥ देववसन युग अतिभलो । पल्लव सुकुमाल चंद्र किरण गण ऊजलो । अदभुत ज्योति विशाल ॥ दे० ॥ अखिल विबुध वर ऊमह्या ॥ चितधरि भगति अपार । बसन युगल मंफितकरै ॥ जिनवर बिंब उदार ॥ दे० ॥ २ ॥ एसमकितधर हारितणी । करणी सुखकार । इणपरिदेस विरति करै । कुमति अनल जलधार ॥ दे० ॥ ३ ॥ यदि शिव चंद्र पद कम लनी । सुख मधुर सनी आस । तद भवियण प्रतिदिन करो । एपूजन शिव वास ॥ दे० ४ ॥ काव्यं ॥ वसन युग्म सुमंफित जूघनं । परमशांति सुधारस सघनं । जिनमिनंच महामिव सूचयै । वसन युग्म चयैर्न्नितरांमुदा ॥ ५ ॥ उँ ह्रीं० वस्त्र युग्मं यजामहेस्वाहा ॥ इति चवदमी दिव्य वसन पूजा ॥ १४ ॥

॥ ❋ ॥ अथ छत्र पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ पूजछत्रनी पनरमी । दुरित तमी दिनकार । ए पूजन करता धरै । तीन छत्र सिरसार ॥ १ ॥ म्हां रै भलेरे ऊगो दिहाडो आजनोरे । एचाल ॥ जिनराज पूज जयकारिणी रे । सित चंद्र मंफल छत्रधारिणीरे ॥ जि० ॥ दुरितांतर ताप निवारिणी रे । अति गहिर सिंधु भव तारिणी रे जि० ॥ १ ॥ सुमतीजन हर्ष बधारणीरे ॥ कुमती जन हरष विदारिणीरे ॥ जि० ॥ सहु जगजीउ जन मन हारिणीरे ॥ कुमतीनी कुमति सुधारिणी रे ॥ जि० ॥ २ ॥ यातो त्रिभुवन यश विसतारिणीरे ॥ काल कुशल व्रतति आसारिणीरे ॥ जि० ॥ सिरसोहै तसु मनुहारिणी रे । करै छत्र पूज शिवचारिणीरे ॥ जि० ३ ॥ हरि जिम भवि सुभाचारिणीरे ॥ भवसायर पार उतारिणी रे ॥ जि० ॥ नरकादि कुगति दुख मारिणीरे ॥ शिवचंद्र किरण अनुकारिणीरे ॥ जि० ॥ ४ ॥ काव्यं सकल लोक शिवंकरताभरं ॥ कुमति घूक मत क्षिति भास्करं । सुविमलातप वारण पूजया । ह्यलमलंकृत मास महंयजे ॥ ५ ॥ उँ ह्रीं० छत्रं यजामहे स्वाहा ॥ इति छत्र पूजा ॥ १५ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ चामर पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ ❋ ॥ चमरपूज ए सोलमी । करियै भक्ति समाज । चमरयुगल करकमलधरि । पूजीजै जिनराज ॥ १ ॥ रागकेदारोगौडी ॥ कुंदकिरण शशि ऊजलोजी देवा ॥ ए चाल ॥ धवलरयण मणि जातनारे ॥ वाल्हा ॥ वाला अति सुकुमालारे । चंद्रतरणि किरणोज्वलारे ॥ वाल्हा ॥ विविध रयण दंभजालारे ॥ १ ॥ प्रतिजिनदोयपासैखमारे वा० । सकल अमर प्रतिपालारे । ऊपरैं जिन महाराजनेरैं ॥ वा० ॥ वींजै चमरविसालारे ॥ २ ॥ चामरयुग हरि वींजतारे ॥ वा० ॥ गत चामरता लहिस्यैरे । अमर अजर शिवपद लहीरे ॥ वा० ॥ सफल अमरता वहिस्यैरे ॥ ३ ॥ चमर पूजकरि सुरवरारे ॥ वा० ॥ अनुभव अमित चाखैरे । इणपरिश्रावकजनकरैरे ॥ वाल्हा ॥ सुमतिवंत श्रुतभाषैरे ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ विशदचामर पूजन भूषितं ॥ विगतमार विकार मदूषितं । जिनगुणं विमलाखिल सद्गुणं । भयहरंचदधे हृदयांबुजे ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अ० श्चामरयुगंयजामहेस्वाहा ॥ इति चामरपूजा ॥ १६ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ वाजित्रपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ ❋ ॥ पूज सतरमी मनरमी । करौभविक चितलाय । मधुरतूर धुनि कीजीयै । पूजनमें उलसाय ॥ १ ॥ रागकाफी ॥ अष्टापदगिरि यात्रकरणकुं ॥ ए चाल ॥ द्रागिडिदि द्रागिडिदिकि धपमपधोंधों । सुरज मधुरस्वर वाजै । भो त्रिभुवन महाराजभजध्वं ॥ इमसुरदुंदुभिगाजै । मनसु धभावै होलाल ॥ श्री जिनवंदन करीयै । भावै पूजी हो लाल ॥ जिनपद कमला वरीयै ॥ ताल कंसाल भेरि शंख झल्लरि । निज निज धुनिसेंगाजै ॥ झणण २ वज्जि रणण २ कर । ताल माल करवाजै ॥ म० ॥ २ ॥ वेणुवीणा दिक सुर संबंधी । सुर वाजित्र वजाया ॥ भूरि तूर रव मिलित मधुरस्वर । सुररांणी गुणगाया ॥ म० ॥ ३ ॥ इणविध श्रावक पूजरचावै । विविध वाजित्र वजावै । वहुविध भववन सरण तजीनें । पद शिवचंद्र सुपावै ॥ म० ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ विबुध वादित तूररवाश्रितं । प्रवरपूजन मंचित सत्पदः ।

सुरगणैः सुरराज समुन्वितै । जिनगणस्य मुदा विदधेसदा ॥ ५ ॥ इति सतरमींवादित्रपूजा ॥ १७ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ गीत पूजा ॥ ❋ ॥

॥❋॥ दूहा ॥ गीतपूज अठारमी । चित्तरमी सुखकार । गीतगान जिन आगलै ॥ करहु भक्ति धरिसार ॥ राग वसंत ॥ व्रज मंम्ल देश दिखावो रसीया ॥ एचाल ॥ बलिहारी तेरी नाथ सूरिति परीया ब० ॥ जाउं बलिहारी बारह जारी ॥ एसूरति गुणमणि दरीया ॥ ब० ॥ १ ॥ जेसूरति नलिनी गुणमणि सम ॥ पानकरणि हुय मधुकरीया ॥ ब० ॥ ते भवसागर पार उतरीया ॥ चिदानंद घनपद वरिया । ब०॥२॥ इंद्रादिक वर सकल सुरासुर ॥ एजिन चरण शरण धरिया ॥ ब० ॥ इंद्राणी परिकर परिवरीया ॥ गीतगान सुंदर करीया ॥ ब० ॥ ३ ॥ जलतरंग शिवचंद्र बिमलयश । सुरभिगंध जग विसतरीया ॥ ब० ॥ एजिनगीत पूज करि हरिगण । इण विधि भविकर गुण भरीया ॥ ब०४ ॥ काव्यं ॥ मधुरगीत सुपूजन पूजितं । प्रबल मोहनरेन्द्र बलाजितं ॥ परमशांति सुधारस सागरं । जिनवरं प्रणमामि मुदाकरं ॥ ५ ॥ इति अठारमी गीतपूजा ॥ १८ ॥

॥ ❋ ॥ अथ नाटक पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ भवअटवी भटकनतणी । विघटनता प्रकटाय । नटन पूज उगुणीसमी । करतां संकट मिटाय ॥१॥ आर्यावृत्ते ततःवीणाप्रभृतिकं । तालप्रभृतिघनं । वंशादिकंतु सुषिर । मानद्धं मुरजादिकं ॥१॥ ततघन शुषिरा नद्धा द्यनेकगीर्वाण तूर्यरव मिलितैः ॥ सप्तस्वरैश्च षडजादिमैः सुधास्पर्द्धिश्चमाधुर्यैः ॥ २ ॥ भक्तिरताः सुरवनिताः । श्रीमज्जिनचंद्र चंद्र गुणगानं । मधुरतरामृत मधुरं । प्रकुर्व्वते सत्वरं सुतरां ॥३॥ युग्मं ॥ काव्यं ॥ सध्यानामदभृङ्गजेंद्रगमनाः कल्याणकुंभस्तनाः । सद्भक्त्याकृत जैनपादनमनाः संपूर्ण चंद्राननाः । चंचद्भिर्दशाभिः षमुत्तरगतैः श्रृंगारकैः शोभिता । नृत्यंतित्रिदशेंद्र वृंद वनिताः सौंदर्यदर्पोद्धताः ॥ ३ ॥ राग कैरवो ॥ बाजे तेरा बिछुआरे । वा० ॥ एचाल ॥ निरत करत सुरकुमर कुमरीया ॥ नि० ॥ बाजे सुर दुंदुभिगगन मधुरीया ॥ नि० ॥ जिनमुखकजमाभि दृग मधुकरीया । निरखि हरषि सुरदेत भमरीया

॥ नि० ॥ १ ॥ अरधचंद्रसम भालविराजत ॥ शरदचंद्रमुख अभिनत करीया ॥ ॥ नि० ॥ अति विशाल सारंग विलोचन ॥ निरषित सहु सुर जनमन हरीया ॥ नि० ॥ २ ॥ सकललोक जनमन जीतणकुं ॥ मदनि सेन मनु प्रकटन करीया ॥ नि० ॥ तब सुरवनिता सुरसमलोहित । जलदघटा मांझि जैसी विजुरीया ॥ नि० ३ ॥ झणण झणण रणकित नेऊरीया ॥ ठमिक२ पाय वजित घुघरीया ॥ नि० ॥ तत्ताथेई तत्ताथेई चलतचरण गति ॥ त ननन री री गान उचरीया ॥ नि० ॥ ४ ॥ ताल कंसाल वेणु वीणादिक ॥ विविध तूर धुनि गयण पसरीया । नि० । द्रागम्दिदिकी २ धपमप धौंधौं । द्रें द्रें वाजित मुरज मधुरीया ॥ नि० ५ ॥ विविध तूर धुनि करत वधरीया ॥ अ नुभव अमृत धार झरीया ॥ नि० ॥ नटनकरंती अमर कुमरीया ॥ जिन गुण गावत मधुर सुसुरीया ॥ नि० ६ ॥ सझीय सोल सिणगारसुंदरीया ॥ सकलदेव स्तुति वर सुर तिरीया ॥ नि० ॥ परम रूप लवणिमकी दरीया । मनुयवासकिय कामकेसरीया ॥ नि० ७॥चिरंजीव चिरनंद जिणेसर॥भवजल तारण तरण सुतरीया॥नि०॥चिदानंदघन सुख आगरीया॥वारीजाउंजिनजी नींसूरति उपरीया ॥ नि० ८ ॥ जय जगबांधव जय जगवत्सल । जय२ जिन महाराज शंकरीया ॥ नि० ॥ जेप्रभु समरण तरणि पकरीया । तेह चरम सा गर भवतरीया ॥ नि० ९ ॥ सूरीयाभ दशकंधरनीपारे । जेह नटन जिनपति पुरकरीया । नि० । ते शिवचंद्र अमल जिनपद युत । अभिनत कमला लिंग नधरीया ॥ नि० १० ॥ काव्यं ॥ भववनाटन नाटन नाशकं । कुशल पद्मदि नेश विकाशकं । कुमतिशंचटनं नटनं मुदा । न्वहमहं विदधे पुरतोऽर्हतां ॥ ११ ॥ इति उगणीसमीनाटकपूजा ॥ १९ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ जिनगुणस्तुति ॥ ❋ ॥

(दूहा) जिनगुणथुति पूजन सदा । करोसुमति गुणधार । इणपूजन कर्त्ताातणो । करे स्तवन दनुजार ॥ १ ॥ विचरवरे मधुवनके वावरे । मैं कैसें भरनजाउं पानीरा ॥ एचाल॥ मेरी लगीय लगन जिनराजचरणसें ॥ मैं अब तरीया भवदरिया ॥ मे० ॥ तुम प्रभु जीतलीये सुरगिरिया । धीरज गुण सुखकरिया ॥ मे० १ ॥ जीतो अतिह गंभीर गुणें करि । परम

चरम सागरिया ॥ मे० ॥ चरण कमल सेवित अतिरसिया । हरिगण अमर भमरिया ॥ मे० २ ॥ अलख निरंजन अगम अगोचर । तूं प्रभु जगदीसरिया ॥ मे० ॥ अशरण शरण चरण निपातित भवि । जनगण तारण तरिया ॥ मे० ॥ ३ ॥ लोकालोक कमलबन विकसित । तुम प्रभुवासर करिया ॥ मे० ॥ तुम महाराज सकल जगजनको । तुम दरसण दृग ठरिया ॥ मे० ४ ॥ मंगलकैरव कानन विकसन । प्रभु शिवचंद्र निकरिया॥मे० ॥ जे भविसुख जिन तवन उचरिया । तेजिन कमलावरिया ॥ मे० ५ ॥ इणविध श्रावक करियै जिननुति । अनुभवरस गुणभरिया ॥ मे० ॥ जिननुति कारक भविजनकुं नित । प्रणमत भुवन विसरिया ॥ मे०६ ॥ काव्यं ॥ विबुध संस्कृत सन्नुति राजितं । सकल सद्गुण संग विभासितं । जिनगणस्य सदा स्तवनं मुदा । सुखकरं सुतराविदधेतरां ॥ ७ ॥ इति जिनगुणस्तुति ॥ २० ॥

॥ ❋ ॥ अथ कोशवृद्धिपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) कोशवृद्धि इकवीसमी । जिनपूजा मनुहार । करो भविक तिणसें भरो । विमल पुण्य भंमार १ ॥ सब अरति मथनमु० ॥ एचाल ॥ रजतमणि कलधौत वरतर रयण द्रव्य उदाररे । अखिल हरिगण लेइ बहुतर भरय जिनभंमाररे ॥ रज० १ ॥ जेह सुमती उचित बहु धन । भरै कोश अपाररे । तेह निज जीवकोश माहें । भरय ज्ञान उदाररे ॥ र० २ ॥ जे अधरमी मंद कुमती । हरै पूजनसाररे । तेहि निज चेतन सदनकुं । करै व्यसनागाररे [illegible]० ३ ॥ निसुणिभवि शिवचंद्र जंपै । पूज एह विसालरे । करो तुमे तिण नित्य लहिस्यौ । अमल मंगल मालरे ॥ र० ४ ॥ काव्यं ॥ अमल कोश विवृद्धिसु पूजना । चिंतमनंत सुखव्रज संगतं । यतिनतं त्रिजगज्जन सम्मतं । निहत दुर्मत माप्त महंयजे ॥ १ ॥ उँ ह्रीँ श्रीँ अर्हत [illegible]तानंत ज्ञानशक्तिभ्यः सकल सुरवरेंद्रवृंद विहित [illegible] : कुमति मततरुगण काननसमूलोन्मूल[illegible] ऐहि[illegible] श्रीरुषभादिश्रीवर्द्धमानपर्य्यंतेभ्यःश्चतुर्विंशाति [illegible] यजामहे स्वाहा ॥ ❋ ॥ [illegible] ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ राग धन्या सिरी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ तेज तरणि मुखराजै ॥ एचाल ॥ जिनजीको सुरपति गण गुण गावै ॥ सु० ॥ जे इकवीसभेद जिनपूजा ॥ करइ करावे भावे ॥ ते जन सकल दुरित अरि हरकरि ॥ तीर्थंकर पदपावै ॥ जि० ॥ वरसनाग रुषि वसु धरणी मित ॥ सकल संघ सुखपावै ॥ माघमास सित पंचमि दिनकर ॥ वासर सहु दिनरावै ॥ जि० २ ॥ श्री जिन चंद्र सूरि खरतरपति । पटनभ तरणि कहावै ॥ श्रीजिन हर्ष सूरि सूरीश्वर ॥ विजयमान वन्दावै ॥ जि० ३ ॥ संघा ग्रह हुंती जय नगरे ॥ महो वझाय पद चावै ॥ रूप चंद्र वादींद्र विरुद धर ॥ जसुगुणि जनगुण गावै ॥ जि० ४ ॥ तसु विनेय वाचकवर पदधर ॥ पुण्य शील शुभ भावै । समय सुंदर गणि तसुपद पंकज । सेवन भमर कहावै ॥ जि० ॥ ५ ॥ सु० ॥ समरण करि जिन वर गिरको तसु॥चरण कमल सुपसावै ॥ पूजरची पाठक शिव चंदे ॥ परमानंद वधावै ॥ जिन० सु० ॥ ६ ॥ ❋ ॥

इति शिवचंदजी उपध्यायकृत इकवीश प्रकारी पूजा सं० ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्रीसमेतशिषरपूजा लिख्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ चौवीसे जिनवर तणा।प्रणमीभावे पाय।समेतशिखर गिरिरायनी। पूजकरूंमनलाय ॥ १ ॥ शिखरसमेतासिरोमणी । एगिरवरकैलास। अतिउत्तग मनोहरू । एजोगिंद्र विलास ॥ २ ॥ वीशप्रभू मुगतैं गया । कर अणशण इह ठोर । तातैं सुर किंनरसवे । वंदतहै करजोर ॥ ३ ॥ महिमा जाकी महियलें । कहि न सकै कवि कोय । मुक्ति महिल निश्रेणिकी । एतीरथजगहोय ॥ ४ ॥ मिथ्यामत राची रह्या ॥ तिनकुं ए न सुहाय । घूकतणें मन किमगमें । दिनकर सब सुखदाय ॥ ५ ॥ अजिताजिणंद दिणंद सम । दूषम सुषमा काल । कुशल करन भव भय हरन । प्रगट भए प्रतिपाल ॥ ६ ॥ श्रीराग ॥ हांहोरेदेवा बावना चंदनघसकुमकुमा ॥ एचाल ॥ हांहोरेदेवा ॥ समेतशिषरगिररायना । गुणगावो मनधर प्रेम ए। हांहोरेदेवा । सुरगुरु पिण एगिरतणी । बहु महिमा वरणे केमए ॥ १ ॥ हांहोरेदेवा ॥ वीसप्रभु मुगतैं गया ॥ अजितादिक श्रीजिनचंदए ॥ हां होरेदेवा ॥ इणकारण एगिरवरू । निश्रेयस सुरतरु कंदए ॥ २ ॥ हांहोरेदेवा । कोडाकोडी मुनिवरू । सीधाबहु इणगिर आयए ॥ हांहोरेदेवा ॥ एगिर फरस्यां

चरम सागरिया ॥ मे० ॥ चरण कमल सेवित अतिरसिया । हरिगण अमर भमरिया ॥ मे० २ ॥ अलख निरंजन अगम अगोचर । तूं प्रभु जगदीसरिया ॥ मे० ॥ अशरण शरण चरण निपतित भवि । जनगण तारण तरिया ॥ मे० ॥ ३ ॥ लोकालोक कमलबन विकसित । तुम प्रभुवासर करिया ॥ मे० ॥ तुम महाराज सकल जगजनको । तुम दरसण दृग ठरिया ॥ मे० ४ ॥ मंगलकैरव कानन विकसन । प्रभु शिवचंद्र निकरिया॥मे० ॥ जे भविमुख जिन तवन उच्चरिया । तेजिन कमलावरिया ॥ मे० ५ ॥ इणविध श्रावक करियै जिननुति । अनुभवरस गुणभरिया ॥ मे० ॥ जिननुति कारक भविजनकुं नित । प्रणमत भुवन विसरिया ॥ मे०६ ॥ काव्यं ॥ विबुध संस्कृत सन्नुति राजितं । सकल सद्गुण संग विभासितं । जिनगणस्य सदा स्तवनं मुदा । सुखकरं सुतराविदधेतरां ॥ ७ ॥ इति जिनगुणस्तुति ॥ २० ॥

॥ ❋ ॥ अथ कोशवृद्धिपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) कोशवृद्धि इकवीसमी । जिनपूजा मनुहार । करो भविक तिणसें भरो । विमल पुण्य भंमार १ ॥ सब अराति मथनसु० ॥ एचाल ॥ रजतमणि कलधौत वरतर रयण द्रव्य उदाररे । अखिल हरिगण लेइ बहुतर भरय जिनभंमाररे ॥ रज० १ ॥ जेह सुमती उचित बहु धन । भरै कोश अपाररे । तेह निज जीउकोश माहें । भरय ज्ञान उदाररे ॥ र० २ ॥ जे अधरमी मंद कुमती । हरै पूजनसाररे । तेहि निज चेतन सदनकुं । करै व्यसनागाररे र० ३ ॥ निसुणिभवि शिवचंद्र जंपै । पूज एह विसालरे । करो तुमे तिण नित्य लहिस्यौ । अमल मंगल मालरे ॥ र० ४ ॥ काव्यं ॥ अमल कोश विवृद्धिसु पूजना । चितमनंत सुखव्रज संगतं । यतिनतं त्रिजगज्जन सम्मतं । निहत दुर्मत मात्त महंयजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हत अनंतानंत ज्ञानशक्तिभ्यः सकल सुरवरेंद्रवृंद विहित भक्तिभ्योजन्मजरामरण निवारणकारणेभ्यः कुमति मततरुगण काननसमूलोन्मूलनवारणेभ्यो ऐहि लौकिक श्रीऋषभादिश्रीवर्द्धमानपर्य्यंतेभ्यःश्चतुर्विंशति जिनेंद्रेभ्यः कोश वृद्ध्यर्थं दिव्य द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ ❋ ॥ इति कोश वृद्धि पूजा ॥ २१ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ राग धन्या सिरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तेज तरणि मुखराजै ॥ एचाल ॥ जिनजीको सुरपति गण गुण गावे ॥ सु० ॥ जे इकवीसभेद जिनपूजा ॥ करइ करावै भावे ॥ ते जन सकल दुरित अरि हरकरि ॥ तीर्थंकर पदपावै ॥ जि० ॥ वरसनाग ऋषि वसु धरणी मित ॥ सकल संघ सुखपावै ॥ माघमास सित पंचमि दिनकर ॥ वासर सहु दिनरावै ॥ जि० २ ॥ श्री जिन चंद्र सूरि खरतरपति । पटनभ तरणि कहावै ॥ श्रीजिन हर्ष सूरि सूरीश्वर ॥ विजयमान वन्दावै ॥ जि० ३ ॥ संघा ग्रह हुंती जय नगरे ॥ महो वझाय पद चावै ॥ रूप चंद्र वादींद्र विरुद धर ॥ जसुगुणि जनगुण गावै ॥ जि० ४ ॥ तसु विनेय वाचकवर पदधर ॥ पुण्य शील शुभ भावै । समय सुंदर गणि तसुपद पंकज । सेवन भमर कहावे ॥ जि० ॥ ५ ॥ सु० ॥ समरण करि जिन वर गिरको तसु॥चरण कमल सुपसावै ॥ पूजरची पाठक शिव चंदे ॥ परमानंद वधावै ॥ जिन० सु० ॥ ६ ॥ ❀ ॥

इति शिवचंदजी उपध्यायकृत इकवीश प्रकारी पूजा सं० ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीसमेतशिषरपूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चौवीसे जिनवर तणा।प्रणमीभावे पाय।समेतशिखर गिरिरायनी। पूजकरूंमनलाय ॥ १ ॥ शिखरसमेतासिरोमणी । एगिरवरकैलास। अतिउत्तग मनोहरू। एजोगिंद्र विलास ॥ २ ॥ वीशप्रभू सुगतैं गया । कर अणशण इह ठोर। तातैं सुर किंनरसवे । वंदतहै करजोर ॥ ३ ॥ महिमा जाकी महियलैं। कहि न सकै कवि कोय । मुक्ति महिल निश्रेणिकी। एतीरथजगहोय ॥ ४ ॥ मिथ्यामत राची रह्या ॥ तिनकुं ए न सुहाय। घूकतणें मन किमगमें। दिनकर सव सुखदाय ॥ ५ ॥ अजिताजिणंद दिणंद सम । दूषम सुषमा काल । कुशल करन भव भय हरन। प्रगट भए प्रतिपाल ॥ ६ ॥ श्रीराग ॥ हांहोरेदेवा बावना चंदनघसकुमकुमा ॥ एचाल ॥ हांहोरेदेवा ॥ समेताशिषरगिररायना । गुणगावो मनधर प्रेम ए। हांहोरेदेवा । सुरगुरु पिण एगिरतणी । बहु महिमा वरणे केमए ॥ १ ॥ हांहोरेदेवा ॥ वीसप्रभु सुगतैं गया ॥ अजितादिक श्रीजिनचंदए ॥ हां होरेदेवा ॥ इणकारण एगिरवरू। निश्रेयस सुरतरु कंदए ॥ २ ॥ हांहोरेदेवा । कोड़ाकोड़ी मुनिवरू। सीधावहु इणगिर आयए॥ हांहोरेदेवा॥ एगिर फरस्यां

भावथी। पापी पिण पावन थायए ॥३॥ हांहोरेदेवा। श्रावक सुध समकित धरै ते विधपूर्वक धर प्रेमए ॥ हांहोरेदेवा ॥ बालकहै जिनचंद्रनी । करै भक्ति सदा निजखेमए । हांहो० ॥ ४ ॥ इति । १ । ढाल दूजी। पूर्वमुषसावनंकरिदशं नपावनं । एचाल ॥ अजित जिनचंद्र सुरवृंद सेवित सदा ॥ सुभग पतकज तणी सेवना । हांरेअईयोसेवनाए । जगत दुर्लभमणी रत्नपर जीवकुं । पूजीयै चरण जिन देवनाए ॥ हांरे० ॥१॥ तरण तारण भवोदधि भविकजीव केई ॥ परम उपगार कर निस्तरया । हांरे०। शिखरगिर राय पर पाय निर्वाणपद ॥ सिद्ध निजरूप गुण संभरया ॥ हांरेअ० ॥२॥ अष्टविध पूजना द्रव्य भावे करै॥ भाव मन सौच धर जेनरा ॥ हांरेअ० ॥ तेशिखरतीर्थ शिवसौख्य संपदवरै॥ बाल जिनभक्तवत्सलकरा । हांरेअईयो वत्सल० ॥ ३ ॥ इति । ॐ ह्रीं श्रीपर मात्मनेअनंतानंत ग्यानशक्तए जन्मजरा मृत्युनिवारणाय श्रीअजिताजिनें द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ द्वितीयपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ ❋ ॥ श्रीसंभव भवदव अनल । जलधर सम जिनराज । परउपगारी परमगुरु । भए भविक सुखकाज ॥ १ ॥ रागवेलाउल ॥ विलेपन कीजै श्री जिनवर अंगे ॥ ए देशी ॥ पूजियैजिन मनरंगै जिनेसर ॥ पूजि० ॥ जल कुंकुमाक्षत धूप दीप करी । नेवजफल मनचंगै ॥ जिने० १ ॥ सेना मात जितारी तात सुत । श्रीसंभव जिन अंगै । हार मुगट कुंडल वर भूषण । चाढो भवि सुभढंगै ॥ जि० पू० ॥ २ ॥ शिखर शिखर पर शिखरभएहै अनंतचतुष्क सुरंगै । बालचंद्र प्रभु अधम उधारन । प्रभुता परम प्रसंगै जिनेसर पूजियै० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने० संभवजिनेंद्रायअष्टद्रव्यं यजामहेस्वाहाः । इति द्वितीयपूजा ॥ २ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ तृतीयपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ ❋ ॥ अभिनंदन जिनचंदकी । महिमा वरणी न जाय । परमरूप परमातमा । सदानंद सुखदाय ॥ १ ॥ रागसारंग ॥ सांझसमें जिन वंदो भवि० ॥ ए चालमें ॥ अभिनंदनजिनवंदो । भविजन । अभि० । आंकणी ॥ संवरतात सिद्धारथमाता । जाके कुलनभ चंदो ॥ भ० अ० ॥ १ ॥

अधम उधारन भवदुःख वारन। सिव सुरतरुनो कंदो। इंद्र चंद्र असुरेंद्र नमें नित। वंदित सुर नर वृंदो॥ भ० अ०॥ २॥ समेतशिखर पर सिवसुख पायो। मिटगयो भवभय फंदो। बालचंद्र प्रभु तरण तारणको। पूजनकरी चिरनंदो॥ भवि० अ०॥ ३॥ इति। ॐ ह्रीं श्री परमात्मने० श्री अभिनं दन जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः॥ ३॥ ❋॥ ॥ ❋॥

॥ ❋॥ अथ चतुर्थीसुमतिजिनपूजा॥ ❋॥

॥ ❋॥ दूहा॥ ❋॥ सुमतिनाथ समसंपदा। सदा सुमति दातार। सेवै सुर नर अमरसहु। चरन सरन चितधार॥ २॥ रागसारंग॥ चरणकी चरणकी चरणकी। वारीजाउं मैं०॥ ए चाल॥ बलिजाउं मैं सुमति जिनंदकी॥ ब०॥ आंकणी॥ पूरनब्रह्म भए परमातम। मेघकुलांबर चंदकी॥ बलि०॥ १॥ भविकुल कमल बिकास करनकुं। प्रगट प्रताप दिणंदकी। सवि गुणलायक वंछित दायक। शासन सुरतरुकंद की॥२॥ वलि०॥करन सुसेवा खचर अमरनर। मात सुमंगला नंदकी। बाल चंद्र प्रभु पतित उधारन। सवगुन रतन समंदकी॥ वलि०॥ ३॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने० श्रीसुमतिजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः॥ ४॥ ॥ ❋॥

॥ ❋॥ अथ पंचमी पूजा॥ ❋॥

॥ ❋॥ (दूहा)॥ पदम प्रभूपद पद्मकी। सरनगही सुखदाय। दर्शन विन अनदेवको। संग कबून सुहाय॥ १॥ राग सोरठ मल्हार॥ अणियारे नैन जिनके। सखि मुनि संग बालक किनके॥ एचाल॥ प्रभुसेती प्रीत लागी। मेरी भाग्यदिसा अब जागीरे॥ प्रभु० आंकणी॥ पद्मप्रभुजीके दर सण अंतर। आगल अब मेरी भागीरे॥ प्रभु० १॥ प्रभु परमातम में बहिरा तम। अनुभव आतम सागी। प्रगट प्रताप प्रभू प्रभुतालख। अब में भयो अनुरागी॥ प्रभु० २॥ अंतरगतकी वैहीज बूझै। क्या बूझै जो दागी। बाल चंद्र निज नाथ निहारत। कुमति कुटलता त्यागीरे॥ प्रभु० ३॥ इति ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने श्रीपद्मप्रभूजिन अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः॥ ५॥ ॥ ❋॥

॥ ❋॥ अथ षष्टी सुपार्श्वजिन पूजा॥ ❋॥

॥❋॥ (दूहा)॥ लोहधातु सम आतमा। परमातम चिद्रूप। कंचनरूप करें

प्रगट । श्रीसुपास जिन नूप॥१॥श्रीसुपास जग जीवके। पारससम जिनराज। अण घड आतम लोहकुं । कंचन करै सुकाज ॥ २ राग वसंत ॥ दादा कुसल सुरिंद तुम दरसणतैं परमानंद ॥ दादा० ॥ ए चाल ॥ नवि पूजो सुपास । सहुनी वंछित पूरै आस ॥ नवि० । जाको कमल सम सुगंध सास । आहार नीहार अदृस्य जास ॥ नवि० ॥ १ ॥ न घटै न वधै नख केस पास । मांसासृग उज्वल वर्णतास ॥ नवि० ॥ अतिसय चौतीस तणो प्रकास । तरण तारण जग जस सुवास ॥ नवि० ॥ २ ॥ श्री समेतशिखर पर कर निवास । प्रनु पायो मुक्तिमहिलसुवास ॥ नवि० ॥ प्रनुके समरणसें कर्मनास। कहै बाल सदा मैं प्रनुकोदास ॥ नवि० ॥ ३ ॥ इति । ॐ ह्रीं श्री परमात्मने० श्रीसुपार्श्वजिन अष्टद्रव्यंयजामहे स्वाहाः ॥ ६ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ सातमीपूजा ॥ ❋ ॥

॥❋॥ चंद्रा प्रनुकी चंद्रसम । मुखसोन्ना मनुहार ॥ देखत दृग आनंद लहै। सूरत अति सुखकार। मल्लि मनोहर तुऊ ठकुराई॥ए राग॥ श्री चंद्रा प्रनु अरज सुणीजै। श्री चंद्रा०आंक०॥त्रिनुवन नाथ गरीबके ऊपर। दीनदयाल निवाज सकीजै ॥ श्रीचंद्रा० १ । अधम उधारन विरुदतुमारो । मोसो अधम न उर कहीजै ॥ श्री० ॥ इह संसार अपार अगाधमै । साहिब सरणागत रषलीजै॥ श्रीचं० ॥ २ ॥ मोपतितनकुं पार उतारो ॥ निज निर्यामक विरुद वहीजै ॥ श्री० ॥ बालचंद प्रनुशिव सुख दायक। आतम संपद अवमोहिदीजै॥श्रीचं०॥ ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत ग्यांन० जन्म० श्रीम० श्रीचंद्रा प्रनू अष्ट द्रव्यं यजा महेस्वाहा ॥ ७ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ अष्टमी पूजा ॥ ❋ ॥

॥❋॥(दूहा)सुबिध जिनंद दिनंदसम। जग जीवन हितकार। मिथ्या मोह अग्यानतम । दूर हरन दिनकार ॥ १ ॥ राग ॥ जियाचतुर सुजांण नवपदके गुणगायरे ॥ एहनी ॥ नेटो नविक सुजाण सुबिध जिणंद सुनन्नावरे ॥नें०॥ उत्तम कुल नरनवतें पायो ॥ फिर औसो नही दावरे ॥ नें० १ ॥ नक्त उधारन नवि निस्तारन । नवसागरकी नावरे ॥ नें० ॥ तन मन वसकर निज आतमकों । प्रनु समरण लय लावरे ॥ नें०२॥ द्रव्य नाव युत पूजन करियै।

मनधर अधिक उल्लावरे ॥ जे० ॥ बालचंद प्रभुपतित उधारन । मिलगए पुन्य पसावरे ॥ जे० ॥ ३ ॥ इति ॐ ह्रीँ श्री परमात्मने श्री सुविध जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ इति अष्टमी पूजा ॥ ९ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ नवमी पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ ❋ ॥ श्रीशीतल मुनिइंद्रकी । महिमा अजब अपार । ज्ञानानलथी जिणदीया । कर्मअष्टेंधनजार ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिद्धाचलगिरि नेट्यारे धनभाग्य हमारा ॥ एहनी ॥ श्रीशीतलजिनवंदो रे भविजनसुखकारा श्री० पतित उधारन दुरगति वारक । दायक शिवसुख साराँरे ॥ भ० ॥ १ ॥ भक्तभविक भव भय अपहारी । ए प्रभु परम सुप्यारारे । भ० मिथ्या ग्रीषम ताप निवारन । प्रभुचंदन अनुकारारे ॥ भ० २ ॥ परउपगारी परम महागुरु । परमातम अविकारारे ॥ भ० ॥ बालकहे प्रभुको भवभवमें चरणसरणमनवारारे ॥ भ० ३ ॥ ॐ ह्रीँ श्री परमात्मने० श्री शीतलजिनेंद्राय अष्टद्रव्यंयजामहेस्वाहाः ॥ ९ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ दशमीपूजा ॥ ❋ ॥

(दूहा) श्री श्रेयांसजिणंदनी । चरन सरन सुखकार ॥ पुन्यप्रशाद मिल्यो मुझे । भव २ सुखदातार ॥ १ ॥ ढाल ॥ दादाचिरंजयो सेवकजन सुखदाई दरसण सदादियो ॥ एचाल ॥ भवि भावधरी श्री श्रेयांसजिनेसर पूजो मन रली ॥ भ० एप्रभुसम अवरन कोदेवा । जाकी चौसठइंद्र करे सेवा ॥ तेलहै सुरसुख सिवसुख मेवा ॥ भ० १ ॥ प्रभु परतिख सुरतरु सम स्वामी । जाकी पुन्यप्रसाद सेवा पामी । प्रभु जगजीवन अंतर जामी ॥ भ० २ ॥ प्रभु दीनदयाल परमदाता । जगवत्सल जगबंधव त्राता । कहे बाल सकलदायक साता ॥ भ० ३ ॥ इति । ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मने श्री श्रेयांसजिनेंद्रायअष्टद्रव्यंयजामहेस्वाहाः ॥ १० ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ इग्यारमीपूजा ॥ ❋ ॥

(दूहा) परमातमपरमेसरू । श्री तेरमजिनराज । ध्यावो सेवोभविकजना ज्युंपावो सुखसाज ॥ १ ॥ रागकनड़ो । मेरी लागीलगन जिनचरणे ॥ मेरी० एचाल ॥ मनमोह्योरी मेरो जिन चरणे म० ॥ दुःख दोहग सबहरणे । मन० ॥

प्रगट। श्रीसुपास जिन नूप॥१॥श्रीसुपास जग जीवको पारससम जिनराज। अण घड आतम लोहकुं । कंचन करै सुकाज ॥ २ राग वसंत ॥ दादा कुसल सुरिंद तुम दरसणतें परमानंद ॥ दादा०॥ ए चाल ॥ नवि पूजो सुपास । सहुनी बंछित पूरे आस ॥ नवि० । जाको कमल सम सुगंध सास । आहार नीहार अदृस्य जास ॥ नवि० ॥ १ ॥ न घटै न वधै नख केस पास । मांसासृग उज्वल वर्णतास ॥ नवि० ॥ अतिसय चौतीस तणो प्रकास। तरण तारण जग जस सुवास ॥ नवि० ॥ २ ॥ श्री समेतशिखर पर कर निवास । प्रनु पायो मुक्तिमहिलसुवास ॥ नवि० ॥ प्रनुके समरणसें कर्मनास। कहै बाल सदा मैं प्रनुकोदास ॥ नवि० ॥ ३ ॥ इति । ॐ ह्रीं श्री परमात्मने० श्रीसुपार्श्वजिन अष्टद्रव्यंयजामहे स्वाहाः ॥ ६ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ सातमीपूजा ॥ ❋ ॥

॥❋॥ चंद्रा प्रनुकी चंद्रसम । मुखसोना मनुहार ॥ देखत दृग आनंद लहै। सूरत अति सुखकार। मल्लि मनोहर तुझ ठकुराई॥ए राग॥ श्री चंद्रा प्रनु अरज सुणीजै। श्री चंद्रा०आंक०॥त्रिनुवन नाथ गरीबके ऊपर। दीनदयाल निवाज सकीजे ॥ श्रीचंद्रा० १ । अधम नधारन विरुदतुमारो । मोसो अधम न नर कहीजे ॥ श्री० ॥ इह संसार अपार अगाधमे । साहिब सरणागत रषलीजे ॥ श्रीचं० ॥ २ ॥ मोपतितनकुं पार नतारो ॥ निज निर्यामक विरुद वहीजे ॥ श्री० ॥ बालचंद प्रनुशिव सुख दायक। आतम संपद अबमोहिदीजै॥श्रीचं०॥ ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत ग्यांन० जन्म०श्रीम० श्रीचंद्रा प्रनू अष्ट द्रव्यं यजा महेस्वाहा ॥ ७ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ अष्टमी पूजा ॥ ❋ ॥

॥❋॥(दूहा)सुविध जिनंद दिनंदसम। जग जीवन हितकार। मिथ्या मोह अग्यानतम । दूर हरन दिनकार ॥ १ ॥ राग ॥ जियाचतुर सुजांण नवपदके गुणगायरे ॥ एहनी ॥ नेटो नविक सुजाण सुविध जिणंद सुननावरे ॥ने०॥ नत्तम कुल नरनवतें पायो ॥ फिर ऐसो नही दावरे ॥ ने० १ ॥ नक्त नधारन नवि निस्तारन । नवसागरकी नावरे ॥ ने० ॥ तन मन बसकर निज आतमकों । प्रनु समरण लय लावरे ॥ ने०२॥ द्रव्य नाव स्तुत पूजन करियै।

मनधर अधिक उछावरे ॥ जे० ॥ बालचंद प्रभुपतित उधारन । मिलगए पुन्य पसावरे ॥ जे० ॥ ३ ॥ इति ॐ ह्रीँ श्री परमात्मने श्री सुविध जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ इति अष्टमी पूजा ॥ ९ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ नवमी पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ ❋ ॥ श्रीशीतल मुनिइंद्रकी । महिमा अजब अपार । ज्ञानानलथी जिणदीया । कर्मअष्टेंधनजार ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिद्धाचलगिरि भेट्यारे धनभाग्य हमारा ॥ एहनी ॥ श्रीशीतलजिनवंदो रे भविजनसुखकारा श्री० पतित उधारन दुरगति वारक । दायक शिवसुख साराre ॥ भ० ॥ १ ॥ भक्तभविक भव भय अपहारी । ए प्रभु परम सुप्यारारे । भ० मिथ्या ग्रीषम ताप निवारन । प्रभुचंदन अनुकारारे ॥ भ० २ ॥ परउपगारी परम महागुरु । परमातम अविकारारे ॥ भ० ॥ बालकहे प्रभुको भवभवमें चरणसरणमनवारारे ॥ भ० ३ ॥ ॐ ह्रीँ श्री परमात्मने० श्री शीतलजिनेंद्राय अष्टद्रव्यंयजामहेस्वाहाः ॥ ९ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ दशमीपूजा ॥ ❋ ॥

(दूहा) श्री श्रेयांसजिणंदनी । चरन सरन सुखकार॥ पुन्यप्रशाद मिल्यो मुझे । भव २ सुखदातार ॥ १ ॥ ढाल ॥ दादाचिरंजयो सेवकजन सुखदाई दरसण सदादियो ॥ एचाल ॥ भवि भावधरी श्री श्रेयांसजिनेसर पूजो मन रली ॥ भ० एप्रभुसम अवरन कोदेवा । जाकी चौसठइंद्र करे सेवा ॥ तेलहै सुरसुख सिवसुख मेवा ॥ भ० १ ॥ प्रभु परतिख सुरतरु सम स्वामी । जाकी पुन्यप्रसाद सेवा पामी । प्रभु जगजीवन अंतर जामी ॥ भ०२ ॥ प्रभु दीनदयाल परमदाता । जगवत्सल जगबंधव त्राता । कहे बाल सकलदायक साता ॥ भ० ३ ॥ इति । ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मने श्री श्रेयांसजिनेंद्रायअष्टद्रव्यंयजामहेस्वाहाः ॥ १० ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ इग्यारमीपूजा ॥ ❋ ॥

(दूहा) परमातमपरमेसरू । श्री तेरमाजिनराज । ध्यावो सेवोभविकजना ज्युंपावो सुखसाज ॥ १ ॥ रागकनडो । मेरी लागीलगन जिनचरणे ॥ मेरी० एचाल ॥ मनमोह्योरी मेरो जिन चरणे म० ॥ दुःख दोहग सवहरणे । मन० ॥

विमलजिनंदकी अदभुत तनुछवि। सोव्रत सोवनवरणौं। म० ॥ १ ॥ दीन दयाल दयानिध दाता । सबजीवन सुखकरणौं ॥ म० ॥ परमातम प्रभुपरम परमगुरु। प्रभुभए तारण तरणौं ॥ म० २ ॥ पुन्यप्रसाद लह्यौ प्रभु दरशन। सास्वत शिवसुख धरणौं। म०। बालकहै प्रभु सेवकजाणी। रख लीजै मोहि सरणौं ॥ म० ३ ॥ इति। ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंता० जन्मज० श्रीमत्० श्री विमल जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहेस्वाहाः ॥ ११ ॥

॥ ❋ ॥ अथ बारमी पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ श्री अनंत जिन देवकी। सेवकरो मनलाय। मनवंछित सुख जिमलहै। दुरगत दूर पुलाय ॥ १ ॥ रागमालवीगौडी ॥ सब अरति मथन मुदार धूपं ॥ करतगंध रसालरे ॥ देवा० ॥ एचाल ॥ ध्यावो सेवो भविजन भक्ते।अनंतजिनंद महाराजरे देवा ॥ एसुरतरुसम जगमें जिन वरातारणतरण जिहाजरे ॥ देवा ॥ ध्या०१ ॥ कृपासिंधु भगवान परमगुरुाती नभुवन सिरताजरे। देवा ॥ जिनसेवातें शिवसुख पामें । सफलहुवै सब काजरे। देवा। ध्यावो० ॥ २ ॥ इह संसार असार भजनविन। कैसें रहै निज लाजरे। देवा। बालचंद्र प्रभु परउपगारी। दायक अविचल राजरे। देवा।ध्या वो०३। ॐ ह्रीं परमात्मने अनंत जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजांमहे स्वाहाः१२॥❋॥

॥ ❋ ॥ अथ तेरमी पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ धर्म जिनेसर परमगुरु । परउपगारी देव। परमातम प्रभु चरणकी। कीजै नितप्रति सेव ॥१॥ राग भैरवी॥पंचवरणी अंगीरची कुसुमजाती। कुसुमजातीरे अईयो कुसुम० पां० एचाल ॥ सुखकारी रे देवा सुखकारी। धर्मजिनंद सेवो सुखकारी। सुखकारी रे देवा।ध०। तीन भुवनके साम शिरोमणि। सब जीवनकोहै हितकारी॥ धर्म० १॥जगजीवन जगबंधव जगगुरु। परम पुरुष प्रभु उपगारी। अकल सकल अघहर पर अनुपम।अचल अगोचर अविकारी । धर्म० २। भवसंताप निवारण तारण। जिनसेवा मोहि अतिप्यारी। सुरतरुसम प्रभु चरणशरणकी। बालचंद कहै बलिहारी। धर्म०३ इति। ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंता० जन्म० श्रीमत्० श्रीधर्मजिनेंद्राय अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ १३ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ चवदमी पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) शांति करण सब दुःखहरण । शांतिजपो सुखकार । शिव सुखदायक जगतगुरु । परमातम अविकार ॥ १ ॥ राग गौडी ॥ केसरीयानें ज्याजको लोक तिरायो । ए अचिरिज मोहिं आयो के० एचाल ॥ शांतिजिनेसर ध्यावो।भविजन शांति०। तरण तारण भवसागर जिनको । तीनजगत जस चावो ॥ भ० शां० १ ॥ शांति सुधारस नाम प्रभुको । समरण कर मन भावो । कर्मकोट सतखंम्र हुवै तब। सुद्ध सरूपी थावो ॥ भ० शां २ । भक्ति करो मनसुध भगवंतकी।मन सुध प्रभुगुण गावो । बालकहै प्रभुके सेवनसें । मनवंछित फलपावो । भ० शां० ३ इति ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मने० श्रीशांतिजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ १४ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ पनरमी पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सोरठो ॥ कुंथुजिनेसर देव । भविजन पूजो भावथी । चरण कमल की सेव । इंद्रादिक नित प्रति करै ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ कुंद किरण ससि ऊजलोजी देवा । पावन घसि घनसारोजी आछो ॥ एचाल ॥ चंद्र किरण जेसो ऊजलोरे देवा । जग जश प्रभुविस्तारोजी ॥ आछो ॥ अनंत गुणेंकरी सोभतारे ॥ देवा ॥ कुंथुजिनंद जग सारोजी ॥ १ ॥ आछो ॥ कामित दायक सुरतरूरे देवा ॥ सर्व जीवन प्रति पालोजी ॥ आछो ॥ भवि जन पूजो भावथीरे ॥ देवा ॥ ए प्रभुपरम आधारोजी ॥२॥ आछो शिवसुख दायक साहिबारे ॥ देवा ॥ पतित उधारन हारोजी । आछो बालचंद्र जिनचंद नोरे ॥देवा॥सरणगह्यो सुखकारोजी ॥आछो॥ चंद्र० ३ इति ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मने श्री कुंथु जिनेंद्राय अष्ट द्रव्यं यजामहेस्वाहाः ॥ १५ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ सोलमी पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ श्री अरनाथ जिनंदनी । पूजा अष्टप्रकार । करियै मन सुध भावसों, भवभव सुखदातार ॥ १ ॥ राग कालिंगडो ॥ मनारे जिन चरणा चितलावो, मनारे एहनी ॥श्री अरनाथ कुं ध्यावो मनारे त्रिभुवन पति गुण गावो ॥म० त्रिभु०॥ऐसो अवरन देव जगतमें । जाको जगजश चावो ॥ म०त्रि०१॥ सूर नरेसर नंदन प्रभुजी ॥ मात प्रभावती ठावो ॥ तन मन लगन

लगावो प्रभूसें ॥ नरक निगोद नजावो ॥ भ०त्रि० २ ॥ परम पुरुष परमेशर प्रभुको । चरण शरण मनभावो । दीनदयाल दयानिध पूजत । बाल परम सुख पावो ॥ भ०त्रि० ३ इति । ॐ ह्रीं श्री परमात्मने श्री अरनाथ जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहेस्वाहाः ॥ १६ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ सतरमी पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ कुंभ समुद्भव जगधणी । मल्लिजिनेसर देव । जसु पद पंकज की करै । इंद्र चंद्र नितसेव ॥ १ ॥ राग कल्याण । तेरी पूजावनी तेरसमें ते० एचाल ॥ मेरी लगन लगी जिन चरणें । मल्लिजिनंद सुखकरणै । होमेरी० ॥ त्रिभुवन नायक सब सुख दायक । एप्रभु अशरण शरणें ॥ होमेरी० १ ॥ अनुपम रूप विराजित प्रभुजी । सोभत सोवन वरणै ॥ होमेरी० २ ॥ अकल अगोचर प्रभु उपगारी । ध्यावो सब दुख हरणै । होमेरी० ॥ जो निज आतम कुं सुखचावो । लावो चित्त समरणै ॥ होमेरी० ॥ बालकहै प्रभु अधम उधारन रखलीजै मोहि सरणै होमे० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने श्री मल्लिजिनें द्राय अष्ट द्रव्यं यजामहेस्वाहाः ॥ १७ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ अठारमीपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ ❋ ॥ विंशतितम जिनवर नमुं । मुनिसुव्रत जिनचंद । भावै भविजन भेटियै । दूरटलै भविफंद ॥ १ ॥ रागमल्हार ॥ चिहुंभर बदरियावरसै ॥ ए चाल ॥ मुनिसुव्रतस्वामीदरसै ॥ आजआनंद घनवरसैहो मु० ॥ समेतशिखरपर प्रभुपद पंकज । पुन्यप्रसादे फरसैहो ॥ मु० ॥१॥ प्रभुदर शन घनघोर घटाजख । मोरनयनयुग तरसै ॥ हो मु० ॥ भविजनचात्रक प्रभुगुन गावत । भावत भावन भरसै ॥ हो मु० ॥ २ ॥ धर्मध्वनिजाकै उपजत खेती । कर्म निरसहोय निरसै ॥ हो मु० ॥ बालप्रसाद प्रभुजीके आतम । परमातम प्रभु सरसै ॥ हो मु० ॥ ३ ॥ इति । ॐ ह्रीं श्री परमात्मने० अनं० जन्म०श्रीमत्० श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्रायअष्टद्रव्यं यजामहेस्वाहाः ॥१८॥

॥ ❋ ॥ अथ उगणीसमीपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ ❋ ॥ नमिजिन पूजो भावसों । भविक भक्ति मनलाय । भावसुध जिन पूजतां । दुरगति दूर पुलाय ॥ १ ॥ रागमालवीगौडी ॥ सब

अरतिमथनसुदारधूपं ॥ ए चाल ॥ नमिजिनेशर जगदिनेशर । पूजो भविजन भावरे। जगतपति जिनराज साहिब । भवसमुद्रनो नावरे ॥ न० ॥ १ ॥ इंद्र चंद्र सुरेंद्र नर सुर। पूजनको जसुचावरे॥ तरण तारण कृपासागर। सेवनको अवदावरे॥ न०॥ २ ॥ पुन्यभदै प्रभु दरसनपायो। आनंदकंद सुभभावरे। बालकहै प्रभुके चरणकी। सरणमोहि सुहावरे॥ न० ॥ ३ ॥ इति। ॐ ह्रीँ श्री परमात्मने० अनं० जन्म० श्रीमत्० श्रीनमिजिनेंद्रायअष्टद्रव्यंयजामहेस्वाहाः ॥ १९ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ बीशमीपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ ❋ ॥ पारश पारशनाथका। गुणगातां गहिगट्ट। कष्टटलै संपति मिलै। मनवंछित फलथट्ट ॥ १ ॥ राग । सांवरीयास्वामीजीअबमो हितारो ॥ ए चाल ॥ शांवरियासाहिबकी बलिहारी सां० ॥ अश्वसेनतात वामा देवीमाता। पाशजिणंदहैसुखकारी ॥ सां० ॥ १ ॥ जाकेगुनको पारनपावै। इंदनरेंद नरनारी ॥ सां० ॥ भवभवभमतां प्रभुजीमेंपाया। दुरगति दूर निवारी ॥ सां० ॥ २ ॥ अबमें प्रभुबिन और नचाहुं। एहीमुझमन इकतारी। बालकहै प्रभुसाहिब मेरे। शिवसुखदो मोहितकारी ॥ सां० ॥३॥

॥ ❋ ॥ ढाल दूसरी ॥ तेजतरणमुखराजे। हांजी मुख० एचाल ॥ भविजन शिखरसमेतवधावो। भ०। वीसजिनेशर मुगतसिधाए। ए तीरथ जगचावो। भ० १॥ द्रव्य भावकरी पूजरचावो। त्रिभुवनपति गुणगावो। समकित पुष्टालंबन कारन। एसम उर नभावो॥ भ०२॥ सकल संघ मकसूदावादमें। आनंद अधिक वढावो। भक्ति भावसें प्रभुजीकुं पूज्या। मनवंछित फल पावो ॥ भ०३ ॥ संवत सिधि नभनिधि वसुधा सुभ। कार्त्तिक सुदि पणचावो। जिन सौभाग्य सूरीसर गुणनिधि। खरतर गछपति चावो॥भ०४॥ अमृत लाभ समुद्र पसाये॥ पूजरची भवि भावो॥ बालचंद परमातम प्रभुका॥ हरप हरप गुण गावो॥ भ०५॥ इति ॐ ह्रीँ श्री परमात्मने अनंतानंत ग्यानशक्तये जन्म० श्रीमत् पार्श्व जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहेस्वाहाः ॥ २० ॥ राग कमखो ॥ शिखर गिरितीर्थंकर वीश जिनवर सुदा। भक्ति भर भविकवर पूज करिये। अष्टविध विविध धरि सिद्धि नवनिधि सही । सुघट घट संपदा प्रगट वरिये। शि० १। विकट भट

कर्मकी जोट दूरै करी । विबुध बुध आत्म निज सुद्धि धरियै । चरण जिनसरण गहि भवतरण जन लहै । चरण दरसण लही ज्ञान चरियै । शि० २ । धन्य दिन आज जिनराज गिरराज चढ । दरस लहि सरस संसार दरियै । धर्म धर मगन जिन भक्ति पूरनगही । दुरति गति दुःखसें दूर टरियै । शि० ३ । अष्ट नव निद्धि सदा सिद्धि सुद मावमें । पूज करि शक्ति निज भक्ति भरियै । बाल प्रतिपाल सुविसाल गुनगावतां । धार भव वार निधि पार तरियै । ॥ शि० ॥ ४ ॥ इति श्रीबालचंदजी उपाध्याय कृत समेत शिखरगिरी पूजा संपूरणम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ वार व्रतकी पूजा लिख्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रथम समकित द्रढ करण जल पूजा ॥ दूहा ॥ व्रत बारै आदर करी । पूजा तेर विधान । आनंदादिक संग्रही । सप्तम अंग प्रधान ॥ १ ॥ राग सरपदो ॥ ज्योति सकल जग जागती हां० ॥ ए चाल ॥ ज्योति विमल जगझलहलै । हां रे अइयोऊ० ए । शाशन पति जिनचंद । त्रिकरण प्रणमन करिनमूं । वीरचरण अरविंद ॥ १ ॥ न्हवन १ विलेवण २ बासनी ३ । हां रे० । मालं ४ दीवंच ५ धुवणियं ६ ॥ फूल ७ सुमंगल ८ तंदुला ९ ॥ हां रे० ए० ॥ अमलं दप्पणंच १० नैवज्जं ११ ॥ २ ॥ ध्वज १२ फलवृंद १३ एमेलियै । हां० ए । पूजा त्रिदश प्रकार । हांए । व्रत ग्रहि अनुक्रम अरचीयै । जगपति जगदाधार ॥ ३ ॥ सिवतरु सुखफल स्वादनो । हां रे० । दायक गुणमणि खांण । हांए । कुशल कला कलना थकी । प्रगटै परम निधान ॥ ४ ॥ दूहा ॥ समकित व्रत धुर आदरो । मेटो निज मन भर्म । दूर थकी ए परि हरो । कुगुरु कुदेव कुधर्म ॥ १ ॥ धुर दर्शनाण सुचरण अणसण धीर वीर्य वखानियै । तपइम सकलना सिद्धि गज वसु पण ति वार सुठानियै । व्रत बारना अतिचार शर शर परम गुरुमुख जानियै । करित्याग राग प्रशस्त धरिमन विमल संवर मानियै ॥ १ ॥ राग रामगिरी ॥ गात्रलूहै जिनमन रंगसूंरे देवा । स० । ए चाल ॥ धुर समकित व्रत चित धरो रे वाल्हा । भवभय दुःख दल परिहरो । परिहरो हां रे वाल्हाप० । शिवरमणी वर लीजीयै ॥ १ ॥ वीर जिनेसर वंदीयैरे वाल्हा । जिम चिरकालसुं नंदीयै ।

नं० हारेवा० ॥ कुमति दुरति सरकीजीयें ॥ २ ॥ चरण करण गुण माणि निलोरे वाल्हा० । जगजन तारण सिरतिलो । सिं० हां० ॥ सदगुरुचरण नमीजीये ॥ ३ ॥ जिन भाषित श्रुतसागरोरे वा० भेद विविध विधि आगरो । आगरो० हांरे० ॥ श्रवण ञ्जुगलकर पीजीयें ॥ ४ ॥ जिन शासन जिनधर्म नोरे वा० । रागदलन वसुकर्मनो । कर्म० । हां । कुश लकला रसभीजीयें ॥ ५ इति ॥ दूहा ॥ सकल करमदल मलहरण । पूजा धुर जलधार । जगनायक जिनतुंगनी । नरधर भगति उदार ॥ १ ॥ रागझिंझोटी ॥ निरमल होय भजलो प्रभुप्यारा । सव० ॥ ए चाल ॥ जिनवर न्हवण करण सुखदाई । बूटे जनम मरण दुःखदाई । जि० । टेर॥ खीरजलधि गंगोद कमांहि । अमल कमल रस सरस मिलाई । जिन० ॥ १ ॥ निरमल शकल परम तीरथ जल । मणियुत कंचन कलश भराई ॥ जिन० ॥ २ ॥ या जिन जीके नवण करणतें । भवभय दुःखदल दावसमाई॥ जि० ॥ ३ ॥ द्रव्य भाव विधि समकित फरसे । तेनर नरक निगोद न जाई ॥ जि० ॥ ४ ॥ यातें भवि जनके दुःख नासे । कपूर कहे सुरहोत सहाई ॥ जि० ॥ ५ ॥ इति० ॥ काव्यं परमलंकृत संस्कृत अभ्यया । स्नपति यो जिनचंद्र मिमंमुदा । भवभयं परिमुच्य सदोदयं । भजति सिद्धिपदं सुखसागरं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंत ग्यानसक्तये । जन्मजरा० श्रीमद्० श्रीसमकितव्रत उपदेशकाय जलं यजामहेस्वाहा । इति प्रथम समकित व्रतपूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अथ प्राणातिपातव्रते केशर चंदन विलेपन पूजा ॥❀॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ प्राणातिपात विरमण व्रतें । उन्नो जंतु विनास । इणसुं शिवसुख नामिलें । हिंसा दोषविलास ॥ १ ॥ हमकुं छांडचले वनमाधो । राधा० ॥ ए चाल ॥ भविजन जीवदया व्रत धारो । सम परिणाम संभारोरे । भ० ॥ टेर ॥ अपराधी पिण जीव न हणियें । भाषे जगदाधारोरे । देशविरति धरनें पिण भाख्यो । विन अपराध न मारोरे । भ० गो गज सेंधव महिषा दिकनें । बंधन वध न विचारोरे । कीजे न अवयव छेद त्रिकालें । जल चारो न विसारोरे ॥ भ० ॥ २ ॥ कीमी कुंजरनें सम गिणीयें । सुख दुःख जोग विकारोरे । थावर त्रस पंचेंद्र्यादिकनो । होय रहि

यैं हित कारो रे ॥ ज॰ ॥ ३ ॥ ए व्रत रत चित जे नर जगमें। सुर नर गण मन प्यारो रे। तेहिज लोक महाजटमारयो। सकल करम परिवारो रे ज॰। ४ थूलथकी ए व्रत जे पाले। तेलहै शिवसुख सारो रे। कुशल कला कलना करी प्रगटै। अनुजवरंग उदारो रे। जवि॰ ॥ ५ ॥ दूहा ॥ जव दव दाघ सवे मिटै। पूजो परम दयाल। जावठ जंजन सुखकरण। दूजी पूजरसाल ॥ १ ॥ (राग घाटो)। जिनराजनाम तेरा म्हाराज॰। ए चाल ॥ पूजो जिनेंद्र प्यारा। होतारो रे विकट जवजलसें। हो॰। टेर ॥ हां रे घनसार चंदन वासै। हां रे सुकुरंग नाजि जासै। दुःख नारकादि नासै ॥ होता॰ ॥ १ ॥ घसि सूकमा दि जेली। नाना सुगंध मेली। शिवदैन कर्म ठेली ॥ होता॰ ॥ २ ॥ पूजा सदा रचावो। वर जावनापि जावो। शिवसौंधमे समावो ॥ होता॰॥३॥ विधि जाव द्रव्य धारो। हिंसाको दोष वारो। प्रजुनाम नां विसारो। होता॰ ॥ ४ ॥ तज पाप जार फंदा। शिवशं कलाप कंदा। साधै कपूरचंदा ॥ होता॰ ॥ ५ ॥ इति प्रथम पूजा ॥ काव्यं ॥ अमल कुंकुम केशर मिश्रितै। जिनपतेर्युगपा द समर्चनं। हरति सो जवदाघ मसुंदरं। रचतियो घनसार सुचंदनै ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्री परमात्मने अनंता॰ जन्म॰ श्रीमत्॰ प्राणातिपात विरमण व्रत उपदेशकाय चंदनं यजामहे स्वाहाः ॥ इति प्राणातिपात पूजा ॥ २ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ मृषावाद व्रते वासक्षेप पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॥ दूहा ॥ मृखात्याग व्रत दूसरो। कुमति दुरति हरतार। जविजन जावै आदरो। शिवतरु फलदातार ॥ १ ॥ राग वशंत ॥ सब अरति मथन सुदारधूपं। कर॰ ॥ ए चाल ॥ सुण जविक नर धर दुतिय व्रत मन। मृखावादन बोलरे। बाला मृखा॰। टेर ॥ मृखावाद कुवाद शेखर कुजशवाद न ढोलरे। बाला। कुजश॰ सु॰ ॥ १ ॥ सकल शिवसुख धाम ध्रमरवि। ढकण राहु निटोलरे। शिवपुर नगर पथि शवर सरिखो। अरति व्यापन घोलरे। बाला। अरति॰ बाला॰। सु॰ ॥ २ ॥ निपट कूट कला प करिनें! परशुपति मतखोलरे। ऋणविधौ धनधान्य निकरै। कपट कूट न तोलरे ॥ बालाक॰ सु॰ ॥ ३ ॥ कूटलेख कुसाख जरिनें। रचयमां ममको लरे। अन्य सिरसि कलंक धरिनें। चरित ठांनुं न बोलरे। बाला चरित॰

सु० ॥ ४ ॥ वसुनरेसर वृथा रचिनें । लह्यो कुगति कचोलरे । डुतीय व्रत रस राग जैरवी । कुशलसार विमोलरे । बालाकुश० सु० ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ दूहा ॥ जगदाधार जिनंदनें । पूजो वासरसैण । शिववनिता वस कीजियै । पूजा त्रयतम एण ॥ १ ॥ राग गरबो ॥ जवि चतुर सुजाण परनारी सुं प्रीत मी कवहुन कीजियै ॥ ज० । ए चाल ॥ जविजाव धरी जवसागर निस तार क जिनपति सेवियै ॥ ज० ॥ टेर ॥ बावनाचंदन खंमन करियै । तेहमां वलि कुंकुमरस जरियै । मृगमद परिमलता अनुसरियै ॥ जवि० ॥ १ ॥ कंकोल सुवासित वलि कीजै । तिम विवध कुसुम रस कस दीजै । ए चूरण विधि निज वसकीजै ॥ जवि० ॥ २ ॥ इम वासरसैं जे जिन पूजै ॥ तिणसैं स वि करम सवल धूजै ॥ सुखसंपति जायन घर दूजै ॥ जवि० ॥ ३ ॥ सुर किंनर नर सासन धारै । विनसमरयां सहुसंकट वारै । ए पूजन मनवंछित सारै ॥ जवि० ॥ ४ ॥ विमला कमला सवला पावे । जे प्रजुगुण गण जावन जावे । इम चंदकपूर सुजशगावे ॥ जवि० ॥ ५ ॥ इति काव्यं ॥ मृगमदा वर घश्रण मिश्रितै । वरवरास सुचंदन संस्कृतैः । रचतियो जिन पूजन मंजसा । सलजते निर्वृति किलवासकैः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंत ग्यानसक्तये । जन्मजरामृत्यु श्रीमद० मृषावाद विरमण व्रत उपदेशकाय वा सक्षेपं यजामहेस्वाहाः । इति तीसरी मृषावाद व्रत पूजा ॥ ३ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ चोथी अदत्तादांन व्रते पुष्प माल पूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ व्रततृतीय हिवसांजलो । जाखै जगताजिनंद । स्तेयकरण सन्न सुख हरण । अष्टकरम दलकंद ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ हांहोरे देवा । बावन चंदन घसि कुमकुमा । चूर० । ए चाल ॥ हांहोरे बाला । परधनहरण गमन करो । धरि त्रिकरण शुद्ध विलाशए । हांहोरेवाल्हा । ए जवजल जलधर समो । व लि समकित वृंद विनास ए । व० ॥ १ ॥ हांहोरे वाल्हा ॥ कनक रजत मणि धातुनो । जल थल खग पशु पटकूलए । ज० ॥ हांहोरे वाल्हा ॥ इमतनु थू ल जगतिजरया । लही सकल पदारथ मूलए । ल० ॥ २ ॥ हांहोरे वा ल्हा । कुमति कुरति रमणी तणो । छे सदन ए चोरीनो कर्मए । छे० । हांहोरे वा० । विपद जलधि पिण जाणियै । सचपल थई नासेधर्मए । स० ॥ ३ ॥

हांहोरे बा० ॥ ए व्रत सुरतरु सारिखो । शिव सुख फल देन उदार ए । शि० हांहोरे बाल्हा । कुशल कलायुत कीजियै । लहियै भवजलनोपार ए । ल० ॥ ४ ॥ इति ॥ दूहा ॥ पूज चतुर्थी मालनी । करियै भक्ति वशेण । मोहति मर भर उपशमें । प्रगटै बोध खिणेण ॥ १ ॥ राग खंभायची । भवभय हरणा । शिवसुख करणा । सदा भजो भ्रम० में० एचाल ॥ भविजन पूजो जिन ग्रीवा धरि । बर फूलनकी माला । मेंवारी० ब० ॥ ए पूजन दुरगति घरछेदी । विरचै शिवसुख साला । मेंवा० विर०भवि०॥१॥ चंपक मरुक तिलक चंपेली । पाम्ल लालगुलाला । मेंवा० पा० । विमल कमल परिमल मदमाता । नतजे अलि मतवाला । मेंवा० । नत० भवि० ॥२ ॥ जाई दमण जूही कोरंटक । मालती मरुक रसाला । मेंवा० मा० । ऐसें पंचवरण कुसुमें करि । माल रचन परना ला । मेंवा० मा० भवि०॥३॥ ए मालापूजन करीनासै । कोटि करम दुःखजा ला । मेंवा० को० । सुमति सुरति अनुभव वलि प्रगटै । त्रासै कुमति कुचाला । मेंवा० त्रा०। भवि० ॥ ४ ॥ ए विधि संबरद्वार विकासै । पापसदन मुखताला । मेंवा० पा०। कपूरकहै प्रभुचरण शरणमें । मंगल माल विशाला । मेंवा० मं० भवि ॥ ५ ॥ इति ॥ काव्यं । सरस सुजर चंपक पाटलै। मरुक मालति केतकी सत्कजैः । विधि विरंचस्यजिनं परिपूजयेत । सज मजश्रम मीभिरजेन्नकः १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानं० जन्मजरा० श्रीम० अदत्तादान विरमण व्रत उपदेशकाय । मालं यजामहेस्वाहाः॥ इति अदत्तादांन व्रत चोथी पूजा ॥४॥

॥ ❋ ॥ अथ पांचमी मैथुन व्रते दीपपूजा ॥ ❋ ॥

॥ दूहा ॥ ❋ ॥ व्रत चोथे मैथुन तजो । भजो भविक भगवान । शीला राधन योगसें । लहियै शर्म्म वितान ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ कुंद किरण शशी ऊ जलोरे देवा । पाव० ॥ ए चाल ॥ मन वच काया थिरकरीरे । बाल्हा । कलु ख कुशील निवारोरे । आछो । एह नरक रमणी तणो रे । बाल्हा । शोदर अति हित कारो रे । आछो ॥ १ ॥ नर सुर पशु सहुजातनोरे बाल्हा । विषय कलित बहु दोषैरे । आछो । ते परिहारिनें थिररहो रे बाला० । निजदा रासंतोषैरे ॥ २ ॥ आछो । लंकापति नरकें गयोरे । बाल्हा एमैथुनरस धारूरे आछो । एहनें तजकरि केईलह्यारे । बाल्हा । जीवसकल सुखसारूरे

॥ ३ ॥ आछो। शील रत्न जतनें धरोरे बाल्हा । तसदूषण सविछंडीरे आछो।कुशलकला करिनें लहोरेवा०। शिवसुख माल प्रचंडीरे। आछो॥४॥ इति॥ ❀ ॥ दूहा ॥ दीपकपूजा पंचमी। करै सकल दुःखनास । ज्ञायक लोका लोकनो। प्रगटै बोधिविकास ॥ १ ॥ रागदेश वरवो ॥ केसरियानेंजाऊ को० ॥ एचाल ॥ ❀ ॥ भावधरी दीपक पूज रचावो। यातें शिव सुखसंपति पावो। भा०। रक्त पीत सित वरण विचित्रत। सूतनीवाट वणावो। गोघृतमां हि अधिक तरकरिनें। सुलमन दीपजणावो। भा०१ । दीपकनेंमिस मनमंदि रमै। ग्यांनकोदीप जगावो। जड़तातिमर कलापहरीनें। मंगलमालवधावो। भाव० ॥ २ ॥ अरतिहरण रतिदायक जगमें। एपूजन मनभावो। सुर नर पायनमें ततखिणही। यातें नरकनजावो ॥ भाव० ॥३॥ अनुभव भावविशाल करीनें। आतमसुं लयलावो। कपूरकहै भविजनसें प्रभुके। वर गुणगण ज श गावो ॥ भाव० ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ आत्मप्रबोधे कविवर्धनाय। जाड्यांधकार व्रजमर्दनाय। भव्यप्रदीपं कुरुभक्तिवृंदैः । प्रभोगृहे वायघतर्जनाय ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंत० जन्मजरा० श्रीमज्जि० मैथुन विरमणव्रत नुपदेश काय दीपंयजामहेस्वाहाः ॥ इति पांचमीमैथुन व्रत पूजा ॥ ५ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ छठी परिग्रह व्रते धूप पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ भविकीजे व्रत पंचमे । सकल परिग्रह मांन । ए मोहा दिक शवरनो । भूयर दुःखनी खांन ॥ १ ॥ राग वशंत ॥ अतुल विमल मेल्या अखंड गुणे । मेल्या० ए चाल ॥ सकल भविकलरया विमल गुणे बाल्हा। मांन परिग्रहनो करो ए। सकल० ॥ टेर ॥ वज्र समान ए समगिरि भेदन। दोष दिवश पति वासरो ए। स० ॥ १ ॥ धन कण वशन गवादिक पशुनो। धातु निकर तिम जांणिये ए । इत्यादिक नवभेद विधांने। दशवे कालिक भाणिये ए ॥ सक० ॥ २ ॥ एहनें मूलथकी जेहरे नर । तेहनें मोक्ष मिलें सहीए। सुचिर काल ग्रहवास वसें जे । तेहनें देश विधे कहीए। सक० ॥३॥ नरक निवास इणें विनपाम्यो। मुम्मण सेठ ते भाखिये ए। भवि जन ए व्रत भावथी पालो। कुशल कला निजदाखिये ए॥ स० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❀ ॥ दूहा ॥ छठी पूजन धूपकी । धूवो जिनवर अंग । कुशल

भि करमतणी हरै। दायक शिवसुख चंग ॥ १ ॥ राग देसाख ॥ प्यारी बि-
ववरणी न जाय । प्यारी० । थां रै मुखभारी हो वारीराज । प्या ॥ ए चाल ॥
ऐसी विधि पूजन भाई दिलधार । धूप धूम घनसार धार करि । ऐसी० ।
टेर ॥ या भवभीम वारिसागरमें । तरस तरंभक तरल विचार । धूप० ॥ १ ॥
चंदन देवदारु बलि अंबर । मृगमद गंधवटी घनसार । धूप० ॥ २ ॥
ऐसें सुरभिद्रव्य बहुमेली । तिणमें सेल्हारस नविसार । धूप० ॥ ३ ॥ म
णियुत कंचन धूपदांनमै । बिमलानलथी करि सुप्रचार । धूप० ॥ ४ ॥ क
पूर करत छुतिया जिन पूजा । भविजन गणकी तारणहार । धूप० ॥ ५ ॥
काव्यं ॥ नानासुगंध वसुनिर्मित सारधूपं । चाकर्षितं भ्रमरवृंद मतिर्हियेन ॥
श्रद्धाश्रये विधि निवेश्य बिशालभक्त्या । धूपे जिनाधिपतिर्नं शिवदं
सुदावै ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंत० श्रीमज्जि० परिग्रह प्रमाण व्रत
उपदेशकाय धूपं यजामहेस्वाहा: इति परिग्रह प्रमाण व्रत छठी पूजा ॥ ६ ॥

॥ ❋ ॥ अथ सातमी दिशपरिमाण व्रते पुष्प पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ छठो व्रत दिशमानको । गमनागमन निवार । अकुश
लता सवि उपशमै । श्रेयसंपजै सार ॥ १ ॥ रागगरबो । सिद्धाचलमंडण - स्वा
मीरे ॥ ए चाल ॥ ❋ ॥ श्रीशिवसुख संपति वरियैरे । भवभय दुखवार
ण करियैरे । करिदिशि परिमाण जेचरियै । रसीला । भाव विमल दिल
धरियैरे । वाल्हा धरियै तो समरस भरियै । र० ॥ १ ॥ अध ऊर्धनें तीरछ
वखाणोरे । दिश विदिशनें तेम प्रमाणोरे । ए छे संकट जलधिनोराणो ॥ रसी०
॥ २ ॥ एमां गमनागमन निवारेरे । ओछै कुमति दुरति भरतारोरे । इकच
क्री लह्यो दुखभारो । रसी० ॥ ३ ॥ ए व्रत शिवसाधन चंभोरे । तुमे भविजन
एहन खंभोरे । कहै कुशलकला नितमंभो । रसी० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❋ ॥
॥ ❋ ॥ दूहा ॥ भवियण पूजा सातमी । कीजे भक्ति विशाल । ससुरभि नाना
जातना । विमल कुशम भरथाल ॥ १ ॥ ❋ ॥ रागधन्याशरी ॥ कबहुमें नीके
नाथन ध्यायो ॥क०एचाल॥ प्रभुजीकी फूलै पूजन सारो ।प्र०॥टेर॥श्रीजिन
जीके चरणकमलमें । अलि समता गुणधारो । प्रभु०॥१॥ चंपक कुंद गुलाव
केवडा । पारधिनाग कलारो । जासु दमण वासंति मोगरा । पाडल लाल मं

दारो । प्रभु० ॥२॥ इम नानाविध कुशम घटा करि । भाव विमल जलधारो तोलहियै भविजन ध्रुव करिनें । अचिरथकी भवपारो । प्रभु० ॥ ३ ॥ व्रत धर फूल कलाप रुचिर ग्रहि । पूज तजे जगतारो । कपूर कहत जिन चरण सरण लहि । करम सबल दल मारो । प्रभु० ॥ ४ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ गंधामलादि गुण लक्षण लक्षितैर्वै । पुष्पोत्करै रखिल गुंजित चंचरीकैः ॥ संसेवये ह्रिविध जाति समुद्भवैर्या । जैनेश्वरं व्रजतिसोह्य चिराच्छिवंना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीं परमात्मने अनंतानंत० जन्म० श्रीमज्जि० दिशि परमाण व्रत उपदेशकाय पुष्पंयजामहेस्वाहाः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

इति दिशि परमाण व्रत सातमी पूजा ॥ ४ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥❋॥अथ आठमी अष्टमंगलीक भोगोपभोग व्रतपूजा॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जगनायक पदकमलमें । धरियै करि मनभृंग । भोग अनें उपभोगनो । एसहुव्रत गिरिशृंग ॥ १ ॥❋॥ सिद्धचक्रपद वंदोरे । भविकासि० ए चाल ॥❋॥ सकलसचित्तनें द्रव्यविकृती । बाहन बलि तंबोल । वसन कुशम दल पानहि तिमवलि । सयण विलेवण घोलेरे । भविका । इण व्रतमें मनमंभो। शिवसुख रयण करंभोरे । भविका । इण० ॥ १ ॥ ब्रह्मचार्य दिशि न्हाण भत्त इम । नियम चतुर्दश माल । प्रतिदिन भाव हृदयधरि करियै । एहनी सार संभालरे । भवि० इण० ॥ २ ॥ तिमही अभक्ष करोत्तर त्रिंशत । अखिल विपुल महिकंदो । कालखीण सहु द्रव्य अजाण्यो । फल निशिभोजन छंदोरे । भ० ॥ इण० ॥ ३ ॥ विविध अप्पोल दुप्पोल विभेदें । अशनारंभ विशाल । इंगालादिक करण करावण । कर्मादान कुचालरे । भ० ॥ ४ ॥ इण० ॥ एवंभे ते शिवसुखभंभे । खंभै कुगति दुकाल । सहजानंद शस्यसुख प्रगटे । प्रवदे त्रिजगकृपालरे । भ० । इण० ॥ ५ ॥ इण व्रतकरि चितमंदिर भरियै । तरियै भवजलपार । अनभव चंद्र सुधा झडमंभे । कुशलकला निरधाररे । भ० इण० ॥ ५ ॥ इति० ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ मंगलपूजा अष्टमी । करमदलन असिधार । करियै श्रीजिनराजकी । वरियै शर्म अगार ॥ १ ॥ राग ठुमरी ॥ ❋ ॥ तुमबिन दीनानाथ दयानिधि कोनखबरले मेरीरे । तु० । ए चाल ॥ भ

भि करमतणी हरै। दायक शिवसुख चंग ॥ १ ॥ राग देसाख ॥ प्यारी लि-
ववरणी न जाय । प्यारी०। थां रै मुखभारी हो वारीराज। प्या ॥ ए चाल ॥
ऐसी विधि पूजन भाई दिलधार । धूप धूम घनसार धार करि। ऐसी०।
टेर ॥ या भवभीम वारिसागरमें। तरस तरंभक तरल विचार। धूप० ॥ १ ॥
चंदन देवदारु बलि अंबर । मृगमद गंधवटी घनसार । धूप० ॥ २ ॥
एसें सुरभिद्रव्य बहुमेली। तिणमें सेल्हारस नविसार । धूप० ॥ ३ ॥ म
णियुत कंचन धूपदानमें। बिमलानलथी करि सुप्रचार । धूप० ॥ ४ ॥ क
पूर करत नुतिया जिन पूजा। भविजन गणकी तारणहार। धूप० ॥ ५ ॥
काव्यं ॥ नानासुगंध वसुनिर्मित सारधूपं। चाकर्षितं भ्रमरवृंद मतिर्हियेन ॥
श्रद्धाश्रये विधि निवेश्य विशालभक्त्या । धूपे जिनाधिपतिनें शिवदं
मुदावै ॥ १ ॥ उँ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंत० श्रीमज्जि० परिग्रह प्रमाण व्रत
नपदेशकाय धूपं यजामहेस्वाहाः इति परिग्रह प्रमाण व्रत छठी पूजा ॥ ६ ॥

॥ ❋ ॥ अथ सातमी दिशपरिमाण व्रते पुष्प पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ छठो व्रत दिशमानको । गमनागमन निवार। अकुश
लता सवि नपशमै । श्रेयसंपजे सार ॥ १ ॥ रागगरबो। सिद्धाचलमंभण - स्वा
मीरे ॥ ए चाल ॥ ❋ ॥ श्रीशिवसुख संपति वरियैरे । भवभय दुखवार
ण करियै रे। करिदिशि परिमाण जेचरियै । रसीला ।भाव विमल दिल
धरियैरे। वाल्हा धरियै तो समरस भरियै। र० ॥ १ ॥ अध ऊर्धनें तीरछ
वखाणो रे। दिश विदिशनें तेम प्रमाणो रे। ए छे संकट जलधिनोराणो॥ रसी०
॥ २ ॥ एमां गमनागमन निवारैरे। ओछै कुमति दुरति भरतारोरे । इकच
क्री लह्यो दुखभारो। रसी० ॥ ३ ॥ ए व्रत शिवसाधन चंभोरे। तुमे भविजन
एहन खंभोरे। कहै कुशलकला नितमंभो। रसी० ॥ ४ ॥ इति ॥ ❋ ॥
॥ ❋ ॥ दूहा ॥ भवियण पूजा सातमी। कीजे भक्ति विशाल। ससुरभि नाना
जातना। विमल कुशम भरथाल ॥ १ ॥ ❋ ॥ रागधन्याशरी ॥ कबहुमें नीके
नाथन ध्यायो ॥क०एचाल॥ प्रभुजीकी फूलै पूजन सारो ।प्र०॥टेर॥श्रीजिन
जीके चरणकमलमें। अलि समता गुणधारो। प्रभु०॥१॥ चंपक कुंद गुलाब
केवभा। पारधिनाग कलारो। जासु दमण वासंति मोगरा । पाभल जाल में

दारो । प्रनु० ॥२॥ इम नानाविध कुशम घटा करि । नाव विमल जलकारो तोलहिये नविजन ध्रुव करिनें । अचिरथकी नवपारो । प्रनु० ॥ ३ ॥ व्रत धर फूल कलाप रुचिर ग्रहि । पूज तजे जगतारो । कपूर कहत जिन चरण सरण लहि । करम सवल दल मारो । प्रनु० ॥ ४ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ गंधामलादि गुण लक्षण लक्षितेर्वै । पुष्पोत्करै रखिल गुंजित चंचरीकैः ॥ संसेवये त्रिविध जाति समुद्भवैर्या । जैनेश्वरं व्रजतिसोह्य चिराच्छिवंना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्री परमात्मने अनंतानंत० जन्म० श्रीमज्जि० दिशि परमाण व्रत उपदेशकाय पुष्पंयजामहेस्वाहाः ॥ ❃ ॥ ॥ ❃ ॥

इति दिशि परमाण व्रत सातमी पूजा ॥ ७ ॥ ❃ ॥ ॥ ❃ ॥

॥❃॥अथ आठमी अष्टमंगलीक नोगोपनोग व्रतपूजा ॥ ❃ ॥

॥ ❃ ॥ जगनायक पदकमलमें । धरियै करि मनभृंग । नोग अनें उप नोगनो । एसहुव्रत गिरिशृंग ॥ १ ॥❃॥ सिद्धचक्रपद वंदोरे । नविकासि० ए चाल ॥❃॥ सकलसचित्तनें द्रव्यविकृती । वाहन बलि तंबोल । वसन कुशम दल पानहि तिमवलि । सयण विलेवण बोलेरे । नविका । इण व्रतमें मनमंनो । शिवसुख रयण करंमोरे । नविका । इण० ॥ १ ॥ ब्रह्मचार्य दिशि न्हाण नत्त इम । नियम चतुर्दश माल । प्रतिदिन नाव हृदयधरि करियै । एहनी सार संनालरे । नवि० इण० ॥ २ ॥ तिमही अनक्ष करोत्तर त्रिशत । अखिल विशुल महिकंदो । कालखीण सहु द्रव्य अजाण्यो । फल निशिनो जन छंदोरे । न० ॥ इण० ॥ ३ ॥ विविध अप्पोल डुप्पोल विनेदे । अशनारंन विशाल । इंगालादिक करण करावण । कर्मादान कुचालरे । न० ॥ ४ ॥ इण० ॥ एहंने ते शिवसुखमंने । खंने कुगति डुकाल । सहजानंद शस्यसुख प्रगटे । प्रवदे त्रिजगकृपालरे । न० । इण० ॥ ५ ॥ इण व्रतकरि चितमंदिर नरियै । तरियै नवजलपार । अननव चंद्र सुधा ऊडमंने । कुशलकला निरधाररे । न० इण० ॥ ६ ॥ इति० ॥ ❃ ॥ ॥ ❃ ॥

॥ ❃ ॥ दूहा ॥ मंगलपूजा अष्टमी । करमदलन असिधार । करियै श्रीजिनराजकी । वरियै शर्म अगार ॥ १ ॥ राग ठुमरी ॥ ❃ ॥ तुमबिन दीनानाथ दयानिधि कोनखबरले मेरीरे । तु० । ए चाल ॥ न

विजन नावे श्रीजिनवरकी । मंगलपूजा कीजैरे० । बालामंग० ॥ टेर ॥ श्रीवायन शरलासन नंद्या । वर्त्त कुंन्न निरमीजैरे।मीनजुगल श्रीबछ सरावनो संपुट स्वस्ति करीजैरे । बाल्हा। संपु० । नवि० ॥ १ ॥ ए अष्टमंगल मंगल कारण । कंचन थालरचीजैरे । रुचिराखंड विमल गुणधारी । तंडुलसें लिखलीजैरे । नवि० ॥ २ ॥ निजमन नक्तिनाव धरि नविका । प्रनुसनमुख धरदीजैरे । तोसुखधाम मुक्तिपुट नेदन । निवसन कृत्य लहीजैरे । नवि० ॥ ३ ॥ स्वांत गगनसम सूर्योदयथी । कोटिकरम तम बीजैरे । प्रगट प्रताप पीन जिन चरणें । चंदकपूर नमीजैरे । नवि० ॥ ४ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ यःसत्कांचननाजने शुचितरे मण्युत्तमैर्मंमिते । श्रीवान्यष्ट सुमंगलानि विधिना मंमयप्रनो सन्मुखे । नक्त्यात्मा परिढोकये द्रुचिपरः सोघव्रजं नाशयेत् । नित्ते दुर्गति नूधरं च लनते स्वर्गादि मोक्षाश्रयं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंत ग्यांनसक्तये जन्म० श्रीमज्जि० नोगोपनोगव्रत उपदेशकाय अष्टमंगलं यजामहे स्वाहाः ॥ इति नोगोपनोग व्रत आठमी पूजा ॥

॥ ❋ ॥ अथ नवमी अनरथ दंडव्रते तंदुल पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ नवि ए व्रत अष्टमधरो । अनरथ दंम विचार । पाप चिरंतन उपशमै । प्रगटै पुन्यप्रचार ॥ १ ॥ सुगणसनेही साजन श्रीसीमंदिरसामि । अ० ॥ ए चाल ॥ त्रिकरणशुद्ध निसुणनवि अनरथ दंम विचार । समकित सुनटनो गंजन नंजन संबर द्वार । मनमथ बोधविकासक शास्त्र पठन अधिकार । मुख नू दग तनुथी करै नंमकुचेष्टागार ॥ १ ॥ हास्यथकीवली कुबचन नाषण मुखरप्रबंध । ऊखल मूशल घरट्टादय अतिधरण दुरंध । स्नानसमें जल तेल अधिकतर अप्रतिबंध । पापविधाना देशप्रकाशनं दूषणखंध।सरस वस्तुनृत पात्र मात्र विन बादनठान। धरणकरण सुविवेकविकल तिम दानादान । इम सहु अनरथ करम अवरपिण दुःखनी खान । व्यर्थपणें मनमान्यां बेदै पुन्यप्रधान ॥ २ ॥ इण करिपूर्वै केइगया नरसंकटधाम । व्रतग्रहिनें रहियै तव लहियै शिवसुखठाम । ए व्रत तरणी नवोदधि तारण तरण प्रकाम । कुशलकला नितकरतां प्रगटै अजिनवमांम ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ नवमी श्रीजिनराजनी । पूजा परमविलाश । विमलाक्षत भरिभाजनें । भविजन करो प्रकाश ॥१॥ राग पीलू ॥ अवतो उधास्यो मोहि चहीये जिनंदराय । राखुं भरोसोमें रावरे चरणको । अ० ॥ ए चाल ॥ श्रीजिनवरजीकी सेवा सारे । सो भवभय दुःख दूरनिवारे । श्रीजि० ॥ तंदुलविमल सकलगुण मंभित । खंभितदोष रहित उरधारे । कंचनपात्र भरी जिन आगे । ढोकनबुद्धि प्रबल सुविचारे ॥ श्रीजि० ॥ १ ॥ या पूजन जन तन मनरंजन । गंजन कुगतिकुं वोधविदारे । सबल करम नग भेदनहारो । सघन भवोदधि पारउतारे ॥ श्रीजि० ॥ २ ॥ सुमति सानुभव आन मिलावे । तेपिण पद दिवशर्म समारे । पीनमहोदय धार भावधरि । चंदकपूर सनूर निहारे ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ यःखंभजाति गुणवृंद समन्वितानि । नाढोकयेद्विपुलनिर्मल तंदुलानि ॥ कम्मावलिं झटति भेद्य हिमाज्जिनाग्रे । सोवैभजे त्रिवसुखं सुतरामनंतं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंतानं० ज० श्रीमज्जि० अनरथदंड विरमण व्रत उपदेशकाय अक्षतं यजामहे स्वाहाः ॥ इति नवमी अनर्थ दंड विरमण व्रत पूजा ॥ ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ❀

॥ ❀ ॥ अथ दशमी सामायक व्रते दर्पण पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ नवमो नव निधि जाणिये । सामायकव्रत सार । सुर जे हंनी आसाकरे । सुरतरु समदातार ॥ १ ॥ राग ॥ आयरहो दिल वाग में होप्यारे जिनजी । आय० ॥ ए चाल ॥ सामायक व्रत पालरे । भविकजन । सामाय० ॥ टेर ॥ त्रिकरण त्रिकजोगे इकमहुरत । निरतीचारे । चालरे । भवि० ॥ १ ॥ सा० गृहव्यापार तजीनें सुभमन । धरि निरवद्य विशालरे । भ० ॥ २ ॥ सामा० ॥ मन वच वपु प्रणिधांन असेवन । स्मृति विहीनता टालरे । भ० ॥ ३ ॥ सा० ॥ द्वात्रिंशत दूषण परिहरिनें । पंचम गुण वरमालरे । भ० ॥ ४ ॥ सा० ॥ इम धनमित्र तणीपर सीझो । कुशलकला परनालरे । भ० ॥ सा० । इति ॥ ❀ ॥ दूहा ॥ दशमी दर्पण पूजना । कीजें श्रावक सुद्ध । सुरपादपसम शंकरण । हरणपाप संकुद्ध ॥ १ ॥ राग कालिंगडो ॥ नेम प्रभुजीसुं कहज्योजी म्हांरा । नेम० ॥ ए चाल ॥ जिन पूजनमें रहीयेरे । म्हांरा जि० । मन वंछित फल लहीयेरे । म्हां०जि०

॥ टेर ॥ कंचनमणी रतनेकरि जम्यिो । वर दरपण करगहीये । जिनवर सनमुख दाखन विधिसें । सकल करम वनदहीयैरे । म्हांरा । जिन० ॥ १ ॥ प्रभुजीकीसेवा सब सुखदाई । भावभक्ति उरचहीयै । शिववनिता तुम प्रेम विलूधै । अपर अधिकस्युं कहीयैरे । म्हां० ॥ २ ॥ जि० निजकसरीर प्रमाद वसै करि । भवदल भीतिनसहीयै । सुभमन समकित वीरसंगले । चंदकपूर निवहियैरे । म्हां० ॥ ३ ॥ जि० । इति ॥ काव्यं ॥ रुचिर निर्मल दर्प्पण दर्शनं । विनयभृद्दयः किलकारयेत् । जिनपते रचिरा द्भवसंगमं । सचनिरस्य भजे छिवमंजसा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंत ग्यानसक्तये जन्मजरा० श्रीमज्जि० सामायक व्रत ग्रहण उपदेशकाय । दर्पणं यजामहे स्वाहाः ॥ इति दशमी सामायक व्रत पूजा ॥ १० ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ इग्यारमी देशावगासी व्रते नैवेद्य पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ दसमो व्रत हिव भवियणा । धारो धारि वर भाव । संसाराणेव गहिरनो । तारण वर तरनाव ॥ १ ॥ सिद्धाचलगिरिभेत्यारे । धन्य भाग हमारा । सिद्धा० ए चाल ॥ ❋ ॥ श्रद्धा धर मन भाजैरे । घनपाप तिहारा । श्रद्धा० । भाजै० । टेर ॥ विमल सकल सुभ विनय धरीनें । गुरु मुख वचन हजारा । ए ब्रत सुंदर दिल धरो भविजन । देशावकास विचारारे । घनपा० । श्रद्धा० ॥ १ ॥ द्रव्यानयन प्रेक्षप्रयोगै । सब्द रूप अनुसारा । पुद्गल पेक्षण प्रभृति सकलना । तजीयै दूषण धारारे । घनपा० ॥ २ ॥ परमोत्कृष्ट जघन्य प्रकारै । प्रत्याख्यांन प्रचार । सहु व्रतनो आगमन ए व्रतमें । गुणमणि रयण भंडारारे । घनपा० ॥ ३ ॥ कर्म कषाय हरीनें छेदै । चउगति गेह विहारा । अजरामर धनदौलह्योनिरमल । कुशलकला करिसारारे । घनपा० ॥ ४ ॥ श्रद्धा० ॥ इति ॥ दूहा ॥ एकादशमी पूजमें । विवध भांति नैवद्य । मेल करो जिनराजनी । दायक सुखनिरवद्य ॥ १ ॥ राग कल्याण ॥ तेरी पूजावणी है रसमें । होते० । एचाल ॥ ❋ ॥ सेवासारो श्रावक जिन चरणै । होसे० । टेर ॥ मोदक लपनश्री वर घेवर । शिता सुरस घृत भरणें । सुक्त चूर विंम्रादिक बहुतर । नैवेद्य नानावरणै । होसे० ॥ १ ॥ रयणांकित कंचन भाजन भरि । मन वय तनु थिरकरणें । करिढोकन विधि परम विन

य धरी । रहिये नित प्रभु सरणें । होसेवा० ॥ २ ॥ दुःखदल नासन या पूजन विधि । निर्वृति विशद सुख भरणें । चंदकपूर कहत भविजनके । कलिमलमाला हरणें । होसेवा० ॥ ३ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ धवल धाम शितार्पि समुद्भवे । विमलभक्ति समन्वित कर्प्परे । जिनपते विंदधाति वियूषनं सलभते शिवशं प्रवरान्नकैः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंतानंत० ग्यांन सक्तिये जन्म० श्रीमज्जि० देशावगासिक व्रत द्रढ ग्रहण उपदेशकाय नैवेद्यं यजामहे स्वाहाः ॥ इति इग्यारमी देशावगासी व्रत पूजा ॥ ११ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बारमी पोसहव्रते ध्वजपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ व्रतपोषध इग्यारमो । भावो भविकविधान । ध्यावो ज्युं द्रुतसंहरै। प्राक्तनकर्म वितान ॥ ए देशी ॥ इण सरवरियानी पालकभादोयराजवी । म्हांराबाल कभा० ए चाल ॥ भविजन भाव विसाल प्रमाद नीवारीये । म्हां० प्र० टेर ॥ पोसहव्रत चितमांहि विनयधरि धारीये । म्हांरा० वि० ॥ ते पिण दुविधप्रकार चतुर न विसारियै । म्हां० च० ॥ प्रतिवासर प्रतिपर्व्व सजैतिम सारिये । म्हां० स० ॥ १ ॥ पडिलेहण दुरवार सकल किरिया करो । म्हां० स० ॥ परिठावण विधिवाद मयाधरि आदरो । म्हां० म० षटकाया संघट्ट तजीनें संचरो । म्हांरा० त० ॥ अचपल थई पचक्खांण विविधमनसंभरो । ह्मां० ॥ २ ॥ वि० ॥ वलिसहु दूखण टालिनें पापनिकंदिये । ह्मां० पा० ॥ चोगति च्यार कषाय करमदल छंदिये । ह्मां० ॥ इण विधि तारण तरण सुगुरुपदवंदिये । ह्मां० सु० ॥ कुशल कलादल मालकरी चिरनंदिये ॥ ३ ॥ ह्म० क० इति ॥ दूहा ॥ द्वादशमी धज पूजमें । घोषणदेई अमार । धरिये द्वादश भावना । तरिये भवजलपार ॥ १ ॥ राग देशाख ॥ कुब्जानें जादु भारा ॥ ए चाल ॥ प्रभुजीसें प्रीतलाना । करीध्वजपूजन विविधानाहो । प्र० ॥ १ ॥ टेर ॥ जोयण सहस मानमणि मंम्डित । कंचनदंड रचानाहो । प्र० ॥ २ ॥ पंचवरणयुत वसनपताका । अधिवासित लहकानाहो । प्र० । ३ ॥ ढक्कनाद करी तीन प्रदिक्षणा । रोहणविधि मनभानाहो । प्र० ॥ ४ ॥ या विधिसकल करम रिपुदारण । जोतिमें जोतिसमानाहो । प्र० ॥ ५ ॥ जगतारण श्री जिनदरशणसें । चंदकपूरलभानाहो । प्र० ॥ ६ ॥ इति काव्यं ॥

भव्यार्चंति ध्वजवरैः सश्रुभैः सलीलै । जैनेश्वरं कनकदंड युतैः सशोभैः ॥ कर्मारि वृंदजय लक्ष समन्वितैर्यो । वैसोभजे शिव दिवादिसु राज्यलक्ष्मीः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंत जन्म० श्रीम० पोसहव्रत ग्रहण उपदेशकाय ध्वजं यजामहे स्वाहाः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

इति बारमी पोसहव्रते ध्वजपूजा ॥ १२ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ तेरमी अतिथिसंविभाग व्रते फल पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ द्वादशमोव्रत सुखफलद । साधु दांनसनमान । अजरामर पदसंपजे । सालिभद्र अनुमान ॥ १ ॥ राग कजरी ॥ मेरो मनमोह्यो माई आणंदझिलै आ० ॥ ए चाल ॥ साधुदान व्रत भवि हृदय धरो । हृदय धरोरेभाई हृदय धरोरे । सा० ॥ टेर ॥ व्रतसंयम गत परलिंगीनें । परिखि भन मति रिझनकरो । रिझ० ॥ १ ॥ भा० सा० ॥ जिनमत मुनिवर चरण नमीजै । अशनादिक देई सुकृतवरो । सुकृ० भा० । सा० ॥ २ ॥ वलि पंचातीचार निवारी । परम विरतिना विघन हरो । विघ० भा० ॥ ३ ॥ सा० श्रीश्रेयांसनें चंदन बाला । अनुमानें पदनिर्वृतिचरो निर्वृ० भा० ॥ ४ ॥ सा० इति ॥ दूहा ॥ फलदल पूजा तेरमी । भरिभाजन कमनीय । भविक रचौ भगवाननी । भवविषधर दमनीय ॥१॥ राग ख्याल ॥ लोभी नैनारे लोभी नैना । हो दरशणके० ए चाल ॥ ❋ ॥ लोभीसैणारे लोभीसैणा हो पुजनके लोभीसैणा ॥टेर॥ पूजनविधि प्रभुकी दिल धरलै । थिर करि मनतनु वैणा । हो पू० ॥ १ ॥ श्रीफल पुंगी वीजपूर वलि । आम्र कदली फल लेणा । हो पू० ॥ २ ॥ इम नानाफल गहिप्रभु आगै । भरिभाजन धर देणा । हो० पू० ॥ ३ ॥ भक्ति विमल सुचितर धर मनमें । प्रभु समरण दिनरैणा । हो पू० ॥ ४ ॥ कपूरकहै प्रभुपद पंकजमें । षट्पद भए लुगनैणा । हो पू० ॥ ५ ॥ इति ॥ कलश ॥ हांहो यश धारा । प्रभुजीका वचन अमृत यश धारा ॥ टेर ॥ सुर नर मुनि तिरियग वन सींचन । बचन सजल घनकारा ॥ हांहो० प्र० । विक्रमपुर श्रीत्रिशलानंदन । जिनवर त्रिभुवन प्यारा । द्वादश व्रत पूजन विधि पभणी । भवियण गण हितकारा ॥ हांहोहिं० १ प्र० ॥ गुरु खरतर जिन चंद्र सूरिवर । राजै विगति विकारा । श्रीमति भा

धृति रादि कलितके । धरि मन वचन अगारा । हांहो० आ० प्र० २ ॥ संवत रस त्रिक निधि रात्रिकर । मासाश्विन मनुहारा । धवलपक्ष प्रतिपद तिथि सोभन ॥ रजनीपति सुतवारा ॥ हांहो सु० ३ । प्र० ॥ श्रीजिनरत्न सूरिसाखाधर । पाठकपद विसतारा । रूपचंदगणि चरण कमलमें । कुशलसार मधुकारा । हांहो म० प्र० अपर नामकरि चंदकपूरा । राचि जिनपति नुतिसारा । लक्ष्मीप्रधान प्रवर गणिवरकी । प्रेरणया सुविचारा । हांहो०प्र० ५ इति ॥

॥ ❁ ॥ काव्य ॥ जंवाम्रादि फल व्रजैः ससुरसै र्गंधादिभि र्मिश्रितै । र्नूनं । द्रव्य हनु इवेक्ष विधिना कुर्यात् प्रभोरर्च्चनं । भक्तः स प्रभु पूजनैक निरतो भूयोपि भूयो लभे । द्धर्म्मस्वर्ग तरोरकं सुखफला गारं वरं निर्मलं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनंता० श्रीमज्जि० अतिथि संविभाग व्रत नुपदेशकाय फलं यजामहे स्वाहा ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

इति श्री साधुकपूरचंदजीकृत बारह व्रत पूजा संपूर्णम् ॥ ❁ ॥ ॥❁॥

॥ ❁ ॥ अथ संक्षिप्त विधि ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ विशाल जिन मंदर अथवा धर्मशालामें त्रिगढ पीठ सम वसरण की स्थापना करे । जिसपर पूर्व दिशकी तरफ श्रीमहावीर स्वामी, एवं चारे दिशें चार प्रतिमा स्थापन करे । आगे एक चौखूणा अच्छा चांदी पीत लादिकका पट्ट स्थापन करे । जिसपर एक बीचमें । ६ ऊपर । ६ नीचे एवं १३ साथिया करके १३ चावलोंका पुंज करे । ऊपर व्रतनाम युक्त १३ चिठी स्थापन करे । वामपासे कल्पवृक्ष, दहिणे पासे धजा अष्टमंग लीकादि सोभता अतिशय स्थापन करे ॥ अब १३ चिठी लिखनेकी रीति ॥

॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्री सर्व धर्म मूल श्री सद्दर्शनायनमः ॥

॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्री स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ श्री स्थूल मृषावाद विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ४ ॥ ॐ ह्रीँ श्री स्थूल अदत्तादान विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ श्री स्थूल मैथुन विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ श्री स्थूल परिग्रह परिमाण विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ श्री दिशा परिमाण गुण व्रतायनमः ॥

॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ श्री भोगोपभोग परिमाण गुण व्रतायनमः ॥

॥ ९ ॥ ॐ ह्रीँ श्री अनर्थ दंड विरमण गुण व्रतायनमः ॥

॥ १० ॥ ॐ ह्रीँ श्री सामायक शिक्षा व्रतायनमः ॥

॥ ११ ॥ ॐ ह्रीँ श्री देशावगाशीरूप शिक्षा व्रतायनमः ॥

॥ १२ ॥ ॐ ह्रीँ श्री पोषधोपवासरूप शिक्षा व्रतायनमः ॥

॥ १३ ॥ ॐ ह्रीँ श्री अतिथि संविभाग दानरूप शिक्षा व्रतायनमः ॥

॥ ❋ ॥ इसीतरै चिठी १३ लिखके स्थापित करे। तीन नवकार गुणके वाशक्षेपसें प्रतिष्टत करै (और) जल, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, नैवद्य, फल, अक्षत, वस्त्र, धजा, अष्टमंगलीक आदि तेरै तेरै, पूजाके लायक द्रव्य १३ थाल्यामें लगाय दोनूं तरफ रखे। पीछें स्नात्र करायके पूजा करावे। जो पद की पूजा सरू होय सो थाली लेतो रहै चढातो रहै (परंतु) नालेरका गोटा १३ वरग लगाया हुवा और धजा १३ व्रतका मांडलापर व्रत दीठ चढावे। बाकी द्रव्य सर्व थाल्यांमें दोनुं तरफ रखे। दीपक पूजामें १३ दीपक तो एक थालीमें रखे। और वारह व्रतका अतीचार १२४ वर्जण निमत्त १२४ एकसो चौवीस दीपक मांडलेके चारुं तरफ सोभता श्रेणीवद्ध रखे इत्यादि यथा शक्ति चित्तकी उदार वृत्तीसें पूजनविधि करे, करावे, करतां की अनुमोदना करै। विशेष चित्तकी उमंग होय तो वाजित्रादि उछवके साथ मोटी धजा, कल्पवृक्ष अष्टमंगलीक नगरमें फिराकर लावे। उत्तम उत्तम द्रव्य भगवानके भेट करै ॥❋॥ इति वारह व्रत पूजा विधि संपूर्णम् ॥

॥❋॥ अथ पाठक बालचंदजी कृत पंच कल्याणक पूजा ॥❋॥

॥ ❋ ॥ तत्र प्रथम च्यवन कल्याणिक पूजा ॥ ❋ ॥

॥ (दूहा) ॥ ज्योतिरूप जगदीशनो, अद्भुत रूप अनूप ॥ प्रवचन प्रभुता प्रगट पण, जय जय ज्योति सरूप ॥ १ ॥ ❋ ॥ चौवीसे जिनवर नमी, पंच कल्याणक रूप ॥ शासन नायक वरणवुं, दर्शन ज्ञान सरूप ॥ २ ॥ ❋ ॥ कल्याणक उछव करे, इंद्रादिक जे देव ॥ ते भावे भविजन करे, श्रीजिनवरनी सेव ॥ ३ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ राग सरपदो ॥ जोति सकल जगदीशनी ॥ हां रे जगदीशनी ए ॥ चार निक्षेप प्रमाण ॥ नाम जिनादिक जिन कह्या; आगममांहि प्रधान ॥१॥

॥ गाथा ॥ नाम जिणा जिण नामा। ठवण जिणा उ जिणंद पडिमाउ ॥ दव्वजिणा जिण जीवा। भाव जिणा समवसरणत्था ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ विन कारण कारज नही, हां रे का० ए ॥ ए सब लोक प्रसिद्ध ॥ भाव निक्षेप प्रधानता। कारज रूपें सिद्ध ॥ १ ॥ विण आकारें द्रव्यनो ॥ हां० ॥ द्र० ए ॥ न हुवे थापन सिद्ध ॥ नामविना आकारनो, प्रगट पणे नवि बुद्ध ॥ २ ॥ नामादिक कारण सही ॥ हां० ॥ का० ए ॥ इन विन भाव न होय ॥ भाव विशुद्धें जिननणी। पूज करो सहु कोय ॥ ३ ॥ व्यवहारें निश्चय लहे ॥ हां० नि० ए ॥ कारण कारज होय ॥ पावड शाला क्रम करी, सोध चढे सहु कोय ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ (दूहा) ॥ ज्ञानकला कलितातमा। लोकालोक प्रकाश ॥ व्यापकभावें थिर रह्यो। शुद्ध विकास विलास ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ राग सारंग ॥ हांहो रे देवा, जोति सकल जिन राजनी। सहु लोकालोक प्रकाश ए ॥ हांहो रे देवा, राजत श्रीजिनराजनी । वाणी प्रवचन शुभ वास ए ॥ १ ॥ हांहो रे देवा. मात नमुं नित्य शारदा। गुरुपंच कल्याणक सार ए ॥ हांहो रे देवा, तीर्थंकरना वरणवुं। गुण शास्त्र परंपर धार ए ॥ २ ॥

॥ (दूहा) ॥ शासन नायक जग धणी । त्रिभुवन पति परमेस ॥ पर उपगारी प्रभु तणा, गुण गावत सहु वेस ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ हांहो रे देवा, वीश थानक करि सेवना. बांध्युं जिन नाम प्रधान ए ॥ हांहो० ॥ दिव्य अमर सुख अनुभवे। पाये प्रभु पुण्य प्रमाण ए ॥ १ ॥ हांहो० ॥ निरमल तर वर ज्ञानना। धारक कारक शुभयोग ए ॥ हांहो० ॥ शब्द वरण रस गंधना। शुभ फरस तणा वर भोग ए ॥ २ ॥ हांहो०। शाश्वत जिनायतण तणा । निन उत्सव करत सुरंग ए ॥ हांहो० ॥ बालचंद पाठक कहे। नित मंगल होत सुचंग ए ॥ ३ ॥ ❀ ॥

॥ (दूहा) ॥ पुण्य पूर्व भव प्रभुतणो। प्रगट्यो प्रगट प्रभाव ॥ सुरकुमरी नित प्रति करे। नाटक नवनव भाव ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूर्व मुख सावनं ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ शुद्ध निज दर्शनें, करिय गुणकर्षना । जिनचरण सेवना विविधकारी ॥ हे अइयो विविधकारी ॥ ए आं० ॥ एक निजधर्ममय परमलय लीनता । दीनता सकल तज रज निवारी ॥ हे अई० ॥ र० ॥ १ ॥ आत्मगुण अंतरातमपणे वृत्तिता । तजिय वहिरात्मजिन आण धारी ॥ हे अ० ॥ आ० ॥ २ ॥ शुद्ध सम्यक्तगुण संपदा निज लही । सहीय शुभ धर्म रुचि भास सागी ॥ हे अ० भा० ॥ ३ ॥ विविधमणि रत्ननी जोति जगमग जगे, चंद्रिका भास भासित करारी ॥ हे अ० भा० ॥ ४ ॥ प्रवर कुल शुद्ध राजन्य प्रमुखें मुदा ॥ आयुकर बंध नर भव सुधारी ॥ हे अ० भ० ॥ गर्भ अवतार निज मात उदरें लहे । वाल शुभ लग्न शुभ योग चारी ॥ हे अ० ॥ शु० ॥ ५ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

॥ शुभदिन शुभ सुहुरत घमी । शुभ उच्च ग्रह चार ॥ देवलोक चवि प्रभु लहे । मातु उदर अवतार ॥ १ ॥ सुंदरवर प्रासाद महि, मध्यनिशा जिनमात स्वप्न देख सुख सेजमें । जाग्रत अति हरखात ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ राग काफी ॥ जिनजी भजो भवि प्यारा । या तें आनंद अधिक अपारा ॥ जि० ॥ १ ॥ सुख सेज सूती जिन माता । देखे सुपना मनभाता ॥ चित्त हरखित हुय तिण वारा ॥ जि० ॥ २ ॥ शुचि गज वृष सिंह मनुहार, लक्ष्मी दाम शशी दिनकार ॥ धज कुंभ पदमसर सारा ॥ जि० ॥ ३ ॥ वर क्षीर समुद्र विमान । रयणोच्चय मेरुसमान ॥ निर्धूम पावक सुखकारा ॥ जि० ॥ ४ ॥ शिवधान्य मंगल श्रियकारी । जाणी अर्थ हृदय क्रमधारी । शुभसूचक पुण्य संभारा ॥ जि० ॥ ५ ॥ सुंदर वर सखियन संगें । करिधर्म जागरिकारंगें, निशि शेष गई तिणवारा ॥ जि० ॥ ६ ॥ इहां एक पुष्पमाला चढावे ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

परम पुरुष परमातमा, भावी भगवन भास ॥ प्रवचन प्रगटीकरण प्रभु पुण्य तणे सुप्रकाश ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पूजा सतर प्रकारी ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ आज आनंद वधाई, भई त्रिभुवनमें । चौद सुपन सूचित गुण जेहना,

अवतरे माता उदरनमें ॥ आ० ॥ १ ॥ नृपति सदन बहु सुपन शास्त्र विध, अर्थ विचार करि निज गनमें ॥ पुत्र रतन फल वचत नृपति कुल, परम कल्याण होत जनजनमें ॥ आ० ॥ २ ॥ प्रफुलित हरख भरन हीय उल्लसत, जिन जननी सुतात सुन तनमें ॥ दिन दिन वढत प्रवर धन जन मन; अधिक उत्साह घर घरनमें ॥ आ० ॥ ३ ॥ रूप्प रजत मणि माणक मोतियें, शंख प्रवाल शिल वरसनमें ॥ धनद धनद सुरइंद्र हुकमतें, भरत भंमार नृपके सदनमें ॥ आ० ॥ ४ ॥ ताल कंसाल मधु वीण वजावत, गीत गान गावत तन ननमें ॥ डुन्दुभि मुरज मृदंग घन गरजत, गरज गरज मानुं जैसे घनमें ॥ आ० ॥ ५ ॥ सुर नर लोक मांहे अधिक उत्साह वाह। निशिदिन होत जनजनपदमें ॥ इंद्र इंद्राणी नृप दोहद पूरत, मनोरथ होत जो जो मातु मनमें ॥ आ० ॥ ६ ॥ परम कल्याण शुभयोग संयोग भयो। शुभ घरि शुभ ग्रह शुभ दिनमें ॥ वरण सके न ताहि कवि अवसरकों, आनंद भयो हे तीन भुवनमें ॥ आ० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मनेऽनंतानंत ज्ञानशक्तिये जन्मजरामृत्युनिवारणाय, श्रीमज्जिनेंद्राय चवनकल्याणके अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम चवन कल्याणक पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वितीय जन्मकल्याणक पूजा ॥ ❀ ॥

(दूहा) ॥ प्रगटे पावन पतित प्रभु, अधम उधारन काज ॥ नृपकुलमांहे अवतरे; त्रिभुवनके शिरताज ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग सोरठ ॥ ❀ ॥

॥❀॥आज अधिक आनंद भयो रे वाला. आज सुरंग वधाई रे ॥ आज०; जगपति जिनवर जनमिया रे वाला, सुर वधुवन मिल आई रे ॥१॥ आज० आज आनंदघन उलस्यो रे वाला; दिशि कुमरी हरखाई रे ॥ आज० दशदिश निर्मलता थई रे वाला. फूल रही वनराई रे ॥२॥ आज० फूलें फूली वनलता रे वाला, मधु मालती महकाई रे ॥ शालि प्रमुख सहु धान्यनी रे वाला. निपजी राशि सवाई रे ॥ ३ ॥ नारकी जीवें नरकमां रे वाला; क्षण इक शाता पाई रे ॥ सब जन मन हरषित भयो रे वाला; भूमंडल छवि छाई रे ॥ ४ ॥ शुभदिन शुभ महूरतघडी रे वाला. शुभग्रह शुभ पल आई रे ॥

जन्म थयो जिनराजनो रे वाला, प्रगटी पूर्व पुण्याई रे ॥ ५ ॥ ए पढी पुष्प तथा गुलाबजलकी वर्षा करे ॥ ❋ ॥

॥ (सोरठो) ॥ त्रिभुवन मांहि सुरूप, जन्मसमय जिनराजनें ॥ वाजित्र वजत अनूप, सुर नर कृत उत्सव हुवे ॥ १ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ रावण निरत वणावे हो नला एचाल ॥ ❋ ॥

॥❋॥ आज आनंद बधाई रे, देखो, आज आनंद वधाई ॥ जयजयकार भयो जिनशासन, सुरकुमरी हरखाई रे ॥ दे० ॥ १ ॥ घरघर गोरी मंगल गावत, मोतियन चोक पुराई रे ॥ ईति उपद्रव भय सब भागे, खार समुद्रे जाई रे ॥ दे० ॥ २ ॥ आज सनाथ भयो हे त्रिभुवन, ॥ जिनवर जनम्या भाई रे ॥ आज अधिक जग हर्ष भयो हे, धन धन माता कहाई रे ॥ दे० ॥ ३ ॥ जन्म महोत्सव करननकुं सब, दिशिकुमरी मिल आईरे ॥ करि कदलीगृह सुंदर रचना, पावन कर उर लाई रे ॥ दे० ॥ ४ ॥ जिनजननी जिनवर पय प्रणमी, मस्तक आण चढाई रे । स्नान करावत उभय शरीरे, तैलाभ्यंग कराई रे ॥ दे० ॥ ५ ॥ भूषण भूषित अंग बिलेपन, देव दूष्य पहराई रे ॥ दर्प्पण ले मंगल घट थापी । चामर जुगल ढुलाई रे दे० ॥ ६ ॥ पंचवरनके फूल सुगंधित, सुर कुमरी वरषाई रे ॥ होम करी रक्षापोटरिया, जिनवर करे बंधाई रे ॥ दे० ॥ ७ ॥ मंगल गावत जिन जगजननी, निजगृह मांहे ठाई रे ॥ सफल भयो निज आतम जाणी, दिशि कुमरी घर आई रे ॥ दे० ॥ ८ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

(दूहा) ॥ अतिहि अधिक उत्सव करी, गइ कुमरी निज थान ॥ इंद्र हवे उत्सव करे, जन्म समय जिन जाण ॥ १ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ राग गोडी ॥ सांझ समे जिन वंदो ॥ ए देशी ॥ ❋ ॥

॥❋॥ आज उछव मन भायोरे ॥ देखो माई ॥ जगजननी जिन जायोरे ॥ दे० ॥ आ० ॥ त्रिभुवन मांहि प्रकाश भयो हे, इंद्रासन थररायोरे ॥ दे० ॥ आ० ॥ १ ॥ अवधिज्ञानधर जिनजीकुं निरखत, हृदय कमल उलसायो रे ॥ हरिणगमेषी इंद्र हुकमतें, घंट सुघोष घुरायोरे ॥ दे० ॥ आ० ॥ २ ॥ बनठन नवनवरूप मनोहर, सुरसमुदय मन भायोरे ॥ सुरकुमरी वरभूषण भू

पित, अद्भुत रूप बनायोरे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ३ ॥ नव नव यानवाहन रच सुरवर; सुरगिरि शिखरें आयोरे ॥ चोसठ इंद्र करत अति उत्सवः मेघ घटा थररायोरे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ४ ॥ काली घटा वरदामनि चमकत, दादुर मोर सुहायोरे ॥ अतिहि सुगंध पुष्पव्रज वरसत, मोतियनकी झर लायोरे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ (दूहा) ॥ शक्र जाय जिनवर गृहे, जिनजननी जिनराज ॥ प्रणमी श्रीमहाराजनीः भक्ति करे सुरराज ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सुंदर नेम पियारो माई ॥ ए देशी ॥ ❋ ॥

॥ तुम सुत मान पियारो माई ॥ तु० ॥ ए आंकणी ॥ जगवत्सल जगनायक निरख्यो, धन धन भाग्य हमारो माई ॥ तु० ॥ १ ॥ धन जगजननी तुम सुत जायोः अघमलधारण हारो माई ॥ धन धन प्रगट भयो जग दिनकर. त्रिभुवन तारन हारो माई ॥ तु० ॥ २ ॥ सब सुर चाहत स्नात्र करनकुं; सुरगिरि प्रभुजी पधारो माई ॥ कर जोमी प्रभु अरज करतहुं सब जनकाज सुधारो माई ॥ तु० ॥ ३ ॥ में सेवक तुम सुत चरणनको, आयो हूं अधिकारो माई ॥ इंद्र कहे पदपंकज प्रणमुं; भय सब दूर निवारो माई ॥ तु० ॥ ४ ॥ पांच रूप करि प्रभुजीकुं लावे, पांडुगवन सिणगारो माई ॥ चोसठ इंद्र महोत्सव करिहे, पूजन अष्ट प्रकारो माई ॥ तु० ॥ ५ ॥

॥ इहां प्रभु प्रतिमा पंचतीर्थी अंदरसें लायके, सिंहासण ऊपर स्थापन करे (पीछे) स्नात्र पूजा करावे ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ (दूहा) ॥ पंचरूप कर इंद्र जिनः पंडुग वन ले जाय ॥ सिंहासन उत्संग गहि. स्नात्र करे सुरराय ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ इतनो गुमान न करियें छबीली राधा हे ॥ ए देशी ॥ ❋ ॥

॥ जिनजीको पूजन करियें. हां रे हो रंगीले श्रावक हो ॥ जि० ॥ द्रव्य भाव वेहुभेदें करतां, भव सागर निस्तरियें ॥ जि० ॥ १ ॥ गंगाजल चंदन पुष्पादिक; अष्टविध मंगल धरियें ॥ भावविशुद्धे जिन गुण गावो, नाटक नवनव करियें ॥ जि० ॥ २ ॥ बहुविध प्रभुकी भक्ति रचावत, वर्नन करन न तरियें ॥ वो आनंद देखे सोइ जाने; दुःख सब दूरें हरियें ॥ जि० ॥ ३ ॥

पूजन करि प्रभुकुं घर लावे, आतम पुण्यें भरियें ॥ कर अठाइ महोत्सव आवत, सब सुर मिल निज घरियें ॥ जि० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प० अ० ज० जन्मकल्याणके अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ तृतीय दिक्षा कल्याणक पूजा ॥ ❋ ॥

॥ (दूहा) ॥ सुरकृत उत्सव अति अधिक, भये अनंतर प्रात ॥ मात पिता उत्सव करे, निज कुलक्रम विख्यात ॥ १ ॥ पार नही धनको जहां, अगणित भरे भंडार ॥ दान मनोवंछित दिये, दयावंत दातार ॥ २ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ गात्र लूहे० ॥ ए देशी ॥ ❋ ॥

॥ जिनजन्म महोत्सव रंगशुं रे, भये प्रात करत उछरंगशुं ॥ रंगसुं हां रे देवा रंगशुं ॥ नृपउत्सव करे अति घणो ॥ १ ॥ पुत्रजन्म कुल क्रम करे रे देवा, जगजश कीरत विस्तरे ॥ वि० हां० ॥ घरघर उत्सव रंगमें ॥ २ ॥ सुर वधु मिल सुरसंगशुं रे ॥ देवा० ॥ करे नाटक नवरंगशुं ॥ रंग० हां रे० ॥ बाललीला जिनसंगमें ॥ ३ ॥ रूपातिशयें शोभता रे ॥ देवा ॥ इंद्रादिक मन मोहता ॥ मो० हां रेमन० ॥ विद्याप्रभु विस्मयवती ॥ ४ ॥ परमप्रमोद प्रवीणता रे देवा, सुरक्रीडा अतिशयवता ॥ अ० हां० ॥ वैक्रिय शक्तिसमेलशुं रे ॥ ५ ॥ गावतगीत उमंगशुं रे देवा, वाजित्र नवनव रंगशुं ॥ रं० हां० ॥ वजित अहोनिशि संगशुं रे ॥ ६ ॥ ❋ ॥

॥ (दूहा) ॥ तीन ज्ञान अतिशय धरे, अतिशय कला सुधाम ॥ सुर सुसंग क्रीडातिशय, अतिशयगुण अभिराम ॥ १ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पंच वरणी अंगी रची ए देशी ॥ ❋ ॥

॥❋॥ वरणी न जाती रे, व० ॥ जिनजीकी शोभा व० ॥ चित्रजात नर सुरासुर निरखत, उपन एसो जग भाती ॥ जि० ॥ १ ॥ अनंत गुणें करि शोभित प्रभु जी, शुद्ध संवेग सोवन जाती ॥ शिव मारग शुध सेवत निशि दिन, पुण्यपुरुष पायाराती ॥ जि० ॥ २ ॥ पर उपगारी परम पुरुषोत्तम, अद्भुत अनुभव रस पाती ॥ कामभोग वरविबुध प्रकारें, प्रात भये सुख संघाती ॥ जि० ॥ ३ ॥ जसु जस ख्यात प्रगट त्रिभुवनमें, कुल राजन्योत्तम जाती ॥ धन धन तीन भुवनके साहिब, श्याम हमारो वरगाती ॥ जि० ॥

॥ ४ ॥ इंद्र अहोनिशि आवन आवत. देख दरश अति हरखाती ॥ दुन्दु भि प्रमुख वाजित्र वजत नित । सुरवधु वनमंगल गाती ॥ जि० ॥ ५ ॥ ए पढके प्रभुको पुष्प वासक्षेप चढावे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ प्रवरभोग प्रभुपुण्यतें । प्रगटे प्रगट प्रधान ॥ गुण ग्राहक गृह वासमें, दर्शन ज्ञान निधान ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग ठुमरी ॥ तुम विन दीनानाथ० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रभुविन दीनानाथ दया विन. कोन कहावत कोई रे ॥ प्र० ॥ गृहवासें शुधसंयमधारी. शुभसुभावें होई रे ॥ प्र० ॥ १ ॥ सम्यग्दर्शनभ वनिर्वेद. स्वतनकी जर खोई रे ॥ प्रभुता प्रभुकी को कहि वरनें, सुर नर नारी मोही रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ शुभलेश्या शुभध्यान रमें नित । आतम निरमल धोईरे ॥ आतमरूप निहारत निजघर । संगसुमति जह जोई रे ॥ प्र० ॥ ॥ ३ ॥ प्रगट प्रकाश आत्म उजियारे । साम कहावत सोई रे ॥ गृहवासें शुद्धसंयम रागी. लागी लगन सवाई रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ निजप्रभुता प्रभु जीनो लीनो, अंतर शत्रु विगोई रे ॥ विषयवासना क्षीण भई लख । आतम शक्तिशुं ठोई रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ ऐसा कही फूल चढावे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दूहा) ॥ दाता दान दयाल प्रभु, देत संवत्सरिदान ॥ दूर करे द्रारिद्र जग. त्रिभुवनमांहि प्रधान ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मरुदेवानंदकी. क्या छबि लागत प्यारी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जगपति जिनवरकी. क्या छबि मोहनगारी ॥ ज० ॥ मोहत प्रभुके मोहनरूपें. निरख निरख नरनारी ॥ क्या० ॥ १ ॥ भोगकर्म अंतराय कर्म कटु. क्षीण भए निरधारी ॥ दानसंवत्सर घन जिम वरसत. पृथ्वी प्रमुदि तकारी ॥ क्या० ॥ २ ॥ नवलोकांतिक देव सबे मिल. हाजर होय सुचारी ॥ जय जय मंगल शब्द उचारत. धर्म गहो सुखकारी ॥ क्या० ॥ ३ ॥ दान धर्म शिवमारग प्रभुजी. प्रगट कियो हितकारी ॥ दाता दीनदयाल जगतमें जिन सम को सुविचारी ॥ क्या० ॥ ४ ॥ इंद्रादिक सुर सुरी नर नारी, दीक्षो त्सव अनिवारी ॥ गान दान सनमान तान करी. प्रभुगति सकल सुप्यारी ॥ क्या० ॥ ५ ॥ तजि संसार लियो शुभयोगें, संयम सतरप्रकारी ॥ मनपर्यव

वर ज्ञान नयो तब, विहरत पर उपगारी ॥ क्या० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं प० अ० ज० श्री दी० अष्टद्रव्यं० स्वाहा ॥ ३ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ चतुर्थ केवलज्ञानकल्याणक पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ गजवर अश्व समूह रथ, पायक कोमा कोम ॥ जिनदीक्षा महोत्सवसमें, हाजर होय तिण ठोर ॥ १ ॥ इंद्रादिक सुर असुर नर, प्रनुकुं करे प्रणाम ॥ नर नारी आशीष दे। जयजय त्रिनुवन साम ॥ २ ॥ तजि आश्रव संबर गहे, संयमनाव निधान ॥ सब संसार तजी करी, नए अणगार प्रधान ॥ ३ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ तेरी पूजा बणी ते रसमें ॥ ए देशी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ धारी धारी धारी, जिन नए संयमपद धारी ॥ चरणकमल व लिहारी ॥ जि० ॥ पंचसुमतिधर तीन गुपतिकर। सब जीवां सुखकारी ॥ जि० ॥ १ ॥ जीत लिये उपसर्गपरीसह, शत्रुसेना गणनारी ॥ नयनैरवतें निःप्रकंप नए, निर्मम निरहंकारी ॥ जि० ॥ २ ॥ क्रोध मान माया लोन अकिंचन, आकिंचन ब्रह्मचारी ॥ पुष्करसम निरलेप जगत गुरु, नीरंजन अविकारी ॥ जि० ॥ ३ ॥ चेतन पर प्रनु अप्रतिघाती। खेसम निराश्र यारी ॥ खड्गी शृंग परे एकाकी, अप्रतिबंध बिहारी ॥ जि० ॥ ४ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दोहा)॥ रत्नत्रय परिग्रह करी। मुक्तिमार्ग अनिराम ॥ निशि दिन करत विहारक्रम। प्रासुकाम निजधाम ॥ १ ॥ ॥ ॥ ❋ ॥

॥❋॥ सद्गुरुजी सुनो मेरी अरजी ॥ ए देशी॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जिनवरजी जगतहितकारी ॥ जि० ॥ जग वत्सल जगबंधु जगत गुरु, जग नायक जयकारी॥जि०॥१॥कूर्मतणीपर गुप्तइंद्रिया, अप्रमाद नारंमसुचारी ॥ अतिशय धाम धाम निजवीरज, वृषनपरें सुविहारी ॥ जि० ॥ २ ॥ शूर बीर प्रनु सिंहतणी पर। कुंजर करम विदारी ॥ अतिगंनीर सायरसम शोनित। सौम्यलेश्या सुखकारी ॥ जि० ॥ ३ ॥ तेज पुंज दिनकर सम दीपत, हेम वरण मनुहारी ॥ सर्वसहन कारक धरणीपर, स्वच्छ हृदयकजधारी ॥ जि० ॥ ४ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ (दोहा) अनुत्तर धर संयमक्रिया॰ कल्पातीतजिणंद ॥ वीतराग विचरे प्रवर॰ रत्नत्रय जगचंद ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कुबजानें जादू मारा ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जाके रागद्वेष भया न्यारा रे॰ सोई श्याम सकल सुखकारा ॥ जा० ॥ वासी चंदन सम प्रभु जगमें॰ अपकारें उपकारा रे॰ ॥ सो० ॥ १ ॥ कंचन काष्ठ समान हे जाके॰ सुख दुःख सम उपचारा ॥ कोऊ निंदत कोऊ पूजत॰ जिनजी हे अविकारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ २ ॥ शिवसुख अरु भवसुख दू न वां छे॰ वीतराग प्रभु प्यारा ॥ शूरवीर प्रभु क्षपकश्रेणि चढ॰ मोहनी मल्ल पिछारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ ३ ॥ क्षायिक संयमने शुभ योगें॰ अनुत्तर गुण गण धारा ॥ पाठक विजय विमल कहे प्रभुके॰ चरणकमल बलिहारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोहा (घनघाती चउ कर्मकों॰ क्षयकर क्षायिक ज्ञान ॥ दर्शन लोकालोकको । प्रगट प्रकाशी भान ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग ठुमरी ॥ बस मन छत्री कुंभके तीर ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पायो प्रभु भवजलनिधिको तीर॰ अतुलीबल वरवीर ॥ पा० ॥ अनुत्तर जाके सुमति गुपति हे॰ अनुत्तरक्षमासुधीर ॥ पा० ॥ १ ॥ मार्दवआर्यव अनुत्तर जाके॰ रोक्यो आश्रव नीर ॥ संवरजोग क्रिया नवि विणठी॰ रही ईर्या सुख सीर ॥ पा० ॥ २ ॥ घनघाती सब शत्रुविनाशी॰ केवलज्ञान सुधीर ॥ पूरन दर्शन प्रगट भयो हे॰ निज आतम गुणक्षीर ॥ पा० ॥ ३ ॥ प्रातिहार्य अतिशय जिनसंपद॰ भयो अनुकूल समीर ॥ दे उपदेश भविक प्रति बोधत॰ वचनातिशय गंभीर ॥ पा० ॥ ४ ॥ लोकालोक प्रकाश परम गुरु॰ कहि न शके मति सीर ॥ पाठक विजयविमल परमातम॰ प्रभुता परम सुधीर ॥ पा० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अ० ज० श्रीम० केवलज्ञानकल्याणके अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचम निर्वाण कल्याणक पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ इंद्रादिक सुर सब मिली॰ तीन भुवन शिरदार ॥ सब दरशी सर्वज्ञनो॰ महिमा करे अपार ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❋ ॥ अतुल विमल मिल्या, अखंम गुणें० ॥ ए देशी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अतुल विमल प्रनुता प्रनुकी लख, चोसठ इंद्र उन्नव धरे ए ॥ चार प्रकारके सुर सब मिलकर, समवसरण रचना करे ए ॥ अ० ॥ १ ॥ रजत कनक वररत्नप्रकारें, कनक रत्न मणि कंगुरा ए ॥ वृक्ष अशोक सिंहासन शोन्नित, तीन छत्र चामर ढुरा ए ॥ अ० ॥ २ ॥ दुंदुन्नि प्रमुख श्रवण सुखदायक, गहिर सुरे वाजित्र घुरे ए ॥ जानुप्रमाण पुष्पघन वरसत, जलज थलज विकसित सुरे ए ॥ अ० ॥ ३ ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका इंद्रादिक सुरी सुर वरे ए ॥ नरनारी तिर्यग् विद्याधर, द्वादशविध परिषद न्नरे ए ॥ अ० ॥ ४ ॥ न्नविजन धर्म तणें उपदेशें, जोजन गामि मधुर गिरे ए ॥ प्रतिबोधत चौमुख श्रीजिनवर, निज निज न्नाषा अनुसरे ए ॥ अ० ॥ ५ ॥ ए पढके वासक्षेप करे ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ प्रगटपणें प्रनुकी प्रन्ना, प्रगट प्रकाशक रूप ॥ प्रगटी प्रनुता परमसम । परमातम पदन्नूप ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ विगरी कौन सुधारे नाथ विना ॥ ए देशी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नूमंमल न्नविकमल विबोधन, दिनकर सम जिनराया रे ॥ नू० ॥ अणहुंते इक कोमी अमरपद, पंकज न्नमर लुन्नाया रे ॥ नू० ॥ १ ॥ ग्राम नगर पुर पट्टण बिचरत, त्रिनुवननाथ कहाया रे ॥ चौसठ इंद्र करे जाकी सेवा, तन मनसें लयलाया रे ॥ नू० ॥ २ ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावत, मोतियन चोक पुराया रे ॥ सर्व जीव हितकारक प्रनुजी, निःश्रेयस सुखदाया रे ॥ नू० ॥ ३ ॥ न्नवजलनिधि निर्यामक जगगुरु, तारक सकल कहाया रे ॥ शासननायक संघसकलकुं । प्रवचन तत्त्व सुनाया रे ॥ नू० ॥ ४ ॥ अनंतगुणाकर प्रनुजीकी महिमा, वरने को कविराया रे ॥ पर उपकारक प्रनुके पाठक, विजय विमल गुण गाया रे ॥ नू० ॥ ५ ॥ ए कहके वासक्षेप करे ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दोहा) ॥ निज निज न्नाषा न्नविकजन, नृपत न सुनतहि श्रोत ॥ मीठी अमृत सम गिरा, समझत श्रम नहि होत ॥ १ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ राग कहेरवो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिनंदवामिल गयोरे. दोय चरणुं परध्या न ॥ शुक्क मन गह गह्योरे ॥ जि० ॥ ज्ञायकज्ञेय अनंतनोरे, सवदरसी जिनचंद ॥ सुरतरु सम जग वालहोरे. सेवत सुर नर इंद ॥ धर्ममें लह लह्योरे ॥ दो० ॥ १ ॥ चौदम गुण थानक करेरे. आतम वीर्य अनंत ॥ योग निरोधनकी कियारे. सूखम बादरकंत ॥ बंध सब दर गयोरे. सख संवर भयोरे ॥ दो० ॥ २ ॥ घन कर आतमप्रदेशनोरे. कर शैलेशी कर्ण ॥ कर्म सकल दूरें कियारे. जीर्णवस्त्र जिम पर्ण. मुक्ति पद जिम लह्योरे ॥ दो० ॥ ३ ॥ ज्ञान किया कर कर्मकोरे. क्षय कर पर अनुबंध ॥ निजआतम रूपं लह्युंरे. शाश्वत सुख संबंध. सिद्ध शुद्ध बुध थयोरे ॥ दो० ॥ ४ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (दोहा) अकल अगोचर अगमगम. सिद्ध भए सुविशुद्ध ॥ परमातम प्रभु परम पद. चिदानंद अविरुद्ध ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग धनाश्री ॥ तेजतरणिसुखराजे ॥ ए देशी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तेज तरणि सम राजे. प्रभुजीको ॥ ते० ॥ एकसमयप्रभु ऊरध गतिकर. मुक्तिमहल सुविराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ १ ॥ सादि अनंत सदा शाश्वत वर. अनंत महासुख छाजे ॥ अचल अगोचर प्रभु अविनाशी. सिद्धस रूप विराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ २ ॥ निरुपाधिक निरुपम सुख प्रभुके. कहि न शके कविराजे ॥ अजर अमर अक्षय अविकारी. सकलानंद सहाजे ॥ ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ३ ॥ संवत उगणीसे तेरो त्तर. श्रावण शुदि पख राजे॥ श्रीजिनराज तणा गुण गाया. पंचमि दिवस समाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ४ ॥ श्रीविक्रमपुर नगर मनोहर. श्रीसंघ सकल समाजे ॥ पंच कल्याणक पूजा प्रभुकी. कीनी हित सुखकाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ५ ॥ श्रीखरतरगछ नायक लायक. युगप्रधान पद छाजे ॥ जंगमगुरु भट्टारकवरश्री. जिनसौभाग्य सुराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ६ ॥ प्रीत विलास धम्मसुंदर गणि. अमृत समुद्र सुभ्राजे ॥ पाठक विजय विमल प्रभुके गुण. गावत घन जिम गाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ७ ॥ हंसविलास प्रवरगणिवरकी. प्रेरणया सुसमाजे ॥ श्रीजिनवरकी रचना कीधी. धर्मप्रभावन काजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ८ ॥

उँ ह्रीँ प० ॥ अर्न० ॥ जन्म जरामृत्यु निवारणाय: श्री मज्जिनेंद्रेभ्यो निर्वाणकल्याणके अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति श्री पाठक विजयविमलजीविरचित पांच क० पू० सं० ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ आरती ॥ राग मालवी गोडी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ शुभ आरती प्रभुकी उदारचित्तें, करो भविक रसालरे ॥ प्रथ मधूप सुगंधजिनकुं, उखेवो जिननालरे ॥ १ ॥ भाल निजकर तिलक सुंदर, पहर पुष्प सुमालरे ॥ दक्षिणकर जिन राजभुके, कर आवर्त्त सुथालरे ॥ शु० ॥ २ ॥ यथासगतें शुद्धभगतें, करो दिल खुशियालरे ॥ द्रव्यभावें विविधपूजा, भविकभाव विशालरे ॥ शु० ॥ ३ ॥ गुण अनंत महंत गावो, प्रभुपरम दयालरे ॥ जन्म सफलो करो भविजन, कहे पाठक बालरे ॥ शु० ॥ ४ ॥ इति आरती ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ पांच कल्याणक पूजा विधि: ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रथम बिंबप्रतिष्ठामें (तथा) ऋद्धीवंत सेठ सहुकारादिककी तरफसें (तथा) संघ समुदायके तरफसें, जो पांच कल्याणकका उछव होय (तबतो) विस्तार विधिसें एकेक दिनमें एकेक कल्याणकका उछव करे। पांच दिनमें पांच कल्याणक करै (और) जल यात्रा, चोवीस प्रकारी बीश स्थानक, सतर भेदी, नवपदजीकी एकेक दिन पूजा उछव विस्तार विधिसाथ करावे। ऐसें १० दिनका उछव करे ॥ (यथा) पहले दिन पूठिया चंद्रवा तोरणादिकसें मंडपकी स्थापना करावे ॥ १० दिग्पालाकों वलवाकुल दिरावे। जल यात्रादि उछव करके मंगल कलश थापन करै (इत्यादि) ॥ दूशरे दिन चवन कल्याणकको उछव करै (जैसें) देवलोकसें चवके माताके गर्भमें आवै (तैसें) भगवानकी माताको काष्टमई घरादिकमें पडि बिंबो स्थापन करै (पीछे) ऊपर सेती काष्ट विमानमें भगवानको प्रतिबिंब स्थापन करके नीचै उतारै (पीछे) चवदे स्वप्नांको क्रमसें उतारे। माताके मंडपकेपास रख्के। तीन नवकार गुणके उतारै (ओर) तीन नवकार गुणके स्थापन करै। (पीछे) एक (वा) २४ रत्न (अथवा) एक (वा) २४

शपियांमें । चवन कल्याणककी थापना करे (और) चवन कल्याणककी पांच पूजा पढे ॥ ❁ ॥ इति च्यवन कल्याणक पूजा ॥ १ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ जन्मकल्याणक विधिः ॥ ❁ ॥

॥ तीशरे दिन जन्म कल्याणकको संपूर्ण उत्सव करे (जेसें) छप्पन दिश कुमरीका आगमन. और यावन्मात्र केली गृह रचना. दर्पण दर्शनादिक उत्सव करे ॥ तिस पीछे, सुमेरु पर्वतकी थापनाके उपर इंद्रादिकका रूप करके भगवानकों थापन करे । सोनें. रूपे. तांबा. पीतल. मट्टी आदि अनेक तरे का कलश वन सके तो १००८ कलश गंगानदी आदि अनेक ठिकाणेंका जलसें भरभरके स्नात्र उत्सव करावे ॥ भृंगार १ । दर्पण २ । रत्न करंडक ३ । स्थाल ४ । पुष्प चंगेरिका ५ । इत्यादि उपगरण पूजाका सर्व भगवान आगे रखे ॥ सर्व क्षेत्रांकी सुगंधी उषधीयांसें स्नात्र करावे । गुलाबजलकी. पुष्पांकी. रत्नांकी. वर्षा करे । तदनंतर सिद्धार्थ राजायें जिस माफक उत्सव कियो उस माफक अपनेसें वन सके जिस मुजब संपूर्ण उत्सव करे । (तदनंतर) घृतसेर २४. । नैवेद्य सेर २४। गुड़ सेर २४। फल अच्छा २४ । चढावे । २४ सधव स्त्रियां मिलके २४ गवली करे ॥ जन्मकल्याणककी पांच पूजा पढे । आरती मंगल दीप उतारे ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ दिक्षा कल्याणक विधिः ॥ ❁ ॥

॥ चोथे दिन दिक्षा कल्याणकको उत्सव करे । खाशा पालखीमें भगवानकों बेठाके. वर घोडे वाजित्रादि सहित वडे उत्सवसें निकाले । अच्छा वाग वगीचामें लेजाके । अशोक. आम्रादि. उत्तम वृक्षके नीचे सिंहासनपर स्थापन करके स्नात्र उत्सव करावे । २४ गज उत्तम वस्त्र चढावे । वाश क्षेप देके नवीन चंद्रवा चढावे । दिक्षा कल्याणककी पांच पूजा गवावे । जैन याचकादिककों दान देवे । साहम्मीवछल करे ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ केवल ग्यान कल्याणक पूजा विधि ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ पांचमें दिन त्रिगडा समोशरणकी रचना करे । मुगट छत्र चामरादि अनेक तरेके रत्नजडित आभूषण सहित भगवानकों स्थापन

करै । पंचवर्णी सुगंधी फूलांकी वर्षा करे । नाना प्रकारका वाजित्र वजावे, केवल ग्यान कल्याणककी मीठा स्वरसें पांच पूजा गावे ॥ इति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ शांतिपूजा विधि लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ शुभ दिन शुभ महुर्त्ते जिन मंदरमें समोसरणपर जिन प्रतिमा स्थापन करावे (आगे) पंच परमेष्टी पट्ट स्थापन करे (तथा) भगवानके दहिणेंपासे दश दिग्पाल पट्ट (और) वामपासे नवग्रह पट्ट स्थापन करे (पीछे) एक मोटा, एक छोटा, तांबे, पीतल, मट्टी आदिकका हंडा ऊपर खडी सपेद मिट्टी पोतकें, चार चार केशर कुंकुका साथिया करे॥ पीछे ऊंची नींची दोय टिवची काठकी धरावे । नींची टिवचीपर मोटा हंडा धरे । ऊंचीपर छोटा हंडा धरे । छोटा हंडाके तले एक छिद्र करे । दोनुं मटकाके भीतर साथिया करे ॥ वडा मटकाकी टिवचीके नीचे । चावलका साथिया करके । ऊपर नालेर रुपियो थापनाको धरे ॥ दोनुं मटका ऊपर मोली सुत्रवटके पंचरंगी खजली । एकेक खूणें २१ इकीस पोकर । चारुं खुणे ८४ खजली पोके तणी बांधे ॥ नालेरके आकार मोली सुत्रको दडो नीचला मोटा हंडामें लटकतो रखके । ऊपरकी मोली छोटा हंडाके छिद्रमें पोकर, ऊपर जो चोखुंणी तणी बांधीहे । जिसके बीचमें गांठ देवे (पीछे), जो संघ संमुदायकी तरफसें शांतिपूजा होय (जबतो) मंदरको कलश लेवे (और) एकजनकी तरफसें होय। (तब) शांतिकारकके गृह सेती सधवस्त्री, जिसका । माता, पिता, सासू, सुसरा, चारसाईत जीता होय जिस स्त्रीकुं अछा वस्त्र आभूषण पहरायके, कलशके मांह, कुंकु केशरको साथियो करके, चावल, सुपारी, पंचरत्नकी पोटली धरके । मुखपर नालेर१ ढकणें माफक लगाय, कसुंबल कपडो मोली सेती बांधे । ऊपर चार साथियाकर पूर्वोक्त स्त्रीके मस्तकपर रखके । गीतगान पूर्वक नानाप्रकार वाजित्रादि उछवसहित जिनमंदरमें लावे ॥ समवसरणके सन्मुख चावलांको साथियो करके । ऊपर कलश थापन करे ॥ (पीछे) पांच दश जणा द्रव्ये भावे अपना अंग शुद्ध करे ॥ गुरूकेपासे केशर मंत्रायके तिलक करे ॥ दहिणा हाथके मोली कांकणडोरा मंत्रायके बांधे ॥ ॐ परमेष्टी नमस्कारं० ॥

इत्यादि स्तोत्रसें गुरु आत्मरक्षा करावे ॥ (पीछे) एक थालीमें १० । एक थालीमें ९। एक थालीमें ९। नागरवेलका पान सर्व २८ लगावे (जिसपर) फूल॰ अक्षत नैवेद्य, फल॰. रोक नाणो॰ सब पानपर बराबरधरायके तैयार रखे ॥ और पिण॰ पंचामृत॰ फूल॰ फूलमाला॰ अक्षत॰ नैवेद्य नानाजातका॰ लीला॰ सूका॰ फल॰ अत्तर॰ गुलाबजल॰ केशर॰ कपूर॰ रोली॰ मोली आदिपूजापेकी सर्व सरंजाम यथाशक्ति तैयार मंगायके रखे (पीछे) पूजा सरु करे ॥ ❀ ॥ प्रथम स्नात्रपूजाकी थापना रखके। कुसुमांजली लेके स्नात्रपूजा (तथा) अष्टप्रकारी पूजा करावे (पीछे) पंचपरमेष्टी पट्टा ऊपर चावलांका तीन ढिगला करके । ग्यान॰ दर्शन॰ चारित्र॰ की थापना करे (ऊपर) वासक्षेप करके॰ चढाये सूधा तीन पान चढावे । उसके आगे दो चावलका ढिगला करके॰ चैत्यदेवता क्षेत्रदेवताकी॰ थापना करावे॰ पान दोय चढावे ॥ ऊपर कसंवल कपडो बांधे (पीछे) दशदिग्पालके पट्टेऊपर जलका छांटा देके वासक्षेप करे ॥ एकेक दिग्पालके टीकी देके फूल चढायके। एकेक चढापे सूधो नागर वेलको पान चढावे ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दश दिग्पाल पूजा लि॰ ॥ ❀ ॥

॥ ॐ इंद्राय । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । इह अस्मिनजंबुद्वीपे । दक्षिण भरतार्द्धक्षेत्रे । असुकनगरे । अमुकजिनचैत्ये । शांतिपूजा महोछवे । आगछ २ । बलिं गृहाण २ । उदयमभ्युदयं कुरु २ स्वाहा ॥ ❀ ॥
ॐ इंद्रायनमः इतिइंद्रआह्वान पूजा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥
पूर्वदिशे जलचंदनादि अष्ट द्रव्य चढावे ॥ ❀ ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अग्नि दिग्पाल पूजा लि॰ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ अग्नये । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । अस्मिन् जंबुद्वीपे । दक्षिण भरतार्द्धक्षेत्रे । अमुक नगरे । अमुक चैत्ये । शांति पूजा महोछवे । आगछ २ बलिंगृहाण २ । उदय मभ्युदयंकुरु २ स्वाहा ॥
ॐ अग्नयेनमः ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ यमदिग्पाल पूजा लिख्यते ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ यमाय । सायु॰ । सवा॰ । सपरि॰ । अस्मिन् जंबु॰ । दक्षि॰ ।

अमुक० । अमु० । शांतिपूजा० । आ० । बलिंगृहाण २ । उदय म० । स्वाहा ॥ ❋ ॥ ॐ यमायनमः ॥ ❋ ॥ दक्षिण दिशकीतरफ यमदिग्पालकी पूजा करे ॥ ३ ॥ ❋ ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ नैऋत दिग्पालपूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॐ नैरुताय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन् जंबुद्वीपे० । शांतिपूजा० । आगच्छ २ । बलिं० । उदय० कुरु २ स्वाहाः ॥ ॐ नैरुतायनमः ॥ नैरुत कूणकीतरफ अष्ट द्रव्यचढावे ॥ इतिः ॥ ४ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ वरुणदिग्पाल पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॐ वरुणाय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जंबुद्वीपे० शांति पूजा० । आ० । बलिं० । उदयम० । स्वाहाः ॥ ॐ वरुणायनमः ॥ पश्चिम दिशकीतरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ इति ॥❋॥ ॥❋॥

॥❋॥ अथ वायव दिग्पाल पूजा ॥❋॥

॥ ❋ ॥ ॐ वायवे । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जंबुद्वीपे० । शांति पूजा० । आ० । बलिंगृहाण २ । उदयम० । स्वाहाः ॥ ॐ वायवे नमः ॥ वायवकूणकीतरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ कुबेर दिग्पाल पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॐ कुबेराय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जंबुद्वीपे । दक्षिणभर० । शांति० । आ० । बलिं० । उदय मभ्युदयं कुरु २ स्वाहाः ॥ ॐ कुबेरायनमः ॥ उत्तरदिशितरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ ईशान दिग्पाल पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॐ ईशानाय । सायु० । सवा० सप० । अस्मिन्० । दक्षिण० । अमुक० । अमुक चैत्ये । शांतिपूजा० । आगच्छ २ । बलिं० २ । उदय मभ्युदयं कुरु २ स्वाहाः ॥ ॐ ईशानाय नमः ॥ ईशानकूणकीतरफ जल चंदनादि सर्व द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ ब्रह्मदिग्पालपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॐ ब्रह्मणे । सायुधाय । सवा० । सप० । अस्मिन्० दक्षिणभ

१० । शांति० । आ० २ । बलि० उदय मभ्यु० स्वाहाः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ उर्ध्वदिश तरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नागदिग्पालपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नागाय । मायु० । सवा० सप० । अस्मिन् जंबु० । दक्षि० शांतिपूजा० । आगच्छ २ । बलि० । स्वाहाः ॥ ॐ नागायनमः ॥ अधोदिशि अष्टद्रव्य चढावे ॥ १० ॥ ऊपर कसुंबल वस्त्र मोळीसें बांधे (पीछे) ॐ दशदिग्पालायनमः ॥ ऐसा कहके यथाशक्ति रोकणी द्रव्य सहत नागरवेल का पान आदि सर्व द्रव्य चढावे । पछाके दशुं दिशकी तरफ १० दीपक फूलवत्ती खमी धरके जगावे । (वा) एक दीपक आगे जगाकर रखें ॥ ॥ ❀ ॥ इति दशदिग्पाल पूजनविधिः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवग्रह पूजन विधिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नमो आदित्याय । मायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । अस्मिन् जंबुद्वीपे । दक्षिण भरतक्षेत्रे । अमुक नगरे । अमुक चैत्ये । शांतिपूजा महोत्सवे आगच्छ २ । बलिपूजा गृहाण २ उदय मभ्युदयं कुरु २ अत्रपीठेतिष्ट २ स्वाहाः ॥ ॐ सूर्यायनमः ॥ ऐसा कहके जलचंदनादि अष्ट द्रव्य चढावे ॥ इति सूर्यपूजा ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चंद्रपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ चंद्राय । मायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । अस्मिन् जंबु० । दक्षि० । शांतिपूजा० आ० २ । बलि० । अत्रपीठे तिष्ट २ । उदयमभ्यु० स्वाहाः ॥ ॐ चंद्रायनमः ॥ ऐसा कहके जलचंदनादि अष्टद्रव्यसें चंद्रमाकी पूजा करे ॥ ❀ ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ मंगलपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नमो भोमाय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जं० । दक्षि० । अमु० । शांतिपूजा महोत्सवे । आगच्छ २ । बलि० २ । अत्रपीठे २ । उदय० । स्वाहाः ॥ ॐ भोमायनमः ॥ मंगलकी पूजा करे ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ अथ बुधपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ नमो बुधाय । मायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् जं० । दक्षि

ण० । अमुक० । शांतिपूजा महोत्सवे । आगछ २ । बलि० २ । अत्रपीठे तिष्ट २ । उदय० । स्वाहाः ॥ ॐ बुधायनमः ॥४॥ ऐसा कहके बुधकी पूजा करे ॥

॥ ❋ ॥ अथ बृहस्पति पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॐ नमो बृहस्पतये । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन्० । दक्षिण० शांति० आ० २ । बलि० २ । अत्रपीठे० २ । उदय० स्वाहाः ॥ ॐ बृहस्पतयेनमः ॥ ऐसा कहके बृहस्पतीकी पूजा करे ॥ ५ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ शुक्रपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॐ नमो शुक्राय । सायु० । सवा० । सप० । अ० दक्षिण० अमु० । शांतिपूजा० । आ० । बलि० २ । अत्रपीठे० । उदय मभ्युदयं कुरु २ स्वाहा ॥ ॐ शुक्रायनमः ॥ ६ ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ शनिपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॐ नमो शनिश्चराय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन्० । दक्षि० । अमु० । शांति० । आ० २ । बलि० । अत्रपीठे० २ । उदय मभ्युदयं कुरु २ स्वाहा ॥ ॐ शनिश्चरायनमः ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ राहु पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॐ नमो राहवे सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन्० । दक्षि० अमुक० । शांतिपूजा० । आ० २ । बलि० २ । अत्रपीठे० २ । उदय० स्वाहाः ॥ ॐ राहवेनमः ॥ ८ ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ केतूपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ॐ नमो केतवे । सायु० । सवा० । सप० अस्मिन्० । दक्षि० । अ० । शांति० । आगछ २ । बलि० २ । अत्रपीठे० । उदय० स्वाहा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ इसीतरे क्रमसें भगवानके वामपासे पट्टापर नवग्रहकी स्थापना करे ॥ ऊपर कसुंबल वस्त्र मोलीसें बांधे (पीछे) नागरवेल पान आदि सर्व द्रव्य (तथा) शक्ति मुजब रोकरू नाणो ऊपर भेट करे (ऐसा कहे) ॐ नवग्रहायनमः ॥ चारुं तरफ नवदीपक (वा) एक दीपक धरे ॥ ❋ ॥

इति नवग्रह पूजन थापन विधि ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ इसीतरे, अन्य मंगल प्रतिष्ठादिकर्ममें (जब) दशदिग्पाल, नवग्रहकी थापना पूजा करणी होय (तो) शांतिपूजाके ठिकाणें, जो पूजादि उत्सव होय । उसीका नाम लेकर पूजन थापन करावे ॥ विशेष विधि जो होय । सो गुरूके मुखसें समझके करावे ॥ (पीछे) शांतिकारकके गृहसें शुद्ध जलसें सधव स्त्रीके हाथसें किया हुवा पांचुं रंगके धानका बाकुला (तथा)पांचुं रंगकी खजली, गुलगुला, खीर, दहीको करबो, मालपूवा, पांच रंगका लाडू (इत्यादि) उत्तम २ खाद्यवस्तु मंगाके । एक परातमें सब द्रव्य भेला करे (और) घृत खांड, अत्तर, गुलाबजल, पांच वर्णा फूल आदि सुगंधी द्रव्य मिलाके बलबाकुल तैयार करे ॥ (पीछे) गुरु, वासक्षेपकी मुठी तीन वेर मंत्रसें मंत्रके, तीनवेर बलबाकुल ऊपर वाशक्षेप करे ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ वासक्षेप मंत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं सर्वोपद्रवं बिंबस्य रक्ष २ स्वाहा ॥ ॐ णमो अरिहंताणं । ॐ णमो सिद्धाणं । ॐ णमो आयरियाणं । ॐ णमो उवज्झायाणं । ॐ णमो लोए सव्वसाहुणं । ॐ णमो आगास गामीणं । ॐ णमो चारण लद्धीणं । जे इमे किन्नर । किंपुरस । महोरग । गरुड । गंधर्व । जक्ख । रक्खस । पिशाच । भूअ । साइणी प्पभइउ । जिणघर निवासिणो । सन्निहि याय । तेसवे विलेवण धूव पुप्फ फल वइवसणाहिं । बलिपडिछंता । तुठिकरा भवंतु । पुठिकरा संतिकराभवंतु । सव्वं जणं कुर्वंतु । सव्वजिणाणं संहाणमभा वउ । पमत्तभावतणे । सव्वत्थ रक्खंतु कुर्वंतु । सव दुरियाणी नासंतु । सवा सिव सुवसमंतु । संति तुठि पुठि सिव सत्थयण कारिणो भवंतुस्वाहा ॥ इस मंत्रसें तीनवेर वासक्षेप करके बलबाकुलको शुद्ध करे ।(पीछे)आधा बलबा कुल, दूसरी परातमें विसर्जनके निमत्त पट्टेपर वस्त्रसें ढांकके रख देवे । आधा बलबाकुल लेके घरके (तथा) चैत्यकेऊपर ११ स्नात्रिया शुद्ध होके जावे । (जिसमें) प्रथम विनयवंत श्रावक चोटीका केश खुला करके बल बाकुल दोनुं हाथांमें लेके, पूर्व दिशकी तरफ खडा रहे ॥ १ ॥ दूशरो केसरकी कटोरी २ । तीशरो फूलकी चंगेरी ३ । चोथो आरीसो ४ । पांचमो धूपदानो ५ । छठो दीपक ६ । सातमोचामर ७ । आठमो घंटा ८ । नवमो जलको कल

ण० । अमुक० । शांतिपूजा महोत्सवे । आगच्छ २ । बलिं० २ । अत्रपीठे तिष्ट २ । उदय० । स्वाहाः ॥ ॐ बुधायनमः ॥४॥ ऐसा कहके बुधकी पूजा करे ॥

॥❋॥अथ बृहस्पति पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॐ नमो बृहस्पतये । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन्० । दक्षिण० शांति० आ० २ । बलिं० २ । अत्रपीठे० २ । उदय० स्वाहाः ॥ ॐ बृहस्पतयेनमः ॥ ऐसा कहके बृहस्पतीकी पूजा करे ॥ ५ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ शुक्रपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॐ नमो शुक्राय । सायु० । सवा० । सप० । अ० दक्षिण० अमु० । शांतिपूजा० । आ० । बलिं० २ । अत्रपीठे० । उदय मभ्युदयं कुरु २ स्वाहा ॥ ॐ शुक्रायनमः ॥ ६ ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ शनिपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॐ नमो शनिश्चराय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन्० । दक्षि० । अमु० । शांति० । आ० २ । बलिं० । अत्रपीठे० २ । उदय मभ्युदयं कुरु २ स्वाहा ॥ ॐ शनिश्चरायनमः ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ राहु पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॐ नमो राहवे सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन्० । दक्षि० अमुक० । शांतिपूजा० । आ० २ । बलिं० २ । अत्रपीठे० २ । उदय० स्वाहाः ॥ ॐ राहवेनमः ॥ ८ ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ केतूपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ॐ नमो केतवे । सायु० । सवा० । सप० अस्मिन्० । दक्षि० । अ० । शांति० । आगच्छ २ । बलिं० २ । अत्रपीठे० । उदय० स्वाहा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ इसीतरै क्रमसें भगवानके वामपासे पट्टापर नवग्रहकी स्थापना करे ॥ ऊपर कसुंबल वस्त्र मोलीसें बांधे (पीछे) नागरवेल पान आदि सर्व द्रव्य (तथा) शक्ति मुजब रोकरु नाणो ऊपर भेट करे (ऐसा कहे) ॐ नवग्रहायनमः ॥ चारुं तरफ नवदीपक (वा) एक दीपक धरे ॥ ❋ ॥ इति नवग्रह पूजन थापन विधि ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❁ ॥ इसीतरे, अन्य मंगल प्रतिष्टादिकमें (जब) दशदिग्पाल, नवग्रहकी थापना पूजा करणी होय (तो) शांतिपूजाके ठिकाणें, जो पूजादि उत्सव होय। उसीका नाम लेकर पूजन थापन करावे ॥ विशेष विधि जो होय। सो गुरूके मुखसें समजके करावे ॥ (पीछे) शांतिकारकके गृहसें शुद्ध जलसें सधव स्त्रीके हाथसें किया हुवा पांचुं रंगके धानका बाकुला (तथा)पांचुं रंगकी खजली, गुलगुला, खीर, दहींको करबो, मालपूवा, पांच रंगका लाडू, (इत्यादि) उत्तम २ खाद्यवस्तु मंगाके। एक परातमें सब द्रव्य भेला करे (और) घृत, खांड, अत्तर, गुलाबजल, पांच वर्णा फूल, आदि सुगंधी द्रव्य मिलाके बलबाकुल तैयार करे ॥ (पीछे) गुरु, वासक्षेपकी मुठी तीन वेर मंत्रसें मंत्रके, तीनवेर बलवाकुल ऊपर वाशक्षेप करे ॥ ❁ ॥ ॥❁॥

॥ ❁ ॥ वासक्षेप मंत्र ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ ॐ ह्रां ह्रीं सर्वोपद्रवं बिंबस्य रक्ष २ स्वाहा ॥ ॐ णमो अरिहंताणं। ॐ णमो सिद्धाणं। ॐ णमो आयरियाणं। ॐ णमो उवज्झायाणं। ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं। ॐ णमो आगास गामीणं। ॐ णमो चारण लद्धीणं। जे इमे किन्नर। किंपुरस। महोरग। गरुड। गंधर्व। जक्ख। रक्खस। पिशाअ। भूअ। साइण पभइउ। जिणघर निवासिणो। सन्निहि याय। तेसव्वे विलेवण धूव पुप्फ फल वइवसणाहिं। बलिपडिछंता। तुठिकरा भवंतु। पुठिकरा संतिकराभवंतु। सव्वं जणं कुर्वंतु। सव्वजिणाणं संहाणभत्ता वउ। पसन्नभावतणे। सव्वत्थ रक्खंतु कुर्वंतु। सव्व दुरियाणी नासंतु। सव्वा सिव मुवसमंतु। संति तुठि पुठि सिव सत्थयण कारिणो भवंतुस्वाहा ॥ इस मंत्रसें तीनवेर वासक्षेप करके बलवाकुलकों शुद्ध करे।(पीछे)आधा बलवाकुल, दूसरी परातमें विसर्जनके निमत्त पट्टेपर वस्त्रसें ढांकके रख देवे। आधा बलवाकुल लेके घरके (तथा) चैत्यकेऊपर ११ स्नात्रिया शुद्ध होके जावे। (जिसमें) प्रथम विनयवंत श्रावक चोटीका केश खुला करके बल वाकुल दोनुं हाथांमें लेके, पूर्व दिशकी तरफ खडा रहे ॥ १ ॥ दूशरो केशरकी कटोरी २। तीशरो फूलकी चंगेरी ३। चोथो आरीसो ४। पांचमो धूपदानो ५। छठो दीपक ६। सातमोचामर ७। आठमो घंटा ८। नवमो जलको कल

श ९। दशमो वलिवाकुलकीथाली १०। इग्यारमो मंगल वाजित्र ११। इसी तरेसें सब स्नात्रिया एकेक दिशतरफ खमारहै । (जब) शुद्ध हरफ उच्चारण करनेवाला पंम्ति गुरू, जो दिग्पालकी पूजा बोलचूके (तब) क्रमसें जल वाला, जल, केशर, फूल, वलवाकुल चढावे। चामरकरे। काच देखावे। वाजित्र वजावे। इत्यादि ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दशदिग्पाल आह्वान मंत्र ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ऐरावतः समारूढः। शक्रःपूर्वदिशिस्थितः। संवस्य शांतयेसोस्तु वलिपूजां प्रयछतु ॥ १ ॥ ऐसा कहके पूर्वदिशकीतरफ जलचंदनादि वलवाकुल चढावे ॥ १ ॥ (अग्निकूणके सन्मुष) ॥ सदावन्हि दिशोनेता। पावको मेषवाहनः। संघस्य शांतिये सोस्तु। वलिपूजां प्रयछतु ॥ २ ॥ ऐसा कहके वलवाकुल चढावे ॥ (दक्षिण दिशकीतरफ) दक्षिणस्यां दिशःस्वामी। यमोमहिषवाहनः संघस्य०। वलि० ॥ ३ ॥ वलवाकुल चढावे। वाजित्रवजावे ॥ ४ ॥ (नेरुत कूणकीतरफ) ॥ यमापरांतरालोको। नैरुतः शिववाहनः। संघस्य०। वलि० ॥ ४ ॥ (अथ पश्चिमादिशि) ॥ यः प्रतीची दिशोनाथः। वरुणो मकरस्थितः। संघस्य०। वलि० ५ ॥ (अथ वायवकूण) हरिणो वाहनंयस्य। वायव्याधिपतिर्मरुत्। संघस्य०। वलि० ॥ ६ ॥ (अथ उत्तरदिशि) निधान नवकारूढ। उत्तरस्यां दिशिप्रभुः। संघस्य० वलि० ॥ ॥ ७ ॥ (अथ ईशानकूण) सितेवृषेधिरूढश्च। ईशानांच दिसोविभुः। संघस्य०। वलि० ॥ ८ ॥ (अथ अधोदिशी) ॥ पातालाधिपतियोस्तु। सर्वदा पद्मवाहनः। संघस्य०। वलि० ॥ ९ ॥ (अथ ऊर्द्धदिशि) ॥ ब्रह्मलोक विभोयस्तु। राजहंस समाश्रितः। संवस्य०। वलि० ॥ १० ॥ ऐसा कहके, ऊर्द्धदिशिकों जलचंदनादि वलि चढावे ॥ ❀ ॥

इति दशदिग्पाल आह्वान वलवाकुल देनेकी विधिः ॥ ❀ ॥

॥ (पीछे) कलशके भीतर श्रीशांतिनाथ स्वामीकी प्रतिमा निश्चलपणें रक्खे। पंचरत्नकी पोटलीरक्खे। केशर पुष्पादिकसें कलशकी पूजा करे। गुरू वासक्षेप करे। तिसकेबाद कलशके आगे। कुशमांजली १। लवण उतारण २। पहरावणी ३। मंगलदीप ४। करे। मंगलदीपकमें मोलीकी वट्टी

घृतऐसा रक्खे। कि। शांतिपूजा पूरण होय जहांतक तो अवश्य अखंम रहे (पीछे) चतुर्विध संघसहत गुरू इरियावही पडिक्कमें। चारनोकारको कावसग्ग करके लोगस्स कहै॥ वेठके दक्षिणो गोमो धरतीपर रक्खे। मा वोगोमो नम्रीभूत करके चैत्यवंदन करे। णमोत्थुणं० कहके अरिहंत चेइ याणं०। वंदणवत्तिया० अन्नत्थू०। एक नवकारको कावसग्ग करे। नमोर्हत् सिद्धा० कहके। थुईकी गाथा कहे (यथा)॥ यदंध्रि नमना देव। देहिनः संतिसुस्थिता। तस्मै नमोस्तु वीराय। सर्वविघ्न विघातिने॥ १॥ लोगस्स० वंदन० अनत्थू० कहके १ नवकार०॥ दूजीथुई कहे॥ सुरपतिनत चरण युगा। न्नाभेयजिनादि जिनपती न्नौमी। यद्वचन पालनपराः। जलांजलि ददतु दुःखेभ्यः॥ २॥ इहां पुक्खरवरदी०। वंदनवत्तिया० कहके कावसग्ग करे॥ तीसरी स्तुति कहे॥ वदंति वंदारु गणाग्रतो जिनाः। सदर्थतो यद्रच यंति सूत्रतः। गणाधिपास्तीर्थ समर्थ नक्षणे। तदंगिना मस्तु मतंनमुक्तये॥ ३॥ इहां। सिद्धाणं बुद्धाणं०। अनत्थू० कहके १ नवकारको कावसग्ग करे॥ चौथी स्तुती कहे (यथा) शक्रःसुरा सुरवरैः सहदेवताभिः। सर्वज्ञ शासन सुखाय समुद्यताभिः। श्रीवर्द्धमान जिनदत्त मतिप्रवृत्तान्। नव्यान् जनाः नवतु नित्य ममंगलेभ्यः॥ ४॥ (पीछे) वेठके णमोत्थुणं० कहके खमा हुवे॥ श्रीशांतिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थं करेमि काउसग्गं॥ वंदन वत्तिया०। अन्नत्थू० कहके १ नव०॥ रोग शोगादिभिर्दोषे। रंजिताय जि तारये। नमः श्रीशांतये तस्मै। विहितानत शांतये॥ ५॥ (ततः) श्रीशांति देवता निमित्तं करेमि०। अन्नत्थू० १ नव का०॥ श्रीशांतिजिन भक्ताय। भ व्याय सुखसंपदं। श्री शांतिदेवता देया। दशांति मपनीयते॥ ६॥ (ततः) श्रीश्रुतदेवता नि०॥ सुवर्णशालनी देयात्। द्वादशांगी जिनोद्भवा। श्रुतदेवी सदामह्य। मशेष श्रुतसंपदं॥ ७॥ (ततः) श्रीभुवनदेवता नि०। चतुर्वर्णाय संघाय। देवीभुवन वासिनी। निहत्य दुरितान्येषा। करोतु सुखमक्षनं॥८॥ (ततः श्रीक्षेत्रदेवतानिमित्तं०) यासांक्षेत्रगतास्संति। साधवःश्रावकादयः जिनाग्यां साधयं तस्था। रक्षंतु क्षेत्र देवता॥ ९॥ (ततः श्रीअंबिका देवता निमित्तं क०) अंबानिहित भिंनामे। सिद्धबुद्ध समन्विता। सिते सिंहे स्थि

तागौरी । वितनोतु समीहितं॥१०॥(ततः श्रीपद्मावती देवता निमित्तं क०) धराधिपतिपत्नीया । देवी पद्मावती सदा । क्षुद्रो पद्रवतःसामां । पातुफुल्लत्फ णावली ॥ ११ ॥ (ततःश्रीचक्रेश्वरी देवता निमित्तं क०)। चंचश्चक्रधराचा रु । प्रवालदलसन्निभा । चिरंचक्रेश्वरीदेवी । नंदता निवताच्चमां ॥ १२ ॥ (ततः श्रीअछुप्ता देवता निमित्तं०) खड्गखेटक कोदंरू । वाणपाणिस्तडित् द्युतिः । तुरंग गमना छुप्ता । कल्याणानि करोतुमे ॥ १३ ॥ (ततः श्रीकुबेर देवतानिमित्तं०) मथुरापुरी सुपार्श्वे । श्रीपार्श्वे स्तूप रक्षिका । श्रीकुबेरा नग रारूढा । सुतांकावतुवोत्रयात् ॥ १४ ॥ (ततः श्रीब्रह्मदेवता निमत्तं०) ब्रह्म शांति समांपाया । दपाया द्वीरसेवकः।श्रीमत्सत्य पुरेसत्या । येनकीर्त्तिः कृता निजः ॥ १५ ॥ (ततः श्रीगोत्र देवता नि०) यागोत्रं पालयत्येव । सकला पायतःसदा । श्रीगोत्रदेवतारक्षां । शंकरोतु नतां गिरां ॥ १६ ॥ (ततःश्री शक्रादि समस्त देवता नि०) श्रीशक्रप्रमुखायक्षाः । जिनशासनसंस्थिताः । देवादेव्यस्तदन्येपि । संघरक्षत्व पायतः ॥ १७॥ (ततः श्रीसिद्धायिका श्री शासन देवता नि०)अन्नत्थू० चारलोगस्सकोका० स्तुति कहे । श्रीमद्रिमान मारूढा । यक्ष मातंग सेविता । सामां सिद्धायिका पातु । चक्र चापेषु धारणी ॥ १८ ॥ लोगस्स० । कहके बैठे । चैत्यवंदन० । णमोत्थुणं० । जयवी यरायपर्यंत कहै ॥❀॥ इसी तरे १८ स्तुतीसें देववांदै ॥ (पीछे)सुंदर अंगो पांगवाले।सुशीलस्त्री पुत्रादिक सहित । विवेक गुणधारक,आठ स्नात्रिया मुख कोश बांधके तीन तीन नवकार गुणें (जिसमें) दो स्नात्रिया दो नालीवाला कलश हाथमें लेके मटकाके दोनुं तरफ खरा रहे ॥ एक स्नात्रियो धूप खेतो रहे ॥ १ स्नात्रियो फूल, चंदन, वासक्षेप, चढातो रहै ॥ दो स्नात्रिया लोटामें जल जरके दोनुं तरफ धारा देनेंवाला कलशानें पूरता रहे । दोजणा दोनुंतरफ चामर ढालता रहै ॥ (प्रथम) गुरू आदि, सकलसंघ सात सात नवकार गुणें ॥ स्नात्रिया एकेक नवकार गुणके एकेक धारा देवे । ऐसें सात धारा दे चूके (तब) गुरू, मधुरस्वरें स्पष्ट अक्षरोंसें । नमो र्हत् सिद्धाचा र्यो० कहके ॥ अजितशांति प्रमुख साते स्मरण गुणें । (पीछे) जक्तामर वम्हीशांति, छोटी शांति, गुणें ॥ (तथा सकलसंघमें जिसकों साते स्मरण

शांति शुद्ध आती होय। जब तो गुरूकेसाथे, अपनें मनमें साते स्मरण शांतिगुणें (ओर) नहि आवे सो सर्वसंघ नवकार मंत्र गुणता रहै ॥ साते स्मरण (तथा) शांति गुणें जहांतक अखंड ऊपरले छोटे कलशेमें धारा देता रहे। छींककोई न करै। कोई आपसमें अन्य संसारी कथा न करै ॥ साते स्मरणादि संपूर्ण सर्व गुणचूकें (पीछे) तीन तीन नवकार गुणके कलश धरे (पीछे) नीचेका कलशमेंमें। जिन प्रतिमाकों निकालके अछोतरे अंग लूणा करके केशर पुष्पादिकसें पूजा करै ॥ भगवानकी अछी अंगीरचना करावे। नानाप्रकारका नेवेद्यफल चढाके। आरती उतारै। मंगलदीप करे ॥ पीछे शांतिजल सर्वसंघ लगावे। घरमें लेजाके छांटे। शांतिपूजाकी मोली गुरूकेपास लेके राखडी बांधे ॥ (इससें) संपूर्ण संघमें नगरमें, देशमें, मरी आदिक सर्व रोग दोष दूर होके शांति होय। अनेक प्रकारसें रुधी वृधी सुख शौभाग्यकों प्राप्त होय ॥ (पीछे) जो आधा बलिवाकुल परातमें रखा हुवा हे। सो लेके पूर्ववत् स्नात्रिया गुरूकेसाथ मंदरऊपर जाके दश दिग्पालकों विसर्जन करावै ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ दशदिग्पाल विसर्जन करनेकी विधि पूर्ववत् जाणनी इतना विशेष है (कि) आगछ २ के ठिकाणें गछ २ कहे ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ (यथा) ॐ नमो इंद्राय। पूर्वदिग् अधिष्टाय काय। ऐरावण वाहनाय। सहस्र नेत्राय। वज्रायुधाय। सपरिकराय। अस्मिन् जंबुद्वीपे असुक नगरे। असुक मंदरे। असुक महोछवे। सर्वोपद्रवाद्रक्षलिरक्ष २ गछ गछ स्वाहा ॥ पूर्वदिशकीतरफ ॥ ॐ इंद्रायनमः ॥ १ ॥ (अग्निकूणे) ॥ ॐ नमो अग्निमूर्त्तये। शक्तिहस्ताय सायु०। सवा०। सप०। अस्मि० असु०। सर्वोपद्रवाद्रक्षलिरक्ष २। गछ २ स्वाहाः ॥ इति ॥ (दक्षिणदिशे) ॥ ॐ नमो यमाय। दक्षिण दिगधिष्टायकाय। महिषवाहनाय। दंड आयुधाय। कृष्ण मुर्त्तये। सायु०। सप०। अस्मिन०। सर्वोपद्रवाद्रक्षलिरक्ष २ गछ २ स्वाहाः ॥ ३ ॥ इति ॥ (नेरूतकूणे) ॥ ॐ नमो नेरूताय। खड्गहस्ताय। सायु० सवाहनाय। सप०। अस्मि०। असु०। सर्वोपद्रवाद्रक्षलिरक्ष २ गछ २ स्वाहाः ॥ ४ ॥ इति ॥ (पश्चिमदिशे) ॥ ॐ नमो वरुणाय। पश्चिमदिगधिष्टा

यकाय । मकरवाहनाय । सायु० । सप० । अस्मिन्० । अमु० । सर्वोपद्रवा० । गछ २ स्वाहाः ॥ ५ ॥ (वायवकूणे) ॐ नमो वायवे । वायवाधिपतये । ध्वजहस्ताय । हरिणवाहनाय । सा० सप० । अस्मिन्० । अमु० । सर्वोपद्रवा० गछ २ स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥ (उत्तरदिशे) ॐ नमो धनदाय । उत्तरदिगाधिष्टायकाय । नरवाहनाय । गदाहस्ताय । सप० । अस्मिन्० । अमु० । सर्वोपद्रवा० २ । गछ० २ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ (ईशान कूणे) ॥ ॐ नमो ईशानाय । त्रिशूल हस्ताय । ईशानाधिपतये । वृषभवाहनाय । सप० । अस्मि० । अमु० । सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष २ गछ २ ॥ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ (ऊर्ध्वलोके) ॥ ॐ नमो ब्रह्मणे । राजहंसवाहनाय । ऊर्ध्वलोकाधिष्टायकाय । सायु० । सप० । अस्मि० । अमु० । सर्वोपद्रवा० गछ० २ स्वाहाः ॥ ९ ॥ इति ॥ (अधोलोके) ॥ ॐ नमो नागाय । पातालनिवासाय । पद्मवाहनाय । सायु० । सप० । अस्मि० । अमु० । सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष २ गछ २ स्वाहा ॥ १० ॥ इसीतरै क्रमसें दशदिग्पाल विसर्जन करै ॥ ❁ ॥ (पीछे) नीचे आकर दिग्पाल नवग्रहादि सर्व देवताकों श्लोक पढके विशर्जन करै ॥ (यथा) शक्राद्या लोकपाला दिशि विदिशि गता, शुद्ध सद्धर्म्मसक्ताः । आयातास्नात्रकाले कलुषहतिकृते तीर्थनाथस्य भक्त्या । न्यस्ताशेषा पदाद्या विहित शिवसुखाः स्वास्पदं सांप्रतंते । स्नात्रे पूजामवाप्य स्वमतिकृत मुदो यांतु कल्याणभाजः ॥ १ ॥ आग्याहीनं क्रियाहीनं । मंत्रहीनंचयत्कृतं । तत्सर्वं क्षमृतंदेवः । प्रशीद परमेश्वरः ॥ १ ॥ आह्वानं नैवजानामि । नैवजानामि पूजनं ॥ विसर्जनं नैवजानामि । त्वमेव शरणं ममः ॥ ३ ॥ (पीछे) यथा शक्ति ग्यानपूजा, गुरूपूजा, साहमीवात्सल्य करै ॥ जैनयाचकानेंदानदेवै ॥ इति शांतिक स्नात्र पूजाविधिः ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ नवपद मंगल पूजा विधि लि० ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नवस्नात्रिया मंत्रितजलसें स्नान करे ॥ (जलमंत्र) ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षणी अमृतं श्रावय २ स्वाहा (इसमंत्रसें) जलमंत्रे (पीछे) ॐ ह्रीं अमले विमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थ जलोपमें पांपां वांवा अशुचि शुचिर्भवामि स्वाहा ॥ (इस मंत्रकों) सात

वेर पढता हुवा स्नान करे (पीछे) ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्रौं नमः ॥ सातवेर इस मंत्रसें वस्त्र शुद्ध करके पहरे (पीछे) ॐ श्रीं ह्रीं क्रौं अर्हते नमः ॥ (इस मंत्रसें) सातवेर गुरूपासे केशर मंत्रायके तिलक करे (पीछे) ॐ ह्रीं अवतर २ । सोमे २ । कुरु २ । वल्गु २ । सुमणसे । सोमणसे । महु महुरे । ॐ कवली कः क्षः स्वाहाः ॥ (इस मंत्रसें) मोली मैंढल मरोफ फली मंत्रायके हाथके बांधे ॥ (और) जब मंगलजीके चारुं तरफ मोली मैंढल बांधे । सोभी इसी मंत्रसें मंत्रके बांधे ॥ इसीतरे अपना अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरूके सन्मुख हाथ जोडके बैठे ॥ (जब गुरू) ॐ परमेष्ठी० स्तोत्र पढके अंगरक्षा करै ॥ अंगरक्षा स्तोत्रः ॥ ॐ परमेष्ठी नमस्कारं सारं नवपदात्मकं । आत्मरक्षा करंवज्र । पंजराभं स्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ णमो अरिहंताणं ॥ शिरस्कं शिरसिस्थितं ॥ ॐ णमो सव्वसिद्धाणं । मुखे मुखपटंवरं ॥ २ ॥ ॐ णमो आयरियाणं । अंगरक्षा तिशायिनी । ॐ णमो उवझायाणं । आयुधं हस्तयो दृढं ॥ ३ ॥ ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं । मोच के पादयोशुभे । एसो पंचनमुक्कारो ॥ शिलावज्रमयीतले ॥ ४ ॥ सव्व पाव प्पणासणो । वप्रोवज्रमयोवहिः । मंगलाणंच सव्वेसिं । खादिरांगार खातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतंचपदंज्ञेयं । पढमं हवइमंगलं । वप्रो परिवज्रमयं । पिधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महाप्रभावा रक्षेयं । क्षुद्रोपद्रवनाशिनी । परमेष्टिपदोद्भूता कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां । परमेष्टि पदेसदा ॥ तस्यनस्या द्भयंव्याधि । राधिश्चापि कदाचिनः ॥ ८ ॥ ॥ इति आतम रक्षा वज्रपिंजर स्तोत्रं ॥ ॥ यह स्तोत्र तीनवार गुणके आत्मरक्षा करे ॥ (पीछे) तीन वेर नवकार मंत्रसें मंत्रके चोटीके गांठ देवे ॥ (तथा) तीन नवकार गुणके सर्व स्नात्रियांके कानांमें फुंक देवे ॥ (इतनी विधीतो) हरकोई पूजा प्रतिष्टा मंगलादिकमें स्नात्रियांकों प्रथम अवश्य करणी कराणी चहिये ॥ (पीछे मंदरजीमें अधिष्टायक देव देवी जो होय । उन सर्वकी पूजा करावे । अष्ट द्रव्य चढावे ॥ (पीछे) चंपेलीका तेलमें हिंगलू (वा) सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजीकी पूजा करे । चांदीका वरग (वा) मालीपन्नासें अंग रचना करे । अत्तर चढावे । फूल, धूप, दीप नेवेद्य

यकाय । मकरवाहनाय । सायु० । सप० । अस्मिन्० । अमु० । सर्वोपद्रवा० । गढ २ स्वाहाः ॥ ५ ॥ (वायवकूणे) ॐ नमो वायवे । वायवाधिपतये । ध्वजहस्ताय । हरिणवाहनाय । सा० सप० । अस्मिन्० । अमु० । सर्वोप द्रवा० गढ २ स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥ (उत्तरदिशे) ॐ नमो धनदाय । उत्तरदिगधिष्टायकाय । नरवाहनाय । गदाहस्ताय । सप० । अस्मिन्० । अमु० । सर्वोपद्रवा० २ । गढ० २ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ (ईशान कूणे) ॥ ॐ नमो ईशानाय । त्रिशूल हस्ताय । ईशानाधिपतये । वृषभवाहनाय । स प० । अस्मि० । अमु० । सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष २ गढ २ ॥ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ (ऊर्ध्वलोके) ॥ ॐ नमो ब्रह्मणे । राजहंसवाहनाय । ऊर्ध्वलोकाधि ष्टायकाय । सायु० । सप० । अस्मि० । अमु० । सर्वोपद्रवा० गढ० २ स्वा हाः ॥ ९ ॥ इति ॥ (अधोलोके) ॥ ॐ नमो नागाय । पातालनिवासाय । पद्मवाहनाय । सायु० । सप० । अस्मि० । अमु० । सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष २ गढ२ स्वाहा ॥ १० ॥ इसीतरे क्रमसें दशदिग्पाल विसर्जन करे ॥ ❋ ॥ (पीछे) नीचे आकर दिग्पाल नवग्रहादि सर्व देवताकों श्लोक पढके विशर्जन करे ॥ (यथा) शक्राद्या लोकपाला दिशि विदिशि गता, शुद्ध सद्धर्मसक्ताः । आयातास्नात्रकाले कलुषहतिकृते तीर्थनाथस्य भक्त्या । न्यस्ताशेषा पदाद्या विहित शिवसुखाः स्वास्पदं सांप्रतंते । स्नात्रे पूजामवाप्य स्वमतिकृत मुदो यांतु कल्याणभाजः ॥ १ ॥ आग्याहीनं क्रियाहीनं । मंत्रहीनंचयत्कृतं । त त्सर्वं क्षमृतंदेवः । प्रशीद परमेश्वरः ॥ १ ॥ आह्वानं नैवजानामि । नैवजाना मि पूजनं ॥ विसर्जनं नैवजानामि । त्वमेव शरणं ममः ॥ ३ ॥ (पीछे) यथा शक्ति ग्यानपूजा, गुरूपूजा, साहमीवात्सल्य करै ॥ जैनयाचकानेंदानदेवै ॥ इति शांतिक स्नात्र पूजाविधिः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नवपद मंगल पूजा विधि लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नवस्नात्रिया मंत्रितजलसें स्नान करे ॥ (जलमंत्र) ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षणी अमृतं श्रावय २ स्वाहा (इसमंत्रसें) जलमंत्रे (पीछे) ॐ ह्रीं अमले विमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थ जलोपमें पांपां वांवा अशुचि शुचिभवामि स्वाहा ॥ (इस मंत्रकों) सात

वेर पढता हुवा स्नान करे (पीछे) ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्रौं नमः ॥ सातवेर इस मंत्रसें वस्त्र शुद्ध करके पहरे (पीछे) ॐ श्रीं ह्रीं क्रौं अर्हते नमः ॥ (इस मंत्रसें) सातवेर गुरूपासे केशर मंत्रायके तिलक करे (पीछे) ॐ ह्रीं अवतर २ । सोमे २ । कुरु २ । वल्गु २ । सुमणसे । सोमणसे । महु म हुरे । ॐ कवली कः क्ष्वः स्वाहाः ॥ (इस मंत्रसें) मोली मेंढल मरोम फली मंत्रायके हाथके बांधे ॥ (और) जब मंगलजीके चारुं तरफ मोली मेंढल बांधे । सोभी इसी मंत्रसें मंत्रके बांधे ॥ इसीतरे अपना अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरूके सन्मुख हाथ जोमके बैठे ॥ (जब गुरू) ॐ पर मेष्ठी॰ स्तोत्र पढके अंगरक्षा करै ॥ अंगरक्षा स्तोत्रः ॥ ॐ परमेष्ठी नमस्कारं सारं नवपदात्मकं । आत्मरक्षा करंवज्र । पंजराभं स्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ णमो अरिहंताणं ॥ शिरस्कं शिरसिस्थितं ॥ ॐ णमो सबसिद्धाणं । मुखे मुखपटंवरं ॥ २ ॥ ॐ णमो आयरियाणं । अंगरक्षा तिशायिनी । ॐ णमो उवझायाणं । आयुधं हस्तयो दृढं ॥ ३ ॥ ॐ णमो लोए सबसाहूणं । मोच के पादयोशुभे । एसो पंचनमुक्कारो ॥ शिलावज्रमयीतले ॥ ४ ॥ सब्ब पाव प्पणासणो । वप्रोवज्रमयोवहिः । मंगलाणंच सबेसिं । खादिरांगार खातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतंचपदंज्ञेयं । पढमं हवइमंगलं । वप्रो परिवज्रमयं । पिधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महाप्रभावा रक्षेयं । क्षुद्रोपद्रवनाशिनी । परमेष्टिपदोद्भूता कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां । परमेष्टि पदैसदा ॥ तस्यनस्या द्भयंव्याधि । राधिश्चापि कदाचिनः ॥ ८ ॥ ॐ ॥ इति आत्म रक्षा वज्रपिंजर स्तोत्रं ॥ ॐ ॥ यह स्तोत्र तीनवार गुणके आत्मरक्षा करे ॥ (पीछे) तीन वेर नवकार मंत्रसें मंत्रके चोटीके गांठ देवे ॥ (तथा) तीन नवकार गुणके सर्व स्नात्रियांके कानांमें फुंक देवे ॥ (इतनी विधीतो) हरकोई पूजा प्रतिष्टा मंगलादिकमें स्नात्रियांकों प्रथम अवश्य करणी करा णी चहिये ॥ (पीछे मंदरजीमें अधिष्टायक देव देवी जो होय । उन सर्वकी पूजा करावे । अष्ट द्रव्य चढावे ॥ (पीछे) चंबेलीका तेलमें हिं गलू (वा) सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजीकी पूजा करे । चांदीका वरग (वा) मालीपन्नासें अंग रचना करे । अत्तर चढावे । फूल, धूप, दीप नेवेद्य

फल, जल, रोकनाणो, इत्यादि सर्व द्रव्य(ॐ क्षेत्रपालायनमः) ऐसा बोलता हुवा चढावे ॥ (पीछे) मंगलजीके दहिणेंपासें, १० दश दिग्पालके पट्टेकी थापना करे। एकेक दिग्पालकी पूजा पढके, जल चंदनादि सर्व द्रव्य, नागरवेलके पानसुद्धा चढाता रहे॥ दशुं दिग्पालकी पूजा हुए पीछे। ऊपर कसुंबल वस्त्र वांधे। आगे सर्व द्रव्य चढावे। दीपक करे॥ (पीछे) वामपासे नवग्रहका पट्टकी थापना करके पूर्वोक्त प्रकार पूजा करे॥ (पीछे) सर्व स्नात्रियांकुं १८ स्तुतीसें देव वंदन करावे ॥ (इहां) १० दिग्पाल, नवग्रहकी पूजाका मंत्र (तथा) देव वंदनकी विधि विस्तारके भयसेती न लिखी है (सो) पूर्वेशांति पूजामें लिख आए हैं(उसी मुजब) सर्व विधि करावे (पीछे) मंगलजीकी प्रतिष्टा करे॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ मंगल प्रतिष्टा विधि॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रथम दोनुंपासे मोली सुत्रकी वत्ती जगाके घृतका दीपक करै॥ इन दोनुं दीपकको चार पहर अखंड रक्खे। (पीछे) सोनें, चांदी, आदिका कलशमें अबोट उत्तम जल भरके सोनावाणी करै। हाथमें कलश लेके। ७ सात नवकार गुणें॥ ॐ ह्रीँ जीरावला पार्श्वनाथ रक्षां कुरु २ स्वाहा॥ इस मंत्रसें ७ वार जलकों मंत्रके। मंगलजीके चारुं तरफ धारा देवे। ऊपर जरा छांटा देके पवित्र करै। धूप खेवै (पीछे) नवतारी मोली सुत्रका साढा तीन आंटा मंगलजीके बाहर कर देवे। पूर्वोक्त मंत्रसें मंत्रके मोली (तथा) मेंढल मरोडा फली चारुं तरफ बांधे॥ (पीछे) केशरकी कटोरी हाथमें लेके (ॐ आँ ह्रीँ श्रीँ अर्हतेनमः) इस मंत्रसें मंत्रके मंगलके ऊपर केशरका छींटा देवे। (ऊपर) चावलको साथियो करै। टीकी देवे। मंगलके अगाडी चावलको साथियो (वा) नंद्यावर्त्त करके ऊपर नालेर रुपियो भेट धरे॥ (पीछे) केशर, चंदन, कुंकम, लेकर मंगलजीके चारुं तरफ तीन रेखा आलेखन करै॥ (पीछे) वाशक्षेप, पुष्प, हाथमें लेके (ॐ भूरसी भूतधात्री विश्वाधारैनमः॥) इस मंत्रसें सातवेर मंत्रके मंगलभूमि, तथा, पीठकी पूजा करै॥ फेर, आचार्य गुरू वाशक्षेप हाथमें लेके (ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हत्पीठायनम) इस मंत्रसें ७ वेर मंत्रके मंगल पीठकी

पूजा करे ॥ (पीछे) स्नात्रिया, हाथमें पुष्प, चावल, लेलेके तीन वेर मंड लकों वधावे ॥ नीचे चावलको साथियो करके । रुपियो नालेर थापनाको धरे । (पीछे) स्नात्रिया मंदरके भीतरसें प्रतिमाजी लायके त्रिगडा ऊपर मंत्र पढके स्थापन करे ॥ (स्थापन मंत्र) ॥ ॐ नमो अर्हत् परमे श्वराय । चतुर्मुखाय परमेष्टिने दिग् कुमारी परिपूजिताय । चतुषष्टि सुरासु रेंद्र सेविताय । देवाधिदेवाय । त्रैलोक्य महिताय । अत्र पीठे तिष्ट २ स्वा हा ॥ इस मंत्रकों ७ वेर पढके । नवप्रतिमा (वा) एकप्रतिमा स्थापन करे ॥ (इसीतिरे) मंडल प्रतिष्ठा करके (पीछे) सिद्धचक्र पूजा सरू करे ॥ ❀ ॥ (प्रथम) एकरकेबीमें । सपेद गोलो, सपेद वस्त्र, सपेद धजा, ८ कर्केतन रत्न, ३४ हीरा, पुष्प अक्षत, फल, दीप, धूप, हाथमें लेके अरिहंत पद की पूजा पढे ॥ (यथा) अथाष्टदल मध्याब्ज । कर्णिकायां जिनेश्वरान् । आविर्भूतोंखसद्बोधा । नाव्रतः स्थापयाम्यहं ॥ १ ॥ निःशेष दोषें धन धूम केतुः । नपार संसार समुद्र सेतून् । यजे समस्तातिशयैक हेतून् । श्रीमज्जि नानांबुज कर्णिकायां ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हद्भ्योनमः स्वाहा ॥ १ ॥ इस मंत्रसे अर्हंत पदकी थापना पूजा करे । सर्व द्रव्य चढावे ॥ (पीछे) रकेबीमें । लाल गोलो, लाल धजा, लाल वस्त्र, ८ माणक रत्न, ३१ मूंगा, जल पुष्पादि सर्व द्रव्य हाथमें लेके सिद्ध पूजा पढे ॥ (यथा) तस्य पूर्वे दले सिद्धान् । सम्यक्तादि गुणात्मकान् । निःश्रेय संपदं प्राप्तान् । निदधे भक्ति निर्भरः ॥ ३ ॥ तत्पूर्व पत्रे परितः प्रणष्टः । दुष्टाष्ट कर्मा मधिगम्य शुद्धि । प्राप्तान्नरान्सिद्धि मनंतबोधान् । सिद्धान् यजे शांतिकरान्नराणां ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेभ्योनमः स्वाहा ॥ पूर्व दिशकी तरफ सिद्ध पदकी स्थाप ना पूजा करे । सर्व द्रव्य चढावे ॥ ❀ ॥ इति ॥ ❀ ॥ (पीछे) रकेबीमें पीलो गोलो, पीली धजा, पीलो, वस्त्र, ५ गोमेदक रत्न, ३६ सोनेका फूल, जल, पुष्पादि सर्व पीत द्रव्य हाथमें लेके आचार्य पदकी पूजा पढे ॥ (यथा) स्थापयामिततः सूरीन् । दाक्षिणेस्मिन् दले भजे । चरतः पंचधाचारान् । षट्त्रिंशद्गुणैर्युतान् ॥ ५ ॥ सूरी सदाचार विचारसारा । नाचारयंतः स्वपरान् यथेष्टं । उग्रोपसर्गेक निवारणार्थः । मभ्यर्च्चया म्यक्षतगंधधूपैः ॥ ६ ॥ ॐ

ह्रीँ श्रीँ सूरीभ्योनमः स्वाहा ॥ ३ ॥ दक्षिणदिशकी तरफ आचार्य पदकी थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ❋ (पीछे) हरितगोलो, हरितवस्त्र, हरामुंगकालड्डू, हरीधजा, ४ इंद्रनील, २५ मरकतरत्न पन्ना, जल पुष्पादि सर्व द्रव्य हाथमें लेके उपाध्याय पदकी पूजा पढै ॥ (यथा) द्वादशांग श्रुताधारान् ॥ शास्त्राध्ययन तत्परान् ! निवेशयाम्युपाध्यायान् । पवित्रे पश्चिमे दले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राएयनिशं प्रशांत्यै । पठंतियेन्यानपि पाठयंति । अध्यापकां स्तांनपराब्जपत्रे । स्थितान्यवित्रान् परिपूजयामि ॥ ८ ॥ उँ ह्रीँ श्री उपाध्यायेभ्योनमः स्वाहा ॥ पश्चिमदिशकीतरफ उपाध्याय पदकी स्थापना पूजा करे ॥ इति॥ ❋॥(पीछे)रकेबीमें स्यामगोलो, स्यामवस्त्र, स्यामधजा । उडदकालड्डू, ५ राजपट्ट, २७ आरिष्टरत्न, जल, पुष्पादि सर्व द्रव्य हाथमें लेके साधूपदकी पूजा पढै ॥ (यथा) व्याख्यादिकर्म कुर्वाणान् । सुत्रध्यानैक मानसान् । उदक पत्रगतान् वारान्। साधुवासीस सुव्रतान् ॥ ९ ॥ वैराग्यमंतर्वचासि प्रसिद्धं । सत्यं तपो द्वादशधा शरीरे । येषा मुदक्यवगतान् सुकृतान् पवित्रान् । साधून्सदातान् परिपूजयामि ॥ १० ॥ उँ ह्रीँ श्री सर्व साधुभ्योनमः स्वाहा ॥ ५ ॥ उत्तरादिशकी तरफ साधुपदकी थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ❋ (पीछे) रकेबीमें सपेदगोलो, सपेद धजा, सपेद वस्त्र, ६७ मोती आदि, श्वेतद्रव्य हाथमें लेके । दर्शन पदको श्लोक बोलके चढावे ॥ (यथा श्लोकः) जिनेंद्रोक्त मतश्रद्धा । लक्षणे दर्शनेयजे । मिथ्यात्व मथनं शुद्धं । नस्त मीशान् सद्दले ॥ ११ ॥ उँ ह्रीँ श्री सम्यग् दर्शनाय नमः स्वाहाः ॥ ६ ॥ ईशान कूणें दर्शनपदकी स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥ (पीछे) रकेबीमें ५१ मोती, श्वेतगोलो, श्वेत धजा, चावलका लड्डू आदि श्वेतद्रव्य हाथमें लेके, ग्यानपदको श्लोक बोलके चढावे ॥ (श्लोकः) मशेष द्रव्यपर्याय । रूपमेवाव भासकं । ग्यानमाग्नेय पत्रस्थं । पूजयामि हितावहं ॥ १२ ॥ उँ ह्रीँ श्री सम्यग् ग्यानाय नमः स्वाहा ॥ ७ ॥ अग्निकूणकीतरफ ग्यानपदकी स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ❋ ॥ (फेर) रकेबीमें सपेद गोलो, सपेद धजा, ७० मोती, श्वेतवस्त्र आदि श्वेत द्रव्य हाथमें लेके चारित्र पदको श्लोक बोलके चढावे ॥ (श्लोकः) सामायिकादि

जिनेंदे । श्चारित्रं चारु पंचधा । संस्थापयामि पूजार्थं । पत्रेह नैरुते क्रमात् ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् चारित्राय नमः स्वाहा ॥ ८ ॥ नैरुत कूणकी तरफ चारित्र पदकी स्थापना पूजा करै ॥ इति ॥ ❀ ॥ (पीछे) रकेबीमें ५० मोती, श्वेतगोलो, श्वेत धजा आदि, सर्व सपेदद्रव्य हाथमें लेके, तप पदको श्लोक बोलके चढावै ॥ (श्लोकः) द्विधा द्वादशधाभिन्नं । पूतेपत्र तपःस्वयं । निधाययामि भक्तयात्र । वायव्यां दिशि शर्मदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् तपसे नमः स्वाहा ॥ ९ ॥ वायव कूणकी तरफ तप पदकी स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ❀॥ (अथ अर्घ) ॥ निःस्वेदत्वादि दिव्यातिशय मयतनून् श्री जिनेंद्रान् सुसिद्धान् । सम्यक्तादि प्रकृष्टाष्टक गुणभृदाचार साराश्चसूरीन् । शास्त्राणि प्राणिरक्षा प्रवचन रचना सुंदराण्यादि संज्ञां । स्तत्सिद्ध्यै पाठकानां यतिपति सहिता नर्चयाम्यर्घदानै ॥ १५ ॥ इत्थमष्ट दलं पद्मं । पूरये दर्हदादिभिः । स्वाहांतै प्रणवाद्यश्च । पदैर्विघ्न निवृत्तये ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं असिआउसा सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्र तपसेभ्यो ह्रीं श्रीं अर्हं परमेष्टिन परमनाथ परमदेवाधिदेव परमार्हन् परमानंत चतुष्टय । परमात्मने तुभ्यं नमः ॥ (इति मूलमंत्रः) ॥ इति सिद्धचक्र प्रथमवलय मूलपूजा विधि ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ द्वितीय वलय पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम वलयमें एक मध्य, चार दिश, चार विदिश, एवं अष्टदल कमलके आकार नवकोठा मंडलके मध्यभागमें होय । उनोंकी पूर्वोक्त प्रकार पूजा करे ॥ (पीछे) दूसरा वलयमें चूडीके आकार १६ कोठा होय । (जिसमें) एकेक कोठाके अनंतर आठ कोठामें, अवर्गादि आठ वर्ग स्थापन करे । (और) एकेक कोठा बीचमें खाली रहा है (उसमें) अनाहत पद (ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं) ऐसा पदस्थापन करै ॥ (पीछे) एक रकेबीमें मिश्री लवंग (तथा) एक रकेबीमें मोटी दाखां लेके खडा रहे । अनाहत पदमें मिश्री. लवंग, चढावे ॥ और आठ वर्गमें दाषा चढावे ॥ (यथा) ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॥ मिश्री लवंग चढावे ॥ १ ॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः ॐ ह्रीं स्वर वर्गाय नमः ॥

(इहां) १६ दाख चढावै ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं ॥ मिश्री लवंग ॥ ३ ॥ क ख ग घ ङ । ॐ ह्रीँ व्यंजन कवर्गायैनमः ॥ १६ ॥ दाखच० ॥ ४॥ ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं ॥ ५ ॥ चछजझञ । ॐ ह्रीँ चवर्गायैनमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं ॥ ७ ॥ टठडढण । ॐ ह्रीँ टवर्गायैनमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं ॥ ९ ॥ तथदधन । ॐ ह्रीँ तवर्गायैनम ॥ १० ॥ ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं ॥ ११ ॥ पफबभम । ॐ ह्रीँ पवर्गायैनमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं ॥ १३ ॥ यरलव । ॐ ह्रीँ यवर्गायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताणं ॥ १५ ॥ शषसह । ॐ ह्रीँ शवर्गायैनमः ॥ १६ ॥ पहला अवर्गसें, पवर्गतक, वर्गदीठ १६ सोले दाख चढावै ॥ सब ९६ द्राख (और) यरलव १ । शषसह २ । यह दो वर्गमें ६४ द्राख चढावै ॥ ❋॥ इति दूसरा वलय पूजनविधिः ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ अब (तीसरा वलयमें) चार दिश, चार विदिशमें आठ परमेष्टी, पद स्थापन निमत्त आठ कोठा करै ॥ इस आठ कोठाके वीच वीचमें वलाका तीन तीन देवे ॥ तीनुं वलाकामें २४ खाना हुवै ॥ एकेक खानेमें दो दोय लब्धि पद स्थापन करनेसें । चोवीस घरमें ४८ लब्धिपद स्थापन पूजन करना॥

॥ ❋ ॥ अथ लब्धिपद पूजन विधि ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ आठ परमेष्टी पदोंमें । ॐ ह्रीँ परमेष्टिने नमः स्वाहा ॥ ऐसा ८ वेर कहके ८बीजोरा चढावै (और) लब्धि पदका नाम बोलके, खारकां ४८ चढावै ॥ (यथा) ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो जिणाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो ओहि जिणाणं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो परमोहि जिणाणं ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो सव्वोहि जिणाणं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो अणंतोहि जिणाणं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो कुठ्ठबुद्धीणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो वीयबुद्धीणं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो पयाणुसारीणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो आसीविसाणं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो दिठ्ठी विसाणं ॥ १० ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो संभिन्नसोयाणं ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो सयंसंबुद्धाणं ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो पत्तेय बुद्धाणं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो वोहि बुद्धाणं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ णमो उज्जुमईणं ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हँ

णमो विउव्वमईणं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदश पुव्वीणं ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अठंग निमत्त कुशलाणं ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वण इड्ढिपत्ताणं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारण लब्धीणं ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णासमणाणं ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरासवेणं ॥ २५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिया सवाणं ॥ २६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुआसवाणं ॥ २७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियासवाणं ॥ २८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायणाणं ॥ २९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो भगवया महइ महावीर वद्धमाण बुद्धरिसीणं ॥ ३० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं ॥ ३१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसियाणं ॥ ३२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं ॥ ३३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं ॥ ३४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं ॥ ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं ॥ ३६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं ॥ ३७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं ॥ ३८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परिक्कमाणं ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुण बंभयारीणं ॥ ॥ ४० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसही पत्ताणं ॥ ४१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेलोसही पत्ताणं ॥ ४२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसही पत्ताणं ॥ ४३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसही पत्ताणं ॥ ४४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसही पत्ताणं ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं ॥ ४६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वयण बलीणं ॥ ४७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं॥४८॥ ॐ ह्रीं अर्हं अष्टचत्वारिंशल्लब्धि पदेभ्योनमः ॥ ❀ ॥ इसीतरे लब्धिपदका नाम बोल २ के तीजे चौथे पांचमे वलयमें खारकां सब ४८ चढावे ॥ (पीछे) मंडलजीके गलेके स्थानके ह्रीं कारजी स्थापन किया है (जहांसें) साढातीन वलाका. मंडलजीके चौतरफ देके नीचे (क्रों) ऐसा अक्षर लिखा है (जिसके) प्रथम वलयमें. आठे दिशाये, आठ गुरु पादुका स्थापन करके ८ दाडमफल चढावे ॥ (यथा) ॐ ह्रीं अर्हत् पादुकाभ्योनमः ॥ १ ॥ (दाडम चढावे) ॥ ॐ ह्रीं सिद्ध पादुकाभ्योनमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं आचार्य पादुका

भ्योनमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं गुरुपाडुकाभ्योनमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं परमगुरु पाडु काभ्योनमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं अदृष्टगुरु पाडुकाभ्योनमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अनंत गुरुपाडुकाभ्योनमः ॥७॥ ॐ ह्रीं अनंतानंत गुरुपाडुकाभ्योनमः ॥८॥ ॐ ह्रीं श्रीअष्टगुरु पाडुकाभ्योनमः स्वाहा ॥ इसीतरें छठावलयमे ८ दाख्म चढावे ॥ (पीछे) सातमा वलयमें आठे दिशायें । जयादिक ८ देवीकों स्थापन कर के ।८नारंगी चढावे ॥(यथा) ॐ ह्रीं जयायैनमः स्वाहा ॥१॥ ॐ ह्रीं जंभायै नमः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं विजयायैनमः स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं थंभायैनमः स्वाहा ॥४॥ ॐ ह्रीं जयंत्यैनमः स्वाहा॥५॥ ॐ ह्रीं मोहायै नमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अपराजितायैनमःस्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं अंधायै नमःस्वाहा ॥८॥ (ऐसें) सातमा वलयमें८ नारंगी चढावे ॥ ❋ ॥ (पीछे) आठमा वलयमें । १६ विद्या देव्याकों स्थापन करके चांदीका वरग लगाई नई १६ सुपारयां चढावे ॥ (यथा) ॐ ह्रीं रोहएयैनमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं प्रज्ञसैनमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं वज्रशृं खला यैनमः ॥ ३ ॐ ह्रीं वज्रांकुशायैनमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं चक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं पुरष दत्तायैनमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं काल्यैनमः ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं महाका ल्यैनमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं गौर्यैनमः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं गंधार्य्यैनमः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं सर्वास्त्र महाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं मानव्यैनमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं वैरोटयायैनमः ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अच्चुप्तायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं मानस्यैनमः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं महामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ (इसीतरें) आठमा वलयमें चारुं तरफ १६ विद्यादेवीकों १६ सुपारी चढावे ॥ ❋ ॥ (पीछे) नवमा वलयके वामवासे । २४ शाशनदेव्यांकों स्थापन करके २४ सुपारयां चढावे॥ (यथा) ॥ ॐ चक्रेश्वर्यैनमः ॥ १ ॥ ॐ अजितवलायैनमः ॥ २ ॥ ॐ डुरि तार्यैनमः ॥ ३ ॥ ॐ काल्यैनमः ॥४॥ ॐ महाकाल्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐ श्या मायैनमः ॥ ६ ॥ ॐ शांतायैनमः ॥ ७ ॥ ॐ भृकुटियैनमः ॥ ८ ॥ ॐ सुतार कायनमः ॥ ९ ॥ ॐ अशोकायैनमः ॥ १० ॥ ॐ मानव्यैनमः ॥ ११ ॥ ॐ चंडायैनमः ॥ १२ ॥ ॐ विदितायैनमः ॥ १३ ॥ ॐ अंकुशायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ कंदर्पायैनमः ॥ १५ ॥ ॐ निर्वाएयैनमः ॥ १६ ॥ ॐ वलायैनमः ॥ १७ ॥ ॐ धारएयैनमः ॥ १८ ॥ ॐ धरणप्रियायैनमः ॥ १९ ॥ ॐ नरदत्तायैनमः ॥२०॥

ॐ गांधार्येनमः ॥ २१ ॥ ॐ अंबिकायैनमः ॥ २२ ॥ ॐ पद्मावत्यैनमः ॥२३॥ ॐ सिद्धायिकायैनमः ॥ २४ ॥ इसीतरे वामपासे ॥ २४ देव्यांकी स्थापना करे ॥ (पीछे) दक्षिणपासे; २४ यक्ष राजकी स्थापना करके २४ सुपारी चढावे ॥ (यथा) ॥ ॐ ब्रह्मशांतयेनमः ॥ २४ ॥ ॐ पार्श्वायैनमः ॥ २३ ॥ ॐ गोमेधायनमः ॥ २२ ॥ ॐ भृगुटयेनमः ॥ २१ ॥ ॐ वरुणायनमः ॥ २० ॥ ॐ कुबेरायनमः ॥ १२ ॥ ॐ यक्षराजायनमः ॥ १८ ॥ ॐ गंधर्वायनः ॥ १७ ॥ ॐ गरुडायनमः ॥ १६ ॥ ॐ किन्नरायनमः १५ ॥ ॐ पातालायनमः॥ ॥ १४ ॥ ॐ षण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ ॐ कुमारायनमः ॥ १२ ॥ ॐ यक्षराजायनमः ॥ ११ ॥ ॐ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ ॐ अजितायनमः ॥ ९ ॥ ॐ विजयायनमः ॥ ९ ॥ ॐ मातंगायनमः ॥ ७ ॥ ॐ कुसुमायनमः ॥ ६ ॥ ॐ तुंबुरवेनमः ॥ ५ ॥ ॐ यक्षनायकायनमः ॥ ४ ॥ ॐ त्रिमुखायनमः ॥ ३ ॥ ॐ महायक्षायनमः ॥ २ ॥ ॐ गोमुखायनमः ॥ १ ॥ इसी तरे नवमा वलयके दाहिणेंपासे २४ यक्षकी थापना करके २४ सुपारी चढावे ॥ (पीछे) चारे दिशायें ४ द्वारपालकी स्थापना करके । पीला वस्त्र वाकुल चढावे ॥ (यथा) ॐ कुमुदायनमः ॥ १ ॥ (पूर्वदिशि) ॥ ॐ अंजनायनमः ॥ दक्षिण० ॥ २ ॥ ॐ वामनायनमः ॥ (पश्चिम) ॥ ३ ॥ ॐ पुष्पदंतायनमः ॥ ४ ॥ उत्तरदिशि ॥ ❀ ॥ (पीछे) चार विदिशकीतरफ चार वीर पदे कृष्ण वस्त्रवाकुल चढावे ॥ (यथा) ॐ माणभद्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ पूर्णभद्रायनमः ॥ २ ॥ ॐ कपिलायनमः ॥ ३ ॥ ॐ पिंगलायनमः ॥ ४ ॥ ॥ ❀ ॥ इसी तरे दशमा वलयमें आठुं दिशायें । ४ द्वारपाल । ४ वीर स्थापन करे ॥ (पीछे) पूर्ण कलशके आकार, ऊपरसें किया हुवा, सिद्धचक्रजीके गलेके स्थानकः नवनिधान पदे, नव सोनें चांदी आदिकका कलशामें यथाशक्ति रोकनाणो घालके स्थापन करे ॥ (यथा) ॐ नैसर्प्पिकायनमः ॥ १ ॥ ॐ पांडुकायनमः ॥ २ ॥ ॐ पिंगलायनमः ॥ ३ ॥ ॐ सर्वरत्नायनमः ॥ ४ ॥ ॐ महापद्मायनमः ॥ ५ ॥ ॐ कालायनमः ॥ ६ ॥ ॐ महाकालायनमः ॥ ७ ॥ ॐ माणवायनमः ॥ ८ ॥ ॐ शंखायनमः ॥ ९ ॥ इसीतरे मुखस्थानके नवनिधानपदे ९ कलश स्थापन करे ॥ ❀ ॥ (पीछे) को

हल्लोफल हाथमें लेके । दक्षिण नेत्रके बरावर पासमें वंगलीका आकार किया है ॥ (जहां) ॐ ह्रीं विमल स्वामिनेनमः ॥ १ ॥ ऐसा कहके चढावे । (फेर) कोहल्लोफल हाथमें लेके वामनेत्रपासे वंगलीमें (ॐ क्षेत्रपालायनमः) ॥ ऐसा वोलके चढावे ॥ २ ॥ (पीछे) तीसरो कोहलोफल हाथमें लेके, अधःपींदीके दहिणेंपासे वंगलीमें (ॐ चक्रेश्वर्यैनमः ॥) ऐसा बोलके चढावे ॥ ३ ॥ (पीछे) चोथो कोहल्लोफल हाथमें लेके नीचे पींदाकै वामपासे वंगलीमें (ॐ अप्रसिद्ध सिद्धचक्राधिष्टायकायनमः) ऐसा बोलके चढावे ॥ ४ ॥ (पीछे) दशोदिशायें इंद्रादिक दशादिग्पालकों स्थापन करे (वनसकेतो) अपना २ वर्ण मुजब वस्त्र. नेवेद्य पुष्पादि द्रव्य चढावे (अथवा) सर्वकों एक द्रव्य सर्व समान चढावे (यथा) ॐ इंद्रायनमः ॥ १ ॥ कनकवर्ण । चंदन, केशर, चंपो, द्राख, पीलोवस्त्र, पान, सुपारी, रोकनाणो, आदि सर्व द्रव्य चढावे ❋ ॥ १ ॥ (अग्निकूणे) ॐ अग्नयेनमः ॥ २ ॥ रक्तवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ २ ॥ (दक्षिणदिशि) ॐ यमायनमः ॥ ३ ॥ कालेवर्णका वस्त्रादि द्रव्य चढावै ॥ ३ ॥ (नेरुतकूणे) ॐ नैरुतायनमः ॥ ४ ॥ धूसरवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ (पश्चिमदिशि) ॐ वरुणायनमः ॥ धूसरवर्णका सब द्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ (वायवकूणे) ॐ वायवेनमः ॥ ६ ॥ नीलवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ (उत्तरदिशि) ॐ कुवेरायनमः ॥ ७ ॥ सपेद वर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ (ईशानकूणे) ॐ ईशानायनमः ॥ ८ ॥ सपेद वर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ (अधोदिशिः) ॐ नागायनमः ॥ ९ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ (ऊर्ध्वदिशि) मस्तके । ॐ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढावे ॥ इसीतरे दशदिग्पालको स्थापन पूजन करै ॥ ❋ ॥ (पीछे) नीचे पींदी स्थानकके बीचमें ९ कोठा किया हुवा है (जहां) नवग्रहकी स्थापना पूजा करै ॥ (यथा) ॐ सूर्यायनमः ॥ १ ॥ लालवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ १ ॥ ॐ सोमायनमः ॥ सपेदवर्ण वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ २ ॥ ॐ भोमायनमः ॥ लाल रंग वस्त्रादिक द्रव्य० ॥ ३ ॥ ॐ बुधायनमः ॥ ४ ॥

मुंगे रंगका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ॐ वृहस्पतयेनमः॥ पीलेवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ ॐ शुक्रायनमः ॥ सपेदवर्ण नांदोल वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ ॐ शनिश्चरायनमः नीलेरंगका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ॐ राहवेनमः ॥ काले रंगका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ॐ केतवेनमः ॥ छींट रंग वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ इसीतरे नीचे नवग्रहकी स्थापना करे (पीछे) स्नात्र, नवपदजीकी पूजा करायके । आरती नवपदजीकी करे पीछे नवपदको चैत्यवंदन करे ॥ उप्पन्नसन्नाण० (तथा) जोधुरि श्रीअरिहंत मूलदढ पीठपइडियो । सिद्ध सूरि उवझाय साहु चिहुं साह गराढिज । दंशण नाण चरित्त तव पडिशाहे सुंदरू ॥ तत्तक्खर सिरि वग्ग लद्धि गुरु पयद लम्बरू । दिशिवाल जक्ख जक्खणीपमुह सुरकुशमेहि अलंकियो । सो सिद्धिचक्क गुरु कप्पतरु अह्ममन वंछिय दियउ ॥ १ ॥ (पीछे) । जंकिंचि णमोत्थुणं० । नमोर्हत सिद्धा० कहके । नवपदजीको स्तवन ॥ उप्पन्न सन्नाण महोमयाणं० आदिस्तवन कहके । जयवीयराय अनत्थू कहके १ नव० कावसग्ग करे ॥ नवपद स्तुति कहे ॥ (पीछे) गुरूकेपास आयके वाशक्षेप लेके ग्यानपूजा, गुरूपूजा करे ॥ धूप खेवे । रोकनाणो चढावे ॥ (पीछे) यथाशक्ति साधर्मी वात्सल्य करे॥इति नवपद मंडल पूजन विधिः ॥ ॥ अब जाणना चाहिये (कि) जब कोई श्रीमंत उलीकी तपस्या करे तब तो छए महिने मंडल पूजा विस्तार विधीसाथ कराता रहे ॥ और तपस्या ४ ॥ साढाचार वरसमें पूरण होय (तब) वडाउछवकेसाथ मंडल रचना पूजा करे ॥ उद्यापन करे ॥ संपूर्ण देवखाते, ग्यानखाते, गुरुखातेका उपगरण नव नव करावके । प्रथम धर्मशालामें सुशोभित करे । दशपनरेदिन जलजात्रादि अनेक तरेका उछव करे ॥ (पीछे) देवका देवखाते देवे । ग्यानका ग्यानखाते । गुरूका गुरुखाते । उपगरणादि द्रव्य देवे ॥ (और) रूढीरहित किया भावसें संपूर्ण करे । द्रव्यपूजा अपनी शक्ति मुजब करे ॥ (और) पंचायती संघ तरफसें मंगलीक अर्थे छए महिने मंडल रचना नवपद पूजा अवश्य पूर्वोक्त विधिसहित करता रहे ॥ उली करनेका विधि (तथा) नवपद पूजा, स्तवन, थुई, संपूर्ण, रत्नसागरका प्रथम भागमें

लिखा हुवा है (इससें) इहां न लिखा है । उसमुजब करै, करावें ॥ ॥ ❋ ॥ इति विशेष विधिः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ भगवंतके (९) अंग पूजन दूहा ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जलभरी संपुट पत्रनां । युगलक नरपूजंत । रिषभ चरण अंगूठडे । दायक भवजल अंत ॥ १ ॥ जानुं बलें काउसग रह्या । विचरया देश विदेश । खडा खडा केवल लह्या । पूजो जानु नरेश ॥ २ ॥ लोकांतिक बचनें करी । वरस्या वरशी दान । करकंडे प्रभु पूजनां । पूजो भवि बहु मांन ॥ ३ ॥ मानगयुं दोअंशथी । देखी वीर्य अनन्त । भुजाबलें भवजल तरया । पूजो खंध महन्त ॥ ४ ॥ रत्नत्रय गुण ऊजली । सकल सुगुण विशराम । नाभि कमलनी पूजना । करतां अविचल धाम ॥ ५ ॥ हृदय कमल उपशम बलें । बाल्यो रागनें रोष । हेम दहै वन खंडनें । हृदय तिल कसंतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देई देशना । कंठ विबर वर तूल । मधुर धुनी सुर नर सुणें । तिम गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तीर्थंकर पद पुन्य थी । त्रिभुवन जन सेवंत । त्रिभुवन तिलक समा प्रभु । भाल तिलक जयवंत ॥ ८ ॥ सिद्ध शिला गुण ऊजली । लोकांतिक भगवंत । वसियातिण कारण सही । शिर संख्या पूजंत ॥ ९ ॥ उपदेशक नव तत्वना । तिम नव अंग जिणंद । पूजो बहुविध भाव थी । कहे सहु वीर मुणिंद ॥ १० ॥

॥ ❋ ॥ अथ शिक्षाकारक दूहा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जीवडा जिनवर पूजिइं । पूजाना फल जोय । राज नमें परजा नमें । आंण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंभे बांध्यो जल रहे । जल विना कुंभ न होय । ज्ञानें बांध्यो मन रहे । गुरु विना ज्ञान न होय ॥ १ ॥ गुरु दीपक गुरु देवता । गुरु विन घोर अंधार । जे गुरु वांणी वेगला । रड वडिया संसार । ॥ १ ॥ भावे जिनवर पूजियें । भावे दीजे दान । भावे भावना भावियें । भावे केवल न्यान ॥ १ ॥ प्रभू नामकी उषधी । शुद्ध चित्तसें खाय । रोग पीडा व्यापे नही । महा दोष मिट जाय ॥ १ ॥ पांच कोडीनें फूलडे । पाम्या देश अढार । कुमार पाल राजा थयो । वरत्यो जैजैकार ॥ १ ॥ मनमोहन पारस मिल्यो । मोहन गुण सुखकंद । मोहनी मू

रत देखके । मोहन चित आनन्द ॥ १ ॥ पारश प्रभुके नामसें । सहु संकटमिटजाय । ईत उपद्रव भय टले । मोहन गुण प्रगटाय ॥२॥ इति दूहा ॥ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवपद पूजा लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम अरिहंत पदपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ परम मंत्र प्रणमी करी । तास धरी उर ध्यान ॥ अरिहंत पदपूजा करो । निज निज शक्ति प्रमाण ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ काव्य ॥ जियंतरंगारिजणे सु नाणे । सप्पाडि हेराइ सयप्पहाणे । संदेह संदोह रयं हरंते । झाएहनिच्चंपि जिणे रिहंते ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ उप्पन्न सन्नाणमहोमयाणं । सप्पाडिहेरासण संठिआणं ॥ सद्देसणाणं दियसज्जणाणं । णमो णमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंत संत प्रमोद प्रधानं । प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय ॥ थया जेहना ध्यानथी सौख्यभाजा । सदा सिद्ध चक्राय श्रीपाल राजा ॥ २ ॥ कर्या कर्म्म दुर्मर्म्म चकचूर जेणें । भला भव्य नवपद ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना भव्य भावें त्रिकालें । सदा वासियो आतमा तेण कालें ॥ ३ ॥ जिके तीर्थकर कर्म उदयें करीनें । दिये देशना भव्यनें हित धरीनें ॥ सदा आठ महापाडिहारे समेता । सुरेशें नरेशें स्तव्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ कर्या घातिया कर्म चारे अलग्गा । भवोपग्रही चार छे जे विलग्गा ॥ जगत् पंचकल्याणके सौख्य पामें । नमो तेह तीर्थकरा मोक्षकामें ॥ ५ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ त्रीजे भव विधिसें करी । वीश स्थानक तप कारिनें रे ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधियुं । समकित शुद्ध मन धरिनेंरे ॥ १ ॥ अरिहंत पद नित वंदियें । करम कठिन जिम छंमीये रे ॥ (ए आंकणी) ॥ जनम कल्याणक्ने दिनें । नारकी सुखिया थावेरे ॥ मति श्रुत अवधि विराजता । जसु उपम कोइ नावे रे ॥ अ० ॥ २ ॥ दीक्षा लीधी शुभ मनें । मन पर्यव आदरियुं रे ॥ तप करि कर्म खपाइनें । ततखिण केवल वरियुं रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ चउत्रीश अतिशय शोभता । वाणी गुण पेंतीशो रे ॥ अठदश दोष रहित थइ, पूरे संघजगीसो रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ तन मन वयण लगाइने । अरिहंत पद आराधे रे ॥ ते नर निश्चयथी सही । अरिहंत पदवी साधे रे ॥ अ० ॥ ५ ॥

॥ ❋ ॥ श्लोक ॥ अथाष्टदलमध्याब्ज । कर्णिकायां जिनेश्वरान् ॥ आवि र्भूत लसद्बोधा । नावृतः स्थापयाम्यहम् ॥ १ ॥ निःशेष दोषेंधनधूमकेतु नपार संसार समुद्र सेतून् ॥ यजे समस्ता तिशयैक हेतून् । श्रीमज्जिनानं बुजकर्णिकायाम् ॥ २ ॥ (ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः) ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ द्वितीय सिद्धपद पूजा ॥ ❋ ॥

॥ दोहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी । कीजें दिल खुशियाल ॥ अशुभ कर्म दूरें टले । फले मनोरथमाल ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ दुठ्ठ कम्मावरण प्पमुक्के । अणंतनाणाइ सिरी चनक्के । समग्ग लोग ग्गपयप्पसिद्धे । झाएहनिच्चंपि मणं मि सिद्धे ॥ २ ॥❋॥ ॥❋॥

॥ ❋ ॥ सिद्धाणमाणंदरमालयाणं । णमो णमो णंत चनक्कयाणं ॥ सम्मग्ग कम्मक्खय कारयाणं । जम्मं जरा दुक्ख निवारयाणं ॥ १ ॥ करी आठ कर्म क्षयें पार पाम्या । जरा जन्म मरणादि भय जेण वाम्या ॥ निरावरण जे आत्मरूपें प्रसिद्धा । थया पार पामी सदा सिद्ध बुद्धा ॥ त्रिभा गोनदेहा वगाहात्मदेशा । रह्या ज्ञानमय जात वर्णादि लेशा ॥ सदानंत सौ ख्याश्रिता ज्योतिरूपा । अनाबाध अपुनर्भवादि स्वरूपा ॥ १ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (ढाल) ॥ सकल करमनो क्षय करी । सिद्ध अवस्था पाईरे ॥ गुण इगतीस विराजता । उपम जसनही कांई रे ॥ ६ ॥ मन शुद्ध सिद्ध पद वंदियें (ए आंकणी) जनम मरण दुःख निर्गम्या । शुद्धातम चिदरू पी रे ॥ अनंत चतुष्टय धारता । अव्याबाध अरूपी रे ॥ म० ॥ ७ ॥ जास ध्यान जोगीसरू । करे अजप्पा जापें रे ॥ भव भव संच्यां जीवने । कठिण करम तें कापें रे ॥ म० ॥ ८ ॥ ध्यान धरंतां सिद्धनुं । पूजंतां मन रागें रे ॥ अविचल पदवी पाईयें । कह्युं जिनवर वरु भागें रे ॥ म० ॥ ९ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्लोक ॥ तस्य पूर्वदले सिद्धान् । सम्यक्त्वादि गुणात्मकान् ॥ निःश्रेयसपदं प्राप्तान् । विदधे भक्ति निर्भरः ॥ १ ॥ तत्पूर्वपत्रे परितः प्रणष्ट दुष्टाष्टकर्मानधिगम्य शुद्धिम् ॥ प्राप्तान्नरान् सिद्धिमनंतबोधान् । सिद्धान्यजे शांति करा न्नराणाम् ॥ (ॐ ह्रीं सिद्धेभ्योनमः) ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ तृतीय आचार्यपद पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ ॥ हिव आचारज पद तणी । पूजा करो विशेष ॥ मोह तिमिर दूरें हरे । सूझे भाव अशेष ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ नतं सुहंदेहि पिया न माया । जंदिंति जीवाणिह सूरि पाया । तुम्हा हु तेचेव सया महेह । जंमुरक सुरकाइं लहुं लहेह ॥ २ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सूरीण दूरीकय कुग्गहाणं । णमो णमो सूरसम प्पहाणं ॥ सद्देशणा दाण समायराणं । अखंम छत्तीस गुणायराणं ॥ १ ॥ नमुं सूरिराजा सदा तत्त्वताजा । जिनेंद्रा गमें प्रौढ साम्राज्यभाजा । षट्वर्ग व र्गितगुणें शोभमाना । पंचाचारनें पालवे सावधाना ॥ भवि प्राणिनें देशना देशकाले । सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आले ॥ जिके शासनाधार दिग्दंति कल्पा । जगत्ते चिरंजीवजो शुद्धजल्पा ॥ १ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (ढाल) ॥ गुणछत्तीशे दीपता । पाले पंच आचारो रे ॥ जिन मारग साचो कहे । युगप्रधान जयकारो रे ॥ १० ॥ आचारिज पद वंदीयें । (आंकणी) ॥ सारण वारण चोयणा । पडिचोयण चो शिक्षा रे ॥ भव्यजी व समझायवा । देवानें ते दिक्षा रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ जिनवर सूरज आथ म्या । परतिख दीपक जेहा रे ॥ सकल भाव परगट करे । ज्ञानमयी जसु दे हा रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ विधिशुं पूजा साचवे । ध्यावे निज हित जाणी रे ॥ पावे लघुतर कालमां । आचारज पद प्राणी रे ॥ १३ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (श्लोक) ॥ स्थापयामि ततःसूरीन् । दक्षिणेऽस्मिन् दलेऽमले ॥ चरतः पंचधाचारं । षट्त्रिंशत् सद्गुणैर्युतान् ॥ १ ॥ सूरीन् सदाचार रतांश्च सारा । नाचारयंतः स्वपरान्यथेष्टम् ॥ भयोपसर्गेक निवारणार्थं । मभ्यर्चया म्य क्षत गंध धूपैः ॥ २ ॥ (ॐ ह्रीं सूरिभ्योनमः) ॥ इति ॥ ३ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ चतुर्थ उपाध्याय पद पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ गुण अनेक जग जेहना । सुंदर शोभित गात्र ॥ उव झाया पद अरचियें । अनुभव रसनुं पात्र ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ सुत्तत्थ संवेग मयेसुएणं । संनीर खीरामय विस्सुएणं । पीणंति जेते उ वझायराये । झाएह निच्चंपि कयप्पसाए ॥ ४ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ छंद ॥ सुत्तत्थवित्थारण तप्पराणं । णमो णमो वायग कुंजराणं ॥ गणस्स संधारण सायराणं । सव्व प्पणा वज्जिय मच्छराणं ॥ १ ॥ नही सूरि पण सूरिगणनें सहाया, नमुं वाचका त्यक्त मदमोह माया ॥ वळी द्वादशांगादि सूत्रार्थ दानें, जिके सावधानें निरुद्धाभिमानें ॥ धरे पंचनें वर्गे वर्गित गुणौघाः । प्रवादि द्विपोच्छेदने तुल्य सिंघाः ॥ गुणी गच्छसंधारणे स्तंभभूता । उपाध्याय ते वंदियें चितप्रभूता ॥ १ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (ढाळ) ॥ द्वादशांगी वाणी वदे । सूत्र अरथ विस्तारेरे ॥ पंचवरग गुण जेहना । सुमति गुपति नित धारेरे ॥ १४ ॥ श्रीउवझाया वंदियें (ए आंकणी) ॥ दायक आगम वाचना, भेद भाव युत सारीरे ॥ मूरखकूं पंडित करे, जगतजंतु हितकारीरे ॥ १५ ॥श्री०॥ शीतळचंद किरण समी, वाणी जेहनी कहियेंरे ॥ ते उवझाया पूजतां, अविचल सुखभा लहीयेंरे ॥ १६ ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्लोक ॥ द्वादशांगश्रुताधारान् ॥ शास्त्राध्ययन तत्परान् । निवेशयाम्युपाध्यायान् । पवित्रे पश्चिमे दले ॥ १ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशं प्रशांत्यै । पठंति येऽन्यानपि पाठयंति ॥ अध्यापकांस्तानपराब्जपत्रे । स्थिता पवित्रान्परिपूजयामि ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ उपाध्यायेभ्योनमः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ पंचम साधुपदपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ मोक्षमारग साधन भणी, सावधान थया जेह ॥ ते मुनि वंदतां । निर्मळ थाये देह ॥ १ ॥ ❋ ॥

॥ खंतेय दंतेय सुगुत्ति गुत्ते । मुत्ते पसंते गुण जोग जुत्ते । गयप्पमाए हय मोह माए । झाएह निच्चं मुणि राय पाए ॥ ५ ॥❋॥ ॥❋॥

॥ ❋ ॥ छंद ॥ साहूण संसाहिय संजमाणं । णमो णमो सुद्ध दयादमाणं ॥ तिगुत्ति गुत्ताण समाहियाणं । मुणीण माणंद पयठियाणं ॥ १ ॥ करे सेवना सूरि वायग गणीनी । करूं वर्णना तेहनीशी मुणीनी ॥ समेता सदा पंच समिति त्रिगुप्ता । त्रिगुप्तें नही काम भोगेषु लिप्ता ॥ वळी बाह्य अभ्यंतरं ग्रंथि टाळी । हुये मुक्तिनें योग्य चारित्र पाळी ॥ शुभाष्टांग योगें रमे चित्त वाळी । नमूं साधुनें तेह निज पाप टाळी ॥ १ ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) सकल विषय विष वारिनें, आतमध्यानें रातारे ॥ उपशम रसमां झीलता । निज गुण ज्ञानें मातारे ॥ १७ ॥ हित धरि मुनि पद वंदियें (ए आंकणी) रत्नत्रयी आराधतां । षट्काया प्रतिपालेरे ॥ पंचेंद्री जीपे सदा । जिन मारग अजुवालेरे ॥ हि० ॥ १८ ॥ गुण सत्तावीश अलंकरया । पंच महाव्रत धारीरे ॥ द्वादशविध तप आदरे । चिदानंद सुखकारीरे ॥ हि० ॥ १९ ॥ नवविध ब्रह्मचरिज धरे । करम महा जट जीत्यारे ॥ एहवा मुनि ध्यावे सदा । ते नर जगत विदीतारे ॥ हि० ॥ २० ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ व्याख्यादिकर्म कुर्वाणान् । शुद्धध्यानैक मानसान् ॥ उदकपत्रगतान्नित्यं, साधून्वंदामि सुव्रतान् ॥ १ ॥ वैराग्यमंतर्वचसि प्रशिक्षं सत्यं तपो द्वादशधा शरीरे ॥ येषामुदकपत्र गतान् पवित्रान् । साधून् सदा तान् परिपूजयामि ॥ ॐ ह्रीं सर्व साधुभ्योनमः ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ षष्टमदर्शन पदपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ जिनवर भाषित शुद्धनय, तत्त्व तणी परतीत ॥ ते सम्यग्दर्शन सदा । आदरियें शुभरीत ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जं दव्वछकाइ सु सद्दहाणं । तं दंसणं सव्व गुणप्पहाणं । कुग्गाहवाही उवयंति जेण । जहा विसुद्धेण रसायणेण ॥ ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ छंद ॥ जिणुत्ततत्ते रुइ लक्खणस्स । णमो णमो निम्मल दंसणस्स ॥ मिछत्त नासाइ समुग्गमस्स । मूलस्स सद्धम्म महाद्दुमस्स ॥ १ ॥ विपर्यासहठो वासनारूप मिथ्या । टले जे अनादी अछे जे कुपथ्या ॥ जिनोक्ते हुवे सहजथी सुद्धयानं । कहियें दर्शनं तेह परमं निधानं ॥ विना जेहथी ज्ञानमज्ञानरूपं । चारित्रं विचित्रं भवारण्य कूपं ॥ प्रकृति सात उपशमक्षयें तेह होवे । तिहां आपरूपं सदा आप जोवे ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनी । सद्दहणा चित्त धरियेंरे ॥ सात प्रकृतिनो क्षय करी । क्षायिक समकित वरियेंरे ॥ २१ ॥ दरशण पद नित वंदियें (ए आंकणी) इण विण ज्ञान निःफल कह्युं । चारित्र निःफल जावेरे ॥ शिव सुख ए विण नां मीले बहु संसारी थायेरे ॥ द० ॥ २ ॥ मनसाहि

भेदें शोभतुं । अजरामर फल दातारे ॥ जे नर पूजे भावशुं । ते पामें सुख शातारे । दरशण पद० ॥ २३ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्लोक ॥ जिनेंद्रोक्तमतं श्रद्धा । लक्षणं दर्शनंयजे ॥ मिथ्यात्वमथनं शुद्धं । न्यस्तमीशानसद्दले ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ इति ॥६॥

॥ ❋ ॥ अथ सप्तम ज्ञान पद पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ सप्तम पद श्री ज्ञाननो । सिद्धचक्रतप मांहि ॥ आराधीजें शुभ मनें । दिन दिन अधिक उछाहि ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ नाणं पहाणं नय सिद्ध चक्कं । तत्तावबोहिक्क मयं पसिद्धं । धरेह चित्तावसहे फुरंतं । माणक्क दीवुव्व तमो हरंतं ॥ ७ ॥❋॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ छंद ॥ अन्नाण संमोह तमोहरस्स । णमो णमो नाण दिवायरस्स॥ पंचप्पयारस्सु वगारगस्स । सत्ताण सव्वत्थ पया सगस्स ॥ १ ॥ हुवे जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधं । यथा वरण नाशे विचित्रं विबोधं ॥ तिणें जाणीयें वस्तु षडद्रव्य भावा । न होवे वितछा निजेछा स्वभावा ॥ हुवे पंच मत्यादि सुज्ञान भेदें । गुरूपासथी योग्यता तेह वेदे ॥ वली ज्ञेय हेया उपादेय रूपें । लहे चित्तमां जेम ध्वांतप्रदीपें ॥ १ ॥

॥ ❋ ॥ (ढाल) भक्ष अभक्ष विचारणा । पेय अपेय निर्धारोरे ॥ कृत्य अकृत्य नें जाणियें । ज्ञान महा जयकारोरे ॥ २४ ॥ ज्ञान निरंतर वंदियें ॥ (ए आंकणी) ॥ ज्ञान विना जयणा नही । जयणा विण नही धर्मोरे ॥ धर्म विना शिव सुख नहीं । ते विण न मिटे भर्मोरे ॥ ज्ञा० ॥ २५ ॥ पांच प्रकार छे जेहना, भेद इकावन तासोरे ॥ जाणीनें पूजे सदा । ते लहे केवल खासोरे ॥ २६ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्लोक ॥ अशेषद्रव्यपर्याय । रूपमेवावभासकम् ॥ ज्ञानमाग्नेयपत्रस्थं । पूजयामि हितावहम् ॥ इति ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ अष्टम चारित्र पद पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ अष्टमपद चारित्रनुं । पूजो धरी उमेद ॥ पूजत अनुभव रस मिले । पातक होय उछेद ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ सुसंवरं मोह निरोह सारं। पंचप्पयारं विगयाइ यारं। मूलोत्तराणेग गुणं पवित्तं । पालेह निचंपिहु सचरित्तं ॥ ८॥❀॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ छंद ॥ आराहियाखंग्यि सक्कियस्स। णमो णमो संयम वीरियस्स ॥ सब्भावणा संग विवड्डियस्स। निव्वाणदाणाइ समुज्जयस्स ॥ १ ॥
वली ज्ञानफल चरण धरियें सुरंगें। निराशंसता द्वाररोध प्रसंगें ॥ भवांभोधिसंतारणे यानतुल्यं। धरुं तेह चारित्र अप्रासमूल्यं ॥ १ ॥ हुवे जास महिमाथकी रंक राजा। वली द्वादशांगी भणी होय ताजा ॥ वली पाप रूपोपि निःपाप थाये। थई सिद्ध ते कर्मनें पार जाये॥ २ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) सर्व विरति देशविरतिथी। अणागार सागारी रे ॥ जयवंतो थावो सदा। ते चारित्र गुण धारी रे॥ २७॥ चारित्रपद नित वंदीयें॥ (ए आंकणी) षट्खंड सुख तजि आदरे। संयमशिव सुखदायी रे ॥ सत्तर भेदें जिन कह्यो। ते आदरियें भाईरे ॥ चा० ॥ २८ ॥ तत्त्वरमण तसु मूल छे। सकल आश्रवनो त्यागी रे॥ विधिसेती पूजन करे । भाव धरी वड्भागी रे॥ चा०॥ २९॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥श्लोक॥ सामायिकादिभिर्भेदे। श्चारित्रं चारुपंचधा ॥ संस्थापयामि पूजार्थं। पत्रे हि नेत्रने क्रमात्॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ सम्यग्चारित्राय नमः॥८॥

॥ ❀ ॥ अथ नवम तपपद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ दोहा ॥ कर्मकाष्ट प्रति जालवा। परतिख अगनिसमान ॥ ते तप पद पूजो सदा। निर्मल धरियें ध्यान ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ बज्झं तहाभ्भिंतर भेयमेयं। कयाइ दुभ्भेय कुकम्मभेयं। दुक्खक्खयत्थंकय पावनासं। तवं तवेहा गमियं निरासं॥ ९ ॥ एयाइं जेकेवि नवप्पयाइं। आराहियंतिठफल प्पयाइं। लहंति ते सुक्ख परंपराणं। सिरि सिरिपाल नरेसरुव्व ॥ १० ॥❀॥ ॥❀॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कम्मद्दुमोन्मूलण कुंजरस्स। णमो णमो तिव्वतवोभरस्स ॥ अणेग लद्धीण निबंधणस्स। दुस्सज्झ अत्थाणय साहणस्स ॥ १ ॥ त्रिकालिकपणें कर्म कषाय टाले। निकाचितपणें बांधियां तेह बाले॥ कह्युं तेह तप बाह्य अभ्यंतर दुभेदें। क्षमा युक्त निर्हेतु दुर्ध्यान छेदे॥ हुवे जास महि

माथकी लब्धि सिद्धि । अवांछकपणे कर्म आवरण शुद्धि । तपो तेह तप जे महानंद हेतें । हुवे सिद्धि सीमंतिनी निज संकेतें ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) निज इछा अवरोधीयें । तेहिज तप जिन जाख्युंरे ॥ बाह्य अभ्यंतर जेदथी । द्वादशजेदें दाख्युंरे ॥ ३० ॥ अनुपम तप पद वंदियें (ए आंकणी) तदजव मोक्ष गामीपणुं । जाणे पण जिन रायारे ॥ तप कीधा अति आकरा । कुत्सित करम खपायारे ॥ अ० ॥ ३१ ॥ करम निकाचित क्षय हुवे । ते तपनें परजावेंरे ॥ लब्धि अठावीश ऊपजे । अष्ट महासिद्धि पावेरे ॥ अ० ३२ ॥ एहवुं तपपद ध्यावतां । पूजंतां चित्त चाहेरे ॥ अक्षयगति निर्मल लहे । सहु योगिंद सराहे रे ॥ अ० ॥ ३३ ॥

॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ द्विधा द्वादशधा जिन्नं । पूते पत्रे तपश्चयं ॥ संस्थापयामि जत्तयात्र । वायव्यां दिशि शर्मदम् ॥ ॐ ह्रीँ सम्यग्तपसे नमः इति ॥ ९ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कलश ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इम नवपद ध्यावे, पर्म आनंद पावे । नव जव शिव जावे, देव नर जव पावे ॥ ज्ञान विमल गुण गावे, सिद्ध चक्र प्रजावे । सहु दुरित शमावे, विश्व जयकार पावे ॥ १ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ ❀॥ अरिहंत सिद्ध आचार्य उवझाय, साधु दंसण नाण ए ॥ चारित्र तप नवपद थकी, इहां सिद्धचक्र प्रमाण ए ॥ १ ॥ श्रीपाल राजा सुक्ख ताजा, लह्या सिद्धचक्र ध्यानसों ॥ जविजन जजो जिन लाज जाणी, हिये आणी जाव सों ॥ २ ॥ इय नवपय सिद्धिं, लद्धि विज्जा समिद्धं । पयडिय सरवग्गं, ह्रीँ तिरेहासमग्गं ॥ दिसिवइ सुरसारं, खोणिपीढावयारं । तिजय विजयचक्कं सिद्धचक्कं नमामि ॥३॥ निःस्वेदत्वादि दिव्या तिशयमयतनून् श्री जिनेंद्रान्सुसिद्धान् । सम्यक्त्वादि प्रकृष्टाष्टगुणगणजृदा, चार सारांश्च सूरीन् ॥ शास्त्राणि प्राणिरक्षा प्रवचनरचना सुंदराण्यादिशंत । स्तत्सिद्ध्यै पाठकानां यतिपति सहितानर्चया म्यर्घदानैः ॥१॥ इत्थमष्टदलं पद्मं । पूरयेदर्हदादिजिः ॥ गहांतैः प्रणवाद्यैश्च । पदैर्विघ्न निवृत्तये ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ पंचपरमेष्टिने सम्यग्दर्शनादिचतुरन्वितेभ्यो नमः ॥ ❀ ॥ इति श्री नवपदस्तुतिः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ नवपद आरती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ए नवपद प्राणी नित ध्यावो । पंचम गत सासय सुख पावो ॥ (ए आंकणी) धुरथी अरिहंतपद ध्याईजें । थिरतायें श्री सिद्ध थुणिजें ॥ ए० ॥ १ ॥ आचारज तीजें आराधो । सूधे मन जिन कारिज साधो ॥ ए० ॥ २ ॥ उवझाया पंचम अणगारा । प्रणमंतां पामें भवपारा ॥ ए० ॥ ३ ॥ दंसण नाण चरण भल दीपे । तप तपतां क्रम अरिनें जीपे ॥ ए० ॥ ४ ॥ ए नवपद प्राणी नित थुणतां । गिरवा नरभव सफल गिणंता ॥ ए० ॥ ५ ॥ सिद्धचक्रनी कीजे सेवा । मनवंछित लहियें नित मेवा ॥ ए० ॥ ६ ॥ अजर अमर सुखदायक साचो । रूपे मनसें नित प्रति राचो ॥ ए० ॥ ७ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचपरमेष्ठी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रथम अरिहंत पद पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ ॐकारबीज आदे नमुं ॥ गीर्वाणी सुखदाय । तुं तू ठी पंक्तिकरै ॥ पूजे सुर नर राय ॥ १॥ ॐ नमो गुरु देवकुं । भाषासरस बनाय ॥ पाहणथी पल्लवकरे । उपगारी सिरराय ॥ २ ॥ प्रथम नमुं अरिहंतजी ॥ दूजा सिद्ध अनंत । तीजा सूरि सदानमुं । उपगारी भगवंत ॥ ३ ॥ वलि उव झाया वंदियै ॥ गुण पचवीस प्रधांन । द्वादश अंग प्ररूपता ॥ नही विकथा नहिमांन ॥४॥ पंचम पद मुनि राजनो । वंदो भवि इकतार ॥ गुण सत्तावीस सोभता । करुणारस भंमार ॥ ५ ॥ पांचो पद सेवेनहीं । मूरख लोक अजाण । ए पांचूं परमेष्ठिहै ॥ अनुपम सुखकीखाण ॥ ६ ॥ उज्जल वरण विराजता ॥ कुमति हरण सुभलेश ॥ अरिहंत पद पूजा करो । सेवन सदा सुरेस ॥ ॥७॥ अष्ट द्रव्य लेईकरी । पूजो अरिहंत देव । पूजत अनुभव रसमिले । पावो सुख नितमेव ॥ ८ ॥ प्रथम पद श्रीकारहै । अतिसय जास अनंत । तीनलोकना राजवी । सेवे सुर नर संत ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चाल होलीरी ॥ वलिहारी सुखकर जिनवरकी । सबदेवनमें देव नगीनो । महिमा अधिकी मुनिवरकी ॥ व० ॥ कोईध्यावे हरि हर ब्रह्मा । कोई कहे मेरे बालाकी ॥ व० ॥ १ ॥ कोई नरसिंह देवकुं ध्यावे । कोई कहे मेरे भालाजी ॥ व० ॥ मेरे परसन तुमही आए । वीतराग गुण वालाजी ॥

ब० ॥ २ ॥ अवरदेव सब काच कथीरा । तुमहो अमोलक हीराजी ॥ ब० ॥ राग द्वेष तुम पास नहीं हैं । बाईस परीसह धीराजी ॥ ब० ॥ ३ ॥ तेरी सूरत की बलिहारी । क्याकहुं अजब अमीराजी ॥ ब० ॥ कोड देवता हाजर रहता आणंहुंतै वडवीराजी ॥ ब० ॥ ४ ॥ जगजीवन जगलोचन कहियै । तुमसम अवरन धीराजी ॥ ब० ॥ तेरे गुणको पारन पायो । सुरनर राय वजीराजी ॥ ब० ॥ ५ ॥ बारे गुणो प्रभू ऊपर सोहै ॥ वृक्ष अशोक उदाराजी ॥ ब० ॥ तीनछत्र भामंडल पूठे । ध्वजा फुरक रही साराजी ॥ ब० ॥ ६ ॥ पृथ्वीपीठ सिंहासन ऊपर । राजत हो वडवीराजी ॥ ब० ॥ पान फूल करके बहु सो भत । राजतहो गुणपूराजी ॥ ब० ॥ ७ ॥ सहस जोजननो इंद्रध्वज प्रभु । आगे चालत सारा जी ॥ ब० ॥ महागोप महामाहण कहिये । निर्यामिक सत्थ वाराजी ॥ ब० ॥ ८ ॥ ऐसै अरिहंत पदकी महिमा । सुणियो तुम सब प्यारा जी ॥ ब० ॥ तीन लोकमें इनका झंडा । पूजतहै इकताराजी ॥ ब० ॥ ९ ॥ अष्ट द्रव्यसें पूजा करतां । सदा हुवे जयकाराजी ॥ ब ॥ धर्म विशाल दयाल पसायै । सुमति कहै गुणसाराजी ॥ ब० ॥ १० ॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने पंचपरमेष्ठी महामंत्र राजाय अरिहंत पदे अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति अरिहंत पद पूजा ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ दूजी सिद्धपूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी । करो भविक गुणवंत । धजा चढावो भावसुं । लालवरण मतिवंत ॥ १ ॥ गुण इकतीस विराजता । तीनलोक सिरछत्र । अनंतचतुष्टय धारता । जगजीवन जगमित्र ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ढाल ॥ भविपनरमपदगुणगानाहो ॥ भ० ॥ एचाल ॥ भविसिद्ध पदके गुणगानाहो ॥ भ० सि० ॥ पनरेभेदे सिद्ध विराजे । भवितुम चितमें लानाहो ॥ भ० सि० ॥ जिना जिन तीरथा तीरथ कहियें । अन्य सलिंग कहानाहो ॥ ॥ भ० सि० ॥ १ ॥ स्त्री पुरुषादिक लिंगें जायै । कृत्य नपुंसक गानाहो ॥ ॥ भ० ॥ प्रत्येकबुद्ध नें सहसंबुद्धा । बुद्धबोधित सुभमानाहो ॥ भ० सि० २ ॥ एक अनेक और एकसमयें। गुरुमुखथी सुध पानाहो ॥ भ० सि०॥ अष्ट सिधि नव निधिके दाता । तुमहो देव निधानाहो ॥ भ० सि० ॥ ३ ॥ सादी अनंत

तुम सुखके भोगी। जोगीसर जयंजानाहो ॥ भ० सि० ॥ शब्दरूप रस गंध फरसकुं। जीतभए मुनि भाना हो ॥ भ० सि० ॥ ४ ॥ अव्याबाध सुखके तुम रसिये। भव्य सकल सुख दानाहो ॥ भ० सि० ॥ घाति अघाति दूर करीनें। जोतमेंजोत समानाहो ॥ भ० सि० ॥ ५ ॥ पैंतालीसलख जोजन सिला। उज्जलवरण कहानाहो ॥ भ० सि० ॥ ऊपर जोजन भागचोइसमें। सिद्धप्रभु ठहरानाहो ॥ भ० सि० ॥ ६ ॥ तिहां श्रीसिद्ध सदा जयवंता। परमगुरु परधानाहो ॥ भ० सि०॥ अनंतगुणाकर ज्ञान दिवाकर। इनके गुण नितगानाहो ॥ भ० सि० ॥ ७ ॥ लबधि रिद्धि सब सिद्धिके दाता। परम इष्ट सुखदानाहो ॥ भ० सि० ॥ धरमविशाल दयाल पसायें। सुमति कहे बुधवानाहो ॥ भ० सि० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धपरमात्मने अष्ट द्रव्यं यजामहेस्वाहा ॥ इति सिद्धपद पूजा ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ तीजी आचार्यपद पूजा ॥ ❋ ॥

॥ दूहा ॥ तीजेपदकुं नितनमूं। आचारज गुणवान। गुणछत्तीस वीराजता। जिनवरके परधान ॥ १ ॥ प्रतिरूपादिक गुणकरी। राजेसूर समान। जातिवंत कुलवंतहे। नहीविकथा नहीमांन ॥ २ ॥ भव्य सकलकुं तारवा। देसाचो उपदेश। कुमति सदादूरे करे। सुमती पाले हमेश ॥ ३ ॥ ऋद्धि सिद्धि कारण पूजिये। पीलेरंग प्रधांन। गणधारक गुरु गछपती। युगपरधान सुजान।

॥ ढाल ॥ मल्लीजिनंद सुखकारी रेवाला ॥ एचाल ॥ आचारज सुखकारी रे वाला ॥ आ० ॥ पंचाचार विराजत जगमणि। सहस किरण अवतारी रे वाला ॥ आ० ॥ प्रतिरूपादिक गुण जसु लाजे। मोह माया परिहारी रे वाला ॥ आ० ॥ १ ॥ रागद्वेषकुं दूर निवारे। सुमनारस भंडारीरे वाला ॥ आ० ॥ क्रोध मान माया नहि जिनके। विकथा दूर निवारीरे वाला ॥ आ० ॥ २ ॥ तेजकरी सूरज सम सोभित। मिथ्यातमके वारीरे वाला ॥ आ० ॥ क्षमा अधिक जगमें जसुराजे। विषयविकार निवारीरे वाला ॥ आ० ॥ ३ ॥ हृदय गंभीर महायश निर्मल। रूपादिक मनुहारीरे वाला ॥ आ० ॥ देश जाति कुल उत्तम जिनके। मोह्या सब नर नारी रे वाला ॥ आ० ॥ ४ ॥ सुरवर नरवर सेव करतहे। जय २ तुम सुखकारीरे वाला ॥ आ० ॥ मीठी

ब० ॥ २ ॥ अवरदेव सब काच कथीरा । तुमहो अमोलक हीराजी ॥ ब० ॥ राग द्वेष तुम पास नहीं हैं । वाईस परीसह धीराजी ॥ ब० ॥ ३ ॥ तेरी सूरत की वलिहारी । क्याकहुं अजब अमीराजी ॥ ब० ॥ कोड देवता हाजर रहता अणहुंतै वडवीराजी ॥ ब० ॥ ४ ॥ जगजीवन जगलोचन कहियै । तुमसम अवरन धीराजी ॥ ब० ॥ तेरे गुणको पारन पायो । सुरनर राय वजीराजी ॥ ब० ॥ ५ ॥ बारै गुणो प्रभू ऊपर सोहै ॥ वृक्ष अशोक उदाराजी ॥ ब० ॥ तीनछत्र भामंडल पूठे । ध्वजा फुरक रही साराजी ॥ ब० ॥ ६ ॥ पृथ्वीपीठ सिंहासन ऊपर । राजत हो बडवीराजी ॥ ब० ॥ पान फूल करके बहु सो भत । राजतहो गुणपूराजी ॥ ब० ॥ ७ ॥ सहस जोजननो इंद्रध्वज प्रभु । आगे चालत सारा जी ॥ ब० ॥ महागोप महामाहण कहिये । निर्यामिक सत्थ वाराजी ॥ ब० ॥ ८ ॥ ऐसै अरिहंत पदकी महिमा । सुणियो तुम सब प्यारा जी ॥ ब० ॥ तीन लोकमें इनका झंडा । पूजतहै इकताराजी ॥ ब० ॥ ९ ॥ अष्ट द्रव्यसें पूजा करतां । सदा हुवै जयकाराजी ॥ ब ॥ धर्म विशाल दयाल पसायै । सुमति कहै गुणसाराजी ॥ ब० ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने पंचपरमे ष्टी महामंत्र राजाय अरिहंत पदे अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति अरिहंत पद पूजा ॥ १ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ दूजी सिद्धपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी । करो भविक गुणवंत । धजा चढावो भावसुं । लालवरण मतिवंत ॥ १ ॥ गुण इकतीस विराजता । तीनलोक सिरछत्र । अनंतचतुष्टय धारता । जगजीवन जगमित्र ॥ २ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ढाल ॥ भविपनरमपदगुणगानाहो ॥ भ० ॥ एचाल ॥ भविसिद्ध पदके गुणगानाहो ॥ भ० सि० ॥ पनरेभेदे सिद्ध विराजै । भवितुम चितमें लानाहो ॥ भ० सि० ॥ जिना जिन तीरथा तीरथ कहियें । अन्य सलिंग कहानाहो ॥ ॥ भ० सि० ॥ १ ॥ स्त्री पुरुषादिक लिंगें जायें । कृत्य नपुंसक गानाहो ॥ ॥ भ० ॥ प्रत्येकबुद्ध नें सहसंबुद्धा । बुद्धबोधित सुप्रमानाहो ॥ भ० सि० २ ॥ एक अनेक और एकसमयें। गुरुमुखथी सुध पानाहो ॥ भ० सि०॥ अष्ट सिधि नव निधिके दाता । तुमहो देव निधानाहो ॥ भ० सि० ॥ ३ ॥ सादी अनंत

करे तुम्ह नितवरणं ॥ श्री० ॥ नवनिध अडसिध मंगलमाला । पूजत जगमें जस वरणं ॥ श्री० ॥ ९ ॥ ॥ ॐ ह्रीं परमात्म० शकलपाठक राजाय ऽष्ट द्रव्यंय० ॥ इति पाठक पदपूजा ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ पंचमी साधु पदपूजा ॥ ❀ ॥

॥ दूहा ॥ पंचमपदमें सोजता । साधु सकल गुणवंत । गुण सतवीस विराजता । महिमावंत महंत ॥ १ ॥ स्यामवरण मुनिवर कह्या । तप करवा अति सूरि । जविक कमल प्रतिबोधता । धरता निरमल नूर ॥ २ ॥ ॥❀॥

॥❀॥ ढाल ॥ सदा सहाई कुसल सू० ॥ एचाल ॥ सदा सहाई वीर पटोधर । सुणियो जविक उदार ॥ जलाजी ॥ सु० ॥ सुधर्म स्वामी अंतरजामी । तसु नंदन सुखकार ॥ ज० ॥ जंबूआदिक गुणके सागर । तेप्रणमुं हितकार ॥ ज० स० ॥१॥ प्रजवादिकसय पांच उदारा । प्रतिबोध्या सुखकार । ज० । सिद्धंजव आदिक जे सूरि । तेहना शिष्य सुविचार ॥ ज० । स० २ ॥ थूलजद्र मोटो ब्रह्मचारी । डुकरडुकरकार । ज० । सिंहगुफावासी जेमुनिवर । जापे डुकर कार ॥ ज० स० ३ ॥ वज्र कुमार बमे उपगारी । प्रतिबोध्या नर नार । ज० । श्रीसिद्धसेन दिवाकर स्वामी । राखी जगमें कार ॥ ज० स० ४ ॥ विक्रम आदिक नृप अढारे । प्रतिबोध्या सुखकार । ज० । एकतीरथकुं परगट करके । गुरुचरणां व्रतधार । ज० ॥ स० ॥ ५ ॥ देवर्द्धिगणी ए सबमें मोटा । राख्यो ज्ञानज सार ॥ ज० ॥ सूत्र ताडपत्रे लिखराख्या । जेशलमेर मकार । ज० स० ॥ ६ अजयदेव सूरी उपगारी । नव अंग टीका कार । ज० । हेमाचारज हे बमजागी जिणकीनो हेमलोजार । ज० । ७ ॥ कुमार पालनें जिण प्रति बोध्यो । सालोधरमनो राख । ज० । श्रीजिनदत्त सूरीसर मोटा । श्रावक किया सवा लाख ज० स० ८ ॥ रतन प्रनु सूरी उपगारी । ओस्यानगर मकार । ज० । उसवंसकी थापनाकरके । मोटो कियो उपगार । ज० स० ॥ ९ ॥ इत्यादिक गुण गणके दरिया । सेवो जविक उदार ॥ ज० ॥ ढंढणआदिक महातपसूरा । नांमलियां जयकार । ज० स० ॥ १० ॥ गजसुकुमाल महामुनिचंडु । जावकरी इकतार । ज० । धन धन्ना अरु शालजद्रजी । कीनीकरणीसार । ज० स० ॥ ११ ॥ खंधकसूरिना शिष्य पांचसें । सूरवीर व्रतधार

अमृत वाणी बोले । सुणतां हरख अपारीरे वाला ॥ आ० ॥ ५ ॥ पूर्वचवद भएया श्रुतसागर । लबधि अठाईस धारीरे वाला० ॥ द्रव्यानुजोगी चरणानुजोगी । करणजोगके धारीरे वाला ॥ आ० ॥ ६ ॥ गणतानुजोगरू धरमानुजोगी । जाणें आगमसाररे वाला० । धर्मप्रवाहक एह कहीजें । सूरि मंत्रके धारीरे ॥ वाला० आ० ॥ ७ ॥ गणधारी गछभार धुरंधर । सारण वारण कारीरे ॥ वाला ॥ आ०॥ ज्ञान उजागर विद्या सागर । वारीजाऊं वार हजारीरे ॥वाला०॥आ०॥८॥ धरम विशाल दयाल पसाये। सुमति कहै जय कारीरे॥वाला०॥आ०॥एसै गौतमस्वामी कहिये।पूजोकर इकतारीरे॥वाला। आ० ॥ ९ ॥ इति ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने० स्वाहाः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ चोथी श्रीउवझाय पद पूजा ॥ ❋ ॥

॥ दूहा ॥ श्रीउवझाया वंदिये । प्रेमधरी मनरंग ॥ चोथे पदमें सोभता । पूजो धर उछरंग ॥ १ ॥ नीलवरण ध्वज सुंदरू । धरलावो सुभथाल । अष्टद्रव्य लेईकरी । सेवो दीनदयाल ॥ २ ॥ ढाल ॥ जिनगुणगानं श्रुतऽमृतं ॥ ए चाल॥श्रीउवझाया भयहरणं । भयहरणं रे देवा भयहरणं ॥श्री॥ परिहर विषय विकार प्रकारं । ए गुरु है असरण सरणं ॥श्री ॥१॥ गुण पचवीस विराजत सुंदर । देखत सबको मनहरणं ॥ श्री० । तेजपुंज रवि शशि समदीपत । मिथ्या तम दूरेकरणं ॥ श्री० ॥ २ ॥ सूत्र अर्थ दाता जगमां हे । मुनि मानसमें जय करणं । सारण वायण चोयण करता । पडिचोयण वलि आचरणं ॥ श्री ॥ ३ ॥ द्वादश अंग पढ्या श्रुतसागर । सुमती धर कुमती हरणं ॥ श्री ॥ अतिशय विद्याचूरण योगे । जिनसासन उन्नतिकरणं ॥ श्री ॥ ४ ॥ धरम प्रभाविक है [illegible]गारी । ऐसे गुरु तारण तरणं ॥ श्री० ॥ तप जप आदिकनी खप करता भव्य सकलकुं निसतरणं ॥ श्री ॥ ५ ॥ नवविध ब्रह्मचर्यके धारक । दशविधि विनय सदाकरणं ॥ श्री ॥ ॥ माया ममता दूर निवारी । द्वादश भेदे तपधरणं श्री ॥ ६ ॥ शिष्य वरगकुं ज्ञानदानदै । मूरखथी पंडित करणं ॥ श्री ॥ जग जीवनके हो प्रतिपालक । तुमविन अवरन आभरणं ॥ श्री ७ ॥ विनकारण जगमें उपगारी । धन २ तुमरी आचरणं ॥ श्री० ॥ पंचपरमेष्टी महामंत्रको । इष्ट सदा दिलमें धरणं ॥ श्री ॥ ८ ॥ धरम विशाल दयाल पसाये । सुमति

करे तुम्ह नितवरणं ॥ श्री० ॥ नवनिध अडसिध मंगलमाला । पूजन जगमें जस वरणं ॥ श्री० ॥ ९ ॥ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्म० शकलपाठक राजाय अष्ट द्रव्यंय० ॥ इति पाठक पदपूजा ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ पंचमी साधु पदपूजा ॥ ॥

॥ दूहा ॥ पंचमपदमें मोलता । साधु सकल गुणवंत । गुण सतवीस विराजता । महिमावंत महंत ॥ १ ॥ स्यामवरण मुनिवर कह्या । तप करवा अति सूरि । भविक कमल प्रतिबोधना । धरता निरमल नूर ॥ २ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ढाल ॥ सदा सहाई कुसल सू० ॥ एचाल ॥ सदा सहाई वीर पटोधर । सुणियो भविक उदार ॥ भलाजी ॥ सु० ॥ सुधर्म स्वामी अंतरजामी । तसु नंदन सुखकार ॥ भ० ॥ जंबूआदिक गुणके सागर । तेमणसुं हितकार ॥ भ० स० ॥ १ ॥ प्रभवादिकसय पांच उदारा । प्रतिबोध्या सुखकार । भ० । सिज्जंभव आदिक जे सूरि । तेहना शिष्य सुविचार ॥ भ० । स० २ ॥ थूलभद्र मोटो ब्रह्मचारी । दुक्करदुक्करकार । भ० । सिंहगुफावासी जेमुनिवर । भापे दुकरकार ॥ भ० स० ३ ॥ वज्र कुमार बडे उपगारी । प्रतिबोध्या नर नार । भ० । श्रीसिद्धसेन दिवाकर स्वामी । राखी जगमें कार ॥ भ० स० ४ ॥ विक्रम आदिक नृप अठारे । प्रतिबोध्या सुखकार । भ० । एकतीरथकुं परगट करके । गुरुचरणां व्रतधार । भ० ॥ स० ॥ ५ ॥ देवर्द्धिगणी ए सबमें मोटा । राख्यो ज्ञानज सार ॥ भ० ॥ सूत्र ताडपत्रे लिखराख्या । जेशलमेर मझार । भ० स० ॥ ६ अभय देव सूरी उपगारी । नव अंग टीका कार । भ० । हेमाचारज है बडभागी जिणर्कीनो हेमनोभार । भ० । ७ ॥ कुमार पालनें जिण प्रति बोध्यो । मालीधरमनों भार । भ० । श्रीजिनदत्त सूरीसर मोटा । श्रावक किया सवा लाख भ० स० ८ ॥ रतन प्रभु सूरी उपगारी । ओस्यानगर मझार । भ० । उसवंसकी थापनाकरके । मोटो कियो उपगार । भ० स० ॥ ९ ॥ इत्यादिक गुण गणके दरिया । सेवो भविक उदार ॥ भ० ॥ ढंढणआदिक महानपस्त्रया । नांमलियां जयकार । भ० स० ॥ १० ॥ गजसुकुमाल महामुनि वंदु । भावकर्या इकतार । भ० । धन धन्ना अरु शालभद्रजी । कीनीकर णीसार । भ० स० ॥ ११ ॥ खंधकसूरिना शिष्य पांचसे । सुधीर व्रतधार

। भ०। पंचमपदमें ए मुनिपूजो । सदाहुवै सुखकार । भ० स० ॥ १२ ॥ पंच मआरे छेहडै होसी । दुपसहसूरि दयाल । भ० । इत्यादिक एढ्ढीप अढीमें। वंदु साधु कृपाल ॥ भ० स० ॥ १३ ॥ धरमविशाल दयाल पसाये । पूज रची सुखदाय । भ० । सुमतिकहै एपंचपरमेष्टी। कामधेनु कहवाय भ० स० ॥

॥ ❋ ॥ ढाल दूजी ॥ चालपणिहारीकी ॥ ❋ ॥

॥ सुणप्याराजी । सुणतांआसीस्वाद प्याराजी । धरम सनेही साधुजी ॥ सु० ॥ करता परउपगार प्या० ॥ लालच लोभ न जेहनें । सु० । नहिरा खे द्वेषलगार प्या० । ममता माया छोडनें ॥ सु० ॥ धारै व्रत सुखकार प्या० ॥ १ ॥ गाम नगर पुर पाटणें सु०। करता धर्म व्यापार।प्या० ॥ राग द्वेष मुनिराजनें ॥ सु० ॥ नहीकोई विषय विकार प्या० ॥ २ ॥ उपगारी सिरसेह रो । सु० । कुमतिकरे परिहार प्या० । विनकारण मुनिराजजी ॥ सु० ॥ भव्य जीव हितकार प्या० ॥ ३ ॥ ग्यानी ध्यानी सूरमा । सु० । महमा करत नरेस प्या० ॥ वाणी अमृत सारसी । सु० । सुणतां हरख हमेस प्या० ॥ ४ ॥ अनेक जीवप्रतिबूझिया । सु० । धरमतणा परधान । प्या० । मायानकरे साधुजी सु० नहिविकथा नहीमांन प्या० ॥ ५ ॥ पंचमहाव्रत धारता । सु०॥ ऐसे दीनदया ल । प्या० । सुमति धारक पांचछै । सु० । गुपतीना रखवाल प्या० ॥ ६ ॥ उद्देसक आदेकरी । सु० । कृतकर्मनें वजिदूत । प्या० । सिज्यातर रायपिंडकूं । सु० । नहिंधारै अवधूत प्या० ॥ ७ ॥ कुवचन केहनो सांभली । सु० । न धरै मनमें क्रोध । प्या०। मधुकरनीपरै मालता।सु०। उंचनीच कुलसोध प्या० ॥ ८ ॥ लाधेलाभौ देहनै । सु० । अणलाधै तपधार । प्या०। ओसरमोसर देखनें । सु० । रसलंपट नहीहोय । प्या० ॥ ९ ॥ किरियां करतां साधुजी।सु० आलस नकरे कोय ॥ प्या० ॥ परिसहजीते आकरा । सु० । कर्मकरे सबदूर प्या० । मुनिवर मधुकर समकह्या । सु० । दिन २ वधते नूर । प्या० ॥ १० ॥ जंगम तीरथ सारषा ॥ सु० ॥ धरमतणा आधार । प्या० । एहवा मुनिवर पूज तां । सु० । पावै वंछित सार ॥ प्या० ॥ ११ ॥ धरमविसाल दयालनो । सु० सुमति कहै करजोड । प्या० । एहवा श्रीमुनिराजजी । सु० । मुझ माथेका मोड । प्या० ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं परमात्म० सर्वसाधुभ्योऽष्ट द्रव्यंयजामहे० ॥ इति

॥ ❁ ॥ अथ कलसकी पूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ दूहा ॥ अब पूजा हे कलसकी । सुणियो तुम नर नार । सांभलतां सुख पामसो । सफल हुसी अवतार ॥ १ ॥ ऐसी भारुं मोहनी । सब्रा सहू हरखाय । सेवो जगतकी मोहनी । ए जग सार कहाय ॥ २ ॥ मंत्रमांह सिरदारहे । पंच परमेष्टी एह । सरवारथ सिद्धी कह्यौ । गणधर गौतम जेह ॥ ३ ॥ जेहनें एहनी आसता । तेहनें एह सहाय । भागहीन नर मूढकुं । होत नहीं फलदाय ॥ ४ ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ ढाल प्रश्न तथा उत्तर ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ चंगीमें चंगी कोन जगतकी मोहनी । चंगीमेंचंगी जान जिणंद पद मोहनी ॥ १ ॥ सुखी जगतमें कोन कहो मन भावना । सुखी वोही संसार परम पद भावना ॥ २ ॥ सब देवनमें देव कहो कुण जाणना । सब देवनमें देव वडो जिन जांणना ॥ ३ ॥ सबमें मोटो ध्यांन कहो कुण साजना । सबमें मोटो ध्यान सुकल तुम जाणनां ॥ ४ ॥ धरम वडो जगमांहि कहो कुण साजना । दया धर्म जगमांह वडो है साजना ॥ ५ ॥ शिव रमणीको नाथ कहो कुण साजना । शिव रमणीको नाथ सर्व सिद्ध जाणना ॥ ६ ॥ धरममें मोटो कोण कहो मेरे साजना । धरममांहि सुभभाव सुणो मेरे सा० ॥ ७ ॥ दाता कहियै कोन कहो मन भावना । गुरू वडे दातार धरम धन पावना ॥ ८ ॥ मीठी जगमें कोन कहो मन भावना । मीठी जिनकी वाणि धरो चित चाहना ॥ ९ ॥ मीठी दाख खजूरके मीठी चाहनी । जिणसें अधिकी होय वाणी जिनरायनी ॥ १० ॥ सब व्रतमें कुण सार कहो मेरे साजना । सब व्रतमें व्रतसार चोथो व्रत जाणना ॥ ११ ॥ खरतर गछपति चंदसूरीश्वर सोहता । सकल विमल गुणगेह भविक मन मोहता ॥ १२ ॥ प्रीतसागरगणि सीस सकल गुण राजता । अमृत धर्म उदार वाचक पद छाजता ॥ १३ ॥ पाठकमें परधांन क्षमा गुण धारता । तसु शिष्य धर्म विशाल मुनीव्रत धारता ॥ १४ ॥ सुमति कहै गुणधार भविक मन मोहता । वीकानेर मझार सकल मन मोहता ॥ १५ ॥ संघ सकल सुखदाय सेवो प्रभु भावसुं । पूजरची चितलाय अधिक वलदावसुं ॥ १६ ॥ संवत सय उगणीसक

। भ०। पंचमपदमें ए मुनिपूजो । सदाहुवै सुखकार । भ० स० ॥ १२ ॥ पंच मआरे छेहमै होसी । डुपसहसूरि दयाल । भ० । इत्यादिक एद्वीप अढीमें । वंदु साधु कृपाल ॥ भ० स० ॥ १३ ॥ धरमविशाल दयाल पसायें । पूज रची सुखदाय । भ० । सुमतिकहै एपंचपरमेष्ठी । कामधेनु कहवाय भ० स० ॥

॥ ❋ ॥ ढाल दूजी ॥ चालपणिहारीकी ॥ ❋ ॥

॥ सुणप्याराजी । सुणतांआसीस्वाद प्याराजी । धरम सनेही साधुजी ॥ सु० ॥ करता परउपगार प्या० ॥ लालच लोभ न जेहनें । सु० । नहिरा खे द्वेषलगार प्या० । ममता माया छोडनें ॥ सु० ॥ धारै व्रत सुखकार प्या० ॥ १ ॥ गाम नगर पुर पाटणे सु०। करता धर्म व्यापारा प्या० ॥ राग द्वेष मुनिराजनें ॥ सु० ॥ नहीकोई विषय विकार प्या० ॥ २ ॥ उपगारी सिरसेह रो । सु० । कुमतिकरे परिहार प्या० । विनकारण मुनिराजजी ॥ सु० ॥ भव्य जीव हितकार प्या० ॥ ३ ॥ ग्यानी ध्यानी सूरमा । सु० । महमा करत नरेस प्या० ॥ वाणी अमृत सारसी । सु० । सुणतां हरख हमेस प्या० ॥ ४ ॥ अनेक जीवप्रतिबूझिया । सु० । धरमतणा परधान । प्या० । मायानकरे साधुजी सु० नहिविकथा नहीमांन प्या० ॥ ५ ॥ पंचमहाव्रत धारता । सु०॥ ऐसे दीनदया ल । प्या० । सुमति धारक पांचछै । सु० । गुपतीना रखवाल प्या० ॥ ६ ॥ उदेसक आदेकरी । सु० । कृतकर्मनें वर्जिदूत । प्या० । सिज्यातर रायपिंडकूं । सु० । नहिंधारै अवधूत प्या० ॥ ७ ॥ कुवचन केहनो सांभली । सु० । न धरै मनमें क्रोध । प्या०। मधुकरनीपरै मालता।सु०। उंचनींच कुलसोध प्या० ॥ ८ ॥ लाधेलाभौ देहनै । सु० । अणलाधै तपधार । प्या० । ओसरमोसर देखनें । सु० । रसलंपट नहीहोय । प्या० ॥ ९ ॥ किरियां करतां साधुजी।सु० आलस नकरे कोय ॥ प्या० ॥ परिसहजीते आकरा । सु० । कर्मकरे सबदूर प्या० । मुनिवर मधुकर समकह्या । सु० । दिन २ वधते नूर । प्या० ॥ १० ॥ जंगम तीरथ सारषा ॥ सु० ॥ धरमतणा आधार । प्या० । एहवा मुनिवर पूज तां । सु० । पावै वंछित सार ॥ प्या० ॥ ११ ॥ धरमविसाल दयालनो । सु० सुमति कहै करजोड । प्या० । एहवा श्रीमुनिराजजी । सु० । मुझ माथेका मोड । प्या० ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्म० सर्वसाधुभ्योऽष्ट द्रव्यंयजामहे० ॥ इति

॥ ❋ ॥ अथ कलसकी पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ अब पूजा हे कलसकी । सुणियो तुम नर नार। सांभलतां सुख पामसो। सफल हुसी अवतार ॥ १ ॥ ऐसी म्हारुं मोहनी। सज्ञा सहू हरखाय। सेवो जगतकी मोहनी । ए जग सार कहाय ॥ २ ॥ मंत्रमांहे सिरदारहै। पंच परमेष्टी एह । सरवारथ सिधी कह्यो । गणधर गौतम जेह ॥ ३ ॥ जेहनें एहनी आसता । तेहनें एह सहाय । ज्ञागहीन नर मूढकुं। होत नहीं फलदाय ॥ ४ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ढाल प्रश्न तथा उत्तर ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ चंगीमें चंगी कोन जगतकी मोहनी। चंगीमेंचंगी जान जिणंद पद मोहनी ॥ १ ॥ सुखी जगतमें कोन कहो मन ज्ञावना । सुखी वोही संसार परम पद ज्ञावना ॥ २ ॥ सब देवनमें देव कहो कुण जाणना। सब देवनमें देव वडो जिन जांणना ॥ ३ ॥ सबमें मोटो ध्यांन कहो कुण साजना। सबमें मोटो ध्यान सुकल तुम जाणनां ॥ ४ ॥ धरम वम्हो जगमांहि कहो कुण साजना । दया धर्म जगमांह वडो है साजना ॥ ५ ॥ शिव रमणीको नाथ कहो कुण साजना । शिव रमणीको नाथ सर्व सिद्ध जाणना ॥ ६ ॥ धरममें मोटो कोण कहो मेरे साजना । धरममांहि सुज्ञज्ञाव सुणो मेरे सा० ॥ ७ ॥ दाता कहियै कोन कहो मन ज्ञावना । गुरू वडे दातार धरम धन पावना ॥ ८ ॥ मीठी जगमें कोन कहो मन ज्ञावना । मीठी जिनकी वाणि धरो चित चाहना ॥ ९ ॥ मीठी दाख खजूरके मीठी चाहनी। जिणसें अधिकी होय वाणी जिनरायनी ॥ १० ॥ सव व्रतमें कुण सार कहो मेरे साजना । सब व्रतमें व्रतसार चोथो व्रत जाणना ॥ ११ ॥ खरतर गच्छपति चंदसूरीश्वर सोहता। सकल विमल गुणगेह ज्ञविक मन मोहता॥ १२ ॥ प्रीतसागरगणि सीस सकल गुण राजता । अमृत धर्म उदार वाचक पद गाजता ॥ १३ ॥ पाठकमें परधांन क्षमा गुण मारता। तसु शिष्य धर्म विशाल मुनीव्रत धारता ॥ १४ ॥ सुमति कहै गुणसार ज्ञविक मन सोहता। बीकानेर मझार सकल मन मोहता ॥ १५ ॥ संघ सकल सुखदाय सेवो प्रज्ञु ज्ञावसुं। पूजरची चितलाय अधिक वलदावसुं॥ १६ ॥ संवत सय उगणीसक

तेपन जाणीये । माह सुद चवदश बार मंगल मन आणीयै ॥ १७ ॥ भणतां गुणतां एह सदा सुख पामसै । घर घर मंगल माल हुवै जिननामसैं० ॥ १८ ॥
॥ इति श्रीसुमति मंमणजीकृत पंचपरमेष्ठी पूजा संपूर्ण ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ श्री सिद्ध गिरि निनाणुं प्रकारी पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रथम ध्वज पूजा ॥ ❋ ॥

॥ श्रीऋषभायनमः ॥ दूहा ॥ ऋषभादिक जिनवरनमी । प्रणमी सद्गुरुपाय । पुंमरीक गिररायनी । पूजकरुं सुखदाय ॥ १ ॥ सजल शिखर गिरवर सरस । फरस्यां पाप पुलाय । कनकाचल सहुशिरतिलो । वंद्यां सहु दुःखजाय ॥ २ ॥ नाम लियां सुख संपजे । घर बैठां सुभ भाव । सफल जन्म जात्रा करै । भव जल तारन नाव ॥ ३ ॥ भव भव भमता मानवी । पामे दुःख अनंत । पुंमरगिर भेटे तिके । तुरत लहै भव अंत ॥ ४ ॥ कल्पवृक्ष चिंतामणी । जंत्रमंत्र जग जोय । ए महिमा सहुकारमी । गिरवर सम नहिंकोय ॥ ५ ॥ प्रथम ध्वजा लेईकरी । चाढो गिरवर शृंग । विजय सदा जगमें हुवै । दिन दिन अधिक सुरंग ॥ ६ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ढाल ॥ चित हरखधरी । अनुभवरंगे वीसपरमपदसेवियै ॥ ॥ एचाल ॥ गिरराज जयो श्रीसिद्धाचल तीरथ रयण पूजियै । महाराज जयो श्रीरिसहेसर भविजन भावै पूजीयै ॥ वर मोहन ध्वज पूजा करियै । चितचोखे जगमैं जसचरियै । जिनराज सरण भवि अनुसरियै ॥ गि० १ ॥ इहां पुंमरीक गण धर आया छै । तिणपुंमरीक नाम कहाया छै । सिद्धक्षेत्र नमी सुख पायाछै ॥ गि० ॥ २ ॥ विमलाचल गुण मणि दरियोछै । सुरगिर महागिरि गुण भरियोछै । वलि पुन्यरासि मन धरियोछै ॥ गि० ॥ ३ ॥ वलि श्रीपत परवत सुखकारी । वलि इंद्र प्रकास ते चितधारी । सास्वत ए गिरवर [illegible]री ॥ गि० ॥ ४ ॥ दृढसक्ति मुक्तिनिलो कहियै । अरु पुष्पदंत मन सरदहियै । महापद्म सुठाम सदा कहियै ॥ गि० ॥ ५ ॥ वलि पृथ्वीपीठ सुभद्र वारु । कैलास गिरि कहियै सुखकारु । पातालमूल भविहेतारु ॥ गि० ॥ ६ ॥ वलि अकरम नामें एह जाणो । सर्व कांमद वलि मनमें आणो । गिर गुण गातां मन हुल साणो ॥ गि० ॥ ७ ॥ ए इक्वीस गिरंद नामा । ध्यावो भवि

जन तुमे सुखकामा । कहै सुमति सदा ए अभिरामा॥गि०॥८॥इति॥काव्यं॥ देवा सुरेंद्र नर नागर मर्चितेभ्यः । पापः प्रणासकर भव्य मनोहरेभ्यः । घंटा ध्वजादि परिवार विभूषितेभ्य ॥ नित्यंनमो सिद्ध गिरींद्र जिनालयेभ्यः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत ज्ञानसक्तये जन्म जरामृत्यु निवारणाय श्री विमलाचल तीर्थ स्थित जिनेंद्राय ध्वजां यजा महे स्वाहा ॥ पचरंगी धजा चढावै ॥ इति ध्वज पूजा ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ दूसरी जल पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ निर्मल जल कलसा भरी । पूजो श्रीजिनराय । पूजत अनुभव गुणलहे । पाप पंक मल जाय ॥ १ ॥ ॥ ढाल ॥ आज आयोरे उछाह जीवडा नाच जिणंद आगे ॥ ❋ ॥ आज हरख धरी गिरवर पूजन करियैरे॥ आ० ॥ कलस अठोत्तर सो मनरंग।निरमल जल भरियै अतिचंग ॥ आ० ॥ गंगादिक तीरथना जाण । अवर सुजल पूजो जग भाण ॥ आ० ॥ इणपर न्हवण करो जिनराज । भवियण सारो वंछित काज ॥ आ० ॥ इणगिर ऊपर रुषभ जिणंद । समवसरया भवियण सुखकंद ॥ आ० ॥ २ ॥ महियल मोटो ए गिरि जाण । भवियण भेटो सुखनी खाण ॥ आ० ॥ कंकर २ साधु अनंत सिद्ध थया भाष्यो भगवंत ॥ आ० ॥ ३ ॥ हिव सुणज्यो सगलो अधिकार । चित थिर राखी करो गुण धार ॥ आ० ॥ मन तन उलसै सुणतां एह । तत खिणपावै करमनो छेह ॥ आ० ॥ पातिक टाली पूजो देव । जिम सुख पावो नित्य अछेह ॥ आ० ॥ महियल मोटो ए गिरराय । श्री मुख भाखे श्री जिन राय ॥ आ० ॥ ५ ॥ प्रथम अजित सोलम प्रभु ध्यांन । करके पूजो गिरराजा न ॥ आ० ॥ इणपर सुमति कहै हित आण । जिनपद सेव्यां कोड कल्याण ॥ आ० ॥ ६ ॥ काव्यं॥ देवा सुरेंद्र नर नागर मर्चितेभ्यः; पापः प्रणा सकर भव्य मनो हरेभ्यः । घंटाध्वजादि परिवार विभूषितेभ्यः । नित्यं नमोसिद्ध गिरींद्र जिनालयेभ्यः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्री विमलाचल तीर्थाय जलं यजा महे स्वाहा॥ इति जल पूजा ॥ २ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ तीसरी चंदन पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ निर्मल केसर चंदनें । पूजो श्रीजगदीस। प्रेम धरी पूजा करो। सुखपावो निस दीस ॥ १ ॥ नगर अजोध्यानो धणी । श्रीजितशत्रु नरेस। विजयाराणी शीलनी। सोभाकरै सुरेस ॥ २ ॥ जिण जायो सुत जग धणी। जीत्या रिपु दल जास ॥ अजित कुंवर राजा कियो। नाम जिसो परकास ॥ ३ ॥ ढाल ॥ श्रीचंद्राप्रभू जिनवर साहिब, (इस चालमें) अजित जिनेसर जग परमेसर । तुमहो पर उपगारा ॥ मेंवारीजाऊं तु० ॥ बावनाचंदन केसर घोली। कस्तूरी घनसारा ॥ मे० ॥ भाव भगतसुं प्रभु गुण गावो । पूजो जग भरतारा ॥ में० अ० ॥ १ ॥ मिथ्यातम भर दूर निवारी। सेवो प्रभु अविकारा ॥ में० ॥ राज राजेसर जगपति जिनवर । चक्री अजित उदारा ॥ में० अ० ॥ २ ॥ परउपगारी तुं परमेसर । भव्यां जय जय कारा ॥ में० ॥ जिम २ परमल पसरै तेहथी। सोभा अधिक उदारा ॥ में० अ० ॥ ३ ॥ भूमंमल विचरंता प्रभूजी। बहु चेतन सुखकारा ॥ में० ॥ पुंमरीक पर अजित जिनेसर । चौमासोतिहां धारा ॥ में० अ० ॥ ४ ॥ सिंहसेनादिक गणधरथापी। पंचाणू हितकारा ॥ में० ॥ एक लाख मुनि मुद्रा धारी। भरिया गुण मणि धारा ॥ में० अ० ॥ ५ ॥ चौथा आरानें मध्यज भागै। अजित हुवा अविकारा ॥ में० ॥ बोहत्तरलख पूरवनो आऊ। कीधा जग जयकारा ॥ में० अ० ॥ ६ ॥ सोलम जिनवर शांतिजिनेसर । अचिरा नंद उदारा ॥ में० ॥ विमलगिरिंद पर कर चौमासो। करम कलंक निवारा ॥ में० अ० ॥ ७ ॥ विश्वसेन कुलआंण विराजे। जगजीवन हितकारा ॥ में० ॥ श्रीहथणापुर मंमण स्वामी। सुमति सदा दातारा ॥ में० अ० ॥ ८ ॥ काव्यं ॥ देवा सुरेंद्र० पूर्वलीपरैं संपूर्ण कहीजै ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्म० ॥ इति चंदन पूजा ॥ ३ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ चौथी पुष्प पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ पूज चतुर्थी इणपरैं। कुसुम सुगंध सुजोय। भव्य मनोरथ पूरवै। घर घर मंगल होय ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ढाल ॥ जिनराज नाम तेरा । हो महाराज नाम तेरा ॥ हो०

॥ ❋ ॥ विमलगिरि नाम तेरा । हो कनकगिरि नाम तेरा ॥ हो सेवोरे उज्जलगिरि रसमें ॥ हो० उ० ॥ मचकुंद कुंद जाणो । चंपो गुलाब आणो । पूजो जिनंद भाणो ॥ हो० उ० ॥ १ ॥ कर्मावसी जुराजे । जिनबिंब बहोत छाजे । जोतां मिथ्यात भाजे ॥ हो० उ० ॥ २ ॥ मोतीवसी जुहारो मनकामना जु सारो । दिलमां हैं एहि धारो ॥ हो० उ० ॥ ३ ॥ बालावसी जिणंदा । निरख्यांहि सुक्ख कंदा । अठारे चैत्य बंदा ॥ हो० उ० ॥ ४ ॥ पेमावसीजु प्यारा । भेटो जिनंद सारा । वंद्यांथी सुख्ख कारा ॥ हो० उ० ॥ ५ ॥ हेमावसी जु वंदो । अजितादि सुख्ख कंदो । सेवो जिनंद चंदो ॥ हो० उ० ॥ ६ ॥ उजमवसी जु राजे । नंदीश्वर भाव छाजे । सेवोथे सुख्ख काजे ॥ हो० उ० ॥ ७ ॥ साकरवसी जु भावे । भेट्यांसुं पाप जावे । देख्यांसुं सुख्ख थावे ॥ हो० उ० ॥ ८ ॥ छींपावसी जु ध्यावो । वंछित्त सुख्ख पावो । मनमांहि भावलावो ॥ हो० उ० ॥ ९ ॥ खरतरवसी जु सोहै । जिनराज मन्न मोहै । निरख्यांसुं सुख्खहोवै ॥ हो० उ० ॥ १० ॥ इत्यादि भावजाणो । गुरुग्यांन मन्न आणो । संकादिचित्त नांणो ॥ हो० उ० ॥ ११ ॥ सुमतादि ध्यानध्यावो । गुण नाथनाजु गावो । मन भाव एहि भावो ॥ हो० उ०॥१२॥ ॥ काव्यपूर्वनीपरें ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरत्मा० ॥ इति पुष्प पूजा ॥ ४ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ पांचमी धूप पूजा ॥ ❋ ॥

(दूहा) धूपपूज ए पांचमी । करता भवि सुखदाय । धूपघटी जिम मह महे ॥ तिम तिम पातिक जाय ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥❋॥यात्रानिनाणुं करिये विमलगिरि यात्रा० ॥ए चाल॥❋॥

॥ ❋ ॥ इण विधि पूजन करिये विमलगिरि ॥ इ० ॥ कृष्णागरनें मृगमद अंबर । गंधवटी अनुसरिये ॥ वि० इ० ॥ १ ॥ चीड़सेल्हारस तुरक भलेरो । इणविध पूजन करियै ॥ वि० इ० ॥ केसर चंदन मृगमद कुंकुम । भाव भलै अनुसरियै ॥ वि० इ० ॥ २ ॥ उजल अमल अखंमित तंडुल । दीप अखंड जु धरिये ॥ वि० इ० ॥ पुष्प सुगंध गुलाबना लेइ । पूजो इणगिरिवरियै ॥ वि० इ० ॥ ३ ॥ साधू साहमी भगति करीनें । आतम निरमल करियै ॥ वि० इ० ॥ पांचे पांडव इणगिर पूजो । नवनारद मुनि वरियै ॥ वि० इ० ॥ ४ ॥

गिरवर ऊपर पांचे ठामें । पूजकरी अघ हरियें ॥ वि० इ० ॥ कलस अठोत्तर सो लेईनें । न्हवण जली विध करिये ॥ वि० इ० ॥ ५ ॥ मूलनायक श्री आदि जिनेसर । इण गिरिपर समोसरिये ॥ वि० इ० ॥ भाव भगतसुं जिननी पूजा । करतां सहु सुख वरियें ॥ वि० इ० ॥ ६ ॥ जहि अवतार ए गिर नहीं फरसे । तो किम भवजल तरिये ॥ वि० इ० ॥ पुंडरगिरिनो ध्यान धरीनें पुन्य खजानो भरिये ॥ वि० इ० ॥ ७ ॥ ए गिरनी आसातना टाली । जात्र करी निसतरिये ॥ वि० इ० ॥ सगतछतां जो संघ लेईनें । आवे इण गिर वरियें० इ० ॥ ८ ॥ द्रव्य भावसुं पूजन करिनें । पाप पंक अपहरियें ॥ वि० इ० ॥ सुमतिकहै धन २ ए गिरवर । पूजो भवि सुख करिये ॥ वि० इ० ॥ ९ ॥ ॥ काव्य पूर्ववत् ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरत्मा० ॥ इति धूपपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ छठी दीपपूजा ॥ ❋ ॥

(दूहा) छठी पूजा दीपनी ॥ करो भविक सुखकार । विमलबोध पावो तुमे । ज्ञानदीप सुविचार ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पासजिनंदा प्रभु मेरे मनवसिया ॥ पा० ॥ एचाल ॥ आदि जिणंदा प्रभु सेवो सुखकारी ॥आ०॥ निरमलबोध विकासक दीपक। दिन २ जोत अधिक सुखकारी ॥ आ० ॥ १ ॥ अनुभवदीपक प्रगट भयोहै । सकल चराचर भाव विचारी ॥ आ० ॥ केवल ज्ञानी प्रथम तीर्थंकर । समोवसरया भवियण हितकारी ॥ आ० ॥ २ ॥ फागुण सुद आठमनें दिवसै । ऋषभदेव आया सुविचारी ॥ आ० ॥ भरथपुत्र चैत्रीपूनमदिन । इणगिर आया भवि मनधारी ॥ आ० ॥ ३ ॥ नमि विनमी राजा विद्याधर । पुंडर गिर सेवे इकतारी ॥ आ० ॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर कैरा । द्रावडनें वारिखिल्ल विचारी ॥ आ० ॥ ४ ॥ कातीसुदपूनम दिन सीधा । दसकोडी मुनि साथ उदारी ॥ आ० ॥ पांचे पांडव इणगिर सीधा । नव नारद निज काज सुधारी ॥ आ० ॥ ५ ॥ संब प्रजुन्न गया इहां मुगतै । आठ करम दल दूर निवारी ॥ आ० ॥ नेमि विना तेवीस तीर्थंकर । समवसरिया भवियण उपगारी ॥ आ० ॥ ६ ॥ ए गिरराजना गुणगणगातां । सफल हूवे आतम सुविचारी ॥ आ० । ए गिरराजनी पूजा जगमें । भवजल पार उतारण हारी ॥ आ० ॥ ७ ॥ द्रव्य

भाव सुं पूजन करियै। कुमति कुटलता दूर निवारी ॥ आ० ॥ कहै सुमति सेवो इकतारी। इण तीरथनी जावूं बलिहारी ॥ आ० ८ ॥ ❋ ॥
इति ॥ काव्यपूर्ववत् ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरत्मा० ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ सातमी अक्षतपूजा ॥ ❋ ॥

॥(दूहा) उज्जल तंदुल लेयनैं। पूजो दीन दयाल। स्वस्तिक करतां विस्तरै। घर २ मंगल माल ॥ १ ॥ तुमविन दिनानाथ दया निध कोंन खबरले मेरीरे ॥ एचाल ॥ गिरिवर भेटण भविजन आवे। मनवंछित फल पावैरे। उज्जल तंदुल थाल भरीनें। वधावो गिरिरायारे। अष्टमंगल प्रभु आगल धरियै। निरमल सुध सुहायारे॥ नि० ॥ २॥ ए गिरिमहिमा जिनसुख सुणके। चक्री मन हुलसावैरे। भरथराय षट्खंडको नायक। संघ लेई इहां आवैरे॥ गि० ॥ २॥ सोनानो प्रसाद करावै। रयणनी मूरती ठावैरे। भाव भगतिसुं पूजा रचावै। प्रभु चरणे चितलावैरे॥ गि० ॥ ३॥ भरततणें अष्टम पट्टसोहै। दंडवीरज महाराजारे। संघलेई उधार करावै। संचे सुभ फल ताजारे ॥ गि० ॥ ४॥ ईशानेंद्र करायो तीजो। चोथो माहेंद्र करावैरे। पांचमो उद्धार ब्रह्मइंद्रनो। सुर नर मिल जस गावैरे ॥ गि० ॥५॥ छठो उधार भुवनपतीनो। सातमो सगरनो जाणोरे। आठमो व्यंतर इंद्र करावै ! भविजन मनमें आणोरे॥ गि० ६ ॥ चंद्रजसराय उधार करावै। नवमो भविसुख कंदारै। शांतिनाथ सुत दशमो भावै। उधार करे आनंदारे॥ गि० ॥ ७ ॥ दशरथराय सुतन गुण आगर। रायचंद्र भल भावैरे। उद्धार इग्यारमो एह करायो। बारमो पांडु करायोरे॥ गि० ॥ ८ ॥ तेरमोउद्धार जावडशाहनो। चवदमो वाहडदेह नोरे समरेसाह करायो भावै। पनरमो सहुसुखदैनोरे॥ गि० ॥ ९ ॥ संवतसत रैसें सित्यासै। वैशाखवदि सुभवारोरे। करमेंसोसी करायो भावै। एसोलमउद्धारोरे॥ गि० ॥ १० ॥ तिणकारण ए तीरथ मोटो। सहुतीरथ सिर राजारे॥ कहै सुमति पूजो भलभावै। पावोज्यूं सुखपाजारे ॥ गि० ॥ ११ ॥ इति ॥ काव्यपूर्ववत् ॐ ह्रीं श्रीपरत्मा० ॥ इतिअक्षतपूजा ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ आठमी नैवेद्यपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ मोदक मोतीचूरना । सींहकेसरिया सार । इत्यादिक नैवेद्यले । पूजकरो सुखकार ॥ १ ॥ ॥ सिद्धचक्रपदवंदोरे । भविका ॥ ॥ एचाल ॥ श्री सिद्धाचल पूजोरे । भविका । इणसम गिरिनहीं दूजोरे भविका ॥ श्री० ॥ मोदक मोतीचूरना लेई । नैवेद्यपूजा करियेरे ॥ भ० ॥ सिंहकेसरिया दालिया केई । मोदक इण विध धरियेरे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १ ॥ ललितसरोवर पेखो भावै । वलि सत्तानीवावरे ॥ भ ॥ तिहां विसरामो भविजन लेवै । वरुनैं चोतरे आवरे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २ ॥ सेत्रुं जानीपाजे चढतां । आणंद अंग नमावेरे ॥ भ० ॥ दूरथकी सेत्रुंजो दीसै । सुंदर रूप सुहावेरे ॥ भ० श्री ॥ ३ ॥ हिंगुलाजहरु चढके पूजो । कलि कुंरु पासकुमाररे ॥ भ० ॥ बारी मांहेपैसी भविजन । भेटो आदि दीदाररे ॥ भ०श्री ० ४ ॥ मरुदेवीटुंक मनोहर दीसै । गजपर वैठा सोहैरे ॥ भ० ॥ शांतिनाथ सोलम उपगारी । भविजनना मन मोहेरे ॥ भ० श्री० ५ ॥ वंस पोरवारु जगत वदीतो । सोमजी साह मल्हाररे ॥ भ० ॥ रूपजी साह करायो भावै । चौमुख मूल उद्धाररे ॥ भ० श्री० ॥ ६ ॥ नेमनाथ चवरीदेखीने । देखो धरमडुवाररे । भ० ॥ आदीसरना चरण पखाली । पूजो विविध प्रकाररे ॥ भ० श्री० ॥ ७ ॥ भमतीमांहे विंब विराजै । कहतांनावे पाररे ॥ भ० ॥ पुंरु रीकगणधर गुरु पूजो । शांतिनाथ सुखकाररे ॥ श्री० ८ ॥ चेलणात लाई सिद्धसिलानें । सिद्धवरुजूनो कहियेरे ॥ भ० ॥ पुंरुरगिरनी भमतीमांहे एहसहुसरदहियेरे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ उलकाफोलनें भाडवडूंगर । हस्तागि रीफिरनमियैरे ॥ भ० ॥ कदमगिरीपरचरणजिनेश्वर । भेट्यांसहुसुखलहियेरे ॥ भ० ॥ १० ॥ घरवैठां जो भावकरीनें । मनशुद्ध भावनाभावेरे ॥ भ० ॥ सुमतिकहे ते धनधन कहिये । जात्रानो फल पावेरे ॥ भ० श्री० ॥ ११ ॥ काव्य पूर्ववत् ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने० ॥ इति नैवेद्यपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ नवमी फलपूजा ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ निर्मल फलपूजा करो । उत्तमफल सुखकाज । भविजन पूजो भावसुं । सरै सहुसुभकाज ॥ १ ॥ ढाल ॥ रामतरमवामें गइथी । मोरी

सहीयरकें० ॥ एचाल ॥ आदीसर पूजाकरो । एतो सिद्ध गिरीनो रायो हेमाय सदगुरुनें परसादथी । एतो दरसणदेवनो पायो हेमाय ॥ आ० ॥ १ ॥ आंबा दाडिम लेयनें । एतोफलपूजा इमकीजेंहे माय । श्रीफल पूंगीफल भला । एतोभेटकरी फललीजे हे माय ॥ आ० ॥ २ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनी । एतो सेवाथी चितलायो हे माय । मिथ्यामत राचै थकै । एतो काल अनंत गमायो हे माय ॥ आ० ३ ॥ हिवसेवा प्रभु ताहरी । एतो चाहुं देव सवायोहे माय । सिद्धाचल गिरिरायनो । एतो मंडण आदि कहायो हे माय ॥ आ० ॥ ४ ॥ धन्य दिवस धन्यते घडी । एतो धन मरुदेवी जायो हेमाय ॥ पूरवनिनाणूं समोसरया । एतो आदीसर महारायोहेमाय ॥ आ० ॥ ५ ॥ अष्टोत्तर सत नामछे । एतो शास्त्रथकी तेजाणो हेमाय । एसहु नामजप्यां थकां । एतो प्रगट्यो परम कल्याण हेमाय ॥आ०॥६॥ सुकराजा इहां आयनें । एतो ध्यान धरै षट्मासी हे माय । चंद नृपति गिरि भेटतो । एतो पाम्यो सुखनीरासी हे माय ॥आ० ७॥ अनंतजीव मुगतेगया । में तो नमणकरुं चित धारीहे माय गिरवर दरसण देखतां । एतो मोहै सहु नर नारी हे माय ॥ आ० ८ ॥ धन २ ए गिरिरायना । एतो गुणगायो सुखदायो हे माय । सुमतिकहै जिन राजनी एतो सेवाथी सुखपायो हे माय ॥ आ० ॥ ९ ॥ काव्यपूर्ववत ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्म० ॥ इति फलपूजा ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ गुलाब जल पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ निर्मल जल कुसुमै करी । वासित सरस सुगंध ॥ पूजो जिनवर जग धणी । दूरकरो दुख धंध ॥ १ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सिद्धचक्रपद वंदोरे भविका ॥ एचाल ॥ श्रीविमलाचल पूजोरे ॥ भविका । तीरथ एहवोन दूजोरे । भविका ॥ श्री ॥ सुरभि गंधोदक लेई भावै । छिडको जिनवर अंगरे ॥ भ० ॥ कुसुमेंवासित उत्तम जलनी । वृष्टिकरो मनरंगरे । भ० । श्री० १ ॥ आदीसरना चरण पखाली । पूजो उठ पर भातरे ॥ भ०॥ गुणनो लख नवकार गुणीजे । दोय अठम छठ सातरे । भ० श्री० २ ॥ रथजात्रा परदक्षिणादीजे । पूजा विविध प्रकाररे । भ० । धूप दीप फल नैवेद्य मुंकी । नमियें नामहजाररे । भ० । श्री० ३ ॥ आठ अधिक शत

टुंक भलेरी । मोटी तिहां इक्वीसरे ॥ भ०॥ सेत्रुंजय गिरि टुंक ए पहिलुं । नाम नमो निसदीसरे ॥ भ०। श्री०४ ॥ सहस अधिक अठ मुनिवर साथे । बाहुबली शिवठामरे ॥ भ०। तिणकारण ए गिरवर कहियै । त्रीजो मरुदेवीनामरे । भ० श्री० ५ ॥ पुंमरीक गिरि नाम एचोथुं । पांचकोमि मुनि सिद्धरे । भ० । पांचमी टूंक रेवतगिरि कहिये । तिण ए नाम प्रसिद्धरे ॥ भ०॥ श्री०६ ॥ विमलाचल सिद्धराज भागीरथ । प्रणमीजे सिद्धक्षेत्ररे ।भ०। छरीपाली इणगिर भेटो । करियै जन्म पवित्ररे । भ०। श्री०॥ ७॥ पूजाकरी प्रभुना गुणगावो । साथोकाम अनेकरे भ०। पुंमर गिरना गुणगण गातां । निरमल आतम विवेकरे । भ०। श्री० ८ ॥ देवकीनंदन पूजो भावे । थूलभद्र मुनिरायरे । भ०। सुमतिमंमण जिनराज पसायै । दिन २ आणंद थायरे ॥ भ०। श्री० ९ ॥ इति काव्य पूर्ववत ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्म० ॥ इति गुलाब जल पूजा ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ इग्यारमी वस्त्र युगल पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ प्रभु पूजो इग्यारमी । क्षोमयुगल लेई सार । निरमल गुण धारी करी । पूजो जगभरतार ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ राग घाटो ॥ मेरोमन वसकरलीनो । जिनवर प्रभुपास ॥ मे० ॥ गिरवर मंमणआदि । मुझमनथांसुंलागो ॥ मु० ॥ विमलाचल तीरथराजे । तीनभुवन आल्हाद ॥ मु० ॥ १ ॥ सूरत मोहनीलागे । जागे प्रीत अनाद ॥ मु०॥ सुरनर वंदन आवे । पावे प्रभू परसाद ॥ मु० ॥ २ ॥ देश देशका जात्री आवे । पावे हरख अपार ॥ मु० ॥ मरु देवी नंदन वंदो । गावो गुण गण सार मु० ॥३ ॥ हेमनी चोरी कीनी । ए आलोयण तास ॥ मु० ॥ चढ चैत्री पूनम भावें । करे इक उपवास ॥ मु०४॥ वस्त्रनीचोरी रे जेणें । कीनी भोले भाव ॥ मु०॥ बारसात आंबिल करियै । भवियण सुभ मन भाव ॥मु० ॥५॥ रतननी चोरी कीनी । तेजन सुद्ध इमहोय ॥ मु० ॥ गिरिपर तपस्या कीजे ॥ आतम निरमल होय ॥मु० ॥६ ॥ पित्तलादि चोरी कीनी । ते सुध थायेकेम ॥मु०॥ पुरमढ्ढसातड्ड करियै । धरियै मनमें प्रेम ॥ मु० ॥७॥ मोतीनीचोरी जुकीनी । आंबिल कर भवितीन ॥मु०॥ धानादि चोरी कीनी । देते वस्तु प्रवीण॥८ ॥ देवादिधन जो वांछे । तो सुधथाये एम ॥मु०॥ अधिको वित्तजोखरचे । मुनि

पोषैबहुप्रेम ॥ मु०॥९॥ चौपद चौरीकीनी । दैते वस्तुनोदान ॥मु०॥ सरधासुं तपस्या कीजै ॥ दीजै मुनि सनमान ॥ मु० ॥ १० ॥ पुस्तक पारका देखी। लिखै जो आपणो नाम ॥ मु०॥ षट्मासी तपस्या कीजै । सामायक तिणठाम ॥ मु० ॥ ११ ॥ कन्या परिव्राजका जाणो । सधव अधव गुरुनार ॥ ॥ मु० ॥ तिन संग व्रत जो भाजै । छम्मासी तपसार । मु० ॥ १२ ॥ ॥ गो स्त्री बालक रूषिनी । आसातनाजेकीन ॥ मु० ॥ वस्त्र पात्र मुनिनें दीजै । भावधरी लय लीन ॥ मु० ॥ १३ ॥ श्रीजिन पूजन कीजै । क्षोम युगल अतिचंग ॥ मु ॥ दशविध पूज रचावो । सुमतिक है मनरंग ॥ मु० ॥ १४ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ देवा सुरेंद्र नरनागरमार्चितेभ्यः । पापः प्रणासकर भव्यमनोहरेभ्यः । घंटा ध्वजा दिपरिवार विभूषितेभ्यः । नित्यंनमो सिद्धगि रेंद्र जिना लयेभ्यः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने नंतानंत ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय वस्त्रं यजामहे स्वाहाः ॥ ११ ॥

॥ ❀ ॥ अथ कलश ॥ ❀ ॥

॥ रागधन्यासिरी ॥ तेज तरण मुख राजै ॥ एचाल ॥

॥ प्रभुजीकी पूजरची सुखकाजै । हांओ सुख काजै ॥ श्रीसिद्धाचल गिरवर ऊपर । मंगण आदि विराजै। नाभनृपति मरुदेवीके नंदन । दरशण सुं दुःख भाजै ॥ हां० प्र० ॥ १ ॥ वीकानेर नगर अतिसुंदर । मरुधर देश विराजै । श्रीजिन सौभाग्य सूरि पटोधर । सकल गुणैंकरी गाजै ॥ हां० प्र० ॥ २ ॥ श्रीजिन हंससूरि खरतरपति । गुण गिरुवा गुरुराजै । प्रीत सागर गणि सिष्य सुवाचक । अमृत धर्म सुभाजै । हां० प्र० ॥ ३ ॥ तसु सेवक पाठक पदसोहै । क्षमा कल्याण गणि राजै । तसु चरणांबुज सेवक अहनि स । धर्मविसाल विराजै ॥ हां० प्र० ॥ ४ ॥ सुमति मंगण ए गिरनी पूजा । रचिय संघ सुखकाजै । कुशल करण सहु मुनिवरकी । प्रेरणाया सुखका जै ॥ हां० प्र० ॥ ५ ॥ चूंपधरी चोखै चितचाहै । लिखी सकल सुभकाजै संवतसय उगणीस तीसमें । पूजरची हितकाजै । हां० प्र० ॥ ६ ॥ जेठसुदी तेरस रविवारै । सुणतां सहु दुःखभाजै।भावधरी गिरनां गुणगाय॥

दिन २ अधिक दिवाजे ॥ हां० प्र० ॥७॥ इति श्रीपाठक सुमति मंडणजी कृत सिद्धगिरीपूजा संपूर्णम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्रीआबूजी पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ ॥ श्रीजिनवर आराधिये । धरियै हियमे ध्यांन । रुषभ जिणंद दिणंद सम । दिन दिन चढते वांन ॥ १ ॥ आबू गिर पूजन रचुं । महियल मोटो ठाम । देस देसका संघवी । आवी करै प्रणाम ॥ २ ॥ आबू अचल गढ दीपतो । महियल जाण सुमेर । देवलवाडो अति दीपतो । महिमा थई चिहुं फेर ॥ ३ ॥ विमलसाह मंत्री थयो । मोटो पुन्य पसाय । पातसाह बारै भणी । वस करिया सुखदाय ॥ ४ ॥ तिणए तीरथ थापियो । आबूगिर सिरदार । चैत्य कराया भावसुं । खरची द्रव्य अपार ॥ ५ ॥ सुद्धोदक लेईकरी । पूजो आदि जिणंद । स्नात्रकरी जिनराजनी । पावो परमानंद ॥ ६ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रथम जलपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ इक सुणले नाथ अरज मेरी० ॥ एचाल ॥ बलिहारी आबू गिरवरकी ॥ ब० ॥ आबू गिरिपर अद्भुत सोहै । सूरत आदि जिनेसर की ॥ ब० ॥ आस पास बहु झाडी झंगी । मांहि गुफा जोगीसरकी ॥ बलि० ॥ ॥ १ ॥ देश देशके जात्री आवे । पूजरचै परमेश्वरकी ॥ ब० ॥ विमले मंत्री वस करलीनी । पातसाही बारै घरकी ॥ ब० २ ॥ तिणए बिंब भराया भावे । महिमा आदि जिनेसरकी ॥ ब० ॥ आठसै बहुत्तर जिनवर गाजे । नदियां नीर सजल भरकी ॥ ब० ३ ॥ कोरणी खूबवणी अति सुंदर । दिल भर दरसण सुखकरकी ॥ ब० ॥ देराणी जेठाणीरा आला । कोरणि करी हदवेमरकी ॥ ब० ॥ ४ ॥ अंगी चंगी अजब वणी है । सोवन वरण रतन चरकी ॥ ब० ॥ सुमति कहै एतीरथ उत्तम । इनकुं उपम सुरगिरकी ॥ ब० ॥ ॥५॥ ॐ ह्रीँ आबूगिरेंद्राय तीरथ सीरोमणाय । श्रीआदिस्वराय जलं ॥ १ ॥

॥ ❋ ॥ अथ दूसरी चंदन पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ केशर चंदन लेयके । पूजो श्री गिरराज ॥ पूजत अनुभव गुणालहे । तारण तरण जिहाज ॥ अचल गढे जिनराजनो ॥ अति उत्तंग

प्रसाद । देख भविक हर्खितहुवै ॥ पावै परम आल्हाद ॥ २॥ राग सोरठ ॥ कुंद किरण शशि ऊजलोरे देवा ॥ एचाल ॥ आबू तीरथ पूजीयैरे ॥ वाल्हा ॥ तीरथ महिमा वंतोरे ॥ आगे जिनवर सहूभवि सेवियैरे ॥ वाल्हा ॥ आणी भाव अनंतोरे ॥ १ ॥ आगे ॥ वस्तपाल तेजपालजीरे ॥ वा० ॥ लीनो लखमी लाहोरे ॥ आ० ॥ मुद्रा बहु खरची करीरे ॥ वा० ॥ जसलीनो जगमांहोरे ॥२॥ आगे ॥ कोरणी झीणी सुंदरूरे । वा० । कीधी धर मन रंगैरे ॥ आ० ॥ सुरगुरु पिणनहि कहीसकैरे ॥ वा० ॥ महिमा अधिक सुरंगैरे ॥ ३ ॥ आगे ॥ बारेकोड़ ऊपर सहीरे ॥ वा० ॥ लागा तेपन लाखो रे ॥आ० इतनो धन खरच्यो सहीरे ॥ वाला ॥ श्री संवकैरी साखोरे ॥ ४ ॥ आगे ॥ मूलनायक नेमी सरूरे ॥ वा० ॥ ब्रम्हचारी सिरदारोरे ॥ आगे ॥ च्यारसै अड़सठ सुंदरूरे ॥ वा० ॥ जिनवर बिंब उदारोरे ॥ ५ ॥ आ० ॥ सुमति सदा इमवीनवैरे ॥ वा० ॥ तीरथनी बलिहारीरे ॥ आ० ॥ मन वंछित सगला फलैरे ॥ वा० ॥ पूजत गिर सिरदारीरे ॥ ६ ॥ आ० ॥ ॐ ह्रीँ आबू गिरंद्राय तीर्थेसि० श्री आदीस्वराय चंदनं यजा महे ॥ २ ॥ ❋ ॥ ॥❋॥

॥ ❋ ॥ अथ तीसरी फूल पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ ब्रह्मचारी जोगीसरू । जगपति नेम जिनंद ॥ बावीसम जिन पूजतां । नितप्रति होत आनंद ॥ १ ॥ चंपक केतकि केवड़ो । विउल सिरी मचकुंद ॥ मोगर मालति कुशमसैं । पूजो भवि सुख कंद ॥ २ ॥ सेत्रुंजानो वासी प्यारो लागै म्हांरा राजिंदा ॥ से० ॥ एचाल ॥ आबू तीरथ भेटो म्हांरा राजिंदा ॥ भेटो ह्मांराराजिंदा भे० ॥ आ० ॥ इण सम तीरथ औरन कोई । मिथ्यातम सब मेटो । म्हां० । अमीझरो महाराज कहावै । देख्यां अति सुखपावै । म्हां० आ० १ । मनसुधजात्र करौ भविप्रांणी । सुर नर मुनि गुणगावै । म्हां । सुंदर सूरत मूरति सोहै । देख्यां प्रीत लगावै । म्हां० आ० २ । अवर अनेक जिन बिंब कहावै । दरस करत दुख जावै । म्हां० । एगिर सहु सिरदार कहावै । जोगीसर बहुध्यावै । म्हां० । आ० ३ ॥ दूरथकी एगिरवर निरखी । मोतियन थाल भरावै । म्हां० । दांन मांन सनमान करीनें । तीरथ महमा गावै । म्हां० आ० ४। वियसेती गिरवर

नितपूजै । लाभ अनंत उपावे । म्हां० । संघपती संघ लेके जावै । धन २ तेह कहावै । म्हां० आ० ५ । पुष्फमाल गुंथी भविभावै । जिनवर पूज रचावै म्हां० । सुमतिकहै गिरराजकुं ध्यावे । वंछित सफल लहावै । म्हां० आ० ६ ॥ ॐ ह्रीँ आबूगिरेंद्राय तीर्थसिरोम० श्रीआदीश्वराय पुष्पंयजामहे ॥ ३ ॥

॥ ❁ ॥ अथ चौथी धूप पूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ दूहा ॥ धूप दशांग लेई करी । पूजो तीरथ राय । सुरभि सुगंधी महमहैं । इमभाखै जिनराय ॥ १ ॥ विमल अश्व वाहन धरी । सेवकरै जिनराज । अंबादेवी पूजतां । सफलकरै सबकाज ॥ २ ॥ मैं निरख्या गुरुमहाराज भतिआं हरखभरी मैं० ॥ ए चाल ॥ दिल मैं हरखधरी भविपूजो गिरवर सार ॥ दिल० ॥ धूप दशांग लेई करीरे । पूजो जग भरतार । बोधबीज निरमल करोरे । सफलकरो अवतार ॥दि०॥ संघकरी संघ वीघणारे । भेटै श्री गिरसार। अष्टद्रव्य लेई करीरे। पूजे जिन इकतार।दिल० भ० २ ॥ अचलगढे जिनराजनारे । मोहन मंदिर च्यार । विमलै साह करावि यारे । धन धन तसु अवतार ॥दि० भ० ३॥ सुंदर मूरत गुण भरीरे । चौमुख प्रतिमा च्यार । साजन ह्मारा थे सुणोरे । भाखुं गिरि गुणधार ।दिल०भ०४॥ चवदैसै चौमालनीरे । मूरत गुण भंमार । हेममई जिनराज नीरे । सोभे अधिक दीदार ॥दिल०भ०५॥ धन जेहनी माता पितारे । धन जेहना कुलसार द्रव्य प्रबल खरची करीरे । लीनो लाभ अपार ॥ दि० भ० ६ ॥ इणपर ए गिर रायनीरे । महिमा अधिक अपार । सुमतिसदा कर जोम्निरे । प्रणमें वारंवार । दिल० भ० ॥ ॐ ह्रीँ आबूगिरेंद्राय तीर्थसिरोमणाय श्रीआदीश्वराय धूपं यजामहे ॥ ४ ॥

॥ ❁ ॥ अथ पांचमी दीपक पूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ दीपक पूजा पंचमी । करो भविक गुणवंत । दीपक सम गुण पांमियै । केवल ज्ञान अनंत ॥ १ ॥ तीरथनी महिमा करो । भाव धरी मतिवंत । द्रव्य भाव विहुं भेदसुं । पूजो भवि विकसंत ॥ २ ॥ तुमबिन दीनानाथ दयानिधि कोन खबर ले मेरीरे । भ० ॥ एचाल ॥ आबू गिरपर आदि जिनेसर । दरसणकी बलिहारीरे । आ० । नगरसीरोही

नांम कहावै । जिनवर बिंब जुहारीरे। तिहांथी आदस गाऊ निरखो । हणादरो सुख कारीरे॥ आबू० १॥ आबूगिरकी पाजे चढतां । पाप सकल परिहारीरे। ए गिर देखी सुर नर मोहै। महिमा अधिक उदारीरे॥ आ०२॥ आस पास बहु जामी सोहे। बिच मंदिर मनुहारीरे। नाभिरायके नंदन कहियै । मरुदेवी मात मल्हारीरे॥ आ० ३॥ जुगला धरम निवारण स्वामी त्रिभुवन जन हितकारीरे। नगर अजोध्या आप विराजो। आदिनाथ उप गारीरे॥ आ० ४॥ आदीसर अलबेसर कहियै। सबको तुं अवतारीरे। सब जोगीसर तुमकुं ध्यावे। अद्भुत कीरत थारीरे॥आ०५॥ तुं भय भंजन तुंहि निरंजन। लोकालोक विहारीरे । जोगीसर जिनराज जगतगुरु। नेमीसर ब्रह्मचारीरे॥ आ० ६॥ तारण तरण दयानिध स्वामी। सेवकजन साधारीरे। सुमति कहै भवि निरमल भावे। सेवो प्रभु सुखकारीरे॥ आ० ७॥ ॐ ह्रीँ आबूगिरेंद्राय तिर्थसिरोमणाय श्रीआदीश्वराय दीपं यजामहे॥ ५॥ ❋॥

॥ ❋॥ अथ अक्षत पूजा॥ ❋॥

॥ ❋॥ दूहा॥ अक्षत पूजा साचवे । भविजन मंगल काज । तीन पुंज प्रभु आगलै । करो भविक सुखसाज ॥ १॥ मंगल आठ करोसही। प्रभुआगें धरप्रेम। अष्टसिद्धि नवनिध संपजे। सुजस हुवे नितमेम॥ २॥ ढाल तुमतो भलेविराजोजी सांवलिया माहाराज सिखरपर भलेविरा जोजी॥तु०॥ ए चाल॥ तुमतो भले विराजोजी। आबूके सिरदार सिखरपर भले विराजोजी॥ तु०॥ नाभिरायके नंदन कहियै। तीन भवन विसरांमी। केसर चंदन मृगमद घोली। पूजो अंतर जामी॥ तुम०॥१॥ विखम पहाडां विचमैं राजे। साहिबतुं सिरनामी। आदीसर जोगीसर पूजी। वंछित सगला पामी॥ तु०॥ २॥ द्रव्य भावसें पूज रचावो। मनमें आणंद पावो भर मुगताफल थाल वधावो। तीरथ महिमा गावो॥ तु० ३॥ आबू गिरको ध्यान धरावो। तपस्यासुं फलपावो। घरसारू वलिदान दिरावो संघभगत करवावो॥ तु०४॥ अचलगढे जिनदरसण करवा। संघसकल मिल आवै। आदीसर नेमीसर पूजी। मनवंछित सबपावै॥तु०॥५॥ तीरथ महिमा भविजन करियै। दिलमें भावजधरियै। सुमतिकहै तन मन कर उज्जल।

पुन्य खजानो भरियें ॥ तुम० ६ ॥ ॐ ह्रीँ आबूगिरेंद्राय तीर्थसिरोमणाय श्री आदीस्वराय अक्षतं यजामहेः ॥ ६ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ नैवेद्यपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॥ दूहा ॥ मोदक मोतीचूरना । ओर सुगंध रसाल । पूजो तीरथ रायनें । भावकरी गुण माल ॥ १ ॥ नैवेद्य पूजा सातमी ॥ करो भविक धरप्रेम । तीरथनी महिमा करी । गुणगावो धरनेम ॥ २ ॥ ॥ ❋ ॥ श्रीचंद्राप्रभु जिनवर साहिब सुणियो अरज हमारी ॥ में० एचाल ॥ ❋ ॥

॥ श्रीआदीसर जिनवरसाहिब । तुमपर जाउं बलिहारा । मैं वारिजाउं ॥ ॥ तु० ॥ आबू गिरपर आप विरा जो । साहिब पर उपगारा । में० श्री० ॥ तूं हिं जिनेसर तूं परमेसर । अंतरप्राण आधारा । में० । जोगीसर तेरी लयजांणें । परमातम अविकारा । में० ॥ श्री० २ ॥ मनमोहन तुं नाथ निरंजन । जगजीवन हितकारा । में० । सुर नर किन्नर सेवकरतहैं । जय २ जग भरतारा॥में०श्री०३ ॥ तेरीमहिमा अधिक विराजै । सबजीवन सुखकारा ॥में० ॥ अनंतज्ञांन दरसणको स्वामी । मनमोहन सबप्यारा ॥ में० श्री० ॥ ४ ॥ लोकउचित व्यवहार प्रवर्त्यो । बोधबीज दातारा । में० । तुमकुं जो तन मनसैंध्यावे । पावे वंछित सारा ॥ में० श्री० ५ ॥ भविकलोकको तुं उपगारी । मिथ्यातम घनवारा ॥ में०॥ सुमति कहै गिरपूज रचावो । एगिरसबसिरदारा ॥ में० ॥ श्री० ६ ॥ ॐ ह्रीँ आबूगिरेंद्राय तीर्थसिरोमणाय श्रीआदी श्वराय नैवेद्यं यजामहे ॥ ७ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ आठमीधजा तथा फलपूजा ॥ ❋ ॥

॥ दूहा॥प्रभुपूजा एआठमी । मंगल आठ कराय । पंचवरण ध्वज मोहनी । पूजकरो सुखदाय॥१॥आंबा दाडम आददे । विवध भांत मनरंग । प्रभु आगल ढोवो सही । भावधरी उछरंग ॥ २ ॥ सब सुंदर आवो सही । सजसोले सिण गार । रतन जडत कंचुक धरी । पहरी नवसरहार ॥ ३ ॥ ढाल ॥ पनरमपदगुण गानाहो भविप० ॥ ए चाल ॥ भवि जिनगुण मंगल गानाहो ॥ भवि० ॥ फलपूजा ए गिरकी करके । जगमें सुजस वधानाहो । भ० । मंगल आठ

रचोप्रभु आगल । चंदमुखी मनभानांहो ॥ भवि० ॥ १ ॥ पंचवर णकी ध्वजवर कहियै । हित चितसें करवानाहो । सुंदरनारी सब सि णगारी । प्रेमधरी सबआनाहो ॥ भवि० ॥ २ ॥ कंचू कसिआ हरख भल सिआ । आभूखण पहरानाहो । भ० । रतनजमित सब सुंदरचूमी । हाथे बाहु सोभानाहो । भ० । भवि० ॥ ३ ॥ थेई थेई तानकरै प्रभू आगल । मधुर सुरै गुणगानाहो । भ० । इंद्राणी मिल मंगल गावै । तिम तुमे भगत करानाहो ॥ भ० ॥ ४ ॥ इत्यादिक गुण जिनके गावत । बोधबीज उपजा नाहो । भ० । सुमतिकहै भवि पूजन करियै । मनवंछित फल दानाहो ॥ भवि० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ आबूगिरेंद्राय तीर्थ सिरोमणाय श्रीआदीस्वराय फलं ध्वजं अष्टमंगलं यजामहे ॥ ८ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ नवमी वस्त्र पूजा ॥ ❋ ॥

॥❋॥दूहाः॥वस्त्र जुगल लेईकरी। पूजो दीनदयाल॥ सुजश सुगंधी विस तरै। बोधबीज गुणमाल॥१॥ रथयात्रा प्रभुनी करो। महिमा भगत कराय॥ लाभ अनंतो ऊपजे। समकित निरमल थाय॥ २॥ ढाल॥ दरशणके लोभी नैना। होदर० ॥ ए चाल ॥ हो पूजनके लोभी सैणा॥ लोभी० हो पू०। पूजनकुं जिया नित नितचाहै। कुगुरु वचन तजदैना। हो पू० लो० ॥ १ ॥ यापूजा समकितकी करणी। सुगुरु वचन सुणलेना। हो पू०। गिरवर गढ गिरनार विराजै। नेमकुमर सुखदैना॥ हो० ॥ २ ॥ वस्त्रजुगलकी पूजन करियै। तन मन उज्जल वैना ॥ हो० ॥ मिथ्यातम सब दूर निवारी। सुमति रमण संगरैना॥ हो पू० ॥ ३ ॥ सरधा केसर रंग घोलके। निजआतम रंगलैना। हो०। विमलगिरी अष्टापद पूजो। आदीसर सुख दैना। हो पू० ॥ ४ ॥ शिखरसमेत वन्दो जगमांहै । वीसप्रभू हितदैना ॥ हो पू० ॥ आबू गिरकी महिमा अद्भुत । मानो हमाराकैहना॥ हो पू० ॥ ५ ॥ रथजात्रा जिनवरकी करके । पाप पमल हरदैना । हो०। कुगुरु कुमतिको संगछो मके। जिनगुणमें दिलदेना॥ हो पू० ॥ ६ ॥ आदीसर अलवेसर कहीयै। जगतारक जगसैना । हो पू० । सुमति सदा प्रभुके गुण गावत ।

बोधबीज सुखदैना ॥ हो पू० ७ ॥ ॐ ह्रीं आबूगिरेंद्राय तीर्थ सीरोमणाय श्री आदीस्व० वस्त्रं यजामहेः ॥ ९ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ गुलाब जल ॥ ❋ ॥

॥❋॥(दूहा)समकित निरमल कारणें। सुरभि सुगंधी लेह। छिरको श्रीगिर राजकुं। भावधरी गुणगेह ॥१॥ गिरवर भावे भेटिये। दीजे वंछित दांन। गीतगान भलगाइयै। ज्युंपावो बहुमान ॥ २ ॥ ढाल ॥ थारीगईरे अनादिनीं द जरा टुकजोवोतो सही ॥ जोवो० ॥ एचाल ॥ तुमकरोरे सुमतिको संग रंगीला सेवोतो सही। सेवोतो सहीरे म्हांराचेतन सेवोतो सही। तुम० ॥ मुनिवरकी वरणी हितकरणी। लेखोतो सही। मिथ्यातम करदूर हियामै देखोतो सही ॥ दे० म्हां० तु० ॥ १ ॥ आतम करणी निजगुण धरणी देवोतो सही। तुं कह्यौरे हमारो मांन सुग्यानी वेवोतो सही॥ बे० म्हां० तुम० ॥ २ ॥ समकित करणी भव भय हरणी लेवोतो सही। द्रोपदि जिम जिनराज भगतकर सेवोतो सही ॥ से० म्हां० तुम० ३ ॥ रागकतरणी जग जस भरणी जोवोतोसही। अकलंकित गुणहोय भरमसब धोवोतो सही ॥ धो० म्हां० तुम० ॥ ४ ॥ सबमन हरणी गुणमणि धरणी पावोतो सही। कूड कपट कर दूर हीयामैं लावोतो सही ॥ ला० म्हां० तुम० ॥ ५ ॥ आबूगिरनी पूजन करणी ध्यावोतोसही। तन मन प्रीतलगाय जिणंदगुण गावो तो सही। गा० म्हां० तुम० ॥ ६ ॥ अनुपम करणी पापभधरणी भावोतो सही। तुम करोरे सुगंधी पूज भविक सुख पावोतो सही ॥ पा० म्हां० तुम० ॥ ७ ॥ इम गुणवरणी पूजनकरणी गावोतो सही। सुमति रंगीला सैण हीयामैं लावोतो सही ॥ ला० म्हां० तुम० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं आबूगिरेंद्राय तीर्थसिरो० श्रीआदीश्वराय सुगंधि द्रव्यं यजामहेः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ वाजित्रपूजा ॥ ❋ ॥

॥❋॥(दूहाः)नंदी घोख वजावतां। थाये लाभ अनंत। विविध प्रकारें पूजतां। बोधबीज विकसंत ॥ १ ॥ ढाल ॥ पूज पूज जिनराज काजसारतुं का० ॥ सार सार जिनराज तार तार तुं ॥ ता० भलांहे ता० ॥ सा० ॥ जग जश धार सार जय कारतुं। सरणाई मिरदंग चंग सार सार तुं ॥

सा० भ० सा० सार० ॥ तुंही है जिनंद चंद आदि कार तुं । जगत उधार सार अविकारतुं ॥ अ० भ० ॥सार० ॥ १ ॥ समकित धारसार सुक्खकारतुं । मनमथ जीतकार राग वारतुं । रा० भ० । सा० । तुंहींहै मुनिंद इंद हितकारतुं । गुणको निधांन सार भरतारतुं । भ०भ० ॥सारसार० ॥ २॥ सुर नर देव सार किरतारतुं । आबूके जिनंद चंद मुनिसारतुं ।सु०भ०सार० । परमआधार सार जिनतारतुं । सुमति विचार धार सुरककारतुं । सु० भ० सार० ॥३॥ ॐ ह्रीँ आबूगिरिंद्राय तीर्थसि० श्रीआदीश्वराय वाजित्रगुणवरणन पूजा ॥ ११ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ नृत्य पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहाः ॥ सुरसुंदर हरखेकरी । सजसोळै सिणगार । ताल मृदंगहि लेयनैं । भगतकरै बहुसार ॥ १ ॥ भावधरी प्रभु आगले । अष्टापद गिरसार । रावणनें मंदोदरी । नृत्यकरै गुणधार ॥२॥ ढाल ॥ जिनगुणगावत सुरसुंदरी रे जि० ॥ ए चाल ॥ भगतिकरे सब सुरसुंदरीरे ॥ भ० ॥ सुरसुंदरीरेदेवा ॥ सु०भ० ॥ हीर चीर पाटंबर पहरी । रम झम घुग्घर नाद करीरे । भ०सु०॥१॥ चंदवदन मनमोहन गहरी । मृगनैनी श्रृंगारधरीरे ॥ भ० ॥ बांह बाजूबंध कंचन चूरी । बेसर मोती लाल जरीरे ॥ भ० सु० ॥ २ ॥ अपछरवरणी सुर मन हरणी । मोहनी रूप अनूप धरीरे ॥ भ० ॥ चंपकवरणी मनवस करणी । प्रभुआगे गुणगावै खरीरे ॥ भ० सु० ॥ ३ ॥ जिनगुण गावत हरख वधावत । थेई थेई नाचत भावधरीरे ॥ भ० ॥ अशरण शरण तुंही जगदीपक । तुंहि निरंजन सुरक करीरे ॥ भ० सु० ॥ ४ ॥ भविजन ध्यावत हरख उपावत । गावत गुण सुभराग करीरे ॥ भ० ॥ गजगत गामनी सब मिल भामनी । ठम ठम नाचत सुर महरीरे ॥ भ० सु० ॥ ५ ॥ अष्टापद गिररावणराजा । मंदोदरि जिम भगतकरीरे ॥ भ० ॥ सुमति सदा जिनके गुणगावत । झुल २ जिनजीकै पायपरीरे ॥ भ० सु० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ आबूगिरिंद्राय तीर्थसिरोमणाय श्रीआदीश्वराय गीतनृत्यगुणवरणन पूजा ॥ १२ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ कलश रागरेखता ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जिनंदजश आजमें गायो ॥ ए चाल ॥ गिरंदजश आजमें

गायो । भेटतां हरख अतिपायो ॥ गि० ॥ आबूगिरिंद सुखदायो । सघन घन रुखसें छायो । खरा जिनचंद सूरिराजा । तपै जग भानज्युं ताजा गि० ॥ १ ॥ क्षमा कल्याणके पाजा ॥ विविध गुण ज्ञानके भाजा ॥ धरम विशाल तसुनंदा ॥ कहै युं सुमति सुख कंदा ॥ गि० ॥ २ ॥ संवत उगणीस चालीसै । प्रेमधर अधिक सुजगीसै ॥ भजो तुम देव जगदीसै । फलैसब आस निस दीसै ॥ गि० ३ ॥ देवांके देव मनभाया ॥ पूजतां संपदा पाया ॥ वीकाणें सहरमें राजै ॥ जगत जस ताहरो गाजै ॥ गि० ४ ॥ आदि जिन पूज सुख काजै ॥ नमत प्रभु पाप सहुभाजै ॥ सकल जन भावसें ध्यावै ॥ मोहन मुनि प्रेमसें गावै ॥ गि० ॥ ५ ॥ इति श्री आबू गिरि श्री आदीस्वर जिन गुण महिमा वर्णन सुमति मंडणजी पाठककृत पूजा संपूर्णम् ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ आबूजीको स्तवन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अर्हन् २ नाटक नाचे आदी सरकै आगैलो अ० ॥ एचाल ॥ पूजो पूजो तीरथ पूजो ॥ आबू तीरथ पूजोलो ॥ पूजो० ॥ इंद्र पूजै चंद्रपूजै इणसम ओरन दूजोलो ॥ पू० ॥ अध्यातम जोगीसरध्यावै ॥ दरसण लागै मीठोलो ॥ पू० आ० १ ॥ सुर जन मोहै मुनिजन मोहै ॥ लागो रंग मजीठोलो ॥ पू० ॥ तेजपाल वस्तपाल करायो ॥ मोहन मंदर दीठोलो ॥ पू० २॥ बारै कोडी मुद्रा ऊपर लागा तेपन लाखैलो ॥पू०॥ इतनो धन खरच्यौ भवि प्राणी ॥ संघ सकलनी साखेलो ॥ पू० ३ ॥ च्यारसै अडसठ सुंदर सोहै । जिन वर बिंब उदारीलो ॥ पू० ॥ सुमतिसदा जिनवर जशगावै ॥ तीरथनी बलि-हारीलो ॥ पू० । आ० ४ ॥ इति आबू गिरपदं ॥ १ ॥

॥ ❋ ॥ अथ सहस्रकूटजी पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ श्री जिनवर प्रणमी करी । भावधरी भरपूर । अनु भव गुण निरमल करी । वंदुं जिनवर सूर ॥ १ ॥ उघे श्री जिनराजनी । सं ख्या आगम जेह । गुरुमुख जे इमसांभली । ते सुंणजो धर नेह ॥ २ ॥ स हसकूटनी थापना । करियै विध विसतार । पूजरचावो नवनवी । अष्ट दि वस सुविचार ॥ ३ ॥ श्री सेत्रुंजा ऊपरै । सहसकूटनो भाव । ते देखी भ वि उरधरो । सेवो जिनवर पाव ॥ ४ ॥ अष्ट द्रव्य लेईकरी । तन मन उ

झलझाव । गीतनृत्य प्रनू आगलै । कर पूजन गुणगाव ॥ ५ ॥ सधव सुहागण सुंदरी । सजसोलै सिणगार । प्रनु आगै मंगल करै । पावै हरख अपार ॥ ६ ॥ निरमल जल कलशा नरी । स्नात्र करै नविसार । सहसकूट जिनराजनी । महिमा अधिक उदार ॥ ७ ॥ ❋ ॥ (ढाल) ॥ ❋ ॥ आज आयोरे उन्नाह । जीवमा नाच० (ए चाल) ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ आज हरख अपार । जिनवर पूजन करियैरे ॥ आ० ॥ पंचनरत वलि ऐरवत पंच । इण दश खेत्रतणा जिणसंच ॥ आज० ॥ दक्षिण उत्तर नरते जाण । अतीत अनागतनें वर्त्तमान ॥ १ ॥ आज० ॥ इणपर गिणतां जिनवर थाय । सातसै वीश अधिक कहवाय ॥ आ० ॥ तीश चौवीशी वंदुं एह । तारण तरण नविक गुण गेह ॥ आ० ॥ २ ॥ परमातम परमेशर जांण । एहनी आणकरो परमांण ॥ आ० ॥ जिनसम अवरन दूजो देव । सुरवर मुनिवर करतासेव ॥ आ० ॥ ३ ॥ अतिशयवंत महंत उदार । सुर नर मोहै देख दीदार ॥ आ० ॥ वारिजाउं एहनी वार हजार । मुझ प्रीतम एही अवधार ॥ आ० ॥ ४ ॥ करता नूमंमल उपगार । जगनायक जिनवर जयकार ॥ आज० ॥ नावधरी वंदुं जगसार । सुमति सदा दीजे किरतार ॥ आ० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं परमा० । श्री सहसकूट जिनेंद्राय जलं यजामहे ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ द्वितीय चंदन पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ वर्त्तमान जिन वंदियै । तीन चौवीसी मांह । रुषनादिक जिनपूजतो । दिन २ हरख उन्नाह ॥ १ ॥ कुंकम चंदन मृगमदै । अंबर सुगंध विशाल । श्री जिनवर पूजन करो । नावधरी गुणमाल ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ ❋ ॥ अबतो उधारचो मोहि चहियै जिनंदराय (ए चाल) ॥❋॥ वर्त्तमान जिनपूजन करकै । तन मनको सब पाप हरोरे ॥ वर्त्त० ॥ रुषन्न अजित संनव अभिनंदन । सुमति सदा जिनराज खरोरे ॥ वर्त्त० ॥ १ ॥ पदम सुपास जिनंद सुसेवो । चंद्रप्रनु चित चाह धरोरे । सुविध शीतल जिन अंतर जांमी । श्री श्रेयांस जिनेंद्र वरोरे ॥ वर्त्त० ॥ २ ॥ वारमो वाशपूज्य जिन नमनें । मिथ्यातम सब दूर करोरे । विमल अनंत धरम जिन नमतां ।

गायो । भेटतां हरख अतिपायो ॥ गि० ॥ आबूगिरिंद सुखदायो । सघन घन रूखसें छायो । खरा जिनचंद सूरिराजा । तपै जग भानज्युं ताजा गि० ॥ १ ॥ क्षमा कल्याणके पाजा ॥ विविध गुण ज्ञानके भाजा ॥ धरम विशाल तसुनंदा ॥ कहै युं सुमति सुख कंदा ॥ गि० ॥ २ ॥ संवत उगणीस चालीसै । प्रेमधर अधिक सुजगीसै ॥ भजो तुम देव जगदीसै । फलैसब आस निस दीसै ॥ गि० ३ ॥ देवांके देव मनभाया ॥ पूजतां संपदा पाया ॥ बीकाणें सहरमें राजै ॥ जगत जस ताहरो गाजै ॥ गि० ४ ॥ आदि जिन पूज सुख काजै ॥ नमत प्रभु पाप सहुभाजै ॥ सकल जन भावसें ध्यावै ॥ मोहन मुनि प्रेमसें गावै ॥ गि० ॥ ५ ॥ इति श्री आबू गिरि श्री आदीस्वर जिन गुण महिमा वर्णन सुमति मंडणजी पाठककृत पूजा संपूर्णम् ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ आबूजीको स्तवन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अईत २ नाटक नाचे आदी सरके आगेलो अ० ॥ एचाल ॥ पूजो पूजो तीरथ पूजो ॥ आबू तीरथ पूजोलो ॥ पूजो० ॥ इंद्र पूजे चंद्रपूजे इणसम ओरन दूजोलो ॥ पू० ॥ अध्यातम जोगीसरध्यावै ॥ दरसण लागे मीठोलो ॥ पू० आ० १ ॥ सुर जन मोहै मुनिजन मोहै ॥ लागो रंग मजीठोलो ॥ पू० ॥ तेजपाल वस्तपाल करायो ॥ मोहन मंदर दीठोलो ॥ पू० २॥ बारे कोडी मुद्रा ऊपर लागा तेपन लाखैलो ॥पू०॥ इतनो धन खरच्यौ भवि प्राणी ॥ संघ सकलनी साखेलो ॥ पू०३ ॥ च्यारसै अडसठ सुंदर सोहै । जिनवर बिंब उदारीलो ॥ पू० ॥ सुमतिसदा जिनवर जशगावै ॥ तीरथनी बलिहारीलो ॥ पू० । आ० ४ ॥ इति आबू गिरपदं ॥ १ ॥

॥ ❋ ॥ अथ सहस्रकूटजी पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ श्री जिनवर प्रणमी करी । भावधरी भरपूर । अनुभव गुण निरमल करी । वंदुं जिनवर सूर ॥ १ ॥ उवे श्री जिनराजनी । संख्या आगम जेह । गुरुमुख जे इमसांभली । ते सुंणजो धर नेह ॥ २ ॥ सहसकूटनी थापना । करिये विध विसतार । पूजरचावो नवनवी । अष्ट दिवस सुविचार ॥ ३ ॥ श्री सेत्रुंजा ऊपरै । सहसकूटनो भाव । ते देखी भवि उरधरो । सेवो जिनवर पाव ॥ ४ ॥ अष्ट द्रव्य लेईकरी । तन मन उ

ळालजाव । गीतनृत्य प्रभू आगले । कर पूजन गुणगाव ॥ ५ ॥ सधव सुहागण सुंदरी । सझसोले सिणगार । प्रभु आगे मंगल करे । पावे हरख अपार ॥ ६ ॥ निरमल जल कलशा भरी । स्नात्र करे भविसार । सहस कूट जिनराजनी । महिमा अधिक उदार ॥ ७ ॥ ❋ ॥ (ढाल) ॥ ❋ ॥ आज आयोरे उछाह । जीवरा नाच० (ए चाल) ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ आज हरख अपार । जिनवर पूजन करियेरे ॥ आ० ॥ पंचभरत वलि ऐरवत पंच । इण दश खेत्रतणा जिणसंच ॥ आज० ॥ दक्षिण उत्तर भरते जाण । अतीत अनागतनें वर्तमान ॥ १ ॥ आज० ॥ इणपर गिणतां जिनवर थाय । सातसे वीश अधिक कहवाय ॥ आ० ॥ तीश चौवीशी वंदुं एह । तारण तरण भविक गुण गेह ॥ आ० ॥ २ ॥ परमातम परमेशर जांण । एहनी आणकरो परमांण ॥ आ० ॥ जिनसम अवरन दूजो देव । सुरवर मुनिवर करतासेव ॥ आ० ॥ ३ ॥ अतिशयवंत महंत उदार । सुर नर मोहे देख दीदार ॥ आ० ॥ वारिजाउं एहनी वार हजार । मुझ प्रीतम एही अवधार ॥ आ० ॥ ४ ॥ करता भूमंडल उपगार । जगनायक जिनवर जयकार ॥ आज० ॥ भावधरी वंदुं जगसार । सुमति सदा दीजे किरतार ॥ आ० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं परमा० । श्री सहसकूट जिनेंद्राय जलं यजामहे ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ द्वितीय चंदन पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ वर्त्तमान जिन वंदिये । तीन चौवीसी मांह । ऋषभादिक जिनपूजतो । दिन २ हरख उछाह ॥ १ ॥ कुंकम चंदन मृगमदे । अंबर सुगंध विशाल । श्री जिनवर पूजन करो । भावधरी गुणमाल ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ ❋ ॥ अबतो उधारयो मोहि चहिये जिनंदराय (ए चाल) ॥ ❋ ॥ वर्त्तमान जिनपूजन करके । तन मनको सब पाप हरोरे ॥ वर्त्त० ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन । सुमति सदा जिनराज खरोरे ॥ वर्त्त० ॥ १ ॥ पदम सुपास जिनंद सुसेवो । चंद्रप्रभु चित चाह धरोरे । सुविध शीतल जिन अंतर जांमी । श्री श्रेयांस जिनेंद्र वरोरे ॥ वर्त्त० ॥ २ ॥ बारमो वाशपूज्य जिन नमनें । मिथ्यातम सब दूर करोरे । विमल अनंत धरम जिन नमतां ।

रुद्ध सिद्धको भंभार भरोरे ॥ वर्त्त० ॥ ३ ॥ शांति कुंथु अर मल्लि जिनेसर । मुनिसुव्रत दिलध्यांन करोरे । नमि नेमी श्रीपाश जिनेसर । बीर सदा मुझ नाथ खरोरे ॥ व० ॥ ४ ॥ ए चौवीशे जिन गुण गावत । संपद सुखकी सेज वरोरे । सुमति कहै जिन पूजन करकै । लुल २ जिनके पाय परोरे ॥ व० ॥ ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ परमा० । सहसकूट जिनेंद्राय चंदनं यजामहेः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (३) पुष्पमाल पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहाः) ॥ पुष्पमाल गुंथी करी । कंठ ठवो जिनराज । सुमति सुगंधी विसतरे । लाभ अनंत समाज ॥ १ ॥ अतीत चौवीसी वंदियै । आंणी भाव प्रधान । मनवंछित पूरण सदा । परतिख कल्प समांन ॥ २ ॥ (ढाल) ॥❋॥ श्री चंद्राप्रभु जिनवर साहिब । सुणियै० मैंवारि० (एचाल)॥

॥ ❋ ॥ केवल ज्ञांनीनै निरवांणी । सागर महा जशकारा (मैं वारि जाउं सा०) के० ॥ विमलनाथ निरमल गुणधारक । सर्वानुंभूति उदारा ॥ (मैं० स०) के० ॥ १ ॥ श्रीधर दत्त जिनवर उपगारी । दामोदर अविकारा ॥ मैं० दा० ॥ अधिक सुतेज जिनेसर सांमी । मुनि सुब्रत गुणकारा ॥ २ ॥ (मैं० मु०) के० ॥ २ ॥ श्री सुमती शिवगति जिनपूजो । अस्तंग नमी सुनि प्यारा ॥ (मैं० अ०) ॥ अनिल यशोधर जिनवर सेवो । किरतारथ मनुहारा ॥ (मैं० कि०) के० ॥ ३ ॥ श्री जिनराज जिनेसर वंदो । शुद्धमती शिवकारा ॥ (मैं० सु०) ॥ स्यंदन संप्रति जिन चौवीशे । सुमति सदा गुणकारा ॥ (मैं० सु०) के० ॥ ४ ॥ ❋ ॥ ॐ ह्रीँ परमा० श्री सहसकूट जिनेंद्राय पुष्पं यजामहेः ॥ ३ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (४) धूप पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ भावी जिनवर वंदियै । द्रव्य भाव सुविचार । पदमनाभ आदिक प्रभु । वंदूं वारं वार ॥ १ ॥ कृष्णागर मृगमद तगर । अंबर तुरक लोबांन । धूप करो जिन राजनें । पावो सुख असमांन ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ संभव जिन सुखकारी रे । वाला संभ (एचाल) ॥ ❋ ॥

॥❋॥ पदमनाभ सुखकारी रे वाला ॥ प० ॥ (हां रे हो रे वाला) वारीजाउं वार हजारी रेवाला ॥ प० ॥ सूरदेव जिन वंदु भावे । सुपारस ब्रह्मचारी रे ।

वा० प० ॥ १ ॥ स्वयं प्रभु जिन अंतरजांमी । सर्वानुभूत उदारी । देवश्रुती जिनपर उपगारी । उदय पेढाल विचारीरे । वा० ॥ प० ॥ २ ॥ पोटल जिन शत किर्त्ती कहिये । सुव्रत जिन हितकारी । अमम जिनेसर वारमो कहिये । निकषाय गुणधारी रे । वा० प० ॥ ३ ॥ निष्पुलाक जिन पनरमो सेवो । महिमा अधिकउभारी । सोलम निरमम जिनवर भावे । सेवकरो इकतारी रे । वा० ॥ प० ॥ ४ ॥ चित्र गुपति चितचाह धरीनें । समाधि सेवो सुविचारी । संवर जिनगुण मणिके आगर । जस्सोधर जशधारी रे । वा० ॥ प० ॥ ५ ॥ विजयमल्लि देवज जिन पूजो । अनंतवीरज शुभचारी भावकरी भद्रंकर सेवो । एहीज निजगुण धारीरे । वा० ॥ प० ॥ ६ ॥ भावी जिनवर उत्तम कहिये । चरण कमल वलिहारी । सुमति कहै तन मन कर उजल । सेवोजिन इकतारी रे । वा० ॥ प० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ परमा० सहस कूटजिनेंद्राय धूपं० ॥ ४ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (५) दीपक पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहाः) दीपक कंचन मय करी । पूजो जग भरतार । धातकी पूरव खंडमें । भरत तणा जिनसार ॥ १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (ढाल) ॥ तुमविन दीनानाथ दयानिध कोन० ॥ (ए चाल)

॥ ❋ ॥ धातकी खंडे पूरव भरते । अतीत चोवीसी वंदोरे । धा० । रतन प्रभूनें अभल प्रभूजी । असंभव जिन चंदोरे । धात० ॥ १ ॥ श्री अकलंक चंद्रा प्रभु प्रणमुं । सुभंकर सुखकंदोरे । सपत नाथ जिन सुंदर भावे । नाथ पुरंदर इंदोरे ॥ धा० ॥ २ ॥ श्रीस्वामी जिन देव दत्तजी । वासवदत्त सुनंदोरे । श्रीश्रेयांस जिनेसर वंदो । वीरस्वरूप आनंदो रे ॥ धा० ॥ ३ ॥ श्रीतप तेज दिवाकर सेवो । श्रीप्रतिबोध सुदेवो रे । श्रीसिद्धारथ जिनवर पूजो । स्यंदन जिणगुण देवो रे । धा० ॥ ४ ॥ अमल नाथ देवेंद्र सुपूजो । प्रवचन नाथ सुचंदोरे । विश्वानन जिनदेव सुवंदो । मेघ अधिक गुण वृंदोरे ॥ धा० ॥ ५ ॥ श्रीसर्वज्ञ जिनेसर वंदो । चौवीसम मुनिचंदोरे । धातकी खंडे पूरवभरते । अनागत जिनवृंदोरे ॥ धा० ॥ ६ ॥ इमहीज धातकी पूरव भरते । वर्त्तमान सुखकंदोरे । सुमतिसदा जिनराज

कृपासैं। लहै सदा आनंदोरे ॥ धा० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमा०। सहसकूट जिनेंद्राय दीपं यजामहेः ॥ ❋ ॥ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (६) अक्षत पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा)॥ पश्चिम धातकीखंडमैं। भरतैं जिनवर सार। अतीत चौवीशी एकहुं। सांभलजो सुविचार ॥ १ ॥ उज्जल तंदुल लेयनैं। मंगलकर भविसार। निरमलगुण प्रगटैसही। पूजन जग भरतार ॥ २ ॥ (ढाल) पास जिणंदा प्रभू मेरे मनवसीआ ॥ पा० ॥ (एचाल)॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अतीत चौवीसी सेवो भवि रसिआ ॥ अ०। से० ॥ पश्चिम धातकी भरतैं सोहैं। एजिनराज सकल मन वसिआ ॥ स०। अ० ॥ वृषभनाथ महाराज विराजै। श्रीप्रियमित्र अधिकगुणं रसिआ। अ० ॥ अ० ॥ १ ॥ शांति जिनेसर जग उपगारी। समुद्रनाथ सेवो भविरसिआ। से०। अजित जिनेसर जग जयकारी। श्रीअव्यक्त सकल सुख रसिया। स० ॥ अ० ॥ २ ॥ कलासित जिनजनके दीपक। सरब जीत जिन अधिक दरासिआ ॥ अ०। प्रबुध जिनेसर नवमो कहियै। दशमो प्रव्राजित अधिक उलसिआ। अ० ॥ अ० ॥ ३ ॥ श्रीसोधरम जिनेसर वंदो। तमोधि दीपए नांम दरसिआ। नां०। वज्रशेन श्रीबुद्ध जिनेसर। प्रबंधनाथ जगके दुख घसिआ। ज० ॥ अ० ॥ ४ ॥ अजित प्रमुख पल्योपम वंदो। अकोप जिनंद सब पाप तरासिआ। स० निष्टित जिन मृगनाभ सुसेवो। देवेंद्रनाथ मुझमनमैं वसिआ। म०। अ०। ॥ ५ ॥ प्रयछित जिन वंदुं उपगारी। चौवीशम शिवनाथछे रसिआ। ना०। पश्चिम भरते धातकी खंडै। वर्त्तमान अनागत रासिआ। अ० ॥ अ० ॥ ॥ ६ ॥ इण विधजो भविपूज करतहै। तसु मन वंछित मेघ वरसिआ। मे०। तीन चौवीशी एनितवंदो। सुमतिसदा ए ग्यांन दरासिआ। ग्यां०। अ० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमा० सहस० अक्षतं यजामहेः ॥ ६ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (७) नैवेद्य, फल पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहाः)॥ सातमी पूजा साचवै। फल नैवेद्य सुखकार। उत्तम फल पूजा करो। पावो सुक्ख अविकार ॥ १ ॥ पुरकरद्वीपै वंदियै। अतीत चौवीशी जेह। शाश्वयकी सुणजो सदा। अनुपम गुणके गेह

॥ २ ॥ (ढाल) ॥ जात्राजिनाणुं करियै विमलगिरि जा० (ए चाल) ॥ पुक्खरद्धीप सुवंदोरे । भविजन ॥ पु० ॥ पूरवभरते अतीत चौवीशी । सेव तभवि चिरनंदोरे । भ० ॥ पु० ॥ पदमचंद्र रक्तांग अजोगिक । सरवा रथ सुख कंदोरे । भ० ॥ पु० ॥ १ ॥ ऋखीनाथ हरिभद्र सुहंकर । गणा धिप मुनि इंदोरे । भ० ॥ पु० ॥ पारत्रक जिनकुं भविवंदो । ब्रह्मचारी सुखकंदोरे । भ० । पु० ॥ २ ॥ दीपक जिन बलिराज ऋखीसर । विशाख प्रभू जिनचंदोरे । भ० ॥ पु० ॥ अचितरवि श्रीसोम जिनेसर । जयश्री मो क्ष जिनंदोरे । भ० ॥ पु० ॥ ३ ॥ अग्नीभानुं धनुख सुवंदो । सेमांचित चि रनंदोरे । भ० ॥ पु० ॥ प्रसिद्धनाथ श्रीजिनवरइंदो । वंदी पाप निकंदोरे भ० । पु० ॥ ४ ॥ इम हीज वर्त्तमांन जिनपूजी । अनागत जिन वंदोरे । भ० । पु० । सुमतिकहै जो जिनवर पूजै । तेहीज जगमांणि चंदोरे । भ० पु० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने । सहस कूट० नैवेद्यं फलं यजामहे ॥ ७ ॥❋॥

॥ ❋ ॥ अथ (८) वस्त्रपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहाः) वस्त्रयुगल प्रभु आगलै । ढोवो भविक उदार । जंबू ऐरवत खेत्रमें । पूजो जिनवर सार ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ आज हुं ग ईथी समवसरणमें । (ए चाल) ॥ ❋ ॥ जंबूद्धीपे ऐरवरतमें । इमहीज जिनवर छाजेरी (वारी इम०) जं० ॥ तीन चोवीशी गिणतां भविज न । वहुत्तर जिन पति राजेरी । वा० व० ॥ जं० १ ॥ गुरुमुखथी अ वधारो भविजन । परमातम गुण साजेरी । वा० । प० ॥ जं० ॥ भाव धरी पूजन भवि करतां । कुमति कुटलता लाजेरी । वा० । कु० जं० ॥ २ ॥ इमहीज धातकी पूरव मांहे । ऐरवतखेत्र सुकाजेरी । तीन चोवीशी नित २ नमियै । वोधलता गुण वाजैरी । वा० । वो० ॥ जं० ॥ ३ ॥ इमहीज धा तकी पश्चिमसोहै । ऐरवतखेत्र सुभ्राजेरी । वा० । ऐ० ॥ जं० ॥ ४ ॥ ज गत जंतु करुणानिध स्वांमी । अमृत वाणि सुगाजेरी । वा० । अ० । जं० ॥ सुमति कहै ए जिनवर पुजो । उपगारी सिरताजेरी । वा० । उ० । जं० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ परमा० । सहस कूट जिनेंद्राय । वस्त्रं यजामहेः ॥ ८ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (९) ध्वज पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहाः) वीशजिनेसर शास्वता । पंचविदेह मझार । सीमंधर आदे करी । प्रणमुं वारहजार ॥ १ ॥ गगन वीच अदभुतवणी । पंचवरण विकसंत । नवमीध्वज पूजा करी । लेवो लाभअनंत ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ सेत्रुंजानो वासी प्यारो लागे म्हांराराजिंदा (ए चाल॰) ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ विहरमांन भवि ध्यावो म्हांराराजिंदा । ध्या॰ ॥ वि॰ ॥ सीमंधर जुगमंधर स्वांमी । वाहु सुबाहु सुहावे । म्हां॰ ॥ वि॰ ॥ श्रीसुजात स्वयंप्रभु सेवो । रुषभानन मनभावे । म्हां॰ ॥ वि॰ ॥१॥ अनंत वीरज सिरी सूरप्रभूजी । दशमो विशाल कहावे । म्हां॰ ॥ वज्रधर जिन भवि सेवो जुगते । वोधवीज उपजावे । म्हां । वि॰ ॥ २ ॥ चंद्रानन जिन चंद्रवाहूजी । भुजंग ईशर सुखपावे । म्हां॰ । नेमप्रभू जिन गुण मणि दरियो । वीरसेन मुनिरावे । म्हां ॥ वि॰ ॥ ६ ॥ अठारम महाभद्र सुशेवो । देवजशा नित ध्यावो ॥ म्हां॰ ॥ अजित वीरज जिनवीशमो ध्यावो । देख्यां हरख नमावे । म्हां॰ । वि॰ ॥ ४ ॥ पंचविदेहै एजिनसोहै । सोवन वरण सुहावे ॥ म्हां॰ ॥ चौरासीलख पूरव आयु । शाशता एहिजपावे । म्हां॰ । वि॰ ॥ ५ ॥ परमपुरख एवीश जिनेसर । ए जगसार कहावे ॥ म्हां॰ ॥ सुमति कहै ए जिनवर पूजो । निजगुण ज्युं भवि आवे । म्हां॰ वि॰ ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ परमा॰ सहस कूट॰ ध्वजं यजामहेः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ अष्टमंगल पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा ॥ पंचविदेहै शासता । एकसो साठ जिनंद । कल्या णक जिनराजना । पूजो अधिक आनंद ॥ १ ॥ सधव मिली प्रभु आग लै । मंगल आठकरंत । तन मन उजल भावसुं । हृदयकमल विकसंत ॥ ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ ❋ ॥ (हांहोरे देवा) वावना चंदन घस॰ (ए चाल)

॥ ❋ ॥ (हांहोरे देवा) पंचविदेह विराजता । उतकृष्टा सहु जिनराजए । हांहो॰ ॥ एकसो साठ सुहंकरा । जगवंधव जग शिरताजए ॥ हां॰ ॥ जनमसमें त्रिहुं लोकमें । हरखित हुवै सहु सुरराजए ॥ हां॰ ॥ चौसठ सुरपति भावसुं । उछव करे हित सुख काजए ॥ २ ॥ हां॰ ॥ च्यवन जनम

दिख्या सही । केवल मोक्ष शुभराजए ॥ हां० ॥ चौवीशे जिनराजना । कल्याणक वलि सुसमाजए ॥ ३ ॥ हां० ॥ पंच पंच गिणती करयां । एक सोबीश शुभराजए ॥ हां० ॥ च्यार जिनेसर शासता । ऋषभानन जिनगुण राजए ॥ ४ ॥ हां० ॥ चंद्रानन बीजोनमुं । वारखेण तीजो महाराजए ॥हां०॥ वरधमान नितवंदिये । ए च्यारे शुभगुण पाजए ॥ ५ ॥ हां० ॥ द्रव्य भाव पूजन करो । भव जलनिधि तारण ज्याजए ॥ हां० ॥ सुमति सदा जिनराजना । पदवंदे हित सुख काजए ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं परमा० सहसकूट० अष्ट मंगल० यजामहेः ॥ १० ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ गीत, नृत्य पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहाः) ॥ गीत नृत्य गुणगावतां । थाये लाभ अनंत । भव्य सदा सेवन करे । हृदय कमल विकसंत ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ❋ ॥ अरे थारीगईरे अनादिनींद जरा टुकजोवोतो सही ॥ जो० ॥ (ए चाल) ॥ तनें देवेरे सुग्यांनीसीख जिनंद पद सेवोतो सही । सेवोतो सही मेराचेतन सेवोतोसही ॥ त० ॥ जिनवरकी वरणी दुखहरणी जोवोतो सही ॥ मे० जो० ॥ रायपसेणी मांहि हीयामें पोवोतो सही ॥ पो० मे० । त० ॥ १ ॥ भवदधिकी तरणी सुखकरणी लेवोतो सही ॥ मे० ले० ॥ तुंरुल्योरे अनंते काल अग्यांनी वेवोतो सही ॥ वे० मे० तनें० ॥ २ ॥ सम कितकी करणी मन हरणी सेवो तो सही ॥ ह्मां० से० ॥ परहरमान गुमांन जगत जश लेवो तो सही ॥ ले० । मे० ॥ तनें० ॥ ३ ॥ भविजनकी करणी जशभरणी वेवोतो सही ॥ मे० ॥ अजर अमर गुण होय करममल धोवोतो सही ॥ धो० मे० ॥ त० ॥ ४ ॥ इत्यादिक गुण गण जिन वरणी भावो तोसही ॥ मे० भा० ॥ गीत ग्यांन शुभ भाव हियामें ध्यावोतो सही ॥ ध्या० । मे० त० ॥ ५ ॥ मुनिवरकी करणी चितधरणी पावोतो सही ॥ मे० ॥ सुमति कहै गुरुग्यांन हियामें ल्यावोतो सही ॥ ल्या० मे० ॥ तनें० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं परमा० । सहसकूट जिनेंद्राय गीत नृत्य पूजनं ॥ ११ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ वाजित्र गुणपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ताल मृदंग सजी करी । प्रभू पूजो धरभाव । भ

गत करी जिन राजनी । समकित शुद्ध उपाय ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ❋ ॥ जिन गुण गावत सुरसुंदरीरे ॥ जिन० सु० ॥ (ए चाल) ॥ निरत करे मिल सुरसुंदरीरे ॥ नि० सु० ॥ थेई २ तान करै प्रभु आगै । गावत देवी सुर मधुरीरे ॥ नि० ॥ कंचू कसिया हरख उल्लसिया । ठमठम नाचत कवल करीरे ॥ नि० ॥ १ ॥ ताल कंशाल बिशाल अनोपम । गावत राग छत्तीस करीरे ॥ नि० ॥ जिनगुण गावत हरख वधावत । पावत निजगुण हरख भरीरे ॥ नि० ॥ २ ॥ तीन लोकको नाथ निरंजन । धरम धुरंधर तुंजिनरीरे ॥ नि० ॥ भव दुःख भंजन जन मन रंजन । अशरण शरण आनंद करीरे ॥ नि० सु० ॥ ३ ॥ अनंत गुणाकर सब सुख सागर । सेवत आपद दूरटरीरे ॥ नि० ॥ जगदीपक जगलोचन तूंही । तुंही जगत पिया महरीरे ॥ नि० सु० ॥ ४ ॥ इण विध नृत्य करी प्रभूआगल समकित सुद्ध उपाय खरीरे ॥ नि० ॥ सुमति कहै भविजन जिन पूजो। सफल जनम ए सफल घरीरे ॥ नि० सु० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ परमा० सहस कूट जिनेंद्राय नाटक पूजा ॥ १२ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ गुलाब जल ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ विविध सुगधं लेई करी । पूजन कर जिनराज । सुजश सुगंधी विस्तरै । प्रगटै पुन्यसमाज ॥ (चाल अंगरेजीवाजै की) ॥ आनंद कंद पूजतां जिनंद चंदहुं (ए चाल) ॥ पूज पूज जिन राज काजसारतुं । का० ॥ पू० ॥ जग जश धार सार सुःखकारतुं । अनंत ज्ञांन तूंही भांन हितकारतुं । हि० ॥ पू० ॥ १ ॥ केतकी गुलाव फूल चाढ सारतुं । मोगरो अभीरलाल अविकारतुं ॥ अ० पू० ॥ २ ॥ तुंही जगमात तात भरतारतुं । अत्तर सुगंध गंध भविढारतुं ॥ भ० पू० ॥ ३ ॥ केवमो चंपेल वेल अवधारतुं । परम आनंद चंद जिनसारतुं ॥ जि० पू० ॥ ४ ॥ भगत उधार सार किरतारतुं । मैंतोहुं आचारहीन मुनितारतुं ॥ मु० पू० ॥ ५ ॥ मुनिंद चंद पूजतां पाप टारतुं । एहीहै जिनंद देव भवि धारतुं ॥ भ० पू० ॥ ६ ॥ ढुंही है मुनीश ईश गुणकारतुं । सुमति आधारसार जय

कारखुं ॥ ज० पू० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ परमा० श्री सहसकूट जिनेंद्राय सुगंध जलं यजामहेः ॥ १३ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ कलश पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (ढाल) ॥ तेजरण मुखराजेहो प्रभू० ॥ (ए चाल) ॥ तेज अधिक जगगाजेहो । प्रभु थांरो ॥ ते० ॥ सहसकूट जिनवर सब पूजत । पुन्य अनंत सुकाजे । अतिशयवंत महंत जिनेसर । सुरतरु सम प्रभू गाजे हो ॥ ते० ॥ १ ॥ रूप अनूप करी सुर मोहै । देखत दुख सहु भाजै । खरतर गछपति चंदसूरीसर । तेज अधिक गुरु गाजैहो ॥ ते० ॥ २ ॥ प्रीतसागर गणी सिष्य सुवाचक । अमृत धरम सुराजै । शीश क्षमा कल्यांण सुपाठक । अमृत सम गुणराजैहो ॥ ते० ॥ ३ ॥ धरमविशाल मुनि गुरुदीवो तसुनंदन हितकाजे । सुमति कहै भवि भावधरीनें । पूजो श्री जिनराजैहो ते० ॥ ४ ॥ वीकानेर नगर अतिसुंदर । संघ सदा गुण राजै । प्रेमधरी पूजन एकरियै । वंछित हितसुख काजेहो ॥ ते० ॥ ५ ॥ उगणीसैं चालीशै मिगसर । सुद पंचमी शुभराजै । सुगुण निधांन मोहन मुनीगावै । निजगुण निरमल काजैहो ॥ ते० ॥ ६ ॥ इति सहस कूटजी पूजा संपूर्ण ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ सहसकूट स्तवन ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (ढाल) ॥ ❋ ॥ सहियांहे नेमीसर वनमैनें गिरना० ॥ ॥ ❋ ॥ साहियांहे सहसकूट महाराज वंदो सब भावसुंहे माय ॥ वंदो० ॥ सहि० ॥ तीस चौवीशी पूजीयै हे माय ॥ स० ॥ विहरमांन भगवांन सेवो चित चाहसुं हेमाय ॥ से० ॥ स० ॥ १ ॥ एकसो साठ जिनेसरा हे माय । स० । उत्कृष्टा अवधार निरंजन ध्यावसुं हे माय नि० । स० ॥ २ ॥ एकसो वीश जिनंदना हे माय ॥ स० ॥ कल्यांणक सब होय । सेवो भवि दावसुं हे माय ॥ से० ॥ स० ॥ ३ ॥ च्यार जिनेसर शाशता हेमाय ॥ स० ॥ जयवंता जगदीश अधिक गुण गावसां हेमाय ॥ अ० । स० । ॥ ४ ॥ वहुत दिनांरो उमाहमो हे माय । स० । ते फलियो मुझ आज जिणंद पद सेवनां हे माय ॥ जि० ॥ स० ॥ ५ ॥ उछव अधिक सुहामणा हे माय । स० । खूबथया रंगरोल अधिक मन रंगसुं हेमाय । अ० ॥ स० ॥ ६ ॥

उगणीसै चालीशमें हे माय । स० । पोश माश सुखकार जगत कर जा वसुं हे माय । ज० ॥ स० ॥ ७ ॥ संघ सहू हरषै करी हे माय । सं० । पूज रची चितचाह वंछित सव पांमिया हे माय । वं० ॥ स० ॥ ८ ॥ धरम विशाल दयालनो हे माय । स० । सुमति कहै मन रंग सकल गुण दी जीयै हे माय । स० ॥ स० ॥ ९ ॥ इति सहसकूट जिनस्तवनं ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ सहसकूट स्वरूप, विधिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पांचभरत । ५ ऐरवत ॥ १० क्षेत्रोंमें । अतीत, अनागत, वर्तमान, तीनों कालकी अपेक्षायें ३० चौवीशी होय (अंके) ७२० हुवा । (तथा) ५ महाविदेहके एकसो आठ विजयमें १६० जिन होय (८८०) (तथा) २४ भगवानका १२० कल्याणक स्वरूप (अंके १०००) (तथा) ५ महाविदेहमें २० विहरमान ॥ ४ शाश्वता जिन (एवं सर्व १०२४ जिन स्वरूप) कों सहसकूट कहते है । सहसकूटजीको मंदर सिद्धगिरी तीर्थाधिराजके ऊपर, मूल नायकजीके पासमें अत्यंत मनोहरहै । (इसकी) उत्कृष्टभांगे प्रत्येक महाराजकी । प्रत्येक द्रव्यसें पूजन उच्छव करना होय (तो) आठदिन अठ्ठाई महोछव करै । रोकनाणो । नालेर, सुपारी विदाम, वस्त्र, दीपकादि, प्रत्येक द्रव्य १०२४ एकहजार चोवीश२ चढावै । इतनी शक्ति न होय तो यथाशक्ती महोछव साथ पूजा विधि गुरूके मुख सें जानके करे ॥ ❋ ॥ इति सहसकूट पूजन विधिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ पांचग्यान पूजा लिख्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ वर्द्धमान जिनचंदकुं । नमन करी मनरंग । पूज रचुं भवि प्रेमसुं । सांभलजो उछरंग ॥ १ ॥ पांचज्ञांन जिनवर कह्या । मति श्रुति अवधि प्रधान । मनपर्यव केवल बडो । दिनकर जोत समांन ॥ २ ॥ ज्ञांनबडो संसारमें । गुरु विन ज्ञांन न होय । ज्ञांनसहित गुरु वंदियै । सुचिकर तन मन होय ॥ ३ ॥ वीर जिणंद बखाणीयो । नंदीसूत्र मझार । भव्य सदा अनुभव धरो । पावो सुख श्रीकार ॥ ४ ॥ निरमल गंगोदक भरी । कंचन कलश उदार । श्रुतसागर पूजनकरो । भाव धरी भविसार ॥ ५ ॥ चितहरखधरी अनुभवरंगे वीश परमपदसेवियै (ए चाल) मति अ

तिह भवो शकल विमल गुण आगर भविजन सेवियै । (आंकणी) एमति ज्ञांन सदा नमियै । निजपाप सकल दूरै गमियै । मनशुद्धकरी निज गुण रमियै ॥ मति० ॥ १ ॥ व्यंजनकर अवग्रह इमजांणो । चउभेदकरी मनमें आंणो । इमभाखै श्रीजिन जगभाणो ॥ मति० ॥ २ ॥ अरथेंकरी भेद जिणंद आखै । पणइंद्रिय मनकर भहुदाखै । मुनि मांनस ते दिलमें राखै ॥ मति० ॥ ३ ॥ वलि षटविध भेद ईहा कहिये । षटभेद अपाय करी लहियै । षटविध धारण भवि सरदहियै ॥ मति० ॥ ४ ॥ इमभेद अठाईस भविधारो । इमभाखे जिनवर सुखकारो । निश्चय व्यवहारते अवधारो ॥ मति० ॥ ५ ॥ वलिरतन जडित कंचन कलशै । भविपूजन कर तन मन उलसै । चिदरूप अनूप सदा विलसै ॥ मति० ॥ ६ ॥ एज्ञांन दिवाकर समकहियै । इम सुमति कहै दिलमें गहियै । एज्ञांनथी अनुपम सुख लहियै ॥ मति० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्मने अनं० जन्म० श्रीम० ॥ श्रीमति ज्ञान धारकेभ्यः । जलंयजामहे स्वाहाः ॥ १ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (२) श्रुतज्ञान पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ श्रुत धारक पूजा करो । भाव धरी मनरंग । उपगारी शिरसेहरो । भावो जिन उछरंग ॥ १ ॥ मृगमद चंदन वाससूं । जो पुजे श्रुतअंग । अनुभव सुख प्रगटे सही । पामें सुरक अभंग ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ नाभजीके नंदाजीसें लग्यामेरा नेहरा । (ना० ए चालमें) ॥ श्रुतजाकी पूजा कर सीखो भवी सेहरा । श्रु० । विनय सहित गुरुवंदन करके लुल२ पायनमें गुरुदेवरा ॥ श्रुत० ॥ १ ॥ तीन तीश आशातन टाली । भगतिकरे भवि गुण गण गेहरा ॥ श्रुत० ॥ श्रीगुरु ज्ञान अखंडित वरसे । ज्युं पावस रुत वरसे मेहरा ॥ श्रुत० ॥ २ ॥ दशविध विनयकरे श्रुतगुरुको सेवेज्युं अलिफूलनें नेहरा ॥ श्रुत० ॥ गुण मणि रयण भरयो श्रुतसागर । देख दरश हरखावे मेरा जीवरा ॥ श्रुत० ॥ पूछन वायन वलि२ करियै । सीखे वंछित ज्युं मुनिसेवरा ॥ श्रुत० ॥ गुरुभगती जैसी गणधरकी । वीर कहे सुण गोतम सेहरा ॥ श्रुत० ॥ ऐसें गुरुभक्तीसें सीखो । ए श्रुतज्ञान सकल सुखदेहरा ॥ श्रुत० ॥ गुरुविन औरन को उपगारी । गुरु देव सदा

जगणीमें चालीशमें हे माय । सु० । पोश माश सुखकार जगत कर जा वसुं हे माय । ज० ॥ सु० ॥ ७ ॥ संघ सहु हरषे करी हे माय । सं० । पूज रची चितचाह वंछित सब पांमिया हे माय । वं० ॥ सु० ॥ ८ ॥ धरम विशाल दयालनो हे माय । स० । सुमति कहे मन रंग सकल गुण दी जीये हे माय । स० ॥ स० ॥ ९ ॥ इति सहसकूट जिनस्तवनं ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ सहसकूट स्वरूप. विधिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पांचभरत । ५ ऐरवत ॥ १० क्षेत्रोंमें । अतीत· अनागत· वर्तमान· तीनों कालकी अपेक्षायें ३० चौवीशी होय (अंके) ७२० हुवा । (तथा) ५ महाविदेहके एकसो आठ विजयमें १६० जिन होय (८८०) (तथा) २४ भगवानका १२० कल्याणक स्वरूप (अंके १०००) (तथा) ५ महाविदेहमें २० विहरमान ॥ ४ शाश्वता जिन (एवं सर्व १०२४ जिन स्वरूप) कों सहसकूट कहते है । सहसकूटजीको मंदर सिद्धगिरी तीर्थाधिराजके ऊपर· मूल नायकजीके पासमें अत्यंत मनोहरहै । (इसकी) उत्कृष्टभांगे प्रत्येक महाराजकी । प्रत्येक द्रव्यसें पूजन उच्छव करना होय (तो) आठदिन अठाई महोछव करे । रोकनाणो । नालेर· सुपारी बिदाम· वस्त्र, दीपकादि; प्रत्येक द्रव्य १०२४ एकहजार चोवीश२ चढावे । इतनी शक्ति न होय तो यथाशक्ती महोछव साथ पूजा विधि गुरुके मुख सें जानके करे ॥ ❋ ॥ इति सहसकूट पूजन विधिः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ पांचग्यान पूजा लिख्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ वर्द्धमान जिनचंदकुं । नमन करी मनरंग । पूज रचुं भवि प्रेमसुं । सांभलजो उछरंग ॥ १ ॥ पांचज्ञांन जिनवर कह्या । मति श्रुति अवधि प्रधान । मनपर्यव केवल वडो । दिनकर जोत समांन ॥ २ ॥ ज्ञांनवडो संसारमें । गुरु विन ज्ञांन न होय । ज्ञांनसहित गुरु वंदिये । सुचिकर तन मन होय ॥ ३ ॥ वीर जिणंद वखाणीयो । नंदीसूत्र मझार । भव्य सदा अनुभव धरो । पावो सुख श्रीकार ॥ ४ ॥ निरमल गंगोदक भरी । कंचन कलश उदार । श्रुतसागर पूजनकरो । भाव धरी भविसार ॥ ५ ॥ चितहरखधरी अनुभवरंगे वीश परमपदसेविये (ए चाल) मति श्रु

तिह जलो शकल विमल गुण आगर जविजन सेविये । (आंकणी) एमति ज्ञांन सदा नामियै । निजपाप सकल दूरे गमियै । मनशुद्धकरी निज गुण रमिये ॥ मति० ॥ १ ॥ व्यंजनकर अवग्रह इमजांणो । चउजेदकरी मनमें आंणो । इमजाखै श्रीजिन जगजाणो ॥ मति० ॥ २ ॥ अरथेंकरी जेद जिणंद आखे । पणइंद्रिय मनकर मजुदाखे । मुनि मांनस ते दिलमें रा खे ॥ मति० ॥ ३ ॥ बलि षटविध जेद ईहा कहिये । षटजेद अपाय करी लहिये । षटविध धारण जवि सरदहियै ॥ मति० ॥ ४ ॥ इमजेद अ ठाईस जविधारो । इमजाखे जिनवर सुखकारो । निश्चय व्यवहारते अवधा रो ॥ मति० ॥ ५ ॥ बलिरतन जडित कंचन कलशै । जविपूजन कर तन मन उलसे । चिदरूप अनूप सदा विलसैं ॥ मति० ॥ ६ ॥ एज्ञांन दिवाक र समकहियै । इम सुमति कहै दिलमें गहियै । एज्ञांनथी अनुपम सुख ल हियै ॥ मति० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनं० जन्म० श्रीम० ॥ श्रीमति ज्ञान धारकेभ्यः । जलंयजामहे स्वाहाः ॥ १ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (२) श्रुतज्ञान पूजा लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ श्रुत धारक पूजा करो । जाव धरी मनरंग । उप गारी शिरसेहरो । जावो जिन उछरंग ॥ १ ॥ मृगमद चंदन वाससूं । जो पूजे श्रुतअंग । अनुजव सुध प्रगटे सही । पामें सुरक अजंग ॥ २ ॥ (ढाल) ॥ नाजजीके नंदाजीसें लग्यामेरा नेहरा । (ना० ए चालमें) ॥ श्रुतजाकी पूजा कर सीखो जवी सेहरा । श्रु० । विनय सहित गुरुवंदन करके लुल२ पायनमें गुरुदेवरा ॥ श्रुत० ॥ १ ॥ तीन तीश आशातन टाली । ज गतिकरे जवि गुण गण गेहरा ॥ श्रुत० ॥ श्रीगुरु ज्ञान अखंडित वरसे । ज्युं पावस रुत वरसे मेहरा ॥ श्रुत० ॥ २ ॥ दशाविध विनयकरे श्रुतगुरुको सेवेज्युं आलिफूलनें नेहरा ॥ श्रुत० ॥ गुण मणि रयण जरयो श्रुतसागर । देख दरश हरखावे मेरा जीवरा ॥ श्रुत० ॥ पुछन वायन जलि२ करिये । सीखै वंछित ज्युं मुनिसेवरा ॥ श्रुत० ॥ गुरुजगती जैसी गणधरकी । वी र कहै सुण गोतम सेहरा ॥ श्रुत० ॥ ऐसें गुरुजक्तीसें सीखो । ए श्रुतज्ञान सकल सुखदेहरा ॥ श्रुत० ॥ गुरुविन औरन को उपगारी । गुरु देव सदा

गुण मणिके जेवरा ॥ श्रुत० ॥ ऐसें गुरुकी कीरत करके । सुमति धरो दिलमें गुण गेहरा ॥ श्रु० ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ नितनमिये थिवर मुनीसरा नि० (ए चालमें) ॥ ❁ ॥ नितनमियै श्रुतधर मुनिवरा ॥ नि० ॥ अरथै श्री जिनराज वखाणें । सुत्रै श्री गुरु गणधरा ॥ नि० ॥ १ ॥ मेघधुनी जिम भविजन सुणके । हरसै ज्युं केकी वरा ॥ नि० ॥ अंग इग्यारै गुण मणि धारक । बारै उपांग उजागरा ॥ नि० ॥ २ ॥ जगत उधारण तुंपरमेशर । सकल विमल गुण आगरा ॥ नि० ॥ छेद पयन्ना नंदी सेवो । मूलसूत्र भवि गुण करा ॥ नि० ॥ ३ ॥ श्रुतधारी गोतम गुण दीवो । पूरब चउद विद्याधरा ॥ नि० ॥ पहिलो आचारंग वखांणों । चरण करण गुण सुखकरा ॥ नि० ॥ ४ ॥ दूजो सुयगडांग सुणीजे । भेद तिशय तेसठखरा ॥ नि० ॥ तीजो ठांणांगसूत्र विराजे । सुणतां पापमिटैपरा ॥ नि० ॥ ५ ॥ चौथोसमवायांग सुहावै । अरथ अनेक करीवरा ॥ नि० ॥ पंचमें भगवई महिमा करियें । सहसछत्तीश प्रशन धरा ॥ नि० ॥ ६ ॥ छठो ज्ञाता अंग सु ध्यावो । धरमकथा कहै जिनवरा ॥ नि० ॥ सातमो अंग उपाशक कहियै । दशश्रावक प्रतिमा धरा ॥ नि० ॥ ७ ॥ आठमअंगे जिनवरदाखै । अंतगरू केवलि मुनिवरा ॥ नि० ॥ नवमें अंगे भविसुनधारो । अनुत्तरवाई शुभकरा ॥ नि० ॥ ८ ॥ प्रश्णविचार कह्या जिन दशमें । अंगुष्टादिक शुभतरा ॥ नि० ॥ अंगइग्यारमें जिनवर दाखें । कर्मविपाक विविध परा ॥ नि० ॥ ९ ॥ वारमोअंग जिणंद वखांणें । अतिशय गुण विद्याधरा ॥ नि० अक्षरश्रुत वलिसन्नी कहियें । सम्यकभेद अधिकतरा ॥ नि० ॥ १० ॥ सादिभेद सपरजव लहियै । गम्यकभेद सुणोनरा ॥ नि० ॥ अंगप्रविष्ट कहै जिनवरजी । भेदचवद सुणजो खरा ॥ नि० ॥ ११ ॥ इमजो श्रीश्रुतज्ञान आराधो । भाव भगत कर बहुपरा ॥ नि० ॥ सुमति कहै गुरु ज्ञान आराधो । वंछित पूरण सुरतरा ॥ नि० ॥ १२ ॥ ॥ ❁ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० श्रीश्रुतज्ञानधारकेभ्यः चंदनं यजामहेस्वाहाः ॥२॥ ॥❁॥

॥ ❁ ॥ अथ (३) अवधिज्ञान धूपपूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ (दूहा) ॥ ❁ ॥ अगर सेल्हारस धूपसें । पूजो अवधि उदार ।

बोधबीज निरमलहुवे। प्रगटे सुक्ख अपार ॥ १ ॥ नवल नगीनें सारिखो। ज्ञांनवनो संसार। सुरनर पूजे जावसुं। महियल ज्ञांनउदार ॥ २ ॥ (ढाल)॥ निरमल हुय जजलो प्रजुप्यारा। सवसंसार० (ए चाल)॥❀॥

॥ अवधिज्ञांनको पूजनकरले। ज्युं पावे जवपार सलूणा ॥ अ० ॥ ज्ञांनजनो सुखदेन जगतमें। उपगारी सिरदार सलूणा ॥ अ० ॥ १ ॥ जेद असंखकहे जिनवरजी। मूलजेद षद् सार ॥ स० ॥ वद्धमान हीयमान वखांणें। सूत्रे श्री गणधार ॥ स० ॥ २ ॥ सुर नर तिरि सहु अवधि प्रमांणे। देखे द्रव्य उदार ॥ स० ॥ अवधि सहित जिनवर सहुआवे। थाये जग जरतार ॥ स० ॥ ३ ॥ ज्ञांन विना नर मूढ कहावे। ढोरसमो अवतार ॥ स० ॥ ज्ञानी दीपक सम जगमांहे। पूजे सहु नर नार ॥ स० ॥ ४ ॥ ज्ञांनतणी महिमा जग मांहे। दिन २ अधिकीसार ॥ स० ॥ मूलमंत्र जग वशकर वाको। एहीज परम आधार ॥ स० ॥ ५ ॥ ज्ञांननीपूजा अहनिशि करिये। लीजे वंछित सार ॥ स० ॥ ज्ञांननें वंदी बोध उपावो। करम कलंक निवार ॥ स० ॥ ६ ॥ इत्यादिक महिमा जविसुणके। पूजो अवधि उदार ॥ स० ॥ सुमतिकहे जवि जाव धरीनें। सेवो ज्ञान अपार। सलूणा ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्म०। श्रीअवधिज्ञांन धारकेभ्यः। धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

॥ ❀ ॥ अथ (४) मनपर्यवज्ञान पुष्पपूजा ॥ ❀ ॥

॥ (दूहा) ॥ ❀ ॥ केतकी दमणो मालती। अवर गुलाब सुगंध। जावधरी पूजन करो। हरे कुमति दुरगंध ॥ १ ॥ मनपर्यव पूजाकरो। विवध कुशम मनरंग। महिके परमल चिहुं दिशे। पामे शुजश अजंग ॥ ७ ॥ (ढाल) ॥ सेत्रंजानोवासीप्यारो लागे० से० ॥ (एचाल) ॥

॥❀॥ जिनजीरो ज्ञांनसुहावे। म्हांराराजिंदा। (जिनजीरो ज्ञांन०) जिनजीरो ज्ञांन अनंतो सोहे। कहतां पारन आवे। म्हांराराजिंदा ॥ जि० ॥ ॥ १ ॥ सन्नी नर मनपरयव जांणे। तेमुनि ज्ञांन कहावे ॥ म्हांरा० ॥ जिन० विपुलमतीनें रजुमति कहिये। ए दुयजेद लहावे ॥ म्हांरा० जि० ॥ २ ॥ अंगुलअढाए जणो देखे। तेरजु नांम धरावे ॥ म्हांरा० ॥ जि० ॥ ३ ॥ मनगत जाव सकल ए जासे। ते चोथो मनजावे ॥ म्हां० जि० ॥ एह

नी महिमा नित नित कीजे । तिमभवि नांमधरावे । म्हां० ॥ जि० ॥ ४ ॥ जगजीवन जगलोचन कहियै । मुनिजन ए नितध्यावे ॥ म्हां० ॥ जि० ॥ दि क्षाले जिनवर उपगारी । चोथो ज्ञान उपावै ॥ म्हां० जि० ॥ ५ ॥ मनका शंसा दूर करतेहैं । सुणतां आंण मनावै ॥ म्हां० जि० ॥ तन मन शुचिकर पूजन करलै । जनम जनम सुखपावै ॥ म्हां० जि० ॥ ६ ॥ विविध कुशमसें पूजा करतां । बोधलता उपजावै ॥ म्हां० जिन० ॥ सुमति कहै भवि ज्ञांन आराधो । श्री जिनदेव बतावै ॥ म्हां० जि० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्म० श्री मनपर्यवज्ञानधारकेभ्यः पुष्पंयजामहे स्वाहाः ॥ ४ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ (५) केवल ज्ञानपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दूहा) ॥ प्रभुपूजा ए पंचमी । पंचम ज्ञांन प्रधांन । सकलभाव दीपक सदा । पूजो केवल ज्ञांन ॥ १ ॥ फल दीपक अक्षत धरी । नैवेद्य सुरभिउदार । भाव धरी पूजन करो । पावो ज्ञांन अपार ॥ २ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (ढाल) तुमविन दीनानाथ दयानिध तु० ॥ (ए चाल) ॥❋॥

॥❋॥ तुंचिदरूप अनूप जिनेसर । दरशणकी बलिहारी रे । तुं० । (आं०) निरमल केवल पूरण प्रगट्यो । लोका लोक विहारी रे । केवलज्ञांन अनंत विराजै । क्षायक भाव विचारी रे ॥ तुंचिद० ॥ १ ॥ जोत सरूपी जगदानंदी । अनुपम शिवसुख धारी रे । जगत भाव परकाशक भानूं । निजगुण रूप सुधारी रे ॥ तुंचि० ॥ २ ॥ सकल विमलगुण धारक जगमें । सेवत सब नरनारी रे । आतम शुद्ध सरूपी भविजन । गुण मणि रयण भंमारी रे ॥ तुंचिद० ॥ ३ ॥ केवल केवल ज्ञांन विराजै । दूजो भेदन धारी रे । आतम भावे भवि जनसेवो । जगजीवन हितकारी रे ॥ तुंचि० ॥ ४ ॥ अवर ज्ञांन सब देश कहावे । केवल सरब विहारी रे । सरब प्रदेशी जिनवर भाखे । साखे श्रीगणधारी रे ॥ तुंचि० ॥ ५ ॥ भए अजोगी गुणके धारक । श्रेणचढी सुखकारी रे । अष्ट कर्म दल दूरकरीनें । परमातम पद धारी रे ॥ तुंचि० ॥ ६ ॥ ऐसें ज्ञानवन्तो जगमांहे । सेवोशुद्ध आचारी रे । सुमति कहै भविजन शुभ भावे । पूजो कर इकतारी रे ॥ तुंचि० ॥ ७ ॥ फल १ अक्षत २ दीपक ३ नेवद्यसें ४ । पूजो ज्ञांन उदारी रे । पूजत अनुभव सत्ताप्रगटे । विलसें सु

ख ब्रम्हचारी रे ॥ तुंचिं० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने श्रीकेवलज्ञांन धारकेभ्यः फलं १ अक्षतं २ दीपं ३ नैवेद्यं ४ यजामहे स्वाहाः ॥ ५ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ कलश पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ केशरियानें लाजको लोक तिरायो० ॥ (ए चाल) ॥ ❋ ॥ प्रभु थांरो ग्यांन अनंत सुहायो । प्रभु अशरण शरण कहायो ॥ प्रभु० ॥ मति श्रुति अवधि अनें मनपर्यव । केवल अधिक कहायो । भव्यसकल उपगार करतहे । श्रीजिनराज वतायो ॥ प्र० ॥ १ ॥ खरतरगछ पति चंद्र सूरीसर । राजत राज सवायो । तेजपुंज रवि शशि सम सोहे । देखत दिल हुलसायो ॥ २ ॥ प्रभु० ॥ प्रीत सागरगणि शिष्य सुवाचक । अमृतधर्म सुपायो शीश क्षमाकल्यांण सुपाठक । सदगुरु नाम धरायो ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ धरम विशाल दयाल जगतमें । ज्ञांन दिवाकर ध्यायो । ज्ञांन क्रियानो मूलजे कहीये । तत्वरमण मनभायो ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ बीकानेर नगर अति सुंदर । संघ सकल सुखदायो । सुक्ष्मती जिन धर्म आराधक । भगतकरे मुनिरायो ॥ प्र० ॥ ५ ॥ उगणीसे चालीशें वरशे । आसूसुद वरदायो । ज्ञांन विजयकारक सब जगमें । नित प्रति होत सहायो ॥ प्र० ॥ ६ ॥ सुमति सदा जिनराज कृपासें । ज्ञांन अधिक जशगायो । तत्वदीपक मोहन मुनिभावे । ज्ञांनतणो गुणगायो ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ इति ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ पांचज्ञान आरती ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जय जग सुखकारी । वारी जय शम पद धारी । आरती करूं सहु सारी ॥ जय० ॥ अष्ट विंशति भेद करीनें । मति ज्ञान राजे ॥ मति० ॥ ध्यावत पूजत भविजनकेरा । भव संकट भाजे ॥ जय० ॥ १ ॥ भेद चतुर्दश अथवा विंशति । प्रवचन पति दाखे ॥ प्र० ॥ श्री श्रुतज्ञानकी महिमा जिनवर । स्वमुखथी भाखे ॥ जय० ॥ २ ॥ रूपी द्रव्य विपयि मर्यादा । करि अवधी सोहे ॥ क० ॥ भेद षटक संख्याती तीवा । भविजन मनमोहे ॥ जय० ॥ ॥ ३ ॥ तुर्य ज्ञान मन पर्यव कहिये । भेद युगम लहिये ॥ भेद० ॥ ऋजुमति विपुलमती सरदहियें । न्यूनाधिक गहियें ॥ जय० ॥ ४ ॥ लोका लोकांनगेन वस्तु । गुण पर्यव भासी ॥ गु० ॥ केवल एक सहाय अनंते । भए

निर्वृतिवासी ॥ जय० ॥ ५ ॥ पंचज्ञानकी आरती करतां । भवआरती छीजे भ०॥ जिम वरदत्त कुमर गुण मंजरी । तिम भक्ती कीजे ॥ जय ॥ ६ ॥ वृह त् भट्टारक खरतर पति जिन । हंससूरि राया ॥ जि० ॥ तत् पद कज मधु कर कंचन निधि ॥ आनंद वरताया ॥ ज० ॥ ७ ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ मंगल दीवो ॥ ❋ ॥

॥❋॥ दीवो रे दीवो मंगलदीवो । भुवन प्रकाशक जिन चिरंजीवो ॥ दी० ॥ १ ॥ चंद्र सूर प्रभु तुम मुख केरा । लुंछण करता दै नितफेरा ॥ दी० ॥ ॥ २ ॥ जिन तुझ आगल सुरनी अमरी । मंगल दीप करी दिये भमरी । दी० ॥ ३ ॥ जिम जिम धूपघटी प्रगटावे । तिम तिम भवनां दुरित दझावे दी० ॥ ४ ॥ नीर अक्षत कुसुमंजली चंदन । धूप दीप फल नैवेद्य वंदन । दी० ॥ ५ ॥ इणपरे अष्ट प्रकारी कीजे । पूजा स्नात्र महोत्सव भणीजे ॥ दी०॥

॥ ❋ ॥ अथ मंगल आरती ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ भविजन मंगल आरती करियै ॥ जनम जनमकी आरति हरियै ॥ भ० ॥ १ ॥ आरती प्रथम जिनेसरजीकी । दारुण विघन निवारण नीकी ॥ भ० ॥ दूजेपद श्रीसिद्ध दिणंदा । आरती करत मिटत भवफंदा भ० ॥ २ ॥ तीजे पद श्रीसूरि महंता । मारग शुद्ध प्रकाश करंता ॥ भ० ॥ चौथे पद पाठक गुणवंता । आरती करत हरत भव चिंता ॥ भ० ॥ ३ ॥ पंचमी आरती साधुन केरी । कुगति निवारण शुभगति शेरी ॥ भ० ॥ शिव सुखकारण श्री जिनवांणी । छठी आरती ज्ञान वखांनी ॥ भ० ॥ ४ ॥ सा तमी आरती आनंदकारी । समकित व्रत गृहि प्रतिमा धारी । भ०॥ यह विध मंगल आरती गावै । शुद्ध क्षमा कल्यांण ते पावै ॥ भ० ॥ ५ ॥ इ०

॥ ❋ ॥ अथ श्रीलक्ष्मी मोहन कृत स्तवन संग्रह ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अरिहंत नमो भगवंत नमो । जिनराय आदीशर नित्य नमो ॥ नमो नाभि मरुदेवानंदन, आदिनाथ जगनाथ नमो ॥ अरि० १ ॥ जग हितकारक वांछितदायक ग्यान विमल गुणधार नमो ॥ नमो नमो अवि चल सुखदायक शांतिसूरत जग तातनमो ॥ अरि० २ ॥ अतिशय धारक

सुर नर पूजित, सहुगुणधार सुदेवनमो ॥ जिनगुण ग्राहक श्रीवरपावत, मुक्तिमोहन जयकार नमो ॥ अरि० ३ ॥ इति श्री आदिजिन स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गजल ॥ ताल पंजावी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जबसें चेतन पावत निजगुण, आतम ध्यान जगाते हें । आतम पेखत सहुसुख लेखत, सोहं ध्यान जगाते हें ॥ सोहं सोहं सोहं जपतां सहु अरि कर्म खपाते हें। सिद्धि अचल अविनाशी वसुगुण पुरुषोत्तम पद पाते हें॥१॥ निज घरमें बेठे अक्षय सुख पाते हें । जब जगमें रहे सहुजीव ध्याते हें । कर जोमी करके जिनगुण गाते हें । सहुभवि मिलके मस्तक नमाते हें ॥ २ ॥ देव सेतेहें, इंद्र सेतेहें, सार जगतका पाते हें, जब पार जगतका आते हें॥३॥ जैनप्रकाश, करत हुलाश, शिवश्रीपाश, मोहनआश, ॥ ४ ॥ जब० ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ रागकैरवो, अजी साहब नतीजा० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरे साहब जिनंदा दिलबसिया मे० ॥ सुनोरी समकितधर नरनारी, सेवो शिवश्रीनृप ॥ जिनं० टेक ॥ ध्यान दिलमें धारके सेवत वीशथानकों, जिननाम उपायके धारे अमर निवानकों ॥ उत्तम कुलमें आयके ज्ञान त्रिकले साथकों, भोगसुख पायके लीनो चरणपद हाथकों ॥ १ ॥ करम तपाई केवल जोपाए, सेवो शिव श्रीनृप ॥ जिनं० मेरे० ॥ २ ॥ केई अमर आयके, नमन करे सुलभावसें ॥ समवसरण रचनाकरी, चोमुख जिनदेखावसें ॥ अतिशयगुण जिनधार, पर्षद बार प्रकारसें ॥ सोभित मधुर स्वरे, कहे धर्म विस्तारसें ॥ सहुभविसुनके व्रतगुणपाए, सेवो शिव श्रीनृप ॥ जिन०॥३॥ पारनही लेसके, सुरगुरू पिणकथनसें ॥ अरिहंतपद आदरी अनंतसिद्धवतनसें ॥ तीनभुवन प्रभुतणा, रहा चेत्य अनादिसें ॥ श्रीवर शिवसुखपाय ध्यानगुण प्रसादसें ॥ संघ चतुर्विध प्रभु मोहनकर, सेवो शिव श्रीनृप ॥ जिनं० ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इति अरिहंतपद वर्णन स्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जीया चतुर० । ताल पंजावी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जीया इकसुनवात, जिनपदकों तूं ध्यायरे ॥ जी० टेक ॥ अष्ट करमके वसमें पमियो । भमियो भवसायर मांयरे ॥ जीया० ॥ १ ॥ पुन्यसंयोगे नरभवपायो । मिलियो उत्तमकुल आयरे ॥ जीया० २ ॥ जैनधरम जिन

दर्शन पायो । फिरतुं आलस क्युंखायरे ॥ जी० ३ ॥ परउपगारी अंतरजामी। तरण तारण महा रायरे ॥ जी० ४ ॥ इकचित प्रभुको समरण करले । ज्युं गुण परगट थायरे ॥ जी० ५ ॥ जोताहरा गुण प्रगट करै तो । शिवरमणीवरे जायरे ॥ जी० ६ ॥ तत्वदीपक प्रभु श्रीवर ध्यावे । मोहन वंछित पायरे ॥ जीया० ७ ॥ इति जिनपदस्तवनम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ तालपंजाबी ॥ राहचंपेली ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सुनोमेरे पतियां दिलधर वतियां । निजगुण दरशन भाउं भाउं भाउं ॥ टेक ॥ जिन दरशनसें मोक्ष मिले । इकचित प्रभुगुण गाउं गाउं गाउं ॥ सुनो० ॥ १ ॥ जंगम थावर तीर्थतणा । में तो नित सबगुण ध्याउं ध्याउं ध्याउं ॥ सुनो० ॥ जैन प्रभावक गुण प्रगटे । शिव मोहनपद पाउं पाउं पाउं ॥ सुनो० ॥ ३ ॥ ❋ ॥ इति जिनदर्शनस्तवनम् ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ फुकफुक पम्रे० इस में ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नितनित नमुं रे तुमजिनप्यारे । मोहि तार, अबतार, तार, तार, तार, अबताररे । नितनमुंरे० ॥ नितनित० । टेक ॥ तुमनाम जगमोहता । तुमकाम जगसोहता । तुमधर्म जगबोहता । भविजीव भवखोहता ॥ १ ॥ मनभावत, गुणगावत, शिवपावत, तुमकरो प्रकाशक जैन मोहन गुणसारे नित० ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ऐसे धोका देनेवाले, ताल पंजाबी ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ऐसे पूजा करनेवाले मेनें विरले देखे भाले ॥ ऐसे० टेक ॥ ऐसे जिन आग्याकों पालनवाले, विधिसंयुतसें रहनेवाले, विनयादिगुण धरने वाले, भक्तिगुण दिखलानेवाले ॥ पूजा० ॥ १ ॥ ऐसे अपनेजीके सुखपानेंको, गुणगानेंको गुणपानेंको, इकचित जिनको ध्यातेहे सो, शिवकामेंको शिवपानेंको, छेमी छेमी भवनीवाते, त्यागीहे कुमतीकीवाते, धारीहे सुमतीकीवाते, पालीहे समकितकी वाते ॥ पूजा० २ ॥ ऐसे पूजन द्रव्ये भावे, फल शिवनगरी देताहे, ऐसे निजगुण प्रगटे सुंदर सहुदिल जाणें जगजाणें, सोभा सोभा भारी सोभा, जेसीहे सूरजकी सोभा, जैसी हे चं

द्रकी सोभा, जिससें अधकी निजगुणसोभा. जिससें अधकी जिनपद सोभा ॥ धारो गुण सम, जेथी दूर हुवे भ्रम; सहु दूर हुवे कम, जैनमंगल पावे धम; अजी सुनो सीखो धारो आगम श्रीवर मोहनवाले ॥ ऐसे० ॥ ३ ॥ इति श्रीजिनपूजा विधि स्तवनं ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गजल ॥ क्या कहुं अबवेरवेर० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ या कहुं अब चेतजीव छोड्दे संसार सारा ॥ या० ॥ टेक ॥ बहुत करमसें ना मिले, अपनागुण एकीवखत, तबतो श्रद्धा धारके, गुण पाय दर्शन ग्यान सारा ॥ या० १ ॥ पंचकारण सब आमिले, दिलधरो संयमतरफ, संयमलीये भावसें. जब छोड्दे सहु कर्म प्यारा ॥ या० २ ॥ तीनरत्न जो तो मिले। दूर हुवे कुमती भरम; जिनमंगल गुणगाय के. शिवपाय मोहन ध्यान सारा ॥ या० ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हंसारे राजा० एचाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुनोरे चेतन, ओ जगजाल असारा। तुंतो भमियो अनंतभव प्यारारे ॥ सुनो० ॥ टेक ॥ क्रोध लोभ मोह मिथ्या कपटे । कीनोजालपसारारे ॥ सुनो० १ ॥ नवा नवारूपे चिहुंगतिमांहे । कुटुंब अनेक प्रकारारे ॥ सुनो० ॥ २ ॥ झूठी काया झूठी माया । झूठा सबपरवारारे ॥ सुनो ॥ ० ३ ॥ धन जोबन मद मतकर प्यारे। एकदिन जंगल चारारे ॥ सुनो० ४ ॥ जिनध्रम सार दया दान निजगुण। सेवत गुण सुख कारारे ॥ सुनो० ५ ॥ जैनमंगलगुण श्रीवर पावत। मोहन ग्यान प्रकारारे ॥ सु० ६ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रागचंपेली ॥ तालपंजाबी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आदिजिनवरजी सुनोमेरी अरजी । भवजलसें अब तार तार तार ॥ आ० ॥ टेक ॥ मोह मिथ्यावस काल बहु । भमियो भव वन चार चार चार ॥ आदि० १ ॥ हिवपुन्यें दरशन गुणयोग, तुमगुण सुणिया सार सार सार ॥ आ० २ ॥ जिनगुण ग्राहक भविलहस्ये शिव मोहनपद धार धार धार ॥ आ० ३ ॥ ❀ ॥ इतिश्री आदिजिनस्तवनं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लावणीकी चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रवण अजितजिन सहुगुण सुन कर सेवनका दिल चाहते हैं

सेवनकरना सुमतिआदरना चेतनगुण जबपाते हैं ॥ टेक ॥ मोहे अबतो ळोभावो सहुकुमतिकाखेल । चिहुंगतिमांहे बहुत किया ठेल । पुन्ययोगे दरशन पाया । निजगुणसुमतिमहल ॥ मोहे० अब० १ ॥ मोहे अबतो देखावो सहुनिजगुणसेज । जेथीसहुजाणुं जगतकाखेल । करजोभीनें सेवा करुं तुंही चित्रावेल ॥ मो० अ० २ ॥ प्रभुअबतो उतारो भवजलसेपार । गावे जिनमंगल गुणसुखकार । सहुसंघ श्रीवर पावे मोहन सुक्तीसार ॥ प्र० अ० ॥ ३ ॥ इतिश्री अजित जिनस्तवनम् ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ वामछंद, ताल २ मात्रा ६ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अजितचरण, रहतशरण, कनकवरण, तेजतरण ॥ अजि० १ ॥ दिलविचार, तत्वसार, मदप्रकार, तजगमार ॥ अ० २ ॥ भव अनंत, भय सहंत, गुणधरंत, सुख करंत ॥ अ० ३ ॥ ज्ञानराय, लक्ष्मीपाय, मुक्ति भाय, सुक्खथाय ॥ अ० ४ ॥ इतिपदं ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ शिरपरयेबोझा० ॥ नाटक चाल ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ संभवजिन थांरी मूरतप्यारी अंगियां सारीरे ॥ सं० ॥ अंगियां तुममनभाई, सुंदर सब रत्नजमाई, मानुंदिनकारीरे, जाउं बलिहारीरे, ॥ सेवत नित तुम सुरसारा, तुम सहुजग मोहनगारा, भविपल पल तुमगुण धारे । शिवसुखलागत सहुप्यारे । श्रीवर हितकारी, मोहनधारी, गुणसुख कारीरे ॥ सं० ॥ १ ॥ इतिश्री संभव जिनस्तवनम् ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ आई सुंदर नार, करकर श्रृंगार० ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ ताल पंजाबी ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ जिनतत्वसार, सहुजग आधार, करिमोह जार, सुखशांतिसार, प्रभुगुण अपार दिलसमरणकीनो ॥ जि० १ ॥ जिनसुमति पाय दिलसुमति थाय । सहु कुमति जाय, मोह मद न साय ॥ गुण आत्म पाय वंछितसुख लीनो ॥ जिन० २ ॥ भवजल प्रधान, प्रवहणसमान, सहुसुखनिधान, करि आत्मध्यान, शिवश्री प्रधान, गुणमोहनलीनो ॥ जि० ३ ॥ इति श्री सुमति जिनस्तवनम् ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❀ ॥ नजर आई मुजकों० ताल दीपचंदी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ भजनकर अवतो जिनंदगुणका । सहु छोर मिथ्यात मतकाभ्रम ॥ टेक ॥ भम्यो भवजलमें अनंतोकाल । कुमतीसंगचेतन असुभ करम ॥ भ० १ ॥ किया प्यारे चिहुंगति नाटक खेल, सह्या बहु दुःख नपायो धरम ॥ पायो अब दर्शन कोई पुन्ययोग, प्रभुगुण भजकर राख सरम ॥ भ० ॥ २ ॥ मिले बासु पुज्य जिनेसर राय, फले मन वंछित काजकरम ॥ गावे जिनमंगल जैनप्रसाद, पावे सुख श्रीवर मोहन धरम ॥ भ० ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुंनकमलाजीयरवा इस० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तुं अवतार विमलवा ओप्रभुमोरा ॥ तुं० ॥ विमलजिनेसर जग परमेसर । करोमहर निजरवा ॥ करो महर निजरवा ॥ करो० ओ० १ ॥ तुं जगतारण विरुद श्रवणकर । रहुं तुमरे सरणवा॥र० ओ० २ ॥ तुमगुण सुरगुरु पारन पावत, किममें करुं बरणवा ॥ कि० ओ० ३ ॥ सुमतिसंग मुझ निजगुणपाउं । एती करोमहरवा । एती० ओ०४ ॥ तत्वदीपक शिव श्रीवर मोहन । गुणगायो तरणवा ॥ गुण० ओ० तुं० ५ ॥❀॥ इति श्रीविमल जिनस्तवनम्॥

॥ ❀ ॥ कंताछंद, ताल २ मात्रा ७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रभुनमिनाथ· जोडूंहाथ· सहुजग नाथ, शिवपुरहाथ ॥ प्रभु० ॥ प्रभुपदलीन· थिरचितकीन· जिमजलमीन· अंतरपीन ॥ प्र० २ ॥ करुणासार, दिलगुणधार, अबमुझतार, कर भवपार, ॥ प्र० ३ ॥ मोह मिटाय· तत्वदीपाय निजगुणपाय, शिवसुखथाय ॥ प्र० ४ ॥ पाठक मान, लक्ष्मीप्रधान, मोहनज्ञान· आतमध्यान ॥ प्रभु० इति श्री नमिजिनपदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ लादचला विणजारा इसचालमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्रभु धर्मनाथ मुझप्यारा । जगजीवन मोहनगारा ॥ टेक ॥ तुम सेवा हितसुखकारी । सुरनर भवि दिलगुण धारीरे । निजगुण सुख मांगत सारा ॥ प्र० १॥ तुम अंगिया अजब सुहावे । भूपण सब रयण जमावेरे । दिनकर समतेज अपारा ॥ प्रभु० २ ॥ शिवश्रीवर निजगुण पावे । गुण जैन प्रभाकर गावेरे, नित मोहन सुख जयकारा ॥ प्र० ३ ॥इतिश्री धर्मजिनस्तवनम्॥

॥ ❋ ॥ दिलदारीकीनीरे० । इसमें ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दिलहर नाजावोरे, मेराओप्यारे, सुखकरियां, प्रीतमवरियां, दिलधरियां नजरियां, ज्ञरियां, हठकरके, फिरकर नाजावोरे ॥ दिल० टेक ॥ मन अंदर रही शिववनिताजो । जानलेईमुझ घरकोंआकर । अबतो अरजी सुनके गिरपर ना धावोरे ॥दि० १ ॥ बात नमानी यादवमुख जो । साथरहुंगी संयमपाकर । पल पल दरशन करके, शिवपुरकों पावोरे ॥ दि०२॥ जैन प्रज्ञाकर शिवश्रीबरजो । मोहनश्रेणी जिनगुण गाकर । उच्छव नाटक करके प्रज्ञुका तत्वदीपावोरे ॥ दिल० ३ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥
इतिश्री नेमि जिनस्तवनम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ तोरासच नहिंकहनारे; इसचालमें ॥ ❋ ॥

॥❋॥तोराकथन निज्ञानारे। प्यारेनेम, धरुंप्रेम, ठतियां तरस मोहे रतियां सतावे ॥ तोरा० टेक ॥ सरस दरस तोरो वहुतसुहावे, देखीनयना दिलवरसें । साम साम साम, मेरै तुमसेतीकाम ,मेरे सिरपर तुंहे स्वामी, तुंहे अंतरजामी, ॥ तोरा० ॥ रथकों फिराय पिया गिरवरचाले । शिववनिता लजचानेंकों । प्यारी प्यारी प्यारी, तोहेदिल शिवप्यारी । में पिण दिक्षा लेसुंसारी । मोंहुं शिवनारी ॥ तोरा० ॥ २ ॥ नेमराजुलदोतुं मोक्षसिधाए । जिनमंगल नित गुणगावे । ध्यान ध्यान ध्यान, तोरानितकरे ध्यान, पावे शिव लक्ष्मीप्रधान, थावे मोहनज्ञान ॥ तो० ॥ ३ ॥ इतिश्री नेमिजिनस्तवनम् ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ कोईरसीलाठबीला० इसचालमें ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ मेरे रंगीला चंगीला प्रज्ञुपासजी । जैसा संगीला साथीला हो यतासजी ॥ मेरे० टेक ॥ पलमेंरी ठिनमें अहनिशिसमरुं । जिमहुय सुमता नारीहो सुंदरवानी, सहजसें पाया चेतन गुणज्ञानी । तन मन मोहन जाण सज्जन ॥ मेरे० १ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥
इतिश्री पार्श्वजिनस्तवनम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ठुमरी ॥ गेरीब्राह्मणकी, इस० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्यारी पारशकी प्यारी पारशकी । सूरत अति मनज्ञावनकी ॥ प्यारी० ॥ टेक ॥ मुंबईसहर चिंतामणिपारस । आंगिया अजब सुहावनकी ॥

प्यारी०१॥ सरदइंदु जिम वदन मनोहर । आसपूरे नितध्यावनकी॥प्या०२॥ अश्वशेन वामाजीकेनंदन । तीन भुवन जसगावनकी ॥ प्यारी० ३ ॥ भव जलतारक सहुसुखकारक॰ नयनसुधावरसावनकी ॥ प्या० ४ ॥ ज्ञानसुधा रस श्रीवरधारक॰ मुक्ति मोहन जय पावनकी ॥ प्या० ५ ॥ ❁ ॥ इतिश्री चिंतामणी पार्श्वजिनस्तवनम् ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ ताल दादरा, हजूरियांगाढी ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अरज करुं गाढो॰ अरज करुं गाढो, मोहेतारो ॥ अर० ॥ टेक ॥ प्रभुजीथांको विरुद चितधारो । दुःखसहुटारो ॥ मोहे० १ ॥ प्रभुजी तुमे तरण तारणछो । सुक्खकारण छो ॥ मोहे० २ ॥ प्रभुजी रिखभ जिनेसर साचो । मोहन गुण राचो ॥ मोहे० ३ ॥ इतिश्री आदिजिनपदम् ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ पुनः ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ शरणमें आयो शरणमें आयो । वीरतेरे शरणमें आयो ॥ वीर० टेक ॥ प्रभुजी मेंतो कुमति संग रमियो । बहुत भवभमियो ॥ वीर० १ ॥ प्रभुजी मोकुं सुमति अबदीजे । जगत जश लीजे । वी०२॥ प्रभुजी शिवसुख श्रीवर चाहुं ॥ मोहनगुण पाउं ॥ वी० ३ ॥ इति श्रीवीरजिन स्तवनम् ॥❁॥

॥ ❁ ॥ राग कल्याण, मानोप्यारा२० ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ मोहे तारो मोहे तारो कुंथुजिनंद । मो० ॥ टेक ॥ कुंथुजिनेसर तुं परमेशर । शांति सूरत सुखकारो ॥ मो० १ ॥ सूरपिता श्रीदेवी माता । तुम तारक अवतारो ॥ मो० २ ॥ अतिशय सोभित अंगआभूषण॰ मोहनीमूरत प्यारो ॥ मो० ३ ॥ अविनाशी अविकारी तुं प्रभु॰ शिववाशी जगप्यारो ॥ मो० ४ ॥ बीकानेर नगर अतिसुंदर । चैत्यबन्यो हितकारो ॥ मो० ५ ॥ उग णीसे इक्तीस जेष्टसुद । दशमीदिन सुभवारो ॥ मो० ६ ॥ प्रभुथापनाकारि नूतनचैत्यें । श्रीवर संघ हजारो ॥मो०७॥लक्ष्मीप्रधान मोहन नित सेवे । जय शिव पद दातारो ॥ मो० ८ ॥ इति श्रीकुंथुजिन चैत्य प्रतिष्टा स्त० ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ गजल ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ गुणोंकों धारले दिलदार हरदम । अेगुणोंहे सब सुखकार हरदम

॥ ❀ ॥ दिलदारीकीनीरे० । इसमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दिलहर नाजावोरे, मेराओप्यारे, सुखकरियां, प्रीतमवरियां, दिलधरियां नजरियां, भरियां, हठकरके, फिरकर नाजावोरे ॥ दिल० टेक ॥ मन अंदर रही शिववनिताजो । जानलेईसुझ घरकोंआकर । अबतो अरजी सुनके गिरपर ना धावोरे ॥दि० १ ॥ बात नमानी यादवमुख जो । साथरहुंगी संयमपाकर । पल पल दरशन करके, शिवपुरकों पावोरे ॥ दि०२॥ जैन प्रभाकर शिवश्रीबरजो । मोहनश्रेणी जिनगुण गाकर । उत्सव नाटक करके प्रभुका तत्वदीपावोरे ॥ दिल० ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ इतिश्री नेमि जिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तोरासच नहिंकहनारे; इसचालमें ॥ ❀ ॥

॥❀॥तोराकथन निभानारे। प्यारेनेम, धरूंप्रेम, छतियां तरस मोहे रतियां सतावे ॥ तोरा० टेक ॥ सरस दरस तोरो वहुतसुहावे, देखीनयना दिलवरसें । साम साम साम, मेरे तुमसेतीकाम ,मेरे सिरपर तुंहे स्वामी, तुंहे अंतरजामी, ॥ तोरा० ॥ रथकों फिराय पिया गिरवरचाले । शिववनिता ललचानेकों । प्यारी प्यारी प्यारी, तोहेदिल शिवप्यारी । में पिण दिक्षा लेसुंसारी । मोहुं शिवनारी ॥ तोरा० ॥ २ ॥ नेमराजुलदोनुं मोक्षसिधाए । जिनमंगल नित गुणगावे । ध्यान ध्यान ध्यान, तोरानितकरे ध्यान, पावे शिव लक्ष्मीप्रधान, थावे मोहनज्ञान ॥ तो० ॥ ३ ॥ इतिश्री नेमिजिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कोईरसीलाछबीला० इसचालमें ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मेरे रंगीला चंगीला प्रभुपासजी । जैसा संगीला साथीला हो यतासजी ॥ मेरे० टेक ॥ पलमेरी छिनमें अहनिशिसमरुं । जिमहुय सुमता नारीहो सुंदरवानी, सहजसें पाया चेतन गुणज्ञानी । तन मन मोहन जाण सज्जन ॥ मेरे० १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इतिश्री पार्श्वजिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ठुमरी ॥ गोरीब्राह्मणकी, इस० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ प्यारी पारशकी प्यारी पारशकी । सूरत अति मनभावनकी ॥ प्यारी० ॥ टेक ॥ मुंबईसहर चिंतामणिपारस । अंगिया अजब सुहावनकी ॥

परगटहोय तनमें । सहुजगजाणहोवे इकछिनमें ॥ ज्ञान ज्ञान निजज्ञान, सुभध्यान करध्यान ॥ आ० नि० १ ॥ दोष अष्टादश रहित केवलयुत, भविजन धर्मसुनावे । लक्ष्मीप्रधान मिले शिवसंपद, मोहन जय सुखेपाय सहुजगमें ॥ गुणगान, स्वरजान, भरतान, लहेमान॥आत्म० । नि०॥ ३ ॥ इतिश्री नमिजिनस्तवनम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥सांवलिया जैसेंवनें तेसेंतारो॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ आजमोरी अरज शीतलजिन धारो, मेरो जनम मरण दुःखटारो ॥ आ० टेक ॥ कालअनादि भम्यो भव वनमें । कुमति नार मोहभारो । नरक निगोद देवनर भवकर । बहुविध नाटककारो ॥ आ० १ ॥ पुन्यसंयोग जैनागम वचनें । दरशनगुण हितकारो । गुरु मुख तारक ईश्वर तुमकों । जाणसरण सुखकारो ॥ आ० २ ॥ सिद्ध बुद्ध तुं जग परमेसर । परमातम जगप्यारो । ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तुमही । तुम प्रभु जगदाधारो ॥ आ० ३॥ दृढरथ नंदानंद जिनेश्वर । अतिशय सहुगुण प्यारो । शांतिसूरत प्रभुशीतल जिनवर । भविजन हित सुख कारो ।॥ आ० ४ ॥ इंद्रभुवन जिम चैत्य मनोहर । कलिकत्तापुरसारो । श्रीवर फल बद्री प्रभुपावे । मुक्तिमोहन जयकारो ० ॥ आ० ५ ॥ इतिपदम् ॥

॥❋॥मोरी राजुल राणीजी थांनें नेमजी मिले इसचालमें॥❋॥

॥ ❋ ॥ मोरी सुमता राणीजी, थांनें श्रीपतिजी मिले । श्रीपतिजी० ॥ श्रीपति मिलवा कारणें सारू । दान शील तप भाव । विधिसें जिनधम सेवतां । सहु पावे आतम दाव । हे मोरी० १ ॥ श्रीपतिप्यारी सुमता नारी । दर्शन ज्ञान सुहाय । चारित्र निजगुण साथ सें सहु । सुख संपति नितपाय ॥ हे मो० २ ॥ विक्रमपुर श्रीकुंथु जिनेशर । चंद उदय अमरेश । श्रीशशि विजय सुहावणा । सहु सुगुण विद्या श्रीवरेस ॥ हे मो० ३ ॥ सहु सुखकारी मूरति प्यारी । मुक्ति कमल मन भाय । जिनपद पाठक सेवतां । सहुसंघ मोहन जय थाय ॥ हे मो० ॥ ४ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

इति श्रीकुंथुजिन पाठक सहुगुण सेवन स्तवनम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

गु० टेक ॥ अपनें गुणोंकी पहचानक्याहे, वचन जिनराजका सत्यजाण हर दम ॥ गु० १ ॥ दरशन ज्ञान चारित्र गुणहे । रतन निजआतमका पहचान हरदम ॥ गु० २ ॥ शाशनपति महावीर प्रभुहे । चरण नितध्यानका चितधार हरदम ॥ गु० ३ ॥ निजगुणजो सहु भविजनपावे । मोहन शिवराजका सुख पाय हरदम ॥ गु० ४ ॥ इति निजगुण वर्णन पदम् ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ लावणीकीचाल ॥ ❋ ॥

॥ नितध्यावो फलपावो सदा तुमशाश्वत गिरिवरहां ॥ टेक ॥ तीरथहैओ स हुजग मेंभण, सिद्धगिरी शिवपाज । जिसकेध्यानें भवि जनपामें, अरिहंतपद शिवराज । केइध्याया, केइ पाया, केइ पावे, केइपामसी शिवसुख ज्ञानसें भविजन अनंतकाल गतियां ॥ नित० १ ॥ पूरब निनाणों आया इनगिरि, रिखभजिनंद जिनराय । नववशिचेत्यसुहामणाजी । सहु जिनबिंबसुहाय । संघआवै, प्रभुध्यावै, सुखपावे । गुणग्यानसें श्रीवर जैनप्रकाशक मोहन जय वातियां ॥ नि० ३ ॥ इति सिद्धगिरी स्तवनम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ कोईहालकहोजाके० इसमें ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ मोरी बात सुनोसारे, प्रभु कुंथुनाथ प्यारे ॥ मो० टेक ॥ सूरपिता श्रीदेवीमाता, हथनापुरभारे, तुमजगतारक जन्मलईनें, बहु भविजन तारे ॥ तुमसुनोगरीबनिवाज, रखोमेरी लाज, करो सुभकाज ॥ मो० १ ॥ सुरनर सहु भवितुझनें नमतां, सुखपायाभरपूर, ग्यानध्यानसें दर्शनसाथें, कर्मकिया चकचूर ॥ प्रभुपाया शिवसुखआप, करे सहुजाप, छूटसहुपाप ॥ मो० २ ॥ जगदीश्वर जगतारक तुमहो, मोहतारोदिलधार, पाठक श्रीवर विक्रमपुरमें, सेवेतुमसुखकार ॥ प्रभुआनंद अधिक अपार, मोहनपद धार, करो जयसार ॥ मो० ३ ॥ इतिपदम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ यारवहालखुलजावे ॥ इसमें ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ निजगुण आतमजबपावे, कुमतितिमरतबदूरेहोगा । सुमतिक थन नितभायतनमनसें । त्याग त्याग दुःखत्याग, पापछोड मोहछोड । आतम० ॥ निज० टेक ॥ प्रभुनामि भजकर निजगुणसुधकर, चेतनकर्महटावे, ज्ञानरवी

परगटहोय तनमें। सहुजगजाणहोवे इकछिनमें ॥ ज्ञान ज्ञान निजज्ञान, सुभध्यान करध्यान ॥ आ० नि० १ ॥ दोष अष्टादश रहित केवलयुत, भविजन धर्मसुनावे। लक्ष्मीप्रधान मिले शिवसंपद, मोहन जय सु खेपाय सहुजगमें ॥ गुणगान, स्वरजान, भरतान, लहेमान॥आतम०।नि०॥ २ ॥ इतिश्री नमिजिनस्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥सांवलिया जैसेंबनें तैसेंतारो॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आजमोरी अरज शीतलजिन धारो, मेरो जनम मरण दुःख-टारो ॥ आ० टेक ॥ कालअनादि भम्यो भव वनमें। कुमति नार मो हजारो। नरक निगोद देवनर भवकर। वहुविध नाटककारो ॥ आ० १ ॥ पुन्यसंयोग जैनागम वचनें। दरशनगुण हितकारो। गुरु मुख तारक ईश्वर तुमकों। जाणसरण सुखकारो ॥ आ० २ ॥ सिद्ध बुद्ध तुं जग परमेसर। परमातम जगप्यारो। ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तुमही। तुम प्रभु जगदाधारो ॥ आ० ३॥ दृढरथ नंदानंद जिनेश्वर। अतिशय सहुगुण प्यारो। शांतिसूरत प्रभुशीतल जिनवर। भविजन हित सुख कारो। ॥ आ० ४ ॥ इंद्रभुवन जिम चैत्य मनोहर। कलिकत्ताउरसारो। श्रीवर फल वद्री प्रभुपावे। मुक्ति-मोहन जयकारो ० ॥ आ० ५ ॥ इतिपदम् ॥

॥ ❀ ॥मोरी राजुल राणीजी थांनें नमजी मिले इसचालमें॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मोरी सुमता राणीजी, थांनें श्रीपतिजी मिले। श्रीपतिजी० ॥ श्रीपति मिलवा कारणें सारू। दान शील तप भाव। विधिसें जिनधर्म से वतां। सहु पावे आतम दाव। हे मोरी० १ ॥ श्रीपतिप्यारी सुमता नारी। दर्शन ज्ञान सुहाय। चारित्र निजगुण साथ सें सहु। सुख संपति नितपाय ॥ हे मो० २ ॥ विक्रमपुर श्रीकुंथु जिनेशर। चंद उदय अमरेश। श्रीशशि वि जय सुहावणा। सहु सुगुण विद्या श्रीनरेस ॥ हे मो० ३ ॥ सहु सुखकारी मू रति प्यारी। मुक्ति कमल मन भाय। जिनपद पाठक सेवतां। सहुसंघ मोहन जय थाय ॥ हे मो० ॥ ४ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

इति श्रीकुंथुजिन पाठक सहुगुण सेवन स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीजिनधर्ममहिमास्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आवो आवो नगरिया हमारी रे ॥ इस चालमें ॥ आवो आवो सज्जन मिल साररे ॥ गुणगावो जिनंद सुखकाररे ॥ आ॰ ॥ टेक ॥ कोई हाथे वंशी धारो ॥ कोई हाथे वीणारे ॥ मृदंग वजावो गावो करी स्वरझीणा ॥ आ॰ ॥ १ ॥ ठम २ पायनाचो घुग्घरु बंधावोरे ॥ नर नारी सहु जोडे सुजश वधावो ॥ आवो॰ ॥ २ ॥ दान दया शील धारो । तप जप सारोरे ॥ भावसुद्ध धारकरो आतम निस्तारो ॥ आ॰ ॥ ३ ॥ पर पीडा दूर करी ॥ करो उपगारोरे । पर निंदा दूर छोडो । लेवोगुणसारो ॥ आ॰ ॥ ४ ॥ जीवकों वचायाचावो जिन धर्म धारोरे ॥ समकित सुद्ध धारी करोभवपारो ॥ आ॰ ॥ ५ ॥ ज्ञान गुणीसें सोबत रखतां ॥ होवैगी वधाईरे ॥ लक्ष्मी मोहन शिव सुख पावे । जय आनंद वधाई ॥ आ॰ ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चौवीशजिन नमस्कार स्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेमगयो गिरनाररे ॥ इस चालमें ॥ प्रभुजी मिल्या मोहे आजरे। मेरा सफल थया सहुकाजरे ॥ प्र॰ ॥ एतो तीन भुवन सिर ताजरे ॥ प्र॰ मेंतो ऋषभ अजित संभव नमुं । अभिनंदन जिनराजरे । सुमति पदम प्रभु सेवतां धारुं सुपार्श्व सुकाजरे ॥ प्र॰ १ ॥ चंद्राप्रभु जिनवर नमुं । सुविधि शीतल महाराजरे । श्रेयांस जिनकों नितनमुं । वासु पुज्य सुखकाजरे ॥ प्र॰ ॥ ॥ २ ॥ विमल॰ अनंत प्रभु॰ नमुं । धर्म शांति गुणराजरे । कुंथुनाथ॰ अरिनाथकों । मल्लिनाथ सुभ काजरे ॥ प्र॰ ३ ॥ वीशमा मुनिसुव्रत नमुं । नमि नेमी पार्श्व महाराजरे । चौवीशमा महावीरजी । शाशनपति शिरताजरे ॥ प्र॰ ४ ॥ नवपद सहु गणधर नमुं । पूरो मन वंछित काजरे । शिव सुख श्रीवर पद मिलै । मोहन जय गुणराजरे ॥ प्र॰ ५ ॥ इतिश्री महोपाध्याय श्रीलक्ष्मीप्रधानजी मुक्ति कमलगणिःकृतस्तवन संग्रह संपूर्णम् ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री दादाजीकी अष्टप्रकारी पूजा लि॰ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सकल गुणगरिष्ठान् सत्तपोभि वंरिष्ठान् । शम दमय मनुष्ठांश्चारुचारित्र निष्ठान् । निखिल जगति पीठे दर्शितात्म प्रभावान् । मुनिप कुशलसूरीन् स्थापयाम्यत्र पीठे ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री जिन कुशल सूरि

गुरो अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ इति आह्वानं ॥ ❁ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री जिन कुशलसूरि गुरो अत्र तिष्ट २ ठः ठः स्वाहा॥❁॥इति प्रतिष्ठापनं ॥२॥ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री जिनकुशल सूरिगुरो अत्र मम सन्निहितो भव वषट् ॥ ❁ ॥ इति सन्निधी कारणं ॥ ३ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ (दूहा) गंगाजल तिम नदवलि । तीर्थोदक भरपूर । कलशभरी गुरु चरणपर । ढाले तस दुःखदूर ॥ १ ॥ ❁ ॥ (ढाल) देशी सूरती महीनांनी ॥ ❁ ॥ गंगाजल अति निरमल अमलसु कमलें पूर । खीरोदधि वरदधि ज्यों उज्जल जल भरपूर । तेह उदकवलि तीर्थ नीर भरि कलश सनूर । गुरुचरणे जे ढाले टाले दुकृतदूर ॥ १ ॥ ❁ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिन कुशल सूरिगुरु चरणकमलेभ्यः जलं निर्वपामिते स्वाहा ॥ इति जलपूजा ॥

॥ ❁ ॥ चंदन पूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ बावन्ना चंदन अगर । घस केसर घन सार । चरचै जे गुरु चरणनें । पांमें जे जेकार ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ❁ ॥ मलयागर तिम अगर चंदन बलिकेसर सार । कस्तूरी अतिगंधे पूरी घस घनसार । कुशल सूरि गुरुचरणे चरचे चढते भाव । सकल रोग तन सोग हरे बलि जमता भाव ॥ २ ॥ ❁ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः चंदनं निर्वपामिते स्वाहा ॥ ३ ॥ इति चंदन पूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ पुष्प पूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ केतकि चंपक फूलथी । पूजे जे गुरुपाय । तसु जशसूर उदे हुवे । अपजश तिमिर नसाय ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ❁ ॥ चंपक केतकि मरुवो दमन सेवंती फूल । जाई जूई मोगरो मालती तेम वउल । कमल गुलाब चंपेली वेली परमलपूर । गुरुचरणे जे ढोवे होवे जश ज्यूं सूर ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरणकमलेभ्यः पुष्पं निर्वपामिते स्वाहा ॥ इति पुष्पपूजा ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अक्षत पूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ उज्जल ज्यों शशि अंकविण । खंण्डित नहीं विशाल । अक्षत गु

स्चरणे ठवे । तसु घर मंगल माल ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ❋ ॥ सरल सुगंधित तंदुल उज्जल जल उतपन्न । ज्यूंवर मोती आखा हुंती उज्जलवन्न । जलधोई ससमोई सोई अक्षत नव्य । स्वस्तिक कुशल वधावे पावे मंगल भव्य ॥ २ ॥ ॥ ❋ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरणकमलेभ्यः । अक्षतं निर्व पामि ते स्वाहा ॥ ❋ ॥ इति अक्षतपूजा ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दीप पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ कंचन मणिमय रत्ननी । दीवी कर घृतपूर । वाती मौली सूत धर । करौ प्रदीप सुनूर ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ❋ ॥ कंचन घटित जटित गति नानाविध नवरत्न । दीवी अतिकारीगर कीवी अधिके यत्न । घृतपूरी सस नूरी मौली वाती जोय । दीप करे गुरु आगे ज्योत उद्योती होय ॥ २ ॥ ॥ ❋ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः दीपं निर्व पामि ते स्वाहा ॥ ❋ ॥ इति दीपपूजा ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ धूप पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ बावन्ना चंदन अगर । सेल्लारस घनसार । धूपे जे गुरु धूपथी तस घर रिध विसतार ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ❋ ॥ अगर चंदन सेल्लारस गारु ढमीलो मेल । कपूर काचरी वलि घनसारे मृगमद भेल । धूप अडंग करी गुरु धूपे चढते चित्त । ते नरवित्त सुमारग पामें नव नव नित्त ॥ २ ॥ ❋ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः धूपं निर्वपामिते स्वाहा ॥ इति धूपपूजा ॥ ॥ ६ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नैवेद्य पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ साल दाल पकवान घन । व्यंजन नव नव भांत । नेवज गुरु आगल ठवे । क्षुधा दोष उपसांत ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ ❋ ॥ पेमा मगद सेवइया लाडू मोतीचूर । खाजा ताजा लापसी दोठानें घृतपूर । पिस्ता दाख विदाम छुहारा पिंमखजूर । गुरुचरणे जे ढोवे भोग लहे भरपूर ॥ २ ॥ ॥ ❋ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः नैवेद्यं निर्व पामिते स्वाहा ॥ ❋ ॥ इति नैवेद्यपूजा ॥ ७ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❁ ॥ फल पूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ श्रीफल शीताफल सदा । फल पूंगीफल लेय । ढोवे जे गुरु चरणपर । तसु उत्तम फल देय ॥ १ ॥ ❁ ॥ (ढाल) ॥ ❁ ॥ श्रीफल शीताफल नारंगी दाडम दाख । खरबूजा तरबूज जंभेरी पाखी साख । कदली कवला केला नींबू फनस सफार । गुरु चरणे फल ढोई फल पामें श्रीकार ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिन कुशल सूरि गुरुः चरण कमलेभ्यः । फलं निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ ❁ ॥ इति फल पूजा ॥ ८ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अर्घ पूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ (अथ कलश) दूहा ॥ ❁ ॥ इम जिन कुशल सुरिंदनें । पूजे अष्ट प्रकार । तसु घर नवनिधि संपजे । पुत्रादिक परिवार ॥ १ ॥ भट्टारक खरतर गछे । श्रीजिन लाभसुरिंद । रत्नराजमुनि भमरपर । सेवे पद अरविंद ॥ २ ॥ तासुचरण रजकणसमो । ग्यांन सार बुद्धिमंद । श्रीसद्गुरु पूजा रची । सोधोकविजन वृंद ॥ ३ ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

इति श्रीजिनकुशल सुगुरूणां अष्टप्रकारी पूजा ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ लघु अष्ट प्रकारी पूजा लि० ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ सुरनदी जल निर्मल धारया । प्रबल दुष्कृत दाघ निवारया । सकल मङ्गल वंछित दायकं । कुशल सूरि गुरोश्चरणांयजे ॥ ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिन कुशल सूरिः चरण कमलेभ्यो जलं० ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ अथ चंदन पूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ मलय चंदन केशर वारिणा । निखल जाड्यरुजा तप हारिणा । सकल० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्री श्रीजिन कुशल सूरि गुरुः चरण कमलेभ्यो चं०

॥ ❁ ॥ अथ पुष्प पूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ कमल केतकि चंपक पुष्पकैः । परिमला हृत षट्पद वृंदकैः ॥ सकल० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री जिन कुशल सूरि गुरुः० ॥ पुष्पं यजा०॥३॥

॥ ❁ ॥ अथ अक्षत पूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ सकल तंडुल कैरित निर्म्मलैः । प्रवर मोतिक पुंजवदुज्वलैः । सकल मङ्गल ० ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ० अक्षतं यजामहे स्वाहाः ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❋ ॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ बहु विधै श्ररुजि वेटकेयकैः । प्रवर मोदक पुंज सु खजेकैः । सकल मङ्गल ० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० । नैवेद्यं ययामहे स्वाहाः ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ दीप पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अति सुदीप्त मयै खलु दीपकै । विमल कंचन भाजन संस्थिते । सकल मंगल० ॐ ह्रीं श्रीं० । दीपं ययामहे स्वाहाः ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ धूप पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अगर चंदन धूप दशांगजै । प्रसरिता खिल दिक्षु सुधुम्रकैः । सकल मंगल०॥ ॐ ह्रीं श्रीं० । धूपं ययामहे स्वाहाः ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ फल पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पनशमोच सदा फलकर्कटै । सुसुखदैः किल श्रीफल चिर्भटै । सकल मङ्गल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० । फलं यया महे स्वाहाः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ अर्घ पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जल सुगंध प्रसून सुतंडुलै । श्ररु प्रदीपक धूप फलादिभिः । सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० । श्रीजिन कुशल सूरि० । अर्घं० स्वाहा ॥ इति ॥

॥ ❋ ॥ अथ दादा गुरु महाराज की पूजा लिख्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ पहली थापना स्थापन करके आव्हान का श्लोक पढे ॥ काव्य ॥ सकल गुण गरिष्टान् सत्तपोभिर्वरिष्टान् । शम दमय मनुष्टांश्चारु चारित्रनिष्टान् । निखल जगति पीठे दर्शितात्म प्रभावान् । मुनिप कुशल सूरिन् स्थापया म्यत्रपीठे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन दत्त श्री जिन कुशल श्री जिन चंद्रसरि गुरौ अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन दत्त सूरिगुरौ अत्रतिष्ट २ ठः ठः ठः स्वाहा ॥ इति प्रतिष्टापनं ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्तसूरिगुरौ अत्र मनसंनिहितो भव वषट् इति संनिधीकरणं ॥ ३ ॥ अय जलका कलश लेके स्नात्रीया सुच होके खडा रहे ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ प्रथम जलपूजा ॥ ❋ ॥

॥ दोहा ॥ ईश्वर जग चिंतामणी । कर परमेष्टी ध्यान । गणधर पद गुण वर्णना । पूजन करो सुजाण १ ॥ सो धर्मा मुनिपति प्रगट । वीर जिनेश्वर

पाट। मिथ्या मत तम हरणकुं । भव्य दिखावण वाट ॥ २ ॥ सुस्थितसुप्रति वद्ध गुरु। सूरि मंत्र को जाप । कोटि कीयो जब ध्यान धर । कोटिकगच्छ सुथाप ॥ ३ ॥ दश पूर्व्वी श्रुत केवली । भये वज्र धर स्वाम । तादिन तें गुरु गच्छको । वज्र शाख भयो नाम ॥ ४ ॥ चंद्रसूरि भये चंद्रशम। अतहि बुद्धि निधान । चंद्रकुली सब जगत में । पसर्यो बहु विज्ञान ॥ ५ ॥ वर्द्ध मान के पाट पद। सूरिजिनेश्वर भाश । चैत्य वाशि कूं जीत कर। सुविहित पक्ष प्रकाश ॥ ६ ॥ अणहिलपुर पाटण सभा । लोक मिले तिहां लक्ष। खरतर बिरुद सुधानिधि । दुर्लभ राजसमक्ष ॥ ७ ॥ अभय देव सूरि भये नव अंगटीका कार । थंभण पारस प्रगट कर । कुष्ट मिटावन हार ॥ ८ ॥ श्री जिन वल्लभ सूरि गुरु । रचना शास्त्र अनेक । प्रतिबोधे श्रावक बहुत । ताके पट्ट विशेष ॥ ९ ॥ हुंबड श्रावग वाघमी । अठारे हज्जार । जैन दया धर्म्मी किये । वरते जैजैकार ॥ १० ॥ दादा नाम विख्यात जस । सुर नर शेवग जाश । दत्तसूरि गुरु पूजतां । आनंद हर्ष उल्लास ॥ ११ ॥ दिल्ली में पतसाहनो। हुकम उठाया शीश । मणिधारी जिन चंद गुरु । पूजो विस वावीस ॥ १२ ॥ ताके पट्ट परंपरा । श्री जिन कुशल सूरिंद। अकबर कूं परचा दीआ। दादा श्री जिनचंद ॥ १३ ॥ एसे दादाच्यार कूं । पूजो चित्त लगाय । जल चंदन कुशमादि कर। ध्वज सोगंध चढाय ॥ १४ ॥ ॥

॥॥ चाल दादा चिरंजीवो एदेशी ॥॥

॥ ॥ गुरुराज तणी पूजन कर भवि सुख कर मिलसी लच्छि घणी ॥ ए आंकणी ॥ गुरु दत्तसूरिंद जग सुखकारी । गुरु सेवगनें सानि धकारी । गुरु चरण कमलनी बलिहारी ॥ गु० १ ॥ संवत इग्यारे वार शशी। बत्तीसे जनम्यां शुभ दिवसी । श्रावक कुल हुंबडनें हुलसी ॥ गु० ॥ ॥ २ ॥ जसु वाछगसा पितु नाम भणे । वाहडदे माता हर्ष घणें । इकता लीसे दिक्षापभणे ॥ गु० ३ ॥ गुणहत्तरे वल्लभ पाटधरी । गुरु माया बीजनो जाप करी। गुरु जग में प्रगटया तरणतरी ॥ गु० ४ ॥ मणिधारी जिन चंद उपगारी । जिन दत्त सूरिंद के पटधारी । भये दादा दूजा सुखकारी ॥ गु० ५ ॥ राशल पितु देल्हण दे माता । श्री माल गोत्र बोधनशाता । दिल्ली

पतसाह सु गुण गाता॥गु० ६ ॥ जसु चोथे पाट उद्योत करी। जिन कुशल सूरिंद अति हर्ष भरी । तेरेसे तीसे जनम घरी ॥ गु० ७॥ जसु जिह्ला जनक जगत्र जीयो । वर जैत सिरी शुभस्वपन लीयो । गुरु छाजेड गोत्र उद्धार कीयो॥ गु० ८॥ धन सेंतालीसे दीक्षा धरी । जिन चंदसूरीश्वर पाटवरी। गुणहत्तरे सूरि मंत्र जाप करी ॥ गु० ९॥ सेवा में बावन बीर खरा। जोगणीया चोसठ हुकम धरा । गुरु जगमें केइ उपगार करा॥ गु० १०॥ माणक सूरीश्वर पद छाजे । जिन चंदसूरि जगमें गाजे। भये दादा चोथा सुख काजे ॥ गु० ११॥ जिन चांद उगाय्यो उजियालो । अम्मावश की पूनमवालो। सब श्रावग मिल पूजन चालो ॥ गु० १२॥ जिन अकबर कूं परचा दीना । काजीकी टोपी वश कीना । वकरीका भेद कह्या तीना। गु०१३॥ गंधोदक सुरभि सुकलश भरी। पक्षालन सद गुरु चरण परी। या पूजन कवि ऋद्धिसार करी। गु० १४॥ श्लोक॥ सुर नदी जल निर्म्मल धारयः। प्रबल दुष्कृत दाघ निवारयः । सकल मंगल वंछितदायकं। कुशल सूरि गुरोश्चरणायजे॥ १॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरषाय, परम गुरु देवाय, भगवते श्री जिनशाशनो द्दीपकाय, श्री जिन दत्त सूरिश्वराय । मंडित भाल स्थल श्री जिनचंद्र सूरीश्वराय । श्री जिन कुशल सूरीश्वराय । अकबर असुर त्राण प्रतिवोधकाय श्री जिन चंदसूरीश्वराय। जलं निर्वपामिते स्वाहा॥१॥

॥ ❀ ॥ अथ दूजी केशर चंदन पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥॥ दोहा॥ केशर चंदन मृग मदा । कर वनसार मिलाप । परचा जिन दत्तसूरि का। पूज्यां तूटे पाप ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ चाल वीण वाजे की॥ दीन के दयाल राज सार२ तूं। आंकणी॥आये भरु अठ्ठेनग्र धाम धूम २ धुं। वाजते निशाण ठोर हर्ष रंग हूं। ह० दी० १॥ मूसलमांन मुगलपूत फोज मो जमूं । फोत मोत होगया हायकार सूं॥ हां० दी० २॥ सब्र विन्न देख आप हुकम दील यूं । लावो मेरे पास आस जीव दान दूं॥ जी० दी० ३॥ मृतक पूत मंत्र सें उठाय दीनतूं। देख के अचंभ रंग दास खासकूं ॥ दा० ४ दी०॥ करत सेव भाव पूर पूर राजजूं। ठोर के अभक्ष खाण हाजरी भरूं ॥ हा० ५ दी०॥ वीजखीजके पखी मति

क्रमण के मूं । हाथसें उठाय पात्र ढांक दीन हूं ॥ ढां० ६ दी० ॥ दामनी अमोल बोल सिद्ध राज तूं । देतुं वरदान गोरु बंध कौन क्यूं । वं० ७ ॥ दत्त नाम जपत जाप करत नांह चूं । फेर में पड़ंगी नांह गोरु दीनफूं ॥ गो० ८ दी० ॥ करोगे निहाल आप पाव पलकनूं । रामऋद्धिसार दास चरण गहल्यूं ॥ च० १० दी० ॥ श्लोक ॥ मलय चंदन केशर वारिणा । निखिल जाड्य रुजातप हारणा । शकल० । ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन दत्त सूरी गुरो केशर चंदनं निर्व्विपामिने स्वाहा ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तीसरी पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ चंपा चमेली मालती । मरुवा अरु मचकुंद । जो चाढे गुरु चरण पर । नित घर होय आनंद ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नींद तो गई वादीला मारी० । ए चाल ॥ राग मांम ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गुरु पर तिख सुर तरु रूप सुगरु शम दूजो तो नही । दूजो तो नही रे सुमति जन दूजो तो नही । गुरु परतिख सुर तरु रूप सु गुरुने पूजो तो सही ॥ ए आंकणी ॥ चितोरु नगरी वज्र थंभ मे । विद्या पोथी रही रे ॥ सु० ॥ हेजी मंत्र जंत्र विद्या में पूरी गुरु निज । हाथ गृही ॥ गु० गुरुपर० ॥ १ ॥ पुरउज्जेणी महाकाल के । मंदिर थंभ कहीरे सुम० । हेजी शिद्धशेन दिन करकी पोथी । विद्या सरव लहीरे सु० वि० गुरुप० ॥ २ ॥ उज्जेणी व्याख्यान बीच मे । श्राविका रुप ग्रहीरे । सु० श्रा० ॥ हेजी जोगणीयां छलणे कुं आई, सब कुं कील दई । सु० गु ३ ॥ दीन होय जोगणीयां चोसठ । गुरु की दाश भईरे । सु० गु० ॥ हेजीशात दीया वरदान हरख में, पसरया सुजस मही ॥ प०गु० ४ ॥ पुष्पमाल गुरु गुण की गुंथी । चाढो चित्त चहीरे । सु०चा० । हेजी कहे रामऋद्धिशार सुजश की बुंटी आप दई । सु० गु० ५ । श्लोक । कमल चंपक केतकी पुष्पके । परि मलाख्य पद पद बुंद के । शकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन दत्त० पुष्पं निर्व्विपामिने स्वाहाः । ३ । ॥❀॥

पतसाह सु गुण गाता॥गु० ६ ॥ जसु चोथे पाट उद्योत करी। जिन कुशल सूरिंद अति हर्ख भरी । ते रेसे तीसे जनम धरी ॥ गु० ७ ॥ जसु जिह्वा जनक जगत्र जीयो । वर जैत सिरी शुभस्वपन लीयो । गुरु लाजेड गोत्र उधार कीयो ॥ गु० ८ ॥ धन सैंतालीसे दीक्षा धरी । जिन चंदसूरीश्वर पाटवरी । गुणहत्तरे सूरि मंत्र जाप करी ॥ गु० ९ ॥ सेवा में बावन बीर खरा । जोगणीया चोसठ हुकम धरा । गुरु जगमें केइ उपगार करा ॥ गु० १० ॥ माणक सूरीश्वर पद लाजे । जिन चंदसूरि जगमें गाजे। भये दादा चोथा सुख काजे ॥ गु० ११ ॥ जिन चांद उगायो उजियालो । अम्मावश की पूनमवालो । सब श्रावग मिल पूजन चालो ॥ गु० १२ ॥ जिन अकबर कूं परचा दीना । काजीकी टोपी वश कीना । बकरीका भेद कह्या तीना। गु०१३॥ गंधोदक सुरभि सुकलश भरी । पक्षालन सद गुरु चरण परी । या पूजन कवि ऋद्धिसार करी । गु० १४ ॥ श्लोक ॥ सुर नदी जल निर्म्मल धारयः । भवल दुष्कृत दाघ निवारयः । सकल मंगल वंछितदायकं । कुशल सूरि गुरोश्चरणायजे ॥ १॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरषाय, परम गुरु देवाय, भगवते श्री जिनशाशनो द्दीपकाय, श्री जिन दत्त सूरिश्वराय । मंडित भाल स्थल श्री जिनचंद्र सूरीश्वराय । श्री जिन कुशल सूरीश्वराय । अकब्बर असुत्राण प्रतिबोधकाय श्री जिन चंदसूरीश्वराय । जलं निर्व्विपामिते स्वाहाः॥१॥

॥ ❁ ॥ अथ दूजी केशर चंदन पूजा ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ ॥ दोहा ॥ केशर चंदन मृग मदा । कर घनसार मिलाप । परचा जिन दत्तसूरि का । पूज्यां तूटे पाप ॥ ❁ ॥ ॥ ❁ ॥

॥ चाल वीण वाजे की ॥ दीन के दयाल राज सार२ तूं । आंकणी॥आयें भरु अछेनग्र धाम धूम २ धुं । वाजते निशाण ठोर हर्ष रंग हूं । ह० दी० १ ॥ मूसलमांन मुगलपूत फोज मो जमूं । फोत मोत होगया हायकार सूं ॥ हा० दी० २ ॥ सन्न विन्न देख आप हुकम दील यूं । लावो मेरे पास आस जीव दान दूं ॥ जी० दी० ३ ॥ मृतक पूत मंत्र सें जगाय दीनतूं । देख के अचंभ रंग दास खासकूं ॥ दा० ४ दी० ॥ करत सेव भाव पूर पूर राजजूं । भोरु के अभक्ष खाण हाजरी भरूं ॥ हा० ५ दी० ॥ बीजखीजके पमी प्रति

क्रमण के मूं । हाथसें उठाय पात्र ढांक दीन हूं ॥ ढां० ६ दी० ॥ दामनी अमोल बोल सिद्ध राज तूं । देतुं वरदान गोरु बंध कीन क्यूं । बं० ७ ॥ दत्त नाम जपत जाप करत नांह चूं । फेर में पडूंगी नांह गोरु दीनफूं ॥ गो० ८ दी० ॥ करोगे निहाल आप पाव पलकर्नूं । रामऋद्धिसार दास चरण गाहजूं ॥ च० १० दी० ॥ श्लोक ॥ मलय चंदन केशर वारिणा । निखिल जाडय रुजानप हारणा । शक्ल० । ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन दत्त सूरी गुरो केशर चंदनं निर्व्विपामिते स्वाहा ॥ २ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ तीसरी पुष्प पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ चंपा चमेली मालती । मरवा अरु मचकुंद । जो चाढे गुरु चरण पर । नित घर होय आनंद ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नींद तो गई वादीला मारी० । ए चाल ॥ राग मांरु ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गुरु पर तिख सुर तरु रुप सुगरु शम दूजो तो नहीं । दूजो तो नही रे सुमति जन दूजो तो नहीं । गुरु परतिख सुर तरु रुप सु गुरुनें पूजो तो सही ॥ ए आंकणी ॥ चितोरु नगरी वज्र थंभ में । विद्या पोथी रही रे ॥ सु० ॥ हेजी मंत्र जंत्र विद्या में पूरी गुरु निज । हाथ ग्रही ॥ गु० गुरुपर० ॥ १ ॥ पुरउज्जेणी महाकाल के । मंदिर थंभ कहीरे सुम० । हेजी शिद्धशेन दिन करकी पोथी । विद्या सगल लहीरे सु० वि० गुरुप० ॥ २ ॥ उज्जेणी व्याख्यान बीच मे । श्राविका रुप ग्रहीरे । सु० श्रा० ॥ हेजी जोगणीयां छलणे कुं आई, सब कुं खील दई । सु० गु ३ ॥ दीन होय जोगणीयां चोसठ । गुरु को दाश भईरे । सु० गु० ॥ हेजीशान दीया वरदान हरख सें पमरया सुजस मही ॥ प०गु० ४ ॥ पुष्पमाल गुरु गुण की गूंथी । चाढो चित्त चहीरे । सु०चा० । हेजी कहे रामऋद्धिशार सुजश की बूंटी आप दई । बूं० गु० ५ । श्लोक । कमल चंपक केतकी पुष्प कें । पारि मलाश्व पद पद वृंद के । शक्ल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन दत्त० पुष्पं निर्व्विपामिते स्वाहा । ३ । ॥ ❀ ॥

॥ ❋ ॥ अथ चोथी धूप पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ धूप पूज कर सुगुरु की । पसरे परमल पूर । जस सुगंध जगमें वधे । चढे सवाया नूर ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ राग सोरठ ॥ कुबजा ने जादू मारा ॥ ए चाल ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अंबिका विरुद बखाणे गुरु तेरो ॥ अं० ॥ तुम युग प्रधान नही छाने॥गु० ए आंकणी ॥ गढ गिरनारपें अंबड श्रावक । एसो नियम चित ठाणे। युग प्रधान इस जुग में कोई । देखूं जन्म प्रमाणे ॥ गु०अं० १ ॥ कर उपवाश तीन दिन बीते । प्रगटी अंबा ज्ञाने ॥ गु० ॥ प्रगट होय कर में लिख दीना । सुवरन अक्षर दाने ॥ गु० अं० २ ॥ या गुण संयुत अक्षर वांचै । ताकूं युग वर जाने ॥ गु० ॥ अंबड मुलक २ में फिरता । सूरि शकल पतवाने ॥ गु० ३ ॥ आया पाश तुमारे सदगुरु । कर पसार दिखलाने ॥ गु० ॥ वास क्षेप उन ऊपर मालाा । चेला वांच सुणानें ॥ गु० अं० ४ ॥ सर्व देव हे दाश जिनोके । मरु धर कल्प प्रमाणे ॥ युग प्रधान जिन दत्त सूरीश्वर । अंबड शीश झुकाने ॥ गु० ५ ॥ उद्योतन सूरीनें निज हथ । चोरासी गछ ठाने । सो शन तुमरी शेवा सारे । चौरासी गछ मानें ॥ गु० ६ ॥ जो मिथ्यात्वी तुमकूं न पूजे । सो नही तत्व पिछाने । भद्र बाहु स्वामी तुम कीर्त्तन । कीनी ग्रंथ प्रमाणे ॥ गु० ७ ॥ युग प्रधान परि कीए गंडिका । गण धर पद वृत्ति म्याने । कहे रामऋद्धिशार गुरुकूं । पूजा धूप कराने ॥ गु० ८ ॥ श्लोक ॥ अगर चंदन धूप दशांगजैः । प्रशरिता खिल दिक्षु सु धुम्रकै ॥ शकल मं० ४ ॥ ॐ ह्रीँ श्रींपर० धूपं निर्व्विपामिते स्वाहाः ॥ ४ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ पांचमी दीपपूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ दीप पूज कर सुगण नर । नित २ मंगल होत । उजियालो जगमें जुगत । रहे अखंम्त जोत ॥ १ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ चाल ख्याल की ॥ पूजन कीज्योजी नर नारी गुरु महाराज का ॥ हो पू० ॥ सिंधु देशमें पंच नदी पर । साधे पांचु पीर । लोई ऊपर पुरष तिराये । ऐसे गुरू सधीर ॥ पू० ॥ २ ॥ प्रगट होयके पांच पीरने । सात दीया बरदांन । सिंधु देश में खर तर श्रावग । होवेगा धनवान ॥ पू० ॥ २ ॥ सिंधु

देश मुलतान नग्रमें । बडा महोछव देख । अंबड और गछ का श्रावग । गुरु सें कीना द्वेष ॥ पू० ॥ ३ ॥ अण हिलपुर पत्तन में आवो ॥ तो में जाणुं सच्चा । बस्मो महोछव आवेंगे तूं । निर्धन होगा कच्चा ॥ पू० ॥ ४ ॥ पत्तन बीच पधारे दादा । सनमुख निर्धन आया । गुरु बतलाया क्यूंरे अंबड । अहंकार फल पाया ॥ पू० ॥ ५ ॥ मनमें कपट कीया अंबडने । खरतर महिमा धारी । जहर दीया उन अशन पांनमें । गुरु विध जाणी सारी ॥ पू० ६ ॥ भण शाली सुखवर श्रावगसें । निर्विष मुद्री मंगाई । जहर उतारा तब लोकोंमें । अंबड निंधा पाई ॥ पू० ॥ ७ ॥ मरके बिंतर हुवा वो अंबड । रजो हरण हर लीना । भणसाली विंतर वचनोसें । गोत्र उतारा कीना ॥ पू० ॥ ८ ॥ सज्ज होय गुरु औघालेके । गोत्र वचाया सारा । रुद्धिशार महिमा सद गुरुकी । दीपकका उजयारा ॥ पू० ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ अति सुदिसमयै खलु दीपकैः । विमल कंचन भाजन शंस्थितै ॥ सकल० ॥ ॐ ह्रीँ पर० दीपं निर्व्विपामिते स्वाहाः ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अक्षत पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ अक्षत पूजा गुरु तणी । करो महाशय रंग । क्षती न होवे अंग मे । जीते रण मे जंग । १ । राग आसावरी ॥ अवधू सो जोगी गुरु मेरा ॥ ए चाल ॥ रतन अमोलख पायो सु गुरु शम । रतन अमोलख पायो । गुरु शंकट सवही मिटायो । सु० ॥ ए आंकणी ॥ विक्रमपुर नगरी लोकन कूं । हेजा रोग संतायो । वहोत उपाय कीया शांतिक का । जरा फरक नही आयो । सु० र० १ । जोगी जंगम ब्रह्म शंन्यासी । देवी देव मनायो । फरक नहीं किनही ने कीना । हाहाकार मचायो । सु० र० २ ॥ रतन चिंतामणि सरिषो साहिब । विक्रमपुर में आयो । जैन संघ को कष्ट दूर कर जैजैकार वरतायो ॥ सु० र० ३ ॥ महिमा सुण माहेश्वर ब्राह्मण । सवही शीश नमायो । जीवत दांन करो महाराजा । गुरु तब यूं फुरमायो । सु० र० ४॥ जो तुम समकित व्रत कों धारो । अवही करदूं उपायो । तहत वचन कर रोग मिटायो । आनंद हर्ष वधायो । सु० र० ५। जो कोई श्रावग व्रत नही धारयो पुत्री पुत्र चढायो । साधु पांच से दीक्षत कीना । साथ वीयां समुदायो ।

। सु० र० ६ । मंत्र कला गुरु अतिशय धारी । ऐसो धर्म दीपायो ॥ ऋद्धिसार पर किरपा कीनी । साचो इलम बतलायो ॥ सु० र० ७ ॥ श्लोक ॥ सरल तंडुल कै रति निर्मलै ॥ प्रवर मौक्तिक पुंज वदूज्वलैः सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प० अक्षतं निर्व्विपामिते स्वाहाः ॥ ६ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ नैवद्य पूजा सातमी । करो भविक चित चाव ॥ गुरु गुण अगणित कुण गिणे । गुरु भव तारण नाव ॥ १ ॥ राग कल्याण । तेरी पूजा वणी हे रसमे ॥ ए चाल ॥ हो गुरु किया असुर कुं वश में । ए आंकणी । वरू नगरी मे आप पधारे । सांभेला धसमस में । ब्राह्मन लोक बरू अभिमानी । मिलकर आया सुसमे ॥ हो गु० १ ॥ महिमा देख सक्या नही गुरु की भरे मिथ्यात्वी गुस में । मृतक गऊ जिन मंदिर आगे । रखदी सनमुख चसमे । हो गु० २ ॥ श्रावग देख भये आकुलता । कहे गुरु से कसमें । चिंता दूर करी हे संघ की । गऊ उठ चाली रूसमे ॥ हो गुरु० ६ ॥ मरी गऊ कूं जीती कीनी । लोक रह्या सब हसमे । जाके गाय पडी रुद्रालय । संघ भया सब खुसमे । हो गु० ४ । ब्राह्मण पांव पड़या सब गुरुके । देख तमासा इसमे । हुकुम उठावेंगे शिर ऊपर । तुम शंतति की दिशमे ॥ हो गु० ५ ॥ नमस्कार हे चमत्कार कूं । कीनी पूजा रसमें । कहे राम ऋद्धिसार गुरु की । आनंद मंगल जस में ॥ हो गु० ६ ॥ श्लोक ॥ बहु विधे श्वरुभिर्वटकैर्यकैः ॥ प्रचुरसर्प्पि पिपक सुखज्ज कै । शकल० । ॐ ह्रीं श्रीं प० नैवद्यंनिर्व्विपामिते स्वाहाः ॥ ७ ॥

॥ ❋ ॥ अथ फल पूजा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दोहा ॥ फल पूजा सें फल मिले । प्रगटे नवे निधान ॥ चिहुंदिश कीरत विस्तरे । पूजन करो सुजान ॥ १ ॥ रथ चढ जादुनंदन आवत हे ॥ ए चाल ॥ चालो संघ सब पूजनकूं । गुरु शमरयां सनमुख आवत हेरे: चा० ५ ॥ ए आंकणी ॥ आनंदपुर पट्टन को राजा । गुरु शोभा सुण पावत हेरे ॥ चा० ॥ भेज्या निज परधान बुलानें । नृप अरदास सुणावत हेरे । चा० । लाभ जांण गुरु नगर पधारे । नृपत आय वधावत हेरे । चा० । राज कुमर को कुष्ट मिटायो । अचरज तुरत दिखावत

हेरे । चा० २ । दश हज्जार कुटंब संग नृप कूं । श्रावग धर्म धरावत हेरे । चा० ३ ॥ दया मूल आज्ञा जिनवर की । वारे ब्रत उचरावत हेरे ॥ चा० ॥ एसे च्यार राज समकित धर । खर तर संघ वणावत हेरे । चा० ४ । कुष्ट जलंधर क्षैण भगंदर । केइयक लोक जीवावत हेरे । चा० । ब्राह्मन क्षत्री अरु माहेश्वर । ओश वंश पसरावत हेरे । चा० ५ ॥ तीस हजार एक लख श्रावग । महिमा अधिक रचावत हेरे ॥ चा० ॥ कहत राम रुद्धिसार गुरु कूं । फल पूजा फल पावत हेरे ॥ चा० ६ ॥ श्लोक ॥ फनसमोचसदाफल कर्कटै । सुसुखदै किल श्रीफल चिर्भटै । शकल० ॥ ॐ ह्रीं प० फलं निर्व्विपामिते स्वाहाः ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वस्त्र सुगंधी पूजा ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दूहा ॥ वस्त्र अत्तर गुरु पूजना । चोवा चंदन चंपेल । दुस्मन सब सज्जन हुवे । करे सुरंगा खेल ॥ १ ॥ मनमो किमही न बाजे हो कुंथु जिन ॥ ए चाल ॥ लखमी लीला पावेरे सुंदर । लखमी लीला पावे । जे गुरु वस्त्र चढावे रे । सुं० । सुजस अत्तर महकावेरे ॥ सुं० ॥ दुरजन शीश नमावेरे । सुं० । ए आंकणी ॥ दरिया वीच जीहाज श्रावग की । डूबण खतरे आवे । साचे मन समरे सद गुरु कूं । दुख की टेर सुणावेरे ॥ सुं० । १ ॥ वाचंताव्याख्यानसूरीश्वर । पंखी रूपे थावे । जाय समंद में ज्याज तिराई । फिर पीछा जब आवेरे ॥ सुं० २ ॥ पूछे संघ अचरज में भरीया । गुरु सब वात सुणावे ॥ एसें दादा दत्त कुशल गुरु । परचा प्रगट दिखावेरे । सुं० ३ । वोथर गूजरमल श्रावग की । दादा कुशल तिरावे । सुक्खसूरि गुरु शमय सुंदर की । ज्याज अलोप दिखावेरे ॥ सुं० ४ल० ॥ वारे से इग्यारे दत्तसूरि । अजमेर अण शण ठावे । उपज्या सोधर्म देवलोके । सीमंधर फुरमावेरे सुं० ५ ॥ इक अवतारी कारज सारी । मुक्ति नगर में जावे । कुशल सूरि देराउर नगरे । भुवनपति सुरथावेरे ॥ सुं० ६ ॥ फागुण वदि अम्मावश सीधा । पूनम दरश दिखावे । मणिधारी दिल्ली मे पूज्यां । शंकट सुपने नावेरे । सु० ७ । रथी उठी नही देख बादशा । वांही चरण पधरावे । वस्त्र अतर पूजा सद गुरु की । रुध्दिशार मन भावेरे । सुं० ।

॥ श्लोक ॥ अखिल हीर शुचि नव चीर कै। प्रवर प्रावरणै खलुगंधतः। शक्ल० ॥ ॐ ह्रीँ श्रींप० वस्त्रं चोवा चंदन पुष्पसारं निर्विपामिते स्वाहाः॥

॥ ❋ ॥ अथ धजा पूजा ॥ ❋ ॥

॥ दोहा ॥ ध्वज पूजा गुर राज की। लहके पवन प्रचार। तीन लोकके शिखर पर। पोहचे सो नर नार ॥ १ ॥ चाल। जिन गुण गावत सुर सुंदरी रे। ए चाल ॥ ध्वज पूजन कर हरख भरी रे ॥ ध० ॥ सज सोले शिणगार सहेल्यां। श्री सदगुर के द्वार खरीरे। ध०। अप छर रूप सुतन सुक लीनी। ठम २ पग झणकार करीरे ॥ ध० १ ॥ गावत मंगल देत प्रदक्षणा। धन २ आनंद आज घरीरे। ध० ॥ निर्धन कूं लखमी वगसावत। पुत्र विना जाके पुत्र करीरे ॥ ध० २ ॥ जो जो परतिख परचा देख्यां। सुणो भविक दिल वीच धरीरे। ध० ॥ फतेमल्ल भरुगतीया श्रावग। पहली शंका जोर करीरे ध० ३। परतिख देखूं जब में जाणूं। प्रगटया ततखिण तरण तरीरे ॥ ध० ॥ पुष्प माल शिर केशर टीका। अधर श्वेत पोशाख करीरे ॥ ध० ४ ॥ मांग २ वर बोले बाणी ॥ फरक वतावो गुरु मेघ झरीरे। ध० ॥ फरक भगायो दोय लाख पर। तेरी महिमा नित्त हरीरे ॥ ध० ५ ॥ गैनचंद गोलेछा कूं ते। परतिख दीना दरस फरीरे ॥ ध० ॥ विक्रमपुर में थुंभ तुमारा। चित्र करावत सुर सुंदरीरे ॥ ध० ६ ॥ थांनमल्ल लूणयां पर किरपा। लखमी लीला सहज वरीरे। लखमी पति दूगरु की साहिब। हुंभी की भुगताण करीरे। ध० ७ ॥ जो उपगार करया तें मेरा। दीनी सनमुख अमृत जरीरे ॥ ध०। तेरी कृपा सें सिद्धी पाई। जागे जस अरु भागे भरीरे। ध० ८ ॥ भूखा भोजन तिसिया पाणी। भरत हाजरी देव परीरे ॥ ॥ ध० ॥ विमुख वखत पर सहाय हमारे। ऋद्धिसारकी गरज सरीरे। ध० ९॥ श्लोक ॥ मृदु मधुरध्वनि खिंखणी नाद कै। ध्वजविचित्रित विसृतवासकै। शक्ल०। शिखरो परि ध्वजां आरोपयामि स्वाहाः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ अर्घ पूजा कलस ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ दूहा ॥ भट्टारक पदवी मिली। जीते वादी वृंद। कंठ विराजत सरस्वती। जग में श्री जिन चंद ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ राग आसावरी ॥ अथवा धन्या श्री ॥ पूजन जग सुखकारी । सुगुरु तेरी॥पूज० । तेरे चरण कमल बलिहारी । सु० । साह सलेम दिल्लीको बादस्या सुण के शोल तिहारी। भट्ट हरायो चरचा करके। भट्टारक पद धारी। सु०१॥ अम्मावश की पूनम कीनी। चंद उगायो भारी। चढके गगन करी हे चरचा। सूरज से तप धारी। सु० ॥ चौदेसे उगणीस शाल में। लखनेउ नगर मझारी गोरा फिरंगी टोपीवाला। दिलमें यह बात विचारी। सु० ३। जैन सितंबर देव जो सचा। पूरे मनसा हमारी। वाणी निकसी राज्य तुमारा। होवेगा इधकारी ॥ सु० ४ ॥ अंधेकी खोली आंख सूरत में। पूजे सब नर नारी। कह लग गुण बरणूं मे तेरा। तूं ईश्वर जयकारी ॥ सु० ५ ॥ उगणीसे संवत्सर तेपन। मिगसर माश मझारी। शुकल दूज जिन चंद सूरीशर । खर तर गछ आचारी सु० ६ कुशल सूरि के निज संतानी। क्षेम कीर्त्ति मनुहारी। प्रति बोध्या जिन क्षत्री पांचसे। जांन सहित अणगारी ॥ सु० ७ ॥ क्षेम धारु शाखा जब प्रगटी । जग में आनंदकारी। धर्मशील साधू गुण पूरे। कुशल निधान उदारी ॥ सु० ८ ॥ या पूजन करतां सुख आनंद । अन धन लखमी सारी। कहत राम रुद्धिशार गुरूकी। जय २ शब्द उचारी। सु० ९ ॥ इति श्री समस्त दादा गुरु पूजा संपूर्ण ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ सद्गुरूणां आरती लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पहली आरती दादाजीकी कीजे । दुःखदोहग सब दूर हरीजे। (जैजै सद्गुरु आरती कीजै) श्रीजिन दत्त सूरि समरीजे। (जै जे०) ॥ १ ॥ बीजी बीज पमंती धारा । भयवारण तूंही सुखकारा (जै०) ॥ २ ॥ तीजी परचा पूरक तेरी । दूर हरो सब दुर्मति मेरी (जै)॥ ३ ॥ चोथी मुगलपुत जिय दायक। सुरवर हुकम धरे ज्युं पायक॥ (जे०)॥ ४ ॥ पांचमी पांच नदी जिण तारी। संघ सकलनो संकट वारी ॥ (जे०) ॥ ५ ॥ छठी थांभो वज्र विदारी। विद्या पोथी परगट कारी॥ (जे०) ॥ ६ ॥ सातमी चौसठ जोगण साधी। सूरिमंत्र सुरनें आराधी ॥ (जे०)॥ ॥ ७ ॥ इण विध सात आरती कीजे। मनवंछित संपति फल लीजे ॥ (जे०)

॥ ८ ॥ जैन लाभ खरतर गणधारी । सदगुरु चरण कमल बलिहारी ॥ (जै०) ॥ ९ ॥ इति श्री दादाजीकी आरती संपूर्णम् ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्रीदादाजीको वृद्ध स्तवन लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ विलशे रुद्धि समृद्धि मिली । शुभयोगै पुण्यदशा सफली । जिन कुशलसूरि गुरु अतुल बली । मनवंछित आपै दादो रङ्गरली ॥१॥ मङ्गल लील समें विपुला । नव नवय महोत्सव राजयला । सुपसायें गुरु चढतीक ला । सुकलीणी पुत्रवती महिला ॥ २ ॥ सबही दिन थायें सबला । सद वास कपूर तणा कुरला । हय गय रथ पायक बहुला । किल्लोल करै मंदिर कमला ॥ ३ ॥ वींझै चमर निसाण घुरै । नरवै दरवार खमा पुहरै । जय जय करजोडी उचरै । सांनिध्य गुरु सब काज सरै ॥ ४ ॥ सरसा भोजन पांन सदा । दुखरोग दुकाल न होय कदा । अविचल कलट अंग मुदा । गुरु कूरम दृष्टि प्रसन्न सदा ॥ ५ ॥ घम घम माद्दल नाद घुमें । बत्तीसे नाटक रङ्ग रमें । प्रगट्यो पुण्य प्रताप हमैं । सबला अरियण ते आय नमें ॥ ६ ॥ तन सुख मन सुख चीर तनें । पहिरे वेलाउल होय रनें । ध्यावो कुसल गुरु एक मनें । । जृंभक सुरमंदिर भरै धनें ॥ ७ ॥ ततखिण घण खंच्यो आवै । करि स्यामघटा मेह वरसावै । तिसियां तोय तुरत पावै । जलदाता त्रिजग सुजस गावै ॥ ८ ॥ लहिरयां जल कल्लोल करै । प्रवहण भवसायर मझिभरै । वूडंता वाहण जे समरै । ते आपद निश्चै सुं उवरै ॥ ९ ॥ खरु खरु खरग प्रहार वहे । सोदामनि जिम सम सेल सहे । कुशल २ गुरुनाम कहे । ते खेम कुशल रिणमझ लहे ॥ १० ॥ थुंभ सकल परचापूरै । श्री नागपूरै संकट चूरै । मंगलोर अधिकै नूरै । देरावर भय टालै दूरै ॥ ११ ॥ वीरमपुर वानै सुधरै । खंभाइतपुर विक्रम नयरै । जिणचंद सूरि पाटे पवरे । जसु कीरति महिमंडल पसरै ॥ ॥ १२ ॥ पूरव पश्चिम दक्षिण आगे । उत्तर गुरु दीपे सोभागें । दह दिशि जन सेवा मांगे । श्रीखरतर गछनी महिमा जागे ॥ १३ ॥ पुर पट्टण जनपद गामे । गाईजे कुशल नयर गामे । पूजे जे नर हितकामें । ते चक्रवर्त्ति पदवीपांमे ॥ १४ ॥ श्रीजिनकुशलसूरि

साखै । सेवकजननें सुखिया राखै । समरयां गुरुदरसण दाखै । श्रीसाधु कीरत पाठक भाखै ॥ वि०॥ १५ ॥ इति ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्री जिन दत्तसूरिजी उत्पत्ति स्तोत्र लि० ॥ ❋ ॥

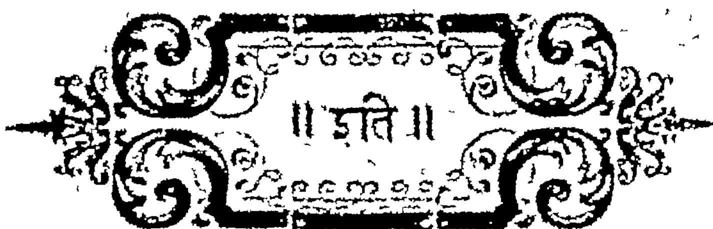
॥ ❋ ॥ सिरि सुयदेव पसाय करे । गुरु श्री जिन दत्तसूरी । वंदिसु खरतर गछरयण । सूरि जेम गुण पूरि ॥ १ ॥ संवत् इग्यारै वरसै । वत्तीसै जसु जम्म । वाछिग मंत्रि पिता जणणी । बाहडि देव सुरम्म ॥ २ ॥ इकतालै जिणवइ गहिय । गुणहत्तरे जसु पाट । वइसाखां वदि छठि दिन । पइ प्रणमें सुरथाट ॥ ३ ॥ अवंभ सावय कर लिहिय । सोवन अक्षर अंब । जुगप्रधान जग पयडियोए । सिरि सोहै पडि बिंब ॥ ४ ॥ जिण चउसठि जोगिण जणिय । खित्तपाल बावन्न । साइण डाइण विज्जुलिय । पुहविह नामनयन्न ॥ ५ ॥ सूरिमंत बलकर सहिय । साहिय जिम धरणिंद । सावइ साविय लक्ख इग । पडि वोहिय जिण विंब ॥ ६ ॥ अरि करि केसरि दुछदल । चउविह देव निकाय । आंण नलोपै कोई जुगे । जसु प्रणमें नर राय ॥ ७ ॥ संवत बार इग्यारसमें । अजयमेर पुर ठाण । इग्यारस आसाढ सुदि । सगपत्तन सुह जांण ॥ ८ ॥ श्री जिनवल्लह सूरि पए । श्रीजिन दत्त मुणिंद । विघ्नहरण मंगल करण । करो पुण्य आणंद ॥ ९ ॥ ❋ ॥ इति श्री जिनदत्त सूरि ज्यष्टकं ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ श्रीजिन कुशल सूरजी उत्पत्ति स्तोत्र लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ रिसह जिणेसर सोजयो । मंगलकेलि निवास । वासव वंदिय पय कमल । जगसहु पूरै आस ॥ १ ॥ ❋ ॥ (चौपाई) ॥ ❋ ॥ चंदकुलं वर पूनिम चंद । वंदो श्री जिन कुशल मुणिंद । नाम मंत्र जसु महिम निवास । जो समरे तसपूरै आस ॥ २ ॥ मरुमंडल समियाणो गांम । धण कण कंचण अति अभिराम । जिहां वसे जिल्हागर मंत्रि । जेतसिरी तसु घरणी कलत्र ॥ ३ ॥ जसु तेरेसे तीसे जम्म । सैंताले सिर संयम रम्म । पाटण सतहत्तरे जसु पाट । निव्यासिये तसु सुरगैवाट ॥ ४ ॥ भूमंडल सरगै पायाल । अचिराचिर जुग इण कलिकाल । प्रभु प्रताप नविमांनै सोय । मैं नविनयणे दीठो जोय ॥ ५ ॥ निरधन लहे धन धन्न सुवन्न । पुन्नहीण पामें

वहु पुन्न । असुखी पामें सुखसंतान । एकमना करतां गुरु ध्यांन ॥ ६ ॥ प्रभु समरण आपद सहु टलै । सयल सांति सुखसंपति मिलै । आधि व्याधि चिंता संताप । ते ऊंमी नवि मेंरै व्याप ॥ ७ ॥ पाप दोष नवि लागै तिहां । प्रभु दरसण उत्कंठा जिहां । सेवंतां सुरतरुनी गंहि । निश्चै दालिद्र मेटै बांहि ॥ ८ ॥ विस हर विस नर विस नरनाह । भूत प्रेत ग्रह व्यंतर राह । प्रभु नांमें जे नकरै पीरु । भाजै भावठ भव भय भीरु ॥ ९ ॥ रोग सोग सवि नासै दूर । अंधकार जिम ऊगै सूर । मूरख फीटी पंभित थाय । प्रभुपसाय दुख दुरिय पुलाय ॥ १० ॥ दिन दिन जिन सासन उद्योत । तिहां अछै भव सायर पोत । सो सदगुरु में भेट्यौ आज । रलीय रंग सीधा सवि काज ॥ ११ ॥ (ढाल) आज घर अंगण सुरतरु फलियो । चिंतामणि कर कमलै मिलियो । उदयो परमाणंद घरे ॥ १२ ॥ आज दीहमें धन्ने गिणियौ । जुगपवरागम जोमें थुणियौ । चंद्रगछ महिमा निलोए ॥ १३ ॥ कांई करो पृथिवी पतिसेवा । कांई मनावो देवी देवा । चिंता आंणो कांई मने ॥ १४ ॥ वार वार ए कवत भणीजै । श्रीजिन कुशलसूरि समरीजै । सरै काज आयास विणे ॥ १५ ॥ संवत चवद इक्यासी वरसै । मुलक वाहणपुरमें मन हरसै ॥ अजिय जिणेसर वरभवणैं ॥ १६ ॥ कीयो कवित ए मंगल कारण । विघन हरण सहु पाप निवारण । कोई मत संसो धरो मने ॥ १७ ॥ जिम २ सेवे सुर नर राया । श्रीजिन कुशल मुनीसर पाया । जयसागर उवझाय थुणे ॥ १८ ॥ इम जो सदगुरु गुण अभिनंदे । ऋद्धि समृद्धै सो चिरनंदै । मन वंछित फलसुफ हुवो ए ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

दादाजी श्रीजिन कुशल सूरजी उत्पत्ति विचारगर्भित स्तो० ॥ ❋ ॥



॥ ❀ ॥ अथ श्री दादाजीस्तवन ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सद्गुरु करुणानिधान राखोलाज मेरी ॥ टेर ॥ जैजै जिन कुशल सूरि । समरत हाजर हजूर । महकत जिम जसकपूर । महमाजगतेरी ॥ स० ॥ १ ॥ जापर तुमहोदयाल । छिनमें करदो निहाल । संकटकों चूरदेव । दोलतकी ढेरी ॥ स० ॥ २ ॥ तुमहो सुरतरु समान । वंछित फल देवोदान । सेवगकों दीनजान । मेटोभवफेरी ॥ स० ॥ ३ ॥ सरण आयेकी राखोलाज । वंछित सब पूरोकाज । हरखचंद सरण आए । कीरति सुण तेरी ॥ स० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीजिन कुशल सूरिजीको छंद लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ समरुं माता सरसती । कुमारी करजोड़ । कवि माता कवियण तणा । पूरे वंछित कोड़ ॥ १ ॥ कुशल करण जग कुशल गुरु । दायक वंछित देव । अहनिसि तो ऊलग करैं । सुर नर सारै सेव ॥ २ ॥ पुर पट्टण गांमें प्रगट । जग सगले जस वास । पुरावदी तो पालिये । वसेसु दादो वास ॥ ६ ॥ (छंद मोतीदाम) ॥ दादो वास दियै दोलत्त । वधै छत्र छाया सेवक वित्त । वधारै मांम दिसो दिसवान । धरै इक चित्त जिके गुरुध्यान ॥ ॥ ४ ॥ पूनम पूनम पूजै पाय । नवा नवा नैवज वार निपाय । चंपावलि केतकि फूल चरच्च । अनोपम श्रीफल लेई अरच्च ॥ ५ ॥ लहै वरि सुंदर लछि अछेह । सझंती सोल वधंती नेह । लहै घर नारी लोयण वांण । ल है घरपूत सपूत सुजांण ॥ ६ ॥ लहै भलगांम सुठांम भूपाल । लहै ढिग भीत भला ढींचाल । लहै घर मंदिर घोडा जोड़ि । लहै भट सेव करे कर जोडि ॥ ७ ॥ लहै घर मंगल मद्द मसत्त । लहै घर चीर अनोपम सत्त । लहै घर साजण हल्ल किलोल । लहै नितलीला छाका छोल ॥ ८ ॥ लहै घरकुरला कूर कपूर । लहै घरजीमण मोतीचूर । लहै मनवंछित भोग वि शाल । लहै घर साल कचोला थाल ॥९॥ धुरै नित गीत तणा गह गट्ट । भणे नित जय २ चारण भट्ट । फलै पूत सपूतां वांझि फलंति । विछोहा वाल्हा वेग मिलंति ॥ १० ॥ अनेकानेक विरुद्द अपार । दीठो इक का ल्हां तूं दातार । जीहां सहस्स हुवे जो मुक्ख । कहुं इक जीहां केई रु

क्ख ॥ ११ ॥ वम्मा विरुद ताहरा विख्यात । नर नारी सहु आवे जात । गुणों कर गिरुवो समुद्र सरीस । कह्योमें कोई नकरज्यो रीस ॥ १२ ॥ (दूहा) रीस न करज्यो कवियणां । में माहरी मतिसार । कहीयो जगमें कुसल गुरु खरतर गछ सिणगार ॥ १३ ॥ (छंद नाराच) सिणगार हार सोहए । सुकांमधेनु दोहए । धरंत ध्यांन जो सदा । टलंत दूर आपदा ॥ १४ ॥ प्रथम तो देराउरै । सुथान सिंधुथीवरै । जेशाण थुंभ जागतो । सुदिठ संघ साबतो ॥ ॥ १५ ॥ मुलतांन मीर सेवता । अनेक पीर देवता । किरो हरैं फतै पुरै । गुरू सदा उदो करै ॥ १६ ॥ मरोट थांन मूलगो । एकांत चित्त उलगो । वीकांण वांन वाधतो । सुथांन थांन साबतो ॥१७॥ प्रभावना रिणीपुरै । नीसाण वाजता घुरै । नागोर नांम दीपतो । दाणव देवजीपतो ॥ १८ ॥ तोरण तेम सोह ए । जगत्त मन्नमोहए । सरूप मेरुतै सही । अपार लछी जां लही ॥१९॥ महिम्म मालपूरतो । लाहोर दुःख चूरतो । कला अनेक आगरै । छत्तीस पवनफूलरै ॥२०॥ दादारी करंत सेव । हिंदुआं तुरक्कां देव । सदा शुध सांगानेर । जालमी करंत जेर ॥ २१ ॥ अमरसरै अनेक । राखतो जु ठोर टेक । मालपुर मझिमान । खान खान सेवै थांन ॥ २२ ॥ ब्राहणपुरै राजरीत । जे तारणें जगत्रजीत । सोझित सुख सद्दयं । वेनातटै विरुद्दयं ॥ २३ ॥ खेजरूले खरो सदा । वाहरू मेरु संपदा । जोधाण जुग्ग जातरा । जुमंति देश देशरा ॥ २४ ॥ वीरम्मपुर तिम्मरी । करंत नृत्य अम्मरी । जालोर जैतसिंवरी । खंभायते खराखरी ॥ २५ ॥ प्रगट्ट आप पाटणें । सूरत सुक्ख सांवणें । अनन्त तेज अहम्मदा । सुमङ्गलोर सर्वदा ॥ २६ ॥ साचोर नुज्ञ सासतो । तुरत्त शत्रु त्रासतो । उदैपुरे जु ईसरै । सेत्रावे कोटले गुरे ॥२७॥ गुरू सदा उदो करै । एकांत ध्यांन जो धरै । नमंत भांण जेतली । कीरत्त कोम तेतली ॥ २७ ॥ (दूहा) कला अनेकां कुशल गुरु । समरयां होय हजूर । अलगी टालै आपदा । जिम अंधारै सूर ॥ २६ ॥ (कलश) सूर तेज जिम नूर । दूर आपद भय टालै । माईतां ज्युं मयाकरी । सेवक नित प्रतिपालै । मनवंछित मायबाप । कुशल गुरु कांयिता दाता । पूनिम पूजे पा

य। रहै जे ध्यानें राता । सुप्रसाद सोम सुंदर सुगुरु । अभय सोम उच्छरंग करी। प्रगटियो थुंभ पाली पुरे । विजे सिंघ लीलावरी ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री दादाजी वृद्धस्तवन ॥ ❀ ॥

॥❀॥ सदगुरुजी थे सांभलो। श्रीजिन दत्त सूरीसहो। सेवकने सांनिध करो। पूरो मनहजगीसहो ॥१॥ (दोलतिदोहोदादाजी संपतिदो)। दोलतदो गुरु माहरा। थांहरा विरुद अनेकहो। तोसेव्यां संकट टलै। एहीज दादा ताहरी टेकहो ॥ २ ॥ दो० ॥ जीती चौसठ जोगिणी। वसकीया बावन वीरहो। सिंध मांहे तें साधीया। पंचनदी पंच पीरहो॥३॥ दो०॥ पडिकमणां मांहे वीजली। चलीय वली छत्र कायहो। थे मंत्री राखी तिका। तूठा वरदेजायहो ॥ ४ ॥ दो० ॥ उच्छव करतां उच्चमें। मूओ मुगलरो पूतहो। जापकरी जीवाडीयो। संघ माहे राख्यो दादे सूतहो ॥ ५ ॥ दो० ॥ वड नगररे ब्राह्मणें। देहरे धरी मृत्यु गायहो। पंच परमेष्टि विद्यावले। पिसुण लगाया दादे पायहो ॥६॥ दो० ॥ विक्रम पुर व्यापी मरी। तैं दूरकीया सहु दुखःहो। परवार पिण पोतै कीयो। सहुनें दीधौ दादै सुःखहो ॥ ७ ॥ दो० ॥ अंबड हाथे अख्यरे । थे प्रगट्या तत खेवहो। युग प्रधान जग तुं जयो। आखै अंबिका देवहो ॥ ॥ ८ ॥ दो० ॥ थांभो वज्र विदारनें। पोथी परगट कीधहो। विद्या सोवन अक्षरें। उजेणी मांहे लीधहो ॥ ९ ॥ दो० ॥ इम विरुद वणावै ताहरा कहितां नावे पारहो। भाग संजोगे दादौ भेटीयो। अम्हवरीयां आधारहो ॥ ॥ १० ॥ दो० ॥ हुंतुं सेवक ताहरो। थे आपो धनरिद्धहो। भुवन कीरति सुप सावले। लाभ उदे सुख सिद्धहो ॥ ११ ॥ दो० ॥ इति श्री दादाजी गीतं॥

॥ ❀ ॥ (पुनः) राग जैतसरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सहाई मेरे श्रीजिन कुशल गुरू ॥ कुशल करण कलि मांहे प्रगट्यो। खरतर गछवरू (स०) बावनो चंदन मृगमद मेली । पूजो प्रेमभरू ॥ (स०) ॥ १ ॥ चिंता चूरण विघ्न विभारण । दालिद्र दूर हरू ॥ (स०) ॥ २ ॥ दिन दिन साहिब चढ़ितें वानें। ध्यावो ध्यान धरू (स०) वाजे जेहना जशना वाजा । ठावी ठांमे जरू ॥ (स०) ॥ ३ ॥ संवत अढार समें असहे । मिगसर मास थिरू (स०) संघ सहित श्री सदगुरु

क्ख ॥ ११ ॥ वग्गा विरुद ताहरा विख्यात । नर नारी सहु आवै जात । गुणों कर गिरुवो समुद्र सरीस । कह्योमें कोई नकरज्यो रीस ॥ १२ ॥ (दूहा) रीस न करज्यो कवियणां । में माहरी मतिजार । कहीयो जगमें कुसल गुरु खरतर गछ सिणगार ॥ १३ ॥ (छंद नाराच) सिणगार हार सोहए । सुकांमधे नु दोहए । धरंत ध्यांन जो सदा । टलंत दूर आपदा ॥ १४ ॥ प्रथम तो देराउरै । सुथान सिंधुथीवरै । जेशाण थुंभ जागतो । सुदिठ संघ सावतो ॥ ॥ १५ ॥ मुलतांन मीर सेवता । अनेक पीर देवता । किरो हरै फतै पुरै । गुरू सदा नदो करै ॥ १६ ॥ मरोट थांन मूलगो । एकांत चित्त ऊलगो । बीकांण वांन वाधतो । सुथांन थांन सावतो ॥१७॥ प्रभावना रिणीपुरै । नीसा ण वाजता घुरै । नागोर नांम दीपतो । दाणव देवजीपतो ॥ १८ ॥ तोरण तेम सोह ए । जगत्त मन्नमोहए । सरूप मेम्तै सही । अपार लछी जां लही ॥१९॥ महिम्म मालपूरतो । लाहोर दुःख चूरतो । कला अनेक आगरै । छत्तीस पवनकूलरै ॥२०॥ दादारी करंत सेव । हिंदुआं तुरकां देव । सदा शुद्ध सांगा नेर । जालमी करंत जेर ॥ २१ ॥ अमरसरै अनेक । राखतो जु ठेम्है टेक । मालपुरै मझिमान । खान खान सेवै थांन ॥ २२ ॥ ब्राहणपुरै राजरीत । जे तारणं जगत्रजीत । सोफित सुख सद्दयं । वेनातटै विरुद्दयं ॥ २३ ॥ खे जरूले खरो सदा । बाहरू मेरु संपदा । जोधाण जुग्ग जातरा । जुरंति देश देशरा ॥ २४ ॥ वीरम्मपुर तिम्मरी । करंत नृत्य अम्मरी । जालोर जैत सिंवरी । खंभायते खराखरी ॥ २५ ॥ प्रगट्ट आप पाटणें । सूरत सुक्ख सांघणें । अनन्त तेज अहम्मदा । सुमङ्गलोर सर्वदा ॥ २६ ॥ साचोर नु ज्ञा मासतो । तुरत्त शत्रु त्रासतो । उदैपुरे जु ईम्है । सेत्रावे कोटले गुरै ॥२७॥ गुरू सदा जदो करे । एकांत ध्यांन जो धरै । नमंत नांण जेतली । कीरत्त कोम्है तेतली ॥ २७ ॥ (दूहा) कला अनेकां कुशल गुरु । समरयां होय हजूर । अलगी टालै आपदा । जिम अंधारे सूर ॥ २६ ॥ (कलश) सूर तेज जिम नूर । दूर आपद भय टाले । माईतां ज्युं मयाकरी । सेवक निन प्रतिपाले । मनवंछित मायबाप । कुशल गुरु कामिता दाता । पूनिम पूजे पा

य । रहे जे ध्यानें राता । सुप्रसाद सोम सुंदर सुगुरु । अजय सोम उच्छ्रग करी । प्रगटियो थुंभ पाली पुरे । विजे सिंघ लीलावरी ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ ॥ अथ श्री दादाजी वृद्धस्तवन ॥ ॥

॥॥ सदगुरुजी थे सांभलो । श्रीजिन दत्त सूरीसहो । सेवकने सांनिध करो । पूरो मनहजगीसहो ॥१॥ (दोलतिदोहोदादाजी संपतिदो) । दौलतदो गुरु माहरा । थांहरा विरुद अनेकहो । तोसेव्यां संकट टले । एहीज दादा ताहरी टेकहो ॥ २ ॥ दौ० ॥ जीती चौसठ जोगिणी । वसकीया बावन वीरहो । सिंध मांहे तें साधीया । पंचनदी पंच पीरहो॥३॥ दौ०॥ पडिक्कमणां मांहे बीजली । वलीय वली छत्र कायहो । थे मंत्री राखी तिका । तूठी वरदेजायहो ॥ ४ ॥ दौ० ॥ उच्छव करतां उच्चमें । मूंओ मुगलरो पूतहो । जापकरी जीवाडीयो । संघ माहे राख्यो दादे सूतहो ॥ ५ ॥ दौ० ॥ वड नगररे ब्राह्मणें । देहरे धरी मृत्यु गायहो । पंच परमेष्टि विद्यावले । पिसुण लगाया दादे पायहो ॥६॥ दौ० ॥ विक्रम पुर व्यापी मरी । तै दूरकीया सहु दुखःहो । परवार पिण पोतें कीयो । सहुनें दीधौ दादे सुःखहो ॥ ७ ॥ दौ० ॥ अंबड हाथे अक्षरे । थे प्रगट्या तत खेवहो । युग प्रधान जग तुं जयो । आखे अंबिका देवहो ॥ ॥ ८ ॥ दौ० ॥ थांभो वज्र विदारनें । पोथी परगट कीधहो । विद्या सोवन अक्षरें । उजेणी मांहे लीधहो ॥ ९ ॥ दौ० ॥ इम विरुद घणाछे ताहरा कहितां नावे पारहो । भाग संजोगें दादौ भेटीयो । अडवडीयां आधारहो ॥ ॥ १० ॥ दौ० ॥ हुंतुं सेवक ताहरौ । थे आपो धनरिद्धहो । भुवन कीरति सुप सावले । लाभ उदे सुख सिद्धहो ॥ ११ ॥ दौ० ॥ इति श्री दादाजी गीतं॥

॥ ॥ (पुनः) राग जैतसरी ॥ ॥

॥ ॥ सहाई मेरे श्रीजिन कुशल गुरू ॥ कुशल करण कलि मांहे प्रगट्यो । खरतर गछवरू (स०) बावनो चंदन मृगमद मेली । पूजो प्रेमभरू ॥ (स०) ॥ १ ॥ चिंता चूरण विघ्न विडारण । दालिद्र दूर हरू ॥ (स०) ॥ २ ॥ दिन दिन साहिब चढिते वानें । ध्यावो ध्यान धरू (स०) वाजे जेहना जशना वाजा । ठावी ठांमै जरू ॥ (स०) ॥ ३ ॥ संवत् अढार समें अडसठे । मिगसर मास थिरू (स०) संघ साहित श्री सदगुरु

ज्ञेटे । श्रीजिन हर्ख सरू ॥ (स०) ॥ ४ ॥ गांव गडाले चरण नमंता । तूठो कल्पतरु (स०) पाठक श्रीविद्याहेम गणीनैं । उदय रतन करू ॥ (स०) ॥ ५ ॥ इति दादाजी स्तवनम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (पुनः) देशीकी चालमें ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (दादा चिरंजीवो सेवक जन सुखदाई दरशण सदा देवो । दादो दीनदयाल सदा दाता । दादो समस्यां आपै सुखसाता । दादौ जगनायक जगगुरु भ्राता (दा०) ॥ १ ॥ दादो परचा जगसगलै पूरै । दादौ सेवकना संकट चूरै । दादौ दुरित हरै सहुनी दूरै ॥ (दा०) ॥ २ ॥ दादा अलगांथी जात्री आवै । दादौ देखीनैं ते सुख पावै । ह्मांरा दादाजीनी जोरैं कोई नावै (दा०) ॥ ३ ॥ दादौ राज नगर मांहे राजै । जिहां सुजश नगारा नितवाजै । दादौ ढोगालां सेहर गाजै ॥४॥ (दा०) दादा घस केशर सूकरू वोली । हाथे लेई सोवन कचोली । पूजो दादाजीनें मिल २ टोली (दा०) ॥ ५ ॥ दादौ आरतियां आरति टालै । दादौ सेवगजननें प्रति पालै । दादौ जिनशासन नित उजवालै (दा०) ॥ ६ ॥ दादौ महिमावंत महाराजा । दादौ राजै खरतर गछराजा । दादौ समस्यां सफल करै काजा (दा०) ॥ ७ ॥ दादौ कुसल सुरिंद बहुगुण धारी । दादौ परतिख सुर तरु अवतारी । जाऊं दादाजीनी हुं बलिहारी (दा०) ॥ ८ ॥ दादौ श्री जिन चंद सुरिंद पाटै । दादौ गाजै गुणियण गहगाटै । जसु थान सोहै जगथिर थाटै (दा०) ॥ ९ ॥ दादा महिर निजर मुझ परिकरियै । दादा आरतिपीडा दुख हरियै । दादा जिम जग जय कमलावरियै (दा०) ॥ १० ॥ दादा सेवगनें सांनिध करज्यो । दादा दुसमणनें दूरै हरज्यो । जिणचंदना मन वंछित फलज्यो (दा०) ॥ ११ ॥ इति दादाजी स्तवनं ॥

॥ ❋ ॥ पुनः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (आषाढे जेरुं आवै इस चालमें) । गाजे जिन कुशल गमाले । सेवकनां संकट टालेहो गा० ॥ १ ॥ परतिख गुरु परचा पूरे । सेवकनी चिंता चूरे हो (गा०) ॥ २ ॥ छतरी नितरी छविछाजे । विचमें थिर थुंभ विराजे हो (गा०) ॥ ३ ॥ क्रजरे यात्री मिल आवे । दादो जी

दीठां सुखपावे हो (गा०)॥४॥ केशर घस नरिय कचोली। मांहें व लि मृगमद घोली हो (गा०)॥५॥ पूजो पग नीर पखाली। गावो गुण गीत रसाली हो (गा०)॥६॥ दादोजी दुखियां सुख देवै। निरधनियां नित धन देवै हो (गा०)॥७॥ हय हाथी रथपति बहुला। गुरु नांमें पामें कमला हो (गा०)॥८॥ सकलासुत सुंदर नारी। पामें परि कर सुखकारी हो (गा०)॥९॥ अलगांथी रोग गमावे। गुरु पूज्यां वं छित पावे हो (गा०)॥१०॥ पावै गुरु तिसियां पाणी। तिणवेला ज लधर आणी हो (गा०)॥११) ग्रहगोचर जोर जंजालै। पीडा हुवै आलै माले हो (गा०)॥१२॥ वाजे जगजशना वाजा। राजे खरतरग च्छ राजा हो (गा०)॥१३॥ जसु जैत सिरी वरमाता। जिल्हागर मं त्रि विख्याता हो (गा०)॥१४॥ संवत सतरैसै इक्यासी। काती पूनि म परकासी हो (गा०)॥१५॥ सहु संघ सहित सुविलासे। अधिके हर हेत उल्हासे हो (गा०)॥१६॥ इम यात्र करी आणंदे। जिन भक्ति जती सर वंदे हो (गा०)॥१७॥ इति पदम्॥❀॥ ॥❀॥

॥❀॥ पुनः (राग धन्यासरी)॥❀॥

॥❀॥ आयो आयो जी समरंतां दादो जी आयो। संकट देख सेव क कुं सदगुरु। देरावरतें ध्यायो जी समरंतां (दा०) दादा वरसै मेहनें रात अंधेरी। वायपिण सबलो वायो। पंच नदी हम वैठे बेडी। दरीये हो दा दा दरीयै चित्त भरायो जी॥(स० दा०)॥२॥ दादा उच्च नगरी पो हचावण आयो। खरतर संघ सवायो। समय सुंदर कहे कुशल २ गुरु। प रमानन्द सुख पायो जी। समरंतां दादोजी आयो॥३॥ इति पदम्॥

॥❀॥ (राग लहुरी)॥❀॥

॥❀॥ भाया भक्तिसुं पूर रहोरे। दुरजन सब दूरहरोरे (भा०) मेरे मनमें भक्ति वैरागी। चित्त परणित लगनसुं लागी। मोरी भाग्यदसा अब जागी॥(जीया हो)॥(भा०)॥१॥ सब सज्जन मिलकर आवो। गुरु चरणे चोक पुरावो। वलि अक्षत धवल वधावो (जीया हो)॥(भा०)॥२॥ गुरु महिमावंत सवाई। गुरु नाम सदा सुखदाई। गुरु भेट्यां पाप

फुलाई (जीया हो) ॥ (भा०) ॥ ३ ॥ घस केशर भरकै कचोल
हे मृगमद कुंकुम घोली । गुरु पूज रचो भरझोली (जीया हो) ॥ (
॥ ४ ॥ श्री जिन हर्ख सूरी सर राजा । वाजै जग जशना वाजा
रत्न करै सुभ काजा (जीया हो) ॥ (भा०) ॥ ५ ॥ इति स्तवनम्

॥ ❀ ॥ (राग केरवो) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कुशल सुरिंद गुरु पूजो भवि हितसुं (कुश०) केशर
कपूर अरगजा । भाव धरी करो पूजा चितसुं ॥ (कु०) ॥ १ ॥
लालगुलाव मालती । मनसुध माल करै भवि रुचिसुं (कु०) ॥२॥ श
शरण परम गुरु सेवो । धरम ध्यांन धरो आतम रुचिसुं ॥ (कु०)
सेवक जन प्रतिपाल जगत् गुरु । आसापुरै गुरु वणु दत्तसुं ॥ (कु०)
ध्यान सुधारै ग्यानवधारै । रूप रंग देवै चित हित मतसुं ॥ (कु०)
कुशल सुरिंद गुरु सानिध कारी । परतिख परचापूरै सतसुं ॥ (कु०)
श्री जिनहर्ख सदा सुविलासी । सत्यरतन सुख एही व्रतसुं ॥ (कु०)

॥ ❀ ॥ (राग देवश्री चलत) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आज करोरे उछाह । श्री जिनकुशल सूरिंद आगै । (
आ आछी वेलानें न आछो दाव । इण आछी वेला क्यूं करो लाज ॥ (
॥ १ ॥ विविध प्रकार पूजो मनरंग । हिल मिल गावो साजन संग (अ
धूप दीप करो नैवेद्य सार । फुल वारीनो नहीं जिहां पार ॥ (आ०) ।
अक्षत श्रीफल ढोवै जेह । पुत्र कलत्र पांमैं संपदा तेह ॥ (आ०) ॥
सुर नर नारी कला करै जोरु । कौण करै म्हांरा दादाजीनी होरु ॥ (अ
॥ ४ ॥ श्रीखरतर गछपति सिरदार । राजा राणा सेवै इकतार ॥ (अ
॥ ५ ॥ महिर निजर करो श्रीगुरुराज । कुशल सुरिंद गुरु गरीब
(आ० (॥ ६ ॥ श्री जिन हर्ख करै उछरंग । सत्य रतन मन ग्यान
ग ॥ (आ०) ॥ इति स्तवनम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥

॥ ❀ ॥ (राग वंगालो घाटो) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मैं निरख्या गुरु महाराज । छतीयां हर्खभरी (मैं०)
अनंत गुण आगरुरे । समता रसनो धाम । परम परम परमातमारे ।

दायक स्वाम ॥ (ढ० में०) ॥ १ ॥ करुणा निध गुरु दोलती रे । सेवक जन प्रतिपाल । भविजन भक्ते भावसुं रे । ध्यावै भर भर थाल ॥ (ढ० में०) ॥ २ ॥ केशर चंदन कुंकुमा रे । भरीय कचोली हाथ । पदमण आवै मलपती रे । पूजे सहीयर साथ ॥ (ढ० में०) ॥ ३ ॥ कुशल सूरीसर साहिवा रे।श्रीजिनचंद सूरी पाट । वलिहारी जिन कुशलनी रे । गाजे घणुं गहि गाट ॥ (ढ० में०) ॥ ४ ॥ अष्टसिद्धि सानिध करै रे । सुखसंपूरण सार । श्री जिन हर्ख सूरी सरू रे । सत्यरतन सुखकार (ढ० में०) ॥ ५ ॥ ❋ ॥ .

इति स्तवनम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (राग प्रभाती) ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ चरणकी चरणकी चरणकी । वारी जाउं में गुरुराय चरणकी (वा०) श्रीजिनदत्त सूरीसर सदगुरु । सफल थयी सेवा चरणकी ॥ (वा०) ॥ १ ॥ प्रथममंगल गुरुरायकी सेवा । अशुभ करम सब हरणकी ॥ (वा०) ॥ २ ॥ दालिद्रभंजण अरि सब गंजण । पग पग सानिध करणकी॥ (वा०)॥ ३ ॥ मोह नहीं परवाह अनेरी । शरनग्रही इन चरणकी ॥ (वा०)॥ ४ ॥ श्री जिनहर्ख तुम चरणां को दासा । आशापूरो सुख करणकी ॥ (वा०) ॥ ५ ॥ इति दादाजी स्तवनम् ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः ॥ ❋

॥ ❋ ॥ कुशलगुरु अब मोहि दरशण दीजे । (अ०) ऐसी भांति करो मेरे सदगुरु । ज्युं मन मूढपती जे (कु०) ॥ १ ॥ जलदातार विरुद अमृत रस । श्रवण अंजलि भर पीजे । सुरतरु सम दरशण विन देख्यां । कहो नयण किमरीझे (कु०) ॥ २ ॥ परमदयाल कृपाल कृपानिधि । इतनी अरज सुणीजे । परम भगत जिनराज तुमारो । अपनो कर जाणीजे (कु०) ॥३॥

इति स्तवनम् ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ कुशल गुरु कुशल करो भरपूर । सेवक जन मन वंछित पूरण । समरयां होय हजूर (कु०) ॥ १ ॥ परम दयाल प्रेम रस पूरण । अशुभ हरण भये दूर । मंव उदोकर सदगुरु मेरा । वीनवे श्रीजिन चंदसूर (कु०) ॥२॥

॥ ❀ ॥ (देशीकी चालमें) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सदगुरु पूजण जावस्यां । म्हेतो कुशल सूरिंद गुण गास्यां हे माय (स०) । श्रीफल भेट चढावस्यां । म्हेतो चरणांरी पूज रचास्यां हे माय (स०) ॥ १ ॥ मारूदेशमें सोभता । नगर बीकांणै राजै हेमाय । गांम गम्माले दीपता । ज्यांरी महीयल महिमा गाजै हे माय । (स०) ॥ २ ॥ समस्थां संकट चूरता । कुशल करण अवतारी हे माय । सुखदायक श्रीसंघनें । खरतर गछ अधिकारी हे माय (स०) ॥ ३ ॥ दूर देशांतर थी घणा । हिल मिल यात्री आवै हे माय । लुल २ सीस नमावता । संत सुजस मिल गावै हे माय (स०) ॥ ४ ॥ सज सिणगार मनोहरू । ठम २ पाय ठमकावै हे माय (स०) तन मन भांण लोभावती । गौरी मंगल गावै हे माय (स०) ॥ ५) विछुड्यां साजन मेलवै । अनमी पाय नमावै हे माय । मनरा मनोरथ पूरवै । पर वल लखमी ल्यावै हे माय (स०) ॥ ६ ॥ विषमी वेला वाटमें । समस्थां सांनिध आवै हे माय । भूखा भोजन मेलवै । तिसियां नीर मिलावै हे माय (७) यात्री आवै नितनवा । थांन आगल थिर थाट हे माय । सीरणीयां नित सांमठी । गावै गुण गहगाट हे माय (स०) ॥ ८ ॥ कुशल सूरिंद गुरु आगलै । भविमिल भावना भावै हे माय । चंदफतै मुनि नित नमें । परमानंद सुख पावै हे माय (स०) ॥ ९ ॥ इति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ आयो सहु श्रीसंघ आसधरे । गुरु मौन गह्यां कहो केम सरे दरशण वहिलो सदगुरु दाखो । निज सेवक जांण महिर राखो ॥ १ ॥ इह विषमी वेला आयवणी । केहवी करीयें तुझ अरज घणी । अलगाछो तो वेगा आवो । हिव ढील घनी भर न करावो ॥ २ ॥ तूं सदगुरु खरतर गछ साचो । कोई न जांणें तुमनें काचो । इण संकटमें आलस न करो । दादा दुशमणनें दूर हरो ॥ ३ ॥ काई चूक पमी सदगुरु हमसुं । तो जिम कहिस्यो तिणपरी खमसुं । पिण हिवणां हठ थे मति तांणो । निहश्चे पोतानो कर जांणो ॥ ४ ॥ आया सहु मिलकर अर्गा लगे । पाछा किम जावां इणां पगे । इणपरि गुरु सुणीयै अरज इसी । हिव मनकों मेलो क

रीय खुशी ॥ ५ ॥ जिन कुशल सूरीसर जगचावो । अपणायतकर वेगा आवो । अगला विरुद ते अजुवालो । परवल निज गोरू प्रतिपालो ॥ ६ ॥ गुणगाम गफाले एगायो । सुणतां सदगुरु वेगो आयो । राजी हुय सग ला रंगरली । जिनचंद्रनी आस्या सफल फली ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ताल ठुमरी ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सदा सहाई कुशलसुरिंद गुरु द्यो दौलत गुरु रायजी (सदा०) खाई न खूटै खरची न तूटै । दिन २ वधै सवाय जी (स०) ॥ १ ॥ स कला सुत नर सुंदर नारी । सुत्र परिकर सुख दायजी (स०) मित्र स मागम सुजशवधारण । नित प्रति हरख उछाहजी (स०) ॥ २ ॥ राजा प रजा पायनमें सहू । गुरु समरण सुपसाय जी (स०) दोखी दुशमण नृप त्रय पग्यियां । सदगुरु करय सहाय जी (स०) ॥ ३ ॥ विषमी विरियां सं कट पडियां । समरयां आवै धायजी (स०) भूखां भोजन तिशियां पाणी । निरधनियां धनदाय जी (स०) ॥ ४ ॥ संघ सकलनें द्यो सुख शाता । जिम कीरत जग थाय जी (स०) । थांनक थिरता पर घल भोजन । पग पग कुशल सहाय जी (स०) ॥ ५ ॥ अभय महा सुखदाई सद गुरु । नवनिधि वंछित थाय जी (स०) । सुमति सवाई नितघर संपद । दान विशाल लहायजी (स०) ॥ ६ ॥ इति० ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जिन कुशल सुरिंद गुरु सदा नमो (जि०) ॥ सुख संपति रि द्धि सिद्धि सब हाजर । देश देशांतर कांई भमो ॥ जि० ॥ १ ॥ वाट वाट अरु विषमी विरयां । विघन बुराई दूर गमो (जि०) ॥ २ ॥ अह निशि नां म मंत्र उच्चारो । सुगुरुचरण चित रमो रमो (जि०) ॥ ३ ॥ इक मन ध्या वो वंछित पावो । विपत व्यथा सब दमो दमो (जि०) ॥ ४ ॥ अभय महा सुख संपति पावो । सुथिर थांनक थिति जमो जमो । (जि० ॥ ५ ॥ इति

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ छत्रपती थांरे पायनमें जी सुर नर सारे सेव । ज्योति थांरी ज

ग जागती जी। दुनियामें परतिख देव॥ १॥ हुं तो मोहि रह्यो जी थ्हां रा राज। दादेरे दरबार (हुं०) केशर अंबर केवडो जी। कस्तूरी करपूर। चंपो चंदन राय चंबेली। भक्ति करूं भरपूर (हुं०)॥ २॥ पांगुलियां नें पाव समापै। आंधलीयांनें आंख। रूपहीणानें रूप देवै दादो। पंख हीणानें पांख (हुं०)॥ ३॥ चंदपाटोधर साहिबो जी। श्री जिनकुशल सूरिंद। आठ पोहर थांने भलगै जी। रंग घणें राजिंद (हुं०)॥ ४॥

॥ ❋ ॥ पुनः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सदगुरु जी सुणो मोरी अरजी (स०) पहिली काम कीये बहु तेरे। अपणा विरुद विचारी। पल पल चूक परी सदगुरु जी। में सुत लबका गरजी॥ (स०)॥ १॥ ध्यांन तुमारो कबहु न ध्यायो। पूजा करी नही तेरी। तोई सेवकना बंछित पूरया। आही थांरी मरजी॥(स०)॥२॥ निश्चे सेती तुम गुण गावे। तुरत कटत दुख बेरी। भक्त उधार कहावत जगमें। ताहे करत हुं अरजी (स०)॥ ३॥ और देव कुं में नहीं ध्यातं शरण ग्रहीमें तेरी। दूर थकी में भेटण आयो। विपत दिशा सब तरजी॥ (स०)॥ ४॥ कुशल गुरूका में हूं सेवक। लोक जांणें सब कोई। क्षमा रतनकी वीनती सुणके। दरशण दीयो सदगुरु जी॥ (स०)॥ ५॥ इति

॥ ❋ ॥ होरीकी चालमें ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ होरी खेलो नेमसैं धाय २ (इस चालमें)॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सदगुरुके चरण चित लाय लाय। जिनदत्त सूरिंद गुरु करोरे सहाय। (सद०) बावन वीर अनें वलि चौसठ। जोगणि वसकीनी हर्ष लाय। विद्या पुस्तक सोवन अक्षर। थांभो वज्र विदार पाय (सद०)॥ ॥ १॥ सुलतांनमें पंच पीर महाबल। पंच नदी साधी चित्तलाय। इत्यादिक बहु परचा पूरक। गुरु समरयां सब दुक्ख जाय (सद०)॥ २॥ गुरुके नामसें अष्टसिद्धि नव निधि। गुरु गुण गावो सबही धाय। श्रीजिन सौभाग्य सूरि सुगुरु पर। महिर करो गुरु सुःख दाय (सद०)॥ ३॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नेम श्यामसें कहियो मोरी (इस चा०)

॥ ❀ ॥ गुरु पूज रचो रे सुग्यानी। भली हीये भक्ति भरानी (गुरु०)-श्री जिन कुशल सूरीसर साहिब। खरतर गछ राजानी। देश देश में थानक गुरुका। सोभा जग पहिचानी। सदा रवि तेज समांनी (गु०)॥ १ ॥ केशर चंदन मृगमद भेली। चरणांरी पूजरचांनी। धूप दीप वलि आगल ढोवी। बहुविध पुष्प चढानी। भला फल भेट धरांनी। (गुरु०) ॥ २ ॥ वाट घाटमें परचा पूरक। हाजर होत सहानी। श्री जिन सौभाग्य सूरिके साहिब। वंछित काज करानी। सदा गुरु महिर लखानी (गुरु०)॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

॥ ❀ ॥ राग प्रभाती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कैसे कैसे अवसरमें गुरु राखी लाज हमारी। (कैसे०) मो कुं सबल भरोसा तेरा। चंदसूरि पटधारी। (कै०) ॥ १ ॥ तुम विन और न कोई मेरे। या जगमें हित कारी। मेरा जीवन हाथ तुमारे। देखो आप विचारी। (कै०) ॥ २ ॥ आगे तो केई वेर हमारी। चिंता दूर निवारी। अबकी विरियां भूल मती जावो। सदगुरु परउपगारी (कै०) ॥ ३ ॥ अबके आप लाज गूजरकी। रखीये गुरु जशधारी। मेरे कुशल सूरिंद गुरु तेरा। वम्भा भरोसा भारी (कै०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग प्रभाती ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री जिन कुशल सूरीसर साहिब। तुमहो पर उपगारी (श्री जि०)। खरतर गछ नायक गुणलायक। जिन चंदसूरि पटधारी (श्री०) ॥ १ ॥ संत उधारण सुजश वधारण। भीरु भंजन अति भारी। नाम तुमारो कुशल करण जग। वारी जाउं वार हजारी (श्री०) ॥ २ ॥ जगवछल तुमही हो जगतगुरु। करुणानिधि करतारी। कहे जिनचंद मेरेहो सदगुरु। हमहे शरण तुमारी (श्री०) ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्री गणधर गुरु कुशलसूरिंद के। चरण कमल परिवारी। (श्री०) केशर चंदन अक्षत कुंकुम। जलभर कंचन झारी। देवक आगे

मंगल दीपक । फूल धरुं फूल वारी । (श्री०) ॥ १ ॥ ऐसी भांति करूं विध पूजा । आनकै चित्त इकतारी । राज कहत मेरे परम गुरूकी । वेर वेर बलिहारी (श्री०) ॥ २ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रेखता ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कुशल गुरू देखकै दरसन । मेरा दिल होत है परसन । जग तमें या समो कोई । न देखा नयनजर जोई ॥ १ ॥ विरुद भूमंफलै गाजे फरसतां पाप सहु जाजे । पूजतां संपदा पावै । अचिंती लछि घरआवै ॥ २ ॥ इकै मुख गुण कहुं केता । मुझै विज्ञान नही एता । लालचंदकी अरज सुन लीजै । चरण की सरण मोहि दीजै ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (राग कहरवो) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कुशल गुरु दरशण दीजे हो (कु०) खरतर गछपति कुशल सूरिंद गुरु । मुझपर महिर धरीजै हो (कु०) ॥ १ ॥ पतित उधारण विरुद तुह्मारो । इतनी अरज सुणीजै हो (कु०) ॥ २ ॥ आधि व्याधि अरु दो खी दुशमण । ए सब दूर हरीजै हो (कु०) ॥ ३ ॥ खेम रतन सेवक कुं निस दिन । सदगुरु सानिध कीजै हो (कु०) ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ वंशी हमारी दीजै (इस चालमें) पूजो भजोरे भाई । गुरु म हिमा योत सवाई (पू०) । मृगमद केशर चंदन अरचो । सुंदर पुष्प च ढाई (पू०) ॥ २ ॥ भविक जीव मिल गुरु गुण गावे । वाके सदगुरु हो त सहाई । (पू०) ॥ ४ ॥ श्री जिन सौभाग्य सूरि सुगुरु मेरे निशि दिन हर्ष बधाई (पू०) ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (ढाल) ॥ मालण ल्यावे फूलफा (ए चाल) ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हुं तो अरज करुं करजोफनैं जी । ह्मारी अरज सुणो महारा ज । (सदगुरु) विरुद घणाछे राजराजी । सूरि सकल सिरताज (स०) (सुनिजर जोय जो साहिबा) । थांरे रावल राणा राजवीजी । थांरा पूनिम पूजे पाय (स०) ॥ १ ॥ केशर अगरज कुंकुमांजी । कांई मृगमद रहां म

हिकाय (स०) (सुनिजर जोय जो साहिबा) ॥ २ ॥ थां रे घुमलां रे आ गल घूघराजी । दुलत चमर गजढाल (स०) कारण सेवे कामनी जी । कांई निरख करे जी निहाल (स०) (सुनिजर०) ॥ ३ ॥ थांरी ठावी ठोमै थापना जी । कांई नदयापुर आंबेर (स०) महिमा भली गुरु मेमते जी कांई सालूंफे वाली सांगानेर ॥ (सदगु० सु०) ॥ ४ ॥ थांरी ज्योति घणी गुरु झिगमिगे जी । कांई वधती गढ वीकाण (स०) आशा पूरण आव ज्यो । थेतो देरावररा दीवांण । (स० सु०) ॥ ५ ॥ ह्यांरी वीनतमी भलै मानिज्योजी । कांई दादाजी दीन दयाल (स०) कुशल सदा कविराजरे । कांई पाटोधर प्रतिपाल ॥ (स० सु०) ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥ ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ (लावणीकी चालमें) ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ सदगुरुजी ह्यांरा सरणें आयां की लज्या राखज्यो (स०) पतित नधारण विरुद सुणीनें । आयो तुमारे पास । अब मनवंछित पूरो माहरा । ए हीज दिलकी आश जी ॥ (स०) ॥ १ ॥ काम क्रोध मद लोभ तजीनें । तज दियो सब संसार । नवपदको इक ध्यान धरीनें । पाया सहु गुण पार जी ॥ (स०) ॥ २ ॥ देश देशमें थुंभ विराजे । परचा जग विक्षात । इण कलु मां हे सुरतरु सरिखा । प्रगट रह्या साख्यात जी ॥ (स०) ॥ ३ ॥ चिंतामणि और कामधेनु सम । माहरै तुंहीज देव । आण धरुं शिर ताहरी (शिरे) करुं तुमारी सेवजी ॥ (स०) ॥ ४ ॥ मात पिता बंधव तुं जगमें । हितकारी गुरुराय । राजा राणा सहु जग मां हे । सेवे तुमरा पाय जी ॥ (स०) ॥ ५ ॥ आज गुरु तुम चरण पसायें । सीधा वंछित काज । लक्ष्मी प्रधान तुमारा दरशण । मोहन गुणका राजजी ॥ (स०) ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ ❁ ॥ वधाई (राग कहरवो) ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ आजकी घडी ह्यां रे हरष वधाई । गुरु दरशण पायो सुखदाई (आ०) ॥ १ ॥ गुरु जग नायक वंछित दायक । गुण गण लंकृत सहु मन भाई ॥ (आ०) ॥ २ ॥ उत्तम धर्म प्रभाव करीनें । जैनी कुलकी रीत देखाई ॥ (आ०) ॥ ३ ॥ गुरु परतक्ष सहु संघ सुखदायक । देश देशमें प्रगट रहाई ॥ (आ०) ॥ ४ ॥ धन दिन आज सफल थयो माहरै । सुर

तरु सम मिलियो फलदाई ॥ (आ०) ॥ ५ ॥ वंछित पूरण संकट चूरण । सहु भवि मात पिता वरदाई ॥ (आ०) ॥ ६ ॥ कलिकत्तापुर मंडन साहिब । कुशल करो मोहन गुणदाई ॥ (आ०) ॥ ७ ॥ इति पदम् ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ देशना वधावा संग्रह ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ वीरजीदीयेछै देशनारे । त्रिभुवन जन हितकाज । परषद वारनें आगलेरे । जगजीवन हितकाज ॥ वी० ॥ १ ॥ प्रभू मुख पद्म मनोहरूरे । जिहां वांणी मकरंद । भव्यमधुरतो भावथीरे । पांनकरै आनंद ॥ वी० २०२ ॥ अजर पणुं जगसंपजै रे । अमृतध्यान पसाय । प्रभू वचनामृत पांनथीरे । अजर अमर पद थाय ॥ वी० २०३ ॥ मधुर पणे मनमोहनीरे । अनुपम वांणि उदार । सांभले भव्यलहै सहीरे । जिन परभाव विचार ॥ वी० २०४ ॥ जिहां षट्द्रव्य विचारणारे । नय निक्षेप अभंग । चोविह धर्म प्ररूपणारे । सतभंगी अतिचंग ॥ वी० २२५ ॥ शासननायक जिन वरूरे । अनुपम अमृत धार । जलधरनी पर वरशतारे । भविचातिक हितकार ॥ वी० २०६ ॥ श्रीजिन लाभ पसायथी रे । जिन आतम हितजाण । वाचक अमृत धर्मनोरे । शीश भणें कल्याण ॥ वी० २०७ ॥ इति देशना ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पुनः देशना लि० ॥ ❋ ॥

॥❋॥ गुणनिधि श्री जिनचंद मुणिंदा । मुखसोहै पूनमचंदा । मोह्या सब सुरनरवृंदा ॥ १ ॥ सुगुरु ह्मांरा देशना हिवदीजै । थांरी देशना सुण मनरीझै । सु० ॥ दिनकर परकास सवायो । भूमंडल ऊपर छायो । कमलादि सकल मन भायो ॥ सु० ॥ २ ॥ वेलाउल देव गंधार । वलि भैरव राग मलार । गायन गावै सुखकार ॥ सु० ॥ ३ ॥ पंचसबद गहिर ध्वनि गाजै । जिनवर घर झालर वाजै । सहु सज्ज थया धर्म काजै ॥ सु० ॥ ४ ॥ हिव वहिला पाट पधारो । श्री संघना कारज सारो । मधुरे स्वर वचन उचारो ॥ सु० ॥ ५ ॥ सुण वीनती वचन विशेष । गुरु आपे धर्म उपदेश । टालो भविकोंमि क्लेश ॥ सु० ॥ सदगुरुनी मीठी वाणी । उपदेश सुणो भविप्राणी । सुणतां मन अतिहि सुहाणी ॥सु०॥ ७ ॥ गुरुप्रतपो ज्युं शशि सूर । दिन २ प्रति

वधते नूर । हरो संघ सकल दुःखदूर ॥ सु० ८ ॥ गोरीमिल मंगल गावै । भर मोत्यांथाल वधावे । वा लावण्य कमल सुख पावे ॥ सु० ॥ ९ ॥ ❀ ॥

इति देशना ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ वधावो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मृगापुत्र गोखे रतन जडावहो (ए चाल) ॥ ❀ ॥

॥❀॥ श्री जिनचंद सूरीसरू । सुगुरु ह्मांरा । श्री खरतर गछ रायहो । श्री जिनलाभ पाटो धरू । सुगुरुह्मांरा । दिन२ सोभ सवायहो ॥१॥ह्मांरा सहिजसो भागी । ह्मांरा सुभ गुणरागी । ह्मांराहितधरू । सुगुरु ह्मांरा देशनाद्यो मनरंग हो । संघ सहु उछक थयो ॥ सु० ॥ सुणवा अमृत वांणहो । वहिला वंछित पूरहो ॥ सुगु० ॥ थेणो अवसर जांणहो ॥२॥ह्मांरा० ॥ सूर किरण वर संचरया सु० ॥ विकस्या कमल कलापहो । राग विलास प्रमुख तणा ॥ सुगु० ॥ हो य रह्या आलापहो ह्मांरा० ॥ ३ ॥ पंच सबद झालरतणा ॥ सु० ॥ मंगलनाद उचारहो । इम बहु विध भू मंडले ॥ सु० ॥ वरत्या जय २ कार हो ॥ ह्मांरा ॥ ४ ॥ संघसकल भगतें करी ॥ सु० ॥ जोवे थांरी वाटहो । नीं चे पधारो गछ पति ॥ सु० ॥ द्यो दरसण गहगाटहो ॥ ह्मां ॥ ५ ॥ तिण अवसर सिंघासणें ॥ सु० ॥ पाव धारे उलसंतहो । जल धरज्युं गहरेस्वरे । सु० वाचे सुत्र सिधांतहो ॥ ह्मां० ॥ ६ ॥ बहुभवियण प्रति बूझवे ॥ सु० वयणसुधारस योग हो । उत्तम धरम प्रकाशता ॥ सु० ॥ टाले भव दुख भोग हो ॥ ह्मां० ॥ ७ ॥ तेज तरणी जिम दिन मणी ॥ सु० ॥ गुण छत्तीस निवा शहो । मोहन मुद्रा तुम तणी ॥ सु० ॥ निरख्यांमन उल्लासहो ॥ ह्मां० ॥ ८ ॥ थे चिर जीवो गछ पति ॥ सु० ॥ राज करो इक आंणहो । इम बोले मुनि सुधमदा ॥ सु० ॥ वांणी क्षमा कल्याणहो ॥ ह्मां० ॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥

इति वधावो ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः देशना ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जात्रा निनाणु करीये ए चाल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ एहवा सदगुरु वांदीये । भविकजन (एहवा०) आपतरे अव रनकुं तारे । शरण तिहारी गहीये ॥ १ ॥ भवि० ॥ जिमसारथ पति मायी

जनकुं। वंछित देशै लहीयै ॥ २ ॥ भवि० तिम सदगुरु अमृत उपदेशे। लहै भविक सुख कहीये ॥ ३ ॥ भविक० ॥ गोपसमा गुरु गुण नित धारे। राखे गोजन महीये ॥भवि०॥ ४ ॥ वलिनिर्यामक उपमधारे। जिम नाविक नौ तरीयै ॥ ५ ॥ भ० ॥ एक असंजम दोयाविधि बंधन। त्रिविध दंड प रिहरीये ॥ भवि० ॥ ६ ॥ च्यार कषाय निवारक तारक। पंच महाव्रत ध रीयै ॥ भ० ॥ ७ ॥ षट्काय रक्षक महा भय जीपक। अशरण शरण कहीजिये ॥ भ० ॥ ८ ॥ एहवा सदगुरु नी बलिहारी। शरण गृही निसतरीये ॥ भवि० ॥ ९ ॥ गौतमस्वामि समा मुनि उत्तम। सर्व जीव सम धरियै। भवि० ॥ १० ॥ हृदयकमल नितप्रति राखीजे। आनंद शिवपद लहीयै ॥ भवि० ए० ॥ ११ ॥ इति देशना ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ वधावो लिख्यते ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ भवि तुह्मे वंदोरे शीतल जिन पतीरे ए चाल ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ सुखकर स्वामी श्री तीर्थ कररे। वरधमान जिनराज। दरशण जेहनोरे दरपण ज्युं दीपैरे। शोभत तेज समाज। (भवि जन वंदोरे भावे गछ पतीरे) ॥ १ ॥ तसु पट राजेरे सुधरम गण धररे। ज्ञाता द्वादश अंग जंबू स्वामीरे शिष्य सोहामणोरे। चवद पूरव धरचंग ॥ २ ॥ भवि० ॥ प्रभव सज्यंभव जगमें परगडारे। श्री जशोभद्र मुणिंद। श्री संभूतविजय भद्रबाहुजीरे। श्रीथूलभद्र दिणंद ॥ ३ ॥ भवि० ॥ एम अनुक्रम दश पूरव धररे। हुवा वयर मुणीस। श्री जिनमत दीपायो भूतलेरे। सुर नर नामत सीस ॥ ४ ॥ भवि० ॥ तास परंपर चंद्रकुले भलारे। श्री कोटिक गण धार। श्री उद्योतन सूरि सुहामणारे। वयरीसाख मझार ॥ ५ ॥ भवि० ॥ वरधमांन परमुख सिख्य जेहनारे। चार अशी परमांण। गछ चोराशी प्रगट्या त्यांथकीरे। जांणे चतुर सुजांण ॥ ६ ॥ भवि० ॥ ताससीस जिनेश्वर सूरिजीरे। दुर्लभ राय समक्ष। खरतर विरुद लह्यो ते रुवडोरे। मठपति जीतमतक्ष ॥ ७ ॥ भवि० ॥ नवअंगी वृत्ति कारक दीपतारे। श्री अभय देव सूरि राय। श्री जिनवल्लभ जिनदत्त गछपतीरे। श्री जिन कुशल अमाय ॥ ८ ॥ भवि० ॥ परम प्रभावक इण गछमें थयारे। आचारि

ज गुणवंत । शुद्ध समाचारी जगतेहनीरे । सुणि हरखित होय संत ॥ ९ ॥ भवि० ॥ शुद्ध परंपरमां, थया अनुक्रमें रे । श्री जिनलाभ सूरीश । सात पटोधर जगमां परगमारे । श्री जिनचंद, मुणीश ॥ १० ॥ भवि० ॥ तेज प्रतापे जीत्यो दिनमणीरे । सोम्यपणें द्विजपत्ति । गंभीर गुण सागरनें जीतियोरे । सुर सेवे दिन रत्ति ॥ ११ ॥ भवि० ॥ स्यादवाद जिन धर्म वखाणतारे । नय निक्षेप विचार । भंगपदारथ अति विस्तारसोंरे । भाखे भवि हितकार ॥ १२ ॥ भवि० ॥ ग्यान पूरब क्रिया साधे भलीरे । जिन वाणी अनुसार । एहनें सेवोरे क्युंभूला भमोरे । थाय सफल अवतार ॥ १३ ॥ भवि० ॥ सुरतरु छंडी बांवल आदरेरे । कोइ नर मूढ गिमार । ए भखाणो साचो मत करो रे । लहि एहवो गणधार ॥१४॥ भवि० ॥ नामधारक आचारजछे घणारे । पंचम काल मझार । पिण इण सरिखो जगमा को नहीरे । स्व पर तारण हार ॥ १५ ॥ भवि० ॥ वाचक लावण्य कमल पसायथीरे । कमल सुंदरनी एवांण । जे मांनसी ते सुख नित्त पांमसी रे । पातिकनी करि हांण ॥ १६ ॥ भवि० ॥ इति वधावो ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः वधावो ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ श्रावण पावस ऊलश्यो (ए चाल)॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ मोतियरूं मेहवरसीयो सखि । आजहुवो आणंद । पूजपधारथा विहरता । नामें शोभाग्य सूरिंदरे । जिनहर्ख सूरिंदनो नंदरे । सदगुरु सुरत रूनो कंदरे । मुखसोहे पूनमचंदरे ॥ सखि मोतीडे मेह० ॥ १ ॥ क्षांति गुणें करी सोभता । सखि पंच महाव्रत धार । वर छत्तीस गुणें सदा । विचरे जे निरतीचाररे । रशीया जे पर उपगाररे । उपशम रसना भंडाररे । पाले पंचा चाररे ॥ सखी मोती० ॥ २ ॥ मेघतणी पर गाजता । सखिमीठी जेहनी वांण । आपतरे परतारता । गुण गण रतनारी खाणरे । सहु आगमना जे जाणरे । प्रतपे जिम झलहल भांणरे । जेहनो अतिशय विन्नाणरे ॥ सखिमो० ॥ ३ ॥ परतिख सुरतरु सारसा । सखि इण पंचम काल । साथे जेहनें शोभना । मुनिवर जिम मोतीमालरे । केई थिवरनें केई बालरे । वंदीजे तेह त्रिकालरे । सखि मोती० ॥ ४ ॥ सूरि मकल सिर सेहरो । सखि खरतर गछ सिणगार ।

जैन धरम दीपावता। महिमा जेहनी अणपाररे । सहु संघतणा सिरदाररे। सखीसुमतितणा भरताररे। जेहनें प्रणमें नरनाररे॥ सखि०॥ ५॥ सूत्र अर थ विसतारता। सखि देता धर्मोपदेश। दान शीयल तप भावना। बारे भाव ना सुविशेषरे। द्रव्यादिक अर्थ निशेषरे। गुण अरु पर्याय प्रदेशरे॥ सखि०॥ ६॥ सुणतां श्रीजिनराजना। सखि अमृत वचन विलास। क्षणमे कर्म समूह नो। सखि निश्चै होवै नाशरे। थायै निजग्यान प्रकाशरे । कहे बाल सुगुरु सहवासरे। करतां निजरूप सुभासरे॥ सखिमो०॥ ७॥ इति वधावो॥ ❋॥

॥ ❋ ॥ अथ गुंहली लि० ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ नणदल विंदलीदे (ए चाल)॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ जिनशाशन जयकारी। जगगुरु गोतम गणधारीरे। सहीयांगुंह ली करो। गुंहली करो गुरुसंगे। श्रुत भगति तणै उछरंगेरे॥सही०॥ विचरंतां मुनिराया। राजग्रही नगरी आयारे ॥ सही० ॥ १॥ पंचेंद्री विषय निवारी नवविध ब्रह्मव्रत धारीरे॥ सही०॥ च्यार कषाय कुं टाले। पंचमहाव्रत सूधा पालेरे॥ सही०॥ २॥ सेवे पंचाचार । धरै पंचसुमति मनुहाररे॥ सही०॥ त्रिणगुप्ती वलि छाजै । इम छत्रीश गुणें गुरुराजेरे॥ सही०॥ ३॥ चरण करण गुणसंगी। शुद्धातम अनुभव रंगी रे ॥ सही० ॥ उतसर्गने अपवादी। वहु नयगम भंग प्रवादीरे ॥ सही० ॥ ४॥ मोक्ष मारग उपदेशी। धरे ध रम ध्यांन शुभलेसीरे ॥ सही०॥ २॥ रत्नत्रय अभ्यासी । भविजन चिं तकमल विकाशीरे॥ सही०॥ ५॥ श्रेणिक नरपति आवे । गणधर वंदन शुभ भावेहे ॥ स०॥ चेलणा स्वास्तिक पूरे । मोहतिमर भरमनें चूरेरे॥ सही०॥ ६॥ निसुणी गुरु मुख वांणी । समकित निरमल करे शाणीरे॥ स०॥ श्रुत सेवा जेकरस्ये । तेकीर्त्तिसागर पद वरस्यैरे॥ सही०॥ इति॥

॥ ❋ ॥ अथ मंगल वधावो ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ पहिलुंए मंगल जिनतणुं। नाम सोहामणोए । बीजुंए मंगल सिद्धनुं। ध्यानर लियामणोए॥ त्रीजुं ए मंगल जिनवरे धर्मजेदाखियोए । जिहां सुद्धदेव सुद्ध गुरुतणो। मर्मवलि भाषियोए ॥ १ ॥ चोथोए मंगल साधुनो. नामसंभारियेंए। पंच महाव्रत पालता चित्त अवधारियेंए। अति

अमोलिक गुण रयणना जेहछे आगरूए । सूरि छत्तीस गुण सोहता कामित सुरतरूए ॥ २ ॥ जाणुंए श्रीपुज्य आवेए । कुमति मद वारताए । देशना जल धर वरसता, भविक मनठारताए । सोवन रतननें फूलडे । मोतीवधामणाए । कीजिये भगति बहु भावसुं लीजिये भामणाए ॥ ३ ॥ पाठक पंक्ति परिवरद्या । शासन सोहताए । चौविह संघ गुण संघना भविक मन मोहताए । आजवहनी मुज आंगणें, अमीयमेह वूठडाए । सासन देवी चक्केसरी आजमुज तूठडीए ॥ ४ ॥ मनह मनोरथ सविफल्या । मंगल सब मिल्याए । दुरित दोहग दुःख आपदा, दोहजिम सब टल्याए । रुद्धिनें सिद्धि नवनिद्धिसुं, सहजसुख आवियाए । सुरतरू सुरमणी सुरगवी अम्हघारें आवियाए ॥ ५ ॥ सेत्रुंज आबू गिरनारनें समेत शिखरवरूए । अचल अष्टापद पंचए तीरथ सुखकरूए । ग्यान विमल वरदर्शन चारित्र अनुसरोए नित२ रंगवधामणा, भवजल निधितरोए ॥ इति प्रथम मंगल वधावो ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ पूर्णकलसस्थापना मंगल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ धरम उछवसमें, जैन पदकारणें । उत्तम मंगल आचरेए । भाव मंगल तिहांदेव अरिहंत प्रभु । जेहथी परम मंगल वरेए । तेहना नामनें जातेंहुं भामणें । खिण २ हरखें समरण करेए । पंच कल्याणके जिमसुरपतिकरें । तिमजिन भक्ति भविआदरेए ॥ १ ॥ भाव मंगल तणी पुष्टता कारणें । द्रव्य मंगल भला कीजियेए । तिहांगुण पूर्णता इछता भविकजन । कुंभ थिर पूरण लीजियेए । पदम आसनठव्यो पदम छनेठव्यो मंत्र पवित्रथी नितजपेए । जिनवरजीमणी दिशि हरख भरहीयमें । पूरण कलसनें थापियेए ॥ २ ॥ माहरानाथनें परम मंगल होज्यो मंगल संघ चौविह भणोंए । मंगलतीर्थनें मंगल चैत्यनें मंगल तेह करता भणीए । जैनशाशन तणो हरख मंगलकरे । तेण आनंद अति ऊपजेंए । चवन अवसरसमें मातानां गर्भमें । इंद्रनें हरखजे संपजेए ॥ ३ ॥ तेम प्रासादनी थापना अवसरें । कुंभथापनसमें हरखियेंए । जेम संसारना कारज कारणें । लोकसंसार मंगल करेए । परम आनंद धर धन्यना मानता । गीत मंगल धुरि उचरेए । देवता देवनें मंगल कीजियें देवचंदह पद अनुसरेए ॥ ४ ॥ इति पूर्णकलसस्थापना मंगल ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ चैत्यप्रतिष्टा मंगल ॥ ❀ ॥

॥ हिवें प्रतिष्टा कारणेंए । पूरब सनमुख सारतो । (वेदिका सुभ रचीए) दोढहाथ उन्नत वलीए । पूरित वस्तु उदारतो ॥ वे १ ॥ पंचस्वस्तिक श्रीफल ठवोए । पंचरतन भूपीठतो ॥ वे० ॥ अष्टसुगंध विलेपियोए करिये धूपउकि ढतो ॥ वे० २ ॥ बारे आंगुलमां ग्रंथ नहींए । उन्नत सरल उत्तंगतो ॥ वे० ॥ चउविदिसि चउवंसनेंए । थाये मन उछरंगतो ॥ वे० ३ ॥ वंशपात्रमां जुहार काए । चउवंसें सात साततो । वे० ॥ समोसरणनें प्रथम समेंए । पीठ रचे सुरराजतो ॥ वे० ४ ॥ तिम इहां सुभ महुरत दिनेंए । भूमि सुद्ध महा काजतो ॥ वे० ॥ हिवे जललेवा कारणेंए । थयो उजमाल पुन्यवंततो ॥ (जलजात्रा भणीए) ॥ हयवर सिणगारयावणाए । मयगल मद मल पंततो ॥ वे० ॥ देवनंदा जिमवीरनेंए । बृखभ रथ कस्या सजतो । पंचम अंगे वरणव्या ए । तिम इहां रथगण गजतो ॥ ज० ॥ ७ ॥ भेरि भुंगल सरणाइयोए । ढोल निसाण वाजित्रतो । ज० ॥ संघचतुर्विध बहु मिल्याए । ध्वजलहि कंत पवित्रतो ॥ ज० ॥ ८ ॥ सूहवगीत मंगल भणेंए । नरनारीना थोकतो ॥ ज० ॥ प्रसन्न करी जल देवताए । मंत्र सनाथ सलोकतो ॥ ज० ९ ॥ सोल सिणगारे सोभतीए । रुचवंती चउनारितो ॥ ज० ॥ सजल कलश सिरपर ठवीए । आवे जिन दरबारतो ॥ ज० ॥ १० ॥ प्रभुनें जीमणि दिस ठवीए । देई प्रदक्षिण मानतो ॥ ज० ॥ संघ सत्कार आणंदनेंए । रतनसा हरख प्रमाणतो ॥ ज० ११ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ इति प्रतिष्टादिक सुभकार्योंमें सधव स्त्रीयोंके मंगल गायन वधावा संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ जलयात्रा महोत्व विधि ॥ ❀ ॥

॥ अठाही महोत्व (तथा) प्रतिष्टा आदिकमें प्रथम दिन । पीठ, वेदि का, पूजनस्थानक साते स्मरण शांति आदि मंत्रादिकसें सुद्ध करे । दीप धूपा दिक करे, चावलोंका स्वस्तिकादि अष्ट मंगल करे, श्रीफल चढावे, तोरण धजा बंधावे । स्नात्रियांकों मंत्रादिकसें पवित्र किया हुवा जलादिकसें स्नान करायके तिलक करावे । मंत्रा हुवा वस्त्र पहराके मोली कांकण मोरा

बंधाके अंग सुद्धी करावे (पीछे) ॐक्ष्मख दह २ स्वाहा ॥ इस मंत्रकों ७ वेर गुणाके चित्त निर्मल करे। पीछे आत्म रक्षा करावे ॥ (यथा) ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं पादौरक्षः २ ॥ ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं कटिं रक्षः २ ॥ ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं नाभिं रक्षः २ ॥ ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं हृदयं रक्षः २॥ ॐ ह्रीं णमो लोएसव्वसाहूणं ब्रह्मांडं रक्षः २ ॥ ॐ ह्रीं एसो पंचणमुक्कारो शिखां रक्षः २ ॥ ॐ ह्रीं सव्व पावप्पणासणो आसनं रक्षः २ ॥ ॐ ह्रीं मंगलाणंचसव्वेसिं आत्मचक्षु रक्षः २ ॥ ॐ ह्रीं पढमंहवइ मंगलं परचक्षु रक्षः२॥ स्वाहा ॥ ॐ परमेष्टी नमस्कारं० इत्यादिकसें आत्म रक्षा अपनी करे (तथा) स्नात्रीयादिककी करावे, पीछे नवग्रह, दश दिग्पालकी स्थापना करे, बलबाकुलादि चढावे, दूसरे दिन सर्व संघ अच्छावस्त्र आभूषण धारन करके नानाप्रकारका वाजित्र महोत्सव इंद्र ध्वजादि पूर्वक भगवानकों रथमें (वा) पालखी आदिकमें अच्छा जलाश्रयके स्थानक गायन भक्ति करता हुवा जिनशाशनकी उन्नति करता हुवा आवे अंग सुद्धी कराके जल कलशा भरावे ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथ अंग सुद्धी जल पूजन मंत्र विधि ॥ ❀ ॥

॥ ॐ ह्रीं अमृतोद्भवे अमृतवर्षणी अमृतं श्रावय २ स्वाहा ॥ इस मंत्रसे ७ वेर दातण स्नान करनेकों जल मंत्रीजे ॥ इति जल मंत्रः ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं यक्षसेनाधिपतयेनमः ॥ इस मंत्रसें सातवेर मंत्रके दांतण करे ॥ इति दांतण मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कामदेवाधिपति ममाभीप्सितं पूरय २ स्वाहाः इस मंत्रसे ७ वेर पढके मुख धोवे ॥ इति मुख धोवण मंत्रः ॥ ॥❀॥ ॐ ह्रीं अमले विमले विमलोद्भवे सर्व तीर्थ जलोपमे पांपां वांवां अशुचि शुचिभवामि स्वाहाः ॥ इस मंत्रकों सातवेर पढके पूर्व मंत्रित जलसें स्नान करे ॥ इति स्नान मंत्रः ॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं आँ क्रों नमः ॥ इस मंत्रसें ७वेर मंत्रा हुवा वस्त्र धोती उत्तरासण धारण करे ॥ इति वस्त्र मंत्र ॥ ॐ श्रीं ह्रीं क्रों अर्हतेनमः॥इस मंत्रसें ७ वेर केशर चंदनादिक मंत्र के तिलक करे ॥

॥ ❀ ॥ ॐ ह्रीं अवतर २ सोमे २ कुरु २ वल्गु २ निवल्गु २ सुमणे सोमणसे महु महुरे ॐ कवलिकः क्षः स्वाहाः ॥ इस मंत्रसें मंढल मोली

७ वेर मंत्रके मंगल पूजामें (तथा) कलसके बांधे। आपके (तथा) स्नात्रियांके कांकणमोरा मोली इसी मंत्रसें मंत्रके बांधे ॥ इति कांकण मोरा मोली मंत्रः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हं भूर्भुवः स्वधायस्वाहाः ॥ इस मंत्रसें फूल वास चूर्ण मंत्री भूमी पवित्रकरै, जल केशर पुष्पसें आछोटनकरै ॥ पीछे ॥ भगवं तकी स्नात्रपूजा कियेवाद जलस्थानकपर आयके मंत्र पढके अष्टद्रव्यसें पूजनकरे अथ जलपूजनमंत्रः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ क्षीरोदधि स्वयंभूश्च। सरे पद्म महाद्रहे। शीता शीतोदका कुंभे। जलेस्मिन् संनिधिं कुरु ॥ १ ॥ गंगे चजमुने चेव। गोदावरी सरस्वती। कावेरी नर्मदासिंधोः। जलेस्मिन् संनिधिं कुरु ॥ २ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॐ ह्रीँ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षणीं अमृतं श्रावय २ सें सें। क्लीँ क्लीँ ब्लुँ ब्लूँ द्राँ द्रीँ द्रीँ द्रीँ द्रावय २ ह्रीँ जलदेवी देवान अत्रागछ २ स्वाहा ॥ इस मंत्रसें अंकुश मुद्रासें जल निकालके धोवा सुध किया हुवा कलस भरे। पीछे इस मंत्रसें ३वेर कूर्म्म मुद्रासें जलस्थापन करै ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॐ आं ह्रीँ क्रों जलदेवी पूजावलिंगृएह २ स्वाहा ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॐ ह्रीँ क्लीँ ब्लुँ कहता हुवा जलं समर्प्पयामि चंदनं पुष्पं धूपं दीपं अक्षतं नेवद्यं फलं, वस्त्रं समर्प्पयामि ॥ इसी तरै अष्टद्रव्य चढावै जल कलस पूजाकरै, मुख परनालेर धरके लाल हरा वस्त्र मोलीसें बांधे। फेर सधवस्त्रियांके मस्तक पर देके वाजागाजा बडा महोछवसें जल लेनेंकों आया था उसी मुजव सर्व संघ बडे महोछवसें अगाडी पंचामृतधारा कोरा बलबा कुल देवता हुवा मंदिरजीमें आवै ॥ भगवानके जीमणीदिशितरफ कलस थापनकरै ॥ अधिष्टायक खेत्रपालजीकी पूजा करावै। अष्टद्रव्यचढावै ॥ अथ क्षेत्रपाल मंत्रः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ ॐ ह्रीँ क्षां क्षीं क्षुँ क्षेँ क्षौं क्षः क्षेत्रपालायनमः स्वाहाः ॥ गंधाक्षत जल पुष्प तैलसिंदूरैः दीप धूपोद्यै पूजयामि ॥ निमकउतारण आरती प्रमुखकरके चैत्यवंदन संपूर्ण करै याचकांनेंदानदेवै ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥❋॥इति जलयात्रा संखेप विधिः ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❀ ॥ परममंगल श्री दादाजीके काव्य सवईया ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ दाशानुदाशा इव सर्वदेवाः । यदीय पादाब्ज तले लुठंति । मरु स्थली कल्पतरुः सजीया । ज्जुगप्रधानो जिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ चिंतामणिः कल्पतरुर्वराको । कुर्वन्ति भव्याः किमु कामगव्या । प्रसीदतः श्री जिनदत्त सूरेः । सर्वपदा हस्ति पदे प्रविष्टाः ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ नोयोगी न च योगिनी न च नराधीशस्य नो शाकिनी । नो वेत्ताल पिशाच राक्षसगणाः नो रोग शोगो भयं । नो मारी नच विग्रहः प्रभृ तयः भीत्या प्रणत्युच्चकैः । यस्ते श्री जिनदत्तसूरि गुरवो नामाक्षरं ध्यायति ॥

॥ ❀ ॥ अथ सवईया लि० ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ बावन्न वीर कीयें अप्पणं वस, चौसठ जोगण पाय लगाई । भाइण शाइण व्यन्तर खेचर भूतरु प्रेत पिशाच पुलाई । वीज तभक करु क भटक अटक रहेलु खटक न काई । कहे धमसीह लंघे कुणलीह दीयै जिनदत्त की एक दुहाई ॥ १ ॥ इति ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राजे थुंभ ठोर ठोर, ऐसो देवनही ओर, दादो दादो नामसें, जगत्र जस्स गायो है । आपणेंही भाव आय, पूजे लक्खलोक पाय, प्यासनकुं रांन मांझि, पांणी आन पायो है । वाट घाट शत्रु दाट, हाट पुर पाटणमें, देह गेह नेहसुं, कुशल वरतायो है । धर्मसीह ध्यान धरे, सेवकां कुशल करे साचो श्री कुशल गुरु नामसुं कहायो है ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ कुशल अंग उछरंग कुशल वणिजे व्यापारे । कुशल देव देहरे । कुशल घन राजदुवारे । पुन्य पसायें कुशल कुशल श्रीसंघ भणी जे । वाहण आवे कुशल कुशल घर घर गाईजे । श्री जिनचंद्र सूरि पुहपट्टधर । नाम मंत्र आरति टलें । श्रीजिनकुशल सूरि पाय पूजतां नवनिधान लक्ष्मी मिलें ॥१॥

॥ ❀ ॥ कुशल वभो संसार । कुशल सज्जन घर चाहे । कुशले मङ्गल माल । लच्छिवर कुशलें आवे । कुशले घन वरसंत । कुशल धन धन्न रवन्नो । कुशले घोभा घट्ट । कुशल पहिरीय सुवन्नो । ए रसो नाम सद्गुरु तणो । कुशले जगरलीया मणो । भट्टारक श्री जिनकुशल सूरि नाम ग्रहणं करी । घरघर होत वधावणो ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❁ ॥ अथ खरतर गछ शुद्ध समाचारी ॥ ❁ ॥

॥ ❁ ॥ जो प्रतिपदा १ तिथी कम हो (तो) प्रतिपदा १ का, पच्च ख्खाण व्रत । पिछली अमावास्या (३०) तिथकों करै। ८ अष्टमी कम हो (तो) अष्टमीका व्रत सप्तमी ७ को करै। और (जो) १४ चौदस कम हो (तो) १४ का उपवास। अमावस (वा) पूनिम को करै (इस का कारण) यह दोनुं तिथी समान है । (जेसें) चौदस वर्षी तिथ है । (तेसें) अमावस पूनमभी चिरंतन पक्खीका दिन है । इसी सें यह दो दिन वर्षे है। यह दों दिन में उत्तम भव्यजीव यथाशक्ति पोशह पडिक्कमणा दि धर्मकृत्य करै । पारणें उत्तर पारणें धर्मका उद्योत करै। (इहां विशेष कहते है) इस समय में जैनी पत्रा प्रसिद्ध नहीं है । मिथ्यात्वी के पत्रो सें देखकै सर्व तिथी गिणनेंमें आती है। (और) इस पत्रेका कुछ प्रमाण नहीं। हर कोई तिथ कम हो जाती है। इसीसें (जो) चौदश कम हो (तो) उपवास (तथा) पक्खी पडिक्कमण (निस्संदेह) पूनम १५ (तथा) अमा वसके दिन करै (परंतु) तेरश चौदश के वितत्थैकों न करै । और जो बेला करै। तथा हरी छोडै (तो) यह दोनुं दिनमानें ॥❁॥(अब) कोई वेर संवछरी की४चोथ कम हो (तो) पंचमी५के दिन, संवछरी पडिक्कमण करै। (परंतु) तीज ३ के दिन कदापि काले न करै (और) जो चौथ ४ दो होय (तो) पहली चौथ संवछरी करै। औरभी कोई तिथ दो होय (तो) पहली तिथ मान्यनी कहै। दूसरी लूंन तिथी रही। (दूशरो यह प्रमाण है) साठ ६० वडी की अखंड तिथी छोडकै। वर्षी अध वर्षीकी (दूसरी) तिथी कोण मानें (इ हां कोई कहै) अपणें उदय तिथी मानें है। सूर्य उगै इहां तक कोई तिथी हो (तोभी) उस दिन उसी तिथ कों मानें है (इसीसें) जोदूशरी तिथ अध घडीभीहो (तो) मानणें में क्या दोष है (इसका उत्तर) हे भव्य जो पहलै दिन तीज मानी है (और) तीज३के दिन चौथ बहुत घडी भुगतेगा। पिण उस दिन तीज मानीजेगा। (इसी तरे) चौथके दिन सूर्य उगे (इहां त क) वर्षी अध घडी भी चौथ होगा (तो) चौथ ४ मानीजे गा। (पर)जो तिथी दो होय । उसमें तो पहली तिथ सूर्य उदय अस्त दोनुंमें रही (इसीसें)

पहली तिथ छोडके दूशरी तिथ करणा युक्त नहीं। (और) कार्त्तिक माश वढे (तो) पहले कार्त्तिक चोमाशो करे॥ फाल्गुण वढे (तो) दूसरे फाल्गुण चौमाशो करे। आशाढ वढे (तो) दूशरे आशाढ चौमाशो करे। आशाढ चौमाशे की १४ चौदशसें। पचासे दिने चौथकों संवछरी पर्व्व करे। चौथ कम हो (तो) ५ पांचमके दिन संवछरी करे। श्रावण। भाद्रवो। आसोज। वढे (तो) पंचमाशी चौमाशो करे (जो) श्रावण माश वढे (तो) दूशरे श्रावण शुद ४ कों संवछरी करे (पर) चौमाशे की चौदशसें पंचास दिन उलंघके संवछरी पर्व कदापि काले न हो, यह कल्पसूत्र जीके पहली समाचारीमें प्रसिद्ध पाठ है, (और) चौमाशे में, श्रावण। भाद्रवो। आशोज। यह तीन माश वढे तो पंचमाशी चौमाशो करे। (और) जो माश दोहोय (उसमें) पहला माशका कृष्णपक्ष। (दूशरे माशका शुल्क पक्ष। (ऐसें) एक माश में जो कल्याणक तिथी हो। उसीका व्रत पचक्खाण करे। वीचका ३० दिन छुंम जाणना। यह तीश दिनमें कल्याणकादिक के व्रत पचक्खाण न हो शके (इसीसें) विवेकी जीव सव तिथीका विचार समझके व्रत पचक्खाण करे (तो) व्रत भंग कभी नहो॥ ❀॥

यह तिथोंका परमाण श्रीहरिभद्र सूरजी महाराजके किया हुवा। तत्वतरंगणी ग्रंथमें प्रशिद्ध है (सो) इहां किंचित् लिखते हैं॥ ❀॥

॥ ❀॥ तिहि पभणे पुव्व तिही। कायव्वा जुत्त धम्म कज्जेय। चाउद्दसी विलोवो। पुन्नमिय पक्खिय पडिक्कमणं॥ १॥ तत्थेव पोसह विही। कायव्वा सव्वगेहि सुह हेऊ। नहु तेरसीइ कीरइ। जह्मा नाणाइणो दोसा॥ २॥ सूरोदय पडियावि। तेरसी हुंति न पक्खियं कुज्जा। चाउम्मासिय करणे। एसविही देसिउ समणा॥ ३॥ तिहि वुड्ढीए पुव्वा। गहिया पडि पुन्न भोग संजुत्ता। इयराविं माणणिज्जा। परं थोवत्ति नत्तुल्ला॥ ४॥ ❀॥

॥ ❀॥ (तथा) ज्योतिषकरंड पाइन्नके इदं कथितमस्ती॥ ❀॥

छठि सहिया न अठमी। तेरसि सहिया न पक्खिया होइ। पडिवे सहियान कयावि। इइ भणिया वीयरागेण॥ १॥ अठमि दिनंमि पावं। कायव्वा अठमीय पाएण। कइयावि सत्तमंमि। नवमी जुठो न कायव्वा॥ २॥ पनरस

म्मिय दिवसे। कायव्वं पक्खियं तु पाएण । चाउद्दसेवि कइया। नहु तेरसि सोळसमे कहवि ॥ ३ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ (तथा) श्रावक सामायक करै (तब) प्रथम सामायक दंरू ३ वेर उचरके (पीछे) इरियावही पडिकमें (क्युंकि) आत्मार्थी आचार्यों के किये हुए कितनेही ग्रंथमें प्रसिद्ध पाठ हे (और) सामायका धिकारे प्रथम इरियावही पडिकमके (पीछे करेमि भंते कहणा। ऐसा पाठ खुलासा कोई ठिकाणें देखनें में न आताहै ॥ ❋ ॥ तथा श्री महावीर स्वामी का छ कल्याणक मान्य करणा चहिये (क्युंकि) कल्पसूत्रादि अनेक ग्रंथोमें शाखहै (और) बडे बडे, संवेगी गीतार्थ, खरतर गच्छ, तप गच्छादिक के, आचार्योंनें ग्रंथोमें प्रगट पणें छ कल्याणक वर्णन कियेहै (जो) आश्चर्य कारी संबंध जाणके छठा कल्याणक नमानते हैं (उनोंकों) डिगंबरवत् मल्लिनाथ स्वामीकोंभी स्त्री पणें मानणा न चाहियै (क्युंकि) आश्चर्यकारी संबंध समानत्व है (दूशरो) न मानणें में अपनें ही गुरुवादिककी आग्या लोपन होती है ॥ ❋ ॥ (तथा) सर्व पोषध, अष्टमी, चतुर्दशी, कल्याणकादि, पर्व तिथीकों करै (परंतु) सदैव करनेका कथन नही ॥ ❋ ॥ (तथा) कल्पसूत्र वाचनामें । नववाचनाको वंधाणनहिं । अधकीभी वाचना करै ॥ ❋ ॥ (तथा) आंबिल मांहै एक अन्नद्रव्य (दूशरो) उश्न जल द्रव्य, यह दोद्रव्य ग्रहण करनेका कथन है (इससें) रसनाका लोलुपी पणासें अधिक द्रव्य ग्रहण न करणा चाहिये ॥ ❋ ॥ (तथा) तरुणी स्त्री कुं मूल नायकजीकी पूजा करनी प्रमाणीक आचार्योंनें निषेध करीहै (क्युंकी) इस कालमें प्रायें स्त्रीयोंमें अविवेकत्व पणा(तथा) अकस्मात् स्त्रीधर्म प्रगटहोना दीख रहाहै॥❋॥ (तथा) श्रावकांनें, पाणस्स लेवाका पाठ कहणा युक्त नहीं। यह साधुका पाठहै॥❋॥(तथा)दिनप्रति एक उपवास पचक्खावै। जो अधिकतप की इच्छाहोय तो अपनें दिलमें धारना रक्खे। परंतु पचक्खाण नित्यसूर्योदये करणा चाहिये॥❋॥(तथा)जिसधान्यकी दोफाडहोय जिसमें चिकणास न होय सो सर्व विदलकी गिणतीमेंहै ॥ इस विदलधान्यकों गोरस दध्यादिकके साथ भक्षण नकरना चाहिये ॥ ❋ ॥ (तथा) मुंवे जायेका सूतक मानणा

चाहिये। जिसके घरमें सूतक होय। उसी घरको आहार पाणी साधुवर्जन करे (परंतु) संपूर्ण कुलगोत्रको सूतक नगिणें॥ ॥ (इत्यादि) इहां नाममात्र खरतर गछकी समाचारी लिखनेमें आई हे (यद्यपि) समाचारी ग्रंथ अनेकहे (तथापि) श्रीसमयसुंदरजी महाराजके बनाया हुवा। समाचारी शतक ग्रंथ है (जिसमें) पंचांगी सूत्रोंका आलावा प्रमाणयुक्त। समाचारीका निर्णय किया है (जो) अनेकांती विशेषज्ञ होय सो आत्मार्थी गुरूसें निश्चेकरे॥ और जे कोई मूंगांमे कोरडू जैसा। एकांती, दृष्टिरागी अभिमानी अपनें गछका पूंछ्या पकरुके। धर्मसागर निन्हवकी तरे। खरतर गछकों मतपक्षमें कहतेहे (और) १२०४ शालमें हुवा लिखते हे (सो) साफ अपनी अग्याता (तथा) द्वेष सूचन करते हें॥ ग्रंथोंमें प्रत्यक्ष पणें साबित होताहे (कि) कोटिक गछ, चंद्र कुल, वयरी शाखा वाले, श्री जिनेश्वर सूरजी महाराजे, अणहल पुर पट्टणमें। सं१०८०, चैत्यवासियों कों, शास्त्र विवादसें जीते (इसमें) पाटणके, दुर्लभ राजानें, खरतर विरुद दिया। तवसें खरतर गछ प्रशिद्ध हुवा (तथा) यही, श्री जिनेश्वर सूरजीके दो शिष्य हुए। श्रीमालगोत्र थापक, श्रीजिनचंद्र सूरी (तथा) नवांगीवृत्तिकारक श्री अभयदेवसूरिजी हुए (तथा) इनोंके शिष्य पट्टधारी जिन वल्लभ सूरजी हुए। (तत्पट्टे) युगप्रधान सवालाख श्रावक प्रतिबोधक, श्री जिनदत्त सूरिजी हुए। इस माफक बहुत ग्रंथोकी प्रशस्तियोंमें अधिकार हे॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (इससेती) अहो भव्यो मूलतत्व इसकालमें इतनाही हे जो तत्व नसमजो (तो) अपनी अपनी समाचारी करते जावो (परंतु) एकेक गछकी निंदा मतकरो। एक धर्ममें द्वेष मन रक्खो, मत करो। श्री नवकार, जिन प्रतिमा पूजक, सर्व जैनी भाई आपसमें एक्यता करके धर्मवृधी (तथा) उत्कृष्टसें ग्यानवृधी करते रहो। जिससेती अपनें धर्मकी (तथा) अपनें जैनी भाइयोंकी दिन २ वृद्धी होय सदा आनंद होय॥ ॥ ॥ ॥ किंबहुना॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ स्वकुल प्रकाशन संक्षिप्त गुर्वावली ॥ ॥

॥ ॥ शासनके नायक, श्रीमहावीर स्वामी (तत्पट्टे) २ श्रीसुधर्म्मा

स्वामी (तत्पट्टे) ३ श्रीजंबू स्वामी, (तत्पट्टे) । ४ श्रीप्रनव स्वामी । ५ श्री सज्यंनव स्वामी । ६ श्रीयशोनद्र स्वामी । ७ श्रीसंनूतिविजय स्वामी । ८मा श्रीनद्रबाहू स्वामी । ९मा श्रीथूलनद्रस्वामी ॥ (तत्पट्टे) १० मा । श्री आर्यमहागिरी (तत्पट्टे) ११ मा । लघुभ्राता, श्रीआर्य सुहस्ति सूरी हुए (सो) श्रीवीर नगवानसें, २३५ वरशे, संप्रति राजा (तथा) ऐवंती सुकमालकों प्रतिबोधके, धर्मका बहुत उद्योत किया ॥ १ ॥ ❋॥ ॥❋॥

॥❋॥ (तत्पट्टे)१२श्रीसुस्थित सूरी,१क्रोम सूरी मंत्रका जापकिया, इससें कोटिक गछ प्रशिद्ध हुवा ॥ इसी तरे पट्टानुक्रमें१६में पाटे ॥ श्री वज्र स्वामी दश पूर्व धर, बमे प्रनावीक, विद्यागामी हुए (इहांसें) वज्र शाखा प्रवर्त्तन नई ॥ (तथा १८ में पाटे) श्री जिनचंद्र सूरजी । हुए ॥ (इहांसें) चंद्र कुल प्रशिद्ध हुवा । (इसीतरै पट्ट परंपरायें) नगवानसें (३८ में पाटे) श्रीउद्योतन सूरजी हुए । (सो) एक निज शिष्य (अन्य ८३) साधु शिष्योंकों आचार्य पद देके । चौराशी गछ प्रशिद्ध किये ॥ ❋ ॥ यह ८४ गछके आचार्य बमे प्रमाणीक, प्रनावीक, धर्मोद्योतक हुए (श्रीउद्योतनसूरी) पट्टे । आबूजी तीर्थ प्रगट कारक, विमल मंत्री प्रतिबोधक, बमे प्रनावीक (३९ में पाटे) श्रीवर्द्धमान सूरी हुए ॥ ❋ ॥ (४० में पाटे) श्रीजिनेश्वर सूरिः हुए (सो) अलहण पुर पट्टणमें । दुर्लन राजाकी सनामें । चैत्यवासियोंकों, विवाद करके जीते (इस सेती) सं ॥१०८०॥ (खरतर विरुद) पाटणके राजानेंदिया । अतिशयपणें सिद्धांत मार्गसें सचाहुवा(इससें)खरतरगछ प्रसिद्ध हुवा (इहांसे)कोटिक गछ । चंद्रकुल । वज्र शाखा(और)खरतर विरुदका । नवाशिष्योंकों नेद कहनें लगा ॥❋॥ (४१ में पाटे) दिल्लीके बादशाहकों वरदेनें वाले । जीवहिंसा छोमानें वाले । श्रीमाल, महतियाण गोत्र, प्रतिबोधक । श्रीजिन चंद्र सूरी हुए॥❋॥(तथा)इनोंके लघु भ्राता(४२ में पाटे) स्थंनणा तीर्थ, नवांगी वृत्ति, प्रगट कर्त्ता, श्री अनयदेव सूरी हुए, (तत्पट्टे) दशहज्जार, बागडी श्रावक प्रतिबोधक (४३ में पाटे) श्री जिन वल्लन सूरी हुए ॥ ❋ ॥ ४३ (तत्पट्टे ४४ में) महाप्रनावीक, युगप्रधान, चीतोमके मंदर स्थंनसें । विद्याम्नाय पुस्तक प्रगट कारक । ५२ वीर,

६४ योगणी, आदि देवी देव्यांकों प्रतिबोधक। (सवालाख) रजपूत ब्राह्मणादिककों प्रतिबोधके। सावण सुक्खा, गोलछा, डाजेड (आदि) अनेक गोत्र श्रावक कुल स्थापक। सवाक्रोड ह्रींकारजीका जाप करनेंवाले. श्रीजिन दत्तसूरजी हुए (सो) आजतक मोटा दादाजीके नामसें। देशावरोंमें प्रशिद्ध है ॥ तत्पट्टे ४५ मा। भालस्थल मणिधारक. दिल्लीके पातसाहकों, अनेक चमत्कार देखाके। धर्म उद्योत करनेंवाले। श्रीजिनचंद्र सूरजी हुए (जिनोंका) दिल्लीके बजारमें दाग हुवा (और) बडा चमत्कार देखके संपूर्ण बादशाहादिक लोक पूजनें माननें लगे। (यह दूशरा दादाजीहुवा) इहांसें अनुक्रमें (५० में पाटे) महा प्रभावीक. श्रीजिन कुशल सूरिजी हुए (सो) आचार्य पद पायके. बहुत जिन धर्मका उद्योत करनेंवाले हुए (अंतमें) सं। १३८९. फागुणवद अमावश दिन, देव लोक गए (तदुपरांत) फागुण सुद १५ सोमवारनें (प्रथम) दरशण संघकों दिया (तिस पीछे) अनेक गांव,नगरोंमें-भक्ति धर संघका उपगार करनें लगे(इससेती)संघ अपना, उपगारी आचार्यकों, इष्टदेव समझके। सर्व देशगांव नगरोंमें चरण. स्तंभ. मंदर, स्थापन करके(दादाजीके नामसे) अनेक प्रकारसें। पूजन, वंदन,करनें लगे। सर्व स्थानक दादाजीका नाम प्रशिद्ध हुवा (आजतक) सर्व स्थानक. प्रत्यक्ष परचा देनेंवाले, संघकों मालुम होरहे है (ऐसे) महा उपगारी (यह) तीशरा दादाजी हुए ॥ ३ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इहां सें अनुक्रमें ६१ में पाटे महा प्रभावीक श्री जिन चंद्र सूरजी हुए सो सं। १६१२ जेशलमेरमें आचार्य पद पायके गछमें बहुतसे साधुवोंका किया उधार कराके उग्र विहार करनेंवाले. दिल्लीका अकब्बर बादशाहको चमत्कार देखाके. जीव हिंसा पर्व दिनोंमें छोडाके, अमारि पडहो फेराणेवाले पंचनदी. पंचपीर. मानभद्र. खोडिया खेत्रपालकों साधन करके. जीव दया धर्म प्रवर्त्तन करनेंवाले, बडे चमत्कारी. ये चोथा दादाजीके नामसे प्रसिद्धभये॥४॥

॥ ❀ ॥ ऐसे महा प्रभावीक उत्तम आचार्योंके पाटानुपाटे (६५ में) महोपगारक. तेजस्वी. श्रीजिन चंद्र सूरजी सूरीश्वर। १७११ आचार्य पदधारक हुए ॥ इनोंके दो शिष्य हुए ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ १ प्रथम आचार्यपदधारक ॥❀॥ पट्टश्रेणीमहाराजनामः	॥ २ उपाध्यायपदधारक ॥❀॥प्रवरपुज्यश्रेणीनामः॥❀॥
॥ ६६ ॥ श्रीजिन सुक्ख सूरिः	॥ ६६ ॥ पुज्य श्रीउदयतिलकजी गणिः
॥ ६७ ॥ श्रीजिन भक्तिसूरिः	॥ ६७ ॥ पुज्य श्रीअमरशीजी गणिः
॥ ६८ ॥ श्रीजिन लाभसूरिः	॥ ६८ ॥ पुज्य श्रीलक्ष्मीचंदजी गणिः
॥ ६९ ॥ श्रीजिन चंद्रसूरिः	॥ ६९ ॥ पुज्य श्रीविजमालजी गणिः
॥ ७० ॥ श्रीजिन हर्षसूरिः	॥ ७० ॥ पुज्य श्रीसुगुणप्रमोदजी गणिः
॥७१॥ श्रीजिन सौभाग्यसूरिः	॥ ७१ ॥ पुज्य श्रीविद्याविशालजीगणिः
॥ ७२ ॥ श्रीजिन हंशसूरिः	॥ ७२ ॥ पुज्य महोपाध्याय श्रीलक्ष्मी प्रधानजी गणिः
॥ ७३ ॥ श्रीजिनचंद्रसूरजीपट्टे	वर्त्तमान पुज्यादेशेन
॥ ७४ ॥ श्रीजिन कीर्त्तिसूरिजी	

॥ ❀ ॥ वर्त्तमान विजय राज्ये ॥ १॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ तत्शिष्य मुख्य ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जैन पाठक श्रीमोहनलाल (अपरनाम) उपाध्याय श्रीमुक्ति कमलगणीनें (अपना शिष्यगण) पं०श्रीजयचंद मुनिः पं० रावतमल्लादि तत्वदीपक मोहन मंडली (तथा) सर्व जैन पाठकगण हितार्थ, श्रीबीकानेर रांघडीका माणक चौकमध्य सतरमा श्रीकुंथुनाथस्वामीका अनुपम नवीन मंदिर सं० १९३१ में वनायके प्रतिष्ठा कराइ (तथा) नवीन ज्ञानचैत्य जैन लक्ष्मी मोहन शाला नामक वनवायके अपना पूर्वजोंका संचित, सर्व पुस्तक सर्व ज्ञानोपगरणका, भंडार स्थापन किया ॥ फेर ज्ञान भंडारकी वृधी के निमित्त कलकत्ता बंबईमें शाखारूप जैन पाठशाला स्थापन करके, रत्नसागर दोभाग आदि सर्वधर्मकृत्य जैन आचार संग्रहका पुस्तक हजारों छपवाय के प्रशिद्ध किया ॥ श्रीसद्गुरुप्रसादात् ॥ ❀॥ ॥❀॥

॥ जब लग मेरु अडिग्ग है। जब लग शशि अरसूर। तब लग यहपुस्तक सदा। रह जो गुणभर पूर ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

पोथीप्यारी प्राणथी। गलहियाको हार। बहुत यतनकर राख ज्यो । पोथी सेती प्यार ॥ ऐसी मेरी आशा सफल करजो सही ॥ २ ॥ ❀ ॥ ॥❀॥

॥ ❀ ॥ अथ स्वकुल प्रकाशणम् ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ हिव कही माहरो कुल प्रकासुं अहो भवियण तुम सुणो । गुरु गछ कोटिक चंद्रकुल अरु वयरि शाखा चितभणो । गुण गण जिनेसर सूरि शुक्लार विरुद पायो गुणकरी । सोजयउ खरतर गछ मोहन प्रगट सहु भवि हित धरी ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ गुरु गछ खरतर तेज दीपै विक्रमपुर सोहै सही । जिनहंस सूरीसर तणे पद चंदसूरी जिन मही । गणधार लक्ष्मीप्रधान पाठक मोहन मन उल्लास ए । बहु रत्नसंग्रह कलिकत्ता पुर किया मुंबइ भासए ॥ २ ॥

॥ ❀ ॥ रत्नसागर अंत मंगलाचरण ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ तीन तत्वकों नमण कर । सेऊं सद्गुरु पाय । देवी भगवती सानिधे । वचन अमृत रस थाय ॥ १ ॥ चौरासी लक्ष जोनिमें । जे रह्या जीव अनन्त । मोह मिथ्यात वसे पड्या । पायो दुःख नही अन्त ॥ २ ॥ परम देव परमातमा । चिदानन्द गुणचंग । भव्य जीवके हित भणी । भेद कह्या सहु अंग ॥ ३ ॥ गणधर गौतम आदि सहु । रचिया अंग अनूप त्रिकरण हुं प्रणमुं सदा । ज्ञान आतम गुण भूप ॥ ४ ॥ आचारज उवझाय मुनि । भगवन वचन उपेत । भाष्य टीका निर्युक्ति कर । प्रगट कीया संकेत ॥ ५ ॥ भगवती सुत्र मांहे कह्या । आगमना पंच अंग । सरधे जे भवि प्राणिया । पामें नित उछरंग ॥ ६ ॥ जेवंता वरतो सदा । सहु जग पंच्व ज्ञान । पिण उपगारी भव्यकों । ए श्रुतज्ञान प्रधान ॥ ७ ॥ दुष्टकर्म संयोगसें । चित वेठे नही ज्ञान । पिण जाणुं सुरतरु समो । ए हीज धर्म प्रधान ॥ ८ ॥ प्रबल भाग्य संयोगसें । पारश दरसण पाय । पारश फरस्यां लोह सहु । गुणकंचन समथाय ॥ ९ ॥ मनमोहन पारश मिल्यो । मोहन गुण सुखकंद । मोहनी मूरत देखके । मोहन चित आनंद ॥ १० ॥ पारश प्रभुके नाममें । सहु संकट मिटजाय । ईतउपद्रव भयटले । मोहनगुण प्रगटाय ॥ ११ ॥ जिन दरशण मुझ मनवस्यो । जे प्रगटे चित भाव । कर्मशत्रु दल जीपके । शिवरमणी वरे जाय ॥ १२ ॥ शिवपुर जोवा कारणें । समकित दृढके हेत । बाल प्रकृ मोहन भणी । रत्नसागर गुण देत ॥ १३ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ रत्नसागर, मोहनगुणमाला प्रथमभाग ॥ तृतीयवेर छपाके प्रसिद्ध करते समय, ज्ञानवृद्धी खाते, प्रथम साहाय्य करनेंवाले, धर्मज्ञ ग्राहकोंकी नामावली मान्यसहित प्रकाशित करतेहैं ॥ ❀ ॥

जैन उद्योतक श्री शीतल जिनेश्वर नवीन चैत्य कारापित (तथा) श्रीशिखर गिरी तीर्थराज पर चैत्य महिमा दया धर्म विस्तारक (तथा) श्री मक्शी पार्श्वनाथ तीर्थकी शोभनीक व्यवस्था कारक, उत्कृष्ट नवपद भक्ति धारक। सर्व जैन मान्य, दूसरी जैन स्वेताम्बर कोन्फेन्स (बंबई) के प्रमुख, श्रीमान् वाइसरायके मुकीम जोंहरी, खरतर गछी सुश्रावक

२५	राय श्रीवद्रीदासजी वहादुर	रैवासी कलकत्ता
१५	वावू श्रीवुधसिंहजी विजयसिंहजी दुधेंरिया	अजीमगंज
१०	वावू श्रीराय गणपतिसिंहजी वहादुर	अजीमगंज
१०	राय मेघराजजी जालमचंदजी कोठारी वहादुर	अजीमगंज
१०	राय श्री धनपति सिंहजी राजसिंहजी वहादुर	वालूचर
१०	मुकीम जोंहरी वावू श्रीमोतीचंदजी नखत्र	कलकत्ता
१०	सेठ दीपचंदजी पारख	जोधपुर
९	सेठ श्रीवालचंदजी कनीरामजी आभड़	मुंबई
५	पं० प्र। श्री पनालालजी रामरतनजी मुनिः	वीकानेर
५	सेठ श्री फूलचंदजी गोलछा	फलोधी
५	मगनीरामजी दानमलजी कोठारी	मुंबई
५	वावू श्री भैरूंदासजी रिखबदासजी जोंहरी	कलकत्ता
५	हीरालालजी किसनचंदजी दूधड़	वरधा
५	गुलावचंदजी भोमराजजी (हस्ते) सुगनचंदजी कानूगा	मुंबई
४	वावू श्रीशितावचंदजी नाहर	अजीमगंज
४	वावू श्री माधवलालजी जोंहरी	कलकत्ता
४	सेठ मलजी गांधी वस्तपालजी वरडिया	मुंबई
२१	तत्वदीपक मोहनमंडली जैनपाठशाला वुटकर	मुंबई

॥ कलकत्ता ॥ ॥ बीकानेर ॥ ॥ बम्बई ॥

॥ ॐ ॥ श्री जैन लक्ष्मी मोहनशाला ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ (जाहिरखबर) ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सर्व जैनी सज्जन पुरुषोंको मालुम रहे । जगतमें वांछित सुखदायक· तत्वभूत· संपूर्ण प्राणियोंके (ज्ञान) उत्तम पदार्थ है (क्युंकि) सद्ज्ञानसेंही· जीवकों । दर्शन· चारित्रादिक· मोटा गुणकी प्राप्ती होती है (और) यही, ज्ञान· दर्शन· चारित्र· रत्नत्रय पानेसें । थोडे कालमें जीवकों· अवश्य मोक्षका· अक्षय सुख मिलता है (सो) जिस ज्ञानके प्रसाद, अनादि भव भ्रमण दुःख दूर होके । अंतमें मोक्षफल मिले (ऐसा) उत्तम स्थान पदार्थका । मूर्ख. मिथ्यात्वी· अज्ञानी लोक (कोई) विवेकी· उत्तम पुरुष, अनादर न करेगा (अपितु) बुद्धिवान· धर्मज्ञ जीवतो । अपनी शक्ति मुजब । तन· मन· धनसें· ज्ञानवृद्धि· विद्यादान. करेगा· करावेगा· अनुमोदेगा (इसीकारणसें) अंतरंगप्रीतिसें अपनेको (तथा) अपना शिष्यादिक (संपूर्ण) पाठक गणकों । विद्या दान मिलनें निमित्त । बीकानेर । कलकत्ता । मुंबईमें· जैन पाठशाला· स्थापन करीहै (और) पाठशालाके उत्तेजन अर्थे· सर्वोपयोगी (यह) रत्नसागर पुस्तक तीसरी वेर छपाके प्रसिद्ध किया है (और)पढनें वालोंके पास (कुछभी)प्राय खर्च लेनेमें न आता है । दोनुं पाठशालायोंके खर्चका निभाव (तथा) उत्तेजन होना परोपकारी । गुणग्राही । संघके हाथ है (जो) धर्मरागी संघ । तन. मन. धनसें· मदत देते रहेंगे (तो) यह तीनुं पाठशाला स्थाई रह सकेगा (और) क्रमसें विद्या वृद्धी होनेका· बहुतसा प्रयत्न करनेमें आवेगा ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ रत्नसागर प्रथम भाग (तथा) दूसरा भाग ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ सर्वोपयोगी. बालभाषी· धर्मकृत्य जैनाचार संग्रहकी पुस्तक· लेनेकी इच्छा होय (तो) लिखे मुजब ठिकाणों (नामवालोंके पास) से खर्ची निछरावल देके लेजावें (वा) देशावरोंसें मंगावें (तथा) देशावरोंसें मंगानेंवाला (जो कोई) प्रथम निछरावल न भेजेगा (तो) रत्नसागर आदि पुस्तक मंगावेगा

(उसकों) डाक मारफत; पुस्तक भेजणेंमें आवेगा । डाक मारफत; रुपियादेके पुस्तक लेशकेगा । नाटपेट पत्र लेनेंमें न आवेगा ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ (तथा) इमीनकलका । मोटा, छोटा; अक्षरोंमें (जो कोई) पुस्तक छपानें निमत्त भेजैगा (तो) जलदी छपाकर भेजा देनेंमें आवेगा ॥❀॥

॥ ❀ ॥ पुस्तक मिलनेंका ठिकाना ॥ ❀ ॥

॥ १ ॥ मु । बीकानेर । ठि । बरे उपाशरे (जैन लक्ष्मीमोहनशाला) जैन महोपाध्याय श्री लक्ष्मी प्रधानजी मोहनलालजी गणिः पासे ॥ ❀ ॥

॥ २ ॥ मु । कलकत्ता । ठि । अफीमचौरस्ते । ६२ नं । जैन विद्या शाला अध्यक्ष पंडित श्री जयचंद रावतमल मुनिः पासे ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ३ ॥ मु । मुंबई; । ठि । विचला भोईवाडा श्रीचिंतामणिजीके मंदिर जैन पाठशाला उ । श्री मुक्तिकमलजी मंत्री धर्मकल्याणजी पासे ॥

॥ ❀ ॥ पुस्तक नाम ॥ ❀ ॥	रु०	आ०	ट०
॥ १ ॥ रत्नसागर प्रथम भाग.	५	०	१२
॥ २ ॥ रत्नसागर दूसरा भाग.	२	८	४
॥ ३ ॥ खरतरगछ तपगछ पांच प्रतिक्रमण विधिः	१	४	४
॥ ४ ॥ खरतर राई; देवसी; प्रतिक्रमण विधिः	०	६	॥
॥ ५ ॥ श्रीजिन पूजा संग्रह.	३	४	४
॥ ६ ॥ योग रत्नाकर वैद्यकसार.	०	६	॥
॥ ७ ॥ स्तवन संग्रह	०	४	॥

॥ ❀ ॥ इसपुस्तकों सिवाय । भीमशी माणकका छापाकी (तथा) पं० श्रीधर सिवलालके छापाकी पुस्तकों पण भेजनेंमें आवेगा (और) हमारे पाठशालाकी पुस्तकों पण ये दो छापामें मिलसकेगा इच्छा होय उहांसें मंगायलेना (तथा) रत्नसागर; दोनुंभागका (१० पुस्तक) जो एकठा लेवेगा (उसकों) ग्यानके मदतखाते एक पुस्तक ज्यादा मिलेगा । सही ॥ ❀ ॥

वीर सं । २४३० टाईटल ऊपरमें ६० जिस्ता सो अशुद्ध है